३२१११
३२१/११८

महाभारत भाषा

भीष्मपर्व्व

जिसमें

भूगोल खगोलादि सृष्टिविस्तार और नदी पर्व्वतादि संख्या कथन व मनोहर रोचकपदों से षट्ऋतुवर्णन तथा अर्जुन व श्रीकृष्णसंबाद और भगवद्गीतावर्णन जिसकेद्वारा श्रीकृष्णजी ने ज्ञान वैराग्यादि दिखलाके अर्ज्जुनको युद्धके निमित्त बोधितकिया और प्रबोधपूर्वक अर्जुन व भीष्मजीका युद्ध व युद्धान्तर्गत भीष्म प्रतिज्ञासे श्रीकृष्णचन्द्र जी को शस्त्रहाथमें लेके भीष्मजी के सन्मुख दौड़ना व भीष्मजीका स्तुतिकरना तथा अर्जुन के समझाने से श्रीकृष्णचन्द्रजी का लौटआना इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

प्रतोदपाणिस्तेजस्वीसिंहवद्विनदन्मुहुः ॥ दारयन्निवपद्भ्यांसजगतींजगदीश्वरः ५७
क्रोधताम्रेक्षणःकृष्णोजिघांसुरमितद्युतिः ॥ त्रसंतिइवचेतांसितावकानांमहाहवे ५८
दृष्ट्वामाधवमाक्रंदेभीष्मायोद्यतमंतिकेहतोभीष्मोहतोभीष्मस्तत्रतत्रवचोमहत् ५९

जिसको

भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुन्शीनवलकिशोरजी ने अपने व्ययसेआगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस श्रीपंडित गोकुलचन्द्रसूनु श्रीपण्डितकालीचरणजीसे संस्कृतमहाभारत का यथातथ्यपूरे श्लोकश्लोकका भाषानुवादकराया ॥

पहली बार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छापागया

अक्टूबर सन् १८८७ ई० ॥

१७

बिज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् अक्टूबर सन् १८८७ ई० पर्य्यंत जो पुस्तकें बेचनेके लिये तय्यार हैं उनमें से कुछ इस सूचीपत्र में लिखीहैं और उनका मोल बहुत किफ़ायतसे घटाके नियत हुआहै और व्योपारियोंके लिये और भी सस्तीहोंगी जिनको व्योपारकी इच्छाहो वह मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ हजरतगंजके पतेसे ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णयकरलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
(अ)	ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०	**(ग)**
अमरकोषतीनोंकांड	ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०	गुटका तीनोंखण्ड
अध्यात्मरामायणभाषाटीकासहित	ऐक्टमजमूआवधलगान १६ सन् १८६८ ई०	गर्गसंहिता
अमृतसागरबड़ा व छोटा	ऐक्ट १८ सन् १८६६ ई०	गरुड़पुराणप्रेतकल्प
अरिथमेटिक तीनों भाग	ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०	गणितप्रकाशचारोंभाग
(इ)	ऐक्ट १६ सन् १८७३ ई०	**(च)**
इलाजुल्गुरबा	**(क)**	चित्रचन्द्रिका
ईशावास्यबाजसनेयसंहितोपनिषत्	कायस्थकुलभास्कर	चाणक्यनीति
इतिहास तिमिरनाशक	कायस्थबिनोद	चौरासीवार्त्तिक
इंगलिस्तानका इतिहास	कर्मविपाकसंहिता	**(छ)**
(उ)	कृष्णबाललीला	छन्दोर्णवपिंगल
उमापतिदिग्विजय	कालिजस्माहात्म्य	**(ज)**
(ऐ)	कृष्णसागर	जातकालंकार
ऐक्ट १ सन् १८७६ ई०	कथा श्रीगंगाजी	जातकाभरण
ऐक्ट १२ सन् १८८१ ई०	कैवल्यकल्पद्रुम	जगद्विनोद
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०	कृष्णप्रिया	जातकचंद्रिका
ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई०	कविकुलकल्पतरु	**(त)**
ऐक्ट १० सन् १८८२ ई०	कवितरंग	तुलसीकृतरामायण
ऐक्ट १० सन् १८५६ ई०	केनोपनिषत्	तशरीहुलहरूफ़उर्दूबनागरी
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०	काव्यसंग्रह	**(द)**
	कवित्वरत्नाकर दोभाग	दुर्गास्तोत्रमूल व सटीक
	कृष्णचालीसी	

महाभारत भाषा भीष्मपर्व्वका सूचीपत्र ॥

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
	मंगलाचरण,	१	१
१	कौरव पाण्डवोंके युद्धमें नियम,	१	४
२	भयानक उत्पात वर्णन,	५	७
३	भयानक उत्पात वर्णन,	७	१३
४	स्थावर जंगमका वर्णन,	१४	१५
५	जम्बूखण्ड वर्णन,	१५	१७
६	जम्बूद्वीप रूपस्थूल सूक्ष्म वर्णन,	१७	२१
७	मेरुपर्वतके उत्तरीय भागके मालवन्तपहाड़के मूलसमेत वृत्तान्तका वर्णन,	२१	२३
८	खण्ड और पर्व्वतवासियों का मूल समेत वर्णन,	२४	२५
९	नदी और देशादिका वर्णन,	२५	२९
१०	जम्बूखण्ड वर्णन,	२९	३०
११	शाकद्वीप वर्णन,	३०	३३
१२	जम्बूखण्ड वर्णन,	३३	३७
१३	भीष्ममृत्यु श्रवण वर्णन,	३७	३८
१४	धृतराष्ट्र का संजय से भीष्मकी मृत्युका हाल पूंछना,	३८	४३
१५	दुर्य्योधन दुश्शासन सम्वाद वर्णन,	४३	४५
१६	सेना का वर्णन,	४५	४७
१७	सैन्य वर्णन,	४७	४९
१८	सेना का वर्णन,	४९	५१
१९	कौरवों की व्यूह रचना देखकर पांडवों का भी व्यूहरचना करना,	५१	५४
२०	सैन्य वर्णन,	५४	५६
२१	युधिष्ठिर अर्जुन सम्बाद वर्णन,	५६	५७
२२	कृष्ण व अर्जुन सम्वाद वर्णन,	५७	५९
२३	कृष्णजीकी आज्ञानुसार अर्जुन का दुर्गास्तोत्र पाठ करना,	५९	६०
२४	कौरव पाण्डवों के युद्धमें प्रसन्न व अप्रसन्न और किस ओर से प्रथम प्रहार इसका प्रश्नोत्तर वर्णन,	६१	६१
२५	भगवद्गीता प्रारंभ,सैन्यदर्शन वर्णन,	६१	६५

अध्याय	विषय	पृष्ठ	पृष्ठ
२६	सांख्ययोग वर्णन,	६५	७३
२७	कर्मयोग वर्णन,	७३	७८
२८	ब्रह्मार्पण योग वर्णन,	७८	८३
२९	संन्यास योग वर्णन,	८३	८६
३०	अध्यात्मयोग वर्णन,	८६	९०
३१	विज्ञान योग वर्णन,	९०	९४
३२	तारक ब्रह्मयोग वर्णन,	९४	९७
३३	राजगुह्य वर्णन,	९७	१०२
३४	विभूति वर्णन,	१०२	१०६
३५	विश्वरूप दर्शन,	१०६	१११
३६	विश्वरूपदर्शन,	१११	११३
३७	जीव और ब्रह्मकी ऐक्यता, क्षेत्रक्षेत्रज्ञ विभाग वर्णन,	११३	११८
३८	प्रकृतिगुण भेद वर्णन,	११८	१२१
३९	पुरुषोत्तमयोग वर्णन,	१२१	१२४
४०	देवासुर सम्पद्विभाग वर्णन,	१२५	१२७
४१	श्रद्धा वर्णन,	१२७	१३०
४२	संन्यासादि तत्त्व निर्णय योग,	१३०	१३८
४३	युद्धमें भीष्मादिकोंका गमन वर्णन,	१३८	१४६
४४	कौरव वीरोंका भीमसेन पर बाण वृष्टि करना,	१४६	१४८
४५	सात्यकी और कृतवर्मा का घायलहोना और कौल्हकरके अभिमन्युके सारथी का गिराना व ध्वजा काटना और अभिमन्युकरकेवृहद्वलका घायल होना,	१४८	१५४
४६	संजयका धृतराष्ट्रसे कौरवों पाण्डवोंका परस्पर युद्ध होना वर्णितहै,	१५४	१५७
४७	श्वेतयुद्ध वर्णन,	१५८	१६१
४८	श्वेतबध वर्णन,	१६१	१६६
४९	प्रथम दिवस युद्ध वर्णन,	१६६	१७३
५०	क्रौंचव्यूह निर्माण वर्णन,	१७३	१७७
५१	संजय का धृतराष्ट्रसे कौरवों व पाण्डवोंका शंख बजा बजा कर लड़ाई की तैयार होना वर्णन,	१७७	१७८
५२	भीष्म और अर्जुनका व द्रोणाचार्य्य और द्रुपदका संग्राम होनावर्णन,	१७९	१८३
५३	धृष्टद्युम्नका युद्ध वर्णन,	१८३	१८६

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
५४	कलिंग वध वर्णन,	१८६	१६३
५५	लक्ष्मण और अभिमन्यु व अर्जुन और द्रोणाचार्य्यका युद्ध वर्णन,	१६४	१६६
५६	गारुड़ार्द्ध चन्द्रव्यूह निर्माण वर्णन,	१६६	१६८
५७	कौरवों पाण्डवोंका घोर युद्ध वर्णन,	१६८	२००
५८	भीमसेन व युधिष्ठिर करके कौरवों की सेनाका भागना,	२००	२०३
५६	तृतीय दिवसका युद्ध वर्णन,	२०४	२१५
६०	चतुर्थ दिवसका युद्ध वर्णन,	२१५	२१७
६१	अभिमन्यु की बीरता वर्णन,	२१७	२२०
६२	भीम युद्ध वर्णन,	२२०	२२४
६३	भीमसेन की बीरता वर्णन,	२२४	२२६
६४	चतुर्थ दिवस युद्ध वर्णन	२२६	२३१
६५	पुत्रोंके मारेजाने पर धृतराष्ट्र को बिकल देखकर भीष्मजीका समझाना और सुलह करलेने की सलाह देना,	२३१	२३६
६६	श्रीनारायणजी की ब्रह्मासे की हुई स्तुतिको सुन कर देवर्षि व गन्धर्वों का पूछना और उनका बताना,	२३६	२३८
६७	भीष्मजीका दुर्योधनसे नारायणजीकी महिमा वर्णन करना,	२३८	२४०
६८	ब्रह्मस्तव वर्णन,	२४०	२४१
६६	अर्जुन करके भीष्मका घायल होना,	२४१	२४३
७०	परस्पर युद्ध वर्णन,	२४३	२४५
७१	दुर्योधन और शकुनी व द्रुपद और द्रोणाचार्यका युद्ध वर्णन,	२४५	२४८
७२	भीमसेन और भीष्म इत्यादिक अनेक राजाओं का युद्ध होना व सात्विकी के सारथी को रथसे भीष्मजी का गिराना,	२४८	२५०
७३	राजा विराट औरभीष्म व अश्वत्थामा और अर्जुन व लक्ष्मण और अभिमन्यु का परस्पर युद्धकर एक एक को घायल करना,	२५०	२५३
७४	सात्विकी के दश पुत्रोंको भूरिश्रवाका मारना व अर्जुनकाकौरवों की सेना मेंसे पच्चीस हज़ार बीरोंका वध करना,	२५३	२५५
७५	पाण्डवोंका मकरव्यूह व कौरवोंका क्रौंचनाम व्यूहबनाकरयुद्धकरना,	२५५	२५७
७६	धृतराष्ट्रका संजयसे लड़ाईका हाल कहना और महात्मा विदुर के कहेहुये बचन पर बिश्वास आवना,	२५७	२५६
७७	संजयका धृतराष्ट्र को धिक्कारना और द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णबाणों करके पाण्डवों की सेना का भागना,	२५६	२६४

अध्याय	विषय	पृष्ठ	पृष्ठ
७८	भीमसेन करके चित्रसेन वअन्य कई राजाओंका घायल होना,	२६४	२६५
७९	द्रौपदी के पुत्रों करके दुर्योधनका घायल होना व भीष्मजीकरके पाण्डवोंकी सेनाका घायल होना,	२६५	२६६
८०	भीमसेनका दुर्योधन व उसकी सेना को घायल करना व भीष्मजी का पांचालोंकी सेनाको यमलोक पहुंचाना,	२६६	२७०
८१	भीष्म दुर्योधन सम्वाद वर्णन,	२७०	२७२
८२	भीष्मजी का धृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह बनाना व युधिष्ठिरका वज्र व्यूह बनाकर युद्ध करना,	२७२	२७५
८३	दुर्योधनकी आज्ञा से भीष्म व सुशर्मा का पाण्डवोंसेयुद्ध व शंखका वध वर्णन,	२७५	२७६
८४	धृतराष्ट्रका अपने पुत्रोंकी हार सुनकर संजयसेपूछना व संजयका देवासुर संग्रामकी उपमा देकर युद्ध वर्णन करना,	२७६	२८२
८५	युधिष्ठिर श्रुतायु के युद्ध को देखकर देवताओंका विस्मित होना व रणभूमिमेंआकर अर्जुन का महा युद्ध करना,	२८२	२८६
८६	अर्जुन व भीष्मका युद्धहोना व अर्जुनकी सहायताकेलियेशिखंडी इत्यादिक बीरोंका रणभूमिमें आकर युद्धकरना,	२८६	२८६
८७	भीष्म युधिष्ठिर युद्ध में भीष्म विजय पुनः बिन्द अनुबिन्द धृष्टद्युम्न इत्यादिक राजाओं का युद्ध वर्णन,	२८६	२९२
८८	दोनों सेनाओंका युद्धभूमिमें शोभित होना व भगदत्तअश्वत्थामा आदि राजाओं का घोर युद्ध करना,	२९३	२९५
८९	भीमसेन महोदर युद्ध व दुर्योधनादिका परास्तहोकर उदासीनता पूर्वक भीष्मके पास जाना व भीष्मजी करके सम्बोधन,	२९५	२९७
९०	पुत्रका मरण सुन कर धृतराष्ट्रका ब्याकुल होके संजय से पूछना, पुनः अभिमन्यु अर्जुन घटोत्कच आदि राजाओं का भीष्म जीके सन्मुख जाना व भीम करके मतमातंगोंका नाश,	२९७	२९९
९१	इरावान् अर्जुन के पुत्रोंकी उत्पत्ति व इरावान् करके दुर्योधन सैन्य परास्त पुनः दुर्मद करके इरावान् बध,	२९९	३०५
९२	घटोत्कच और दुर्योधन का घोर युद्ध,	३०५	३०६
९३	घटोत्कच और दुर्योधन का घोर युद्ध देख के भीष्मपितामह के कहने से गुरु द्रोणाचार्य्य का दुर्योधन की रक्षा के लिये घटोत्कच से युद्ध करना,	३०६	३०९

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
९४	दुर्योधन और घटोत्कचके युद्ध में दुर्योधनकी सेनाका भागना,	३०९	३११
९५	भीमसेन और अश्वत्थामा का घोर युद्ध,	३११	३१४
९६	पाण्डवों और भगदत्त का परस्परयुद्ध और अर्जुनके पुत्रइरावान्का बध,	३१४	३१९
९७	अर्जुनके साथ भीष्मपितामह का छटेदिन का घोर युद्ध,	३१९	३२४
९८	दुर्योधनका यह समझ के कि भीष्मजी पाण्डवों पर दया करतेहैं इससे भीष्मजीकेपासजाके यहआज्ञामांगना कि कर्ण पांडवोंसेयुद्धकरें,	३२४	३२६
९९	भीष्मजीका क्रोधित होके दुर्योधनसे यह कहना कि मैं शिखण्डी जोकि पहले की स्त्री है उसको छोड़के और सन्मुख आये हुये सब योधोंसे युद्ध करके आपको प्रसन्न करूंगा,	३२७	३३०
१००	भीष्मजीको रक्षाके लिये सब कौरवोंको युक्त होना व सब पाण्डवों को भी रण में उपस्थित होना तिसमें अर्जुन व भीष्मजीका परस्पर घोर युद्ध होना,	३३०	३३२
१०१	अभिमन्यु व कौरवों के युद्धसे कौरवोंकी सेना पराजितदेखके दुर्योधनकी आज्ञासे अलम्बुष राक्षस का अभिमन्युसे घोर युद्ध करना,	३३२	३३५
१०२	अभिमन्यु और अलम्बुषका घोरयुद्ध व औरभी कौरव पाण्डवोंका परस्पर युद्ध,	३३५	३३९
१०३	द्रोणाचार्य्य और अर्जुनका युद्ध व औरभीकौरव पांडवोंका घोरयुद्ध,	३३९	३४१
१०४	अर्जुन व भीष्मका युद्ध व शिखंडी करके भीष्मजीको घात न करना,	३४२	३४५
१०५	सुशर्मा व अर्जुनका महाघोर संग्राम होना व अर्जुन करके सुशर्मा की सेना का भागना;	३४५	३४७
१०६	पाण्डवों से घिरे हुये भीष्म को देखके उसकी रक्षाके लिये दुर्योधनका दुश्शासन की सेना को भेजना व पांडवों करके उस सेना का परास्त होना,	३४७	३४९
१०७	भीष्मजी करके पाण्डवोंकी सेनाका व्याकुल होना,	३४९	३५४
१०८	भीष्मजीके पास युधिष्ठिर व अर्जुनादिका जाना और भीष्मजीकी मृत्यका उपाय पूछना व भीष्म से लड़ने के लिये श्रीकृष्ण जी का अर्जुनको समझाना,	३५४	३६१
१०९	शिखंडी व पाण्डवों करके भीष्म जीका युद्ध करना,	३६१	३६५
११०	दुर्योधन भीष्म सम्बाद वर्णन,	३६५	३६८
१११	पाण्डवों का भीष्मजी के पास लड़ने के लिये जाना व दुश्शासन और अर्जुन का महाघोर संग्राम वर्णन,	३६८	३७१

अध्याय	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
११२	द्वन्द्व युद्ध वर्णन,	३७१	३७४
११३	भीष्मकी रक्षाकेलिये द्रोणाचार्य्यका अपनेपुत्र अश्वत्थामाकोभेजना,	३७४	३७७
११४	भगदत्त कृपाचार्य्य शल्य कृतवर्मा आदि व भीमसेनका महाघोर संग्राम वर्णन,	३७७	३८१
११५	शिखंडीको आगे करके अर्जुनका भीष्मजी से युद्ध करना,	३८१	३८४
११६	दशवें दिनके युद्धका वर्णन,	३८४	३८७
११७	कौरवों पाण्डवोंका महाघोर युद्ध वर्णन,	३८७	३९१
११८	अर्जुनकी आज्ञासे भीष्मजी को शिखंडी का मारना व दुश्शासन का भीष्मकी रक्षाके लिये युद्ध करना व अर्जुनके बाणोंकरके भीष्मजी का मोहित होना,	३९२	३९६
११९	भीष्मजी का दशहज़ार हाथी व सात महारथी व पांचहज़ार रथो व अन्य चौदह हज़ार मनुष्य व दश हज़ार घोड़े व राजा विराट के भाई सतानीक को मारना,	३९६	३९९
१२०	शिखंडी को आगे करके अर्जुन का भीष्मजी को मारना व महा घोर युद्ध होकर भीष्मजीका रथसे औंधे होकर गिरना व सब लोगों का उनके पास आना और बिलाप वर्णन है,	३९९	४०७
१२१	भीष्मजी के पास कौरवों व पांडवों का आना व द्रोणाचार्य्य इत्यादिकका बिलाप व भीष्मजीका अर्जुनसे बाणोंकी तकियामांगना,	४०७	४०९
१२२	भीष्मजीके मांगनेपर अर्जुनको बाणोंकी तकिया देना व भीष्मजी का अर्जुनकी प्रशंसा करना व कौरवों पाण्डवों का भीष्मजी की परिक्रमा करना वर्णन,	४१०	४१२
१२३	भीष्मोपदेश वर्णन,	४१२	४१६
१२४	कर्णका भीष्मजीके पास आना व उसको छातीमें लगाकर प्रशंसा करना और पांडवोंसे सलाह करनेके लिये कहना व कर्ण को वह बात न मानकर पाण्डवों से युद्ध करने के लिये आज्ञा लेना,	४१६	४१८

इति भीष्मपर्व सूचीपत्रम् ॥

—※—

श्रीगणेशायनमः ॥

महाभारत भाषा भीष्म पर्व ॥

मङ्गलाचरण ॥

श्लोक

वाणीबोधविधायिनीं गजमुखंश्रीशङ्कराद्धांगिवाम् । नत्वाभारतभीष्मपर्व तिलकं मूलार्थमुत्थामयम् ॥ पूर्वेषांमतमाकलय्यतुकलौ सन्मानवीभाषया । श्रीकालीचरणश्चकारचतुरोविज्ञःसतांसिद्धये ॥ १ ॥ उत्थास्त्वनेकविधबुद्धि सुबोधदाःस्युःनैतद्भयंममदद्यमनतेषुदोषम् किंचाऽवलोक्यमतिरंकमनुष्य मौक्यम् तद्बुद्धिबोधविभवायकरोमिभाषाम् ॥ २ ॥ नाशंकनीयंपूर्वेषां मतमेते नदूष्यते । किन्तुचक्षुर्मृगाक्षीणांकज्जलेनैवभूष्यते ३ ॥

दो० सुमति सुजन परभणिन कौं मन दृग दै सुनलेत ।
यथा कनक की कालिका अनल विमल कर देत ॥ १ ॥
भाषा तिलक प्रयोधयुत कीन्हो कलि जनहेत ।
विविध ग्रन्थ संस्कृत गिरा तदपिन ते सुखदेत ॥ २ ॥

सो० रक्ताम्बर विघ्नेश एक दन्त सुन्दर परम ।
ऋद्धि सिद्धि सर्वेश करों प्रणाम सप्रेमतेहि ॥ १ ॥
तदनु विनय युत नौम्य पादाम्बुज श्री शारदा ।
बन्दौं गुरुपद सौम्य ज्ञान प्रद अज्ञान हर ॥ २ ॥
भारतेश जगदीश माधव श्री रुक्मिणि रमण ।
बन्दौं धरि महि शीश पार्थ रथस्थ स्वरूपको ॥ ३ ॥

दो० भारत कवि श्री व्यासके चरण कमलको ध्याय ।
भाषा में भारत करत कालीचरण सचाय ॥

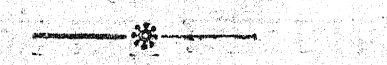

भीष्म पर्व्व प्रारंभः ॥

पहला अध्याय॥

जन्मेजयउवाच ॥

राजा जन्मेजय बोले कि महाबीर योद्धा कौरव पाण्डव सोमक और अनेक देशोंसे आयेहुये बड़े २ महात्मा राजालोग कैसे२ युद्ध करते हुए उसको बर्णन कीजिये वैशम्पायन बोले कि हे राजा जन्मेजय बड़े वीर शूर प्रतापी कौरव पाण्डव सोमक आदि अनेक राजालोगों समेत महा उत्तम तीर्थ कुरुक्षेत्र में जैसे युद्ध करते हुये उसको मैं कहताहूं तुमचित्त लगाकर सुनो कि वह महाबली युद्धमें प्रशंसनीय विजयके चाहने वाले वेदपाठी पाण्डव सोमकों समेत कुरुक्षेत्र में उतर कर कौरवों के सन्मुख बर्त्तमान हुए, और पराक्रम के द्वारा विजयकी आशा रखनेवाले युद्धभूमिमें बर्त्तमान दुर्य्योधन के उस दुःख से महाखेदित सेना के सन्मुख पहुंचकर कुरुक्षेत्र के पश्चिम भागमें सेनाओं के मनुष्यों समेत पूर्व्वाभिमुख हो स्थिरता से नियत हुए फिर कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर ने स्यमन्त पंचकसे बाहर अपनी बुद्धिके अनुसार हजारों शिविर अर्थात् खेमे डेरे तंबू तैयार किये और वृद्ध बालक स्त्री इनको छोड़कर सब पृथ्वी के मनुष्य मात्र हाथी घोड़े रथ इत्यादि समेत यहांतक इकट्ठे हुए कि पृथ्वीके प्रदेश निर्जनसे होगये, हे राजेन्द्र जन्मेजय जहांतक कि सूर्य्य जंबूद्वीपमें प्रकाश करता हुआ संतप्त करताहै उस पृथ्वी

मंडल के सबराजा लोग अपनी २ सेनाओंसमेत आकर इकट्ठे हुए, सब बरणोंने देशनदी पर्व्वतों को और बहुत योजन के उस पृथ्वी मंडलको उल्लंघन करके एक स्थानमें निवास किया, तब महाबुद्धिमानराजायुधिष्ठिरने उनश्रेष्ठक्षत्री राजाओंसेलेकरम्लेच्छपर्य्यन्त लोगोंके निमित्त बहुत उत्तम २ प्रकारके भोजनोंके बनवानेकी आज्ञादी और भोजनके अनन्तर रात्रिके समयसब लोगोंको उत्तम स्वच्छ बिस्तरों समेत शय्या सोनेकोदीं इस प्रकारसे इसबुद्धिमान पांडवोंके बड़े भाई युधिष्ठिरने सबका यथोचित मान सन्मान करके युद्ध बर्त्तमान होनेके समयपर अपनी सेनाके मनुष्यों की पहचान के लिये सबके चिह्न नाम और आभूषण रथ आदिमें लगवादिये, तबतो महासाहसी दुर्य्योधनने अर्ज्जुनकी ध्वजा पताकाको देखकर सब राजाओं समेत अपनी सेनाको पाण्डवोंसे लड़नेके लिये युद्धमें सन्नद्ध किया और आपभी अपनेश्वेत छत्रको धारण करके भाइयों समेत हजारों हाथी घोड़ों समेत उपस्थितहुआ दुर्य्योधन की इस धूमधाम और तैयारी को देखकर युद्धाभिलाषी प्रसन्न चित्त विजय के चाहने वाले पांचालने बड़े शब्दायमान शंख और मधुरवाणी वाली दुन्दुभी को बजाया तदनन्तर पांडव और श्रीकृष्णजी उस अपनी सेनाको प्रसन्न चित्त देखकर महा आनन्दितहुए फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों वीरपुरुषोंनेरथमें सवार होकर अपनेदिव्य शंखों की ध्वनिकरी इनदोनों पुरुष सिंह वीरोंके पांचजन्य और देवदत्त नाम शंखोंकी ध्वनिको सुनतेही कौरवी सेनाके वीरोंने मारे भयके मूत्र और बिष्टाकरदी जैसे कि सिंहको गर्जनाको सुनकर अन्य मृगादि पशु भयभीत होकर मूत्र पुरीषादि कर डालते हैं वैसेही कौरवी सेनाभी शंखोंके शब्दोंको सुनकर व्याकुलहोगई और पृथ्वीकी धूलि आकाशको ऐसी उड़ीजिसके कारण सूर्य अस्तंगतसा होगया और कुछनहीं जानागया और सूर्य्यको अस्तकी समान जानकर मांसरुधिर के बरसाने वाले बादलने उस समय सेनाके चारों तरफ के मनुष्यों पर मांस और रुधिरकोबर्षाकरीयहबड़ा आश्चर्य्य सा हुआ तदनन्तर नीचेकी ओरसे पृथ्वीके कंकड़ों कारवींचनेवाला

वायुबड़े बेगसे ऐसा प्रचण्डहुआकि जिसने संपूर्णसेना के मनुष्यों को घायल कर दिया हे राजेन्द्र इस प्रकार से पीड़ित होकर दोनों ओर की सेनाओं के मनुष्य युद्ध करने के लिये अत्यन्त प्रसन्नचित्त कुरु क्षेत्रके मैदान में नियत हो सावधान और व्याकुल होकर क्षोभित सागरकी समानताको प्राप्तहुए अर्थात् उन दोनों सेनारूपी समुद्रों का ऐसा अपूर्व योग हुआ जैसाकि प्रलयकेसमय दोनों समुद्रों का सम्पात होता है, और सब पृथ्वी जिसमें केवल बालक और वृद्धही शेषरहगयेथे वह कौरवोंके बुलायेहुए उनसेनावोंके समूहोंके कारण घोड़े मनुष्य रथ और हाथियों सेभी शून्य होगई तदनन्तर उन कौरव पांडव और सोमकोंने नियम करके युद्धके इन धर्म्मों को नियतकिया कि इसनियत कियेहुयेयुद्ध के समाप्त होनेपर हम सबको प्रीति परस्पर में होवे,इस निमित्तकि फिर किसीके एक से मिलाप में भिन्न भाव न होनेपावे बचन रूप शस्त्रों से सन्मुख होने वालोंको बचनोंहीसे लड़ना योग्य है सेना से बाहर होजाने वालेको कभीन मारना चाहिये रथीरथीसे हाथी का सवार हाथी के सवारसे अश्वारूढ़ अश्वारूढ़से पैदल पैदल से लड़ने को योग्य हैं अर्थात् जैसा कि उचित युद्ध होताहै वैसाही अपने बल पराक्रमके साथ करना योग्य है. और मुख से बोल कर शस्त्र प्रहार करना चाहिये परन्तु विश्वासित और व्याकुलमनुष्य पर शस्त्र प्रहार करना अयोग्य है और एक के साथ भिड़े हुए शरणमें आयेहुए वा ऐसे व्याकुल लोग जो टूटे शस्त्र और बिना बख्तर के हों उनको कभीन मारना चाहिये इनके सिवाय सोतेहुओं को शस्त्रों के लानेवाले वा बनाने वालोंकोभी न मारे और भेरी शंख नगाड़े आदि बाजों पर किसी दशामेंभी शस्त्र न चलाना चाहिये इसप्रकार उनसब परस्पर देखनेवालेकौरव पांडव और सोमकोंने नियमकरके बड़ाआश्चर्य्य किया इसके पीछे वह सब महात्मा वीर युद्ध भूमिमें प्रवेश करके, अपने पराक्रमी सेनाके प्रसन्न चित्त मनुष्यों समेत मनमें प्रसन्नहुए ३५ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्वणि युद्धनियम वर्णनो नाम प्रथमो ऽध्यायः ॥ १ ॥

दूसरा अध्याय

बैशम्पायनबोलेकि युद्धके नियम होनेके पीछे सबवेदयज्ञोंमें श्रेष्ठ सत्यवती के पुत्र भरत बंशियों के पितामह आगे होनेवाले युद्धके वृत्तान्त के प्रत्यक्ष दर्शी भूत भविष्य वर्त्तमान के ज्ञाता समर्थ भगवान् वेदव्यास ऋषि कौरव पांडवों की सेनाको दोनों ओर तैयार देखकर उस शोचग्रस्त अपने पुत्रोंके अन्याय के ध्यान करने वाले राजा धृतराष्ट्र से गुप्त प्रयोजन के साथयहबचन बोलेकि हे राजन् तुम्हारे पुत्र और अन्य तुम्हारे सहायक राजा लोग मृत्यु के बशीभूत हैं वह युद्ध भूमि में एक२ दूसरे से सम्मुख लड़कर नाशको पावेंगे, हे भरतबंशी उन मृत्यु के बशीभूत और नाश होने वालों में समय की बिपरीतताको जानकर शोक ग्रस्त मनको मतकर हे राजा जो तू इनको युद्ध में देखा चाहता है तो मैं हे पुत्र तुझको नेत्र देताहूं तू उनके युद्धों को देख, धृतराष्ट्र बोले कि हे ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ मैं अपने ज्ञाति बन्धु और पुत्रों का मरना नहीं देखना चाहता हूं केवल यही चाहता हूं कि आपके तेज से युद्ध का सब वृत्तान्त सुना करूं, बैशंपायन बोले कि जब व्यासजी ने धृतराष्ट्र को जाना कि यह युद्ध देखना नहीं चाहता किन्तु पूरा पूरा वृत्तान्त युद्ध का सुनना चाहता है तब महावर-दायी होकर उन्हों ने संजय को बरदिया और राजा से कहा कि हे राजा यह संजय तुमसे सब लड़ाई का वृत्तान्त कहैगा दिनमें या रात्रिमें गुप्त प्रकट कैसाही वृत्तान्त हो सब तुमसे बर्णन करेगा और यह संजय दूसरे के मनकी शोची हुई बातको भी जानेगा शस्त्रों से इसका घात नहीं होगा और यह परिश्रम से कभी खे-दित भी नहीं होगा हे पुत्र धृतराष्ट्र यह गोलगनका बेटा इस युद्ध से अलग रहैगा और हे भरतर्षभ मैं इन कौरव पाण्डव और सब राजाओं की कीर्त्ति को कथाओं के द्वारा बिख्यात करूंगा हे नरोत्तम ऐसाही होनेवाला है इसमें तुमको शोच करना अवश्य नहीं है, वह होनहार बात रोकने में नहीं आसक्तो जिधर धर्म है

उधर ही विजय है वैशम्पायन बोले कि वह कुरुवंशियों के पिता मह महाभाग भगवान् व्यासजी ऐसा कहकर फिर धृतराष्ट्र से बोले कि हे महाराज यहां इस युद्ध में बड़ी हानिहोगी क्योंकि मैं यहां भयकारी कारण को देखता हूं, बाज गिद्ध कौवे और कंक नाम पक्षी बगलों समेत वृक्षों की डालियों पर एक साथही गिरते हैं और इकट्ठे होजाते हैं यह सब पक्षी बड़े प्रसन्न होकर युद्ध को सन्मुख देखते हैं और कच्चा मांस खाने वाले जीव हाथी घोड़ों के मांस को खायंगे, भयानक और भय उत्पन्न करने वाले कंक नाम पक्षी निर्दय ताके शब्द करते हुये मध्य में से दक्षिण दिशा की ओर चले जाते हैं हे भरत वंशी मैं पहली और पिछली दोनों संध्याओं में उदय और अस्त होनेवाले सूर्य्य नारायण को सदैव प्रतिदिन राहु से घिरा हुआ देखता हूं श्वेत लोहित रक्त इत्यादि अनेक रंग धारण करने वाली बिद्युत ने संध्या के समय सूर्य्य को घेरलिया है यह मैं रात्रि दिन देखता हूं यह भयंकर उत्पात के शूचक लक्षण हैं और सूर्य्य चन्द्रमा नक्षत्रादि में से अग्नि के कण निकलते मालूम होते हैं यह भी महा अशुभ शूचक उत्पात हैं, कार्त्तिक मास की पूर्णिमासी के दिन आकाश में लाल रंग चन्द्रमा प्रभा रहित अपने कृष्ण चिन्ह के बिना अग्नि के समान वर्णवाला दिखाई दिया, इसका फल यह दिखाई दे रहा है कि परिघ के समान प्रलंब भुज वाले शूरबीर और मृतक राजा लोग वाराजकुमार पृथ्वी को आच्छादित करके सोवेंगे और अन्तरिक्ष में उछल २ कर लड़ते हुये बराह नाम सूकर और वृष दंश दोनों के भयकारी महा शब्दों को रात्रि के समय नित्य २ देखता और सुनताहूं और देवताओं की मूर्त्तियां कांपती हंसती हुई मुखों सेरुधिर उगलती हैं और पसीनों में तर हो होकर पृथ्वी पर गिरती हैं, और हे राजन् दुन्दुभियां बिना बजाये आप अच्छे प्रकार से बजती हैं और क्षत्री लोगों के वृहत और उत्तम दिव्य रथ घोड़ों के बिनाही चलते हैं, कोकिल शत पत्र नीलकण्ठ भास और तोते सारस मोर यह सब पक्षी भयानक शब्दों को करते हैं और घोड़ोंको

पीठों पर बैठे हुये बाज अपने जिह्वा रूपी शस्त्रों से शब्द रूपी आघातों को करते हैं और सूर्य्य के उदय होने पर टीड़ियों के हजारों समूह दृष्ट पड़ते हैं, हे भरतवंशी दिग्दाह युक्त दोनों संध्या प्रकाशमान होती है और बादलों से मांस और धूलि की वर्षा होती है और यह जो साधुओं की मानी हुई अरुन्धती तीनों लोकों में प्रसिद्ध है उसने भी वशिष्ठजी की ओर पीठ की है और यह शनिश्चर रोहिणी नक्षत्र को पीड़ित करता हुआ वर्त्तमान है चन्द्रमा का रूप ढक गया इन सब उत्पातों से महाभय उत्पन्न होगा और बिना बादलों के आकाश में बड़ी भारी भयानक गर्जना सुनी जाती है और रोती हुई सवारियों के अश्रुपातों की वृष्टि पृथ्वी पर होती है ३१॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्व्वणिभयानकउत्पातवर्णनोनाम द्वितीयोध्याय. २॥

तीसरा अध्याय॥

व्यासजी बोले कि हे राजा गधे गौओं के साथ विषय करतेहैं और पुत्र माताओं के साथ रमण करते हैं और बनके अनेक वृक्ष बिना ऋतु के फल फूलोंको दिखलाते हैं गर्भवती पुत्र उत्पन्न करने वाली स्त्रियां भयंकारी बालकोंको उत्पन्न करती हैं गधेआदि पशु कच्चे मांस खाने वाले पक्षियों के साथ मिलकर परस्पर भोजन करते हैं, तीन सींग चार नेत्र पांच पैर दोलिंगेन्द्री दो शिर दो पूंछ वाले असभ्य अशुभ रूप मांसाहारी और निर्मांसाहारी पशु उत्पन्न होते हैं और तीन पंजे चोटी चार डाढ़ सींग धारण किये गरुड़ नाम पक्षी अशुभ और भयानक शब्दों को बोलते हुये उत्पन्न होते हैं ४ इसी प्रकार ब्रह्म बादियों की स्त्रियां भी बिपरीत दृष्ट आती हैं तेरे पुर में गरुड़ पक्षी मोरों को उत्पन्न करते हैं हे राजा घोड़ी गौ के बछड़े को और कुतियां शृगाल को और तोते अशुभ बोलने वाले कुक्कुट और करभोंको उत्पन्न करते हैं, कोई २स्त्रियां चार २ पांच २ कन्याओं को एक समय में उत्पन्न करती हैं आश्चर्य्य यह कि वह कन्या पैदा होतेही नाचती गाती और हंसती

हैं और सब नीच मनुष्यों के नातेदार भाई बन्धु का नेकुबड़े आदि भी होकर हास्य करते भय को दिखलाते हुये नाचते और गाते हैं यह शस्त्र धारी मूर्त्तियां काल के बिपरीत होने से गिरती हैं और बालक लोग हाथों में दण्ड लिये हुए परस्पर में एक दूसरे के सन्मुख दौड़ते हैं और युद्धाभिलाषी होकर अपने बनाये हुये नगरों को परस्पर विध्वंस करते और स्थानों को ढाते हैं, पद्म, उत्पन्न कुमुद और सूर्य्य के उदय में खिलने वाले कमल वृक्षों पर पैदा होते हैं और संसार में चलने वाले वायु भयानक चलते हैं और धूलों का उड़ना शान्त नहीं होता है, पृथ्वी अत्यन्त प्रकाशित होती है और राहु सूर्य्य से मिलता है इसी प्रकार केतु भी चित्रा नक्षत्र को घेरे हुये नियत है यह अधिक तर कौरवों के नाशको देखता है और बड़ाघोर धूम्रकेतु पुष्य नक्षत्र को दबाये हुए उपस्थित है यह महाउग्र ग्रह दोनों सेनाओंकेघोर अकल्याण को करेगा मंगल तिरछा होकर मघानक्षत्र में और वृहस्पति श्रवण नक्षत्रमें है और सूर्य्यके पुत्रशनैश्चर से पूर्बाफाल्गुणी वा उत्तराफाल्गुणी नक्षत्र दबकर पीड़ित किये जाते हैं और शुक्र पूर्व्वाभाद्रपद नक्षत्रमें चढ़कर उसको दबाये हुयेप्रकाश करता है और परिघ नाम उपग्रह के संग होकर उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रको ओर देखता है और केतुग्रह सधूम अग्नि के समान जल रहाहै और महाप्रज्वलित भयकारी राहुइन्द्र से संबंधरखनेवाले तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्र को व्याप्त करके बर्त्तमान है और अपसव्य होकर बर्त्तमान है वह कठिन ग्रह चित्रा और स्वाती के मध्य में बर्त्तमान रोहिणी नक्षत्र और दोनों सूर्य्य और चन्द्रमा को पीड़ा देताहै और अग्नि के समान प्रकाशवान मंगल बारम्बार तिरछा होकर वृहस्पति जीसे दबायेहुये श्रवण नक्षत्र को पूर्णदृष्टी से बेधे हुये बर्त्तमानहै, खेतीसे प्रशंसा पानेवाली पृथ्वी सबप्रकारकेखेतोंसे आच्छादित होकर पांचशिर वाले जो और सौ शिरवालेधानों को उत्पन्न करतीहै, संसारमें पूज्य और जिनमें यह सबजगत् बर्त्तमान है ऐसी गौएं अपने बछड़ोंके समीप होकर रुधिरको छोड़तीहैं, इस

का यहफलहै कि धनुषों से अग्नि निकले और खड्ग अत्यन्तअग्नि रूपहों और शस्त्र व्यक्त होकर संग्राम में युद्धको प्रकट देखें और शस्त्रोंकी चमक का रंग अग्निके समान है कवच और ध्वजाओं का बड़ा नाशहोगा, हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र पांडवोंके साथ कौरवों की शत्रुता होनेपर पृथ्वी पर रुधिर की नदियां बहैंगी और ध्वजा रूप नौकाओं से व्याप्तहोकर व्याकुल होंगी और अत्यन्त क्रोध रूप मुखसे पशुपक्षी बड़ेभयको सूचितकरते और अशुभकोप्रकाश करते हुए दिशाओंमें बोलते हैं, रात्रि के समय एक पक्ष एकनेत्र और एकही चरणका रखनेवाला अत्यन्त क्रोधी आकाश चारीपक्षी रुधिरको उगिलता हुआसा भयकारी शब्दोंको करताहै, हेराजेन्द्र शस्त्रअग्नि के समान वर्त्तमानहैं जिनसे महातेजस्वीसप्तऋषियोंके प्रकाश मंदहोकर ढकेहुएसे विदित होतेहैं, और अत्यन्त तेजस्वी बृहस्पति और शनैश्चर दोनोंग्रह वार्षिक गतिमें नियत होकर बिशाखा के सन्मुख नियत दीखतेहैं एकही दिन तेरस तिथिको दोनों सूर्य्य और चन्द्रमा ग्रसेगये और बिनापर्वकेराहु ग्रह से मिले हुये प्रजाके नाशको चाहते हैं, चारोंओर धूलिकी वर्षासे सबदिशाअशोभितहोगईं और रात्रिके समय बड़े भयानक उत्पात और रुधिर को मेघ बरसाते हैं, और हेराजन् राहुकृत्तिका को पीड़ा देता हुआ अपने कठिनकर्मों से भराहुआ देखागया है, धूमकेतु नाम उत्पात में नियत होकर वायुचलते हैं यह वायु महा युद्धकारी शत्रुता को उत्पन्न करतेहैं, और हे राजा सब नक्षत्रों के मध्य रक्षा न करने वाला पाप ग्रह बड़े भयको पैदा करता हुआ तीनों छत्रोंमें सब के शिरोंके छत्रों कलशों पर गृध्र पक्षी होकर गिरता है, एक मास की तेरस तिथिको बिना पर्वके चन्द्रमा और सूर्य्य दोनों राहु ग्रह से ग्रसेगये हैं यह दोनों प्रजाका नाशकरेंगे इसलिये मैं चौदशपूर्णिमासी और व्यतीत प्रतिपदा को जानताहूं परन्तु अमावास्या और तेरस के योग को नहीं जानताहूं वहां रुधिर से भरेहुए मुखवाले राक्षस लोगोंकी तृष्णा अधिक शोणित पीनेकी होगी और नदियों

में बड़ी नदियां तो विरुद्ध प्रवाह युक्त होगईं और छोटी नदियां रुधिर समान जलको बहने लगीं कुएं फेनोंसेभरेहुए बैलोंके समान क्रीड़ा करते हैं और इन्द्र के बज्र के समान प्रकाशमान महाशब्दायमान उल्कापात होतेहैं अब तुम प्रातःकाल अन्याय के फल को पाओगे और महर्षियों ने भी सब दिशाओं में अंधेरा देखमसालें बाल घरसे बाहर निकलकर परस्पर में एकत्र होकर कहाहै कि पृथ्वी हजारों राजाओं के रुधिर को पीवेगी और हे समर्थ इसीप्रकार कैलास मन्दराचल और हिमाचल पर्व्वतों से हजारों बड़े घोर शब्द शिखरों पर गिरते हैं, और पृथ्वी के कम्पसे चारोंसमुद्र पृथक् २ अपनी २ मर्य्यादाओं को उल्लंघन और सब संसार को व्याकुल करतेहुए बड़ी वृद्धियुक्त हुए हैं और कंकड़ों से भराहुआ भयानक वायु ऐसा चलता है कि जिसके वेगसे बिजली से सताये हुए अनेक बृक्ष टूट २ कर गांवोंकी सीमाओं और नगरोंके भीतर जाकर गिरते हैं और ब्राह्मणोंसे होमीहुई अग्नि नील रक्त और पीतरंग की होतीहै वह दुष्ट गंधावामार्ची भयानक शब्दकोकरती विदित होतीहै हे राजा स्पर्श गंध और रस सब विपरीत हैं, बारंबार कंपायमान होकर ध्वजायें धूमको छोड़ती हैं और चारोंदिशाओंमें अच्छे फूले फले बृक्षोंके ऊपर अग्नि मंडल में बैठेहुए काक भयकारी रोदन करते हैं और पक्षी पक्का पक्का अर्थात् नाशहोनेवालोंका परस्पर युद्ध है ऐसे अत्यन्त शब्द करते हैं और राजाओंके नाश सूचन करने को ध्वजाओं की नोकोंमें छिपजाते हैं दुष्ट हाथी ध्यान करते हुए मूत्र विष्टाको करते कंपायमानहैं और गरीबहाथी और घोड़े पसीनोंमें चूर हैं अब तुम यहां यह बातें सुनकर समय के अनुसार निश्चय करो जिस्से कि हे भरतबंशी यह संसारनाश न होवे बैशंपायन बोले कि पिताके इन बचनों को सुनकर धृतराष्ट्र यह बोला कि हे पिता व्यासजी मैं इसको समीपही होनहार मानताहूं और मनुष्यों का नाश होगा, जो राजा लोग क्षत्रीधर्मसे युद्धमें मरेंगे वह सब वीरोंके लोकों को पाकर मोक्षरूप सुख को

पावेंगे, हे पुरुषोत्तम भारी युद्धमें प्राणोंको त्यागकर यहां तो कीर्ति और परलोक में बहुत काल तक महा सुख को पावेंगे वैशंपायन बोले कि हे राजेन्द्र जन्मेजय वह कवीन्द्र व्यासदेव मुनि ऐसाहीहै यह कहकर अपने पुत्र धृतराष्ट्र के साथ चिन्तामें ग्रसितहुए और एक मुहूर्त पर्य्यन्त ध्यानावस्थित होकर यह बचन बोले कि हे राजा निस्सन्देह काल जगत् को नाश करता है और फिर उत्पन्न भी करता है यहां किसी को सदेवता नहीं प्राप्त है, तुम जातवाले, कौरव, नातेदार, और मित्रों के धर्मरूपमार्गों को उपदेश करो और तुम्हीं उनके रोकनेमें भी समर्थहो ज्ञातिवालों का मारना नीचकर्म कहाजाता है इससे इसमेरी अप्रियबातको मतकर हे राजन् यहकाल तेरेबेटे दुर्य्योधन के रूपसे प्रकट हुआहै, मारने बालेको वेदमें अच्छानहीं कहतेहैं और किसीदशामें भी वहप्रिय कारी नहींहै जो धर्मको मारता है वह धर्म उसीको मारताहै कुल का धर्म अपना देहहै, समर्थहोनेपर इसकुलके और इसीप्रकारअन्य राजाओंके नाशके लिये कालसे प्रेरित होकर तू आपत्तिकाल के समान कुमार्गमें चलताहै, हेराजातेरा अनर्थ राजरूपसे उत्पन्नहुआ है तू अत्यन्त अधर्मीहै अपने पुत्रोंको धर्मका उपदेशकर, हेदुर्धर्ष तुझको राज्यसे क्यालाभहै जिसके लिये तैंने पापको बिसाया है अपने यश और धर्मका पालन कर जिससे कि तू स्वर्गको पावेगा पाण्डवोंको राज्यदो और कौरवोंको शान्तीदो यह पिताके वचन सुनकर अंबिकाकापुत्र वचनका जानने वाला धृतराष्ट्र पिताके इनशिक्षारूपी बचनोंको तिरस्कार करके फिर यह बचन बोला कि जैसा आपजानतेहैं वैसाहीमैंभी जानताहूं और मुझको अपना और दूसरोंका जीवन वा नाश ठीक २ विदितहै हेतात यहलोक अपने प्रयोजन में बड़े २ मोहोंको पाताहै आप मुझको भी लोकरूपही जानो, हेमहाप्रभाव वाले मैं आपको प्रसन्न करताहूं आप पंडित होकर हमारी गति और उपदेश के करनेवालेहो परंतु हे महर्षी वहपुत्र मेरे स्वाधीन नहींहैं और मैं बुद्धिसे अधर्म करने को नहीं

चाहताहूं आप भरतबंशियोंके यश और कीर्तिके कारण रूपहो और कौरव पाण्डव दोनोंके पितामहभी हो, व्यासजी बोले हे राजा धृतराष्ट्र जो तेरे मनमें बर्त्तमान है उसको तू इच्छा पूर्व्वक कह मैं तेरे सब सन्देह दूर करूंगा, धृतराष्ट्र ने कहा कि युद्धके बीच में बिजयपाने वालोंके जो चिह्न होते हैं उनसबको हे भगवन् मैं आपसे मूलसमेत सुना चाहताहूं, व्यासजी बोले कि स्वच्छ अग्नि प्रकाशमान ऊंचीज्वाला युक्त प्रदक्षिणावर्त्ति निर्धूमहो और जिसमें आहुतियोंकी पवित्र सुगंध उठतीहोय तो विजयहोने वाले पुरुषका शुभलक्षणहै, और जहां शंखमृदङ्गोंकी बड़ी गंभीर ध्वनिहो और बड़े शब्दसे बजतेहों और सूर्य्य चन्दमाकी स्वच्छ किरणें पड़तीहों उसको विजयहोने का लक्षण जानो ६६ चलते हुये वा जाना चाहते काकोंके बोलेहुये चित्तरोचक ऐसे बचन विदितहों जोकि पीठकी ओरसे तेरीयात्राको जल्दी करते हैं और आगे से तुझको निषेध करते हैं, जिस स्थानपर युद्धभूमि में राजहंस तोते क्रौंच और शतपत्र नामपक्षी शुभबचन बोलते हुए दक्षिणओर को होंय उस स्थानपर विजयकाहोना ब्राह्मण वर्णन करते हैं जिन क्षत्रियोंको सेना अलंकारादि और कवच ध्वजा वा घोड़ोंके हींसने के सुखदायी शब्दों से शोभायमान कष्टसे देखने के योग्यहो वह क्षत्री अवश्य शत्रुओंको विजय करतेहैं, हे भरतबंशी जहां शूरवीरों के बचन प्रसन्नता से भरे हुए पराक्रम में तुलेहुये होते हैं और जिनकी माला कुंभलाती नहींहै वह पुरुषरणरूपी समुद्रको तरजाते हैं, शत्रुकी सेनामें प्रवेश करके देखनेकी इच्छाकरनेवाले योद्धाओंके प्रसन्न मन सावधानी से संयुक्त हों उनके बचन विजयको धारण करते हैं और जो सन्मुख निषेध करनेवाले हैं वहभी मृत्युसे बिदित करनेवाले हैं, रूप, रस, शब्द, गन्ध, स्पर्श यहशुभऔररूपान्तर दशासेरहितहों अर्थात् अपने मुख्य रूपमें ही नियत हों और योद्धाओं में सदैव प्रसन्नता होय यहभी बिजय पानेवालों के उत्तमचिह्न हैं, अनुकूलवायु हो इसी प्रकार बादल वा पक्षीभी हों अथवा

बादल पीछे चलते हों और इन्द्र धनुषभी इसी प्रकार हो, हेराजा यह सब विजयीलोगों के लक्षणहैं और यहीसब लक्षण मरनेवालों के लिये विपरीत होतेहैं थोड़ी वा बहुतसेनामें योद्धा लोगोंकी केवल एक प्रसन्नताही विजयको देने वाली है एकभी भागा हुआ योद्धा बहुत बड़ी सेनाको भी भागीहुईसी कर देताहै उस भागेहुएकेपीछे बड़े शूरबीर योद्धाभी भागजाते हैं भागी हुई सेना बड़ी कठिनता से फिर लौट सक्ती है जैसेकि जलोंकेबड़े बेग औरडरे हुए मृगोंके समूह कठिनतासे नहीं लौट सक्ते इसीप्रकारभागीहुई सेनाकोभी जानो, हे भरत बंशी बड़ी सेनाको सन्मुख नियतकरना असम्भवहै क्योंकि भागेहुओंमें बड़े बुद्धिमान भी भागजाते हैं, भयभीत और अलग२ होजानेवाले शूरबीरोंको देखकर औरभीभय बढ़जाताहै हे राजा अत्यन्त व्याकुल सेना अकस्मात्चारों ओरोंको भागतीहै ऐसी बड़ीसेना शूरबीरोंसेभी नियतकरनीकठिनहै राजाअपनी चतुरंगिणी सेनाको अच्छे प्रकार से ध्यान करके युद्ध करे, युक्तियोंसे अर्थात् शत्रुके चाहनेसे वा कुछ धन देने से जो विजय होती है वह उत्तम बिजय कहीजाती है और शत्रुके मनुष्योंके मध्यमें बिरोधता डलवाने से जो विजय होती है वह मध्यम विजय कहाती है और जो बिजय युद्धके द्वारा होती है उसको निकृष्ट विजय जानो क्योंकि युद्ध में बड़े २ दोष होते हैं उसका प्रथम फलतोनाश है, परस्पर में ज्ञाता प्रसन्न चित्त स्त्री आदि में मोहसे रहित दृढ़ निश्चयरखने वाले पचास शूर वीरपुरुषभी बड़ी भारी सेनाको विध्वंस करते हैं अर्थात् ऐसे लड़ते हैं कि सबको मारकर विजय पाते हैं औरमुख न फेरने वाले पांचछः वा सात शूरबीरभी पूरी बिजयको करते हैं, हेभरत बंशी उत्तम पक्षधारी बनिताकेपुत्र गरुड़जीबड़ीसेनासेभीहानिको देखकर बड़ेभारी समूहको अच्छानहीं कहतेहैं, सेनाकीआधिक्यतासे बहुधानित्य विजयनहींहोतीहैनिश्चयकरके विजयनाशवान् है इसमें प्रारब्धभी मुख्य है क्योंकि प्रारब्ध वालेही पुरुष युद्धमें विजय प्राप्त करके अपनेअभीष्टको सिद्ध करते हैं ८४ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्म पर्व्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि हे राजा जन्मेजय व्यासजी इसप्रकारकी अनेकबातें बुद्धिमान धृतराष्ट्रसे कहकर चले गये और उनकी बातों को ध्यानकरके धृतराष्ट्रनी चिन्तायुक्त हुआ और हेभरतर्षभ उसने एक मुहूर्त पर्य्यन्त ध्यानावस्थित हो बारम्बार श्वास लेकर उस बुद्धिमान संजय से पूछा कि हे संजय इस स्थानपर यह युद्ध में प्रशंसनीयशूरवीर राजालोग छोटे बड़े शस्त्रोंके द्वारा परस्पर में मारतेहैं, यह सब जीवनकी आशाकोत्यागेहुये बुद्धिमान राजालोग पृथ्वी के कारण मारते हुये शान्तीको नहीं पातेहैं और यमलोक कोबढ़ाते हैं पृथ्वी संबंधी ऐश्वर्योंको चाहतेहुये परस्परमें क्षमा संतोष इत्यादि नहीं करते हैं मैं जानता और मानताहूं कि पृथ्वी बहुत गुण धारण करने वाली है हे संजय इसको मुझसे कहो, कुर और जांगल देशमें संसारके कोट्यावधिक्षत्री इकट्ठे हुये सो हे संजय मैं उनके देश नगर ग्रामोंकी संख्यामूल समेत सुननाचाहताहूं जहां जहांसे यह आयेहैं, तुमउनमहातेजस्वी ब्रह्मऋषि व्यासजीके प्रभावसे दिव्य बुद्धिरूप दीपक और ज्ञानरूप नेत्रोंसे संयुक्तहो, संजय बोले कि हे भरतर्षभ महाज्ञानी धृतराष्ट्र मैं अपनी बुद्धिके अनुसार पृथ्वीके गुणोंका बर्णन करूंगा तुम भी शास्त्ररूपीनेत्रों को धारण किये विचार करो मैं आपको नमस्कार करताहूं, यहां दोप्रकारके जीवधारीहैं एकस्थावर दूसरेजंगम अर्थात् नहीं चलने वाले और चलने वाले और सबजीव मात्रका उत्पत्ति स्थानतीन प्रकारसे है अर्थात् अंडज स्वेदज जरायुजसे है और जंगम जीवों में जरायुज उत्तमहैं और जरायुजों में मनुष्य वा पशु हैं वहदोनों अत्यन्त उत्तमहैं वही अनेक प्रकारके रूप धारण करने वाले हैं उनके प्रकार जो वेदमें कहेगयेहैं वह संख्यामें चौदह हैं उन्हीं में यज्ञादि धर्म नियत हैं और ग्राम वा नगर के बासियों में मनुष्य श्रेष्ठ हैं और बन बासियोंमें सिंह उत्तमहैं सबजीवोंका जीवननि-

बाह परस्परमेंहै पृथ्वीको फोड़करउत्पन्न होनेवाले वृक्षादिक स्थावर कहे जातेहैं उनके पांचभेदहैंवृक्ष,गुल्म,लता,बल्ली त्वचासार और तृणजाति,पंचमहाभूतोंमें उनके उन्नीस प्रकारहैं अर्थात् स्थावरजीव ५ और जंगम १४ और लोक में गायत्री भी चौबीस अक्षरों को उपदेशकीजाती है सो हेराजा जो जीवधारियोंमें से उस सर्वगुणसम्पन्न गायत्रीको मूल समेत जानताहै वह इससंसारमें नाश नहीं होताहै ,सब पृथ्वीमेंही उत्पन्न होतेहैं और पृथ्वीपरही नाशहोजाते हैं पृथ्वी सबजीवों का निवास स्थान होकर बहुत प्राचीनहै,इनजीवोंमें सात ग्रामवासी वा सातनगरनिवासीहैंसिंह, व्याघ्र,बराह,भैंसा,हाथी,रीछ, वानर यह सात वनवासी कहे जाते हैं गौ बकरी भेड़ मनुष्य घोड़ा खिच्चर गधा इनसातों को साधु लोग ग्रामवासी कहतेहैं और यही ग्रामवासी और वनवासी चौदहपशुहैं इन्हीं चौदह पशुओंमें मनुष्यभी गिना जाताहै जिसकी पृथ्वीहै उसीका यह सब स्थावर जंगम जगत्है उसमें लोभीराजा लोग परस्पर में मारतेहैं २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसंजयधृतराष्ट्रसंवादेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय नदी पर्व्वत देश और अन्य २ जो पृथ्वी पर नियत हैं उन सबके नामोंको बर्णनकरो, हे प्रमाणके भी ज्ञाता संजय पृथ्वीका प्रमाण जैसा कि सब ओरसे है उस सबको मूल समेत मुझ से बर्णनकरो, संजय बोले कि हे महाराज पंडित लोगोंने इन सब पंच महाभूतों को एकत्र होजाने से ब्रह्माण्ड रूप और ब्रह्मरूप बर्णन किया है, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश यह पांचो क्रमसे एकसे दूसरा एक २ गुण अधिक रखनेवाले हैं, मूल जाननेवाले ऋषियोंने पृथ्वी के शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पांच गुणकहे जल में चार गुणहैं एक गन्धगुण नहीं है अग्नि के तीन गुण शब्द स्पर्श और रूप वायुमें शब्द

वा स्पर्श है आकाश में केवल एक शब्द ही गुण है, हे राजा पंच महाभूत रूप सब लोकोंमें यही पांच गुण वर्त्तमान हैं, उन्हीं में जीवधारी नियत हैं, निश्चय करके जब प्रलय, सुषुप्ति, समाधि, मोक्ष इनचारोंमें ब्रह्मभाव होताहै तब वह भक्ष्य भक्षक परस्परमें सन्मुख नहीं होते और जब वह ब्रह्म भावसे गिरकर परस्परभिन्न २ रूपों में प्रवेश करते हैं तब निश्चय करके जीव जीवोंपर गिरते हैं क्रमसेही उत्पन्न होतेहैं और क्रम २ सेही नाश होजाते हैं और वह सब असंख्य हैं इस कारण इन सबका ब्रह्मरूप है फिर प्रलय के पीछे पंचभूत संबंधी भूगोल आदि धातु जहां तहां दृष्टिगोचर होतेहैं उनके प्रमाणों को मनुष्य बुद्धिकी तर्कनाओं से कहते हैं अर्थात् सिद्ध लोग ब्रह्माण्डको भेदकर जातेहैं वहां भी बासनारूप धातु और पंचभूत संबंधी प्रकटरूप धातु दिखाई देतीहैं इसकारण वह असंख्य हैं, निश्चय करके जो ध्यान से भी बाहर हैं उनको तर्कनाओंसे कैसे सिद्ध करसक्ते हैं, जो तीनोंगुण और पंचभूतादि से पृथक् हैं वह ध्यान भी अगम्य ब्रह्म का लक्षण है, हे कौरवनंदन अब मैं सुदर्शन नाम जंबूद्वीप का वर्णन करताहूं कि यह परिमंडल नाम द्वीप चारोंओरसे देशरूप अथवा चक्रकेसमान नियतहै, नदियों के जलसे और बादलों के रूपपर्व्वतों से अथवा नानाप्रकार के रूपवाले पुर वा देशोंसे ढकाहुआ है और फूले फले वृक्ष धन धान्य आदिसे संयुक्त खारी समुद्र से घिराहुआ है, जैसे कि मनुष्य दर्पणमें अपने मुखको देखता है उसी प्रकार सुदर्शन द्वीप ब्रह्माण्ड स्वरूप चन्द्रमंडल रूपी मनमें दिखाई देताहै, उस मनरूप चन्द्र मंडलके एक सूक्ष्म वृत्तीनाम भागमें स्थूल सूक्ष्मनाम दो रूपधारी संसाररूपी पीपलका वृक्ष है और मनके एक भागमें ईश्वर जीव नाम दोरूप रखनेवाला परमात्मा ब्रह्म है अर्थात् स्थूल सूक्ष्म संसार और जीव ईश्वर यह चारों ब्रह्मके बीचमें कहना केवल मन का संकल्प है वह सुदर्शन द्वीप सब औषध समूहोंका रखनेवाला सब ओर से समुद्र और देशोंसे घिरा है उस परमात्मा से जल

आदि तत्व अर्थात् संपूर्ण संसार अन्य हैं और सब संसार की प्रलय होनेपर शेष रहनेवाला ईश्वर उस सब सृष्टिका सिद्धान्त कहाजाता है अर्थात् ऊपर लिखीहुई प्रलय के क्रमानुसार सब ब्रह्माण्ड ईश्वर में लय होजाता है इसी कारण वह सब संसारका सिद्धान्त अर्थात् परिणाम रूप है यह परमात्मा उस ईश्वरसे भी अन्य शुद्ध ब्रह्म कहाजाताहै इसको संक्षेपसे सुनो तात्पर्य्य यहहै कि यह जंबूद्वीपही स्थूल भूगोलहै प्रथम इन्द्रादिकसब देवताओंने इस पृथ्वी पर तप यज्ञादिक करके अपने स्थूल शरीरोंको त्याग सूक्ष्म शरीरोंको पाकर अपने तपोंके फलसे स्वर्गादिक के राज्योंकोपाया इसी प्रकार इस जंबूद्वीप में शुभकर्म करने वालोंके कर्म फलोंसे शेषछः सूक्ष्मद्वीप ब्रह्माण्डके बीचमें प्रकट हुये इससे यह जंबूद्वीप मानों क्षेत्रालयहै इसमें वस्तुओंको उत्पन्न करके बाकीके छःद्वीपों और स्वर्ग्गादिकोंमें उनवस्तुओं को भोगतेहैं इसबिषयका कुछ सिद्धान्त छठे अध्यायके ५५। ५६ और बारहवें अध्यायके श्लोक इक्कीस में देखनेमें आवेगा १८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिजंबूखण्डवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हेबुद्धिमान संजय तुमनेअपनी बुद्धि के अनुसार जंबूद्वीप का आशय बर्णन किया और तुम मुख्यताके भी जानने वालेहो इससे इसको मूल समेत ब्योरेवार बर्णन करो, शुद्ध ब्रह्मकी जतलानेवाली माया प्रपंचसे कल्पित व्यवहार में सच्चा जो सबलब्रह्म उसके भीतर पृथ्वीके धरातलसी दृष्टि पड़तीहै उसका प्रमाण मुझसे कहो तदनन्तर स्थूल भगवतरूप वर्णन करने के पीछे संसाररूपी पीपलके वृक्षका वर्णन करना योग्य है संजय बोले हेराजा अब जंबूद्वीप का संपूर्ण ब्योरेवार वृत्तान्त सुनो कि पूर्व पश्चिमके समुद्रको स्पर्श करने वाले यहछः खंडोंके पर्व्वत हैं जो दोनों ओरको पूर्व और पश्चिम समुद्रसे मिले हुयेहैं, हिमवान,

हेमकूट, निषध, वैडूर्यनील, शशिप्रभश्वेत सर्वधातुमय शृंगवान पर्व्वत इनछःओं पर्व्वतोंपर सिद्ध चारण लोग निवास करतेहैं, हे भरतबंशी इनपर्व्वतोंके मध्य स्थलका बिस्तार हजारों योजन है और इनमें अनेक पवित्र२ देशहैं उन्हींका खण्डनामहै उनखंडों में नाना प्रकारके जातवाले लोग निवास करतेहैं यहभारत बर्षहै इससे दूसरा हेमवंत नामखंड है, और हेमकूट पर्बतसे परे हरिबर्ष नामखंडहै, नील पर्व्वतके दक्षिण और निषधके उत्तर ओरसे पूर्व्व और पश्चिम समुद्रको स्पर्श करनेवाला माल्यवान पर्व्वतहै उस माल्यवानसे आगे गन्धमादन पर्बतहै और उनदोनोंके मध्यमें सुनहरी और चारोंओरसे मंडलवर्त्ती मेरु पर्व्वतहै, वहतरुण सूर्य्यके समान प्रकाशमान और निर्धूम अग्निके समानहै और चौरासी हजार योजन ऊंचाहै, और नीचेकी ओरभी उतनाहीहै वह ऊंचा नीचा तिरछा लोकोंको व्याप्त करके वर्त्तमानहै, हे समर्थ भरतबंशी धृतराष्ट्र उस मेरुके अन्तर्गत यहचारद्वीप नियतहैं एकमुख्य जंबूद्वीप और तीन उपद्वीप भद्राश्व, केतुमाल, कौरव नामसे पुण्यवान् पुरुषोंके रचेहुये आश्रमहैं निश्चय करके जो सुमुखनाम गरुड़पक्षी है उसने सुनहरी कौवोंको देखकर बिचार कियाहै जोकि मेरुपर्वत उत्तम और बिस्तृत वा छोटे २ पक्षियों की भी मुख्यताको नहीं करने वालाहै इस कारण से मैं इसको त्याग करताहूं, प्रकाशोंका स्वामी सूर्य्य सदैव उसकी परिक्रमा करताहै और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा और वायुभी उसकी परिक्रमा करतेहैं, और वह दिव्यफल फूल मूलोंसे संयुक्तहै और सब स्वर्णमय स्थानोंसे व्याप्तहै जिसपर देवताओंके समूह गंधर्ब असुर राक्षस अप्सराओंके समूहों समेत क्रीड़ा करतेहैं, और उसपर ब्रह्मा रुद्र और देवेन्द्र आदि देवता मिलकर बड़े २यज्ञादिक करतेहैं और तुम्बुरुनाम बिश्वावसु हाहाहूहू नामगन्धर्ब उन देवताओंके सन्मुखजाके उनको अनेक स्तोत्रादिकों से प्रसन्न करतेहैं, आपका कल्याणहो उस पर्व्बतपर महात्मा सप्त ऋषि काश्यप प्रजापति सदैव पर्ब पर्बमें जातेहैं, और उसी पर्व्बत

के मस्तक पर शुक्रजीभी राक्षसों समेत बिहार करतेहैं उनशुक्रजी के यह हेमरत्नहैं उन्हीं रत्नोंके पहाड़भी अनेकहैं, और कुबेरजी उनके चौथे भागको भोगतेहैं उस धनके सोलहवें भागको मनुष्योंके निमित्तदेतेहैं, उसमेरुके उत्तरभाग में कर्णिकार राज वृक्षोंका बनहै जोकि दिव्यरूप सब ओरसे प्रफुल्लित मनोहर शिला जालोंसे अत्यन्त ऊंचाहै उसमेरुके ऊपर जीवोंके उत्पन्नकर्त्ता कर्णिकार फूलोंकी चरण पर्य्यन्त मालाको पहनेहुये सूर्य्यके समान प्रकाशित तीननेत्र धारी साक्षात् शिवजी महाराज अपनी उमादेवी समेत दिव्यजीव धारियों से व्याप्त रहतेहैं, उग्रतपी सुन्दरव्रती सत्यवक्ता शुद्धलोग उनका दर्शन करसक्ते हैं वह महेश्वरजी कुचाली पुरुषों से देखनेके योग्य नहीं हैं हेराजा उसीमेरुपर्व्वतके शिखरसे दूधकेसमान धारा रखने वाली विष्णुरूपा भयानक गम्भीरशब्दवाली वायुसे टक्कर खातीहुई श्रीगंगाजी प्रकट हुई, वहपवित्र औरपवित्रमनुष्यों से सेवित शुभ भागीरथी गंगा बड़ीशीघ्रताऔर तीव्रतासमेत चन्द्रमाके शुभ ह्रदमें बिलासकरती हुई प्रकटहुई है उसीने वह समुद्रोपम पवित्र ह्रद अपनी तीव्र धारासे उत्पन्न कियाहै जो पहाड़ोंसेभी धारणनहीं कीजातीथी ऐसी गंगाको शिवजीनिएकलाखवर्षपर्य्यन्त अपने शिरमें धारणकिया और मेरुके पश्चिमीकोणमें जंबूद्वीपकेमध्य केतुमाल नाम खण्डही उसमें बड़ादेशहै उसमेंमनुष्यों की अवस्था सतयुगादिमें दश हजार बर्ष की है वहां के मनुष्यों का सुवर्ण के समान वर्णहोताहै और स्त्रियांअप्सराओंके समान होती हैं, वहां के मनुष्य नीरोगआनन्दी सन्देहरहित स्वर्णके समान वर्ण रखनेवाले सुन्दर रूपवान् उत्पन्न होते हैं और गुह्ययक्षों के राजा कुबेरजी राक्षसोंसमेत अप्सराओंके समूहोंसे संयुक्त गन्धमादनके झुके हुए शिखरोंपर आनन्दकरते हैं, गन्धमादनके दूसरेभागके समीप अपर गंडिका नामछोटे२पहाड़ हैं वहां के जीव ग्यारहहजार बर्षकी उमरके होते हैं, वहांके मनुष्य तेजस्वी और महा बली हैं और स्त्रियां उत्पल नाम कमल के समान सुन्दर अत्यन्त दर्शनीय हैं, नील

पर्व्वतके आगे श्वेतपर्व्वत है औरश्वेतसे आगे हैरण्यकनामखंड है और शृंगवान् पर्व्वतके आगे अनेक देशों सेव्याप्तऐरावत खण्डहै औरदक्षिणोत्तरमें भरतखण्ड और ऐरावतखण्ड यह दोनोंधनुष समान अर्थात् त्रिकोणरूप हैं और बीचमें इलावर्त्तादि पांचखण्ड वर्त्तमानहैं, उनसे आगे के खण्ड गुणों में अधिकहैं और अवस्था बानी रोगता भी एकसे दूसरे में उत्तरोत्तरहै उनखण्डोंमें सब जीवधारी धर्म काम अर्थसे संयुक्तहैं हे राजा इसप्रकारसेयहपृथ्वी पर्व्वतोंसे व्याप्त है, और बड़ापर्व्वत हेमकूट नाम कैलासहै जिसपरकुबेरजी गुह्य यक्षोंसमेत बिलास करतेहैं कैलासपर्व्वत के उत्तर मैनाकपर्व्वत के सन्मुख दिव्य मुनिलोगों से भरा हुआ हिरण्य शृंग नाम बड़ा पर्व्वत है,उसकेसमीप स्वर्णरज युक्त मनोहर और दिव्य विन्दुसर नामतड़ाग है जिसपर राजाभगीरथने भागीरथीगंगाकोदेखकर बहुत बर्षोंतक निवास कियाथा वहांमणिजटितयज्ञस्तंभ और सुबर्णजटित वृक्षही यज्ञकी सीमा हैं वहीं बड़े यशस्वीइन्द्रनेभीयज्ञको करकेमहान सिद्धी को पाया, वहांहीसबसंसारके स्वामी सबसे प्रथम महातेजस्वीशिवजी चारोंओर से पवित्रात्मापुरुषोंसे सेवाकियेजातेहैं और नरनारायण ब्रह्मासनु पांचवें स्थाणुनामरुद्रजी भी वर्त्तमान हैं वहां ही प्रथम पृथ्वी पाताल और स्वर्गके मार्गमें बहने वाली दिव्यनदी श्रीगंगाजी नियत होकर ब्रह्मलोकसे चलीहुई सात प्रकारसे बस्वौकस, सारा, नलिनी, पावनी, सरस्वती जंबूनदी शीतानदी, सातवीं, गंगासिंधुनाम ध्यानसे अगम्य और दिव्य रूपसे बहती हैयह प्रभु ईश्वरकी रचना है जहां२हजार यज्ञोंके चक्रमें इन्द्र उपासना करते हैं वहां२सरस्वती गुप्त और प्रकट होती हैं, यह सातोंगंगा दिव्य रूपों से तीनों लोकों में बर्त्तमानहैं, हिमाचल में राक्षस,हेमकूटमें गुह्यक, निषधमें सर्प, गोकर्णमें तपोधन ऋषि लोगहैं, श्वेतपर्व्वत सब देवता और असुरों का कहा जाताहै निषध में गंधर्व और नील पर्व्वत पर ब्रह्म ऋषि लोग सदैव निवास करते हैं, हे महाराज शृंगवान नामपर्व्वत देवताओं का बिहार स्थानहै और यह

सातों खण्ड विभाग किये गयेहैं उनसबमें स्थावर औरजंगम जीव रहते हैं उनका देवसंबंधी और मनुष्य संबंधी धन बहुत प्रकारका देखने में आताहै, हेराजा तुम जिस दिव्य बिराट स्वरूप को मुझ से पूछतेहो उसकी संख्याकाप्रमाण करना मुझसे असंभवहै परन्तु उसका सुननाही श्रद्धाके योग्यहै अर्थात् श्रद्धावान् पुरुषही अदृष्ट पदार्थोंके मिलने के लिये कर्मोंको करता है अश्रद्धावान् नहीं कर सक्ता है, बिराट पुरुषके दोनों ओर दोखण्ड कहे हैं दाहिनेमेंभरत खंड अर्थात् कर्म भूमि और बायेंमें ऐरावत खंड अर्थात् योगभूमि और दोनों कानों में नागद्वीप अर्थात् सत्य लोक और काश्यपद्वीप अर्थात् यज्ञमें अमृतपान करनेवालेकर्म योगियोंका निवास स्थान स्वर्ग लोकहैं परमेश्वर के स्थूल और सूक्ष्म दोदिव्यरूप हैं उनमें से यह सब कहा हुआ स्थूल रूपहै और आगे के श्लोक में ईश्वर के बासना रूप सूक्ष्मरूपको कहतेहैं, हे राजा मनरूप उत्तमबाग शोभा और लक्ष्मी से भराहुआ रक्तबर्ण अन्न बस्त्रादि जिसके फल फूल और पत्ते हैं उसमें नाना प्रकार के महल युक्त यह जंबूद्वीप अर्थात् परमेश्वरका स्थूल रूपदूसरा बासना रूप दृष्टपड़ताहै ५६॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिजंबूद्वीपरूपस्थूलसूक्ष्मवर्णनेनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोलेकिहेबुद्धिमान संजय प्रथम मेरु पर्ब्बत के उत्तरीय भागके मालवन्त पहाड़के मूलसमेत वृत्तान्तोंको बर्णनकरो, संजय बोले कि हे राजा नील पर्ब्बत के दक्षिण और मेरुके उत्तर भागमें उत्तर कुरु देशहैं जोकि पबित्र और सिद्धियों से शोभितहैं वहांपर वृक्षमधुर फल फूलोंसे सदैव शोभित रहते हैं और पुष्प अत्यन्त सुगन्धित और फल महारसीले होतेहैं, हे राजा वहांकोई २ वृक्ष तो सब अभिलाषाओं के पूर्ण करने वालेहैं और अन्य बहुतसे वृक्ष अमृत समान स्वादु युक्त छः रससे युक्त दूधोंके देने वाले हैं और फूलोंमें बस्त्राभरणों को उत्पन्न करते हैं वह दिव्य वृक्ष केवल

महात्मा ऋषियों कोही दृष्ट पड़ते हैं संसारी लोगों को नहींदिखाई देते हे राजा सब पृथ्वी मणियों की बनीहुई और दिव्य सुवर्ण की बालूरखने वाली और सब ऋतुओंमें सुखसे स्पर्श होनेवाली कीच आदिसे रहित है यद्यपि पृथ्वी ऐसी भीहै परन्तु प्रारब्ध हीनों को वैसी दृष्टनहीं आती, वहां पर देवलोक से पतित लोग उत्पन्नहोते हैं वह सब बिष्णु भक्तोंसे संगकरनेवाले और अत्यन्त स्वरूपवान् होतेहैं और अप्सराओंकेसमान स्त्रियां वहां जोड़ोंको उत्पन्नकरती हैं वह जोड़े उनदूध देनेवाले वृक्षोंके अमृत रूपी दूधों को पीते हैं समयपर जोड़े उत्पन्न होतेहैं और सदैव बढ़तेहैं और रूपगुण संयुक्त सदैव एकसी पोशाकवान् होतेहैं हे समर्थ वह जोड़े चक्रवाकोंकेसमान एकसे रूपवालेभी होतेहैं और नीरोगतापूर्वक सदैव प्रसन्नमनरहतेहैं उनकी अवस्था ग्यारहहजार बर्षकी होतीहै और समान अवस्था होनेके कारण कोई किसीकोनहीं मारताहै अर्थात् एकही समय में देहोंको त्यागते हैं (यह बातउसी समयमें थी अब नहींहै)यहांबड़े पराक्रमी और तीक्ष्ण दंष्ट्रवाले भारंड नामपक्षी उन पुरुषों को पकड़ कर गुफाओंमें डालदेते हैं, हे राजा यह मैंनेउत्तर कौरव देशका संक्षेप से बर्णन किया अब उसमेरुके पूर्बी भाग के वृत्तान्तको यथावस्थितकहताहूं हेराजा उसभद्राश्वखंडका मूर्द्धाभिषेकनाम महाराज और भद्रशालनामवन और कालाम्रनाम वृक्षहै वह कालाम्र नाम शुभ वृक्ष फूलफल युक्त सिद्धचारणोंसे सेवित एक योजन ऊंचाहै, जिस स्थानपर श्वेत वर्ण पुरुष तेजसे भरेहुए महाबली और स्त्रियां कुमुद कमल के समान सुंदर स्वरूपवान् चन्द्रमा के समान प्रभाव और पूर्ण चंद्रमा सा प्रकाशवान् मुख वाली और चंद्रमाकेही समान शीतल देह नृत्यगानमेंप्रबीणवर्त्तमानहैं और वहां अवस्था दश हजार बर्षकी होती है वह कालाम्रकारस पीनेसे सदैव तरुण रूपही रहते हैं, नीलपर्व्वतके दक्षिण और निषध पर्व्वत के उत्तर सुदर्शन नाम बड़ाजंबू वृक्ष सनातनहै वह सबअभीष्टों का दाता पवित्र सिद्ध चारणों से सेवित है अर्थात्

मनुष्य उसको नहीं पासक्ते इसलिये कि वहभी दिव्य है इसी के नामसे यह सनातन से जंबूद्वीप प्रसिद्ध हुआहै हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र उसवृक्षराज जंबूवृक्ष की उंचाई आकाश को छूने वाली ग्यारह सौ योजन है उस वृक्षके पके हुये फटने वाले फलों का बिस्तार ढाईहजार अरत्नी है अर्थात् कोई संख्या विशेषहै वह फलजबपृथ्वी पर गिरते हैं तो बड़े भारी शब्द को करते हैं और जहांजहां गिरते हैं वहां वहां चांदी के समान श्वेत रसको छोड़ते हैं हे राजा उसीजंबू फलके रसकी नदी होकर मेरुको प्रोक्षण करके उत्तर कुरुदेशों को आतीहै हे राजा वहां पिपासा लगने के कारण उन्हों के चित्तको शान्ती नहींहै परन्तु उसफलकेरस पीनेसे उनको जरावस्था दुखदायी नहींहोती है वहांही जांबूनद नाम कनकदेवता ओंका भूषण बीरबधूर्जवके समान रक्तवर्ण उत्पन्न होताहै उस में बड़ातेज होताहै वहां मनुष्य तरुण और सूर्य्य वर्ण उत्पन्न होते-हैं इसीप्रकार माल्यवत के शिखर पर संवर्त्तक नाम अग्नि सदैव दिखाई देतीहै हे भरतर्षभ वह संवर्त्तक नाम कालाग्नि है और वैसेही माल्यवान् के शिखर पर चारों ओर को छोटे २ पर्व्वत हैं और माल्यवान् पर्व्वत ग्यारह हजार योजनहैवहां ब्रह्म लोकसेगिरे हुए चांदीके समान श्वेतबर्ण सबके सबसाधू मनुष्य उत्पन्न होतेहैं वह मनुष्य कठिन तपस्याओं को करते हुये उर्ध्वरेता अर्थात् ब्रह्म चारीहोते हैं और जीवोंकी रक्षाके निमित्त सूर्य्यमें प्रवेश करते हैं वह संख्यामें साठ हजार वाल्यखिल्यऋषि सूर्य्य को घेरेहुये अरु-ण नाम सूर्य्य के सारथी के आगे २ चलते हैं वह सब छ्यासठ हजार बर्षतक सूर्य्यको ऊष्मासेतपे हुये होकर चंद्र मंडलमें प्रवेश करते हैं अर्थात् सूर्य्य लोकमें बिराट पुरुषको उपासना करके मन के स्वामीचंद्रमा में प्रवेशकरतेहैं और सूत्रात्म भावको पातेहैं ३२॥

इतिश्री महाभारते भीष्म पर्वणि सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हेसंजय तुमने खंडों और पर्व्वतोंका वर्णनकिया अबउन पहाड़ोंमें जोबास करतेहैं उनका मूलसमेत वर्णन करो, श्वेत पर्व्वतके दक्षिण और निषधके उत्तर रमणकनाम खंड एक पृथ्वीका भागहै वहां ऐसेमनुष्य उत्पन्न होतेहैं जोकि बिष्णु भक्तों के साथ स्नेहरखने वाले अत्यन्त स्वरूपवान्हैं उनमेंकोई परस्पर में शत्रुनहीं होताहै,नीलपर्व्वत के दक्षिण और निषधके उत्तरभाग में हिरण्मय नामखण्डहै वहां हिरण्वती नामनदीहैवहांहींपक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुड़जीहैं उस स्थानके धनवान् स्वरूपवान् मनुष्य यक्षोंके सेवक महाबली और प्रसन्नचित्त होतेहैं और सदैव प्रसन्नता पूर्व्वक रहकर साढ़े ग्यारह हजार वर्ष पर्य्यन्त अवस्थाको भोगते हैं और कोई उनमेंसे साढ़े बारह हजार बर्षतकभी जीतेहैं उस पर्व्वतके तीनबड़े विचित्र शिखरहैं उनमें एकतोमणियोंका शिखर है दूसरा अत्यन्त सुन्दर सुवर्णका अपूर्व शिखरहै और तीसरा शिखर सबरत्नोंसे मिश्रित अनेक स्थानों से शोभितहै वहां स्वयं प्रकाशवान शांडिली देवी निवास करतीहै, हे राजा शिखरके उत्तर समुद्रके समीप ऐरावत नामखंडहै इसीकारण यह शृंगवान्पर्व्वत से घिराहुआ उत्तमखंड कहाताहै उसमें सूर्य्य किसीको संतप्त नहीं करतेहैं मनुष्य वृद्ध नहीं होते और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा ज्योति रूपके समान घिरा रहताहै वहांके मनुष्य कमलके समान कोमल वा सुंदर रंगनेत्र और सुगन्ध युक्त उत्पन्न होतेहैं हे राजा वह सब देवलोकसे गिरे हुये प्रस्वेदसे रहित अर्थात् देवताओंके समान इष्टगन्धधारी निराहारी जितेन्द्री और रजोगुणसे रहितहैं और उनकी अवस्था तेरहहजार बर्षतककी होतीहै इसी प्रकार दूधके समुद्रकी उत्तर दिशामें अनेकमायाओंके स्वामी ज्योतिरूप श्रीहरि नारायणजी सुवर्णके शकटपर निवास करतेहैं वह सवारी आठ पहियोंकी है जिसमें एक पहिया तो पंचकर्मेन्द्रिय समूह दूसरा

पंचज्ञानेन्द्रिय समूह तीसरा मन बुद्धि चित अहंकारका समूह चौथा पंचप्राण पांचवां पांचोंसूक्ष्मतत्त्व छठां अविद्या सातवां काम आठवां कर्मधारी शुद्ध ब्रह्मयुक्त मनके समान शीघ्रगामी अग्नि वर्ण तेजस्वी जांबूनद नाम सुवर्णसे शोभायमानहै, हेभरतर्षभ वह सब संसारमात्रका स्वामी व्यापक सबकोअपनेमेंलयकरने वाला और प्रकट करने वाला जीवरूपसे कर्त्ता और ईश्वर रूपसे कर्म करने वालाहै हेराजा वही पंचतत्त्व वही सबका यज्ञ और मुख उसका अग्निहै, वैशंपायनबोले किहे जन्मेजय यह सबबातें संजयसे सुन कर बड़े साहसी राजा धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रोंको चिन्ताकरी और फिरभी बहुतसा बिचार करके बोला कि हे संजय निस्संदेह काल जगत्को भक्षण करताहै, और फिर सबको उत्पन्न करताहै यहां कोईभी विनाश रहित नहींहै नर नारायण अर्थात् जीव ईश्वरभी दोनों रूपोंसे अविनाशी नहींहैं अर्थात्दोनों एकरूप होकर अकेलाही सर्वज्ञ और सर्वजीवों का मित्रहै उसी समर्थ पुरुषको देवता और मनुष्योंने मायाधीश और सर्व व्यापी वर्णन कियाहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि यह भरतखण्ड जिसमें यह सबसेना भूली हुई है उसमें यह मेरा पुत्र दुर्योधन अत्यन्त लोभी हो रहा है और जिसमें पाण्डव लोभी हैं और मेरा भी मन लगरहा है उस का मुख्य वृत्तान्त मुझ से कहो मैंने तुमको बुद्धिमान माना है, संजय बोले हे राजा मेरे बचन को सुनो उसमें पाण्डव लोभी नहीं हैं इसमें केवल दुर्योधन और सौबल का पुत्र शकुनी ही लोभी हैं, नानाप्रकार के देशों के स्वामी अन्य क्षत्री लोग जो भरतखण्ड में लोभी होकर परस्पर में ईर्षा करते हैं इस स्थान पर मैं भरतखण्ड का वर्णन तुम से वर्णन करताहूं कि यह भरतखण्ड इन्द्र देवता और सूर्य के पुत्र वैवश्वत मनुका अभीष्ट है हे राजा धृतराष्ट्र इनके

विशेष यह भरतखण्ड पृथु, वैन्य तथा महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति, अंवरीष, औ शीनर के पुत्र शिबि, ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक, महात्मा गाधि, सोमक, दिलीप आदि बहुत से महा पराक्रम क्षत्रियों का प्यारा है, हे शत्रुहन्ता यह भरतखण्ड कर्म भूमि होनेके कारण सबका ही प्यारा है और महातेजस्वी खण्ड है इसको मैं कहता हूं महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिवान्, ऋक्षवान्, विन्ध्याचल, पारियात्र, यह सातों पर्व्वत बड़े कुलवान् और प्रतिष्ठित हैं और इन्हीं सातों के समीप हजारों पर्व्वत उत्तम पदार्थों के रखनेवाले बिस्तृत और पर्व्वत के निवासियों के निवास स्थान रूप गुप्त हैं, इनसे अन्य छोटे २ पर्व्वत छोटी २ बस्तुओं के रक्षा स्थान रूप सबके जाने हुये हैं हे कौरव्य धृतराष्ट्र जो आर्य मनुष्य अर्थात् बर्णाश्रमी धर्मवाले हैं वह म्लेच्छ अर्थात् वेद से बिरुद्ध मतवाले हैं वह मनुष्य उन में निवास करते हैं और गंगा सिंधु सरस्वती इत्यादि बड़ी २नदियों के जलको पीते हैं और गोदावरी, नर्मदा, और बाहुदा नाम महानदी शतद्रु, चन्द्रभागा, और महानदी, यमुना, दृसद्वती, विपाशा, विपापा, स्थूलवालुका, वेत्रवती, कृष्णवेणी जो नीचे को चलती है, इरावती, वितस्ता, पयोष्णी, देविका, वेदस्मृता, वेदवती, त्रिदिवा, इक्षुला, कृमी, करीषिणी, चित्रवाहा नीचे चलने वाली चित्रसेना, गोमती धृत पापा, महानदी गंडकी, कौशिकी, त्रिदिवा, कृत्या, निचिता, लोहतारणी, रहस्या, शतकुम्भा, सरयू, चर्मण्वती, वेत्रवती, हस्तिसोमा, दिशनदी, शरावती, पौष्णी, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वाणी, शतवली, नीवारा, महिता, सुप्रयोगा, अंजना, पवित्रा, कुंडली, सिन्धु, राजनी, पुरमालिनी, पूर्व्वाभिरामा, अमोघवतीभीमा, पालाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीषिणी, असिक्नी, कुशचीरा, महानदी, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैव्या, काषी, सदानीरा, अधृष्या, महानदी कुशधारा, सदाकान्ता, शिवा, वीरवती, वस्त्रा, सुवस्त्रा, गौरी, कंपना, हिरण्वती, बरा, वीरकरा,

महानदी पंचमी, रथचित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिंजला, उपेन्द्रा, बहुला, कुवीरा, अंबुवाहिनी, विनदी, पिंजला, वेणा, महानदी, तुंगवेणा, विदिशा, कृष्णवेणा, ताम्रा, कपिला, खलु, सुबामा, वेदाश्वा, हरिश्रावा, महोपमा, शीघ्रा, पिच्छला, भारद्वाजी, निम्नगा, निम्नगाकौशिकी, शोणा, वाहुदा, चन्द्रमा, दुर्गा, मंत्रशिला, ब्रह्मवोध्या, वृहद्वती, यवक्षा, अथरोही, जांबूनदी, सुनसा, तमसा, दासी, वसा, वरुणा, अमसी, नीला, धृतिमती, महानदी पर्णाशा, मानवी, वृषभा, ब्रह्ममेध्या, वृहद्वती, इत्यादि सब नदियों का जल पान करते हैं और हे राजा इनके सिवाय और भी बहुत प्रकारकी महानदी हैं जैसे कि सदानीरा, अया, कृष्णा, मन्दगा, मन्दवाहिनी, ब्राह्मणी, महागौरी, दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मंजुला, बाहिनी, मन्दाकिनी, वैसरिणी, महानदी, कोशा, मुक्तिमती, अनिगा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोया, वृषकानामनदी, कुमारी, ऋषिकूल्या, मारिषा, सरस्वती, सुपुण्या, मन्दाकिनी, सर्वा, गंगा, यह सम्पूर्ण नदी विश्वकी माता और महा फलकी देनेवाली हैं इसी प्रकार हजारों नदी और भी गुप्तहैं हे राजा यह नदियां मैंने स्मरण के अनुसार वर्णन कीं अब मैं देशोंका वर्णन करताहूं वहां यह कुरुदेश, पांचालदेश, शाल्व, माद्रेयजांगल, शूरसेनदेश, पुलिन्द, वोधा, माला, मत्स्यदेश, कुशादिदेश, सौशल्य, कुन्तीदेश, कान्तिकोशलदेश, चेदि, मत्स्य, करूष, भोज, सिन्धु, पुलिन्दक, उत्तमदशार्णदेश, मेकल, उत्कल, पांचाल, कोशल, नैकपृष्ठ, धुरंधर, वोधा, मद्र, कलिन्द, काशय, परकाशय, जठरा, कुकुरा, दशार्ण देशयुक्त, कुंत्य, अवन्त्य, अपरकुन्त्य, गोमन्त, मन्दक, खंड, विदर्भ, रूपवाहिक, अश्वक, उत्तर, गोपराष्ट्र, करीत, अधिराज्य, कुशाद्य, मल्लराष्ट्र, केवल, वारवास्य, अपवाह, वक्रवक्रात, शक, विदेह, मगध, स्वक्ष्य, मलय, विजय, अंग, वंग, कलिंग, यकृल्लोम, मल्ल, सुदेष्ण, प्रल्हाद, माहिक, शशिक, वाह्लीक, वाटधान, आभीर, कालतोयक, अपरान्त, परान्त, पांचाल, चर्ममंडल, अट-

वी, शिखर, मेरुभूत, मारिष, अपावृत्त, अनुपावृत्त, सौराष्ट्र, केकय, कुट्ट, परान्त, माहेय, कक्ष्य, सामुद्र निष्कुट, अन्ध और हे राजा इनके विशेष पर्वतों में अनेक देश और पहाड़ोंके बाहर अंग, मलज, मगध, मानवर्जक, मद्यत्तर, प्राविषेय, मार्गव, पौण्ड्र, लार्ग, किरात, सुदेष्ट, यामुन, शक, निषाद, निषध, आनर्त, नैऋत, दुर्गाल, प्रतिमत्स्य, कुंतल, कुशल, तीरग्रह, शूरसेन, ईजक, कन्यकागण, तिलभार, समोर, मधुमत्ता, सुकन्दक, काश्मीर, सिन्धु, सौवीर, गांधार, दर्शक, अभिसार, उलूत, शैवल, वाह्लीक, दर्वी, नवां दर्वी, बातज, मर्थारग, वाहवाद्य, कौरव्य, सुदामान, समुल्लिक, वध्ना, करीषक, कुलिन्द, उपत्यक, वानायु, दशार्ण, रूम, कुशविन्द, कच्छ, गोपालकक्ष, जांगल, कुरुवर्णक, किरात, वर्बर, सिद्धा, बैदेह, ताम्रलिप्तक, औंड्र, पौंड्र, सैसिकत, पावतीय, मारिष, इसके विशेष दक्षिणमें द्रविड़, केरल, प्राच्य, भूषिक, बनवासिक, कर्णाटक, माहिषक, अविकल्थ, मूषक, जिल्लिक, कुन्तल, सौहृद, नभकानन, कौकुट्टक, चोल, कौंकण, मालवानक, समंग, कारक, कुरर, अंगार, मारिष, ध्वजन्युत्सव, संकेत, स्त्रिगर्त, शाल्वसेन, वक, कोकवक, प्रोष्ठ, समवेगवश, विन्ध्य, चुलिक, कल्कलसहित पुलिन्द, मालव, मल्लव, परवल्लभ, कुलिन्द, कालद, कुंडल, करट, मूषक, तनवाल, सनीय, घटस्टंजय, अलिंदाप, शिवाट, तनय, सुनय, ऋषिक, विदर्भ, काक, तंगण, परतंगण, हे भरतर्षभ इसी प्रकार अन्य उत्तरदेशबासी कठोरचित्त और म्लेच्छनामसे प्रसिद्धहैं, यवन, अर्थात् मुसल्मान आदिको जातें चीनी, कांबोज, सकृद् ग्राह, कुलत्थ आहूण, पारसियों समेत हूण, यह सब म्लेच्छ जातिके लोग भय कारी हैं रमण, चीन, दशमालिक, जोकि क्षत्री योनिसे उत्पन्न वैश्य और शूद्रों के कुलहैं शूद्र, आभीर, दरद, पशुओंसमेत काश्मीर, खाशीर, अर्थात् (खुरासानी) अन्तचार, पल्हव, (जिनकी भाषा पहलवी प्रसिद्ध है) गिरिगह्वर, आत्रेय, भरद्वाज, स्तनपोषिक, प्रोषक, कलिंग, किरातों की जातें, तोमर हंसमार्ग, करभंजक,

यह और अन्य पूर्वीय और उत्तरीय देश हैं, हे समर्थ धृतराष्ट्र यह मैंनेसब देश उद्देशमात्रसे कहे मनोरथों के पूर्णकरने वाले कामधेनु रूपी पृथ्वी श्रेष्ठ पोषित गुण और बलके समान त्रिवर्ग अर्थात् (धर्म अर्थ काम) हिरण्यगर्भरूपी फलके भी देनेवाले धर्म और अर्थ में कुशल बुद्धि शूरबीर राजालोग उस पृथ्वी की इच्छापूर्व्वक लालसाकरते हैं वह शीघ्रता करनेवाले धनके लोभी युद्ध भूमिमें अपने प्राणोंको त्यागकरते हैं, यह पृथ्वी इच्छानुसार देवता और मनुष्यों की देहोंकी रक्षाका स्थान है हे भरतबंशी पृथ्वीके भोगने की इच्छा रखनेवाले क्षत्रीलोग परस्पर में एक एक को मारते हैं जैसे कि कुत्ते मांसके टुकड़े २ करते हैं इसीप्रकार से अब तक भी किसीकी तृष्णा न्यून नहीं होतीहै हे राजा इसीकारणसे कौरव पाण्डव भी शाम, दाम, भेद, दण्ड इन चारों नीतों के द्वारा पृथ्वी के विजय करने में अनेक उद्योग करते हैं, जिसको अच्छेप्रकार से पूरा छिद्र दर्शन है उसीकी पृथ्वी पिताभाई पुत्री आकाश और स्वर्गरूप भी होतीहै ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिनर्ददेशादिनामनवमोऽध्यायः ६ ॥

दशवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत संजय इस भरतखण्ड और हेमवत खण्ड की अवस्थाओं की संख्या बल शुभाशुभ भूत भविष्य वर्त्तमान को भी ब्योरेवार कहिये इसीप्रकार हरिखण्डको भी कहिये संजय बोले कि हे भरतर्षभ और कौरवोंकी वृद्धि चाहनेवाले धृतराष्ट्र भरतखण्ड में चार युग हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, प्रथम सतयुग फिर त्रेता फिर द्वापर और द्वापरके अन्तसे कलियुग जारी होताहै हे कौरवोत्तम राजेन्द्र सतयुग में चार हजार बर्ष की अवस्था होतीहै त्रेतामें तीन हजार की द्वापर में दो हजार वर्षकी और हे राजन् कलियुगमें अवस्थाकी संख्या नहीं है इस कलियुग में उत्पन्नहुए बालक और गर्भमेंवर्त्तमान बालक भी मरतेहैं और

सतयुगमें बड़े बलिष्ट पराक्रमी और बुद्धिआदि गुणयुक्त सैकड़ों वा हजारों मनुष्य उत्पन्नहोकर सन्तानोंको उत्पन्न करतेथे और धनी प्रियदर्शन तपोधन मुनि उत्पन्नहोकर सन्ततियोंके उत्पन्नकर्त्ताहुए बड़े उत्साह मन धार्मिक सत्यवादी प्रियदर्शन उत्तम बरण महा पराक्रमी धनुषधारी बरके योग्य शूरोंमें श्रेष्ठक्षत्री उत्पन्न होतेहैं और त्रेतामें सब क्षत्री चक्रवर्त्ती होतेहैं और बड़े अवस्थावान् शूरवीर युद्धमें धनुषधारियों में उत्तम राजाओंके आज्ञावर्त्ती उत्पन्न होते हैं द्वापर युगमें सब वरण सदैव उत्साह चित्त पराक्रमी परस्पर में विजयाभिलाषी उत्पन्न होते हैं और कलियुग में थोड़े पराक्रमी क्रोधी लालची मिथ्यावादी मनुष्य उत्पन्न होते हैं और कलियुग में जीवधारियों में अहंकार क्रोध ईर्षा कुल दूसरे की निन्दा और विषयों में प्रीति करने वाले लालची उत्पन्न होते हैं और हे राजन् इस द्वापर में गौओंकी न्यूनता वर्त्तमान है परन्तु हेमवत खण्ड और हरिखण्ड गौओंके विषयोंमें सर्व्वोत्तमहै १६ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि जम्बूखण्ड वर्णनोनाम दशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय तुमने जम्बूखण्ड अर्थात् जम्बूद्वीप का वर्णन यथार्थ कहा अब इसके केन्द्र और परिधिकी संख्या को मूलसमेत बर्णन करो और समुद्रकी संख्याको भी कहो और सब दृष्टगोचर शाकद्वीप कुशद्वीप, शाल्मलद्वीप, क्रौंचद्वीप इन सबको राहु चन्द्रमा और सूर्य्यसमेत बर्णनकरो, संजय बोले कि हे राजा बहुतसे ऐसे २ द्वीप हैं जिनसे यह युग बड़ाबिस्तार युक्त है अब मैं सूर्य्य चन्द्रमा और राहुसमेत सातोंद्वीपोंका बर्णन करताहूं कि जम्बूद्वीपका केन्द्र और वृत्तफल अठारह हजार छःसौ योजनहै इस का आशय यह है कि (अठारह हजार छःसौयोजनमेंसे पांचहजार नौसौ अठारह योजन व्यास और बारह हजार छःसौ बयासी परिधिहै और बनपर्व में हनुमानजीके कहे हुए के अनुसार पृथ्वी

बनपर्व्व समुद्रसमेत की संख्यायुगों के अनुसार होती है तथाच शास्त्रके अनुसार हरएक युगमें प्रत्येक बस्तुका चतुर्थांश क्रमसे न्यून होताजाताहै अर्थात् सतयुगमें पृथ्वी मंडलकी संख्या ऊपर लिखेहुये के अनुसार थी त्रेतामें नौहजार पांचसौ ग्यारह द्वितीयांश एक १/२ योजन रहा और द्वापरमें छःहजार तीनसौ इकतालीसरहा और कलियुगमें तीनहजार एकसौ सत्तर द्वितीयांश एक १/२ योजन रहा जोकि एक योजन चारकोसका होताहै इसकारण चारसेगुणा करनेसे बारह हजार छःसौबयासी कोसहुआ इसके मील पच्चीस हजार तीनसौ चौंसठहुए और इंगलिस्तान के बासी भी अपनेगणितकी मापसे इस पृथ्वीको पच्चीसहजारवर्ग्गात्मकमीलबतातेहैं और खारीसमुद्रका बिस्तार इस्से दूना कहाहै वह समुद्र नानादेशों से युक्त मणिमूगे आदिसे शोभित नानाप्रकार की धातुओं से विचित्र पर्व्वतोंसे शोभायमान शुद्धचारणोंसे सेवित चारों ओर से मंडलाकार है हे राजा अब मैं शाकद्वीपको यथार्थ बर्णन करताहूं हे कौरवनन्दन तुम भी न्यायपूर्व्वक मुझसे सुनो वह द्वीप जंबूद्वीप के बिस्तारसे दूनाहै और समुद्र भी विभागके अनुसार क्षीरोदनामीहै हे राजन् जिस समुद्रसे वह द्वीप चारोंओर को घिराहुआ है उसमें पबित्र देशहैं वहां मनुष्य नहीं मरते हैं तो वहां दुर्भिक्षकैसे होसक्ताहै वह क्षमावान् तेजधारी हैं यह तो शाकद्वीप का संक्षेप ठीक २ बर्णनकिया अब दूसरी बात क्या सुनना चाहतेहो, धृतराष्ट्र बोले कि हे महाज्ञानी तुमने इस शाकद्वीप का संक्षेप तो ठीक कहा परंतु उसको ब्यौरेवार मूलसमेत बर्णनकरो संजयबोले कि हे महाराज इसीप्रकार के सात पर्व्वत इसमें मणियोंसे भूषित बर्त्तमान हैं और नदियां भी अनेक रत्नोंकी आकरहैं इनके नाम मैं कहताहूं, वहां सबलोग पबित्र और गुणवानहैं देवता गंधर्व और ऋषिलोगोंसे संयुक्त प्रथम पर्व्वत मेरु कहाजाता है और पूर्व पश्चिमका स्पर्श करनेवाला दूसरा मलयपर्व्वत है उस पर्व्वतसे सब बादल प्रकटहोकर कर्म में प्रवृत्त होतेहैं हे कौरव्य उस्से पूर्व

की ओर एक जलधारा नाम बड़ा पर्व्वतहै जहां पर इन्द्र देवता उत्तम जलको ग्रहणकरता है उसी जलसे बर्षाऋतु में पृथ्वीपरवर्षा होतीहै और उस्से भी बड़ा पर्व्वत रैवतक है वहां स्वर्गमें निवास करनेवाला रेवती नक्षत्र सदैव वर्त्तमान रहताहै यह ब्रह्माजी की उत्पन्न की हुई रीतिहै और उत्तर ओरको श्यामनाम बड़ा पर्व्वतहै वह नवीन बादल केसमान प्रकाशवान ऊंचा शोभायन उज्ज्वल-स्वरूपहै हे राजा उसीसे मनुष्योंने श्याम वर्ण को पायाहै धृत-राष्ट्र बोले हे संजय अब तुमने यह मुझसे बड़ा सन्देहयुक्त बचन कहा हे सूत पुत्र संसारने कैसे श्यामवर्ण को पाया, संजयबोले कि हे राजा सब द्वीपोंमें गोरा नररूप जीव और काला नारायणरूप ईश्वर पक्षीहै उन दोनोंबर्णों में जिस हेतुसे नारायण की कलारूप श्यामवर्ण प्रकटहुआ इसीसे उसकानाम श्यामगिरि बिख्यातहुआ और उसमें निवासकरने व शाक भोजन करने से मनुष्यों ने भी श्यामवर्ण को पाया हे कौरवेन्द्र उस्से आगे बढ़कर महोदय दुर्गशै-लहै केशरी और कैशरयुत पर्व्वत है उसीसे वायु उत्पन्न होतीहै उन दोनोंके बिस्तार को संख्या क्रमसे एकसे दूसरे की दूनीहै हे राजा इनके मध्यवर्त्ती ज्ञानियों ने यह सात खण्ड बर्णन किये हैं जिनके महामेरु, महाकाश, जलद, कुमुद, उत्तर, जलधार, सुकु-मार, यह सातनाम बर्णन किये हैं, रैवत पहाड़ का खंड कौमार और श्यामगिरि का खण्ड मणिकांचन है केदार पर्व्वत का खण्ड मोदाकीहै उससे परे महापुमान् है जो छोटे बड़ोंको घेरेहुए है उस द्वीपमें एक शाकनाम बड़ा बृक्ष जंबूद्वीपके कारण प्रसिद्धहै अर्थात् जंबूद्वीप के मनुष्य स्थूल शरीर को त्यागकर अपने कर्मफलों को भोगनेके निमित्त सूक्ष्म शरीर के द्वारा शाकद्वीप में जाकर उस बृक्षको पूजते हैं तब उसकी प्रसिद्धीहोती है और सब प्रजा उसकी सेवामें तत्परहैं इस द्वीपमें सूक्ष्म देहधारी होने के कारण सब बरण अपने २ धर्मोंमें प्रीति रखनेवाले बड़ी अवस्था वाले जरा मरण से रहितहैं बड़ी अवस्था कही इस्से तो कभी मृत्युहोनी

चाहिये इसका यह उत्तरहै कि जब उनके कर्मोंकाफल समाप्त होता है तब वह जंबूद्वीपमें आकर जन्म लेतेहैं यही उनकी मृत्युहै जहां चोरनहीं दिखाई देतेहैं वहां प्रजा लोगोंको ऐसे वृद्धिहोती है जैसे कि वर्षा ऋतुमें नदियोंको वृद्धि होतीहै वहां नदियां पवित्र जलवाली हैं और बहुत रूपधारी गंगाभी बर्त्तमानहैं इनके सिवाय सुकुमारी कुमारी, शीतासी वेणिका, महानदी, मणिजलानदी, चक्षुबर्धनका नदी, इत्यादि लाखोंनदियां पवित्र जलवाली हैंजहांसे इन्द्र जलको लेकर वर्षा करताहै उनके नाम विस्तार दैर्घ्य इत्यादि संख्याकरने के योग्यनहींहैं वह उत्तम नदियां पवित्रता और पुण्यकी बढ़ानेवाली हैं वहां सबलोकोंमें प्रतिष्ठित पवित्र चारदेश हैं वह मृग, मशक, मानस, मन्दग, नामसे प्रसिद्धहैं मृगनाम देशमें बहुतसे ऐसे ब्राह्मण हैं जो अपने कर्मोंमें सदैव प्रवृत्तहैं और मशक देशमें ऐसेक्षत्री लोगहैं जो धर्मचारी और सबमनोरथोंके देनेवालेहैं मानस देश-वासी वैश्य धर्मसे निर्वाह करने वालेहैं मन्दग देशके रहने वाले शूद्र लोग धर्मके अभ्यासीहैं हे राजेन्द्र उन देशोंमें न राजाहै न दण्डहै न दण्डधारी हाकिम है वहां सब प्रजालोगही धर्मज्ञ होकर अपने २ धर्मोंसे परस्पर की रक्षा करते हैं उस बड़े प्रकाशवान शाकद्वीपमें इतनाहीकहसकेहैं और इतनाही सुननेके योग्यहै ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिशाकद्वीपवर्णने नामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

अध्याय बारहवां ॥

संजय बोले कि हे महाराज वहां पूर्वकहे हुये उत्तर द्वीपोंमें जिस प्रकारसे कथा सुनीजातीहै उसको तुम मुझसे सुनों, कि वहां एकतो घृतका समुद्रहैदूसरा मदधिमण्डोदकनाम समुद्र तीसरा मदिरारूप जलका समुद्र, चौथा मिष्ट जलका समुद्रहै हे राजाधृतराष्ट्र सबद्वीप और पहाड़ परस्परमें दूने दूने समुद्रोंसे घिरेहुये हैं और मध्यवर्त्ती द्वीपमें गौर शिलारूप पर्व्वतहै और पिछले द्वीपमें कृष्णनाम पर्व्वत नारायणका सखा रूप है वहां आप केशव मूर्त्ति दिव्य रत्नोंकी रक्षा

करतेहैं और प्रसन्न होकर प्रजालोगों को सुख देतेहैं और कुशद्वीप में कुशस्तंभ देशोंसे युक्तहै और शाल्मल द्वीप में शाल्मली वृक्ष पूजन किया जाताहै और क्रौञ्चद्वीप में रत्न समूहों का भंडार महा क्रौंच पर्व्वत को सदैव सब बरण पूजतेहैं हेराजन् उसमें सबधातुओं का रखने वाला बहुत बड़ा पर्व्वत गोमन्त नामहै जिसके ऊपर श्रीमान् कमल लोचन विष्णु भगवान् सदैव निवास करते हैं वह प्रभु नारायण हरि सदैव मुक्त पुरुषोंसे मिलेहुये रहतेहैं और कुश द्वीपही में एक पर्व्वत मुख्य २ वृक्षोंसे आच्छादितहै वह दुर्धर्ष पर्व्वत स्वनाम नामसे प्रसिद्धहै इससे दूसरा हेमपर्व्वत है तीसरा द्युतिमान कुमुद नामगिरिहै चौथा पुष्पवान नामहै पांचवां कुशेशय नामहै छठा हरिगिरि नामहै यह छओं उत्तम पर्व्वत हैं इनका मध्यवर्त्ती विस्तार पूर्व्वक विभागके अनुसार दूनाहै प्रथमखण्ड औ द्विदहै दूसरा बेणुमण्डलहै तीसरा रथाकारहै, चौथा कंबलहै पांचवां धृतिमत् खंडहै छठवां प्रभाकर नाम खण्डहै सातवां कापिल खण्डहै यह सातों पर्व्वत खण्डोंके बिभाग करने वालेहैं इनखंडों में देवता गंधर्व और प्रजालोग विहार पूर्व्वक आनन्द करतेहैं उन में मनुष्य नहीं मरता न चोर म्लेच्छ जाति आदिके लोग रहते हैं और सब प्रजा गौर वर्ण सुकुमार होतेहैं इनके सिवाय शेषद्वीपों काभी तुमसे बर्णन करताहूं इसको आप सावधानीसे सुनों कि क्रौञ्चद्वीपमें क्रौञ्चनाम बड़ा पर्व्वतहै और क्रौञ्चसेपरे वामनहै वामनसे परे अन्धकारकहै अन्धकारकसे परे मैनाकनाम उत्तम पर्व्वतहैऔर मैनाकसे परे गोविन्दनाम उत्तम पर्व्वतहै गोविन्द से परे निविड़ नाम श्रेष्ठ पर्व्वतहै इनकाभी विस्तार द्विगुणितहै, इनके देशोंकाभी बर्णन करताहूं उसको तुमसुनों कि क्रौञ्चद्वीपका देश कुशलहै वामनका देश मनोनुगहै, मनो नुगसे परे उष्ण देशहै उष्णसेपरे प्रावरकहै प्रावरकसे परे अन्धकारक देशहै अन्धकारकसे परे मुनि देशहै मुनि देशसेपरे दुन्दुभी स्थानबोला जाताहै, हेराजन् यहसिद्ध चारणों का निवास स्थान बहुत गौरे वर्ण वाले मनुष्यों से पूरितहै

यह सब देश देवगंधर्बोंके निवास और विहार स्थान हैं पुष्करद्वीप में पुष्कर नाम पर्व्वत मणिरत्नोंका रखने वाला है उसमें आप देव देव ब्रह्माजी निवास करते हैं और हे राजन् उन ब्रह्माजीको सब देवता और महर्षि योग मनसे पूजन करते हुये सदैव चारों ओरसे उपासना करते हैं उन सब द्वीपों में प्रजाओंके अनेक प्रकार के रत्न जंबूद्वीपसे वर्त्तमान होतेहैं (तात्पर्य्य यहहै कि जंबूद्वीप वासी जो जोकर्म करते हैं उनके फलसे नानाप्रकार के रत्न वहां वर्त्तमान होतेहैं और अवस्था व्यतीत होनेपर शरीर को त्यागकर अपने कर्म संबधी द्वीपोंमें जाकर अपनेही कर्मों से प्रकट हुये उन रत्नोंको भोगतेहैं ब्रह्मचर्य्य सत्यता और प्रजाओंकी शान्तचित्तीपतासे नीरोगता पूर्व्वक एकसे एकद्वीपकी अवस्था दूनी २ है इन सबद्वीपोंमें केवल एकही देशहै उसी देशमें सब देश कहे जाते हैं वह एकधर्म रूप देश दृष्ट पड़ताहै अर्थात् धर्मफल भोगने के लिये छओंद्वीप हैं और जंबूद्वीप कर्म और योगकी भूमि है हेराजन् आप प्रजापति ईश्वर दण्ड धारण करके इनद्वीपों की रक्षाकेलिये नियत रहताहै वही राजाहै वही शिवहै वही पितापितामह आदिहै वही सबजड़ चैतन्य प्रजाओं की रक्षा करताहै हे कौरव यहांके प्रजालोग स्वतः सिद्ध प्राप्तहुये भोजनको खातेहैं, इसकेपीछे समानाम लोकों की निवास भूमि दृष्टपड़तीहै हेराजन् वह चतुर्मुख कमल रूपहै और उसका मंडल तैंतीस हजार योजन है (ऊपर अठारह हजार छःसौ व्यासपरिधि वर्णनकीहै और केवल बृत्ततैंतीस हजारही कहा इसका हेतु यहहै कि जो पर्व्वत गोलसे ऊंचे हैं उनको बृत्तके भीतरले कर मंडल गणनाको है हे राजेन्द्र वहां लोकोंके प्रधान चारदिग्गज वामन और ऐरावत नाम आदिसे नियत हैं और इसी प्रकार तीसरा प्रतीकहै चौथा प्रभिन्न करट नाम मुखहै उसका प्रमाण मैंवर्णन नहीं करसक्ता वह गजसमूह सदैव तिरछा ऊंचानीचाहै इससेगणना से बाहर है वहां पर सब ओरको वायु चलती है जो हाथीपृथक् और अन्य २ होतेहैं वही गज उनको बड़ोप्रकाशवान खिलेकमलों

की समान अपनी सूड़ों से पकड़ते हैं और पकड़कर शीघ्रही सौ भागकरके छोड़तेहैं वही गर्जोंकेश्वासोंको छोड़ीहुई वायु यहांआती है उसीसे सब प्रजालोग जीवते रहतेहैं धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह तुमनेबहुत बड़ा बिस्तार वर्णनकिया और द्वीपोंकाभी रूप दिखाया अब हे संजय इनके बिशेष और २ जो भाग हैं उनका वर्णन करो संजय बोले हे राजन् मैंने द्वीपोंका वर्णन किया अब ग्रहोंका वर्णन मूल समेत सुनों हे कौरवेन्द्र राहुग्रह गोल सुना जाता है उसका व्याश निश्चयकरके बारह हजार योजन है और मंडलछत्तीसहजार योजनहै और बुद्धिमान पौराणिकोंने उसको मुटाईमें छःहजारयोजनसे अधिक कहा है और चन्द्रमाकाव्यास ग्यारहहजार योजनकहा है उसका मंडल तेतीस हजार योजनहै और मुटाई उंसठ योजनसे अधिक है और हे राजन् सूर्य्यका व्यास दशहजार योजनहै परन्तु मुटाई में तेरह सौ योजन से अधिक है इसी हेतुसे इकतीस हजार तीन सौ योजनका मण्डलहै यह शीघ्रगामी सूर्य्य बड़े उदार सुने जातेहैं हे राजन् यह सूर्य्यका प्रमाण कहा और वहराहु अपनेबड़े देहसे समय पाकरदोनों सूर्य्य चन्द्रमाओंको ढक लेताहै यहीसंक्षेप से बर्णन किया हे महाराज धृतराष्ट्र मैंने शास्त्र रूपदृष्टि से यहसब वृत्तान्त यथावस्थित कहा यह जगत् समेत मैंने जैसा गुरूसेसुना है उसीके अनुसार तुमसे बर्णन किया इस्से आपशान्ती को पाओ इन अनेक कारणों से हे राजन्तुम अपने पुत्र दुर्योधनमें शान्तीको पाओ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ इसचित्त रोचक भूमिपर्बको जो राजा सुनताहै वह धनवानहो अभीष्टको प्राप्तकरके साधुओंमें प्रतिष्ठाको पाता है और उसकी आयु बलकीर्ति तेज वृद्धि बढ़ती है और श्रद्धा पर्वक नियम से जो राजा सुनेगा उसके पितापितामहादि तृप्तहोते हैं यह भरतखंड जिसमें हमसब बर्त्तमानहैंयह पूर्बजोंसे बढ़ापुण्य का बढ़ाने वाला नियत कियागयाहै इस सबको तुमने सुनाहै ५१॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिजंबूखण्डवर्णनेनामद्वादशोध्यायः १२ ॥

—※—

तेरहवां अध्याय॥

वैशंपायनजीबोले हे भरतबंशी इसके पीछे सबका वृत्तान्त प्रत्यक्ष देखने वाले भूतभविष्य बर्त्तमान के ज्ञाता बुद्धिमान संजय ने युद्ध भूमिसेआकर आकस्मिक ध्यानकरने वाले धृतराष्ट्र के समीपजाकर भरत बंशियों के पितामह का महाघायलहोना बर्णन किया अर्थात् आकर कहाकि हे महाराज मैं संजय हूं आपको नमस्कारकरताहूं अब इसवृत्तान्त को कहताहूं कि वह भरत बंशियों के पितामह शान्तनु भीष्मजी शस्त्रों के घातसे बड़े घायल होगये जो सबयुद्ध कर्त्ताओं में ध्वजारूप और धनुर्धारियोंमें महातीव्र हैं अब वह कौरवोंके पितामह शर सैय्यापर सो रहेहैं जिनके पराक्रमके आश्रयको पाकरतेरेपुत्रने पांडवोंसे जुवाखेला वहीभीष्मजी शिखण्डीसेबिदीर्ण घायल होकर शर सैय्यापर बिराजेहैं जिसमहारथीने काशी पुरीमें एकही रथसे महाभारी युद्धमें सबमिलेहुए राजाओंको बिजयकिया था और वहीमहाभयकारी युद्धमें यमदग्न्य जीके पुत्रपरशुरामजीसे लड़े और उनकेहाथसेनहीं मारेगये अबवही भीष्मजी शिखंडीकेहाथ से मारे गयेहैं जो शूरता में महाइन्द्र के समान और स्थिरचित्तता में हिमाचल पर्बत के समान और गंभीरतामें समुद्र के सदृश और क्षमामें पृथ्वी के तुल्य हैं अबवह बाणरूपदंष्ट्रा और धनुष रूप मुख खड्ग रूप जिह्वा दुर्धर्ष नरोत्तम सिंहरूप तेरापिता पांचालदेशी शिखंडी के हाथसे पृथ्वीपर मारागया पांडवोंकी सेनाजिसको युद्धमें शस्त्रलिये उद्यत देखकर भयसे व्याकुल होकर ऐसे कांपतीथी जैसे कि सिंहको देखकर गौओंका समूह व्याकुल होकर थरथराता है वह बीरोंका मारने वाला उसतेरे पुत्रकी सेना को दशदिन रात्रि रक्षाकरके बड़े कठिन युद्धोंको करता हुआ घायलों के समान अस्त होगया, जोकि हजारों बाणोंको बरसाता हुआ इन्द्रके समान महा व्याकुलता से पृथक् है उसने अपने दशदिन के युद्धों में एकअर्बुद सेनाको मारडाला, हे भरत बंशीवहतेरी बुरीसलाहके होनेसे वायु

से गेरेहुए वृक्षके समान पृथ्वीपर ऐसेहोता है जैसेकि कभी वह सोनेके योग्य न था १३ ॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्व्वणिभीष्ममृत्युश्रवणेत्रयोदशोध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि मेरापिता भीष्म कैसे २ शिखंडी के हाथ से घायल हुआ और कैसे रथसे गिरा हे संजय उस पराक्रमी देवता के समान अपने पिता शंतनुके लिये ब्रह्मचारी होनेवाले गुरू रूप भीष्मजी के बिना मेरे पुत्रों की कौनदशा हुई और ऐसे महाबली धनुर्धारी महाज्ञानी शस्त्रवेत्ता नरोत्तम भीष्म के मारेजाने पर तेरा चित्त कैसा होगया जिस निर्भय कंपरहित कौरवेन्द्र पुरुषोत्तमबीर भीष्मजी को मृतक सुन कर मेराचित महापीड़ा से व्याकुल होताहै हे संजय कौन२ क्षत्री इसके आगे और कौनइनके पीछेचलने वालेहुए कौनस्थिरहुए और कौनलौट आये और कौन से क्षत्रीसन्मुख बत्त मानहुए और कौनसे शूर उसमहारथी क्षत्रियोत्तम युद्धमें सेनाकेदबानेवाले भीष्मजीके पीछेकी ओरको चले जिस बड़े प्रबलसेनाके स्वामी सूर्य्यकेसमान तेजस्वी शत्रुहंताने शत्रुओं की सेनाके मनुष्यों को मार हटाया और शत्रुओं में महाभयको उपजाया औरयुद्धमें पाण्डवों के ऊपर महाकठिन कर्म किया और हे संजय तुमने उसके सन्मुखहोने वाले युद्धमें कुशल दुष्प्रधर्ष महाबली को भी देखाहै जिसने कि इससेनाके निगलने वाले महावीर धनुर्धारी भीष्मको मारकर हटाया हे संजय पाण्डवों ने युद्धके बीचमें उन भीष्मजीको कैसे प्रकारसे रोका और सेनाओं के काटने वाले बाण रूपदंष्ट्रा रखने वाले वेगवान् चापरूपी मुखफहलाने वाले खड्ग रूप जिव्हाधारी दुर्धर्ष इस दशाके अयोग्य पुरुषोत्तम लज्जावान अजित जितेन्द्री भीष्मजी को अर्जुनने किस प्रकारसे गिराया जो भीष्म कि भयानक धनुष बाणयुक्त उत्तम रथमें आरूढ़ बाणोंसे शत्रुओंके शिरोंके छेदने वाले होतेथे उसकाल अग्निके समान दुर्धर्ष

शस्त्र धारण किये सन्नद्ध भीष्मजी को देखकर पांडवों की सेना सदैव मृतक प्रायके सदृश चेष्टा करतीथी वह शत्रुहन्ता दशरात्रि सेना को खैंचकर महा कठिन युद्ध कर्मको करके सूर्य्य के समान अस्तहो गया जिसने दशदिनतक इन्द्रके समान अखण्ड बाणोंको छोड़कर युद्धमें एक अर्बुद संख्याके शूरबीरोंको मारडाला वहभर तर्षभ मेरे दुर्मंत्रोंसे युद्धमें पराजय होकर पृथ्वीमें वृक्षके समान गिरकर ऐसा घायल होकर सोताहैजैसा कि वहकभी होनहीं सक्ता ऐसे प्रतापी महाबली भीष्मजी को युद्धमें सन्नद्ध देखकर पांचाल देशियों की सेना किसप्रकार से उनके ऊपर प्रहारकरनेको समर्थ हुई और पाण्डवोंने भीष्मजी के सन्मुख कैसे लड़ाई की और हे संजय द्रोणाचार्य्यजी के जीतेहुये होनेपर भीष्मजी ने कैसे विजय को नहीं पाया और प्रहार कर्त्ताओंमें श्रेष्ठ भीष्मजी ने भारद्वाज के पुत्र कृपाचार्य्य और द्रोणाचार्य्य के बर्त्तमान होनेपर कैसे मृत्यु को पाया और देवताओंसे भी महादुर्धर्ष अति रथी भीष्मजी युद्ध में उस पांचाल देशी शिखण्डीके हाथसे कैसे मारेगये जिन्होंने महाबली परशुरामजी को युद्धमें प्रसन्नकिया अर्थात् उनसे ईर्षापूर्व्वक लड़ाई होनेपर भी उनके हाथसे नहीं मारागया इन्द्र के समान प्रबल महारथियोंमें सूर्य्यरूप महाबीर भीष्मजी युद्धमें जैसे मृतक हुए वह सब मुझसे बर्णनकरो और हे संजय मेरे कौन कौनसे बडे धनुर्धारी बाण फेकनेवाले पुत्रोंने उस दुराधर्षको त्याग नहीं किया और दुर्योधन के आज्ञावर्ती कौन २ से बीरोंने शत्रुओंको न रोका जिससे कि वह सब पाण्डव जिनमें सब का अग्रगामी शिखण्डीथा भीष्मजीके सम्मुख आये हे संजय उस अजित वीरको सब कौरवों ने तो त्याग नहीं किया मेरा निश्चय करके बज्र के समान हृदयहै जो ऐसे पिता भीष्म पराक्रमी के मरनेपर भी नहीं फटता है वह भरतर्षभ दुराधर्ष सत्यवादी बुद्धि स्मरण में सावधान शास्त्रों का ज्ञाता होकर युद्धमें कैसे मरा है जिसका धनुषरूप बादल बाणरूप जलकण और धनुषकी टंकारही गर्जनायुक्त घोरशब्दवाले बड़ेबाद-

लहीके समान ऊंचाहै और जैसे इन्द्र दैत्योंको मारताहै उसी प्रकार शत्रुके रथियोंको मारतेहुए जिसवीरने पाण्डव और पांचाल देशीय वा संजय लोगोंकेपद बर्षाकी उस बाणआदि अनेक भयानक अस्त्रों के समुद्र बाण रूपीग्राह धारीदुरा धर्ष धनुष रूप तरंगवाले अबि नाशी निराधार नौका ओं से रहित गदाखड्ग रूप मकर जीवों से व्याप्त घोड़े रूपी आवर्त्तों समेत हाथियोंसे व्याकुल पदाती रूप मीनोंसे भराहुआ शंख दुन्दुभियों से शब्दाय मान युद्ध में अपने वेगसेबहुतसे हाथीघोड़े पैदलों को डुबोंने वाले शत्रुओं के वीरोंके हटानेवाले क्रोधसे अग्नि रूपतेजसे शत्रुओंके संतप्त करने वालेको कौन २से बीरोंने ऐसे रोकलिया जैसे कि समुद्रको उसकी किनारा रूप मर्य्यादा रोंकलेती है , हे संजय शत्रु हन्ता भीष्मजी ने युद्धमें दुर्य्योधन के अभीष्ट के लिये जो २ कर्मकिये उस समय उन के सन्मुख कौन २ हुए और कौन२सेबीरोंनेभीष्मजीके दाहिने पक्षकी रक्षाकरी और पीछेकी ओरसे कौनसे सावधान वीरोंने शत्रुकेवीरों को हटाया और कौन २ वीर भीष्म जी के समीपमें जाकर रक्षा करतेहुए आगे हुए और किन २ वीरोंने भीष्मजी के लड़ते समय उतरीय भागकी रक्षाकरी और बाम पार्श्व में होकर किस २ ने संजय देशियों को मारा और किस२वीरने उस दुर्धर्ष भीष्मजी की आगेसे रक्षाकी और चलतेसमय में किस २ ने चारों ओर से उन की रक्षाकरी हे संजय उस समहमें से शत्रुओंके वीरों से युद्धकरने वाले कौन २ वीरथे वीरोंसे रक्षित भीष्म जीने और भीष्म जी से रक्षित उन वीरोंने युद्धके बीच वेगसे वा दुःखसे विजय होनेवाली राजाओंकी सेनाओं को क्यों नहीं विजय किया हे संजय जो सब लोकोंके ईश्वर प्रजापतिके परम्पदके मार्गमें नियत होताहै उसके मारने के लिये वह पाण्डवलोग कैसे समर्थहुए, कौरवलोग जिस रक्षाके स्थानपर भरोसा करके शत्रुओंसे युद्ध करतेहैं उस नरोत्तम भीष्मजीको हे संजय तुम डूबाहुआ कहतेहो, जिसके बलका आश्रय लेकर बड़ी सेना रखनेवाला मेरा पुत्र पाण्डवों को कुछ नहीं

समझता था वह ऐसा प्रतापी भीष्म पांडवों के हाथसे कैसे मारा गया, युद्धमें दुर्मद महाव्रती जिसमेरे पिता भीष्म को सहायता में करके देवता लोग दैत्योंके मारनेके लिये उपस्थितहुये और संसार में विदित राजा शन्तनु ने पुत्रोंमें उत्तम बड़े पराक्रमी जिसभीष्मके उत्पन्नहोनेपर शोकभय और दुःखोंको अत्यंत्य दूरकिया औरउसी पुत्रको रक्षाका स्थान बड़ाज्ञानी और अपने धर्म्मों में अति प्रवृत्त वेद वेदांगके मूलोंकाज्ञाता महा पवित्रात्मा बर्णनकिया हे संजयऐसे पुरुष को मराहुआ कैसे कहता है उन सब अस्त्रों से शिक्षायुक्त शन्तनु जितेन्द्री उदार बुद्धि भीष्मजीको मृतकसुनकर मैं शेष बचीहुई सेना कोभी मृतकही मानताहूं कि जिसस्थानपर पांडव अपनेवृद्ध गुरूकोभी मारकर राज्यको चाहतेहैं इससे यहमेरा मतहै कि अधर्म धर्मसे प्रवल तर होता है, पूर्व समय में सब अस्त्र शस्त्रोंके ज्ञाता अनुपम युद्धमें सन्नद्ध यमदग्न्य जीके पुत्रपरशु रामजी को युद्धमें भीष्मजीने बिजय किया उसइन्द्र के समान कर्मकर्ता सब धनुषधारियों क ध्वजारूप भीष्मजो को मृतक कहता है इससे अधिक कौनसा दुःख होगा जिन परशुरामजीने अनेक समय क्षत्रियों के समूहों को बारम्बार बिजयाकिया परन्तु बड़ा बुद्धिमान् मेरापिता नहीं मारागया सो अब वह शिखण्डो के हाथसे मारागया इसहेतु से निश्चय करके द्रुपदका पुत्र शिखंडी बड़ापराक्रमी युद्धमें परशुरामजो सेभी अधिक तेजस्वो बल पराक्रममेंभी अधिकहै जिसनेशूर बीर पंडित महाशास्त्रज्ञधर्मअस्त्रके ज्ञाताभरत वंशियोंके उत्तम प्रतापी बीरको मारा युद्ध भूमिमें उस शत्रुहन्ता भीष्मजीके पीछे कौन २ बीरचले और जेसेपाण्डवों से और भीष्मजीसे लड़ाई हुई यह सब मुझसे बिस्तार समेत बर्णन करो हे संजय मेरे पुत्रकी वह सेनास्त्री के समान मृतक बीरवालीहै और वहीमेरीसेना इस प्रकारव्याकुल है जैसे कि बिनागोपके गौओंका कुल होताहै जिसमारो युद्धमें सब लोगोंकी बड़ी बीरताहै अब उस भीष्म जीके मरने के पीछे सबका मन कैसाहोगया, हे संजय अबलोक में धर्मवान्बड़े पिताको मरवा

के हमारे पुत्रोंमेंजीवनकी क्या सामर्थ्यहै,भीष्मजीके मरनेपर मेरेबेटे सदैव दुःखसे ऐसे शोचतेहैं जैसे कि पारपर खड़े हुएमनुष्य गहरेजल में डूबीहुई नौका को देखकर शोचतेहैं हे संजय निश्चय करकेमेरा बज्रसेभी अधिक कठोर हृदयहैजोऐसे पुरुषोत्तम भीष्मजीके मरनेपर भीनहींफटताहैजिसपुरुषोत्तम दुराधर्षमें अस्त्रबुद्धि और नीतिअत्यन्त थी वह युद्धमें कैसे मारागया कोईभी मनुष्यअस्त्रशूरता तपबुद्धिधैर्य्य और तपस्या इत्यादि के द्वारा मृत्युसे नहींछूटता है इससे निश्चय करके सबलोकोंको दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्यकाल महावलीहै उसकोभी उन्होंनेबशीभूत कियाहेसंजयउनशंतनुके पुत्रभीष्मजी को मृतक कहताहै उन शंतनु नन्दन भीष्मजीसे मैं पुत्रोंके शोकसेदुःखी बड़े दुःखोंको स्मरण करता हुआ रक्षाकी आशा करताथा हे संजय जब सूर्य्य के समान अस्त हुए भीष्मजीको दुर्य्योधनने देखा तब मनमें क्या बिचारकिया और मैं बुद्धि से चिन्ता करताहुआ सेना के मध्यमें अपने पुत्रोंको और अन्यराजाओंको कुछभीनहींसमझता हूं यह वह भयका कारण क्षत्री धर्म ऋषि लोगोंने दिखायाहै जहां पांडवलोग भीष्मजीको मारकर राज्यको चाहते हैंअथवा हमकौरव लोग महाव्रत वाले भीष्मजीको मरवा कर राज्यको चाहतेहैं, क्षत्री धर्ममें प्रवृत्त मेरेपुत्र पांडव भी कुछ अपराध नहीं करते हैं क्योंकि दुःख और आपत्तियों में उत्तम पुरुष को यह पराक्रम और महा सामर्थ्यप्रकटकरनेके योग्यहै उसमेंही वह सबपांडव नियतहैं हेतात उनपांडवोंने उन लज्जावान् दुराधर्ष सेनाके मर्द नकरने वालेभीष्म जीको कैसे रोका और जैसे २ सेनातैयारहुई और सब महात्माओं का युद्धकैसे हुआ और मेरापिता भीष्म दूसरों के हाथसे कैसेमारा गया, भीष्मजी के मरनेपर दुर्य्योधन कर्ण और सौबलकेपुत्रशकुनी और छली दुश्शासन ने क्या कहा, जिन देहों के बिछौनों से संयुक्त मनुष्य हाथी घोड़ों समेत बाण बरछी और बड़े खड्ग तोमर रूप पाशेवाले महा भयकारी सभा में प्रविष्ट हुए और वह युद्ध में कुशल नरोत्तम उस भयकारी प्राण दैवत अर्थात्

द्यूतरूप में खेले उनमें से कौन सा विजयी जीवता है और जो भीष्मजी से युद्ध में मारेगये इन सबको हे संजय मुझसे कहो, यहां पर भयकारी कर्म और युद्ध में शोभा पानेवाले महाव्रत पिता भीष्मजी को मृतक सुनकर मेरे हृदय में शान्ती नहीं होती हे संजय तुम पुत्र की हानिसे उत्पन्न महा पीड़ा को मेरे हृदय में ऐसे बढ़ाता है जैसे घृत से अग्नि को बढ़ाते हैं, और संबंधी लोग प्रसिद्ध महाभार को उठाकर और भीष्मजी को मृतक जानकर शोचते हैं और मैं दुर्योधन के उत्पन्न कियेहुए उन दुःखोंको सुनंगा इसकारण हे संजय वहां का सब वृत्तान्त मुझसे कहो और जो युद्धमें अल्पबुद्धियों की निर्बुद्धिता से उत्पन्न जो वृत्तान्त न्याय वा अन्याय संबंधी कैसाही हो वह सब मुझसे कहो और युद्ध भूमिमें शस्त्रज्ञ और शास्त्रज्ञ विजयाभिलाषी भीष्मजी ने जो अपने तेज से कर्मकिया वह भी बिस्तार पूर्व्वक संपूर्ण कहो और जब जिस क्रमसे समय पाकर कौरव और पाण्डवों की सेनासे परस्पर युद्धहुआ उसमें जैसा जैसा जो काम जिस २ का हुआ वह सब मुझसे कहो ७८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिधृतराष्ट्रप्रश्नेचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पंद्रहवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे महाराज यह सब प्रश्न जो तुमपूछतेहो सब ठीक हैं परन्तु आप इन दोषोंको जो लगातेहो सो योग्य नहीं है जो मनुष्य अपने बुरे कर्मसे दुःखादि को पावे वह उस पाप की शंका दूसरे पर करने के योग्य नहीं है,हे महाराज जो मनुष्योंके मध्यमें निन्दाके योग्य कर्म को करता है वह निन्दित कर्म करने वाला सब लोकों से मारने के योग्य है, छल संयुक्त दुर्योधनआदि ने निरादर किया और पाण्डवों ने मंत्रियों के द्वारा तेरी ओर को ध्यानकरके बहुत कालतक बनके बीच बैठकर उस अपमान को क्षमाकिया और मैंने प्रत्यक्षमें घोडेहाथीऔर बड़े तेजस्वी राजाओं

की जो दशा देखी और योग बलसे भी जो निश्चय किया हे राजा उसको तुम मुझसे सुनो और शोकसे चित्तको हटाओ यही होनहार प्राचीन हैं मैं आपके बुद्धिमान् पिता उन व्यासजी को नमस्कार करके कहताहूं जिनकी कृपासे मैंने दिव्यदृष्टि औरअनुपम प्रज्ञाको प्राप्तकिया, हे राजा ध्यानसे पृथक् देखना वा दूरसे बातका सुनना अथवा दूसरे के मनका अच्छे प्रकार से जानना और भूत भविष्यका ज्ञानहोना, उठेहुए अस्त्रकी उत्पत्तिकाजानना, आकाशमें शुभगवन, लड़ाइयों में अस्त्रोंसे बचजाना इत्यादि सब बातें महात्माके बरदानसे प्राप्तहैं इस अपूर्व बिचित्र वृत्तान्त को ब्योरेवार तुम मुझसे सुनो जैसे कि वह भरतवंशियोंका रोमहर्षण करनेवाला युद्धहुआ, हे महाराज जब व्यूह रचनाकी रीतिसे उस सेनाकीतैयारियाहुईं तब दुर्योधनने दुश्शासनसेकहा किहेदुश्शासन भीष्मजी के रक्षाकरनेवाले रथ शीघ्रही तैयारहों और तुम इसबात का सब सेना को शीघ्र उपदेश दो कि सेना के मनुष्यों से पाण्डव और कौरवों का वह मिलाप वर्तमान हुआ है जोकि बहुतवर्षोंसे बिचारा गयाहै, मैं युद्ध के बीच इन भीष्मजी की रक्षा से अधिक कोई बड़ा काम नहीं समझताहूं क्योंकि जो भीष्मजी की रक्षाहोगी तो यह अकेलेही पाण्डव सोमक और संजय लोगों समेत सब को मारेंगे और इन सत्यवक्ता भीष्मजी ने कहा है कि मैं शिखण्डी पर बाण और शस्त्र प्रहार नहीं करूंगा इसका यह हेतु सुनाजाताहै कि यह पूर्व्वमें स्त्री था इस कारण युद्धमें इसके ऊपर शस्त्र छोड़ना क्षत्रियों को निषेध है इस गुप्त कारण से भीष्मजी अधिक करके रक्षा करने के योग्य हैं इस मेरे मतसे हमारी सब सेना के मनुष्य शिखंडी के मारने में सावधानी से उद्युक्त होजांय और इसीप्रकार से पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इन चारों दिशाओं के सब शस्त्रधारी युद्धमें कुशल राजा लोगों को भी योग्य है कि सब मिलकर भीष्मजीकी रक्षाकरें, महाबली रक्षासे रहित सिंहको जैसे शृगाल मारे इसीप्रकार शृगाल के समान शिखंडी के हाथ से हम

लोगों को योग्य है कि सिंहरूप भीष्मजी को नहीं मरवावें, रथके बाम भागका रक्षक युधामन्यु और दक्षिण भागका उत्तमौजा यह दोनों अर्जुन के रक्षक हैं और अर्जुन शिखंडीका रक्षक हुआहै वह अर्जुन से रक्षित शिखंडी गंगाके पुत्र भीष्मजी को जिस रीति से मारने को समर्थ न हो हे दुश्शासन वही उपाय अवश्य करना चाहिये २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिदुर्य्योधनदुश्शासनसंम्बादेपंचदशेऽध्याय:१५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि तदनन्तर रात्रि व्यतीति होनेपर जोड़ो जोड़ो ऐसे राजा लोगोंके कहेहुए महान् शब्द होतेहुए और हे भरतर्षभ शंख और दुन्दुभियों के बड़े २ शब्द और बड़े २ बीर पुरुषों के सिंहनाद और घोड़ोंके हींसने के शब्द और रथके पहियोंके महान् शब्दोंसे और हाथियों की चिघाड़ों से वा मल्लों के क्रोड़ा पूर्व्वक हाथके और मुखके अनेक प्रकार के शब्दों के कारण चारों ओरसे महातुमुल भयकारी शब्द हुए ३ हे महाराज सूर्य्य के उदय होने पर सब ओरसे तैयार कौरव और पांडवोंकी महाभारी सेना आन आनकर खड़ीहुई और तुम्हारे पुत्रोंके और पांडवों के दुःप्रधर्षशस्त्र अस्त्र और कवच भी बड़ी तीव्रता से तैयार हुए तिसके पीछे जब बड़ा प्रकाश हुआ उस समय तेरे पुत्रोंकी और पांडवों की सेना के वह मनुष्य दिखाई दिये जो बडे महात्मा और शस्त्रोंको धारणकिये हुएथे, इसके विशेष वहां पर जंबूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ भी ऐसे दृष्टपड़े जैसे कि बिजली समेत बादलदिखाई देतेहैं, रथपर सवार बहुत सी सेना नगरों के समानदिखाई दीं उन सबप्रकार की सेनाओंमें आपके पिता भीष्मजी पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशमान दिखाई देतेथे और संपूर्ण सेना भर में युद्ध कर्त्ता लोग धनुष यष्टी खड्ग गदा बरछी और तोमर आदि श्वेतशस्त्रोंसहित नियतहुए, और हाथी पैदल रथ घोड़े इत्यादि हजारों पशु

चारोंओर से जाल के समान घेरेहुए दृष्ट पड़ते थे, और अपनेदू-सरे लोगोंकी हजारों ध्वजा नानाप्रकार के चिह्नोंकी दिखाई दीं, वह सब ध्वजा सुनहरी अग्नि के समान देदीप्यमान मणियों से जटित ऐसी दृष्ट पड़ती थीं जैसे कि महाइन्द्र के भवनोंमें उसीमहे-न्द्रकी श्वेत ध्वजा होतीहैं उन युद्धाभिलाषी शस्त्रोंसे अलंकृत महा-बलवानोंने परस्पर में एक एक को देखा आयुधों को उठाये हुए शस्त्रों से शोभित नलको बांधनेवाले धनुषधारी शुभ्र नेत्रोंसे प्रका शमान राजा लोग सेना के मुखपर आकर सुशोभित हुए, सौबल का पुत्र शकुनी, शल्य, अवन्ती का राजा, जयद्रथ, विन्द, अनुवि-न्द, केकय देशी राजा, काम्बोज सुदक्षिण, श्रुतायुध, कालिन्द, राजा जयत्सेन यह दशों महा शूरवीर पुरुषोत्तम परिघसमान भुजा धारी बृहद्बक्षिणा के यज्ञ करनेवाले अक्षौहिणियों के स्वामी, यह सब और अन्य बहुत से नीतिज्ञ महारथी राजा और राज कुमार जोकि दुर्योधन की स्वाधीनता में बर्त्तमान थे सब अपनी २ सेना में सावधानी से नियत भूषण शस्त्रादिकों से अलंकृत कालेमृगचर्म धारी अर्थात् युद्ध में मरण दीक्षा करनेवाले महाबली युद्धमेंकुशल प्रसन्न और दुर्योधन के निमित्त ब्रह्मलोक के अर्थ दीक्षित और समर्थ दश संख्याकी सेना को लेकर स्थिर हुए और ग्यारहवीं कौरवी महाभारी दुर्योधनी नाम बिख्यात सेना जिसके स्वामी भीष्मजी थे वह सेना सब सेनाओं के आगे बर्त्तमान थी हे राजा ऐसी महा तेजस्वी असंख्य सेना में हमने श्वेत पगड़ी श्वेत छत्र और कबच को धारणकिये दुराधर्ष चन्द्रमा के समान उदय रूप कौरवेन्द्र भीष्मजी को देखा बड़े धनुर्धारी बाण विद्या में कुशल छोटे मृगोंके समान वह संजयदेश बासी जिनका अधिपति धृष्टद्यु-म्न था जंभाई लेतेहुए इस महा सिंहरूपी भीष्म को देखकर धृष्ट-द्युम्न आदि सब के सब महा भयभीत हुए हे राजा यह तेरीग्या-रह अक्षौहिणी सेना शोभायमान हुई और इसीप्रकार पाण्डवोंकी सात अक्षौहिणी महा पुरुष से रक्षित होकर तैयारहुई और दोनों

सेना ऐसी दिखाई देतीथी जैसे कि युग के अन्त वाली प्रलय में दोनोंओर से तरंग उठते हुए महा भयानक मदोन्मत्त मकरग्राह आदि जीवों से भरेहुए दो समुद्र व्याकुल होतेहैं हे राजा हमने कौरवों की इकट्ठी हुई सेना का ऐसा युद्ध प्रथम कभी न देखा था न सुना था २७॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि सैन्य वर्णने षोड़शो ऽध्यायः १६॥

सचहवां अध्याय॥

संजय बोले कि जिसप्रकार उन भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यास जीने कहाहै उसीप्रकार सब राजालोग युद्धभूमिमें आ पहुंचे उसदिन मघानक्षत्र के देशमें नियत होकर चन्द्रमाप्राप्त हुआ और आकाश के मध्यमें सात महाग्रह राहुकेतुआदि महा तेजधारी प्राप्तहुए और सूर्य्य देवता उदयहोनेके समय दोरूपसेदिखाईदिये फिर वहप्रकाशवान् सूर्य्य अग्निकी ज्वाला के समान उदय हुआ और मांसरुधिर भोजन करने वाले लोथों के चाहने वाले काक और शृगालों के चारों दिशाओं में शब्दहोनेलगे शत्रुओं के विजय कर्त्ता सावधान चित्त सेनाओं के स्वामी कौरवों के पितामह वृद्ध भीष्मजी और भारद्वाज के पुत्रद्रोणाचार्य जीने बारंबार यहकहा कि कुन्तीके पुत्र पांडव लोगोंकी विजय हो और तेरे निमित्त युद्धकरेंगे इसप्रकार से बचनकहकर नियम किया,तब सब धर्मोंके जाननेवाले देवव्रत नाम आपके पिता सब राजाओं को बुलाकर यह बचन बोले कि हे क्षत्री लोगो तुम्हारे स्वर्ग के निमित्त यह युद्धरूपी बहुत बड़ा द्वारखुला है उस द्वारके द्वारा तुम सब इन्द्र और ब्रह्माजी की सन्निकटताको पावो, यह सनातन मार्ग प्राचीन वृद्धोंने तुम सब लोगोंके निमित्त नियत किया है तुम युद्धमें प्रवृत्त चित्तहोकर अपनी बड़ी सावधानी से लड़ो, राजा ना भाग,ययाति, मान्धाता आदि बहुतसे महात्मा ऐसेही युद्धरूप कर्मों के द्वारा सिद्धरूपहोकर उत्तम २ स्थानों को गये, घरमें रोगादि से जो क्षत्रियों का मरना है यह अधर्महै और

जो युद्ध में शस्त्रके द्वारा मरता है वही इस क्षत्री का सनातन धर्म है हे भरतर्षभ इसीप्रकार से भीष्मजी के समझाये हुए राजालोग अपनी२ सेना उत्तम२ रथोंसे शोभित और शस्त्रोंसेअलंकृत करकर के प्रस्थित हुए और वह सूर्यका पुत्र कर्ण अपने मन्त्री और भाई बन्धुओं समेत युद्धमें भीष्मजीके कारण शस्त्रोंकात्याग करनेवाला किया गया और आप के पुत्र और सब राजा लोग कर्ण से पृथक् होकर सिंहनाद करतेहुए दशों दिशाओंको चले वह सब सेनाश्वेत छत्र और ध्वजा पताका हाथी घोड़े रथ और पदातियोंसे शोभायमान थी उस समय भेरी पणव दुन्दुभियों के शब्द और रथ का चक्रधाराओंकी ध्वनि से पृथ्वी महाव्याकुल थी और महारथीलोग सुवर्ण के बाजूबंद केयूर और धनुषों से प्रकाशित होकर ऐसे शोभायमान थे मानों ज्वालामुखी पर्व्वतहीहै और कौरवोंकी सेना के रक्षक पंचतारा धारी ताल वृक्षके समान ऊंचे बड़ी ध्वजा समेत निर्मल सूर्यके समान नियत हुए हे राजा जो बड़े धनुर्धारी शस्त्रके वेत्ता राजालोग तेरी सहायता में आयेहैं वहसबभी अपने २ योग्य स्थानोंपर भीष्मजीके समीप वर्त्तमानहुए तदनन्तर गोवाशन शैव्य राजाओं के योग्य गजेन्द्र आदि चिह्नधारी ध्वजाओं से शोभित सब राजाओं समेत चला और राजा कमल वर्ण सब सेनाके आगे चला और महा सावधान शस्त्रधारी अश्वत्थामा सिंह लांगूलवाली ध्वजा से संयुक्त होकर गया और श्रुतायुध, चित्रसेन, पुरुमित्र, विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा, और महारथी विकर्ण यह सातों महा रथी बाणप्रहारी उत्तम कवच धारी हैं जिनमें मुख्य अश्वत्थामा रथमें सवार होकर भीष्मजीके आगे२चलनेवालेहुए उन सबको भी जांबूनद नाम सुवर्ण की प्रकाशित ध्वजाएं शोभायमान हुईं और आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य की ध्वजा जांबूनद सुवर्ण की वेदी और कमण्डलु से शोभित धनुष समेत प्रकाशित हुई और बहुतसी लाखों अनीकों समेत दुर्य्योधन की बड़ी भारी ध्वजा नाग चिह्न युक्त मणियों से जटित भी शोभित हुई और उसके आगे पौरव

कालिग, कांबोज, सुदक्षिण, क्षेमधन्वा, शल्य, यह सब महारथी नियतहुए और मगध के राजा वा कृपाचार्य्यजी बड़े मूल्यके रथ और वृषभ चिन्ह वाली ध्वजा समेत सेना मुखको खैंचते हुए से चले और पूर्वीराजाओं की बड़ी भारीसेना राजा अंग और महा उदार कृपाचार्य्य से रक्षित शरदऋतु के बादलोंकी समान शोभा यमानहुई और बड़ा यशस्वी बाराहके चिन्हवाली श्रेष्ठ ध्वजा का रखनेवाला महा प्रकाशवान सेनाके मुखपर शोभित जिसकेआज्ञा वर्त्ती एक लाख रथीथे वह राजा जयद्रथ आठ हजार हाथी और छः अयुत रथोंसे युक्तहोकर सेनाको शोभादेता था और सब कलिंगदेशोंका ध्वजाधारी राजा साठहजार रथ और दशहजार हाथियोंसमेत चला उसके बड़े २ रथ पहाड़केसमान शोभायमान हुए और वह अपने यन्त्र तोमर तूणीर पताका आदिसे भी महाशोभितथा और राजा कलिंगक अग्निका चिन्ह रखनेवाली उत्तम ध्वजा और श्वेत छत्र माला व्यजन चंवरसमेत शोभित था और हे राजेन्द्र युद्धमें राजाकेतुमान भी विचित्र और महा उत्तम अंकुशवान हाथीपर सवार ऐसा विदितहुआ जैसे कि बादलपरचढ़ाहुआसूर्य्य दृष्ट पड़ताहै और तेजसे प्रकाशवान उत्तम हाथीपर चढ़ाहुआ राजा भगदत्त भी ऐसा जाता था जैसे ऐरावत पर इन्द्र जाताहो और राजा बिन्द, अनबिन्द और अवन्ती के राजालोग भी हाथियों पर सवार होकर उस ध्वजाधारी भगदत्त के समीपवर्त्ती और आज्ञाकारीहुए वह रथोंकी अनीक रखनेवाला भयानक व्यूह जिसके अंग रूप हाथी राजारूप शिर और घोड़े रूपी पक्ष हैं सबओरको मुख कियेहुए हंसताहुआ उग्ररूप होकर जो गिरता है उसको द्रोणाचार्य्य, राजा भीष्म, अश्वत्थामा, वाह्लीक और कृपाचार्य्य इनपांचों ने रचाहै ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिसैन्यवर्णनेसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजय बोलेहे महाराज इसके पीछे युद्धाभिलाषी महा शूरवीरों

के कठिनभयंकर शब्द हृदयके कंपाने वाले सुनेगये, शंखदुन्दुभियों के शब्द और हाथियों की चिंघाड़ वा रथोंके पहियों के महा शब्दों से पृथ्वी कंपायमानसी होगई तबतो घोड़ोंके हिनहिनाट और गर्जना करते हुए महा मल्ल शूर बीरों के शब्दों से पृथ्वी और आकाश एकक्षणमात्रमें शब्दोंसे भरगये और वहमहा दुर्धर्ष आपके पुत्र और पांडवों की सेनाके मनुष्य परस्परमें सन्मुख होकर कंपाय मानहुए वहां जांबूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथऐसे दिखाईदिये जैसे बिजली समेत बादल दिखाई देते हैं और सुवर्ण के बाजू बन्दपहरे हुए आपके पुत्रोंकी ध्वजाओं में नाना प्रकारके रूपवाली अग्निकी ज्वाला अग्निके समान प्रकाशमान हुई इसी प्रकार सब अपने और दूसरे लोगोंकीभी ध्वजाऐसी दिखाई देतीथी जैसी कि महा इन्द्रके भवनोंमें उसकी तेजस्वी ध्वजा बर्त्तमानहों, अग्नि और सूर्य्य के समान प्रकाशमान और सुवर्णके कवचोंसे अलंकृत बीरलोग भी सूर्य्यऔर अग्निके हीसमान प्रकाशित दृष्टपड़े, हेराजा कौरवोंकी सेनामें श्रेष्ठविचित्र आयुधवा धनुष धारी आयुधों समेत उठायेहुए छत्र ताल और पिनाक नाम धनुषों के बांधने वाले सुन्दरनेत्रधारी बाण बिद्यामें कुशल सेनाके मुख पर बर्त्तमान होकर शोभायमान हुए और हे राजा आगेकहे हुए आपके पुत्रभीष्मजी के रक्षक पीठ के पीछे की ओरहुए अर्थात् दुःशासन, दुर्बिषह, दुर्मुख, दुःसह, विनिशर्ति, चित्रसेन, महारथी, बिकर्ण, सत्यव्रत, पुरुमित्र, जय, भूरिश्रवा, शल, और इसी प्रकार बीस हजार रथ इनके पीछेचलने वाले हुए, अभीषाह, शूरसेन शिवय, बसातय, शाल्व, मत्स्य, अंबष्ट त्रैगर्त्त, कैकय, सौबीर, कैतव और पूर्व्वी पश्चिमी और उत्तरीय राजाओं के समूह इन बारह देशों के नामसे बिख्यात सब शूरबीर देहोंके त्यागने वालेराजाओंने बहुत से रथों समेत पितामह की रक्षाकी, और शीघ्रगामी हाथियों की एकलाख अनीकथीउसरथोंकी अनीक के साथ मगध का राजा चला और सेनाके मध्यवर्त्ती रथोंके पहियों की और हाथियों के पैरोंकी रक्षा करने वाले साठ लाख

धनुष खड्गढाल धारणकिये हुए नख और प्रासनाम आयुधोंसे लड़ने वालेलाखों पदाती आगको चले, हे महाराज धृतराष्ट्र इस प्रकार से आपके पुत्रकी ग्यारह अक्षौहिणी सेना ऐसी दृष्टपड़ी जैसे कि गंगामें यमुना अन्तर्गत होकर दीखती है १८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिसैन्यवर्णनेअष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोलेकि पांडव युधिष्ठिरने व्यूहरची हुई ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको देखकर किस प्रकार से अपनी थोड़ीसी सेनासे व्यूह की रचना की हे संजय जो युधिष्ठिर कि मनुष्य, देवता, गन्धर्व और असुर संबंधी व्यूहों को जानता है उस कुन्तीके पुत्रने किस प्रकार से अपने व्यूह को रचा, संजय बोलेकि धर्मात्मा धर्म राज पांडव युधिष्ठिर दुर्य्योधन की व्यूह रचीहुई सेना को देखकर अर्जुन से बोलाकि हेतात अर्जुन वृहस्पति महर्षीके बचनों से हम जानते हैं कियोड़ीसेनाको मिलाकर लड़ावे और बहुतसीसेनाको इच्छापूर्व्वक फहलावे बहुत से मनुष्यों से लड़ने में थोड़े मनुष्यों की सेना का सूचीमुख होय इसी प्रकार हमारी सेना थोड़ीहै और शत्रुओं की अधिक है सो हे अर्जुन महर्षी के इस बचन को जानकर सेना का व्यूहरच यह सुनकर अर्जुन युधिष्ठिर से बोलाकि हे राजेन्द्र मैं इस तेरी सेनाके व्यूहकी वह रचना करताहूं जो इन्द्रकी नियत करीहुई बज्ररूप अचल नामहै जो वह लड़ाईमें वायु के समान उठा हुआ शत्रुओं से असह्य प्रहार करने वालोंमें मुख्य और युद्धके बिचारों में कुशल पुरुषोत्तम भीमसेन संपूर्ण सेना के पंजों को विदीर्णकरता हुआ हमारे आगे आगे चलेगा और सब कौरव लोग जिन का अग्रवर्त्ती दुर्य्योधन है वह सब कौरवी सेना भीमसेन को देख कर ऐसे लौटेगी जैसेकि सिंह को देखकर छोटे २ मृगोंके यूथभागते हैं हमसब निर्भय होकर उस प्रहार कर्त्ताओंमें श्रेष्ठ परकोटा रूप भीम सेनके समीपी होकर ऐसेरक्षालेंगे जिस प्रकार से देवता इन्द्र की

रक्षामें होतेहैं ऐसामनुष्य इसलोक में कोई नहींहै जो इसक्रोधरूप भयकारी भीमसेन को देखसके ऐसाकह कर उसमहा बाहुअर्जुनने इसी प्रकारसे किया और बड़ी शीघ्रता से अर्जुन व्यूहकी रचना करके चलागया तिसपीछे गंगाजीके समानपूर्ण और अचल पांडवों की सेना कौरवों को देखकर कुछ चलाय मान हुई इससेनाके अधिपति भीमसेन, पराक्रमी धृष्टद्युम्न, नकुल, सहदेव और राजाधृष्ट केतु थे उसके पीछेराजा बिराट एक अक्षौहिणी सेना और भाईबन्धुपुत्रों समेत भीमसेन कीरक्षाके निमित्त पीछेकी ओरहुए और भीमसेन के रथकी रक्षाकरने को नकुल और सहदेव दोनोंभाई नियत हुए और उनके पीछे द्रौपदीके पुत्र अभिमन्यु, रक्षाकरनेको उपस्थितहुए और पांचाल देशी महारथी धृष्टद्युम्न शूरोंकी सेनाका और प्रभद्रक नाम रथोंका रक्षकहुआ और हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इनसब के पीछे अर्जुनसे रक्षित भीष्मजी के मारने में कुशल शिखंडी चला और अर्जुनके पीछे रक्षाके लिये महाबली युयुधान हुआ और रथ के पहियों की रक्षा के लिये पांचाल देशी युधामन्यु और उत्तमौजा यहदोनोंहुए, के कयदेशवाशी धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितानभी साथहुए और भीमसेन वज्रसारमयी दृढ़ गदाको धारण किये बड़े वेग से चलता हुआ समुद्र कोभी शोषण करने वालाथा, हे राजा उसके पीछे अर्जुन भीमसेन से यह बचन बोला कि हे भाई भीमसेन तुम्हारे देखनेको मन्त्रियों समेत धृतराष्ट्रके पुत्र बर्त्तमान होकर नियत हैं तुम इनको अपना अतुल पराक्रम दिखाओ ऐसे बचनों के कहने वाले अर्जुन को युद्धभूमि में देखकर सब सेना ने अपने अनुकूल बचनों से उसको पूजा और कुन्ती का पुत्र राजा युधिष्ठिर सेनाके मध्यमें चलाय मान पर्व्वत क समान मत वाले हाथियों से संयुक्त था इन सबके पीछे पांचाल देशी बड़ा साहसी पराक्रमी यज्ञ सेन राजा एक अक्षौहिणी सेना समेत राजा बिराट के पीछे चला जिसके रथोंपर सूर्य्य चन्द्रमा के समान प्रकाशित उत्तम सुवर्ण के आभूषणोंसे अलंकृत अनेक प्रकार की चिन्ह वाली

बड़ी २ ध्वजा वर्त्तमानथीं तदनन्तर महारथी धृष्टद्युम्नने सेनाको हटाकर भाईबेटों समेत युधिष्ठिर को रक्षामें किया और हे धृतराष्ट्र तेरे पुत्रोंके और अन्य राजाओं के रथोंपर जो बड़ी २ ध्वजा थीं उन सबको तिरस्कार करके अर्जुन की ध्वजा पर श्रीहनुमान् जी अपने अनेक भारोंको लिये वर्त्तमान हुए खड्ग बरछी यष्टी आदि के रखने वाले लाखों पदाती रक्षाकरने के लिये भीमसेनके आगेआगे चले २६ और गंडस्थलोंसे मद डालनेवाले बली महाबली सुनहरी जालोंसे शोभित अकंपी बादलसे मद बरसाने वाले बहुमूल्य वाले बर्षा कालीनमेघोंके रूपकमल कीसी गन्धवाले दशहजारमदोन्मत्तहाथी राजाके पीछेचले उसकाल महा साहसी दुराधर्ष परिघ के समान भयानक गदाको धारणकिये हुए बड़े प्रबल भीमसेन ने बड़ीभारी सेनाकोखैंचा तब उस सूर्य्य के समान दुःख से देखने योग्य सेनाके तपानेवाले भीमसेनके सन्मुख आकर वह सब सेना समीपसे उसकेदेखने में असमर्थ हुई और वह बज्र नाम निर्भय सब ओरको मुख रखनेवाला भयंकर व्यूह बड़ीभारी ध्वजा रूप विजलीसे संयुक्तगाण्डीव धनुषधारी अर्जुनसे रक्षित हुआ हे राजा तेरीसेनाके सन्मुख पाण्डवलोग जिसव्यूह को रचकर वर्त्तमान है वह व्यूह चारोंओर पाण्डवों से रक्षित होकरइसलोक में महादुर्धर्ष है अर्थात् उसका विजयकरनेवाला कोईनहीं दिखाई देताहै, सूर्योदयी संध्याके समय सबसेनाके नियतहोने पर बिना बादल आकाशीय जल कणरखनेवाला महाप्रचंड वायुका बेगचला कंकड़ों की खैंचनेवाली पृथ्वी संबंधी महावायुचली उसके कारण बड़ी भारी धूल ऐसी उड़ी कि जिससे संपूर्ण संसार आच्छादित होगया उस समय महाशब्दवाले पूर्वको मुखकिये उग्रउल्कापात हुए और उदय होनेवाले सूर्य्यको घातकरके फैलगये इसके पीछे फिर सबसेना के तैयारहोने के समय सूर्य्यका उदय प्रकाश से रहित हुआ और शब्दोंके कारण पृथ्वी कंपायमानहुई और अनेक प्रकार से हिल झुल कर जहां तहां फट भी गई और सबदिशाओं में हवाओं के

परस्पर टक्करखाने से बड़े२ भयानक शब्दहुए ऐसीभारी कठिनधूल उड़ी कि कुछभी नहीं जानपड़ताथा फिर अकस्मात बायुसे कम्पायमान सुनहरी माला वा उत्तम बस्त्रों समेत क्षुद्रघंटिकावाले जालों सेमंडित प्रकाशमान ध्वजाओं का ऐसा झंझणी शब्द हुआ जैसा कि ताल वृक्षके बनमें होताहै, हे भरतर्षभ इस प्रकार से वह युद्ध कोशोभा देनेवाले पुरुषोत्तम हाथमेंगदा लिये हुए भीमसेनको आगे नियतदेखकर आपके पुत्रकीसेना सन्मुखमें व्यूहको रचकर हमारे बीरोंकी मज्जा को निगल जानेवालों के समान नियत हुई ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्य्योदयहोनेपर भीष्मजीके आज्ञावर्त्ती मेरे पुत्र अथवा भीमसेन से रक्षित पाण्डव लोगोंमें से युद्धाभिलाषी सेनाके सन्मुख लड़ने को कौन २ प्रसन्न मनहुए किसके पीछे तो वायु समेत सूर्य्य और चन्द्रमा हुए और किनको सेना को फाड़ने वाले श्वान आदि पशुओंने मूंसा और कौनसेबीरोंका प्रसन्न मुख था यह सब यथातथ्य संपूर्णताके साथ मुझसे कहो, संजय बोले हे महाराज भरतबंशी बराबर सन्मुखजानेवालीदोनों व्यूहितसेना प्रसन्नरूप चित्रित बनकी पंक्तिके समान प्रकाशित हाथी घोड़े रथोंसेयुक्त महाभयानक और क्षमारहित क्रोधाग्निरूपस्वर्ग के विजयकेलिये उत्पन्न सत्पुरुषोंसे सेवित अर्थात् सत्पुरुषोंकेनिवास स्थानथीं उस समय धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव तो पश्चिमाभिमुख और युद्धाभिलाषी पाण्डव लोग पूर्व्वाभिमुख नियतहुए इन दोनोंमें कौरवों की सेना तो दैत्येन्द्र की सेनाके समान थी और पाण्डवों की सेना देवेन्द्रकी सेनाके समान थी ५ उस समय में पाण्डवोंके तो पीछे की अनुकूल वायुचली और धृतराष्ट्र के बेटों की सेनाको कुत्ते भोंगकेथे और हे धृतराष्ट्र तुम्हारे पुत्रों के हाथी गजेन्द्रोंकी उत्कटमदवाली गंधको न सहसके, और कौरवोंकेमध्य

में बन्दीमागधोंसे स्तुतिमान कमलवर्ण रूप सुनहरी अंबारी और जालवाले मदोन्मत्त हाथीपर दुर्योधन सवारहुआ, जिसकेशिरपर चन्द्माकेसमान प्रकाशित छत्र और सुवर्णकी माला प्रकाशमान थी और गन्धारका राजा शकुनी सब गन्धारियों और पहाड़ियों समेत उसको सब ओरसे घेरेहुए जाताथा, और श्वेत छत्र श्वेत धनुष श्वेत खड्ग और श्वेतहीपगड़ी पहरेहुए श्वेतपर्व्वतके समान श्वेतही घोड़ोंसमेत पाण्डुवर्ण की ध्वजायुक्त होकर वृद्ध पितामह भीष्मजी सब सेनाके आगे जातेथे उनकी सेनामें आपके सब बेटे बाल्हीकोंका एक देश, शल, अंबष्ट, सिंधुके राजा लोग, सौवीर, और पंचनदके सब शूरबीर थे और महाबली धनुष हाथ में लिये महात्मा गुरू द्रोणाचार्य्यजी लाल घोड़े के लालही रथपर सवार पर्व्वतकैसमान अचल कौरव पांडव और अन्य बहुधा राजाओं के गुरू पीछे २ जाते थे और सब सेनाके मध्यमें वार्धक्षत्री, भूरिश्रवा, पुरुमित्र, जय, शाल्व, मत्स्य, और केकयदेश बासी सबभाई और युद्धाभिलाषी सेना हाथियोंसमेत चली, तब महात्मा धनुर्धारीचित्रयोधी गौतम कृपाचार्य्यजी शकजाति,किरात,यवन अर्थात्यूनानी राजालोगों समेत सेनाके उत्तर ओरको रक्षा करतेहुए जाते थे और संतप्तकनाम दशहजार रथी जो कि अर्जुन की मृत्यु वा विजय करने के लिये उत्पन्न किये थे वह त्रिगर्त्तदेशी अस्त्रज्ञ शूरबीर लोग जिधर की ओर अर्जुन था उस दिशा की ओर जाते हुए, हे भरत वंशी आपके हाथी भी एकलाख से ऊपर थे और हर एक हाथी के साथ सौरथ और प्रत्येक रथ के साथ सौ २ घोड़े और हर घोड़े के पीछे दश दश धनुष धारी और हर एक धनुष धारी के साथ दश दश मनुष्य थे, हे भरतवंशी इस प्रकार से भीष्म जीने आपकी सेना को तैयार किया, शन्तनु के बेटे प्रभु भीष्मजी ने प्रतिदिन की विद्यमान तामें मानुष, दैव, गान्धर्व, आसुर नाम चारों प्रकार के व्यूहों को अच्छीरीति से रचकर युद्ध के बीचधृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह बड़े २ रथों के समूहों से समुद्र के समान

बिस्तृत और शब्दायमान पूर्व्व की ओर को रचा, हे महाराज आपकी सेना बहुत रूप और ध्वजा संयुक्त होने से ऐसी महाभयानक है जिसका मैं केशवजी और अर्जुन की सहायता वालीपाण्डवों की सेना से भी बड़ी कठिनता से धर्षना के योग्य समझता हूं १६ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणिसेनवर्णनेविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि कुंती के बड़े बेटे राजा युधिष्ठिर ने दुर्य्योधन की बड़ी सेना को अत्यन्त उद्यत जानकर बड़ी व्याकुलता को पाया, और भीष्म जी के रचेहुये अभेद्य व्यूह को यह जानकरकि यह अभेद्य है महा भयभीत रूपान्तर दशा में होकर अर्जुन से कहा कि हे महाबाहु अर्जुन युद्ध में धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ हम लोग युद्ध करने को कैसे समर्थ होसक्ते हैं जिनकी ओर से युद्ध करने वाले भीष्म पितामह हैं इन महा तेजस्वी शत्रुहन्ता भीष्म जीने शास्त्रोक्त देखी हुई विधिके अनुसार बड़ी सावधानी से इस अभेद्य व्यूहको रचा है हे शत्रुहन्ता अर्जुन हम सब सेना समेत व्याकुल होते हैं इस महाभारी व्यूह से हमारी कैसे विजय होगी हे राजा धृतराष्ट्र आपकी सेना के देखनेसे व्याकुल हुए युधिष्ठिर की इस बात को सुनकर अर्जुन बोला कि हे राजा युधिष्ठिरथोड़े से भी बुद्धिमान् शूरबीर गुणीपुरुष बहुतभारी सेना को विजयकरते हैं ऐसा निश्चय जानो हे राजा वहां एक एक के छिद्रों को देखता है इसका भेद मैं तुझसे कहूंगा इस कारण को नारदऋषि, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य्य जी यह तीनों जानते हैं हे निष्पाप युधिष्ठिर पूर्व समय में देवता और असुरों के युद्ध में ब्रह्माजी ने इस प्रयोजन को मानकर महा इन्द्र आदि देवताओं से कहा है कि विजय के चाहने वाले पराक्रमी पुरुष बल पराक्रम से ऐसी विजय नहीं कर सक्ते जैसी कि सत्यता दया और एक धर्म से

बिजय करते हैं, धर्म अधर्म और लोभ को जानकर उत्तम धर्मयुक्त अहंकार रहित होकर युद्ध को करो जहां धर्म है वहाहीं बिजयहै हेराजा जैसा कि नारदजीने कहाहै उसी प्रकार चित्तमें सदैवजानो कि हमारीही बिजयहोगी अर्थात् नारदजीने कहाहै कि जिधर श्री कृष्णजी हैं उधरही बिजय होगी क्योंकि बिजय श्रीकृष्णजी के पास दास रूप होकर पीठकी ओर से सन्मुख होकर स्तुति करती है जिस रीति से इनकी बिजय है उसी प्रकार नम्रता आदि उसके दूसरे गुण हैं श्री गोविन्दजी अत्यन्त तेजस्वी शत्रुओं के समूहोंसे अधर्ष संपूर्ण ब्रह्माण्डमें व्यापक सनातन सच्चिदानन्द रूप हैं इससे जिधर श्रीकृष्ण हैं उधरही बिजय है निश्चयहै कि पूर्व समयमें यह मायासे पृथक् अछेद्य आयुधरखनेवाला हरिरूप प्रकटहोकर देवता और असुरोंको अपनी बज्रसमान बाणीसे चेता कर यह बचन बोलाथा कि कौन बिजय करता है उसके उत्तर में जिन्होंने यह कहा कि श्रीकृष्णजी की सहायता से बिजयकरते हैं वहां उन्हीं लोगोंने बिजयको और इन्द्रादि देवताओंने उसकी कृपासे तीनोंलोकों को पाया, हे भरतवंशी वैसीपीड़ा मैं तुझमें नहीं देखताहूं जिसकी बिजयको विश्वका भोक्ता और स्वर्ग्ग का ईश्वर चाहता है ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि युधिष्ठिरअर्जुनसम्वादएकविंशोध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसकेपीछे भीष्मजीके सन्मुख राजा युधिष्ठिरने अपनी व्यूहितसेनाको उपस्थित किया, फिर धर्मयुद्धसे उत्तम स्वर्गके चाहनेवाले कौरवोंके पोषण करनेवाले पाण्डवोंने गुरू की आज्ञाके अनुसार सेना को यथायोग्य स्थान पर नियतकिया मध्यमें अर्जुन से रक्षित शिखंडीकी सेनाहुई और आगेचलताहुआ धृष्टद्युम्न भीमसेनसे रक्षितहुआ और इन्द्र के समान धनुषधारी श्रीमान युयुधान से दक्षिण को सेना रक्षित

हुई और राजायुधिष्ठिर हाथियों की सेनामें महेन्द्र की सवारी के स्वरूप सुन्दर सामग्रीवाले सुवर्ण और रत्नों से जटित सुनहरी कलश युक्त रथपर नियतहुआ इसका श्वेतछत्र हाथीदांत कीयष्टी पै शोभित अत्यन्त ऊंचा दे दीप्यमान था महर्षीलोग स्तुति को करतेहुए इस महाराज के दक्षिण चलनेवालेहुए पुरोहितलोग और शास्त्रज्ञ ब्रह्म ऋषि अथवा सिद्ध पुरुष मन्त्र जप और बड़ी बड़ी औषधियों समेत इसका स्वस्त्यन पढ़तेहुए शत्रुके मरणको उच्चारण करतेहैं तदनन्तर वह कौरवोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर सुन्दर वस्त्र, गौ, फल, फूल और सुवर्ण मुद्राको ब्राह्मणों के अर्थदान और भेटों को करताहुआ देवेश्वर इन्द्रके समानचला, और अर्जुनका रथमणियों के जटितहोने से हजारों सूर्य्य के समान प्रकाशमान और सैकड़ों घंटालियों से चिन्हित उत्तमजांबूनद नाम सुवर्ण से मढ़ा अग्नि के समान किरणोंसे युक्त श्वेत घोड़े और सुन्दर पहियों से शोभित है वह गाण्डीवधनुषधारी हाथमें बाण रखनेवाला कपिलध्वज जिसकी समान धनुषधारी पृथ्वीमें न कोई है न होगा वह अर्जुन केशवजी को पकड़े हुए रथपर विराजमान है वह तेरे पुत्रकी सेनाको मर्दन करताहुआ बड़े भयकारी रूपको धारण करता है, और जो कि अशस्त्र भी सुन्दर भुजदंड युक्त युद्धके मध्यमें अपनी महाभुजाओं सेही मनुष्य और हाथियोंको मर्दन करताहै वह वृकोदर भीमसेन अपने छोटेभाई नकुल सहदेव समेत शूर बीर अर्जुन के रथ का रक्षक है, उस महासिंहरूप चाल चलनेवाले लोकमें महाइन्द्र के समान दुराधर्ष सेनाके आगे वर्त्तमान महाबली भीमसेन को देखकर तुम्हारी सेनाके मनुष्य ऐसे कंपायमानहुए जैसे कि कीचमें फंसे हुये हाथी भयभीत होते हैं उस गजेन्द्र के समान गर्व से भरे हुये भीमसेन को देखकर आपके शूरबीर लोग चित्तसे भयभीत होकर मन से हार गये, और हे राजा तब सेना में वर्त्तमान दुराधर्ष अजेय राजकुमार अर्जुन से जनार्दन श्रीकृष्णजी यह वचन बोले, कि हे अर्जुन जिस भीष्म ने अपने क्रोध से सेना को संतप्त

किये हुये बलमें नियत सिंह रूप होकर हम से बचाया है वह भी भीष्म कौरव कुलकी ध्वजा है जिसने कि तीन सौ अश्वमेध यज्ञ किये, यह सब सेना इसको ऐसे घेरे हुए है जैसे कि सहस्त्र किरण वाले सूर्य्य को बादल घेरलेते हैं हे पुरुषों में बड़े बीर अर्जुन तुम इन सेनाओं को मारकर भरत वंशियों में श्रेष्ठ भीष्म जी के साथ युद्ध करने की इच्छा करो १७॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणिकृष्णार्जुन संवादेद्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा युद्ध के निमित्त सन्मुख वर्त्तमान दुर्योधन की सेनाको देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुन के अभीष्ट सिद्ध करने के लिये यह बचन बोले कि हे महाबाहु अर्जुन तुम युद्ध के सन्मुख बर्त्तमान होकर बड़ी पवित्रता से शत्रुओं की पराजय के लिये श्री दुर्गा जीके स्त्रोत्र का पाठ करो, संजय बोले कि इस प्रकारबासुदेवजी की आज्ञाको सुन कर पाण्डव अर्जुन ने रथसे उतर करहाथ जोड़कर युद्ध भूमिमें आगेलिखे हुए दुर्गाजी के स्त्रोत्र को पढ़ा,

स्तोत्र॥

अर्जुनउवाच ओंनमस्तेसिद्धसेनानि आर्येमन्दारवासिनि॥ कुमारिकालिकापालि कपिलेकृष्णपिंगले॥ १॥ भद्रकालिनमस्तुभ्यं महाकालिनमोस्तुते। चंडिचंडेनमस्तुभ्यंतारिणिवरवर्णिनि॥ २॥ कात्यायनिमहाभागेकरालिविजयेजये। शिखिपिच्छध्वजधरेनानाभरणभूषिते॥ ३। अट्टशूलप्रहरणेखड्गखेटकधारिणि॥ गोपेन्द्रस्यानुजेज्येष्ठे नन्दगोपकुलोद्भवे॥ ४॥ महिषासृक्प्रियेनित्यंकौशोकिपीतवासिनि॥ अट्टहासेकोकमुखेनमस्तेस्तुरणप्रिये॥ ५॥ उमेशाकंभरिश्वेतेकृष्णेकैटभनाशिनि॥ हिरण्याक्षिविरूपाक्षि सुधूम्राक्षिनमोस्तुते॥ ६॥ वेदश्रुतिमहापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदसि॥ जंबूकटकचैत्येषुनित्यंसन्निहितालये॥ ७॥ त्वंब्रह्मविद्याविद्यानां महानिद्राचदेहिनाम्॥ स्कन्दमातर्भगवति दुर्गेकान्तारवासिनि ८॥ स्वा

हाकारःस्वधाचैवकलाकाष्ठासरस्वती ॥ सावित्रीवेदमाताच तथावेदान्तउच्यते ९ ॥ स्तुतासित्वंमहादेवि विशुद्धेनान्तरात्मना । जयोभवतुमेनित्यंत्वत्प्रसादाद्रणाजिरे १० कान्तारभयदुर्गेषुभक्तानां पालनेषुच ॥ नित्यंवसासिपातालेयुद्धे जयसिदानवान् ॥ ११ त्वंजंभनी मोहिनीचमायाह्री श्रीतथैवच ॥ संध्याप्रभावतीचैव सावित्रीजननीतथा॥१२ तुष्टिःपुष्टिधृतिर्दीप्तिश्चंद्रादित्यविवर्द्धिनी॥भूतिर्भूतिमतांसंख्ये वीक्ष्यसेसिद्धचारणैः १३ ॥ संजयउवाच ॥ ततःपार्थस्यविज्ञाय भक्तिंमानववत्सला॥अन्तरिक्षगतोवाचगोविन्दस्याग्रतःस्थिता १४॥ देव्युवाच ॥ स्वल्पेनैवतुकालेनशत्रून्जेष्यसिपाण्डव ॥ नरस्त्वमसिदुर्द्धर्षनारायणसहायवान् ॥ १५ ॥ अजेयस्त्वंरणेऽरीणामपिवज्रभृतःस्वयं ॥ इत्येवमुक्त्वावरदाक्षणेनान्तरधीयत १६ लब्ध्वावरंतुकौंतेयोमनेविजयमात्मनः ॥ आरुरोहततःपार्थोरथंपरमसंगतं ॥ कृष्णार्जुनावेकरथौदिव्यौशंखौप्रदध्मतुः १७ यइदंपठतेस्तोत्रंकल्पउत्थाय मानवः यक्षरक्षःपिशाचेभ्योनभयंविद्यतेसदा ॥ १८ ॥ नचापिरिपवस्तेभ्यःसर्पाद्यायेचदंष्ट्रिणः नभयंविद्यतेतस्यसदाराजकुलादपि १९ विवादेजयमाप्नोतिबद्धोमुच्येतबंधनात् ॥ दुर्गेतरतिचावश्यंतथाचौरैर्विमुच्यते ॥ २० ॥ संग्रामेविजयोनित्यंलक्ष्मींप्राप्नोतिकेवलम् ॥ आरोग्यबलसंपन्नोजीवेद्वर्षशतंतथा इति ॥ २१ ॥ एतद्दृष्टंप्रसादात्तुमयाव्यासस्यधीमतः मोहादेतौनजानन्तिनरनारायणावृषी २२ मैंने बुद्धिमान व्यासजी की कृपासे यह देखाहै लोग अपने मोहसे इन दोनों नर नारायण ऋषियोंको नहीं जानते हैं आप के सब पुत्र दुरात्मा और अभिमानी हैं यह बचन समय के अनुसारहैं कि वह सब काल के फन्देमें फंसेहुए हैं, व्यासजी, नारद, कण्व, परशुराम, नभ, इन सब ऋषियोंने आपकेपुत्रको बहुत निषेधकिया परन्तु इसने उस बातको स्वीकार नहीं किया जहां धर्म है वहीं तेज की कान्ति है और जहां काम है वहां लक्ष्मीहै इसीप्रकार जिधर मुनि लोगहैं उधरही धर्महै और जिधर श्रीकृष्णहैं उधरहीविजयहै २८

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिदुर्गास्तोत्रनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस युद्ध भूमिमें किधरके शूरबीर अति प्रसन्न मनहोकर लड़तेहुए स्थिर चितहैं और किधरके दुःखी मनहोकर उद्विग्न चितहैं और युद्धके बीच मेरे पुत्रोंमें से अथवा पाण्डवोंमेंसे प्रथम किसने हृदय का कंपानेवाला प्रहार किया हे संजय इसको मुझसे बर्णन करो, और किसकी सेनाओं में सुगन्ध युक्त पुष्प मालाओंके उदयमें अत्यन्त गर्जना करनेवाले शूरोंके वचन उत्तम साहस प्रकट करनेवाले हैं संजय बोले कि वहां दोनों सेनाओंके शूरबीर प्रसन्न हैं और बराबर माला हैं और दोनोंसेनाओंमें सुगन्धता फैल रहीहै हे भरतर्षभ व्यूह रचित परस्पर मिलीहुई मिलापसे बड़ारूप धारण करनेवाली सेनाओंकारंग रूप बदलगया और शंख और भेरियोंसे मिलेहुए परस्परके शब्द और युद्ध भूमि के बीच परस्पर गर्जनेवाले शूरबीर पुरुषों के भी शब्द सब स्थान में फैल गये, हे धृतराष्ट्र दोनों सेनाओंके बीच परस्पर देखने वाले शूरबीर और गर्जने वाले हाथी और प्रसन्न चित्त सेना के चित्तोंमें बड़ा खेद हुआ ७॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि धृतराष्ट्रसंजय संवादे चतुर्विंन्शोऽध्यायः २४॥

पचीसवां अध्याय॥

श्रीमद्भगवत गीता प्रारंभः॥

श्रीगणेश जीको नमस्कार करते, ब्रह्मादि देवताओंको प्रणाम करके अपने सद्गुरूके चरणों को नमस्कार करता हूं जिनकी कृपा वा अनुग्रह से इस भगवत गीताका अपनी बुद्धिके अनुसार भाषानुवाद करताहूं॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में मिलेहुए युद्धाभिलाषी मेरे पुत्रोंने और पांडवोंने क्या २ कामकिये, संजय बोले कि हेराजा धृतराष्ट्र उस समय राजा दुर्य्योधन पांडवोंकी व्यूहरची

हुई सेनाको देखकर द्रोणाचार्य्यजी सें यह बचन बोला कि हे आचार्य्य जी द्रुपद के बेटे आपके शिष्य धृष्टद्युम्न से व्यूह रचो हुई पांडवोंकी बड़ीसेनाको देखो, इस सेनामें बड़े धनुषधारी युद्धमें कुशल भीमसेन और अर्जुन के समान जो२ बीरहैं उनके नामयहहैं युयुधान, बिराट, महारथी द्रुपद, धृष्टकेतु, चेकितान पराक्रमी काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज, नरोत्तम शैव्य पराक्रमी युधामन्यु विक्रान्त तथा उत्तमौजा सुभद्राकापुत्र अभिमन्यु द्रौपदीके पांचोपुत्र यहसब महारथी हैं (टीका) जो शस्त्र बिद्यामें कुशल धनुष धारी अकेलाही ग्यारह हजार शूरबीरोंसे युद्धकरे वह महारथी कहाता है और जो अकेला असंख्य बीरोंसे युद्धकरे वह अति रथीहै और जो एकही से लड़े वह रथी कहाता है इस्से कमको अर्धरथी कहा है) धृतराष्ट्र बोले हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ हमारे जो बिशिष्ट लोगहैं उन के भी नामोंको सुनों आप, भीष्म, कर्ण, युद्धके बिजय करने वाले कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्तका पुत्र भूरिश्रवा, जयद्रथ आदि अनेक शूरहैं वह सबमेरे निमित्त जीवनके त्यागने वालेनाना प्रकारके शस्त्रों के धारण करने वाले सबके सब युद्धमें बड़े कुशल हैं और चारों ओर से भीष्मजीसे रक्षित हमारी सेना अधिक होने के कारण दुराधर्षहै और भीमसेनसे रक्षितपांडवोंकीसेना न्यूनहोनेके हेतुसे धर्षनाके योग्यहै अपने आपही सब लोग अपने२ सबमोरचों पर यथाबिभाग स्थितहोकर भीष्मजीकीही चारोंओरसे रक्षा करतेहैं और कौरवों में वृद्ध प्रतापवान भीष्मजीने सिंहनाद के समानशंख ध्वनि को किया, तदनन्तर शंखभेरी ढोल, आनक, गोमुख इत्यादिबाजे चारोंओर को बजे और महा शब्दहुए उसके पीछे श्वेत घोड़ों से जुतेहुए बड़े रथ पर सवार होकर माधवजी और पांडव अर्जुन ने दिव्यशंखोंको बजाया अर्थात् हृषीकेश श्रीकृष्णजीने पांच जन्यनाम शंख और अर्जुन ने देवदत्त नाम शंखको बजाया और कुन्ती पुत्र राजायुधिष्ठिरने अनन्तबिजयनामशंखको और नकुल सहदेवइनदोनोंने सुघोष और मणि पुष्पकनामशंखोंको बजाया और बड़े धनुष

धारी काशिराज,१७ महारथी शिखंडी,और धृष्टद्युम्न,बिराट, और बिजयी सात्विकी, १७ द्रुपद और द्रौपदी के पांचोंपुत्र, महाबाहु अभिमन्यु इन सबोंनेसब ओरसे पृथक् २ शंखोंको बजाया इनसब शंखोंके महा शब्दोंसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंके हृदय विदीर्ण से होगये और पृथ्वीसे आकाश पर्य्यन्त शब्दव्याप्त होगया तदनन्तर बानर ध्वज अर्जुन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको व्याकुल और अच्छे प्रकार से नियतदेख कर शस्त्रोंके प्रहार जारी होनेके समय धनुष को उठाकर सबजगत् के स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्णजी से यह बचन कहनेलगा कि हेअबि नाशी कृष्ण मेरे रथको दोनोसेनाओं के मध्यमें नियत करो प्रथम मैं इन युद्ध में स्थिरशूर बीरोंको देखूंकि इसयुद्धके आरंभमें मुझको किससे वा किसको मुझसे लड़ना उचित है जो यह राजालोग इस दुर्बिद्धी दुर्य्योधन की सहायता करने को यहां आये हैं इनसब युद्धाभिलाषियों को मैं देखूं संजय बोलेकि इस प्रकार से अर्जुनके बचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी अर्जुनके रथको दोनोंसेना ओंकेमध्य में नियतकर भीष्म द्रोणाचार्य आदि सब राजाओं के सन्मुख यह बचन बोलेकि हे अर्जुन इन मिलेहुए कौरवों को देखो वहां पर अर्जुन भूरिश्रवा आदि पिता रूप और भीष्म पितामहादिक पिता मह स्वरूप और आचार्य्य और शल्यआदि मामाआदि औरदुर्य्यो धन आदि भाई और लक्ष्मण आदि पुत्र और लक्ष्मणके पुत्रआदि प्रपौत्रोंको और अश्वत्थामा आदि मित्रोंको और कृतवर्मा आदिश्व-शुर और सुहृदों को दोनों सेनाओं केमध्यवर्त्ती इन सबबांधवादि को अपने नेत्रोंसे देखकर बड़ी करुणासेयह बचन बोलाकिहे श्रीकृष्ण जी इन युद्धाभि लाषी सुजन सुहृद पितापिता मह गुरू भाई बन्धु और पुत्र पौत्रादिकों को अपने सन्मुख युद्धकरने के निमित्त नियत देखकर मेरे अंग शिथिल होतेहुए मुखमें शुष्कताहोकर शरीरमेंकंप और रोमांचखड़े होतेहैं हाथसे गांडीव धनुष गिरा पड़ता है और शरीर की त्वचा भस्म हुई जाती है यहांखड़े होनेकोभी असमर्थ होकर मेराचित्त चलायमानहोताहै और हेकृष्ण मैं बिपरीत शकुनों

कोभी देखता हूं युद्धमें अपने सुजन लोगों को मार कर पीछे से अपना कल्याण नहीं देखताहूं हे श्रीकृष्ण मैं विजय करके राज्य संबंधी सुखोंको नहीं चाहताहूं राज्य से हम को क्या लाभहै और जीवन करके भोगों से क्याफल होगा हमजिन लोगोंके लियेराज्य सुख और भोगोंको चाहते हैं वही सब लोग अपने प्राणधन आदि सुखों को त्याग करके इसयुद्ध में बर्त्तमानहैं अर्थात् आचार्य्य,पिता, पितामह,मामा,श्वशुर, पोते साले बहनोई इत्यादिअनेक नातेदार लोग युद्धमें जीवन की आशाछोड़े हुए बर्त्तमान हैं हे मधुसूदन जी मैं त्रिलोकी केभी राज्यकेलिये इन मारने वालों को भी नहींमारना चाहता हूं तो क्या पृथ्वी के लिये इनको मारूंगा, हे जनार्दनजी धृतराष्ट्र के भी पुत्रोंको मार कर हमको क्या सुखहोगा इनआतत-यियों काभी मारनेसे हमको पापहीहोगा(अग्निलगानेवाला,बिषदे नेवाला,धनका चुरोने वाला, क्षत्रका हरनेवाला,स्त्रीका हरनेवाला, यह सब आततायी होतेहैं इनके बिषयमें लिखाहै कि इनआततायियों कोबिनाही बिचारके मारडालना योग्यहै इन आततायियों के मारने में कुछ पापनहीं होताहै परन्तुअर्जुन कहतेहैं कि ऐसों के भी मारने में हमको पापही होगा सो यह अर्थ शास्त्रका बचन है और धर्म शास्त्रका यह बचन है कि किसी जीवमात्र को न मारे और अर्थशास्त्र से धर्म शास्त्र अधिकबलवान है) इस कारण हम अपने बांधव धृतराष्ट्र के पुत्रों के मारने को योग्य नहीं हैं हे माधव जी हम सुज नों को मारकर कैसे सुखीहोंगे यद्यपि लोभा कर्षित चित्तहोकर यह लोग कुल के नाश रूप दोषको और मित्रोंके साथ शत्रुताकरने के पातक को नहीं देखतेहैं,हे जनार्दनजी कुलकेनाश होने से उत्पन्न दोषो देखनेवाले हम लोगोंको इस पापसे अलग रहना क्यों नहीं चाहिये, कुल के नाशमें कुलके परम्परा सम्बन्धो कुल धर्म भी नष्ट होतेहैं और धर्मके नष्ट होनेसेसम्पूर्ण कुल अधर्मी होजाता है और अधर्म अधिक होनेसे कुलकी स्त्रियां दोष युक्त होजातीहैं, हे वृष्णि वंशी श्रीकृष्णजी दुष्ट स्त्रियोंमें वर्णसंकर उत्पन्न होताहै कुलके नाश

करने वालोंके घराने का वर्णसंकर नरकही के लियेहै उनके पितृ लोग पिण्ड जल आदि क्रियाके गुप्त होजाने से स्वर्ग से गिरते हैं, तात्पर्य यहहै कि वेदके अनुसार दूसरेका उत्पन्नहुआ पुत्रकभी मनसे भी अपना न मानना चाहिये कुलके नाशकरनेवाले पुरुषोंके इन बर्णसंकर करनेवाले दोषोंके कारण प्राचीन कुलधर्म जातेरहते हैं हे श्रीकृष्ण जी जिनके कुल धर्म लोप होगये हैं उन मनुष्यों को सदैव नरक का निवास होताहै यह बड़े लोग कहते आये हैं बड़े दुःख और पश्चात्ताप की बातहै कि हम उनबड़े पाप करनेके निश्चय करनेवालेहुए जो राजसुखके निमित्त अपने सुजनोंको लोभसे मारने को उद्यत हुये जो धृतराष्ट्र के पुत्र शस्त्रधारी होकर मुझअशस्त्रधारी सन्मुखतासे रहित को मारें तो मेरा बड़ा कल्याण होवे, संजयबोले कि इसप्रकार शोकग्रस्त चित्त अर्जुन युद्धमें ऐसे करुणा पूर्व्वक बचनोंको कहके धनुष बाणको रखकर रथके पृष्ठ भागमें बैठगया,

इतिश्रीभीष्मपर्वणिभगवद्गीतास्रीकृष्णार्जुनसंबादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

भगवद्गीता

दूसरा अध्याय ॥

संजय बोले कि स्नेहयुक्त कृपासे भरेहुए अश्रुपातसमेत व्याकुल और दुखी अर्जुन को जानकर मधुसूदन श्रीकृष्णजी यह बचन अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन इस युद्धमें ऐसा मोह तुझको काहेसे उत्पन्न हुआ यह मोह स्वर्ग रोकनेवाला और अपकीर्त्ति का प्रकट करनेवाला है ऐसे मोहको नपुंसक लोग करते हैं इससे हे अर्जुन तू नपुंसक मतहो यह तुझको उचित नहीं है हे शत्रुहन्ता अर्जुन हृदय की इस क्षुद्र दुर्बलताको त्यागकरके खड़ाहोजा यह सुनकर अर्जुन बोले कि हे मधुसूदनजी मैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मपितामह के सन्मुख उनसे शस्त्रोंके द्वारा कैसे लड़ूं हे शत्रुघ्न कृष्ण वह दोनों मेरे पूज्यतम हैं बड़े प्रभाव वाले गुरुओं को न मारकर इस लोकमें भिक्षाका ही अन्न खाना उत्तम है और अर्थ के

चाहनेवाले गुरुओंको मारकर इस लोकमें रुधिरसेभरेहुए भोगोंको भोगेंगे और यह भी हम नहीं जानते कि हम गुरुओंको विजयकरेंगे वा गुरू हमको विजय करेंगे और हम जिनको मारकर जीवन के इच्छावान् नहीं हैं वह धृतराष्ट्र के बेटे सन्मुख बर्त्तमान हैं हे कृष्ण मैं दीनता युक्त दूषित प्रकृतिवाला धर्ममें असावधान चित्त होकर आपसे पूंछताहूं कि जो आपने मेरे निमित्त कल्याणनिश्चय किया है उसको कृपाकरके मुझसे कहिये क्योंकि मैं आप का शिष्यहूं आप अपनी शरणागत तामें मुझको उपदेशकीजिये, पृथ्वी पर वृद्धियुक्त निर्बिभाग शत्रुता रहित अथवा धन आदिसे परिपूर्ण राज्यको और देवताओंकी प्रभुताको भी पाकर इन्द्रियोंका सुखाने वाला जो मेरा शोकहै उसके दूरहोनेका मैं कोई भी उपाय नहीं देखताहूं, शत्रुओंका संतप्त करनेवाला अर्जुन श्रीकृष्ण जी से यह बचन कहकर कि युद्ध नहीं करूंगा मौन होगया यह दशा देखकर दोनों सेनाओंके मध्यमें हंसतेहुए श्रीकृष्णजी अर्जुनको अत्यन्त दुखी जानकर यह बचन बोले कि अर्जुन जो शोक के योग्य ही नहींहैं उनको तू शोचताहै और पंडितोंके बचनोंको कहताहै परन्तु पंडित लोग उन पुरुषोंको जिनके कि शरीर छूटगये अथवा शरीर में प्राण नियत हैं अर्थात् आत्माके अविनाशी होनेसे नहीं शोचते हैं मैं कभी नहीं हुआ और तुझसमेत यह सब राजालोग भी कभी नहीं हुए न इसके पीछे हम सब उत्पन्न होंगे यह बात नहीं है क्योंकि हम सब अविनाशी आत्मारूप तीनों कालोंमें बर्त्तमान हैं जैसे कि शरीरवान् चैतन्य आत्माके स्थूलशरीरमें बाल्यावस्था, तरुणावस्था और वृद्धावस्था यह तीनों दशा होती हैं इसीप्रकार से स्थूल शरीर के सिवाय सूक्ष्म और कारण रूप अन्य शरीरकी प्राप्तिहै वहां ज्ञानी पंडित मोहको नहीं पाताहै अर्थात् आत्मा को शरीर से पृथक् अविनाशी और आदि अन्त से रहित जानता है, हे कुन्ती पुत्र अर्जुन इन्द्रियों की वृत्तियोंके शब्दादि विषय देखना खाना संघना और शीतोष्णता आदि सुख दुःख के देनेवाले उत्पत्ति

नाशयुक्त सब बिनाशवान् हैं इससे हे भरतर्षभ तू इनको क्षमाकर हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ जिस सुख दुःखमें एकसे रहनेवाले ध्यानी और योगी पुरुषको यह पीड़ा नहीं देतेहैं वह मोक्षके योग्य समझाजाता है, अभावरूपी जड़ चैतन्य जगत्का संभवहोना भी नहीं है और सतरूप ब्रह्मका अभाव बर्त्तमान नहीं है तत्त्वदर्शी अर्थात् मूल बस्तुके ज्ञाताओंने इन दोनोंका तत्त्व अर्थात् असली सिद्धान्त यही देखाहै कि सिबाय आत्माके और कुछ भी नहीं बर्त्तमान है और यह जो जगत् दृष्टपड़ता है वह स्वप्नके समान मिथ्या है, उस सत अर्थात् सत्यकोजिससे कि यहजगत् व्याप्तहोरहाहै अविनाशीजानो इस न्यूनता रहित आत्माके नाशकरनेको कोई भी समर्थ नहीं है, यद्यपि इस लोकमें असत अर्थात् मिथ्यारूप जगत्को विनाशवान् बर्णनकिया परन्तु अब व्यवहारमें अर्जुनको कर्म में प्रवृत्त होने के लिये एक को अविनाशी और दूसरे को विनाशवान् कहतेहैं अति प्राचीन निरवधि अविनाशी आत्माके यह सब शरीर नाशवान्कहे हैं इस कारण से हे अर्जुन तुम युद्ध में प्रवृत्त होजाओ अर्थात् अपने धर्मको मत त्यागो, जो पुरुष इस आत्माको मारनेवाला समझताहै और जो इसको मराहुआ मानताहै वह दोनों अज्ञानीहैं यह कभी न मरताहै न कोई इसका मारनेवाला है अर्थात् जबकि श्लोक १६ वें के अनुसार केवल एकही अकेला आत्माहै तब द्वैतता न होनेके कारण कर्त्तापन और कर्मपन उसमें कैसे संभवहोसक्ताहै, यह आत्मा न कभी उत्पन्न होताहै न मरताहै और न पहले उत्पन्न हुआ है न पीछे उत्पन्न होगा अर्थात् बारंबार जन्म मरणादिसे रहित है यह अजन्मा आत्मा नित्य और प्राचीनता के कारण सदैव एक रूप है अर्थात् रूपान्तर रहित नाशवान् आकाशादिकोंसे प्रथम पुराण पुरुष है यह अनित्य देहोंके मरनेमें नहीं मरताहै, जो इस आत्माको अविनाशी और नित्य अजन्मा और न्यूनतासे रहित जानताहै वह सब शरीरों में पूर्ण आत्मारूपपुरुष कैसे किसीको मरवावेगा और किसको बरवावेगा अर्थात् जब

पूर्व्व कहेहुए विशेषणोंके अनुसार एक ही आत्मा वर्त्तमानहै तब मारनेवाला और मरनेवाला कहां से होसक्ते हैं, जैसे कि मनुष्य पुराने वस्त्रोंको त्यागकरके नवीन वस्त्रोंको धारण करताहै इसीप्रकार आत्मा भी पुराने देहोंको त्यागकरके दूसरे नवीन शरीरोंको प्राप्त करलेताहै जैसे कि वस्त्र देहसे पृथक् होतेहैं इसीप्रकार आत्मा सब मिथ्यारूप शरीरोंसे अलगहै, इसआत्माको न शस्त्रछेदसक्ते न अग्नि जलासक्ती न जल गला सक्ता न बायु सुखा सक्तीहै, क्यों कि यह आत्मा न छेदने के योग्य न जलाने के योग्य न गलाने के न सुखाने के योग्यहै यह नित्यरूप सर्बत्र वर्त्तमानसदैव एकदशामें अचलरूप प्राचीन सनातन और अखंडहै, यह गुप्तरूपध्यानसेअगम्य और रूपान्तर दशा से पृथक् कहा जाता है इन हेतुओं से इसको ऐसा जानकर तुम शोच करनेके योग्य नहींहो अर्थात् भीष्म आदि तुम्हारे गुरू और अन्य सबलोग आत्मा रूपहैं और उनके शरीर देहके वस्त्रों के समान आत्मा से पृथक् नाशवान् हैं इससे तू शोच मतकर तू इसकोसदैव मरनेवाला और मारनेवाला मानताहै हेमहा-बाहू जन्म लेनेवालेकी मृत्यु भी अवश्यहै और मरनेवालेका जन्मभी निश्चय है इस कारण अब भावीहै इसका कोई भी उपाय नहीं है इसमें तेरा शोच करना वृथा है हे भरतबंशी आकाशादि तत्त्व और उनकी रूपान्तर दशा जरायुज आदि अज्ञान रूपहैं अथवा आत्मा रूपहैं और बीचहीमें दृष्ट आकर आत्मामेंही लयहोने वालेहैं अर्थात् उनका आदि अन्त आत्माहै केवल बीचमेंही स्वप्नके समान मिथ्या रूप दृष्ट पड़ते हैं ऐसे स्थानमें बिलाप क्यों करना चाहिये, कोई तो उसको आश्चर्यरूप से मानताहै और कोईआश्चर्यके समानदेखता और कहता है और कोई उसको आश्चर्यकेही समान सुनकर नहीं जानताहै अर्थात् वह आत्मा देखने सुनने और कहनेमें नहीं आता है वह अपने को अक्षय मानता है हे अर्जुन यह आत्मा सबके शरीरों में नित्य और अबध्यहै अर्थात् मर नहीं सक्ताहै इस कारण हे तात तुम सब जीवधारियों के शोचने के योग्य नहीं हो, अपने

धर्म को देखकर कांपना छोड़दो क्योंकि धर्मयुद्धके सिवाय क्षत्रीका दूसरा कल्याणकारी नहीं है, हे अर्जुन बिना इच्छा किये स्वर्ग का द्वार खुलाहुआ बर्तमान है स्वर्ग का सुख पानेवाले क्षत्री ऐसे युद्ध को पातेहैं, जो तू इस धर्मरूप युद्धको नहीं करेगा तो अपने धर्म और कीर्त्ति को त्यागकर पापका भागी होगा, बहुत समयतक नियत रहनेवाले सब जीव तेरी अपकीर्त्ति को कहैंगे और प्रतिष्ठा वान् पुरुष की अपकीर्त्ति मरणसे भी अधिकदुखदायी होतीहै और सब महारथी लोग तुझको भयके कारण युद्धसे हटाहुआ मानेंगे उन सब लोगोंके आगे तूमहानस्तुतिमान होकर निन्दा युक्त छुटाई और तुच्छता को पावेगा, और तेरे शत्रु तेरे पराक्रम की निन्दाकरते हुए कहने के अयोग्य अनेक अनुचित बातोंको कहैंगे लज्जावान् को इससे अधिक और क्या दुखहोगा इसमें दोनों हाथलड्डू हैं कि मरकर तो स्वर्ग को और विजय करके पृथ्वी के भोगों को भोगेगा हे अर्जुन इसकारण से तू युद्धके निमित्त निश्चय करके उठ खड़ाहो,हानि लाभ जय विजय समान करके युद्ध के निमित्त तैयारीकर इसरीति केयुद्धमें तू कभी पापका भागी नहीं होगा हे अर्जुन यह मैंने उपनिषद और सांख्य सम्बन्धी ब्रह्मज्ञान तुझसे कहा अब इसीज्ञानको कर्म योग में बर्णन करताहूं इस ज्ञानमें प्रवृत्त होकर हे अर्जुन तू कर्म बंधनको त्यागकरेगा,इस कर्म योगमें प्रारंभ कर्मकानाश नहीं है और पाप भी नहीं है इस फलकी इच्छा रहित कर्मरूपी धर्म का थोड़ा भी करना बड़े भारी संसारी भयसे रक्षा करताहै, हे कौरवनन्दन इस कर्म योगमें तत्त्व के निश्चय करनेवाली बुद्धि एकही है और जिनको तत्त्व का निश्चय नहींहै उनकी बहुतशाखा रखनेवाली अनेक बुद्धियां हैं हे अर्जुन वह तत्त्व निश्चयसे रहित वेद वादमें प्रीति रखनेवाले इच्छा से जीतेहुए चित्त से स्वर्ग को उत्तम जाननेवाले अज्ञानी लोग पुष्पित बचनों के समान चित्तरोचक भोग ऐश्वर्य्य की प्राप्ति में साधन रूप जन्म कर्म औरफल के देनेवाले अथवा अग्निहोत्रादि की मूल क्रिया को अधिकरख-

नेवाले वेद के बचनों को कहते हैं और यह भी कहनेवाले हैं कि कर्म से उत्तम दूसरा मोक्ष और ज्ञान नहीं है,, भोग और ऐश्वर्य्यमें प्रवृत्त चित्त और उस बचन से हरेहुये चित्त उन पुरुषों को समाधि में तत्त्व की निश्चयात्मिका बुद्धि नहीं होती है अर्थात् जो विरक्त हैं उन्हीं की बुद्धि समाधि में चिन्मात्राकार होती है, तीनों गुणों का कार्य्य जो उत्तम, मध्यम, और निकृष्ट गति हैं वही हैं विषय जिनके ऐसे कर्म काण्ड को कहनेवाले वेद हैं हे अर्जुन तू तीनों गतियों से विरक्त है सुख दुःख मित्र शत्रु शीतोष्णता आदि द्वन्द गुणों से पृथक् सर्वत्र सम बुद्धिवाला होकर सदैव धैर्य्यवान् वा शुद्ध सतोगुण वृत्तीहो और मनोरथों की प्राप्ति और रक्षा से जुदा आत्मवान् हो जैसा कि बड़ी नदी वा सरोवर आदि में जितना जिसका प्रयोजन होताहै उतना ही प्रयोजन विज्ञानी ब्राह्मण का सब वेदों में होताहै अर्थात् वेद में कर्म काण्ड उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड हैं, ब्रह्म ज्ञानी को केवल ज्ञानकाण्डसे प्रयोजन होताहै, ब्रह्मज्ञान की प्राप्तिके लिये कर्म मेंही तेराअधिकार है कर्म के फलों में कभी तेरा अधिकार नहो और तू कर्मफल का कारण भी मतहो और कर्म न करने में तेरा संग मतहो, कर्मों की सिद्धी और असिद्धो में समान बुद्धि होकर तू योगमें नियत हो और अकर्मियों के संगोंको छोड़कर कर्म को कर ऐसी समता को योग कहते हैं हे अर्जुन फल की इच्छा से किया हुआ कर्मज्ञान योग से अत्यन्त लघु है, बुद्धि में रक्षो वा शरण को चाहो जिनके जन्म मरण का कारण कर्मों का फल है वह दीन अर्थात् दुखी होतेहैं,इस लोकमें बुद्धि से संयुक्त होकर पुण्य और पापको त्याग करता है इस हेतु से समतारूप बुद्धि योग में उपाय कर क्योंकि ज्ञान योगही कर्मोंमें चातुर्य्यता है समता नाम बुद्धि से संयुक्त मन का निग्रह करनेवाला पुरुष कर्म जन्य फलों का त्यागकरके जन्म बंधनसे छूटता है और निरुपधि मोक्षपद को पाताहै, जब तेरी मोहरूपी बुद्धि शुद्धहोगी तब तू सुनेहुए और सुननेके योग्य शास्त्रों

से वैराग्य पावेगा और नानाप्रकार के शास्त्रों को सुनकर संदेहोंसे भरीहुई तेरी बुद्धि असादृश्य ब्रह्म में नियत होकर निर्विकल्प समाधिमें अचल बर्त्तमान होगी तब विवेकरूप योग को पावेगा, अर्जुन बोले कि हे केशवजी जिसकी बुद्धि शुद्ध ब्रह्म में नियत है और समाधि में बर्त्तमान है उसको लोग क्या कहते हैं यह प्रथमप्रश्न है और वह बुद्धिमें नियत होकर कैसे बोलता है यह दूसरा प्रश्न है और कहां बैठता है यह तीसरा प्रश्न है और कैसे विषयों को भोगता है यह चौथा प्रश्न है, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन जब यह योग मन में बर्त्तमान होताहै और सब इच्छाओं को त्याग करता है और आत्मा करके अपनेही में तृप्त होताहै तब स्थिर बुद्धि कहा जाता है, दुःखों में व्याकुलता रहित मन और सुखों में अनिच्छावान् राग भय क्रोध से पृथक् स्थिर बुद्धि मुनि कहा जाताहै अब दूसरे प्रश्न का उत्तर कहते हैं जो सर्वत्र धन, स्त्री, देह आदि में प्रीति न रखनेवाला शुभ पदार्थ को पाकर उस शुभ प्राप्त करने वाले की हर्ष से प्रशंसा नहीं करता है और उस अशुभको पाकर दुखी होकर अशुभ प्राप्त करनेवाले की निन्दा नहीं करताहै उस को बुद्धि स्थिर अर्थात् निश्चल है अब तीसरे प्रश्न का उत्तरकहते हैं जब यह पुरुष सब प्रकारसे इन्द्रियों को इनके शब्दादि विषयों से कछुएके अंगोंके समान खेंचताहै तब उसकी बुद्धि स्थिर समझी जाती है, निराहार अर्थात् इन्द्रियों से विषयों को न ग्रहण करने वाले देहाभिमान से तो अत्यन्त दूर होजाते हैं परन्तु उनके विषयों का अनुराग निवृत्त नहीं होता इस निराहार अर्थात् बिषयों के ग्रहण न करनेवाले की वह विषय संबंधी प्रीति भी परब्रह्म को देखकर अर्थात् अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा दूर होजाती है, हे अर्जुन शास्त्र और आचार्य्य लोगों से शिक्षित समाधि में उपाय करने वाले पुरुष अर्थात् ज्ञानी मनुष्य की इन्द्रियां भी लुटेरों के समान चित्तको अत्यन्त चुराती हैं उन सब को अपने बशीभूत करके सावधान मनसे मुझ जगत् के आत्माको अत्यन्त

प्रियतममाने और इन्द्रियों को आधीनकरे उसकी बुद्धि स्थिर है, विषय वासना वालोंके विषय ध्यान करनेका संग इन्द्रियोंपर होता है उसी संगसे काम उत्पन्न होताहै कामसे क्रोध क्रोधसे संमोह संमोहसे विभ्रम,स्मृतिके भ्रंशसे बुद्धिका नाश और बुद्धिके नाशसे मरण होजाताहै,मनको स्वाधीन रखनेवाला योगी उन राग द्वेषों से पृथक् मनके स्वाधीन होनेवाली इन्द्रियोंसे बिषयोंके समीप घूमताहै वह अपने संकल्प विकल्परूपी कीचड़के धोनेसे चित्तकी शुद्धीको पाताहै उस शुद्धीके होनेसे उसके सब दुःखोंका नाश होता है और उस शुद्ध चित्तवाली बुद्धिसे वह ब्रह्म और आत्माको एक जानताहै तब उसकी बुद्धि अत्यन्त दृढ़ होकर स्थिर नियत होजाती है,संशय और बिचारसे रहित पुरुषकी बुद्धि ब्रह्म और आत्माकी ऐक्यता जानने वाली नहींहै अथवा जिसका चित्त सावधान नहींहै उसकी ब्रह्माकार अन्तःकरण बृत्ती प्रभाव रूप भावनानहींहै और जिसके सब दुःख दूरनहीं हुये उसको ब्रह्मानन्द रूपी सुख कैसे होसक्ताहै जिसकारण से मन उन विषयों में जाने वाली इन्द्रियोंके पीछे २ चलकर कर्ममें प्रबृत्त होताहै उसीकारणसे उसकी ब्रह्म संबंधी बुद्धिको ऐसेहर लेताहै जैसे कि जलमें नौकाको वायु देवता हरलेताहै ६७ हे महाबाहु इसकारणसे जिसकी इन्द्रियां सब प्रकार करके बिषयोंसे पृथक् होतीहैं उसकी बुद्धि स्थिर कहातीहै, सब जीवोंकी जो ज्ञान निष्ठा रूप रात्रिहै उसमें जितेन्द्री ज्ञानी जागताहै और जिस रात्रिमें सब अज्ञानी जीव जागतेहैं वह ब्रह्मतत्व के देखने वाले मुनिलोगों की रात्रिहै अर्थात् ब्रह्मज्ञानी सदैव समाधिका अनुष्ठान करता हुआ परम गतिको पाताहै,पूर्वमें विषयोंका त्याग और इन्द्रियोंको बिषयोंसे अलग करना बर्णन किया उससे तो उसकी आत्मासे पृथक्ता सिद्धहुई परन्तु वेदमें लिखाहै कि यहां नाना प्रकार का कुछ नहींहै केवल एकहै उसीको अबसिद्ध करतेहैं जैसे कि चारों ओर जलसे न्यूनाधिकतासे रहित होनेसे अचल रहने वाले समुद्रमें उसीसे उत्पन्न होनेवाले जल प्रवेश

करते हैं इसीप्रकार सब प्रकारकी इच्छा जिस ब्रह्मज्ञानीमें प्रवेश करतीहैं वह शान्तीको पाकर ब्रह्मानन्दको पाताहै परन्तु विषयोंका चाहने वाला नहीं पासक्ताहै, अबचौथे प्रश्नका उत्तर कहतेहैं—जो ज्ञानी पुरुष सब इच्छाओंको त्यागकर ममता और अहंकारसे रहित होकर विषयोंको भोगता है अर्थात् केवल देहके निर्वाहके निमित्त खान पान करताहै वह ब्रह्मानन्द रूपीशान्तीको पाताहै, हे अर्जुन यह ब्रह्मज्ञानियों की निष्ठाहै इसको प्राप्तकरके कभी नहीं भूलताहै इसमें नियत होकर अन्तसमयमें ब्रह्मको प्राप्तहोताहै, और जिसमें देवयान पितृयान रूप गति नहीं होतीहै वह ब्रह्मज्ञानी भी ब्रह्मरूप होकर ब्रह्मपदको पाताहै अर्थात् ऐक्यताके भावको पाताहै ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुश्रीकृष्णार्जुन संवादेसांख्ययोगोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

अबसोलह अध्यायोंमें इस अध्याय की टीका करते है ॥

अर्जुनबोले हे जनार्दनजी जो निष्काम कर्मसे बुद्धिकी उत्तमता आपमानतेहैं तो मुझ भिक्षावृत्तीमें प्रसन्न होने वालेको भाई बन्धु आदिके मारने वाले कर्ममें क्यों लगातेहो, आपकभी तो कहतेहो कर्मकर और कभी कहतेहो कि कर्मोंको त्यागकरके ज्ञानी और त्यागीहो इन मिलेहुये बचनोंसे आपमेरी बुद्धिको मोहमें डालतेहो सो आप इनदोनोंमें से एक को निश्चय करो जिसके द्वारा मेरा कल्याणहो, श्रीभगवान् बोले हे निष्पाप मैंनेप्रथम अध्यायमें एकही निष्ठाकहोहै वह ब्रह्मनिष्ठा इसलोकमें दोप्रकारकी है माया और ब्रह्म विवेक के जानने वाले अथवा आत्मा और अनात्माके विवेक को जानने वालोंकी निष्ठा ज्ञानयोग नाम के सहितहै और सिद्धो वा असिद्धी समबुद्धि वाले योगियोंकी निष्ठा कर्म योगनाम प्रकारके साथहै अर्थात् कर्मयोग नामनिष्ठा का फल ज्ञान योगहै, क्योंकि

यज्ञादि कर्मोंका प्रारंभकरनेसे पुरुष ज्ञाननिष्ठाको नहीं पाताहै और कर्मयोगसे उत्पन्न चित्त शुद्धी के बिना केवल त्याग अर्थात् संन्यासमेही मोक्षरूप सिद्धीको नहीं पाताहै, कर्मजनित सिद्धी के विना मनका न जीतनेवाला कोई पुरुष समाधिमें भी बुरीबासनाको करके एक क्षणमात्र भी नियत नहीं रहसक्ताहै निश्चय करके सबलोग योग प्रकृतिके सत्वादि गुणों से अर्थात् स्वभावजन्य राग द्वेषके कारण देह मन बचन संबंधी कर्म करतेहैं, जो रागादि भरे हुयेचित्त से कर्मेन्द्रियोंको स्वाधीन करके मनसे इन्द्रियोंके विषयोंको स्मरण करता हुआ ध्यानके बहानेसे एकान्तमें बैठाहै वह मिथ्या आचार वाला कहाजाताहै अर्थात् कर्म करने बिना संन्यास युक्त ध्यानसेभी चित्तकी शुद्धीनहीं होतीहै, हे अर्जुन जो पुरुष मनसे ज्ञानेन्द्रियों को स्वाधीन करके निष्काम कर्मीहो कर्मेन्द्रियोंसे कर्मयोग का प्रारंभ करता है वह पूर्वसेभी श्रेष्ठनरहै, तूनियम करके संध्योपासनादि कर्मों को कर सबकर्मेन्द्रियोंके रोकने और कर्मके विना चित्त शुद्धी न होनेसे कर्महो श्रेष्ठहै और चित्त शुद्धी होनेपर भी तुझकर्म न करने वाले क्षत्रीकी शरीर यात्राभी सिद्धनहीं होसक्ती क्योंकि भिक्षामांगने में क्षत्रीका अधिकार नहींहै और स्मृतियोंमें लिखाहै किब्राह्मण के चार आश्रमहैं क्षत्रीकेवानप्रस्थ तक तीन आश्रम हैं और वैश्य के गृहस्थतक दोआश्रमहैं, एकपरमेश्वरके पूजनके लिये जो कर्म किया जाताहै उससे स्वर्ग्गादिकी इच्छारूपी अन्यकर्मोंमें प्रवृत्त होकर यह लोक कर्मबंधन में फंसने वाला है हे अर्जुन उस ईश्वर के आराधन के लिये तू निष्काम कर्मों को करके वर्णाश्रम के योग्य बातों को अच्छी रीति से कर, पूर्व समय में ब्रह्माजीने सब सृष्टि को यज्ञों समेत उत्पन्न करके कहा कि इस यज्ञकर्म के द्वारा देवताओं को तृप्त करो और वह देवतालोग तुम्हारी वृद्धि करें और तुम परस्पर में वृद्धि पाते हुए परम कल्याण को पाओगे, निश्चय करके यज्ञों से पूजित और तृप्त किये हुए देवता तुमको तुम्हारी रुचि के योग्य भोजन वस्त्रादि भोग देंगे, जो पुरुष उन

देवताओं के दिये हुए भोगों को उन देवताओं के अर्पण न करके अर्थात् पंचयज्ञादिक कर्मों को न करके भोगता है वह निश्चय चोर है, वैश्वदेव आदि यज्ञों में शेष बचेहुए अन्नादि को भोजन करतेहुए उन सब हत्यारूप पापोंसे छूटजाते हैं जो कि स्मृतियों के अनुसार प्रतिदिन ओखली, चक्की, चूल्हा, जल रखने की पल-हंड़ी और घरकी बुहारी आदि से होतेहैं, और जो केवल अपनेही निमित्त से भोजन को बनाते हैं वह पापी अपने पापोंको भोजन करते हैं वीर्यरूप अन्नसे जीव उत्पन्न होते हैं अथवा और अन्न की उत्पत्ति वर्षा से है और वर्षा यज्ञोंसे होतीहै और मनुस्मृति में भी लिखा है कि अग्नि में होमीहुई आहुति सूर्य्य के समीप जाती है और सूर्य्य से वर्षा होतीहै वर्षा से अन्न, और अन्न से सृष्टि उत्पन्न होतीहै और यज्ञ कर्मोंसे पैदा होनेवाला है, कर्म वेद से और वेद अविनाशी ईश्वर से उत्पन्न जानो इस हेतु से सब देश कालमें वर्त्तमान रूप ईश्वर में सब नियमोंसमेत वेद और यज्ञनि-यत हैं अर्थात् गुणों का आलय ईश्वर है, सब जीवों के प्रारंभमें वेद की प्रकटता उससे कर्म ज्ञान और कर्मोंके ज्ञान से कर्मों का अनुष्ठान और अनुष्ठानों से देवताओं की तृप्ती उससे वर्षा उससे अन्न अन्न से जीवों की उत्पत्ति और उनको वेदों की प्राप्ति इस प्रकार से सदैव जारी रहनेवाले चक्र में जो नियत नहीं होता अर्थात् यज्ञादि कर्म नहीं करता है हे अर्जुन वह पापरूप जीवन से इन्द्रियोंमें क्रीड़ा करनेवाला निरर्थक जीवता है, परन्तु जो मनु-ष्य आत्मा में प्रीति रखनेवाला आत्मा में तृप्त और आत्माही में संतुष्ट है उसको निष्कामता के सिवाय कोई दूसरा कर्म करने के योग्य नहीं है, उस आत्मा में प्रीति रखनेवाले ज्ञानीका प्रयोजन कियेहुए कर्मों से कुछ भी नहीं है क्योंकि उसको स्वर्ग आदि की इच्छा नहीं है और इसके बिपरीत कर्म सेभी उसको नरक आदि भीकुछ नहीं है अर्थात् उसको न पुण्य से कुछ फलकी इच्छाहै न पापसे नरकका भय रहताहै और उसके सुखभोगरूप प्रयोजनका

कोई संबंध किसी जीवमात्र से नहीं है इसी हेतु से तू कर्म फलों से पृथक् होकर सदैव करने के योग्य कर्मोंको कर, फलकी इच्छा रहित कर्म करनेवाला पुरुष अन्तःकरण की शुद्धता से मोक्षपदार्थ को पाताहै, युद्धआदि कर्म करकेही लोग ज्ञाननिष्ठाको प्राप्त हुए कर्मकेही द्वारा जनकादि नेसिद्धीको पाया अर्थात् धर्म में लोकको संग्रहको देखता हुआ कर्म करनेको योग्यहै, क्योंकि उत्तम पुरुष जो जो कर्म करतेहैं उसी उसी कर्मको दूसरे मनुष्यभी करतेहैं और वह श्रेष्ठ पुरुष जिस २ बातको प्रमाण करतेहैं उसीको संसार करताहै, हे अर्जुन तीनों लोक में मुझको कोई बात करने के योग्य नहींहै अथवा प्राप्त और अप्राप्त होनेके भी योग्य नहीं है परन्तु तौभी मैं कर्महीको करताहूं, जो कदाचित्मैं आलस्यसे कर्मोंको न करूं तो हेअर्जुन सब मनुष्य सब रीति से मेरेही अनुसार चलने लगें अर्थात् कर्मकरना छोड़दें, जो मैं कर्मोंको नहीं करूंतो यह सब लोक भ्रष्ट होजांय और मैंभी वर्ण संकरोंका ईश्वर कहलाऊं और इन सब प्रजाओंका नाश करदूं, हे भरतबंशी जैसे कि कर्म फल के चाहने वाले अज्ञानी लोग कर्मको करते हैं उसी प्रकार कर्म फलके न चाहने वाले ज्ञानीलोग लोक संग्रह अर्थात् संसार को धर्म में नियत करनेके लिये कर्म को करें, विद्वान् लोग कर्ममेंप्रवृत्त पुरुषोंकी बुद्धि को कर्म से पृथक् न करें अर्थात् कर्म करने से न हटावे योगी होकर अच्छी रीतिसे आचरण करता हुआ सब कर्मों को करे और दूसरेसे करावे सब प्रकार से प्रकृति क सतोगुण रजोगुण तमोगुण से किये हुए कर्म होतेहैं जो अहंकारसे अज्ञान बुद्धी है अर्थात् आत्माको असंग और रूपज्ञनहीं देखताहै और अपनेकोही कर्त्ता मानता है हे महाबाहु वह पुरुष गुण और कर्म के बिभाग की मुख्यता का जानने वाला है अर्थात् आत्मा को इन सबसे पृथक वा असंग वा ज्ञानरूप जानता है और यह मानकर कि इन्द्रियां बिषयों में बर्त्तिनी हैं इससे वह अपने को कर्म का कर्त्ता नहीं मानताहै, प्रकृति के अहंकारादि गुणोंसे अज्ञानी पुरुष

शरीरादिक गुण और कर्मों में आसक्तहैं उन आत्मज्ञान से रहित अल्पज्ञ शास्त्रार्थ ज्ञानमें असमर्थ पुरुषों को आत्मज्ञानी कर्म निष्ठा से न हटावे तो अज्ञानी वा मोक्षका चाहनेवाला विवेक बुद्धि से सब कर्मोंको मुझ सबके अन्तर्य्यामी में अर्पणकरै इससे हे अर्जुन तू कर्मफल में आशारहित और प्राप्तबस्तुको अपनी न माननेवाला होकर शोकसे बिगत होके युद्धकर, जो मनुष्य मेरे इसमतपरकाम करतेहैं और श्रद्धावान् होकर उसमें दोष दृष्टी नहीं करते वह भी धर्म अधर्मरूप कर्मों से छूटजाते हैं, जो दोषलगाने वाले इस मेरे मतपर कर्म नहीं करते हैं उनको ब्रह्मज्ञान में अत्यन्त अज्ञानी विवेक रहित स्वर्ग और मोक्ष से भ्रष्ट हुए जानो, ज्ञानवान् भी अपने पूर्वजन्म के धर्म अधर्मरूप संस्कार जन्य प्रकृतिके अनुसार चेष्टाकरते हैं सब जीवमात्र अपने स्वभाव के अनुसार कर्म कर्ता होते हैं और मैंभी पूर्वकर्म के अनुसार उनसे कर्म कराताहूं परन्तु यह बात संभवहै कि जो दोनों प्रकार की इन्द्रियों के बिषयों में राग द्वेष अधिकता से नियत हैं तो उन दोनोंके स्वाधीन न होवे निश्चय है कि वह दोनों रागद्वेष इस मोक्ष चाहनेवाले के शत्रु हैं अपने धर्माश्रम के अनुसार अपना धर्म और गुणभी अच्छीरीति से कियेहुए दूसरों के धर्मसे श्रेष्ठ है अपने युद्धादि कर्मोंमें मरना बहुत उत्तमहै और दूसरेका भिक्षावृत्ती आदिधर्म महाभयकारी है दूसरा अभिप्राय यह भी है कि सत्वादि गुणों से रहित अपनाधर्म अच्छे प्रकार से कियेहुए परधर्म से अर्थात् इन्द्रियों के धर्म से श्रेष्ठतर है अपने ज्ञाननिष्ठारूप धर्म में मरना उत्तम है और इन्द्रियों का धर्म भयका देनेवाला है, अर्जुनबोले हे श्रीकृष्णजी फिर किससे संयुक्त कियाहुआ यह पुरुष पापोंको करताहै और अनिच्छावान् होकर अपनेबलसे कर्म में प्रवृत्तहुआ मालूमहोता है, श्रीभगवान्बोले कि यह इच्छा रजोगुणसे उत्पन्नहै यहीक्रोधरूप होजाती है और यही इच्छारूप काम महाभोक्ता वा उग्ररूप भयकारी है इसको इसदेह में महाशत्रुरूपही जानो ३७ जैसे कि अग्नि धुएं से और दर्पण मैल

से ढकजाते हैं और गर्भ जेर से ढका रहता है इसीप्रकार इस इच्छारूप कामसे यह ज्ञान भी ढकाहुआहै, हे अर्जुन इसज्ञानियों के पुरानेशत्रु और अग्निके समान पूर्णहोने के अयोग्य इच्छारूप कामसे ज्ञान ढकाहुआहै, इसइच्छाका निवासस्थान इन्द्री मन बुद्धि हैं और यह इच्छारूपीकाम उन सबके साथ ज्ञानको ढककर देहाभिमानी पुरुषको अत्यन्तमोह और भ्रान्तिमें डालताहै इसकारण हे अर्जुन तुम प्रथम इन्द्रियोंको स्वाधीन करके इस अत्यन्तभयकारी ज्ञान बिज्ञानके नाशकरनेवाले कामको मूलसे नाशकरो, इन्द्रियों को उत्तम कहाहै इन्द्रियों से उत्तम मन मनसे उत्तमबुद्धि और जो बुद्धि से भी उत्तमहै वह आत्मा कहाजाताहै इसप्रकार परमात्मा को बुद्धि से श्रेष्ठजानके बुद्धिके द्वारा मनको नियतकरके कठिनता सेभी नाश न होनेवाले कामरूप शत्रुको मारडाल ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्रीभगवद्गीता श्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगोनाम तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

श्रीभगवान्बोले हे अर्जुन यह दो प्रकारवाला अविनाशी ज्ञान मैंने सूर्य्यदेवतासे कहाथा और सूर्य्यने मनुजी से कहा और मनुने इक्ष्वाकुसे कहा, इसप्रकार से परंपरा पूर्व्वक प्राप्तहुए इस योग को राजऋषियोंने जानाहै हे शत्रुहन्ता वह योग इसलोकमें बहुत कालसे गुप्तहै उसी प्राचीन योगको अब मैंने तुझसे कहाहै क्योंकि तू मेरा भक्त और सखाहै निश्चयकरके यह उत्तमयोग गुप्तकरने के योग्यहै अर्थात् अपने पुत्रको अथवा प्रीतिसे आकांक्षी साधकको बताना और पढ़ाना चाहिये, अर्जुनबोले कि हे कृष्णजी आपका जन्मतो पीछेहुआहै और सूर्य्यकाजन्म बहुत पहलेहुआहै तोमैं यह कैसे जानूं कि आपने सृष्टिकी उत्पत्तिके प्रारंभ में कहाहै, श्री भगवान्बोले कि हे अर्जुन मेरे और तेरे अनेक जन्महुए हैं उन सबको मैं जानताहूं तू नहींजानता है, मैं अजन्मा अविनाशी सबजीवमात्रों

का आत्मा और ईश्वर भी होकर अपनी प्रकृतिको स्वाधीन करके अपनीही मायाकेसाथ प्रकटहोताहूं अर्थात् जिस प्रकारसे जीव अपने कर्मोंके अनुसार अविद्या और त्रिगुणात्मक रूप प्रकृति के स्वाधीन होकर जन्म धारण करतेहैं इसप्रकार से मेराजन्मनहीं है क्योंकि मैं कर्म बंधनसे छुटाहुआ त्रिगुणात्मिका माया से पृथकहूं, हे भरतवंशी जब जब धर्मकी न्यूनता और अधर्म की वृद्धिहोती है तबमैं निराकार ज्योतिरूप अपनेको प्रकट करके साधुओंको रक्षा और कुकर्मी पापात्माओंका नाश और धर्मके नियतकरनेको प्रत्येक युगमें प्रकट होताहूं, मेराजन्म और कर्म दिव्यहै अर्थात् बनावट का नहीं है जो इसप्रकार से मूल समेत जानता है हे अर्जुन वह पुरुष शरीरको त्यागकर फिर जन्म नहींलेता है अर्थात् मुझको प्राप्त होकर मुझीमें लयहोताहै, और जिनलोगोंकी विषयोंमें प्रीति वा अपने मरणका भय, अपने पराये दुःखसे क्रोध इत्यादिबातें दूर होगई हैं और मुझीको श्रेष्ठ मानकर मेरी शरणागत होकर ज्ञान रूप तपसे पवित्रहैं ऐसे अनेक योगी मेरेभावको प्राप्तहुएहैं अर्थात् मुझमें लयहोगयेहैं, जो पुरुष मुझ सर्वव्यापीको मित्रता वा शत्रुता के भावसे प्राप्तहोते हैं मैंभी उनको उसीरीति से सन्मुख होताहूं हे अर्जुन सब मनुष्य मेरीभक्ती और ध्यानआदि पर चलते हैं उन अपने रूपोंको मैं सबरीति से प्राप्त होताहूं दूसरा आशय यह है कि जो जैसे भाव से जिसजिसदशा में मुझको भजतेहैं मैं उसी उसी प्रकारसे उनपर अनुग्रह करताहूं क्योंकि वह सब प्रकार से मेरेही मार्ग पर चलतेहैं अर्थात् अन्यदेवताओंकेभी भक्त मेरेहीभक्तहैं, इस नरलोक में कर्मोंसे उत्पन्न लक्ष्मी धन पुत्रादि सिद्धी शीघ्रहोती है इस निमित्त यहां कर्मों की सिद्धिजाननेवाले पुरुष जो देवताओं को पूजते हैं वहभी मेरेही भक्तहैं, मैंने चारोंवर्णों के अभीष्ट देनेवाले शमदमादि कर्म और शूरता आदिधर्म और खेती वा सेवा पालनादि कर्म और सत्वादि तीनोंगुणोंमें सतोगुण प्रधान ब्राह्मण, सतोगुण के भाग संयुक्त और रजोगुण प्रधानक्षत्री तमोगुणके भागसे संयुक्त

और रजोगुण प्रधान वैश्य रजोगुणके भागसे युक्त और तमोगुण गुणप्रधान शूद्र इनचारों वर्णों को उनके गुण विभागों समेत उत्पन्न किया मायाके योगसे मुझको उनका भी स्वामीजानो और वास्तव में अविनाशी और अकर्त्ताजानो, क्योंकि कर्म मुझको स्पर्श नहीं करते हैं और न मेरी कर्मफल में इच्छाहै जो पुरुष मुझको इस प्रकारसे जानता है वह कर्म बंधनको नहीं पाताहै, पूर्व्व समय के मोक्षचाहनेवाले ज्ञानियोंने इसीप्रकार से जानकर कर्मोंको किया है इस कारण हे अर्जुन तूभी इस प्राचीन वृद्धोंके कियेहुए कर्मको कर, कर्म क्याहै और अकर्म क्याहै इसके जानने में पंडितलोग भी मोहको प्राप्त होतेहैं उनदोनों कर्म और अकर्मोंको मैं तुझसेकहता हूं जिनके जाननेसे तू इस अशुभ संसार से छूटजायगा, शास्त्रोक्त कर्म की गति भी जानने के योग्य है और शास्त्र से विरुद्ध कर्म भी जानने उचितहैं और अकर्म अर्थात् न करनेकी भी गति जाननी चाहिये क्योंकि कर्म की गति कठिनहै, कर्म विकर्मरूप शरीर और इन्द्रियों का कर्म अविद्यासे चैतन्य आत्मा में नियतकरने पर जो पुरुष इस आत्मा में अकर्त्तापनको देखे वा सदैव कर्म करनेवाले त्रिगुणात्मकदेह और इन्द्रियों में आत्माके अकर्त्ता होनेपर जो पुरुष कर्मनाम प्रपंचको देखताहै वह मनुष्योंमें बुद्धिमान् महायोगी और सबकर्मों का करनेवाला है अर्थात् उसको कोई करना बाकी नहींहै और ज्ञानयोगका भी अधिकारीहै, जिसके सबप्रारंभ कर्म इच्छा और संकल्पसे रहितहैं और ज्ञानरूप अग्निसे कर्मोंकोभस्म करदिया है उसको ज्ञानीलोग पंडित कहते हैं कर्मफल को त्याग करके सदैव आत्मलाभ सें संतुष्ट अहंकारादि से रहितहै वहकर्म में अत्यन्त प्रवृत्त भी कुछ नहीं करता है, जो स्त्री आदि परिग्रहों से पृथक् योग ऐश्वर्य्योंका नहींचाहता देह मन बुद्धि और सबइन्द्रियों का जीतनेवाला है वह केवल शरीर संबन्धी भिक्षाआदि कर्मों को करता हुआ पापसे रहितहोता है, बिनायाचनाके मिलेहुए शिलोंछ से संतुष्ट हर्ष शोकसे रहित दूसरेकेलाभ में प्रसन्न होनेवाला और

सिद्धी असिद्धी में रूपान्तर दशाके बिना कर्म करके भी बंधनको नहीं प्राप्तहोता है, असंग अर्थात् अपनेको अकर्त्तामाननेवाले कर्म फलकी इच्छासे रहित यज्ञादिक कर्मोंको ईश्वरार्पण करनेवालेज्ञान निष्ठलोगोंके संपूर्णकर्म नष्टहोजाते हैं, जिसमें सबकर्मलयहोते हैं उसको बिकल्प समाधि समेत बर्णन करतेहैं, अर्पणके साधनमंत्रादिक ब्रह्मरूप ही हैं और अर्पण के हव्य घृतादिक भी ब्रह्म हैं जो होम कियागया है वह ब्रह्म मेंही है जो अग्निमें होमा है वह ब्रह्म में है होम करनेवाला और करानेवाला दोनों ब्रह्म हैं जो यजमान ने हवन किया वह ब्रह्म ने ही किया है, जो ब्रह्म कर्मरूप समाधिके द्वारा उस कर्म का फल मिलनेवाला है वह भी ब्रह्म ही है, कोई योगी दर्श वा पूर्णमास आदिदेव यज्ञको उपासना करतेहैं १कोई जीव यज्ञ को निरुपाधि रूप के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि में हवनकरते हैं यह उत्तम ज्ञान यज्ञहै २ कोई योगी श्रोत्रादि इन्द्रियों को संयम रूप अग्नियों में हवन करतेहैं ३ कोई शब्दादि विषयोंको इन्द्रीरूप अग्नियों में हवन करते हैं ४कोई योगी इन्द्रियोंके सबकर्मों को वा प्राणोंके सब कर्मोंकोमन और बुद्धिकी उस संयमरूप अग्नि में जो ब्रह्म ज्ञानसे प्रकाशमान है हवन करते हैं अर्थात् लयकरते हैं ५ इसी प्रकारबापी कूप तड़ाग बाग मन्दिरआदि बनवाने यह द्रव्य यज्ञहैं ६ औरकृच्छ्रचान्द्रायण ब्रतादि तपयज्ञ है और कर्म फलकी इच्छानकरकेसंध्या आदिककर्मकरना निर्विकल्प समाधितक७अथवा यम नियम आसन प्राणायाम धारणा ध्यान समाधिरूप अष्टांग योगयहयोगयज्ञहैं८और सदैववेदपाठनपठनमें प्रीतिरखनास्वाध्याय यज्ञहै९और वेदकेअर्थको अच्छी रीतिसे समझकर ब्रह्ममेंतदाकार रहना यह ज्ञानहै इनयज्ञों के करने वाले अथवा उपाय करनेवाले तेजब्रत हैं,१०इसी प्रकार कोई कोई योगी अपानमें प्राणको हवन करतेहैं अर्थात् रेचक करतेहैं और प्राण अपानकी गतिको रोककर प्राणायाममें प्रवृत्तहैं,११ विषयोंको स्वाधीन करने वाले अर्थात् विषयोंके आधीन न होने वाले कोई कोई योगी मन इन्द्री को मन

चित्त अहंकारमें क्रम पूर्व्वक हवन करतेहैं १२ तब इनकी समाधि सिद्धीहोतीहै इनसब यज्ञोंके प्राप्तकरने वालेभी अपने२ यज्ञोंकेद्वारा पापोंसे निवृत्त होतेहैं अर्थात् इनयज्ञोंकाफल पापोंसे पृथक् होना है पंचमहा यज्ञमें शेष बचेहुये अमृत नाम अन्न के भोजन करने वाले चित्त शुद्धीके द्वारा सनातन ब्रह्मको पातेहैं,हे कौरवोंमें श्रेष्ठ अर्जुन यज्ञ न करने वाले पुरुष का जब यही लोकनहींहै तो दूसरे परलोक वा आत्म लोक कहांसे होसक्तेहैं,इस प्रकार करके वेदके मुखसे फैलेहुये अनेक यज्ञहैं उनसब कर्मोंको देहमन और बाणीसे उत्पन्न हुआ जानकर तत्व ज्ञानके द्वारा तू मुक्तिको पावेगा,हेशत्रु तापी जो द्रव्यमय यज्ञ देह इन्द्री आदिसे होतेहैं उनसे ज्ञानयज्ञ बड़ा श्रेष्ठहै क्योंकि सबकर्म अपने फलों समेत संपूर्णता पूर्व्वक ज्ञानमेंही समाप्तहो जातेहैं,उस ब्रह्मज्ञान को जानकर शास्त्र जानने वाले वा अनुभव करने वाले ज्ञानीतेरी दण्डवत वा सेवा और पूरे प्रश्नके द्वारा उपदेश करेंगे,हे पांडव उस ब्रह्मज्ञानको जानकर फिर इस प्रकार मोहको नहीं पावेगा तदनन्तर उस ब्रह्मज्ञानके द्वारा ब्रह्मासे लेकर तृणपर्य्यन्त जीवमात्र को अपनेमें और फिर मुझमें देखेगा,मोक्षके चाहने वालेका धर्मभी फलकी इच्छासे पापहीकहा जाताहै जो सब पापोंसेभी अधिक पापका करने वालाहै तौ भी ज्ञानरूपी नौकाके द्वारा पापरूपी सब समुद्रोंको तर जायगा,जैसे महा प्रबल अग्नि इंधनको भस्म करदेतीहै उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि सब प्रारब्धादि कर्मोंको मूल समेत भस्मकर डालतीहै,इस लोकमें ज्ञानके सिवाय कोई पवित्रता बर्त्तमान नहींहै संध्याआदि निष्काम यज्ञोंसे पूरी शुद्धता पाकर उस ज्ञानको बहुत समय में अपनेमें पाताहै,श्रद्धावान वा उसमें प्रवृत्तबुद्धि अच्छा जितेन्द्री उस ज्ञानकोपाताहै और ज्ञानको पाकर प्रारब्धादि कर्मोंके समाप्त होनेमें कैवल्य मोक्षरूप परा शान्तीको पाताहै, अज्ञानी श्रद्धासे रहित मनमें सन्देह रखने वाले नाशको पातेहैं चितमें सन्देहरखने वालोंका न यहलोकहै न परलोकहै और न सुखहै,हे अर्जुनयोगसे

कर्मफल के त्यागने वाले अथवा कर्मकोही त्यागने वाले ज्ञान संशयसे रहित शमदमादि के करने वाले आत्मवानको कर्म बंधन नहीं करसक्तेहैं,हे भरतबंशी इसीकारण इस अज्ञानसे उत्पन्न हृदयमें नियत अपने संशयको ज्ञानरूपी खड्गसे काटकर निष्काम कर्म योगमें नियतहो अर्थात् युद्धके निमित्त खड़ाहोजा ४२ ॥

इतिश्रीभीष्मपर्व्वणिभगवद्गीताब्रह्मार्पणयोगीनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय॥

अर्जुन बोले कि हेश्रीकृष्णजी आप सबकर्मोंके त्यागको कहकर फिर योगकर्म करने को कहतेहो इनदोंनोमेंसे कौनसा आपने श्रेष्ठतम निश्चय कियाहै उसको मुझे समुझाइये,श्रीभगवान बोले कि कर्मोंका त्याग और कर्मोंका करना यह दोनों ज्ञानकी उत्पत्ति के कारणहैं परन्तु इनदोनोंमें कर्म करने से कर्मका त्याग करना श्रेष्ठहै क्योंकि इसके द्वारा चित्तशुद्धी और वैराग्य दोनों प्राप्तहोते हैं हे महाबाहु वह सदैव नियत रहने वाला संन्यासी जानने के योग्यहै जोन इच्छा करताहै न अलग होताहै और सत्य मिथ्या आत्मा अनात्माके विभाग वास्त्री आदि द्वन्दोंसे पृथक्है वह सुख पूर्व्वक मायाके बंधनसे छूटताहै,अज्ञानी पुरुष ब्रह्मज्ञानरूप सांख्य और कर्म के अनुष्ठानरूप योगको पृथक् २ कहतेहैं पंडित नहीं कहतेहैं क्योंकि एकमेंभी नियत दोनोंके फलोंको अच्छी रीतिसे पाताहै अर्थात् कर्मके द्वारा चित्त शुद्धी होनेपर ब्रह्मकी प्राप्ती है और जब शुद्धहोनेपर विनाकर्म योगके ब्रह्मज्ञानमें नियत होनाभी मोक्षकाही कारणहै, जोमोक्षरूप स्थान ज्ञानियोंको प्राप्त होताहै वह ज्ञानके द्वारा कर्म योगियोंकोभी प्राप्तहोताहै ब्रह्मज्ञान और कर्मयोग यह दोनों एकहीहैं जो देखताहै वही अच्छी रीतिसे समझताहै इससे हे अर्जुन बिना कर्मयोगके संन्यास अर्थात् त्याग होना बड़ा कठिनहै और कर्म योगमें प्रवृत्त हुआ मुनि थोड़े ही समयमें ब्रह्मको पाताहै,जोनिर्विकल्प समाधि नाम योगसे संयुक्तहै

और जिसकी चैतन्य आत्मा वृत्ति सारूप दोषसे रहितहै और जिसने मनको जीतकर इन्द्रियोंको जीताहै और सब जड़चैतन्य जीव मात्रोंका आत्मारूपहै वह कर्मोंको करता हुआभी उनसे असंग औरनिर्लेप रहताहै,तत्त्वज्ञ योगी देखता,सुनता,स्पर्श करता सूंघता खाता चलता सोता श्वासलेता बोलता त्याग करता ग्रहण करता आंखोंको खोलता मीचताभी यही मानताहै किमैं कुछनहीं करताहूं यह सब इंद्रियां अपने २ बिषयोंमें प्रबृत्त हैं और जो ज्ञानी कर्मों को ब्रह्ममें धारण करके अथवा फलोंको त्यागकर कर्मोंको करता है वहभी पापोंसे संयुक्त ऐसे नहीं होताहै जैसे कि कमलका पत्ता पानीसे नहीं भीजता,योगी कर्मफलको त्याग करके चित्त शुद्धीके निमित्त ममतासे रहितमन बाणीदेह और इन्द्रियोंके द्वाराभी कर्म को करतेहैं,योगी कर्म फलको छोड़कर अर्थात् ईश्वरार्पण करके कैवल्य मोक्षरूप शान्तीको पाताहै और अयोगी चित्तकी इच्छाके अनुसार कर्मफलमें प्रवृत्तचित्त होकर वारंबार बंधनमें पड़ताहै, चित्तका जीतने वाला देहाधीश आत्मा नवद्वारवती पुरीमें नकरता न कराता हुआ सबकर्मों को मनसे त्यागकर सुखपूर्वक बैठाहै, चैतन्यात्मा प्रभु जड़रूप लोक के कर्तृत्व वा कर्मत्व और कर्म फलके संगको उत्पन्न नहीं करताहै किन्तु जिस का जैसास्वभावहै वह उसी प्रकार से कर्मोंको करता है, वह व्यापक ईश्वर किसीके पाप पुण्यको नहींलेताहै अज्ञानसे ज्ञान ढका हुआहै इसी कारण जीव मोहको पातेहैं अर्थात् भूलेहुएहैं,जिनलोगों के आत्मा का वह अज्ञान ज्ञानके द्वारा दूर होगया है उनका ज्ञान सूर्य्य के समान प्रकाश मान होकर परम आत्म तत्त्वको प्रकाशित करता है अर्थात् दिखलाता है, उस परम तत्त्वमें बुद्धि वा आत्मा को लगाने वाले उसीमें निष्ठावान और आश्रय करने वाले योगी जिनके कि पाप ज्ञानसे नाशहुए वहमोक्ष को पातेहैं, जो ब्रह्मज्ञानी पंडित हैं वह बिद्या और नम्रतासेभरेहुए ब्राह्मण गौहाथीश्वान औरचांडाल में समान ब्रह्मके देखने वाले हैं, जिनका मन सब जीवमात्रों में

ब्रह्मभाव रूपी समता से नियत है वहइसी लोकमें अपने जन्म को सुफल करते हैं वह निश्चय करके ब्रह्म दोषसे रहितसम बुद्धी हैं इस समता बुद्धिसे वह ब्रह्ममेंही नियत हैं इस कारण से अपने अभीष्ट पुत्रादिकोंको पाकरभी प्रसन्न न होय और दुख दायीशत्रु को पाकर व्याकुल न होजाय ब्रह्ममें नियतबुद्धि और ध्यानके द्वारा उत्पन्न होने वाले साक्षात्कार के मोहसे रहित ब्रह्मज्ञ और ब्रह्ममें नियत अर्थात् ब्रह्म भावका प्राप्त करनेवाला होजाय,बाहर उत्पन्न होने वाले स्पर्श अर्थात् बिषय और इन्द्रियोंके संगमें चित्तनलगाने वाला पुरुष जो सुख आत्मामें पाताहै वह ब्रह्म योगमें प्रवृत्त बुद्धि अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी मोक्ष रूपअबिनाशी सुखको पाताहै, हे अर्जुन विषयों के योगसे उत्पन्न होनेवाले जो भोगहैं वह दुखकेउत्पत्ति स्थानहैं क्योंकि आदि अन्त अर्थात् उत्पत्ति नाश रखने वालेहैं उन में ज्ञानी पुरुष नहीं रमता है , जो मनुष्य इसलोकमें देह त्यागसे प्रथमही इच्छासे वा क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले बेगको सहताहै वही योगीहै और सुखीहै,जो आत्मामें सुख माननेवाला बिषयोंसे बैराग्य वानहै अथवा आत्माही में क्रीड़ा करनेवाला स्त्री आदिसे रहित है और उसको क्रीड़ाके सामानभी आत्मारूपहैं वह जीवन मुक्तयोगी देवयान पितृयान संबंधी ब्रह्मको पाता है, जोपापों से और संशयों से रहित सब जीवोंके हितकारीहैं वह ब्रह्मज्ञानी ऋषि ब्रह्मनिर्बाण अर्थात् कैवल्य मोक्षकोपातेहैं और कामक्रोधसे रहित चित्तकेजीतने वाले ब्रह्मज्ञानी संन्यासीसब दशाओंमें मोक्षको बरततेहैं ऊपरब्रह्म निष्ठासे शीघ्रहोनेवाली मुक्तिकही अबब्रह्म निष्ठाके अन्तरंग साधन को कहतेहैं,आत्मासे बाहर उत्पन्न होनेवाले बिषयों को बाहरकर के अर्थात् धारण करके और नासिकाके भीतररहने वालेप्राण और अपानको समान करके अर्थात् प्राणायाम करके,जोमुनि इन्द्रीमन और बुद्धिकाजीतनेवाला वामोक्षको उत्तमस्थान जाननेवाला इच्छा भय क्रोधसेरहितहै वह सदैव मुक्तहै-इसप्रकार सावधान चित्तज्ञानी को क्या जानना चाहिये उसको कहतेहैं—उपाधि युक्त स्वामीदेव

रूपसे यज्ञ और तपोंके भोक्ता सबलोकों के पितामह मुझअन्तर्य्यामीको जानकर अर्थात् साक्षात्कार करके मेरे भावको पाकर कैवल्य मोक्षरूप शान्तीको पाताहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणिभगवद्गीता श्रीकृष्णार्जुन संबादेसन्यास योगोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले कि जो कर्म फलका आश्रय न करने वाला करने के योग्य कर्मको करताहै वहो संन्यसीहै वही योगीहैयद्यपि वह वेद और स्मृति संबंधी अग्निको और मनबाणी देहकी क्रियाओंको त्याग करने वाला नहींहै जिसको कि संन्यास कहते हैं हे पांडव उसको योगजान संकल्प को त्यागन करने वालाकोई योगी नहीं होताहै, ज्ञान योगपर चढ़ने की इच्छा रखने वाले मुनि का साधन कर्म कहाहै अर्थात् फल रहितकर्म करनेसे ईश्वर का ज्ञान होताहै और उसीज्ञान योगपर चढ़ेहुएका साधन कर्मों कात्यागरूप संन्यास कहाहै, जबसब संकल्पोंकाअच्छी रीतिसे त्यागकरनेवाला कर्म योगी इन्द्रियों के विषय और कर्मोंमें तदाकार नहींहोताहै तब ज्ञान योगपर चढ़ाहुआ कहाजाता है, आत्मा के द्वारा आत्मा को उद्धार करे कभी आत्माका बिनाश नकरे अर्थात् मोक्षके अधिकार से न गिरावे क्योंकि आत्माही आत्माका बन्धुहै पुत्रआदि आत्मा के बन्धु नहीं हैं और आत्माही आत्मा का शत्रुहै और कोईदूसरा शत्रुनहीं है, आत्माका बंधु मनहै जिसमन के द्वारा चित्तको जीताहै और जिसने चित्तको नहीं जीता उसकामन शत्रुके समान शत्रुता में नियत होताहै, शीतोष्णता सुखदुःख मानापमान में निर्बिकार चित्त महाशान्त योगीका मन बड़ी समाधि को पाताहै,वह शास्त्रोपदेशसे उत्पन्न बुद्धिरूपज्ञान और बिज्ञानसे तृप्तचित्त मोक्षके अधिकारसे डिगाय मान नहोनेवाला अर्थात् निर्बिकारहोकर इन्द्रियों का जीतने वाला सबलोहा सोनापत्थर आदिको समान जानने वाला योग-

सिद्ध पुरुष योगी कहा जाताहै प्रतीकार बुद्धिबिना उपकार करने वाला शत्रुमित्रमें समभाव प्रिय अप्रिय और साधु असाधु इनसबमें समान बुद्धि रखने वाला एकाकी इन्द्रियों समेत देह मनका जीतने वाला निरपेक्ष कथा पुस्तक आदि परिग्रहों से रहित योगाभ्यासी एकान्त में बैठाहुआ सदैव बुद्धीको आत्मामें लगावे, पवित्र स्थान में अपना ऐसा अचल आसन बिछाकर जो न बहुत ऊंचान नीचा कुशाका बनाहुआ अथवा कुशाके ऊपर मृग चर्म उसके ऊपर सूत्र बस्त्र बिछाहो विषयों को स्मरण करना आदि चित्तकी क्रिया और इन्द्रियों की क्रियाओं को बिजय करने वाला योगी उस आसन पर बैठकर मनको एकाग्र करके अन्तःकरण की अत्यन्त पावित्रता के लिये योगका अभ्यास करे अर्थात् अपनी वृत्तिकी तरंगों को बन्द करे और मूलाधारसे मस्तकतक सीधा और निस्चल नियतहोकर अपने नासाग्र को देखताहुआ दिशाओं को नदेखता बैठे और उस आसनपर बैठकरयह करे किजो ब्रह्मचर्य्य व्रतमें नियत योगीसंत्या सी मुझ परमेश्वर में चित्त लगानेवाला अपने मनको स्वाधीन करके मुझको सर्बोत्तम जानने वाला होवे, वह अत्यन्त शान्त चित्त अर्थात् सब भीतरी बाहिरी विषयों का त्याग करनेवाला निर्भय होताहै,सदैव मनको जीतनेवाला योगी इसरीतिसे आत्मा को परमात्मा में एकता को करताहुआ मोक्ष निष्ठावाली शान्ती जोकि मुझमें बर्त्तमान है उसको पाता है, हे अर्जुन बहुत भोजन करनेवाले का भी योग नहीं होता और बहुत कम खानेवाले का भी नहीं होता और अत्यन्त सोनेवाले का भी नहीं होता और जागनेवाले का भी नहीं होता, जिसका कि आहार बिहार योग्य रीतिसे है और कर्मोंमें भी चेष्टा योग्य है सोना जागना भी योग्य है उसका योग दुःखों का दूर करनेवाला होताहै, जिसने निर्वाण रूप परम शान्ती को पाया है उसके सुन्दर लक्षण आगे के छः श्लोकों में बर्णन करते हैं अर्थात् जब अच्छी रीतिसे जीताहुआ चित्त आत्मा मेंही नियत होताहै और सब कामनाओं से इच्छा

रहित होताहै वह योगी निर्विकल्प कहाजाता है, जैसे कि दीपक निर्वात स्थानमें रक्खाहुआ नहीं हिलता है वह चित्त जीतनेवाले और समाधि का अनुष्ठान करनेवाले योगी को कहीहुई योगसेवा से, रुकाहुआ एकाग्र चित्त जिस दशा में लय होताहै अथवा जहां चित्त से आत्माको निर्विकल्प देखताहुआ आत्माही में तृप्तहोताहै बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयों में नहीं होता जो बड़ा ब्रह्मानन्द रूप सुख इन्द्रियों से बाहर ब्रह्म ज्ञानरूपी बुद्धि के द्वारा प्राप्त करने के योग्य है और इस सुख में नियत है वह ब्रह्मके सिवाय दूसरी बस्तु को नहीं जानता है और तत्त्व से पृथक् नहीं होताहै, इस बड़े लाभ को पाकर उससे अधिक लाभको नहीं मानता है और इसमें प्रवृत्त चित्त होकर पुरुष बड़े दुःखों के कारण से भी पृथक् नहीं किया जाताहै, उसको दुःखों के संग का जुदा करने वाला योग नाम जाने जिसका चित्त वैराग्यके द्वारा दुख सुखादि का सहनेवाला है उससे वह योग शास्त्र आचार्य्य से प्राप्तहुए निश्चय समेत अनुष्ठान करने के योग्य है, संकल्पसे उत्पन्नहुई सब इच्छाओं का सब बासनाओं समेत त्याग करके और चित्तके द्वारा इन्द्रियों के समूह को चारोंओर से रोककर अर्थात् सब विषयों से पृथक् करके अथवा धृति से स्वाधीन कीहुई बुद्धि के द्वारा धीरे २ निवृत्त करे और उस मनको आत्मा में नियत करके अर्थात् आत्मारूप करके कुछ भी चिन्तवन न करे, यह चंचल और अस्थिर मन जहां जहां विषयोंमें जावे वहां वहां से रोककर उसकोआत्मा के स्वाधीन करे, इस अत्यन्त शान्त चित्त रजोगुण रहित धर्माधर्म से पृथक् ब्रह्मरूप योगी को ही उत्तम सुखको प्राप्ती होतीहै, अविद्या आदि क्लेशोंसे रहित योगी इस रीतिसे मनको स्वाधीनकरता हुआ सुखपूर्व्वक ब्रह्मानन्द रूप अनन्त सुख को पाता है, अब दो प्रकार के योग फल को कहते हैं योगसे सावधान चित्त सब स्थावर जंगम जीवोंमें ब्रह्म का देखनेवाला योगी सब जीवोंमें वर्त्तमान अखण्ड ब्रह्मरूप आत्मा को और सब जीव मात्रोंको आत्मा

में देखता हैं, जो मुझको सब जीवमात्र में देखता है और सब को मुझमें देखता है मैं उससे कभी परोक्ष नहीं होताहूं और वह भी मेरा परोक्ष नहीं है अर्थात् मुझमें उसमें पृथक्ता नहीं है जोयोगी जीव ब्रह्म की एकता में नियत होके सब जीवोंमें बर्त्तमान मुझको निर्विकल्प समाधि के द्वारा भजता है वह योगी सब प्रकार के व्यवहारों को करता हुआ भी मुझमें बर्त्तमान है अर्थात् मुझसे कभी पृथक् नहीं होताहै, जो योगी आत्मा की समता के कारण सब जीवों में सुख और दुख को समान देखता है वह योगी उत्तम कहाता है, अर्जुन बोले हे मधुसूदनजी आपने जो यह समतायुक्त योग बर्णन किया सो मैं मनकी चंचलता से उसकी बड़ी स्थिरताको नहीं देखताहूं, हे श्रीकृष्णजी यह चंचल मन बड़ा पराक्रमी और दृढ़ है उस मनका रोकना मैं वायुके समान महाकठिन मानताहूं, श्री भगवान् बोले कि हे महाबाहु अर्जुन निस्सन्देह यहमन बड़ा चंचल है इसका स्वाधीन होना बड़े कष्टसे भी नहीं होताहै हे अर्जुन इस मनको अभ्यास और वैराग्यके द्वारा स्वाधीन करना योग्य है, जिसने चित्त को अच्छी रीतिसे न जीता उसको योगका मिलना बड़ाकठिन है यह मेरा मत है और मन को स्वाधीनकरने वाले वा उपाय करनेवाले को अभ्यास वैराग्यादिक उपायों से उसका प्राप्तकरना संभव है, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी कर्म योग से मनको हटाकर श्रद्धायुक्त योगमार्ग में प्रवृत्त थोड़ा उपायकरनेवाला योग सिद्धी को न पाकर मृतक होके कौनसी गतिको पाताहै, और हे महाबाहु वासुदेवजी वह कर्मयोग और ज्ञानयोग का आश्रय न करनेवाला अज्ञानी ब्रह्म प्राप्ती में नियत कर्म योग ज्ञानयोग इन दोनोंसे गिराहुआ टूटेहुए बादल के समान नाश दशाको तो नहीं पाता है, हे श्रीकृष्णजी अब इन मेरे संपूर्णसन्देहोंको आप दूर करिये क्योंकि आपके सिवाय इस संशय का दूर करनेवाला कोई नहीं विदित होताहै, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन इस लोक परलोक में उसका किसीप्रकार से नाश नहीं है और हे

तात कोई शुभ कर्मी मनुष्य दुर्गती को नहीं पाता है योग से भ्रष्ट हुए अपने पुण्य से उत्पन्न लोकोंको पाकर बहुत वर्षतक निवास करके धनी लोगों के यहां उत्पन्न होताहै अथवा वह पुरुष बुद्धिमान योगियोंके घराने में पैदा होताहै, लोक में ऐसा जन्म होना भी दुर्लभ है, हे कौरवनन्दन वहां पूर्व देह संबंधी उस बुद्धि संयोगको पाता है उसके पीछे वह बड़ी शुद्धी के निमित्त अनेक उपाय करता है, फिर वह स्वाधीनता रहित होनेपर भी पिछले अभ्यास के कारण से खैंचाजाताहै क्योंकि योग जाननेका इच्छावान शब्द ब्रह्म को उल्लंघन करके कर्म कर्त्ता होताहै फिर माता पिता का रोकना कौन बात है, जो विषयोंमें बंधाहुआ बड़े उपायसे योगाभ्यास करने में प्रवृत्त होताहै—अब उसकी गतिको कहते हैं—बड़े २ प्राणा यामादि उपाय करनेसे पापों से छूटाहुआ योगी बहुतसे जन्मोंमें मोक्षके योग्य होकर परम कल्याण रूपमोक्षको पाताहै, अब योगीकी प्रशंसा करतेहैं—कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रतोंसे वह योगी बड़े २ तपस्वियों सेभी अधिक है क्योंकि वह शास्त्रज्ञ ज्ञानियोंसे और अग्निहोत्र आदिकर्म करनेवालोंसेभी अधिकमाना गयाहै हे अर्जुन इसी कारणसे तू योगी हो, सब कर्म योगियों में भीजो श्रद्धावान मुझ बासुदेवमें लगेहुये मनके द्वारा मुझकोभजता है उसको मैं बड़ा योगी मानताहूं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सुयोगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सम्बादे अध्यात्म योगो नाम षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मुझमेंमनलगाने वाला और योगसमाधिकाकरने वाला मेरेआश्रित होकर मुझपूर्ण ब्रह्मकोजैसे जानेगा उसको श्रवण करो, मैं इसज्ञान बिज्ञान को संपूर्णता समेत तुझसे कहताहूं जिसको जानकर जाननेके योग्य दूसरा कोई बिज्ञान शेष नहींरहता है, हजारों मनुष्योंमें कोइंमोक्षरूप सिद्धियोंके लियेउपाय

करताहै और उनउपाय करनेवाले सिद्धोंमें कोई २पुरुषमुझको मूल समेतजानताहै,—अब ज्ञानसिद्धीकेलियेसब चराचर प्रपंचकेज्ञानात्मकब्रह्म प्रभुत्वका बर्णन करते हैं—प्रकृतिशब्दसे पृथ्वी आदि शब्दऔरउनकेकारणसेगंध और रसइत्यादि जाननेयोग्यहैं क्योंकि प्रकृति के पृथ्वी आदि आठप्रकार के बिकार रूपान्तर हैं अर्थात् पृथ्वीमेंगंध,जलमें रस,अग्निमें रूप,बायुमें स्पर्श, आकाशमें शब्द, मनमें अहंकार, बुद्धि में महत्तत्व,यह आठों प्रकारकीप्रकृतिमुझसे जुदीनहींहै अर्थात् उसकी उत्पत्ति मुझहीसेहै और वहमुझहीमें ऐसे लय होतीहै जैसेकि रस्सीमें सर्पकी भ्रान्ति रस्सीहीमें लय होजाती है, क्षेत्रात्मक प्रकृतिको कहकर क्षेत्र ज्ञात्मक परा प्रकृतिको कहते हैं— जो ऊपर कहीहै वह प्रकृति जड़रूपता से अनुत्तम होकर अपर कहाती है और इस्से दूसरी चैतन्यता से श्रेष्ठ होकर पर प्रकृति कहातीहै,क्षेत्रज्ञ नामजीवरूप उस मुझसे संबन्ध रखनेवाले को जानों जिस्से कि यह जगत धारण किया जाता है, यहप्रकृति सब जीवोंकी उत्पति स्थान और नाशकरनेवाली है इसीसे मैं संसार की उत्पत्ति स्थान और लयहोने का स्थानहूं इस कारण हे अर्जुन वह प्रकृति मुझ से पृथक् नहीं है हे कुन्ती पुत्र मुझ से उत्तम दूसराकोई नहींहै यहसब प्रपंच मुझहीमें ऐसे पुहा हुआ है जैसे कि सूत्रमें मणि पुही होती हैं अर्थात् इस मिथ्यारूप प्रपंचसे पृथक् हूं मेरी रूपान्तर दशा नहीं है,अगले बर्णन से सिद्ध होताहै कि यह सब संसार ब्रह्म में इस रीति से कल्पित किया जाता है जिसप्रकार रस्सी में सर्प की भ्रान्ति होतीहै हे अर्जुन मैंहीं जल में मैंहीं रस में अर्थात् मुझ रस रूप में जल पुरोहेहुएहैं और सूर्य्य चन्द्रमा दोनों में प्रकाश रूप मैं हूं अर्थात् मुझ प्रकाश रूप में सूर्य्य चन्द्रमा पुरोहेहुएहैं और सब वेदों में प्रणव मैंहूं अर्थात् बीज रूप प्रणवहूं अर्थात् बीजरूपी प्रणव में सब वेद पुहेहुए हैं आकाश में शब्द मैंहूं अर्थात् मुझ शब्दरूप में आकाश पुरोहाहुआ है सब पुरुषों में शूरता धैर्यता आदि पुरुषार्थ मैंहूं अर्थात् पौरुष

रूप में मनुष्य पुरोहेहुए हैं, पृथ्वी में पवित्र गंध मैंहूं अर्थात् मुझ गन्धरूप में पृथ्वी पुहीहुई है अग्निमें तेज मैंहूं सब जीवोंमें जीवनरूप मैंहूं अर्थात् मुझ जीवन रूप में सब जीव पुरोहेहुए हैं तपस्वियोंमें धर्मरूप तप मैंहूं अर्थात् मुझ तपरूप में तपस्वी पुरोहे हुएहैं, हे अर्जुन मुझको सब जीवों का प्राचीन बीजरूप जान मुझ बीज रूप में सब ब्रह्माण्ड इसप्रकार पुरोहा हुआ है जैसा कि सुवर्ण में कुण्डल होताहै बुद्धिमानों में बुद्धि मैंहूं तेजस्वियों में तेज, बलवानों में काम राग विवर्जित बल मैंहूं हे भरतर्षभ जीवों में धर्म से अविरुद्ध काम मैंहूं, जो सात्विक राजस तामस भाव हैं उन सब को भी मुझसेही हुआ जान वह सब मुझ में ऐसे हैं जैसे कि रस्सी में सर्प की भ्रान्ति परन्तु मैं उनमें नहीं हूं अर्थात् जैसे कि वह मिथ्या रूप हैं उस प्रकार का मैं नहीं हूं, सत्व रज तम इन तीनों गुणों की तीन रूपान्तर दशाओं के भावों से यह सब जड़ चैतन्य संसार भूलाहुआ इन गुणोंसे उत्तम मुझको नहीं जानताहै क्योंकि मैं अविनाशी रूपान्तर दशा से रहित हूं यह मेरी माया मुझ जीव ईश्वर रूप क्रीड़ावान् के संबंधी और ब्रह्माण्डरूपसे प्रथम उत्पन्न होनेवाले दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्य है, जो मुझ को अच्छी रीतिसे जानतेहैं अर्थात् मुझको और अपनेकोएकही जानते हैं वह पुरुष इस माया को तरते हैं, परन्तु जो पापात्मा आत्मा अनात्मा के विवेक से रहित मनुष्यों में नीच मायाकेकारण ब्रह्म ज्ञान से शून्य आसुरी ज्ञान में आश्रितहैं वह मुझको न श्रेष्ठ रीतिसे जानते हैं न प्राप्त होतेहैं, हे भरतवंशी दुखी, ब्रह्मज्ञानके आकांक्षी, धनाकांक्षी, ज्ञानाकांक्षी, यह चारोंप्रकार के शुभ कर्मी पुरुष मुझको भजतेहैं, इन चारोंमें ज्ञानी उत्तम है वह सदैव मुझमें अनुरक्तहोकर एक भक्तिसे भजन करनेवाला है क्योंकि मैं ज्ञानी का अत्यन्तप्याराहूं औरवहमेराप्याराहै, यह सबउत्तमहैंपरंतुज्ञानी मेरा आत्माहै क्योंकि वह मुझजगदात्मामें मनको लगाने वाला होकर मुझ उत्तम गतिरूपमेंही नियतहै वहपुरुष बहुतजन्मोंके पीछे

सब संसारको वासुदेवरूप जानकर मुझको पाताहै,जो कामनाओंसे ज्ञान भ्रष्टहोकर अपने स्वभावके द्वारा नियमोंमें नियतहोके अन्य२ देवताओंको भजतेहैं,वह सात्विकी राजसी-तामसी तीनों भक्त जिस २ देवताकी मूर्त्तिको श्रद्धा पूर्वक पूजतेहैं मैं सबका ईश्वर उन २ भक्तोंकी अचल श्रद्धाको नियत करताहूं,फिर वह उस श्रद्धामें भरे हुये उस २ मूर्त्तिका आराधन करतेहैं और उसी देवतासे उन अभीष्टोंको पातेहैं जोकि मेरेही उत्पन्न किये हुये अथवा अनुमति दिये गयेहैं तात्पर्य्य यहहै कि सब देवतामेरे आज्ञावर्त्तीहैं उन निर्बुद्धियोंका फल बिनाशवान् होताहै देवताओंके पूजने वाले देवताओंको पातेहैं और मेरेभक्त मुझ अनन्तको पातेहैं अर्थात् एकत्वभावको पातेहैं, निर्बुद्धी लोग मुझअविनाशी अनूपम अव्यक्त पुरुषको संसारी जीवोंके समान देहधारी मानतेहैं,क्योंकि योग मायासे ढका हुआ मैं सबको नहीं दिखाई देताहूं यह अज्ञानी लोक मुझ अज अविनाशीको नहीं जानताहै,जब कि जगत् ईश्वरसेजुदा नहींहै तो ईश्वरको मोह क्यों नहीं होता इस शंकाको कहतेहैं उपाधिसे रहित होनेके कारण मैं भूत भविष्य वर्त्तमान इनतीनों कालके जीवधारियों को जानताहूं परन्तु उपाधि धर्मका अभिमानी होनेसे कोईभी मुझको नहीं जानताहै अबइस शंकाकोभी कहताहूं कि लोक किस कारणसे तीनोंकालके जीवोंको नहीं जानता है हे शत्रुहन्ता अर्जुन सब जीवधारी इच्छा और अनिच्छासे उठे हुये बुरे भले सत्य मिथ्या और आत्मा अनात्मा इत्यादि मोह द्वन्दोंसे अर्थात् उनको उलटा जाननेसे इस संसारके बिषयमें अविवेक को पातेहैं अर्थात् उसके मूलको नहीं जानते हैं फिर किसको सर्वज्ञता होतीहै इसशंकाकोभी सुनो कि जिन पवित्रकर्मी पुरुषोंका पापनाश हुआहै वह मोहके द्वन्दोंसे छुटे हुये ए शम दमादि व्रतोंमें दृढ़होकर मुझको भजतेहैं,जोमुझमें समाहित चित्त होकर जरा मृत्युसे छूटने के निमित्त उपाय करतेहैं,वह पूर्णब्रह्म अध्यात्म और संपूर्ण कर्म्मों के ज्ञाताहैं, जिन पुरुषोंने अधिभूत अधिदैव अधियज्ञ समेत मुझको

जानाहैअर्थात् उपासनाकी है वह मुझमें चित्तलगाने वाले पुरुष शरीर त्यागके समयमेंभी मुझकोही जानते और देखतेहैं इन अधियज्ञादि शब्दोंका अभिप्राय आगेके अध्याय में आप श्री भगवान् वर्णन करेंगे ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु
विज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले हे पुरुषोत्तम वह ब्रह्म क्याहै अध्यात्म क्या है कर्म क्याहै और अधिभूत अधिदैव और इस शरीरमें अधियज्ञ कौन कहाताहै और किस रीतिसे इसशरीर में नियतहै और आपसमाधानचित्त पुरुषोंको शरीर त्यागके समय कैसे जाने जातेहो,श्रीभगवान्बोले हेअर्जुन जोपरम अक्षर १ है अर्थात् उपाधि संबंधसेजुदा है वहतत्वपदार्थरूपब्रह्महै और जोशुद्धतमपदार्थ है बह अध्यात्म२ है और देवताके निमित्त जोद्रव्य त्यागरूपयज्ञ है वहजीवोंके सात्विक राजस तामस स्वभावोंका उत्पन्न करने वाला कर्मनाम३ है, जोकर्म फलरूप साधनेका हेतु बिनाशवान् कर्महै वह अधिभूतहै ४ सब देहोंमें निवास करने वाला सब देवताओंका आत्मा हिरण्य गर्भ है वह अधिदैव५ है हे देहधारियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन इस शरीरमें अधियज्ञहूं ६ अर्थात् युगाभिमानी अन्तर्यामी विष्णुरूपहूं, इनछओं उत्तरोंके प्रथम उत्तरमें जीवका ब्रह्मभाव बर्णन किया वहपुरुष सत्य लोक आदिमें नहीं जातेहैं क्योंकि उनके प्राण अपने मूलमें लयहो जातेहैं तबवह ब्रह्मरूपहोकर ब्रह्मकोहीपातेहैं दूसरे उत्तरमें शुद्धतम पदार्थ कहाहै उस तमपदार्थको तत्पदार्थमें अर्थात् ब्रह्म में ऐक्यता होनेसे अन्तकालमें मुझीको स्मरण करता हुआ शरीरको त्यागकर निस्सन्देह मेरेही भावको पाताहै अर्थात् मोक्ष पदार्थ को पाताहै, हे अर्जुन जिस २ भावको स्मरण करता हुआ अन्तमें शरीरको त्याग करताहै वह सदैव उस भावसे भावित होकर उसी उसीभाव को

पाताहै,इस कारण सब समय पर मुझीको स्मरण करके तू युद्धमें प्रवृत्तहो मुझजगदात्मा में मन और बुद्धिका लगाने वाला अथवा लय करने वाला तू मुझीको पावेगा इसमें कुछभी सन्देह नहींहै, उसकी व्याख्या तीनश्लोकोंमें करतेहैं हे अर्जुन अभ्यास और अभ्यासजन्य योग समाधि इनदोनोंसे संयुक्त अनन्य वृत्ती चित्तके द्वारा अन्तर्य्यामी परम पुरुषको पाताहै,अब उपासनाके स्वरूपको कहकर जिसकी उपासना की जातीहै उसका वर्णन करतेहैं, अर्थात् सबके जानने वाले पूर्णरूप जगत्के अन्तर्य्यामी सूक्ष्मसेभी सूक्ष्म सबकर्म फलोंके विभाग करनेवाले ध्यानसे अगम्य सूर्य्यके समान प्रकाशमान अर्थात् सब जगत्के प्रकाशक अविद्या से रहित को स्मरण करै, अब उपासना के फलको कहते हैं-शरीर त्यागने के समय मनको दृढ़ता पूर्वक योग बलसे अथवा बासुदेव भगवान्की भक्तिमें प्रवृत्तहोके दोनों भृकुटियोंमें प्राणको चढ़ाकर उस हिरण्य गर्भ नाम दिव्यपरम पुरुषको पाताहै अर्थात् उसके सन्मुख पहुंचता है जिस प्रणव अक्षरको वेदज्ञ लोग कहते हैं और जिसमें वैरागी यतीलोग प्रवेश करते हैं अर्थात् उसकी शरण लेते हैं अथवा जैसे कि समुद्र में नदियां प्रवेश करती हैं उसी प्रकार यह सब लोग इसमें प्रवेश करते हैं और जिसको इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य्य को कहते हैं उसपदको तुझसे व्योरे समेत कहताहूं सब इन्द्री रूप द्वारों को अपने स्वाधीन करके मनको हृदयमें रोक कर अपनेप्राण को सुषुम्ना नाड़ीके मार्गसे मस्तक में धारण करके योग शास्त्र की लिखीहुई धारणामें अच्छी रीतिसे नियत होकर,ओंम इसएक अक्षर ब्रह्मको कहता और मुझको स्मरण करता हुआ देहको त्यागकर जो जाताहै वह ब्रह्मलोककी प्राप्तिके द्वारा मोक्ष रूप परमगतिको पाता है जो अनन्य बुद्धिहै वह सदैव मेराही स्मरण और कीर्त्तन करताहै हे अर्जुन उस योग्य अहार बिहार और यमनियम आदिमें प्रवृत्त योगीको मैं बड़ा सुलभहूं अर्थात् शीघ्रहीप्राप्त होताहूं मुझको पाकर दुःखके आलय विनाशवान् पुनर्जन्मको नहीं पाताहै क्योंकि

वह महात्मा मोक्षरूप महासिद्धीको प्राप्तहै, हे अर्जुन ब्रह्मलोक से लेकर सब संसारी लोक इस पृथ्वीपर फिर लौटकर आनेवाले हैं और मुझको प्राप्तहोकर पुनर्जन्म नहीं होताहै अर्थात् जो योगी परमेश्वरकी उपासनाके द्वारा ब्रह्मलोक को गये वह ब्रह्माजी के साथ मुक्त होतेहैं और जो पंचयज्ञ आदि विधाके द्वारा ब्रह्मलोक को गये वह लौट आतेहैं अबलौटने के समयको प्रकट करते हैं जिन लोगोंने चारों युगोंकी हज़ार चौकड़ीका ब्रह्माजीका एकदिन जानाहै और इतनीही रात्रिभी मानीहै वह दिनरात्रिके जाननेवाले प्रसिद्धहैं दिनके होतेही सब प्रत्यक्ष पदार्थ स्वप्न दशारूप अव्यक्त से विदित होतेहैं और रात्रि आनेपर उसी अव्यक्त नाममें सब अत्यन्त लयहो जातेहैं, हे अर्जुन वही यह सृष्टि समूह बारंबार प्रकट होकर रात्रिके आवने पर अविद्या और कर्म फलके स्वाधीन होकर लयहो जाताहै और दिनके आवनेपर प्रकट होजाताहै, अब उस परब्रह्मको कहतेहैं जिसको पाकर फिर आवागमन से छूटताहै उस अव्यक्तसे अन्य सत्तावान् अरूप उपाधि रहितनित्य एकरूप जो सब संसारके नाशहोनेपर नाशनहीं होताहै अर्थात् तीनोंकाल में अविनाशी होकर नियतहै वह गुप्त अविनाशी कहाजाताहै और कैवल्य मोक्षरूप परम गतिभी कहाताहै जिसको कि पाकर फिर नहीं लौटकर आतेहैं वही मेरी ब्रह्मज्योतिहै, इस प्रकार शुद्ध ब्रह्म को कहकर अब उत्पत्तिके हेतु और उपासनाके योग्य सगुण ब्रह्म को कहतेहैं, हे अर्जुन अनन्य भक्तीसे जो पानेके योग्यहै वह शुद्ध ब्रह्मसे दूसरा पुरुषहै उसमेंभी सबजीवमात्र ऐसे नियतहैं जैसे बीज में वृक्षनियत होताहै इसी प्रकार इसमें सब जगत् व्याप्तहै २२हे भरतर्षभ कर्मयोगी जिस समय शरीरको त्याग करके चले हुये अनावृत्ति अर्थात् लौटकर न आना और आवृत्ति अर्थात् आवागवन को पातेहैं उस समयको बर्णन करताहूं किरणोंकाअभिमानीदेवता अग्नि ज्योति और दिनका अभिमानी देवता दिन शुक्लपक्षकादेवता और छः महीने तक उत्तरायणका देवता इन चारों के उदय प्रताप

में ब्रह्मकी उपासना करनेवाले पुरुष शरीरको त्यागकरके ऊपरको जाकर ब्रह्मलोक को पातेहैं अर्थात् ब्रह्मलोकमें पहुंचकर ब्रह्माजी के साथ मुक्तहोतेहैं, जिनकर्म योगियोंका योगपक्का नहींहुआ उनके मार्गको कहतेहैं अर्थात् जब धूमरात्रि कृष्णपक्ष छः महीने दक्षिणायन इन चारों के देवताओं के उदय में योगी चान्द्रमसि ज्योति अर्थात् स्वर्गको पाकर फिर लौट आताहै, संसारकी यह शुक्ल और कृष्ण नामगति प्राचीन मानीगई हैं एकसे तो अनावृत्ति अर्थात् लौटकर न आना और दूसरी से आवृत्ति अर्थात् लौट आताहै, हे अर्जुन इन दोनों मार्गों को जानताहुआ कोई ज्ञान योगी नहीं मूलताहै अर्थात् योगमें थोड़ा उपाय नहीं करता किन्तु अत्यन्त उपाय करता है, इस कारण हे अर्जुन सदैव योग में प्रवृत्तहो, फिर श्रद्धा बढ़ाने के लिये योगकी प्रशंसा करताहूं—वेदों में यज्ञोंमें दानों में शास्त्रानुसार जो पुण्य फल कहागयाहै उस सब पुण्यफलको योगी उल्लंघन करके इस बिषय का ज्ञाता होकर ब्रह्मलोक को जाकर स्वयंसिद्ध श्रेष्ठ स्थानको पाताहै २८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवत्अर्जुनसंवादे अष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय॥

श्रीभगवान् बोले कि मैं इस अत्यन्त गुप्त रखने के योग्यज्ञान को अपने बिज्ञान के द्वारा तुझ अनसूया रहित से वर्णन करता हूं जिसके जानने से तू इस अशुभ संसार से मुक्त होगा, यह बिद्याओं का और गुप्त देवताओं का राजा महाउत्तम पवित्र कर्त्ता अपरोक्ष ब्रह्मका प्राप्त करनेवाला धर्म में हितकारी अनुष्ठान करने में सुखरूप और अबिनाशी है, हे शत्रुओं के संतप्त करनेवाले अर्जुन इस ज्ञानधर्मके श्रद्धा न रखनेवाले पुरुष मुझको अप्राप्त होकरजन्म मृत्युरूपी संसार मार्ग में घूमाकरते हैं, इस प्रकार से सन्मुखकरके कहने के योग्य वचनों को कहते हैं—मुझबुद्धि से परे सच्चिदानंद रूप सगुण रूपधारी से भिन्न परमात्मा से यह सब जगत्व्याप्तहै

जैसे कि रस्सीमें सर्पकी भ्रान्ति होतीहै उसीप्रकार मुझ परमात्मा में यह सब स्थावर जंगम जीव नियत हैं परन्तु मैं उनमें नियत नहींहूं जैसे कि घटादिकों में मृत्तिका नियत नहीं है किन्तु घटादि रूप मृत्तिकामें नियतहैं, जीवमुझ एकाकीमें नियत नहीं है जीवोंके साथमेरे योगको अथवा ईश्वरता संबन्ध रखनेवाले को देख कि जो मेरा परमानन्द रूप आत्मा अपने आनन्द से जीवों की वृद्धि करनेवाला और धारण करनेवालाहै परन्तु आप उनजीवोंमें नियत नहींहै,—ऊपरके दो श्लोकों में ब्रह्मको उपाधि से रहित वर्णन किया अब जीव ब्रह्मकी एकताको कहतेहैं जैसे कि सूत्रात्मा महान् बायु सर्वत्र वर्त्तमान होकर अपने उत्पत्तिस्थान आकाश में सदैव नियतहै इसी प्रकार चैतन्यरूप सब प्राणी मुझमें नियतहैं अर्थात् मुझसे पृथक् नहींहैं ऐसा तू समझ, जो उपाधि रहित ब्रह्ममें लय होनेका भावहै तो उपाधि की कौनदशाहै इसशंकाको निवृत्तकरते हैं—कल्पके अन्तमें सब जड़ चैतन्य शरीर मुझ मायोपहित ईश्वर की प्रकृति में प्रवेश करतेहैं मैं मायादि का कारणरूप आत्माकल्प के प्रारंभ में फिर उनको अनेक प्रकारके रूपों से उत्पन्न करताहूं माया के बिना कर्तृत्व भाव न होनेसे अविद्या लक्षण वाली अपनी प्रकृति के आश्रय में होकर मैं इस सम्पूर्ण देह समूहों को बारम्बार नानाप्रकारका बनाकर उत्पन्न करताहूं वह देह समूह स्वभावके आधीन होने से अस्वतन्त्रहै अर्थात् अवशहै, हे अर्जुन वह कर्म मुझ उदासीन रूप कर्मफल की इच्छा न रखनेवाले को बंधन में नहीं डालसक्ते हैं जैसे कि बादलको किसी बीजसे प्रीति किसी से शत्रुताआदि नहींहै सबके ऊपर समान वृष्टिकरताहै उनमें कोई फलवान् होताहै कोई नहीं भी होताहै यही संबंध जीवोंको ईश्वर सेहै, हेअर्जुन मुझ अध्यक्षरूप के कारण से प्रकृति सबजड़ चैतन्यों समेत जगत्को उत्पन्न करती है इसीकारण से जगत् जन्मादि दशाओं में भ्रमताहै अर्थात् चुम्बकीय शक्तिके समान मैं इस संसार को चेष्टादेनेवाला होताहूं, अज्ञानी लोग मेरे उत्तम तत्त्व पदार्थको

न जानकर मुझ मनुष्य देहमें नियत होनेवाले का अपमान करते हैं और मैं जीवधारियों का महेश्वरहूं, मेरा अपमान करने से वह अज्ञानी निरर्थकआशा और निष्फल ज्ञानी विवेकसे रहित राक्षसी आसुरी चित्त अर्थात् रजोगुण तमोगुण प्रधान स्वभावों में आश्रय लेनेवाले हैं १२ परन्तु जो बड़े उदारचित्त दैवी स्वभाव सतोगुण में आश्रय लगानेवाले हैं वह पुरुष मुझको सब संसार का आदि अविनाशी जानकर एकाग्र चित्त से मेरा भजन करते हैं, अब भजन के स्वरूप को वर्णन करते हैं, वह शान्त चित्त दृढ़व्रत जितेन्द्री शम दम आदि में उपाय करनेवाले सदैव मुझी में बुद्धि से तदाकार होकर मेरा कीर्त्तन करनेवाले नमस्कार पूर्व्वक बड़ी भक्ति से मेरी उपासना करते हैं, और कोई २ निर्विकल्पसमाधि रूप ज्ञान यज्ञ करने से भी मुझको पूजतेहुए उपासना करते हैं कोई मुझको अपने शरीर से एकही जानकर कोई पृथक् मानकर अर्थात् अपना स्वामी मानकर और कोई मुझको अनेक रूपवाला विश्वतो मुख अर्थात् जो दीखा सो भगवत् रूप जो सुना वह उसी का नाम जो दिया अथवा भोजन किया वह उसी के अर्पणहै इस रीतिसे उपासना करते हैं, उसका यह व्योराहै—मैंहीं संकल्प देवता ध्यान रूप क्रतुहूं मैंहीं सबप्रकार का यज्ञहूं मैं स्वधारूप पितरों का अन्नहूं मैंहीं औषधीहूं और जिसके द्वारा दानादिक दियेजाते हैं वह मन्त्र भी मैंहीं हूं मैंहीं हव्य मैंहीं अग्नि मैंहीं हवनकरने की क्रियाहूं इन कारणों से मेरी विश्व तो मुख उपासना अत्यन्त योग्य है, मैंहीं जगत् का पिता माता धाता अर्थात् कर्म फल का उत्पन्न करनेवाला पितामह ज्ञेय और पवित्र करने वाला तप इत्यादि हूं मैंहीं ओंकार और चारों वेदहूं मैंहीं गतिहूं, मैंहां कर्म फल का देनेवाला पोषण करनेवाला अन्तर्य्यामीसाक्षी निवास स्थान रूप प्रभु यजमान आदिरक्षक प्रतीकार रहित परोपकारी (उत्पत्ति और लय का स्थान)कर्म फल अर्पण करने का स्थान संसार का बीजरूप अविनाशीहूं, मैंहीं सूर्य्य रूप होकर

संसार को तपाताहूं और आठ महीने तक अपनी किरणोंसे वर्षा को ग्रहण करताहूं और वर्षाऋतु में अपनी किरणों सेही जलवरसाताहूं, हे अर्जुन मैंहीं जीवन मरण और साधु असाधुहूं, परन्तु जो पुरुष किसी प्रकार की उपासना नहीं करते केवल कर्मोंही को करते हैं उनका यह वृत्तान्त है—ऋग् यजु साम वेदरूप विद्यावाले यज्ञों में सोम पान करनेवाले निष्पाप पुरुष यज्ञों से मेरापूजन करतेहुए स्वर्गगति को चाहते हैं वह पवित्रात्मा इन्द्रलोक में जाकर स्वर्ग में देवताओं के दिव्य भोगों को भोगतेहैं, उस बड़े भारी स्वर्ग के भोगों को भोगकर कर्म फल समाप्त होजाने पर वह फिर इसी मर्त्यलोक में आते हैं इस प्रकार से वेदोक्त सफल कर्मों के द्वारा विषयों के चाहनेवाले पुरुष आवागमन को पातेहैं, कर्म फल की दशा को कहकर अब भजन के फल को कहतेहैं—जो पुरुष इस रीतिसे चिंतवन करते हैं कि मैंहीं भगवान् वासुदेवजी की उपासना के योग्यहूं दूसरा नहीं है ऐसी एकत्वता के द्वारा मेरी उपासना करते हैं उन सदैव योग की उपासना करनेवाले भक्तों के स्थान भोजनाच्छादन की मैं आप रक्षा करताहूं, और जो अन्य देवताओं के भक्त हैं और उनका पूजन करते हैं हे अर्जुन वह पुरुष भी बुद्धि के विपरीत मुझी को पूजते हैं, क्योंकि मैंहींसब देवताओं के रूप से सब यज्ञों का भोक्ता फल का देनेवाला प्रभु हूं परन्तु मुझको मुख्यता के साथ अच्छी रीति से नहीं जानतेहैं इस हेतु से वह फिर गिरते हैं अर्थात् ज्ञाननिष्ठा को न पाकर संसाररूपी कूप में गिरते हैं, देवताओं के उपासक देवताओं को और पितरों के उपासक पितरों को पाते हैं और भूत प्रेतादि के उपासक भूत प्रेतों को प्राप्त होतेहैं और एक अविनाशी के पूजने वाले मुझी को पाते हैं, मेरी भक्ति बड़ी सुगम है और अन्य देवताओं की भक्ती में बहुतसा धन खर्च होताहै इस शंका को कहते हैं—जो भक्तिपूर्व्वक पत्र फूल फल और जल भी मुझको देता है उस शुद्ध अन्तःकरण के दिये हुए को मैं भोजन करता हूं,

इस कारण जो कुछ काम करे उसको मेरे अर्पण कर अर्थात् मन बाणी देहसे जोकुछ कियाजाय उसमें यही ध्यानकरे कि उसीका नाम लेताहूं जो कुछ खाता है वा हवन करता है वा दान करता है वा तप करता है हे अर्जुन उसको मेरे ही अर्पण करे—अब उस कर्म के फल को कहते हैं—इसप्रकार से शुभा शुभ कर्म फलोंके बंधनों से छूटेगा उसकर्म फलके त्यागरूप संन्यास योगसे सावधान चित्त कर्मबंधनोंसे अत्यन्त छुटाहुआ वह पुरुष मुझपरमात्मा को पावेगा,मैं सबजीवोंमें बराबरहूं न मेराकोई मित्रहै न शत्रुहै परन्तु जो भक्तीकेसाथ मुझको भजतेहैं वह मुझीमेंहैं—और मैं उनमेंहूं अर्थात् मुझमें और उनमें कोई भेद नहींहै क्योंकि ज्ञानीतोमेरा ही आत्माहै जैसे कि अग्नि शत्रुता और मित्रतासे रहित है परन्तु जो उसके पास नियत होताहै उसीका शीतनिवृत्त होता है दूसरे का नहीं निवृत्त होताहै इसी प्रकार भगवत् की शरणमें जानेवाले भक्तोंका कर्म बंधन नाश होजाताहै—अब भक्ती के माहात्म्य को कहतेहैं—जो अत्यन्त दुराचारी भी है और मेरे सिवाय दूसरे में मनका नहीं लगाने वालाहै और मुझीको भजता है उसको साधु समझना चाहिये क्योंकि वह दृढ़निश्चय करने वाला है, वह पुरुष शीघ्रही धर्मात्मा होताहै और सदैव मोक्ष रूपगति को पाता है हे अर्जुन तू मेरी आज्ञासे प्रण करके इस बातको दृढ़जानले कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता हे तात यह बात प्रकट है कि जो स्त्री वैश्य शूद्र भी पापात्मा होयं वह भी मेरी शरण को लेकर मोक्ष रूप परमगतिको पाते हैं तोक्या पवित्र ब्राह्मण और राजर्षिलोग मेरे भक्त होकर मोक्षरूप परम गतिको नहीं पावेंगे अर्थात् अवश्य पावेंगे हे अर्जुन इस नाशवान् सुखसे रहित लोकको पाकरतू मुझको भज क्योंकि अन्य लोकों में भजन नहींहोता है, अब भजन की रीतें बतलातेहैं—अर्थात् मुझीमें मनका लगानेवालाहो स्त्रीआदिमें लगाने वाला न हो मेराभक्तहो और मेरेहीनिमित्त यज्ञकरनेवाला हो स्वर्गादिके लिये न हो मुझीको नमस्कार इत्यादि रीतिसे योग

को करके मुझी उत्पत्ति के स्थानमें भक्ति रखने वालामुझजगदात्मा परमात्मा मेंहीं ऐसे लय होगा जैसे कि नदियां अपने नाम और स्वरूपों को त्याग कर समुद्रमें लयहोजाती हैं ३४ ॥

इतिश्री महाभारतेभीष्मपर्वणिकृष्णार्जुनसंवादेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दसवां अध्याय ॥

श्री भगवान् बोले हे महाबाहु तू फिर मेरे इस उत्तम बचन को सुन जो तेरे भलाईकेलिये तुझप्रीतिमानसे कहताहूं कि देवताओंने और महर्षियोंने भी मेरे आकाशादि के उत्पन्न करनेके बड़े ऐश्वर्य्यको नहीं जानाहै इसकारण से कि मैं सब देवता और महर्षियों सेभी प्रथम हूं अर्थात् शरीर की उत्पत्ति के पीछे देवता आदिकोंकी बुद्धि उत्पन्न हुई तो पीछे उत्पन्न होनेवाली बुद्धिसे पूर्व समय का वृत्तान्त जानना असंभवहै, फिर कौन इसको जानताहै इसकोकहतेहैं—जो अज्ञानी नहींहै अर्थात् ज्ञान बिज्ञान से पूर्णहै वह मुझ अनादि रूप अजन्मा और सब लोकों के स्वामी को जानता है और वही मरनेवालों में सब पापों से मुक्त होताहै, मेरे महेश्वर होनेसेही मुझसे बुद्धि आदि उत्पन्न होतीहैं, इसकोबताते हैं-अन्तःकरणके सूक्ष्म प्रयोजनोंकी जाननेवाली (बुद्धि) और आत्मा अनात्मा का जाननेवाला (ज्ञान) और जाननेके योग्य प्रयोजन वर्त्तमान होनेपर स्थिर चित्त और विवेकपूर्व्वक करनेकेयोग्यविषय का जाननेवाला (असंमोह) और घायल आदि होने में चित्तमें विपर्य्यय न होनेवाली (क्षमा) और प्रमाण संयुक्त जाने हुए प्रयोजनको निश्चय कहनेवाला (सत्य) और इन्द्रियों का जीतनेवाला (दम) और मन का जीतने वाला (शम) (सुख) (दुःख) (उत्पत्ति) (अस्ति) (नास्ति) (भय) (निर्भयता) और जीवोंको दुःख न देना (अहिंसा) और शत्रुमित्रमें एक भाव होना (समता) (सन्तोष) (तपस्या) (दान) (यश) (अयश) यह जीवधारियों के बीसोंभाव नानाप्रकारों के द्वारा मुझहीसे उत्पन्न होतेहैं इसीकारण हे अर्जुन उत्तम गुणोंकी प्राप्तीकेअर्थ मेरी शरण

लेनी योग्य है, सब सृष्टिसे प्रथम भृगु मरीचादि महर्षी और सनकादिक ऋषि वा चौदह मनु मुझ हिरण्यगर्भ रूप के मनसेउत्पन्न हुए हैं जिनसे कि यह सब प्रजा और लोक उत्पन्न हुए हैं वह मुझी में मन लगानेवाले हैं, अब उपासना के अधिकारी को कहते हैं-जो वक्षमाण मेरी विभूति और योगको मूल समेत जानतेहैं वह निर्विकल्प योग समाधि के द्वारा अचल होकर निस्संदेह तदाकार होताहै, अब दो श्लोकोंमें उपासना के स्वरूप को बर्णनकरतेहैं मैं सब संसारकी उत्पत्ति का कारणहूं बुद्धि आदिके द्वारा जो कुछ कर्म होताहै वह मुझसेही संबंध रखनेवाला होताहै ऐसा मानकर ज्ञानीलोग भक्ति से मुझको भजते हैं, जिनके मनमें मैंहीं वर्त्तमान हूं और जिनकी इन्द्रियां भी मुझीमें मग्न हैं वह परस्पर में श्रुतियों और युक्तियों के द्वारा मुझको प्रकट करते हैं और सदैव मुझी को रटतेहुए तृप्ती को पाकर मुझीमें रमण करते हैं अब उपासना के फलको कहतेहैं—उन सदैव उत्साहयुक्त प्रीतिसे भजनकरनेवाले महात्माओं को मैं उस बुद्धि योगको देताहूं जिसके द्वारा वह मुझको इसप्रकार से पातेहैं जैसे कि नदियां अपने नाम और रूपोंको त्यागकर समुद्र में प्राप्त होतीहैं, उनके ऊपर दया दृष्टिकरनेकेलिये मैं अन्तःकरणवर्त्ती होकर प्रकाशरूप ज्ञानदीपकके द्वारा उनके अज्ञान से उत्पन्न हुए मोहरूपी अंधकारको दूरकरता हूं, अर्जुन बोले हे परब्रह्म परमज्योति पवित्रात्मा शरीर रूप पुरियों में वर्त्तमान हृदयाकाश में प्रकट होनेवाले सबके आदि रूपव्यापक अजन्मा श्रीकृष्णजी, आपको सब (ऋषि) (देवर्षि)(नारद)(असित) (देवल) (व्यासजी) इन सब ऋषियों ने तुमको उत्तम २ गुणों से संयुक्त किया और आप अपने श्रीमुख से भी बर्णन करतेहो सो हे केशवजी आपके ऐश्वर्य्यको देवता और दानवोंमेंसे कोई नहींजानताहै इस बात को मैं सत्यही मानताहूं, हे जीवोंके उत्पन्न करनेवाले ईश्वर देवदेव जगत्पति पुरुषोत्तम तुम अपनेको आपहीजानतेहो, हे भगवन् आप अपनी उन दिव्य विभूतियोंको मूलसमेत

बर्णनकीजिये जिनसे कि आप इन लोकोंको व्याप्त करके नियत रहते हो, हे षड़ैश्वर्य्य के स्वामी मैं अपने चर्म चक्षु से ध्यानकरताहुआ आपको कैसे जानूं, अर्थात् नहीं जानसक्ता हे भगवन् आप विश्वरूप के दर्शन का अधिकार होनेकेलिये आप कौन २से भावोंमें मेरे देखने के योग्य हैं, हे जनार्दन आप अपने विश्वरूप योग और ध्यान के योग्य विभूतियों को फिर बिस्तार युक्त बर्णन कीजिये क्योंकि इन मोक्ष साधन युक्त अमृत से सनेहुए आपके बचनोंसे मेरी तृप्ति नहीं होती है, श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन बहुत श्रेष्ठ है मैं अपनी उत्तम दिव्य विभूतियों को तुझसे कहताहूं मेरी विभूतियों के बिस्तार का अन्त नहीं है हे निद्रा जीतनेवाले अर्जुन मैं व्यापक आत्मा सब जीवों का आश्रय रूप अचलहूं मैं सब का आदि मध्य अन्त अर्थात् उत्पत्ति पालन लयरूपहूं, योग को कहकर अब विभूतियों को कहताहूं अर्थात् अदितीके पुत्रों में बारहवां सूर्य्य अथवा विष्णुकाअवतार बावनरूपमैंहूं, अग्निआदि ज्योतिरूपों में अत्यन्त संतप्त करनेवाली किरणोंसमेत सूर्य्य मैंहूं, उनचास मरुद्गणोंमें मरीचि नाम मरुत मैंहूं, नक्षत्र और तारागणोंमें चन्द्रमा मैंहूं, मनोहर गानयुक्त वेदोंमें सामवेद मैंहूं, देवताओं में इन्द्र मैंहूं, इन्द्रियोंमें मन मैंहूं, जीवोंकी बुद्धिकी वृत्ति मैंहूं, ग्यारह रुद्रोंमें शंकर नाम रुद्र मैंहूं, यक्ष राक्षसोंमें धनाधिप कुवेर मैंहूं, अष्ट वसुओंमें अग्नि मैंहूं, शिखर और रत्नधारी पर्व्वतों में सुमेरु नाम उत्तम पर्व्वत मैंहूं, और हे अर्जुन पुरोधसों में वृहस्पति मैंहूं, सेनापतिओंमें स्वामिकार्त्तिक मैंहूं, नदी आदि जलाशयोंमें समुद्र मैंहूं, महर्षियोंमें भृगु मैंहूं, बर्णन करनेवाली बाणियोंमें एक प्रणव नाम ओंकार अक्षर मैंहूं, यज्ञोंमें जप यज्ञ मैंहूं, हिंसारहित नियत स्थानोंमें हिमालय पर्व्वत मैंहूं, सब वृक्षोंमें पीपल का वृक्ष मैंहूं, देवर्षियों में नारदऋषि मैंहूं, गन्धर्वों में चित्ररथ गन्धर्व मैंहूं, सिद्धों में कपिल मुनि मैंहूं, घोड़ों में उच्चैश्श्रवा मैंहूं, गजेन्द्रों में ऐरावत नाम हाथी मैंहूं, मनुष्यों में राजा

मैंहूं, आयुधों में वज्र मैंहूं, गौओं में कामधेनु मैंहूं, सन्तति का उत्पन्न करनेवाला कामदेव मैंहूं, सर्पों में वासुकी सर्प मैंहूं, नागोंमें अनन्त शेष नागमैंहूं,जलजीवों में और जलके स्वामियों में वरुण मैं हूं, पितृगणोंमें अर्य्यमा पितर मैंहूं, दंड देनेवालों में यम मैं हूं, दैत्यों में प्रह्लाद मैंहूं, संख्या करने वालों में कालमैंहूं, मृगों में मृगेन्द्र अर्थात् सिंहमैं हूं, पक्षियों में गरुड़ मैंहूं, पवित्र करने वालोंमें अथवा शीघ्र गतिवालोंमें वायु मैं हूं, शस्त्रधारियों में रामचन्द्र वा परशुराम मैं हूं, मत्स्यादिकों में मगर मैं हूं, नदियों में श्री गंगाजी मैं हूं, हे अर्जुन संपूर्ण संसार का आदि मध्य अन्त मैं हूं, विद्याओं में अध्यात्म विद्या मैं हूं, जल वितंडा इत्यादिमें सिद्धान्त रूप मैं हूं, सब अक्षरों में अकार अक्षर मैं हूं, गुरू शिष्य अथवा ज्ञानियों के एकत्र बैठने से जो प्रयोजन सिद्ध होताहै उसकागुप्त आशय मैं हूं, मैं अविनाशी कालहूं, मैंहीं कर्म फलका देनेवालाहूं, मैं बिश्वतो मुखहूं, अर्थात् सब जीवमात्रों के तृप्तहोने से प्रसन्न और संतुष्ट होताहूं, मैंहीं सबका मारनेवाला मृत्युहूं, प्राप्तहोनेवाले कल्याणों में ऐश्वर्य्य की महत्त्वता और कीर्त्ति मैंहूं,(स्वभाव)(मृदुभाषण)शास्त्र की याद रखनेवाली (मेधा) धैर्य्यता सन्तोष मैंहूं, सामवेदकी ऋचाओं में वृहत् नाम ऋचामैंहूं, छन्दोंमें गायत्रीमैंहूं,महीनोंमें मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन मैं हूं, ऋतुओं में बसन्त ऋतुमैं हूं, छल करने वालोंमें जुवा मैंहूं, तेजस्वियों में तेज मैंहूं, विजय मैं हूं, निश्चय वा उपाय मैं हूं, सतोगुणी पुरुषों में सतोगुण मैंहूं, यादवों में बासुदेव मैं हूं, पांडवों में अर्जुन मैं हूं, मुनियोंमें व्यासमुनि मैं हूं, कवियों में शुक्र कबि मैंहूं, राजाओं में दण्ड रूप मैं हूं, विजयाभिलाषी पुरुषों में नीति रूपमैं हूं, गुप्त बस्तुओंमें मौनता मैंहूं, ज्ञानियों में ज्ञानमैंहूं, हे अर्जुन जो सब जीवधारियों का तेज है वह मैंहूं, अर्थात् सबमेरीही बिभूति हैं हे शत्रुहन्ता अर्जुन मेरी दिव्य बिभूतियों का अन्त नहींहै यह मैंने अपनी असंख्य बिभूतियोंका संक्षेप तुमसे बर्णन किया,जो जोप्राणी ऐश्वर्य्यमान लक्ष्मी-

वान्शोभावान् और पराक्रम आदिसे भी अत्यन्त युक्तहै उसउसको तुममेरी चैतन्य शक्ति की अग्नि से उत्पन्न हुआ जानो,अब उत्तम अधिकारी के विषय में बर्णन करते हैं—हे अर्जुन इसबहुतसे ज्ञान से तुमको क्या प्रयोजनहै मैं इस संपूर्ण जगत्को अपने एकअंशसे व्याप्त करके नियतहूं अर्थात् मेरेएक अंशमें यह सबसंसारहै ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवत्कृष्णार्जुनसंवादे बिभूतिबर्णनोनाम दशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

अर्जुन बोले कि जो आपने मेरे ऊपर अनुग्रह करनेकी दृष्टिसे अत्यन्त गुप्तरूप और गुप्तही करने योग्य आत्मज्ञानको अर्थात् आत्मा अनात्माके विवेकरूप बचनको बर्णन किया उसके द्वारा यह मेरा अविवेकरूपी मोह अत्यन्त दूरहो गया इसके विशेष हैंकमल दल लोचन मैंने जीवोंकी उत्पत्ति नाश और आपका महा अविनाशी माहात्म्य भी आपके मुखारविन्दसे सुना,हे ईश्वर जैसा आपने अपनेको कहा आप यथार्थ में वैसेहीहैं परन्तु हे भगवन् आपके विराट्रूप देखनेकी मुझको बड़ीअभिलाषाहै, हे प्रभु योगेश्वर जो आप ऐसा समझेहोयं कि उस रूपको मैं देखने योग्यहूं तो आप उस अपने अविनाशी आत्माको मुझे दिखलाइये, श्रीभगवान्बोले हे अर्जुन मेरे सैकड़ों हजारों दिव्यरूप जो नानाप्रकारोंसे अनेकरंग रूपकेहैं उनकोदेख,हेभरतबंशी उसीस्वरूपमें(बारहसूर्य्य)(आठवसु) (ग्यारहरुद्र) (दोनोंआश्विनीकुमार,) (उनचासवायु) इसीप्रकारको अन्य बहुतसी अद्भुत बातोंको जोतैंने प्रथमकभी नहीं देखीहैं उनको भी देख, हेनिद्राजीतने वाले अबयहां मेरे शरीरके एकअंशमें वर्त्तमान सब स्थावर जंगम सहित जगत् को और जो २ भूत भविष्य स्थूल सूक्ष्म देखना चाहता है उनको भी देख, परन्तु तू इन चर्म नेत्रों से मेरे देखनेको समर्थ नहीं है तुझे दिव्यनेत्र देताहूं इननेत्रों से ईश्वरता संबंधी मेरे योगको देख,संजय बोले कि हे राजा धृत-

राष्ट्र बड़े योगेश्वर हरिने इस प्रकारसे प्रश्न करने वाले अर्जुनको अपने ऐश्वर्य्य संबंधी उन दिव्य उत्तम रूपोंको दिखाया जो अनेक मुख नेत्र और अद्भुत दर्शन समेत बहुतसे दिव्याभरण वस्त्र और उत्तम शस्त्रों से अलकृत सुगन्धित पुष्पमालाओं से शोभित सब ओरको हजारों सूर्य्य के समान देदीप्यमान थे, तदनन्तर अर्जुनने उस देवदेव वासुदेव श्रीकृष्ण जीके उसशरीरके भीतर एक अंशमें नियत नाना प्रकारके रूपों समेत संपूर्ण जगत्को देखा, यह देखकर अर्जुन आश्चर्य्ययुक्तहुआ और शरीरमें रोमांच खड़े होगये तब उसने हाथ जोड़कर उनको प्रणाम करके यह बचन कहा कि हे प्रकाशमान आपके शरीरमें देवता और चारोंप्रकारके सबजीवोंको और कमलासनपर विराजमान ईश्वर ब्रह्माजीको आदिले सबऋषि मुनि यक्ष राक्षस गन्धर्व किन्नर उरग राजोंको भी देखताहूं, हेविश्वरूप अखिलेश्वर आपको सबओर अनेकरूप भुजा उदर मुखनेत्र कान नाकोंसे शोभित देखताहूं फिर आपका आदिमध्य अन्तभी नहीं देखताहूं और आपको मुकुट गदा चक्र धारण किये तेज समूहों से कठिनतापूर्वक देखनेके योग्य चारों ओरसे प्रकाशित अग्नि सूर्य्यके समान देदीप्यमान अप्रमेय देखताहूं, आप अविनाशी शुद्ध ब्रह्मवेदान्त सेही जानने के योग्य हैं आपही इससंसारके कारण ब्रह्महो अर्थात् उत्पत्तिलयके स्थानहो और प्राचीन धर्मोंके रक्षकहो अर्थात् हिरण्यगर्भ रूपहो तुम्हींको सबने सनातन ब्रह्म पुरुष मानाहै, मैं आपको आदि मध्य अन्तरहित महा पराक्रमी बहुत भुजाधारी चन्द्र सूर्य्यरूपनेत्रयुक्तप्रकाशमान अग्निरूपमुख अपनेतेजसेइसविश्वका संतप्त करनेवाला देखताहूं, हे महात्मा स्वर्ग पृथ्वी और इनदोनों के मध्यवर्त्ती आकाश दिशा विदिशाओंकोभी मैं तुझी अकेलेसेव्याप्त रूप देखताहूं इस तेरे अद्भुत भयकारी रूपको देखकर तीनोंलोक भयभीत होतेहैं, यह दुर्य्योधनादि असुरवत्समूह मरनेके निमित्त आपकेभीतर ऐसे प्रवेश करतेहैं जैसे कि पतंगोंके समूह दीपकमें भस्महोनेको प्रवेश करतेहैं, आपको कोई तो भयभीत होकर स्तुति

करतेहैं और महर्षि सिद्धगण लोग कल्याण शब्दकहकर स्तोत्रादिकोंसेआपकी स्तुतिकरतेहैं, ग्यारहरुद्र बारह सूर्य्य आठबसु और साध्यविश्वेदेवा दोनों आश्विनीकुमार उनचासमरुत और उष्णभो जोपितरादि यक्षगंधर्व असुर सिद्धगण यहसब आश्चर्य्यित होकर आपको देखतेहैं, हे महावाहु बहु भुज जंघा चरण पीठकरालदंष्टा युक्त महारूपधारी आपके रूपको देखकर सबलोक पीड़ामान हैं और मैंभी पीड़ामानहूं, हे सर्वव्यापी आपको अकाशमें व्यापक प्रकाशमान अनेक वर्णोंसे शोभित दिशाओंमें विस्तृत प्रकाशमान नेत्रवालादेखकर अन्तःकरणसे अत्यन्तपीडामान होकरमुझेधैर्य्यता नहीं होतीहै, हे देवेश्वर कालाग्निके समान आपकेमुख और कठिन दंष्ट्राओंको देखकर मारे भयके किसी दिशाकोभी नहीं पहिंचानता महादुःखीहूं, हे विश्वरूप प्रसन्न होकर सुख दीजिये, यहसब धृतराष्ट्र के दुर्य्योधनादि पुत्र सबसाथी राजाओं समेत आपकेशरीरमें प्रवेश करतेहैं और इसीप्रकारभीष्म द्रोणाचार्य्य सूतकापुत्रकर्णभी हमारे उत्तम २ योधाओं समेत इत्यादि अनेक शीघ्रता करनेवाले आपके मुखोंमें प्रवेश करते हैं जो मुख तीक्ष्ण दंष्ट्रा और भयानक रूपकेहैं उनमें कोई तो दांतोंमें चिपटे हुये ऐसे दिखाई देतेहैं जिनकेशिर चूर्ण होगये हैं तात्पर्य्य यहहै कि जिस मुखसे अग्नि ब्राह्मण और वेदनिकलेहैं उस मुखमें भीष्मादि भगवद्भक्तोंका प्रवेश होना कहाहै और दुर्य्योधनादि पापियोंका दूसरे अंगोंमें प्रविष्ट होना कहाहै, जैसे कि नदियों केजलोंके अनेक समूहवेगसे समुद्रकी ओर दौड़तेहैं इसीप्रकार यह नरलोक के वीर पुरुष सब ओर से आपके अग्नि मुखोंकी किरणों में प्रवेश करते हैं, जैसे कि अत्यन्त शीघ्रगामी पतंग अपने नाशके लिये बड़ी प्रकाशमान अग्नियों में दौड़कर गिरतेहैं इसीप्रकार बड़े वेगवाले लोक अपने नाशके निमित्त आपके मुखोंमें प्रवेश करतेहैं, आप सबलोकोंको अपने अग्नियुक्त मुखोंमें निगलतेहुये अत्यन्तस्वादुको लेतेहो हे बिष्णु व्यापक आपका भयानक प्रकाश अपने तेजोंसे सब संसारकोचारों ओरसे

पूर्ण करके अत्यन्त संतप्त करताहै ऐसेभयानक रूपवाले आपकौन हैं यह मुझे समझाइये हे देव देव आपको नमस्कारहै आपप्रसन्न हूजिये मैं आपको सबका आदि कर्ता जानता हूं और आपकी चेष्टाओंको नहीं जानताहूं, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मैं लोकोंका नाश करने वाला महाकाल नाम परमेश्वर हूं इस युद्धमें लोगोंके भक्षण करने को प्रवृत्तहूं जो योधा लोग कि शत्रु की सेना में नियत हैं वह तेरे सिवाय नहीं रहैंगे अर्थात् मारेजायंगे, इसकारण तू युद्धमें खड़ा होकर यशका भागी हो और शत्रुओं को मार धन और राज्य से पूर्ण होकर वृद्धि युक्त राज्य को भोग हे सव्य साची अर्थात् बायें हाथ से भी बाण प्रहार करनेवाले अर्जुन यह सब जो तू देखरहा है वह प्रथमही मुझसे मारे गये हैं तू केवल इनके मारने में कारणही रूप होगा,, तू मुझसे मारे हुये द्रोणाचार्य भीष्म जयद्रथ कर्ण को और इसी प्रकार अन्य २ उत्तमबीरों को भी मारडाल दुखी मतहो युद्धको कर तू युद्ध में शत्रुओं को विजय करेगा, संजय बोले कि हे धृतराष्ट्र मुकुटधारी अर्जुन केशवजी के इन बचनों को सुनकर कांपता हुआ हाथ जोड़ अत्यन्त भयभीत हुआ और अत्यन्त झुककर नमस्कार पूर्व्वक फिर गद्गद कण्ठ से श्रीकृष्ण जीसे बोला, हे हृषीकेश अन्तर्य्यामी तुम्हारा नाम लेने से सब संसार अत्यन्त प्रसन्न होताहै और प्रीति करता है और तुम्हारी कीर्त्ति होने से राक्षस लोग महाभयभीत होकर इधर उधर को भागते हैं और सब सिद्ध लोगोंके समूह नमस्कार करतेहैं, आशय यह है कि आठ अक्षर के सुदर्शन अस्त्र मंत्र से संपुट मंत्र राक्षसों से भी अभय का देनेवाला है हे महात्मा ब्रह्माजी के भी पितारूप आपको वह लोग क्यों नहीं नमस्कार करैं हैं अर्थात् अवश्य करें हैं क्योंकि हे अनन्त देवेश्वर हे जगत् के उत्पत्ति स्थान अविनाशी कार्य्यकारण से रहित आदि देव सर्व शरीर वर्त्ती पुराण पुरुष संसार के लय स्थान ज्ञानगम्य ज्योतिस्वरूप अनन्त तुम्हीं से सब जगत् व्याप्तहै, आपही वायु,

यम, अग्नि, बरुण, चन्द्रमा, प्रजापति, ब्रह्मादि देवताओं के पिताहो आपके अर्थ बारम्बार नमस्कारहै, हे सर्वरूप हे महापराक्रमीआप अतुल बलहो और अपनी ऐक्यता से सब को व्याप्त करतेहो इस कारण तुम्हीं सर्वरूप होकर कर्मों के प्रारंभ और अन्त हो आप सब प्रकार से नमस्कार करने के योग्य हैं, आप की महिमा को न जानकार अज्ञान से वा प्रीति से मैंने अपना भाई और मित्र मानकर आपकी महिमा जानने के निमित्त हे कृष्ण हे यादव हे मित्र इत्यादि शब्दों को जो कहाहै और बिहार शय्या भोजन के समय अकेले में वा मित्रों के सन्मुख भी हास्यके निमित्त असत्कारी जो वचन कहाहै हे अविनाशी उन अपराधों को मैं आप से क्षमाकराना चाहता हूं क्योंकि आप अचिन्त भाव अर्थात् दयावान् हैं, तुम इस स्थावर जंगम लोक के स्वामी पूजनीय और गुरूहो आपके समान अप्रमेय प्रभाववाला कोई नहीं है तो तीनों लोकों में आप से अधिक कहां से होगा, इस हेतु से मैं आपको साष्टाङ्ग प्रणामकरके स्तुतिके योग्य आपको प्रसन्न करताहूं जैसे कि पिता पुत्रका अपराध और मित्रमित्रका अपराध और पति अपनी स्त्रीका अपराध क्षमाकरताहै इसीप्रकार हे देव देवेश्वर आपमेरे अपराधोंको क्षमाकरनेके योग्यहैं, मैं पूर्वमें नहीं देखेहुए इसरूपको देखकर प्रसन्नहूं परन्तु मेराचित मारेभयके पीड़ामानहै हे परमेश्वर आप अपने उसीरूपको मुझे दिखलाइये हे देवदेवजगत्के उत्पत्तिस्थान आप बारंबार प्रसन्नहो, हे सहस्र भुजधारी विश्वरूपमैं तुमको मुकुटगदा चक्रहाथोंमें धारण कियेहुये दर्शन करना चाहताहूं इससे आप अपने चतुर्भुजी रूपका दर्शन दीजिये श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मुझ प्रसन्न रूपने अपनी सामर्थसे यह उत्तम चैतन्य तेजोमय आदि अन्तरहित विश्वरूप दर्शन तुझको दिखलाया इसस्वरूपको तेरे सिवाय किसी दूसरेने कभीन देखाथा हे कौरवोंमें बड़े वीर नरलोक में तेरे सिवाय इस रूपके देखनेको वेद यज्ञ जप दान क्रिया तप व्रतादिकोंसेभी कोई

दूसरा पुरुष योग्य नहींहै,मेरे इस प्रकार इस भयानक रूपको देखकर तुझको न पीड़ा होगी न कोई प्रकारका मोहहोगा निर्भय और प्रसन्नचित्त होकर फिर उसी पूर्वरूपको देख,संजय बोले हे राजा वासुदेवजीने इस प्रकार अर्जुनको समझाकर फिर अपनेरूप को दिखाया अर्थात् सर्वव्यापी कृष्णने सौम्य नररूप होकर इस भयभीत अर्जुनको आश्वासन अर्थात् शान्ती को दिया,अर्जुनबोले हे जनार्द्दन आपके इस सौम्य नररूपको देखकरअबमैं सचेतहुआ और प्रकृतिमें स्वस्थताहुई,श्रीभगवान्बोले जो तुमने इसमेरे रूप को देखाहै वह बड़ी कठिनतासे दृष्टि आनेवालाहै इसरूपके देखने को देवतालोगभी सदैव इच्छा करतेहैं,जैसे तुमने मुझको देखाहै उस रीतिसे वेद यज्ञ तप दान व्रत आदिके द्वाराभी कोई पुरुष मेरे दर्शन करनेको समर्थ नहींहै हे अज्ञानरूप शत्रुओंको संताप देनेवाले अर्जुन इसप्रकारके रूपसे मैं अखण्ड भक्तीके द्वारादर्शनके योग्यहूं अथवा ध्यानसे देखने और ऐक्यतासे प्रवेश करनेके योग्य हूं जो मेरे निमित्त कर्म करनेवाला और मुझीको सर्वोत्तम मानने वाला मेरा भक्त सब संग्रहों से पृथक् शरीरी मात्रों में आत्मभाव माननेवालाहै वह मुझशुद्ध ब्रह्मको पाताहै, ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवत्विश्वरूपदर्शनंनामैकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

अर्जुनबोले इसप्रकार सदैव सावधानचित्त भक्तलोग सगुणब्रह्म रूप आपको उपासना करतेहैं और अक्षर अर्थात् अविनाशी अव्यक्त शुद्धब्रह्मको उपासना करते हैं उन दोनों में योगके जानने वाले कौन हैं, श्री भगवान्बोले हे अर्जुन जो मुझ सगुण ब्रह्म में मन को प्रवेशकरके सदैव उपाय करनेवाले मेरेभक्त मेरी उपासनाकरते हैं और श्रद्धावान्हैं उनको मैं मुक्ततम मानताहूं,और जो इन्द्रियों को मन समेत स्वाधीन करके अर्थात् आत्मामें लय करके अविनाशी मन बुद्धि से परे सर्वव्यापी निर्विकार अचलरूपकी उपासना

करतेहैं वह दृढ़बुद्धि सब जीवों के प्यारे हैं और इच्छावान् होकर मुझ निर्गुण ब्रह्मको प्राप्तहोते हैं अर्थात् मुझीमें हैं मुझसे जुदे नहीं हैं फिर उनके बिषयमें योगवित् यह शब्द कबनियतहोसक्ता है, उन निर्गुण ब्रह्ममें चित्तलगानेवालों को अधिकतर दुःखहैक्यों कि निर्गुण पदकीप्राप्ति अभिमानी पुरुषों को कठिनतासे मिलतीहै और जो सब कर्मोंको मेरे अर्पण करके मुझीको लयस्थान समझ के अद्वैत बुद्धिसे मेरेही ध्यानमें प्रवृत्त मन होकर मुझको ध्यानकरते हुए उपासना करतेहैं, हे अर्जुन मैं उनमनसे उपासना करनेवालों को थोड़े ही कालमें जन्म मरण रूपी समुद्रसे उद्धार करताहूं, मुझ बिश्वरूप ईश्वरमें संकल्प बिकल्पात्मक मनको नियत करके मुझीमें बुद्धिको लगायेहुए जोपुरुष मेरेही रूपमें निवासकरेगा वह निस्सन्देहमुझीमें ऐक्यता पावेगा, जो तू मुझ बिश्वरूप में मन लगाने को समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन मेरे किसी अवतार को उपासना से मनको दृढ़करके मुझको प्राप्तहो, और जो उस मेरे अवतार की भी उपासना में असमर्थहै तो मेरे श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, चरण सेवन, बंदन, दास्य, सख्यभाव, आत्मनिवेदन, इस नवधा भक्ति में प्रवृत्तहो मेरे निमित्त कर्मों को करताहुआ चित्तशुद्धी कोपावेगा और जो तू मेरी श्रवणादि निष्ठाकेभी करने में असमर्थ है तो सब कर्मों के फलोंको त्याग कर दे, विचार के अभ्याससे श्रवण मनन इत्यादि ज्ञान श्रेष्ठहै और ज्ञानसे श्रवण कीर्त्तन्तदि ध्यान उत्तम है और ध्यान से कर्म फलों का त्यागकरना शुभहै और कर्मफल के त्यागसेपीछे मोक्षरूप शान्ती वा श्रवणादि अभ्यासहै उस अभ्याससे उत्पन्न ब्रह्मज्ञान उत्तमहै और उस ज्ञानसे साक्षात्कार रूप ध्यान उत्तमहै और उससे कर्मफलत्यागना श्रेष्ठहै,—अब भगवान् निर्गुण ब्रह्मकी उपासना को प्रशंसाकरते हैं जिससे कि साधुओंको उनके गुणों में प्रीति हो शत्रुता रहित सबजीवोंका मित्र, दयावान् शरीरादि में निरभिमानी अहंबुद्धि से रहित अर्थात् अपने को शुद्ध ब्रह्मसे ऐक्यता करने वाला रागद्वेष में समभाव क्षमावान्, यथा

लाभ संतोषी, श्रवणादि में सदैव मन लगानेवाला इन्द्रियों समेत देहको स्वाधीन करनेवाला आत्मतत्त्व में दृढ़निश्चय रखनेवाला और मुझ शुद्धब्रह्म में मन बुद्धिको लयकरनेवाला जो मेरा भक्तहै वह मेराप्यारा है क्योंकि ज्ञानीमेरा आत्मा है, ज्ञानी की दोदशा हैं समाधि और व्युत्थान इनमें से प्रथमदशा में तो उससे लोक नहीं डरताहै और दूसरी दशामें लोकसे वह नहीं डरताहै इसी हेतुसे प्रसन्नमन असन्तोषता, भय और व्याकुलता से रहित है वह मेरा प्यारा है, अबदूसरी दशाका वर्णन करते हैं—सुखकी प्राप्ती और दुःखके निवृत्तहोने में अनिच्छावान् बाहर भीतर से पवित्र भगवत् भजन आदिमें आलश्य रहित (उदासीन) अर्थात् प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठाको समान जाननेवाला क्लेशरहित सब कर्मों के प्रारंभोंका त्यागनेवाला जो मेराभक्तहै वह मेराप्यारा है, जो प्रिय प्राप्तीमें प्रसन्न नहींहोता और अप्रियता में दुखी नहींहोता और प्रियवस्तु के वियोगमें शोचनहीं करता और शुभाशुभको भी नहीं चाहता हुआ भक्तिमान है वह मेराप्यारा है, जो शत्रुमित्रमें और मानापमान में अथवा शीतोष्ण सुख दुखोंमें समानहोकर संगोंका त्यागनेवाला है और निन्दास्तुतिमें तुल्यभाव मौनी संतोषी त्यागी स्थान से रहितहै और दृढ़बुद्धिसे भक्तिमानहै वह पुरुष मेराप्यारा है, जो श्रद्धावान् मुझ वासुदेव निर्गुण परमानन्दरूप को अपना लयस्थान जानते हैं और इस अविनाशी मोक्षसाधन को अत्यन्त अनुष्ठान करतेहैं वह मुझको अतिशयप्यारे हैं २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

इसअध्यायमें जीव और ब्रह्मकी ऐक्यता वर्णन है ॥

अर्जुनबोले हे केशवजी प्रकृति और पुरुष और क्षेत्र वा क्षेत्रज्ञ और ज्ञान वा ज्ञेय इन सबको मैं जानना चाहताहूं, श्री भगवान् बोले हे अर्जुन यह शरीररूपी क्षेत्रआत्माको अविद्यासे आच्छादन

करनेवाला विद्यासे पार उतारनेवाला कर्मबीजकी उत्पत्ति स्थान कहाजाता है जो इसक्षेत्रको जानता है क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके जानने वालोंने आत्मारूप क्षेत्रज्ञ कहाहै हे भरतर्षभ सबक्षेत्रोंमें मुझीको क्षेत्रज्ञ और रूपजानों अर्थात् मैं परमेश्वरही दो रूप युक्त होगया हूं क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका जो ज्ञानहै वह मुझसेही सम्बंध रखनेवाला ज्ञानहै इसको ब्रह्मज्ञानियोंने निश्चयकियाहै, वह क्षेत्र जैसेरूपका है और जैसे प्रकारका है और जिन जिन विकारों से युक्तहै और जिसजिस विकारसे जोजो उत्पन्नहोता है और जो वह क्षेत्रज्ञ है अथवा जैसे प्रभाववालाहै उसको मूलसमेत मैं कहताहूं, जिसको ऋषियों ने अनेकरीतों से गाया और जो अनेक प्रकारके छंद वेद और मन्त्रोंसे प्रत्येक शाखाओं में सिद्धकिया गया बहुत निश्चय युक्त हेतुवान् ब्रह्मके जतलानेवाले वेदके भागरूप ब्राह्मणोंकेवचनों से निश्चय किया हुआ पंचमहा भूत और शब्दादि पंच तन्मात्रा अहंकार महत्तत्व बुद्धि यह क्षेत्रका स्वरूप है,और (श्रोत्र) त्वक्चक्षु रसना घ्राण यह पांचज्ञानेन्द्री और बाकपाणि पादलिंग गुदा यह पांच कर्मेन्द्री मन और आकाशादि पांचस्थूल विषय इन सबको विकारजानो ६ और विकारसे उत्पन्न होनेवाली यह बस्तु हैं (इच्छा) (द्वेष सुख दुख (संघात) अर्थात् आत्मा इन्द्री मनसेप्रवृत्त भोक्ता (चेतना) (धैर्य्य) यह विकारों सहित क्षेत्रका मिलाहुआ वर्णनहुआ—अब ज्ञानके साधनोंको कहते हैं—अपनी प्रतिष्ठा न चाहना अर्थात् अपनी प्रतिष्ठाकेलिये धर्मरूप पाखंड न करना (देह) मन बाणीसे किसीजीवको दुःख न देना (दूसरेकी) ओर से अपकार होनेपर चित्तको न बिगाड़ना, (सरल) प्रकृतिहोना (आचारी)की उपासना (भीतर) बाहरसे पवित्रता (मोक्ष) साधन की प्रवृत्ती में विघ्नहोने पर भी नियतबुद्धि रहना (देह) इन्द्री और इन्द्रियोंके विषयमें वैराग्यहोना (निर्हंकारता) जरा जन्म रोग के दुख और दोषोंको अच्छेप्रकार देखना,(पुत्र)स्त्री और घरोंमेंममता न रखना और उनके(सुख)दुखोंमें सुखी और दुखी न होना(प्रिय)

अप्रियके मिलनेमें सदैव एकभाव रहना, (इष्ट) अनिष्टकी उपपत्ति में सदैव समचित्त रहना (एकान्त) स्थानमें बैठना (मनुष्योंकी) सभामें प्रीति न करना, (अध्यात्म) शास्त्रजन्य ज्ञानमें सदैवनियत रहना (तत्त्वज्ञान) के प्रयोजन को देखना यह ज्ञान अर्थात् ज्ञानका साधन कहा जो इसके विपरीत है वही अज्ञान है, अब क्षेत्रज्ञ को कहतेहैं—जो इसज्ञानसे जाननेके योग्यहै उसकोकहताहूं जिसको जानकर मोक्ष को पाताहै आदि रखनेवाला जो कार्य्य कारण है उससे श्रेष्ठ जो ब्रह्म है वह न सत् कहाजाताहै न असत् कहा जाताहै—अब उसके प्रभाव अर्थात् बिश्वरूप लक्षणको कहतेहैं—वह सब दिशाओंमें बाह्याभ्यन्तर हाथ पैर नेत्र मुख शिर कान रखनेवाला है और लोकमें सबको व्याप्तकरके नियतहै, सब इन्द्री और उनके शब्दादि विषयोंसे पकड़ाहुआ और पकड़नेवालासावि-दितहोता है परन्तु बास्तव में वह सब इन्द्री और इन्द्रियों के बिषयोंसे स्पर्शभी नहीं होताहै अर्थात् पवित्ररूप होकर सबसे पृथक्है परन्तु सबका धारण करनेवाला है पकड़े हुये और पकड़ने वालेसे पृथक् होनेके कारण निर्गुणहै परन्तु बुद्धि आदिके प्रकाशक होनेसे गुणोंका भोगनेवालासा मालूमहोताहै, जीवोंके बाहरभीतर आठ प्रकृति और सोलहविकारों का प्रकाशक होनेसे चलायमान सादिखाई देताहै परन्तु वास्तवमें वह अचलहै और सबउपाधियों के पृथक् होनेसे वह जाननेके योग्य नहींहै क्योंकि अज्ञानियों से परे नियतहै और ज्ञानियोंके सन्मुख वर्त्तमान है, प्राणियोंमें बहुत रूपवालासा दिखाईदेता है परन्तु अनेकरूपतासे रहित ऐसे अनेक दीखता है जैसे कि जलमें एक चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब बहुतरूपयुक्त दिखाईदेताहैभूतों का धारण करनेवाला है अर्थात् जैसे कि चन्द्रमा घट और घटके जलसे दूर है इस रीतिसे वह दूर नहीं है क्योंकि वह सबभूत उससे पृथक् नहीं हैं ग्रसित करने वाला वा प्रकट करनेवाला वह क्षेत्रज्ञ जानने के योग्य है अर्थात् जैसे कि अज्ञान दशामें रस्सीही सर्पके भ्रमको उत्पन्न करतीहै और विज्ञानदशामें

सर्पको ग्रसजातीहै अर्थात् सर्पकाअभाव दिखाती है और वह सर्प उस रस्सी से पृथक् भी नहीं है इसी प्रकार यह सब दृष्ट पदार्थ उस क्षेत्रज्ञ आत्मा में कल्पितहैं, निर्विकार लक्षण को कह कर अब स्वरूप लक्षण को कहते हैं-वह प्रकाश मानों में भी ज्योति रूप है, और अज्ञान से पृथक् कहाजाता है और सब के हृदय में नियत ज्ञानरूप जानने के योग्य विज्ञान से प्राप्त होने के योग्य है, यह क्षेत्रज्ञ और ज्ञान अर्थात् ज्ञान का साधन विज्ञान से जानने के योग्य मिला हुआ क्षेत्रज्ञ वर्णन हुआ इनको जान कर मेरा भक्त मेरे भाव अर्थात् ब्रह्मभाव के योग्य होता है, आठ प्रकार कीपरा नाम प्रकृति और जीवनाम अपरा प्रकृति रूप पुरुष इन दोनों को आदि अन्त रहित जानों और इच्छा आदि विकार और बुद्धिइन्द्री आदि गुणों को प्रकृति से उत्पन्न जानों, कार्य्य और कारण और इनके सम्बंधी सुख दुख और मोह रूप गुण इन दोनों कार्य्य कारण के कर्तृत्व में परा नाम प्रकृतिही कारण रूप है, और सुख दुःख के भोगने में परा प्रकृति नाम पुरुष कारण कहा जाता है परा प्रकृतिमें नियत पुरुषही प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले गुणोंको भोगता है उत्तम अनुत्तम योनियों के जन्मों में इसके गुणों का संगही कारण है, गुण के चारों प्रकारों का वर्णन करते हैं·क्षेत्रज्ञ उत्तम पुरुषही इस शरीर के बाहर भीतर का दृष्टा है अर्थात् आत्मामें उन गुणोंके आजाने को न देखता हुआ भी अपने उदासीन रूप से गुण के प्रचार का अदृष्टा है इसी प्रकार यह हमारासाक्षी और अनुमन्ता है अर्थात् गुणों के भोक्ताहोने और आत्मा के असंगहोने पर गुणों को आत्मा में संयुक्त मानता है यह सांख्यवालों का मत है और भर्त्ता है अर्थात् आत्मामें कर्तृत्व कर्म प्रवेशित करने से कर्म फलों का संचय करनेवाला है जैसे कि नैयायिक आदि और भोक्ता है अर्थात् देह इन्द्री मन आदि रूप गुणों के समूह को आत्मा रूप देखता हुआ भी भोक्ता होताहै जैसे कि चार वाक मत वाले आदि अब चारों गुणों का वर्णन होचुका वा महे-

श्वर है अर्थात् जब गुणों को स्वाधीन करके क्रीड़ा करता है तब उसको महेश्वर कहते हैं और जो उत्पत्ति पालन नाश का करने वाला प्रभु जगत का अन्तर्य्यामी है वही गुणों को छोड़कर नियत परमात्मा कहा जाता है आशय यह है कि अनुमन्ता भर्त्ता भोक्ताइन तीन रूपों से बंधन को पाता है और आप द्रष्टा महेश्वर परमात्मा इन तीनों रूपों से सदैव मुक्त है, जो इस रीति से पुरुष को और गुणयुक्त प्रकृतिको जानता है वह कर्मों में कैसाही प्रवृत्त होय तौ भी फिर जन्मनहीं लेता है अर्थात् मुक्तहो जाता है, कोई कोई तो शरीरमें बुद्धि और ध्यानके द्वारा परमात्माको देखतेहैं और कोई सांख्य मतवाले योग अर्थात् ब्रह्मज्ञानसे और कोई कर्मयोगी पुरुष कर्म फलको ईश्वर के अर्पण करनेसे परमेश्वरको देखते हैं और कितनेही पुरुष इस प्रकारको न जानकर दूसरे आचार्य्योंसे सुनकर अथवा ब्रह्मको अपरोक्ष करके उपासना करतेहैं वहगुरूसे सुनेहुये उपदेशमें पूर्ण विश्वास रखने वालेभी संसारको अवश्य तरतेहैं, जितने जड़ चैतन्यजीव उत्पन्न होते हैं हेभरतर्षभ उनका पैदा होना क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके योगसे जानो अर्थात् जो क्षेत्रज्ञ आत्मा अपनेको क्षेत्रसे इस प्रकार पृथक् जाने जैसे कि रस्सीसे पृथक् सर्पके भ्रमकी फिर उत्पत्ति नहीं होती, जोसब सृष्टिमें सदैव नियत और रस्सीमें सर्पकी भ्रान्तिके समान नाशहोने वालोंमें नाश न होने वाले परमेश्वरको देखताहै वही देखने वालाहै, अब दर्शनके फलको कहतेहैं-अपने शरीरके समान सब शरीरोंमें अच्छे प्रकारसे नियत ईश्वरको समानता पूर्व्वक देखता हुआ शरीरादिकके सम्बंध हेतुसे आत्मारूप ईश्वरको पीड़ानहीं देताहै वहभी अन्तमें मोक्ष को पाताहै अथवा आत्माको अद्वितीय देखने से अपनी आत्माके सदृश दूसरेकोभी दयालु होकर आश्रय देताहै वह पुरुषभी मोक्ष को पाताहै, जोमन बाणी देहसे प्रारंभहुये कर्मोंको प्रकृतिसे अर्थात् मायासे किया हुआ देखताहै और इसी प्रकार आत्माको अकर्ता देखताहै वह आत्माको सब स्थानोंमें समान देखताहै ३० किसरीति

से प्रकृतिको कर्तित्वहै और आत्माको नहींहै इस शंकाको कहते हैं जब आकाशादि पंचभूतोंको और चारोंखानके अनेक प्रकार वाले जीवोंको रस्सीमें सर्प और सुवर्णमें कुंडल आदिके समानएक आत्मामें लयहोता हुआ देखताहै और उसी एक आत्मासे विस्तारको देखताहै तब ब्रह्मको प्राप्तहोताहै अर्थात् ब्रह्मही होजाताहैतात्पर्य्य यहहै कि द्वैतमें कर्त्तापनहै और एकतामें नहींहै, हे अर्जुन यह अविनाशी परमात्मा आदि रहित और गुणोंसे पृथक् होनेसे शरीरमें बर्त्तमान होकरभी कर्म नहीं करताहै और न लिप्त होताहै, जैसेकि सर्वव्यापी आकाश असंग स्वभावसे लिप्त नहीं होताहै इसीप्रकार देहके भीतर सर्वत्र नियत आत्माभी लिप्त नहीं होताहै, हे भरतबंशी जैसे कि सूर्य्य इस संपूर्ण लोकको प्रकाशित करताहै उसी प्रकार क्षेत्रज्ञ आत्मा नानाप्रकारका रूप धारण करने वाले क्षेत्ररूप शरीरको प्रकाशित करताहै, जिन्होंने इस प्रकारसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के भेदको जानकर ज्ञानरूप नेत्रके द्वारा अथवा आकाशादि भूतों की मूलरूप जो त्रिगुणात्मिका अविद्याहै उसके विद्यारूपसे मोक्ष को जानाहै वहमोक्षको पातेहैं ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागो नामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

श्री भगवान् बोले कि हे अर्जुन अबमैं आकाशादि भूत और अंडजादि चारों प्रकार के जीवोंको उत्पन्न करनेवाली प्रकृति क्या है वह प्रकृति किसके आश्रयसे भूतोंको उत्पन्न करतीहै और कैसे बंधन होता वा कैसे उस बंधनसे मोक्ष होतीहै और मुक्त लोगोंका कौन लक्षणहै इन सब बातों को प्रकट करता हूं इसके पीछे महा-उत्तमज्ञानको कहूंगा जिसको जानकर सबमुक्त लोगोंने इस संसार से पृथक होकर मोक्षरूपा महा सिद्धीको पाया है जिन्होंने इस ज्ञानको आश्रय करके मुझ ईश्वर की साधर्मी अर्थात् सर्वात्मा सर्व

यन्तासर्वभावमें नियतता आदि भावोंको पायाहैवह सृष्टिकेउत्पत्ति कालमें भी उत्पन्न नहीं होतेहैंऔर प्रलयमेंभी कालाग्निसे पीड़ित नहीं होतेहैं, वह भूतप्रकृति कौन है और किसके आश्रयसे उत्पत्ति को करती है इसको सुनो कि मुझशुद्ध चिन्मात्र की योनि अर्थात् प्रवेश होनेका स्थान महत्तत्व की आदि भूता मायाहै उसमें अपने प्रतिबिम्ब रूप गर्भको मैं धारण करता हूं हे भरत बंशी उसी से सबमहत्तत्वादि और हिरण्य गर्भादिभूतोंको उत्पत्तिहोतीहै,हेअर्जुन सब योनियों में जो देव मनुष्य पशु पक्षी आदि के शरीर उत्पन्न होतेहैं उनकी योनि रूपमाता मायाहै और मैंप्रतिबिम्ब रूपबीर्य्य का देने वालापिता हूं इस प्रकार माया ईश्वरके आश्रयसे सृष्टिको उत्पन्नकरतीहै,हेमहाबाहु यह सत्व रज तम तीनोंगुण उसमायासे उत्पन्न हुएहैं वह गुण रूपान्तर दशारहित आत्मा कोभी देहमें बंधन करते हैं, यहां कौन गुण किससंग से बंधन करता है इस को सुनोकि हे निष्पाप अर्जुन उन गुणोंमें सतोगुण की निर्मलता होनेसे तो सबका प्रकाश करनेवाला होता है और रजोगुण तमो गुण में लिप्तनहीं होतावह सतोगुण सुख औरज्ञानके संगसेबंधन करता है अर्थात् जब यहकहै कि मैं सुखी हूं वा ज्ञानीहूं तब बंधन है,और तृष्णा और संगसे उत्पन्न रजोगुणको राग स्वरूप जानो हे अर्जुन वह रजोगुण अभिमानी शरीरको कर्मोंके कर्म फलकी इच्छासे बंधन करता है,और सबअभिमानी शरीरोंको मोह करने वालेतमो गुणको अज्ञान रूपमाया की आवरण शक्ति से उत्पन्न जानो हेभरत बंशी वह तमोगुण(प्रमाद)(आलस्य)(निद्रा)इत्यादि बातों से बंधन करता है यह प्रमाद सतो गुणके कर्म करने को बाधाकरता है और आलस्य रजोगुण के कर्मको निषेध करता है और निद्रानिर्भयताके कर्मों को निषेधकरती है, हे अर्जुन सतो गुण सुखमें प्रवृत्त करताहै रजोगुण कर्ममें और तमोगुण ज्ञानको ढककर प्रमादमें लगाता है, यह सतोगुण आदि तीनोंगुण कब अपने२ कामोंमें प्रवृत्तहोतेहैं हे भरत बंशीरजोगुण और तमोगुण

को स्वाधीन करनेसे सतोगुण की वृद्धि होतीहै और सतोगुणतमोगुण को शांत करने से रजोगुण की वृद्धि होतीहै और सतोगुण रजोगुण को आधीन करने से तमोगुण वृद्धि पाता है, अब गुणोंके प्रकट होनेसे चिन्होंको कहते हैं-जब इस देहके भीतर बाह्याभ्यन्तरकी इन्द्रिय रूप द्वारों में प्रकाश रूप ज्ञान और सुख उत्पन्न होता है तब सतोगुण की वृद्धि जानो और हे अर्जुन जब रजोगुण की वृद्धि होनेपर (लोभ) कर्म्मफल की इच्छा से अग्निहोत्रादि करने में (प्रवृत्ति) और स्थानके बनाने आदि का (प्रारंभ) अच्छे बुरे कर्मों में (अशान्ती) दूसरे के धनमें इच्छाकरना इत्यादि सब बातें उत्पन्न होतीहैं और तमोगुण की अतिशय वृद्धि होनेपर सतोगुणी कर्म की अप्रकाशता और परमेश्वर के निमित्त अग्निहोत्रादि कर्मों का न करना योग्यायोग्य बिचार रहित (प्रमाद) मोह इत्यादि सब बस्तु उत्पन्न होतीहैं, जब सतोगुणको अतिशय वृद्धि होनेपर किसी का मरना होजाताहै तब हिरण्यगर्भ के उपासकों के अथवा देवताओं के निर्मल क्लेशरहित लोकों को पाताहै, रजोगुण में शरीर त्याग होनेपर कर्म फल चाहने वाले पुरुषों में उत्पन्न होता है इसी प्रकार तमोगुण में मरनेवाला चांडालआदि में वा पशु पक्षियों में उत्पन्न होता है, अच्छी रीति से किये हुये सतोगुणी कर्म का फल दुख और अज्ञान से रहित निर्मल और ज्ञान वैराग्य आदि युक्त सात्विक धर्म हैं रजोगुणी कर्म का फल दुःख है और तमोगुणी कर्म का फल अज्ञान है १६ सतोगुण से ज्ञान उत्पन्न होता है रजोगुण से लोभ पैदा होता है और तमोगुण से प्रमाद मोह और अज्ञान पैदा होतेहैं, सतोगुणी पुरुषऊपर जाते हैं अर्थात् देवभावको पातेहैं रजोगुणी नध्यमें नियत होते हैं अर्थात् मनुष्य शरीर को पातेहैं और नीचगुणों की वृत्ती में नियत तामसी पुरुष नर्क को जातेहैं अर्थात् पशु पक्षी आदि में उत्पन्न होतेहैं, जैसे कि प्रकृति पुरुष को बंधन करती है इस बातको कह कर अब उस प्रकृतिसे अलग होनेको कहते हैं-जब दृष्टारूपजीव

सिवाय गुणोंके किसी दूसरेको नहीं देखताहै और जो गुणोंसेपरे मुझको जानताहै वह मेरे ब्रह्मभावको पाताहै, जीवात्माइनते ईश रूपांतर होने वाले गुणों को जिनसे कि स्थूल शरीर की उत्पत्तिहै उल्लंघन करके अर्थात् निर्विकल्प समाधि के अभ्यास से निर्मूल करके जरा जन्म मरण के दुःखोंसे रहित होकर मोक्षको पाता है, अर्जुन बोले कि हे प्रभु कौनसे चिह्नों से इनतीनों गुणोंको उल्लंघन करनेवाला होता है उसका कैसा आचार है और किस रीति से इन तीनों गुणों को उल्लंघन करके बर्ताव करताहै, श्रीभगवान् बोले हे पाण्डव (प्रकाश) (प्रवृत्ति) (मोह) यह तीनों सत्त्वादि गुणोंके कार्यरूप हैं जो वह अन्तःकरण आदि में वर्त्तमान होंय तो उनसे शत्रुता नहीं करताहै, जो उदासीन के समान नियत होकर गुणों से चलायमान नहीं होता है अर्थात् ऐसा जानता है कि यह गुणों का बर्त्तावहै इस बुद्धिमें नियत होकर जो स्थिरता से नियत है वह चलायमान नहीं होता है अर्थात् बासनाओं से रहितहोकर समाधि में वर्त्तमान बनारहता है २३ समाधि में सुख दुःखको समान जाननेवाला वा अपनी इच्छासे नियत लोहे पत्थर सुवर्ण को बराबर समझने वाला अथवा प्रिय अप्रिय वा निन्दास्तुतिमें सम बुद्धि धैर्य्यमान मानापमान रहित शत्रु मित्र में समभावहो-कर जो प्रारंभ कर्मों का त्याग करनेवाला है वह गुणातीत कहा जाता है, जो मुझको अव्यभिचारिणी भक्तिसे सेवन करताहै अर्थात् ध्यानकरता है वह इनगुणोंको उल्लंघन करके ब्रह्मभाव के योग्य होताहै, मैं वेदका वा अविनाशी मोक्षसाधन का अथवा भगवत् अर्पणारूप प्राचीनधर्मका और मोक्षरूपी सुखकाअन्तस्थानहूं ३७॥

इतिश्रीमद्भारतेभीष्म पर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सु प्रकृतिगुणभेदो
नामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

श्री भगवान् बोले कि ऊपरके अध्याय में कहाहै कि मैं मोक्ष सुखका अन्तस्थानहूं उसमें कौन लक्षणहै और वह सुख किससे

ढका हुआ है और कौनसे साधन से उसका आवरण दूर होगा और किस अधिकारी से वह प्राप्तकरनेके योग्यहै इन सबबातोंको अब मैं कहताहूं वेदमें निश्चय करके यही लिखाहै कि आनन्दही से सब सृष्टिकी उत्पत्ति होतीहै और आनन्दोंमें सबसे उत्तम ब्रह्मानन्द है वही इस संसाररूपी वृक्षका मूल कारण है ऊपरको परमानन्दरूप मूलरखनेवाला और नीचेकी ओर शाखा रखनेवाला वृक्षहै जो कि मिथ्याहोनेसे एक दिन भी रहने के योग्य नहीं है परन्तु वेदोंने अज्ञानियोंके लिये उसको अबिनाशी बर्णन किया जिस वृक्षके पत्ते वेद और यज्ञहैं उस संसाररूपी वृक्षको जो जानताहै वहवेदका जानने वालाहै उसकीशाखा नीचेकोतो मृत्युलोक पाताल लोकतक और ऊपरको सत्यलोक पर्य्यन्त फैलरहीहैं और वहीशाखा सतोगुणआदि गुणोंसे महावृद्धि युक्त विषयरूपी पत्तोंसे व्याप्तहैं और नीचे नरलोकमें उसवृक्षकी जड़ें जिनसे कि धर्म अधर्म नामकर्म बंधेहुयेहैं फैली हुईहैं और जैसेरस्सी में सर्पकारूप नहीं होता उसी प्रकार वहां उसकाभीरूप नहीं पाया जाताहै इस के हेतुरूप मूल अज्ञान के आदि अन्तरहित होनेसे यहसंसाररूपी वृक्षभी आदि अन्तसे रहितहै और उसके लयहोनेकाभी स्थान नहींहै क्योंकि यह ब्रह्मका विकार नहींहै जो उसमें लयहोय ऐसे अत्यन्त दृढ़ मूलवाले वृक्षको जिसका कि एकदिनका भी विश्वास नहीं देहआदिके असंगरूप दृढ़ शस्त्रसे काटकर श्रुति और युक्ति बलके द्वारा वह ब्रह्मपद निश्चय करने के योग्यहै जिसनिर्विकल्प पदमें प्राप्तहोनेके पीछे प्राप्तहोने वाले पुरुष फिर नहीं लौटते हैं उस सबके आदिरूप और घटघट वासीकी शरण होताहूं ऐसी भावनाकरै कि आदिरहित संसारी प्रत्यक्षतारूपी प्रवृत्ति निकले इसरीतिसे मोक्ष सुखके ढकने वाले संसारी वृक्षको और उसके काटने वाले असंगरूपी शस्त्रको कहकर उस सुखकी प्राप्तिमें अधिकारी के स्वरूप को कहते हैं मोह मान और कर्मों के संगों समेत रागादि दोषों को जीतनेवाले आत्मनिष्ठ सर्वइन्द्री

जित हर्षशोक रहित और विद्या के द्वारा अविद्या दूर करनेवाले पुरुष उस अविनाशी पदको पाते हैं, उस पदमें न सूर्य्य प्रकाश करताहै न चन्द्रमा प्रकाशित होताहै अर्थात्रूपादि रहित नेत्रों से देखने के अयोग्य बुद्धि से परे होने से वहां सूर्य्य चन्द्रमा प्रकाश नहीं करसक्ते हैं और बाणीका विषय न होनेसे अग्नि प्रकाश नहीं करसक्ता है जिसको जानकर अर्थात् अज्ञान के मूलनहोनेसे नहीं लौटते हैं वहीमेरो परम ज्योतिहै, उसकेही कारण जगत् का ईश्वर देहको प्राप्तकरता है अर्थात् शरीर को उत्पन्न करके उसी में आपभी प्रवेश करता है इसीहेतु से इस जीव लोकमें जीवरूप मेराही अंश और सनातन है वह सुषुप्ती अर्थात् प्रलय समाधिके समय अपने विषय रूप स्वभाव में नियत होकर छठेमन समेत पांचों इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षण करता है अर्थात् अपने स्वरूपमें लयकरता है और जाग्रत उत्पत्ति और पालनके समय इन इन्द्रियों को अपने लय स्थानसे विषयके स्थानपर लेजाकरऐसे प्राप्तहोताहै जैसेकि गंधकोलेकर बायुप्राप्त होतीहै ७७ यह श्रोत्र, चक्षु, स्पर्श, रसना, घ्राण, इन पांचों ज्ञानइन्द्रियों को और मनको व्यापार वान् करके विषयों को प्रकाश करताहै अर्थात् व्यापारका भोग इन्द्रियों मेंहीहै और आत्मा केवल प्रकाशक मात्रहै, उनमन संयुक्तइंद्रियोंकी देहान्तर करने वाली इन्द्रियों के नियत होनेपर आपभी नियत होकर इन्द्रियों के भोक्ता होनेपर भोगने वाले और उन इन्द्रियोंके सतोगुण आदि होनेमें गुणोंसे संयुक्त होनेवाले को अज्ञानी लोगनहीं देखते हैं परन्तु ज्ञानरूप नेत्ररखनेवाले उनको देखतेहैं तात्पर्य्य यहहै कि जैसे घटाकाशकी गति घटके हिलानेसे विदित होतीहै परन्तु वास्तवमें नहींहै इसी प्रकार आत्मावास्तव में गति और विषयों के भोग और गुणोंके संयोगसे पृथक् है, १० उपाय करने वाले योगी इस असंग आत्माको बुद्धिमें नियतदेखते हैं और जिन्होंने यज्ञादि कर्मोंके करने से मनको शुद्ध करके अपने आधीन नहींकिया वह उपाय करते हुएभी इस परमात्मा को नह

देखतेहैं, फिर सूर्य्यादिक कैसे प्रकाशितहैं इसको कहतेहैं—जो तेज सूर्य्य और सूर्य्यसंबंधी चक्षु रिन्द्री में बर्त्तमानहोकर संपूर्ण संसार को प्रकाशित करता है और जो तेज चन्द्रमा और चन्द्रमा संबंधी मन में बर्त्तमान है और जो अग्नि और अग्नि संबंधी इन्द्री में है उसको तुममेराही तेज जानो, मैं पृथ्वी में प्रवेश करके अपने अपने तेजसे संसार को धारण करता हूं और जल रूप चन्द्रमा होकर सब औषधियों को रससंयुक्त करके पुष्टकरता हूं, मैंहीं बैश्वानर नाम अग्निहोकर सब जीवोंके शरीरमें नियतहोकर प्राण अपान से संयुक्तभक्ष्य भोज्य चूष्यलेह्य इनचारों प्रकारके पदार्थोंको पचाताहूं मैंसबके हृदय में बर्त्तमान आत्माहूं मुझ आत्मा रूपसे स्मृतिज्ञान है और पापियों के निमित्त वही अज्ञान है और मैंही सबवेद कर्म उपासना और ज्ञान कांडरूपके द्वारा जाननेके योग्यहूं और वेदान्त का कर्त्ता और वेदार्थ का ज्ञाताहूं अर्थात् जिसमें यह सब गुणहोंय वह मेरीही विभूतिहै, लोकमें यहक्षर अक्षर नाम दोही पुरुषहैं सब संसार क्षर नामहै और रूपान्तर दशारहित परमात्माका प्रतिबिम्ब रूप जीवात्मा अक्षर नामसे प्रसिद्धहै, कार्य्य कारण और उपाधिसे रहित यहदोनों उत्तम पुरुष परमात्मा नाम मायासे ईश्वररूप होकर तीनोंलोक वालोंके शरीरों में प्रवेश करके रूपान्तर दशासे रहित सबका पोषण करताहै, जोकि मैं क्षरसे पृथक् और उपाधियुक्त जीवसेभी उत्तमहूंइसी कारणसेलोक औरवेदमें पुरुषोत्तम कहाजाताहूं, जो मुझको संशय आदि रहित होकर पुरुषोत्तम जानताहै वहसर्वज्ञहै और हे अर्जुन वही मुझको सबभाव और रीतिसे भजताहै, भगवत् के तत्व ज्ञानको मोक्षफल कहकर अब उसकी प्रशंसा करतेहैं हे निष्पाप भरतबंशी अर्जुन मैंने यह अत्यन्त गुप्त शास्त्रतेरे आगे बर्णन किया इसको जानकर बुद्धिमान ब्रह्मज्ञानी कर्मोंसे निवृत्त होकर मोक्षको पाता है २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगोनामपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय॥

श्री भगवान् बोले कि अपने नाशसे भयन करना, चित्तकोनिर्मलता, श्रद्धा आदिसे उत्पन्न होनेवाला ज्ञान, जाने हुए अर्थमें मनके लगानेवाला योग, इसके निष्ठावान्, जितेन्द्री श्रौतस्मार्त्त यज्ञ, वेद पढ़ना, तप, सरल भाव, अहिन्सा, सत्य, अन्यसे दुःखपाने परभीक्रोध न करना, सब कर्मों का त्याग, शान्ती चित्तकी शान्ती पराये दोषों को नकहना, दुखीजीवोंपर दयाकरना, इन्द्रियोंके विषयोंके सन्मुख होनेपर भी बिपरीत दशासे रहितहोना, मृदुता, लज्जा, नीच कर्मों में किसी अंगको प्रवृत्तन करना, तेजसे प्रगल्भता, घायल होकरभी क्रोधयुक्त न होना अथवा क्रोध आजाय तो उसको रोकना, धैर्य्यता वाह्याभ्यन्तरीय पवित्रता शत्रुता, रहित होना, अभिमान न करना, अपने को बहुत बड़ा न मानना, दूसरोंसे अभ्युत्थानकी आशा न रखना, हे भरतर्षभ दैवी संपत्तिके आगे जन्मलेने वालोंको यहगुण होतेहैं अर्थात् इन गुणों को दैवी संपत्ति कहते हैं, अब रजोगुण तमोगुण रूप आसुरी संपत्ति का बर्णन करतेहैं — धर्ममें पाखंड, धनकागर्ब, इत्यादि अपनी महत्त्वता चाहना, क्रोध, कठोर बचनसत्य मिथ्या से अनभिज्ञ अज्ञान, यह गुण आसुरी संपत्ति के उदय होने वाले के हैं, दैवी संपत्ति मोक्षके निमित्तहै और आसुरी संपत्तिसदैव बंधन करनेवाली कही जातीहै सो हे अर्जुन तू दैवी संपत्तिकेसन्मुख उत्पन्न हुआहै इस्से शोकमत कर, हे अर्जुन इस लोकमें जीवों के स्वभाव दो प्रकारके हैं एकदैव अर्थात् देव संबंधी दूसरा आसुर अर्थात् असुर संबंधी इन दोनों में दैव स्वभाव को तो व्यौरेवार कहा अब आसुर स्वभावको कहताहूं आसुर मनुष्य प्रवृत्तिनिवृत्ति को नहींजान कर बाहर भीतर से अपवित्र होते हैं और आचार सत्यता आदिसे रहित होकर वह पुरुष संसार को भी यथार्थरहित धर्माधर्म और प्रतिष्ठा से खाली कहते हैं और यहभी कहते हैं कि इसका कोई ईश्वर नहींहै यह पुरुष स्त्रीके संग से उत्पन्न हुआ है

इसका हेतु कामदेव है, ऐसे निर्बुद्धी भयानक कर्मी दुष्ट लोगजिनके धैर्यादि नष्ट होगये हैं वह ऐसे प्रमाण को आश्रय करके जगत् के नाशके लिये उत्पन्न होतेहैं, वह कपटी मानी भ्रष्ट व्रती कठिनतासे पूर्ण होने वाली कामनाओं को आश्रय करके अज्ञानता से बशी करण मारणादि नीचकर्मोंको अंगीकार करके संसारके नाश के लिये कर्म कर्त्ता होतेहैं, वह लोग मृत्युकारी महा चिन्ताओं में डूबे हुएहैं और कामादि भोगोंको जीवन का फल मानने वाले हैं और जो कुछ दृश्यमानहै उसको निश्चय करके वही मानतेहैं और आशारूपीहजारों बंधनों से बंधे हुए काम क्रोधही को मुख्यस्थान समझने वाले कामभोग के लिये अनर्थों के द्वारा धनसमूहों को चाहते हैं, यह प्राप्तहुआ इस मनोरथ को पाऊंगा यहहै और फिर यहसब मेराधन होगा, यहशत्रु मैंनेमारा और उन शत्रुओं कोभी मारूंगा मैं समर्थहूं भोगीहूं शुद्धात्माहूं बलीहूं और सुखीहूं, धनीहूं कुलवान्हूं मेरे समान कौनहै यज्ञादि करूंगा दानकरूंगा आनन्द करूंगा ऐसे अज्ञानों में भूलाहुआ है, बहुतसे विषयों में प्रवृत्त होनेसे चित्तसे व्याकुल मोहरूपी बंधन में बंधा हुआ काम और भोगोंमें प्रवृत्त चित्त पुरुष महाघोर नरकोंमें गिरतेहैं, अपनेको बड़ा मानने वाले स्तब्ध अहंकारी धनके मदमें भरेहुए मनुष्यपाखण्ड करके बुद्धिके विपरीत नाम मात्र यज्ञोंसे पूजन करते हैं, अहंकारबल दर्प काम क्रोधइत्यादिको आश्रयकरके वा घातादिककर्मोंसे अपने शरीर से दूसरे शरीरों में मुझ जगदात्मा से शत्रुता करते हैं और शम दम आदिसब वेदोक्त गुणोंकी निन्दा करते हैं, हे अर्जुन मैं अन्तरात्मा उन शत्रुता करने वाले निर्दयी सबसे अधम पापात्माओं को सदैव आसुरी योनियों में डालताहूं, फिरवह अज्ञानी आसुरी योनियों में पड़े हुए जन्म जमान्तर में भी मुझको नपाकर अधम पशुपक्षी वृक्ष आदिके शरीरों को पातेहैं, यह काम क्रोध लोभरूपी नरकके तीनोंद्वार आत्माकेनाश करने वालेहैं इसकारण इन तीनोंको त्यागकरे, हे अर्जुन इन तीनों नरकके द्वारोंसे अत्यन्त

अलगहोकर भगवत् भजन आदि कल्याणोंको कर्त्ताहै तबपरममोक्ष रूपगति को पाताहै, जो मनुष्य शास्त्रबुद्धिको त्यागकरमनकेइच्छा रूपी कर्मों में प्रवृत्तहोता है वह मनकी शुद्धीको और सुख पूर्व्वक मोक्षको नहीं पाताहै, इस हेतुसे कर्त्तव्य अकर्त्तव्य व्यवस्थाओं में तू शास्त्रको प्रमाण कर अर्थात् जिसकी जैसी बिधिशास्त्रमें कही हुईहै उसको ठीकही जानकर कर्मों को करना योग्यहै २४॥

इतिश्रीमद्भाभारतेभीष्मपर्व्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुदेवासुरसंपद्विभागो नामषोड़शोध्यायः १६ ॥

सचहवां अध्याय॥

अर्जुन बोले हे श्री कृष्णजी जो श्रद्धावान् पुरुष शास्त्रबुद्धि को त्याग करके ईश्वरका भजन पूजन करते हैं उनकी कौन निष्ठा है सतोगुणी वा रजोगुणी अथवा तमोगुणी है, श्री भगवान् बोले कि अभिमानी पुरुषों की स्वभाव से उत्पन्न होनेवाली श्रद्धा पूर्व्व जन्मके धर्माधर्म से उत्पन्नहै वह सतोगुणी रजोगुणी और तामसी इन तीन प्रकारकी है इनतीनों प्रकार की श्रद्धाको कहताहूं, हेभरत बंशी पूर्व कर्म संस्कार के अनुसार जो बुद्धिबलहै उसीके अनुरूप सबकी श्रद्धा बनीहुई रहती है यह श्रद्धा रूपहै जो जैसी श्रद्धावाला है वह उसी श्रद्धा के गुणोंसे प्रसिद्ध होताहै,सतोगुणी पुरुषदेवताओंको पूजते हैं रजो गुणी मनुष्य यक्ष राक्षसों को और तमोगुणी लोग प्रेत भूतादिकों को सेवन करतेहैं, वेदादि शास्त्रोंकेविरुद्ध जो कौललोगों के शास्त्रहैं उनमें अपने मांससे हवन और ब्राह्मण के रुधिरसे तर्पण करना लिखाहै उन विरुद्ध शास्त्रों के लिखेहुए घोर तपों को जो मनुष्य करते हैं और पाखंड पूर्व्वक अहंकार में भरे हुए बिना बिचार किये विषय की इच्छासे बुरी बासना करके विषय साधन में संयुक्तहैं, वह अज्ञानी शरीरकी इन्द्रियोंकोनिर्बल करने वाले मुझ शरीर वर्त्ती कोभी अप्रसन्न करने वालेहैं उनको

आसुरोंमें निश्चय करनेवाला जानों,अबसात्विकी लोगों के भोजन, यज्ञ, तप,दान को प्राप्त करने और राजसी तामसी को त्यागने के अर्थ प्रत्येक को तीन तीन प्रकार का बर्णन करते हैं— अन्नादि भोजन भी सबको तीन प्रकार का प्याराहै इसीप्रकार यज्ञ तप दान भी तीनही प्रकार का प्याराहै इनका बिभाग सुनो, जीवन,उत्साह सामर्थ्य, नीरोगता, सुख, प्रीतिदायक बस्तु, रसीले कोमल स्थिर अर्थात् शरीरमें रसके द्वारा बिलम्बतकरहनेवाले, देखने में सुन्दर हृदयको प्रसन्न करनेवाले,ऐसे गुणयुक्तभोजन सात्विकी पुरुषों को प्यारे होते हैं, कडुए नोनके खट्टे अति उष्णचर्परे रूखे अत्यन्त जलन करने वाले, दुःख शोक और रोगों के उत्पन्न करने वाले ऐसे प्रकार के भोजन रजोगुणी को प्यारे हैं, जिसके बनाने में विलम्ब लगे वा (कच्चावारसहीन) दुर्गन्ध युक्त हो बासीहो उच्छिष्ट हो अभक्ष हो वह भोजन तामसी लोगों को प्याराहै, अब तीन प्रकारके यज्ञों को कहते हैं—यज्ञही करनेके योग्य है,अर्थात् उसका फल चाहनेके योग्य नहींहै इस प्रकार अपने मनको समाधान करके फल के न चाहनेवाले पुरुषों से जो आवश्यकता के लिये रचा हुआ यज्ञ किया जाताहै वह सात्विकी कहाजाताहै,११ हे भरतर्षभ फलकी इच्छा मनमें धारणकर पाखण्ड और कपट के निमित्त जो यज्ञ किया जाताहै उस यज्ञको राक्षसी जानो शास्त्र की रीति अन्नदान और मन्त्र दक्षिणा रहित श्रद्धा से विहीन यज्ञको तामसी यज्ञ जानो, विष्णु आदि देवता ब्राह्मण और माता पिता आचार्य्य इत्यादिगुरू वा ब्रह्मज्ञानियोंका पूजन बाहर भीतर से पवित्रता सरलता सत्यता ब्रह्मचर्य्य अहिंसा यहसब देहकेतप कहे जातेहैं, जो बचन दूसरेका सुखदाई सत्यता स्नेहता सहित सबका हितकारी है वह और वेदका अभ्यास यह तपस्या कही जातीहै, प्रसन्नता चित्तशुद्धी सौम्यता बचनको आधीन रखना मनका रोकना व्यवहारमें औरोंके साथ निश्छलता यह मानसी तप कहाताहै,फलकी इच्छा न करनेवाले सावधान चित्त पुरुष देह

मनवाणीसे जो तीन प्रकारकी तपस्या श्रद्धा पूर्व्वक करते हैं वह सात्विकी कहाजाताहै, जो तपस्या अपनेमान सत्कार और पूजन के निमित्त कपटसे की जातीहै वह तपस्या इसलोकमें फलसे रहित नाशवान् रजोगुणी कही जाती है, अविवेकसे उत्पन्न दुराग्रह से अपने शरीर को पीड़ा अथवा दूसरेके नाशके निमित्त जो तप किया जाताहै वहतामसी कहाताहै यह दानके योग्य है इस बुद्धिसे फलकी इच्छा रहित जो दान अनपकारी पात्रको देशकाल के विचारसे पुण्य क्षेत्रादिमें दिया जाता है वह सात्विकी दान कहा जाताहै, जो दान बदलेके लिये अथवा फलको ध्यान करके धनके व्ययहोने की चिन्ता समेत किया जाताहै वह राजसी कहाताहै, जो दान देशकालके विपरीत अपात्रोंको ऐसे प्रकारसे दिया जाताहै कि जिसमें मधुर भाषण और चरण प्रक्षालनादि न होकर पात्रका अनादरहो उसको तामसी कहतेहैं, अबयज्ञ (दान तप)आदि की पूरी सिद्धीकेलिये प्रायश्चित्तको कहते हैं (ओंतत्सत्) यह ब्रह्मकानाम तीन प्रकार का होताहै पूर्व्वकालमें उसी ब्रह्मके नाम से ब्राह्मण वा चारोंवेद और यज्ञ प्रकट किये इस कारण ओंका उच्चारण करके ब्रह्मवादी अर्थात् वैदिक लोगों के यज्ञ दान तप आदि सबक्रिया जोकि वेदबुद्धीमें कहीहैं सदैव होती रहती हैं, ऊपरके श्लोकमें ओंके भीतर सफल कर्म वा निष्फल कर्मका कोई विभाग नहीं कहाहै अब फलरहित कर्म बुद्धीको कहते हैं-कर्मफल को अंगीकार न करके तत् ब्रह्मका नामकहकर मोक्षके चाहनेवाले नानाप्रकारके यज्ञ तप दान आदिकी क्रियाओंको करते हैं, हे अर्जुन यहसत् नाम वेद भाव जैसे श्रेष्ठहै और साधुओं के भावमें संयुक्त किया जाताहै इसी प्रकार उत्तमकर्ममेंभी सत्शब्द संयुक्त किया जाताहै, यज्ञतप और दानमें जोनिष्ठाहै वहसत् नाम कहो जातीहै और ईश्वरकी प्राप्तीके निमित्त जो कर्महै वहभी सत् नाम कहा जाताहै, श्रद्धासे रहित होकर दान तप यज्ञादिक किये जाते हैं हे अर्जुन वह असत् हैं अर्थात् सतके विपरीत होनेसे मिथ्या

कहे जातेहैं वह न इसलोकमें न परलोकमें दोनोंमें नहीं गिने जातेहैं २८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सु श्रद्धात्रयविभागयोगोनामसप्तदशोऽध्यायः१७॥

अठारहवां अध्याय॥

अर्जुनबोले हे महाबाहु हृषीकेश केशीदैत्यको मारनेवालेमैं त्याग से पृथक् संन्यास और संन्याससे रहित त्यागको मूल समेतजानना चाहताहूं, श्री भगवान्बोले कि जिनमें किसी प्रकारकी इच्छा है ऐसे कर्मों के त्यागको सूक्ष्म पदार्थ दर्शी पुरुषोंने संन्यास कहा है और पंडितलोगोंने सब कर्म फलों के त्यागको त्याग कहा है, और परमात्माको अपरोक्ष करनेवाले चित्तके जीतनेवालोंने केवल कर्मोंहीका त्याग दोषयुक्त रागादिके समान त्याज्य कहा है और परमात्मा के चाहने को इच्छा करनेवालोंने यज्ञदान और तपको नहीं त्यागने के योग्य कहाहै, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन उस कर्मके त्यागने में मेरेभी निश्चयको तू सुन हे पुरुषोत्तम त्यागतीनप्रकारका कहा है, यज्ञ दान तप और कर्म यह चारों त्याग के योग्य नहीं हैं वह अवश्य करने केही योग्य हैं क्योंकि यज्ञ दान तप बुद्धिमानोंके मनको पवित्र करनेवाले हैं, अपनेमें कर्त्ताभाव लानेवाले संगको और कर्म फलोंको त्याग करके यज्ञदान तपादिक कर्म करनेके योग्य हैं यह मेरा संमत अत्यन्त निश्चय किया हुआ उत्तम है, मोक्षकी इच्छावालों को करने के योग्य कर्मोंका त्याग उचित नहींहै मोहसे उसका त्यागकरना तामसी कहागया है, यह कर्म दुःखरूप है ऐसामान कर शरीरके क्लेशकेभय से जो त्यागकरता है वह इस राजसी त्यागके चित्त शुद्धीरूप फलको नहींपाताहै, हे अर्जुन कर्मको करने केही योग्यमानकर संगफल को त्यागके जो संध्यावंदनादि नित्यकर्म कियेजाते हैं उसको सात्विकी त्यागमाना है, साधारण सात्विकी त्यागको कहकर उत्तम सात्विकी त्यागको वर्णन करते हैं स्नान शौच और भिक्षाआदि

दुखदाई कर्म को बुरानहीं कहता और मीठे अन्न भिक्षाआदि सुखदायी कर्ममें प्रीति नहीं करताहै अथवा जो शिष्यलोग सेवा कर्मोंमें कुशलहैं उनमें अत्यन्त प्रवृत्त नहीं होताहै अर्थात् राग द्वेष से रहितहै वह सतोगुणसे भराहुआ त्यागी अर्थात् संन्यासी है क्योंकि शास्त्रों की स्मरण करनेवाली बुद्धि का स्वामी होने से वह आत्मा और अनात्मा के विवेक का रखनेवाला होकर छिन्न संशय कहाजाता है, देहाभिमानी से सर्व कर्म त्याग करने महा कठिन और असंभव हैं अर्थात् शरीरके अभिमान से रहित बड़ाही परमार्थदर्शी और उत्तमत्यागी कर्मों को त्यागकर सक्ताहै इस हेतु से जो कर्मोंके फलोंका त्यागी है वही त्यागी कहाजाता है, ११ जो त्यागी नहीं है उनके कर्मोंकाफल मरनेके पीछे तीनप्रकार का होता है नर्क वा पशु पक्षी आदिका जन्म यहतो अप्रिय है और देवताकारूप आदि मिलाहुआ और नररूप यह प्रिय कहाता है परंतु संन्यासियोंका कुछ नहीं होताहै अपनेमें कर्ताभाव नियत न करनेसे हे महाबाहु सब कर्मोंकी सिद्धोके लिये यह पांच कारण सांख्य और वेदान्त शास्त्रोंमें कहे हैं सांख्यमें सब कर्मोंका अन्त होजाताहै,उनपांचोंकी संख्या करतेहैं (अधिष्ठान) अर्थात् स्थूल शरीर परमात्माका प्रतिविम्बजीवरूप कर्ता और दशोइन्द्री मन बुद्धि चित्त अहंकार और नानाप्रकार की पृथक् २ प्राण अपान आदि चेष्टा और इनमें पांचवें पुण्यपाप और सूर्य्यादि इन्द्रियों के देवता यह दैव हैं, मनुष्य जिस कर्म धर्मरूप वा अधर्मरूप मन वाणी और देह के द्वारा प्रारंभ करता है उसी के यह पांचों हेतु हैं, उन कर्मों के मध्यमें ऐसो दशाहोनेपर जो बुद्धिकी म्लानता से केवल आत्माको बर्त्ता देखता है वहपाप रूप बुद्धि रखने वाला नहीं देखता है अर्थात् अन्धा है, मैं कर्म का बर्त्ता हूं जिसको कि यह अहंकार नहीं है अर्थात् आत्मा से पृथक् १४ श्लोकके लिखे हुये पांचबर्त्ताओंको जानताहै और जिसकी बुद्धि उसमें लिप्त नहीं होतीहै अर्थात् सदैव ब्रह्माकार रहती है कर्त्तानहोनेके हेतुसे वह

धर्म युद्ध वा ब्रह्मज्ञानसे इनलोकोंकोभी जीतकर नहीं मारता है और न बन्धनमें होताहै,मुख्य वस्तुका प्रकट करने वाला (ज्ञान) और जानने के योग्य(ज्ञेय) (परिज्ञाता) अर्थात् विषय आभास बुद्धिरूप भोक्ता यहतीन प्रकार वाले कर्मोंकी चेष्टा होतीहैं इन्द्रियां करण और जो इन्द्रियोंसे किया जाय सो कर्म करने वाला वर्त्ता यहतीन प्रकारके कर्मोंके निवास स्थानहैं अर्थात् यह तीनों भोक्ता हैं आत्मा नहींहैं वही ज्ञान कर्म कर्त्ता गुणोंके विभाग से सांख्य शास्त्रमें तीन प्रकारके कहे जातेहैं इनकोभी व्यवस्थाको सुन, तीन प्रकारका ज्ञान कहताहूं-जिस ज्ञानसे बहुतनाम और रूपोंके कारण पृथक् २ रूपवाली सृष्टिमें न्यूनाधिकता रहित विना भेद एक चिन्मात्र रूपको देखता है अर्थात् सबको ब्रह्मही जानता है उस ज्ञानको सात्विकी जानो,जो ज्ञान हैततासे युक्तहै और जिस ज्ञान से सब सृष्टिमें देवता मनुष्य पशुपक्षी आदि अनेक भाव भिन्न २ प्रकारकेहैं ऐसाजानताहै अर्थात् उनको एक आत्मारूप नहीं देखताहै पृथक् २ जानताहै वह ज्ञानराजसीहै २१ और जो ज्ञान एक कार्य्यमें परिपूर्णके समान प्रवृत्तहै अर्थात् केवल शरीरही को आत्मा मानताहै अथवा परमात्माकोही परम ईश्वर मानताहै वह हेतुसे रहितहै परमार्थ सिद्धान्त नहींहै वह ज्ञानतामसीहै अबतीन प्रकार वालेकर्म को कहतेहैं कर्मफल न चाहने वाले पुरुष से जो कर्म सदैव संग और रागद्वेषसे रहित किया जाताहै वहसात्विकी कहाजाताहै,फिर फलकी इच्छा रखने वाले जो अत्यन्त परिश्रम का कर्म अहंकार युक्त होकर करतेहैं वह राजसी कहाता है, जो परिणाम फल और धनकाखर्च वा दूसरेकाकष्ट वा अपनी सामर्थ के बलका विचार न करके मोहसे कर्म किया जाताहै वहतामसी है,अबतीन प्रकारके कर्त्ताको कहतेहैं संगरहित अपने को कर्त्ता न मानने वाला धैर्य्य और उत्साहसे पूर्ण कर्मोंकी सिद्धी वा असिद्धी में विपरीत दशासे रहितहै ऐसाकर्त्ता सात्विकी कहाता है,विषयों में प्रीति रखने वाला फल चाहने वाला दूसरे के धनका लोलुप

पर पीड़ा देनेवाला बाहर भीतरसे अपवित्र प्रिय अप्रिय मिलने में प्रसन्न और सुख दुखसे संयुक्त कर्त्ता राजसी कहा जाताहै २७ (अशाव धान) (प्राकृत) किसी का आदर न करने वाला (सठ) (कुली) दूसरेका अपमान करने वाला कार्य्या शक्त आलसी विषादी दीर्घसूत्री ऐसाकर्त्ता तामसी कहा जाताहै, हे अर्जुन गुणोंसे बुद्धि और धैर्य्यके तीन प्रकारके भेद मैं तुझसे पृथक् २ करके कहताहूं उनसबोंको सुनो, जो बुद्धिवान प्रवृत्ति निवृत्ति कार्य्य अकार्य्य भयानभयता कर्म संबंध बंधन और मोक्षको जानते हैं वह सात्विकी होतेहैं, जिस बुद्धिसे धर्माधर्म और कार्य्याकार्य्य को खंडित और संदिग्ध जानता है उसकी राजसी बुद्धि कहातीहै, हे अर्जुन जो अज्ञानसे ढकी हुई बुद्धिसे अधर्मको धर्म और सब अर्थों को उलटामानते हैं उनको बुद्धि तामसी कहातीहै, जो चित्त बृत्तीके रोकने के द्वारा जिस समाधिमें प्रबृत्तहोकरधैर्य्यतासेमनप्राण और इन्द्रियोंकी क्रियाओंको देरतक नियत करता है अर्थात् विषयों की ओर जाने नहीं देताहै वह धैर्य्य सात्विकी है, हे अर्जुन जिस धैर्य्य से धर्म अर्थ कामोंको धारण करता है, अर्थात् करताहै, अथवा धर्मादिके संबंधसे फलका आकांक्षीहै वह राजसी धैर्य्यहै, जिसकी मेधा बुद्धि बिगड़ी हुईहै वह जिस धीरजसे (स्वप्न) (भय) (दुःख) व्याकुलता और शास्त्रसे बिरुद्ध बिषयों के सेवनसे चितकी अस्वाधीनताको धारण करताहै वह धैर्य्यता मली कहाजाताहै, हे भरत बंशी अर्जुन अब उनतीन प्रकारके सुखोंको कहताहूं जिन सुख समाधियोंमें अभ्यास करके रमताहै और दुःखको अन्तहोनेपर मोक्ष को पाताहै, जोकि वह सुख प्रथम अर्थात् समाधिके आदिमें विषके समान अन्तमें अमृतके समान होताहै अर्थात् जीवन मुक्त करने वालाहै, वह बुद्धि की निर्मलता से उत्पन्न हुआ सात्विकी सुख कहलाताहै, जो विषय इन्द्रियोंके योगसे आदिमें भोगके समय अमृत के समानहै और अन्तमें वियोगके समय विषके तुल्य है उस सुखको राजसी कहतेहैं, जो स्वप्न आलस्य और भूलसे उत्पन्न हुआ सुखहै

वह आदिमें और अन्त में बुद्धिको भुलाने वाला है वह तामसी है, वह पृथ्वी के जड़ चैतन्य जीवों में और स्वर्ग के देवताओं में भी नहीं है जो कि दूसरे जन्मों के धर्म संस्कारों से उत्पन्न होने वाले तीनों गुणोंसे रहित प्रकृति वाले होंय, हे शत्रुहन्ता अर्जुन स्वभाव जन्य गुणों के कारण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रों के पृथक् २ कर्म होते हैं प्रथम ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के कर्मों को कहता हूं ब्राह्मण मात्रकी जातिके नहीं कहताहूं (शम) (दम) (तप) (शौच) क्षांति) (आर्जव) (ज्ञान) (विज्ञान) (श्रद्धा) यह पूर्व्व जन्मके संस्कारसे उत्पन्न हुये ब्राह्मणके कर्महैं,(पराक्रम) (तेज) (धैर्य्य) (चतुर्य्यता) युद्धके सन्मुख होकर न (भागना) ईश्वरभाव अर्थात् अपराधियोंको दण्डदेना यह क्षत्रियोंके पूर्वजन्म संस्कार और स्वभावज कर्म हैं,(खेती) (गौकीरक्षा पोषण) (वनज) यह वैश्यके स्वाभाविक कर्म हैं और सेवा करना आदिक शूद्रके स्वाभाविक कर्म कहेजातेहैं,अपने अपने कर्ममें प्रीति करने वाला मनुष्य समसिद्धीको अर्थात् ज्ञानकी योग्यताको पाता है और जैसे अपने कर्ममें प्रीति रखने वाला मुख्य संन्यास लक्षण वाली सिद्धीको पाताहै उसकोभी मैं कहताहूं,जिस अन्तर्य्यामी से जीवोंकी प्रवृत्तिहै और जिससे यहसब जगतभी व्याप्तहै उसको मनुष्य अपने कर्मोंसे पूजन करके मोक्षरूपी सिद्धीको पाताहै,दूसरे के उत्तम धर्म्मसे अपना धर्म किसी अंगसेहीनभी श्रेष्ठतमहै स्वभाव जन्य कर्मोंके करनेसे पापका भागी नहीं होताहै आशय यहहै कि हे अर्जुन इनकारणोंसे हिन्सारहित भिक्षाधर्म तुझको करना योग्य नहींहै किन्तु हिन्सायुक्त युद्धरूपही तेरा मुख्य और श्रेष्ठ धर्म है, हे अर्जुन अपने शरीरके साथ उत्पन्न होनेवाले अर्थात् स्वाभाविक दोषोंसे युक्त कर्मकोभी त्यागन करे क्योंकि सब कर्मोंके प्रारंभ हिन्सा आदिदोषोंसे ऐसे आच्छादितहै जैसे कि अग्नि धुयेंसे आच्छादित होतीहै,अपने कर्मोंको ईश्वरार्पण और अपने अवश्य कर्मोंको करना योग्यहै यहसब कहकर परमेश्वरमें अर्पण करनेसे जो फल

होताहै उसको अबकहतेहैं-पुत्रादि सब पदार्थों में बुद्धि न लगाने वाला शान्त चित्त अत्यन्त लोभ और इच्छासे रहित सन्यास के द्वारा उस परमसिद्धोको पाताहै जोकर्मके त्याग और ब्रह्मज्ञान से संबंध रखने वालीहै,हे अर्जुन जैसे कि वैराग्य सिद्धोको पानेवाला ब्रह्मको पाताहै उसका बृत्तान्त मुझसे सुनो वह बृत्तान्त ज्ञानकी परानिष्टाहै,५० उसी ब्रह्ममें मिल जानेको तीन श्लोकों में कहतेहैं अत्यन्त शुद्ध बुद्धोके द्वारा धैर्य्यतासे शरीर और इन्द्रियों के समूह को प्राणों समेत स्वाधीन करके अर्थात् दृढ़ आसनसे शब्दादि विषयोंको त्यागकरे राग द्वेष रहितहो और अहंभावको दूर करके सदैव एकान्त बासी अल्पाहारी शरीरमें बोलने वाले मनको जीतने वाला बैराग्य युक्तसदैव ध्यान योगमें प्रबृत्त,अहंकार बलक्रोध इच्छा और शिष्यादिमें आत्म भावरूपी परिग्रहको छोड़कर शान्त रूप होकर ब्रह्मभावके योग्य होताहै, इस योगको अयोग दशाकी समाधिको कहतेहैं ब्रह्मरूप योगी प्रसन्न चित होकर न शोच करताहै न इच्छा करताहै और सबजीव मात्रोंमें समदर्शी होताहै अर्थात् यह सब ब्रह्मरूप है इसबुद्धि में द्वैतता रहितहो जाताहै वह मेरी पराभक्तिको पाताहै,अबइस अद्वैत आत्मज्ञान लक्षण वाली भक्तिको कहतेहैं-उसभक्ति के द्वाराज्ञानी पुरुष जैसामैं वास्तवमेंहूं वैसाही ठीक २ जानताहै तदनन्तर मुझको मूल समेत जानकर अभेद बुद्धिसे मुझमेंही समाताहै अर्थात् ब्रह्म भावको पाताहै, उस प्रकारकाज्ञानी मुझमें निवास करने वाला सदैव सब कर्मोंको भी करताहुआ मेरी कृपासे अविनाशी सनातन मोक्ष पदको पाता है, इस प्रकारसे बर्णाश्रमके धर्मको मुख्य करके साधन और फलसे युक्त ब्रह्मविद्याका बर्णन किया उसके प्राप्तहोनेके लिये फिर भक्ति को बर्णन करतेहैं विवेक बुद्धोसे सब कर्मोंको मुझभगवत् वासुदेव में अर्पण करके मुझको उत्तमलय स्थान जानने वाला बुद्धि योगमें प्रवृत्त होकर सदैव मुझीमें चित्तका लगाने वालाहो इसभक्ति योगके करने न करने के गुणदोषोंको कहते हैं-मुझ में चित्त लगाकर

तू सब कठिनताओंसे तरेगा और जोतू अहंकारसे मेरेबचनको नहीं सुनेगा तो नाश पावेगा अर्थात् पुरुषार्थसे हीन होजायगा,जो अहंकारमें प्रवृत होकर तू मानताहै कि मैंनहीं लड़ूंगा यह तेरा निश्चय करना मिथ्याहै तेराक्षत्री स्वभाव तुझको युद्धमें प्रवृत्तकरेगा, हे अर्जुन स्वभावसे उत्पन्न होने वाले अपने कर्मोंसे बंधाहुआ तू जो अज्ञानसे युद्धनहीं करना चाहताहै तोतू पराधीनहोनेके समान होकर अवश्य उसको करेगा,वह परमेश्वर कौनहै जिसके स्वाधीन मैंहूं यहशंका करके कहतेहैं हे अर्जुन ईश्वर सब सृष्टिके हृदय स्थानमें लिंगदेह नाम यन्त्रपर आरूढ़ होनेवाला अपनी मायासे सब जीवोंको ऐसेघुमाता हुआ नियतहै जैसे बाजीगर काठकी मूर्त्तियोंको हे भरतबंशी सब भावसे उसी ईश्वर को शरणमें जाओ उसकी कृपासे तू अबिनाशी पराशान्ती नाम स्थान अर्थात् मोक्षको पावेगा,मैंनेयह गुह्यसे गुह्य ज्ञान तुमसे कहा इस सबको अच्छी रीतिसे विचारकर जैसाचाहो वैसाकरो, फिर सबसे गुह्यतम मेरे उत्तम बचनोंको सुनो तूमेरा बड़ाप्यारा है इसकारण मैं तेरे परम हितको कहूंगा,मुझ आनन्दरूप परिपूर्ण ब्रह्ममेंही चित्तलगाहुआ तूमेरा भक्तहोकर मुझ भगवनकेही निमित्त कर्मका करने वालाहो के मुझको नमस्कार कर मुझमेंही लयहोगा यहमैं सत्यहीप्रतिज्ञा करताहूं क्योंकि तूमेरा बड़ाप्याराहै,इस श्लोकमें भक्ति और कर्मके द्वारा ज्ञान निष्ठाको दिखाया अब योगनाम उपासनाको दिखातेहैं-सब वर्णाश्रम देह इन्द्री और बुद्धिके धर्म और अग्निहोत्रादि कर्म और दुःख दुःखादिको अत्यन्त त्यागकर मुझ अकेले अर्थात् सबके ईश्वर एकरस अखण्ड परमात्माको अविद्या आदिनाश करनेवाली शरणको प्राप्तकर-अब शरणागतके फलको सुनो-मैं तुझको सब पापोंसे संचित क्रियमाणादि रहित करूंगा किसीबात का शोक मतकर,जो तपसे रहित और भक्तिसे शून्यहै अथवा गुरूकी सेवासे वहिर्मुख होकर मेरी निन्दा करतेहैं उनसे कभी यह मेरा गुप्तज्ञान कहने के योग्य नहींहै,अब विद्यावानके फलको कहतेहैं-जो अभक्त

भी इस मेरे गुप्तज्ञानको मेरे भक्तों में प्रचार करके उनको धारण करावेगा अर्थात् सुनावेगा वह मुझमें पराभक्ति को अर्थात् अद्वैत लक्षणा और उपासनाको करके मुझीको प्राप्तहोकर निश्चय मुक्ति को पावेगा, मनुष्यों में इस गीता पढ़ानेवाले से अधिकमेरा कोई प्यारा नहीं है और उससे अधिक मुझको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा, जो हम दोनोंके इस धर्मरूप उपाख्यान को पढ़ेगा मैं उस ज्ञान यज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजितहूंगा कहने और पढ़नेवालों के फलको कहकर अबसुननेवाले के फलको कहताहूं—श्रद्धावान् अन्यके गुणोंमेंदोष न लगानेवालाजो मनुष्य इस गीताके श्लोकों को सुनेगा भी वह भी मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा, हे अर्जुन तैंने एकाग्र चित्त होकर इस गीता शास्त्रको सुना और हे संसारी धनके विजय करने वाले तेरा मोह जनित सब अज्ञान अब नष्ट होगया, अर्जुन बोले हे अविनाशी आपकी कृपासे मेरा मोह दूर हुआ और स्मृति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से रहितहूं इससे आपके वचनोंको करूंगा, संजय बोले कि मैंने महात्मा वासुदेवजी औरअर्जुनके इस अपूर्व रोमहर्षण करनेवाले संवाद को सुना, मैंने व्यासजी की कृपासे अर्थात् दिव्य नेत्रों के देनेसे यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजीके मुखसे सुना, हे अर्जुन केशवजी और अर्जुन ने इस अपूर्व पुण्यकारी संवाद को बारम्बार प्रसन्नता पूर्व्वक स्मरणकर आनन्दमें मग्न होताहूं, हे अर्जुन हरिके उस अपूर्व्व रूपको बारम्बार स्मरण करके मुझको बड़ा आश्चर्य है और बारम्बार प्रसन्न होता हूं, जिधरयोगेश्वर श्रीकृष्णजी और जिधर धनुषधारी अर्जुनहै उधरही (लक्ष्मी) (जय) ऐश्वर्य और नीतिहै यह मेरा निश्चय मतहै ७८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेसंन्यासादितत्त्वनिर्णययोगोनाम अष्टादशोऽध्यायः॥ १८॥

वैशम्पायनबोले कि जो गीता कमलनाभ के मुख पंकज से निकलो है वह गीता अच्छे प्रकारसे गानकरनी चाहिये अन्यशास्त्रोंके विस्तार से कुछ प्रयोजन नहीं है, यह गीता सब शास्त्ररूप है और सब देवतारूप भगवान् हरि हैं और सब तीर्थरूप गंगा है और सर्बदेवमय मनुजी हैं गीता गंगा गायत्री और गोविन्दजीके हृदय में नियतहोने और चार गकार से संयुक्तहोने पर फिर जन्म नहीं होता है, केशवजीने ६२० श्लोक कहे अर्जुन ने सत्तावन और संजयने सरसठ ६७ कहे, धृतराष्ट्र ने एकही श्लोक कहा इतनाही गीता का मानहै हे भरतवंशी सब अमृत से मथीहुई गीताकेसार को श्रीकृष्णजीने लेकर अर्जुनके मुखमें होमकिया यह सबकी सुख दायी गीता समाप्तहुई सबको लाभकारीहो, ॥

अब श्री महाभारतभीष्मपर्वका अध्याय तेंतालीसवां प्रारम्भ हुआ ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि तदनन्तर महारथियों ने बाणों समेत गांडीव धनुषधारी अर्जुनको देखकर महाशब्द करना प्रारम्भकिया, पांडव वा संजय अथवा जो इनके पीछे चलनेवाले महाबली बीरलोग थे उन सबोंने भी बड़े प्रसन्न चित्तहोकर समुद्रोत्पन्न उत्तम २ संखो को ध्वनिकरी, और इसी प्रकार भेरी कृकच गोविषाणक नाम सब बाजे एक समय परही बजनेलगे और महातुमुल शब्दहुआ, तदनन्तर हे राजा धृतराष्ट्र देवता पितर सिद्ध चारण आदि गन्धर्बों समेत सब देवता युद्ध देखनेकी इच्छासे आ पहुंचे, और महाभाग ऋषि लोग भी इन्द्र को अग्र भागमें करके उस महाभारी नाश के देखनेको वर्त्तमानहुये तदनन्तर हे राजन् बीरराजा धर्मराज युधिष्ठिर इन युद्धों के लिये अच्छे प्रकार सन्नद्ध होकर सागरके समान बारम्बार चलायमान दोनो सेनाओं को देखकर, कवचको उतार उत्तम धनुष को त्याग शीघ्रही रथसे उतर कर पैदलही हाथ जोड़े हुए पितामह की ओर देखकर मौनता साधेहुये पूर्व्वाभिमुखहोकर

शत्रुकी सेनामें घुसाहुआ चला उन धर्मराज को जाते हुए देखकर कुन्ती का पुत्र अर्जुन शीघ्रही रथसे उतरकर भाइयों समेत उसके पीछे चला और हे राजा बासुदेवजी उसके पीछे की ओर से चले तिस पीछे सब पृथ्वी के राजा अपने २ मनोरथ सिद्ध करने की इच्छा से उसके पीछे चले, अर्जुन बोले हे युधिष्ठिर आपका क्या निश्चय है जो हम लोगों को त्याग करके पैदल होकर पूर्व्वाभिमुख शत्रुओं की सेना में जाते हो, भीमसेन बोले हे राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर आप कवच और शस्त्रों को त्यागकर भाइयों को छोड़ के शस्त्रों से सन्नद्ध शत्रुओं की सेना के मनुष्यों में कहां को जाओगे, नकुल बोले हे भरतबंशी आप सरीके मेरे बड़े भाईको इस प्रकार से जानेपर बड़ा भारी भय मेरे हृदय को पीड़ित करता है कहिये आप अब कहां जाओगे सहदेव बोले हे राजा इस महा भयकारी युद्ध करने के योग्य शत्रुके सेनाके समूह के सम्मुख होकर कहां जातेहो, संजय बोले कि हे कौरव नन्दन धृतराष्ट्र भाइयों के इस प्रकारसे कहने परभी मौन हुए अवाक होकर चला जाताथा, तब तो बड़े साहसी बासु देवजीने बड़े प्रसन्नहोकर कहाकि मैंनेइस के चित्तकी इच्छा को जाना, यहयुधिष्ठिर भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और शल्य नाम आदि सबगुरुओं की प्रतिष्ठा पूर्व्वक परिक्रमा करके उनसे आज्ञाको मांगकर युद्धमें शत्रुओं से लड़ेंगे, प्राचीन शास्त्रमें सुना जाताहै कि जो बांधवों समेत गुरू वृद्धों को शास्त्रकेअनुसार प्रतिष्ठा देकर अपनेसे बड़ोंके साथ युद्धकरेनिश्चय करके युद्धमें उसकी बिजय होतीहै यह मेरामत है, श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहने पर शत्रुओं की सेनामें बड़ा हाहाकार शब्द हुआ और पांडव लोगोंके पक्षी राजा लोग चुप होगये, दुर्य्योधन की सेना के बीरोंने युधिष्ठिर को देखकर परस्पर में बार्तालापकरी कि यह कुलका कलंक है, प्रकट है कि यह राजा युधिष्ठिर भाइयों और शकुनी समेत भयभीत होनेके समान भीष्मजी आदिकी शरण लेनेके निमित्त आताहै, पांडव युधिष्ठिर अर्जुन भीमसेन नकुल सह-

देवचारों भाइयों समेत किस प्रकार से भयभीतसा होकर सन्मुख आताहै निश्चयहै कि यह पृथ्वीपर प्रसिद्ध क्षत्रियोंके कुलमें उत्पन्न नहींहुआ काहेसे कि इस अल्प बल रखने वाले का हृदय युद्ध से भयाकुलहै, तदनन्तर उन प्रतिपक्षी मनुष्योंने बड़े प्रसन्न हृदय से कौरवों की प्रशंसा की और पृथक् २ चैलों को अर्थात् रूमालों को फिराया, हे राजा तिसके पीछे वहां सबके बीर उनकेशव जी और सगे भाइयों समेत युधिष्ठिर की ओरको गर्जे हेराजाफिरवह कौरवों की सेना युधिष्ठिर को तुच्छ करके शीघ्रही अवाक होगई, कि औरसब बिचारने लगे कि यह राजा क्याकहैगा और भीमसेन क्या कहैगा और युद्धमेंप्रशंसनीय भीष्मजी क्या कहैंगे और श्रीकृष्णवा अर्जुन क्या कहैंगे हे धृतराष्ट्र इन बिचारों के कारण युधिष्ठिर के जानेसेदोनो ओरकी सेनामें बड़ाभारी संशय उत्पन्न हुआकि राजा युधिष्ठिर को क्या कहने की इच्छा है, वहराजा युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेनाकेबाण बरछियों से व्याकुल सेना के पारहोकर भीष्म जीके सन्मुख आया, तदनन्तर शंतनुके पुत्र युद्धोत्सुकपितामह भीष्मजीके दोनो चरणोंको युधिष्ठिरने हाथोंसे दाबकर कहा, हे दुर्जय पितामह मैं आपसे पूछताहूं कि इस युद्धमें हम आपके साथ लड़ैंगे सो आज्ञादो और आशीर्बादभीदो, भीष्मजी बोलेहे भरत बंशी महाराज राजायुधिरष्ठिरजो तुमइसयुद्धमें इसरीतिसे मेरेपास नहीं आतेतोमैं तुमको पराजय करनेका शापदेता, हे पुत्रमैं प्रसन्नहूं हे पांडव युद्धकोकरके बिजयको प्राप्तकरो और युद्धमेंजो तेरीदूसरी इच्छा है उसकोभीतुम पाओगे, हे राजा युधिष्ठिरबरमांग तू मुझसे क्याचाहताहै हे राजा इस प्रकार के तेरे आचरणों से तेरी पराजय नहींहै, पुरुष धन रूपादि अर्थोंका दासहै परन्तु अर्थकिसीका दास नहींहैहे महाराजयहसत्यहै मैं कौरवोंकी ओरसे अर्थद्वाराबसी भूत कियागयाहूं, हे कौरव नन्दनमैं इस कारण से निर्बल पुरुषकेसमान तुझसे बचन कहताहूं कि मुझकोकौरवोंने धनकेद्वारा पोषणकिया हैसो इनके लिये युद्धतो अवश्य करूंगा तू युद्ध के सिवाय क्या

चाहता है, युधिष्ठिर बोले हे महाज्ञानी मेराहित चाहने वाले तुम सदैव मेरे अन्तको बिचारो और दुर्य्योधनादि कौरवों के निमित्त युद्धकरो और आपका दियाहुआ वर सदैव नियत रहै, भीष्म जो बोले हे कौरव नंदन युधिष्ठिर इस स्थान परमैंतेरी कौनसी सहायताकरूं दूसरेकेलिये अपनी इच्छाके समान लड़ूंगा और जो तेरी इच्छाहै उसको भी कह, युधिष्ठिर बोले हे तात पितामह आपको नमस्कार है मैं आपसे पूछताहूं हे अजेय मैं युद्धमें आपको कैसे बिजय कर सक्ताहूं इस विषय में मेरे लिये श्रेष्ठहित कारी शिक्षा दो, भीष्मजी बोले किहे कुन्ती के पुत्रनैं ऐसाकिसीको नहीं देखता हूं जो कोई पुरुष वा साक्षात् देवता इन्द्रभी मुझ युद्धमें लड़ते हुए को विजयकरे, युधिष्ठिर बोले हे पितामह तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मैं आपसे यह हेतुपूछताहूं कि आप युद्धमें अपने बिजय करने के उपायको कहो, भीष्मजी बोले हे तातजबतकमेरी मृत्युका समय नहोय तबतक कोई मुझको युद्धमें जीतने वालानहीं दिखाई देता है, संजय बोलेइस के पीछे कौरव नन्दन युधिष्ठिरने भीष्मजी के बचन को शिरसे अंगीकार किया और फिरभी नमस्कार करके वह महाबाहु युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेनाके सब मनुष्योंके देखते हुए सेनाके मध्यमें से निकलकर गुरू आचार्य्य द्रोणाचार्य्य जीके रथके पासगया, वहांकठिनतासे बिजय होनेवाले द्रोणाचार्य्य जीको परिक्रमा पूर्व्वक नमस्कार करके बाणी से अपने कल्याण कारी बचन को बोला, हे भगवान् गुरूदेवमैं आपका पूजनकरता हूं और पूछताहूं किमैं पाप से युद्धकरूंगा या पापसे रहित युद्ध करूंगा इसको आपकहिये हे बिप्रेन्द्र आपकी आज्ञासे मैं किस प्रकार से सब शत्रुओं को बिजय करूंगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि जो युद्धके निश्चय करने के लिये तू मुझको नहीं मिलतातो हे महाराज सब प्रकार से पराजय होनेके लिये तुमको श्रापदेदेता, हे निस्पाप युधिष्ठिर मैं तुमसे पूजित होकर प्रसन्नहूं मैं आज्ञादेता हूं कि युद्धकरो और विजय को पाओ, तेरे मनोर्थ को सिद्धकरूंगा

जो तेरी इच्छा होय सो कहो हे महाराजतुम ऐसी दशा में युद्ध के बिशेष अन्य कौनसी बात चाहतेहो, पुरुष अर्थका दास है परन्तु अर्थ किसीका दासनहीं है हे युधिष्ठिर यह सत्यही बातहै कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थ से स्वाधीन किया गयाहूं, इसहेतुसे असमर्थोंके समान मैं तुझसे कहताहूं कि युद्धतो इनके अर्थहम करेंगे इसके सिवाय दूसरी बातक्या चाहता है मैं कौरवों के निमित्त लड़ूंगा परन्तु तुम्हारी बिजय होनेका आशीर्बाद देताहूं युधिष्ठिर बोलेहे गुरुदेव मेरी बिजय होनेका आशीर्बादहो और मेरे हितकारी सलाह को दो और आपकौरवों के निमित्त युद्धकरिये मुझे बरदो द्रोणाचार्य्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजय है क्योंकि तेरे मन्त्री हरि हैं मैं तुझको अच्छी रीति से जानताहूं कि तू युद्धमें शत्रुओंको जीवन से मुक्त करेगा जहां धर्म है वहीं श्रीकृष्णजी हैं जहां धर्म है वहीं विजय है इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्धकरो तुम्हारी विजय होगी अब मुझसे तू क्या पूछताहै, युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य मैं अपनी इच्छा के अनुसार आपसे पूछताहूं हे अजेय मैं युद्धमें आपको कैसे विजय करूंगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि हे राजा जबतकमैं युद्धभूमिमें लड़ूंगा तब तकतेरी विजय नहीं होगी मेरे मरने के पीछे तुम अपने भाइयोंसमेत शीघ्र उपाय करो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाहु बड़े कष्ट की बात है कि मैं आपको नमस्कार करके प्रार्थना करताहूं कि आपअपने मरने के उपाय को बताइये, द्रोणाचार्य्य बोले हे तात मैं उस अपनेशत्रु को संसार में नहीं देखताहूं जो मुझ क्रोधाग्निमें भरेहुए बाणोंकी बर्षा करतेहुए को युद्धमें मारे, हे राजा इसके विशेष मरनेकेनिमित्त निश्चय करनेवाले योग बलसे देह त्याग करनेवाले मुझकोयुद्धमें कोई बीर मारनेवाला नहीं दीखताहै यह मैं निश्चय करके कहता हूं, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अप्रिय और असत्य बचन को सुनकर शस्त्रों का त्याग करूंगा यह तुम से मैं सत्य २ कहताहूं, संजय बोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजायुधिष्ठिर द्रोणाचा-

र्य्यके इस वचनको सुनकर उन आचार्य्यजी को प्रतिष्ठाकरके नमस्कार कर कृपाचार्य्यजीके पास आया और वह बक्ताओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उस बड़े दुर्जय कृपाचार्य्यजी को प्रणाम और प्रदक्षिणा करके यह बचन बोला कि मैं गुरूजी को प्रणामादिक करके पापसे पृथक् हुआ लड़ूं गाया पापसे हे निष्पाप मैं आपसे आज्ञापाकर सब शत्रुओंको विजयकरूं कृपाचार्य्य बोले हे महाराज जो युद्धकेनिमित्त निश्चय करनेवाला तू मुझसे नहीं मिलता तो मैं तेरे पराजयके निमित्त कठिन शाप देता, पुरुषही अर्थ का दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे महाराज यह सत्यही है कि मैं कौरओं को ओरसे अर्थकेद्वारा आधीनकिया गयाहूं उनकेनिमित्त युद्धकरना योग्य है हे महाराज मेरा यह मत है इसी हेतुसे मैं असमर्थ के समान तुझसे कहताहूं कि युद्धके विशेष दूसरी जो बात चाहै वह मुझसे कह, युधिष्ठिरबोले हे आचार्य्यजी बड़े कष्टकी बातहै मैंभीइसी हेतुसे आपसे पूछताहूं आप मेरे बचन को सुनो यहकहकर पीड़ा वान और व्याकुल चित्तहोकर कुछ न बोला, संजयबोले कि गौतम कृपाचार्य्यजी उसके अभिप्राय को अच्छी तरह जानकर यह बचन बोले हे महाराज मैं तो अवध्यहीहूं, आपयुद्ध करो और विजयको पाओ मैं तेरेआनेसे प्रसन्नहूं हे राजामैं सदैव प्रातःकाल उठकर तेरे विजयहोनेका आशीर्वाद दूंगा यहतुझसे सत्यर कहताहूं, यह गौतम कृपाचार्य्य जी के बचनोंको सुनकर उनको प्रदक्षिणा पूर्व्वक नमस्कार करके वहांको चले जहांमद्र देशके राजाशल्य वर्त्तमान थे, उस दुर्जय राजा शल्यकी नमस्कार पूर्व्वक परिक्रमा करके अपने कल्याण कारी बचन को बोला, हे कठिनता से विजयहोने वालेराजा शल्य मैं आपको प्रतिष्ठा करता हुआ प्रणाम करता हूं कि मैं निस्पाप होकर युद्धकरूंगा हे राजाआपकी आज्ञा से मैं बड़े बलवान शत्रुओं को विजय करूंगा शल्य बोले हे महाराज युधिष्ठिर जो युद्धके निश्चय करने को आपमेरे पासनहीं आतेतोमैं तुम्हारे पराजय के निमित्त महाशाप देता, मैं तुमसे पूजित होकर

बड़ा प्रसन्न हुआहूं जो इच्छा में होय वह मुझसे मांगो और जो तू चाहता है वहीतेरा मनोरथ सिद्धहोगा औरमैंतुमको आज्ञादेताहूं कि युद्धकरो और विजय प्राप्तकरो हेवीर इसकेसिवाय अपनेअभीष्ट को कहो जिसकोमैंदूं हे युधिष्ठिर ऐसी दशामें युद्धके भिन्नदूसरी बात क्या चाहताहै,पुरुष अर्थ का दासहै और अर्थ किसीका दास नहीं है यह बचन सत्य२ कहता हूं कि मैंकौरवोंकी ओरसे अर्थके आधीन कियागयाहूं, हे इच्छा वान मैं तेरी अभीष्ट इच्छा को पूर्ण करूंगा इसहेतु से मैं असमर्थों के समान कहता हूं कि तुम युद्धके विशेष कौनसी बात चाहते हो युधिष्ठिर बोले हे महाराज सदैव सुखदायी मेरे अभीष्ट के विषय में सलाहदो और कौरवोंके निमित्त आप युद्धकरो यही मैं बरमांगताहूं,शल्यबोले हे राजेन्द्र यहां मैंतेरी कौनसी सहायताकरूं मैं तेरे प्रतिपक्षी कौरवलोगोंकी ओरसे युद्ध केलिये बचन बद्ध होगयाहूं इस्से उनकेही निमित्तलडूंगा,युधिष्ठिर बोलेकि हे शल्यमुझे वहीबर आपका दियाहुआ उचितहै जोआपने युद्ध के उपाय में मुझसे प्रणकिया है आपको युद्धमें कर्णके तेजका नाश करना चाहिये, शल्य बोले हे कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर यह तेरा मनोरथ सिद्धहोगा तुम इच्छा पूर्व्वक युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी संजयबोलेकि इसप्रकार उक्तमहा बीरोंसे ऐसे२बरदान लेकर भाइयों समेत युधिष्ठिर अपने मामाशल्यको नमस्कार करकेबड़ी सेनामें से बाहर को निकलइसके पीछे गदके बड़े भाई बासुदेवजी युद्धभूमिमें कर्णके पासगये और पांडवोंके निमित्त उससे यहबचन बोले,हेकर्ण मैंने सुनाहै कि तुम निश्चय करके भीष्मको विरुद्धता से युद्ध नहीं करोगे हे कर्ण हमको यहबरदानदो कि जबतक भीष्मजी नहीं मारे जांय तबतक आपयुद्ध न करोगे भीष्मजीके मरनेपर क्यातुम युद्धके निमित्त संग्राम भूमिमें आओगे,हेराधाके पुत्र जो तुमदुर्य्योधन की सहायताको देखतेहो,कर्णबोले हे केशवजी मैं दुर्य्योधनका अनिष्ट नहीं करूंगा मुझको आपदुर्य्योधनका अभीष्ट चाहने वाला और उसके निमित्त अपने प्राणोंकाभी त्यागनेवाला जानो, हे भरतबंशी

धृतराष्ट्र श्रीकृष्णजी उसके वचनको सुनकर युधिष्ठिरादि पांडवों समेत वहांसे लौटे, तदनन्तर राजायुधिष्ठिर सेनामें आकर बड़े उच्चस्वरसे पुकारे कि जोहमको वरताहै मैं उसको सहायताके कारण वरताहूं, तदनन्तर धृतराष्ट्र के पुत्र युयुत्सुने इनको अच्छे प्रकार से सच्चा देखकर बड़े प्रसन्न चित्त होकर कुन्ती के पुत्र धर्मराज राजायुधिष्ठिरसे यहवचन कहा कि हेमहाराज मैं आपके निमित्त युद्धभूमिमें धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे लड़ूंगा हे निष्पाप जो तुम मुझको वरतेहो, युधिष्ठिर बोले हे युयुत्सु आओ २ हम सब तेरे अज्ञानी भाइयोंसे लड़ेंगे वासुदेवजी समेत हमसब प्रकारसे कहते हैं, हे महाबाहु मैं तुझको वरताहूं मेरे कारणसे युद्धकर तूही धृतराष्ट्र के पुत्रोंके पिण्डोंका सूत्र दिखाई देताहै अर्थात् तूही जीवतारहैगा और बाकी सब मारेजांयगे, हेबड़े तेजस्वी राजकुमार तुमहम सब चाहने वालोंको चाहो तू निश्चय करके निर्बुद्धी दुर्य्योधनका ईर्षा करने वाला नहीं होगा, संजय बोले तबतो युयुत्सु कौरवों और तेरे पुत्रोंको त्यागकरके नगाड़ा बजाकर पांडवोंकी सेनामें गया, तदनन्तर बड़े प्रसन्न चित्त उत्साह युक्त राजायुधिष्ठिरने अपने स्वर्णमय प्रकाश मान महातेजस्वी रूप कवच को धारण किया, और वह सब उसके साथी पुरुषोत्तमभी अपने २ रथोंपर सवार होकर उसके रथके पीछे हुये और सबोंने पूर्व्वके समान अपने व्यूहको सन्नद्ध अर्थात् तैयार किया, और सैकड़ों दुन्दुभी वा पुष्करनाम अनेक बाजोंको बजाया और नानाप्रकारके सिंह नादभी उनपुरुषोत्तमों ने किये, तब धृष्टद्युम्न आदि सब राजालोग पुरुषोत्तम पांडवों को रथोंपर सवार देखकर फिर प्रसन्न हुये, और उन प्रतिष्ठाके योग्य पुरुषोंको प्रतिष्ठा देनेवाले पाण्डवोंके समूह को देखकर राजालोगों ने बड़ी प्रशंसा की, और समयके अनुसार उन महात्माओंकी जात वालोंपर बड़ी सुहृदता और कृपालुता को वर्णन किया, उनकीर्त्तिमानों की प्रशंसा से युक्त पवित्र चित्तों के हृदय आकर्षण करने वाले बहुत अच्छा बहुत अच्छा यहश्रेष्ठ बचन चारों ओर को

फैलगये, जिन म्लेच्छ और आर्य्य पुरुषों ने पाण्डवों के उस चलन को देखा और सुना वह गद् गद कंठों से रुदन करने लगे, तदनन्तर प्रसन्न चित्त साहसी सेना के मनुष्यों ने सैंकड़ों भेरी और पुष्करादि अनेक बाजे और दुग्धसमान महाश्वेत उत्तम २ शंखों को बजाया, १०२ ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि भीष्माभिगमनेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रों की और पाण्डवों की सेना के इस रीति पर तैयार होने पर पहले किनलोगों ने अर्थात् कौरव पाण्डवों में से पहले किसने प्रहार किया, संजय बोले कि आप का पुत्र दुःशासन भाई के उस बचन को सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेना के साथ चला, इसीप्रकार भीमसेन आदि सबप्रसन्न चित्त पाण्डव लोग भी भीष्म जीसे युद्ध करने की इच्छा करके चले, शंखध्वनि और कलकला शब्द पूर्वक (कृकच) (गोविषाक) (भेरी) मृदंग (मुरज) इत्यादि बाजों के और घोड़े हाथियों के अनेक प्रकार के शब्द होनेलगे, हे राजा तदनन्तर वह दोनों सेनाओं के वीर लोग परस्पर में एक दूसरे पर प्रहार करने को महागर्जनाओं को करके ऐसे दौड़े कि जिनके शब्दों से महातुमुलशब्द होगया, पाण्डवों का और दुर्योधनादि कौरवों की महा युद्ध करने वाली सेना समागम के समय शंख और मृदंगों के शब्दों से ऐसे महा कंपायमान हुई जैसे कि बायु से सब बन कंपायमान होते हैं, फिर राजा लोगों से और हाथियों से समाकुल और अशुभ मुहूर्त में आने वाली सेनाओंके ऐसे कठोर शब्द हुए जैसे कि बायु से चलायमान समुद्रों के शब्द होतेहैं, शरीर के रोम हर्षण करने वाले उस तुमुल शब्द के उठने पर महाबाहु भीमसेन ऐसा अत्यन्तता से गर्जा कि जिसकी गर्जना के कारण शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियों की चिंघाड़ वा सेना के मनुष्यों के

सिंह नाद भी तिरस्कार होगये, इसभीमसेन के शब्द ने सेनाके मध्यवर्त्ती हज़ारों घोड़ों के हिन हिनाहट आदि अनेक शब्दों को दबादिया उसके उस महाबज्र के समान शब्द को सुन कर तेरी सेना के मनुष्य अत्यन्त भयभीत हुए उस वीर के शब्द से सब सवारियों के वाहनों ने ऐसे मूत्र बिष्टा को डाला जैसे कि सिंह के शब्द को सुनकर अन्य जंगल के पशु बिष्टा मूत्र को डालते हैं, वहाँ भीमसेन अपने शरीर को महाभयानक दिखाता और बड़े घनके समान गर्जता तेरे पुत्रों को डराता हुआ फिर उन्हों के सन्मुख आया, तब तो उस आते हुए बड़े धनुषधारी भीमसेन को दुर्य्योधन के सहोदर भाइयों ने चारों ओर से बाणों की बर्षा सेऐसा ढकदिया जैसे कि सूर्य्य को बादल ढकदेता है, हे राजा आपकेपुत्र (दुर्य्योधन)(दुर्मुख)(अतिरथी)(दुश्शासन)(दुस्सह) (युयुत्सु) (दुर्मर्षण)(विविन्शति)(चित्रसेन)(महारथीविकर्ण)(पुरमित्र,(जय)(भोज) पराक्रमी (सोमदत्त) यह सब वीर जैसे बादल बिजली को धारण किये हुए होतेहैं उसी प्रकार धनुषों को चढ़ाये हुए कांचली रहित सर्पों के समान नाराच नाम बाणों को हाथों में लिये हुए सन्मुख आये तदनन्तर (द्रौपदीके पुत्र) और सुभद्राका पुत्रमहारथी (अभिमन्यु) (नकुल) (सहदेव) पार्षदका पुत्र (धृष्टद्युम्न) यह सब बड़े तीक्ष्णशरोंसे ऐसेपीड़ित करते हुए शत्रुओंके सन्मुख गये जैसेबड़े वेगवान्वज्रोंसे शिखरों को पीड़ित करते हुए इन्द्र पर्वतों के सन्मुख जाय, उस पहले युद्धमें तेरे पुत्रोंके और पांडवों के धनुषों की ज्या प्रत्यंचाओं के भयानक शब्दोंसे दोनों पक्षवालों मेंसे कोईभी पराङ्मुखनहीं हुआ अर्थात्किसीने मुखन फेरा, हे भरत बंशियोंमें श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र मैंने बाणोंको बराबर छोड़ते और लक्षोंको बेधतेहुए द्रोणाचार्य्य के शिष्यों की हस्तलाघवता को देखा, उससमय शब्दायमान धनुषों के शब्द बन्दनहीं होतेथे और प्रकाशित बाण भी बराबर ऐसे चले जैसे कि आकाश से नक्षत्रोंके पतन बराबर होतेहैं, हे भरत बंशी अन्य सब राजाओंने कुतूहल देखने वालोंके

समान उस दर्शनीय और भय उत्पन्न करने वाले जात भाइयों के युद्धको देखा, तदनन्तर हेराजा उन क्रोधों में भरेहुए परस्पर में अपराधी महारथियोंने अन्योनकी ईर्षासे परस्पर वैरताकरी, कौरव और पांडवोंकी वह दोनों सेना हाथीघोड़े और रथोंसेव्याप्तहोकर युद्धमें ऐसी शोभाय मान हुई जैसे चित्र पटों से चित्रित दो वस्त्र होतेहैं तदनन्तर धनुषबाण हाथमेंलिये सब राजालोग आपकेपुत्र की आज्ञासे सेनाके मनुष्योंसमेत चारोंओरसे आटूटे उनचारोंओर से दौड़ने वालों के व्याकुल शब्द उस समुद्रकी गर्जना से सुनाई दिये जिस समुद्रमें हाथी घोड़ोंके समान रूप वाले बड़े कलिल थे वह समुद्र सिंहनाद से मिश्रित शंख भेरीसे व्याकुल शब्दायमान बाणरूप ग्राहवाला धनुष हाथी और खड्गरूप कछुए रखने वाला और चारों ओर से घोड़ों की चाल रूपवायु को आगे रखनेवाला था,, और युधिष्ठिर की आज्ञा पायेहुए हजारों राजालोग अपनी सेनाके मनुष्यों समेत आपके पुत्रकी सेनापर पड़े, उस समयदोनों ओरके वीरोंमें परस्पर ऐसा कठिन युद्धहुआ जिसकी धूलीसे सूर्य्य भी आच्छादित होगया, इससे दोनों ओर के वीरों का अत्यन्त लड़ना वा मुखफेरना अथवा लौटना वा किसी की मुख्यता दिखाई नहीं दी, इस बड़े भयकारी तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर आप के पिताभीष्म जी सब सेना को उल्लंघन करके अत्यन्त शोभायमान हुए ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि हे राजा उनभयकारियों के प्रथम भागमें राजाओंके शरीरों को काटने वाला महाभारीघोर युद्ध प्रारंभ हुआ, युद्ध में विजयाकांक्षी कौरवों के और सृंजियोंके सिंहनाद रूपी शब्दों ने पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करदिया, और धनुषधारियोंके धनुषोंकी टंकारों समेत शंखोंकी महा ध्वनियों से अत्य-

न्त कलकलाशब्द उत्पन्न हुआ और परस्पर में सन्मुख गर्जनेवाले मनुष्योंके सिंहनाद उत्पन्न हुये, हे भरतर्षभ हस्त्राणसे टक्करखाई हुई प्रत्यंचाओंके शब्द और पदातियों आदि घोड़ों के चरणों के शब्दोंसे और गिरेहुये अंकुश वा अस्त्रोंके शब्दोंसे अथवा परस्पर में सन्मुख दौड़ने वाले हाथियों के घंटोंके शब्दोंसे, इस युद्धमें शरीरके रोमहर्षण करने वाले तुमुल शब्द उत्पन्न हुये और रथोंके शब्द बादलोंकी गर्जनाके समान हुये, वहसब लोग जिनकी ध्वजा उन्नत थीं और जो जीवनकी आशाको अत्यन्त त्यागकरके कठोर चित्त निर्दय और दूसरोंसे शत्रुता करने वाले बनकर पाण्डवोंके सन्मुख लड़नेको उपस्थितहुये, हे राजा आप भीष्मपितामहजी कालदण्डके समान भयानक रूप धारण किये अपूर्व्व भयकारी धनुषको हाथ में लेकर अर्जुनके सन्मुख दौड़े और संसारमें विदित धनुषधारी महाहस्त लाघव जानने वाला तेजस्वी अर्जुन भी अपने गांडीव धनुषको लेकर भीष्मजीके सन्मुख दौड़ा, कौरवोंमें महाश्रेष्ठ वह दोनों परस्परमें मारनेकी इच्छामें प्रवृत्तहुये तबमहाबली भीष्मजी ने अर्जुनको बाणोंसे भेदकर कंपायमान नहीं किया, इसी प्रकार अर्जुननेभी भीष्मजीको बाणोंसे भेदकर कंपायमाननहीं किया और धनुषधारी सात्विकी कृतबर्म्माके सन्मुख गया, इनदोनोंकाभीरोम-हर्षण महातुमुल युद्धहुआ सात्विकीनेकृतबर्म्माको और कृतबर्म्मा ने सात्विकीको घायल किया, दोनोंने बड़े २ शब्दोंको कहकर पर-स्परमें घायल किया, तदनन्तर वहदोनों यादव बाणोंसे भरे हुये अंगोंसमेत ऐसेशोभायमान विदितहुये जैसे कि बसन्त ऋतुमेंफूलों से आच्छादित विचित्र किंशुक होतेहैं उससमय बड़ा धनुर्धारी अ-भिमन्यु वृहद्बलसे युद्ध करने लगा, हे राजा तिसपीछे युद्ध में राजा कौल्कने अभिमन्युको ध्वजाको गिराकर उसकेसारथीको गिराया ध्वजाके काटने और रथ सारथीके गिरानेसे अभिमन्युने महा क्रो-धाग्निरूप होकर बृहद्बलको नौबाणोंसे घायल किया, अर्थात् एक बाणसे तो ध्वजाको और एक बाणसे पीछेके रक्षक और सारथी

को मारा, शत्रुओंके विजय करने वाले दोनोंने परस्पर में तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया और महामानी युद्धमें प्रकाशित शत्रुताकरने वाले महारथी आपके पुत्र दुर्य्योधनसे भीमसेन युद्ध करने लगा, उनदोनों नरोत्तम और कौरवोत्तम महारथियोंने, युद्धभूमिमें अपने२ बाणोंकी वर्षासे परस्परमें एकने दूसरेको ढकादिया, हे भरतवंशी उनयुद्धमें कुशल दोनों महात्मा चित्रयोधियोंको देखकर सबजीवों को आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ, और दुश्शासनने महारथी नकुलके सन्मुख जाकर बड़ी प्रसन्नतासे तीक्ष्णबाणों करके नकुलको घायल किया और इसी प्रकार हेराजा हंसतेही हुये नकुलनेभी अपनेतीव्र बाणोंसे दुश्शासनकी ध्वजा और धनुष बाणको काटडाला और पच्चीस क्षुद्रकनाम बाण उसपर छोड़े, फिरतेरे पुत्र दुश्शासनने नकुलके घोड़ोंको मारकर उसकी ध्वजाको गिराया, और दुर्मुखने महाबली सहदेव के सन्मुख जाकर उपाय करने वाले सहदेव को अपने बाणोंकी वर्षासे पीड़ामान किया, तिसपीछे बड़े वीर सहदेव ने उसीयुद्धके बीच बड़े तीक्ष्ण तीरोंसे दुर्मुखके सारथीको गिराया उनदोनों दुर्मद घातके बदले घातकरनेके इच्छावान् वीरोंने अपने भयकारी बाणोंसे युद्धमें भय उत्पन्न करदिया, और आपराजायुधिष्ठिर मद्रदेशके राजा के सन्मुख गये उसको देखतेही मद्रदेश के राजाने युधिष्ठिर के धनुष को काटडाला, तब कुन्ती के पुत्र वेगवान् युधिष्ठिर ने उस कटे हुए धनुष को डालकर दूसरे दृढ़ धनुष को धारण किया, तिस पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त होकर राजा युधिष्ठिर ने तीक्ष्ण तने हुये बाणों से मद्रदेशाधिपति को आच्छादित किया और तिष्ठतिष्ठ करके अनेक बचनों को कहा, हे भरतवंशी इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के सन्मुख दौड़ा उससमय महाक्रोध में भरे हुए द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें उस महात्मा पांचाल के दृढ़ धनुष को जो कि मारने का साधनथा काटडाला और महा भयानक काल दण्ड के समान अपने बाण को युद्ध में फेंका वह उसके शरीर में घुसगया तिसपीछे द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न ने दूसरे

धनुष में शायक नाम चौदह बाणों को धारण करके युद्धमें द्रोणाचार्य्य को घायल किया और दोनों क्रोध रूपों ने परस्पर में बड़ा युद्ध किया, हे महाराज युद्धमें शीघ्रता करने वाला शंख अपने समान गुणवाले सोमदत्त के सन्मुख गया और तिष्ठ तिष्ठ शब्द को बोला तब बड़े बीर सोमदत्त ने युद्धमें उसके दक्षिण भुजाको घायल करके अत्यन्तही व्याकुल किया, हे राजा उन दोनों अहंकारियों का भी युद्ध ऐसा महाभयकारी हुआ जैसा देव दानवों का युद्ध होता है तिस पीछे बड़ा साहसी महारथी युद्ध में क्रोध रूप धृष्टकेतु बाल्हीक राजा के सन्मुख गया, तब बाल्हीक ने उस क्षमासे रहित धृष्टकेतु को बहुत से बाणों से आच्छादित करकेमहासिंहनाद किया फिर उस महाक्रोध रूप चेदिराज धृष्टकेतु ने भी युद्ध में बड़ी शीघ्रता से नौबाणों करके बाल्हीक को घायल किया और ऐसा युद्धकिया जैसे मत्त और उनमत्त हाथी लड़तेहैं ४० और युद्ध में महा क्रोधाग्नि रूप दोनों बारंबार शब्दों को करते हुये मंगल और बुधके समान बड़े पराक्रम से लड़े, महा कठिनकर्मी घटोत्कच उसीके समान कठिनकर्मी अलंबुष नाम राक्षसके सन्मुख ऐसेगया जैसे कि युद्धमें बलिके सन्मुख इन्द्र जाताहै,हे भरतबंशी फिर घटोत्कचने उस महाक्रोध रूप महाबली राक्षस को तीक्ष्ण नौतीरोंसे घायल किया, और अलंबुषने भी युद्धमें भीमसेनके पुत्र घटोत्कच को गुप्तग्रन्थिवाले बाणों से अनेकरीति से घायलकिया, तदनन्तर वह दोनोंबाणोंसे भिदेहुए युद्धमें अत्यन्त शोभायमान हुए हे राजा महापराक्रमी शिखण्डी उस युद्धमें अश्वत्थामा से युद्ध करने के लिये उनके सन्मुखगया तब तो क्रोधाग्निरूप अश्वत्थामाने सन्मुख बर्त्तमान होनेवाले शिखण्डीको बड़े तीक्ष्णनाराचनाम बाणोंसे अत्यन्त घायल करके महा कंपायमान किया, तिस पीछे हे राजा शिखण्डी ने भी बड़े तीक्ष्ण पुंखवाले पीतरंगके शायकोंसे अश्वत्थामा को घायलकिया, और युद्ध भूमि में परस्पर बहुत प्रकार के बाणोंसे संग्राम किया और सेनापति रा-

जाविराट संग्राम भूमिमें राजा भगदत्त के सन्मुख गया तिसपीछे युद्धहोना प्रारंभहुआ और राजा विराट ने महा क्रोधित होकर भगदत्त के ऊपर बाणों की ऐसी वर्षा करी जैसे बादल अपने जल से पर्व्वतपर वर्षाकरताहै फिर भगदत्तनेभी बड़ेशीघ्रतासे उसराजा बिराट को संग्राम भूमिमें बाणोंके मारे ऐसा आच्छादित करदिया जैसे बादल सूर्य्य को आच्छादित करते हैं, और केकय देशीय शरद्वत कृपाचार्य्यजी वृहच्छत्र के सन्मुख गये, हे भरत बंशी कृपाचार्य्य जीने बाणोंकी वृष्टिसे उसको ढकदिया और वृहच्छत्रने भी महा क्रोध युक्त होकर गौतम कृपाचार्य्यजी को बाणोंकी वर्षा सें व्याकुलकर दिया, तदनन्तर हे राजा वह दोनों परस्पर में धनुष को काट घोड़ोंको मारके विरथ होकर महाक्रोधों में भरेहुए खड्ग युद्ध करनेलगे, उनदोनों का वह युद्ध भयानक रूप देखने वालों कोभी भयकारी विदित होता था, तिसपीछे शत्रुसंतापीमहा क्रोधाग्नि रूप राजाद्रुपद सिंधुके राजाजयद्रथ के सन्मुखगयातब जयद्रथ ने द्रुपद को तीनविशिखोंसे युद्ध भूमिमें घायल किया और इसी प्रकार द्रुपदनेभी जयद्रथको फिरउन दोनोंका युद्ध भयानक दुःखसे प्राप्तहोने के योग्य देखने वालों को प्रसन्नता देने वाला होताहुआ जैसाकि मंगल और शुक्रका युद्धहोताथा तिसपीछेआप का पुत्र विकर्ण बड़े शीघ्रगामी घाड़ोंके द्वारा भीमसेन के पुत्रमहा पराक्रमी सुतसोमके सन्मुख गया और युद्धहोने लगा विकर्णने सुतसोम को और सुतसोमने विकर्ण को बाणोंसे वेधितकरकेकंपायमान नहींकिया इसमें बड़ा आश्चर्य्य साहुआ, नरोत्तम महारथी पराक्रमी पांडवोंपर अत्यन्त क्रोधरूप चेकितानसुसर्मा के सन्मुख गया, हेमहाराज युद्धहोनेलगा और सुशर्माने युद्धमें चेकितान को बाणोंकी बड़ी वर्षा करके रोंकातब तो चेकितान ने भी महाक्रोध रूप होकर बाणोंकी वर्षा से सुशर्मा को ऐसा आच्छादित करदिया जैसेकि बड़ा बादल पहाड़ को आच्छादित करलेता है, हेराजाइस के पीछे पराक्रमी शकुनि महाबली प्रतिविन्ध के सन्मुख इसतीव्रता

से गया जैसे कि सिंह मतवाले हाथीके सन्मुख जाता है, युधिष्ठिरके पुत्र प्रतिबिन्ध ने महा क्रोधित होकर सुबलके पुत्र शकुनि को तीव्र बाणोंसे ऐसा अत्यन्त घायल किया जैसे कि इन्द्र दैत्यों को करता है और शकुनिनेभी बड़े ज्ञानी महाबली प्रतिबिन्ध को अत्यन्त सपक्षबाणों से विदीर्ण करदिया, और श्रुतकर्म्मा कांबोज के महारथी पराक्रमी राजा सुदक्षिण के सन्मुख गया, हेराजा तिसपीछे सुदक्षिणने सहदेवके पुत्रको घायलकरके मैनाकपर्व्वतके समान कंपायमान नहींकिया, इसकेपीछे श्रुतिकर्मीने भी कांबोजके महारथी सुदक्षिण को बाणोंसे अनेक रीति करके आच्छादित कर दिया, तदनन्तर शत्रु संतापी युद्धमेंकुशल अत्यन्तक्रोध युक्त अर्जुनका पुत्रइरावान श्रुतायुषके सन्मुख गया, औरमहारथी बलवान् इरावान ने युद्धमें उसके घोड़ोंको मारकर बड़े वेगसे शब्द किया जिससे कि संपूर्ण सेनामें शब्दभरगया, और अत्यन्तक्रोधयुक्त श्रुतायुषनेभीअर्जुन के पुत्र इरावानके घोड़ोंको गदाओंसे मारडाला फिर युद्धहोने लगा, फिर आवंत्यदेशके राजाविन्द अनुविन्द दोनों महावीर कुन्तभोज के सन्मुख युद्धमें उपस्थित हुये, हे राजा वहां हमने उनदोनोंके अपूर्व भयानक पराक्रमोंको देखा अर्थात् वहदोनों बड़ी सेना समेत युद्ध करनेमें प्रवृत्त हुये, अनुविन्दने गदासे कुन्तभोजको घायल किया और कुन्त भोजने शीघ्रही अपने बाण समूहोंसे उसको ढकदिया, फिर कुन्तभोज के पुत्रने भी शायकों से विन्द को पीड़ामान किया और उसने उसको पीड़ित किया यहभी आश्चर्य्यसाहुआ, हे धृतराष्ट्र के कयदेशी पांचोंभाइयोंने सेनाओंसमेत संग्राम भूमि में नियत होकर गन्धारियों के सन्मुख होकर महायुद्ध किया, फिर आपका पुत्र बीरबाहु रथियों में श्रेष्ठ बिराटके पुत्र उत्तरसे युद्ध करनेलगा और नौ बाणोंसे उसको घायल किया, उत्तर नेभी अपने तीव्रबाणों से उस वीरको विदीर्ण करदिया, और चंदेरी के राजाने उलूक के सन्मुख जाकर बाणों से उलूक को घायल किया और उलूक नेभी बड़ी तीव्रतासे शीघ्र गति वाले बाणोंसे उसको विदीर्णकिया,

हे राजा उन दोनोंका युद्धभीमहाघोर भयकारी हुआ और क्रोधित होकर दोनोंने परस्पर एकने दूसरे को घायल किया, इस प्रकार तेरेपुत्र और पांडवों के रथ गज अश्वों से संकुलित युद्धमें हजारों योधा लोगोंके द्वंद्व युद्धहुए हेराजा एक मुहूर्त्ततक तो उनका युद्ध अच्छा देखने के योग्यहुआ फिर उन्मत्तोंके समान हुआ उससमय वहां कुछभीनहीं जाना गया अर्थात् ध्यानकरकेदेखा तो युद्ध भूमिमें गजारूढ़ गजारूढ़ के साथ रथी रथीके साथ अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और पदाती पदातियों के साथ सन्मुख हुए तिसपीछे परस्पर युद्धमें सन्मुख होकर शूरवीरों का महा कठिन युद्धहुआ और सब महा व्याकुल होगये वहां युद्धदेखने को आयेहुए देव ऋषियोंने और सिद्ध चारणोंने देवता और असुरों के युद्ध के समान महाभयकारी युद्ध को देखा, हे धृतराष्ट्र तिसपीछे हजारों हाथी रथ और घोड़ोंके सवारोंके समूह और पुरुषोंके समूह मर्य्यादा रहितहोकर परस्पर में युद्ध करनेलगे और जहां तहां रथ हाथी और घोड़ोंके सवार बारंबार लड़ते हुएदृष्टपड़े ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा जहां तहां लाखों पदाती मर्य्यादासे विरुद्ध लड़ने में प्रवृत्त हुए उसका वृत्तान्त मैं तुमसे कहताहूं, उस युद्धमें पुत्रने अपने पिताको न जाना और पिताने पुत्र स्त्री को नहीं जाना और भाईने भाईको न जाना और भानजेने मामाको और मामाने भानजे को और मित्रने मित्रको नहींजाना किंतु भूतादि के आवेश युक्त पुरुषों के समान वह सबलोग कौरव और पांडवों के पक्ष में एक एकसे लड़ते हैं, हे भरतर्षभ कोई २ नरोत्तम शूरवीर रथोंमें सवारहो होकर सेनाके भागोंपर जा टूटे और रथोंहींसे रथोंकेजुओं को तोड़डाला, रथाधीश रथाधीशों से और कूवररथकूवरों से खंडित हुए और केई २ परस्परमें मारनेकी इच्छासे सन्मुख आने वालों

से युद्ध करनेलगे कोई रथतो रथोंसेहोटकरें खाकर चलनेकेयोग्य नहींरहे और बड़े डोलडौल के रथ आदि बड़े २ हाथियोंसे मिल कर टुकड़े २ होगये, हे महाराज वहां बहुत से क्रोधभरे हाथी अपने दांतोंसे घायल करतेहुए अंबारी और पताकावाले युद्धके महागजेन्द्र हाथियों से मिलकर अत्यन्त पीड़ा से पुकारते थे, शिक्षाओंसे सीखेहुए चावक और अंकुशों से घायल बिना मदवाले हाथी मदों के चूनेवाले उन्मत्त हाथियोंके सन्मुखहुए, और कोई २ मदचूने वाले बड़े २ हाथी हाथियों से भिड़े हुए क्रौंचकेसमानशब्दोंको करते हुए जहां तहां भागे, इसी प्रकार अच्छे हमला करने वाले गंडस्थलों से मद झाड़ने वाले उत्तमहाथी लाठी तोमर औरनाराचोंसे रुकगये, मर्मस्थलों से भिंदे हुए चिक्कारे मारतेहुए पृथ्वीपर गिरकर मृत्यु वशहुए और कोई २ हाथी महाभयानक शब्दोंको करतेहुए चारों ओर को दौड़े, हे महाराज हाथियों के चरण रक्षक शूरवीर लोग जोकि बड़े २ वक्षस्थल युक्त मिले हुए और प्रहार करनेवाले थे वह हाथकोयष्ठी धनुष और निर्मल फरसे गदामूसल गोफन तोमर परिघ और स्वच्छतीक्ष्ण खड्ग,इनसब शस्त्रोंको अच्छे प्रकार से धारण किये हुए अत्यन्त क्रोधमेंभरे परस्परमें एकदूसरे के मारने की इच्छा करते हुए जहां तहां दौड़ते दृष्टपड़े, परस्पर में एकएक के सन्मुख दौड़ते हुए शूरवीरों के खड्ग मनुष्योंके रुधिरों से भरेहुए शोभायमान दृष्टि में आये, बीरोंकी भुजाओंसे अधोमुख और ऊर्ध्वमुख गिराये हुए शत्रुओं के मर्मों पर पड़े हुए खड्गों का तुमुल शब्द उत्पन्न हुआ, गदा और मूसलों से टूटे हुए अंग और उत्तम खड्गों से कटेहुए हाथियों के दांतों से घायल हाथियोंसेही खुदे हुए मनुष्यों के जहां तहां परस्पर पुकारेहुए भयकारी ऐसे बचन सुनेगये जैसे कि प्रेतों के शब्द सुनने में आते हैं, अश्वारूढ़ मनुष्यों से और अन्य तीव्रगामी अश्वों की सवारी से परस्पर में सन्मुखताहुई, उनके छोड़े हुए शीघ्रगामी निर्मलसर्पों के समान जांबूनद सुवर्णसे अलंकृत भाले उनके अंगोंपर परस्पर

में पड़े कितनेही बीरोंने उत्तम गतिवाले घोड़ों से बड़े रथों को संयुक्तकरके घोड़ोंसमेत रथोंको और सवारों के शिरोंको काटा, और रथ के सवारने बहुतसे अश्वारूढ़ों को पाकर बड़े झुकेहुए पर्ववाले भालों से उन बाणों से भिंदेहुओं को मारा, मदोन्मत्त सुनहरी भूषणवाले हाथियोंने नवीन बादल के समान रंगीनघोड़ों को तिरस्कार करके अपने पैरों से मर्दन किया, बड़े भयानक कितनेही हाथी मस्तक और देह में कवच आदि से भी अलंकृत भालों से मारेहुए बड़े पीड़ामान शब्दों को करते थे फिर वहां महा युद्ध होनेपर कितनेही उत्तम हाथियों ने सवारों समेत घोड़ों को मथकर वा उठाकर फेंक दिया हाथी अपने दांतों की नोकसे सवारों समेत घोड़ों को ऊंचेको उठाये ध्वजाधारी रथ समूहों को मर्दन करतेहुए चारोंओर घूमनेलगे और कितनेही बड़े हाथियोंने बड़ी बीरता और मदोन्मत्ततासे अपनी सूंड़ और चरणों के द्वारा सवारों समेत घोड़ों को मारा, यह अनर्थ देखकर चारोंओर से हाथियों के मस्तक वा अंग वा पसली और जंघाओं पर बड़े शीघ्रगामी सर्पोंके समान तीक्ष्ण बाण गिरे, और हे राजा जहां तहां बीरोंकी भुजाओं से मारीहुई बरछियां लोहे के कवचों को काटकर मनुष्य और घोड़ों के शरीरों पर पड़ीं वह बरछियां महा भयानक उल्काओं के रूप थीं, और इसी संग्राम में चित्र व्याघ्र चर्मसे बंधेहुए और व्याघ्र केही चर्ममें रहनेवाले मियान से बाहर स्वच्छ खड्गोंसे शत्रुओं को मारा, निर्भय मनुष्य के सन्मुख जाना और काटना आदिक सब कर्मोंको करना और बाईं ओर को सवारीकरना इत्यादि चेष्टाओं को दिखलाते खड्ग ढाल और परशु नाम शस्त्रों समेत गिरे, कितनेही हाथी सूंड़ोंसे घोड़ों समेत रथों को खैंचते थे और खैंचनेवाले हाथियों के शब्दों को सुनकर सब के सब चारों ओर को गये, कितनेही मनुष्य डंडोंकी कीलोंसे कटेहुए और परशुओं से मारेहुए थे और बहुत से हाथियों से मर्दित हुए और कितने ही घोड़ों से अत्यन्त घायल हुए, हे महाराज जहां तहां

कितनेही मनुष्य बांधवों को पुकारते हुए रथोंके पहियों से दबकर परशुओं से कटगये, और कहीं संग्राम में अपने पुत्रों को कोई भाइयोंको और मामा वा भानजों को अथवा अन्य लोगोंकोपुकारतेहुए घायल होकर मारेगये, हे भरतबंशी जिनकी आंतेंफैलगईं और जंघा टूटगईं ऐसे सब मनुष्य होगये और बहुतसेकटीहुईभुजाओंसमेत अंगोंसे रहित हुए, और अनेक मनुष्य जीवन का इच्छा करतेहुए अत्यन्त रोदन करते दृष्ट पड़े बहुतेरे प्यासे और धैर्य्य को छोड़हुए जल को खोजते थे, हे राजा उन रुधिरोंसे भरेहुएदुखियोंने आप समेत आपके पुत्रोंकी निन्दाकरी, हे धृतराष्ट्र अच्छशूरबीर क्षत्रिय न तो शस्त्र को छोड़ते हैं न रोते और पुकारते हैं, हे राजाजहांतहां अत्यन्त प्रसन्नचित्तशूरबीरलोग क्रोधसे अपनेदांतोंके द्वारा ओठोंको काटकर निन्दायुक्त बचनोंको कहतेहैं, कोई२ धैर्य्यवान् महाबली बाणों से महा व्याकुल और घावों से पीड़ितहोकर महा कष्टसे मौन होगये, कितनेही शूरबीर युद्ध में रथ से बिहीन और उत्तम हाथियों से अत्यन्त घायल दूसरे के रथों की इच्छा करतेहुए मार्गमें गिरपड़े, हे महाराज वह फूलेहुए किंशुक वृक्षके समान शोभायमानहुए और इसके विशेष सेनामें भयकारी अनेक शब्द प्रकटहुए, इस बड़े भयानक और उत्तम बीरोंके नाशकरने वाले युद्धकेहोनेपर संग्राम भूमिमें पिताने पुत्र को और पुत्रने पिता को मारा, मामाने भानजे को और भानजेने मामा को मित्रनेमित्र को इसीप्रकार बांधवोंने बांधव आदि संबंधियों को भी मारा, इस रीतिसे पांडवोंसे और कौरवोंसे उस भयानकरूप मर्य्यादा से रहित बड़े भयकारी युद्धकेहोनेपर यह सर्वसंहारजारीहुआ, हेभरतर्षभपांच नक्षत्रवाले ताल ध्वजा समेत भीष्मजीकोपाकरअर्थात्सन्मुखहोकर पांडवों की सेना अत्यन्त कंपायमान हुई, उस समय वह महाबाहु भीष्मजी सुवर्ण निर्मित उत्तमध्वजासमेत विस्तृत रथमें बैठेहुए ऐसे शोभायमानहुए जैसे कि मेरु पर्व्वतपर चन्द्रमाशोभितहोताहै, ४६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा उस महा भयानक दिनके मध्याह्नव्यतीतहोने और इस रीतिसे उत्तम लोगों के नाश वर्त्तमान होनेपर, आपके पुत्र की आज्ञा लेकर (दुर्मुख)(कृतवर्मा)(कृपाचार्य्य)(शल्य) और विविन्शति ने भीष्मजी के पास आकर उनकी रक्षा करी, हे भरतर्षभ इन पांच अति रथी बीरों से रक्षित महारथी भीष्मजीने पाण्डवों की सेना में प्रवेश किया, और हे धृतराष्ट्र (चेदि)(काशि)(कुरुष) और पांचाल देशकी सेनाके मध्यमें भीष्मजीकी तालरूप ध्वजा बहुत सुन्दर दृष्ट पड़ी, उस बैरिणी युद्धमें बड़े बेगवान् अतिशय झुकेहुए भल्ल नाम बाणों से भीष्मजी ने शिर और ध्वजायुक्त रथों को रथके जुए से आदि अंगों समेत काटा, हे भरतर्षभ नक्षत्र के समान भीष्मजी के घूमने पर मर्मस्थलों से घायल कितनेही हाथियों ने पीड़ाके शब्द किये, उस समय अभिमन्यु अत्यन्तक्रोध में भराहुआ पिंगलबर्ण उत्तम घोड़ोंके रथ में बैठकर भीष्मजी के रथके सन्मुख आया, और जांबूनद सुवर्ण से रचित कर्णिकार वृक्ष के चित्र की रखनेवाली ध्वजा समेत भीष्मजी को आदि ले उन उत्तम पांचों रथियों के सन्मुख हुआ, फिर वह बीर भीष्मजी की ताल ध्वजाको तीक्ष्ण बाणों से छेदकर उन पीछे चलनेवाले पांचों रथियों से युद्ध करनेलगा, एक बाण से कृतवर्मा को और पांच बाणों से शल्य को और नौ उत्तम बाणों से पितामह को घायल किया, और जांबूनद सुवर्णसे शोभित एक उत्तम शायकसे उनकी ध्वजा को काटा, और सब पर्दों के भेदन करनेवाले झुकेहुए पर्व वाले एक भल्ल नाम बाण से दुर्मुख के सारथी का शिरदेह से जुदा करदिया, सुवर्ण से बनेहुए महा शोभायमान कृपाचार्य्यजी के उत्तम धनुष को तीक्ष्ण नोकवाले भल्ल से काटा और महाक्रोध रूप होकर उस महारथी ने अपने तीव्र बाणोंसे उन सब को भी घायल किया देवता लोग भी आकाश से उस शीघ्र हस्तलाघवता

को देखकर प्रसन्नहुए, और भीष्मआदि सब रथियोंने उसअर्जुन के पुत्र अभिमन्युके लक्षभेदन से उसको साक्षात् अर्जुन के समान पराक्रमी माना, और घुमाये उल्मुककेसमानप्रकाशित निर्विघ्नमार्ग में नियत उसका मण्डल दिशाओंमें गिरा और गांडीवधनुषकेसमान उसको शब्दायमान किया, तबशत्रुओंके मारनेवाले भीष्मजीनेशीघ्रतापूर्व्वक उससे आगेहोकर युद्ध भूमिमें शीघ्र गतिवाले नौबाणोंसे तत्कालही उस अर्जुनकेपुत्रको घायल किया, और बड़े पराक्रमीदृढ़ व्रत सावधान भीष्मजीने इसको ध्वजाको तीन भल्लोंसे काटा और उसके सारथीको तीन बाणोंसे मारा, हेराजा इसीप्रकार कृतबर्म्मा कृपाचार्य्य और शल्यनेभी अर्जुनके पुत्रको घायल करके ऐसेकंपायमानही किया जैसे मैनाक पर्व्वतको कंपायमान नहीं करसके, फिर उनमहारथियोंसे घिराहुआ अर्जुनकापुत्र अभिमन्यु पांचोंरथियोंके ऊपर बाणोंकी बर्षा करके पांचोंके अस्त्रोंको अपने बाणोंसे रोककर भीष्मजीके ऊपर बाणोंको छोड़ताहुआ बड़े वेगसे गर्जा उससमय हे राजा वहां उस युद्धमें उपाय करने वाले और बाणोंसे भीष्मको मारने वाले अभिमन्युका बड़ाभारी भुजबल विदित हुआ, तब भीष्मजीनेभी उस पराक्रम कर्त्ताके ऊपर बाणोंको छोड़ा फिर उसने युद्धमेंभीष्मजीके धनुषसे छूटेहुए बाणोंकोकाटा, तिसपीछे उससफल बाणवाले वीरने भीष्मजीकी ध्वजाको फिर नौतीरोंसे काटा इस कारण सबलोग बड़े शब्दसे पुकारे, हेभरतबंशी वहबड़ी शाखा युक्त सुवर्णसे शोभित सुवर्णित ताल वृक्ष अभिमन्युके विशिषनाम बाणोंसे कटाहुआ पृथ्वीपर गिरा, हेभरतर्षभ अभिमन्युके विशिषोंसे घिरीहुई ध्वजाको देखकर भीमसेनने महाप्रसन्न होकर उस अभिमन्युको प्रसन्न करके बड़ी गर्जनाकी, इसके पीछे महाबली भीष्मजीने उस महाभयकारी युद्धमें बहुतसे दिव्यमहा अस्त्रोंको प्रकट करके सुभद्राके पुत्र अभिमन्युको हजार बाणोंसे ढकदिया यह आश्चर्य्यसा होगया, यह देखकर हेराजा आगेलिखे हुये पाण्डवों के महारथी बड़े धनुषधारी रथोंमें सवार होकर शीघ्रही अभिमन्युको

रक्षाके लिये दौड़े उनके नाम यहहैं कि उत्तरनाम अपनेपुत्र समेत राजा (विराट्) पर्षतकापुत्र (धृष्टद्युम्न) (भीमसेन) (केकय) सात्विकी, शंतनुकेपुत्र भीष्मजीने युद्धमें उनतोंब आनेवालोंके मध्य में धृष्टद्युम्नको तीन बाणोंसे और सात्विकीको नौबाणोंसे घायल किया, और कर्ण पर्य्यन्त खैंचकर छोडे हुये तीक्ष्णधार वाले एकबाण से भीमसेनकी ध्वजाको काटा, हेनरोत्तम भीमसेनकी ध्वजा सिंहके चित्रकी स्वर्णमयी भीष्मसे गेरीहुई पृथ्वीपर गिरी, तदनन्तर भीमसेनने शंतनुकेपुत्र भीष्मजीको बाणोंसे घायल करके एकबाणसे कृपाचार्य्यको और आठबाणोंसे कृतवर्म्माको घायल किया, और उत्तरनाम विराट्कापुत्र अग्रभागमें सूंड़की कुंडली बनाने वाले हाथीपर सवार होकर मद्रदेशके राजा शल्यके सन्मुख दौड़ा, शल्यने बड़ीतीव्रतासे रथपर गिरनेवाले उसगजेन्द्रके महावेगको रोका, फिर उस क्रोधित गजेन्द्रने चरणोंसे रथके जुयेको दबाकर उसके चारों उत्तम सवारीके घोड़ोंको मारा, ३७ मृतक घोड़े वाले रथपर नियत राजा मद्रने सर्पके समान और उत्तरके नाश करने वाली लोहेकी बरछी को फेंका, उसबरछीसे जिसका कवच कटगया ऐसा वह उत्तर बिस्मरणतामें आकर हाथीके ऊपरसे नीचेगिर पड़ाऔर गिरतेही उसके हाथसे अंकुश और तोमर छूटपड़े, फिर शल्यने अपने रथसे उतर खड्ग हाथमें लेकर बड़े पराक्रमसे उसके गजेन्द्र की बड़ीभारी सूंड़को काटडाला, वहहाथी बाण समूहोंसे भिंदाहुआ कवच टूटा कटीहुई सूंड़से भयानक शब्द करताहुआ महादुःखोंसे पृथ्वीपर गिरकर मरगया, हेराजा शल्य ऐसाकर्म करके शीघ्रही कृतवर्म्माके प्रकाशवान् रथपर चढ़गया, तब विराट्केपुत्र श्वेतने भाई उत्तरको मृतक देखकर और साथमें बड़े वीरलोगोंको जानकर क्रोधयुक्त होके गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से उनके धनुषोंको काटा, हे भरतवंशी वहधनुष कटेहुये दीखपड़े तदनन्तर उन्होंने अर्द्ध निमेषमेंही अपने सब धनुषोंको तैयार करके सातबाण श्वेतको मारे तदनन्तर अपारबुद्धि श्वेतने सात भल्लोंसे उन धनुषधारियों के

धनुषोंको काटा,वह धनुष कटे हुये महारथी दिव्यवरछोंको हाथमें लेकर भयकारी शब्दोंको करने लगे और सातोंबरछों को उन्होंने श्वेतके रथपर छोड़ा,तिसपीछे परम अस्त्रोंके जानने वाले श्वेतने उन ज्वालारूप प्रकाशित उल्का और बज्रके समान शब्दायमान सातों वरछोंको अपने सातभल्लोंसे बीचहीमें काटडाला, तदनन्तर हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ श्वेतने सब शरीरके छेदने वाले बाणको रुक्मके रथपर चलाया,वह बाण उसके मुखको उल्लंघन करके बड़ीतीब्रतासे उसके शरीरमें प्रवेशकरगया इसकेपीछे हेराजा रुक्म रथी शायक नाम बाणसे घायल होकर रथके बैठनेके स्थानमें बैठ गया और बड़ी अचेततामें प्रबृत्तहुआ परन्तु शीघ्रता करने वाला उसका सावधान सारथी उसको अचेत जानकर सबको देखतेहुये बहुत दूरलेगया तदनन्तर महाबाहु श्वेतने सुवर्णसे शोभित दूसरे घोड़ोंको लेकर,उनछओंकी ध्वजाओंको नोकोंको गिराया फिर हेराजा वहश्वेत शेषबचे हुये घोड़ोंको बाणोंसे आच्छादित करकेशल्य के रथपर गया,हेभरतबंशी इसके अनन्तर शल्यके रथपर जातेहुये सेनापति श्वेतको देखकर आपको सेनाके मनुष्योंमें बड़ा हलचल का शब्द हुआ फिर आपका पुत्र महाबली भीष्मजीको आगेकरके सबसेना के मनुष्यों समेत शल्यके रथपर गया और मृत्युके मुखमें फंसे हुये मद्रके राजा शल्यको बचाया,इसके पीछे आपके पुत्रऔर प्रतिपक्षियोंमें महा रोमहर्षण करने वाला तुमुल युद्ध हुआ जिसमें रथ और हाथी संयुक्तथे,कौरवोंके पितामह बृद्धने (अभिमन्यु) (भीमसेन) महारथी (सात्विकी) (केकय) (विराट्) (धृष्टद्युम्न) (पर्वतकापुत्र) इननरोत्तमोंपर और राजाचंदेली की सेनाके पुरुषोंपर बाणोंकी बृष्टिकी,५६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिश्वेतयुद्धे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इस प्रकार शल्यके रथके पास बड़े

धनुषधारी श्वेतके वर्त्तमान होनेपर कौरव और पाण्डवोंने क्या २ कर्म किये और शान्तनु भीष्मजीने क्या किया उसको मेरे आगे वर्णन करो, संजय बोले हेराजा इसके पीछे लाखों उत्तम शूर वीर और महारथी क्षत्री उस सेनापति श्वेतको आगे करके आपकेपुत्र राजा दुर्य्योधनको अपना पराक्रम दिखलातेहुये शिखण्डीको आगे कर रक्षा करनेकी इच्छा करके, युद्धकर्त्ताओंमें उत्तम भीष्मजी को मारनेकी अभिलाषा करते हुये उनके सुवर्ण जटित रथके समीप उनकी सन्मुखतामें आकर बर्त्तमान हुये उस समय बड़ा भारी युद्ध हुआ, अबमैं उस युद्धको कहताहूं जिस रीतिसे तुम्हारे पुत्रऔर दूसरे लोगोंका युद्ध प्रचलित हुआ, उस युद्धमें भीष्मजीने रथीलोगों के स्थानोंको खाली करके उनके शिरोंको काटा, सूर्य्यके समान प्रतापी युद्धमें चारों ओरसे पीड़ित करते हुये भीष्मजीने बाणोंसे सूर्य्यको ऐसेढकदिया जैसे उदय होकर सूर्य्य अंधेरेकोढक देताहै, हेराजा उन्होंने युद्धके बीच क्षत्रियोंके नाश करने वाले बड़े शीघ्र गामी लाखोंतीव्र बाणोंकीवरसा करी, युद्धमें अनेकशूरोंके शिरोंको गिराया हेराजा भल्ल और बाणोंसे युक्त शिरसे रहित बहुतसे रथी रथमें बैठे हुये दिखाई दिये, रथीरथीके ऊपर अश्वपति अश्वपतिके ऊपर बर्त्तमान हुये, और सेनाके साथ मरे हुये धनुषों समेत रथमें पड़े हुये वीरोंको उनके रथोंके घोड़े इधर उधर लेजाते हुए दृष्टपड़े, खड्ग और तूणीर के बांधनेवाले कटेहुए शिरों से बर्त्तमान हुए और सैकड़ों पृथ्वीपर पड़े हुए बीरोंकी शैयाओंपर सोतेहैं, और परस्पर में दौड़ते गिरतेहुए फिर उठ खडेहुए और उठकर अत्यन्त दौड़नेवालोंने द्वन्द्वयुद्ध को मचाया, फिर परस्पर में पीड़ित होकर युद्ध भूमिमें फिरनेलगे मतवाले हाथी चारोंओर से गिरे और जिनके सारथी मारेगये वह भी हाथी घोड़े गिरपड़े, रथों के साथ रथीलोग चारोंओर से मर्दन करनेलगे और कोई किसी के बाण से मराहुआ रथ से गिरा, और जिसका सारथीमारागया वह बड़ा रथ भी काष्ठ के समान गिरा और द्वन्द्व युद्ध में

धूलके उठने पर, लड़नेवाले का विज्ञान और सन्मुख युद्ध करनेवालोंके शब्द ध्वंसहुए युद्ध करनेवालों का शरीर छूनेसे शत्रुका ज्ञान होताथा, हे राजा विजय करनेवाली सेना बाणोंसे लड़नेवालों को उल्लंघन करगई और बीरोंके कहेहुए बीर शब्द परस्पर में सुनाई नहीं दिये,युद्धके शब्दायमान होने और कर्ण फाड़नेवाले पटहशब्द होनेपर युद्ध करतेहुए अपनी शूर बीरता करने का परस्परमें पिछली शूरताओं का बर्णन करना भी नहीं सुनागया, भीष्मजीकेधनुषसे निकलेहुए बाणोंसे पीड़ामान और युद्ध में लड़नेवालों का भी बर्णन नहीं सुनाई दिया,एक ने दूसरे बीरोंके मनोंको कंपितकिया उस बराबर व्याकुल करनेवाले रोमहर्षण तुमुलयुद्धमें, कोई पिता अपने निज पुत्रको नहीं जानता था रथके पहिये और जुए टूटगये और एक भारबाहक घोड़ा मारागया, जुए के और पहिये के टूटने और रथको स्वाधीन रहित होनेपर सारथी समेत बीर लोग सूधे चलनेवाले बाणोंके द्वारा रथों से गिराये गये, और परस्परमें लड़तेहुए दृष्टपड़े जो मारागया वह शिरसे रहित हुआ था मर्मस्थलोंमें घायल होकर मरा, भीष्मजी के हाथसे शत्रुओंकेमनुष्यों को मरतेहुए कोई भी बिना घायल के नहीं बचा कौरवोंके उसबड़े युद्धमें आप श्वेतने, राजकुमारोंको और सैकड़ों समूहवाले बड़े २ पुरुषों को मारा और हजारों समूह युक्त रथियों के शिरोंको काटा, हे भरतबंशी उस युद्ध भूमि में चारों ओर से बाजू बन्दों समेत भुजा वा धनुष और रथी पदाती रथ वा रथोंमें सवार छोटी बड़ी पताका अथवा घोड़ों के और रथोंके समूह वा मनुष्यों के समूह सैकड़ों हाथियों समेत श्वेत शूर बीर के हाथों से मारे गये उसके पीछे हम भी श्वेत के भय से भयभीत होकर अपने उत्तम रथको छोड़कर दूर चलेगये, और यहां पर आपकी चिन्ता को देखते हैं सोहे कौरव नन्दन हमसब कौरव लोगबाणों की झड़ीको बिचार कर वहां पर नियत, शान्तनु भीष्मजी को देखनेलगे वह नरोत्तम बड़े उदार प्रतापी हमारे वृद्ध पितामह भीष्मजी भयके

समय बड़े भारी युद्धमें, निश्चल मेरुपर्व्वतके समान अकेलेही नियत हुए और जैसे चैत्र बैशाखमें सूर्य्य अपनी किरणोंसे पृथ्वीके रसादिकोंको आकर्षणकरताहुआ नियत होताहै उसी प्रकारवहशीतल किरणों वाला भीष्मभी शत्रुओं के प्राणोंको खेंचता हुआ नियत हुआ युद्धमें शत्रुओं को मारतेहुए उसधनुष धारीने बहुत प्रकार से बाणोंके समूहों को ऐसे छोड़ा जैसे कि चक्रधारी बिष्णु असुरों पर छोड़ते हैं तब भीष्मजी से घायल हुए बीर लोगोंने भीष्म को त्याग किया और अपने सब समूहों कोभी काष्ठसे छुटीहुई अग्निके समान शत्रुओंके समूहों से पृथक् किया प्रसन्न चित्त देहसे प्रफुल्लित शत्रु संतापी दुर्य्योधन के प्रयोजन करने में प्रवृत्त चित्तअकेलेभीष्म जीने उस अकेले श्वेतको अपने सन्मुख देखकर पांडवोंको बहुत शोषणकिया हे राजा जीवनको और उससे उत्पन्नहुए भयको त्यागकर उसमहा युद्धमें पांडवोंकी सेनाके मनुष्योंको मारकरगर्दमर्द किया फिर आपके पितादेव व्रत भीष्मजी उस सेनाओंके मारने वाले सेनापति को देखकर बड़ी शीघ्रगतिसे सन्मुख हुआ उस समयउस श्वेतने बाणोंके महा जलोंसे भीष्मजीको आच्छादित करदिया,इसी प्रकार भीष्मजीनेभी बाणोंके समूहों से श्वेत को ढकदिया और फिर वह दोनों बैलों के समान गर्जतेहुए बड़े मतवाले हाथी और व्याघ्र के समान अत्यन्त क्रोधमें भरे परस्परमें आघात करने लगे, तदन्तर वहदोनों पुरुषोत्तम अस्त्रों से अस्त्रों को रोककर,परस्पर मारने के इच्छावान युद्धमें प्रवृत्त हुए अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजी पांडवों की सेनाको एकही दिनमें भस्मकर डालते जो श्वेत रक्षा न करतातिस पीछे श्वेतसे मुख फेरेहुए पितामह को देखकर पांडवोंने बड़ाहर्ष मनाया, और आपका पुत्रउदास हुआ तदन्तर क्रोधमें भराहुआ दुर्य्योधन अपनेसाथी राजाओंसमेत सेनाके मनुष्योंको साथलिये युद्धमें आकर पांडवों की सेनाके सन्मुख दौड़ातबश्वेतने गंगाकेपुत्र भीष्मजी को छोड़कर बड़ी तीव्रता से आपके पुत्रकी सेनाका ऐसे नासकिया जैसे बायु अपने बलसे वृक्षोंकानाश करतीहै, वहक्रोध

से भराहुआ बिराट् का श्वेतनाम बड़ा पुत्र दुर्य्योधन की सेनाका नाश करके वहां से लौट कर फिरवहीं आपहुंचा जहांपर भीष्मजी नियतथे, हे राजन् वह दोनों प्रकाशवान महाबली महात्मा परस्पर में फिरऐसे युद्धकरने लगेजैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रलड़तेथे और परस्पर मारने की इच्छा करतेथे श्वेतने अपने धनुषको हाथ मेंलेकर भीष्मजी को सातबाणों से विदीर्ण किया इसके पीछे इस पराक्रमी ने उस पराक्रमी को बड़े पराक्रम से ऐसे हटा दिया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी को हटा देता है फिर क्षत्रियों के प्रसन्न करने वाले बिराट् के पुत्र श्वेत ने क्रोध करके युद्ध में धनुष को खेंचकर भीष्मजी को घायल किया, इसी प्रकार शांतनु भीष्म जीने भी उसको दश बाणों से बिकल करदिया, वह पराक्रमी भीष्मजी से घायल होकर भी पर्व्वत के समान कम्पायमान नहीं हुआ तदनन्तर फिर श्वेतनेगुप्त ग्रन्थि वाले पच्चीस बाणों से भीष्मजी को घायल किया, यह आश्चर्य सा हुआ और युद्धमें होठ को चाबने वाले श्वेतने अत्यन्त हंसकर, दश बाणोंसे भीष्मके धनुषको दश खण्ड कर दिये तिस पीछे बाणों के भी छेदने वाले विशिखों को चढ़ाकर, उन महा महात्मा भीष्म जी की तालध्वजा के शिर को मथन किया फिर आप के पुत्रोंने भीष्मजी की ध्वजा को गिरा हुआ देखकर, भीष्म जी को श्वेतके आधीन वर्त्तमान मृतक रूप माना और प्रसन्न चित्त पाण्डवों ने भी चारोंओर शंखोंको बजाया, महात्मा भीष्मजी की तालध्वजा को गिरा हुआ देखकर दुर्य्योधन ने बड़े क्रोध से अपनी सेना को जताया, कि उन देखनेवालोंको भी श्वेत मारेगा तब शान्तनु भीष्मजी भी मारे जायंगे इस लिये मैं तुम लोगों से कहता हूं कि बड़े उपाय से भीष्मजीके जीवन की इच्छा से तुम चारोंओर से उनकी रक्षा करो यह बात मैं सत्य सत्यही कहता हूं राजा दुर्य्योधन के बचनको सुनतेही शीघ्रता करनेवाले महा रथियों ने चार अंगवाली सेना समेत गंगाके पुत्र भीष्मकी रक्षा

करी, (बाल्हीक) (कृतबर्म्मा) (कृपाचार्य) शल्य (जरासन्धकापुत्र) (विकर्ण) (चित्रसेन) (विविंशति,) हे भरतबंशी इन सब शीघ्रता में शीघ्रता करने वालोंने चारों ओरसे भीष्मजी को मध्यमें करके श्वेतके ऊपर अस्त्रों की बर्षाकरी, हस्त लाघवताके दिखानेवाले और शीघ्रता करनेवाले महा बली बड़े बुद्धिमान् श्वेतने उन क्रोध भरे हुओं को अपने तीव्र बाणों से रोका, जैसे कि सिंह हाथियों को रोकता है उसी प्रकार श्वेतने उन सबोंको रोककर बाणों को बड़ीबरषासे भीष्मजीके धनुषको काटा,तदनन्तर हेराजन्युद्धभूमिमें शान्तनु भीष्म जीने दूसरे धनुष को लेकर कङ्कपक्ष युक्त शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणोंसे श्वेतको घायल किया, तिसपीछे हेराजन् लड़ाई में सब लोगों के देखते बड़े क्रोधयुक्त श्वेतने भीष्मजी को बड़े २ लोहेके बाणोंसे विदीर्णकिया, इसके अनन्तर राजा दुर्योधन उन सब लोगों के आगे बड़े बीर भीष्मजी को युद्धमें श्वेत से रुका हुआ देखकर बड़ा दुःखी हुआ, आपकी सेनाका बहुत देरतक निवास रहा और श्वेतके बाणोंसे विदीर्ण उस बीर भीष्मको देख कर, श्वेतके आधीन वर्त्तमान होकर उसके हाथसे मृतकरूपमाना इस पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजी क्रोधके बशीभूत हुए, हे महाराज ध्वजा को मथित करके उस सेनाको रोके हुए देख कर श्वेतके ऊपर अनेक शायकों की बर्षा करी, फिर रथियों में श्रेष्ठ श्वेतने उन बाणोंको रोककर फिरभी आपकेपिता भीष्मके धनुषको भल्लोंसे काटडाला, हे राजन् क्रोधमें भरेहुए भीष्म जीने धनुष को त्यागकर दूसरे अत्यन्त दृढ़ धनुषको लेकर शिलाके तीक्ष्ण किये हुए सात भल्लों को चढ़ाकर चार बाणोंसे तोश्वेतकेचारों घोड़ोंको मारा, और दो बाणोंसे ध्वजाको काटा और सातवेंभल्ल से सारथी के शिरको काटा,फिर वह महारथी श्वेत जिसके सारथी औरघोड़े मरगयेथे रथसे कूदकर क्रोधसे व्याकुलहुआपितामहनेरथियोंमेंश्रेष्ठ श्वेत को रथसे बिहीन देखकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से उसको चारों ओर से घायल किया, युद्धमें भीष्मजी के बाणोंसे घायलहुएश्वेतने

अपने रथपर धनुषको छोड़कर दिव्य सुवर्णित बरछी को धारण किया, तदनन्तर युद्धमें घोर भयानक उग्र कालदण्ड के समान नाश करने में महा समर्थ अपनी बरछी को लेकर, महा क्रोधरूप बुद्धिमान् श्वेतने भीष्म भीष्म ऐसा कहकर सर्पके समान बरछी को फेंका, हे राजन् उस समय आपके पुत्रोंने बड़ा हाहाकारकिया कि पाण्डवों के निमित्त पराक्रम करनेवाला श्वेत आपका अनर्थ करना चाहताहै, ऐसी सर्पाकार रूप वाली नाश द्योतक श्वेत की छोड़ीहुई बरछी को देखकर आपके पुत्रोंमें बड़ा हाहाकार हुआ, हेराजन् उसकी फेंकीहई बरछी एकाएकी उल्कापातके समान आकाश से गिरी तब भ्रांती से युक्त आपके पिता देवव्रतने उसपृथ्वी और आकाश के बीच, प्रकाशवान् किरणों से युक्त बरछीको आठ बाणों से काटकर नौ टुकड़े किये, वह उत्तम सुवर्णवाली बरछी तीक्ष्ण बाणों से कटगई इसके पीछे हे भरतर्षभ आपके सब पुत्र बड़े शब्दोंको करके पुकारे, तब क्रोधसे भरे कालसे विदीर्ण चित्त श्वेतने उस बरछी को खंडितहुई जानकर करने के योग्य कर्म को नहीं जाना, फिर क्रोधयुक्त और प्रसन्न मूर्त्ति श्वेतने भीष्मजी के मारनेकेलिये गदा को हाथमें लिया, और क्रोधसे अत्यन्त रक्तनेत्र दूसरे काल के समान भीष्मजी के ऊपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बादल पर्व्वतपर दौड़ताहै, प्रभाव के जाननेवाले भीष्मजी उसके वेग को न रोकने के योग्य मानकर अपने बचाव के लिये शीघ्रही पृथ्वीपर उतर पड़े, क्रोधके आधीन होकर श्वेतने अपनी उसगदा को घुमाकर भीष्मजी के रथपर ऐसा फेंका जैसे कि धनेश कुवेर अपनी गदाको फेंकताहै, उस भयानक घात करनेवाली गदाने घोड़ों समेत रथ सारथी और ध्वजाको अत्यन्त भस्म करदिया फिर महारथी भीष्मजी को रथसे विहीन देखकर रथियों में श्रेष्ठ शल्य आदिक महारथी एक साथ दौड़े, तदनन्तर महादुःखी भीष्मजी दूसरे रथमें बैठकर धनुषको टंकार करके हंसतेहुए धीरेपनेसे श्वेत के निकट आये, इसी अन्तर में भीष्मजीने आकाशसेउत्पन्न

वा अपना भलाकरनेवाली इस दिव्य वाणीको सुना, कि हेभीष्म हे भीष्म हे महाबाहु इसके विजय करने में शीघ्र उपाय कर यह समय ईश्वर से कहाहुआ है, देव दूत के कहेहुए आकाश से उस वचन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न चित्तहो भीष्मजीने उसके मारने में मनको लगाया, (सात्विकी) (भीमसेन) पार्षतकापोता (धृष्टद्युम्न) (केकय) (धृष्टकेतु) पराक्रमी (अभिमन्यु) यह सब महारथी उसरथियोंमें श्रेष्ठ श्वेतको रथसे विहीन देखकर एकसाथही चारोंओरको देखतेहुए लौटे उनको चारोंओरसे आतेहुए देखकर बड़े बुद्धिमान भीष्मजीने (द्रोणाचार्य्य) (शल्य) और कृपाचार्य्य को साथ लेकर उनको ऐसे रोका जैसे कि वायुके वेगोंको पर्व्वत रोके, महात्मा पाण्डव और सब के रुकजाने पर श्वेतने खड्गको खैंचकर भीष्मके धनुषको काटा, फिर शीघ्रता करनेवाले पितामहने उस टूटेहुए धनुषको छोड़कर और देव दूतके बचनको याद करके उसकेमारनेमें मनको प्रवृत्त किया, इसके पीछे आपके पिता महारथी शीघ्र ताकरनेवाले देवव्रत भीष्मने दूसरे धनुषको लेकर उस इन्द्रायुध के समान प्रकाशित धनुष को क्षणमात्र मेही तैयार किया, फिर हे भरतबंशियोंं श्रेष्ठ फिर आपके पिता भीष्मजी उन भीमसेन आदि पुरुषोत्तमों से चाहाहुआ उस महारथी श्वेत को देखकर उसके मारने में प्रवृत्त हुए, इसके पीछे प्रतापवान् महारथी भीमसेनने उस गिरते हुए सेनापति भीष्म को देखकर साठ बाणों से घायल किया फिर तो आपके पिता देवव्रतने भी युद्धकेबीच अपने घोर बाणोंसे अभिमन्यु आदि सब महारथियों को रोककर, उसी युद्धमें गुप्त ग्रन्थी वाले तीन बाणों से श्वेतको घायल किया और एकसौ तीन बाणोंसे सात्विकी को और बीस बाणोंसे धृष्टद्युम्नको और पांच बाणों से केकयको और बहुतसे बाण समूहोंसे शेष सब राजाओं को घायल करके रोक दिया जब सब रुकगये तब श्वेतके सम्मुख दौड़े तिस पीछे भीष्म जीने मृत्यु के समान कठिनता से आधर्ष होनेवाले बाणको तरकस से खैंचकर चढ़ाया, उस ब्रह्म

अस्त्रसे युक्त बज्रको भी काटने वाले बाणको, (देवता) (गन्धर्व) (पिशाच) (सर्प) और राक्षसोंने देखा वह बाण अग्निके समान प्रकाशित और महाबज्रके समान ज्वलित श्वेतके कवच को काटकर उसकी नाभिमें ऐसे समागया जैसे अस्तगत होता हुआ सूर्य्य शीघ्रही अपने प्रकाश को लेकर चलाजाताहै, इस रीतिसे वहबाण श्वेतके जीवन को लेकर गया हमने इस प्रकारसे युद्धमें उस नरोत्तम को भीष्मके हाथसे मरा हुआ पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसादेखा जैसे पर्व्वतसे गिरता हुआ शिखर होताहै उस स्थानमें पाण्डवोंको आदिले जो महारथी थे वह सब उसे देखकर युद्ध करने से बंदहुए और आपके पुत्रों समेत सब कौरव प्रसन्न हुए, तदनन्तर हे राजा दुश्शासन श्वेतको गिराहुआ देखकर, बड़े २ बाजोंके घोर शब्दों को करके चारों ओरको घूमने लगा युद्धमें शोभा पानेवाले भीष्म जीके हाथसे उस बड़े धनुषधारी के मरनेपर शिखण्डी आदि रथी अत्यन्त कम्पायमान हुए हे राजा इस सेनापतिके मरनेपर अर्जुन और श्रीकृष्ण जीने भी सब रीतियोंसे धीरे २ युद्धका विश्रामकिया, तदनन्तर आपके पुत्रोंके और पांडवोंके गर्जने और प्रसन्न होनेपर दोनोंसेनाओंका बिश्रामहुआ, हेशत्रुसन्तापी धृतराष्ट्रमहारथीपांडव कौरवोंके घोर मरणको शोचते उदासमन होकर स्थितहुए ११७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिश्वेतवधेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे तात युद्धमें दूसरोंके हाथसे श्वेत सेनापति के मरनेपर पांचालोंने पांडवों के साथ क्या किया, हे संजय युद्ध में गिरायेहुए सेनापति श्वेतको और उसके लिये उपाय करनेवाले वा अहंकार करनेवाले दूसरों को भी विजय करने के वचनों को सुनकर मेरा चित प्रसन्न होता है और मानसी पापों को भी बिचारता हुआ मेरामन लज्जा युक्त नहीं होताहै, हे संजय पाण्डव लोग बिराट् के घरमें जाके बड़े सुख पूर्व्वक रहे थे उस बिराट्

के दोनों पुत्रों को युद्धमें मरवाडाला इससे उनको कुछ लज्जा भी आई या नहीं आई अब हमारे बिचार को तुमसत्य २ सुनो कि अब महाअनर्थ का मूल उत्पन्न हुआकि इसी श्वेतकेमरने के हेतु से पारथ और भीमसेन महा क्रोधमें होकर अनेक बीरों को मार-कर इस पृथ्वी को रुधिर से भरदें गे देखोइस दुर्य्योधनको हमने गांधारीने श्रीकृष्णजीने और कृपाचार्य्य भीष्मजी द्रोण बलिराम बिदुर व्यास इत्यादि अनेक गुरु इष्ट मित्रोंने समझाया परन्तु इस निर्बुद्धीने किसीकाभी कहना नहींमाना और सबपांडवों के भी मनमें परस्पर स्नेह रखने कीही इच्छाथी तौभी दुर्य्योधनने हठकर के इससंग्रामको रचा देखिये अब ईश्वर क्या करताहै हेसंजय वह पाप कर्मीदुर्य्योधन कर्ण और शकुनिके मतमेंनियत होकर दुश्शा सन का साथी बनके पांडवों को निन्दा करने लगा मैं उसका फल उसके घोर दुःखका होना अवश्य बर्त्तमान देखताहूं श्वेतके नाश होने से महा क्रोध रूप होकर अर्जुनने भीष्मजीके विजय करने का हेतुश्रीकृष्ण जीसे क्या विचार किया अर्जुनही से मुझको बड़ा भयहै हे तातवह मेराभय दूरनहीं होताहै, वह संसार के सबपदा र्थोंका विजय करने वाला कुन्तीका पुत्र अर्जुन अत्यन्त हस्तला घवकरने वाला प्रतापी शूरहै मैं निश्चय जानताहूं कि वह बाणों से शत्रुओंके शरीरोंको मर्दन करेगा, उस इन्द्रके पुत्र और इन्द्र के छोटे भाईके बराबर युद्धमें विष्णु के समान क्रोध और संकल्प में सफल वाले अर्जुनको देखकर तुमसब लोगोंका कैसा चित्त होता है, वह शूरवीर वेदज्ञ और प्रताप में सूर्य्य और अग्नि के समान इन्द्रके अस्त्रोंका ज्ञाताबड़ा बुद्धिमान्युद्धमें कुशल महाविजयी युद्ध करने को उपस्थित, जोवह कुन्तीका पुत्रमहा रथीबज्रके समान स्पर्श वाला रूपवाले अस्त्रोंको शत्रुओं के ऊपर चलाने वालाहै, हेसंजय उसद्रुपदके पुत्र बड़े ज्ञानीबलवान धृष्टद्युम्नने युद्धमें श्वेतके मरने पर क्या किया, पूर्व्व समयके अपराधोंसे और श्वेतके मारेजानेसे मैं मानताहूं कि महात्मा पांडवोंका हृदयक्रोधसे अग्निरूप होगया

मैं रात्रिदिन उनके क्रोधों को शोचता हुआ दुर्य्योधन के कारण शान्ती को नहीं पाताहूं, इसके सिवाय यह बड़ाभारी युद्धकैसेहुआ हे संजय उस सबको मुझसे कहो, संजय बोले हे राजास्थिर चित्त होकर सुनोकि इसमें आपकाही बड़ाभारी अन्याय है यहदोष आप को दुर्य्योधन में लगाना योग्य नहींहै जैसे बिना जलके नदीमेंपुल और अग्निसे जलतेहुएघरमें पानीके निमित्त कुएंका खोदना निरर्थ कहै, उसी प्रकारकी आपकी बुद्धिहै, हे भरत बंशी दिनमें तीसरी लड़ाईके प्रारंभमें भीष्म जीके हाथसे श्वेतसेनापति के मरजाने पर, कृतवर्म्माके साथशल्यको नियत देखकरशत्रुकीसेनाका मारनेवाला युद्धमेंविजयरूपीकीर्तिवाला बिराटका पुत्रशंखनामशीघ्रही ऐसाक्रोध रूपहोगया जैसेकिहव्यसे अग्निकी प्रचंडताहोतीहै वहबलवानशंख इन्द्र धनुष के समान बड़े धनुष को टंकार कर मद्रदेश के राजाकें मारने को इच्छा से चारोंओर को बड़े २ रथोंसेरक्षित होकरसन्मुख दौड़ा, और बड़े बाणों की बर्षा करताहुआ शल्य के रथ के समीप आया उस मतवाले हाथी के समान पराक्रमी शंख को आताहुआ देखकर मृत्यु के मुखमें फंसेहुए राजा मद्र की रक्षाकरनेकेलिये तुम्हारे पुत्रों के साथ इन रथियों ने उसको चारोंओर से रोका, (कौशल) (वृहद्बल) (जयसेन) (मागध) उसी प्रकार शल्य कापुत्र रुक्मम)(रथविन्द)(अनुविन्द) और आवन्तिकाके(राजालोग) (सुदक्षिण)(कांबोज)(वृहच्छत्रका पुत्रजयद्रथ)(सिंधुकाराजा) इनसब लोगों के धनुष नानाप्रकार की धातुओंसे जटित ऐसेदृष्टिपड़े जैसे कि बादलों में बिजली दिखाई देतीहैं, उन बीरोंने बाणरूप बर्षा शंखके मस्तक पर ऐसी करी जैसे कि बर्षा ऋतु में वायु से प्रकट बादल आकाशी जल को बरसाते हैं, इसके पीछे बड़ा धनुषधारी सेनापति शंख महा क्रोधित होकर उन लोगोंके धनुषों को अपने सात भल्लों से काटकर महा ध्वनिसे गर्जा, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी बादल के समान गर्जते तालवृक्ष के समान धनुष को लेकर उस युद्ध में शंखके सन्मुख दौड़े, उस बड़े धनुषधारी महा-

बली को उदय रूप देखकर पांडवोंकी सेना ऐसी भयभीतहुई जैसे कि वायुके वेगसे टक्कर खाईहुई नौका डामाडोल होतीहै, उसयुद्ध में अर्जुन भी यह शोचकर शंख के आगे चलनेवाला हुआकि अब यह भीष्मजी से रक्षा करने के योग्य है युद्धमें लड़नेवाले युद्धकर्त्ता ओंका बड़ा हाहाकार हुआ तदनन्तर गदाधारी शल्यने बड़े रथसे उतरकर शंख के चारों घोड़ोंको मारा वह मृतक घोड़ों के रथ से शीघ्रही उतरकर खड्ग लेकर दौड़ा और अर्जुन के रथ को पाकर फिर शान्तहोगया इसके अनन्तर भीष्मजी के रथसे शीघ्रही बाण ऐसे उछलनेलगे जिनसे पृथ्वी और आकाश व्याप्त होगये, प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने बाणोंसे पांचाल मत्स्यकेरल और प्रमदक नाम अनेक बीरोंको गिराया, हे राजा भीष्मजी युद्ध में अर्जुन को छोड़कर सेना समेत बहुत बाणोंको फेंकतेहुए अपनेप्यारे समधी पांचाल द्रुपद के सन्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि चैत्र बैशाख के महीने में बनका जलानेवाला अग्नि दौड़ता है द्रुपदकी सेना बाणोंसे भस्महुई दृष्टपड़ी और भीष्मजी अग्नि के समान दिखाई दिये, जैसे कि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महाप्रचंडसूर्य्य के देखने को लोग असमर्थ होते हैं उसी प्रकार पांडवों के युद्ध में भीष्मजीके देखनेको कोई समर्थ नहीं हुआ, पाण्डवलोगों कोसेना भयसे पीड़ितहोकर चारोंओरको अपनाकोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसेकि जाड़े से दुःखीगौएं अपना कहीं रक्षकनहीं देखतीं, हे राजा फिरवह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजीकेबाणों से ऐसीपीड़ामानहुईजैसे कि सिंहसेभयभीत हुई श्वेतगौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भाग जाने साहस छोड़ने और मर्दन होने पर पांडवों की सेना में बड़ा हाहाकारहुआ, फिर सदैवमंडलरूपी धनुषधारी भीष्मजीने बिषमें बुझेहुये सर्प के समान तीक्ष्णबाणों को छोड़कर अपने बाणोंसे सब ओर की सफाई करके रथियों को तिष्ठतिष्ठ शब्द करके मारा, जब सेना के इधर उधर भगने और मर्दन होने वा सूर्य के अस्त होनेपर कुछ नहीं जाना गया तब तो पांडवों ने उस महायुद्ध में

भीष्मजीकोअग्नि बरसाताहुआ देखकर सेनाकाबिश्रामकियाऽ३॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिप्रथमदिवसयुद्धनामैकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

पचासवां अध्याय॥

संजय बोले हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ उस प्रथम दिनमें सेना के मनुष्यों के विश्राम करने और युद्धमें भीष्मजीके क्रोध रूप होने अथवा दुर्य्योधन के प्रसन्न होने पर, धर्मराज युधिष्ठिर ने सब भाइयों और राजाओं समेत जनार्द्दनजी के पास जाकर, बड़े शोक युक्त होकर अपनी पराजय को शोच भीष्मजी के पराक्रमको देख कर श्रीकृष्णजी से कहा कि हे श्रीकृष्णजी इस बड़े धनुषधारी भयानक पराक्रमी भीष्मजी को देखिये कि यह बाणोंके मारे मेरी सेना को ऐसे भस्म किये डालतेहैं जैसे कि ऊष्मऋतु में अग्नि बन और बन की सूखी घासको, हव्य भोजन करनेवाली अग्नि के समान मेरी सेनाको चाटनेवाले इस महात्मा की ओर देखने को भी हम कैसे समर्थ होसक्ते हैं, इसी धनुषधारीमहाबली पुरुषोत्तम को देखकर बाणों से महा व्याकुल हमारी सब सेना इधर उधर को भाग गई, युद्ध में क्रोधाग्नि रूप यमराज वा वज्रधारी इन्द्र वा पाशधारी वरुण वा गदाधारी कुंवेर को भी चाहैं विजय करना संभव है परन्तु महाबाहु अति पराक्रमी भीष्मजी को विजय करना असंभव है सो मैं ऐसी दशा में भीष्मरूपी अथाह जल में बिना नौकाके डूबा जाताहूं, हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धिकी निर्बलतासे भीष्मजी के सन्मुख होकर बनको चला जाऊंगा अथवा हे वृष्णिबंशी मेरे जीवन में कल्याण नहीं है, परन्तु इन राजाओं को भीष्मरूपी मृत्यु के बश करने को मैं योग्य नहीं हूं, हे श्रीकृष्ण जी महाबली भीष्मजी मेरी सेनाको नाश करडालेंगे, जैसे कि पतंग ज्वलित अग्नि की ओर दौड़तेहुए अपने नाश के निमित्त जाते हैं इसी प्रकार मेरी सेना के मनुष्य भीष्मजी की ओर को जानेवाले हैं, राज के निमित्त मैं पराक्रम करनेवाला नाश होता हूं और मेरे

बीर भाई लोग भी बाणोंसे पीड़ित होकर महा दुर्बलांग हैं, वह मेरे कारण अथवा भाई बिरादरों की शुभ चिन्तकता के कारण अपने राज्य सुखों को त्यागनेवाले हुए मैं जीवन को बहुत मानताहूं अब जीवन होना कठिन मालूम होताहै,शेष जीवनसे तपस्या करूंगा हे केशवजी मैं युद्ध में इन मित्रोंको नहीं मरवाऊंगा,महाबली भीष्मजी अपने दिव्य अस्त्रों से मेरे हजारों उत्तम शूरबीर रथियों को बराबर मारते हैं, सो आप शीघ्रता से कृपाकरके बतलाइये कि कैसे मेरा कल्याण हो मैं इस युद्ध में अर्जुन को भी उदासीन के समान देखता हूं, यह महाबाहु अकेला भीमसेन क्षत्री धर्म को स्मरण करता केवल भुजा बल के द्वारा बड़ी सामर्थ्य से लड़ता है, यह बड़ा साहसी अपने साहस के अनुसार बीरों की मारने वाली गदासे रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों के मध्य में कठिन कर्म को करता है, हे श्रेष्ठ वह बीर सत्य युद्धके द्वारा बर्षोंमें भी शत्रुकी सेना के नाश करने को समर्थ नहीं है,यह आपका एक मित्र अस्त्रोंका जाननेवालाहै वह भी महात्मा द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी के हाथ से बराबर भस्मीभूत होताहुआ हम लोगों को कुछ नहीं समझता है महात्मा भीष्मजी और द्रोणाचार्य्यके बारम्बार चलायेहुए दिव्य अस्त्र सब क्षत्रियोंकोजलातेहैं, हे कृष्णजी निश्चय करके क्रोधरूप भीष्मजी सब राजाओंसमेत हम को मारेंगे ऐसा इनका पराक्रम है, हे योगेश्वर तुम उस महाभाग महारथी को देखो और बिचारो जो युद्धमें भीष्मजी को ऐसेशान्त करे जैसे बादल दावानल अग्नि को, हे गोबिन्दजी आपकी कृपा से नाशवान् पाण्डव शत्रुओं से और अपने राज्य से मिलेहुए बांधवों समेत आनन्द करेंगे, तदनन्तर बड़ा साहसी युधिष्ठिर इस प्रकारकी बातें कहकर शोकसे पीड़ित चित्त देरतक मनको हृदय में नियत करके ध्यान करता हुआ बैठा,फिर गोविन्दजी पाण्डवों को दुःख शोकसे पीड़ित और उदास रूप देखकर सब पाण्डवोंको प्रसन्न करते हये यह बचन बोले,हेभरतबंशियों में उत्तम तू शोच

मतकर और तू शोच करने के योग्य नहींहै क्योंकि तेरेभाई तो महा शूरवीरहैं और वह सब संसार में विख्यात हैं, हे राजाधर्म मैं और महारथी सात्विकी (विराट्) (द्रुपद) धृष्टद्युम्न आपके मनोरथ-पूर्ण करने वालेहैं,हेराजेन्द्र युधिष्ठिर इसी प्रकार सब राजालोग भी अपनी २ सेना समेत तेरी प्रसन्नताकोही बाट देखतेहैं और आपके परम भक्तहैं, सदैव भलाई चाहने वाले आपके प्यारे प्रीतिवान् महारथी धृष्टद्युम्न ने सेना ध्यक्षी के अधिकारको पाया, निश्चय करके यह महाबाहु शिखण्डी भीष्मका नाश करने वाला है राजा युधिष्ठिर यह कृष्णके बचनको सुनकर उसी सभामें वासुदेवजीके आगे धृष्टद्युम्नसे बोला किहेधृष्टद्युम्न जोमैं आपसे कहताहूं उसको अच्छी रीतिसे समझो वहमेरा बचन उल्लंघन करने के योग्य नहींहै आप वासुदेवजीके विचारसे मेरी सेनाके सेनापति हो,पूर्व समयमें जैसे कार्त्तिकेय अर्थात् स्वामिकार्त्तिक देवताओं की सेनाके सेनापति हुये इसी प्रकारसे आप पांडवोंके सेनापति हूजिये, हेपुरुषोत्तम तुम अपने पराक्रमको करके कौरवों को मारो और बड़भागी मैं वा भीमसेन और श्रीकृष्णजी तेरे पीछे चलेंगे, एक साथ दोनों नकुल और सहदेव और द्रौपदीके शस्त्रधारी पुत्र और अन्य सब राजालोगभी तुम्हारे साथपीछे २ चलेंगे यह सुनकर धृष्टद्युम्न सबको प्रसन्न करके बोला कि हेराजा पहले समय में शिवजीकी ओरसे मैं द्रोणाचार्य्यके नाश करनेवाला नियतहुआथा इसीहेतुसे हेराजा अबमैं इस युद्धमें भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य्य शल्य औरजयद्रथ आदिसब अहंकारियोंसे अवश्य लड़ूंगा तदनन्तर शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नके अच्छी रीतिसे सन्नद्धहोनेपर युद्धमें आकर महादुर्म्मद और धनुष धारी पाण्डवोंने उच्च स्वरसे शब्द किया, फिर युधिष्ठिर ने सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा कि सबशत्रुओं का नाश करने वाला क्रौंचारुण नाम व्यूह जिसको देव दानवों के युद्धमें वृहस्पतिजीने देवेन्द्र से कहा था उसी शत्रुहन्ता व्यूहको आप विधिके अनुसार रचो, उस अपूर्व्व व्यूहको राजाओं समेत

कौरव लोग देखें धृष्टद्युम्न से राजा धर्मराजने इस प्रकार से यह बचन कहा जैसे कि बज्रधारी इन्द्रने विष्णु जीसे कहाथा, प्रातः कालके होतेही सब सेना के आगे अर्जुनको किया उस समय प्रकाशित और मनको प्रसन्न करनेवाली अपूर्व्व ध्वजा सूर्यकेमार्ग में वर्त्तमानथी उस ध्वजा को इन्द्रकी आज्ञा से विश्वकर्माने बनाया इन्द्र वज्रके समान पताकाओंसे अलंकृत, आकाश में गन्धर्व नगर के समान नियतथी हेराजा वह ध्वजा रथकेभ्रमण करनेमेंनाचतीहुई प्रकाशमान थी और वह युधिष्ठिर उसरत्नदान गांडीव धनुष धारी श्रेष्ठ पुरुष के कारण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि सुमेरु पर्वत सूर्य से सुशोभित होताहै, हे राजा बड़ी सेना संयुक्त राजा द्रुपद तो शिर हुआ और कुन्तभोज और चन्देल राजा आंखें हुईं हे भरतर्षभ (प्रभद्रक) (शार्नक) अशीरक नाम समूहों के साथ अनूपक किरात ग्रीवामें वर्त्तमान हुआ, और राजयुधिष्ठिर पटश्चर पौंडर नाम कौरवों के निषादोंके साथ पीछे को हुआ, और भीमसेन पर्षत का पौत्र (धृष्टद्युम्न) द्रौपदीके पुत्र वा अभिमन्यु और महारथी सात्विकी पक्षबने, और कुणडी व ऋषियों समेत (पिशाच)(दारद)(पौंड्र) (यवन) (धेनुक) (तंगण) (परतंगण,) (वाल्हीक) (तित्तिर) (चोल) पाण्ड्य) इन देशों के निवासी दक्षिण पक्षमें नियत हुए, (अग्निवेश्य) (गजतुण्ड) (मलद) (आश्कारव) (शबर) (कुम्भस) मालुकों समेत (वत्स) (नकुल) (सहदेव) यह सब बायें पक्षमेंनियत हुए, रथोंका एकअर्बुद पक्ष हुआ और इसीप्रकार रथोंका एकनियुत शिर हुआऔर एकअर्बुद और बीसहज़ारकी पृष्टहुईऔरनियुत सत्तर हज़ार ग्रीवामें हुये, हे राजा ऐसे पक्षो रूपो व्यूहके आगे वा पक्ष और पूंछके स्थानोंपर चलनेवाले पर्वतों के समान चारों ओर से रक्षा करतेहुएहाथी चले, राजा विराट्ने केकय लोगोंके साथ और काशीराज शैव्यने तीन अयुत रथोंके साथ जघनस्थान की रक्षाकरी हे राजा वह सब पाण्डव इस प्रकार से इस बड़े उत्तमव्यूह को रचकर बड़ी सज धजकेसाथ शस्त्रोंको धारण किये सूर्य्योदयको

चाहतेहुए युद्धके निमित्त नियत हुए, उन लोगों के छत्र जो सूर्य्य वर्ण निर्मल और अत्यन्त श्वेतरूप थे वह हाथी और रथोंके ऊपर दिखाई दिये, ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि क्रौंचव्यूहनिर्माणेपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय

संजय बोले हे श्रेष्ठ भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र इसके अनन्तर आपका बड़ाबेटा बड़े तेजस्वी पाण्डवोंकेरचेहुये घोर और अभेद्यमहा व्यूहको देखकर, आचार्य द्रोणाचार्य जीके पास जाकर कृपाचार्य्य राजाशल्य सोमदत्तविकर्ण अश्वत्थामा, दुश्शासनआदिसब भाइयों और युद्धके निमित्त समीपआये हुए अन्य बहुतसे राजाओंको, समय पर प्रसन्नकरताहुआ यह बचनबोला कि तुम सब नानाप्रकार के शस्त्रधारी और अस्त्रोंके अर्थ में पंडितहो, आप सब महारथी एकाही युद्ध में पांडवोंके मारनेमें समर्थहोतो साथियोंके मिलेहुए होनेसे क्यों नहीं समर्थहोगे, हमारी सबसेना भीष्मआदि की रक्षासे अजेय है और वह उनकीसेना भीमआदि से रक्षित पराजय होने के योग्यहै, (संस्थान) (विकर्ण) (शूरसेन) (कुकुट) (रेचक) (त्रिगर्त्त) (मद्रक) (यवन) (शत्रुंजय) दुश्शासन बड़े बीर(बिकर्ण) नन्द (उपनन्द)(मणिभद्रकों)समेत चित्रसेन सेनाके मनुष्योंसमेत सन्मुख होकर भीष्मकी रक्षाकरो, हे श्रेष्ठ इसकेपीछे आपके पुत्रोंने पांडवों के रोकनेके लिये बड़ेभारी व्यूहको रचा, भीष्मजीतो चारोंओरकी सेनासे रक्षित देवराज के समान बड़ीसेना समेतचले, और बड़े धनुषधारी प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्य जी कुन्तल मागध और दशार्ण के साथ भीष्मजी के साथ चले और बिदर्भ मेकल कर्ण प्रावरण भी सबसेना समेत भीष्मजी केही साथचले, गान्धार सिंधु सौबीर (शैव्य) (विशातय) और शकुनीने सेनासमेत भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजीको रक्षितकिया, तदनन्तर राजादुर्य्योधन और सब सगेभाई अश्वातक (विकर्ण) वामन (कोसल) (दरद) (दृक)

और बालवलोगों के साथ क्षुद्रक पांडवलोगों की सेनाके सन्मुख, दौड़ा हे राजा (भूरिश्रवा) (शैल) (शल्य) (भगदन्त) और (विन्द) (अनविन्द) और अवन्तिदेश के राजालोगोंने बायें भाग को रक्षितकिया, सोमदत्ति (सुशर्मा)(कांबोज)सुदक्षिण(शतायुष) (श्रुतायु) यह सब दक्षिणओर नियतहुए, (अश्वत्थामा) (कृपाचार्य्य) (कृतबर्मा)यादव यह सब बड़ीसेना समेत पीछेकी ओर को नियतहुए, उसके पीछे से रक्षक अनेक देशोंके राजा केतुमान बसुदान और काशीके राजाकापुत्र इत्यादिहुए, हे भरतवंशीइसके अनन्तर आपके उन सब पुत्रोंने जोकि युद्ध के लिये बहुत प्रसन्न चित्तथे शंखोंको बजाकर सिंहनादों को किया, कौरवोंके वृद्धपितामह प्रतापवान भीष्मजीने उन प्रसन्नचित्तों के सिंहनादोंको सुनकर बड़े शब्दसे सिंहनाद करके अपने शंखको बजाया तदनन्तर दूसरीओर के शंख भेरी आदि अनेकबाजे चारोंओरसे बजे और तुमुलशब्द हुआ तिसपीछे श्वेत घोड़ोंसे युक्त बड़े रथपर बर्त्तमान श्रीकृष्णजी और अर्जुनने, सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम शंखों को बजाया फिर इन्द्रियोंके स्वामी जगदात्मा श्री कृष्णजीने तो पांचजन्य नाम शंखको और अर्जुन ने देवदत्त नाम अपने शंख को बजाया, और भयकारी भीमसेनने पौण्ड्रनाम महाशंखको बजाया और कुन्तीकेपुत्र राजायुधिष्ठिरने अनन्तविजयनाम शंखकोबजाया और नकुल सहदेवने सुघोष और मणिपुष्पकनाम शंखको बजाया और (शैव्यकाशिराज) और महारथी (शिखंडी) (धृष्टद्युम्न) (बिराट) महारथी (सात्विकी) बड़ाधनुर्धर पांचाल (द्रुपद) और द्रौपदीके पांचोंपुत्रोंने सिंहनादको करके अपने महाशंखों को बजाया सब बीरों ने अच्छेप्रकार उत्तम शब्दकिये, तुमुलशब्द से आकाश और पृथ्वी शब्दायमान होगई हे महाराज इसरीति से यह कौरव और पांडव परस्पर में संतप्त करते हुए फिर युद्ध के निमित गये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ४१ ॥

बावनवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय इस रीतिसे मेरेपुत्र और पांडवोंकी सेना के व्यूह रचनेपर प्रहार करने वालोंमें उत्तम शूरोंने परस्परमें कैसे कैसेप्रहार किये,संजय बोले कि इसरीतिसे सेनाके व्यूहित होनेपर समुद्र रूपसेनाको अपार देखते हुए उनवीरोंके कवच तैयार हुए जिनकी ध्वजा महासुन्दर और मनोहरथीं,हेराजा उनसब में नियत होकर आपका पुत्र दुर्योधन आपके सब पुत्रोंको बुलाके कहनेलगा कि तुम सब शस्त्र धारण करके युद्धको करो वहजीवन को त्यागे हुए ध्वजाको ऊंचीकरने वाले सब मनसे निर्द्वयरूप होकर पांडवों के सन्मुख लड़नेको उपस्थित हुए तदनन्तर आपके पुत्र और दूसरोंका युद्ध जिसमें रथ और हाथी संयुक्तथे रोमहर्षण और तुमुल शब्दोंसे व्याप्त हुआ,सुवर्णपंख और अत्यन्त प्रकाशित और तीक्ष्ण बाणरथी लोगोंके हाथोंसे छूटे हुए हाथी और घोड़ों पर गिरे इसी प्रकार युद्ध प्रारंभ होनेपर भयकारी पराक्रमी शस्त्रधारी पितामह भीष्मजीने धनुषको उठाये हुए सन्मुख आकर,महारथी अभिमन्यु भीमसेन अर्जुन केकय विराट धृष्टद्युम्न, (चेदि) मत्स्य विभु इन नौवीरोंपर बाणोंकी बर्षाकरी,उसबड़े वीरके सन्मुख बड़ीसेना अत्यन्त कंपायमान हुई और सबसेनाके लोगोंको बड़ाखेद उत्पन्न हुआ,और वह अत्यन्त उत्तम घोड़ोंके रथोंके सवार मारेगये जिन की सेनाहट गईथी ऐसे अकेले पांडव बर्त्तमान हुए नरोंमें उत्तम क्रोधरूप अर्जुन महारथी भीष्मको देखकर श्रीकृष्णजीसे बोले कि बहांचलो जहां पितामहहैं,हेवृष्णवंशी यहनिश्चयहै कि यह अत्यन्त क्रोधरूप भीष्म दुर्य्योधनके अभीष्टमें प्रवृत्तमेरी सेनाको अवश्य मारेंगे,हेजनार्दनजी यह द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य शल्य विकर्ण और सब धृतराष्ट्रके पुत्र जिनमें अग्रगामी दुर्य्योधनहै,वह सब धनुष धारियोंसे रक्षितहोकर पांचाल देशियों को मारेंगे सोहेजनार्द्दनजी मैं भी सेना समेत भीष्मजीको मारूंगा, बासुदेवजी बोले किहे अर्जुन

सावधानहो मैं तुझको अभी पितामहके रथके पास पहुंचाताहूं, हे राजा ऐसाकहकर बासु देवजीने उसको शीघ्रही भीष्मजीके रथके पास पहुंचाया, वहपाण्डव अर्जुन बगलेके समान श्वेत घोडोंकेरथ पर सवार बड़ी ऊंची प्रकाश मान ध्वजाको फहराता बड़े बादल के समान गरजता हुआ सूर्य्यके समान प्रकाशित रथके द्वारा कौरवोंकी सेना और सूरसेनों को संहार करता हुआ, मित्रोंके उत्साहोंका बढ़ाने वाला शीघ्रही युद्ध भूमिमें आया उस मदोन्मत्त हाथीके समान महावेग युक्त आतेहुए युद्धमें शूरों को कंपाते और अपने बाणोंसे प्रहार करके गिराते हुए अर्जुनको देखकर पूर्वी सौवेर केकय जयद्रथ और सिन्धु आदिके राजाओंसे रक्षित, भीष्मजी ऐकाएकी सन्मुख बर्त्तमान हुए कौरवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य और कर्णके सिवाय दूसरा कौनरथीहै जो गांडीव धनुषधारी अर्जुनके सन्मुख जासके तदनन्तर हे महाराज कौरवों के पितामह भीष्मजीने तो सतन्नर बाणोंसे अर्जुनको खूबपीड़ामान किया और द्रोणाचार्य्य व कृपाचार्य ने पच्चीस २ बाणों से दुर्योधनने चौंसठ बाणोंसे शल्यने नौबाणोंसे और नरोत्तम अश्वत्थामाने साठ बाणों से विकर्ण ने तीनबाणोंसे और आर्त्तायनिने तीनभल्लबाणोंसे पांडव अर्जुन को खूब घायल किया वह महाबाहु अर्जुन उनके चारों ओर की बाणवृष्टि से पर्बत के समान आच्छादित और घायल भी होकर पीड़ामान नहीं हुआ फिर उस नरोत्तम अर्जुनने भीष्मजीको पच्चीस बाणों से कृपाचार्य्यको नौ बाणोंसे, द्रोणाचार्य्य को साठ बाणों से बिकर्णको तीनबाणोंसे आर्तायनिको भी तीनबाणोंसे और राजादुर्योधन को भी पांचवाणोंसे घायलकिया, जो कि अर्जुनबड़ा साहसी और मुकुटधारी था तोभी हे भरतर्षभ सात्विकी बिराट धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पांचो पुत्र और अभिमन्यु इनसबने आन कर अर्जुन को चारोंओर से रक्षितकिया तदनन्तर राजाद्रुपद भीष्म के अनभीष्ट में प्रबृत्त द्रोणाचार्यके सन्मुख उपस्थितहुआ फिर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही पाण्डव अर्जुनको, तीक्ष्ण अस्सीबाणों

से घायल किया उससे आपके पुत्र प्रसन्न हुए तदनन्तररथियोंमें उत्तम प्रतापी अर्जुन उन प्रसन्न चित्तों को गर्जनाको सुनकर बड़े प्रसन्न चित्तके समान सेनामें घुसा हे राजा वह अर्जुन उन उत्तम रथियोंके मध्यको पाकर महारथियोंको चिन्हनितकरके धनुषलिये हुए घूमने लगा तदनन्तर राजा दुर्योधन युद्ध में अपनी सेना को अर्जुनके हाथसे पीड़ामान देखकर भीष्मसे बोलाहे तातयहबलवान पांडव श्रीकृष्णजी के साथ सब सेनाओं कोमारता गिराताहुआ रथियों में श्रेष्ठ गांगेय और द्रोणाचार्य के जीवते होने पर हमारे मूलको काटे डालता है हे राजा आपही के कारण सदैव मेरा हित चाहनेवाला यह कर्ण भी बेसलाह होकर युद्ध में पांडवों से नहीं लड़ता है ३७ हे भीष्मजी सो तुम ऐसाहीकरो जिससे अर्जुन नाश को पावे तदनन्तर हे राजा इस प्रकार कहेहुए आपके पिता देवब्रत भीष्मजी क्षत्रो धर्मको धिक्कार है ऐसा शब्द कह कर अर्जुनके रथके समीपआये हेश्रेष्ठराजा धृतराष्ट्रराजाओंने उनदोनोंमहाबली श्वेत घोड़े वालोंको मिलाहुआ देखकर, अत्यन्त सिंहनादक शंखों को बजाया अश्वत्थामा और आपका पुत्र दुर्योधन और विकर्ण यहसब युद्धमें भीष्मजीको चारों ओरसे रक्षित करके युद्धके निमित्त नियत हुए और हेराजा इसी प्रकारसे सब पाण्डव लोग अर्जुन को चारों ओरसे घेरकर बड़े युद्ध करनेके निमित्त नियतहुए इसके पीछे युद्ध प्रारंभ हुआ फिर गंगापुत्र भीष्मजीने युद्धमें नौबाणोंसे अर्जुन को घायल किया, फिर अर्जुनने मर्मभेदो दशबाणोंसे उनको घायल किया, तदनन्तर युद्धमें प्रशंसनीय पाण्डव अर्जुनने अच्छे प्रकार से चलाये हुएहजार बाणोंसे भीष्मजीको दिशाओंकोरोका, तदनन्तर भीष्मजीनअपने बाणोंसेअर्जुनकेउनबाणोंकेजालोंकोरोका, दोनोयुद्ध मेंप्रसन्न चित्त औरउत्साह माननेवाले प्रहारके बदलेप्रहारकरनेको इच्छा वाले युद्धमें अतिशयता पूर्व्वकप्रवृत्त हुए, भीष्मजी के धनुषसे छूटेहुए बाण जालोंके समूह अर्जुनके बाणोंसे कटे हुए दृष्टपड़े, इसी प्रकार अर्जुनके छोड़े हुए बाणजाल भीष्मजीकेबाणोंसे टूट२करपृथ्वी

पर गिरपड़े फिर अर्जुनने पच्चीस तीक्ष्ण शरोंसे भीष्मजीको व्यथित किया,भीष्मजीनेभी नौबाणोंसे अर्जुनको घायल कियावहदोनों महाबली शत्रुओंके जीतने वाले युद्धमें घोड़ोंको और रथोंको परस्पर घायल करके,क्रीड़ा करने वाले होगये तदनन्तर हेराजा महाक्रोध रूप महा प्रहारी भीष्मजीने,तीनबाणोंसे वासु देवजीको स्तनान्तर में घायल किया,उनभीष्मजीके धनुषसे निकले हुये बाणोंसे घायल मधु सूदनजी,युद्धमें फूले हुए किंशुक वृक्षके समान शोभायमान हुए तदनन्तर माधवजीको घायल देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अर्जुनने,भी भीष्मके सारथीको तीन बाणोंसे घायल किया तब युद्धमें एकदूसरे के रथपर उपाय करने वाले दोनोंवीर, परस्पर में गिरानेको समर्थ नहीं हुए फिर उन्होंने सूतके बलको तीव्रता से वारम्बार बिचित्र मंडलोंको दिखला कर,अवकाशके मार्गदेखने में नियत दोनों वीरोंने वारम्वार प्रहारोंके बीचमें अवकाश को तकते हुए सिंहनाद पूर्वक शंखों के शब्दों को किया, और इसी प्रकार दोनों महारथियों ने धनुषों के भी शब्दों को किया, उन दोनों के शब्दोंसे और रथोंके शब्दों से अकस्मात पृथ्वी फटगई और कंपाय मान होकर शब्दायमानभी हुई हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ उनदोनोंके अन्तरको किसीनेभी नहीं देखा,दोनों युद्धमें बलवान शूरवीर परस्परमें समानथे वहां कौरव लोगकेवल चिन्होंको देख कर भीष्मजीके पासगये,इसी प्रकार पाण्डवोंने भी केवल चिन्हही मात्रसे अर्जुनको पाया हेराजधृतराष्ट्र उनदोनों नरोत्तमोंके उसमहा पराक्रमको देखकर युद्धमें सबजीव मात्रोंने आश्चर्य्य किया और कोईभी उनदोनों के अन्तरको ऐसेनहीं देख सक्ताथा जैसेकि धर्मवान पुरुषका कोई पापकहीं दिखाई नहीं देता वह दोनों बाण जालों से गुप्तहोगये इसकेपीछे दोनों शीघ्रही प्रकट होगये वहां गंधर्वों समेत देवताओंने और महर्षियों समेत चारण लोगोंने इन दोनोंके पराक्रमको देखकर परस्परमें बार्त्तालाप करी कि यह युद्ध में क्रोध रूप दोनों महाबली देवता असुर और गंधर्वोंसेभी किसी

दशामें लोकमें जीतने के योग्य नहीं है यह बड़ाभारी अपूर्व्वयुद्ध इसलोकमें होरहाहै ऐसायुद्धकभी नहीं होगा, धनुषरथ और घोड़ों समेत युद्ध भूमिमें शायकोंको छोड़ते हुए भीष्मजी युद्धमें बुद्धिमान अर्जुन को विजय करने के योग्य नहीं हैं इसी प्रकार युद्धमें देवताओं से भी अजेय धनुष धारी पाण्डवों की, बिजय करने को भीष्मजी भी उत्साह नहीं करते देखनेसे भी यह युद्ध बराबर का होगा, हे राजा भीष्म और अर्जुन की प्रशंसा के यह बचन जहां तहां फैलेहुए सुनेगये, तदनन्तर उनदोनों के पराक्रम होने पर आपके शूर बीर और पाण्डवोंने परस्परमें युद्ध किया इसी प्रकार तीव्रधार खड्ग और निर्मल परशे बाण और अन्य २ प्रकार के अनेक शस्त्रोंसे दोनोंओर के शूर बीरोंने परस्परमें एकने दूसरे को प्रहारकिया हे राजा इसीरीतिसे उस घोर और महाभयानक युद्ध होनेपर द्रोणाचार्य्य और द्रुपदकी बड़ीभारी लड़ाई हुई ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न दोनों बुद्धिमान कैसे युद्ध में परस्पर सन्मुख हुए उसका वृत्तान्त मुझसे कहो, हेसंजय मैं उद्योगसे प्रारब्धको बड़ा मानताहूं जहां युद्धमें शान्तनु भीष्मजीने पाण्डव अर्जुनको विजय नहीं किया जो भीष्म रणमें क्रुद्ध होकर सब स्थावर जंगमजीवोंकोभी मारसक्ता है उस महावीरने किसहेतुसे युद्धमें पराक्रम करके पाण्डव अर्जुन को नहीं मारा, संजय बोले किहेराजा तुमस्थिरचित्त होकर इसबड़े भारी भयानक युद्धको सुनो कि पाण्डव अर्जुन इन्द्रादि देवताओं सेभी बिजय करनेके योग्य नहींहै द्रोणाचार्य्यने नाना प्रकार के बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल किया और भल्लोंसे उसके सारथी को रथके नीड़से नीचे गिराके महाक्रोधित होकर उस धृष्टद्युम्न के घोड़ोंकोभी चार शायकोंसे महापीड़ित किया, तौभी बड़े बीर

धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यको नव्बे तीक्ष्ण शरों से घायल किया और तिष्ठतिष्ठ शब्दोंको भी किया तदनन्तर बड़े प्रतापी द्रोणाचार्य्यजीने उस धृष्टद्युम्नको मारे बाणोंके आच्छादित करदिया, और उसके मारनेके लिये इन्द्रवज्रके समान स्पर्श वाले मृत्युदंडके समानघोर बाणको हाथमें लिया, हेराजा इस युद्धमें द्रोणाचार्य्यके चढ़ाये हुए उसबाणको देखकर सब सेनामें हाहाकार हुआ, उसस्थानमें हमने धृष्टद्युम्नके अपूर्व्व पराक्रमको देखा कि अकेलाही शूरवीर युद्धमें पर्व्वतके समान अचल होकर नियत खड़ारहा, और उस प्रकाशित घोर मृत्युरूप आयेहुए बाणको अपने बाणोंसे काटडाला और द्रोणाचार्य्यके ऊपर बाणोंको बरसाया तदनन्तर धृष्टद्युम्नकेकिये हुए उस कठिन कर्मको देखकर पांडवों समेत पांचाल देशी लोग उच्चशब्दको पुकारे, तदनन्तर द्रोणाचार्य्यके मारनेकी इच्छा करने वाले उस पराक्रमीने बड़ी बेगवान सुवर्ण वैडूर्य जटित महाघोर बरछीको मारा इसबरछीको आता देखकर प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य्यने शीघ्रही अपने बाणोंसे मार्गमें काटकर गिरादिया, हेराजा तब उस धृष्टद्युम्न प्रतापीने अपनी उग्रबरछीको कटा हुआ जान के द्रोणाचार्य्यके ऊपर अनेक बाणोंको वरसाया, फिर महायशस्वी द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नकी बाणोंकी बरसाको रोककर उसकेधनुष को मध्यमेंसे काटडाला, फिर उस कटे हुए धनुष वाले महाप्रतापी ने अपनी एक भारीलोहे की गदाको फिराकर द्रोणाचार्य्यके ऊपर फेंका, उसके हाथकी छूटी गदा द्रोणाचार्य्यके मारनेको शीघ्रही आई तौवहांहमने द्रोणाचार्य्यके अपूर्व्वपराक्रमको देखा, कि उससुवर्णित घोरगदाको खण्ड खण्ड करके अत्यन्त तीक्ष्ण पीतरंग सुनहरी शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणको धृष्टद्युम्नके ऊपर फेंका उस बाणने उसके कवचको काटकर उसके रुधिरको पिया, तदनन्तर बड़े वीर धृष्टद्युम्नने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें महा पराक्रम करके पांचबाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल किया, तदनन्तर वहदोनों रुधिरसे भरेहुए वीर ऐसेशोभायमान हुए जैसे कि बसन्त ऋतुमें

लालफूलवाले किंशुक वृक्ष शोभा देतेहैं, हेराजा तदनन्तर युद्धभूमि में महाक्रोधरूप द्रोणाचार्य्यनेबड़े पराक्रमसे धृष्टद्युम्नके धनुषको काटकर उसको मारे बाणोंके ऐसेढकदिया जैसे बादलबरसा करके पर्व्वतको ढक देताहै, फिर भल्लोंसे इसके सारथीको रथके नीड़से गिरादिया और चारों घोड़ोंकोभी चार तीक्ष्णबाणोंसे पृथ्वीपर गिरादिया, और सिंहनाद करके दूसरे बाणसे इसके दूसरे धनुषकोभी गिराया वह धनुष रथ और घोड़े सारथी मृतकवाला धृष्टद्युम्न गदाको हाथमें लेकर अपनी वीरताको प्रकट करताहुआ रथ से उतरा उससमय द्रोणाचार्य्यने बड़ी शीघ्रतासे रथसे उतरनेभी नहीं पायाथा कि उसकी गदाको एकविशिख बाण से काटकर गिरादिया यहबड़ा आश्चर्य्यसा हुआ तदनन्तर वह सुन्दर भुजाधारी महाबली सुवर्णकी सूर्य्य चन्द्रमा वाली बड़ीढाल और दिव्य खड्गको लेकर द्रोणाचार्य्यके मारनेकी इच्छासे बड़े वेग युक्त होकर सन्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि मांसका चाहने वाला सिंह बनमें मतवाले हाथीके ऊपर दौड़ताहै हेराजा वहां हमने द्रोणाचार्य्यकी वीरता और अस्त्र योगसे हस्तलाघवता अपूर्व्व प्रकारकी देखी कि अकेलेनेही बाणोंकी बरसा करके धृष्टद्युम्नको रोकदिया, तदनन्तर उस महायुद्ध में कोई महाबलीभी जानेको समर्थ नहीं हुआ, वहां हमने बड़े रथके समीप नियत और बाण विद्यामें कुशलके समान बाणसमूहों को ढालसे रोकते हुये धृष्टद्युम्नको देखा, तदनन्तर महाबाहु पराक्रमी भीमसेन युद्धमें महात्मा धृष्टद्युम्नकी सहायता करने वाला अकस्मात् आकूदा, हेराजा उसने आतेही अकस्मात् सात बाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया और शीघ्रही धृष्टद्युम्नको दूसरेरथ पर सवार किया, इसके पीछे राजा दुर्य्योधन ने बड़ी सेना समेत राजा कलिंगको द्रोणाचार्य्यजीकी रक्षा के निमित्त भेजा, तदनन्तर हे राजा आपके पुत्रकी आज्ञा से कलिंग देशियों की बड़ी भारी भयानक सेना भीमसेन के सम्मुख आई, रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भी धृष्टद्युम्न को छोड़कर मिले हुए वृद्ध विराट् और राजा

द्रुपद से युद्ध करने लगे और धृष्टद्युम्नभी युद्धमें धर्मराज युधिष्ठिर के पास गया तिस पीछे उस युद्ध भूमिमें कलिंग देशियों से और महात्मा भीमसेनसे महाघोर रोमहर्षण संसारका मृत्युकारी घोररूप भयानक युद्ध जारी हुआ ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिद्रोणधृष्टद्युम्न युद्धवर्णनोनामत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५३ ॥

चौवनवां अध्याय

धृतराष्ट्र बोलेकि उस आज्ञा पानेवाले कलिंगके राजानेअपनी सेना समेत युद्ध भूमिमें आकर उस अपूर्व कर्मी महा बलिष्ठ मृत्यु दण्ड समान गदा हाथमें लिये बीर भीमसेन से युद्ध करने को मन किया, संजय बोले हे राजेन्द्र इस रीति से आपके पुत्रसे आज्ञा पाकर वह कलिंग देशका राजा भीमसेन के रथके पास आया, हे भरतबंशी भीमसेनने घोड़े हाथी और रथोंसेयुक्त उत्तमशस्त्रधारी कलिंगों की बड़ी सेनाको चेदिदेशीय लोगोंके साथ आते हुए देख कर केतुधारी निषादों के राजा को घायल किया, तदनन्तर व्यूहित सेना समेत शस्त्रोंको धारण किये अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायु केतुमान नाम निषादोंके राजा के साथ उस युद्ध में भीमसेन के सम्मुख आया, हे महाराज कलिंग देशोंके राजा केतुमानने बहुत हजार रथ और दश हजार हाथियों और निषादों को साथमेंलेकर चारों ओर से भीमसेन को घेरलिया, और भीमसेन के आगेचलने वाले चेदिमत्स्य और क्रोष देशोंके बासी बीरराजाओं समेत एकाएकी निषादों के सम्मुख आकर वर्त्तमान हुए तिस पीछे घोर रूप भयानक युद्ध जारी हुआ, फिर एकाएकी परस्परमें एक दूसरेको मारने की इच्छा से दौड़ते हुए वीरों का और शत्रुओं के साथ भीमसेन का घोर युद्ध जारी हुआ, हे राजा जैसे कि इन्द्र का युद्ध दैत्यों की सेनाके साथहोताहै इसीप्रकार हेभरतबंशी युद्धमेंलड़नेवाले बहुत बड़े शब्दोंसेगर्जनाकरतेहुए सागरकेसमानहुए, हेराजा इसके पीछे परस्परमेंप्रहार और घात करनेवालेयुद्धकर्त्ताओंने सब

पृथ्वीकोमांसऔर रुधिरसेपूरित करके शोभितकिया और मारनेकी इच्छासेअपने और पराये युद्ध कर्त्ताओंको नहीं पहिचाना, फिरयुद्धमें दुर्जयशूरवीरोंने अपनी सेनाके लोगोंको भीशस्त्रोंसे मारा घोड़ोंका बहुतोंके साथ बड़ाभारी युद्ध हुआ, हे राजा चेदिदेशवाले शूरबीरों का युद्ध कलिङ्ग और निषादों के संग हुआ तब चेदिदेशी अपनी सामर्थ्य के अनुसार बीरता को करके, उस भीमसेन को त्यागकर अलग होगये चेदिदेशियों के अलगहोजाने पर सब कलिंगदेशियों के सन्मुख होकर पांडव भीमसेन अपने भुजा बलमें स्थिर होकर खड़ारहा अर्थात् वह महाबली भीमसेन अपने रथसे नहीं हटा, और कलिंगदेश वासियों कोभी अपने तीव्र बाणोंसे ढकदिया तब बड़े धनुषधारी कलिंगके राजा और उसके पुत्र महारथी, शक्रदेवने बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया तदनन्तर अपने भुज बल से रक्षित सुन्दर धनुषको हिलातेहुए महाबाहु भीमसेनने राजा कलिंगको लड़ाया और युद्ध में अनेकबाण छोड़तेहुए शक्रदेवने भीमसेनके चारों घोड़ोंकोमारा फिर शक्रदेव उस शत्रुहन्ता भीमसेनको बिरथदेखकर अपने तीक्ष्णबाणोंसे ढकताहुआ उसकेसन्मुख दौड़ा फिर महाबली शक्रदेवने भीमसेन के ऊपर बाणों की ऐसी बरसाकरी जैसे बर्षाऋतु में जलको बरसाताहै मृतकघोड़ोंके रथ पर चढ़ेहुए महाबली भीमसेनने,, अपनी लोहेकी शैक्य गदाको शक्रदेवके ऊपर फेंका हे राजा कलिंग के राजाका पुत्र उसगदासे मरकर ध्वजा और सारथी समेत रथसे पृथ्वी में गिरा कलिंगदेश के महारथीने अपने पुत्रको मराहुआ देखकर, हजारों रथों समेत भीमसेनकी दिशाओंको रोका तदनन्तर हे राजा पुरुषोत्तम भीमसेनने गदाको छोड़कर अनूपम खड्ग और ढालको हाथमें लिया वह ढाल सुनहरी नक्षत्र और अर्द्धचन्द्रों से जटितथी तदनन्तर क्रोधमें आकर राजा कलिंगने धनुषको ज्याको चढ़ाकर सर्प के बिषके समान एक महाघोर बाणको लेकर मारनेकी इच्छा करके भीमसेन के ऊपरफेंका, हे राजा उस गिरतेहुए विष संयुक्तबाणको

भीमसेनने अपने खड्ग से दोखण्ड करदिये और आपकीसेनाको भयभीत करताहुआ बड़ाप्रसन्न चित्त बड़े शब्दसे पुकारा तदनन्तर राजा कलिंगने महाक्रोधित होकर शीघ्रही भीमसेनके ऊपर शिलासे तीक्ष्णकियेहुए चौदह तोमरोंकोफेंका तब भीमसेननेअपने उत्तम खड्गसे समीपमें न पहुंचनेवाले उन तोमरोंको बीचही में काटा हे पुरुषोत्तम वह भीमसेन उस युद्धमें चौदह तोमरोंको काट कर समीपआयेहुए भानुमन्तके सन्मुख दौड़ा तदनन्तर भानुमन्त तीरोंकी बर्षासे भीमसेनको ढककर आकाश और पृथ्वीकोशब्दायमान करके महाशब्दका करनेवालाहुआ तब भीमसेन उस सिंहनादको न सहकर अपनी महागर्जना करके गर्जा कलिंग देशों की सेना उस शब्दसे भयभीत हुई, हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र युद्ध में सबोंने भीमसेनको मनुष्य नहीं माना इसके पीछे भीमसेन बड़े उच्चशब्दको करके, खड्गसमेत महावेगसेदौड़करहाथीके दांतोंके द्वारा उत्तमहाथी परचढ़गया और शीघ्रहीहाथीकी पीठ परहोगया, फिर बड़े खड्गसेभानुमन्तकी कमरको काटकर उसशत्रुहन्तानेयुद्ध भूमिमें उस राजकुमारको मारकर बड़े भारीखड्गको हाथी के कंधे पर गिराया उसके प्रहारसे वह गजराज हाथीपृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि रत्नोंसे प्रकाशित पहाड़ सिंहकेवेग से टूटकर गिर पड़ताहै हेभरतवंशीवह महाबली भीमसेनगिरतेहुएहाथीसे कूदकर हाथमें खड्गलिये महा अलंकृत शस्त्रयुक्त प्रसन्न मन होकर पृथ्वी पर नियतहुआ और निर्भयहोकरअनेक हाथियोंको गिराताहुआ बहुत सेमार्गोंमें घूमाफिर वह समर्थ घोड़ोंकेहाथियोंके और रथोंके समूहों में सब ओर से गोल अग्निके समान दिखाई दिया,महाबली भीमसेन उस युद्धभूमिमें पक्षीरूप पदातियों के समूहों में बाज पक्षी के समान सब को मारता और घूमता दृष्ट पड़ा, फिर वह बड़ा वेगवान् भीमसेन तीक्ष्ण धारवाले खड्गसे उन युद्धकर्त्ता हाथियों के सवारों के शिर और देहोंको काटताहुआ देखने में आया, शत्रुओं के भय उत्पन्न करनेवाले अत्यन्त क्रोधरूप मृत्यु

के समान पदाती अकेले भीमसेन ने उन सब शूरबीरों को मोहित किया, उस महाभारी युद्धमें हाथ में तीक्ष्ण खड्ग को लिये बड़े वेगवान् भीमसेन को घूमताहुआ देखकर सब लोग अत्यन्त व्याकुल और अचेत होकर पुकारते हुए भागे, फिर शत्रुहन्तापराक्रमी भीमसेन ने युद्ध में रथियों के रथ जुए आदि को काटकर रथियों को भी मारा, और बहुत मार्गोंमें घूमताहुआ दिखाई दिया हे भरतबंशी फिर भ्रांत उद्भ्रांत आविद्ध(आप्लुत)(प्रस)(तेस्टत)संपात समुद्वरण अर्थात् (घुमाना) (ऊंचाघुमाना) (टेढ़ाघुमाना) शरीर में लयकरना झुकेपर (झुकाना) सब खड्ग का (प्रहार) बड़े बल से (मारना) क्रम से इन सब दशाओं को दिखाया हे राजा कितनेही शूरबीर भीमसेन के खड्ग के अग्रभाग से कटगये और टूटे कवच वाले गर्ज २ कर मरगये इसीप्रकार से हे राजा दांत और सूंड़ों की नोक टूटे मस्तक फटे चोट खायेहुए शूरबीरोंसे रहित हाथियों ने भी अपनीही सेना को मारा और बड़े भारी शब्दोंको करके वह सब पृथ्वी पर गिरपड़े, और हे राजा कटेहुए तोमर वा बड़े भारी शिर वा सुवर्ण से जटित परशे वा सुवर्ण से जटित स्वच्छझूलें वा ग्रीवाके भूषण हाथियोंकी भूषणों समेत पताका वा(तूणीर)(यन्त्र) विचित्र (धनुष) वा श्वेत वर्णके (अग्निदण्ड) वा अंकुशोंसेयुक्त चावकोंको वा नानाप्रकार के घंटे और सुनहरी खड्गों की मूठों को भी, सवारों समेत गिरेहुए और जहां तहां पड़े हुओं को देखताहूं जिनके अंग और आगे की सूंड़ के भाग कटगये और जो मर भी गये उन हाथियों से वह पृथ्वी ऐसी होगई जैसी किगिरेहुए पहाड़ोंसे होजाती है, उस नरोत्तम ने इसप्रकार बड़े २ हाथियों को मारकर घोड़ोंको भी मर्दन किया, और घोड़ों के उत्तम २ सवारों को भी मारकर गिराया हे भरतर्षभ तेरे पुत्रों का और पाण्डव लोगों का वह महा घोर युद्धहुआ, विचित्र लगाम और उत्तमसुवर्णसे मंडित झूलें (परशे) (तोमर) (प्रास) (दुधारेखड्ग), (कवच) ढालें और अनेक रत्नवाले बिस्तर यह सब उस महा युद्ध में जहां

तहां कटेहुए बहुमूल्यके दिखाई दिये, इसके विशेष उसने विचित्र पोथयन्त्र और स्वच्छ खड्गोंसे भी पृथ्वी को ऐसा व्याप्त करदिया कि कमलों से शवल व्याप्त होताहै, महाबली पांडव भीमसेन ने सेनामेंजाके कितनेही रथियों को मर्दनकरके खड्गसे ध्वजाधारियों कोभी गिराया,युद्धमें उस उग्र रूपके बारंबार इधर उधर दिशाओं में गिरते दौड़ते और चित्रमार्गोंमें घूमते हुयेको देखके मनुष्य बड़े आश्चर्यमें हुये,कितनोंको तो चरणोंहीसे मारा किसीको खैंचकर मारा किसीको खड्गसे मारा किसीको शब्दसे भयभीत किया,किसीको जंघाओंके वेगसे पृथ्वीपर गिराया इनसब बातोंको देखतेहुये अन्य लोग बड़े भयातुर होकर भागगये, इसरीतिसे मरीकुटीवेगवान्कलिंग देशियोंकी बड़ीसेना युद्धमें भीष्मजीको मध्यवर्त्ती करके भीमसेन के सन्मुख दौड़ी,तदनन्तर भीमसेन कलिंगकी सेनाके आगे श्रुतायुषको देखकर उसके सन्मुख गया उस बड़े बुद्धिमान् कलिंग देशीने भीमसेनको आताहुआ देखकर नौतीरोंसे हृदयके मध्य में घायल किया,अंकुशसे पीड़ित हाथीके समान बाणोंसे घायल भीमसेन क्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि इंधनसे अग्नि प्रज्वलित होतीहै,तदनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ अशोकने सुनहरी अंगवाले रथको साथ लेकर भीमसेनको सवार करवाया,शत्रुहन्ता भीमसेन बड़ी शीघ्रतासे उसरथपर चढ़कर श्रुतायुषके सन्मुख दौड़ा और तिष्ठतिष्ठ शब्दको कहा,तदनन्तर अपनी हस्त लाघवताको दिखाते हुये महाक्रोध रूप बलवान् श्रुतायुषने बड़े तीक्ष्ण बाणोंको भीमसेन के ऊपर फेंका,हेराजा श्रुतायुषके उत्तम धनुषसे छुटेहुये तीव्र नौबाणोंसे घायल महाबली भीमसेन ऐसा महाक्रोधित हुआ जैसे कि लकड़ीसे घायल सर्प क्रोधित होताहै,पराक्रमियोंमें श्रेष्ठ क्रोधित भीमसेनने बड़े भारी धनुषको चढ़ाकर,सातलोहेके बाणोंसे श्रुतायुषको मारा और बाणोंसेही श्रुतायुके दोनों महाबली पार्श्वोंके रक्षक सत्यदेव और सत्यको यमलोक भेजा इसके पीछेमहा साहसी भीमसेनने तीव्रनाराचोंसे,केतुमन्तको यमलोकमें पहुंचाया

फिर कलिंग देशी क्षत्रियोंने अत्यन्त क्रोधित होकर हजारोंसेनाओं से उस क्रोधित भीमसेनको लड़ाया तदनन्तर हेराजा सैकड़ों कलिंग देशियोंने बरछी गदा खड्ग तोमर दुधाराखड्ग और परशों के द्वारा भीमसेनको रोका,,तब भीमसेनने उनको और उनकेबाण समूहोंको बहुत अच्छी रीतिसे रोककर,गदाहाथमें लिये बड़ी तीव्रतासे दौड़कर सात सौवीरोंको यमलोकमें पहुंचाया,फिर उसी शत्रुहन्ताने कलिंगदेशियों के दोहजारवीरोंको कालवश किया यह बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ, इसप्रकार उस भयानक पराक्रमी महावीर भीमसेनने कलिंगदेशियों की उन सेनाओंको युद्धमें बारंबार भगाया, और असंख्य हाथियों को सवारों से रहित किया फिर वह हाथी भी बाणोंसे पीड़ित होकर अपनीसेना को मारते खूंदते अत्यन्त गर्जते हुए सेना के मध्य में से ऐसे भाग गये जैसे कि बायुसे टक्कर खाये हुए बादल इधर उधर होजाते हैं तदनन्तर खड्गहाथ में लिये महाबली,, अत्यन्त प्रसन्न चित्त भीमसेनने बड़े घोर शंखको बजाकर सब कलिंगदेशी सेना के हृदयको कंपाया, हे परन्तप धृतराष्ट्र कलिंग देशियोंमें मोह पैदाहुआऔर सवारियों समेत सब सेनाके लोग अत्यन्त भयभीत हुए, युद्धमें सब ओरसे गजेन्द्रके समान मार्गोंमें घूमते और जहां तहां दौड़ते अथवा बारम्बार उछलते भीमसेन के देखने से बड़ा मोह अर्थात् बिह्वलता प्राप्तहुई, वह सेना भीमसेन के भयसे ऐसी अत्यन्त कम्पायमान हुई जैसे बड़े ग्राहसे पीड़ित सरोवर होताहै,भीमसेन से कौरवोंको भयभीतहोनेसे और चारों ओरसे उन कलिंगदेशियों के लौटने और भागजानेपर पाण्डव के सेनापति ने आज्ञादी कि तुमभी लड़ो, हे भरतबंशी शिखण्डी जिनमें उत्तमहै वहसेना सेनापतिके बचनको सुनकर, प्रहार कर्त्ता रथियोंसमेत भीमसेनकेपास वर्त्तमान हुई, और धर्मराज युधिष्ठिर ने मेघवर्ण हाथियोंकी बड़ी सेना समेत पीछेकी ओरसे उन सबको रक्षित किया इस रीतिसे धृष्टद्युम्न सेनापति ने अपनी सब सेनाको चलाकर अच्छे पुरुषों

समेत भीमसेनके पृष्टभाग को रक्षित किया इस लोकमें भीमसेन और सात्विकी के सिवाय पांचालेश राजाधृष्टद्युम्नको कोई अन्य प्राणों से प्यारा नहींहै उस शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न कलिङ्गोंके मध्यमें घूमतेहुए महाबाहु भीमको देखकर सबओर को गर्ज करके महा प्रसन्न हआ,, फिर उसने युद्धमें शंखको बजाकर महा सिंहनाद को किया तब वह भीमसेन उस कपोत के समान घोड़ों से युक्त सुवर्णसे मंडित रथपर कचनार वृक्षकी ध्वजाधारी को बैठा हुआ देखकर विश्वास युक्त हुआ और वह महा साहसी धृष्टद्युम्न उस कलिंग देशियों की ओर दौड़नेवाले भीमसेनको देखकर, उसकी रक्षाके लिये युद्धमें घुसकर उसकेपास आया तबउन महासाहसी धृष्टद्युम्न और भीमसेन दोनों बीरों को कलिंग देशकीसेना दूरसे युद्धमें वर्त्तमान देखकर महा भयभीत हुई फिर उस शीघ्रगामियों में श्रेष्ठ सात्विकी ने वहां जाकर भीमसेन और धृष्टद्युम्नके पृष्ठको रक्षित किया और बड़ी धनुषधारी सेना को मारकर भयानक रूपमें नियतहुआ और भीमसेनने कलिंगदेशियोंसे उत्पन्न रुधिररूपकीच से भराहुई, रुधिरके बहनेवाली नदीको जारीकिया इसी अन्तरमें महाबली भीमसेनकलिंगदेशीय और पांडवोंकी महादुर्गम सेनाको अच्छे प्रकारसे तरगया हेराजा तब तुम्हारीसेनाके लोग भीमसेन को देखकरपुकारे,कि यह कालपुरुष भीमरूपसे कलिंगदेशियों के साथ लड़ता है तदनन्तर शान्तनु भीष्मजी युद्धमें उस शब्दको सुन कर सेनाको चारोंओरसे तैयार करके बड़ीशीघ्रतासे सेनाके सन्मुख आये उनको आतेहुए देखकर सात्विकी वा भीमसेन और धृष्टद्युम्न भीष्मजी के रथके सन्मुख दौड़े और सबोंने बड़ी शीघ्रतासे गंगापुत्र भीष्मजीको चारोंओर से घेरकर तीन २ शीघ्रगामीबाणों से घायल किया फिर आप के पिता देवव्रत भीष्मजीने उन सब उपाय करनेवाले बड़े धनुषधारियों को सीधे चलनेवाले तीन २ बाणोंसे घायलकिया तिसके पीछे हजार बाणोंसे उनमहारथियों को रोककर सुनहरी कवचरूप वस्त्रोंसे अलंकृत भीमसेन के घोड़ों

को बाणोंसे मारा फिर मृतक घोड़े वाले रथपर नियत प्रतापवान् भीमसेन ने बड़ी तीव्रतासे भीष्मजीके रथपर उग्रबरछीको फेंका फिर आपके पिता देवव्रतने उस न पहुंची हुई बरछीको बीचहीमें दो खंड करके पृथ्वीमें गेरदिया तदनन्तर पुरुषोत्तम भीमसेन बड़ी शीघ्रतासे शक्या यशो बड़ीगदा को लेकर रथसे कूदा और महारथी धृष्टद्युम्न उसको अपने रथपर सवार करके सबसेनाके देखते हुए दूर लेगया तदनन्तर सात्विकीनेभी भीमसेनके अभीष्टके लिये शीघ्रही शायकों से कौरवोंके पितामह भीष्मजीके सारथीको रथसे गिराया उस सारथीके मरने पर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजीभी उन वायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा युद्ध भूमि से दूर चले गये तदनन्तर हे राजा उस महाभारती भीष्मके दूरचलेजाने पर भीमसेनको ऐसा महाकोप उत्पन्नहुआ जैसे कि बनको जलानेवाली अग्नि प्रचंडहोती है और सब कलिंगदेशियोंको मारकर सेना में आगया, हे भरतवंशी आपका कोई बीर इसके सन्मुख होनेको समर्थ नहींहुआ फिर वह भरतवंशियोंमें श्रेष्ठभीमसेन पांचाल और मत्स्यदेशियों से अच्छी रीतिसे प्रशंसित धृष्टद्युम्न को छोड़कर सात्विकीसे मिला, तदनन्तर यादवोंमें श्रेष्ठ सत्यपराक्रमीसात्विकी धृष्टद्युम्न के देखते हुए भीमसेनकी प्रशंसाकरके यह बचन बोला कि प्रारब्धसे राजा कलिंग और राज कुमार केतुमान् और कलिंगदेशी शक्रदेव और अन्य सब कलिंगदेशी लोग युद्धमें मारेगये सो तुम अकेलेने ही अपने भुजबलके पराक्रम से कलिंग देशियों के घोड़े हाथी और रथों से संकुल महाबली शूरवीरोंसे सेवित महा व्यूहको मर्दनकिया, शत्रुओं का जीतनेवाला और लम्बीभुजावाला सात्विकी इस प्रकारसेकह कर उस रथपर नियत पांडवों के पास जाकरमिला, तदनन्तरउस क्रोधसेभरेसात्विकीनेभी आपकी सेनाके मनुष्यों को मारा और भीमसेनकी सेनाको रक्षित किया १२४॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिकलिंगबधेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४॥

पचपनवां अध्याय॥

संजयबोले हे भरतबंशी उस मध्याहनके अन्तहोनेपर रथघोड़े हाथी और सवार पैदलों के बड़े नाशहोनेपर धृष्टद्युम्न अकेलाही अश्वत्थामा शल्य और महात्मा कृपाचार्य्य इन तीनों महाबलियों के सम्मुख हुआ, और बड़ी शीघ्रतासेतीव्र और शीघ्रगामी बाणों से अश्वत्थामाके प्रसिद्ध घोड़ोंको मारा तदनन्तर मृतक घोड़े वाला अश्वत्थामा बहुतशीघ्र शल्यके रथपरचढ़कर उसीरीतिसे बाणसंयुक्त होकर धृष्टद्युम्नके सन्मुखहुआ, हेभरतबंशी सुभद्राका पुत्र अभिमन्यु अश्वत्थामा से भिड़े हुए धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े तीव्र बाणोंको फेंकताहुआ शीघ्रही सन्मुख दौड़ा, और वहां जाकर उस अभिमन्यु ने शल्यको पच्चीसबाणोंसे कृपाचार्य्यको नौबाणोंसे और अश्वत्थामाको आठबाणोंसे घायलकिया, इसके पीछे अर्जुनकेपुत्रअभिमन्युको अश्वत्थामाने एकबाणसे शल्यने बारहबाणोंसे और कृपाचार्य्यने तीन तीक्ष्णबाणोंसे घायलकिया, फिर आपकापोतालक्ष्मण उससन्मुख आयेहुए अभिमन्युको देखकर महाकोपितहोकर उसके आगे बर्त्तमान हुआ और उन दोनोंका युद्ध जारीहुआ, हे राजा इसके पीछे महाक्रोधी दुर्य्योधनके पुत्रने युद्धमें उस सुभद्राके पुत्र को तीव्रबाणोंसे घायलकिया यह आश्चर्य्यसा हुआ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ फिर उस क्रोधरूप अभिमन्युनेअपनी हस्तलाघवतासे शीघ्रही पांचसौबाणोंसे भाई लक्ष्मणको घायलकिया फिर लक्ष्मण ने भी एकबाणसे उसके धनुषको मुष्टदेशसे काटा इसकारणसे मनुष्योंने बड़ा शब्द किया, फिर बीर शत्रुहन्ता अभिमन्युने उस टूटे हुए धनुषको छोड़कर बड़े वेगवान् जड़ाऊ धनुषको हाथमें लिया, फिर युद्धकर्ममें प्रवृत्त द्वन्द्वयुद्ध करनेवाले दोनों पुरुषोत्तमोंनेतीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे परस्पर एकको एकने घायलकिया, इसके पीछे महाराजादुर्य्योधन अपने महाबली पुत्रको आपकेपोतेसे पीड़ामान् देखकर वहां आया फिर आपके पुत्रके अलग होजानेपर सब राजा

लोगोंने रथोंके समूहों समेत अर्जुनके पुत्र अभिमन्यु को रोका, हे राजा युद्धमें अजेय श्रीकृष्णजी के समान पराक्रमी शूरबीरअभिमन्यु उन शूरोंसे घिराहुआ भी व्याकुल नहीं हुआ, तदनन्तर अर्जुन वहां अभिमन्युको भिड़ाहुआ देखकर अत्यन्त क्रोधितहोकर अपने पुत्रकी रक्षाकरने को सन्मुख दौड़ा तदनन्तर रथ घोड़े और हाथियोंसमेत वह राजा लोग जिनमें अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य्य थे अकस्मात् आकर अर्जुन के सन्मुख बर्त्तमान हुए, मनुष्य घोड़े और रथोंके चलनेसे एकाएकी पृथ्वीसे धूलउड़ी और सूर्य्यकेमार्ग को पाकर तेज दिखाई दी, वह हजारों हाथी और राजालोग उस अर्जुन के बाणोंके मार्गको पाकर सबरीतोंसे सन्मुख बर्त्तमाननहीं रहे, सब जीव जन्तु पुकारे और दिशाओं में अन्धकार हुआ और कौरवोंका अन्यायरूप भयानक फल उत्पन्न हुआ, हे नरोत्तम मुकुटधारी अर्जुन के बाणोंसे अन्तरिक्ष अर्थात् पृथ्वी और आकाश के मध्यमें दिशा पृथ्वी और सूर्य्य नहीं दिखाई दिये, हाथी ध्वजाओं से रहित हुए और असंख्यों रथी मृतक घोड़े वाले हुए और कोई महारथी एसे दृष्ट पड़े कि जिनके रथी भागगये, कहीं रथी लोग अपने रथों से रहित शस्त्र और बाजूबन्दों समेत इधर उधर दौड़ते हुए जहां तहां दिखाई देते थे, हे राजा अर्जुनके भयसे घोड़े के सवार घोड़ों को और हाथी के सवार हाथियों को त्याग करके चारों ओरसे भागे, और बहुत से राजा लोग अर्जुनके बाणोंसे रथ हाथी और घोड़ोंसे गिराये वा गिरते हुए दृष्ट पड़ते थे, हे राजा अर्जुन ने जहां तहां गदा समेत उठायेहुए और खड्ग पराश तूणीर बाण धनुष इत्यादिको उठाये हुए अथवा अंकुश और पताकाओं समेत उठाये हुए मनुष्यों की भुजाओं को अपने कराल बाणों से काटकर रुद्र रूप धारणकिया, हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र युद्धमें कटेहुए परिघ मुद्गर प्रासभिन्दिपाल खड्ग,तीक्ष्ण परसे तोमर और धनुष से काटेहुए सुनहरी कवच भी हज़ारों पृथ्वीपर पड़ेहुए दृष्ट आये, और सब प्रकार की ध्वजा ढाल पंखे और सुनहरीदण्ड वाले छत्र

तोमर, चावक कोड़े और रस्सियों के ढेरोंकेढेर युद्ध भूमिमें फैले हुए दिखाई दिये हे श्रेष्ठ आपकी सेनाका कोई मनुष्य भी ऐसा न हुआ जो युद्धमें उस शूर बीर अर्जुन के सम्मुख जाय, हे राजा युद्ध में जो जो अर्जुन के सम्मुख जाताहै वह बाणोंके द्वारा यम पुरको भेजा जाताहै सब रीतिसे आपके शूरोंके भागजानेपर अर्जुन और बासुदेवजीने उत्तम शंखोंको बजाया फिर आपके पिता देवव्रतउस सेनाको भागा हुआ देखकर, बड़ा आश्चर्य्य करके युद्धमें महा शूर वीर द्रोणाचार्य्यजी से बोले कि यह पंडुका बेटा बीर बलवान् श्री कृष्णजी के साथ में होकर उसी प्रकार सेनाओं को मारकर काटे डालताहै जैसे कि संसारी धनका बिजय करनेवाला करताहै, अब यह किसी प्रकारसे भी युद्धमें जीतने के योग्य नहींहै, इसकारूप कालवा अन्तक वा यमनाम मृत्युके समान दृष्ट आताहै और यह बड़ी सेनाभी नाश करवाने के योग्य नहींहै देखो यह सेना परस्पर की सहायता से निर्ब्बल है यह सूर्य्य सब रीतिसे सब लोकों की दृष्टिको हरता हुआ पर्व्वतों में श्रेष्ठ अस्ताचल को प्राप्त होता है हे पुरुषोतम ऐसी दशामें मैं सेनाके विश्रामको चाहताहूं, जो युद्ध कर्त्ता भयभीतहुए थकगयेहैं वह कभी नहीं लड़ेंगे महारथीभीष्म जीने आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणा चार्य्यसे इसरीतिसे कहकर आपकी सेनाओंका बिश्रामकिया हेश्रेष्ठ सूर्य्यके अस्तंगत होनेपर आपकी और पांडवोंकी सेनाका विश्रामहुआ और सन्ध्यावर्त्तमानहुई ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय

संजय बोले कि इसके पीछे शत्रु संतापी भीष्मजीने प्रातःकाल के समय चढ़ाई करने के निमित्त सेनाओंको आज्ञाकरी, तब आप के पुत्रोंकी विजय चाहनेवाले कौरवों के पितामह वृद्ध भीष्मजीने गारुड़नाम महाव्यूहको रचा, उसमें आपकेपिता देवव्रत तो गरुड़ की चोंचपरहुए और भारद्वाज द्रोणाचार्य्य वा कृतवर्मा यादव यह

दोनों नेत्रोंकेस्थानमेंहुए और यशश्वी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य शिरके स्थानमें हुए और जो त्रिगर्त्त मत्स्य वा केकय यह सबवा-रधानोंसे युक्तथे, और (भूरिश्रवा) (शल) शल्य भगदत्त मद्रक सिंधु सौवीर और पंचनदवासी लोग यह सब जयद्रथके साथ ग्रीवा में नियतहुए और राजा दुर्य्योधन अपने सगे भाइयोंसमेत अपनेपीछे चलनेवाले शूरवीरोंसे युक्त पीछेकीओर नियतहुए और विन्दअनु-विन्द और अवन्तिके राजालोग और कांबोज यह सब शकलोगों वा सूरसेनदेशी बीरलोगोंके युक्त गरुड़ की पूंछकीओर नियतहुए, और मगधदेशी वा कलिंगदेशी वा असुर लोगोंके समूह यह सब उस गरुड़के दक्षिण पक्षपर नियतहुए, और (कारुष) (विकुंज) (मुंड) (कौंडी) (वृष) यह सब वृहद्वलसमेत बायें पक्षपर उपस्थितहुए, उस युद्धभूमिमें शत्रुहन्ता परन्तप अर्जुनने उस व्यूहित सेनाकोदेखकर धृष्टद्युम्नकी सलाहसे उसकी समानताका अपनी सेनाका भीव्यूह रचा अर्थात् सब पाण्डवोंने आपके उस व्यूहको देखकर अर्द्धच-न्द्रनाम व्यूहसे अपनी भयानक सेनाको सुशोभित किया, और नानाप्रकार के शस्त्रोंके समूह और अनेक देशी राजालोगोंसे युक्त भीमसेन दाहिने शृंगपर नियतहोकर शोभायमान हुआ, उसीके पीछे महारथी विराट् और द्रुपद नियतहुए फिर उनके पीछे अपने नीले आयुधोंसमेत राजा नील और नीलके पीछे चंदेरी वा काशी वा करूपदेशी वा पौरवदेशी इन सबको साथलिये राजा धृष्टकेतु बर्त्तमान हुए और हे भरतर्षभ धृष्टद्युम्न शिखण्डी पांचालदेशी और प्रभद्रक यह सब अत्यन्त सेना समेत युद्ध करनेकेलियेबीचमें नियतहुए और उसी स्थानमें हाथियोंकी सेनासमेत राजाधर्मराज युधिष्ठिर भी बर्त्तमान हुए और उसके पीछे सात्विकी वा द्रौपदी के पांचोंपुत्र, थे उनसे पीछे अभिमन्यु अभिमन्यु के पीछे इरावान और उसके पीछे भीमसेनका पुत्र घटोत्कच और महारथी केकय देशी उसके पीछे नरोत्तम सब जगत का रक्षक जिसके रक्षकजना र्दन थे वह अर्जुन हुआ, इसरीतिसे पाण्डवोंने आपके पुत्रोंके और

उनके सहायकोंके मारनेके निमित्त इस बड़े भारी व्यूहको रचा, तदनन्तर आपके पुत्र और पाण्डवोंमें परस्पर वह युद्ध जिसमेंहाथी घोड़े और रथ संयुक्त थे जारीहुआ, हे राजा जहां तहां वह हाथी और रथोंकेसमूह परस्पर में मारते और गिरतेहुए दृष्टपड़तेथे, और दौड़ते वा पृथक् २ लड़नेवाले रथके समूहों के महा कठिन शब्द दुन्दुभियों के शब्दोंसे मिलेहुए सुनेजाते थे, हे भरतवंशी उसतुमुलयुद्धमें परस्परमें मारतेहुए आपके और दूसरोंके शूरबीरोंकेशब्द आकाश तक व्याप्तहुए, २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिगारुड़ाद्रुचन्द्रव्यूहनिर्माणेषट्पंचाशत्तमोऽध्याय ॥५६॥

सत्तावनवां अध्याय॥

संजय बोले हे भरतवंशी इसके अनन्तर आपके पुत्रों की और पाण्डवोंकी सेना व्यूहित होनेपर बाणोंसे महारथियों को गिराते हुए अतिरथी अर्जुनने रथके यूथपोंको इस रीति से मारा जैसे कि युगके अन्तमें कालसबका नाशकरताहै, इसरीतिसे अर्जुनसेघायल और पीड़ित उन धृतराष्ट्र के पुत्रोंने युद्धमें महाकुशल पांडवलोगों से युद्धकिया हे राजा अपनी कीर्त्ति के चाहनेवाले उन कौरवों ने मृत्युको न लौटनेवाली मानकर चित्तको स्थिरकरके पांडवोंकी सेनाको अनेक रीतोंसे छिन्न भिन्नकरके आप भी युद्धसे छिन्नभिन्न होगये, फिर भागते और छिन्न भिन्नहोते अथवा लौटते समय में कौरव पांडवोंकी धूमधाममें कुछ नहीं जानागया और धूल ऐसी उड़ी कि जिससे पृथ्वी और सूर्य्य ढकगये और अन्धकार ऐसा मचगया जिसमें दिशा विदिशा का कुछ भी ज्ञान न रहा, हे राजा उस समय जहां संग्राम भूमिमें ध्यान और नाम गोत्रोंकेद्वारा युद्ध जारी रहा, हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र वहां भारद्वाज द्रोणाचार्य्य से रक्षित वह कौरवों का व्यूह छिन्नभिन्न नहीं होता था, और इसी प्रकार अर्जुन से रक्षित पांडवोंका बड़ा व्यूह भी भीमसेन से आश्रित होकर पराजय नहीं होताथा फिर वहां रथ हाथियोंसे संयुक्त

दोनों सेनाओंके मनुष्य सेनाके आगेसे निकलकर युद्ध करनेलगे, तब उस महायुद्ध के बीच तीक्ष्ण धारवाले दुधारा खड्ग और परशोंके द्वारा घोड़ोंके सवारोंके हाथसे घोड़ोंके सवार गिराये गये, फिर उस अत्यन्त भयकारी सेनामें सुनहरी बाणोंसे रथीनेरथीको सन्मुख होकर गिराया, फिर आपके और उनके हाथियोंकेसवारों के समूहों ने नाराच शर और तोमरों के द्वारा सन्मुखहोकर हाथियोंके सवारों को गिराया और उस रणमें पत्तिसिंह नाम सेना के भागने भिण्डिपाल और परशों के द्वारा पतियोंको गिराया और रथीने हाथीके सवारको सन्मुख होकर मारा और हाथीकेसवारने इसीप्रकार से रथीको जा गिराया, हे भरतर्षभ घोड़ोंके सवारोंने परासोंके द्वारा रथीको और रथीने घोड़े के सवारको, और दोनों सेनाओंके हाथीके सवारोंने तीक्ष्ण शस्त्रोंसे घोड़ोंके सवारोंको और घोड़ोंके सवारोंने हाथीके सवारोंको विध्वंस किया यह भी आश्चर्य्यसाहुआ और जहां तहां अच्छे २ हाथीके सवारोंकेहाथसे पदाती भी मारेहुए दृष्टपड़े और उन पदातियों के हाथसे हाथियों के सवार मरेहुए देखने में आये घोड़ोंके सवारों से पतियों के समूह और पतियोंसे सवारोंके समूह गिरायेहुए दिखाई दिये, हजारों गिरतेहुए हजारों कटेहुए हजारों ध्वजा और धनुषों समेत और हजारों तोमर परिस्तोम और कुथों समेत और बहुतेरे बहु मूल्य कंबलोंकोओढ़ेहुए प्रास गदा परिघ कंपन शक्ति और विचित्रकवचोंको धारणकिये भूमिमें गतप्राण दीखे हेभरतर्षभ हजारों(कुणप) (अंकुश) और सुवर्ण पुंखवाले बाणोंसे भूमि ऐसी शोभायमान थी जैसे कि मालाओंसे पूरित होकर शोभित होतीहै और उस महायुद्धमें मनुष्य घोड़े और हाथियों के गिरेहुए शरीरोंसे ढकीहुईपृथ्वी मांस रुधिररूपी कीचसे महा दुर्गम और देखने के योग्य न थी और मनुष्यों के रुधिरोंसे छिड़कीहुई पृथ्वीकी धूल अत्यन्त शान्त होगई हे राजा सब दिशा शुद्धहुई और कवन्ध अर्थात् बिना शिर के रुण्ड चारोंओर से असंख्य उत्पन्न होकर सब संसार के नाश

कारकहुए फिर उस बड़े भारी भयानक युद्ध जारीहोने पर चारों ओर से दौड़तेहुए अनेक रथी दृष्टपड़े इसके पीछे (भीष्म) (द्रोणाचार्य्य) (जयद्रथ) (राजासिंधु) (पुरुमित्र)(विकर्ण) (शकुनि)(सौबल) यह सब युद्धमें दुर्धर्ष सिंहके समान पराक्रमी पांडवोंकी सेना के मारनेको उपस्थित हुए, इसीप्रकार हे भरतबंशी (भीमसेन) (घटोत्कच राक्षस) (सात्विकी) (चेकितान) द्रौपदीके पांचोंपुत्र इन बीरों ने भी सब राजाओं समेत युद्ध भूमिमें नियतहोकर आपके शूरवीरोंसमेत सब पुत्रोंको ऐसे छिन्नभिन्नकरदिया जैसे कि देवतालोग दानवोंको करदेते हैं इसीप्रकार से वह सब क्षत्री परस्पर में युद्ध प्रहार करते हुए, रुधिर भरे हुए शरीरों से घोर रूप किंशुकवृक्षों के समान शोभायमान दिखाई देनेलगे हेराजा दोनों ओरकी सेना के शूरवीर अपने २ शत्रुओं को विजय करके ऐसे देखनेमें आतेथे जैसे कि आकाशमंडलमें सूर्य्यादि बड़े ग्रहदिखाई देतेहैं इसके उपरान्त आपकापुत्र दुर्य्योधन हज़ाररथोंके साथ,उस युद्धमेंपांडव और घटोत्कच राक्षसके सन्मुख आयावैसेही सब पांडवभी अपनी बड़ी सेना समेतभीष्म और द्रोणाचार्य्यके सम्मुखगयेयह सबपांडवआदि युद्धमें शूरवीर शत्रुओं के विजय करनेवाले हैं इसके पीछे दिव्य मुकुट धारी क्रोधमें भरा अर्जुन सब ओरके राजाओंके सम्मुख गया, और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु वा सात्विकी यह दोनों शकुनी की सेनाके सुन्मुख गये तिसके पीछे परस्पर में विजय की इच्छारखने वाले आपके पुत्रोंका और दूसरोंका रोम हर्षण करनेवाला महा युद्ध फिर जारी हुआ ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः॥ ५७॥

अट्ठावनवां अध्याय

संजय बोले कि फिर उन क्रोधरूप राजाओंने अर्जुनको युद्धमें देखकर हजारों रथ समेत उसको आनकर घेरलिया, तदनन्तर हे भरतबंशी उसको रथ समूहोंसे घेरकर चारों ओरसे हजारोंबाणों

से भी रोका, फिर युद्धमें क्रोधरूप उनलोगोंने स्वच्छबरछी तीक्ष्ण गदा प्रास परश्वध मुद्गर और मूशलों को परिघों समेत अर्जुन के रथपर छोड़ा और अर्जुनने भी अपने सुनहरी बाणोंसे उसटीड़ी के समूहके समान राजाओंकी शस्त्रऔर बाणों की वर्षाको चारों ओरसे रोका हे राजा उस युद्धमें अर्जुनकी हस्तलाघवता जो कि दृष्टिसे बाहर थी, उसको देव दानव गन्धर्व पिशाच उरग और राक्षसों ने देखकर अर्जुनकी बड़ी प्रशंसा धन्य २ शब्दों से करी और सात्विकी और अभिमन्यु ने बड़ी सेना वाले युद्धमें शूरवीर गांधारियों को सौबलके पुत्रों समेत युद्धमें रोकदिया, इसके पीछे क्रोधमें भरेहुए सौबलके पुत्रों ने वृष्णिवंशी सात्विकी के उत्तम रथ को नाना प्रकार के शस्त्रों से तिलके समान टुकड़े २ करडाला, हे शत्रु सन्तापी धृतराष्ट्र फिरतो सात्विकी उस महाभारी युद्धके होनेपर उस रथको त्याग शीघ्रही अभिमन्यु के रथपर चढ़ा फिर एकही रथपर सवार होकर उन दोनोंने बड़ी शीघ्रतासे गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे शकुनी को सेना को मारा, और युद्धमेंकुशल द्रोणाचार्य्य और भीष्म जीने कंकपक्ष वाले तीक्ष्णबाणों से धर्मराज युधिष्ठिर की सेना का बिध्वंस किया इसके अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर माद्री नन्दन नकुल सहदेव आदि पांडवोंकी सब सेनाके देखते हुए द्रोणाचार्य की सेना के सन्मुख दौड़े, फिर वहां रोमहर्षण करनेवाला बहुत भारी ऐसा तुमुल युद्ध हुआ जैसे कि पूर्व्व समयमें देवता और असुरोंका महाभयानक युद्ध हुआथा फिर भीमसेन और घटोत्कचने बड़ा कर्म किया तबतो दुर्य्योधन ने सन्मुख आकर उन दोनों कोभी रोका, हे भरतबंशी वहां हमने हिडम्बाके पुत्र घटोत्कचका अपूर्व्व पराक्रमदेखा कि युद्धमें पिता कोभी उल्लंघन करगया फिर अत्यन्त क्रोधभरे अशान्तरूप भीमसेनने हंसकरके प्रशतनामबाणसे दुर्य्योधनके हृदयमें प्रहारकिया तबतो उस महाभारी बज्ररूप प्रहारसे पीड़ामान राजा दुर्य्योधन रथके बैठनेके स्थानमें बैठगया, हे राजा फिर इसकासारथी इसको

अचेत जानकर बड़ीशीघ्रता पूर्व्वक युद्धभूमि से दूर लेगया इसके पीछे सेना इधर उधर विखरगई, फिर भीमसेन जहांतहांसेभागने वाली उस कौरवीसेनाको तीक्ष्णबाणों से मारताहुआ पीछेकीओर से चला, हे भरतवंशी युद्धमें कुशल धृष्टद्युम्न और धर्मपुत्र युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य और भीष्मजीके देखतेहुए शत्रुहनने वाले विशिखोंसे उस सबसेनाको मारा और सेना ऐसी भगी कि जिसकेरोंकनेको भीष्म और द्रोणाचार्य्य भी समर्थ नहींहुए आशय यहहै कि वह सेना महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यसे रोकीहुई भी इनको देखकर भागतीथी और हे परंतप जहां तहां हजारों रथके टूटने पर उन एकरथ पर बैठनेवाले अभिमन्यु और सात्विकीने भी शकुनीकी सेनाका नाशकर दिया, इसके पीछे वह दोनों अभिमन्यु और सात्विकी ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि अमावाश्या के दिन आकाश मंडलमें वर्त्तमान सूर्य्य और चंद्रमा शोभितहोते हैं, हे राजा इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुनने आपकीसेनापर ऐसीबाणों की वर्षाकरी जैसे कि धारोंसे बादल जलकोबरसाताहै, फिर इसके पीछे युद्धके बीच अर्जुनकेबाणोंसे घायल और भयसे विहवल और कंपायमान होकर वह कौरवीसेना युद्धसे भागगई, फिर दुर्य्योधन के अभीष्ट चाहनेवाले महाबली भीष्म और द्रोणाचार्य्य ने उस भागी हुई कौरवी सेनाको बड़े क्रोधसे रोका, हे राजा इसके पीछे राजा दुर्य्योधनने भी अच्छी रीतिसे विश्वास देकर उसभागी हुई अपनी सेनाको चारोंओर से लौटाया, हे भरतवंशी जहां जहां जिस जिसने आपके पुत्रको देखा वहां वहां से वह क्षत्रियोंके महारथीलौटे इसके पीछे हे राजा उन लौटेहुओं को देखकर अन्य मनुष्यभी परस्परकी ईर्षासे वा लज्जासे लौटकर स्थितहुए फिर उन लौटनेवालोंका ऐसा वेगहुआ जैसे कि चन्द्रमाके उदयमें पूर्ण होतेहुए समुद्रकावेग होता है इसके पीछे राजा दुर्य्योधन उन लौटेहुओं को देखकर, बहुत शीघ्रही शान्तनु भीष्मजी के पास जाकर यह बचन बोला हे भरतवंशी पितामह आपमेरे इस बचन

को समझिये हे कौरवों में श्रेष्ठ मैं यह उचित नहीं समझता हूं कि आपके और सकल शस्त्र विद्या के ज्ञाता द्रोणाचार्य्य जी और उनके पुत्र अश्वत्थामा और महाधनुर्धर कृपाचार्य्य वा उनके मित्रों के विद्यमान रहतेहुए सेना भागती है, मैं किसीदशा में भी किसी को आप के समान पराक्रमी नहीं जानताहूं इसीप्रकार द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा के भी समान युद्ध में पाण्डवलोग नहीं हैं, हे पितामह निश्चय करके पाण्डव लोग आपकी कृपाके योग्य हैं हे बीर इसीसे इस घायल और मारीकूटीहुई सेना पर आप क्षमा करतेहो सो हे राजा आपको प्रथम ही सन्मुखता में कहने को योग्य था, कि मैं इस युद्ध में पाण्डव लोगोंसे वा सात्विकी और धृष्टद्युम्नसे नहीं लड़ूंगा हे भरतबंशी जो मैं आपके और आचार्य्यजी के वचनोंको सुनता तो उसीसमय कर्ण से कर्म करवाने के बिचार को करता आप दोनों को इसयुद्ध में मेरा त्यागना योग्य नहीं है, आप दोनों पुरुषोत्तम अपने योग्य पराक्रम के द्वारा युद्धकरो, भीष्मजी इसकी बातोंको सुनकर बारंबार हंसतेहुए क्रोधसे दोनों नेत्रोंको अच्छी रीतिसे खोलकर आप के पुत्रसे बोले कि हे राजा मैंने बहुत वार तुम से तुम्हारा हितकारी बचन कहा है, कि पांडव लोग युद्धमें इन्द्र समेत देवताओं से भी अजेय हैं हेराजाओंमें श्रेष्ठ जो मुझ वृद्ध से करनेके योग्य है, उसको मैं अपनी सामर्थ के अनुसार करूंगा तू अब बांधवों समेत देख कि मैं सेनासमेत पांडवों को तेरे और सब लोकों के देखतेहुए हटाऊंगा हे राजा भीष्मसे कहेहुए ऐसे बचनों को सुनकर आपके आनन्दभरे पुत्रने शंख और भेरीकोबजाया इसके पीछे पांडवों ने भी इस बड़े शब्दको सुनकर शंखोंको बजाकर भेरी मुरजादिकों को अच्छीरीतिसे बजाया ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

—※—

उनसठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसके अनन्तर उस भयानक युद्धमेंमेरे पुत्रके कहने से भीष्मजी के कोपयुक्त होकर प्रण करनेपर, भीष्म जीने पांडवोंकेऊपर और पांचाल देशियोंके पितामहकेऊपर क्या २ काम किये वह मुझसे आप बर्णन कीजिये, संजय बोले कि हे भरतबंशी उस दिनके मध्याह्नसमयके व्यतीत होनेपर सूर्य्यकेपश्चिम और होनेके कालमें, और महात्मा पाण्डवों के बिजयीहोकर प्रसन्न होनेपर सब धर्म्मोंके ज्ञाता आपके पिता देवब्रत भीष्मजी सब रीतिसे आपके पुत्र और सेनाओंसे रक्षितहोकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा पांडवोंकी सेना के सन्मुख गये, हे भरतबंशी इसके पीछे आपके अन्याय के कारण पांडवों से हमारा रोमहर्षण करने वाला महातुमुल युद्धहुआ, अर्थात् धनुषोंके शब्दोंसे और तालों के बजनेसे ऐसा तुमुल शब्दहुआ जैसे कि पर्व्वतों के फटनेका हुआक रताहै, तिष्ठतिष्ठ खड़ाहूं खड़ाहूं इसको देख २ लौट २ नियतहो २ नियतहूं २ प्रहार कर २ इत्यादि अनेकप्रकारके शब्द सुनाईदिये, सुनहरी कवच कमठ और ध्वजाओं पर ऐसे महा शब्दहुए जैसेकि पर्व्वतोंपर शिलाओंके गिरनेसे शब्द होतेहैं, हज़ारों भूषणों से अलंकृत शिर और भुजा पृथ्वीपर गिरकर नानाचेष्टा करनेलगे, कितनेहीं शिर कटेहुए पुरुषोत्तम धनुष उठायेहुए वा शस्त्रोंकोधारण कियेहुए उसी दशामें नियतहुए तब रुधिरसे जारीहोनेवालीघोर नदी हाथियों के अंगरूप शिला और मांस रुधिर रूप कीचड़ से भरीहुई बड़े बेगवान् उत्तम घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीर से प्रकट गिद्ध शृगालों की प्रसन्नता देनेवाली परलोक समुद्र रूपा घोरनदी बड़े प्रबाहसे बही, हे राजा जैसा कि आपके पुत्रों का और पांडवोंका युद्धहुआ वैसा आजतक देखा गया न सुना गया, उस युद्धमें गिरायेहुए शूरवीरोंके कारण कहीं से रथोंके जाने का मार्ग नहीं रहा और नीले २ हाथियोंके गिरेहुए होनेसे वह पृथ्वी

पहाड़ोंके शिखरोंके समान दिखाई दी, हे श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मितकव चोंके और शिर त्राणोंके फैलेहुए होनेसे वह युद्धभूमि ऐसीशोभा-यमानहुई जैसे कि शरद ऋतुमें आकाश मंडल शोभित होताहै, कोई मनुष्य अत्यन्त घायल आंत वा पैरोंसे भी कटेहुए मनसे अ-दीन और अहंकारी होकर उस युद्धमें शत्रुओंके सन्मुखदौड़े, और कोई २ हे पिता हे भाई हे मित्र हे बांधव हे समान अवस्थावाले हे मामा हे काका मुझको मतसताओ मतसताओ ऐसा २ कहकर पुकारे, और कोई सन्मुख बर्त्तमानहो तुम आओ क्या भयभीत है कहां जायगा मैं युद्धमें नियतहूं भय न कर इत्यादि बातें कहकह कर पुकारते थे, उस युद्धमें शान्तनु भीष्मजीने जिनका धनुषमंडल के समान था बिषके बुझेहुए तीव्रनोकके सर्पाकार बाणोंको छोड़ा, हे भरतवंशी बाणोंसे सब दिशाओंको बराबर करनेवाले सावधान व्रत भीष्मजीने पांडवोंके रथियोंको कह कह कर मारा, वह भी-ष्मजी रथके मार्गोंमें नृत्यकरते और हस्तलाघवता को दिखातेहुए उल्काके समान जहां तहां फिरते और चमकतेहुए दृष्टिपड़े, पांड-वोंने संजयों समेत युद्ध भूमिमें उस अकेले शूर बीर की हस्तलाघ वताके कारण लाखोंके समान जानकर भीष्मजीको महा मायावी के सदृश माना, क्योंकि उनको अभी पूर्व्वमें देखकर फिर पश्चिम दिशामें देखा, इसीप्रकार उत्तर में देखकर दक्षिण दिशामेंभी देखा, इस रीतिसे वह गांगेय भीष्मजी युद्धमें महायुद्ध करतेहुए दृष्टिआये, पांडवोंका कोई शूरबीर उनके युद्धके देखनेको समर्थ नहींहुआ इन भीष्मजीके धनुषसे गिरेहुए अनेक विशिख नाम बाण हो दिखाई पड़ते थे, उस संग्राममें उस कर्म करनेवाले सेनाकोमारते देवरूप घूमतेहुए आपके देवव्रत पिताको देखकर युद्धमें लोग अनेकरीतों से पुकारतेथे, और अत्यन्त मोहित हज़ारों राजा लोग उस भीष्म रूप अग्निमें सलभाओंके समान गिरकर काल बशहुए, युद्ध भूमि में उस हस्तलाघवतासे लड़नेवाले भीष्मजी का कोई भी बाण मनु ष्य हाथी घोड़े आदिके शरीरमें लगकर निष्फल नहीं गया, वह

भीष्म युद्धमें झुकेहुए पर्ववाले एकही बाणसे दन्तमंडलधारी हाथी को ऐसे मारडालते थे जैसे कि बज्रसे पर्व्वतको इन्द्रमारताहै आप के पिताने अत्यन्त तीव्र नाराच नाम बाणसे मिलेहुए पर्व्वतों के समान दो वा तीन हाथियोंके सवारोंको भी मारा, जो कोई युद्धमें इस नरोत्तम भीष्मके सन्मुख आता था वह भयसे एक मुहूर्त्त तक पृथ्वीपर गिराहुआ दृष्टपड़ता था, इसरीतिसे अतुल बल भीष्मजी से घायलहुई युधिष्ठिर की सेना हजारों प्रकार से दुखी और भय भीतहुई, वह पांडवों की बड़ी सेना भीष्मजी के बाण समूहों से पीड़ित होकर वासुदेवजी और महात्मा अर्जुन के देखतेहुए बड़ी कंपायमानहुई, उपाय करनेवाले बीरलोग भी भीष्मजी के बाणोंसे अत्यन्त पीड़ामान भागतेहुए महा रथियों के लौटानेको समर्थ नहीं हुए हेमहाराजमहाइन्द्रके समान पराक्रमी भीष्मसे उच्छिन्नपांडवों को बड़ी भारी सेना पराजय को प्राप्त हाहाकार रूप होकर अचेत होगई और रथ हाथी घोड़े भी घायलहोकर ध्वजाओं समेत पृथ्वी परपड़े हुए थे, उसयुद्धमें दैवीबलसे विजयपाने वाले पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको वा मित्रने प्रियमित्रको मारा हे भरतबंशी पांडवोंकी सेनाके मनुष्य कवचोंको त्याग शिरके बालों को फैलाकर दौड़े हुए दृष्टपड़े, तब पांडवोंकी वहसेना जिसके महारथी भ्रान्तीसे युक्तथे व्याकुल दुखी और भयकारी शब्दोंको करतेहुये दिखाई दिये फिर यादवोंके प्रसन्नकरने वाले श्रीकृष्णजी सेनाको पराजयमें प्राप्त देखकर अपने उत्तम रथको रोककर अर्जुनसे बोले, कि हे अर्जुन अब वह समय आगया है जो तेरा अभीष्टहै हे नरोत्तम जोतू मोहसे अज्ञान नहींहै तो इनके ऊपर प्रहार कर, हे महावीर पूर्व्व समयमें राजाओंके मिलापमें जो तुमने कहाहै, कि दुर्योधनकी सेनाके भीष्म द्रोणाचार्य्य आदिलोगोको उनके उनसहायकों समेत मारूंगा जोकि मुझसे युद्धको करेंगे, हे शत्रुंजय अर्जुन तू अपने उस बचनको सत्य कर तू इधर उधर छिन्न भिन्नहुई अपनी सेनाको देख, युधिष्ठिरकी सेनामें युद्ध कुशल मृत्युके समान भीष्मको देखकर इनभागते हुए

राजाओंको देखो,यह सब भयसे पीड़ित होकर ऐसेनाश हुए जाते हैं जैसे कि छोटे २ मृगसिंहको देखकर भयसे मरजाते हैं यह कृष्णके बचन सुनकर अर्जुनने वासु देवजीको उत्तर दिया,कि आप घोड़ोंको उधर चलाओ जहां भीष्मजीहैं मैं अबइस सेन रूपी समुद्र को उतरकर इस अजेय और वृद्ध कौरवोंके पितामहको गिराऊंगा हेराजा तबतो माधवजीने चांदीके समान श्वेत रंगके घोड़ोंको उधर हीको चलाया जिधर सूर्य्यके समान कठिनतासे देखनेके योग्य भीष्मजीथे,इसके अनन्तर भीष्मके निमित्त युद्धमें प्रवृत महाबाहु अर्जुनको देखके युधिष्ठिरकी वहबड़ी भारीसेना फिर लौटआई,५० तदनन्तर सिंहसमान गर्जते कौरवोंमें श्रेष्ठ भीष्मजीने शीघ्रही बाणोंकी बर्षासे अर्जुनको ऐसा ढकदिया,कि जिसकारथ ध्वजा सारथी समेत क्षणभरमें बाणोंसे आच्छादित होकर दिखाई नहीं दिया,फिर तो भ्रान्तिसे रहित बुद्धिमान वासु देवजीने धैर्य्यता में नियत होकर भीष्महीके शायकोंसे उन्हींके धनुषको काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया,फिर उसटूटे हुए धनुष वाले पितामह भीष्मने शीघ्रही दूसरे बड़े भारी धनुषको लेकर एकनिमिषमेंही तैयार कर लिया,तदनन्तर उसबादलके समान गर्जने वाले धनुषको भीष्मने दोनोंहाथोंसे खेंचा फिर क्रोधयुक्त अर्जुनने उनके उसधनुषकोभी काटा,अर्जुनकी इसहस्तलाघवताको देखकर भीष्मजीने प्रशंसाकी कि हेमहाबाहु अर्जुन धन्यहै हे पाण्डु नन्दन तुमको धन्यहै,हे संसारके धनोंके विजय करने वाले यह बड़ाकर्म तुझीमेंहै योग्यहै योग्यहै हे पुत्रमैं तेरे इसकर्मसे अत्यन्त प्रसन्नहूं तू मेरेसंग युद्धकर इसरीतिसे इसवीरने अर्जुनकी प्रशंसाकरके फिर दूसरे बडे धनुषको लेकर अर्जुनके रथपर बाणोंकी बर्षाकरी,फिर बासुदेवजीने भीष्मके बाणोंको निष्फल करके तेजमंडलोंमें घूमते हुये घोडोंके चलानेमें बड़ापराक्रम दिखाया,इसके पीछे भीष्मजीने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे वासुदेवजीको और अर्जुनको बहुत घायल किया,उनबाणोंसे अत्यन्त घायल वहदोनो पुरुषोत्तम ऐसेशोभायमानहुए जैसे कि

गर्जते और शाखाओंके घातसे चिन्हित दोउत्तम बैलहोतेहैं, इसके पीछे अत्यन्त क्रोधमें भरेहुए भीष्मजीने लाखों बाणों से इनदोनो कृष्ण अर्जुन की दिशाओं को रोकदिया, फिर वारंवार अत्यन्त अहंकार और क्रोधयुक्त भीष्मजीने बड़े ऊंचे शब्दसे हंसकर तीव्र बाणों से वृष्णिबंशी श्री कृष्णजी को कंपाय मानकर दिया, इस के अनन्तर महाबाहु श्री कृष्णजी युद्धमें भीष्मजी के महा पराक्रमको देख कर और अर्जुनके मृदु युद्धको अच्छी रीति से बिचार और युद्धमें वारंबार बाणोंको छोड़ते हुए दोनोंसेनाओं के बीचको पाकर पांडवोंकी उत्तम सेनाको और सेनाके उत्तम २ शूरबीर पुरुषों को सूर्य्य के समान संतप्त करते वा मारते, युधिष्ठिर की सेनामेंप्रलय मचाते हुए भीष्मको देखकर उस बड़े ज्ञानी शत्रुओं के मारने वाले क्षमाशील भगवान् केशवजीने, यह चिंताकरी कि युधिष्ठिरकीसेना नहीं रहैगी क्योंकि भीष्मजी एकही बाणमें युद्धके बीचदैत्य दानवों कोभी नाशकरने वालेहैं तो सेना और सहायकों समेत पांडवों का मारडालना उनको कितनी बड़ी बातहै और इन महात्मापांडवोंकी सेनाभागीभी जातीहै, और यह कौरवलोग सोमकों कोयुद्धसे भागेहुए देखकर बड़े प्रसन्न चितपितामहको आनन्ददेतेहुए चारों ओरसे दौड़े चले आतेहैं, सो अबमैंभी शस्त्र धारण करके पांडवों के निमित्त भीष्मको मारके महात्मा पांडवोंके इस महाभारको दूर करूंगा, और अर्जुनभी युद्धमें तीव्र बाणोंसे पीड़ामान है वहइस युद्धमें भीष्मजीको महत्वता से करनेके योग्य कर्मकोनहीं जानताहै, इस प्रकार उन श्री कृष्णजी के विचार करतेही में फिर अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजीने अर्जुन के रथपर बाणोंको फेंका, उनबाणोंकी अत्यन्त आधिक्यता से सबदिशा ढकगई उससमय आकाश और दिशा कुछभी दिखाई नहीं देतेथे और न किरण समूह धारी सूर्य्य दिखाई देताथा बायुमहा तुमुल हुआ सब दिशाओंमें धुआंसाव्याप्त होकर महा व्याकुलता मचगई और (द्रोणाचार्य)(विकर्ण)(जयद्रथ) (भूरिश्रवा)(कृतवर्मा)(कृपाचार्य्य)(श्रुतायु)(अंबष्टपति)

(विन्द) (अनुविन्द) (सुदक्षिण) (पूर्वीराजा) (सौवेरोंकेगण) (सर्वबिशातगण) (क्षुद्रकमालव) यह सबराजालोग शीघ्रही भीष्म जीके आज्ञावर्त्ती होकर अर्जुन की ओरको दौड़े जब सात्विकीने उस अर्जुन को घोड़े हाथी रथ और पदातियों के लाखोंजालों से और हाथियों के स्वामियों से घिराहुआ देखा अर्थात् शूरबीरोंमें श्रेष्ठ शस्त्रधारीयोंमें उत्तम सात्विकी उन अर्जुन और बासु देवजी को रथघोड़े हाथी और सन्मुख दौड़ने वाले पदातियोंसे घिरेहुए देख करशीघ्रही उनके समीप गया वहांजाकर उसशूर बीरधनुष धारी सात्विकीने उन सेनाओंके सन्मुख पहुंचकर,,, अर्जुनकी ऐसीसहायता करी जैसी कि विष्णु भगवान् इन्द्रको सहायता करते हैं फिरउस महाबली सात्विकी युधिष्ठिर की रथहाथी घोड़े और पदातियों समेत उस भागने वाली सेनाको जिसकी सबध्वजागिरीहुई और शूरबीर भीष्मजी से भयभीत हुए देखकर यह बचन बोला कि हे क्षत्रियो कहां जातेहो पुराणों ने यहधर्म श्रेष्ठ पुरुषोंकानहीं कहाहै, हे श्रेष्ठबीर लोगो अपने प्रणोंको मतत्यागोअपनेबीरधर्मों से पुरुषार्थ करो तुमअर्जुन को मृदु युद्धकर्त्ता और भीष्म को भयंकरयुद्ध कर्त्ता और चारोंओरसे गिरते हुए कौरवों को देखकरभागे जातेहो यहबचन सुनकर सब यादवोंके भर्त्ता महात्मा श्रीकृष्णजी बड़ी प्रशंसा करके उस यशश्वी सात्विकीसे बोलेकि हे सेनापतियोंमें बड़े बीरजो जातेहैं वह चलेजांय और जो नियत हैं वहभी चाहे चले जांय, अबयुद्धके बीच रथहाथी घोड़े और सब सेना समेत भीष्म को और द्रोणाचार्य्यको मेरे हाथ से गिरे हुए देखो हे यादव सात्विकी कौरवों को सेनामें कोई ऐसा नहीं है जो अब युद्ध में मुझ क्रोधयुक्तके साथयुद्धकरने को समर्थहो, इस कारणअबमैं रथके भयकारी चक्रको अर्थात् पहियेको लेकर इस महाव्रतभीष्मके प्राणोंको हरूंगा हे सात्विकी रथियों में बड़े बीरभीष्म और द्रोणाचार्य्यको सेनाके समूहों समेत इस युद्धभूमिमें मारकर, राजा युधिष्ठिरअर्जुनभीमसेन नकुल और सहदेवकी प्रसन्नता कोकरूंगा

अब मैं प्रसन्नमनहोकरधृतराष्ट्रके सब पुत्रोंको और जो२ उनकेसहायक राजाहैं उनको मारकर, अजातशत्रुराजा युधिष्ठिरको राज्यसेयुक्तकरूंगा, यहकहकर वासुदेव श्रीकृष्णजी सुन्दररूपसूर्य्यकेसमान प्रकाशितहजारबज्रके सदृश कठोर छुरेके समान तीक्ष्ण धेरारखने वाले चक्रकोऊंचा घुमाकर और घोड़ोंकोछोड़ रथसे उतर चरणोंसे पृथ्वी कोअत्यन्त कंपायमान करते हुए महात्मा भीष्मकी ओर को ऐसे चले, जैसेकि युद्धभूमिमें महामदान्मत्त अहंकारोगजेन्द्र केमारनेकोसिंह दौड़े अर्थात् इन्द्रकेछोटेभाई शत्रुहन्ताकृष्णजी महाक्रोधित होकर सेनाकेबीच भीष्मजीकेसन्मुखदौड़े, उससमयशरीरमेंवर्त्तमान उत्तम पीताम्बर कैसाप्रकाशमानहुआजैसे कि आकाशमेंसुन्दर अलंकारोंसे युक्त बादल बिलम्बतकठहराहुआहो, और इन श्रीकृष्णजीका वह सुदर्शनचक्ररूपकमल जिसकी बड़ीनालही सुन्दर भुजा थीं ऐसाशोभायमानविदितहुआ जैसेकि नारायणकी नाभिसे उत्पन्न तरुण सूर्य्यके समान वर्णवाला नवीनकमलशोभायमान हुआ था वह कमल श्रीकृष्णजीके क्रोधरूप सूर्य्यके उदयसे खिलाहुआ और छुराओंसेयुक्ततीव्रनोकरूपपत्ते वाला उनके शरीररूपीबड़े तड़ागमें नियत नारायणकी भुजारूपीनाल रखने वाला शोभायमान हुआ ऐसेचक्रधारी उच्चस्वर से गर्जना करने वाले महाइन्द्रके छोटेभाई श्रीकृष्णजीको देखकर सबजीव यहचिन्ता करकेअत्यन्त पुकारे कि यह कौरवोंकी प्रलय बर्त्तमानहुई फिरयह चक्रधारी लोकोंकेस्वामी जीवलोककेनाश करनेको सन्मुख गिरते हुए ऐसे प्रकाशमानहुए जैसे किसब जीवमात्रों का भस्मकरने वालाअग्निदेदीप्यहोताहै ऐसे पुरषोत्तमदेव देव चक्र धारीको आता देखकर, धनुष बाण हांथ मेंरखनेवाले रथारूढ़ भीष्मजी निर्भयतासे बोले कि हेदेवेश्वर हे जगन्निवास हे शार्ङ्गधन्वा गदा खड्गधारी आवो मैं तुमको नमस्कारकरताहूं हे लोकनाथहे जीवोंकेआश्रय औररक्षाकेस्थान तुम युद्ध में हठ करके मुझको इस उत्तमरथसे गिराओ हे श्रीकृष्णजो अब तुम्हारे हाथसे मुझमरे हुएका इसलोक और परलोकमें कल्याणहै,

हे अन्धक वृष्णी क्षत्रियोंके नाथ मैंतीनोंलोकोंमें प्रसिद्ध प्रभाववाला होंकर अंगीकारहुआहूं बड़े बेगसे दौड़ते हुए श्रीकृष्णजीभीष्मकेइस वचन को सुनकरउनसे बोलेकिअब तुम्हीं इस संसारकेनाशके मूलहो सो तुम अब दुर्य्योधन का नाशकरो क्योंकि दुष्टद्यूतका खेलने वालाराजा धर्म मार्ग मेंनियतमन्त्री सेनिवार्ण करनेके योग्य है अथवा जोकाल से बिपरीत बुद्धी होकर धर्मको उल्लंघन करके चले वह कुलका कलंकीहै वह त्यागही करनेके योग्यहै इसबातको सुनकरवहराजा देवव्रत भीष्मजी यादवों में बड़े बीर परम देवदेव श्रीकृष्णजोसे यहबचन बोलेकियादवोंनेअपने प्रयोजनकेसिद्धकरनेके लिये कंसकोमारा वह राजा भीसमझानेसे नहीं समझा प्रारब्धसे दुःखके लिये जिसकीविपरीत बुद्धिहैउसकाअभीष्ट सुनने वाला कोई नहीं है, इसके पीछे लम्बे और मोटे भुजावाले शीघ्रता करने वाले अर्जुनने रथसे कूदकर पैदल चलके मोटेऊंचे और लम्बेभुजा वाले यादवोंमें बड़े बीर हरिको दोनोंभुजाओंसेपकड़लिया,तबआदिदेव आत्मयोगी और अत्यन्तक्रोधरूप पकड़े हुए बिष्णुजी अर्जुन को लेकर ऐसी शीघ्रतासे चले जैसे कि बड़ाबायु अकेले वृक्षकोलेकर चलता है हे राजा फिर महात्मा अर्जुन ने बलसे दोनों चरणों कापकड़कर बड़ीशीघ्रतासेभीष्मजी की ओर दौड़ते हुएको दशवेंपाद चिन्हपर बड़ी सुगमता पूर्व्वकबलसे पकड़लिया,सुनहरीजड़ाऊमालाधारी प्रसन्नचित्त अर्जुन उन ठहरेहुए श्रीकृष्णजीकोदण्डवतकरकेबोले कि आपक्रोधकोदूरकरिये हे कृष्ण आपहीपाण्डवोंकी गति हो आप अपने प्रणके अनुसार कर्म को मत छोड़ो, हे केशवजी मैं पुत्र और भाइयोंको शपथखाताहूं हेइन्द्रके छोटे भाईमैंअवश्यआपके साथमें होकरकौरवोंका नाशकरूंगा तदनन्तर उसकेप्रण और नियमको सुनकर जनार्दनजी महाप्रसन्न होकर उस कौरवोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके अभीष्ट सिद्धकरनेमें प्रवृत्तहुए और चक्रसमेत रथपर सवार हुए फिर उन लगामोंको हाथमेंलेनेवाले शत्रुओंके मारने वालेउन श्रीकृष्णजीनेहाथमेंपांच जन्यशंखकोलेकरऐसी ध्वनिकरीकि जिसके

कारण सब दिशाओं समेत आकाश शब्दायमान होगया उस निष्क बाजूबंद और कुंडलोंसे अलंकृत रजसे भरे पक्ष्मनेत्रविशुद्ध दंष्ट्रायुक्त शंख को धारण कियेश्री केशवमूर्तिको देखकर महाबली कौरवलोग पुकारे तदनन्तर मृदंग भेरी पटहाओंके वा रथके चक्रोंके और दुन्दुभियों केभयकारी शब्द शंखध्वनियों समेत कौरवों कीसेना में भीहोने लगे और अर्जुन के गांडीव धनुष काशब्द बादलकी गर्जना के समान आकाश औरदिशाओं में व्याप्तहुआ,तदनन्तर पांडव अर्जुन के धनुष सेनिकले हुए बहुत निर्मल और प्रकाशित बाण सब दिशाओं में चलेतब कौरवोंका राजादुर्य्योधन जिसनेबाण हाथमें ऊंचाकर रक्खाथा वह अपनी सेना वा भीष्म भूरिश्रवा को साथमें लेकरअर्जुन के सन्मुख ऐसे गया जैसेकिबनकोजलाताहुआ अग्नि जाताहै इसकेपीछे भूरिश्रवाने सुवर्ण पुंखवाले सातभल्ल अर्जुनके ऊपरफेंके,, और दुर्य्योधनने बड़े शीघ्रगामी भयकारी तोमरको और शल्यने गदाको और भीष्मजी ने बरछीको मारा फिर अर्जुननेअपनेसात बाणों से भूरिश्रवाके चलायेतीव्र सातों बाणों को काटकर क्षुरप्र नाम बाणसे दुर्य्योधन के छोड़े हुए तोमरको काटा तिस पीछे भीष्मजी की बिजय के समान तीव्र बरछी को, और शल्यकी फेंकी हुई गदा को अपने दोबाणों से काट कर महा कठिन और अतुल प्रभाव वाले अपने गांडीव धनुष को दोनों भुजाओं से खैंचकर, बुद्धि के अनुसार महाघोर अपूर्व माहेन्द्र अस्त्रको अन्तरिक्षमें प्रकट किया इसके पीछे बड़े धनुषधारी महात्मा मुकुटमालाधारी ने उस उत्तम धनुष के द्वारा निकले हुए बड़े स्वच्छ और तीव्रबाणों के समूहों से सब सेनाको हटाया फिर उसके गांडीव से निकले हुए शिलीमुख बाण रथ हाथी घोड़े और ध्वजाओं के शिरोंको वा धनुषोंको और भुजाओं को काटकर शत्रुपक्ष के गजगजेन्द्र और राजाओं के शरीर में प्रवेश करगये फिर उस मुकुट मालाधारी अर्जुन ने उत्तम धारवाले तीव्रबाणों से दिशा और विदिशाओंको पूर्णकरके गांडीवधनुषके शब्दोंसे उन सबकेहृदयों को

महापीड़ित किया इस प्रकार उस बड़े भयानक अस्त्रोंके युद्धमेंशंख दुन्दुभियों के शब्द, गांडीव धनुष के शब्दों से छुपगए और रथों के भी महा भयानक शब्द मन्दहोगये इसके पीछे उस गांडीव के शब्दों को जानकर नरोंमें वीरराजा विराट् आदि और पांचाल और द्रुपद यह महापराक्रमी उस स्थानपर आये और आपके पुत्रोंकी भी सबसेना वहां आई जहां कि गांडीव के बड़े शब्द होरहे थे और सबोंने अपने को न्यूनही समझा कोई प्रतिपक्षी उसके सन्मुख नहीं गया हे राजा उस बड़े भयानक युद्धमें रथवा सूतोंसमेत बड़े २ शूरवीर मारेगये और सुनहरी जड़ाऊ झूलों से अलंकृत बड़ी२ पताका रखनेवाले हाथी भी नाराचों के आघात से झुल हुए से होकर अर्जुन के हाथ से कटेहुए शरीरसे निर्जीव होकर अकस्मात् गिरपड़े, सेनाओं के मुखोंपर राजालोगों की ध्वजायें अर्जुन के भयानक वेग और तीक्ष्ण धार युक्त निशित फलवाले बाणों से अत्यन्त विध्वंस होगईं और यन्त्र कटेहुये हजारों इन्द्रजाल भी बारंबार नाशको प्राप्तहुए और युद्धमें रथ हाथी घोड़े और पदातियों के समूहभी उस अर्जुन के बाणों से घायल और असामर्थ अंगोंको बिना साधे शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़े, हे राजा ऐसे बड़े युद्धमें उस ऐन्द्र नाम उत्तम अस्त्रसे कवच टूटे और शरीर जर्जरी भूतहोगये तदनन्तर अर्जुन के तीव्रबाण समूहों से मनुष्यों के देहमें शस्त्रोंसे निकले हुए रुधिररूपी जलवाली नदी वहां बह निकली उस नदीमें मनुष्यों की बसा तो जलका फेनथा वह नदी तीव्रता से बड़ी प्रवाहवाली और मृतक हाथी और घोड़ों के शरीरों के किनारे वाली मनुष्यों के आंत भेजे से उत्पन्न मांस रूप कीचकोधारण किये हुएथी और बहुत से राक्षसों के अवतार रूप राजाही उसके वृक्षथे, और शिरोंके कपालोंसे व्याकुल मृतक बालरूप घाससे शोभित देशोंसे युक्त शरीरों के समूहों से हजारों माला रखनेवाली हजारों प्रकारकी कवच रूपी लहरोंसे व्याकुल और मरेहुए मनुष्यहाथी घोड़े और मनुष्यों के हाड़रूप उसमें

कंकड़ और रेतवर्त्तमान थे १२८मनुष्योंने उस शृगालकंक गिद्ध और कच्चे मांस खानेवाले राक्षस पशुपक्षी आदिकेसमूह वा छोटे व्याघ्रों से संयुक्त किनारेवाली कठिन बैतरणीरूपीनदी को देखा, अर्जुन के बाण समूहोंके द्वारा कटेहुए कपालवसारुधिर से बहनेवाली अत्यन्त भयानक नदीको देखकर अथवा इसप्रकार अर्जुन के हाथसे मृतक शूरवीर वाली कौरवी सेनाको देखकर वह चंदेरी पांचाल और मत्स्यादिक देशीवीर और सब शूरवीरपाण्डव विजय में बुद्धिरखने और पुरुषों में बड़े वीर उनकौरवी सेनाके बड़े शूरवीरोंको डराते हुए सब एक साथही महागर्जना करते हुए, शत्रुओं को भय उत्पन्न करनेवाले मुकुटधारी अर्जुनके हाथसे मृतक वीरोंवाली सेनाको देखकर और जैसे कि मृगों के यूथों को सिंह भयभीत करे उसी प्रकार सेनापतियों की सेनाको भयभीत करके वह अति प्रसन्नमन गांडीव धनुषधारी और जनार्दनजी अत्यन्त तासे गर्जे तदनन्तर शस्त्रोंसे अत्यन्त घायल अंग भीष्म वा द्रोणाचार्य्य वा दुर्य्योधन बाह्लीक आदि कौरवोंने निशा की सन्धि को देखकर और उस प्रलय के समान असह्य और घोर फैले हुए ऐन्द्रास्त्र को देखकर अथवा सूर्य्य की अरुणता से युक्त संधिगत रात्रिको देखकर युद्ध से निवृत्ती करी और नरोंका इन्द्र अर्जुन भी लोकमें यशी और कीर्तिमान् होकर शत्रुओं का मर्द्दन करके युद्ध कर्मको समाप्त करनेवाला अपने निज भाइयोंसमेत रात्रिकेसमय अपने डेरेको गया इसके पीछे रात्रिके प्रारंभमें कौरवों के बड़े घोर शब्द उत्पन्न हुए, अर्जुन ने दश हजार रथियों को मारकर सातसौ हाथी मारे और सब पूर्व देशी शूरबीर सौवीरगणों समेत क्षुद्रक मालवों को मारा, यह अर्जुन ने ऐसा बड़ाभारी कर्म किया जैसा कि दूसरा कोई भी नहीं करसका हे राजा श्रुतायु और अंबष्टपति दुर्मर्षण चित्रसेन द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य सैंधव बाह्लीक भूरिश्रवा शल्य शल और भीष्मजी समेत सैकड़ों योद्धाओं को युद्धमें उस हस्तलाघवी महाबली लोक महारथी कोपित अर्जुनने

बिजय किया हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र आपके सब शूरबीर हज़ारों मसालें बलवा के इस बातको कहतेहुए कि किरीटी अर्जुनसे सब शूरबीर भयभीत हुए हैं कौरवों की सेनाके डेरोंमें गये ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणितृतीयदिवसयुद्धे नामएकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

साठवां अध्याय

चौथे दिनकेयुद्ध का प्रारम्भ ॥

संजय बोले हे भरतवंशी इसके अनन्तर प्रातःकाल के समय महात्मा भीष्मजी जिनका क्रोध शत्रुओंके ऊपर उत्पन्न हुआ वह सब सेना समेत भरतवंशियों की सेनाके आगे गये (द्रोणाचार्य्य) (दुर्य्योधन) (बाह्लीक) (दुर्मर्षण) (चित्रसेन) (महाबली) (जयद्रथ) और अन्य राजा लोग सेनाओंके समूहों समेत चारोंओरसे भीष्मजीके पास आये, हे राजेन्द्र धृतराष्ट्र वह भीष्मजी उन महापुरुष महारथी तेजस्वी पराक्रमी राजाओंके बीचमें कैसे शोभायमान हुए जैसे किदेवताओंके मध्यमें देवराज इन्द्रशोभित होताहै, उससेनाके आगेलगीहुई बड़े २हाथियोंके कंधोंपर वर्त्तमानलाले पीले काली श्वेत कम्पायमान पताकाभी शोभितहुई और वहसेना राजा भीष्म वा महारथी वा हाथी घोड़ोंसे विद्युतधारी बादलके समान ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि जलके आगमन में बादलों से भरा हुआ आकाश होताहै इसके पीछे भीष्मजी से रक्षित राजा लोग युद्धके निमित्त अर्जुनके सन्मुख गये और कौरवी सेनाभी अकस्मात् ऐसे चलती हुई जैसे कि गंगाजी का भयानक वेग चलताहै, फिर कपिध्वज महात्मा अर्जुन ने दूरही से उस हाथी घोड़े रथ रथी और पदातियों समेत बड़े वेगसे भरे हुए बादलके समान नानाप्रकार के पक्षों समेत व्यूह को देखा; और सेनाओं के आगे खड़ा हुआ दोनों सेनाओंसे संयुक्त महात्मा वीर अर्जुन श्वेत घोड़े और ध्वजा धारीरथकीसवारीमेंसुशोभितहोकर सब शत्रुओंकी सेनाकेओर चला तब आपके पुत्रों समेतसब कौरव लोग उससब सामानसे शोभित

कपिध्वज अर्जुनको और यादव पति श्रीकृष्ण सारथीसे ऊंचेकी ओर बांधेहुए पत्रवाले रथको युद्धभूमिमें देखकर महा व्याकुलहुए, आप के पुत्र और सबशूरबीरोंने लोकमहारथी शस्त्रधारी सेनाको विध्वंस करने वाले मुकुट धारी अर्जुन से रक्षितचार २ मत्त हाथियों से संयुक्त उस व्यूहराजको देखा, जैसेकि प्रथम दिनमें कौरवों में श्रेष्ठ धर्मराजने व्यूहको बनायाथा उस प्रकारका व्यूह इसलोकमें मनुष्योंने प्रथम कभीन देखाथा नसुनाथा, इसके पीछे सबसेना के बीचयुद्ध भूमिमें बड़े बलसे बजाई हुई हजारों भेरी शब्दाय मान हुई और शंखों के वा हजारों तूर्य्यों के शब्दभी बड़े वेग से हुए, इसके पीछे बीरोंके छोड़े हुए बाणोंके शब्दों से संयुक्त चलायेहुए धनुषोंके और शंखों के बड़े शब्दोंने क्षणमात्रमेंहीभेरी और ढोलों के कठिन शब्दों को गुप्त करदिया, शंखोंके उनशब्दों से सबअन्तरिक्ष व्याप्त होगया और शीघ्रही पृथ्वीसे धूलोंके समूह आकाशकी ओरउड़े तदनन्तर बड़े बितानों से प्रकाशको देखकर बीरलोग अकस्मात् दौड़उठे, रथीरथी से भिड़कर घोड़े समेत रथीध्वजा को भी लेकर गिरा और हाथीसे माराहुआ हाथीगिरा इसी प्रकार पदाती से माराहुआ पदाती गिरा, और घोड़े के सवार परस्पर में परशे और खड्गोंसे लड़कर पृथ्वीपरमारेगये, और सुनहरीतारा-ओंके समूहोंसेशोभायमान सूर्य्यकी समान प्रकाशित ढालेंपरश्वध प्रास और खड्गोंसे खण्ड २ होकर पृथ्वी परगिरीं, और कितनेही हाथी हाथियों केदांतोंसे चबाये हुएपृथ्वीपर गिरे और रथीके बाण से रथी पदातीके बाणसे पदाती पृथ्वीपर गिरे, हाथियोंके समूहों केवेगसेकंपायमान वा सवारों और हाथियोंकेदांतवाअंग वाजंघाओं से घायल सवार और पदातियोंके आक्रांदित शब्दों को सुनकर मनुष्य अनेक प्रकार से व्याकुलहुए जिसमें हाथी घोड़े और रथों की व्याकुलता और सवार पदाती बीरोंको विध्वंसताथी ऐसे मुहूर्त्तमें महारथियों से घिरेहुए भीष्मजीने हनुमान्जीको ध्वजा धारण करनेवाले अर्जुनकोदेखा २० पांचतालकी उन्नतध्वजा धारणकरने

वालेभीष्मजी उनउत्तम घोड़ोंकी तीव्रतासे बड़े भारी अस्त्रकोलिये बिजली से चमकपर अर्जुनके सन्मुखदौड़े और इसी प्रकार कृपाचार्य्यशल्यविविंशति दुर्य्योधन सोमदत्त यहसबभी द्रोणाचार्य्यजी कोआगे करके इन्द्रके समान महाबली इन्द्रपुत्र अर्जुनके सन्मुख गये, इसके पीछे सर्व अस्त्रोंका ज्ञाता सुवर्णका जड़ाऊ कवचपहरने वालामहाशूर अर्जुनकापुत्र अभिमन्यु रथके सेनामुखसे निकलकर बड़े बेगसे उन सबके सन्मुख चला, फिरवह असहिष्णुशील कर्मी अभिमन्यु उनमहाबल वानोंकेबड़े २ अस्त्रोंको काटकर ऐसे शोभाय मान हुआ जैसेकि महामन्त्रआहुति से संयुक्तमहा ज्वालामान सभामें बर्त्तमान अग्नि देवता होता है तदनन्तर वह महा पराक्रमी भीष्मशीघ्रही युद्धमें शत्रुओंके रुधिर रूपीजलसे उसनदी को पूर्णकरके महारथी अर्जुन और अभिमन्यु कोभी उल्लंघन कर गया, फिरमुकुट मालाधारी अर्जुनने बड़े हठको करके गांडीव धनुषके शब्दसे महा शब्दायमान विपाठनाम बाणोंके जालसे उन प्रबल शत्रुओंके जालोंका नाशकिया, फिरकर्म फल के चाहनेवाले हनुमान जीकी ध्वजारखने वाले महात्मा अर्जुनने बड़े तीव्रधार वाले स्वच्छभल्लोंसे उस सर्व धनुर्धारियों में श्रेष्ठभीष्मजीकेऊपर बर्षाकरी, इसी प्रकार आपके पुत्रोंने भी अन्तरिक्षमें अर्जुनकेबड़े अस्त्र जालोंको भीष्मजीके हाथ से ऐसेटूटे और व्यर्थ हुए देखा जैसे कि सूर्य्य से तिरस्कार किया हुआ अंधकार होता है, इस रीतिसे प्रसन्नचित कौरव संजय आदि सब लोगोंने उन सत्पुरुषोंमें श्रेष्ठभीष्म और अर्जुन दोनों के इस प्रकार के द्वैरथ युद्धको जोकि भयकारी धनुषोंके शब्दोंसे संयुक्तथा देखा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्मार्जुनद्वैरथेषष्ठितमोऽध्यायः॥

इकसठवां अध्याय॥

संजयबोले हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उन अश्वत्थामा वा भूरिश्रवा शल्य चित्रसेन और सायमन के पुत्र इनसबने अभिमन्यु से युद्ध

किया,मनुष्योंने उस अकेले अभिमन्युको इनपांचों व्याघ्ररूपोंसे लड़ता हुआ ऐसा देखा जैसे हाथियोंसे लड़ता हुआ एकसिंह का बच्चा होताहै,बड़ीलक्ष भेदन पूर्वक शूरता और अस्त्रोंके कारण पराक्रम और हस्त लाघवतामें अभिमन्युके समान कोईभी नहीं हुआ,इसके पीछे युद्धमें सावधान अर्जुनने अभिमन्युको पराक्रम करने वाले शत्रुओंका ऐसामर्द्दन करने वाला देखकर बड़े वेगसे सिंहनाद किया,हे राजेन्द्र आपके पुत्रोंने इसरीतिसे सेनाको पीड़ा मान करता आपकेपोते अभिमन्युको देखकर चारों ओरसे आकर रोकलिया,फिर शत्रु संतापी अर्जुन बहुत हर्षित मनके समान अभिमन्यु समेत बलपराक्रम युक्त आपके पुत्रोंकी सेनाके सन्मुख गया,युद्धमें शत्रुओंसे संग्राम करने वाले उस अर्जुनका बड़ा धनुष हस्त लाघवताके मार्गमें नियत होके सूर्य्यके समान प्रकाशमान दिखाई दिया,उसने एकबाणसे अश्वत्थामाको और पांचबाणोंसे शल्यको घायल करके आठबाणोंसे सायमनके पुत्रकी ध्वजाको गिराया,और सोमदत्तकी फेंकीहुई सुनहरी दंडवाली सर्पाकृतिशक्ति को तीव्रबाणोंसे काटा,फिर अर्जुनके पुत्रने बाणके फेंकने वाले शल्यके महाघोर सैकडों बाणोंको रोककर उसके चारों घोड़ोंको मारा फिरतो अत्यन्त क्रोधमें भरेहुए भूरिश्रवा शल्य अश्वत्थामा सायमनकापुत्र और शल उस अभिमन्युके महाप्रबल पराक्रमके आगे ठहर न सके,इसके पीछे हेराजा आपके पुत्रके कहनेसे धनुर्वेद के ज्ञाता युद्धमें अजेय पच्चीस हजार त्रिगर्तदेशी और मद्रदेशियोंने केकय देशियों समेत उसपुत्र समेत अर्जुनके मारनेकी इच्छासे चारोंओर से उनको घेरलिया,,हेराजा वहां शत्रुंजयी सेनापति धृष्टद्युम्नने उनपिता पुत्रोंको रथोंसे चारोंओर को घिराहुआ देखा तदनन्तर वहशत्रु संतापीसेनापति महाक्रोधित होकर हजारोंघोड़े रथ हाथियोंके पतियोंसे युक्त अपने धनुषको चढ़ाय सेनाको आज्ञा देकर उसमद्र और केकय देशियोंके सन्मुख गया,,उसकीर्त्तिमान दृढ़धनुषधारीसे रक्षित रथहाथी घोड़े सेयुक्तवहयुद्ध करनेवाली

सेना शोभायमानहुई पांचालकुलावतंश उसधृष्टद्युम्नने तीनबाण से अर्जुनके सन्मुख जानेवाले कृपाचार्य्यको घायल किया, फिरदश तीक्ष्णबाणोंसे भद्रकोंको घायल करके शीघ्रही एकभल्लसे कृपाचार्य्यके सारथीको मारा, फिर उस शत्रु संतापीने बड़े तीक्ष्ण नाराचों से पौरके पुत्र दमनको मारा इसके पीछे चित्रसेन ने दुर्मद धृष्टद्युम्नको दश बाणों से और उसके सारथीको भी दश बाणोंसे घायल किया फिर उस महाघायल धृष्टद्युम्न ने होठों को चबाकर बड़े तीक्ष्ण भल्लसे इसके धनुषको काटा, हे राजा इसी प्रकार इसको भी पच्चीस बाणों से पीड़ामान करके उसके घोड़ो को दोनों सारथियों समेत मारडाला, हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर उस मृतक घोड़े वाले रथमें बैठे हुए चित्रसेन ने उसद्रुपद के यशस्वी पुत्रको देखा, और देखतेही रथसे उतर पैदल होकर शीघ्रही महाघोर खड्ग को धारण करके रथपर बैठे हुए धृष्टद्युम्न को ओर को चला, उस महा भयानक खड्गधारी को आता हुआ देख कर वहां पांडव और धृष्टद्युम्न ने उसको सूर्यके समान प्रकाशित और मतवाले हाथीकेसमान महाबलीरूप देखा, फिर शीघ्रताकरने वाले सेनापति धृष्टद्युम्न ने उस महा कालरूप सन्मुख आनेवाले घोर खड्गधारी के शिरको गदासे तोड़ा, हे राजा वह अपने खड्ग और ढाल समेत मरकर पृथ्वीपर गिरा,, राजा धृष्टद्युम्न ने उसको गदा की नोकसे मारकर बड़े यशको पाया, हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उस बड़े धनुषधारी महारथी राजकुमार के मरनेपर आपकी सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, इसके अनन्तर क्रोधमें भराहुआ सायमनी अपने पुत्रको मृतक देखकर बड़े वेगसे धृष्टद्युम्न के सन्मुखदौड़ा तब सब राजा वा कौरव और पांडवोंने युद्धमें जुटेहुए उत्तम रथों समेत दोनों शूरवीरोंको देखा, इसके पीछे शत्रुविजयी सायमनीने महा क्रोधित होकर तीन बाणोंसे धृष्टद्युम्न को ऐसा घायलकिया जैसे कि अंकुश आदि से बड़े हाथीको करते हैं, इसी प्रकार युद्ध भूमिको शोभित करनेवाले क्रोधरूप शल्यने उस शूरवीर धृष्टद्युम्न

को छातीमें घायल किया इस पीछे युद्ध होना जारी हुआ ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

बासठवां अध्याय

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं प्रारब्ध को उपायसेभी बड़ा मानता हूं जो मेरे पुत्रकी सेना पाण्डवों की सेनासे मारी जाती है हे सूततू सदैव हमारे शूरवीरों को मृतक कहता है और पांडवों को सदैव अत्यन्त प्रसन्न और अक्षत कहा करता है, हे संजय अब हमारे शूरवीरों को गिरते गिराते दोनों प्रकारसे पराक्रमसे रहित कहता है इसीसे पाण्डव लोग सामर्थ के अनुसारलड़ते विजय में उपाय करते हुए जयको पाते हैं और मेरे बेटे पराजय को पातेहैं, हेतात सो मैंने दुर्योधन से उत्पन्नहुए दुःखके सहनेके योग्य अनेकदुःखों को बारम्बार सुना, हे संजय मैं उस उपाय को नहीं देखता हूं जिसके द्वारा पाण्डवों की हार होय और मेरे पुत्रोंकी विजय होय, संजय बोले कि हे राजा तुम सावधानी से सुनोकि यह मनुष्योंका और रथ घोड़े हाथी आदि का नाश होना तुम्हारे ही अन्यायका फलहै, शल्यके नौबाणों से पीड़ित अत्यन्त क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने लोहेके तीर से मद्रदेश के राजाको पीड़ामान किया, वहां हमने धृष्टद्युम्न के अपूर्व पराक्रम को देखा जो युद्धमें शोभा पाने वाले शल्य को शीघ्रही हटादिया, किसीने इसयुद्ध में इनदोनों क्रोध युक्तों के अन्तर को नहीं देखा दोनों का युद्ध एक मुहूर्त तक अच्छाहुआ इसके पीछे हे महाराज शल्यने युद्धभूमि में पीले तीक्ष्णधार वाले भल्लसे धृष्टद्युम्नके धनुषको काटकर इसको बाणोंकी बर्षासे ऐसे ढकदिया जैसेकि बर्षाऋतुमें जलभरेहुए बादल पर्व्वतको ढकदेतेहैं, फिर धृष्टद्युम्नकेपीड़ामानहोनेपर अत्यन्तक्रोध रूप अभिमन्यु बड़े वेगसेराजामद्रके रथकी ओरदौड़ा, तदनन्तर महासाहसी क्रोधमें भरे हुए अभिमन्युने राजा मद्रके रथको पाकर आर्त्तायनि कोतीन पैने तीरों से घायल किया, हे राजाफिरतोअभि-

मन्युके दबानेकी इच्छासे आपकेपुत्रशीघ्रहीराजामद्रके रथके चारों ओरआकरनियतहुए,(दुर्य्योधन) (विकर्ण) (दुश्शासन) (विविंशति) (दुर्मर्षण) दुस्सह चित्रसेन (सुदुर्मुख)(सत्यव्रत) (पुरोमित्र)महारथी बिकर्ण यह सबराजामद्रके रथकोरक्षाकरतेहुएयुद्धमें नियतहुए,इनको देखकर हेराजामहाक्रोधित(भीमसेन)(धृष्टद्युम्न)द्रौपदीके(पांचोंपुत्र) (अभिमन्यु)औरमाद्रीकेपुत्र(नकुल)और (सहदेव) इननाना प्रकारके शस्त्रोंके प्रहार करनेवाले दशों शूरबीर धृतराष्ट्र केमहारथी दशों-पुत्रोंको रोककर परस्परमें मारनेके इच्छावान अत्यन्त क्रोधरूपसन्मुख बर्तमानहुए हेराजा निश्चयकरके आपकीबुरीसलाह करनेपर वह लोग युद्ध करने में अत्यन्त प्रवृत्त हुए, उन दशोंरथियोंके और बड़े भयके बर्तमान होनेपर आपकेपुत्र और पाण्डवों के रथीयुद्ध क्रीड़ा देखनेवाले हुए, वह सब नाना प्रकारके शस्त्रोंको चलातेहुए परस्पर में एक एकके सन्मुख गर्जते हुए महारथी लोगोंने अच्छे प्रकारसेयुद्धकिया,तबतो वह सब अत्यन्त क्रोधमें भरेहुए परस्पर मारनेके इच्छावान सन्मुख होकरगर्जना करते हुए एकएकसे ईर्षा करने लगे,हेराजा ज्ञातिके लोग अपने ज्ञातिवालोंसे परस्परकी ईर्षाके द्वारा युद्ध करते हुए क्रोधसे पूर्ण बड़े २ अस्त्रोंको त्यागते हुए सन्मुख दौड़े,फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने चार तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल किया, दुर्मर्षणने बीसबाण से चित्रसेनने पांच बाणसे दुर्मुखने नौबाणसे दुस्सहने सातबाणोंसे विविंशतिने पांचबाणोंसे दुश्शासनने तीन बाणोंसे घायल किया हे राजा उस शत्रु संतापी हस्तलाघव दिखनेवाले धृष्टद्युम्नने उन प्रत्येकोंको पच्चीस २ बाणोंसे घायल किया,हे भरतबंशी फिर अभिमन्युने सत्यव्रत और पुरोमित्रको दश २ बाणोंसे घायलकिया फिर माताको प्रसन्न करने वाले माद्री नंदन नकुल और सहदेव ने युद्ध में अपने मामा शल्यको तीव्र बाणों से ढक दिया यह आश्चर्य्यसा हुआ इसके पीछे हे राजा शल्यने भी उन रथियोंमें श्रेष्ठ प्रहार कों पर प्रहार कर्म करनेके इच्छावान् दोनोंभानजोंकोबहुत

से बाणोंसे ढकदिया,इसके पीछे बाणोंसे आच्छादित होकरभी वह दोनों नकुल सहदेव व्याकुल नहीं हुए फिर महाबली भीमसेनने दुर्य्योधन को देखकर युद्ध के अन्त करनेकी इच्छा से अपनी गदा को हाथमें लिया कैलाश पर्व्वत की समान उस गदाके उठानेवाले भीमसेन को देखकर आपके पुत्र भयभीत होकर भागे,फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने राजा मगधको चेताया और वेगमान हाथियों की दश हजार सेना के लिये आज्ञाकरी राजा दुर्य्योधन उस हाथियोंकी सेना समेत राजा मगध को आगेकरके भीमसेन के सन्मुख गया भीमसेन उस हाथियोंकी सेनाको चारोंओरसेगिरा ताहुआ देखकर, सिंहकेसमान उच्चस्वरसे गर्जताहुआ हाथमेंगदा लिये रथसे उतरा और उस महाभारी लोहेकी गदाको पकड कर, उस सेनाको अपना भक्षपदार्थ समझकर हाथियोंकी सेनाकेसन्मुखदौड़ा और वहां जाकर अपनी गदासे हाथियों को मारता हुआ ऐसा घूमा जैसे दानवोंके बीच बज्रधारी इन्द्र गर्जताहुआ दौड़ताहै हृदय के कंपानेवाले भीमसेन के बड़े शब्दसे सब मिलेहुए हाथी अत्यन्त चलायमानहुए फिर द्रौपदीके पांचोंपुत्र और महारथीअभिमन्यु,,(नकुल) (सहदेव) (धृष्टद्युम्न) यह सब भीमसेनके पृष्टभाग की रक्षा करतेहुए बाणोंकी बर्षाको करकर हाथियोंके सन्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि पर्व्वतोंपर बादल दौड़तेहैं तीव्र बिजली के समान भल्लोंसे, पांडवोंने युद्धमें हाथीवानोंके और हाथीके सवारोंकेशिरोंको काटा फिर तो हाथियोंसे गिरनेवाले मृतकोंकी शोभापाषाण वृष्टीसी मालूमहोती थी और हाथियों के कन्धों पर बिना शिरके हाथीसवार ऐसे दृष्टिपड़े जैसे कि चलतेहुए पर्व्वतोंपर चोटीकटे हुए वृक्षहोते हैं इनके सिवाय हमने धृष्टद्युम्नके मारेहुए वा गिरायेहुए पड़े हुए दूसरे बड़े हाथियों को देखा, इसके पीछे मगध के राजाने ऐरावत के समान हाथीको युद्धमें अभिमन्यु के रथपरभेजा उस हाथीको आताहुआ देखके शत्रुओंके विजयी अभिमन्युने उस को बाणोंसे मारकर सुवर्ण के पुंखवाले भल्लसे उस हाथी के न

रोकनेवाले राजाके शिरको भी काटा, फिर भीमसेन भी उसहाथियोंकी सेनाको मथन करताहुआ ऐसा घूमा जैसे किइन्द्र पर्व्वतों को मथनकरता घूमताहै, हमने उस युद्धमें भीमसेनके एकही प्रहारसे मरेहुए हाथियोंको ऐसा देखा जैसे कि बज्र से प्रहारित पर्व्वतदीखतेहैं आंख दांत गंडस्थल जंघा पीठ और कमर टूटकर मरेहुए पर्व्वताकार हाथियोंको और कितनेही झागडालकर मरेहुए हाथियोंको भी हमने देखा, कितनेही बड़े हाथी कुंभटूटे रुधिरको बमन करते भयसे विकल पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि पर्व्वत पृथ्वी पर गिरतेहैं, रुधिर मज्जासे लिसेहुए अंग और कपालों की मज्जा से छिड़का हुआ भीमसेन दंडधारी मृत्युके समान युद्धमें घूमा हाथियोंके रुधिरसे भीजाहुआ गदाको धारण कियेहुए भीमसेन पिनाक धारी शिवजीके समान घोर और भयानक रूपहुआ ५४ क्रोधयुक्त भीमसेन के हाथसे मथेहुए कष्टित हाथी अकस्मात आपकीसेनाको दबातेहुए भागे ५५ अभिमन्यु को आदि लेके बड़े २ धनुषधारी रथियोंने उस युद्ध करनेवाले बीर भीमसेन की चारों ओर से ऐसी रक्षाकरी जैसे इन्द्रकी रक्षादेवता करतेहैं, रक्तसे भरेहुए और हाथियोंके रुधिरसे छिड़कीहुई गदाको धारणकिये भीमसेन मृत्युकेसमान रुद्रात्माही दृष्टिपड़ा, हे भरतबंशी हमने गदायुक्त भीमसेन को सब दिशाओंमें नाचताहुआ शंकरजी के समान देखा, फिर हमने यमराज के दण्डकी समान और इन्द्र के बज्र की समान शब्दायमान नाशकी करनेवाली रौद्रीरूप महाभारी गदाकोदेखा वहगदा केशोंसेयुक्त कपाल और रुधिरसे ऐसी भरीहुईथी जैसेकि क्रोधयुक्त शिवजी के हाथमें पशुओं का मारनेवाला पिनाक धनुष होताहै, और जैसे गाय चरानेवाला अपनी यष्टी से पशुओं के समूहों को हटाताहै इसीप्रकार भीमसेन ने भी अपनी गदासे हाथियोंकोहटाया, इसके पीछे गदा और बाणोंसे घायल वह हाथी अपनेरथोंको दबाते तोड़तेहुए इधर उधर को भागे, जैसे कि वायु बादलों को इधर उधर तिर्रबिर्र करदेताहै उसीप्रकार युद्ध से भिन्न २ हाथि-

योंको करके भीमसेन युद्धभूमिमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि स्मशान भूमिमें रुद्रजी नियत होतेहैं ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीमयुद्धेद्विषष्टितमोऽध्यायः॥ ६२॥

तिरसठवांअध्याय॥

संजय बोले कि उस हाथियोंकी सेना के मारेजाने पर आपके पुत्र दुर्योधनने सब सेनाको चैतन्यकिया और आज्ञा दी कि भीमसेन को मारो, तदनन्तर आपके पुत्रकी आज्ञासे सब सेना महाभयकारी शब्दोंको करतीहुई भीमसेन के सन्मुख दौड़ी, फिर उस अत्यन्त देवताओंसेभी कठिनतासे सहनेयोग्य समुद्रके समानअत्यन्त दुस्तर रथ हाथी घोड़ों समेत कवचधारी शंख भेरियों से शब्दायमान असंख्य रथ हाथी पदातो लोगोंसे भरीहुई सब ओरसे धूल उड़ातीहुई भारी समुद्र के समान अव्याकुल सेनाको भीमसेन ने रोकदिया, हे राजा हमने उस महात्मा भीमसेनके उस अद्भुतकर्मको देखा, अर्थात् भीमसेन ने बड़ी निर्भयता से घोड़े हाथी और रथोंसमेत उन सब राजाओं को अपनी गदासे ही हटादिया, वह पराक्रमियोंमें श्रेष्ठ भीमसेन तुमुल युद्धमें उन सेनाओंके समूहोंको गदासे हटाकर मेरुपर्व्वत के समान निश्चल होकर नियत हुआ, उस घोर और महा भयानक युद्धमें भयके उत्पन्न होनेपर भाईबेटे धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पांचोंपुत्र अभिमन्यु और महाविजयीशिखण्डी ने उस महाबली भीमसेन को त्याग नहीं किया अर्थात् यह सब उसके साथहीमें बनेरहे,, इसके पीछे दंडधारी मृत्युके समान उस लोहेकी गदाकोलेकर महाबली भीमसेन आपके शूरबीरोंपरदौड़ा, और रथ घोड़े हाथियों के समूहों को मारता हुआ ऐसा घूमा जैसे युगके अन्तमें अर्थात् प्रलय कालमें अग्निदेवता दौड़ता है, जैसे कि प्रलय के समय में काल सबको मारता है उसीप्रकार युद्ध भूमिमें कालरूप भीमसेन शूरबीरों को मारता हुआ अपनी जंघाओं के वेगसे रथके जालोंको खैंचता, शीघ्रही सेनाको ऐसे

मर्दन करने लगा जैसे कि हाथी नलोंके जंगलों को मर्दन करता है रथोंको रथोंसे वा युद्ध करनेवाले हाथियोंके सवारोंको हाथियों से मर्दन करता हुआ, सवारों को घोड़ों की पीठसे पदातियों को पृथ्वीपर मर्दन करताहुआ घूमनेलगा, फिरउस महाबाहु भीमसेन ने आपके पुत्रकी सेनामें जाकर गदासे सबको ऐसा मारा जैसे कि वायु देवता अपने बलसे वृक्षों को गिराता है फिर वह भीमसेनी कराल भयंकर गदा मांस रुधिरसे भरीहुई हाथी घोड़ों की मारने वाली रौद्री रूपसे दृष्टिपड़ी और स्थान स्थानमें मरेहुए हाथीघोड़े और सवारों से वह युद्धभूमि संहार भूमिके समान होगई, चारों ओरसे वर्णाश्रम रहित पशुओं के समान मनुष्यों को मारने वाले क्रोधरूप रुद्रजीके पिनाक धनुष के समान यमदण्डके सदृश भयानक और इन्द्र वज्र के समान प्रकाशित नाश करने वाली रौद्री भीमसेनकी गदा को हमने देखा, गदाको मारतेहुए उस महात्मा भीमसेन का रूप महा प्रकाशित और घोररूप ऐसा होगया जैसे कि संसारके नाशमें महा कालका रूप होताहै, इस रीतिसे उस बड़ी सेना को बारम्बार भगाते हुए मृत्युके समान भीमसेन को आताहुआ देखकर सबलोग चित्तसे महा व्याकुलहुए हे भरतबंशी उस भीमसेनने गदाको उठाकर जिधर जिधर को देखा उधर उधर की सेना व्याकुल होकर छिन्न भिन्नहोगई जैसेकि सेनाओं को छिन्न भिन्न करते हुए सेना समूहोंसे अजेय अत्यन्त भक्षण करने वाली मृत्युके समान सेनाओं को निगलते भयकारी कर्म करते बड़ी गदाके उठाने वाले उस भीमसेन को देखकर सूर्य्य के समान प्रकाशमान बादल से शब्दायमान रथपर सवार होकर भीष्मजी बाणोंकी वर्षा करतेहुए अकस्मात उसके सन्मुख आये इस रीतिसे उस मृत्युरूप के समान भीष्मजी को आता देखकर महाबाहु भीमसेन बड़ा क्रोधरूप अग्निके समान होकर उनके सन्मुख गया, उस समय महावीर सत्यसंकल्प सात्विकी बड़े दृढ़ धनुष से शत्रुओं को मारता हुआ आपके पुत्रकी सेनाको कंपाता

पितामह के सन्मुख जाभिड़ा, हे भरतवंशी आपके सब मनुष्यउस चांदीके समान श्वेतघोड़ोंकेरथपर चढ़े हुए सुन्दर पंखवाले बाणोंके प्रहार करने वाले सात्विकीके रोकने को समर्थ नहींहुए,तब अलंबुष नाम राक्षस ने प्रपक्ष नाम दश बाणोंसे उसको घायलकिया फिर सात्विकी भी उसको चार बाणोंसे घायल करके रथके द्वारा सन्मुख दौड़ा, फिर वृष्णी वीर सात्विकी को समीप आया हुआ और शत्रुओं में घूमने वाला उत्तम कौरवों का नाश कर्त्ता युद्ध में बारम्बार गर्जता हुआ देखकर,आपके शूरवीर लोग उसपर ऐसी बाणोंकी बर्षाकरनेलगे जैसे कि बादलजलोंके वेगसे पहाड़पर वर्षा करते हैं,मध्याह्नके समय सूर्य्यके समान तपानेवाले पितामह भी उस सात्विकीके रोकने को समर्थ नहींहुए,हेराजा वहां सोमदत्तके लड़केके सिवायकोईभीस्थिर चितनहींहुआ,हे भरतर्षभ वहसोमदत्त का पुत्रभूरिश्रवा अपने रथी लोगों को दूरहटा हुआ देखकरमहा भयानक वेग युक्त धनुषको हाथ में लिये युद्धकोइच्छासे सात्विकी के सन्मुख गया ३१

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणित्रिषष्ठितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय

संजय बोले हे राजा इसके पीछे अत्यन्त कोप युक्तभूरिश्रवा नेनौ बाणोंसे सात्विकीको इस रीतिसे घायलकिया जैसेकीचावकसेबड़े हाथी को घायल करते हैं, फिर उस महा साहसी सात्विकी नेभी सबके देखते हुए गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे भूरिश्रवाको रोका,फिर अपने निज भाइयों समेत दुर्य्योधन ने युद्ध में उपाय करने वाले भूरिश्रवाकी चारों ओरसे रक्षाकरी, इसी प्रकारसे महा पराक्रमी सब पांडवलोग भीयुद्ध भूमिमें चारोंओरसे सात्विकीको रक्षितकर के नियतहुए, हे भरतबंशी भीमसेन को गदाउठायेकोप में देखकर आपके सब क्रोधी और असन्तोषी दुर्य्योधनादिक पुत्रोंने बहुत से असंख्य रथोंको साथ लेकर उसको चारों ओरसे रोका फिर

आपके पुत्रनन्दकने उसमहाबली भीमसेनको,, शिलापरतीक्ष्ण किये हुए तीव्र और तेज़नोक वाले बाणोंसे घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने उसबड़े युद्धमें बड़े तीक्ष्ण बाणों से छातीपर घायल किया इसकेपीछे महाबली महाबाहु भीमसेन बड़े उत्तम रथपर सवार होकर विशोकसे बोला कि यह धृतराष्ट्र के पुत्र बड़े शूरऔर महाबली अत्यन्त कोपित युद्धमें मेरे मारने को तैयार हुएहैं इन को निस्सन्देह मैं तेरे देखतेहीमें मारूंगा,इस हेतु सेहे सारथीतूइसयुद्धमें बड़ीसावधानीसे मेरेघोड़ोंको सम्हाल ऐसाकहकरहे राजाभीमसेनने तेरे पुत्रको बड़े तीक्ष्णसुनहरीभूषित दशबाणों से अत्यन्त घायल किया औरनन्दकको तीन बाणों से स्तनोके मध्यमें विदीर्ण किया फिर दुर्योधनने सातबाणोंसेउसमहा बली भीमसेनको घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से विशोक सारथी को घायल कियाफिर युद्धभूमिमें हंसते हुएदुर्योधन ने तीन महा पैने बाणों से भीमसेन के उस धनुषको मूठके स्थान परसे काट डाला, हे महाराज तब भीमसेननेआपके धनुषधारीपुत्र के विशिखों से महापीड़ामान अपने विशोक सारथी को देखकर, असहनशील और महा क्रोधित होकर आपके पुत्रकेमारनेके लिये दिव्य धनुषको धारणकिया और क्रोधमेंभरकर बाणोंके काटनेवाले क्षुरप्र बाणको धनुषमें चढ़ाकर उससे दुर्य्योधन के उत्तम धनुषको पीछेकी ओर को काटा, फिरमहाक्रोधमें भरे हुए तुम्हारे पुत्रनेउस कटे हुए धनुषको डालकर शीघ्रही बड़े बेगवानदूसरे धनुषकोलेके कालमृत्युके समान प्रकाशितबड़े भयानकबिशिख बाणको चढ़ाकर बड़े कोपसे भीमसेनके स्तनों के मध्यस्थान को घायलकिया, फिर वह महा घायल और पीड़ामानरथकेबैठनेके स्थानमें बैठकर महा अचेत होगया, फिर पांडवोंके उन महारथियोंने जिनका अग्रगामी अभिमन्युथा उस पीड़ामान भीमसेनकोदेखकर महाक्रोधित होकर आपकेबेटेके मस्तकपर महाउग्रतीक्ष्ण बाणोंकी तुमुल बर्षाकरी, इसके पीछेमहाबली भीमसेनने सचेतहोकर दुर्य्योधन को तीन

बाणों से घायल करके फिर पांच बाणों से व्यथित किया और पच्चीस बाणोंसे शल्यको घायल किया इन बाणोंसे घायलहोकर वह महाधनुषधारी शल्य युद्ध से हटगया, इसके पीछे आपके यह चौदह १४ पुत्र इस वीरके सन्मुख गये (सेनापतिसुषेण) (जलसन्ध) (सुलोचन) (उग्र) (भीमरथ) (भीम) (वीरवाहु) (अलोलुप) (दुर्मुख) (दुष्प्रधर्ष) (विवित्सु) (विकट) (सम) इन सब क्रोधमें भरेहुए बाणोंके बरसाने वालोंने, एक साथहीभीमसेन को सन्मुख जाकर अत्यन्त घायल किया फिर महाबली महाबाहु भीमसेन ने आपके पुत्रों को अच्छी रीतिसे देखकर भेड़ियेके समान होठोंको चाटकर गरुड़ के समान वेग से सन्मुख दौड़कर अपने क्षुरप्र बाणसे सेनापतिके शिर को काटा फिर उस महावाहु प्रसन्न चित्त ने अत्यन्त आनन्दित होकर तीन बाणोंसे जलसिन्ध को विदीर्ण करके यमलोकको पठाया फिर सुषेणको मारकर मृत्यु के पास पहुंचाया, फिर एक भल्लसे उग्रके मुकुट समेत चन्द्रमा के समान कुंडलों से शोभित शिर को पृथ्वीपर गिराया, फिर सत्तर बाणों से घोड़े ध्वजा और सारथी समेत वीरवाहु को मारा, फिर हंसते हुए भीमसेनने भीम और भीमरथ दोनों वेगवान् भाइयों को भी यमपुरको पठाया, इसके अनन्तर सब सेनाके देखतेहुए सुलोचन को क्षुर प्रबाण से मारा, हे राजा तब वहांजो आपके शेषबचे हुए पुत्रथे वह भीमसेनके बलको देखकर उससे घायल और भय भीत होकर युद्धसे भागे इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों से बोले, कि यह युद्धमें क्रोधरूप भयानक धनुष धारी भीमसेन जो धृतराष्ट्र के महा शूरवीर बुद्धिमान् पुत्रोंको गिराता और मारता है उसकोपकड़ो, इसके पीछेदुर्योधनकी सेनाकेसबलोग इस आज्ञाको पाकर अत्यन्त क्रोधमें भरकर उस महाबली भीमसेन के सन्मुख दौड़े, हे राजा राजाभगदत्त मतवाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहां आटूटा जहां भीमसेन स्थितथा, और युद्ध भूमिमें गिरतेही शिलाके घिसेहुए बाणों से भीमसेनको दृष्टिसे ऐसा गुप्त

करदिया जैसे कि बादल सूर्यको करताहै वहां अपने भुजबल में नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेन के ढकजाने को न सहसके, और क्रोधित होकर उन्होंने चारों ओरसे उसको अपने बाणोंकी वर्षासे रोककर चारों दिशाओंसे मारे बाणोंके उस केहाथीको घायल किया, हे धृतराष्ट्र वह राजा प्राग्ज्योतिष का हाथी उन सब महारथियों के नाना प्रकार के चिन्हधारी प्रकाशित तीव्र बाणोंसे घायल रुधिर के श्रोतोंसे युद्धमें ऐसा देखने के योग्यहुआ जैसे कि सूर्यकी किरणोंसे व्याप्तअर्थात् पिरोहाहुआ बड़ा बादल होताहै ४४ फिर वह मदोन्मत्त कालरूप मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पेला हुआ हाथी अत्यन्त तीव्र होकर पृथ्वी को अपने चरणों से कंपाता हुआ उन सब वीरोंके सन्मुख दौड़ा उस के उस बड़े रूपको देखकर वह सब महारथी, उसको सहने के योग्य न समझकर भयभीत हुए हे नरोत्तम फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तने महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थीके बाणोंसे भीमसेन के वक्षस्थलको व्यथित किया उस राजासे अत्यन्त घायल किया हुआ वह बड़ा धनुषधारी, महारथी मूर्च्छा युक्त होकर ध्वजा कीयष्टीके सहारेसे नियतहुआफिर उनको भयभीतऔर भीमसेनको मूर्च्छायुक्तदेखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़ेशब्दको करता हुआगर्जा हेराजा इसके पीछे घटोत्कच उसमूर्च्छावान भीमसेन को देख कर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीअस्थानमें गुप्तहोगया और फिर घोर रूपमहाभयकारीमायाको रचिके घोरहीरूपमें नियत होकरके अपने रचेहुए मायारूपी ऐरावत परचढ़कर आधेही निमेष में दृष्टि गोचर हुआ, और महा सुन्दर प्रभावी (अंजन) (वामन) महा पद्मनाम दूसरे दिग्गज उसके पीछे चलने वाले हुए, हे राजा वह बड़े शरीर वाले सब अंगोंसे मद चूने वालेतीनों महा गजराज राक्षसों समेत नियतहुए, जोकि तेजीसे पराक्रम युक्त बड़े बेग वालेथे फिरघटोत्कच ने अपने हाथीको युद्ध में भेजा, हे शत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र वहहाथी भगदत्तके मारनेकोउपस्थित हुआ और वह दूसरेमहाबली हाथी

भी राक्षसों केप्रेरित अत्यन्त क्रोधित चार२दांतों से महा भयानक रूपदिशाओं में पहुंचेऔर भगदत्त के हाथीको अपने दांतों से महा पीड़ा मानकिया तबतो इन हाथियोंसे महापीड़ित दुःखोंसे व्याकुल औरबाणोंसे घायल उस हाथीने इन्द्रके बज्रके समान महाघोर शब्दकिया उसके महा घोर शब्दको सुनकर, भीष्मजी द्रोणाचार्य्य और राजा दुर्य्योधनसेबोले कि यहबड़ा धनुष धारी भगदत्त युद्धमें दुरात्मा घटोत्कचके साथ लड़ता है और आपत्ति में फसा है यहराक्षस बड़े शरीरवालाहै औरराजा भी बड़ाक्रोधकरनेवालाहैनिश्चय करके कालमृत्युके समान दोनों युद्धमेंजुटे हुएहैं और पाण्डवों के प्रसन्नताके बड़े शब्द सुनेजातेहैं,और उसभयभीत हाथीके व्याकुलता के भी बहुतसे शब्दसुने जातेहैं आपलोगोंकी भलाईके लिये हमराजाकी रक्षाके लिये वहांपर चले, नहीं तो युद्धमें अरक्षितहोकर वहशीघ्रही प्राणोंको त्यागेगा हेबड़े पराक्रमियो इसहेतुसेशीघ्रताकरो बिलम्ब मतिकरो, यहरोम हर्षण करनेवाला महारुद्र रूप युद्धवर्तमान है यहसेनापति भगदत्त भक्तकुलपुत्र होकर बड़ाशूरहै, हे बिजयी लोगो हम लोगोंको उसकी रक्षा करने योग्यहै भीष्मजी के इस बचनको सुनकर सबराजा लोग द्रोणा चार्य्यको आगे कर के भगदत्त पर प्रीति करके बड़ी तीव्रतासे उसके समीप गये,,उन जातेहुए शत्रुओं को देखकर पांडवों समेत पांचाल देशी अपने आगे राजा युधिष्ठिरको करके पीछेकी ओरसे चले, फिर राक्षसों का राजा प्रतापी घटोत्कचउनसेनाओंको देखकर आकाश को शब्दायमान करताहुआ बड़ेशब्दसे गर्जा,उसके शब्दको सुनकर और लड़ते हुएहाथियोंको देखकर भीष्मजी द्रोणाचार्य्य सेबोले, किमुझकोइस महासाहसी घटोत्कच के साथ में युद्ध करना अच्छा नहीं विदित होता है क्योंकि वह इस समय बल पराक्रम से भराहुआ महामदवालाहै, यह इन्द्रसेभी बिजय करने के योग्यनहीं है औरलक्षभेदी होकर प्रहार करने वाला है और हमथलकी सवारी वाले हैं, पांचाल और पांडवोंसे सब दिन घायलहुए इसी हेतु से बिजय

से शोभा पाने वाले पांडवों के साथ युद्ध करना अच्छा नहीं ज्ञात होता है, अब विश्रामकरो प्रातःकाल शत्रुओं से लड़ेंगे अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरोंने इस पितामहके बचन को सुनकर वैसाही किया, फिर वह घटोत्कचके भयसे महापीड़ित युक्तिकेद्वारा युद्धसे हटगये कौरवोंके हटजानेपर विजयसे शोभापानेवाले पांडवोंने, शंख और बंशियोंके शब्दों समेत सिंहनादकिये हे राजा इस रीतिसे कौरव और पांडवोंका वह युद्ध घटोत्कच को आगे करके दिनभर हुआ तदनन्तर शीघ्रही कौरव लोग पांडवों से पराजित-बाणोंसे घायल लज्जामें भरे रात्रिके समय अपने २ डेरोंको गये हेमहाराज धृतराष्ट्र फिर महारथीपांडव भी युद्धमें प्रसन्न चित्तभीमसेन और घटोत्कच को आगे करके अपने डेरोंमें गये, और वहां जाकर वह शत्रु संतापी महात्मा बड़ी प्रसन्नतासे युक्त प्रशंसाकरतेहुए तुरीय बाजे बजाते शोभा युक्तहोकर नानाप्रकारके शब्दोंसे गर्जे और सिंहनाद युक्त शंखोंको बजाते गर्जनाओं से पृथ्वी को कंपाय मान करते, और आपके पुत्रोंके मर्मोंको चलाय मान करते हुए सायंकाल के समय डेरोंमें गये, फिर अश्रुपातयुक्त चिन्ता और शोकसे व्याकुल भाई बिरादरियों के मरणसे दुःखित राजा दुर्य्योधनएक मुहूर्त पर्य्यन्त चिन्ता में मग्न हुआ, तदनन्तर बुद्धिके अनुसारड़ेंा के सब प्रबन्ध को करके शोकसे खिन्न भाईयों के शोक से निर्बल होकर बड़े विचारमें प्रवृत्त हुआ ८३॥

इतिश्रीमद्दाभारतेभीष्म पर्वणि चतुर्थदिवस युद्धे चतुष्षष्ठितमोऽध्यायः ६४॥

पैंसठवां अध्याय

धृतराष्ट्र बोले हे संजय देवताओं सेभीकठिनता से करनेके योग्य पांडवों के कर्मको सुनकर मुझको बड़ाभय और आश्चर्य्य उत्पन्नहोताहै हे संजय सब प्रकार से अपने पुत्रोंकीही पराजय को सुनकर मुझको यही चिन्ता है कि परिणाम कैसा होगा, निश्चय बिदुरजी के बचन मेरेहृदय को जलातेहैं हेसंजय दैव योगसेउन्हीं

का कहना सत्यहोता दिखाई देताहै जहां कि पांडवोंकी सेनाके वह शूरवीर उन युद्ध कर्त्ताओंसे जिनमें शस्त्रवेता महाप्रतापी भीष्मजी मुख्यहैं युद्धकरतेहैं, उन महाबली महात्मापांडवोंने कौनसीतपस्या करीहै वा किससे कौनसा बरदान पायाहै अथवा वह किसज्ञान को जानतेहैं, जिस कारणसे कि वह नाशको नहीं पातेहैं हे संजय पांडवों से बारंबार मारेहुए सेनाके मनुष्योंको मैं नहीं सहसकता हूं, दैवमुझ को ऐसाकठिन दंडदेता है कि पांडव निर्विघ्न हैं और मेरे पुत्र घायल हैं, हे संजय इसका हेतु मुझसे मूल समेत वर्णन करोमैं किसी दशामेंभी इसदुःखका अन्त ऐसेनहीं देखताहूं जैसेकि भुजाओंसे तिरताहुआमनुष्य समुद्रका अन्तनहीं पाताहै मैं निश्चय करके मानताहूं कि मेरे पुत्रोंको महाभयानक दुःख बर्त्तमान हुआ मैं निरस्त देह जानताहूं कि भीमसेन मेरेसब पुत्रोंको मारेगा,मैंऐसा वीर किसीकोनहीं देखताहूं जो युद्धसे मेरेपुत्रों को बचावे, हेसंजय युद्धमेंमेरेपुत्रोंका नाशनिश्चय होतादीखताहै हेसूतइसहेतुसेतुमसब हेतुपूर्व्वक वृत्तान्त मुझसे वर्णनकरोऔरदुर्य्योधननेयुद्धमें अपनेयुद्ध कर्त्ताओंको विमुख देखकर जो २ किया अथवा(भीष्म)(द्रोणाचार्य्य) कृपाचार्य्य (शकुनि) (जयद्रथ) महाधनुषधारी (अश्वत्थामा) और महापराक्रमी विकर्णने जो २ किया,उसको और हे महाज्ञानी मेरे पुत्रोंके उदासीनहोनेपर इनमहात्माओंने जो निश्चय किया उनसब बातोंको ब्योरे समेत यथार्थमुझसे वर्णनकरो १४ संजयबोला कि हेराजा सावधान होकर सुनो और सुनकरके विश्वासकरो कि पाण्डवोंका नतोकुछ अनुष्ठानहै न किसी प्रकारको मायाहै, न वह किसी प्रकारकी भयानकता करतेहैं वह केवल युद्धमें समर्थ होकर न्यायके अनुसार लड़तेहैं,हे भरतवंशी बड़े यशको चाहने वाले पाण्डव जीवन आदिसब कर्मोंको सदैव धर्मयुक्त होकर प्रारंभ करतेहैं, वह धर्मवान महाबली बड़ीशोभा पूर्व्वक युद्धसे मुख नहीं मोड़तेहैं जिधर धर्महै उधरही विजय होतीहै,इसहेतुसे पाण्डवलोग युद्धमें निर्विघ्न होकर विजयको पातेहैं और आपके निर्बुद्धी पुत्र

सदैव पापोंमें प्रीतिकरने वाले,कठोर वक्ता और दुष्कर्म्मी इसी हेतुसे युद्धमें पराजयको पातेहैं हेराजन् आपके पुत्रोंने पाण्डवोंके ऊपर हिंसायुक्त ऐसे अनेक दुष्कर्म किये जैसेकिनीच मनुष्य करतेहैं हे पाण्डुके बड़े भ्राता धृतराष्ट्र पाण्डव आपके पुत्रोंके उनसब आप अपराधोंको क्षमा करके वैसेही निश्छल बनेरहे आपके पुत्र इनको अच्छे प्रकारसे नहीं मानतेहैं,,उसवारंवार किये हुये पाप कर्मोंका बड़ाघोर फल किंपाक वृक्षफलके समान वर्त्तमान हुआहै, हे महाराज आपने अपने सुहृदोंके निषेध करनेसेभी नहींमाना इस हेतुसे आप अपनेपुत्र सहायकों समेतउसफलको भोगोगे,विदुरजी भीष्मजी द्रोणाचार्यजी और अन्य श्रेष्ठलोगों समेत मैंने भी वारंवार आपको समझाया परन्तु आपनमाने न अबसावधानहोतेहो, और परिणाममें आनन्द देनेवाले बचनोंकोभी ऐसे नहीं सुनते हो जैसेकि निर्बुद्धी मनुष्य पथ्य और गुणदायी औषधी को नहीं पाता तुम अपने पुत्रोंके मतमें नियत होकर पाण्डवोंको विजयी देखतेहो, और हेभरतर्षभ जो पाण्डवोंकी विजयका हेतुतुम पूछतेहो,उस कोभी मैं कहताहूं हेराजन् जैसाकि मैंनेसुना है और उसी को दुर्य्योधनने भीष्मजीसे पूछाहै,अर्थात् युद्धमें पराजित सब महारथी भाइयों को देखकर शोकसे व्याकुल मन आपका पुत्र दुर्य्योधन रात्रिके समय बड़ोनम्रतासे महाज्ञानी भीष्म पितामहके पास जाकर जो बचन बोला वह सब मैं तुमसे कहताहूं,तात्पर्य्ययहहै कि दुर्य्योधननेकहा कि द्रोणाचार्य और तुम वा शल्य वा कृपाचार्य्य अश्वत्थामा वा कृतवर्मा वा हार्दिक्य वा काम्बोज सुदक्षिणवा भूरिश्रवा वा विकर्ण वा पराक्रमी भगदत्त यहसब महारथी और सब कौरव लोग शरीर के त्यागने वाले,तीनों लोकोंमें सामर्थवान प्रसिद्धहैं, मेरीबुद्धि से यहसब लोग पाण्डवों के पराक्रम में नियत नहीं होतेहैं यहमुझको बड़ा सन्देहहै कि ऐसे हमारे सहायकोंके होनेपरभी पाण्डव लोग हमको पदपदपर विजय करते हैं भीष्मजी बोले हेकौरवोंके राजा मेरे कहनेको सुन मैंने तुझको बहुतवार समझाया परन्तु तैंनेनमाना

भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ पाण्डवोंसे तुमसन्धि करलो हे दुर्य्योधन इसी में तेरी और सब संसारकी कुशलहै, हेतात भाइयों समेत सबमित्रों को प्रसन्न करके अपने बांधवों समेत आनन्दपूर्वक इस पृथ्वी को भोगो और पहलेभी हमने बारंबार कहा उसको तुमने नहीं सुना सुनोजो कोई पांडवोंका अपमान करता है उसका यहीफल बर्त्तमान होताहै वही अब तुमकोभी बर्त्तमानहै, हे समर्थ महाराजउन सुगम कर्म्मी पांडवों के अवध्य होनेका जो हेतुहै उसको मुझसेसुन, लोकोंमें ऐसाकोई बलीनहीं है नकभीकोईहोगा जो शार्ङ्गधनुषधारी के शरणमें रक्षित सबपांडवोंको विजयकरे ४० हेधर्मज्ञ जो तुमनेकहा और जो शुद्धअन्तःकरण वाले मुनियों ने पुराणोंमें कहाहै उस को तुम ठीकठीक पूर्णता से सुनो, निश्चय है कि प्राचीन समयमें सब देवता और ऋषियों ने इकट्ठे होकर गन्ध मादन पर्व्वत परपितामह जीकी उपासना करी, फिरउन सबोंमें बैठेहुए प्रजापति ब्रह्माजीनेतेज से प्रकाशित अत्यन्त सुन्दर आकाशमें बर्त्तमान उत्तमविमान को देखा, ब्रह्माजीनेध्यानकेद्वारा जानकर हाथजोड़के उस घटघटवासी को नमस्कार किया, फिरसब देवता और ऋषिलोगभी वहां सेउठे हुए ब्रह्माजीको और उसअपूर्व्व अद्भुतरूपको देखकर हाथजोड़कर नियत हुए, फिर ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ धर्मज्ञ संसारकेस्वामी ब्रह्मा जीने बुद्धिके अनुसार उसका पूजन करकेइस परम उत्तमऔरपवित्र स्तोत्रकोपढ़ा ॥ स्तोत्र ॥ विश्वावसुर्विश्वमूर्त्ति विश्वशो विष्वक्से नोविश्वकर्मावशीच विश्वेश्वरो वासुदेवो सितस्माद्योगात्मानंदैवतं त्वामुपैसि ४७ जय विश्वमहादेव जयलोकहि तेरत जययोगीश्वर विभोजययोगपरावर ४८ पद्मनाभविशालाक्ष जयलोकेश्वरेश्वर ॥ भूतभव्यभवन्नाथजयसौम्यात्मजात्मज ४९ असंख्येयगुणाधार जयसर्व परायण सुदुष्पार जयशार्ङ्गधनुर्धर ५० जयसर्व गुणोपेत विश्वमूर्त्ते निरामय ॥ विश्वेश्वर महाबाहो जयलोकार्थ तत्पर ५१ महोरग बराहाद्य हरिकेशविभोजय ॥ हरिवासदिशामीश विश्ववासामिताव्यय ५२ व्यक्ताव्यक्त मितस्थान नियतैन्द्रिय स-

त्क्रिय ॥ असंख्येयात्म भावज्ञ जयगंभीर कामद ५३ अनन्त विदित ब्रह्म नित्यंभूतविभावन ॥ कृतकार्य कृतप्रज्ञ धर्मज्ञ विजयावह ५४ गुह्यात्मन्सर्व योगात्मन्स्फुट संभूत संभव भूतात्मतत्त्व लोकेश जयभूति विभावन ५५ आत्मयोने महाभाग कल्प संख्येय तत्परं ॥ उद्भावन मनोभाव जयब्रह्मजनप्रिय ५६ निसर्ग स्वर्गनिरत कामेश परमेश्वर ॥ अमृतोद्भव सद्भाव मुक्ताग्र विजयप्रद ५७ प्रजापति पतेदेव पद्मनाभ महाबल आत्मभूत महाभूत कर्म्मात्मन् जय सर्वदा ५८ पादौतवधरादेवी दिशोबाहुर्दिवःशिरः मूर्त्तिस्तेहंसुरा कायश्चन्द्रादित्यौचचाक्षुषी ५९ बलंतपश्च सत्यंचधर्म कर्मात्मजं तव ॥ तेजोग्निः पवनश्वासः आपस्ते स्वेदसंभवाः अश्विनौ श्रवणौ नित्यौ देवीजिह्वा सरस्वती ॥ वेदाः संस्कार निष्ठाहि त्वदीयं जगदश्रितं ६१ न संख्यांनपरीमाणं नतोजन पराक्रमं नबलंयोग योगीशजानो मस्तेनसंभवं ६२ त्वद्भक्तिनिरतादेव नियमैस्त्वां समाश्रिताः ॥ अर्चयामांसदाविष्णो परमेशंमहेश्वरं ६३ ऋषयो देव गंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः पिशाचामानुषाश्चैव मृगपक्षिसरीसृपा ६४ एवमादिमयासृष्टं पृथिव्यांत्वत्प्रसादजं ॥ पद्मनाभविशालाक्ष कृष्णदुःस्वप्ननाशनं ६५ त्वंगतिःसर्वभूतानां त्वंनेतात्वंजगन्मुखं ॥ त्वत्प्रसादेनदेवेश सुखिनोविबुधाःसदा ६६ पृथिवीनिर्भयादेवत्वत्प्रसादात्सदाभवत्॥ तस्माद्भवविशालाक्ष यदुवंशविवर्द्धनः ६७ धर्म संस्थापनार्थाय दैतेयानांवधायच ॥ जगतोधारणार्थाय विज्ञाप्यंकुरुमेविभो ६८ यत्तत्परमकंगुह्यं त्वत्प्रसादादिदंप्रभो ॥ वासुदेवतदेतत्ते मयोद्गीतंयथातथम् ६९ सृष्ट्वासंकर्षणंदेव स्वयमात्मानमात्मना कृष्णस्त्वमात्मना स्रष्टाःप्रद्युम्नो स्वात्मसंभवम् ७० प्रद्युम्नोच्चानिरुद्धन्तुवयंविदुविष्णुमव्ययं अनिरुद्धोसृजन्मांवै ब्राह्मणंलोकधारिणं ७१ वासुदेवमयःसोऽहंत्ववैवास्मिविनिर्मितः विसृज्यभागशो ज्ञानंब्रजमानुषतांविभो ७२ तत्रासुरबधंकृत्वा सर्वलोकहितायवैधर्मस्थाप्ययशःप्राप्य योगंप्राप्स्यसितत्त्वतः ७३ त्वांहिब्रह्मर्षयोलोकेदेवाश्चामितविक्रम तैस्तैःस्वनामभिर्युक्तागायन्तिपरमाद्भुतं ७४

स्थितश्चसर्व्वेत्वयिभूतसंघाः कृत्वाश्रयंत्वांवरदंसुबाहो अनादिमध्या न्तमपारयोगं लोकस्यसेतुंप्रवदन्तिविप्राः ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छयासठवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे वहयोगेश्वरोंके ईश्वर भगवान् स्निग्ध गंभीर बाणीके द्वारा ब्रह्माजीसे बोले,हेतात यहतेरे मनकी इच्छा मुझको योगसे विदितहै वह उसी प्रकारसे होगा यहकह कर वह उसी स्थानमें गुप्त होगये,इसके अनन्तर देवर्षी और गंधर्वोंने बड़ा आश्चर्य्य किया और सबने मिलकर ब्रह्माजीसे कहा, कि हेसमर्थ यह कौनथा जिसको आपने बड़ी नम्रतासे नमस्कार पूर्व्वक उत्तम बाणियोंसे स्तुतिको किया हम उसको जानना चाहतेहैं,इसरीतिसे देवर्षिगन्धर्व के पूछनेपर बड़ीमधुर बाणीसे ब्रह्माजीबोले, जो सर्वोत्तमरूप आगे प्रकटहोने वाला है वही श्रेष्ठ सबजीवमात्रोंका आत्मारूप प्रभुहै उसीको ब्रह्म और ज्योति स्वरूप कहतेहैं,हेश्रेष्ठ पुरुषो मैंने उसी प्रसन्न मूर्ति परमेश्वर से बार्त्तालाप करीहै और जगत्के अनुग्रहके लिये वह जगत्पति मेरी प्रार्थनासे,बासुदेवनामसे प्रसिद्ध होगा तुमसब लोग मर्त्यलोक में नियत होकर असुरों के मारने के लिये पृथ्वीपर प्रकट होजाओ, जो दैत्य दानव और राक्षस युद्धमें मारेगयेहैं वही आकर इनघोर रूप महांबली मनुष्योंमें उत्पन्न हुयेहैं, इन्होंके मारने के निमित्त अतुल पराक्रमी भगवान् नर संयुक्त मनुष्य योनिमें नियत होकर पृथ्वीपर विचरेंगे, वही दोनों पुराण पुरुष ऋषियोंमें श्रेष्ठनरनारायण रूपमिले हुए सावधान युद्धमें देवताओं से भी विजयकरने के योग्य नहींहैं वही महा तेजस्वी एकसाथनर लोकमें प्रकटहुए इन दोनोंनर नारायण ऋषियों को अज्ञानी लोगनहीं जानते हैं, मैं जिसके आत्मासे उत्पन्न होनेवाला पुत्रसब जगत्का पतिहूं और सब लोकोंका महेश्वर बासुदेव तुम्हारा पूज्यहै, हेउत्तम देवताओ

इसी प्रकार का वह महापराक्रमी शंखचक्र गदाधारी ऐसाजानकर कि यह मनुष्यहैकभी अपमान करनेके योग्य नहींहै, यहअत्यन्त गुप्तरूप और परम ज्योतिहै यहीपर ब्रह्महै यहीयश है यही अविनाशी सनातन और यज्ञ पुरुषहै यहीदृशअदृश्य नामसेगाया जाता है और जानाजाता है सब यहीहै, यहपरमतेजसुख और सतविश्व कर्त्ता कहाजाता है इसकारणसे बड़ा पराक्रमी प्रभुबासुदेव इन्द्रादिक देवता और सबअसुरोंसेभी मनुष्य जानकर अपमानके योग्य नहींहै,जो इसबासुदेव को केवल मनुष्य समझे वह इन्हीं हृषीकेश जीके अपमान से निर्बुद्धी नीचपुरुषहै जो इसयोगी महात्मामानुषी शरीर बर्त्ती बासुदेव जीको अपमान करता है उसको महापुरुष लोग तामसी कहते हैं जो इसजड़ चैतन्यके आत्मा श्री बत्सचिन्ह धारीतेजस्वी पद्मनाभ जीको नहीं जानता है वहभी तामसी बोला जाताहै,जोमुकुटकुंडल औरकौस्तुभधारीशत्रुभय बर्धनमहात्मा पुरुष को अपमान करता है वहघोर तामिश्र नामनर्क में गिरताहै,हेश्रेष्ठ देवर्षियो इसरीति से तत्त्वार्थ को जानकर लोकेश्वरोंका ईश्वर वासुदेव सबलोकों से नमस्कार करनेकेयोग्य है, भीष्मजी बोलेकि पूर्व समय में भगवान् ब्रह्माजी देवता और ऋषियों के समूहों से इस प्रकार कहकर सबप्राणियों को बिदा करके अपने भवन को गये, इसके पीछे देवता गन्धर्ब ऋषिमुनि और अप्सरादि कभी ब्रह्माजी को कही हुई इसकथा को प्रीतिसंयुक्त सुनकर स्वर्गको गये, हेतात इसरीतिसे मैंनेशुद्ध अन्तःकरण वाले देवता ऋषिआदि की सभामें यहप्राचीन वृत्तान्त सुनाहै हे शास्त्रमेंकुशल दुर्य्योधन जमदग्न्यजी के पुत्र परशुरामजी और बुद्धिमान् मार्कण्डेय व्यास और नारदजी सेभी सुनाहै, इसअर्थ को अच्छी रीतिसे सुन और जानकर न्यूनता रहित लोकेश्वर प्रभु वासुदेवजी को ध्यानकरो, जिसकी आत्मा से उत्पन्न होने वाला ब्रह्मा सबजगत्का पिता है वह बासुदेव परमात्मारूप किस प्रकार से मनुष्यों से पूज्यनहीं है अर्थात् सबका पूज्यनमहै,हेतात प्राचीन समयमें तो शुद्धअन्तःकरण वालेमुनियों

ने सदैव निषेध कियाहै कि उस धनुष धारी बासुदेवजीसे कभीयुद्ध मतकरो ३० और न कभी पांडवोंसे लड़ो परन्तु तू अपने मोहसेसावधाननहीं होताहै इसकारण मैं तुझको राक्षस और निर्दय जानताहूं जो कि तू अज्ञान में डूबाहुआ है इसी कारण से तू गोबिन्दजी समेत पांडव अर्जुन से शत्रुता करताहै कौनसा ऐसामनुष्यहैजो इनदोनों नर नारायण देवताओं से शत्रुता करे, हे राजन् इस हेतुसे मैं तुझ से कहताहूं कि यह सनातन अबिनाशी बिश्वरूप पृथ्वी का धारण करनेवाला अचलहै, औरजोचराचर कागुरूप्रभुतीनों लोकोंकोधारण करता वह युद्ध कर्त्ताविजय रूपबिजयी सबको प्रकृतिऔर ईश्वरहै, हे राजन् यह सतोगुण रजोगुण तमोगुण से जुदाहै जिधर श्रीकृष्ण हैं उधर धर्म्महै जिधरधर्महै उधरही बिजयहै, हेराजन् पांडवलोग उन श्री कृष्णजी के महात्म्य योग वा उत्तमरूप योगसे धारणकिये हुएहैं, इन्होंकीही बिजय होगीवही श्रीकृष्ण पांडवोंकी कल्याण मिश्रित बुद्धिको और युद्धमें पराक्रम कोभी सदैव धारण करता है और भयोंसे रक्षाकरता है, वहीसनातन ब्राह्मणरूप शिव और बासुदेव कहा जाता है, हे भरतबंशी लक्षण युक्त स्वकर्मों से नित्य मुक्तब्राह्मण क्षत्रीवैश्य शूद्रों करके वह सदैव सेवाकिया जाता है उसी को द्वापर के अन्त पर कलियुग के प्रारंभ में सतोगुणी बुद्धि मेंनियत होकर संकर्षणजीने गायाहै, वही युग युगमें देवलोक मृत्यु लोक और समुद्रान्तर बर्त्तीपुरी और मनुष्योंके विश्राम स्थानों को बारंबार उत्पन्न करता है ॥ ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि षट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

अध्याय सरसठवां ॥

दुर्य्योधन बोलेकि सबलोकों के मध्यमें बासुदेव जीही महद्भूत कहेजातेहैं हे पितामह जी मैं उनके आगम और प्रतिष्ठाको जानाचाहताहूं, भीष्मजी बोलेहे भरत बंशियोमें श्रेष्ठ बासुदेव जीहीमहद्भूत और सबदेवताओंके देवताहैं इन पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्ण जीसे

परे कोई नहींदेखाई देताहै, मार्कण्डेय ऋषिभी गोबिन्द जीकोअ-त्यन्त अपूर्ब और बड़ा कहतेहैंइसी पुरुषोत्तम महात्मा जीवात्माने पृथवी आदि पांचो तत्वोंको उत्पन्न कियाहै इसी परमेश्वरनेपृथ्वी कोनदेखकर जलमें शयनकिया अर्थात् उस महात्मा पुरुषोत्तमसर्ब तेजो मयने अपने योगबलसे जलमेंशयन कियाफिरउस बड़े साहसी बासुदेवजीने मुखसे अग्निको प्राणसे बायुको उत्पन्न करके वेदों को प्रकट किया इसनेही प्रारंभमें लोकोंसमेत देवता और ऋषियों केसमूहको उत्पन्नकिया और जन्म मरण नाशसहित मृत्युको भी इसीने उत्पन्न किया,यहधर्म और धर्मात्मा बरका देनेवालाअथवा सब अभिष्टोंका देनेवाला यही आदिदेव प्रभुकर्त्ता और कर्मरूपहै इसीने भूतबर्त्तमान भविष्य इनतीनों कालोंको उत्पन्न किया यही प्रभुअबिनाशी जगत् का कर्त्ता और बरदाताहै इसीने सबके आदि भूत शंकर्षणजीको उत्पन्न किया उसीको शेषकल्पना करके अनन्त नामसे प्रसिद्धकिया वही शेषजी पर्ब्बत और समुद्रोंसमेत इसपृथ्वी को धारण करते हैं उसको महातेजस्वी कहते हैं, पुरुषोतम जीने ब्रह्माजी के उपकार के लिये कर्णसे उत्पन्न महा तेजस्वी परा-क्रमी दैत्य को मारा , हे तात इसीके मारने से इनको सब संसार . मधुसूदन कहतेहैं यही बराह नृसिंह अवतार धारण करने वाला तीन चरणोंसेसब जगत्को मारने वालाहै, यही हरि सबजीवोंका पिता और माताहै इनसे बढ़कर न कोईहै न था न होगा,हेराजन् इसने ब्राह्मणों को मुखसे क्षत्रियों को भुजाओं से बैश्यों को ऊरू से और शूद्रोंको चरणों से उत्पन्न किया है,इस सावधान ने तपके द्वारा जीवों को हव्य कव्यादिक विधियों को ब्रह्मरूपी अमावास्या वा पूर्णमासी में उत्पन्न किया, जो इन योगरूप केशव जीकी सेवाकरता है वह महा ऐश्वर्य्य को पाता है, हे राजा इनकेशवजी को मुनियों ने ऐसा कहा है इसी को आचार्य्य पिता और गुरू जानना योग्यहै,जिसके ऊपर श्रीकृष्णजी प्रसन्न होयं वह अवि-नाशी लोकोंका विजय करने वालाहै,जो प्राणोंके भयके स्थानमें

इनकी शरणमें जाताहै वह मनुष्य उसको स्मरण करता हुआ आनन्द पूर्व्वक निर्विघ्न होताहै और जो इनको प्राप्तहोते हैं वह मनुष्य मोहमें नहीं फंसतेहैं, यह जनार्द्दनजी बड़े भारी भयमेंडूबे हुये अपने भक्तोंकी सदैव रक्षा करते हैं हे महाभाग राजादुर्य्योधन वह युधिष्ठिर इस प्रकारसे ठीक २ जानकर सर्वात्मारूपसे उसयोगीश्वर जगदीश केशव मूर्त्तिकी शरणमें आश्रितहै २४॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अध्याय अड़सठवां॥

भीष्मजी बोले हे महाराज इसमेरे कहेहुये ब्रह्मरूप स्तोत्रको सुनो जोकि पूर्व समयमें पृथ्वीपर देवऋषि और देवताओंने बर्णन कियाहै १ भीष्मउवाच शृणुचेदंमहाराजब्रह्म भूतंस्तवम्मम महर्षिभिश्चदेवैश्चयः पुराकथितोभुवि १ साध्यानामपिदेवानांदेवदेवेश्वरःप्रभुः लोकभावनभावज्ञइतित्वांनारदोऽब्रवीत् २ भूतभव्यंभविष्यञ्चमार्कण्डेयोभ्युवाचह यज्ञंत्वांचैवदेवानांतपश्चतपसामपि३ देवानामपिदेवंचत्वामाहभगवान्प्रभुः पुराणंचैवपरंविष्णोरूपंनवेतिच ४ वासुदेवोवसूनांत्वंशक्रस्थापयतांतथा देवदेवोऽसिदेवानामितिद्वैपायनोऽब्रवीत ५ पूर्वंप्रजापतेःसर्गेदक्षमाहुःप्रजापतिम् सृष्टारंसर्वभूतानामंगिरास्त्वांतथाब्रवीत् ६ अव्यक्तं तेशरीरोत्थंव्यक्तंतेमनसिस्थितम् देववाक्यंभवाश्चेतिदेवलस्त्वांतथाब्रवीत् ७ शिरसातदिवंव्याप्तं बाहुभ्यांपृथिवीवृता जठरंतेत्रयोलोकाःपुरुषोसिसनातनः ८ एवंत्वामभिजानन्तितपसाभाविताजराः आत्मदर्शनतृप्ताना मृषीणांचापिसत्तमः९ राजर्षीणामुदाराणामाहवेष्वनिवर्त्तिनाम् सर्वधर्म्मप्रधानानांत्वंगतिर्म्मधुसूदन १० इतिनित्ययोगविद्विर्भगवान्पुरुषोत्तमः सनत्कुमारप्रमुखैस्स्तूयतेऽभ्यर्च्यतेहरिः ११एषतेविस्तरस्तातसंक्षेपश्चप्रकीर्त्तितः केशवस्ययथातत्त्वंसुप्रीतोभवकेशवे संजयउवाच पुरुषंश्रुत्वैतदाख्यानं महाराजसुतस्तव केशवंबहुमनेश पाण्डवांश्चमहारथान् १३ तमब्रवीन्महाराजभीष्मःशान्तनवःपुन

माहात्म्यंतेश्रुतंराजन्केशवस्यमहात्मनः १४ नरस्यच यथातत्त्वं यन्मांत्वं परिपृच्छसि यदर्थंनृषु संभूतौ नरनारायणावुभौ १५ अ-बुध्योचयथा वीरौसंयुगेष्वपराजितौ यथाचपाण्डवाराजन्नवध्या युधिकस्यचित् १६ प्रीतिमान्हिहृदृंकृष्णःपाण्डवेषुयशस्विषु तस्मा न्ब्रवीमिराजेन्द्रसमोभवतुपाण्डवैः १७ पृथिवींभुक्ष्वराजेन्द्र सहितो भ्रातृभिर्ब्बली नरनारायणौदेवावज्ञायविनंक्ष्यति १८ एवमुक्ता तवपितातूष्णीमासीद्विशांपते व्यसर्जयच्चराजानंशिविरंचविवेशह १९ राजाचशिविरंप्रायात्प्रणिपत्यमहात्मने शिश्येचशयनेशुभ्रेतां रात्रिभरतर्षभ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिब्रह्मस्तववर्णनोनाम अष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनसठवां अध्याय॥

संजयबोले हे महाराज रात्रिव्यतीत होने और सूर्य्य के उदय होनेपर फिर दोनो सेना सन्मुख बर्त्तमान हुईं, वह सब एकसाथ युद्धमेंपरस्पर देखकर अत्यन्त क्रोधित होके परस्पर में विजय की इच्छा से सन्मुख दौड़े, हे राजा आपको बुरी सलाहों के होने से आप के पुत्र और पांडव व्यूहों को रचकर अत्यन्त प्रसन्न और अलंकृत होके पूहारों को करनेलगे, फिर भीष्मजीने चारों ओर से अपने मकर नाम व्यूहकी रक्षाकरी, इसी प्रकार पांडवों ने अपने व्यूहको रक्षाकरी हे महाराज बड़े रथसमूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ आपके पिता भीष्मजी चले, और दूसरी ओरकेभी रथी हाथीपति और घोड़ोंके सवार इत्यादि सब अपने २ स्थान और अधिकारमें नियत होकर पीछे २ चले,यशस्वी पाण्डव कौ-रवोंको युद्धमें सन्नद्ध देखकर उस युद्धमेंअजेय राजश्येन नामव्यूह से युक्त होकर सन्मुखतामें बर्तमान हुए उसव्यूहके मुखपर महा बली भीमसेन शोभायमान हुआ और नेत्रों पर दुर्जय शिखण्डी औरधृष्टद्युम्न नियतहुआ,सत्य पराक्रमी महाबली सात्विको उसके शिरपर विराजमान हुआ और अर्जुन अपने गांडीव धनुषको चला

यमान करता हुआ ग्रीवामें वर्त्तमान हुआ, और श्रीमान महात्मा द्रुपद अपने पुत्रों समेत एकअक्षौहिणीसेना समेत व्यूहकेबायें पक्ष में हुआ और दाहिनेपक्षमें एकअक्षौहिणीकोलिये केकय नियत हुआ और द्रौपदीके पांचोपुत्र और महाबली अभिमन्यु पीछे की ओरहुए और उत्तम पराक्रमी श्रीमान राजायुधिष्ठिर नकुल सहदेव भाइयों समेत व्यूहके पृष्टभागमें शोभितहुए, तबभीमसेनने मुखके मार्गसे उस कौरवोंके मकरव्यूहमें प्रवेश करके भीष्मजीको पाकर उस युद्ध में शायकोंसे ढकदिया, फिरपराक्रमी भीष्मजीनेभीबड़े अस्त्रोंकोफेंका और बड़ायुद्ध करके पांडवोंके व्यूहको मोहित करदिया, फिर सेनाके मोहितहो जानेपर बड़ी शीघ्रता करने वाले अर्जुनने उसयुद्धभूमिमें आकर हजार बाणोंसे भीष्मजीको घायल किया, युद्धमें भीष्मजीके छोड़े हुए बाणोंके प्रहारको सहकर अपनी प्रसन्न सेनाके साथ युद्ध करनेको उपस्थित हुआ, इसके पीछे पराक्रमी राजादुर्य्योधन पूर्व्व दिनमें सेनासमेत भाइयों के मरणको देखकर द्रोणाचार्य्यजी से बोला कि हे पापोंसे रहित आचार्य्यजी आप सदैव मेराहित चाहने वालेहो,, हमसब आपकी और भीष्मजीकी रक्षामें होकर देवताओंकोभी निस्सन्देह युद्धमें विजय करसक्ते हैं, युद्धमें बल पराक्रम रहित पांडवोंको विजयकरना कितनी बातहै आपका कल्याण हो आपवही कामकरो जिसमें पांडव मारे जांय तदनन्तर आपके पुत्रके इसरीतिपर कहनेसे द्रोणाचार्य्यजीने सात्विकीके देखतेहुए पांडवोंकी सेनाको बाणोंसे भेदा, इसकेपीछे हे भरतबंशी सात्विकीने द्रोणाचार्य्यको रोका फिरतो महाघोररूप युद्धहोने लगा, फिरमहा प्रतापी द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर सात्विकीको दश बाणोंसे जत्रुस्थानमें घायल किया इसके पीछे सात्विकीकी रक्षाके निमित्त उसक्रोधरूप भीमसेनने द्रोणाचार्य्यजीको बाणोंसे बेधा फिर द्रोणाचार्य्य भीष्म और शल्यने बड़े बाणोंसे भीमसेनको ढक दिया, इसके पीछे महाक्रोधभरे अभिमन्यु और द्रुपदके पुत्रोंने उन सब शस्त्र धारियों को बड़े तीक्ष्ण बाणोंसेबेधा फिरमहाधनुषधारी

शिखण्डी उनमहा क्रोधरूप अतुलपराक्रमी भीष्म और द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया, वहवीर शीघ्रही बादलके समान गर्जना करताबड़े भारी धनुषको लिये बाणों से सूर्य्यको ढककर तीव्रबाणोंकी बर्षा करने लगा, फिर भरतबंशियों के पितामह भीष्मजी ने इसरीतिसे शिखण्डीको सन्मुख पाकर उसकेस्त्री भावको स्मरण करके उससे युद्ध करना त्याग किया, हे महाराज इसके पीछे आपकेपुत्र के कहनेसे भीष्मजीकी रक्षाकरते हुए द्रोणाचार्य्यजी संग्रामभूमि में उसके सन्मुख दौड़े ३० फिर भयभीत शिखंडीने उनमहाशस्त्रवेत्ता प्रलयकी अग्निके समान प्रकाशमान द्रोणाचार्य्य को अच्छीरीति से सन्मुखहोकर रोका, हे राजा इसकेपीछे युद्धाभिलाषी आपके पुत्रने बड़ी सेना समेत भीष्मजी की रक्षाकरी, और इसीरीति से पांडव अर्जुनको आगेकरके और विजयमें दृढ़ बुद्धिहोकर भीष्मजी के सन्मुखहुए, वह ऐसा महाघोर युद्ध हुआ जैसा कि देव और दानवोंका संग्रामहोता है उस युद्धमें विजयाभिलाषी शूर वीरों की बड़ी अपूर्व कीर्ति विख्यात हुई ३४॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

सत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि आपके पुत्रों की रक्षा चाहनेवाले शांतनु भीष्म जीने बड़ा कठिन युद्धकिया, वह बड़ा भारी युद्ध दिनके पूर्व्वभाग में पांडव और कौरवों के राजाओं का नाश करनेवाला जारीहुआ, उसबड़े भयानक सबको व्याकुल करनेवाले महा घोर युद्धकेजारी होनेपर आकाश को व्याप्त करनेवाला महा घोर शब्द हुआ, और हाथियों की चिंहाड़ और घोड़ोंके हिनहिनाटोंसे वह शब्द अत्यन्त कठोर होगया, फिर वह पराक्रमी शूरवीर विजयाभिलाषी होकर परस्पर में युद्ध करते हुए, ऐसे गर्जे जैसे कि गौओं की शालाओंमें बली बर्द गर्जना करतेहैं, हे भरतबंशियों मेंश्रेष्ठ उस युद्धमेंतीक्ष्ण बाणोंसे कटेहुए शिरोंकी ऐसी वृष्टि हुई जैसीकि आकाशसे पाषाणों

की वर्षा होती है और बड़े सुन्दर सुनहरी कुण्डल और मंडीलें पहरे हुए शिर पृथ्वीपर गिरे हुए दृष्टि गोचर हुए, विशिखों से भिंदे हुए अंग और कुण्डलधारी शिर और अनेक हाथों के भूषणों से पृथ्वी व्याप्त होकर गुप्तसी होगई, हे राजा अंगों में कवच विभूषित भुजा चन्द्रमा के समान मुख और लाल २ नेत्रों से, और हाथी घोड़े और मनुष्यों के सब अंगोंसे सब युद्ध भूमि एक मुहूर्तमें ही भरकर पूर्ण होगई, धूलके कठिन बादलों में शस्त्ररूप बिजली प्रकाशित थी और उन्हीं शस्त्रों के शब्द बादलकी गर्जना सी होती थी, हे राजा कौरव और पांडवोंके वह शस्त्रोंका परस्पर प्रहार महा कठिन सहने के अयोग्य जारी हुआ जिसमें रुधिरकी नदी बह निकली, उस महा भयानक घोर तुमुल वाले रोम हर्षण युद्धमें दुर्मद क्षत्रियोंने बाणों के जालोंको बरसाया, यहां बाणोंकी वर्षा से अत्यन्त पीड़ामान हाथी पुकारे और पाण्डवों के शूर वीर शस्त्रोंसे शोभित होकर चारों ओरसे दौड़े, अत्यन्त कोपयुक्तपराक्रमी शूर बीरोंके धनुषोंके टंकार शब्दोंसे कुछभी नहीं जान पड़ता था, सब ओरसे जलरूप रुधिर के मध्यमें बिनाशिर घोड़ोंके उड़ने पर शत्रुओंके मारने को उपस्थित दूसरे राजालोग चारों ओरकोदौड़े, बड़े तेजस्वी परिघ के समान भुजाधारी वीरोंने युद्धमें बाणबरछी गदा और खड्गों से परस्पर में एक को एक ने मारा, और बाणों से घायल हाथी अंकुश के बिनाही इधर उधर घूमने लगे और जिनके सवार मारे गये ऐसे घोड़े भी दशों दिशाओं में दौड़ते फिरते थे, और कोई बाणों से पीड़ित होकर उठ २ कर गिरते थे और आपके वा पांडवों के शूरबीर भ्रमण करने लगे १६ पृथ्वीपर गिरेहुए बान बरछी गदा खड्ग और परिघ जांघ और हाथोंसे युक्त चरण भूषण समेत कपड़ों के तोदे भीमसेन और भीष्मजीके सन्मुख पड़े हुए दृष्टि पड़ते हैं, हेराजा जहांतहां दौड़तेहुए घोड़े और लौटते हुए हाथियों के समूह दृष्टिगोचर हुए, वहांकाल के प्रेरित क्षत्रियोंने गदाखड्ग प्रास और झुकेहुए पर्ववाले बाणोंसे

एकने एक को परस्परमें मारडाला युद्धमें भुज बलकरने में कुशल शूरबीर लोहेके परिघ समान अपनी भुजाओंके द्वारा बहुत प्रकार से बढ़े, हेराजा पांडवोंके साथ आपके शूरबीरोंने मुष्टिका जानुतल और कीलों से भीपरस्परमें घातकिया, और जहां तहां गिरे और गिराये हुए पृथ्वीपर चेष्टाकरनेवाले शूरबीरासे युद्धभूमि महा भय कारी दीखने लगी, और रथी रथसे पृथक् अथवा उत्तम खड्गके धारण करने वाले परस्पर घातके आकांक्षी एक एकके सन्मुख दौड़े, तदनन्तर बहुतसे कलिङ्ग देशियोंसे युक्त राजा दुर्य्योधन युद्ध में भीष्मजीको आगे करके पांडवों के सन्मुख वर्त्तमान हुआ, और इसी प्रकार युद्धमें क्रोधयुक्त शीघ्रगामी सवारियों वालेसब पाण्डव भीमसेन को मध्यमें करके भीष्मजी के सन्मुख दौड़े २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोलेकि भीष्मजी से युक्त भाइयों और अन्य बांधवों को देखकर अस्त्रधारी अर्जुन गांगेय भीष्म के सन्मुख दौड़ा, फिरपांच जन्यशंख और गांडीव धनुषका शब्द सुनकर और अर्जुनकी ध्वजा को देखकर हम सब लोगोंमें भय उत्पन्न हुआ, हे महाराजहमने गांडीव धनुष धारीको उस ध्वजाको आकाशमें देखा जो सिंहलां गूलनाम आकाशमें प्रकाशित पर्व्वतसमान वृक्षों में नरुकनेवाली ऊंचीउठी हुई अनेक रंगोंसे युक्त श्री हनुमान जीकेचिन्हसे अलंकृत थी, जैसेकि आकाशकेबादलोंमें नियत शोभाय मान बिजली दिखाई देतीहै उसीप्रकार शूरबीरोंनेभारीयुद्धमें उससुनहरी पृष्टवालेगांडीव धनुषको देखा, फिर हमने इन्द्रके समान सन्मुख गर्जना करते और आपकी सेनाको मारते हुएअर्जुनके तलोंके महाघोर शब्दोंको बारं-बारसुना, जैसेकठिन बायुयुक्तबादल बिजली और अब्रके साथहोता है उसी प्रकार अर्जुनने चारोंओर से बाणों कीबर्षासेदिशाओं को चलाय मानकरदिया, भयानक अस्त्रवालाअर्जुन भीष्मजी के सन्मुख

दौड़ा उससमय हमनेअस्त्रोंसे व्याकुलहोकरपूर्व्वादि दिशाओंकोभी नहीं पहचाना,हे भरतर्षभ आपके अचेत होनेवाले शूरबीर जिनकी सवारी थकी और घोड़े मरे वा किसी दशामें नियत थे, वह सब परस्परमेंमिलकर आपके पुत्रोंसमेत भीष्मजीकेही आश्रयमेंहोतेथे और भीष्मजी उनकी रक्षा करतेथे, भयभीत रथी अपने रथोंसे और सवार घोड़े की पीठसे और पदाती पृथ्वीसे अत्यन्त उछलते थे, हे भरतबंशी गांडीव धनुष के बज्रके समान शब्दोंको सुनकरसेना के सब मनुष्यमारे भयके भागे,इसकेपीछे राजा कलिंग बड़े शीघ्र गामी कांबोजदेशी वा उत्तमघोड़ों के द्वारा गोपायन नाम गोपोंकी असंख्यसेना युक्त (भद्र)(सौबीर) (गान्धार) त्रिगर्तदेशी और कलिंगो की उत्तमसेनाके शूरबीरों समेत,, नानाप्रकारकी सेनाओं के समूहोंको साथलिये जिनमेंमुख्य दुश्शासन था और सबराजाओं समेत राजा जयद्रथ और आपके पुत्रके भेजे हुए चौदह हजार उत्तम अश्व सवार इन सबोंने चारोंओरसे सौबलके पुत्रको मध्यमें करलिया, इसकेपीछे उन सब पांडवोंने जिनके रथ और सवारियां बुद्धिके अनुसार विभाग युक्तथीं एकसाथही आकरआपके शूरबीरों कोमारा,रथी हाथी घोड़े और पदातियोंसे अच्छेप्रकारसे चलायमान युद्धभूमि बड़े बादलोंके समान धूलिसे महा भयकारीविदित हुई, भीष्मजी (तोमर) (प्रास) नाराच और हाथी घोड़े रथोंसे युद्ध करनेवाली शूरबीरोंकीसेना समेत अर्जुनसे अत्यन्तलड़े राजा अवन्ती काशीके राजाके साथ और भीमसेन जयद्रथ के साथ और राजा युधिष्ठिरपुत्र और प्रधानोंसमेत मद्रदेशके राजा शल्यके साथ अत्यन्त शूरता से लड़े और विकर्ण सहदेवसे चित्रसेन शिखंडी से लड़नेलगा,, हे राजा मत्स्यदेशी शूरबीर दुर्य्योधन और शकुनीके साथ बड़े पराक्रम करनेवालेहुए और महारथी द्रुपद चेकितान और सात्विकी महात्मा द्रोणाचार्य्य और उनकेपुत्रसेयुद्ध करनेवाले हुए कृपाचार्य्य और कृतबर्मा दोनों धृष्टद्युम्नके सन्मुख दौड़े इस रीतिसे स्थान २ पर चारोंओर से ऐसे युद्ध होनेलगे कि जिनके

घोड़े प्राणगत और हाथी रथ भ्रान्ति से युक्तहोगये हे राजा उस समय आकाशमें बिनाही बादलोंके महातीव्र विद्युत्पातहोने लगा और दिशा धूलसे आच्छादित होगई और महाउल्कापात होकर परस्पर में बड़े घोर शब्द प्रकट हुए,, महावायु चलनेलगा और धूलकी ऐसी अत्यन्त वर्षा हुई जिसके कारण सूर्य्य ढककर आकाशमें गुप्त होगया, धूलसे छुपा हुआ और अस्त्रोंके जालों से लड़नेवाले सब जीवों को बड़ी अचेतता प्राप्तहुई, वीरों की भुजाओंसे छुटे सब पर्दोंके भेदन करने वाणों के जालों से महाकठोर शब्द उत्पन्न हुए हे भरतर्षभ उत्तम भुजाओं से उठाये हुएनिर्मल नक्षत्रों के समान प्रकाशमान शस्त्रों ने आकाश को प्रकाशित कर दिया, और सब दिशाओं में उत्तम जड़ाऊ सुनहरी ढालें पृथ्वी पर गिरीं, सब रीतोंसे सूर्य्यरूप खड्गोंसे गिराये हुए शरीर और शिर सब ओरको पड़े हुए दिखाई दिये, जिनके पहिये अक्ष और नीढ़ें टूटगये थे और बड़ी २ ध्वजायें गिरपड़ीथीं वा घोड़े भी मर गयेथे ऐसे बड़े २ रथ स्थान स्थान पर गिरेपड़े थे और कितनेही घोड़े शस्त्रोंसे घायल हुए पृथ्वीमें चारोंओर घूमते थे हे भरतवंशी बाणोंसे घायल देहवाले उत्तम घोड़े जिनके अंगोंपर ईषा दण्ड बंधाथा उन्होंने जुओंको स्थान स्थानपर खैंचा, उस युद्धमें कोई २ एकही बाणसेसारथीघोड़े औररथसमेतमारेहुए शूरबीर दिखाईपड़े, सेनाके समूहोंके चढ़ाई होनेपर बहुत से हाथियोंने हाथीके मद से निकलीहुई गन्धको सूंघकर वायुका भक्षणकिया, और नाराचों से मारेहुए बड़े डीलडौलवाले तोरनों समेत गिरेहुए मृतक हाथियों से युद्धभूमि गुप्त होगई, फिर सेनाके चलायमान होनेपर भगेहुए हाथियोंसे घायलहुए दूसरे हाथी अपने शूरबीर सवारोंसमेत सब ओर से पृथ्वीपर गिरे, हे महाराज उस युद्धमें गजराज के समान हाथियोंकीसूंड़ोंसे खिंचकर रथोंकेकूबर अत्यन्त टूटेहुए दिखाईपड़े, जिनके रथोंके जाल टूटे ऐसे रथी युद्ध में वृक्षकी डाली के समान शिरके बालोंमें हाथियोंसे खिंचकर और घायलहोके फंसगये, और

युद्धमें उत्तम हाथी रथोंमें चिपटेहुए रथोंको खैंचते सब हाथियों के शब्दोंपर चलतेहुए सब दिशाओंको दौड़े, उन खैंचने वाले हाथियोंका रूप ऐसा शोभितहुआ जैसे कि तड़ागोंमेंलगेहुए सुन्दरकमलोंके खैंचनेवाले हाथियोंका रूप शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि सवार पदाती और बड़े ध्वजावाले रथोंसे पूरितहोगई,४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा शिखण्डीने मद्रके राजाविराट् समेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी दुःप्रधर्ष भीष्मजीसे सन्मुखताकरी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और राजा दुर्य्योधनके बहुतसे बड़े २ धनुषधारी महाबली शूरबीरोंको मोहितकिया, हे राजेन्द्र प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधारी राजा सिन्ध और पूर्वी पश्चिमीय वा आपके क्रोधी पुत्र और बड़े धनुषधारी दुर्य्योधन आदि अन्य अनेक राजाओंके सन्मुख उस युद्धमें भीमसेन बर्त्तमानहुए, और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सन्मुख हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रधर्ष पिता पुत्र भी सन्मुख वर्त्तमान हुए, और आपके पुत्रसे ठगाहुआ महारथी युद्धिष्ठिर युद्ध में हाथियों की सेनाके सन्मुख वर्त्तमान हुआ, और युद्ध में गर्जने वाला माद्री नन्दन वीर नकुल त्रिगर्त्त देशियों के बड़े रथों से युद्धकरने वाला हुआ, और अजेय महाबली सात्विकी वा चेकितान और अभिमन्यु यह तीनों शाल्व और केकय लोगों से युद्ध करने के लिये उपस्थित हुए और धृष्टकेतु वा घटोत्कच राक्षस युद्ध में आपके पुत्रों की रथवाली सेनाके सन्मुख गये, हे राजा महारथी साहसी सेनापति धृष्टद्युम्न महाभयकारी कर्मकरता द्रोणाचार्य्यकेसन्मुख जाभिड़ा, इस प्रकार से आपके इतने धनुष धारी पराक्रमी शूरोंने पांडवों के सन्मुख होकर प्रहारों को किया, दिवसमें सूर्य्यके वर्त्तमान होने और आकाशमें व्याकुलता होनेपर कौरव और पांडवों

ने परस्पर में मारना प्रारम्भ किया, और सुवर्ण जटित ध्वजा उस युद्धमें घूमने लगी और व्याघ्र चर्म से मढ़े हुए रथ और पताकाओं समेत महा शोभायुक्त हुए, युद्धमें भिड़े हुए परस्पर विजयाभिलाषी सिंहके समानगर्जना करनेवाले शूर वीरोंके महा कठोर शब्दहोने लगे, वहां हमने बड़े भयानक उस अपूर्व्व प्रहारकोदेखा जिसको बड़े शूरवीर संजय लोगोंने कौरवोंकेसाथ किया हे शत्रुहन्ताहमने चारों औरसे छोड़े हुए बाणोंकेकारण आकाश सूर्य्य दिशाविदिशा आदि किसीको नहीं देखा,तीक्ष्णधार बरछी और छोड़े हुए तोमर और विषयुक्तनीलेकमलके समानखड्गोंके औरजड़ाऊकवचोंके वा आभूषणोंके प्रकाशने आकाशदिशा विदिशाओं को प्रकाशित कर दिया हे राजा उससमय वह रणभूमि चन्द्रमा सूर्यसे प्रकाशमान मुखवाले राजाओं के शरीरों से शोभायमान हुई, हेराजा रथियोंमें श्रेष्ठ नरोत्तम युद्धमें जुटेहुये उसयुद्धमेंऐसे शोभायमान विदितहोते थे जैसे कि आकाशमें ग्रहोंसमेतसूर्य चन्द्रमा शोभादेतेहैं, २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी भीष्मजीने सब सेनाके देखते उसमहाबलीभीमसेनको रोका और अपने तीक्ष्ण शिलापर घिसेहुए सुन्दर प्रकाशित सुवर्ण,पुंखवाले बाणोंसे उसकेशरीरको घायल किया,हे भरतबंशी फिर उस महाबली भीमसेनने शीघ्रगामी सूर्य्यके समान तीव्र बरछी को बड़े क्रोध करके भीष्मके ऊपर फेंका, फिर भीष्म ने उस सुनहरी दण्ड वाली महा असह्य आकस्मात गिरने वाली बरछी को अपने गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से काटा, तदनन्तर अपने तीक्ष्ण पीतरंग वाले भल्लसे भीमसेन के धनुषको काटा इसकेपीछे सात्विकी ने भीष्मजी के सन्मुख आकर बड़े बेगसे कानोंतक खैंचे हुए तीक्ष्ण प्रकाशित बाणों से आप के पिता को मोहित करदिया फिर भीष्मजीने बड़े भयानक तीक्ष्ण बाणको चढ़ाकर सात्विकीके सारथी को रथसे गिराया, हे राजा सारथीके मरनेपर उसकेघोड़े मन और वायुकोगतिकेसमान इधरउधरदौड़नेलगे, इसकेपीछे संपूर्णसेनामें कठिन शब्द प्रकटहुआ और महात्मा पाण्डवोंका हा-

हाकार उत्पन्नहुआ, चलोदौड़ो२ घोड़ोंको थांमो २ यह कठोर शब्द केवल सात्विकी के रथके विषयमें हुआ फिर इसी समय शांतनुके पुत्र भीष्मजीने पाण्डवोंकी सेनाको ऐसेमारा जैसे कि असुरों की सेनाको इन्द्रमारताहै, वह पांचाल देशी सोमकी समेत भीष्मके हाथसे घायल युद्धमें उत्तम बुद्धिको करके भीष्मके सन्मुख दौड़े और अग्रगामी धृष्टद्युम्न समेत पाण्डवभी आपके पुत्रकी सेनाके मारनेकी इच्छासे उसभीष्मके सन्मुख दौड़े, हेराजा इसी प्रकार आपके भीष्म आदिक वीरभी पाण्डवों के सन्मुख बड़े बेगसे दौड़े और युद्धहोने लगा ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तेहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा विराट्ने तीन बाणोंसे महारथी भीष्मको मोहित किया और भीष्मने अपनेतीन बाणोंसे उसके घोड़ोंको घायलकरके अपनेतीक्ष्णदश बाणोंसे उसकोघायलकिया और बड़े धनुषधारी महारथी दृढ़हस्त अश्वत्थामाने छःबाणोंसे अर्जुनकी छातीको घायल किया फिर शत्रुओंके मारने वाले और बलसेहीन करने वाले अर्जुनने उसके धनुषको काटकर बड़े तीव्र बाणोंसे उसको घायल किया, ३हेराजा उसवेगवान क्रोधसेमूर्च्छित युद्धमें अर्जुनके हाथसे टूटेहुये धनुषको असह्यमानकर अश्वत्थामाने दूसरे धनुषको लेकर, नौतीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुनको घायल किया और सत्तर तेजबाणोंसे वासुदेवजीको घायल किया, इसके पीछे श्रीकृष्णजी समेत क्रोधसे लालनेत्र अर्जुनने बड़ीलम्बी उष्णश्वासें लेकर वारंवार बड़ी चिन्ता युक्त होकर वामहाथसे गांडीव धनुषको बहुतसा दबाकर शुत्रग्रन्थी युक्त जीवनके नाश करने वालेभयानक शिली मुखनाम बाणोंको धनुषपर चढ़ाया और बड़ी शीघ्रतासे उनबाणोंके द्वारा अश्वत्थामाको घायल किया, उनबाणोंने युद्धमें उसके कवचको काटकर उसके रुधिर को पान किया फिर

अर्जुनसे घायल किया हुआ पीड़ामान अश्वत्थामाभी उसीरीतिके अर्जुन को बाण मारताहुआ और महाव्रत भीष्मजीकी रक्षाकरता हुआ बड़े धैर्य्यसे युद्धमें नियतरहा,उसके उसमहा कर्मको देखकर कौरवोंने बड़ी प्रशंसाकरी जो युद्धमें श्रीकृष्णके सन्मुख दौड़ा, और द्रोणाचार्य्यसे अतिदुःप्राप्य संहार समेत अस्त्र समूहोंको पाकरभय भीत सेनामें युद्ध करने वाले शत्रु संतापीवीर अर्जुनने इसबात को विचार करके कि यहमेरे गुरूका पुत्र गुरूको अत्यन्त प्यारा और मुख्यकर ब्राह्मण होकर मेराभूजनीयहै उसको अबध्यजानकरनहीं मारा,इसकेपीछेश्वेत अश्ववाला शीघ्रकर्मी अर्जुनयुद्धमें अश्वत्थामा को छोड़कर आपके शूरबीरोंको मारताहुआ युद्धमें प्रवृत्तहुआ, फिर दुर्य्योधनने गृध्रपक्ष युक्त सुनहरी पुंखशिलापर तीक्ष्ण कियेहुए दश बाणोंसे बड़े बली धनुषधारी भीमसेनको घायलकिया,तब अत्यन्त कोपित भीमसेनने मृत्युकारक रत्नोंसे जटित बड़े दृढ़ धनुषकोहाथमें लिया और दश तीक्ष्णबाणोंको चढ़ाकर बड़ेशीघ्रतासे अधिक खैंच कर राजा दुर्य्योधनको छातीमें घायलकिया,उसको सुवर्णित सूत्रसे बंधी हुई छाती की मणि बाणोंसे संयुक्त होकर ऐसी शोभायमान हुई जस कि आकाशमें ग्रहोंसे व्याप्त सूर्य्यहोताहै,२० फिर भीमसेन से घायल आपके तेजस्वी पुत्रने ऐसे नहीं सहा जैसे कि हाथ की हथेली के शब्दसे जागाहुआ सर्प शान्तनहीं होता है, हे महाराज सेनाकी रक्षा करनेवाले अत्यन्त क्रोध युक्त दुर्य्योधन ने सुनहरी पुंखके पैनेकिये हुए बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया, फिर आपके वह दोनों महाबली पुत्र युद्धमेंलड़ते और परस्परघायल करतेदेवताओंके समान शोभायमानहुए, और नरोत्तम शत्रुहन्ता अभिमन्युने सात तीक्ष्णबाणोंसे चित्रसेन और पुरुमित्रको घायलकिया फिर युद्धमें नृत्यकरते इन्द्रकेसमान पराक्रमी अभिमन्यने सत्तरबाणोंसे सत्यव्रतको घायल करके हम लोगोंको पीड़ितकिया, चित्रसेनने शिलीमुखनाम दशबाणोंसे और सत्यव्रतने नौबाणों से पुत्र मित्रने सातबाणोंसे उसको घायलकिया, उस घायल और रुधिर

को डालनेवाले अभिमन्युने चित्रसेनके उस जड़ाऊ शत्रुओंके हटाने वाले बड़े धनुषकोकाटा, और बाणही से उसके कवचको काटकर छातीमें घायलकिया फिर आपके उन महाबली राजकुमारोंने और महारथियोंने, भी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया फिर उसमहाअस्त्रज्ञने उनसबको भी अपने तीक्ष्णबाणोंसे घायलकिया, फिर युद्धमें महाक्रुद्धके समान आपकेबीरोंके जलानेवाले उस अभिमन्यु के उस कर्मको आपके पुत्रोंने देखकर उसको चारोंओर से घेरलिया, ३० चैत्र बैशाखकी तीव्र अग्निके समान अभिमन्यु आपकी सेना को नाशकरता बड़ा शोभितहुआ, हे राजा आपका पौत्र लक्ष्मण उस चरित्रको देखकर शीघ्रही अभिमन्यु के सन्मुख आनभिड़ा, फिर अत्यन्त कोपित अभिमन्युने शुभ लक्षणवाले लक्ष्मणको छः विशिखोंसे और सारथीको तीनबाणोंसे पीड़ामान किया, ३३ हे महाराज धृतराष्ट्र उसी प्रकारसे लक्ष्मणने भी अपनेबाणोंसे अभिमन्यु को ऐसाघायल किया जिसके देखने से आश्चर्य्यसा होताहै, फिर महारथी अभिमन्यु उसकेचारों घोड़ों को सारथी समेत मार कर लक्ष्मणके सन्मुखदौड़ा, फिर वह मृतक घोड़े के रथपर नियत शत्रुकेबीरोंके मारनेवाले अत्यन्त क्रोधित लक्ष्मणने अभिमन्यु के रथपर बरछीको फेंका, अभिमन्युने उसभयानकरूप असह्यसर्पाकृति आनेवाली बरछी को अपने तीव्रबाणों से काटा, फिर कृपाचार्य्य जी लक्ष्मण को अपने रथपर बैठाकर सबसेना के देखते हुए उस को रथके द्वारा दूर लेगये, फिरबड़े भयकारी तुमुल युद्धके वर्त्तमान होनेपर परस्पर बिजयाभिलाषी शूरवीर एक एकको मारते हुए सन्मुख दौड़े, आपके बड़े धनुष धारी महारथी पांडव युद्धमें प्राणोंको होमते हुए परस्पर में मारने लगे फिर छुटे बालक बच रहित टूटे धनुष सूंजी लोग अपनी भुजाओं से कौरवोंसे अत्यन्त युद्ध करने वाले हुए, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी ने बड़े क्रोध युक्त होकर अपने दिव्यअस्त्रोंसे महात्मा पांडवोंकीसे नाको मारा, उस समय बिनास्वामी के हाथी मनुष्य घोड़ों के वा रथी और

अश्वारूढ़ों के गिरने से युद्धभूमि अत्यन्त व्याप्त होगई ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व णत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोलेहेराजाफिर युद्धमें दुर्मद महाबाहु सात्विकीनेअपने उग्र धनुषको खेंचकर, अपनी हस्त लाघवता को दिखाते सपुंख सर्पाकृति तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ा और बड़ी शीघ्रता से अनेकबाणों को फेंकते शत्रुओं को मारते हुए सात्विकी का ऐसा रूप दिखाई दिया जैसे कि अत्यन्त बरसतेहुए बादलका रूप दिखाई देता है, फिर राजादुर्य्योधन ने उस गर्जने वाले सात्विकीको देखकरउसके ऊपर दशहजार रथियों को भेजा, फिरसत्य बिक्रम महाबली उग्र धनुषधारी सात्विकीने अपने दिव्यास्त्रों से उन बड़े २ धनुषधारियों को मारा, फिर इसवीर धनुष धारीने महाकठिन कर्मको करके भूरिश्रवा को सन्मुख पाया, वह कौरवोंकी कीर्त्तिका बढ़ानेवाला भूरिश्रवा उससेना को सात्विकीके हाथसे पीड़ित देखकर बड़ाक्रोध युक्त होके सन्मुख दौड़ा, हे राजा उसने भी अपनी हस्तलाघवता को दिखाकर इन्द्रबज्रके समान धनुष को टंकारकर सर्पोंके समान बज्रके सदृश हजारों बाणोंको छोड़ा, और सात्विकी के साथी शूर बीर उनमृत्युके समान स्पर्शवाले बाणोंको नहींसह सके और सब उसदुर्मद सात्विकी को युद्ध में अकेलाही छोड़कर चारोंओर को भागे फिर सात्विकी बड़े धनुष धारी महारथी कवचों से शोभित दश पुत्रोंने उस सेनाको भागता देखकर महाक्रोधित होके उस यूपध्वज बड़े धनुष धारी भूरिश्रवाके सन्मुख होकर बोले,हेकौरवों के प्यारे पुत्र महाबली आओ और युद्धमें हमसबों के साथ अथवा जुदे२के साथ युद्धकोकरो,तुमसंग्राममें हमको बिजयकरके कीर्त्तिवान्होगे अथवा हम तुमको बिजय करके पिताको आनन्ददेंगे, तबउन शूरवीरोंसे ऐसाकहा हुआ अपने बलसे प्रशंसा पानेवाला नरोत्तम महाबलीभूरिश्रवा उनकोसन्मुख नियत देखकरबोला, १६

हे वीरलोगो यह बहुत उत्तम है जो अब तुम्हारी ऐसीही इच्छाहै तो तुम सब इकट्ठे होकर लड़ो मैं युद्धमें तुम सब उपाय करनेवालोंको मारूंगा, ऐसे परस्पर कहकर बड़े धनुषधारी शीघ्रताकरनेवाले शत्रुओंके पराजय करनेवाले उन वीरोंने बाणोंकी बर्षा चारों ओर से मचादी, हे महाराज तीसरे पहर तक एक का बहुतों के साथ महायुद्ध हुआ, फिर इन सबोंने उस रथियोंमें श्रेष्ठ अकेलेको बाणोंसे ढककर ऐसा सींचा जैसा कि बर्षा ऋतुमें सुमेरु पर्व्वतको बादल सींचतेहैं,उस भ्रान्ति रहित महारथीने उन सबोंकेछोड़े हुए यमदण्ड वा इन्द्र बज्र के समान प्रकाशित बाणसमूहोंको बड़ीशीघ्रता पूर्व्वक मार्गमेंही काटा, हे राजा हमने वहां पर सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा के अद्भुत पराक्रमको देखा कि जो अकेलाहीनिर्भय के समान अनेकोंसे लड़ा, दश महारथियोंने बाणोंकी बर्षाकोछोड़कर उस महाबाहुको चारोंओरसे घेरकर मारनेका बिचार किया, हे भरतर्षभ तब तो महारथी भूरिश्रवा ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर एक निमिषहीमें अपने दश बाणोंसे उनके दशों धनुषों को काटा, तदनन्तर इन टूटे धनुषवाले बीरोंके शिरोंको अपने गुप्तग्रन्थीवाले भल्लोंसे काटडाला, वह मरकर पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि बज्र से टूटेहुए वृक्ष पृथ्वीपर गिरते हैं, हे राजा युद्ध में मरेहुए महाबली वीर पुत्रोंको देखकर, बड़ी गर्जना करताहुआ सात्विकी भूरिश्रवा के सन्मुख गया और दोनों महाबली युद्धमें रथसे रथको टक्कर देकर रथोंके घोड़ोंको परस्पर मार बिरथहोके सन्मुख गर्जतेहुए द्वन्द्व युद्ध करनेलगे, फिर वह बड़े २ खड्ग और ढालोंको धारणकिये हुए युद्धमें प्रवृत्त महा शोभायमानहुए, हे राजा इसके पीछे भीमसेनने उत्तम खड्गधारी सात्विकी के पास आकर उसको रथपर सवारकिया,फिर आपके पुत्रने भी सब धनुषधारियों के देखतेहुए शीघ्रही भूरिश्रवाको रथपर सवारकिया, हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ इस प्रकार से उस युद्धके प्रवृत्त होनेपर महा क्रोधित पांडव और भीष्मजी भी युद्धमें प्रवृत्तहुए, सूर्य्य के अरुणहोनेपर बड़ी शीघ्रता

करनेवाले अर्जुन ने पच्चीस हजार महारथियों को मारा, फिर वह दुर्य्योधनकी आज्ञासे अर्जुनके मारनेकी इच्छामें अर्जुन को न पाकरही ऐसे नष्ट होगये जैसे कि अग्नि में टींड़ी भस्म होजाती हैं, इस पीछे धनुर्वेद में पंडित मत्स्य और केकयों ने आकर पुत्रसमेत अर्जुनकी चारोंओर से रक्षाकरी, फिर अच्छे प्रकारसे उठीहुई धूल के बादलों से सूर्य्यास्तसा होगया उस समय सूर्यास्तके कारण सेना में बड़ा मोह उत्पन्न हुआ, इसके पीछे हे महाराज आपके पिता देवव्रत जिनके घोड़े थकेहुए थे उन भीष्म जीने सायंकाल के समय सेनाको विश्राम दिया, पांडव और कौरवोंके परस्पर युद्ध से अत्यन्त व्याकुल वह दोनों ओर की सेना अपने २ निवासस्थान कोगई,इसकेपीछे सृंजयों समेत पांडव और कौरव बुद्धिके अनुसार अपने २ डेरोंमें जाकर स्थित हुए ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

पिछहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजा फिर वह कौरव पांडव रात्रि को व्यतीत करके प्रातःकालही युद्ध करने को चले, इसके पीछे उन पांडवों के और आपके पुत्रोंके उत्तम रथों के जुड़ते हुए घोड़ोंके महा शब्द होने लगे और सब ओरसे शंख वा दुन्दुभियों के कठिन शब्द भी सुनाई दिये तब राजा युधिष्ठिर ने धृष्टद्युम्न से कहा कि हे महाबाहु तुम मकर व्यूहको तैयार करो वह व्यूह शत्रुओं का संतप्त करनेवाला है, युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही उसमहारथी धृष्टद्युम्न ने रथी शूरवीरों को आज्ञा करी, उस व्यूहका शिरतो राजा द्रुपद और अर्जुन हुआ और नेत्रमें महारथी नकुल और सहदेव हुए, ६ और मुखमें महाबली भीमसेन हुआ और व्यूहकी ग्रीवामें (अभिमन्यु) (द्रौपदी के पांचोपुत्र) (घटोत्कच राक्षस) (सात्विकी और (धर्मराज) हुए, और पीठपर बड़ी सेना युक्त सेनापति धृष्टद्युम्न और विराट् उपस्थित हुए और बामभागमें पांचोभाई केकयवर्त्त-

मान हुए, और नरोत्तम धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितान दक्षिण पक्षमें नियत होकर व्यूहके दक्षिण ओर नियत हुए और हे राजा बड़ी सेना समेत श्रीमान् महारथी कुन्तभोज और सतानीक व्यूह के चरणों पर स्थिर हुए, फिर बड़ा धनुषधारी बलवान् शिखंडी सोमकों समेत और राजा इरावान् उस मकर व्यूहकी पूंछपर नियत हुए, इस रीतिसे मकर व्यूहको रचकर सूर्य्य के उदय होनेपर सब पांडव फिर युद्ध करने को शस्त्रधारी होकर उपस्थितहुए और रथ हाथी घोड़ और बड़ी ऊंची ध्वजावाले क्षत्रियों से युक्त सबप्रकार के स्वच्छ अस्त्रों समेत कौरवों के सन्मुख गये, हे धृतराष्ट्र आपके पिता भीष्मजीने उस अलंकृत सेनाको देखकर अपनी सेनाकोभी क्रौंच नाम बड़े व्यूहमें बड़ी रचनासे बनाया, उसके मुखपर बड़े धनुर्द्धर द्रोणाचार्य और नेत्रोंपर अश्वत्थामा और कृपाचार्य हुए और शिरकी ओर (कृतवर्मा) (बाल्हीक) और (काम्बोज) वाले हुए, और ग्रीवामें सब राजाओं समेत आपका पुत्र दुर्योधन और शूरसेन नियत हुए, और बड़ी सेना समेत राजा प्राग्ज्योतिष भद्र और केकयों समेत सौवीर छातीपर नियतहुआ, और प्रस्थल देश का राजा सुशर्मा अपनी सेना समेत बायें भाग में शस्त्रों को धारण करके नियत हुआ, २० और तुषारयवन और शक चोल्कों समेत व्यूहके दाहिने भाग में बड़ी सावधानी से वर्त्तमानहुए, और श्रुतायु शतायु (सोमदत्त) मारिष यह सब व्यूहकी जंघापर रक्षाक रनेवाले हुए, इसके पीछे हे राजा सूर्य्यके उदय होनेपर पांडवकौरवोंके समूह युद्धके निमित्त चले फिर युद्धहोना प्रारंभहुआ, हाथी रथियोंके सन्मुख गये और रथी हाथियोंके सन्मुख हुए अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ोंके और रथी अश्वारूढ़ोंके और अश्वारूढ़ घाड़ोंकेसन्मुख पहुंचे और हाथी हाथीके सवारोंसे और रथी रथियों के सन्मुख उपस्थितहुए हे राजा रथी और अश्वारूढ़ पतियोंसे युद्धकरने लगे और युद्धमें महा क्रोधितहोकर परस्पर सन्मुख दौड़े, और भीमसेन अर्जुन और नकुल वा सहदेव यह सब अन्य महारथियोंसे रक्षित

होकर ऐसीबड़ीशोभाको प्राप्तहुए जैसी कि नक्षत्रोंसे रात्रिकीशोभा होतीहै, इसीप्रकार आपकी सेना भी (भीष्म) (कृपाचार्य्य) (द्रोणाचार्य्य) (शल्य) और दुर्य्योधन से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि ग्रहोंसे भराहुआ आकाश शोभित होताहै, फिर कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन द्रोणाचार्य्यको देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारीसे उनकी सेनाके सन्मुखगया, फिर युद्धमेंक्रोधित पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने मर्मस्थलोंको ताककर नौलोहेके बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया ३० तदनन्तर उस युद्धमें द्रोणाचार्य्य से बहुतघायल हुए भीमसेनने उनके सारथीको मारा, फिर उस प्रतापी द्रोणाचार्य्यजीने आप घोड़ोंको पकड़कर पांडवोंकी सेनाका ऐसा विध्वंस किया जैसे कि अग्नि रुईको भस्मकरताहै, हे नरोत्तम द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से घायलहोकर वह संजय केकयों समेत भागगये, इसीप्रकार भीमसेन और अर्जुन से भयभीत आपकी भी घायल सेना जहांतहां ऐसेभागी जैसे कि मतवालीश्रेष्ठस्त्री जहांतहां भागतीहै,हे भरतवंशी इसके पीछे उस उत्तम बीरोंके नाशमें दोनोंव्यूह भिन्न २ होगये और आपके पुत्रोंको और पांडवोंको महाघोर दुःख हुआ, हेराजा हमने आपके पुत्रों का शत्रुओंके साथ वह आश्चर्य्य देखा जो एक स्थानपर वर्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्तहुए वह कौरव पांडव उस महायुद्ध में परस्पर अस्त्रोंको प्रहार करके युद्ध करतेहुए ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचसप्ततितमोऽध्यायः॥ ७५॥

छहत्तरवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह सेनाबहुगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अनुसार अलंकृत और युद्ध में सफल है, और हमारी सेना भी सदैवप्रसन्न सफलरूप और उदारहै जिसका कि पराक्रम प्रारंभसेही देखाजाताहै, न बहुतवृद्धा न बालक न दुर्बल न पुष्टहै किन्तु हस्तलाघवता आदि उपायोंमें कुशल अत्यन्त दृढ़अंगवाली

औरनीरोगहै,कवचऔरशस्त्रोंकीधारण करनेवाली अनेकशस्त्रसमूहों से पूर्णभुजा खड्गगदा इत्यादिसे युक्तलड़ाईमें बड़ीतीव्रहै, (प्रास) (दुधाराखड्ग)(तोमर)(परिघ) (लोहेके भिन्दपाल)(बरछी) (मूसल) (कंपनधनुष)(कनप)इत्यादिशस्त्रोंमेंऔर उनकेचलाने आदिकीअनेक अद्भुत तामें वा मदोन्मत्त ताके युद्धोंमें संग्राममूमि पर नियत होकर सब प्रकार से योग्य, विद्याओं में पूर्ण अथवा मल्ल युद्धमें प्रबल शस्त्रबिद्या के ज्ञाता सबबिद्याओं में पंडित, सवार होने वा डेरेमें रहने वा चलने वा दोनोंके अन्तरसे चलने वा शस्त्र चलाने वा चढ़ाई करने वा समय देखकर हटजानेमें बड़े कुशल बुद्धि, हाथी घोड़े और रथोंकीसवारियोंमें बहुधा परीक्षा कियेहुए और परीक्षा लेकर न्यायके अनुसार मासिक आदि वेतनके योग्यहैं, औरसभा उपकारनातेदारी और मित्रोंके और कुटुम्बियोंके बल और सामानों के कारण अधिकारनहींपानेवाले हैं,, वृद्धियुक्त वा उत्तम मनुष्य जिन में बांधव प्रसन्न और प्रतिष्ठा वानहैं और बहुत उपकारी यशस्वी साहसी वेगवान उत्तम कर्मी लोकपालोंके समान संसारमें प्रसिद्ध मनुष्यों से योषित अपनी इच्छा से सेनासमेत पीछेचलने वाले बहुतसे क्षत्रियों को लेकर हमारे समीप आनेवाले चारोंओर से समुद्र के समान उमगते हाथी रथघोड़ों समेत अनेक शूरवीरों से शोभित बड़े भयानक क्षेपखड्ग गदाबरक्षी वाणपरशु इत्यादिअनेक शस्त्रोंसे अलंकृत रत्नजटित रेशमी बस्त्रोंसे मंडित अनेक ध्वजाओं समेत चारोंओरको दौड़ने वालीसवारियोंमें बैठसमुद्रके समानगर्जनेवालेद्रोणाचार्य्यऔरभीष्मसेरक्षितकृतबर्मा,कृपाचार्य्य,दुश्शासन जयद्रथ भगदत्त विकर्ण अश्वत्थामा शकुनि बाह्लीकइनबड़े २वीरों से और महात्माओंसे रक्षित जो सेनायुद्धमें मारीगई इसमें होनहारही प्रबलहै,हेसंजय पृथ्वीपर ऐसेयुद्धको बड़े २ ऋषिमुनि और महात्मा मनुष्योंनेभी कभी नहीं देखा २० शास्त्रधन लक्ष्मीसे युक्त ऐसासेनाका समूहभी जिस युद्धमें मारा जाताहै वहां प्रारब्ध के सिवाय क्या समझना चाहिये,हे संजय यहसब विपरीत दृष्टपड़ता

है कि जहां ऐसीभयानक सेनाने युद्धमें पांडवोंको नहीं जीता, हे संजय वहां पांडवोंके निमित्त देवतातो आनकर हमारी सेनासेनहीं लड़तेहैं कि इतनी प्रबलसेनाघायलहो जातीहै,इसस्थानपर सदैव हितकारी फल दायक बचन विदुरजीने कहाहै परन्तुमेरा अभागा बेटा दुर्योधन उस बचनको नहीं मानताहै मैं मानताहूं क्योंकि उस सर्वज्ञ महात्मा विदुरका पहला कहाहुआ अबसत्य हुआ हे तात उसने पूर्व्वही ऐसा देखाथा, हेसंजय इस प्रकारको होनहार को उसने पूर्व्वही देखलिया कि ईश्वरको अब ऐसाकरनाहै इसके विपरीत कभी नहीं होसक्ता २६ !

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

संजयबोले हेराजा तुमने अपने दोषसे ऐसेदुःखोंको पाया हे भरतर्षभ इसको दुर्य्योधन नहीं देखताहै,हेराजा जिनको तुमने देखाहै वहसब धर्मको अधर्मसे मिलाने वालेहैं हेराजा पूर्वसमय में आपही के दोषसे यहजुवा जारी हुआ,आपकेही दोषसे पांडवों से युद्ध प्रारंभ हुआ,और अब तुमहीं अपने पापको करके उसके फलको भोगो,आपनेही कर्मकियाहै इसकाफल इसलोकमें वा परलोकमें आपनेहीको भोगना पड़ेगा हेराजा जैसा तुमने कियाथा वैसाही फलभी ठीकपाया,इससे हे धृतराष्ट्र तुमचित्तको समाधान करके इसमहा दुःखको पाकर इसयुद्ध होनेका कारण मुझसेसुनो, तदनन्तर वीर भीमसेनने बड़े तीक्ष्ण बाणों से आपकी बड़ीसेनाको चलायमान करके दुर्य्योधनके इनसब भाइयोंको सन्मुख पाया, (दुश्शासन) (दुर्विषह) (दुःसह) दुर्मद जयसेन विकर्ण चित्रसेन सुदर्शन चारुमित्र सुवर्माण दुष्कर्ण कर्ण इनके सिवाय और बहुतसे रथमें चढ़े समीपी महारथी इनसबको महाक्रोधरूप महाबली भीमसेन देखकर युद्धमें भीष्मजीसे रक्षित बड़ीउग्र सेना में घुसगया,,इससेनामें घुसेहुए भीमसेनको देखकर वहसब बोले कि

हेराजाओ हमसब इसको जीताही पकड़ें, जैसे कि संसारके नाश करनेमें सूर्य्यबड़े २ क्रूर ग्रहोंसे घिराहुआ होता है इसी प्रकार यह भीमसेन इननिश्चय करनेवाले भाइयों से घिराहुआ बर्त्तमान हुआ, सेनाके मध्यमें भी जाकर इसको ऐसे भय नहीं हुआ जैसे कि महाइन्द्र देवता असुरोंके युद्धमें दानवोंको पाकर भयभीत नहीं होताहै, तदनन्तर घोर बाणोंके समूहोंको फेंकतेहुए एकलाख शस्त्र धारी रथियोंने इस अकेलेको घेरलिया, धृतराष्ट्र केपुत्रोंकोध्यान न करके उसमहाबलीने उससेनाके बड़े जंगीहाथी घोड़े रथ और सवारोंको मारा, हेराजा पकड़नेके इच्छावान उनलोगोंको जानकर उस पराक्रमी भीमसेनने सबके मारनेको मनोरथ किया, और रथ को त्यागकर गदाहाथमें लेके उन आपके पुत्रोंसमेत सेनाके महा समूहको मारा, फिर सेनामें भीमसेनके प्रवेश करनेपर पर्षतका पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यको छोड़कर बड़ीशीघ्रतासे वहां गया जहां शकुनी बर्त्तमानथा, उसनरोत्तमने युद्धमें आपके पुत्रकी बड़ीसेनाको हटाकर भीमसेनके रथको पाया, हेमहाराज वहां भीमसेनके विशोकनाम सारथीको देखकर बड़ाखिन्नचित्त अचेतहो अश्रुपात युक्त गद्गद कण्ठसे महादुःखित श्वासालेकरधृष्टद्युम्नबोला और पूछा कि मेरेप्राणोंसेभी प्रियतम भीमसेन कहांहै,, यह सुनकर हाथजोड़ कर विशोक धृष्टद्युम्नसे बोला कि महाबली भीमसेन मुझको यहां नियत करके, अकेलाही धृतराष्ट्र के पुत्रों की असंख्य समुद्ररूपी सेनामें घुसा है और मुझसे ऐसेप्रीति पूर्व्वक बचन कहकर गये हैं कि हे सूत तुम घोड़ों को एक मुहूर्त्त तक थांभ के मेरी बाट देख मैं इनके मारनेको जाताहूं जोकि मेरे मारनेकी इच्छा कररहे हैं, सो गदाहाथ में लिये उसमहाबली को दौड़ता देखकर सबसेनामें बड़ीप्रसन्नताहुई, हेराजा उसबड़े भयकारी तुमुल युद्धके बर्त्तमान होनेपर आपकामित्र बड़ीसेनाके व्यूहको हटाकर प्रवेश करगया है यह बिशोकके बचन सुनकर वह महाबली धृष्टद्युम्नजी उससूतसे यहबचन बोला, कि पाण्डवों के साथ प्रीति करके और भीमसेनको

युद्धमें छोड़कर अबजीवनसे मुझको कुछ प्रयोजन नहींहै मैंभीविना भीमसेनके कभी न जाऊंगा क्योंकि भीमसेनके विना जाऊंगा तो मुझको सबक्षत्री क्याकहैंगे युद्धमें भीमसेन के एकओर जाने और मेरे नियतहोनेपर इन्द्रसमेत सब देवता उनके अकल्याणको करते हैं जो सहायकोंको त्यागकर जीतेघरको जातेहैं,हे शत्रुहन्ता वह महाबली भीमसेन मेरामित्र नातेदार और परमभक्तहै और मैंभी उसमें भक्ति रखने वालाहूं,सो हेसूत मैंभी वहीं जाऊंगा जहांभीम सेनगया है मुझकोभी तू देखकिमैं शत्रुओंको कैसामारताहूंजैसे कि इन्द्रदानवोंको मारताहै,हेराजा ऐसाकहकर वहमहाबलीभी मसेन के मध्यमें गदासे मारेहुए हाथियोंसे उत्पन्न भीमसेनके मार्गों में होकर चला वहां उसने शत्रुओंको भस्म करते और जैसे कि वायु वृक्षोंको काटताहै उसी प्रकार युद्धमें राजाओंको छिन्नभिन्नकरते हुए भीमसेन को देखा,युद्धमें भीमसेनसे घायल और पीड़ित रथी सवार पदाती और हाथियोंने महाभयभीत और पीड़ामान होकर घोरशब्द किया,हेराजा आपकी सेनामें बड़ा हाहाकार उत्पन्नहुआ और यहशब्द पुकारने लगे कि सावधानहो अपूर्व्व युद्ध करनेवाले भीमसेन के हाथसे सेना नाशहुई जातीहै, इसके पीछे बड़े निर्भय अस्त्रों के ज्ञाता उनवीरोंने भीमसेनको चारों ओरसे घेरकर सब ओरसे अस्त्रोंकी बर्षाकरी,फिर बलवान धृष्टद्युम्न बड़ी मिलीहुई घोरसेनासे सन्मुख हुए महाबली लोकमें प्रसिद्ध भीमसेनको देख कर,उसके पासगया और बाणोंसे छिदेहुएक्रोधरूप विषकोउगलते प्रलयके काल पुरुषकी समान गदालिये हुए भीमसेनको विश्वास कराया,फिर उसमहात्माने बहत शीघ्रही उसको बाणोंसे छुटाया और अपने रथपर सवार किया और शत्रुओं के मध्यमेंही अच्छे प्रकार मिलकर विश्वास कराया,इसके पीछे आपका बेटाभी उस युद्धमें अकस्मात भाइयों से मिलकर बोला कि यह द्रुपद का बेटा निर्बुद्धी भीमसेन के साथमें सन्मुख आया है इसके मारने को हम सबएकसाथही चलें क्यों कि हमारा शत्रु होके हमारी सेनामें न

मिलेइसके पीछे वहक्रोधी पुत्र अपने भाई दुर्य्योधनके इस बचन को सुनकर और आज्ञा मान कर शस्त्रों को लेकर उसके मारने को ऐसे दौड़े जैसे कि प्रलयकालमें पूंछलतारे अर्थात् वहवीर रत्न जटित धनुषधारी कवच पहरे रथके पहियोंकी ध्वनिसे सबको कंपायमान करतेहुए, बाणोंसे द्रुपदके पुत्रपर ऐसीबर्षा करने लगे जैसे किबादल पानीकी झड़ियोंसे पर्व्वतपर बर्षाकरतेहैं उससमय वह अपूर्व्व युद्धकरने वाला धृष्टद्युम्न अपनेतीक्ष्ण बाणोंसे उनको पीड़ामान करनेपर भी आपपीड़ा युक्तनहीं हुआ, और बड़े साहसी आपके शूरवीर पुत्रोंको देखकर युद्धमें नियतहुआ फिर उसद्रुपद पुत्रके महारथी मारनेकी इच्छा करने वालेने प्रमोहननाम बड़े भयानक अस्त्रको प्रयोग किया और आपके पुत्रों पर ऐसा अत्यन्त क्रोधितहुआ जैसे कि इन्द्रयुद्धमें दैत्योंपर क्रोधित होताहै फिर वह सबआपके वीर युद्धमें परशुओं और अस्त्रोंसे घायलहोकर बड़े अचेतहोगये फिर आपके पुत्रोंको कालफांस में फंसेहुए अचेतरूपदेख कर सबकौरव घोड़े और रथोंके साथ घोरशब्द करतेहुए चारों ओरसे भागे उससमय शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजी ने धृष्टद्युम्नकोपाकर तीनउग्रबाणोंसे पीड़ितकिया, हे राजा तबवह राजा द्रुपद द्रोणाचार्य्यसे अत्यन्त घायल पूर्वकी शत्रुताको स्मरण करके हटगया, ४७प्रतापवान द्रोणाचार्य्यने द्रुपदको जीतकर शंखको बजाया उनके शंखके शब्दको सुनकर सब भयभीत हुए, इसके पीछे महाशस्त्रवेत्ता द्रोणाचार्य्यने युद्धमें आपके पुत्रोंको प्रमोहन अस्त्रसे अचेत होना सुना और बड़ी शीघ्रतासे संग्राम भूमिसे उनके पास आये वहां प्रबल युद्धमें संग्राम करते हुए धृष्टद्युम्न और भीष्मजी को देखा और आपके पुत्रोंको भी मोह से महा अचेत देखा,, फिर उन्होंने प्रज्ञा अस्त्रको लेकर मोहन अस्त्रको काटा, इसके पीछेआप के महारथी पुत्रोंके प्राण फिर लौटआये, फिर युद्धमें लड़ने केलिये भीमसेन और धृष्टद्युम्नके सन्मुख गये इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेनाके मनुष्यों से बोले कि तुम अपनी सामर्थसे संग्राम

भूमिमें भीमसेन और धृष्टद्युम्नके मार्गमें जाओ तुम अभिमन्युको मुख्यकरके बारह बीर वहांजाकर निजवृतान्त को देखो मेराचित्त सन्देहसे निवृत्त नहींहोताहैवह सब शूरबीरसिंहकेसमान युद्ध करने वाले युधिष्ठिरकी आज्ञा पातेही मध्यान्हके समय युद्धकी ओरगये, पांचोकेकय और पांचोद्रौपदीके पुत्र धृष्टकेतु यहसब अपनी भारीसेनासमेत अभिमन्युको आगेकरके प्रस्थित हुए, और वहांयुद्धमें व्यूहको शूची मुखबनाके धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी रथवाली सेनाको छिन्न भिन्न करदिया, भीमसेनके भयसे भरेहुए औरधृष्टद्युम्नकेहाथसेअतिअचेत आपकीसेनाउन अभिमन्यु आदि बड़ेधनुष धारीयोंकेसन्मुखहोनेकोसमर्थनहींहुई, औरमूर्छामें भरेहुए स्त्रीकेसमानमार्गमेंनियत हुए, वह महा धनुर्धर सुवर्णित ध्वजा युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन के देखने को सन्मुख दौड़े उन अभिमन्यु आदि वीरोंको देख कर वह दोनों भीमसेन और धृष्टद्युम्न बड़े आनन्दित हुए, फिर शूर वीर धृष्टद्युम्न ने अकस्मात आये हुए अपने गुरुको देख कर आपके पुत्रों को नहीं मारा, तदनन्तर भीमसेनकोकेकयके रथपर सवार करके अत्यन्त कोपमें भरा हुआ धृष्टद्युम्न बाण औरअस्त्रों के पराङ्मुख द्रोणाचार्य्य के सन्मुख दौड़ा, शत्रुहन्ता प्रतापी द्रोणाचार्य्य ने बहुत क्रोधित होकर बड़ी शीघ्रता से उस सन्मुख आने वाले धनुष को भल्लसे काटा, और स्वामीके हित के निमित्त अन्य सैकड़ों बाणों से धृष्टद्युम्न को घायल किया, फिर शत्रु के मारने वाले धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर शिलापर घिसे सुनहरी पुंखवाले, बाणोंसे द्रोणाचार्य्य को घायल किया, फिर शत्रुहन्ता द्रोणने उसके दूसरे धनुष को भी काटाऔर बड़े तीव्र चारशायकों से चारों घोड़ों को यमके लोक को भेजा फिर इसके सारथी को भी एकही भल्लसे मारडाला, फिर वह महाबाहु महारथी शीघ्रहीमृतक घोड़ों के रथसे उतरकर अभिमन्यु केमहा रथपर सवार हुआ, इस के अनन्तर भीमसेन और धृष्टद्युम्न के देखतेहुए रथ हाथी घोड़े आदि समेत सेना भयसे कम्पित हुई, फिर द्रोणाचार्य्यजी से व्या-

कुल सेना को देखकर वह सब महारथी उसके रोकने को समर्थ नहीं हुए, द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्ण बाणों से घायल वह सेना समुद्र के समान महा व्याकुल होकर जहां तहां भागने लगी, फिरआप की सेना उस सेना को भागता देखकर बड़ी प्रसन्न हुई,हे भरतर्षभ इस रीतिसे शत्रुकी सेना को मारता हुआ क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य को देखकर शूरवीर लोग चारोंओरसे धन्य २ करके पुकारने लगे ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

इसके पीछे राजा दुर्य्योधनने व्यूहसे पृथक्होकर अपनेबाणों की वर्षासे दुर्जय भीमसेनको रोका, फिर आपके महारथी पुत्रभी इकट्ठे होगये और सबमिलकर भीमसेनसे लड़नेलगेफिर महाबाहु भीमसेनभी युद्धमें अपनेरथकोपाकर उसपरचढ़के वहांकोगया जहां आपका पुत्रथा,वहां उस बेगवानने जीव निकालनेवाले दृढ़ और जड़ाऊ धनुषको चढ़ाकरबाणोंसे आपके पुत्रकोपीड़ित किया, इसके पीछे हेराजा दुर्य्योधनने भी अत्यन्त तीक्ष्णनाराचों से महा बली भीमसेन को मर्म स्थलोंमें घायल किया,फिर उस महाक्रोध रूप धनुषधारीभीमसेनने आपकेपुत्रसे घायलहोकर बड़े लालनेत्र करके उत्तम प्रबल धनुष को खैंचकर अपने तीन बाणों से दुर्योधन की भुजाऔर छातीकोघायल किया,हेराजा इस रीतिसे घायलहोकर भी वह दुर्य्योधन पर्व्वत के समान चलायमान नहींहुआ फिरदुर्य्योधनके शूरबीर युद्धमेंदेहके त्यागनेवाले भाइयोंने दोनों वीरोंको परस्पर मारनेमेंप्रवृत्त देखकर भयकारी भीमसेनके पकड़नेका पूर्व्व कर्मस्मरण करके बड़े निश्चय पूर्व्वक उसके पकड़ने का उपाय किया, हे महाराज महाबली भीमसेनभी उन युद्धमें प्रवृत्त बीरोंके सन्मुख ऐसाचला जैसेकि हाथीहाथियोंके सन्मुख जाताहै हे महाराजबड़े यशस्वी तेजवान् अत्यन्त क्रोधित भीमसेन ने आपके पुत्र

चित्रसेनको नाराचसे घायल किया,और इसीप्रकारसे अनेकउत्तम बाणोंसे आपके अन्य पुत्रोंकोभी घायल किया,तदनन्तर धर्मराजके भेजेहुए भीमसेन के पीछे चलने वाले वह अभिमन्यु आदिबारह महारथी युद्धमें अपनी सेनाओं को सब ओरसे नियत करके उन महारथी राज पुत्रों के सन्मुख गये, उनशूर रथों पर सवार सूर्य्य अग्नि के समान प्रकाशित शोभायमान लक्ष्मी से युक्त भूमि में तेजस्वी सुवर्ण भूषणोंसे अलंकृत सब बड़े धनुषधारियों को देख कर आपके महाबली पुत्रोंने युद्धमें भीमसेन को त्यागदिया परन्तु भीमसेन उन जीवते जानेवालों को देखकर सह न सका १६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उन्नासीवां अध्याय॥

संजय बोलेकि इसके पीछे भीमसेन समेत अभिमन्युने पीछा करके आपके सब बेटोंको घायल किया, फिर धनुषधारी महारथी दुर्य्योधनादिक आपकी सेनाको धृष्टद्युम्न के हाथसे महा व्याकुल देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा वहां पहुंचे जहां कि वह रथीबर्त्त मानथे तदनन्तर मध्याह्नके पीछे आपके और दूसरों के शूर बीरोंका महायुद्ध प्रारंभहुआ हेभरतबंशी अभिमन्युने विकर्ण के घोड़ों को मारकर, पच्चीस क्षुरक बाणोंसे उसको आच्छादित करदिया फिर महारथी विकर्ण मृतक घोड़ोंकेरथको त्यागकर चित्रसेनके प्रकाशमान रथपर सबार हुआ फिर उन एकरथपर चढ़ेहुए दोनों भाइयों को अभिमन्युने बाणों से ढक दिया तब दुर्जय और विकर्णने पांचलोहेके बाणोंसे अभिमन्युको पीड़ित किया परन्तुमेरु पर्व्वत के समान दृढ़ अभिमन्यु उस चोटसे कंपितनहीं हुआ फिरहे राजेन्द्र दुश्शासनने पांचों केकयोंकोलड़ाया यह एकआश्चर्य्यसा हुआ और युद्धमें कोपित द्रौपदीके पुत्रोंने दुर्य्योधनको रोंका फिर प्रत्येकने तीन २ बाणोंसेआपके बेटेको पीड़ामानकिया औरउसने भी दुर्जय द्रौपदीके सब पुत्रोंको बड़े तीक्ष्णशायकोंसे जुदा२घायल

किया और फिरवह दुर्य्योधन उनपांचोंसे घायल रुधिर चूता हुआ ऐसाशोभायुक्तहुआ जैसेकि पहाड़ी धातु मिश्रितझिरनों से पर्व्वत शोभायमान होताहै और हेराजा महाबली भीष्मजीने भी पांडवों की सेनाको ऐसाघायलकिया जैसेकि ग्वाल अपनेपशुओंके समूहों को ताड़ितकरताहै १२ इसकेपीछे सेनाके दक्षिणओर अर्जुनके शत्रु हन्तागांडीव धनुषकाशब्द सुनाईदिया, वहांभी कौरव और पांडवों कीसेनाओंमेंहजारों रुंडखड़े होहोकर युद्धकरनेवाले हुए, उसयुद्धमें भी नरोत्तमोंने रुधिररूप जल और बाणरूप भवंर हाथीरूप टापू घोड़े रूप लहरें ऐसे सेनारूपी सागर को रथरूप अपनी नौकाओं के द्वारा तरणकिया उस संग्राममें हाथ कवचटूटे देहके अहंकारसे रहित हजारों नरोत्तम पृथ्वीपर गिरेहुए दृष्टिगोचरहुए, हे भरतर्षभ मृतकहुए रुधिरोंमेंभरे मतवाले हाथियोंसे पृथ्वी ऐसी दिखाई दी मानों पर्व्वतोंसे भरीहै, वहां हमने आपके पुत्रोंका और पांडवोंका अपूर्व्व वृत्तान्त देखा अर्थात् कोई ऐसा वहां पुरुष नहीं था जो युद्धकरना न चाहताहो, इसरीतिसे बड़े यशके चाहनेवाले युद्धमें बिजयाभिलाषीआपकेबीरपुत्रपाण्डवोंकेसाथयुद्धकरनेवालेहुए १६॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिएकोनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८६ ॥

अस्सीवां अध्याय॥

संजय बोले फिर सूर्य्यके अरुण होनेपर युद्धमें वेगवान् राजा दुर्य्योधन भीमसेनके मारनेको इच्छावान् सन्मुख दौड़ा, तब अत्यन्त कोपयुक्त भीमसेन उस आतेहुए नर बीर बड़ो शत्रुतारखनेवाले को अपने सन्मुख देखकर यह बचन बोला, कि बहुत बर्षोंसेचाहा हुआ वह समय आयाहै अब मैं अवश्य तुझको मारूंगाजो तू युद्ध से न भागेगा, अब तेरे मारनेसे मैं कुन्तीके और द्रौपदीके बनबासके दुःखोंको दूरकरूंगा, जिस हेतुसे कि पूर्व्व समयमें तैंने ईर्षा करके पाण्डवोंका अपमान कियाथा हे गांधारी के पुत्र तू उसपाप केफलको देख, और जिसकारणसे कि तैंने कर्ण और शकुनी के

मतमें नियतहोकर पांडवोंको साधारण समझकर अपनी इच्छासे वह कर्म कियाहै, और जिस दशामें कि भूलसे तैंने श्रीकृष्णजीका अपमान कियाहै इन सब हेतुओंसे मैं बांधवोंसमेत तुझकोमारूंगा और उस पापको शान्तकरूंगा जो पूर्व्व समय में किया है, उस क्रोधरूप भीमसेनने इसप्रकार से कहकर अपने घोर धनुष को खैंचकर बारंबार ऊंचा घुमाकर घोर महाबज्र के समान प्रकाशमान अग्नि शिखाकेसमान ज्वलित बज्रकेसमान सीधे चलनेवाले छब्बीस बाणोंको बड़े वेगसे शीघ्रतापूर्व्वक दुर्य्योधनपरफेंका और दोबाणोंसे उसके धनुषको काटा और दोहीबाणोंसे उसके सूतको घायलकरके चार तीक्ष्ण बाणोंसे उसके घोड़ोंको मारडाला, फिर उस शत्रुहंताने अच्छेप्रकार खैंचेहुए दोबाणोंसे उस राजाके छत्र को भी उत्तम रथसे काटगिराया, फिर तीन बाणोंसे उसकी उत्तम ध्वजाको पृथ्वीपर काटकर दुर्य्योधनके देखतेहुए बड़े शब्दसेगर्जा वह नानाप्रकार के रथोंसे शोभित उत्तम ध्वजा अकस्मात् रथ से ऐसी गिरी जैसे कि बादलसे बिजली गिरतीहै, सब राजाओंनेकुरुपति दुर्य्योधनकी प्रकाशमान अग्निके समान ज्वलित मणियों से जटित ध्वजाको कटाहुआ देखा, तब अहंकार युक्त महारथी भीम सेनने उसको दश बाणोंसे ऐसे घायलकिया जैसे कि दण्डसे महा गजेन्द्र को घायल करतेहैं, इसके अनन्तर सिंध देशियों के राजा रथियोंमें श्रेष्ठ महाबलीने हाथमें परशोंको धारणकरके दुर्य्योधन की पीठको पकड़ा, और रथियोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्यने बड़े तेजस्वी क्रोधयुक्त कौरवो दुर्य्योधनको रथपर सवारकिया, फिर वह राजा दुर्योधन भीमसेनके हाथसे अत्यन्त घायल और पीड़ामान् रथमें बैठगया, तब मारनेकी इच्छाकरनेवाले जयद्रथने भीमसेनको चारोंओरसे घेरकर हजारों रथियोंसे उसकी सब दिशाओं को रोंका इसके पीछे हे राजा धृष्टकेतु वा पराक्रमी अभिमन्यु वा पांचोंकेकय वा पांचों द्रौपदीके पुत्र आपके पुत्रोंसे युद्ध करने लगे, (चित्रसेन) (सुचित्र) (चित्राङ्ग) (चित्रदर्शन) (सुचारु) (चारुचित्र) इसी प्रकार

(नन्द) उपनन्दक, इन बड़े २ धनुषधारी सुकुमार यशस्वीआठोंने अभिमन्युके रथको चारोंओरसे घेरा, फिर बड़े साहसी अभिमन्युने शीघ्रही गुप्तग्रन्थीवाले पांच २ बाणोंसे प्रत्येक को घायल किया, वह बाण जड़ाऊ धनुषसे निकलेहूए बज्ररूप मृत्युकेसमानथे वह सब भी क्रोधयुक्त होकर रथियोंमें श्रेष्ठ अभिमन्यु पर, अपने तीक्ष्ण बाणोंको ऐसे बर्षाकरनेलगे जैसे कि मेरु पर्व्वतपर बादल बर्षाकर तेहैं हे महाराज उस अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद, पीड़ामान् अभिमन्युने आपके पुत्रोंको ऐसा अत्यन्त कंपितकिया जैसे कि देवता और असुरोंके युद्धमें बज्रधारी इन्द्र बड़े २ असुरोंको कंपायमान करताहै हे राजा इसीप्रकार उस अभिमन्युने बिषभरेहूए घोरचौदहभल्लों को विकर्णके निमित्त भेजा, फिर उस पराक्रमीने युद्धमें नृत्यकरने वालेके समान उन बाणोंसे विकर्णकी ध्वजा घोड़े रथ सूत और धनुषको भी रथसे गिराया, और पीतरंगके प्रकाशित नौक और सीधे चलनेवाले अन्य बाणोंको बिकर्णपर फेंका ३० वह कंक और मोरके परोंसे संयुक्त बाण बिकर्णको पाकर उसके शरीरको घायल कर सर्पोंकेसमान श्वासलेतेहुए पृथ्वीपर गिरे, फिर वह सुनहरी पुंख नौकवाले बाण बिकर्णके रुधिरसे भरे रुधिर को उगलते हुए पृथ्वीपर पड़े दृष्टआये, बिकर्ण को घायल देखकर उसके दूसरे सगेभाई युद्धमें अभिमन्यु आदि रथियोंके सन्मुख दौड़े, और इसी प्रकार उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्मद रथियोंने उनके सन्मुख जाकर उन सूर्य्यकेसमान तेजस्वी रथियों को परस्पर में घायल किया, फिर दुर्मुखने शीघ्रगामी सातबाणोंसेश्रुतकर्माको घायलकरके एकबाण से उसकी ध्वजाको काटा और सात बाणों से उसके सारथी को घायलकिया, फिर सुनहरी जालों से ढकेहुए वायुके समान शीघ्र गामी घोड़ोंको छः बाणोंसे मारकर उसके सारथीको भी गिराया उस मृतक घोड़ोंके रथपर नियत उस महाबली श्रुतकर्माने बड़े क्रोधयुक्त होकर महाज्वलित उल्काकेसमान बरछीको उसके ऊपर फेंका, वह बरछी उस यशस्वी दुर्मुखके बड़े कवचको काटकरअप-

ने तेजसे उसको फाड़के बड़ी प्रकाशमानहोके पृथ्वीमें प्रविष्टहोगई वहां महाबली सुतसोमने उसको बिरथ देखकर सब सेनाकेदेखते हुए अपने रथपर सवारकिया, इसके पीछे हे राजा महाबलीश्रुत कीर्त्ति आपके यशस्वी जयसेन पुत्रके मारनेकी इच्छासे उसके सन्मुख गया, तब आपके पुत्र जयसेनने उस धनुष खैंचनेवाले श्रुतकीर्त्तिके धनुषको अपने क्षुरप्रबाणों से बड़े हास्य पूर्व्वक काटा फिर तेजस्वी सतानीक उस धनुषटूटेहुए अपने निज भाई को देख कर, सिंहके समान बारंबार गर्जताहुआ सन्मुख आया और युद्धमें अपने दृढ़ धनुषको खैंचकर बड़ी शीघ्रतासे दश शिलीमुखबाणोंसे जयसेनको घायलकिया और मदोन्मत्त हाथीके समान महा शब्द करके गर्जा, तदनन्तर इसने बड़े २ तीक्ष्ण ढाल खड्गों के काटने वाले अन्यबाणोंसे जयसेनको अत्यन्त घायलकिया, इसीप्रकारयुद्ध के बर्त्तमान होनेपर भाईके समीप नियतक्रोधमें व्याकुलदुष्कर्णने सतानीकके बाणसमेत धनुषको काटा, फिर महाबली सतानीकने बड़े बोझके साधनेवाले अन्य दृढ़ धनुषको लेकर बड़े घोरबाणों को हाथमें लिया ४७ और भाईके सन्मुखहोकर दुष्कर्ण से तिष्ठ तिष्ठ शब्द कहके उसके ऊपर बड़े तीक्ष्ण और ज्वलित सर्प के समान बाणोंको छोड़कर एक बाणसे उसके धनुषको और दोबाणों से उसके सारथीको काट मारकर बड़ी शीघ्रतासे सात बाणों से उसको घायलकिया, फिर प्रसन्न मूर्त्ति सात्विकीने बड़ी शीघ्रता से बारह तीक्ष्णबाणोंसे उसके उन सब घोड़ोंको जो कि बल के अनुसार शीघ्रगामी और कल्माषी रंगथे मारडाला, फिर हे राजा उस क्रोधरूपने शत्रुहन्ता और महा भयकारी भल्लनाम बाणसे दुष्कर्णको व्यथितकिया और वह उसके आघातसे बज्रसे टूटेहुए वृक्षकी समान पृथ्वीपर गिरा हे राजा पांचमहारथियोंने दुष्कर्णको मराहुआ देखकर, मारनेकी इच्छाकरके सतानीकको चारोंओरसेघेर लिया, फिरबाणोंसेढकेहुएयशस्वीसतानीककोदेखकर, अत्यन्तक्रोधमें भरे पांचों निजभाई केकय उनके सन्मुख दौड़े, हेराजा उन पांचों

महा रथियों कोआता देखकर आपके पुत्र ऐसे सन्मुख गये जैसेकि हाथी महागजेन्द्रोंके सन्मुख जाय (दुर्मुख) (दुर्जय) (दुर्द्धर्षण) (शत्रुंजय) शत्रुसह यहसब यशस्वी महाक्रोध युक्तहोकर केकय लोगोंके सन्मुखगये, मनके अनुसार शीघ्रगामी घोड़ोंसे संयुक्त नाना प्रकारके बिचित्ररथों और पताकाओं समेत रथोंमें बैठे उत्तम धनुष धारी चित्रबिचित्र कवच पहिरे वह बीरशत्रुओं की सेना में आकर ऐसे बर्तमान हुये जैसेकि सिंह एक बनसे दूसरे बनमें बर्तमान होते हैं, हेराजा परस्पर मारते और एकएकका अपराधकरनेवाले लोगों का वह युद्ध हाथी घोड़ों समेत महातुमुल और घोर जारी हुआ, व हसबयमलोककीबृद्धि करनेवालेसूर्य्यास्त केसमय बड़े घोरयुद्धकरने वाले हुए, हजारोंरथो और घुड़चढ़े व्याकुल हुए इसकेपीछे शांतनुके बेटे क्रोधयुक्त भीष्मजीने गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे, उन महात्माओं कीउससेनाको नष्ट करदिया और पांचालोंकी सेनाकोभी यमलोक मेंपहुंचाया, इसरीतिसे वह बड़े धनुषधारीपांडओंकी सेनाकोघायल करके सबसेना ओंकाबिश्राम करके अपने डेरेकोगये, धर्मराजभी धृष्टद्युम्न और भीमसेन को देखकर दोनों के मस्तक को सूंघकर अपने डेरोंको गये ६४ ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिअशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

संजय बोलेहे महाराज इसके पीछे परस्पर अपराध करने वाले शूररुधिर सेभरेदेह अपने२डेरोंकोगये, फिरन्यायके अनुसार बिश्राम करपरस्पर पूजनको करके युद्धकरनेकी इच्छासे कवच और अस्त्र शस्त्रोंसे, अलंकृत दृष्टपड़े, हेराजा इसके अनन्तर चिन्तायुक्त आपके पुत्रने गिरतेहुये रुधिरसे भरेहुये शरीर वाले भीष्मपितामहसे पूंछा किपांडवोंके वहशूर महारथी घोर भयानक और शस्त्रोंसे अलंकृत बहुत ध्वजायुक्तसेनाओंको मारऔर पीड़ित करके कीर्तिवानहोयुद्ध मेंप्रवृत्त हुये औरउसबज्रके समान मकरव्यूहमें प्रवेश करके मृत्यु

दण्डके समान प्रकाशित औरघोर भीमसेनके बाणोंसे मैंमहा व्याकुल औरघायल होगयाहूं,हेराजा उसक्रोधरूप भीमकोदेखके भय सेमूर्च्छावान् होकर अबतक मैं शान्तीको नहीं पाताहूं हेसत्यसंकल्प मैं आपही कीकृपासे पाण्डवोंको मारकर बिजय पानाचाहताहूं इतनी बातके सुनतेहीदुर्य्योधन कोब्याकुल औरक्रोध युक्त देखकर भीष्मजीहंसकर बोले,हेराजपुत्र मैं सर्वांगपूर्बकबड़े उपायोंसे सेना कोमझाकर बिजय और सुखको देनाचाहताहूं औरमैं अपने शरीरको तेरेप्रयोजनके लियेकिसी प्रकारसे बचाता हूं,बहुतसे महारथी शूर औररुद्ररूप अस्त्रज्ञ परिश्रमसे अखिन्न क्रोधरूपबिषके उगलनेवाले जोपांडवोंके युद्धमेंसहायकहैं वह बलमें बड़े हैं उन्हींकेसाथ तुमने शत्रुताकरीहै वहयुद्धमें एकाएकीविजय करनेके योग्य नहींहैं हेबीर राजादुर्य्योधनमैंइस जीवनको त्यागकरके सब प्रकारसे उनकेसाथ लड़ोंगा हेमहानुभाव अबयुद्धमें तेरे प्रयोजनकेलिये मैं अपने प्राणों कीरक्षा करना योग्यनहीं समझताहूं अर्थात् अपने प्राणोंकी रक्षा नहीं करसक्ताहूं मैंतेरे निमित्तदेवता और दैत्योंसमेतसबलोकोंकोभी जीत सक्ताहूं तो इस स्थानपर तेरे शत्रुओंका जीतना कितनी बड़ी बातहै हे दुर्योधन मैं पांडवोंसे लड़कर तेरे सब अभीष्टोंको करूंगा इस बातको सुनकर दुर्योधन भीष्म जी से बहुत प्रसन्नहुआ,इस के अनन्तर उस प्रसन्न चित्तने सब सेनाओं समेत राजाओंसे कहा कि चलोचलो हेधृतराष्ट्र उसकी आज्ञा पातेही रथ घोड़े हाथी और पैदलों की सब सेना शीघ्रही चलदी, हे तात फिर आपकी बड़ी सेना अति प्रसन्न होकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र धारण करके हाथी घोड़े पैदलों समेत संग्राम भूमि में नियत होकर शोभायमान हुई, और हाथियों के समूह अच्छे प्रकार उचित स्थानों में नियत होकर चारों ओरसे प्रकाशित हुए, और आपके अस्त्र शस्त्र वेत्ताओं के समूह नरदेव शूरवीरोंसे संयुक्त होकर अपने २ कर्मको करने लगे, फिर उन रथ घोड़े हाथी और पैदलों से उठीहुई धूल भी बड़ी उठी कि सूर्य भी ढकगये, हे राजा युद्धमें चारों ओर से

घूमते नाना रंगधारी रथ हाथी घोड़े और पदाती और इनके चढ़ने वाले अपनी २ सवारियोंसमेत ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों से संयुक्त और बायुसे पृथक् हुई बिजलियां आकाशमें प्रकाशित होतीहैं, फिर धनुष चढ़ाने वाले राजाओं के शब्द ऐसे बड़े कठोर और घोर हुए जैसे कि युगकी आदिमें देवासुरों के हाथसे मथे हुए समुद्र के शब्द हुएथे, तब वह आपके पुत्रोंकी सेना भयकारी शब्दों से और शत्रुओं के मारने वाले अनेक रूपों से प्रलय काल के बादलों के समान होगई १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्मदुर्य्योधनसम्बादेएकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

बयासीवां अध्याय

संजय बोले कि हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मजी ध्यानमें नियत होकर फिर आपके पुत्रकी प्रसन्नताके बचन बोले कि मैं (द्रोणाचर्य) (शल्य) (कृतबर्मा) (अश्वत्थामा) (सोमदत्त) और सिन्धु देशियों समेत बिन्द अनुबिन्द अवन्ति देश के राजा (बाह्लीकदेशी) और बलवान् राजा त्रिगर्त और महादुर्जय राजा (मगध)(वृहद्बल) कौशल्य) (चित्रसेन) (विविंशति) और बड़ी ध्वजावाले शोभायमान हजारों रथ, और घुड़चढ़े समेत देशीघोड़े और मदसे लाल नेत्र वाले मदोन्मत्त गजेन्द्र पदाती और नाना प्रकारके शस्त्रधारी शूरलोगभी नानाप्रकारके देशों में उत्पन्नहोने वाले सब लोग तेरेही निमित्त युद्ध करने को तैयार हैं, ६ इनके सिवाय और बहुत से लोग तेरे लिये जीवन के त्यागने वाले हैं बहुतसे इनमें देवताओं को भी युद्धमें विजय करने वालेहैं यहमेरा मतहै परन्तु हेराजा मुझको तेरे प्रियकारी वचन अवश्य कहनेके योग्य हैं उनको भी सुनो कि इन्द्र समेत देवताओंसेभी पांडवों का विजय करना असंभव है, क्योंकि वह बासुदेवजी को सहायक रखने वाले होकर महाइन्द्रके समान पराक्रमी हैं हेराजेन्द्रमैं सब प्रकारसे तेरे बचनको करूंगा, मैं पांडवोंको युद्धमें विजयकरूंगा

अथवा पांडव मुझको विजय करेंगे इस प्रकारकी बातें करके उसके निमित्त वह औषधियां जो घावको आनन्द करनेवाली और सामर्थ्य को बढ़ाने वाली थीं दीं उनके लगातेही वहघावों से रहित हुआ तदनन्तर बड़े प्रातःकाल उठकर शुद्धहो व्यूहकी रचनामें बड़े कुशल भीष्मजीने अपनीसेनाके व्यूहको आपतैयार किया फिर उसनरोत्तम ने अपनी सेनाके मंडलको शस्त्रोंसे अलंकृत किया,, और उत्तमशूर बीर हाथी और पैदलोंसे भराहुआहजारों रथोंसे चारोंओर कोंघिरा हुआ दुधारेखड्ग तोमर धारण करने वाले सवारोंसे व्याप्त एक२ हाथी के साथ सात २ रथी और प्रत्येक रथके साथ सात २ घोड़े और घोड़े २ के पीछे दश २ धनुष धारी और हरएक धनुष धारी के पीछे सात २ पदाती हुए हे महाराज आपकी सेना इस रीतिसे महारथियों से शोभायमान हुई युद्धमें भीष्मजी से रक्षित बड़े संग्रामकेलिये नियतकिये हुए दशहजार घोड़े और दशहजारहाथियों के समूहोंके साथ आपके चित्रसेन आदि शूरबीरोंने पितामहको चारोंओरसे रक्षित किया वह भीष्मजी उनशूरोंसे रक्षित और शूर उनसे रक्षित हुए और महाबली राजालोगभी शस्त्रधारण कियेयुद्ध को तैयारहुएपड़े, फिरशस्त्रोंसे अलंकृत रथपर बैठाहुआ दुर्य्योधन भी शोभासे युक्त ऐसाप्रकाशमान हुआ जैसाकि स्वर्गमेंइन्द्रप्रकाश मानहोता है इसके पीछे हे भरतर्षभ आपके पुत्रों के महाशब्द हुए और रथ और रथांगों केभी घोर शब्दहुए, फिरवह धृतराष्ट्र के पुत्रोंका व्यूहभीष्मजीका रचा हुआ अतिदुर्जय मंडल रूपबना हुआ पश्चिम की ओरको चला, हे राजा शत्रुओंसे दुर्जय होनेवाला वह व्यूह सबओरसे शोभित हुआ फिर उस मंडल वालेभयानक व्यूहको देखकर राजा युधिष्ठिरने अपने हाथों से अपनी सेना के बज्रव्यूहको तैयार किया इस रीतिसे सेनाओंके तैयार होनेपर सबरथी पदाती आदि अपने २ स्थानों पर नियत होकर सिंह नाद करने लगे इसके पीछे व्यूहके तोड़ने को युद्धाभिलाषी पराक्रमी शूरबीर लोग एक दूसरे के सन्मुख गये, द्रोणाचार्य्य जी

राजा मत्स्यके सन्मुख गये अश्वत्थामा शिखण्डी के सन्मुखहुआ,, राजादुर्य्योधन आपं धृष्टद्युम्नके सन्मुख दौड़ा और नकुल सहदेव राजा मद्रके सन्मुख गये, (विन्द) (अनुविन्द) अवन्ति के राजा लोगोंके और युधामन्युके सन्मुख दौड़े और सब राजालोगइकट्ठे होकर अर्जुन से लड़नेको उपस्थितहुए, फिर सावधान और समर्थ सात्विकी ने युद्धमें भीमसेन को रोका, हे राजा अर्जुन का समर्थ पुत्र अभिमन्यु चित्र सेन विकर्ण और दुर्मर्षण नाम आपके तीनों पुत्रोंसे युद्ध करनेलगा फिर हिड़म्बाका पुत्र राक्षसोत्तम घटोत्कच बड़े वेगसे राजा प्राग्ज्योतिषके सन्मुख ऐसेदौड़ा जैसेकि मदोन्मत्त हाथी मदोन्मत्त हाथी परदौड़ता है हे राजा युद्धमें महा क्रोधरूप अलंवुष राक्षस सेनासमेत युद्धमें महा दुर्मद सात्विकी के सन्मुख दौड़ा और युद्धमें कुशल भूरिश्रवा धृष्टकेतु से लड़नेलगा,,,, फिर धर्म पुत्र युधिष्ठिर ने राजा श्रुतायुष से और चेकितानने कृपाचार्य्य से युद्धकरना प्रारंभ किया, शेषबचेहुए राजालोग महारथी भीमसेनके सन्मुख हुए, इसके पीछे हजारों राजाओं ने अर्जुनको घेरलिया उन सबराजाओंके हाथोंमें बरछी तोमर नाराचगदाऔर परिघइत्यादि अनेक अस्त्रशस्त्र शोभायमान थे उससमय अर्जुन अत्यन्त कोपित होकर श्रीकृष्णजी से बोला कि, हे माधवजी व्यूहविद्या में कुशल महात्मा भीष्मजीसे व्यूहितकरीहुई दुर्य्योधन की सेना को संग्राम भूमिमें देखो और युद्धाभिलाषी शूरोंको कवच और शस्त्र धारणकिये हुए देखो और भाइयों समेत राजात्रिगर्त्तकोभी देखो हे जनार्दनजी अब आपके देखते हुए इन सबको मैं मारूंगा हे यादवेन्द्र जो यह संग्राम भूमिमें मेरेमारने के लिये इच्छा कर रहेहैं, इतना कहकर अर्जुन ने अपने धनुषकी प्रत्यंचा को ठीककरके राजाओंके समूहों पर बाणों की बर्षाको बरसाया, फिर उन बड़े २ धनुष धारियोंने भी उस अर्जुनको बाणोंकी बर्षासे ऐसा भरदिया जैसे कि बर्षाऋतु में बादल तड़ागों को जलसे भरदेते हैं, हे राजा उसबड़े संग्राम में दोनों कृष्ण अर्जुन को अत्यन्त बाणोंसे ढकाहुआ देखकर आपकी

सेनामें बड़ा हाहाकार हुआ (देवताऋषि)(गंधर्व) और महा उरगों ने इसप्रकार बाणोंसे ढकेहुए दोनों कृष्ण अर्जुन को देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया, इसके पीछे हेराजा महाकोपयुक्त अर्जुन ने इन्द्रास्त्र को प्रकट किया उस समय हमने अर्जुन के अपूर्व्व पराक्रम को देखा, कि अपने बाणोंके समूहों से शत्रुओंके छोड़ हुए अस्त्रसमूहों को रोकदिया कोईमनुष्यभी शस्त्रोंसे घायल हुए बिना नहीं रहाऔर हे धृतराष्ट्र हजारों राजा घोड़े हाथी और शूरबीर लोगों को अर्जुनने दो २ तीन २ बाणों से पीड़ामान किया इसके पीछे वह अर्जुन से घायलहुए शान्तनु के पुत्र भीष्मजी के पासआये तब भीष्मजी इन अथाह जलमें डूबे हुओंके रक्षकहुए, हेमहाराज वहांपर उन आने वालोंसे आपकी सेना तिर्रबिर्र होकर ऐसेमहाव्याकुल हुई जैसेकि वायुसे महासमुद्र उथल पुथल होताहै ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसरीति से युद्ध जारीहोने वा राजा सुशर्मा के लौटने वा महात्मा अर्जुन के हाथसे बीरोंके अस्तव्यस्त होनेपर, और बड़ीशीघ्रता से समुद्र के समान आपकी सेनाके व्याकुलहोने वा शीघ्रही अर्जुन के ऊपर भीष्मजीके चढ़ाई करनेपर राजादुर्य्योधन युद्धमें अर्जुन के पराक्रमको देखकर बड़ी शीघ्रता से सबराजाओंसे मिलकर और इन्हीं लोगोंके सन्मुख सब सेनाके मध्यमें महा बली सुशर्मा को अत्यन्त प्रसन्न करता हुआ यह बचन बोला, कि यह कौरवों में श्रेष्ठ शान्तनु के पुत्र भीष्मजी अपने जीवनकोत्याग करके सर्वभावसे अर्जुन से युद्ध करना चाहते हैं, तुमसब सावधान होकर सेना समेत उनशत्रुओंपर चढ़ाई करनेवाले भरतबंशी पितामहकी रक्षाकरो, फिर राजाओं की वह सब सेना उसके बचन को अंगीकार करके पितामहके पीछेचली, इसकेपीछे शान्तनुके पुत्रभीष्मजी अकस्मात अर्जुन की ओरकोचले और बड़े श्वेत घोड़ोंकेकपिध्वज

वाले घनके समान शब्दायमान महाउत्तम रथपर चढ़े सब सेनाके सन्मुख जातेहुए महाबली अर्जुनको पाया और अर्जुनको देखतेही भयसे कठोर शब्दहुए,, दिवसही में सूर्य्यके वर्त्तमान होनेपरद्वितीय सूर्य्य के समान बागडोर हाथमें रखनेवाले श्री कृष्णजीको देखकर उनके सन्मुख देखनेको भी समर्थ नहींहुए, इसी प्रकार पाण्डव भी श्वेतघोड़े औरश्वेत धनुषधारी श्वेतग्रह के उदय समान शान्तनुके पुत्रभीष्मजीके देखने को समर्थ नहीं हुए, इसरीति से वह महात्मा भीष्म त्रिगर्त्त देशी भाइयों वा आपके पुत्रों अथवा अन्य बड़े २महा रथियों से रक्षितहुए,फिर द्रोणाचार्य्यने युद्धमें बाणों से राजामत्स्य को पीड़ित किया और एक २बाण से उसकी ध्वजाको और धनुष को काटा,फिर वाहिनीपति बिराटने उसटूटे धनुष को डालकरभार सहने वाले दूसरे दृढ़ धनुष को बड़ी तीव्रता से हाथमें लिया और सर्पाकृति पन्नग नाम सर्पोंके समान ज्वलित बाणोंको लेकर तीन बाणसे द्रोणाचार्य्य को और चारबाणों से उनके घोड़ों को घायलकिया,एकसे ध्वजाकोकाटा और पांचसे उनके सारथीको व्यथित करके एक बाणसे धनुष को तोड़ा उस स्थान पर ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य जीनेबड़े क्रोधयुक्त होकर गुप्त ग्रन्थी के आठबाणों से उसके घोड़ोंको और बाणसे उसके सारथीको मारा,वह रथियोंमें श्रेष्ठ सारथी को मरा देख मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर शीघ्रही पुत्रके रथपर सवार हुआ,फिर उसके पीछे रथपर नियत उन दोनों पिता पुत्रोंने बलसे मारे बाणों के द्रोणाचार्य्य को रोका, हे राजा इसके पीछे क्रोधरूपद्रोणाचार्यने सर्पके समान बाणको बड़ीशीघ्रता से शंख के ऊपर छोड़ा, वह बाण उसके हृदय में घुस उसके रुधिरको पानकर लालरंग लोहूमें भराहुआ पृथ्वीमेंगिरा,वह शंख द्रोणाचार्यके बाण से घायल पिताकेहो सन्मुख धनुषबाणको त्याग कर गिरपड़ा फिर राजा विराट अपने पुत्रको मृतक देखकर और द्रोणाचार्यको मृत्युके समान समझकर बड़े भयसे उनको छोड़कर भागा, इसके पीछे द्रोणाचार्य ने शीघ्रही पांडवों की हजारों बड़ी २

सेनाओं को हटाया, हे महाराज शिखण्डी ने भी बड़ी शीघ्रता से अश्वत्थामा को पाकर तीव्रगामी तीन नाराचोंसे दोनों भृकुटी के मध्यभाग मस्तक को घायल किया, फिर वह नरोत्तम ललाट पर निपत हुए तीनों बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे ऊंचे सुवर्ण के तीन शिखरोंसे मेरु पर्व्वत शोभित होताहै, फिर क्रोध भरे अश्वत्थामा ने आधेही निमेषमें शिखण्डीके सारथी रथघोड़े शस्त्र और ध्वजा को, अनेक बाणोंसे काटकर गिराया, फिर रथियों में श्रेष्ठ मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढाल को लेकर बड़ा क्रोधमें भरा हुआ सब सेनामें बाजपक्षीके समान घूमा हे राजा युद्धमें खड्ग लियेहुए उस शिखंडीका अश्वत्थामाने कोई अवकाश नहीं देखा यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ, इसके पीछे महा क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने हज़ारों बाणों की बर्षा करी परन्तु उस महा पराक्रमी ने अपने खड्गसेही उन सब बाणों को काटडाला, फिर अश्वत्थामा ने इसकी सूर्य चन्द्रमावाली स्वच्छ ढालको काट कर खड्गके भी खण्ड २ कर डाले और बहुतसे बाणों से उसको घायलकिया फिर शिखण्डीने उसके बाणोंसे कटे हुए खड्गकोदेख कर शीघ्रही सर्पके समान महाज्वलित खड्गको छोड़ा तब हस्तलाघवता दिखातेहुए अश्वत्थामाने उस बज्र और बिजलीकेसमान शब्दायमान अकस्मात् गिरते हुए खड्ग को युद्धमेंही काटडाला और बहुतसे लोहे के बाणों से शिखण्डी को घायल किया, फिर तीव्र बाणोंसे अत्यन्त घायल शिखण्डी शीघ्रही महात्मा सात्विकी के रथपर सवार हुआ, फिर महाबली सात्विकी ने भी बड़ाक्रोध करके अपने घोर बाणों से उस पराक्रमी अलंबुष राक्षसको घायल किया फिर राक्षसाधिप अलंबुष ने अपने अर्द्ध चन्द्र नाम बाण से उसके धनुषको काटकरबहुतसे शायकोंसे उसको घायल किया४० और राक्षसी मायाको करके बाणोंकी बर्षा से ढकदिया वहां हमने सात्विकी के अपूर्व्व पराक्रम को देखा, कि वह युद्धमें बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल होकर भी व्याकुल नहीं हुआ, हे भरतबंशी सा-

त्विकी ने उस ऐन्द्र अस्त्रका प्रयोग किया,जोकि महात्मा माधवजी और अर्जुनसे मिलाथा उसअस्त्रसे सब राक्षसीमायाको अत्यन्तनाश करके, अपने घोर बाणोंसे अलंबुष को इस रीतिसे ढ़कदिया जैसे कि वर्षाऋतुमें बलाहक नाम बादल अपने जलोंसे पर्बत को ढकते हैं,उस यशस्वी सात्विकीसे पीड़ित होकर वह राक्षस महाभयभीत होकर सात्वि की को त्यागकर भाग गया, सात्विकी आपके शूर वीरों के देखते हुए उस राक्षसाधिप को जो कि इन्द्रसे भी विजय होना कठिनथा जीतकर सिंहके समान गर्जा, फिर सत्य पराक्रमी सात्विकी ने अपने पुत्रों को भी बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह भी भयसे पीड़ित होकर भागे हे महाराज उसी समय द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्नने आपकेपुत्र दुर्योधनको, वहां गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे आच्छादित करदिया, हे राजेन्द्र धृष्टद्युम्नके बाणों से ढकाहुआभी दुर्योधन पीड़ामान नहीं हुआ,और बड़ी शीघ्रता से अपने बाणोंसे धृष्टद्युम्न को घायल किया, यह एक आश्चर्य सा हुआ हे राजा फिर उस क्रोधयुक्त सेनापतिने उसके धनुषको काट कर, शीघ्रही चारों घोड़ोंको मारा और सात तीक्ष्ण बाणों से उस को तत्क्षण घायलकिया, वह महाबाहु मृतक घोड़ोंके रथ से कूद कर पैदलहो खड्गको उठाकर धृष्टद्युम्न के ऊपर दौड़ा, राज्यके लोभी महाबली शकुनी ने समीप आकर राजा दुर्योधनको अपने रथपर सवार किया, इसके पीछे शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न ने राजा को विजय करके उसकी सेनाको ऐसा मारा जैसे कि बज्रधारी इन्द्र असुरों के समूहों को मारता है, कृतवर्माने महारथी भीमको युद्ध में मोहित करके बाणोंसे ऐसे ढकदिया जैसे कि बड़ा बादल सूर्य को ढक देताहै, इसके पीछे शत्रु सन्तापी भीमसेन ने महाक्रोधित होकर अच्छेप्रकार हंसकर कृतबर्माके ऊपर शायकों की बर्षाकरी हे महाराज अति रथी कृतबर्मा उन भीमसेन के बाणों से घायल होकर कम्पायमान नहीं हुआ और फिर भीमसेनको तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, इसके पीछे महाबली भीमसेन ने उसके चारों

घोड़ों को मारकर सारथी और ध्वजायुक्त उसके उत्तम रथको भी गिराया, शत्रुहन्ताने फिर उस कृतवर्मा को भी अनेक बाणों से ढकदिया फिर वह महा घायल सब अंगों से शिथिल दृष्ट पड़ा, हे महाराज फिर वह शीघ्रही आपके पुत्रको देखकर मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर आपके वृषकनाम सालेके रथपरगया, फिर महा-क्रोधरूप होकर भीमसेन भी आपकी सेना के ऊपर दौड़ा और मृत्युके समान हाथमें दण्ड लेकर बड़े क्रोधसे उसको मारा ६२॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

हे संजय मैंने तेरे कहने से अपने पुत्रों के साथ पांडवों के बिचित्र २ युद्ध सुने, हे सूत पुत्रतू मेरी सेनाको कुछ प्रसन्न नहीं कहता है सदैव पांडवों को प्रसन्न चित्त और अजय कहा करताहै, और मेरे पुत्रोंको युद्धमें पराजित वा अनुत्साह युक्त और घायल कहताहै निश्चयकरके यही होनहार है, संजय बोले आप के पुरुषोत्तम बेटे युद्धमें बड़े पराक्रम से बीरता और पुरुषार्थ को दिखलाते बल साहस्य के अनुसार ऐसे युद्ध करतेहैं जैसे कि देव नदी गंगाजी का जल महास्वादिष्ट महा समुद्रके मिलजानेकेप्रभा-वसे लवणताको प्राप्तहोताहै,हे राजा इसीप्रकारसे आपके पुत्रभी महात्मा और बीर पांडवों के पुरुषार्थको पाकर निष्फल होतेहैं, हे कौरवोत्तम सामर्थके अनुसार उपाय कर्ता और कठिन साध्यकर्मों-के करनेवाले आप अपने शूरबीरोंको दोषके भागी करनेको योग्य नहीं हो, हे राजा बेटेसमेत आपके अपराधसे पृथ्वीभर का नाश अत्यन्ततासे यमराजके देशका वृद्धि कारकहै, आप अपने दोषज-न्य फल के शोचनके योग्य नहीं हो,यहां सब राजालोग अपनेजी-बनकी रक्षा नहीं करतेहैं, राजालोग युद्धके द्वारा उत्तम औरपवित्र लोकोंको चाहतेहैं और सदैव स्वर्गकोही उत्तम स्थान समझनेवा-ली सेनामें घुसकर युद्धको करतेहैं, हे राजा प्रातःकाल के समय

मनुष्योंका नाशहोना प्रारंभहुआ, उस देवता और असुरों के युद्ध समान महा संग्रामको आप एकचित्त होकर मुझसे सुनो,बड़े धनुषधारी महात्मा और तेजस्वी लालनेत्रवाले अवन्तिदेश के राजा लोग इरावानको सन्मुख देखकर युद्धाभिलाषी हुए, और उनका रोमहर्षण महातुमुल युद्ध जारीहुआ फिर अत्यन्त क्रोधित होकर इरावानने देवतारूप दोनों भाइयोंको, बड़ी शीघ्रता से गुप्तग्रंथी वाले बाणोंसे घायलकिया और उन दोनोंने भी अपूर्व्व युद्धकरके उसको घायलकिया, इसके पीछे शत्रुके नाशके करनेमें उपायकरने वाले प्रहारपर प्रहार करनेकी इच्छासे युद्धकरनेवालोंकीमुख्यता देखनेमें नहीं आई,फिर इरावानने अपने चारशायकोंसे राजाअनुबिन्दके चारोंघोड़ोंको मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भल्लोंसे धनुष और ध्वजाको काटा यह भी आश्चर्यसा हुआ, फिर अनुबिन्द बड़े दृढ़ और उत्तम धनुष को लेकर अपने रथको छोड़कर बिन्द के रथपर नियत हुआ, वे दोनों महारथी एक रथपर बैठेहुए बिन्द अनुबिन्द ने बड़ी शीघ्रतासे इरावानके ऊपर बाणों की बर्षाकरी,इन दोनों के सुवर्णसे शोभित छोड़े हुए तीक्ष्ण बाणोंने सूर्य्य के रथको पाकर आकाशको आच्छादित करदिया, फिर महारथी इरावानने भी क्रोधयुक्त होकर उन दोनोंभाई महारथियोंपर बाणों की बर्षाकरके उनके सारथी को गिराया, हे राजा उस सारथीके गिरने और मरनेपर वह रथ जिसके घोड़े भ्रान्तिमें संयुक्तथे इधर उधरकोभागा, हे महाराज उस नागराजके पौत्रने उन दोनोंको विजयकरके पुरुषार्थको प्रसिद्ध करतेहुए आपकी सेनाको भी बड़ी शीघ्रतासेभस्मीभूतकरदिया,दुर्य्योधनकी युद्धमें प्रवृत्त उस बड़ी सेनाने बहुतप्रकार के ऐसे २ वेगोंको किया जैसे कि विषपानकरके मनुष्य कियाकरते हैं, फिर राक्षसों का राजा महाबली घटोत्कच सूर्य्यवर्ण ध्वजाधारी रथमें चढ़कर भगदत्तके सन्मुख दौड़ा, इसके पीछे राजा प्राग्ज्योतिष गजेन्द्रपर ऐसे सवारहुआ जैसे कि पूर्वसमय में दानवोंकेयुद्ध में वज्रधारी इन्द्र ऐरावत हाथीपर सवार होताहै, उस स्थान में

गंधर्वोंसमेत देवता और ऋषिलोग आये घटोत्कच ने भगदत्त की मुख्यताको नहीं जाना, जैसे कि देवेन्द्रने दानवोंको भयभीतकिया उसीप्रकार युद्धमें उस राजाने पांडवोंको भगाया, हे भरतबंशीउस से भगायेहुए उन पांडवोंने अपनी सेनामें जाकर सब दिशोंमेंकोई अपना रक्षक नहीं पाया, हे भरतबंशी वहां मैंने अकेले भीमसेन के पुत्र घटोत्कचकोही रथपर नियत देखा और शेष महारथी अपने मनसे हार२कर इधर उधरको भागे, फिर पांडवोंकी सेनाके लौटने पर युद्धमें आपकी सेना कांबड़ाघोर निष्ठानक हुआ, इसके पीछे घटोत्कचने बाणोंसे भगदत्तकोऐसा ढकदिया जैसे कि बादल मेरु पर्वतकोढकदेतेहैं राजा भगदत्तनेभी घटोत्कचके फेंकेहुए बाणोंको काटकर अपनेबाणोंसे उसके मर्मस्थलों को घायलकिया, वह घटोत्कच उनगुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे ऐसेपीड़ामान नहींहुआ जैसेकि घायलपर्व्वतपीड़ित नहींहोता, फिर उसक्रोधभरेराजा प्राग्ज्योतिष ने युद्धमेंचौदह तोमर उसकेऊपर फेंके उनको घटोत्कचनेकाटा, फिर तोमरोंको काटकर उस महाबाहु राक्षसाधिपने कंकपक्षवाले सत्रह बाणोंसे भगदत्तको घायलकिया फिर हे भरतर्षभ राजा भगदत्त ने भी शायकोंसे उसके चारोंघोड़ोंको गिराया, तदनन्तर उस मृतक घोड़ोंके रथपर नियत प्रतापी घटोत्कचने बड़े वेगसे भगदत्त केहाथी पर बरछीको छोड़ा, राजाने भी उससुनहरी अकस्मात गिरती हुई तीक्ष्ण बरछीके तीन टुकड़े करदिये, घटोत्कच अपनी बरछी को टूटाहुआ देखकर भयसे ऐसा भागा जैसे कि पूर्व्वकालमें युद्धभूमि से दैत्येन्द्र निमिचि इन्द्रके भयसे भागाथा, हेराजा उसने युद्धमें उस प्रसिद्ध पराक्रमी यमराजके समान अजेयशत्रुको विजयकरके, हाथी समेत उसी युद्धके भीतर पांडवों की सेना को भी ऐसे मर्द्दन किया जैसे कि जंगली हाथी कुमुदिनियों को मर्द्दन करताहुआ चलताहै, और युद्धमें नकुल और सहदेवके साथ भिड़तेहुए मद्रदेश के राजाने बाणों के समूहों से दोनों पांडुनन्दन अपने भानजों को आच्छादित करदिया, फिर सहदेवने युद्ध में सन्मुखहुए अपने

मामाकोदेखकर बाणोंसे ऐसेढकदिया जैसेकी बादल सूर्य्यको ढक-देतेहैं,वह बाणोंसे ढकाहुआ अत्यन्तप्रसन्नरूप हुआ और माताके कारणसे उनदोनोंकी अत्यन्त प्रीतिहुई,हेराजा इसकेपीछे उसमहा रथीने बहुत हंसकर युद्धमें चार उत्तम शायकों से नकुल के चारों घोड़ोंकोमारा,फिर वह महारथीभी शीघ्रही मृतक घोड़े वाले रथसे कूदकर,अपने यशस्वी भाई के रथपर सवार हुआ,फिर एक रथपर सवार दोनों क्रोध युक्त शूर भाइयोंने दृढ़धनुषों को खैंचकर, क्षणा-मात्रमेंही राजामद्रके रथकोबाणोंसे ढकदिया वह बाणोंसे आच्छा-दित होकर भी पर्व्वत के समान कंपायमान नहीं हुआ और हंस-तेही उसने उन बाणों की वर्षाको नाश किया, तदनन्तर पराक्रमी सहदेवने बड़े क्रोध से बाणको खैंचकर राजामद्र के ऊपर फेंका, उसका फेंका हुआ वह गरुड़ समान बाण राजा मद्र को घायल करके पृथ्वीपर गिरा, फिर वह महा घायल पीड़ामान महा रथी बड़ी दृढ़ता से रथ में बैठकर अचेत होगया, उसका सूत उसको अचेत हुआ देखकर उस संग्राम भूमिसे रथके द्वारा दूर लेगया, धृतराष्ट्र के सबपुत्रोंने राजा मद्रके रथको फिराहुआ देखकर बड़ी व्याकुलता से चिन्ताकरी और जानाकी वह नहीं है, माद्रीके दोनों महारथी पुत्रोंने युद्धमें अपने मामाको जीतकर शंखोंको बजाकेबड़े सिंहनादसे गर्जनाओंकोकियाऔर हेराजा वह दोनोंबड़े प्रसन्नहो कर आपकी सेना पर ऐसे दौड़े जैसे कि इन्द्र और बिष्णु दोनों देवता दैत्यों कीसेनापर दौड़ें ५७॥

इतिश्री महाभारते भीष्मपर्व्वणि इन्द्रयुद्धे चतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय॥

संजय बोले किइसकेपीछे आकाशके मध्य गतसूर्य्यके आजानेपर राजा युधिष्ठिरने श्रुतायुषको सन्मुख देखकर घोड़ोंको चैतन्यकिया, औरगुप्तग्रन्थी वालेनौशायकों से शत्रुजित श्रुतायुष कोघायल करके उसकेसन्मुख दौड़ा, फिरउस बड़े धनुषधारी ने कोपितहोकर युद्धमें

बाणों को रोककर सातबाण युधिष्ठिर पर चलाये, वहबाण उसमहात्माके प्राणोंको खोजकरते हुए उसके कवच को काटकर रुधिर कोपीने लगे, फिरउससे अत्यन्त घायलहुए युधिष्ठिरने बराह कर्ण नाम बाणसे राजाकेहृदयकोघायलकिया, फिर रथियोंमें श्रेष्ठयुधिष्ठिरने दूसरे भल्लसे उसमहात्माकी ध्वजाको शीघ्रही काटकर रथ सेनीचे गिराया, उसके पीछे उसराजा श्रुतायुषने अपनी ध्वजाको गिराहुआ देखकर सातबिशिखोंसे धर्मराजको घायल किया, इसके पीछे राजायुधिष्ठिर ऐसा अत्यन्त क्रोधमें ज्वलितहुआ जैसेकिप्रलय कालकी अग्निदेदीप्त होतीहै, हेराजा देवतागंधर्व राक्षस युधिष्ठिर को क्रोधयुक्त देखकर पीड़ामान हुए और सब संसारको भोव्याकुलता हुई, औरसब जीवोंके चित्तमें यहबातबर्तमान हुई कि अबयह राजा अत्यन्त क्रोध युक्त होकर तीनोंलोकों को भस्म करदेगा, हे राजातबतो युधिष्ठिरके अत्यन्त क्रोधित होनेपरऋषियों औरदेवताओंनेलोकोंकी शान्तीके निमित्त बड़ी २ ईश्वरसे प्रार्थना करी, उस क्रोधमें भरे होठोंको चावतेहुए युधिष्ठिर ने प्रलयकाल के सूर्य के समान अपने भयानक रूपको धारणकिया, तदनन्तर हेराजा वहां आपकी सब सेनाजीवनके विषय में निराशा हुई, तब उस राजाने धैर्यता से उसक्रोधको अच्छीरीतिसे रोंककर श्रुतायुषके बड़े धनुष को मूठपरसे काटा, फिर राजाने भी सब सेनाके देखतेहुए इस टूटे धनुषवालेको अपने नाराच बाणसे छातीपर घायलकिया, और इसीमहात्मा ने शीघ्रता से उस महात्मा के घोड़ोंको बाणोंसे मार कर सारथीको तत्क्षणही मारडाला, तब श्रुतायुष मृतकघोड़ोंके रथ को त्यागकर राजाके पराक्रमको देखके बड़ी तीव्रतासे संग्रामभूमि से भागा, हे राजा उस युद्धमें धर्मपुत्र युधिष्ठिरसे उस धनुषधारीके बिजयहोनेपर दुर्योधनकी सब सेना मुख मोड़गई, फिर धर्मराजने यहकर्म करके अत्यन्तकाल मृत्युके समानहोकर आपकी सबसेना को मारा, फिर वृष्णिबंशी चेकितानने सब सेनाके देखते रथियों में श्रेष्ठ गौतम कृपा चार्य्यको शायकों सेढकदिया, और कृपाचार्य्यने

उन बाणोंको रोककरयुद्धमें कुशलचेकितानको बाणोंसेघायलकिया फिर उस शीघ्रताकरने वाले कृपाचार्य्यने दूसरेभल्लसे उसकेधनुष कोकाट कर उसके सारथी को भीगिराया, इसके पीछे घोड़ोंकोमारके सारथी और पीछेके रक्षक कोमारा फिरउसगदामें कुशलयादव ने शीघ्रही रथसे कूदकर गदाको हाथमें लिया, और उस बीरोंकी मारने वाली गदासे कृपाचार्य्यके घोड़ोंको और सारथी को मारा, फिर पृथ्वी पर बर्त्तमान कृपाचार्य्य ने सोलहबाणों को उसकेऊपर फेंका वह सब बाण उस यादवको घायलकरके पृथ्वीपरगिरे,फिर कृपाचार्य्यको मारनेकी इच्छासेमहाक्रोधित चेकितानने उसगदाको ऐसे फेंका जैसेकि इन्द्रनेवृत्रासुरके ऊपर फेंकाथा फिर कृपाचार्य्य ने उस लोहेकी महा स्थूल गिरती हुई गदाको हजारों बाणोंसेरोका,इसकेपीछे चेकितान खड्ग कोमियानसे निकालकर बड़ी तीव्रतासे कृपाचार्य्यके समीप गया, फिरबड़े सावधान कृपाचार्य्य भी धनुषको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे चेकितानके पासगये,वहां उनदोनों महा पराक्रमी खड्ग धारियोंने तीक्ष्ण धारवाले खड्गों सेपरस्परमें घायलकिया ३० फिर वह दोनों पुरुषोत्तम खड्गोंके आघातोंसे घायल सबजीवोंके निवासस्थान पृथ्वी परगिरपड़े,और मूर्च्छासेमहा व्याकुल देह होकर बड़े परिश्रमसे अचेत होगये इसके पीछेकरिकर्ष उस दशामें युक्त युद्धमें दुर्मदचेकितान को देखकर प्रीतिके कारण बड़ी तीव्रतासे सन्मुख दौड़ा और सेनाके देखतेहुए उसकोरथ पर सवारकिया, इसी प्रकार हे राजा आपके सालेशूरशकुनीनेउस रथियोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्यकोभीशीघ्ररथपरसवारकिया,इसीप्रकारसे महाबली क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने नव्वे तीक्ष्ण बाणोंसे भूरिश्रवा को हृदयमें घायलकिया, हे राजा भूरिश्रवा उन हृदयपर नियत बाणोंसे ऐसा अत्यन्त शोभितहुआ जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य्य अपनी किरणोंसे शोभित होताहै, फिर भूरिश्रवाने उत्तम शायकों से महारथी धृष्टकेतुके सारथी रथ घोड़ों को मार रथसे बिरथकर दिया, फिर इसको युद्धमें रथहीन देखकर बाणोंसे ढकदिया,हे श्रेष्ठ

धृतराष्ट्र फिर वह बड़ा साहसी धृष्टकेतु उस रथको छोड़कर सता नीकके रथपर सवारहुआ, इसके पीछे सुनहरी कवच धारणकरने वाले (चित्रसेन) (विकर्ण) (दुर्मर्षण) नाम तीनोंरथी अभिमन्यु के सन्मुख दौड़े, इसके पीछे अभिमन्यु से और उन रथियों से ऐसा घोरयुद्ध मचा जैसे कि देहसे और बात पित्त कफ इन तीनोंसे युद्ध होताहै, हे राजा फिर भीमसेनके बचनको स्मरणकरतेहुए उसनरोत्तमने आपके पुत्रोंको विरथ करके मारा नहीं, तदनन्तर देवताओं से भी अजेय भीष्मजी बहुत से हाथी घोड़े और रथोंपर सवार हजारों राजाओंसे आनकर संयुक्तहुए इसप्रकार आपके पुत्रों की रक्षाकेलिये बड़ी शीघ्रतासे आतेहुए भीष्मजीको देखके और महा रथी अभिमन्युको अकेला देखकर श्वेत घोड़ेके रथपर सवारअर्जुन बासुदेवजीसे यह बचन बोला कि हे हृषीकेश घोड़ोंकोतेजकरिये और जहां यह बहुतसे रथहैं वहां चलिये, यह अस्त्रों के जाननेवाले युद्धमें दुर्मद बड़े शूरबीर जैसे कि हमारी सेना को नहीं मारें हे माधवजी उसी प्रकार से आप घोड़ों को चलाइये, बड़े तेजस्वी अर्जुनके कहेहुए ऐसे बचनोंको सुनकर श्रीकृष्णजीने उन्हीं श्वेत घोड़ोंके द्वारा रथको संग्राम भूमिमें पहुंचाया, हे राजा यह आप की सेनका बड़ा निष्ठानकहुआ जो युद्धमेंक्रुद्ध अर्जुन आपकेपुत्रोंपर चढ़ाई करनेवाला हुआ, हे राजेन्द्र अर्जुन उन भीष्मजी के रक्षक राजाओंको प्राप्तहोकर राजा सुशर्मासे यह बचन बोला, कि मैं तुझ को शूरबीरोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ और पहला शत्रु जानताहूं अब इस अन्यायसे प्राप्तहुए भयानक फलको देखो, अब मैं तेरे मरेहुए पूर्व्व जोंसे तुझे मिलाऊंगा यह अर्जुन के बचन सुनकर महारथी सुशर्माने उसको अच्छा बुरा कोई उत्तर नहीं दिया, फिर बहुत राजाओं समेत आपके महारथी पुत्रों ने महा पराक्रमी अर्जुन के सन्मुख जाकर अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बाणों की बर्षा से ऐसा आच्छादितकरदिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढकलेते हैं हे भरतर्षभ इसके पीछे आपके पुत्रोंसे और अर्जुन से ऐसा महा भयानक

युद्ध प्रारंभ हुआ कि जिसमें रुधिरों की नदी बह निकली ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बाणोंसे घायल सर्पके समान श्वासलेने वाले महापीड़ित बलवान अर्जुनने युद्धमें महा हठकरके एक २ बाण से सबमहारथियोंके बाणोंकोऔरधनुषोंकोएकक्षणमेंकाटकर, उसनाश कर्त्ता महात्मा अर्जुनने बाणोंसे सब को एकही समयमें घायल किया, हे राजाइन्द्रके पुत्रअर्जुनके हाथसे घायल वह राजालोग रुधिर में भरे अत्यन्त टूटे अंग शिर कटे मृतकहोके कवच पहरेहुए संग्रामभूमिमें गिरपड़े, अर्जुनके पराक्रम से विचित्ररूप होकर सब महारथी एक साथही नाशको प्राप्तहुए, युद्धमें उन राजकुमारों को मृतक देखकर राजा त्रिगर्त्त रथकी सवारीमें चला, फिर उन रथियों के पति भी पीछेकी रक्षाकरने वाले बीर अर्जुनके सन्मुख आये और अर्जुनको चारोंओरसे घेरकर बड़े शब्दायमान धनुषों को चढ़ाके, हजारों बाणोंकी ऐसी बर्षा करनेलगे जैसे कि जल समूहसे बादल पहाड़पर बर्षाकरतेहैं, फिर बाणोंकी बर्षा से पीड़ित अर्जुनने बड़े क्रोधयुक्त होकर उन पृष्ठ रक्षकोंको भी युद्धके भीतर तेलसे साफ़ाकियेहुए बाणोंसे मारा फिर उस यशस्वी प्रसन्न चित्त अर्जुननेयुद्ध में उन साठ रथियोंको विजयकर युद्धमें राजाओंकी सेनाओंकोमार भीष्मजीके मारनेके लिये शीघ्रताकरी, फिर राजा त्रिगर्त्त अर्जुन के हाथसे मरेहुए बांधवोंके उन समूहोंको देखकर राजाओंके आगे करके अर्जुनके मारनेकेलिये बहुत शीघ्रगया, फिर शिखण्डी आदि उस अस्त्रज्ञ अर्जुनको सन्मुख गया हुआ जानकर बड़े तीव्र अस्त्रों को हाथमेंलिये बड़ी शीघ्रतासे अर्जुनकी रक्षाके निमित्त उसकेपास गये फिर उस बड़े धनुषधारी अर्जुनने भी राजा त्रिगर्त्त के साथ आतेहुए उन नरोत्तम बीरोंको देखकर, गांडीव धनुषसे छोड़े हुए तीक्ष्ण तीक्ष्ण बाणोंसे मारकर भीष्मजीकी ओर जातेहुए मार्ग में

दुर्य्योधन और जयद्रथ आदि राजाओंको देखा, फिर वह बीरउन रोकनेके इच्छावानोंके सन्मुख होकर और एक मुहूर्त युद्ध करके बड़े पराक्रमी राजा जयद्रथ आदिको छोड़कर, हाथ में भयकारी धनुषलेकर भीष्मजीके सन्मुखगया फिर भयकारी पराक्रम वाला युधिष्ठिर भी बड़े क्रोधमें भरके उनके सन्मुखगया, फिर वह अत्यन्त कीर्त्तिवान् अपने भागमें मिलेहुए उस राजा मद्रकोत्यागकरके नकुल सहदेव और भीमसेनको साथलिये भीष्मजीके सन्मुखगया युद्धमें अपूर्व्व पराक्रम दिखानेवाले गंगापुत्र शांतनुके पुत्र भीष्मजी उन उत्तम महारथियोंसे संयुक्त होकर सब पांडवोंसे भिड़े हुए भी पीड़ामान नहीं हुए, इसके पीछे भयानक बल साहसी सत्य संकल्प राजा जयद्रथने युद्धमें आकर उत्तम धनुषसे उन महारथियों के धनुषोंकोकाटा, और क्रोधयुक्त शत्रुता रखनेवाले दुर्य्योधननेअग्नि के समान प्रकाशमान बाणोंसे युधिष्ठिर भीमसेन नकुल और सहदेव समेत श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायलकिया हे समर्थ वह पांडव युद्धभूमिमें उन महाक्रोधमें भरेहुए कृपाचार्य शल और शल्यवा चित्रसेनके बाणोंसे ऐसे घायलकिये जैसे कि दैत्योंके समूहसेमिले हुए देवता घायल होतेहैं, फिर क्रोधयुक्त महात्मा युधिष्ठिर भीष्म जी के हाथसे टूटे अस्त्रवाले शिखण्डीको देखकर महा क्रोध युक्त शिखण्डीसे यह बचनबोला, कि तुमने अपने पिताके सन्मुख प्रतिज्ञाकरके यह मुझसे कहा था कि मैं निर्मल सूर्य्यरूपी बाणोंकेसमूहोंसे महाव्रत भीष्मजी को मारूंगा,तुम अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करके क्यों नहीं भीष्मजीको मारतेहो, हे नरोत्तम तुम असत्यप्रतिज्ञावाले मतहो धर्म यश और कुलकी रक्षाकरो, तुम अत्यन्त तीव्र प्रकाशित बाणोंके समूहोंसे मेरी सेनाके सब यूथों के संतप्त करनेवाले और युद्धमें भयकारी रूप भीष्मको ऐसा देखो जैसे कि काल पुरुष क्षणभरमें सबको मारे, युद्धमें राजालोग भीष्मके हाथसे टूटे धनुषवाले हुए तुमको ऐसा उचित नहीं है कि अपने सगेभाई और बांधवोंको छोड़कर जातेहो, यह बात तुम्हारे योग्यनहीं है हे द्रुपद

के पुत्र तू उस अतुल पराक्रमी भीष्म को और इस छिन्न भिन्न भागीहुई सेनाको देखकर अवश्य भयभीतहै और तेरे मुखकीशोभा बिगड़ीहुई है, बड़े भारी युद्धमें चारोंओरसे जातेहए अर्जुनके साथ भिड़े हुए नर बीर भीष्मको देखो हे बीर तूपृथ्वीपर विख्यातहोकर क्यों भीष्मजीसे शत्रुता करताहै, हे राजा उस महात्माने धर्मराजके रूखे २ अनेक मर्म स्पर्श करनेवाले बचनों को सुनकर आज्ञाको मानकर भीष्मके मारनेकी शीघ्रताकरी, उस समय बड़े बेग से भीष्मके सन्मुख आतेहुए शिखण्डीको शल्यने बड़े दुर्जयघोर अस्त्रों से रोका, हे राजा महा इन्द्रके समान प्रभाव वाला वह द्रुपदका पुत्र उस प्रलयाग्निके समान प्रकाशित अस्त्र को देखकर मोहित नहीं हुआ,और बड़े धनुषके बाणोंसे उस अस्त्रको नाशकरके उसी स्थानमें नियतहुआ फिर शिखण्डीने इसके नाश करनेवाले दूसरे बरुणास्त्रको लिया उस अस्त्रसे अस्त्रको रुकेहुए को स्वर्गबासीदेवता और राजाओंने देखा, फिर उस महात्मा बीर भीष्मजीने युद्धमें अजमीढ़ बंशी पांडव युधिष्ठिर के धनुषको जड़ाऊ ध्वजासमेतकाट कर बड़ा शब्द किया इसके पीछे भीमसेन युधिष्ठिरको भयभीतदेख कर बाणोंसमेत धनुषको छोड़कर,, गदाको हाथमेंलिये पैदलही संग्राममें जयद्रथके सन्मुखआया, जयद्रथने गदाधारी भीमसेनको बड़े बेगसे आताहुआ देखकर यमराजके दण्डकेसमान घोरनौबाणोंसे चारोंओर घायलकिया फिर क्रोधमें पूर्ण भीमसेनने बाणोंको कुछ न मानकर, राजा सिंधुके पारावत नाम सब घोड़ों को मारा, फिर अतुल प्रभाव इन्द्रकेसमान अस्त्रधारी आपका पुत्र चित्रसेन बड़ी शीघ्रतासे अपने रथकेद्वारा भीमसेनके मारनेको सन्मुखगयातब भीमसेन भी खूब गर्जकर गदासे उसको रोकता हुआ सन्मुख गया,, फिर वह कौरवलोग चहुंओरको यमदण्ड के समान गदा उठाये भीमसेनको देखकर सब आपके पुत्रोंको छोड़कर उस भयकारी गदासे बचनेकेलिये इच्छा करनेवालेहुए और उस बड़े भारी तुमुल युद्धसे दूर हटगये फिर चित्रसेन आतीहुई महाघोर गदा

को देखकर, रथको त्यागकर युद्ध भूमिमें पैदलही निर्मल खड्ग और ढालको लेकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे कूदा जैसे कि पर्व्वतके कोणसे सिंहकूदताहै, वह गदा भी बड़े जड़ाऊ रथोंको पाकर घोड़े और सारथी समेत रथको विध्वंसनकरके पृथ्वीपर ऐसे गिरी जैसे कि आकाश से गिरीहुई बड़ी ज्वलित उल्का पृथ्वी को जाती है, आपके पुत्र और सब भाई अत्यन्त प्रसन्न उस बड़े आश्चर्य्यको देखकर एक साथही गर्जे और चारों ओरसे सेनासमेत सबोंने उस की प्रशंसा करी ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवांअध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर आपकेपुत्र विकर्णने उसविरथ और प्रसन्न चित्त चित्रसेनको पाकर रथपर सवार किया, इसरीति से उस अत्यन्त कठिन तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर शांतनु के पुत्र भीष्मजी ने बड़ी शीघ्रता से युधिष्ठिर के सन्मुख दौड़े, उसके पीछे संजयनाम बड़े बलवान् क्षत्रियोंने रथहाथी और घोड़ों समेत अत्यन्त कोपितहोकर युधिष्ठिरको कालके मुखमें गया जाना फिर समर्थ धर्म्मराज युधिष्ठिर भी नकुल सहदेव दोनों अपने भाइयों समेत उस बड़े धनुषधारी नरोत्तम भीष्मजीके सन्मुख गया, इसके पीछे पांडवों ने हज़ारों बाणों से भीष्मको ऐसा ढकदिया जैसे कि सूर्य्य को बादल ढकदेताहै फिर गांगेय भीष्मजी ने उस युधिष्ठिर को अच्छी रीतिसे छोड़े हुये हज़ारों बाणोंको अपने बाणों से रोक दिया हे राजा फिर इसीरीतिसे भीष्मकेभी छोड़े हुए बाणआकाश में ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियों के समूह उड़तेहैं इन भीष्म जीने क्षणमात्रमें ही युधिष्ठिर समेत उनके सब बाण समूहों को गुप्त कर दिया, फिर युधिष्ठिर ने महा क्रोधित होकर सर्पकेसमान नाराच भीष्मजी के ऊपरफेंके, फिर वहां महारथी भीष्मजीनेअपने क्षुरप्रनाम बाणसे उसके छोड़े हुए बाणों को बीचहीमें काटा, उस

काल समान नाराचको काटकर भीष्मजीने सुवर्ण भूषित युधिष्ठिर के घोड़ों कोमारा, फिर युधिष्ठिर उस मृतक घोड़ों के रथका त्याग कर शीघ्रही महात्मा नकुल के रथपर सवार हुआ, फिर शत्रुपुरके विजयी भीष्मने क्रोधयुक्त दोनों नकुल सहदेवको भी बाणोंसे आच्छादित करदिया, फिर राजा युधिष्ठिर भीष्म के बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित उन दोनों भाइयोंको देखकर भीष्मजी के मारने की इच्छा से बड़े चिन्तायुक्त हुए, इसके पीछे युधिष्ठिर ने उन अपने आज्ञा वर्त्ती राजोओं को और मित्र समूहों को सावधान किया और कहा कि इस युद्धमें भीष्मजीको मारो, फिर सब राजाओंने युधिष्ठिरके वचन को सुनकर बड़े रथ समूहों समेत पितामह को घेर लिया, हे राजा चारों ओर से घिरे हुये आपके पिता देवव्रत भीष्म बाणों से महारथियोंको गिराते हुए धनुषक्रीड़ा करनेवाले होगये, संग्राम भूमिमें घूमतेहुए भीष्मजीको पांडवोंने ऐसादेखा जैसेकि बड़े बनके मध्यमृगों में प्रवेश करके सिंह घूमताहै, फिर युद्धमें शूरोंको घुड़कते और बाणोंसे उड़ाते हुए भीष्मको देखकर सबपांडवो सेनाऐसी भयभीतहुई जैसे कि सिंहको देखकर मृगोंके यूथकंपित होते हैं, उस समय सब क्षत्रियों ने भीष्मजी की गतिका उस युद्धभूमि में ऐसादेखा मानों वायुका सखा अग्निसूखेबनको जलारहा है, वहां भीष्मने रथियों के शिरोंको ऐसे गिराया जैसेकि बुद्धिमान् मनुष्य ताल वृक्षके पक्के फलोंको गिराता है, हेराजा पृथ्वीपर गिरतेहुए शिरोंके ऐसेबड़े कठिनशब्द हुए जैसे कि गिरतेहुए पत्थरों के शब्द होते हैं, उसमहा भयानक घोरयुद्ध के होनेपर सबसेनामें बड़ाखेद उत्पन्न हुआ, फिर उनव्यूहों के टूटने पर क्षत्रीलोग परस्पर में एकएक को बुलाकरयुद्धके निमित्त सन्मुख नियतहुए, फिरशिखण्डी भरतवंशियों के पितामह को पाकर बड़े वेगसे तिष्ठ२वचनोंको कहता हुआ सन्मुख दौड़ा, इसके पीछे भीष्मजी उस शिखण्डी को तिरस्कार करके उसकेस्त्री पनेको बिचारते हुए संजयों के सन्मुख गये फिर, प्रसन्न चित्त संजय लोगोंने महारथी भीष्मको देखकर

शंखके शब्दों समेतबड़े सिंहनादको किया,तदनन्तर भीष्मकीदिशा में नियत होकर सूर्य्यके बर्तमान होनेपर रथहाथियों समेत युद्ध जारीहुआ, हे राजाफिर बरछी तोमरोंकी बर्षासे सेनाको अत्यन्त पीड़ित करते हुए पांचालदेशी धृष्टद्युम्न और महारथी सात्विकी ने, अनेक प्रकारके बाणोंसे आपके शूरवीरोंको घायलकिया परन्तु आपके उन घायल शूरोंने,बड़ी बुद्धिमानीसे युद्धभूमिको नहींत्यागा और बड़े उत्साहसे लोगोंको मारा,हे राजावहां महात्मा धृष्टद्युम्न के हाथसे घायल हुए आपके पुत्रोंके बड़े शब्द हुए, फिर आपके पुत्रोंके घोरशब्दों को सुनकर महीरथीविन्दअनुविन्द और अवन्ति देशके राजालोग सबमिलकर धृष्टद्युम्न के सन्मुख हुए, फिरउन शीघ्रता युक्तदोनों महारथियोंने उसके घोड़ों को मारकर बाणोंकी बर्षा से धृष्टद्युम्न को ढकदिया, तब महाबली धृष्टद्युम्न शीघ्रही रथसे कूदकर बड़े महात्मा सात्विकीके रथपर चढ़गया, फिरबड़ी सेना समेतराजा युधिष्ठिर उन क्रोधयुक्तअवन्ति देशके राजाओंकी ओरदौड़ा, और इसीप्रकार आपका पुत्रभी विन्द और अनुविन्द कोरक्षितकरके नियतहुआ ३७ हेक्षत्रियोत्तम धृतराष्ट्र युद्धमें अर्जुन नेभी अत्यन्त कोपयुक्त होकर क्षत्रियोंसे ऐसायुद्ध किया जैसे कि असुरों से बज्रधारी इन्द्रने कियाथा, फिरयुद्धमें क्रुद्धआपके पुत्रोंके शुभचिन्तक द्रोणाचार्य्य ने सबपांचाल देशियों को ऐसे नष्टकिया जसेकि तूलराशिको अग्नि भस्म करदेताहै, फिरआप के दुर्य्योधनादि पुत्र भीष्मजी को रक्षित करके पांडवोंसे युद्धकरने लगे, ४० इस के पीछे सूर्य्य के अरुण होने पर राजा दुर्य्योधन आपके सब शूरवीरों से बोलाकि शीघ्रता करो, फिर इसी प्रकार इनके लड़ते और कठिन कर्म करते हुए सूर्य्य के अस्तंगत होने पर, रात्रिके प्रारंभमें भयानकरुधिरकी नदीबही जिसमें हजारोंश्रृगालबर्त्तमानथे औरभूत समूहोंसेव्याप्त संग्राम भूमि चारों ओरकोघूमतेहुएअशुभ श्रृगालोंसे महाभयानक होगई,और हजारोंराक्षसपिशाचऔर अनेक मांसाहारीजीवभी चारोंओर के दृष्टपड़े इसके पीछे अर्जुनभी

सुशर्माआदि राजाओंको उनके साथियों समेत विजयकरके सेनामें जाकर अपने डेरोंकोगये,फिर युधिष्ठिर भी सेना समेत भाइयोंको साथलिये रात्रिके समय अपने डेरोंकोगये,और भीमसेनभी दुर्य्योधनादि महारथी राजाओंकोबिजयकरके अपनेडेरे कोगये,दुर्य्योधन भीभीष्मजीको मध्यमेंकरके डेरेकोगया,और द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा शल्य कृतबर्मा यादव यहसबसेनाको मध्यमें करकेडेरों कोगये, इसी प्रकार सात्विकी धृष्टद्युम्न बीरोंको मथनकरके डेरों कोगये हे महाराजइस रीतिसे यह शत्रु सन्तापी आपके सबशूरबीर रात्रिके समान पाण्डवों सहित लौटे, हे राजाइसरीतिसेपांडवऔर कौरव परस्पर प्रशंसा करते अपने २ डेरोंमें स्थितहुए,वह सबबीर अपनी रक्षाकरके और गुल्मनाम सेनाको बुद्धिके अनुसार देखकर और भालों समेत सफाई से स्नानकर ब्राह्मणों से आशीर्बादमांग बंदीजनोंसेप्रशंसित हो गीतबाद्यों समेत आनन्दसे क्रीड़ाकरनेलगे फिरएक मुहूर्तमेंही वह सब क्रीड़ास्थान स्वर्ग के तुल्यहोगया वहां किसी महारथीनेभी युद्धकीकथाका बर्णन नहीं किया,फिरवहदोनों सेनाओं के बीर हाथी घोड़ों समेत बड़े आनन्द पूर्व्वक सोये, ५७

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवांअध्याय॥

संजयबोले कि सुख पूर्व्वक सोये हुएकौरव औरपांडवोंसमेतराजा लोग रात्रिको व्यतीत करके फिर युद्धके निमित्तगये, और संग्राम भूमिमें जाने वाले बीरों के बड़े २ शब्द समुद्र के समान हुए, तब राजा दुर्य्योधन चित्रसेन बिबिंशति भीष्मजी द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण इन सब बड़े सावधान और एक मन कौरवोंके महारथी कवचशस्त्र धारियोंने पांडवोंके सन्मुख व्यूहोंको अलंकृत किया फिर शांतनु के पुत्र आपके पितामह भीष्मजी सागरके समानभयानकसवारीरूपी लहरोंसे लहरातेहुए महाव्यूहको शोभित करके, मालव देशी दक्षिणदेशी और अवन्ति देशियोंसे संयुक्त सब सेनाओं के अग्रगामी

होकर चले, इसके पीछे प्रतापवान् द्रोणाचार्य्य जो पुलिन्दपारद क्षुद्रकऔर मालवीलोगों के साथहुए हेराजाफिरप्रतापी सावधान राजा भगदत्त मागध कलिंग और पिशाचोंसमेत द्रोणाचार्य्यकेपीछे हुआ और राजा बृहद्बल कौशल्य मेकल त्रैपुर और चिबुकों समेत प्राग्ज्योतिषकेराजा भगदत्तके पीछे चला, उसके पीछे त्रिगर्त्त देशी महाशूरपराक्रमी राजा प्रस्थल बहुतसे काम्बोजोंसे युक्तहोकरनियतहुआ इसकेपीछे महावेगवान् शूरबीर अश्वत्थामा त्रिगर्त्त देशियों केपीछे अपने सिंहनादसे पृथ्वीको शब्दायमानकरताहुआचला,इसी प्रकार से इसके पीछे राजा दुर्य्योधन सब भाइयों समेत सबसेना के साथ अश्वत्थामा के पीछे चला इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य्यजी दुर्य्योधन के पीछे चले इसरीतिसे सागर के समान वह बड़ाव्यूह चला, उस व्यूहकी पताका श्वेत छत्र जड़ाऊ बाजूबन्द तोमर धनुषों समेत महा शोभायमान हुई, फिर महारथी युधिष्ठिर आपके बेटोंके उस बड़े व्यूहको देखकर बहुत जल्दी से अपने सेनापति धृष्टद्युम्न से बोला कि हे बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्न इस समुद्र के समान रचेहुए व्यूहको देखो और तुमभी उसके समान शीघ्रही हमारे व्यूहको अलंकृत करो, इसके पीछे उस शूर धृष्टद्युम्नने बड़े भयानक शत्रुओंके व्यूहके नाश करनेवाले शृङ्गाटक नाम व्यूहको बड़ी उत्तमता से बनाया, उस व्यूहमें महारथी भीमसेन और सात्विकी तो हज़ारों हाथी घोड़े रथ पदातियों समेत शिखररूप हुए, और नरोत्तम श्वेत घोड़े वाला श्रीकृष्णको सारथी रखने वाला अर्जुन नाभिके ऊपर वर्त्तमानहुआ और मध्यमें राजा युधिष्ठिर और नकुल सहदेव दोनोंभाईहुए, इसी प्रकार व्यूहशास्त्र में कुशल बुद्धि बड़े धनुषधारी अन्य महारथियोंने सेनासमेतउस व्यूहको पूर्ण किया, और महारथी (अभिमन्यु) विराट् द्रौपदीके पुत्र और घटोत्कच राक्षस उसके पीछे हुए, हे राजा इसरीति वह व्यूहबीर पांडव अपने व्यूहको रचकर युद्धाभिलाषी विजयकेचाहने वाले संग्रामभूमिमें आकर नियतहुए, शंखध्वनि से युक्त भेरियों के

कठोर शब्द वा सिंहनाद और भुजाओं के शब्दों से शब्दायमान सब दिशायें अत्यन्त भयानक विदित हुईं, इसके पीछे उन शूरवीरों ने परस्पर सन्मुख होकर एकने एकको टकटके नेत्रों से देखा, हे राजा वह शूर वीर पूर्व्वनामों के द्वारा परस्पर में बुला बुलाकर युद्धके निमित्त वर्त्तमान हुए, इसके अनन्तर परस्पर मारने वाले आपके पुत्र और पांडवो सेना का महा घोर और भयानकरूप युद्ध जारी हुआ, हे भरतर्षभ उस युद्धमें बड़े तीक्ष्ण नाराचों की ऐसी बर्षाहुई जैसे कि महाभयानक दंशकरनेवालेसर्प चारों ओरसेगिरते होयं, और तेलसे शुद्ध तीक्ष्ण बरछियांभी चारों ओरसे ऐसी गिरीं जैसे कि बादलों से प्रकाशमान बिजली गिरतीहै और रेशमीवस्त्रों से मढ़ेहुए,सुवर्णसे जटितपर्व्वतके शिखरके समान बड़ी२गदा और निर्मल आकाशके समान खड्गऔर सूर्यचंद्रमाओंसे चिह्नित उत्तम ढालें यह सब गिरतीहुईं बड़ी शोभायमान हुईं हे राजा वह खड्ग ढालें पृथ्वीपरगिरीहुइं सब ओरसे शोभायमानहुईं फिर वह परस्पर युद्ध करने वाली दोनों सेना ऐसी शोभित हुईं जैसे कि देव दानवों की सेना होतीहैं उस समय एक एकके सन्मुख दौड़े, रथी रथियों के साथ बहुत जल्दीसे भेजे गये और उत्तम राजालोग रथकेजुओं को जुओं से मिलाकर युद्ध करने लगे, हे राजा सब ओर लड़ते हुए हाथियों की गसावट से दांतों के ऊपर सधूम अग्नि उत्पन्न होगये कोई हाथी के सवार तो जंगी फरसों से घायल हुए सब ओरसे गिरते हुए ऐसे दृष्ट पड़े जैसे कि पर्व्वत के शिखर से वृक्ष गिरते हैं और विचित्र रूपधारी शूर वीर पदाती नख और फरसों से युद्ध करने वाले पदाती परस्पर में मारतेहुए दृष्ट पड़े, फिर उन कौरव और पाण्डवों की सेनाके मनुष्यों ने परस्पर सन्मुख होकर युद्धमें नाना प्रकारके बाणोंसे एकने दूसरेको यमपुरको भेजा और रथ वाधनुष केशब्दोंसे गर्जना करतेहुए भीष्मजी पाण्डवोंकेसन्मुख गये,औरपांडवोंनेभी सावधान रथी धृष्टद्युम्नको आगे कियेहुएबड़े भयानक घोर शब्दों को करतेहुए कौरवों के सन्मुख दौड़े, इसके

पीछे आपकेशूरबीरोंका और पाण्डवों के बीरोंका युद्ध जारीहुआ और मनुष्य हाथीघोड़े और रथोंका परस्पर मेल न हुआ ४० ॥

इतिश्री महाभारतेभीष्म पर्व्वणि अष्टाशीतितमोऽध्याय: ८८

नवासीवां अध्याय ॥

संजयबोले किपाण्डवलोग युद्धमेंक्रोधित चारोंओरसे संतप्तकरने वाले भीष्मजीके देखनेको कोभीऐसे समर्थनहीं हुएजैसे कि अत्यन्त प्रचण्ड सूर्य्य कोकोईनहीं देखसक्ताहै,इसके पीछेधर्म पुत्र युधिष्ठिर कीआज्ञासे पांडवोंकी सबसेना भीष्मजी के सन्मुखदौड़ी, फिर उस प्रतापी भीष्मने (संजयलोगोंको) सोमकोंसमेत और बड़े धनुष धारीपांचाल देशियोंको शायकोंसे आच्छादितकिया, तबभीष्मसे घायलहुएसोमकोंसमेत पांचालदेशीभयको त्यागकर शीघ्र भीष्मजी केसन्मुख जापहुंचे,तबउसशांतनुकेपुत्रबलवान् भीष्मने उनरथियों कीभुजाओंको अस्त्रोंसमेतकाटकर रथोंसेबिरथ करदियाफिर खड्गों सेसवारोंकेशिरगिराये हेमहाराज हमने भीष्मजीके अस्त्रसे अत्यन्त मोहित बिनाशिरकेहाथियोंको ऐसादेखा जैसेकि बिनावृक्षके पर्व्वत होतेहैं, उसकाल वहाँरथियोंमें श्रेष्ठ महाबली भीष्मसेनके सिवाय पांडवोंका कोई भी मनुष्य नियत नहींहुआ,उसनेयुद्धमें भीष्मजीको परकररोकदिया फिरभीम और भीष्मकोसन्मुखतामें सबसेनाओंको निष्ठानकमहा घोरऔर भयानकहुआऔरपांडवोंने प्रसन्नहोकरबह सिंहनादकिया,,इसकेपीछेबड़ेघोरनाशकेवर्तमानहोनेपर अपनेनिज भाइयोंसमेत दुर्य्योधनने आकरभीष्मजीकी रक्षाकरी,फिररथियोंमें श्रेष्ठ भीमसेनने भीष्मजीके सारथीको मारकरबड़े बेगवान् घोडेवाले रथपर बैठकर धनुषकोतानबड़ीशीघ्रतासे अपनेक्षुरप्रबाणसे सनाभ केशिरकोकाटा वहशिरके कटतेही पृथ्वीपर गिरपड़ा,हेमहाराज उस महारथी आपके पुत्रके मरनेपर उसके (आदित्यकेतु) (बह्वाशी) (कुण्डधार) (महोदर) (अपराजित) (पंडितक) (विशालाक्ष) (दुर्जय)नाम शूरवीर सगेभाई जड़ाऊ कवच अस्त्रादिकोंसे अलं-

कृत होकर उस भीमसेनके सन्मुख दौड़े,उस समय महोदरनेबज्र के समान नौबाणोंसे भीमसेनको ऐसा घायलकिया जैसेइन्द्रनेनमुचिकोकियाथा, फिर आदित्यकेतु ने सत्तर बाणोंसे बङ्काशीने पांच बाणोंसे कुंडधारने नौबाणसे बिशालाक्षने सातबाणसेऔर महारथी अपराजित अनेक बाणोंसे महाबली भीमसेनको व्याकुल करदिया, फिरपंडितकने तीनबाणसे घायलकिया,इसकेपीछे इन सबके बाणोंसेपीड़ित शत्रुसंतापी महाबली भीमसेनने क्रोधयुक्तहो बायें हाथसे दृढ़धनुषको खैंचकर गुप्तग्रन्थी वालेबाणोंसे आपके पुत्र अपराजित के शिरको काटा फिर वह शिर पृथ्वी पर गिरा, इसके पीछे सब सेनाके देखतेहुए दूसरेभल्लसे महारथीकुण्डधारको कालबशकिया, हे भरतर्षभ फिर बड़े साहसी भीमसेनने धनुष में शिलीमुखबाण को चढ़ाकर पंडितक को मारा, वहबाण पंडितकको मारकर पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगया जैसेकि कालका भेजा सर्प मनुष्य को काट कर पृथ्वी में घुसजाताहै, फिर पूर्व्व समय के दुःखों को स्मरण करके प्रसन्न चित्त भीमसेनने तीनबाणसे विशालाक्ष को मारकर पृथ्वी परगिराया, हे राजाबड़े धनुषधारी महोदर को नाराच से छातीके ऊपर घायलकिया वहभी मृतकहोकर भूमिमें गिरा, फिर एक बाणसे आदित्यकेतुके छत्रको काटकर बड़े तीक्ष्ण भल्लसे उस केभी शिरको काटा, फिर अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेनने गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे बङ्काशी कोभी यमलोक को भेजा, इसके पीछेआप के और सबबेटे सभाके मध्यमें कहेहुए भीमके बचनोंको सत्य २ जानकर युद्धभूमिसे भागे, तदनन्तर भाइयों के दुःखसे पीड़ामान् राजादुर्य्योधन आपकेसब पुत्रोंको बुलाकर यह बोलाकि हेभाइयो इसभीमसेनको मारो,इसरीति से इन धनुषधारी आपके पुत्रोंने भाइयों को माराहुआ देखकर उस बचनको यादकिया जोबड़े शुभचिन्तक विदुरजीने हितकारी समझ करकहाथा वहीउन महात्मा का बचन अबसत्य २ बर्त्तमान हुआ है हे राजातुम लोभमोह में भरेहुए पुत्रकीप्रीतिसे नहीं जानतेहो पूर्व्व समय में सत्यहित कारी

बचन कहागयाथा निश्चय करके महाबाहु बलवान् भीमसेन तेरे पुत्रोंके मारने के लिये ऐसाही उत्पन्न हुआहै जैसाकि कौरवों को माररहाहै, इसके पीछेराजा दुर्योधन भीष्मके पासजाकर महाखेद युक्त होकर रोदन करने लगाकि मेरे शूरबीर भाईयुद्ध में भीमसेन के हाथसे मारेगये, इसीप्रकार और सबसेनाके मनुष्यभी मारेजाते हैं, आप सदैव हमको उदासीन पनेसे त्यागकरतेहो मैं कुमार्ग में बर्त्तमानहूं मेरीअभाग्यता देखिये, संजय बोलेकि इसबचनकोसुन कर आपके पिता भीष्मजी उसअश्रुपातकरनेवाले दुर्य्योधनसे यह बचन बोलेकिमैंने और द्रोणाचार्य्य विदुरगांधारी आदिने प्रथमही कहाथा परन्तु हेतात तुमने उसको नहींसमझा,मैंने प्रथमतुम्हारे साथनियम कियाहै सोमैं और आचार्य्यजी दोनोंकिसी रीतिसे तुम कोछोड़नेको योग्यनहींहैं, धृतराष्ट्र के पुत्रोंमेंसे युद्धमेंजिस२कोभीमसेन देखेगा उसको सत्य २ हीमारेबिना नहींछोड़ेगा,सोतुमस्वर्ग को अपना स्थान समझ कर मनको स्थिर करके पांडवों से युद्ध करो,हेभरतर्षभ इन्द्रादिक देवताभी पांडवोंके जीतनेको समर्थनहीं हैं इसहेतुसे युद्धमें स्थिरबुद्धी होकर संग्रामकरो ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र ने कहा हेसंजय एक भीमसेनकेहाथसे मेरे बहुतसेपुत्रों को मराहुआ देखकरभीष्म द्रोणकृपाचार्य्य आदिने क्या २ किया और मेरेपुत्र प्रतिदिन युद्धमें नाशहोतेहैं इससे हेसूतमैं मानताहूं कि सबरीति से प्रारब्ध सेहीनहूं, कि मेरे पुत्रनाश होतेहैं और बिजय नहीं पातेहैं भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य, भूरिश्रवा भगदत्त अश्वत्थामा आदिबड़े २ प्रतापीलोगों के मध्य में मेरे पुत्र बर्त्तमान होकर भी मारेजाते हैं यहां प्रारब्धसे दूसरी कौनसी बातहै, हे तातमेरे और भीष्म बिदुरआदि अनेक सुहृदों के समझानेऔरनिषेध करनेसे भी निर्बुद्धी दुर्य्योधननेपहले बचनों

को नहीं समझा और हितकारिणी अपनी माता गांधारी केभी बचनको उसदुर्बुद्धीने नहीं समझा उसीका यहफल पारहाहै,वहमहा क्रोधी भीमसेन युद्धमें प्रतिदिनमेरे पुत्रोंकोही अधिकतासे मारकर यमलोकमें पहुंचाताहै,संजयबोलेकि हे समर्थ बिदुरजीका वहउत्तम बचन बर्त्तमानहुआ है जोबिदुरने कहाथाकि पुत्रोंको जुवाखेलने सेनिषेध करो और पांडवोंसे शत्रुतामतकरो सो उनशुभचिन्तकमित्रोंके बचनों कोतुमने ऐसे नहींमाना जैसेकि रोगीअपनीनोरोगकरने वाली औषधीको नहींखाता है वही साधुओं काकहाहुआ वचन आपकेआगे बर्त्तमानहुआहै,यह सब कौरवलोग अपने शुभचिन्तक बिदुर द्रोणाचार्य्य भीष्म औरअन्य बहुत सेहितकारियोंके बचनोंकोनमानकर नाशहोते जातेहैं, इसके पीछे हे राजामध्याह्न के समय संसारका नाशकारी बड़ा भारी भयानक युद्धजो प्रारंभ हुआ उसको मुझसे सुनो,कि धर्मपुत्र युधिष्ठिरकी आज्ञासे पांडवों की सबसेना महाक्रोधित होकरभीष्मके मारनेके लियेसन्मुखदौड़ी हे महाराज धृष्टद्युम्न शिखण्डी सात्विकी यहतीनोंअपनी२ सेना समेतभीष्मके सन्मुख गये, बिराट द्रुपद आदिमहारथीभी सबसोमकों समेतभीष्मके सन्मुखगये और पांचोंभाईकेकयधृष्टकेतुकुन्तिभोज आदिभीसबकवचधारी होकरसेना समेत भीष्मके सन्मुखगये,अर्जुनऔर द्रौपदीके पांचों पुत्र और पराक्रमीचेकितान उनसबराजाओं के सन्मुखगये जिनकोकि दुर्य्योधनने आज्ञादीथी, इसी प्रकारवीर अभिमन्यु और महारथी घटोत्कच और क्रोधित भीमसेन भी कौरवोंके सन्मुख दौड़ा हे राजा पांडवोंके दोयूथोंसेतो कौरव मारेगये और कौरवों सेभी उधरके लोग मारेगये फिर महारथी द्रोणाचार्य्य बड़े क्रोधयुक्त होकर संजियों सहित सोमकों को मारते हुए पांडवोंके सन्मुख गये उस युद्धमें दोणाचार्य्य के हाथसे मरते हुए महात्मा संजियों के बड़े २ शब्दहुए उस स्थानमें द्रोणाचार्य्यकेहाथसे मरे हुए बहुत से क्षत्री ऐसे तड़फड़ाते दिखाई दिये जैसे कि रोगयुक्त मनुष्य बिकल होकर तड़फड़ाते हैं युद्धमें बोलते गर्जते

पुकारतेहुए शूरवीरों के ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि भूखसे व्याकुल मनुष्योंकेशब्द निकला करतेहैं इसी प्रकार द्वितीय कालके समान क्रोधरूपमहाबली भीमसेनने कौरवों के महाघोर नाशको किया, उस महाघोर युद्धमें परस्पर सब सेनाओं के मरने से रुधिर की घोर भयानक नदी जारी हुई हेमहाराज कौरव और पाण्डवों को वह महायुद्ध घोर लड़ाई यमराज के पुरकी वृद्धि करने वाली हुई, इसके पीछे क्रोधमें भरे निरभिमानी भीमसेनने हाथियों की सेना को मारकर यमपुर भेजा, वहां भीमसेनके नाराचोंसे मरेहुए हाथी अचेत होकर शब्द करते दिशाओं में घूमते हुए पृथ्वी पर गिरे, हे राजा धृतराष्ट्र वह सूंड़ और अंगों से रहित हाथी क्रौंच पक्षी के समान शब्द करते हुए पृथ्वीपर मरकर सोये, और नकुल सहदेव दोनों भाई घोड़ोंकी सेनाके सन्मुखगये वहां सुवर्ण भूषणोंसे अलंकृत सैकड़ों और हज़ारों घोड़े मरे कटे दृष्ट पड़े उस समय वह पृथ्वी गिरे हुए घोड़ोंसे पूर्ण हुई, और बहुतसे जिह्वासेरहित श्वास लेते हुए शब्दायमान मृतकरूप अनेक रंगवाले घोड़ोंसे पृथ्वीबड़ी शोभायमान हुई, हे भरतर्षभ इसी प्रकारसे अर्जुन के हाथसे मरे हुए राजाओं से भी भयानक पृथ्वी महाशोभा को प्राप्त हुई बड़े शस्त्रोंसे टूटे रथ ध्वजा और प्रकाशित छत्रोंसे वा टूटेहुए चामरऔर व्यंजनोंसे अथवा हार केयूरादिक आभूषणोंसे युक्तकुंडल धारीशिर अनेक प्रकारकी पताकाओंसे, और रथोंकी अनेक रंगवाली डोरियों से युक्त रथोंसे ढकीहुई पृथ्वी ऐसी प्रकाशमानहुई जैसे कि बसन्त ऋतुमें फूलोंसे शोभित होतीहै, जिस प्रकारसे भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा कृपाचार्य और कृतवर्मा इन सबके क्रोधरूप होने से पाण्डवों के शूरवीरोंका नाश हुआ उसी प्रकार पाण्डवों के कोपित होने से आपकेभी वीरों का नाशहुआ,, ४० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

—※—

इक्यानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार उनउत्तम वीरोंके नाशहोने पर सुबल का पुत्र श्रीमान् शकुनि और शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला यादव कृतवर्मा पाण्डवों की सेना के सन्मुख गया, फिर काम्बोज देशी उत्तम घोड़े व नदी के समीप उत्पन्न होनेवाले अरट्ट देशी व सिन्धदेशी आदि सब प्रकार के घोड़े और बनायुज देशी श्वेत-रूप पहाड़ी घोड़े इन सब प्रकार के अनेक घोड़ोंके द्वारा युद्ध के चारों ओरको नियत करके दूसरे प्रकारके तित्तिरिज वायुकेसमान वेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलंकृत श्रेष्ठ रचना किये हुए कवचोंको धारणकरनेवालेवायुके समानशीघ्रगामी उत्तमघोड़ोंसमेत बलवान् रूपवान्श्रीमान् पराक्रमी अर्जुनका पुत्रइरावान् उससेना के सन्मुख हुआ यह इरावान् अर्जुनकापुत्रनाग कन्यामें इस रीति से उत्पन्न हुआथा कि ऐरावत नामनागोंके राजाने गरुड़जीसे महा दुःखित होकर अर्जुन को अपनी कामवती कन्यादी तब अर्जुनने उसकामासक्त को अपनी स्त्रीबनाने के लियेग्रहण किया इस रीति से यह अर्जुनका पुत्र दूसरेक्षेत्रमें उत्पन्न हुआ, वहमातासे रक्षित होकर नागलोकमेंबड़ाहुआ और अर्जुनकी शत्रुतासे उसकेचाचाने उसको पृथक्किया फिरवह रूपवान् पराक्रमी गुणोंसे संपन्नसत्य पराक्रमी अर्जुन को स्वर्गमें वर्त्तमान सुनकर शीघ्रहीइन्द्र लोकको गया,वहांउस सावधान सत्य पराक्रमीने हाथजोड़कर पिताकेपास जाकरदण्डवत्की,और अपनेकोअर्जुनके सन्मुखवर्णन कियाकि हे प्रभु आपका कल्याणहोमैं इरावान् नाम आपका पुत्रहूं और जैसे माताका मिलाप हुआथा वहसबवर्णन किया तबअर्जुनने उसका यथार्थवृत्तान्त जैसा हुआथा सबस्मरण किया वहअर्जुन देवराज केभवनके भीतर गुणोंमें अपने समान पुत्रको देखकर बहुतस्नेहसे मिलकर प्रसन्नहुआ, हे भरतबंशी धृतराष्ट्र तब इन्द्रलोक में वह महाबाहु इरावान् अर्जुनसेबोला किहेपिताआप मुझेकोई कामकर

ने की आज्ञादीजिये, अर्जुने कहा कि हे पुत्र युद्ध के समय तुमको हमारी सहायता करनी उचित है उसकी आज्ञा को स्वीकार करके युद्धके समय वह उन पूर्व्वोक्त उत्तम घोड़ों समेत वहां आया जो अकस्मात् ऐसेऊंचे होकर चलने लगे जैसेकि महा समुद्रमें हंस च लेतेहैं वहशीघ्रगामी घोड़े आपकेघोड़ों के समूहों को पाकर, अपनी तीव्रतासे पृथ्वीपर छातीसेछातीको नाकोंसे नाकोंकोपरस्पर घायलकरते हुये दौड़े, इसरीतिसे उस परस्पर दौड़तेहुये घोड़ोंके समूहोंसेऐसे भयकारी शब्द सुनेगये जैसेकि गरुड़के गिरनेमें होते हैं, इसी प्रकार घोड़े के सवारों ने भी परस्पर में मिलकर एकने एक का नाश किया, इस रीतिके कठिन और तुमुल युद्धकेहोनेपर दोनों ओर के घोड़ोंके समूह भी चारों ओरसे भ्रमण करने लगे, जिनके कि बाण अत्यन्त निबट गये और घोड़े भी मारेगये उन शूरवीरोंने नाशको पाया, फिर घोड़ों की सेनाके नाश होने और कुछ शेषरह जानेपर शकुनी के छोटे भाई महाशूरवीर युद्धभूमिमें वायुके समान तीव्र स्पर्श युक्त और शीघ्रगामीपने में तीव्र बायुके समान प्रसन्न रूप तरुण घोड़ोंपर चढ़कर आये, गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान्, आर्जव, शुक यह छओं महावीर गान्धार कुनाद युद्धमें दुर्मद बड़ीसेना समेत महा प्रवीण भयानकरूप अतिबली कवच आदिसे अलंकृत शकुनि और अपने बड़े २वीरोंसे निषेधित होकरभी विजयाभिलाषी हो उस बड़ी कठिन सेनाको चीरकर स्वर्गके निमित्त युद्धमें आये उस समय पराक्रमी इरावान् भी उन राजकुमारों को आयाहुआ देखकर अपने शस्त्र आभूषणोंसे अलंकृत बीर पुरुषों से बोला कि जिसप्रकारसे दुर्य्योधन के यह सब शूरबीर मारेजायं वही काम तुमको करना उचितहै यह सुनकर इरावान्के शूरोंने अंगीकारकर के, उन्होंको दुर्जय सेनाको मारा युद्धमें इस सेनासे मारीहुई अपनी सेनाको देखकर, महा असहिष्णु सुबलके पुत्रोंने इरावान् को चारोंओरसे घेरलिया और बड़े परशोंसे और परिघोंसे प्रहारकरतेहुए उसके ऊपर दौड़े, इरावान् भी उन बीरोंसे घायल रुधिर

में डूबाहुआ ऐसा विदितहुआ जैसे कि दण्डोंसे घायल हाथीहोता है, हे राजा वह अकेला उन सबसे हाथ छाती पीठ और कुक्षपर घायल होनेपर भी पीड़ित नहीं हुआ, फिर शत्रु के पुरको विजय करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इरावान्‌ने भी उन सबको अपनेतीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया, फिर उस शत्रुहन्ताने अपने शरीरमें से सब परशोंको उखाड़कर उन्हीं परशोंसे सुबलके पुत्रोंको घायल किया, इसके पीछे अपने तीक्ष्ण खड्ग और ढालको धारणकरके बड़ीशीघ्रतासे उन सुबलके पुत्रोंके मारने को पैदलही गया, फिर चैतन्य होकर क्रोधमें भरेहुए वह सब सुबलके पुत्रभी इरावान् के सन्मुख गये तब तो इरावान् अपने खड्गकी हस्तलाघवता को दिखलाता हुआ उन सबके सन्मुख दौड़ा, उस समय उन सब पुत्रोंने अपनी शीघ्रगामी सवारियोंसे भी उसको तीव्रताको नहीं पाया, फिर उस को घेरकर सबने पकड़ना चाहा, परन्तु उस अकेले महाबलीनेही पास जाकर उन सब खड्ग धनुषधारियोंके अंगोंको काटा और अंगोंके कटतेही वह सब मृतकहोकर पृथ्वीपर गिरे,हे महाराज इन मेंसे एक वृषभही इस घोर रुद्रयुद्धमेंसे बड़ी सहायताओं से बचा फिर आपका पुत्र इन शूरबीरोंका मराहुआ देखकर महाक्रोध में भराहुआ महाबली शत्रुहन्ता मायावी आर्य्य श्रृंग राक्षस जो कि बकासुरके बधमें भीमसेन का शत्रुथा उससे बोला, हे बीर देखो जैसे कि इस पराक्रमी और मायावी अर्जुनके पुत्रने मेरे विजयकर्मसे सेनाके नाशको किया है सो हे तात तूभी इच्छानुचारीमायावी अस्त्र विद्यामें कुशल है और पांडवोंसे शत्रुता करने वाला है इस हेतुसे इस इरावान्‌को युद्धमें तुम मारो, उसको आज्ञा पातेही वह घोररूप राक्षस बड़ा सिंहनाद करताहुआ अर्जुन के पुत्र के पास गया और दोसहस्त्र युद्धसे शेष बचेहुए घोड़ोंसे महाबलीइरावान्‌के मारनेका अभिलाषीहुआ, फिर अत्यन्त पराक्रमी शत्रुहन्ता शीघ्रता करनेवाले इरावान्‌ने अपने मारनेके इच्छावान् उस राक्षसको रोका, इसके अनन्तर शीघ्रतासे बड़े महाबली राक्षसनेउस

आतेहुएको देखकर मायाकोप्रकटकिया, अर्थात् उसनेउतनेही माया रूपी घोड़े जिनपर शूल पट्टिश धारणकियेहुए घोरराक्षस सवार थे प्रकटकिये, फिर उन दोहजार क्रोधरूप प्रहारकरने वालोंने सन्मुख होकर थोड़ेही समयमें परस्पर युद्धकरके एकने एकको प्रेतलोकमें भेजा, उस सेनाके मरनेपर वह युद्धमें दुर्मद दोनोंऐसे युद्धकरनेलगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रने युद्धकिया था, उस युद्धमें दुर्मद राक्षस को सन्मुख आयाहुआ देखकर महाबली इरावान् बड़े क्रोधसे उसके ऊपर दौड़ा, और उस निर्बुद्धीके धनुषको अपने खड्गसे काट कर पांच प्रकारके पांच बाणोंसे व्याकुल किया, फिर वह अपने धनुषको टूटा जानकर बड़े क्रोधसे इरावान्को अपनी मायासे मोहित करके बड़ी तीव्रतासे आकाशमें पहुंचा, इसके पीछे इरावान्नेभी अपनी मायासे अन्तरिक्षमें जाकर उसके अंगोंको काटा, हेराजा जैसा कि यह इरावान् सब धर्मोंका ज्ञाता कामरूप और अजेयथा वैसाही वह राक्षसोंमें श्रेष्ठ बारंबार घायल होकरभी नीरोगता पूर्व्वक तरुणरूपथा क्योंकि उन्होंकी देहसे उत्पन्न होनेवाली माया तरुणता पूर्व्वक स्वेच्छारूप धारण करनेवाली होतीहै, इसरीतिसे उसराक्षस का शरीर कटकर भी फिर उत्पन्न हुआ हेराजेन्द्र जब इरावान्ने उस महाबली राक्षसको बाण और परशों से बारंबार काटा तब वह राक्षस वृक्षके समान होकर बारंवार महाभयकारी शब्दोंसे गर्जना करके परशोंसे कटेहुये शरीरसे रुधिर बहाने लगा इसके अनन्तर वह राक्षस इरावान्को पराक्रमी देखकर बड़ा क्रोधितहुआ और युद्धमें ऐसी तीव्रता करने लगा, कि अपना घोररूप बनाकर अर्जुनके पुत्र महावीर इरावान्को युद्धमें सबके देखते हुये इसने पकड़ना चाहा फिर उस निर्बुद्धीको उसमायाको देखकर अत्यन्त क्रोधभरे इरावान्नेभी मायाको रचा अर्थात् अपने नानाके बंशरूप सर्प्पोंको उत्पन्न किया, हेराजा बहुतसे सर्पोंसे युक्त उस इरावान् नेशेषनागके समान अपने महान् रूपको धारणकिया और अनेक नागोंसे उसराक्षसको घेरा, फिर उसराक्षसों में श्रेष्ठने अपना गरुड़

रूप धारण करके उनघिरे हुये सर्पोंको खाया,मायासे उसकेनन सारी सर्पोंके भक्षणहो जानेपर वह इरावान् अचेत हुआ फिर उस अत्यन्त मोहित इरावान्को राक्षसने खड्गसे मारकर उसके कुंडल मुकुटधारी चन्द्रमाके समान प्रकाशमान शिरको पृथ्वीपर गिराया उसराक्षसके हाथसे उस इरावान्के मरनेपर धृतराष्ट्र के सब पुत्र शोकसे निवृत्त होकर बड़े प्रसन्नहुये,फिर उस भयकारी महायुद्ध में दोनोंसेनाओं का घोरनाश होना प्रारंभहुआ रथ हाथी घोड़े पदातीसवार वहसब परस्परमें युद्धकरकरके और पत्तियोंकेहाथोंसे नाशको प्राप्तहुये,इसी प्रकार उसतुमुल युद्धमें आपके और उन्होंके अनेक घोड़े पति और रथियोंके समूह रथियोंके हाथोंसे मारेगये, औ उसपुत्रको मृतक न जानने वाले अर्जुनने भी भीष्मजीके रक्षक उनशूर वीरराजाओंको मारा,इसी रीतिसे उसयुद्धमें प्राणोंको होम कर शूंजीलोगोंने आपके शूरवीरोंको परस्परमें मारा, नंगेशिर कवचोंसे रहित रथहीन टूटे धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीरभुजाओंसे युद्धकरनेलगे, इसीप्रकार युद्धमें पांडवोंकी सेनाको कंपातेहुये परन्तप भीष्मजीने मर्मभेदी बाणोंसे महारथियोंको मारा,उनभीष्मजीके हाथसे युधिष्ठिरकी सेनाके बहुतसे रथहाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये,हेभरतवंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व्व बलकोजाना और इसीप्रकारसे युद्धमें (भीमसेन) (धृष्टद्युम्न)और धनुर्द्धार सात्विकीकाभीयुद्धमहाभयानक हुआ,फिर द्रोणाचार्य्यके पराक्रमको देखकर पांडवोंमें इसप्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य्य सब सेनाओंके मारनेको समर्थहै तो सबपृथ्वीके बड़े२पराक्रमी शूरबीरोंसमेत कैसेन होंगे हेभरतर्षभ इसरीतिसे घोरयुद्धहोनेपर दोनोंओरके शूरबीरलोग परस्परमें असहिष्णुहोकरतुम्हारे और पांडवोंके शूरक्षत्रीराक्षसआदि अनेकप्रकारके घोरयुद्धकरतेहैं हमने उसदेवदानवोंके युद्धकीसमान संग्राममेंकिसीकोऐसानदेखा जोअपनेप्राणोंकीरक्षाकरताहो ९३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें इरावान् को मरा देखकर पांडवों ने क्या किया उसको मुझ से कहो, संजयबोले कि भीमसेन का पुत्र घटोत्कच राक्षस उस इरावान्को युद्धमें मराहुआ देखकर महाध्वनिसे गर्जा, उसकी गर्जनासे पर्व्वत और समुद्रोंसमेत पृथ्वी चलायमानहुई, और दिशा विदिशाओंसमेत आकाश भी शब्दायमानहुआ और उस महाघोर शब्दको सुनकर आपकी सेनामें भी सबको प्रस्वेदहुआ और सब वीर महा खेदितहोकर सब ओरसे ऐसे भयभीतहुए जैसे कि सिंहसे भयभीत हाथी होतेहैं, उस राक्षसने इसघोर शब्दको करके, महा ज्वलितरूप शूलको धारणकर उग्र रूप होके नानाप्रकारकेरूप और शस्त्रधारी राक्षसोंको साथलिये कालमृत्यु के समान क्रोधीहोकर मारना प्रारंभकिया इस क्रोधयुक्त भयानक रूप राक्षसको आता देखकर, और उसके भयसे अपनी सेना का मुख फेरना देखकर राजा दुर्य्योधन बड़े भारी धनुषको लेकर सिंह के समान गर्जना करताहुआ घटोत्कचके सन्मुख गया इसके पीछे बंगदेशियोंका राजा चलतेहुए पर्व्वताकार दशहजार हाथियों को साथलेकरगया उस हाथियों की सेनासमेत आपकेपुत्रको देखकर वह राक्षस महा क्रोधाग्निरूप होगया फिर रोम हर्षण महातुमुल युद्ध जारीहुआ, उस समय राक्षसोंसे और आपकी सेनासे युद्धहोने लगा फिर बादलोंके समूहोंकेसमान युद्धमें प्रवृत्त हाथियोंकीसेना को देखकर, विजलीसे अनेक शस्त्रोंको धारणकिये हुए बादलोंकेसमान गर्जनाकरते हजारों राक्षस सन्मुख दौड़े, (बाण) (बरछी) (दुधाराखड्ग) (नाराच) (भिन्दिपाल) (शूल) (मुद्गर) और परशे इत्यादि शस्त्रोंसे हाथियोंके सवारोंको मारकर उन राक्षसोंनेपर्व्वत और वृक्षोंसे हाथियोंको मारा हे राजा हमने राक्षसोंके हाथ से टूटेहुए मस्तकों समेत हाथियों को रुधिरसे रहितहोकर मरा हुआ देखा उन हाथी और हाथीवानोंके पराजित होनेपर, महाक्रोधरूप

होके दुर्य्योधन अपने जीवनकी आशाको त्यागकर उन राक्षसों के सन्मुखगया हे शत्रुसंतापी उस बड़े धनुषधारी दुर्य्योधन ने वहां जाकर अपने तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षासे बड़े २ राक्षसों को मारकर अपने महातीव्र चारबाणोंसे उसमहाभयंकर घोररूपवाले घटोत्कच को घायलकिया, फिर वह राक्षस इन्द्र धनुषके समान अपने धनुषको खैंचकर, बड़े वेगसे दुर्य्योधनके सन्मुखगया उस मृत्युसमान राक्षस को आताहुआ देखकर आपकापुत्र दुर्य्योधन पीड़ामान् नहीं हुआ तब अत्यन्त रक्तनेत्र कोपसे युक्त वह राक्षस इससे कहनेलगा कि अबमैं उनअपने मातापितासे अऋण होजाउंगा जिनको कि तुझनिर्द्दयीने बनवासी किया, और छलसे द्यूतमें जीता और पापात्मा निर्बुद्धी एकवस्त्रा रजस्वला कृष्णाद्रौपदी को जो तुमने सभामें लाकर महा दुःखितकिया और तेरे अर्थ चाहनेवाले दुर्बुद्धी जयद्रथ ने मेरेपिता लोगों को निरादर करके आश्रम में नियत द्रौपदी को पकड़ कर हरण किया हे कुलध्वंसी महानीच उन अपराधों का फल मैं अब तुझको देकर उसका प्रतीकार पाऊंगा, फिर ओठों को चबाकर घटोत्कच ने धनुष को खैंचकर मारे बाणों के दुर्य्योधन को ऐसे ढकदिया जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल जलकी धाराओं से पर्व्वत को ढक देते हैं, २६ ॥

इतिश्रीमद्भारतेभीष्मपर्व्वणि द्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर राजा दुर्य्योधन ने दानवोंसेभी असह्य उन बाणों की वर्षा को ऐसे सहा जैसेकि बड़ा हाथी पानी की वर्षा को सहलेता है हे भरतवंशी इसकेपीछे क्रोधमें पूर्ण सर्प की समान श्वास लेतेहुये आपके पुत्रने बड़े सन्देह से युक्तहोकर पच्चीस नाराचोंको छोड़ा वह नाराच बाण उस राक्षस पर ऐसे जाकर गिरे, जैसे कि गन्धमादन पर्व्वतपर क्रोधयुक्त सर्प गिरते हैं उन बाणोंसे घायल मदवाले हाथीके समान रुधिर गिरते, उस

मांसाहारी राक्षस ने राजाके मारने का बिचार किया और पर्व्वतों के चीरने वाली बड़ी बरछी को लिया, फिर आपके पुत्रके मारने के लिये उस महाबाहुने उस महाघोर उल्काके समान प्रकाशमान बरछी को उठाया उस समय महाशीघ्रता करनेवाले बंगदेशीराजा ने उस उठाई हुई बरछी को देखकर पर्व्वताकार अपने हाथी को उस राक्षस के ऊपर चलाया और उस शीघ्र चलनेवाले हाथीके द्वारा आप उस मार्ग्गमें वर्त्तमान हुआ जिधर दुर्य्योधन का रथथा अर्थात् उस हाथीसे आपके पुत्रके रथको गुप्तकरदिया उस बंगदेश के राजाकरके मार्गको बन्ददेखकर घटोत्कचने महा क्रोधित होकर उस उठाई हुई बरछीको हाथीपर फेंका उस बरछी के प्रहार से वह हाथी महा पीड़ित होकर गिरकर मर गया, फिर वह बंगदेशी बलवान् राजाभी बहुत शीघ्र हाथीसे उछलकर पृथ्वीपर बड़ी तीव्रतासे गया,दुर्य्योधनने उसगिरे हुये बड़े हाथी को और सेनाके हटजानेको देखकर बड़े खेदको पाया,और राजा दुर्य्योधन क्षत्री धर्मको बिचार अपने अहंकारको करके सेनाके भागजानेपर भी पर्व्वतके समान अचल होकर युद्धमें खड़ारहा,फिर महाक्रोधित होकर बड़े धनुषको खैंचकर एकबड़े तीक्ष्णबाणको उसराक्षस पर छोड़ाउसइन्द्र बज्रकेसमान आतेहुये बाणकोदेखकर घटोत्कचने बड़ी हस्त लाघवतासे निष्फल करकिया और लालनेत्र करके बड़े क्रोध पूर्व्वक भयानक शब्दसे गर्जनाको करके सेनाको ऐसा भयभीत कर दिया जैसे कि प्रलय कालमें बादल सबको भयसे पीड़ित करतेहैं, उस राक्षसके उसघोरशब्दको सुनकर शांतनुकेपुत्र भीष्मजी द्रोणाचार्य्यके पास जाकर बोले कि यह राक्षसका घोर और भयानक शब्द सुनाजाताहै निश्चय करके यह घटोत्कचही राजादुर्य्योधन से लड़ताहै युद्धमें इसराक्षसको कोई जीव विजय नहीं कर सक्ताहै आपका श्रेयहो आपवहीं जाकर राजाकी सब ओरसे रक्षा करो, वह महाभाग दुर्य्योधन बड़े साहसी राक्षससे लड़ताहैहेशत्रु संतापियो तुम्हारा और हमसबकाभी उत्तमकर्महै पितामहके इसबचन

को सुनकर शीघ्रता करने वाले महारथी द्रोणाचार्य्य सोमदत्त बाह्लीक जयद्रथ कृपाचार्य्य भूरिश्रवा शल्य अवन्तिका राजा वृहद्बल अश्वत्थामा विकर्ण चित्रसेन बिबिंशति और हजारों उनके पीछे चलनेवालेरथ वहसब मिलेहुये आपकेपुत्र दुर्य्योधनकी रक्षाकेलिये वहांगये जहां राजादुर्य्योधनथा फिर वह राक्षसोत्तम महाबाहुघटोत्कच उसदुर्जय महारथियोंसे रक्षित मारनेकी इच्छा रखने वाली सेनाको आता हुआ देखकर मैनाक पर्व्वतके समान भयभीत नहीं हुआ,और (शूल) (मुद्गर) आदि अनेक प्रकारकेशस्त्रधारी राक्षसोंसे युक्त घटोत्कच बड़े धनुषको खैंचकर खड़ाहुआ,फिर घटोत्कच और दुर्य्योधनकी सेनाका महारोमहर्षण युद्धजारी हुआ उससमय हेराजाधनुषकी टंकारोंके महाकठिन शब्दचारों ओरसे ऐसे सुनाई दिये जैसे कि जलते हुये बांसोंके शब्द होतेहैं, और शरीर के कवचोंपरलगने वाले अस्त्र शस्त्रोंके भी ऐसे शब्द होतेथे जैसे कि फटे हुये पहाड़ोंकेमहाशब्द होतेहैं,हेराजा वीरोंकी भुजाओंसे फेंके हुये तोमरों के ऐसे रूपदिखाई दिये जैसे कि आकाश में चलते हुये सर्पोंके आकार दिखाई देतेहैं,इसके पीछे अत्यन्त क्रोधरूप भयकारी गर्जनाकरते हुये उसराक्षसों के राजाने बहुत बड़े धनुष को लेकर,अर्द्धचन्द्रनाम बाणसे द्रोणाचार्य्य के धनुषको काटके भल्लसे सोमदत्त की ध्वजा को तोड़ता हुआ महा गर्जना करके बाह्लीक को तीन बाण से छातीपर घायल किया और एक बाण से कृपाचार्य्य को तीन बाणसे चित्रसेन को, घायल करके कान तक खैंचे हुए बाणसे विकर्ण को घायल किया, फिर वह विकर्ण रुधिर भरे देहसे रथमें बैठा इसके पीछे उस पराक्रमी ने पन्द्रह नाराच भूरिश्रवा पर फेंके वह नाराच उसके कवच को काटकर पृथ्वीपर गिरे, फिर विविंशति और अश्वत्थामाके सारथियोंको घायलकिया जिसके मारे वह घोड़ोंकी रस्सियों को छोड़कर पृथ्वीपर गिर पड़े और अर्द्धचन्द्र बाण से राजा सिन्धु के सुनहरी बाराह को और दूसरे बाणसे उसके धनुषको काटा, फिर क्रोधसे अत्यन्त रक्तनेत्र

ने अपने चार नाराचों से महात्मा राजा अवन्तिके चारों घोड़ोंको मारा हे महाराज फिर बड़े तीक्ष्ण बाणसे राजा बृहद्बलको घायल किया वह भी महाघायल होकर रथमें बैठगया फिर राक्षसाधिप घटोत्कचने सर्पाकृति अनेकबाणोंसे राजाशल्यकोव्यथितकिया ४३॥

इतिश्रीमन्महाभारतेभीष्मपर्व्वणि त्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानवेंका अध्याय॥

संजय बोले कि फिर वह राक्षस आपके सब योद्धाओं को युद्धमें भगाकर मारने की इच्छासे दुर्य्योधनके सन्मुख दौड़ा, उसराक्षस को राजाके ऊपर आता देखकर मारने के इच्छावाले युद्धमें दुर्मद आपके भी शूरवीर उसके सन्मुख दौड़े, यह सब वीर ताल वृक्षके समान धनुषों को खैंचेहुए सिंहोंके समान गर्जना करते हुए उस अकेले के ऊपर दौड़े, और बाणों की वर्षासे उसको चारों ओरसे ऐसे ढकदिया जैसेकि शरद ऋतुमें बलाहकनाम बादल अपनोजल धाराओंसे पर्व्वत को ढक देतेहैं, दण्डसेघायल हाथीके समान वह अत्यन्त घायल घटोत्कच गरुड़के समान चारों ओरसेआकाश को उछला, और भयानक शब्द करता हुआ दिशा विदिशा समेत आकाशको शब्दायमान करके शरदऋतु के बादलोंके समान महा घोर गर्जना करनेलगा, इसके पीछे हेभरतर्षभ उस राक्षसके शब्द को सुनकर राजा युधिष्ठिर शत्रु विजयी भीमसेन से बोले, कि निश्चय वह घटोत्कच राक्षस धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रोंसे लड़रहा है क्योंकि यह महाघोर शब्दकी गर्जना उसी की सुनी जाती है इस समय उस राक्षसके ऊपर मुझको बड़ीभारी विपत्ति जान पड़तीहै और अत्यन्त कोपयुक्त भीष्म जी पांचाल देशियों के मारनेको युद्ध में प्रवृत्त हैं, उन पांचालों की रक्षाकेनिमित्त अर्जुनही शत्रुओं से लड़ता है हे महाबाहु इसबातको जानकर दोकाम वर्त्तमानहुए, अब चलकर बड़ी विपत्तिसे घटोत्कचकी रक्षाकरो यह भाईकेवचन सुनतेहीशीघ्रता करनेवाला भीमसेन अपने सिंहनादसे सब राजा

ओंको डराता हुआ ऐसे महावेगसे वहां पहुंचा जैसे कि पर्व्वकाल में समुद्र जाता है, और इसके पीछेही सत्यधृति युद्धमें दुर्मद (सुचित्ती) (श्रेणिमान) (वसुदान) औरमहासमर्थकाशिराजकापुत्र यह सब गये, और अग्रवर्त्ती अभिमन्यु के साथ द्रौपदीके महारथी पुत्र (क्षत्रदेव) (विक्रान्त) (क्षत्रधर्मा) और नीलनाम अनूपदेशका राजा अपनी सेनामें नियतहोकर चला यह सब शूर रथोंके समूहोंसमेत घटोत्कचकी रक्षाकेलिये उसके चारोंओर को नियतहुए, इन सब बीरोंकेसाथ महादुर्मद मतवाले छः सहस्र हाथी थे इन सबहाथियोंकी और रथोंकी गर्जना और ध्वनियोंसे पृथ्वी शब्दायमान होगई, उन आतेहुओंके शब्दको सुनकर आपकीसेना भीमसेनके भयसे महा व्याकुलहोकर रूपान्तर दशाको प्राप्तहुई, हे महाराज वह सेना घटोत्कचको छोड़कर चारोंओरको घूमनेलगी फिर सन्मुख लड़नेवाले आपके और दूसरों के शूरबीरों का नानाप्रकार के अस्त्र शस्त्रोंसमेत युद्धहोना प्रारंभहुआ और परस्पर सन्मुखदौड़ते हुए महारथियोंने बड़े प्रहारकिये और अत्यन्त भयकारी घोरयुद्ध होनेलगा, घोड़े हाथियोंकेसाथ और पदाती रथियोंके साथ युद्ध करनेलगे उस युद्धमें परस्पर एक दूसरेको चाहतेहुए सन्मुखगये उससमय अनेक हाथी घोड़े रथ पैदलोंके समूहोंसे उठीहुई बहुत भारीधूल उड़ी फिर उस काली और लाल रंगवाली उग्र धूलिसे संग्रामभूमि ऐसी आच्छादित होगई कि जिसमें अपने पराये की कुछ पहचान न होसकी, इसप्रकारके रोमहर्षण करनेवाले महाप्रलयकालमें पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको भी नहीं पहचाना, हे भरतर्षभ उस युद्धमें शस्त्रोंके और गर्जना करनेवालों के प्रेतोंके से महाघोर शब्दहुए, फिर वहां हाथी घोड़े रथ पैदलोंके रुधिरसे नदी बह निकली उसमें शिरोंकेबालही कुमुदिनी समेत शाड्वलथे उस संग्राममें मनुष्योंके गिरतेहुए शिरों के ऐसे महा शब्द सुनाई दिये जैसे कि गिरतेहुए पत्थरोंके शब्दहोते हैं फिर बिना शिरके मनुष्य और अंगभंग हाथी घोड़ोंके शरीरों से पृथ्वी व्याप्त होगई

और बड़े २ महारथी परस्परमें नानाप्रकारके शस्त्रोंको प्रहारकरतेहुए एक एकके सन्मुख मारनेको प्रवृत्तहुए, ३० फिर सवारों से शोभित घोड़े घोड़ोंसे लड़ते २ मरकर पृथ्वीपर गिरे, और क्रोधसे रक्तनेत्र मनुष्योंने दूसरे मनुष्योंको पाकर एकने दूसरेको छातीसेछाती मिलाकर मारा, फिर पीछेके हाथियोंने बड़े २ शरीर मुखवाले शत्रुके हाथियोंके सन्मुख होकर दांतोंकी नोकोंसे हाथियोंको मारा, वह पताकाओंसे शोभित हाथी रुधिरसे पीड़ितहोकर ऐसे संसक्त दिखाई देतेथे जैसे कि बादलों में विजली दीखतीहै, कोई हाथी दांतेकी नोकोंसे घायल और तोमरोंसे फूटेहुए कंभबादलोंकेसमान गर्जतेहुए सन्मुखदौड़े, कोई टूटो सूंड़वाले वा टूटे अंगवाले हाथी युद्धमें ऐसे गिरे जैसे कि टूटे पर्व्वत और कितनेही कुक्षोंमें घायल हाथियोंने बहुतसा रुधिर ऐसा डाला जैसे कि पर्व्वत धातुओंको गेरतेहैं, और बहुतेरे तोमरोंसे और नाराचों से घायल और पीड़ितहोकर शब्द करतेहुए ऐसे दौड़े जैसे कि बिना शिखरके पहाड़ होतेहैं, और अनेक क्रोधयुक्त मदान्ध हाथियों ने क्रोधितहोकर हजारों रथ घोड़े और पदातियों को मर्दन किया, इसीप्रकार अश्वसवारोंके प्रास और तोमरोंसे घायल घोड़े दिशाओंको व्याकुल करतेहुए प्रत्येक मार्गमें सन्मुख हुए, कुलीन और शरीर त्यागनेवाले रथियोंने बड़ी सामर्थसे निर्भयतापूर्व्वक रथियोंसे युद्धकिया, हे राजा युद्धमें कुशल यश और स्वर्गके अभिलाषीबीरोंने उस स्वयंबरके समान युद्धमें एकने एकको परस्परमें हरणकिया, इसीप्रकारसे इस रोमहर्षण युद्धके प्रारंभहोनेपर दुर्य्योधनकी प्रबल सेना बहुधा भगाई गई ४३ ॥

इतिश्रीमद्भारतेभीष्मपर्वणिचतुर्णवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि राजादुर्य्योधन अपनी सेनाका नाशहुआ देख कर अत्यन्त क्रोधितहोकर आपही उस शत्रुजेता भीमसेनके सन्मु-

खदौड़ा, और इन्द्र धनुषकेसमान शब्दायमान धनुषसे बाणों की वर्षाकरके भीमसेनको ढकदिया, और क्रोधमेंभरकर अत्यन्ततीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाणसे भीमसेनके धनुषको काटकर बड़ीशीघ्रतासेसमय को पाकर उसने पर्व्वतोंके भी तोड़नेवाले तीक्ष्णबाणको धनुष पर चढ़ाया, हे राजा उस बाणसे भीमसेन को छातीपर घायलकिया, फिर उस तेजस्वी भीमने होठोंको चाटकर अपनी सुनहरी ध्वजा को पकड़लिया उस समय घटोत्कच भीमसेनको व्याकुल देखकर, क्रोधरूपी अग्निसे ज्वलितहुआ और महाक्रोधयुक्त अभिमन्युआदि महारथीराजाको पुकारतेहुए सन्मुख दौड़े अत्यन्त क्रोधयुक्त उन लोगों को आताहुआ देखकर,भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी आपकेमहा रथियोंसे बोले कि तुम्हारा कल्याणहो तुम शीघ्रजाओ और बड़े दुःख समुद्रमें पड़े हुए राजाको चारोंओरसे रक्षाकरो, यह महाको पयुक्त पांडवोंके धनुषधारी महारथी अनेक प्रकारके शस्त्रोंकोचलाते और शब्दोंकी गर्जनाओंसे राजाओंको भयभीत करते सबभीमसेन को आगेकरके दुर्य्योधनके सन्मुख गयेहैं, द्रोणाचार्य्यके इसबचन को सुनकर सोमदत्तको अग्रगामी करके, वह सब आपके शूरबीर पांडवोंके सन्मुख पहुंचे (कृपाचार्य्य) (भूरिश्रवा) (शल्य) (अश्वत्थामा) (विविंशति) (चित्रसेन) (विकर्ण) (जयद्रथ) (दृढ़क्षत्र) औरबड़े धनुषधारी राजा अवन्तीने चारोंओरसे दुर्य्योधनको रक्षित किया, और परस्पर मारनेकी इच्छासे उन पांडव और धृतराष्ट्रके पुत्रोंने बीस २ चरण चलकर प्रहारोंको किया, फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने बड़े धनुषकोलेकर छब्बीस बाणोंसे भीमसेनको पीड़ितकरके अनेक अन्य बाणोंसे ऐसे शीघ्र ढकदिया जैसे कि जलकी धारोंसे बलाहकनाम बादल पर्व्वतको ढकदेतेहैं, बड़े धनुषधारी महाबली शीघ्रतायुक्त भीमसेनने शिलीमुखनाम दशबाणों से उनको घायल किया फिर वह वृद्ध द्रोणाचार्य्य अत्यन्त घायलऔर पीड़ितहोकर अकस्मात रथमें बैठगये गुरूको पीड़ामान देखकर आप राजादुर्य्योधन और अश्वत्थामा बड़े क्रोधितहोके भीमसेनके सन्मुखगये,

फिर महाबली भीमसेन उन काल और मृत्युकेसमान दोनोंकोआताहुआ देखकर, शीघ्रही रथसेकूद यमदण्डके समान अपनीभारी गदाको लेकर युद्धमें पर्व्वताकार निश्चल होकर खड़ाहुआ फिर शिखरधारी पर्व्वतके समान उस उठीहुई गदाकोदेखकर दुर्य्योधन और अश्वत्थामा दोनों एक साथही उसके सन्मुखदौड़े, भीमसेन भी उन तीव्र दौड़नेवालोंको सन्मुख आता देखकर बड़ी शीघ्रतासे उनपर दौड़ा, फिर उस क्रोधयुक्त भयानक भीमसेनको आताहुआ देखकर कौरवोंके महारथी यह दोनों भी शीघ्रता से दौड़े और सबोंने आकर अनेक प्रकारके शस्त्रों की बर्षासे भीमसेन की छाती को घायल किया, और सब चारों ओर से पीड़ित करनेलगे उस पीड़ित और घिरे हुए महारथी को देखकर, पांडवों के महारथी अभिमन्यु आदि अपने दुस्त्यजप्राणोंको त्यागकरतेहुए भीमसेनको चाहते उनके सन्मुख दौड़े, और भीमसेन का परममित्र शूरबीर नीले बादलकेसमान क्रोधरूप अनूप देशका नीलनामराजा अश्वत्थामाके सन्मुखगया,वह बड़ा धनुषधारी सदैव द्रोणपुत्र अश्वत्थामासे ईर्षाकरताथा इसलिये उसने बड़े धनुषको चढ़ाके बाणोंकी बर्षासे अश्वत्थामाको घायलकिया, हे महाराज पूर्व्व समय में जैसे इन्द्रने दुर्जय देवसन्तापी तीनोंलोकोंको भयकारी विप्रचित्ती नाम दैत्यको घायलकिया उसीप्रकार राजा नीलने अपने अच्छे छोड़े हुए बाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया, फिर जारीहुए रुधिरसेपीड़ित महाक्रोधयुक्त अश्वत्थामाने इन्द्र धनुषकेसमान धनुषको चढ़ाके बड़ी बुद्धिमानी से राजा नीलके मारने की इच्छा की और बड़े तीक्ष्ण भल्लोंसे चारोंघोड़ोंको मारकर ध्वजाको गिराया और एक भल्लसे राजा नीलको छातीपर घायलकिया, वह फिर अत्यन्त घायल और पीड़ितहोकर रथकेभीतर बैठगया उस बादलोंकेसमान राजा नीलको अचेत देखकर, अपनी जाति के राक्षसों से युक्त महा क्रोधितहोकर घटोत्कच बड़े बेगसे युद्धमें शोभायमान अश्वत्थामाके सन्मुख गया, और इसीप्रकार युद्धमें दुर्मद उसके साथी

राक्षस भी उसके सन्मुख दौड़े उस भयकारी रूप राक्षसको आता हुआ देखकर, द्रोणपुत्र अश्वत्थामाने भी बड़ी शीघ्रता से सन्मुख दौड़कर बड़े क्रोधसे उन राक्षसोंको मारा, राक्षसके आगे चलने वाले जो राक्षस सन्मुखहुए थे उनको अश्वत्थामाके बाणोंसेभाग-ताहुआ देखकर, भीमसेन का पुत्र बड़ा शरीरी घटोत्कच अत्यन्त क्रोधितहुआ और युद्धमें अश्वत्थामाको अचेतकरके अपनीमायाको प्रकट करताहुआ, उस मायासे भागेहुए आपके शूरवीर परस्परमें देखकर, महा दुखी रुधिरयुक्त शरीरों से पृथ्वीपर चेष्टा करनेलगे, द्रोणाचार्य्य दुर्य्योधन शल्य और अश्वत्थामा आदि जो बड़े धनुष धारी (कौरवीय) (शूरबीर) थे उन सबको राजा लोगोंभी रथ सार-थी हाथी घोड़ों समेत उसने पृथ्वीपर गिराया, हे राजा उस आप की सेनाके डेरोंकी ओर भागताहुआ देखकर मैंने और देवव्रत भीष्म जीने बहुत २ पुकारा कि डरोमत यह राक्षसी माया घटोत्कच की पैदा कीहुई है इसको सुनकर भी वह महा अचेत होकर नियत नहीं हुए उन भयभीतोंने हम दोनोंके कहनेपर भी विश्वास नहीं किया उस सेनाको भागाहुआ देखकर विजय पानेवाले पांडवोंने घटोत्कच समेत मिलकर बड़े सिंह नादोंकोकिया और शंखदुन्दु भी भी चारोंओरसे अच्छीरीतिसे बजाई, इस रीतिसे सायंकालको सूर्य्यास्त के समय दुष्टात्मा घटोत्कच की मायासे आप की सब सेना चारोंओर को भागी ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छानबेवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज उस बड़े शब्दके होनेपर राजादुर्य्यो-धनने भीष्मजीके समीप जाके बड़ी नम्रता पूर्व्वक दण्डवत करके, घटोत्कचकी विजय और अपनी पराजयहोने के मुख्य वृत्तान्त को बड़ी २ श्वासालेकर वर्णनकिया और पितामह से कहनेलगा, कि हे प्रभु मैंने वासुदेवजी के समान आपको अपना रक्षक समझकर

बड़ी भयकारी शत्रुता पांडवोंसे करी है हे शत्रुहन्ता जोमेरीग्यारह अक्षौहिणी प्रसिद्ध हैं वह सब मुझ समेत आपकी आज्ञामें नियत हैं, हे भरतर्षभ ऐसा योगहोनेपर भी मैं भीमसेन आदि पांडवजिनका कि घटोत्कच रक्षकहै उनसे पराजयहुआ, वह भीमसेन मेरे अंगोंको ऐसा जलारहाहै जैसे सूखे वृक्षको अग्निजलाताहै, हे शत्रुहन्ता पितामह आपसरीके दुर्जय पुरुषकी रक्षामेंहोकर आपकी कृपासे उस नीच राक्षसको मैं अपने हाथसे मारा चाहताहूं आपमेरे मनोरथको पूरा करनेको योग्यहो, दुर्य्योधनके इस बचनको सुन कर शांतनु भीष्मजी यह बचन बोले, हे कौरवेन्द्र जो मैं बचनकहताहूं उसको सुनकर उसीके अनुसार तुमको भी करना योग्यहै, हे शत्रुहन्ता पुत्र युद्धमें सब प्रकारसे अपना शरीर रक्षाके योग्य है हे निष्पाप तुमको सदैव धर्मराजसे युद्धकरना उचितहै, और (अर्जुन) (नकुल) सहदेव अथवा भीमसेन के साथ युद्धकरना उचित है राजा राजधर्मको आगेकरके किसी राजाके सन्मुख होताहै, मैं और (द्रोणाचार्य्य) (कृपाचार्य्य) (अश्वत्थामा) कृतवर्मा, यादव (शल्य) (भूरिश्रवा) महारथी विकर्ण और तेरे वह सब भाई जिनमें अग्रगण्य दुश्शासनहै, यह सब तेरे निमित्त उस महाबली राक्षससेलडेंगे उस रुद्ररूप राक्षसोंके राजासे जो तेरी बडी शत्रुताहै तो उसदुर्बुद्धी राक्षसके युद्धकेलिये भगदत्तकोभेजो यहकहकर राजाभगदत्तसे बोले कि हे महाराज तुम बड़ी शीघ्रतासे उस दुर्मद घटोत्कच के सन्मुखजाओऔरसबराजाओंकेदेखतेहुए उस कठिनकर्मी राक्षसको ऐसे हटाओ जैसे कि पूर्व्वसमयमें इन्द्रने तारकको हटायाथा, हेशत्रुहन्ता तुम्हारे पास दिव्यअस्त्रहैं और महापराक्रमीहो और पूर्व्वसमयमें भी तुमने बहुतसे असुरोंसे सन्मुखताकरीहै, हेराजेन्द्र तुमइस युद्धमें उसराक्षससे युद्धकरनेके योग्यहो, इससेहेराजातुमअपनोबड़ी सेनाकेबलसे राक्षसकोमारो, यह भीष्मजीके बचनों कोसुनकर भगदत्त बड़े सिंहनाद पूर्व्वक शत्रुओं के सन्मुखगया और पांडवोंके भी आगे लिखेहुए महाबलीशूरमा उस क्रोधयुक्तबादलके समानगर्जते

भगदत्तको देखकर सन्मुख आकर वर्त्तमानहुये (भीमसेन) (अभिमन्यु) (घटोत्कच) (द्रौपदीकेपुत्र) (सत्यधृति) (क्षत्रदेव) (चेदिकाराजा) (वसुदान) दशार्णाधिपति सुप्रतीक समेत भगदत्तके सन्मुखगये, और भगदत्तके साथ पांडवोंका खूबयुद्धहुआ वहयुद्धबड़ा भयानक औरयमराजके पुरकाबृद्धिकारकथा, रथियोंनेबड़े भयानक बाणोंसेरथी और हाथियोंकोमारा और बड़े २ मदोन्मत्तहाथियोंको हाथीवानोंने संग्रामभूमिमें लेजाकरबड़ी निर्भयतासे एक एककेपीछे दौड़ाया फिर हाथियोंने परस्परमें अपने २ तीक्ष्ण दांतोंसे घायल किया, चमर अपीड़ और प्रासधारी घोड़ोंके सवार नियत हुयेऔर बड़ी शीघ्रतासे एकदूसरेपर दौड़े, तब हजारों पदाती शत्रुओंके बरछी आदिशस्त्रोंसे मरेहुये पृथ्वीपर गिये, और रथियोंके शायकोंसे अन्यरथी घायल होकर गिरे फिर युद्धमें गिरानेवाले बीरोंनेसिंह नादकिये, इस प्रकारके रोमहर्षण युद्धके जारीहोनेपर बड़ा धनुषधारी भगदत्त बड़े भारी सप्ताङ्गमद श्रावी गजेन्द्रकी सवारीकेद्वारा भीमसेनके सन्मुख ऐसेगया जैसे कि जलके छिरने वालेबड़े पर्व्वतके साथ कोई जातीहो, फिर उसने उस सुप्रतीक हाथीके सिरपर सवार होकर हजारों बाणोंको ऐसे वर्षाया जैसे कि ऐरावत हाथी पर चढ़ाहुआ इन्द्रजलकी धाराओंको वर्षाताहै, उसराजाने बाणोंसे भीमसेन को ऐसाघायल किया जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादलजलकी धाराओंसे पर्व्वतको घायल करताहै, फिर बड़े धनुषधारी भीमसेनने अत्यन्त क्रोधित होकर बाणोंकी बर्षासे हजारों पादरक्षकोंको मारा फिर बड़े प्रतापवान भगदत्तने उनपाद रक्षकोंको मराहुआ देखकर बड़े क्रोधसे अपने गजेन्द्रको भीमसेनके रथपर पेला, जैसे कि तीर से चलाया हुआ बाणजाताहै उसी प्रकार उसका पेलाहुआ हाथी भी शत्रुजित भीमसेनके ऊपर बड़ी शीघ्र गतिसे दौड़ा, उस आते हुये हाथीको देखकर, भीमसेनके आगे चलने वाले (अभिमन्यु) (पांचोंकेकय) (द्रौपदीकेपांचोंपुत्र) (राजादुश्शार्ण) (क्षत्रदेव) (चेदिकाराजा) (चित्रकेतु) इन सबने क्रोधयुक्त होकर दिव्य

अस्त्रोंके द्वारा, उस अकेले हाथीको चारों ओरसे घेरलिया वहमहा गजेन्द्र दशबाणोंसे घायल होकर रुधिरको डालता हुआ ऐसामहा शोभायमान हुआ, जैसे कि धातुओंसे चित्रित गिरिराज पर्व्वत शोभित होताहै, फिर पर्व्वतके समान हाथीपर सवार राजादुश्शार्ण भी भगदत्तके हाथीपर दौड़ा, तब उस हाथियोंके राजा सुप्रतीकने उस आतेहुये हाथीको ऐसेरोका जैसे कि किनारा समुद्रको रोकता है, महात्मा राजादुश्शार्णके हाथीको रुकाहुआ देखकर, पांडवोंकी सेनाने साधुसाधु करके प्रशंसाकरी इसकेपीछे बड़े क्रोधयुक्त राजा प्राग्ज्योतिषने चौदह तोमर उसहाथीके ऊपरफेंके वह सब तोमर स्वर्णमयी कवचको भेदन करके उसके शरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे सर्प वामीमें प्रवेश करताहै, फिर वहमहा घायल और पीड़ामान मदोन्मत्त हाथी बड़े भयानक शब्द को करके प्रथमतो सन्मुख हुआ फिर बड़ी शीघ्रतासे अपनी सेना को दबाता कुचलता हुआ महा व्याकुल होकर ऐसादौड़ा जैसे कि वायु अपने बलसे वृक्षों को गेरता हुआ जाताहै, उस हाथी के पराजय होनेपर पांडवों के महारथियोंने, बड़े उच्चस्वर से सिंहनादकिया और सब युद्धके निमित्त सन्मुख नियत हुये इसकेपीछे भीमसेनको आगे करके नाना प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको फेंकते मारते भगदत्त के सन्मुख गये हेराजा उन अत्यन्त क्रोधयुक्त आतेहुये असह्य लोगों के भयानक शब्दोंको सुनकर क्रोधसे निर्भय बड़े धनुषधारी भगदत्तने अपने हाथीको चलायमान किया, फिर अंकुशरूपी उंगलीसे पीड़ामानहाथी उसयुद्धमें संवर्त्तक अग्निकेसमान अत्यन्तक्रोधयुक्त होकर हजारोंरथ समूहोंको हाथीघोड़े सवार और पदातियोंसमेत मारता तोड़ता कुचलता हुआ इधर उधरको दौड़ा उसहाथीसे घायल प्रलयाग्निमें नियत होनेके समान क्रोधयुक्त भगदत्तके हाथसे पीड़ित अपनी सेनाको देखकर, बड़े क्रोधमें भराहुआ घटोत्कच भगदत्तके सन्मुख गया हेराजा उस विकटरूप क्रोधसेलालनेत्र पराक्रमी घटोत्कचने अपने रूपको भयानक करके पर्व्वतोंके भी तोड़ने

वाले बड़े उग्र शूलको हाथमें लिया, और हाथीके मारनेकी इच्छासे अकस्मात घुमाकर फेंका वहशूल चारों ओरसे अग्निकणों करके व्याप्तथा उस अकस्मात गिरतेहुये शूलको देखकर राजा प्राग्ज्योतिष भगदत्तने बड़े सुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूलको काटा तब वह सुनहरी शूल दोखण्ड होकरपृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि इन्द्रका बज्र आकाशसे गिरताहै हेराजा शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर और तिष्ठतिष्ठ इस बचनको कहनेलगा, उस आकाशसे गिरतीहुई बज्रके समान बरछीको देखकर उसराक्षसने बड़ीशीघ्रतासे उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया और शीघ्रही उसबरछीको घोटूपर रखकर राजाके देखतेही देखते तोड़डाला यहसबको आश्चर्य्यसाहुआ ६६ पराक्रमीराक्षस से किये हुये उसकर्मको देखकर आकाशमें गन्धर्वों समेत देवता और मुनिभी आश्चर्य्य करने लगे, हेमहाराज जिनमें भीमसेन अग्रगणनीयहै उनपांडव लोगोंने धन्य धन्य शब्दोंसे पृथ्वीको शब्दायमान किया, फिरबड़ा धनुषधारी प्रतापवान भगदत्त पांडवोंके उस अत्यन्त आनन्दकारी शब्दको सुनकर न सहसका, औरइन्द्रकेवज्र के समान बड़े धनुषको चढ़ाकर उसने पांडवोंके महारथियोंकाघुड़का, फिर निर्मल स्वच्छ प्रकाशमान नाराचोंको छोड़तेहुये भगदत्तने एकबाणसे भीमसेनको और नौबाणोंसे राक्षस का घायल करके तीनबाणसे अभिमन्युको पांचसे केकय लोगोंको व्याकुल किया और फिरअच्छे प्रकारसे खेंचे और झुकेग्रन्थीवाले बाणसे, क्षत्र देवकी दक्षिण भुजाको ऐसाघायल किया कि वहभुजा धनुष समेत अकस्मात पृथ्वीपर गिरपड़ी, फिर पांच बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रोंको घायल करके बड़े क्रोध से भीमसेन के घोड़ोंको मारा, फिर विशिखनाम तीनबाणोंसे सिंहके चिन्हरखनेवाली उसकी ध्वजाको काटा और दूसरे तीन बाणों से उसके सारथी को घायलकिया, हे भरतर्षभ युद्धमें भगदत्तसे अत्यन्त घायल और

पीड़ित वह विशोक सारथी रथके भीतर बैठगया, इसके अनन्तर रथिओंमें श्रेष्ठ महाबाहु भीमसेन बिरथहोकर बड़ी शीघ्रतासेगदा को हाथमें लेकर उस रथसे कूदा, हे राजा उस पर्व्वत के समान उठाईहुई गदाको देखकर आपके शूरोंमें बड़ा भय उत्पन्न हुआ, इसके पीछे श्रीकृष्ण भगवान् को सारथी रखनेवाला पांडवअर्जुन चारोंओरसे शत्रुओं को मारताहुआ वहां आपहुंचा जहां कि वह महाबली पुरुषोत्त पिता पुत्र भीमसेन और घटोत्कच प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्तसे युद्ध कररहे थे,हे भरतर्षभ वह अर्जुन युद्धकरतेहुए महारथी भाइयोंको देखकर अत्यन्त क्रोधसे बाणोंकी बर्षा करके युद्धमें प्रवृत्तहुआ, उसके पीछे महारथी राजा दुर्य्योधन ने बड़ी शीघ्रतासे रथ हाथी घोड़ोंसे संयुक्त सेनाको भेजा, फिर श्वेत घोड़े रखनेवाला पांडव अर्जुन बड़े वेगसे उस अकस्मात आनेवाली कौरवी महासेनाके सन्मुख गया, और राजा भगदत्त उस अपने हाथीके द्वारा पांडवोंकी सेना को मर्दन करताहुआ युधिष्ठिर के सन्मुख गया,इसके पीछे हे राजा धृतराष्ट्र वहां भगदत्तका और पांडवोंका युद्ध पांचालदेशी और केकयदेशी लोगों समेत बड़े २ अस्त्र शस्त्रोंके द्वारा महा भयानक हुआ, फिर भीमसेन ने भी उसी युद्धमें उन केशव और अर्जुन दोनों महात्माओं से इरावानके मारेजानेका जैसा वृत्तान्तहुआ सब यथार्थ बर्णन किया ८६ ॥

इतिश्रीमद्भारतेभीष्मपर्वणिषण्णवतितमोऽध्यायः ६६ ॥

सत्तानबेवांअध्याय ॥

संजय बोले हे राजा उस इरावान नाम पुत्रको मराहुआसुनकर बड़े खेद और शोकसे भरा, सर्पकी समान श्वासा लेताहुआ अर्जुन वासुदेवजी से यह बचन बोला कि परम चतुर बुद्धिमान सत्यवक्ता विदुरजीने पूर्व्व समयमें बड़े निश्चयसे इस कौरव और पांडवोंके महाघोर नाशको देखाथा इसी कारण उन्होंने राजाधृतराष्ट्र से निषेध कियाथा,, हे मधुसूदनजी इसके बिशेष बहुतसे बीर

लोग युद्धमें जैसे कौरवोंके हाथसे मारेगये उसीप्रकार युद्धमें मेरे हाथ से भी अनेक कौरव मारेगये, हे नरोत्तम यह सब युद्ध कर्म केवल धनही के निमित्त किये जातेहैं ऐसे धन आदि को धिक्कारहै जिसके कारण ऐसा जातिवालोंका नाश किया जाताहै, इसजाति के मरनेसे तो निर्धनही मरना श्रेष्ठहै हे श्रीकृष्णजी हम जात वालोंको मारकर क्या फल पावेंगे, दुर्य्योधन और सौबलकेपुत्र शकुनीके अपराध अथवा करणकी बुरी सलाहोंसे क्षत्रीलोगोंका नाश हुआ जाताहै, हे महाबाहु श्रीकृष्णजी अब मैं अच्छेरीतिसे जानताहूं कि राजा युधिष्ठिरने बड़ा अच्छा काम किया कि दुर्य्योधनसे आधेराज्य वा पांचही गांवोंकी अभिलाषा चाही और उस निर्बुद्धी ने वह भी उनकी अभिलाषा पूरी नहीं की मैं इस युद्धभूमिमें सोते हुए बड़े २ शूरबीर क्षत्रियोंको देखकर, अपनेको अत्यन्त बुराकह कर क्षत्रीकी जीविकाको अत्यन्त धिक्कारी देताहूं, हे मधुसूदन जो मैं ज्ञातिवालोंसे युद्धकरना न चाहूं तो सब क्षत्रीलोग मुझको युद्ध में असमर्थ समझेंगे इसकारण हे मधुसूदन आप घोड़ोंको शीघ्रही दुर्य्योधन की सेनामें लेचलो, अब मैं भी अपनी भुजाओंसे इसयुद्ध रूपी महासमुद्रको शीघ्रहीतरूंगाक्यों कि यह समय किसीस्थानपर भीअसामर्थ होनेका वर्त्तमान नहींहै,इस प्रकार के अर्जुनके वचनों को सुनकर शत्रु संहारी केशव जीने उन श्वेतरूप बायुके समान तीव्रगामी घोड़ों को हांका, इसके पीछे हे राजा आपकी सेना में ऐसा महा शब्द हुआ जैसे कि पर्वत के समय वायुसे उठे हुए वेगवान समुद्र का घोर शब्द होताहै, हे महाराज अपरान्हके समय भीष्मजीके और पांडव लोगों के युद्धमें बादल के समान शब्द हुए इसके पीछे हे राजा आपके पुत्र युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रक्षितकरके भीमसेन के सन्मुख ऐसे गये जैसे इन्द्र को रक्षित करके अष्ट बसु जातेहैं, फिर शान्तनु के पुत्र भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ (कृपाचार्य्य) (भगदत्त) (सुशर्मा) यह सब अर्जुन के सन्मुख गये और (कृतवर्मा)वा (वाल्हीक) सात्विकी के सन्मुखहुए और राजा अंब-

ष्टक अभिमन्यु के सन्मुख वर्त्तमानहुआ, इनके विशेष शेष बचेहुए शूरवीर बचेहुए महारथियों के सन्मुख गये फिर महा भयानकयुद्ध प्रारम्भ हुआ, हे राजा फिर भीमसेन आपके पुत्रोंको देखकरऐसा क्रोधित होकर अग्नि रूप हुआ जैसे कि हव्य को पाकर अग्नि प्रचंड होतेहैं, फिर आपके पुत्रों ने वाणों से भीमसेन को ऐसाढक दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल पर्व्वतको ढकदेतेहैं, २१ हेराजा आपके पुत्रों से बहुत ढकेहुए होठों को चाबते शार्दूल के समान गर्वित महाबली भीमसेन ने, अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र बाणसे व्यूढोरस्क को ऐसा गिराया कि वह मरगया, फिर दूसरे पीले तीक्ष्ण भल्लसे कुंडली को भी ऐसे गिराया जैसे कि छोटे मृग को सिंह गिराता है, इसके पीछे हे राजा बड़ी शीघ्रतासे भीमसेनने अत्यन्त तीक्ष्ण शिलीमुख बाणोंको हाथोंमेंलिया और आपके पुत्रोंपरछोड़े उन भीमसेन के चलाये हुए बाणोंने आपके महारथी (अनाधृष्ट) (कुंडभेद) (वैराट) (दीर्घलोचन) (दीर्घवाहु) (सुवाहु) कनक ध्वज पुत्रोंको पृथ्वीपर गिराया और सब वीर गिरकर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बसन्त ऋतुमें गिरे और पड़े हुए लाल २ फूल होतेहैं, २८ इसके पीछे आपके शेष बचेहुए पुत्र भीमसेन को काल के समान जानकर युद्धसे भाग गये, फिर द्रोणाचार्य्य ने आपके पुत्रोंके जलाने वाले भीमसेन को बाणों की वर्षा करके चारोंओरसे ऐसा ढकदिया जैसे कि बादल जलकी धाराओं से पर्वत को ढकता है, ३० वहां हमने कुन्तीकेपुत्र भीमसेनके पराक्रमकोदेखा कि जिसने द्रोणाचार्य्य के रोंकने पै भी आपके पुत्रोंको मारा, हे राजा जैसे कि आकाशसे गिरेहुए जलको गो वृषभ जंगलमें सहते हैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य्यके वाणोंको भीमसेनने सहा, फिर वहां भीमसेनने दूसरा अद्भुत कर्मकिया कि आपकेबेटोंकोमारकर द्रोणाचार्य्यकोभीरोंका, अर्जुनका बड़ाभाई आपके वीरपुत्रोंका महापीड़ा देनेवाला ऐसाहुआ जैसे कि मृगोंके मध्यमें महाबली व्याघ्रपीड़ादेनेवाला होताहै, जैसे कि भेड़िया पशुओंके बीचमें नियतहोकर पशुओं को व्याकुल और

चलायमान करता है इसी प्रकार भीमसेनने युद्धमें आपके पुत्रोंको भगादिया, फिर भीष्मजी भगदत्त और महारथी कृपाचार्य्यने युद्ध में वेगवान् अर्जुन को धारण किया अर्थात् उसके बाणोंको सहा, उस अति रथीने युद्धमें उन सबके अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे रोंककर आपकी सेनाके बड़े २ वीरोंकोमारा,और अभिमन्युने भी रथियोंमें श्रेष्ठ संसारमें विख्यात राजा अंबष्ट को शायकों से विरथ कर दिया,फिर उस यशस्वी अभिमन्यु से विरथ हुए राजा अंबष्ट ने शीघ्रही रथसे कूद महात्मा अभिमन्युके ऊपरअपने खड्गको फेंका और बड़ीशीघ्रतासे महाबली कृतवर्माके रथपर सवारहुआ,४० फिर युद्धमें महा कुशल शत्रुहन्ता अभिमन्युने उसगिरते हुए खड्ग को अपनी तीव्रतासे निष्फल किया,तब अभिमन्युसे निष्फल कियेहुए खड्गको देखकरसेनाके लोगोंने साधु साधु शब्द उच्चारण किया, औरजैसेकि धृष्टद्युम्न आदि बीर लोग आपकी सेनासे लड़े उसी प्रकारआपके सबबीर पुरुषभी पांडवोंकी सेनासे लड़े, हेभरतर्षभ वहां परस्पर में मारोंको मारते और कठिन कर्मों को करतेहुएआप के और पांडवों के बीरों के महा शब्दहुए, युद्धमें प्रशंसनीय वीर लोग परस्परमें बालोंको खेंचकर नखदांत और मुष्टिका और जांघों सेभी युद्धकरनेवाले हुए और अवकाशपाकर तमाचों तलवारोंऔर अच्छे नियत भुजोंसे बहुतोंने बहुतोंको यमपुरी में भेजा,उस युद्धमें पिताने पुत्रकोभी मारा अर्थात् सब मनुष्य सर्बांग रहित ब्याकुल होहोकरभीयुद्धको करतेहुए,हेराजा धृतराष्ट्रयुद्धमें मरेहुए वा घायल शूरबीरोंके सुनहरी पृष्ठवाले सुन्दरधनुष और तूणीर अथवासुनहरी रुपहरी पुंखवाले छोड़ेहुए तीक्ष्णधार बाणतेलसे शुद्धकियेहुए सर्पों के समान शोभायमान हुए, हाथीदांत की मूठवाले सुवर्ण से जटित खड्गधनुषढाल(पराश) (दुधारे) खड्ग) (शक्ति) कवच (भारीमुशल) (परिघ)(पट्टिश) भिण्डपाल अनेक प्रकारकेगिरेहुए धनुष औरअनेक प्रकारकी झूल चमर पंखे वा अनेक प्रकार के शस्त्रधारी महारथी और मरे मनुष्यभी जीवतेसे दिखाईदेतेहैं,हे राजागदाओंसे मथेहुए

अंगोंसमेत मुशलोंसे टूटेशिर घायल हाथीघोड़े और रथ पृथ्वीपर शयन कररहेहैं अर्थात्बिछेहुएहैं, उनहाथी घोड़े रथ और मनुष्यों से ढकीहुई पृथ्वी सबओरसे ऐसी शोभायमानहुई जैसेकि पर्व्वतोंसे शोभित होतीहै,युद्धभूमिमें गिरी हुई बरछी और दुधारे खड्गबाण तोमर पट्टिश परशु भल्ल लोहेके फरसे परिघ भिण्डपाल शतघ्नी और शस्त्रोंसे कटेहुए शरीरोंसेपृथ्वी सविस्तरविदित होतीहै अल्प शब्दके वा दीर्घशब्दके मृतक मनुष्योंके समूहोंसे व्याप्त हुई पृथ्वी महाशोभित विदितहुई, (तलत्र) (केयूररक्षक) और चन्दन चर्चित भुजाहाथियों की शुंढ़के समान कटी हुई जंघा और चूड़ामणि बंधे हुएउत्तम शूरोंके कुंडलधारी शिरोंसे पृथ्वी अपूर्वही शोभादेरहीहै, और हेभरतवंशी सुवर्णके फैलेहुए रुधिरसे भरेकवचोंसे पृथ्वी ऐसी प्रकाश मानहुई जैसेकि निर्द्धूम अग्नियों से शोभित होती है, टूटे धनुष तरकस और फैलेहुए सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे और चारों ओरसे घंटोंसे युक्तटूटे हुए रथोंसे वा बाणोंसे मारेहुए रुधिरमेंभरे जिनकी जिह्वा मुखसे बाहर निकलीथी उनघोड़ोंसे वा खेंची हुई पताकाओंसे और उपासंगिकध्वजाओं से और वीरोंकी खोपड़ियों से वा बिखरी हुई चोटियोंसे और शुंढ़टूटे हुए हाथियों से पृथ्वीऐसी शोभायमान हुई जैसेकि नानाप्रकार के आभूषणों से अलंकृतस्त्री शोभित होतीहै, वहां बहुत पीड़ित शुंढ़ोंसे शब्दकरते हुए पराशों समेत अन्यहाथियों से वहयुद्धभूमि ऐसी शोभित हुई जैसेकिचलते हुएपहाड़ोंसे शोभाय मान होतीहै, नानाप्रकार के रंगवालेहाथियों के कम्बलों से वापरश तोमरों से और वैडूर्य्यमणि वालेशुभ अंकुशों से वा चारोंओर से गिरेहुए गजेन्द्रों के घंटों से और चित्रविचित्र झूल और ग्रीवा ओंके भूषणोंसे वा हाथीके बांधने वाली सुवर्ण की रस्सियों से जंत्रों से बाजूबन्दों समेत गिरी-हुईभुजाओं से वा शुद्धतीक्ष्ण परशोंसे और निर्मलदुधारा खड्गोंसे बिचित्र बाणोंकीबर्षासे जोकि रांकनाममृगके रोमोंसेबनेहुए अत्यन्त मृदुथे वा राजाओंकी अमूल्य चूड़ामणियोंसे वाटूटेक्षत्र चामरव्यजन

और चन्द्रकमलके समान मुखोंके प्रकाशोंसे और हेमहाराज बीरों कीअच्छेप्रकारसेरचीहुईडाढ़ीमूछसे पृथ्वीऐसीहोगई जैसे कि नक्षत्र समूहोंसे प्रकाशमान आकाश होताहै, हेभरतर्षभ इसप्रकार आप कीऔरउन्होंकी यहदोनोंसेना युद्धमें परस्पर सन्मुखहोकर गर्दमई होगई, उनसेनाओंके थकने और तिर्रबिर्रहोने और मर्दन होनेपर,, रात्रिहोगई इसकेपीछे हमने चलनेवालों को नहीं देखा फिर कौरव पांडवोंने सेनाओंका बिश्रामकिया, रात्रिके प्रारंभ होजानेपर कौरव औरपाण्डव एकसाथहीसदैवकेसमान अपने२ डेरोंमेंनियतहुए७६॥

इतिश्रीमहाभारते भीष्मपर्व्वणि सप्तनवतितमोध्यायः ९७ ॥

अट्ठानबेवां अध्याय॥

सातवें दिनके युद्धकाप्रारंभ॥

संजयबोले किइसकेपीछे राजादुर्य्योधन और सुबलकापुत्रशकुनि (दुश्शासन)औरदुर्जयकर्ण इनसबनेमिलकरसलाहकरी किपाण्डवों कोसेनासमेत कैसेबिजय करनाचाहिये, यहसुनकर राजादुर्य्योधन महाबली शकुनि और कर्ण को सन्मुख करके उनसब मन्त्रियों से बोला, कि(द्रोणाचार्य्य)(भीष्म)(कृपाचार्य्य) (शल्य) (भूरिश्रवा) यहसब मिलेहुयेसे पांण्डवोंको युद्धमेंपीड़ानहीं देतेहैं इसका कारण मैंनहीं जानताहूं, वहसब बिनाघायल हुएही मेरोसेनाका नाशकरे डालतेहैं, हेकर्ण मैं युद्धमें अपनी सेना और शत्रोंसेनाश युक्तहोकर देवताओंसेभी अजेय शूरवीर पांडवोंसेनिरादर कियागयाहूं इससन्देहमेंपड़ा हुआ मैं युद्धको कैसे करूंगा हे राजा यहसुनकर कर्णने कहा, किहेभरतर्षभचिन्तामतकरो मैंतुम्हारे हतकोकरूंगा, शंतनुके पुत्र भीष्मजी शीघ्रहीयुद्धसेनिवृत्त होजायं, युद्धसेभीष्मजीके हटजाने और शस्त्रोंसेरहित होजानेपर मैंसबसोमकों समेत पांडवोंकोभीष्म जीकेदेखतेहुए ही मारूंगा हेराजा यहमैंतेरे सन्मुख सत्य संकल्पपूर्व्वक प्रतिज्ञाकोकरताहूं और शपथसे कहताहूंकिवह भीष्मनिश्चय करके पांडवोंपर दयाकरताहै, इस्से भीष्मजी युद्धमें उन महा

रथियोंके विजयकरनेको असमर्थहैं, यह भीष्म युद्धमें महा अहंकारी और युद्धहीको सदैवप्रियमानताहै, हेतातवहसन्मुख आयेहुएपांडवों को युद्धमेंकैसेविजय करैगा सोतुमशीघ्रही यहांसे भीष्मके डेरेमें जा कर, उनवृद्धगुरूको नमस्कारकरके शस्त्रोंकेत्यागनेके लिये कहौ हे राजाभीष्मजीके शस्त्र त्यागनेपर युद्धमेंसेना औरमित्रोंसमेत पांडवों कोमुझअकेले केही हाथसेमराहुआदेखोगे कर्णकेऐसे बचन सुनकर आपकापुत्र दुर्य्योधन,, अपने भाई दुश्शासन से बोला कि यात्रा का सब सामान सब प्रकार से तैयारहो, ऐसा दुश्शासनको कह दुर्य्योधनकर्णसेबोला, किहेशत्रुओंकेविजय करनेवाले मैं पुरुषोत्तम भीष्मको युद्धकेलिये समझाकर और प्रणाम करके शीघ्रही तेरेसन्मुख आऊंगा, उसकेपीछे भीष्मजीके हटजानेपर तुमयुद्धमें प्रहार करोगे, हेराजाऐसाकहकर आपकापुत्र अपने भाइयों समेत ऐसी शीघ्रतासे चला जैसे कि देवताओं समेत इन्द्र जाताहै, इसके पीछे राजाओंमें श्रेष्ठ सिंहसमान पराक्रमी दुर्य्योधनको,, भाई दुश्शासन ने शीघ्रही घोड़े पर सवार किया हेधृतराष्ट्र बाजूबन्द और मुकुट हस्तभूषणादिसे अलंकृत, वह दुर्य्योधन मार्गमें चलता हुआ किंडो के फूल और सुवर्ण के समान प्रकाशमान उत्तम चन्दनादि सेसुगंधित देह निर्मल बस्त्रादिकों को पहरे सिंह समान गतिसे ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि आकाशमें निर्मल किरणयुक्त सूर्य्य प्रकाशमान होताहै, भीष्मके डेरेमें जाते हुये उसनरोत्तमके, पीछेसबलोकों के बड़े धनुष धारी शूरबीर और महाधनुर्द्धर भाई लोग ऐसे चले जैसे कि इन्द्रके पीछे देवता चलते हैं, हेनरोत्तम इसी प्रकार कोई हाथीपर कोई रथपर कोई घोड़े पर सवार होकर उसके साथहुये, राजाकी रक्षाके निमित्त वह सुहृदजन जिन्होंने शस्त्रों को त्याग कर दियेथे एकसाथही ऐसे प्रकट हुये जैसे कि इन्द्र की रक्षाके निमित्त देवता स्वर्गमें प्रकट होते हैं, कौरवोंका राजा अपने सब कौरवलोगोंसे सेवित उनयशस्वी भीष्मजीके डेरेकोगया, उससमय उसकेपीछे तो वीरलोग और और पास सब भाई बन्धु अपने सु-

न्दर भुजदण्डोंमें अंजुली साधेहुये और देशनिवासियों से मीठेव-
चनोंको सुनता हुआ वह महा यशस्वी सूतमागधों से प्रशंसित
होकर उनसब अपनी प्रजाओंको प्रसन्न करने लगा वहां महात्मा
पुरुषों ने सुगन्धित बस्तुओं से पूर्ण सुवर्णके दीपकोंके द्वारा उसको
चारोंओरसे प्रकाशितकिया, फिरउनसुवर्णके बड़े२दीपकोंके प्रकाश
से महाप्रकाशमान, वहराजाऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि बड़े २
ग्रहोंसे संयुक्त चन्द्रमा प्रकाशमान होताहै उसस्थानपर सुनहरीसि-
तारआदि बाजेहाथोंमें रखनेवाले मनुष्य सबओरसे उन मनुष्योंको
मीठेवचनोंसे हटानेवालेहुए फिर राजा भीष्मकेशुभ डेरेको पाकर
घोड़ेसेउतर भीष्मके सन्मुख उनको नमस्कार करके उत्तम आसन
पर बैठगया, वहडेरासुनहरी उत्तम बिछौनों से सबदिशामें कल्याण
रूपथा उसमें बैठेहुए भीष्मजी से राजा दुर्य्योधन हाथजोड़े हुए
गद्गदवाणी से बोला कि हे शत्रुहंता हमलोग युद्ध में आपसे रक्षित
होकर इन्द्रसमेत देव दानवोंके भी बिजयकरनेकी अभिलाषा रखते
हैं तोइन पांडवों को उनके सहायकों समेत बिजय करना कितनी
बातहै हेगांगेय भीष्मजी आप मुझपर कृपा करने को योग्य हों,
आप उनबीर पांडवों को ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानवलोगों
को मारता है हे महाराज मैं सब सोमकों को मारूंगा फिर करुषों
को और पांचालों समेत केकय लोगों को भी मारूंगा आप अपने
बचन को सत्य करके सन्मुख आये हुए पांडवों को मारो और
बड़े धनुष धारी सोमकोंको भी मार कर अपने बचन कोसत्य करो,
हे भरतबंशी भीष्म पितामह दयासे या मेरे वैरभावसे अथवा मेरे
प्रारब्ध हीनतासे जो आप पांडवोंकी रक्षाकरते होतो युद्धमें शोभा
पानेवाले कर्ण को आज्ञादो, वह कर्ण युद्धमें सबसेना और सुहृदों
समेत पांडवोंको मारेगा, आपकापुत्र इस प्रकार के बचन कहकर
फिर उस सत्य पराक्रमी भीष्म जी से कुछ नहींबोला ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व.णिअष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

—*—

निन्नानवेका अध्याय॥

संजय बोले कि आपके पुत्रके वचनरूपी भालोंसे अत्यन्त घायल और वचन रूपी सलाका से भिदेहुए सर्पकी समान श्वासलेते बड़े साहसी महा कष्ट में पड़े हुए भीष्मजी बड़ी बिलम्ब तकशोच रूपी ध्यानमें मग्न होकर अपने क्रोधसे देवदनुज मनुष्योंकोभस्म करने वाले बड़े क्रोधसे दोनों नेत्रोंको खोलकर, बड़ी मधुरवाणी द्वारा आपके पुत्र से वचन बोले, कि हे दुर्य्योधन इस प्रकार से अपनी सामर्थ्यके अनुसार उपाय कर के तेरेहितकेलिये अपनेप्राणों कोहोमतेहुए मुझको तूअपने वचनरूपी भालोंसे क्यों घायलकरता है, जिस दशामें कि शूरवीर पांडवों ने युद्धमें इन्द्र को विजय करके खांडव बनमें अग्निको तृप्त किया और हे महाबाहु जब गन्धर्वोंके पराक्रम से तुझ पकड़े हुएको तेरे भाईबन्धु और कर्णआदि बड़े २ शूरोंके भागजाने पर अकेले पांडव अर्जुन ने छुटाया यही दृष्टान्त तुमको शोचने के योग्यहैं, और विराट नगरमें हम सबके सन्मुख अकेला अर्जुनही हुआ वहभी दृष्टांत योग्यहै हेसमर्थ युद्धमें तेरेशूर भाइयों के भागजानेपर युद्धदुर्मद द्रोणाचार्य्य और मुझको संग्राम में विजय करकेवस्त्र उतारलिये वहभी दृष्टान्त योग्यहै, इसीप्रकार गौ हरण में भी बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यकोभी विजय किया वह भी दृष्टान्त ठीकहै, जब कि सब पुरुषों में बड़े धनुर्द्धर कर्णको विजय करके उत्तरा के लिये वस्त्र दिये वहदृष्टान्त भी बहुत है, अर्जुन ने इन्द्रसे भी कठिनतापूर्व्वक बिजय होनेवाले निवात कवच नाम राक्षसोंको संग्राममें विजयकिया वहभीदृष्टान्त बहुत है, तब ऐसा कौनसा पुरुष है जो उन वेगवान् पांडवोंकोयुद्ध में विजय करने को समर्थ होय अरे दुर्य्योधन जिसकी रक्षा करने वाला जगत् का स्वामी शंख चक्र गदा पद्म धारण करने वाला, महा शक्तिमान् बासुदेव सृष्टि संहार का करने वाला सर्वेश्वर देव देव परमात्मा सनातन है जिसको कि नारदादि महर्षियों ने भी

तुझको समझाया है ऐसा जानकर भी हे दुर्बुद्धी तू मोह से कहने और न कहने की बात को भी नहीं जानता है मरने की इच्छा रखनेवाला पुरुष जैसे कि सब वृक्षोंको स्वर्णमयी देखताहै उसीप्रकार हे गान्धारीके पुत्र तू भी विपरीत बातोंको देखताहै, तैंने आप पाण्डव और सृंजियोंसे बड़ी भारी शत्रुताकरीहै इससे युद्ध भूमिमें उनसे तू संग्रामकरियो हम भी देखेंगे, हे नरोत्तम मैं शिखण्डीको छोड़कर सन्मुख आयेहुए सब सोमकोंको और पांचालोंको मारूंगा, मैं युद्धमें उनके हाथसे मराहुआ यमलोकको जाऊंगा या मैंही उनको मारकर तुझको प्रसन्न करूंगा, क्योंकि प्रथम राजमहलनें शिखण्डी स्त्रीहोकर उत्पन्न हुआथा फिर बरदानसें पुरुष हुआहै निश्चयकरके यह शिखण्डी स्त्री है इससे हे दुर्य्योधन मैं अपने प्राणजातेहुए भी उसको कभी न मारूंगा जोइस को ईश्वरने प्रथम स्त्री उत्पन्न किया था इसीसे यह शिखण्डी अब भी निश्चय स्त्री है हे गान्धारीके पुत्र आनन्दसे शयनकर मैं प्रातःकालही ऐसा महाभारी युद्धकरूंगा जिसको मनुष्य जबतक पृथ्वी नियतरहैगी तब तक कहाकरेंगे, हे राजा भीष्मजी से ऐसे बचनोंको सुनकर आपका पुत्र मस्तकसे उनको दण्डवतकरके डेरे से बाहरनिकल अपने निवासस्थानको गया, और सब साथके लोगों को बिदाकरके शीघ्रही अपने डेरेमें प्रवेश कर गया, वहां रात्रिभर सोया, फिर प्रातःकाल उठकर उसने राजाओं को आज्ञाकरी कि सेनाको तैयारकरो अब युद्धमें क्रोधहोकर भीष्मजी सोमकोंको मारेंगे, हे राजा रात्रिमें दुर्य्योधनके उस बड़े भारी बिलाप को सुन और अपना निरादर समझ बड़े बैराग्यरूप होकर दूसरेका दोष वर्णनकरनेको निन्दाकरके युद्धमें अर्जुनसे संग्रामकरनेके अभिलाषी भीष्मजीने बड़ा ध्यानकिया और दुर्य्योधनने शरीर की चेष्टा से भीष्मजीकी बड़ी चिन्ताको जानकर दुश्शासनसेकहा कि हेदुश्शासन भीष्मजीके रक्षाकरनेवाले रथ बहुत शीघ्र तैयारहों और बाईस अनीक सेनाको भी प्रेरणाकरदो, कि बहुत कालसे बिचारकिया

हुआ सम्पूर्ण सेना समेत पांडव लोगों का मरण अब अच्छीतरह से प्राप्तहुआ उस स्थानमें भीष्मजीकी रक्षाको ही मैं बड़ा काम जानताहूं वह रक्षित कियाहुआ भीष्म हमारा सहायक होकर पांडवोंको मारेगा, क्योंकि इसने बड़े शुद्ध अन्तःकरणसे कहा है कि मैं शिखण्डीको नहीं मारूंगा इस निमित्त कि वह पहले स्त्रीथावह युद्धमें मुझसे त्याज्यहै, और सब संसार इस बातको जानताहै कि मैंने पिताकी प्रीतिके निमित्त राज्यकरनेको और स्त्री संग्रहको त्याग किया है इस निमित्त हे नरोत्तम मैं किसी दशा में भी युद्धमें इस जन्मकी स्त्री को वा पूर्व्व जन्मकी स्त्रीको कभी न मारूंगा यह मैं सत्य २ तुमसे वर्णन करताहूं, हे राजा यह शिखण्डी जिसको कि आपने सुनाहै वह स्त्रीथा फिर उद्योगकरनेसे यह शिखण्डनीनाम से उत्पन्नहुई जो कन्याहोकर मुझसे युद्धकरेगा उसपर मैं कभी अपनाशस्त्र न चलाऊंगा, हे तात मैं पांडवोंकी विजय चाहनेवाले क्षत्रियोंको या युद्धमें सन्मुख आयेहुए अन्य क्षत्रियोंको भी संग्राम करके मारूंगा, यह भरतर्षभ गांगेय भीष्मजीने मुझसे कहाहै इस से मैं सर्वात्मभावसेही भीष्मजीकी रक्षाको चाहताहूं क्योंकि बिना रक्षाकियेहुए सिंहको भेड़िया भी मारसक्ताहै तात्पर्य यह है कि भेड़ियारूप शिखण्डीके हाथसे सिंहरूप भीष्मजीको कभी न मरवाना चाहिये, मेरा मामा (शकुनि)(शल्य) (कृपाचार्य)(द्रोणाचार्य) (विविंशति) यह सब मिलकर बड़ी सावधानीसे भीष्मजी की रक्षा करें उसके रक्षित होनेसे अवश्य विजयहोगी, तब तो सब लोगों ने दुर्योधनके इस बचनको सुनकर सब ओरसे रथोंकेसमूहोंसे भीष्मजीकी रक्षाकरी, फिर भीष्मजीकी रक्षाकरके आपके बेटे पृथ्वी और आकाशको कंपायमान करके, पांडवोंको भयभीत करातेहुए बड़े प्रसन्नहोकर चले, वह सब महारथी बड़ीरीतिसे नियतकिये हुए रथियों वा हाथियों से भीष्मजीको मध्यमें रक्षित करके कवच और अस्त्र शस्त्रोंको धारण कियेहुए ऐसे सब इकट्ठे हुए जैसे कि देवता और असुरोंके युद्धमें देवता और बज्रधारी इन्द्र कूदे यहसब

इसप्रकारसे उस महारथीको रक्षितकरके नियतहुए तदनन्तरराजा दुर्योधन ने फिर अपने भाई से कहा, कि अर्जुन के बामओर का रक्षक युधामन्यु और दक्षिणभागका उत्तमौजा यह दोनों हैं और अर्जुन भी शिखण्डीका रक्षकहै, वह अर्जुन से रक्षित और हम से त्यागाहुआ शिखण्डी जैसे भीष्मको और हमको नहीं मारे हेदुश्शासन तुम वही उपायकरो, फिर आपका पुत्र दुश्शासन भाईकेइस बचनको सुनकर भीष्मजीको आगेकरके सेनाके साथमें चला, और रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन रथियोंके समूहोंसे भीष्मजीको चारोंओर से रक्षित देखकर धृष्टद्युम्न से बोला, कि हे राजा धृष्टद्युम्न अब नरोत्तम शिखंडीको भीष्मकेसन्मुख नियतकरो मैं उसकारक्षकहूं५१॥

इति श्रीमद्भारते भीष्मपर्वणि नवनवतितमोऽध्यायः ॥ ९९ ॥

सौका अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे शंतनुकेपुत्र भीष्मजी अपनीसेना को साथलेकर चले और अपनी बुद्धि से सर्वतोभद्र नाम व्यूह को तैयारकिया, और (कृपाचार्य्य) (कृतबर्म्मा) (महारथी शैव्य)(शकुनि) सैंधव (कांबोज) (सुदक्षिण) यह सब भीष्मजी और आप के पुत्रोंसमेत सेनाके अग्रगामी होकर व्यूहके मुखपर नियतहुए और (द्रोणाचार्य) (भूरिश्रवा) (शल्य) (भगदत्त, यह सब शस्त्र औरकवचोंको धारणकरके व्यूहके दक्षिण भागमें रक्षकहोकर नियत हुए, और अश्वत्थामा(सोमदत्त)और दोनों अवन्ति देशके महारथी राजा यह सबबड़ीसेनासमेत व्यूहके बामभागमें रक्षकहुए, और हे भरतबंशी धृतराष्ट्र राजादुर्योधन सब ओरसे त्रिगर्त्त देशियोंसे संयुक्तव्यूह के मध्यमें पांडवोंकेसन्मुख नियतहुआ, रथियोंमें श्रेष्ठ अलंबुष और महारथी श्रुतायु यह दोनों कवच शस्त्रधारी व्यूहकीसब सेनाओं के पीछेनियतहुए, हेभरतर्षभ उससमय आपके शूरबीर शस्त्र कवचों से अलंकृतऐसे दृष्टपड़े जैसेकिअत्यन्त संतप्त करनेवाली अग्निघां होतो हैं, इसके पीछे राजायुधिष्ठिर भीमसेन और माद्रीकेदोनोंपुत्र नकुल

और सहदेव भी शस्त्र और कवच धारण कियेहुए बहुत शोभा युक्त अपने व्यूहकी सब सेनाओं के आगे नियत हुए और (धृष्टद्युम्न) (विराट) (महारथी सात्विकी) यह सब शत्रुहन्ता बीर बहुतसी सेना समेत नियत हुए (शिखंडी) (घटोत्कच) राक्षस, महाबाहु चेकितान, कुन्तभोज यह सब भी बहुत सी सेना समेत युद्धमें उपस्थित हुए, और महा धनुषधारी अभिमन्यु और महा बली द्रुपद और केकयलोग शस्त्रादिसे अलंकृत होकर युद्धके निमित्त नियतहुए इसरीतिसे वह शूरवीर पांडवलोगभी दुर्जय व्यूहको रचकरशत्रुओंके सन्मुख संग्राम भूमिमें युद्ध के निमित्त वर्त्तमान हुए, हे राजा फिर युद्धमें कुशल आपके पुत्र और सेना समेत सब राजा लोग भीष्म जीको आगेकरके संग्रामभूमिमें पांडवोंके सन्मुख गये, इसी प्रकार पांडव लोगभी भीमसेन को आगे करके भीष्मसे लड़ने की इच्छा से विजयाभिलाषी होकर सिंहनाद पूर्व्वक किलकिला शब्दों को करते और भेरी मृदंगादि बाजोंसे और दुन्दुभियों से शत्रुओं को भय उत्पन्न करते हुए बड़े प्रसन्न चित्त कौरवों के सन्मुख वर्त्तमान हुए, पृथक् २ रीतिसेप्रत्येकसे मंझायेहुए सिंहनादोंसे गर्जना करते हुए हम सब लोग बड़ी शीघ्रता से उनके सन्मुख गए, और अकस्मात् अत्यन्त क्रोधित होकर बड़े कठोर शब्दों को करते हुए परस्पर में सन्मुख दौड़कर बड़े २ प्रहार करनेलगे इसके होतेही पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई, और बड़े भारी कठोर शब्दों को करतेहुए पक्षी घूमने लगे, और बड़ा प्रकाशमान सूर्य्य उस समय प्रभा से रहित हुआ और बड़ी भयानक कठोर शब्दवाली तीक्ष्ण वायु चली, हे महाराज वहां घोरनाश के शूचक नाना रूपधारी भयानक शृगालों के समूह भी कठोर शब्दों को करने लगे, और सब दिशाओं में दिग्दाह हुआ और धूलकी वर्षाहुई और रुधिर से संयुक्त हाड़ों की वर्षा हुई, और रोते हुए वाहनों ने बड़े ध्यान में प्रवृत्तहोकर मूत्र और बिष्टाको करदिया, और हे राजा मांसभक्षी राक्षसों के भी बड़े २अशुभ शब्द वहां गुप्त सुने गए, और गोमायु

वा कौवोंके झुंडभी गिरते हुए दृष्ट पड़े और नाना शब्दों से कुत्ते घूंसने और रोने लगे, और सूर्य्य को आच्छादित करके बड़े भारी उल्का पातभी पृथ्वी पर हुए इसके पीछे पांडवों की और दुर्योधन की बड़ी सेना शंख और मृदंगोंके शब्दों से ऐसी कम्पायमान हुई जैसे कि वायुके वेगसे बन कम्पायमान होते हैं, राजा हाथी घोड़े और रथोंसे पूर्ण अशुभ मुहूर्त्त में आई हुई सेनाओं के ऐसे कठोर शब्द हुए जैसे कि वायुसे उठे हुए समुद्रके शब्द होतेहैं ३० ॥

इतिश्रीमद्दाभारतेभीष्मपर्वणि शततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौ एकका अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़ा रथी और तेजस्वी अभिमन्यु पिंगल वर्णके उत्तम २ घोड़ों के द्वारा बादल की जलधाराओंके समान बाणोंकी वर्षा करता हुआ दुर्य्योधन की सेनाके सन्मुख गया उसके हटाने को आपके महाबली शत्रुहन्ता महा उत्तम २ शस्त्रधारी शूरवीर लोगभी समर्थ नहींहुए, हेराजाउसके छोड़े हुए शत्रुसंहारीबाणों ने युद्धमें अनेक क्षत्रियों को मारकर यम पुरको भेजा, फिर युद्धमें क्रोधित अभिमन्युने यमदण्ड और ज्वलित सर्पाकार घोरबाणों को छोड़कर बड़ीशीघ्रता से रथीसमेत रथियों को और सवारोंके साथ घोड़ोंको और हाथियों समेत हाथीवानों को चूर्णकर डाला, युद्धमें ऐसेमहा कर्मकरने वाले अर्जुनके पुत्र अभिमन्यु की सब राजाओंने बड़ी प्रसन्न चित्ततासे धन्य २ कर के प्रशंसा करी हे राजा उस सुभद्रा के पुत्रने उन सेनाओं को ऐसे घायल किया जैसे कि वायु आकाशमेंरुईको चारोंओरको व खेरदेताहै, और हे राजाउस अभिमन्युसे भगीहुई तुम्हारी सेनाको कोईरक्षक ऐसेनहींमिला जैसेकि कीचमें फंसे हुए हाथीकोकोई रक्षकनहीं मिलसक्ता, फिरवह अभिमन्यु आपकी सब सेनाको भगाकर निर्द्धूम अग्निके समान क्रोधमें भराहुआ स्थिर होगया १० हे राजा इसको देखकर आपके शूर बीरलोग ऐसेनहीं सहसके जैसे कि कालके प्रेरित पतंग अत्यन्त

प्रकाशमान अग्निको, फिर वहपांडवों का महारथी उग्रधनुषधारी सबशत्रुओं को घायल करता हुआ वज्रधारीइन्द्रके समान दृष्टपड़ा, और उसका सुवर्णकी पृष्टवाला धनुष दिशाओंमें घूमता हुआऐसा दिखाई दिया जैसेकि बादलोंमें प्रकाशमान बिजलीहोतीहै,अत्यन्त तीक्ष्ण नोक पीतरंग विषके भरेहुए बाणयुद्ध में घूमने लगे हे राजा जैसेकि फूले वृक्षवाले बनसे भवरोंके समूह निकलते हुए दृष्टनहीं आते उसी प्रकार मनुष्योंने सुनहरी अंगवाले रथोंसे घूमते उस महात्मा अभिमन्यु का अन्तर अर्थात् अवकाश नहीं देखा, कि वहबड़ा धनुषधारी उत्तमहस्त लाघव करनेवालाउन (कृपाचार्य्य) (द्रोणाचार्य्य) (अश्वत्थामा)(वृहद्वल) और जयद्रथको मोहित करके अत्यन्त तासे घूमा, हे धृतराष्ट्र आपकी सेनाभस्म करनेवाला उस अभिमन्युका धनुष सूर्य्य मंडलके समान मंडली करने वालाहमने देखा,बड़े २ शूरबीर क्षत्रियोंने उस वेगवान् शीघ्रगामी कठिन दौड़ने वाले अभिमन्यु को देखकर उसके कर्मों से इसलोकको दो अर्जुन का रखने वाला माना, हे महाराज उस अभिमन्यु सेपीड़ा मान्आपकी सेनास्थान २ परऐसी अत्यन्ततासे घूमीजैसे कि तरुणताके मदमें भरी हुई स्त्री इधर उधर घूमती है, फिर सेना समेत महारथियोंकोघायल औरकम्पायमान करके उस अभिमन्युने अपने सुहृदोंको ऐसा प्रबलकिया जैसेकिइन्द्रने मयदैत्यको जीतकर सबको प्रसन्न कियाथा २० औरयुद्धमें अभिमन्युसे भगाईहुई आपकी सेनाओंने ऐसीपीड़ाके भयानक शब्द किये जैसे कि भयकारी बादलकी गर्जनाके शब्दहोतेहैं, इसरीति के आपकी सेनाके शब्दों को सुनकरराजादुर्य्योधन आर्य्यभृङ्गनाम राक्षससेबोलाकिहे महाबाहो यह दूसरे अर्जुन के समान अभिमन्यु क्रोधसे सेनाको ऐसे भगाये देताहै जैसे कि देवताओं की सेनाको वृत्रासुर भगाता था तुझसर्ब विद्या और शस्त्र सम्पन्न के सिवाय इस युद्धमें इसका मारनेवाला मुझको कोई नहीं दिखाई देता सो तुम शीघ्रही जाकर इस अभिमन्यु को मारो, और हम सब भीष्म और द्रोणाचार्यको आगेकरके

अर्जुन को मारेंगे, इस प्रकारसे वह आज्ञा दिया हुआ प्रतापी बलवान् राक्षसाधिप वर्षा ऋतुके बादल के समान बड़े शब्दोंको करता हुआ आपके पुत्र की आज्ञा से शीघ्रही युद्धभूमिमें गया, हे राजा उसके भयंकर शब्दसे पांडवों की बड़ी सेना सब ओरसेऐसी चलायमानहुई जैसेकि वायुसे उठायाहुआ समुद्र चलायमान होता है,२८बहुतसे मनुष्यतो उसके भयकारी शब्दहीसे अपनेप्यारे जीवनको त्यागकर पृथ्वीपर गिरपड़े,२९परन्तुशूरवीर अभिमन्यु बड़ी प्रसन्नता से युक्त बाणों समेत धनुषको हाथोंमें लेकर नाचताहुआ सारथमें बैठकर उस राक्षसके सन्मुखपहुंचा३०इसकेपीछे उसक्रोध युक्त राक्षस ने युद्धमें अभिमन्यु को पाकर उसकी समीपी सेनाको घायल किया इस रीतिसे उस पांडवकी घायल और भागे हुईबड़ी सेनाको देखकर वह राक्षसयुद्धमें उसकेसन्मुख ऐसेगया जैसे कि देवताओं की सेनाके सन्मुख दैत्यों का राजा बलि गयाथा, हेधृतराष्ट्र युद्धमें उस घोर राक्षस ने सेना का बड़ा मर्दन किया, और अपने पराक्रम को दिखाकर हज़ारों बाणों को फेंका तब तो वह पांडवी सेना भयसे महा व्याकुल होकर भागनिकली,जैसेकि हाथी कमलनियों को मर्दन करता है उसी प्रकार सेना को मर्दन करके युद्ध भूमिमें द्रौपदीके पुत्रोंके सन्मुख गया तब वह बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले महाबली द्रौपदीके पुत्रभी महा क्रोधरूप होकर उसके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि पांचग्रह सूर्य्य को सन्मुख से घेरते हैं, फिर उन पांचों महाबली शूरों ने उसको ऐसा घायल किया जैसे कि युगके अन्तमें अर्थात् प्रलय होने के समय में पांच भयकारी ग्रह चन्द्रमा को पीड़ा देते हैं, इसके अनन्तर महाबली व्रतबंधने अत्यंत शीघ्रता से तीक्ष्ण धारवाले लोहे के बाणों से उस राक्षस को अत्यत घायलकिया,उन बाणों से कटेहुए कवच वाला वह राक्षस ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य्यकी किरणोंसे गर्भितबड़ा बादल होताहै४० हे राजा वहआर्यशृंग राक्षस सुवर्ण जटित बाणों से भिदाहुआ ऐसा शोभित विदित

होताथा जैसेकि प्रकाशित शिखरवाला पर्व्वत शोभायमान होताहै, फिरउन पांचों भाइयोंने उस राक्षसको बड़े तीक्ष्णस्वर्णमयी बाणों से घायल किया ४२ तबतो महाविषभरे सर्पों के समान बाणों से विदीर्णवह गजेन्द्ररूप राक्षस बड़ाक्रोध युक्तहोकर एक मुहूर्त्तमात्र तो अचेत होगया, फिर उसक्रोधसे द्विगुणित पराक्रम वालेने उनके बाणधनुष और ध्वजाओं को काटा और रथमें बैठेहुएनाचते और आश्चर्य्य करते महारथी अलंबुषने प्रत्येक को पांच २ बाणों से घायल करकेबड़ी शीघ्रतासे उन महात्माओंके घोड़े और सारथियों को मारा, और बहुत प्रकारके अनेकरूपके हजारों बाणों से उनके शरीरोंकोघायलकिया इन सबकर्मोंको करके उनसबके मारने की इच्छा करकेवह राक्षसबड़ी तीव्रतासे उनकेपास गया, अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु उस दुष्टात्मासे अपने भाइयोंको पीड़ित देखकरशीघ्रही उसके सन्मुख गया, वहां उनदोनोंका ऐसामहा युद्धहुआ जैसा कि इन्द्र और वृत्रासुरका हुआ था इस युद्धको आपके सबपुत्रोंने और महारथी पांडवोंने देखा कि दोनों परस्पर में महाक्रोध युक्त और लाल २ नेत्रकरके अत्यन्त लड़े, और युद्धमें कालाग्नि के समान दोनों बीरोंने अपने को देखाफिर दोनोंका भयकारी युद्धऐसाअप्रिय जानपड़ा जैसा कि पूर्व्व समय में देवता और असुरोंके युद्धमेंइन्द्र और सम्बरका हुआथा ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकाधिकशततमोऽध्यायः १०१ ॥

एकसौ ढोका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हेसंजय युद्धमें अलंबुष राक्षस किस रीतिसे पांचों महारथियोंको मारता हुआ शूरबीर अभिमन्युके सन्मुखहुआ और शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला अभिमन्यु कैसे २ उस अलंबुष से लड़ा इसको यथार्थतासे मुझसे बर्णनकरो, और रथियोंमें श्रेष्ठभीम सेन (घटोत्कचंराक्षस) (नकुल) (सहदेव) और महारथी सात्विको यह सबकैसे २ लड़े और अर्जुन के युद्धमें मेरीसेना में क्या २

हुआ इन सब बातोंकोमेरेआगे पूरा २ बर्णन करो, संजय बोलेकि हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र मैं उस रोम हर्षण युद्धको तुमसे कहताहूं जो उस राक्षस और अभिमन्युने कियाहै, और जैसेकि पांडव अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और सात्विकी ने युद्धमें पराक्रम कियाहै, और जो २कठिन कर्म आपके उन शूरोंने किया जिनके कि अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य्य थे उसको और जैसे२फिर अलंबुष युद्धमें बड़े शब्दसे गर्जकरवा थड़ककर महारथी अभिमन्युके सन्मुखगया और बड़ी तीव्रता से तिष्ठ २ शब्द करके सिंह के समान गर्जना करताहुआ अभिमन्यु पिताके महाशत्रु अलंबुषकेसन्मुख जैसे गया तदनन्तर रथियोंमें श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले नर और राक्षस युद्धमें रथोंकेद्वारा देवदानवके समान सन्मुख हुए मायाका जानने वाला राक्षस और अर्जुनकापुत्र अभिमन्यु यहदोनों दिव्यअस्त्रोंके जानने वालेथे,, फिर अभिमन्युने तीनतीक्ष्ण बाणों से अलंबुषको घायल करके पांचबाणोंसे बिदीर्णकिया, और अत्यंत क्रोधयुक्त अलंबुषने भी नौबाणोंसे अभिमन्युके हृदयको ऐसाघायलकिया जैसेकि चांक से बड़े हाथीको करतेहैं १३ हेभरतर्षभ इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले अलंबुषने अपने हजारबाणों से अभिमन्यु को पीड़ामान् किया, फिर महाक्रोध भरे अभिमन्यु ने भी ग्रन्थीवाले नौबाणों से राक्षसोंके राजाको बड़ीछातीपर घायल किया, वह बाण मर्मों में प्रवेशकरके शीघ्रही उसकी देहमें घुसगये उनबाणोंसे वह राक्षस सबशरीरमें घायलहोकर ऐसा शोभायमान हुआ, जैसेकि फूलेहुए किंशुकवृक्षोंसे पर्व्वत शोभित होताहै और सुनहरी पुंखवाले बाणों सेउसकी ऐसी अद्भुत शोभाहुई जैसे अग्निवाले पहाड़की होती है इसकेपीछे महाक्रोध युक्त असह्य अलंबुषने बाणोंसे महाइन्द्रके समान अभिमन्युकोढकदिया फिरउसकेबाण अभिमन्युको घायल करके पृथ्वीमें घुसगये इसीप्रकार अभिमन्युके छोड़े हुए सुवर्ण जटित बाणभी अलंबुषको घायल करके पृथ्वीमें प्रवेश करगये फिर अभिमन्युने युद्धमें अच्छेचुकेहुए ग्रन्थीकेबाण अलंबुषके ऐसेमारे जिनके

मारे उसने ऐसेमुख फेर लिया जैसे कि इन्द्रके मारे हुए बाणों से मयदैत्यने मुखफेरलियाथा फिर राक्षसाधिपने अपनी तामसी बड़ी मायासे अन्धकारकोप्रकटकिया उसअन्धकारसे वहसबगुप्तहोगये, तबन राक्षसको नअपने शूरवीरोंको नशत्रुओंको अभिमन्युने देखा, इसमहा भयकारी प्रबल मायाको देखकर अभिमन्युने प्रकाशमान सौरनाम अस्त्रको प्रकटकिया तबसब संसार दीखनेलगा २५ और प्रकाशके होतेही उसनिर्बुद्धी दुरात्मा राक्षसकी प्रबल मायाको दूर करके बड़े बीर पराक्रमी नरोत्तम अभिमन्युने उस राक्षसा धिपको युद्धमें गुप्तग्रन्थी वालेबाणोंसे ढकदिया फिरउस राक्षसने अनेकर मायाकरी परन्तु सबमायाओंको उस महाअस्त्रज्ञ अभिमन्युने दूर किया फिर मायाके नाशहोतेही सामकोंसे घायल होकर वहराक्षस बड़ाभयभीत होके रथको उसीस्थान में छोड़कर भागगया फिर उसकठिन युद्धकर्त्ता राक्षसके शीघ्रबिजय होनेपर युद्धमें प्रवृत्तहोकर अभिमन्युने आपकी सेनाका ऐसा बिध्वंसनकिया जैसे कि मदोन्मत्त बनबासी गजेन्द्र निर्बल कुमुदिनियोंके बनको बिध्वंस कर ताहै ३० इसके पीछेशन्तनुकेपुत्र भीष्मजीने अपनी सेनाको भगा हुआदेखकर बाणोंकी तीव्रवर्षासे अभिमन्युको ढकदिया, फिरधृतराष्ट्रके महारथी पुत्रोंने उसबीर को चारों ओर से घेरकर युद्धमें अनेकोंने अकेले को बहुतसे बाणों से अत्यन्त घायल किया, उस पिता के समानबली वा बल पराक्रम में बासुदेवजीके तुल्य सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बीर अभिमन्युने उन रथियों के सन्मुख पिता और मामा के समान अनेक प्रकार के कर्मोंको किया,,उसके पीछे पुत्रको चाहते और आपकी सेनाको मारते क्रोध युक्त बीर अर्जुनने युद्धमें अपने पुत्रको पाया, इसी प्रकार अन्य अपने बीरों को भी सन्मुख लड़ते हुए पाया और आपके पिता देवब्रतने लड़ाई में अर्जुनको ऐसे सन्मुख पाया जैसे कि राहु सूर्य्य को सन्मुख पाता है, इसके पीछे रथ हाथी और घोड़ों समेत आपके पुत्रों ने युद्धमें भीष्मजी को चारों ओरसे रक्षित किया, हे राजा धृतराष्ट्र इसीप्र-

प्रकारसे अलंकृत पांडव अर्जुनको घेरकरबड़े युद्धकेलिये प्रवृत्तहुए, इसके पीछे कृपाचार्य्यने पच्चीस बाणों से भीष्मके आगे वर्त्तमान अर्जुनको ढकदिया, फिर सात्विकीने अर्जुनके प्रियकरनेकी इच्छासे सन्मुख जाकर उनको तीक्ष्णबाणोंसे ऐसा घायल किया जैसे कि शार्दूल हाथीको घायल करताहै ४० और अत्यन्त कोपयुक्त शीघ्रताकरनेवाले कृपाचार्य्यजीने भी कंकपक्षयुक्त नौबाणोंसे सात्विकी को हृदयमें घायलकिया फिर बेगवान् क्रोधभरे सात्विकीने अपने धनुषको लचाकर कृपाचार्य्यके नाश करनेवाले शिलीमुखनामबाण को धनुषपर चढ़ाया उस समय अत्यन्त क्रोधसे भरेहुए अश्वत्थामाने उस तीव्रतासे गिरतेहुए इन्द्र वज्रकेसमान बाणको दोस्थानों में काटा, इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ सात्विकी कृपाचार्य्य को त्यागकर युद्धमें अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि आकाश में चन्द्रमाके सन्मुख राहुजाताहै, हे भरतवंशी द्रोणकेपुत्र अश्वत्थामाने उसके धनुषके दो खण्ड करके उसको मारे बाणोंके आच्छादित करदिया फिर सात्विकीने शत्रुओंके मारनेवाले दूसरे धनुष को खैंचकर साठ बाणोंसे अश्वत्थामाकी छाती और दोनोंभुजाओं को घायलकिया उन बाणोंसे घायल और पीड़ितहोकर अश्वत्थामा महाव्याकुल वा अचेतहोकर कई मुहूर्त्त तक ध्वजाके आश्रयसे रथमें बैठगया, थोड़े ही समयमें अश्वत्थामाने सचेतहो बड़े क्रोध से सात्विकीको नाराच बाणसे घायलकिया, वह बाण सात्विकी को घायल करताहुआ पृथ्वीमें ऐसे घुसगया जैसे कि बसन्तऋतुमें सर्पका बलवान् बच्चा बिलमें प्रवेश करताहै, फिर अश्वत्थामा ने दूसरे भल्लसे सात्विकी की उत्तम ध्वजाको काटकर बड़े सिंहनाद पूर्व्वक उसको महाघोर बाणोंसे ऐसा ढकदिया जैसे कि वर्षाऋतु में बादल सूर्यको ढकदेताहै, हे महाराज फिर सात्विकीने भी बड़ी शीघ्रतासे उस बाणोंके जालको काटकर अपनेबाण समूहोंसेअश्वत्थामाको आच्छादित करदिया फिर उस शत्रुहन्ता सात्विकी ने अश्वत्थामा को ऐसा संतप्तकिया जैसे कि स्वच्छ आकाशवालासूर्य

सबको अत्यन्त तपाताहै, इसके पीछे बड़े उपायकरनेवाले सात्वि-कीने बड़ी गर्जनाओंको करके हजारोंबाणोंसे अश्वत्थामाको व्याप्त करदिया, तब राहुसे ग्रसेहुए सूर्य्य के समान अपनेपुत्रको देखकर प्रतापवान् द्रोणाचार्य्यजी उस सात्विकीके सन्मुख गये, हे राजा सात्विकीके हाथसे पीड़ामान् अपनेपुत्रको चाहतेहुए द्रोणाचार्य्यने उसको युद्धमें बड़े तीव्र एषत्कबाणसे घायलकिया फिर सात्विकी ने युद्धमें गुरूकेपुत्र महारथीको छोड़कर लोहमयी बाणोंसे द्रोणा-चार्य्यजी को महा व्याकुलकिया,उसी अन्तरमें बड़ा साहसी शत्रु-संतापी महारथी क्रोधभरा अर्जुन युद्धमेंद्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया फिर द्रोणाचार्य्य और अर्जुनने उस घोर युद्धमें ऐसी बड़ी सन्मुख-ताकरी जैसी कि आकाशमें बुध और शुक्रने करीथी ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्धमें कुशल दोनों पुरुषोत्तम अर्थात् बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य और पांडव अर्जुन परस्पर कैसे सन्मु-खहुए, हे संजय वह अर्जुन उस बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्य का सदैव प्याराहै और आचार्य्यजीभी अर्जुनको सदैव प्यारेहैं, वह दोनों महारथी युद्धमें प्रसन्न चित्त सिंहकीसमान मदोन्मत्त और सावधा-न होके किस रीतिसे युद्धकरने को प्रवृत्तहुए, संजयबोले कि द्रोणा-चार्य्यजी युद्धमें अर्जुनको अपनाप्यारा नहीं जानते हैं इसीप्रकार अर्जुन भीक्षत्री धर्मको आगेकरके गुरूको युद्धमें प्यारा नहीं मान-ताहै, हे राजा क्षत्रीलोग परस्परमें एक दूसरेको त्याग नहीं कर-तेहैं किन्तु पिता माता भाईके साथमें भी अमर्यादासे लड़ते हैं, हे राजा युद्धमें अर्जुनके तीन बाणोंसे घायल द्रोणाचार्यजीने अर्जुन के धनुषसे गिरेहुए बाणोंको बिचार नहीं किया, फिर अर्जुन युद्धभूमि में बाणोंकी बर्षा करताहुआ ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि बड़े बन में वृद्धि पानेवाला अग्नि प्रचण्ड होजाताहै, फिर द्रोणाचार्य्यने भी

शीघ्रही गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे अर्जुनको ढकदिया, तदनन्तर राजा दुर्य्योधनने युद्धमें द्रोणाचार्य्यकी समीपता के कारण राजा सुशर्मा को आज्ञाकरी, उस त्रिगर्त्तके क्रोधयुक्त राजाने भी अपनेधनुषको अच्छेप्रकार खैंचकर लोहेकी पुंखवाले बाणोंसे अर्जुनको आच्छादित करदिया १० हे राजा उन दोनोंके छोड़े हुए बाण अन्तरिक्ष में ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि शरदऋतुके आकाश में हंसशोभितहोतेहैं, वह बाण चारोंओरसे अर्जुनको पाकर ऐसे प्रविष्ट हुए जैसे कि फलोंके बोझसे झुकेहुए वृक्षोंमें पक्षी प्रवेश करते हैं, फिर रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने बड़ी गर्जनाकरके मारेबाणों के पुत्रसमेत त्रिगर्त्तके राजा को घायल करदिया, जैसे कि युगके अन्तमें काल से घायलहोतेहैं उसीप्रकार अर्जुनसे घायल और मरने में निश्चय करनेवाले वह लोग अर्जुनकेही सन्मुख आकर वर्त्तमानहुए और युद्धमें उन लोगोंने अर्जुनके रथपर बाणों की वर्षाकरी और अर्जुन ने अपने बाणोंसे उनके बाण जालोंको ऐसे रोका जैसे कि जलकी वर्षाको पर्व्वत रोकताहै हे राजा वहांहमने अर्जुनकी हस्तलाघवताको भी अपूर्व्व देखा कि जो अकेलेने बहुतसे बीरों की छोड़ीहुई असह्यबाणोंकी वर्षाको और शस्त्रोंको ऐसे रोका जैसे कि वायुबादलोंके समूहोंको रोकदेताहै, अर्जुनके उस कर्मसे देवता और दानव भी महा प्रसन्नहुए हे राजा अर्जुनने महा क्रोधित होकर सेनाके मुखरूप त्रिगर्त्त देशियों के ऊपर वायव्य अस्त्रको छोड़ा उसमेंसे आकाशको व्याकुल करते वा देवताओंके समूहों को गिराते और सेनाओंको मारतेहुए वायु प्रकटहुए फिर द्रोणाचार्य्यजीने बड़े भयकारी वायव्य अस्त्रको देखकर,, दूसरे शैल्य नाम घोर अस्त्र को छोड़ा उस द्रोणाचार्य्यके उस अस्त्रके छोड़तेही वह वायु शान्तहोगई और दशोंदिशा प्रसन्नहुईं इसके पीछे उस बीर अर्जुनने त्रिगर्त्त राजाके रथों के समूहोंको, बेउत्साह व निर्बल व मुख फेरनेवाला किया,इसके पीछे दुर्य्योधन व रथियोंमेंश्रेष्ठ कृपाचार्य्य अश्वत्थामा (शल्य) (कांबोज) (सुदक्षिण) (विन्द) अनुविन्द अवन्तिकेराजा

लोग बाह्लीक देशियों समेत राजा बाह्लीक इन सब बीरोंने रथों के समूहोंसे अर्जुनकी दिशाको रोकदिया, उसीप्रकार भगदत्त व महाबली श्रुतायु इन दोनोंने हाथियोंकी सेनासमेत भीमसेन की दिशाओंको रोका और भूरिश्रवा शल्य शकुनी इन सबने बड़े तीव्र बाणोंसे मादीके दोनोंपुत्र नकुल सहदेव को घेरलिया और सेना वा धृतराष्ट्र के सब पुत्रों समेत भीष्मजीने युधिष्ठिरको पाकर सब ओरसे घेरलिया, फिर भीमसेनने उस गिरतीहुई हाथियोंकी सेना को देखकर, बनके सिंहकेसमान होठोंको चाटतेहुए अपनी बड़ीगदा को लेकर शीघ्रही रथसे कूदके आपकी सेनाओंको भयभीत किया इसके पीछे युद्धमें कुशल उन हाथियोंके सवारोंने भीमसेनकोगदा धारणकिये देखकर, ३० चारोंओर से घेरलिया तब वह भीमसेन हाथियोंके मध्यवर्त्ती होकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि बादलों के बड़े जालमें वर्त्तमान होकर सूर्य्य शोभित होता है और बीर भीमसेनने अपनी गदासे हाथियोंकी सेनाको ऐसे पृथक् २ करदिया जैसे कि वायु बड़े और असंख्य फैले हुए बादलों के जालों को पृथक् २ करताहै उसमहाबली भीमसेनसेघायल बादलोंकेसमान गर्जनेवाले हाथियोंने पीड़ायुक्त शब्दकिये और हाथियों के दांतोंसे बहुत घायलहुआ भीमसेन रणभूमि में फूलेहुए अशोक के समान शोभितहुआ फिर हाथीको दांतपरसे पकड़कर बिना दांतकरादिया और उसीदांतसे हाथीके मुखको घायलकरके रणभूमि में गिराया उस समय मृत्युसमान दण्ड हाथमें लिये मस्तकोंको चरबीसे शोभित रुधिरभरे देहसे रुधिरमें डूबीहुई गदाका धारण करने वाला भीमसेन रुद्र के समान दृष्ट पड़ा, इस रीति से सब हाथी मारेगये और मरने से बचेबचाये बड़े हाथी अपनीही सेनाको दबाते मर्दन करते इधर उधरको भागगयेउनचारों ओरको भागतेहुए उनबड़े २ हाथियों के कारणसे दुर्य्योधन की सब सेना मुख फेरगई ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिच्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३ ॥

—*—

एकसौचारका अध्याय॥

संजय बोलेकि हेराजा मध्याह्नके समय सोमकों से भीष्मजीका युद्ध वर्तमान हुआ वह महाघोर युद्ध लोकोंके नाशका करने वाला भयंकर रूपथा, रथियों में श्रेष्ठ गंगापुत्र भीष्मजी ने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे पांडवोंकी हज़ारों सेनाओंको तितरबितर करदिया और ऐसा मर्दन किया जैसे कि बैलों का समूह बहुत से कटे हुए नाजके ढेरको करदेता है, (धृष्टद्युम्न) (शिखंडी) (विराट्) और द्रुपद ने युद्धमें महारथी भीष्मको पाकर बाणों से घायल करदिया इसके पीछे भीष्म ने धृष्टद्युम्न को घायल कर तीन बाणों से बिराट् को व्यथित करते हुए द्रुपद के ऊपर नाराच को चलाया, तब तो उस भीष्मसे घायल शत्रुहन्ता बड़े धनुषधारी चरण से छुये हुए सर्वरूप क्रोधयुक्त शिखंडी ने उस भरत बंशियों के पितामह भीष्म जीको घायल किया और उस अजेय ने उसको स्त्रीरूप ध्यान करके इस पर प्रहार नहीं किया, फिर क्रोधरूप धृष्टद्युम्नने अपने तीन बाणों से पितामह की छाती और भुजाओंपर घायल किया द्रुपदने पच्चीस बाण से विराट् ने दश बाणों से और शिखंडीने पच्चीस शायकों से भीष्मजीको घायलकिया, फिर अत्यंत घायल रुधिर भरे शरीरसे वह पितामह ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बसन्त ऋतु में फूलाहुआ लाल अशोक होताहै १० इसके पीछेगंगा पुत्र भीष्मजीनेसीधे चलनेवाले तीन २बाणों से उन सबको घायल किया और भल्लसे द्रुपद के धनुष को काटा, फिर द्रुपद ने दूसरे धनुषको लेकर पांच बाणोंसे उनके शिरको घायल किया और अत्यन्ततीक्ष्ण तीन बाणोंसे सारथीको व्यथित किया,इसी प्रकारसे भीम सेन वा द्रौपदीके पांचोंपुत्र वा पांचोंभाई केकय वा यादवंसात्विकीजिनमें अग्रगामीयुधिष्ठिरथे और पांचाल जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा रक्षापूर्व्वक यह सबलोग भीष्मजी के सन्मुखदौड़े,हे राजा इसीप्रकारसे आपके सब शूरवीर भीष्मजी की रक्षाके लिये

उपाय करनेवाली सेनाओं समेत पांडवी सेनाके सन्मुख गये वहां आपके और पांडवोंके मनुष्य घोड़े हाथी सवार और रथोंकाबड़ा भारी युद्धहुआ वहयुद्धभी यमराजके पुरकोवृद्धिका करनेवाला था वहां रथीने रथी को यमलोकमें भेजा और अन्य २ मनुष्योंने हाथी घोड़े और रथोंको सन्मुखपाकर, गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे परलोक को पहुंचाया हे राजा जहां तहां नाना प्रकारके घोरबाणोंसे रथी रथोंसेहीन हुएजब सारथीभी मारेगये तब चारोंओर को भागगये हे राजा युद्धमेंगंधर्व नगरके समान बहुतसेघोड़े मनुष्योंको खूंदते मर्द्दनकरते भागतेहुए दृष्टपड़े २० और रथी रथियोंसेहीन कवचधारी और तेजयुक्त कुंडल मंडोल बाण और बाजूबन्द आदि भूषणधारी, सब देवकुमारों के समान और युद्धमें बलसे इन्द्रके समान धनसे कुबेर को और चित्तसे वृहस्पति कोभी उल्लंघन करने वाले, सबसंसारके शूरबीर राजाजहां तहां ऐसेभागे हुए दृष्टपड़े जैसेकि साधारण मनुष्यहोते हैं, हेनरोत्तम हाथीअपनेश्रेष्ठ सवारोंसे हीनअपनी सेनाओं को मर्द्दन करते हुए सब शब्दोंके पीछे चलने वाले दौड़े, हे श्रेष्ठ ढाल चमर पताका सुन्दर सुनहरी दण्डवाले क्षत्रादिक, चारोंओर भागेहुवों के साथ दशों दिशाओं को दौड़तेहुए दृष्टपड़े बादलके रूप हाथीघन कीसी गर्जना करने वाले विदितहुए, हे राजाइसीप्रकार उस तुमुल युद्धमें आपके और पांडवोंके हाथियों के सवार हाथियों से रहित दौड़ते दृष्टिगोचर हुए, नानाप्रकारके देशोंमें उत्पन्न होनेवाले सुवर्णित भूषणोंसे अलंकृत हजारों घोड़ों कोभी भागता हुआ देखा, घोड़ोंके मरनेसे चारोंओर को हाथ में खड्गलिये भागतेहुए घोड़ोंके सवारोंको देखा, उसीबड़े युद्धमें भागतेहुए हाथी को पाकर हाथीबड़ी तीव्रता युक्त पदातियों को और घोड़ोंको मर्द्दन करता हुआ गया ३० इसी प्रकारहाथीने रथियों को और पृथ्वी परपड़े हुए रथी और घोड़ोंको पाकर घोड़ोंने मनुष्यों को मर्द्दन किया और बहुतसोंने परस्पर में मर्द्दनकियाइस प्रकार उस भयानक युद्धमें रुधिरकीमहा भयंकरनदी भी बर्त्तमान

देखी, खड्गसमूहोंसे गसेहुए केशरूप शैवाल रथरूपह्रद बाणरूप चक्र घोड़ रूप मछलियां रखने वाली दुष्प्राप्य शिररूप पत्थरों से व्याप्त हाथीरूप ग्रहोंसे व्याकुल और कवच मंडील रूपके फेनोंसे भरी धनुष रूप बेग खड्ग रूपीकछुए रखनेवाली, पताका ध्वजा रूप वृक्षोंसे संयुक्त मृत्युरूपी किनारे रखनेवाली नाशकारी मांस भक्षी राक्षस रूप हंसों से युक्त नदी यमराज के देशकी अत्यन्त बढ़ाने वालीथी, हे राजा बड़े २ शूरबीर महारथी क्षत्रियोंने भय को त्यागकर रथहाथी घोड़े रूपनौकाओंके द्वारा उसनदीको तरा, युद्धमें भयभीत मूर्च्छावान् मनुष्यों को ऐसे दूर पहुंचाया जैसे कि वैतरणी नदीके प्रेतराजके पुरमें प्रेतोंको पहुंचातीहै, वहांक्षत्रीलोग उसबड़ी प्रलयको देखकर पुकारे कि दुर्य्योधन के अपराधसे क्षत्री लोगोंका नाश होताहै, पापात्मा लोभी राजा धृतराष्ट्र ने गुणवान् पांडवोंसे कैसेशत्रुता करी४०इसप्रकार पांडवोंकी प्रशंसासे भरेहुए आपके पुत्रों समेत सेनाके अनेक प्रकारके भयानक शब्द परस्पर में सुनगये, इसके पीछेसब संसारका अपराधी आपकापुत्र दुर्य्योधनउन शूरबीरों के कहेहुए बचनों को सुनकर, भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य शल्य इत्यादि से बोलाकि आपलोग अहंकारको त्याग कर युद्धकरो बिलम्बक्यों करतेहो, इसके पीछे पांडवोंका और कौरवों का महाघोर भयानक युद्धजारी हुआ, हे विचित्र वीर्य के पुत्र जो पूर्व समय में महात्माओं के कहने को तुमने नहीं माना उसी का यह महाभयकारी फल तुम देखो हे राजा पांडव लोग सेना और साथके चलने वालों समेत अपने प्राणों की रक्षा नहीं करतेहैं औरकौरव लोगभी अपने प्राणोंकी रक्षा नहीं करतेहैं, हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र इस हेतु से यही सूचित होताहै कि कैतो दैव की इच्छा से अथवा आपके अन्याय से मनुष्यों का भयकारी और प्रलय रूपी नाश वर्त्तमानहै ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि चतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४॥

—※—

एकसौपांचका अध्याय॥

संजय बोले कि पुरुषोत्तम अर्जुन ने सुशर्मा के पीछे चलने वाले उन राजाओं को तीक्ष्ण बाणोंसे प्रेतराजके पुरको पहुंचाया, इसके पीछे सुशर्माने अर्जुन को बाणोंसे घायल करके वासुदेव जी को सतर बाणों से और अर्जुन को नौ बाणों से घायल किया तबइन्द्र के पुत्र महारथी अर्जुन ने अपने बाणोंसे उनको रोककर सुशर्माके शूरवीरों को यमलोकमें भेजा, हे राजा जैसे कि युगके अन्त में कालसे प्रेरित लोगहोतेहैं इसीप्रकार अर्जुनसे घायल हुएवह महारथी युद्धमें भयभीत होकर कोई तो घोड़ों को त्यागकर कोई रथ कोई हाथियों को त्यागकर दशों दिशाओं में भागे,और कोई२ शूर रथ घोड़े और हाथीकोही लेकर बड़ी शीघ्रता से भागे,और पदाती लोग भी उस युद्ध में शस्त्रोंको त्यागकर अनिच्छावान् होकर जहां तहां से भागे,उससमय सुशर्मा मनसे हारकर त्रिगर्त्तके राजाऔर अन्यबहुतसे उत्तम २ राजाओंके रोकनेसे नहीं रुकसका,तब आप का पुत्र दुर्य्योधन सेना समेत उन शूरवीरों को भागता हुआ देख कर युद्धमें भीष्मजीको आगे करके सब सेनाके आगे बड़े २ उपायों समेत राजा त्रिगर्त्तके जीवनकेलिये अर्जुनके सन्मुखगया १० हे राजा वह युद्धमें अनेक प्रकारके बाणोंको वर्षा करता हुआ सब भाइयों समेत युद्धमें वर्त्तमान रहा और शेष सबमनुष्य भागगये, हे राजा इसी प्रकार से पांडव लोग भी सब उपायों समेत अर्जुनकेलिये कवच शस्त्र धारणकिये वहांगये जहांपर कि भीष्मजी नियत थे,यह सब वीर गांडीवधनुषधारी के युद्धमें पराक्रमको जानते और हाहाकारसे उत्पन्न उत्साहको न रखनेवाले चारोंओरसे भीष्मजीके सन्मुख गये,फिर तालध्वज भीष्मजीने गुप्तग्रन्थीके बाणोंसे पांडवोंकी सेनाको ढकदिया, हे राजा इसके पीछे आकाश के मध्यवर्त्ती सूर्य्यकेहोनेपर सबकौरव और पांडवोंमें एकत्रहोकर युद्धप्रारम्भ हुआ, सात्विकी बीर कृतवर्माको पांच बाणों से घायल करके

हज़ारोंबाण छोड़ता हुआयुद्धमें नियतहुआ इसीप्रकार राजाद्रुपदने द्रोणाचार्य्य जीको तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकरके फिरसत्तर बाणों से घायल किया और पांच बाणों से उनके सारथीको व्यथित किया, फिर भीमसेन राजा बाह्लीक और पितामहको घायल करके ऐसी महागर्जनासे गर्जा जैसे कि बनमें सिंहगर्जता है, चित्रसेनके बहुत बाणों से घायल अभिमन्यु ने युद्ध में चित्रसेन को तीन बाणों से अत्यन्त घायल किया फिर युद्ध में भिड़े हुए वह दोनों बड़े शरीर वाले ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाशमें बड़े घोर बुध और शनैश्चर शोभित होतेहैं २० शत्रुहन्ता अभिमन्यु नौ बाणों से सूत समेत उसके चारों घोड़ोंको मारकर बड़े वेगसे गर्जा, इसके पीछे वह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ोंके रथसे शीघ्रही कूदकर दुर्मुख के रथपर सवार हुआ, फिर शीघ्रता करने वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने द्रुपद को गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से घायल करके उसके सारथीकोभी घायल किया, फिर सेनामुख परपीड़ामान् राजाद्रुपद पूर्व्व शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर भीमसेन ने एक मुहूर्त्त में सब सेनाके देखते हुए राजा बाह्लीक को घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया, तदनन्तर पुरुषोत्तम बाह्लीक सवारी से उतर कर व्याकुल होके महा सन्देह युक्त हुआ, और शीघ्रही लक्ष्मण के रथपर सवार होगया और सात्विकीने कृतवर्माको हटाकर बहुतसे बाणोंके द्वारा पितामह को पाया और तीक्ष्ण साठ बाणों से उनको घायल कर बड़े धनुषको कंपाता हुआ रथमें बैठा हुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामह ने सुनहरीबड़ी विचित्र वेगवान् नागकन्याके समानशुभ लोहे की बड़ी भारी शक्तिको उसके ऊपर फेंका उस मृत्युकेसमान अकस्मात् गिरती हुई शक्तीको, अपने तेजसे सात्विकी ने निष्फल कर दिया फिर वह शक्ती सात्विकीको न पाकर पृथ्वीपर गिर पड़ी इसके पीछे सुवर्ण के समान अपनी बरछी को सात्विकीने बड़ी तीव्रता से पितामह के रथपर फेंका उस सात्विकी की भुजाके वेग

से वह शक्ती बड़ी तीव्रता से उनके पास ऐसी गई जैसे कि मनुष्य के पास कालरात्रि आतीहै हे राजा उस अकस्मात् गिरतीहुई तीव्र शक्ती को भीष्मजीने तीक्ष्ण क्षुरप्रबाणों से दो खण्ड करके पृथ्वी पर गेर दिया फिर शत्रु सन्तापी गंगापुत्र भीष्मने उस शक्ती को तोड़ नौ बाणों से बहुत हंसते हुए उसको छातीपर घायलकिया तदनन्तर रथ हाथी और घोड़ों समेत सात्विकी की रक्षाके लिये पाण्डवोंने भीष्मजीको घेर लिया फिर युद्धाभिलाषी पाण्डव लोगों का और कौरवोंका रोमहर्षणकरनेवाला महाघोर युद्धहुआ ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचाधिकशततमोऽध्यायः १०५ ॥

एकसौछःका अध्याय॥

संजय बोले कि हे महाराज जैसे कि वर्षा ऋतुके आकाश में बादलोंसे ढके हुए सूर्य्यको देखते हैं इसी प्रकार युद्धमें क्रुद्धरूप पांडवों से घिरे हुए भीष्मको देखकर दुर्य्योधन उस दुश्शासन से बोला कि यह बड़ा धनुषधारी शूरों का मारने वाला भीष्म चारों ओरसे बड़े वीर पांडवों से घिराहुआ है उसकी रक्षा तुमलोगोंको करनी अवश्य है, क्योंकि वह हमारा पितामह भीष्म युद्धमेंपांडवों समेत पांचालों को मारेगा इस स्थानपर भीष्म जीकी रक्षा करना ही मैं बड़ा काम मानता हूं यह बड़ा धनुषधारी महाव्रत भीष्म हमारा बड़ाभारी रक्षक है सो तुम अपनी सबसेना समेत उस कठिन युद्ध कर्मी भीष्मकी प्रीति से रक्षा करो इस प्रकारसे बड़े भाई की आज्ञा को सुन कर आप के पुत्र दुश्शासन ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से मध्यमें करके रक्षित किया, फिर सौबल के पुत्र शकुनी ने बड़े स्वच्छ प्रास खड्ग तोमरधारी शुभ्र वस्त्रोंसे शोभित अहंकारमें भरेबड़े बलवान् ध्वजाधारी शिक्षित युद्ध में कुशल अनेक नरोत्तम वीरोंके और लाखों घोड़े रथ हाथियोंके सवारों समेत मिलकर, नकुल सहदेव और धर्मराज नरोत्तम युधिष्ठिरको चारों ओरसे घेरकर रोक लिया १० और राजा दुर्य्यो-

धननेदश सहस्त्र घोड़ोंके सवारोंका यूथ पांडवोंके बड़े युद्धमें भेजा हेराजा वह युद्धमें गरुड़के समान शीघ्रगामी उन पहुंचनेवालेघुड़-चढ़ों से घायल पृथ्वीके कंपानेवालेशब्दों को करतेहुए वर्त्तमान हुए, उस समय घोड़ों के खुरोंके ऐसे महा शब्द सुनेगये जैसे कि पर्व्वत में जलते हुए बांसों के बड़े बनमें शब्द होतेहैं, उस भूमिमें घोड़ों के उछलने से ऐसी धूल उड़ी जिससे कि सूर्य्य का रथ ढक गया, फिर उन शीघ्रगामी घोड़ों की सेनासे पांडवोंकी सेना ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि गिरते हुए बड़े शीघ्रगामी हंसों से तड़ाग व्यथित होताहै, वहां घोड़ों के हींसने के शब्द से कुछ नहीं जाना गया, इसके पीछे नकुल सहदेवने युद्धमें अपने वेगसे सवारोंके बड़े भारी वेगों को ऐसे रोका जैसे कि वर्षाऋतु में पूर्णमासी के दिन अत्यन्त उमगे हुए पूर्ण समुद्र के जलवेग को समुद्र का किनारा रोकता है इसके पीछे इन रथियोंने गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे घोड़ोंकेसवारोंकोकाटाऔरइनकेकाटतेहीवहसबमरमर करपृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े, १६जैसेकिपहाड़ी बनमेंहाथियोंसे हाथीगिरपड़तेहैं, फिर इन्होंने दशोंदिशाओंमेंघूमतेहुए अत्यन्त तीक्ष्ण प्रासऔरगुप्त ग्रन्थी वालेबाणोंसे शिरोंकोकाटा, औरदुधारा खड्गोंसे मरेहुएघोड़ोंकेसवारोंने शिरोंकोऐसे त्यागकरदियाजैसेकिबड़ाबृक्ष फलोंकोअलग करदेताहै उसयुद्धमें सवारोंसमेत घोड़ोंका नाशहोगया अर्थात् सब ओरको इधर उधर गिरे और गिरायेहुए दृष्टआये फिर घायल घोड़े भयभीत और पीड़ित होकर ऐसे भागे, जैसे कि प्राणोंको प्रियसमझनेवाले मृगसिंहको देखकरमहा व्याकुलतासे भागतेहैं, हे राजा इसरीतिसे पांडव लोगोंने सब शत्रुओं को बिजय करके शंखों को बजाया और भेरी दुन्दुभियोंको भी बजवाया इसके पीछे राजा दुर्य्योधन अपनी सेनाको पराजित देखकर महादुःखी हो राजामद्रसे कहनेलगा कि हेमहाबाहो यह नकुलसहदेव समेत पांडु का बड़ापुत्र राजायुधिष्ठिर युद्धमें तुम्हारे देखतेहुए हमारी बड़ीसेनाको घायल करके भगाताहै, उसकोतुम ऐसेरोको जैसेकि

समुद्रको किनारा रोकताहै,सदैवआपअसह्यऔरमहाबली सुनेजाते हो इसआपके पुत्रके बचनको सुनकर वह प्रतापवान् शल्य बहुत सेरथोंसमेत वहांगया जहांकि राजा युधिष्ठिरथा वहांजाकर शल्य कीसेना अकस्मात् जाकरगिरी, तबमहारथी पांडव धर्मराजने उस बड़ीसेना समेत राजामद्रके महाबेगको रोककर बड़ीशीघ्रतापूर्व्वक सातबाणों सेघायलकिया, इसीप्रकारसे सातहीसात बाणोंसे नकुलसहदेवने भीघायलकिया,फिर शल्यने भी उनसबको तीन२बाणों सेघायल करके बड़े तीक्ष्ण साठबाणोंसे राजायुधिष्ठिर को घायल किया, औरभ्रान्ति युक्तहोकर उनदोनों नकुल सहदेव कोभीदो २ बाणोंसे व्यथितकिया इसके अनन्तर शत्रुहन्ता महाबली भीमसेन राजाकोयुद्धमें देखकरऔरकालके मुखमें बर्तमानकेसमान राजामद्र के आयेहुए रथकोदेखकर बड़े बेग से उसयुद्धमें राजायुधिष्ठिर के पासजापहुंचा,उसकेपीछे पश्चिम ओरमें नियतहोकर सूर्य्यके चलने पर बड़ाघोर भयानक युद्धजारीहुआ ३५ ॥

इतिश्री महाभारते भीष्म पर्व्वणि षडधिक शततमोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौ सातका अध्याय ॥

संजयबोले कि आपके पिता भीष्मजी ने बड़े कोप से तीक्ष्ण धारके उत्तमबाणों करके सेनासमेत पांडवोंको ऐसे घायल किया कि भीमसेन को बारहबाणों से सात्विकी को नौबाणों से नकुलको तीनबाणोंसे और सहदेवको सातबाणोंसे युधिष्ठिर को बारहबाणों से भुजा और छातीपर घायलकर धृष्टद्युम्नको व्यथितकरके बड़े बेग से गर्जनाकरी,फिर नकुलने बारहबाणोंसे सात्विकीने तीनबाणोंसेधृष्टद्युम्ननेसत्तरबाणोंसेभीमसेननेसातबाणोंसे,युधिष्ठिरनेबारहबाणों सेपितामहको घायलकिया, फिरद्रोण ने सात्विकीको औरभीमसे नकोघायल करके प्रत्येकको पांच २ तीक्ष्ण बाणोंसे व्यथित किया और दोनोंने तीन २ बाणोंसे उन ब्राह्मणोत्तमद्रोणाचार्य्य कोऐसा घायलकिया जैसेकि चावकोंसे बड़े हाथी कोघायल करतेहैं सोबेर

कितव पूर्वी पश्चिमी और उत्तरी मालवी, (अबिषाह) (शूरसेन) (शिवय) और (वशातपने) युद्धमें भीमसेनको त्यागनहीं किया, इसीप्रकार नानाप्रकारके शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले अनेक देशोंसे आयेहुए दूसरे राजालोग पांडवों केसन्मुख बर्तमानहुए, इसरीतिसे पांडवोंने चारोंओरसे पितामहको घेरलिया फिर अनेक रथोंसेघिरे हुए उनअजेय शत्रुओं के बनोंको अग्नि के समान जलानेवाले पितामहने बड़े २ शूरबीर क्षत्रियों कोभस्म करदिया,और गृध्रपक्ष युक्त सुन्दर सुनहरी पुंखवाले अनेक प्रकारके नाराच नाम बाणों से उससेनाको भी ढककर बड़े अशिधार वालेबाणोंसे रथियों के समूहों को गिराया, और रथों के समूहों कोभी मुण्ड तालबनों के समान करदिया फिर उस महाबाहु ने रथ हाथी घोड़ों को भी सवारों से रहित करदिया उसके धनुष की प्रत्यंचा का शब्द इन्द्र बज्रके समान शब्दायमान था उसके सुनने से सब जीवमात्र कंपायमानहोतेथे और हे राजाउनआपके पितामहकेबाण निष्फल नहीं गिरते थे अर्थात् भीष्मके धनुष से निकलेहुए बाण कवच को काटकरदेहमेंप्रवेशकरजातेथे,हमने शीघ्रगामी घोड़ोंकेमृतक शूरवीर वाले रथोंको और चंदेरी काशी और क्रोश देशियोंके चौदहहज़ार महारथी शूरवीरकुलीन युद्धमेंदेहके त्यागनेवालोंको मुखफेरनेवाला देखा और हज़ारोंवीरोंकोसुनहरी ध्वजा युक्त हाथीरथ घोड़ों समेत भीष्मजी के हाथसे मरे हुए परलोक के निमित्त देखा २० इनके सिवाय हज़ारों रथोंको ऐसा देखा कि जिनके पहिये आदि अनेक रथोंके अंगटूटगयेथे,औरकवचों समेत गिराये हुए रथों समेतसवार जिनके कि बाण कवच टूटेहुएथे उनकोभी देखा इस युद्धमें पिताने पुत्रको पुत्रने पिताको भी मारडाला,, और प्रारब्धके बल से प्रेरित मित्रने प्रिय मित्रको भी मारा,फिर पांडवोंकी दूसरीसेनाके मनुष्य कवचको उतार शिरके बालोंको फैलातेहुए सब ओर को दृष्टपड़े तब पांडवोंकी गौओंके समान पृथक्२ चलायमान सेनाको रथकूबरके समान पीड़ामान् देखकर श्रीकृष्णजी रथको रोककर अर्जुन

से बोले कि हे अर्जुन यह वह समय वर्त्तमान हुआहै जो तेराअभीष्टहै, हे नरोत्तम जो तू मोहसे अज्ञान नहीं है तो अब प्रहार कर हे बीर भाई अर्जुन पूर्व्व समय में बिराट् नगर के मध्यमें उन राजाओं के मिलनेमें जो तुमने संजय के सन्मुख कहा था कि मैं दुर्योधनकी सब सेनासमेत उनभीष्म द्रोणाचार्य्यको सब साथियों समेत मारूंगा जो मुझसे लड़ेंगे, हे शत्रुओंके विजय करनेवाले अर्जुन तू अपने उस बचनको सत्यकर, क्षत्री धर्मको स्मरण करके दुःखको दूरकरके युद्धकर इसप्रकार वासुदेवजीके बचनोंको सुनकर अर्जुन बहुत नम्र और अधोमुखहोकर निस्पृहके समान यहबचनबोला किअबध्यवृद्ध गुरू लोगोंको मारकर अन्तमें नरकका देनेवाला राज्यहो वा बनबासमें दुःखहो अथवा अन्य मेरा कोईसा प्रयोजन सिद्धहो आपघोड़ोंको तीव्रकरके जहां भीष्म हैं वहां रथको लेचलिये मैं आपके बचनको करूंगा, वहां कौरवोंके दुर्जय पितामह भीष्मजीको गिराऊंगा यह सुनतेही माधवजीने चांदीकेसमान श्वेतघोड़ोंको अच्छेप्रकारसे चलायमान किया ४० और जिस ओरको सूर्य्यके समान दुःखसे देखने के योग्य बड़े प्रतापवान् भीष्मजीथे वहां पहुंचे उसके पीछे युधिष्ठिर की वह बड़ी सेना भी जो उस युद्धमें भीष्मकेलिये तैयारथी अर्जुन को देखकर फिर लौटआई तदनन्तर सिंहके समान बारंबार गर्जनाकरते कौरवोंमें श्रेष्ठ भीष्मजीने,, अपने बाणोंकी बर्षा से शीघ्रही अर्जुनके रथको ढकदिया तब क्षणभरमेंही उसकाघोड़े और सारथीसमेत रथ, भीष्मके बाणोंकी वर्षासे दिखाई नहींदिया इसके अनन्तर भ्रान्तीमें भरेहुए शीघ्रता करनेवाले वासुदेवजीने धैर्य्यतामें नियतहोकर, उन घोड़ोंको जो कि भीष्मके बाणोंसे व्यथितथे अत्यन्त तीव्र किया और अर्जुन ने बादल के समान दिव्य धनुष को लेकर अपने तीक्ष्णबाणों से भीष्मजीके धनुषको काटकर पृथ्वीपर गेरा फिर धनुष टूटेहुए आपके पिताने निमिषमात्रमेंही दूसरे धनुषको तैयार किया और उस बादलके समान शब्दायमान धनुषको अपनी दोनों भुजाओं से खैंचा,, फिर अर्जुनने उनके उस धनुषको भी काटा

शन्तनु के पुत्र भीष्मने उसकी उस हस्तलाघवता की बड़ी प्रशंसा करी कि हे महाबाहु कुन्तीकेपुत्र बहुतअच्छा बहुतअच्छा इसप्रकार की बार्त्ता करके दूसरे उत्तम धनुष को लेकर बाणों को अर्जुन के रथपर फेंका वहां बासुदेवजीने घोड़ोंके चलानेमें अपने बड़े बलको दिखाया ५० फिर भीष्मके बाणोंसे घायल वह दोनों नरोत्तम उनके बाणोंको निष्फल करते मंडलोंको दिखाते हुएऐसे शोभायमानहुए, जैसे कि सींगोंके प्रहारोंसे छिन्नभिन्न चिह्नित कियेहुए गोवृषभ अर्थात् बली बर्द्द होतेहैं, फिर वासुदेवजीने अर्जुन के मृदु युद्धको और पांडवोंकी सेनापर बड़ी तीव्रता से बाणों की बर्षा करते और दोनों सेनाओं के मध्य वर्त्ती सूर्य्य के समान तपाते और पांडवों के बड़े २ शूरबीरों को मारते हुए युधिष्ठिर की सेनामें प्रलय मचाते भीष्मको देखकर, क्षमा न करने वाले शत्रुहन्ता माधववासुदेवजी अर्जुन के श्वेत घोड़ोंको छोड़कर बड़े रथसेउतर हाथ में चाबुक लिये सिंहके समान बारंबार गर्जते चरणों से पृथ्वी को विदीर्ण करते क्रोधसे रक्त नेत्रकिये मारनेके उत्सुक आपके शूरबीरोंको भयभीत करते बड़े तेजस्वी जगत्कर्त्ता बड़े वेगसे भीष्मके सन्मुख गये,,, हे राजा भीष्मजी के सन्मुख वर्त्तमान माधवजीको देखकर उस युद्धमें जहांतहां भयभीत लोगऐसी२ वार्त्ताकरनेलगेकि भीष्म मारागया मारागया पीताम्बरधारी नीलमणि के समान रंगवाले जनार्द्दनजी भीष्मकीओर दौड़तेहुएऐसे शोभायमानहुएजैसे किविद्युत्तरूपमालाधारी बादल होताहै और जैसेकि समूहका स्वामीसिंह उत्तम हाथीकी ओर दौड़ता है, उसी प्रकार यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी गर्जना करते तीव्रतासे भीष्मके सन्मुखगये, युद्धमें आतेहुएउन कमलदललोचन को देखकर भीष्मने सावधान चित्त होकर बड़े धनुष को खैंचकर बड़ीस्थिर चित्तता से उनको हाथ जोड़कर कहा हे पुंडरीकाक्षजी आपआइये आइये हे देवदेव आपको नमस्कारहै हे यादवेन्द्र अब मुझको आपइस महायुद्धमें गिराओ, हे निष्पापश्रीकृष्णजी युद्धमें आपके हाथसे मुझमारेहुए का भीसब ओर से बड़ा

कल्याण होताहै, हे गोबिन्दजी अबमैं युद्धमें तीनोंलोक से प्रतिष्ठा पायागयाहूं हे निष्पाप मैं आपका निस्सन्देह दासहूं आप इच्छाके समान प्रहारकरो, इसके अनन्तर पीछे २ जानेवाले अर्जुनने केशवजीके पासजाकर अपनी दोनोंभुजाओं से उन महाबाहुको दाबकर पकड़लिया, अर्जुन से पकड़े हुए कमल लोचन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी इसको लेकर बड़ी शीघ्रतासे चले, फिरशत्रुओं के बीरों के मारने वाले अर्जुन ने बड़े बलसे किसीप्रकार करके दशवेंही चरण पर दोनों चरणोंको पकड़ लिया, तदनन्तर पीड़ामान सखा अर्जुन उन क्रोधसे व्याकुल सर्पके समान श्वास लेनेवाले श्रीकृष्णजीसे यह वचन बोला ७० हे महाबाहु श्रीकृष्णजी आपलौटिये और अपने उस बचनको और सत्यको न छोड़िये जो आपने कहाथा कि हमनहीं लड़ेंगे क्योंकि हेमाधव जो तुमऐसा करोगे तोसंसारआप को मिथ्याबादी कहैगा यह सबकाममेराहै मैंपितामह को मारूंगा, हे केशव मैं शस्त्र सत्यता और अपनेउत्तम कर्मकी शपथ खाताहूंकि मैं शत्रुओंको मारकरजी तूंगा आप इसीसमयइस महादुर्जय भीष्म को गिराहुआ ऐसे देखोगे जैसेकि युगकेअन्त प्रलयमें दैवइच्छा से चन्द्रमा गिरताहै यहसुनकर क्रोधभरेमाधवजी अर्जुनसेकुछन बोल कर रथपर सवारहुए ७५ फिर शन्तनुके पुत्र भीष्मने उनदोनों रथपर सवार नरोत्तमोंपर ऐसे बाणों को बर्षाकरी जैसे कि पर्व्वत पर बादल जलको बरसातेहैं, उन आपके पिता देवव्रत ने शूरबीर लोगोंके प्राणोंको ऐसे लिया जैसे कि शिशिरऋतु अर्थात् माघफाल्गुणमें सूर्य्य तेजोंको आकर्षण करताहै, और जैसे कि पाण्डवोंने कौरवोंकीसेनाको छिन्नभिन्नकिया उसीप्रकार आपकेपिता ने भी पांडवोंकीसेनाको अस्तव्यस्तकरदिया, मृतक और भागेहुए असाहसी वा अचेत पांडवोंकीसेना युद्धमें अद्वितीय भीष्मकेदेखनेको भी ऐसे समर्थ नहीं हुई जैसे कि मध्यान्हवर्त्ती अपने तेजसे तपानेवाले सूर्य्यको नहीं देखसक्ते अर्थात् वह पांडवोंके हजारों मनुष्य भीष्म से घायलहोगये ८० हे महाराज भयसे दुःखीहुए पांडवोंने दृष्टिकी

वीक्षाकरी हे भरतबंशी इसप्रकारसे भगीहुई पांडवोंकी सेनानेऐसे अपनारक्षक कोई नहीं पाया जैसे कि कीचमें फंसीहुई गौका कोई रक्षक नहीं होताहै और युद्धमें वह निर्बलसेना बड़े बलीके हाथसे चेंटियोंके समान घायल हुई ८२ उस महारथी दुर्जय बाणरूपी किरणरखनेवाले राजाओंके तपानेवाले सूर्य्यकीसमान भीष्मकेदेखनेको कोई समर्थ नहींहुआ फिर सूर्य अस्ताचलको प्राप्तहुए तदनन्तर परिश्रमसे थकीहुई सेनाओं के मनका बिश्राम हुआ अर्थात् युद्ध समाप्त हुआ ८४॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि सप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७ ॥

एकसौआठकाअध्याय॥

दशवेंदिनके युद्धका प्रारम्भ

संजयबोले कि युद्धकरतेहुए सूर्यके अस्तहोनेके समय भयकारी संध्याबर्त्तमान् हुई और युद्धकरना सब ओरसे बन्द हुआ, इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने संध्याको देखकर और भीष्मके हाथसेघायल शस्त्रत्यागनेवाली भयसे महाव्याकुल वा शत्रुओंसेघिरी भागनेकी इच्छाकरनेवाली अपनीसेनाको जान और युद्धमें क्रोधित पीड़ादेनेवाले महारथी भीष्मकोदेख सोमकोंको साहसरहित पराजय रूप जानकर बड़ी चिन्तापूर्व्वक विश्रामकोचाहा, अर्थात् अपनीसेनाको विश्राम कराया इसीप्रकार आपकी भी सेनाका विश्राम हुआ, हे कौरवोत्तम धृतराष्ट्र फिर युद्धमें घायल शरीरवाले महारथी वहां पर सेनाओंका विश्रामकरके स्थिरहुए ६ और युद्धमें भीष्मके कर्म को शोचते उनके बाणोंसे अत्यन्त पीड़ामान पांडवों ने शान्तीको नहीं पाया और चिन्तासे व्याकुलहीरहे फिर भीष्म भी पांडवोंसमेत सृंजियोंको विजय करके आपकेपुत्रों से पूज्य और स्तुतिमान होकर,, चारोंओर से प्रसन्नरूप कौरवों समेत निवासस्थान में बर्त्तमानहुए तिसपीछे सब जीवमात्रोंको प्रसन्नकरनेवालीरात्रि बर्त्तमानहुई,, उस घोर रात्रिके प्रारंभमें दुर्जय पाण्डव सृंजय

और वृष्णीलोग सलाहकरनेकेलिये बैठे १० उन सावधानमंत्रके निश्चयमें पंडित सब महाबलियोंने अपनेकल्याणको बिचारकिया, इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने बहुत बिलम्बतक विचारांशकरके वासुदेवजीको देखकर यह बचन कहा, कि हे श्रीकृष्णजी जैसे किहाथी कमलकेबनोंको मर्द्दनकरताहै इसीप्रकारसे मेरीसेनाके मर्द्दनकरनेवाले भयके उत्पन्नकर्त्ता महात्मा भीष्मको देखो, कि इस अत्यन्त प्रबल अग्निकेसमान सेनाओंके चाटनेवाले महात्माके देखनेको हम सब समर्थ नहीं होतेहैं, जैसे कि बड़ा बिषभरा तक्षकनाग होताहै इसीप्रकारके यहयुद्धमें क्रोधित महातेजस्वी शस्त्रधारीभीष्म हैं, युद्धमें धनुष हाथमेंलिये तीक्ष्णबाणोंको छोड़ते क्रोधरूप यमराज और बज्रधारी इन्द्रको वा पाशधारी बरुण और गदाधारी कुवेरको भी विजयकरना संभव है परन्तु महायुद्ध में क्रोध संयुक्त भीष्मजीका विजयकरना महाकठिन और असंभवहै,हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धि की अल्पज्ञतासे युद्धमें ऐसी दशाके द्वारा भीष्मको पाकर शोक समुद्रमें डूबाहुआहूं १८ हे अजेय मैं बन को जाऊंगा निश्चयकरके मेरा कल्याण बनहीमें बर्त्तमान है हे माधव मैं युद्ध को अच्छा नहीं समझताहूं क्योंकि भीष्मजी सदैव हमारे शूरबीरोंको मारतेहैं, जैसे कि पतंगपक्षी बड़ी देदीप्त अग्निकी ओर को दौड़ताहुआ एक साथ भस्म होताहै इसीप्रकार हम अग्निकेसमान भीष्मको भी देखते हैं कि जो इसकी ओर को गया वही भस्म हुआ २० हे श्रीकृष्णजी राज्यके निमित्त पराक्रम करने वाला मैं नाशहोनेमेंहीहूं और मेरे शूरबीर भाई भी शायकोंसे अत्यन्त पीड़ामानहैं, हे मधुसूदनजी वह मेरेभाई भायपपनेकी प्रीतिसे मेरेही कारण राज्य से भृष्टहोकर बनको गये और मेरे ही कारण से द्रौपदी भी महा दुःखमें पड़ी, मैं जीवनको बहुत मानताहूं वह जीवन अब दुःखसे प्राप्त होनेके योग्य है अब मैं बाकी रहीहुई अवस्थासे उत्तम धर्मको करूंगा, हे केशवजी जो मैं भाइयोंसमेत आप का कृपापात्रहूं तो अपने धर्मकी अविरोधतासे मेरे हित को करो,

इसप्रकारके उसके विस्तार युक्त बचनोंको सुनकर बड़ी करुणासे श्रीकृष्णजी युधिष्ठिरको विश्वासित करके यह बचन बोले, हे धर्म पुत्र सत्यसंकल्प तुम व्याकुलताको मतकरो तेरे शूरबीर दुर्जयभाई शत्रुओं के मारनेवाले हैं, अर्जुन और भीमसेन वायु औरअग्नि के समान तेजस्वीहैं और दोनों नकुल और सहदेव देवताओं के ईश्वर भगवान इन्द्र के समान पराक्रमी हैं,हे पांडव तुम मुझको आज्ञादो कि मैं भी तुम भाइयोंकी प्रीति से भीष्म के साथ लड़ूंगा हे राजा युधिष्ठिर जो तुम मुझको भी युद्धमें प्रवृत्त करोगे तो मैं भी उस महा युद्ध में सब कुछ करसक्ताहूं, जो अर्जुन नहीं चाहता है तो मैं पुरुषोत्तम भीष्म को बुलाकर धृतराष्ट्रके पुत्रों के देखते हुए ही मारूंगा, हे पांडव जो तू बीर भीष्मके मरनेपर ही विजय देखता है तो मैं एकही रथ के द्वारा कौरवों के वृद्ध पितामह को मारूंगा ३० हे राजा तुम युद्धमें महाइन्द्र के समान मेरे पराक्रमको देखो मैं बड़े २ अस्त्रोंको छोड़कर उसको रथसे गिराऊंगा,क्योंकि जो पांडवों का शत्रु है वह मेरा भी शत्रु है जो तुम्हारे निमित्तधन-आदि हैं वह मेरे हैं और जो मेरे हैं वह तुम्हारे हैं ३२ आप का भाई मेरा मित्र और सम्बंधी होकर शिष्य भी है हे युधिष्ठिर मैं अर्जुन के निमित्त अपने मांसको भी काटकर देसक्ताहूं , और वह नरोत्तम अर्जुन भी मेरे निमित्त जीवन को त्याग करसक्ता है हे तात हमारा यह नियम है कि हम परस्पर के दुःखसे छूटें, सोतुम मुझको युद्ध करनेकी आज्ञा दो पूर्व्वमें जो अर्जुन ने प्रतिज्ञा करी हैउसको पहले से चाहरहे हैं कि मैं सब लोक के सन्मुख गांगेय भीष्म को मारूंगा उस बुद्धिमान अर्जुन का यह बचन रक्षाकरने के योग्य है, मुझको अर्जुन का प्रण पूरा करना योग्य है यह निस्सन्देह है कि वह शत्रुओं का विजय करनेवाला अर्जुन युद्धमें अवश्य भीष्म को मारेगा अथवा युद्धमें अच्छी रीतिसे प्रवृत्तहोकर असंभव कठिन कर्मोंको भी करेगा, यह अर्जुन युद्ध में क्रोधित होकर देवता और दैत्योंको भी मारसक्ता है तो हे राजा भीष्मका

मारना इसको कितनी बड़ी बात है, निश्चयकरके महा पराक्रमी शंतनु का पुत्र भीष्म विपरीतता और निर्बलता से थोड़ी आयुर्द्दा रखनेवाला होकर करने के योग्य कर्म को नहीं जानता है ४० युधिष्ठिर बोले हे महाराज महाबाहु आपका यह सब कथन यथार्थही है निश्चयकरके आपका वेग किसी के सहने के योग्य नहीं है, इसको अपने मन की इच्छा के अनुसार मैं अवश्य प्राप्तकरूंगा जब कि आप सरीके कृपानिधि हमारे पक्षपर खड़े हैं हे महाविजयस्वरूप गोबिन्दजी तुम सरीके अपने नाथ के साथ होकर युद्ध में सब देवताओं समेत इन्द्र को भी हम विजय करसक्ते हैं तो इन महारथी भीष्मजी का विजय करना कितनी बातहै मैं आपको मिथ्याबादी करना योग्य नहीं समझताहूं हे माधवजी आप युद्ध किये बिनाही अपने स्वाभाविक बल पुरुषार्थ से अपने बचन के अनुसार हमारी सहायता करो, भीष्म ने मुझसे प्रण किया है कि युद्धमें सलाह करूंगा परन्तु तेरे अर्थ कभी न लड़ूंगा, मैं दुर्य्योधन केही लिये लड़ूंगा इसमें सन्देह नहीं है कि वह भीष्मजी मुझको राज्य की सलाहके देनेवाले हैं इस कारण से हम सब मिलकर आपको साथ लेकर उनके शरीर के मारनेके निमित्त उस देवब्रत के पास चलें, हे जनार्द्दनजी वह हमसे हमारे अभीष्ट सत्य सत्य बचनोंको कहेंगे और जैसा वह कहेंगे वैसाही हम युद्ध में करेंगे, वह दृढ़ बृत भीष्म हमारी विजय और कीर्त्ति का देनेवाला होगा क्योंकि पिताकरके बिहीन हमबालकों को उन्हींने सबप्रकार से भरण पोषण करके इतना बड़ा कियाहै ५० हे माधवजी जो मैं अपने पिताके भी पिता बृद्ध भीष्म पितामहको मारना चाहताहूं ऐसे क्षत्री धर्म को और क्षत्रियों की जीविकाको धिक्कार है, संजय बोले हे महाराज फिर श्रीकृष्णजी कौरवनन्दन युधिष्ठिर से कहने लगे कि हे बड़े ज्ञानी राजेन्द्र तेरा कहना मुझको अच्छालगता है, शुभकर्मी देवताओंके बराबर बृतरखनेवाला जो दृष्टिसे भी दूसरे को भस्म करसक्ताहै उस भीष्मके पास उसीसे उसके मारने का

उपाय पूछनेके निमित्तजाओ, वह तेरेपूछने पर तुझसेसत्यही सत्य कहैगा इससे हम सबमिल कर उन कौरवों के पितामह के पास पूछनेके हेतुसे चलें, हेभरतबंशी हम बृद्ध भीष्मसे मिलकर सलाह को पूंछे वह हमको जो सलाहदेगा उसीके अनुसार हम शत्रुओंसे युद्ध करेंगे, हे पांडुके बड़े भाई धृतराष्ट्र वह बीर पांडव इस रीति से सलाह करके सबमिलेहुए बासुदेवजी समेत शस्त्रोंसे रहित होकर उस भीष्म के डेरोंमें प्रवेश करके उनको बड़ी नम्रतापूर्व्वक प्रणाम किया, हे राजा इसरीति से श्रीकृष्ण समेत पांडवलोगशिर से प्रणाम करते हुए भीष्मजीके समीप बैठनेके स्थानोंमें पहुंचे, तब कौरवों के पितामह महा बाहु भीष्मजी श्रीकृष्ण जीसे बोले कि हे कृष्ण आपका आना शुभ दायकहो और हे अर्जुन तेराभी आना सफलहो, और युधिष्ठिर भीमसेननकुल सहदेव कामो आनामंगल कारीहो यह कहकर कहा कि अबमैं तुम्हरी प्रीतिका बढ़ाने वाला कौनसातुम्हारा शिष्टाचारकरूंह्न मैं तुम्हारे दुःखसेभी करनेकेयोग्य हितको आत्मा से करने को उपस्थितहूं इस प्रकारके प्रीतिपूर्व्वक बारंबार बचन कहने वाले गांगेय भीष्मजीसे, महादुःखी चित्तयुधिष्ठिर बड़ी प्रीतिमें डूबकर यहबचन बोलाकि हे सर्वज्ञ हमकैसे सब को विजयकरें और कैसेराज्यको पावें, और किसरीतिसे प्रजालोगों का नाशनहो हे प्रभु इसको हमसे कहिये और अपने भी मरण का उपाय हमको बताइये हे महाबीर हम युद्धमें कैसे आपको सहसकेंहेहमसबके पितामह आपके किसीसूक्ष्म दोषकोभीहमनहीं जानते, तुमसदैव युद्धमें धनुष मंडल के साथहीदृष्ट पड़तेहो हेमहाबाहु हमलोग आपको धनुष चढ़ाते बाणलेते संधानते और द्वितीय सूर्य्य के समान रथपर सवार होते हुएभी नहीं देखसके हैं हे शत्रुओंके बीरलोगों के मारने वाले हे रथघोड़े मनुष्यों के मारने वाले, हेभरतर्षभ अबकिस पुरुष की सामर्थ्य है जो आपको युद्धमें विजयकर सके आपने अपने बाणोंको बर्षा करके युद्धमें प्रलय मचाकर मेरी बड़ीसेना का नाशकियाहै अबजैसी रीतिसे हमतुम को युद्धमेंविजय

करके राज्यको पावें और मेरीसेना बचे हे पितामह वही आप को कहना योग्यहै इसके अनन्तर पांडुके पिता भीष्मजी सबपांडवों से बोले, कि हे सर्बज्ञ युधिष्ठिर मेरे जीवते हुए युद्धमें जैसे कि विजय नहीं होतीहै उसको मैं तुझसे कहताहूं ७० हे पांडव लोगो युद्ध में मेरे विजय होनेपर युद्धकेही द्वारा तुमशत्रुओं को विजय करोगे जो तुम युद्धमें विजय चाहतेहो तोशीघ्रही मुझपर प्रहार करो, हेकुन्ती के पुत्रलोगो मैं तुमको आज्ञा देताहूंतुम आनन्दसे मेरे ऊपरप्रहार करो मैं इसरीति के कर्मको बहुत उत्तम मानताहूं और मुझको तुम अच्छी रीतिसे जानतेहो कि मेरेही मरने पर शत्रुओंकी सब सेना अल्पही कालमें मारी जायगी इसहेतुसे तुमऐसा कर्मकरो,युधिष्ठिरबोले कि वह उपाय बतलाइये जिससे कि दंडहाथमें लियेमृत्युके समान युद्धमें क्रुद्ध रूप आपको विजय करें, बज्रधारी इन्द्र बरुण कुवेर और यमराज भी विजय करने को योग्यहैं परन्तु आपयुद्ध में देवेन्द्र समेत देवता और असुरों सेभी विजय करनेके योग्यनहीं हैं, भीष्मजी बोले हे महाबाहु पांडव जो तू कहता है वह सत्यही है यथार्थमें मुझको इन्द्र समेत देवता और असुर भी विजय करनेको समर्थ नहीं होसक्ते, जोकि शस्त्रोंकाधारण करने वाला युद्धमेंकुशल उत्तम धनुषका खैंचने वाला मैंहू इसहेतु से यह सब महारथी मुझ शस्त्रोंके त्यागने वालेको मारें, शस्त्र त्यागने वाले पृथ्वी पर पड़े कवच और ध्वजा से रहित भगेहुए भयभीत और शरणमेंआये हुए वा स्त्रीके समान नाम रखने वाले व्याकुल वा एक पुत्रवालेसे अथवा नीच मनुष्य के साथ युद्ध करना मैं उत्तम नहीं समझताहूं, हे राजेन्द्र पूर्व्व विचारकियेहुए मेरेइस संकल्पको सुनोंकिमैं अमंगल रूप ध्वजाको देखकर कभी नहीं लड़ता, हे राजा तेरीसेनामें यह द्रुपदकाबेटा महारथी युद्धमें क्रोधरूप शूरबीर युद्धको जीतनेवाला शिखण्डी नामहै ८० यह जैसेंकि स्त्री हुआ और पीछेसे पुरुष के चिन्ह पाये इसका जैसाकि वृत्तान्तहै उसको तुमभी जानतेहो, शूर बीरयुद्धमें शस्त्रोंसे अलंकृत अर्जुन शिखण्डीको आगे करकेविशिख

नाम तीक्ष्ण बाणोंसे मेरे सन्मुखजो आवेतो धनुषबाण हाथमेंलिये हुएभी उस अमंगली ध्वजा वाले वा पूर्व्व में स्त्रीरूप रखने वाले परमैं किसी दशामेंभी प्रहार करना नहीं चाहताहूं, हे राजेन्द्र युधिष्ठिर उस सेना को पाकर शीघ्रहीपांडव अर्जुन मुझे चारोंओर को बाणों से मारे, मैं सब लोकों में महानुभाव श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुन के सिवाय किसीको नहीं देखताहूं जो मुझ युद्ध में प्रवृत्त को विजय करसके, इसकारण यह शस्त्रधारण करने वाला और उत्तम धनुषधारी अर्जुन किसी दूसरेको मेरे आगे नियत करके, मुझको मारे निश्चय करके इसरीति से तेरी विजय है हे सुन्दरव्रत युधिष्ठिर तुमइसमेरे बचनको प्रतिपालन करो और युद्धमें सन्मुख होनेवाले सब धृतराष्ट्र के पुत्रोंको मारो, संजय बोले कि इनबार्त्ता लापोंके पीछे वह पांडव लोगसब बातों को जानकर भीष्मजी को दण्डवत करके अपने डेरोंको गये, परलोक जाने को उत्सुकदीक्षा कियेहुए गांगेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर दुःखसे शोच ग्रस्त अर्जुन बड़ी लज्जा से यह बचन बोला, हे माधवजी मैं युद्ध में कुलके वृद्ध महाज्ञानी बुद्धिमान कौरवों के पितामह भीष्म जी के साथकैसे युद्धकरूंगा ६० हे बासुदेवजी बाल्यावस्था में खेलते हुए धूलभरे देहसे मैंने बड़े साहसी पितामह को धूलमेंमिलाया, निश्चय करके हेश्रीकृष्णजी मुझ बालकने जिसकी बगलमें चढ़कर अपने पितामहात्मापांडुके पिताको तात कहाहै, हे माधवजीजिसने बाल्यावस्था में मुझको कहाथा कि मैं तेरे पिताका तातहूं तेरातात नहींहूं उस को मैं किसप्रकारसे मारनेके योग्यहूं, वह अपनीइच्छा के अनुसार मेरी सेनाको मारे परन्तु उस महात्मा के साथनहीं लड़ूंगा मेरीविजय होय वा मृत्युहो हे श्रीकृष्णजी चाहौ आप मुझे किसी प्रकार से जानों, बासुदेवजी बोलेकि हे विजय करने वाले अर्जुन तुम पूर्व्व समयमें युद्धके बीच भीष्मके मारनेका प्रण करके क्षत्री धर्ममें नियतहुए हो सो तुमकैसे उसको नहीं मारोगे, हेअर्जुन इस युद्धमें दुर्मद क्षत्रोंको रथसे गिराओ तुम युद्धमें गंगापुत्र को

बिनामारे संसार में विजय और कीर्त्ति को नहीं पाओगे, आगे के समय में देवताओं ने देखाथा कि तुमयमलोक को जावोगे सो हे अर्जुन वह यहबातहै मिथ्या नहीं है, तेरे सिवाय आप बज्रधारी इन्द्रभी इस महाबली मृत्युके समान अजय भीष्मसे लड़नेके लिये कोई समर्थ नहींहै, इस्से तू स्थिर होकर भीष्मको मार और इस मेरे बचन को सुनकरजैसे किपर्बकाल में बड़े बुद्धिमान वृहस्पति जीने इन्द्र से कहाथा कि अपने मारने वालेउस आततांई आनेवालेको मारे चाहेवह गुणोंसे भराहुआ कुलका वृद्ध भीहो १०० हे अर्जुन युद्ध करना रक्षा करना दूसरे के गुणोंमें दोषलगाने वालेकापूजन करना यह क्षत्रियोंका सनातन धर्मचला आयाहै, अर्जुन बोले हे श्री कृष्णाजी शिखण्डी भीष्मजी का अवश्य कालहोगा क्योंकि भीष्मजी उस पांचालदेशी शिखण्डीको युद्धमें देखकर सदैव लौटजाते हैं, इस्से हमशिखंडीको उसके सन्मुखकरके युक्तियों से उस गांगेय भीष्मको युद्धमें अवश्य मारेंगे यहमेरा मतहै, मैं अपने शायकों से अन्य बड़े २धनुष धारियों को रोकूंगा और शिखंडी बड़े युद्धकर्त्ता भीष्मकेही आगे युद्धकोकरे, मैंने उन कौरवेन्द्र भीष्मजी केही मुखसे सुनाहै कि मैं शिखंडी को नहींमारूंगा निश्चय यह पूर्ब्ब समय में कन्या होकर पुरुष बनाहै, इस प्रकार से पांडव लोगअपने बांधवों समेत निश्चयको करके और महात्माओं का प्रतिष्ठा पूर्ब्बकस्तुति पूजन करके प्रसन्न चित्तअपने २ डेरोंको गये १०६ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि अष्टोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

एकसौनौका अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोलेकि शिखंडी युद्धमें किसरीतिसे गांगेयजीको उल्लंघन करके कर्मको करता हुआ औरभीष्मजी किसरीतिसे पांडवोंको उल्लंघन करते भयेहेसंजय इसको मुझे समझा कर कहो, संजय बोलेकि प्रातकाल सूर्य्योदयके समय भेरी मृदंग ढोल आदिबाजों के बजने और चारोंओर से दधि बर्णशंखों के बजने पर वह सब

पांडव शिखंडी को आगे करके युद्ध भूमि में गये,, हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब शत्रुओंके नाश करने वाले व्यूहको करके सबसेनाओं के आगे शिखण्डी हुआ, इसके पीछे भीमसेन और अर्जुन उस के चक्रके रक्षकहुए और द्रौपदीके बेटे और पराक्रमी अभिमन्यु पीछे की ओर हुए, फिर सात्विकी चेकितान और उनके पीछे पांचाल देशियों से रक्षित महारथी धृष्टद्युम्न उनका रक्षक हुआ इसके अनन्तर नकुल सहदेव समेत सबका प्रभु राजा युधिष्ठिर सिंह नादोंको करता हुआ चला, उसकेपीछे राजाविराट अपनी सेनाको साथ लेकर चला हे महाबाहु उसकेपीछे राजा द्रुपद चला, फिर पांचो भाई केकय और पराक्रमी धृष्टकेतु ने पांडवी सेना के जंघास्थान को रक्षित किया, इस रीति से पांडव लोग अपने बड़े व्यूह को रचकर और अपने जीवन की आशा को त्यागकर युद्ध भूमिमें आपकी सेना के सन्मुख आये १० हे महाराज इसी प्रकार से कौरव लोग भी सब सेनाओं के आगे महारथी भीष्मको करके पांडवों के सन्मुख गये, वह अजेय भीष्म आपके शूर वीर पुत्रों से रक्षित थे उनके पीछे बड़े धनुष धारी द्रोणाचार्य्य और उनका महाबली पुत्र था, इसके पीछे हाथियों की सेना समेत राजा भगदत्त और इसकी रक्षामें कृपाचार्य्य और कृतबर्मा थे, इसके पीछे राजा काम्बोज सुदक्षिण जयत्सेन राजा मगध शकुनि और वृहद्वल थे, हे राजा इसी प्रकार सुशर्माआदि अन्य बड़े धनुषधारी राजाओं ने आपकी सेनाके जंघनस्थान को रक्षित किया, प्रत्येक दिनके वर्तमान होनेपर शन्तनु के पुत्र भीष्म ने युद्ध के भीतर आसुर पैशाच और राक्षस व्यूहों को अलंकृत किया,हे भरतवंशी उसके पीछे परस्परमें मारतेहुए आपके पुत्रों का और पांडवों का यमराज के देश की वृद्धि करने वाला महाघोर युद्ध जारी हुआ अर्जुन आदि पांडव शिखंडी को आगे करके नाना प्रकारके बाणों की वर्षा करते हुए युद्धमें भीष्मके सन्मुख वर्तमान हुए, वहां आप केशूरवीर भीमसेनके बाणोंसे घायल रुधिर में डूबे हुए परलोक

को सिधारे, और महारथी सात्विकी और नकुल सहदेवने आपकी सेना को पाकर अपने पराक्रम से पीड़ामान किया २० हे राजा युद्धमें घायल वह आपके शूरवीर पांडवों की बड़ी सेनाके रोकने को समर्थ नहीं हुए, फिर आपकी सेना चारों ओरसे घायल दशो दिशाओं में पृथक् २ होकर महारथियों के हाथसे अधिक व्याकुल होकर भागी, हे भरतर्षभ पांडवों के तीक्ष्ण बाणोंसे घायलसंजियों समेत आपके शूर वीरोंने कोई अपना रक्षक नहीं पाया, धृतराष्ट्र बोले हे संजय पराक्रमी भीष्मने पांडवों के हाथसे पीड़ामान सेना को देखकरयुद्धमें क्रोधरूप होकर जो२ किया उसको मुझसे कहौ, वह शत्रु सन्तापीबीर सोमकोंको मारताहुआ युद्धमें कैसे पांडवों के सन्मुख गया उसकोभी हे निष्पाप मुझसे वर्णनकर, संजय बोले कि हे महाराज जो पांडवोंसे और संजयोंसे पीड़ित आपकी सेनाको देखकर जो२ आपके पिताने किया उसको मैं कहताहूं, हेपांडुके बड़े भाईवह अत्यन्त प्रसन्न चित्तशूर पांडव आपकेपुत्रकी सेनाको मारते हुए सन्मुख वर्त्तमान हुए, तब भीष्मजीने शत्रुओंके हाथसे पीड़ित मनुष्य हाथी घोड़ोंके नाशको देखकर नहीं सहा, और उस बड़े धनुषधारी अजेयने अपनेजीवनको त्याग करकेवत्सदन्त अंजलिक सत नाम बाणों से पांडवों के ऊपर वर्षा करीहे राजा उस शस्त्र उठानेवाले ने युक्ति से पाण्डवोंके अत्यन्त प्रबल पांच महारथियों को शायक नाम बाणों से वा नाना प्रकार के क्रोधसे छोड़े हुए अस्त्रों से रोका, २९,३०,३१, हे पुरुषोत्तम इसके विशेष उन्होंने असंख्य हाथी घोड़े और रथसे रथियों को भी गिराया, शत्रुओंके विजय करनेवाले घोड़े के सवारों को घोड़ों की पीठसे और हाथीके सवारों को हाथी की पीठसे और सन्मुख आने वाले पदातियों को भी गिराया, फिर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले महारथी अकेले भीष्म के सन्मुख पांडव लोग ऐसे हुए जैसे कि असुर लोग वज्रधारीइन्द्र के सन्मुख हुए थे, वहां इन्द्र बज्र के समान बाणों को छोड़ते हुए भीष्म जी सब दिशाओं में महा भयानक रूप को करते हुए दृष्ट

पड़े और इनका धनुष भी इन्द्र धनुष के समान मंडल रूप दृष्ट गोचर हुआ, हे राजा आपके पुत्रों ने युद्धमें उस कर्म को देखकर बड़े आश्चर्य्य में होके पितामह की प्रशंसा करी, और पांडवों ने उदास होकर युद्धमें लड़ते हुए आपके शूर पिता को ऐसा देखा जैसे असुर लोगों ने विप्र चित्ती को देखा था, दशवें दिनके वर्त्तमान होनेपर इस मृत्युके समान भीष्म को शिखंडी की रथवाली सेनाने नहीं रोका, जैसे कि अग्नि बनको जलाता है उसी प्रकार शिखंडी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से सेना को भस्म करके अपने तीन बाणोंसे उसकीछातीको घायलकिया४० जो कि कालपुरुषकीउत्पन्न कीहुई मृत्युऔर डाढ़में विष धारण करनेवाले सर्पकी समानक्रोधी महाबली भीष्म थे वह महाधनुर्धारी अपने को शिखंडीसे घायल देखकरअत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धको न चाहकर हंसतेहुए यह वचनबोले कि तू इच्छाके समान युद्धकर चाहै न कर परन्तु मैं किसी प्रकार से भी तुझसे नहीं लड़ूंगा, क्योंकि निश्चय करके ईश्वर से उत्पन्न की हुई तूवही शिखंडिनी है भीष्मके इस वचनको सुनकर क्रोध में भरा हुआ शिखंडी होठों को चबाता हुआ भीष्म जीसे बोला कि हे महाबाहु क्षत्रियों के नाश करने वाले मैं तुझको जानताहूं, और तेरा परशुराम जीके साथ युद्ध करनाभी सुना और बहुत सा तेरा दिव्य प्रभाव सुना, हे नरोत्तम अब मैं तेरे प्रभाव को जानताहुआ भी पांडवों के और अपने प्रयोजन को सिद्ध करने के निमित्त तुझ से लड़ूंगा, और युद्धमें संग्राम करके अवश्य तुझको मारूंगा यह तेरे आगे सत्य २ शपथ करताहूं, मेरे इस वचन को सुनकर जो तुझे करना उचित हो उसे अवश्यकर इच्छाके अनुसार चाहै युद्ध कर या न कर तूमेरे हाथसे जीवता न छूटेगा, हे युद्धमें विजयकरने वाले भीष्म तुम इस लोकको अच्छी रीति से प्रसन्न करो, संजय बोले कि ऐसे २ बचन रूपी बाणों से अत्यन्त विदीर्ण हृदय करके झुकी हुई गांठवाले पांच बाणों से युद्ध भूमिमें भीष्मजीको घायल किया, फिर महारथी अर्जुन ने उसके इन वचनों को सुनकर यह

विचार किया कि अबयही समयहै ऐसा जानकर शिखंडीकोप्रेरणा करी ५० और कहा कि मैं शत्रुओं को बाणोंसे हटाताहुआ तेरे पीछे लड़ूंगा तुम अत्यंत क्रोधित होकर उस भयानकबल रूपवाले भीष्म के सन्मुख जाओ, यह महाबली युद्ध में तेरे पीड़ा देने को समर्थ नहींहै इस हेतुसे हे महाबाहो अब युक्ति पूर्व्वक भीष्म के सन्मुख जाओ हे शिखंडी जो तू भीष्मको बिना मारे हुए युद्धसे जायगा तौ मेरी और तेरी दोनों की इस लोक में हंसी होगी, हे वीर जैसे इस लोकमें हमारी तुम्हारी हंसी न होय वही तुमको युद्धमें उपाय करना योग्यहै, हे महाबली मैं सब रथियोंकोरोकता हुआ युद्धमें तेरी सहायता करूंगा तुम अवश्य पितामहको विजय करो, मैं (द्रोणाचार्य्य) (अश्वत्थामा) (कृपाचार्य्य) (दुर्य्योधन) (चित्रसेन) (विकर्ण) (जयद्रथ सिन्धका राजा) विन्द अनुबिन्द और (अवन्ति देशके राजा) (काम्बोज) (सुदक्षिण) (शूरभगदत्त) (महाबली राजामगध) (सोमदत्ति) राक्षसों के राजा आर्ष्यशृङ्ग और त्रिगर्त इन सबको सब महा रथियों समेत युद्धमें ऐसे रोकूंगा जैसे किकिनारा या समुद्रकी मर्य्यादा समुद्र को रोकतेहैं मैं सब सेना सेलड़ताहुआ महाबली कौरवों को हटाऊंगा तुम पितामहको विजय करो ५९॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिनवोत्तरशततमोऽध्यायः १०९॥

एकसौदशवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें क्रोधयुक्त पांचालदेशी शिखंडीकिसरीति से उसधर्मात्मा सावधानव्रतगांगेय भीष्मपितामहके सन्मुखदौड़ा, १ पांडवोंकी सेनामेंयुद्धके समय कौनकौनसे शस्त्रधारी बिजयाभिलाषी शीघ्रताकरनेवाले महारथियोंने शिखंडीकी रक्षाकरी, और वहशन्तनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्म उस दशवें दिनमें पांडव और संजियों से कैसे २ युद्ध करनेवाले हुए, मैं युद्धमें शिखंडी को भीष्मजीके सन्मुख जातेहुए शान्ती को नहीं पाता हूं अर्थात् सहनहीं सक्ताहूं

चाहै इन भीष्मजीका रथ टूटगया वा खैंचते २ धनुषके खण्ड भी होगयेहों परन्तु तौभी शिखण्डी की सामर्थ्यनथी जो उनकेसन्मुख जासके, संजयबोले कि हे भरतर्षभ युद्धमें लड़ते और गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे शत्रुओंको मारनेमें इस भीष्मका नधनुष टूटा न रथ खंडितहुआ हे राजा आपके पुत्रोंकेलाखों महारथी, और हजारोंही अलंकृतहाथीघोड़े पितामहको आगेकरके युद्धकरनेकेलियेसन्मुख वर्त्तमानहुए, उसयुद्धमें भी सत्यप्रतिज्ञ भीष्मजीने अपने प्रणके अनुसार पांडवोंकी सेनाका बारंबार नाशकिया, फिर पांडवोंसमेत उन सब पांचाल देशियोंने बाणोंसे बड़े २ शत्रुओं के मारनेवाले युद्धमें प्रवृत्त धनुषधारी भीष्म को क्षमा न किया, फिर दशवें दिन के वर्त्तमान होनेपर शिखंडीआदि हजारों शत्रुओंको सेनासमेत बाणोंसे पृथक् २ करदिया १० हे राजा युद्धमें पांडवलोग बड़े धनुषधारी भीष्मजीके विजयकरनेको ऐसे नहीं समर्थ्यहुए जैसे कि पाशधारी यमराजके विजयकरनेको कोई समर्थ्यनहो, इसके पीछे सव्यसाचीबाण फैंकनेवाला अर्थात् बायेंहाथसे भी बाण चलानेवाला सर्वसंसारी धनका जीतनेवाला अजेय अर्जुन सब रथियों को भयभीत करताहुआ सन्मुख आया, वह अर्जुन सिंहकेसमान ऊंचे स्वरसे गर्जना करके प्रत्यंचाको बारंबार खैंचता और बाणों की वर्षा करताहुआ, युद्ध में कालकेसमान आकर बिचरताहुआ, हे राजा आपके शूरवीर उसके शब्दसेही भयभीत होकर बड़ी भयातुरता से ऐसेभागे जैसे कि सिंहके शब्द से मृगभागतेहैं, फिर विजय करनेवाले पांडवों को और आपकी पीड़ामानसेनाको देखकर अत्यन्त दुखी दुर्योधन भीष्मजीसे बोला, हे तात यह श्वेत घोड़े वाला श्रीकृष्णजीको सारथीरखनेवाला पांडव अर्जुन मेरे सब शूरबीरों को ऐसे भस्मकिये डालताहै जैसे अग्नि बनको भस्मकरतीहै, हे गांगेयभीष्मजी पांडवके हाथसे सबप्रकार से छिन्न भिन्न युद्धसे भागीहुई सेनाओंको देखो, जैसे कि बनमें गायचरानेवाला सब पशुओंके समूहोंको पृथक् २ करके हांकत

है इसी प्रकार यह शत्रुसंतापीमेरी सेनाको हांक२ कर छिन्नभिन्न करताहै, अर्जुनके बाणोंसे विदीर्ण जहां तहांसे भागेहुई मेरीसेना को महादुर्जय भीमसेनभी वैसेहीभगाताहै, और सात्विकी चेकितान वा माद्रीके पुत्र दोनों नकुल सहदेव और बड़ाबली अभिमन्यु यह सब मेरीसेनाको भगारहेहैं२० इसीप्रकार शूरबीर धृष्टद्युम्न और घटोत्कच राक्षसने भी मेरीसेनाको भगायाहै, हेभरतर्षभ देवताओं के समान बलरखनेवाले आपकेसिवाय इन महारथियों से घायल हुई सेनाका कहीं कोई आश्रय नहीं दिखाईदेता है हे पुरुषोत्तम आपसमर्थहैं इससे शीघ्रही इन महादुखियोंके आश्रयहूजिये, हे राजाइस प्रकारसे कहेहुए आपके पितादेवव्रत भीष्मजी एकमुहूर्त्त तक शोचमें मग्नहो अपने निश्चयको करके, आपके पुत्रसेमिलकर बोले कि हे राजा दुर्योधन तुम स्थिर बुद्धी से समझो, हे महाबली मैंने पूर्व्व समय में तुझसे वचन पूर्व्वक प्रण कियाथा कि दश हज़ार महात्मा क्षत्रियों को मारकर, युद्धसे पृथक् हूंगा, यह मेरा प्रति दिनका कर्म है सो हे दुर्य्योधन मैंने अपने वचनके अनुसार उसको पूरा किया, और अब भी बड़े कर्म को करूंगा अर्थात् मैं मृतक होकर शयन करूंगा अथवा पांडवों को मारूंगा हे राजा अब मैं स्वामी के ऋणसे निवृत्त होकर सेनाके मुख पर मृतक होकर तेरे ऋणको चुकाऊंगा, यह कहकर क्षत्रियोंकोबाणों से आच्छादित करते हुए अजेय भीष्मने पांडवोंकी सेनाको सन्मुख पाया ३० हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस सेनामें नियत सर्पके समान क्रोधरूप गांगेय भीष्म जीको पांडवों ने युद्ध भूमिमें आकर रोका, हे धृतराष्ट्र दशवें दिन अपनी सामर्थ को दिखाते हुये उन भीष्म पितामह ने लाखों कोही मार डाला, पांचाल देशियोंमें जो श्रेष्ठ और महारथी राजकुमार थे उनके पंजों को ऐसे ऐंवलिया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से जलको खैंचता है, हे महाराज दश हजार शीघ्रगामी हाथियों को और इतनेही सवारों समेत घोड़ोंको मारा पूरे एक लाख पदातियों के मरने पर भीष्मजी युद्धमेंऐसे क्रोधयुक्त

हुए जैसे कि निर्धूम अग्नि होताहै, पांडवों के शूर वीरोंमेंसे कोईभी इस सूर्य्य समान संतप्त करने वाले भीष्म के सन्मुख देखने को समर्थ नहीं हुआ, तब उस युद्धमें बड़े धनुष धारीसे पीड़ामान पांडवोंके वह शूरवीर महारथी संजय भीष्मके मारनेके निमित्तसन्मुख गये, और जैसे कि बड़ा मेरु पर्व्वत बादलों समेत जाताहै वैसेही शंतनुके पुत्र भीष्म भी अच्छे २ शूरवीरों समेत रक्षित होकरचले, फिर आपके पुत्रों ने बड़ी सेना समेत भीष्म जीको चारों ओर से रक्षित किया और युद्ध जारी हुआ ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिदुर्य्योधनभीष्मसम्बादेदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौ ग्यारहका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा फिर अर्जुन युद्धमें भीष्मके पराक्रमको देखकर शिखंडी से बोला कि तुम पितामह के सन्मुख हो जाओ, अब तुम भीष्म जीसे किसी प्रकार का भय मत करो मैं इन भीष्म जीको अपने उत्तम बाणों के द्वारा रथसे गिराऊंगा, हे राजाअर्जुन के ऐसे वचन को सुनकर वह शिखंडी भीष्म के सन्मुख गया, और इसी प्रकार धृष्टद्युम्नऔर महारथी अभिमन्यु यहदोनोंभी अर्जुन के वचनों से प्रसन्न चित्तहोकर भीष्मजीके सन्मुखगये, विराट और द्रुपद यह दोनोंवृद्ध और शस्त्रोंसे अलंकृत राजाकुन्तभोज यह तीनों आपकेपुत्रके देखतेहुए भीष्मके सन्मुखगये, और नकुल सहदेव और पराक्रमी धर्मराजयुधिष्ठिर और अन्य सबसेनाकेलोगभी उनकेसन्मुखगये, उस समय नकुल और सहदेव दोनों अर्जुन के बचनों को सुनकर आपके पुत्रके देखतेहुए भीष्मके सन्मुखदौड़े, फिर आपके शूरबीर भी अपनी सामर्थ और साहसकेद्वारा उन इकट्ठे हुए महाभारथियोंके सन्मुखगये उनका वृत्तान्त मुझसे सुनो, हे महाराज भीष्मकी रक्षाकेनिमित्त चित्रसेन तो चेकितानके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि व्याघ्रका बच्चा बैलके सन्मुखजाताहै, हे राजा भीष्म के समीप आयेहुए शीघ्रताकरनेवाले युद्धमें कुशल धृष्टद्युम्नको कृत-

वर्माने रोका १० और शीघ्रता करनेवाले सोमदत्त ने भीष्मजीके मारनेकी इच्छा रखनेवाले महाक्रोधित भीमसेनको रोका, इसीप्रकार भीष्मजीके जीवनके चाहनेवाले विकर्ण ने बहुत शायकों के फेंकनेवाले शूर नकुल को रोका, ऐसेही युद्धमें अत्यन्त क्रोधीशारद्वत कृपाचार्य्यने भीष्मके रथपर जातेहुए सहदेव को रोका १३ और बलवान् दुर्मुख उस भीष्मके मारने में प्रवृत्त भीमसेनके पुत्र घटोत्कच राक्षसके सन्मुखहुआ, और युद्धमें जातेहुए सात्विकीको आपके पुत्रनेरोका और भीष्मके रथपर जातेहुए अभिमन्युको, राजाकांबोज सुदक्षिणने रोका और शत्रुओंके मारनेवाले बिराट्और द्रुपद दोनों वृद्धोंको क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने रोका हे राजा भीष्मके मारनेको उत्सुक पांडुके बड़े पुत्र धर्मराज युधिष्ठिरको द्रोणाचार्य्यने और शिखण्डीको आगेकरके युद्धमें वेगवान् भीष्मको चाहते दशों दिशाओंके प्रकाशकरनेवाले अर्जुनको बड़े धनुषधारी दुश्शासनने रोका, और आपके अन्य शूरबीरोंने भीष्मके सन्मुखजातेहुए पांडवों के महारथियोंको युद्धमें रोका २० इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी धृष्टद्युम्न अकलाहो वारंबार अपनी सेनाओंको इसरीति से पुकारताहुआ भीष्मके सन्मुखगया, कि यह कौरवनन्दन अर्जुन युद्ध में भीष्मके सन्मुख जाताहै समीप आजाओ डरोमत भीष्मही का नाशहोगा तुम्हारा नहीं होगा, युद्धमें अर्जुनसे लड़नेको इन्द्र भी साहस नहीं करसक्ताहै हे बीरलोगो फिर वह निर्बल थोड़े जीवनवाला भीष्म युद्धमें क्या करसक्ताहै, पांडवोंके महारथीसेनापति के इस बचनको सुनकर वह सब अत्यन्त प्रसन्न मन होकर अर्जुनके रथके समीप गये, पुरुषोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त प्रसन्नचित्त आपके शूरबीरोंने बहुतसी सामर्थ्योंसे युक्त बड़े पराक्रमियों के समान युद्धमें आनेवालोंको रोका, फिर भीष्मके जीवनका चाहनेवालामहारथी दुश्शासन भयको त्यागकर अर्जुनके सन्मुख गया, इसीप्रकार शूरवीर पांडवलोग भी भीष्मजीके रथकेपास आपके महारथीपुत्रों के सन्मुखगये, हे राजा वहां हमने अपूर्व्वरूपके आश्चर्य्यको देखा

कि अर्जुनने दुश्शासनके रथको पाकर उल्लंघन नहीं किया, जैसे कि मर्य्यादा वा किनारा जलसे व्याकुल समुद्रको रोकता है उसी प्रकार आपके पुत्रने क्रोधयुक्त पांडव अर्जुन को रोका, वह दोनों रथियों में श्रेष्ठ दुर्जय पुरुष शोभा और प्रकाश से चन्द्रमा और सूर्य्यके समान विदित होते थे ३० इसीप्रकार वह दोनों क्रोधभरे परस्पर मारनेके इच्छावान् युद्धमें ऐसे बढ़े जैसे कि पूर्व्व समय में यमराज और इन्द्र बढ़ेथे, फिर दुश्शासन ने विशिखनाम तीनबाणों से अर्जुनको और बीसबाणसे वासुदेवजीको घायलकिया, तदनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुनने श्रीकृष्णाजीको पीड़ामान् देखकर युद्ध भूमि में नाराचनाम बाणोंके एकसेकड़ से दुश्शासनको घायल किया उन बाणोंने उसके कवचको काटकर उसके रुधिरको पिया फिर महा-क्रोधी दुश्शासनने गुप्तग्रन्थीवाले तीन वा पांचबाणोंसे अर्जुनको ललाटपर घायलकिया उन ललाटपर नियत बाणोंसे वह अर्जुन ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि अत्यन्त ऊंचे २ शिखरोंसे मेरुपर्व-त शोभितहोताहै फिर वह बड़ा धनुषधारी अर्जुन आपके धनुषधा-री पुत्रसे अत्यन्त घायल होकर युद्धमें ऐसा शोभायुक्त हुआ जैसा कि फूलाहुआ किंशुक बृक्ष होताहै इसके पीछे अर्जुनने उसक्रोधी दुश्शासनको ऐसा पीड़ितकिया, जैसे कि पर्वके दिन अत्यन्तक्रोध युक्त राहु पूर्णचंद्रमाको दुःखितकरताहै हे राजा पराक्रमी अर्जुनसे पीड़ामान् आपके पुत्रने, कंकपक्षवाले शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणोंसे अर्जुनको फिर पीड़ामान्किया तबतो अर्जुनने उसके धनुष को काटकर तीनबाणों से उसके रथको खंडित किया, उसके पीछे तीक्ष्णबाणोंसे उसके शरीरको घायलकिया फिर भीष्मके आगेनिय-तहोकर उसने दूसरे धनुषकोलेकर अर्जुनको पच्चीस २५ बाणोंसे भुजा और छातीपर घायल किया हे राजा फिर शत्रुसंतापी क्रोध-युक्त अर्जुनने उसके ऊपर यमराजके दण्डकेसमान महाभयानक विशिखनाम बहुतसे बाणोंको चलाया तब आपकेपुत्रने अर्जुन के उन बाणोंको बीचमेंही काटा, ४२ वह आश्चर्य्यसाहुआ फिर आप

के पुत्रने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे अर्जुनको व्यथितकिया,इसकेपीछे युद्धमें क्रोधभरे अर्जुनने सुनहरी पुंखवाले वा शिलापर घिसेहुए बाणोंको धनुषपर चढ़ाकर युद्धमें फेंका,हे राजा वह बाण उसमहात्मा के शरीर में ऐसे प्रवेशकरगये जैसे कि तड़ागको पाकर हंस प्रवेश करजातेहैं, महात्मा पांडवके हाथसे पीड़ित आपका पुत्र युद्धमें अर्जुनको छोड़कर शीघ्रही भीष्मजीके रथके पास गया तब भीष्मजी उस अगाध जलके डूबेहुए को आधाररूप द्वीप होगये इसकेपीछे हे राजा आपके शूरबीर पुत्रने चैतन्य होकर फिर महा तीव्रबाणोंसे अर्जुनको ऐसा ढकदिया जैसे कि बड़े शरीरवाले इन्द्रने बृत्रासुरको आच्छादित कियाथा उसके घायल करने परभी अर्जुन पीड़ामान् नहीं हुआ ४८॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकादशोत्तरशततमोऽध्यायः १११॥

एकसौबारहंका अध्याय॥

संजय बोले कि युद्धमें शस्त्रोंसे अलंकृत भीष्म के सन्मुख जाते हुए सात्विकीको बड़े धनुषधारी आर्ष्यसृंगने युद्धभूमिमें रोका, हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधित और हंसतेहुए सात्विकीने नौ बाणोंसे राक्षस को घायल किया, इसी प्रकार अत्यन्त कोपयुक्त राक्षसने भी शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्विकीको पीड़ितकिया,फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शत्रु हन्ता सात्विकीने बाणोंको बर्षाराक्षस परकरो, और राक्षसने तीक्ष्ण विशिखोंसेउस सत्य पराक्रमी महाबाहु सात्विकीको घायल करके बड़े सिंह नादको किया,फिर राक्षसके हाथसे अत्यन्तघायल और रोकाहुआ महातेजस्वी सात्विकीभी हंस २ करगर्जा, इसपीछे क्रोधयुक्त भगदत्तने अपने तीक्ष्णबाणोंसे सात्विकीको ऐसाघायल किया जैसे कि चावकों से बड़े हाथीको घायल करतेहैं, फिररथियोंमें श्रेष्ठ सात्विकीने उस राक्षस को छोड़कर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे राजा प्राग्ज्योतिष को घायल किया, और बड़े हस्तलाघवीराजा प्राग्ज्योतिषने उस सात्विकीके बड़े धनुषको सौधारवाले

भल्लसे काटा, फिरउस शत्रुहन्ताने दूसरे वेगवान् धनुषको लेकर बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे भगदत्तको घायल किया १० फिरइस अत्यन्त घायल होठोंको चाबतेबड़े धनुषधारीने सुवर्ण और बैडूर्य्य मणि से अलंकृत यमराज के दण्ड के समान महा भयानक लोहेकी दृढ़ शक्तीको फेंका हेराजा उसके हाथसे प्रेरितउस अकस्मात् गिरतीहुई शक्तीको सात्विकीने अपने बाणोंसे दोखण्ड करके पृथ्वी पर गेरा फिर आपके पुत्रने शक्तीको टूटाहुआ देखकर बड़े रथोंके समू-हेांसे सात्विकी को घेरा फिरउस सात्विकी को घिराहुआ देखकर अत्यन्त क्रोध युक्त दुर्योधन अपने भाइयोंसे बोला, कि हे कौरवो अब ऐसाकरो जिससे कि सात्विकी हमारेइन रथसमूहोंसे जीवता नलौटे, उसके मरने परमैं पांडवों की बड़ी सेनाकोभी मृतकहीमान ताहूंतब महारथियोंने कहाकिऐसाही होगा, यहकहकर भीष्म केही आगे सात्विकी से युद्धकिया और महाबली राजा काम्बोजने भीष्म की ओर जातेहुएयुद्ध में प्रवृत्त अभिमन्यु को रोका, अभिमन्युने गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे राजाको घायल करके चौंसठ बाणोंसेफिर व्यथित किया, इसके अनन्तर राजा सुदक्षिणनेपांच बाणोंसेघायल करके नौ बाणोंसे उसके सारथीको घायल किया २० वहां उन दोनोंकी सन्मुखता में बड़ाभारी युद्धहुआ और शत्रुहन्ता शिखण्डी गांगेयजीकी ओरदौड़ा, और युद्धमें क्रोधयुक्त, महारथी दोनोंबिराट् और द्रुपद उस सेनाको हटाते हुए भीष्मकी ओरको दौड़े, तब महाक्रोधित महारथी अश्वत्थामा उनकेसन्मुखगया तदनन्तरउसके साथउन दोनोंका बड़ायुद्ध जारीहुआ, फिरराजा बिराट्ने उसउपाय करनेवाले और युद्धमें शोभापानेवाले बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा को दश भल्लों से घायल किया फिर द्रुपदने तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणोंसेघायलकियाफिर वहदोनोंगुरूके पुत्रको सन्मुखपाकरप्रहार करनेलगे, तदनन्तरअश्वत्थामाने उनभीष्मजीके ऊपर युद्धमें प्रवृत्त बिराट् और द्रुपदकोअनेक बाणोंसे घायल किया, २६ वहांहमने उनदोनों वृद्धों के बड़े भारी कर्मको देखा कि युद्धमें अश्वत्थामाके

महाघोर भयानक बाणोंको रोका, और कृपाचार्य्यजी उसजातेहुए सहदेवके सन्मुख ऐसेगये जैसेकि बनमें मतवाला हाथीमत वाले हाथीकेसन्मुख जाताहै, वहांशीघ्रही शूरबीर कृपाचार्य्यने बड़े तीव्र सत्तर बाणों से सहदेव को घायल किया, फिर सहदेव ने उन के धनुष के खंड २ करके नौबाणोंसे उनको घायलकिया ३० भीष्म के जीवन को चाहते उस प्रसन्नचित्त और क्रोधमेंयुक्तकृपाचार्य्यने मादीनन्दन सहदेवको तीव्रदश बाणोंसे छातीकेऊपर घायलकिया हे राजा इस प्रकार भीष्म के मारनेकी इच्छा से असह्यक्रोध भरे सहदेवने कृपाचार्य्य कोभी छातीपर घायल कियातबउन दोनों का महाघोर और भयानक युद्धहुआ,,, इसके पीछे शत्रुसंतापी युद्ध में क्रोधित महाबली विकर्णने नकुल को सातबाणों से घायल किया तब आपके पुत्रसे अत्यन्त घायल नकुलनेभी सतहत्तर शिलीमुख बाणोंसे विकर्णको घायल किया, फिरउनशत्रु संतापी बीरोंनेभीष्म के कारण परस्परमें ऐसे प्रहार किये जैसेकि गोशालामें दोगौऔर वृषभप्रहार करते हैं, भीष्मके कारण से पराक्रमकरने वालादुर्मुख युद्धमें आपको सेनाको मारने वाले और घूमते हुए घटोत्कच के सन्मुख गया ३७ फिर क्रोधयुक्त घटोत्कचने गुप्तग्रन्थी वालेबाणों से उस शत्रु संतापी दुर्मुख को छातीपर घायलकिया, फिर गर्जना पूर्व्वक प्रसन्न चित्त दुर्मुखनेभी सुन्दर मुखवाले साठबाणोंसे भीम सेनके पुत्रघटोत्कच को घायल किया, इसी प्रकार महारथी कृतवर्मा ने भीष्मके मारनेकी इच्छा रखनेवाले रथियोंमें श्रेष्ठजातेहुए धृष्टद्युम्न को रोका ४० फिर कृतवर्मानेभी पांच लोहेके तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल करके पचास बाणोंसे शीघही छातीमेंघायल किया, इसीप्रकार धृष्टद्युम्नने तीक्ष्ण कंकपक्षवाले नौबाणोंसेकृतवर्माको घायल कियायुद्धमें भीष्मके कारण उनदोनों काऐसा कठिन युद्धहुआ जैसेकि वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा,इसीप्रकार भूरिश्रवा उसभीष्म की ओरजाते महारथी भीमसेनके सन्मुख शीघ्रता से गया और तिष्ठ २ शब्दबोला, उसके पीछे सोमदत्त के पुत्रभूरि

श्रवाने युद्धमें तीक्ष्ण सुनहरी पुंखवाले नाराच बाणसे भीमसेन को छातीमें घायल किया प्रतापवान् भीनसेन उसछाती पर नियतहुए बाणसे ऐसाशोभायमान हुआ जैसेकि पूर्वसमय में स्वामिकार्त्तिक जीकी शक्तीसे क्रौंचनाम पर्व्वत शोभायमानहुआ था, युद्धमें क्रोध युक्त उनदोनों नरोत्तमोंने सूर्य्यके समान प्रकाशित और साफकिये हुएबाणोंको परस्पर में फेंका, फिर भीष्मके मारने की इच्छा रखने वाले भीमसेनने महारथीभूरिश्रवाको और भूरिश्रवा ने भीमसेनको घायलकिया,प्रहार पर प्रहारकरने में कुशल वह दोनों युद्धमें संग्राम कर्त्ताहुए फिर भारद्वाज द्रोणा चार्य्यजीने बड़ीसेना समेत भीष्मके सन्मुख जातेहुए कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को रोका हे राजा द्रोणाचार्य्य के रथका शब्द बादलके समानथा उसको सुनकर, ४६।५० प्रभद्रक नाम राजकुमार बड़े कंपाय मान हुए और पांडवों की वह बड़ी बुद्धिमान् सेना द्रोणाचार्य्य से रोकी हुई चरण से एक पदभी चलाने वाली नहींहुई, और युद्धमें कुशल भीष्मके ऊपर कोप युक्त चेकितान,, को आपके पुत्रचित्र सेनने रोका परा क्रमी चित्रसेन भीष्मजीके लिये पराक्रमकरने वालाहुआ हे राजा उस चित्रसेन ने बड़ीसामर्थ्य से चेकितानसे युद्ध कियाइसी प्रकार चेकितान ने भी चित्रसेन को रोका, उस समय पर उन दोनों का युद्धबहुत बड़ा हुआ और वहां पर रुके हुए अर्जुन ने बहुत प्रकार से, आपके पुत्र का मुख मोड़कर आपकी सेनाका मर्द्दनकिया और दुश्शासन ने भी बड़े पराक्रमसे यह निश्चय करके अर्जुनकोरोका कि यह किसी प्रकार से हमारे पितामह भीष्मजीको नहीं मारे हे भरतर्षभ युद्धमें आपके पुत्रकी वह घायलहुई सेना उत्तम २रथियों समेत जहां तहां अचेत होकर गिरी और भागगई ५७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिद्वंद्वयुद्धे द्वादशोपरिशततमोऽध्यायः १ १२॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर बड़े धनुषधारी मतवाले हाथी के समान

पराक्रमी नरोत्तम महाबली द्रोणाचार्य्य भी महा गजेन्द्र के हटाने वाले बड़े धनुषको लेकर सबको कंपाते सेनाको घायल करतेहुए पांडवी सेना को मज्ञाते संतप्त करतेहुए सब ओरसे चिह्नोंकोदेख कर अपनेपुत्र अश्वत्थामासे बोले,,, ७२।७३हे पुत्रयह वह दिनहै जिसमें युद्धके बीच भीष्मको मारना चाहता महाबली अर्जुनबड़े २ उपायोंको करेगा, क्योंकि मेरे बाणउछलते हैं और धनुष कंपायमान होता है और अस्त्र योगको प्राप्त होतेहैं और मेरी मति क्रूरवर्त्तमान है दिशाओंमें शान्तीसे रहित भयकारी पशुपक्षी बोलतेहैं और भरत बंशियोंकी सेनामेंगृध्र नीच पक्षियोंकेसाथ बैठेहैं सूर्य्य प्रभा से रहित हैं औरदिशा सब ओरसे लालहैं और पृथ्वी सबप्रकारसेशब्दायमान और पीड़ितहोकर कांपतीहै,कंकगृध्र और बलाक बारम्बार बोलते हैं अशुभ भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करते हुए बोलते हैं, सूर्य्य मंडल मेंसे बड़े उल्का पात होते हैं और एक बंध परिघ सूर्य्य को ढककर नियत हैं इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य्य का भयकारी प्रदेश अर्थात् पारस नाम मंडल राजाओं के शरीरोंका नाश करने वाला महाभयको उत्पन्नकरता हुआ बर्त्तमान हुआ है १० और राजा कुरुके मन्दिर में बिराजमान देवता कांपते हंसते नाचते और रोवते हैं, ग्रहों ने सूर्य्य को दक्षिण होकर चिह्नसे रहितकर दिया और भगवान् चन्द्रमानीचे मुख होकर वर्त्तमान हुए, राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहेहैं वह शस्त्रधारी अलंकृत राजा लोग दुर्य्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं, दोनों सेनाओं में चारों ओर को उसी पांचजन्य शंख और गांडीव धनुष के शब्द सुने जाते हैं, निश्चय करके बीर अर्जुन युद्धमें दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अन्य शूरवीरों को छोड़कर पितामह के सन्मुख जायगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और अर्जुनकी सन्मुखता को शोचकर मेरे रोयें खड़े हुए जातेहैं और चित्त भी पीड़ामान् होताहै, वहां अर्जुनउस छली और पापात्मा शिखंडी को आगे करके भीष्म के मारने को

गयाहै, पूर्व्व समय में भीष्मने कहा था कि मैं शिखंडी को नहीं मारूंगा क्योंकि इसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्रारब्ध से पुरुष होगया है, यह यज्ञसेन का पुत्र महा बली अशुभ ध्वजा-वाला है इस हेतु से गांगेय भीष्म जी उस अमंगल रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह बिचारकर मेरे चित्त में बडा खेद होता है युद्धमें प्रवृत्तचित्त क्रोधभरा शिखंडी भी कौरवों के वृद्ध पितामह भीष्म जीके सन्मुख गयाहै २० युधिष्ठिर को क्रोध और अर्जुन से सन्मुख हुआ भीष्म और यहांपरमेरा युद्धसम्बन्धी कर्मका प्रारम्भ यह सब बातें निश्चय करके प्रजाओं के अकल्याण को करनेवाली हैं, पांडव अर्जुन साहसी पराक्रमी शूर वीर अस्त्र शस्त्रों का ज्ञाता बड़े तीक्ष्ण दूर गिरने वाले बाणोंका फेंकनेवाला और लक्ष्यभेदी अर्थात् लक्ष्य का जाननेवाला है, यह अर्जुन इन्द्र समेत देवताओं से भी युद्धमें दुर्जय और अजेय हैं और पराक्रमी बुद्धिमान् दुःख रोगादि का जीतने वाला शूरवीरोंमें श्रेष्ठ युद्धमें सदैव विजयी और भयकारी अस्त्रोंका फेकने वाका है हे सावधान व्रत पुत्र तुम उस अर्जुनके मार्ग को रोकते हुए शीघ्र जाओ, अब इस महा भयकारी युद्धमें इस बड़े नाश को देखो, शूर लोगों के कवच जो सुवर्ण से जटित और बड़े मंगल स्वरूप हैं वह सब गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से तोड़े जातेहैं और ध्वजा तोमर धनुष भी खंड २ किये जाते हैं, और अत्यंत क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथसे साफ और तेजप्रास और सुवर्णके समान उज्ज्वल शक्तियां और हाथियोंकी वैजयन्तीअर्थात् पताका टूट रही हैं हे पुत्र दूसरे के आश्रयसे समय व्यतीत करने वालों से प्राणों की रक्षाकरने का यह समय नहींहै स्वर्गको मुख्य करके यश और बिजय के निमित्त तुम जाओ, यह बानर ध्वज अर्जुन के रथके द्वारा हाथी घोड़े और रथों से लहराती बड़ी भय-कारी अति अगम्य युद्ध रूपी नदीको तरता है, इस लोकमें युधि ष्ठिरही में किया हुआ बड़ा भारी तप दान वा चित्तकी शान्ती और ब्राह्मणों की रक्षा करना दृष्ट पड़ता है जिसकेभाई अर्जुन ३० वा

महाबली भीमसेन वा माद्रीकेपुत्र नकुलसहदेव और सबकेनाथ बासुदेवजी वर्त्तमानहैं ३१ उस दुर्बुद्धी जलकुक्कुड़ दुर्य्योधन के अभिमानसे उत्पन्न यह तपरूपक्रोध भरतबंशियोंकोसेनाको भस्मकरेडालताहै, यह वासुदेवजी का आश्रयरखनेवाला अर्जुन दुर्य्योधन की सबसेनाओंको सबरीतिसे छिन्नभिन्न करता विदित होरहाहै, यह सबसेना अर्जुनके हाथसे व्याकुल बड़े तरंगों से युक्त नाना प्रकार के जलजीवों से व्याकुल समुद्र की समान देखने में आतीहै, हाय हाय और कलकला शब्द सेनाके मुखपर सुने जातेहैं तुमराजा द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न के सन्मुख जाओ मैं युधिष्ठिर के सन्मुख जाऊंगा ३५ बड़े तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के बड़े व्यूहका मध्य सब ओरको नियत अति रथियोंसे समुद्रकी कुक्षिके समान कठिनतासे पार उतरनेके योग्यहै, (सात्विकी) (अभिमन्यु) (धृष्टद्युम्न) भीमसेन नकुल सहदेव इन सबने राजा युधिष्ठिरको चारोंओर से रक्षितकिया है, विष्णुकेसमान श्याम बड़े शालि वृक्ष के समान उन्नत दूसरे अर्जुन के समान यह शूरबीर सेनाके आगे जाताहै, इससे तुम बड़े धनुषको ले उत्तम अस्त्रोंको धारणकर राजा धृष्टद्युम्नके सन्मुख जाकर भीमसेन से लड़ो, कौनसा मनुष्य अपने प्यारे पुत्रको सदैव चिरंजीवी नहीं चाहताहै मैं क्षत्रीधर्मको देखकर उसके कारण से तुमको आज्ञादेताहूं कि ४० यह भीष्म महायुद्ध में बड़ी सेनाको नाशकरता है हे पुत्र यह भीमसेन युद्धमें यमराज और वरुणकेसमान हैं ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणित्रयोदशोपरिशततमोऽध्यायः ११३ ॥

एकसौचौदहकाअध्याय॥

संजय बोले कि उस महात्मा द्रोणाचार्य्यके इस बचनको सुनकर (भगदत्त) (कृपाचार्य्य) (शल्य) (कृतवर्मा) (विन्द) (अनुविन्द) अवन्ति देशके राजा लोग वा सिंधुका राजा (जयद्रथ) चित्रसेन (विकर्ण) (दुर्मर्षण) आदि आपके इन दश शूरबीरोंने भीमसेन से

युद्धकिया, वह राजालोग नानाप्रकार के देशोंमें उत्पन्न होनेवाले बड़ी सेनासमेत थे और भीष्मके बड़े यशको चाहनेवाले थे, उनमें से शल्यने नौबाणोंसे कृतवर्माने तीनबाणोंसे कृपाचार्य्यने नौबाणों से भीमसेनको घायलकिया और चित्रसेन भगदत्त और विकर्णने, दश २ बाणोंसे जयद्रथने तीनबाणोंसे व्यथितकिया, ५ और अवन्तिदेशके राजा विन्द अनुविन्द ने पांच २ बाणोंसे और दुर्मर्षणने तीक्ष्णधारके बीस बाणोंसे भीमसेनको घायल किया, हे महाराज फिर उन सब पृथक् शोभायमान महाभारती धृतराष्ट्रके पुत्रों को, युद्धमें घायलकरके शत्रुओंके मारनेवाले बीरपांडव भीमसेननेसात बाणसे शल्यको आठसे कृतवर्माको घायलकर, कृपाचार्य्यके बाण समेत धनुषको बीचमेंसे काटकर फिर उस टूटे धनुषवाले को सात बाणोंसे घायलकिया, वैसेही अवन्तिदेशके राजा बिन्द अनुविन्दको तीन २ बाणोंसे और दुर्मर्षणको बीसबाणोंसे और चित्रसेनकोपांच बाणसे घायलकिया १० फिर विकर्णको दशबाणोंसे जयद्रथको पांचबाणसे घायलकर फिर उसीको तीन तीक्ष्णबाणोंसे व्यथित करके बड़े प्रसन्न चित्तहोकर भीमसेन गर्जनाकरनेलगे, तब रथियोंमें श्रेष्ठ क्रोधयुक्त कृपाचार्यने दूसरे धनुषकोलेकर तीक्ष्णधारवाले द्वादशबाणोंसे भीमसेनको घायलकिया वह बारह बाणों से ऐसा घायलहुआ जैसे कि चावकोंसे हाथी घायलहोताहै, इसकेपीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने, युद्धमें अनेकबाणोंसे कृपाचार्यको घायलकरके तीनबाणोंसे जयद्रथके घोड़े और सारथीको मृत्यु के लोकमें भेजा फिर उसमहारथीने मृतक घोड़ोंके रथसे शीघ्रहीकूदकर १४, १५, भीमसेनके ऊपर तीक्ष्ण धारवाले बाणों को फेंका हे राजा धृतराष्ट्र भीमसेनने दोभल्लोंसे उस महात्मा जयद्रथकेधनुष को मध्यमेंसे काटा, वह टूटेधनुष रथहीन शीघ्रताकरनेवाला जयद्रथ जिसके घोड़े और सारथी मरगये थे १६ । १७ चित्रसेन के रथपर सवारहुआ वहां पांडव भीमसेननेयुद्धमें अपूर्व्व कर्मको किया १८ अर्थात् उसने सब लोगोंके देखते बाणोंसे महारथियों को

घायलकरके जयद्रथको विरथकिया,तब शल्यने भीमसेनके पराक्रम को नहीं सहा और बड़े तीक्ष्ण बाणों को धनुषपर चढ़ाकर २० भीमसेनको घायलकिया और तिष्ठ २ बचनको उच्चारणकिया इस को देखकर पराक्रमी (कृपाचार्य) (कृतवर्मा) (भगदत्त), २१ और अवन्तिदेशके राजा विन्द अनुविन्द (दुर्मर्षण) (विकर्ण) पराक्रमी जयद्रथ, इन सब शत्रुविजयी लोगोंने भी शल्यको देखकर शीघ्रही भीमसेनको घायलकिया और उसने उन सबको पांच २ बाणों से घायलकिया २३ शल्यको सत्तरबाणोंसे और दश भल्लों से घायल किया फिर शल्यने उसकोनौबाणोंसे घायलकरके पांचबाणोंसेफिर व्यथित करदिया २४ और एक भल्लसे उसके सारथीको मर्मस्थलमें घायलकिया इसके पीछे उस प्रतापी भीमसेनने अपने विश्वकनाम सारथीको घायलदेखकर २५ तीनबाणों से मद्रके राजा शल्य को भुजा और छातीपर घायलकिया,इसीप्रकार सीधेचलनेवाले तीन२ बाणोंसे अन्य २ बड़े २ धनुषधारियों को व्यथित करताहुआ सिंह के समान गर्जनाकरी, फिर उन सावधान बड़े २ धनुषधारियों ने युद्धमें कुशलभीमसेनको तीक्ष्ण नोकवाले तीन २ बाणोंसे मर्मस्थलोंमें अत्यन्त घायलकिया परन्तु वह अत्यन्त घायल बड़ा धनुष धारी भीमसेन ऐसे पीड़ामान नहीं हुआ, २८ जैसे कि जल धारा बर्षाकरनेवाले बादलोंसे पर्व्वत पीड़ा नहीं पाताहै फिर उस बड़े यशस्वी महारथी पांडव भीमसेन ने क्रोधमें भरके शल्य राजा को तीन बाणोंसे अत्यन्त घायलकरके युद्धभूमिमें सौ शायकोंसे राजा प्राग्ज्योतिषको घायलकिया २९, ३० इसके पीछे इसी यशस्वीने कृपाचार्यको बाणोंसे अत्यन्त घायलकरके अपनी हस्तलाघवता से महात्मा कृतवर्माके बाणसमेत धनुषको ३१ अत्यन्त तीक्ष्णक्षुरप्रों से काटा और इसीप्रकारसे कृतवर्माने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेनको ३२ दोनों भृकुटियोंके मध्यमें नाराच बाणसे घायलकिया फिर शत्रु संतापी भीमसेनने शल्यको नौलोहेके बाणोंसे घायलकरके ३३ तीन बाणोंसे भगदत्तको आठ बाणोंसे कृतवर्मा को और

दो २ बाणोंसे कृपाचार्य आदि रथियोंको घायलकिया ३४ इनसबोंने भी इसको तीक्ष्णधारके बाणोंसे घायलकिया ३५ फिर महारथियोंके सब शस्त्रोंसे पीड़ामान वह भीमसेन भी उनको तृणके समान कर दुःखसे रहित प्रसन्न मुखहोकर भ्रमणकरने लगा ३६ उन सावधान रथियोंमें श्रेष्ठ लोगोंने भी भीमसेनके ऊपर हजारों तीक्ष्णबाणोंको चलाया ३७ महाबीर भगदत्तने उस बुद्धिमान के ऊपर बड़ी वेगवान प्रकाशित सुनहरी दण्डवाली शक्तीको और राजाजयद्रथने तोमरको महाभुजने पट्टिशको कृपाचार्यने शतघ्नी को शल्यने बाणको ३९ और अन्य बड़े २ धनुषधारियोंने भीमसेनको लक्ष अर्थात् निशानाबनाकर पांच२ शिलीमुख बाणोंको बड़े पराक्रमसेचलाया४०तब वायुपुत्र भीमसेनने तोमरको तो क्षुरप्रनामबाण से दो खंडकिये और तीन बाणसे पट्टिश को तिलके कांडके समान काटा४१नौबाणोंसे शतघ्नीकोतोड़ राजामद्रके चलायेहुए बाणको काटकर भगदत्तकी चलाईहुई शक्तीको काटडालाइसीप्रकार युद्धमें प्रशंसनीय भीमसेनने गुप्तग्रन्थीवालेबाणोंसे अन्यभयानक बाणोंको काटा अर्थात् प्रत्येककेखंड२करदियेऔर उन सब धनुषधारियों को तीन २ बाणोंसे घायलकिया४३,४४, इसके पीछे वहां घोरयुद्धके होनेपर अर्जुन उस युद्धमें शत्रुओं को मारता शायकों से लड़ता महारथी भीमसेन को देखकर रथपर बैठा हुआ युद्ध भूमिमें आया वहां उन दोनों महात्मा पांडवोंको युद्धमें प्रवृत्त देखकर ४५, ४६ आपके शूरबीर पुरुषोंने वहां अपने विजयकी आशानहींकी फिरयुद्ध में महारथियों से लड़ते हुए भीमसेन को देखकर भीष्म के मारने की इच्छा करने वाले अर्जुनने शिखंडी को आगे करके उसयुद्ध में आपके उन दशशूरों को पायाजो भीमसेनसे युद्धकरनेमें नियतथेउन को अर्जुनने भीमसेन की प्रसन्नताके लिये बाणोंसे घायल किया ४९ फिर राजादुर्य्योधनने अर्जुन और भीमसेन इनदोनोंके मारने के निमित्त राजा सुशर्माको आज्ञाकरी ५० किहेसुशर्मा तुमअपनी सेना समेत शीघ्रही जाकर इनदोनों पांडव अर्जुन और भीमसेन

को मारो ५१ फिर प्रस्थलाधिप राजा सुशर्माने उसके उस बचन को सुन युद्धमेंजाके भीमसेन और अर्जुन दोनों धनुष धारियोंको ५२ हजारों रथियों समेत चारों ओरसे घेरलिया फिर अर्जुन से और शत्रुओंसे युद्धहोना प्रारंभ हुआ ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणि चतुर्द्दशाधिक शततमोऽध्यायः ११४ ॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय॥

संजय बोलेकि फिर अर्जुनने युद्धमें उपाय करने वाले महारथी शल्यको गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे ढक कर (सुशर्मा) (कृपाचार्य्य) (राजा प्राग्ज्योतिष)जयद्रथ राजा सिंध इनसबको तीन २ बाणों से घायल किया, और (चित्रसेन) (विकर्ण)(कृतवर्मा) (दुर्मर्षण) और अवन्तिदेशके महारथी राजालोग ३ इन सबकोकंक और मोरपक्ष वाले तीन २ बाणोंसे घायल किया और युद्धमें अतिरथो जयद्रथने आपकी सेनाको बाणोंसे पीड़ित करते हुए अर्जुन को शायकों से घायल करके चित्रसेनके रथपर बैठकर बड़ोतीव्रता से भीमसेन को घायलकिया ५ हे राजा रथियोंमेंश्रेष्ठ शल्य और कृपाचार्य्यने मर्म-भेदी बाणोंसे अर्जुन को अनेक रीतिसे घायल किया ६ और चित्र सेन आदि आपके पुत्रोंनेतीक्ष्ण धारवालेपांच२बाणोंसे,अर्जुन और भोम सेनको घायल किया वहां उनभरत बंशियोंमें और रथियोंमें श्रेष्ठ दोनों पांडवोंने ८ त्रिगर्त देशियों की बड़ी सेनाको पीड़ामान किया फिर सुशर्माभी तीव्रगामी नौ बाणोंसे अर्जुनको घायल करके बड़ी सेनाको भयभीत करता हुआ बड़े शब्दसे गर्जा और अन्य शूरबीर रथियोंने भीमसेन और अर्जुनको सीधे चलने वाले सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धारके बाणोंसे घायल किया उन रथियों के मध्यमें भरतबंशियोंमेंश्रेष्ठ कुन्तीकेपुत्रमहारथी क्रीड़ाकरतेहुए ऐसेअपूर्व्वरूप से आये जैसेकिबैलोंके मध्यमें मांसकी इच्छा रखने वाले मतवाले दो सिंह आतेहैं ११। १२ उन दोनों बीरोंने युद्धमें शूरोंके धनुषों को बहुत प्रकार से काटकर सैकड़ों मनुष्योंके शिरोंको गिराया १३

बहुत से रथटूटे सैकड़ों घोड़े मारेगये और सवारों समेत हाथी पृथ्वी पर गिरे १४ रथी और सवार भी जहां तहां नाशको प्राप्त चारोंओर से कंपते हुए दृष्टि आये १५ मृतक हाथी घोड़े पदाती और अनेक प्रकारसे टूटेहुए रथों से पृथ्वी सविस्तरसी होगई, हे राजा अनेक प्रकार से टूटेहुए क्षत्र और गिराई हुई ध्वजा और खंडित (अंकुश) (परश) (केयूर) (बाजूबन्द) (हार) (कोमल मृगचर्म).(मंडील)(दुधारेखड्ग) चामर वा व्यजनों से और जहां तहां कटीहुई राजाओं को चन्दन चर्चित भुजा और जंघाओं सेभीपृथ्वी आच्छादित दीखतीथी, वहांहमने युद्धके बीच अर्जुन के अपूर्व्व पराक्रमको देखाकि उसमहाबलीने उनसबशूरबीरोंको बाणों से ढककर घायलकरदिया २० फिर आपका महाबली पुत्रभीमसेन और अर्जुन के उस पराक्रमको देखकर गांगेयभीष्मजीके रथकेपास गया२१ तब (कृपाचार्य्य) (कृतवर्मा) (जयद्रथ) (राजासिंध) और अवन्ति देशके बिन्दअनुविन्द नाम राजाओंने युद्धको नहीं त्यागा २२ इसके पीछेबड़े धनुष धारी भीमसेन और महारथीअर्जुन युद्ध में कौरवोंकी महाभयकारी सेनाको ओरदौड़े २३उसके पीछेराजाओं ने बड़ी शीघ्रतासे मोरके समान चित्रित हजारों लाखों किन्तुअसंख्यों बाणों को अर्जुन के रथपर गिराया २४ तब अर्जुननेचारों ओरसे उन महारथियों को बाणों के जालसे रोक कर मृत्यु के लोकों को भेजा २५ फिर क्रोधयुक्त युद्धमें क्रीड़ा करते महारथी शल्यने गुप्त ग्रंथी वालेभल्लों से अर्जुन को छातीपर घायल किया २६ तब अर्जुनने उसके धनुष को तोड़ पांच बाणों से उसके हस्त त्राणको काटके तीक्ष्ण शायकों से उसके मर्म स्थलोंको अत्यन्त घायल किया२७ फिर क्रोधयुक्त राजामद्रने दूसरे बड़े दृढ़धनुषको लेकरबाणों से अर्जुनको व्यथितकिया २८ तीनबाणों से अर्जुनको पांचबाणों से बासुदेवजीको नौबाणोंसे भीमसेनको भुजा और छातीपरघायल किया २९ इसके पीछे महारथी द्रोणाचार्य्य और राजा मगध यह दोनोंदुर्य्योधन की आज्ञासे उस स्थानपर पहुंचे ३० जहां कि बड़े

महारथी अर्जुन और भीमसेनने कौरवी दुर्य्योधन की बड़ी सेना को मारा था फिर जय सेनने भयकारी शस्त्रवाले भीमसेनको तीव्र आठबाणों से घायल किया ३२ और भीमसेनने उसको दशबाणों से घायल करके पांचबाणों से फिर घायल किया और एक भल्ल से उसके सारथी को रथके बैठनेके स्थान से गिरादिया ३३ फिर वहराजा मगध सबसेना के देखते हुए चारों ओर को वहके हुए घोड़ोंके कारण से युद्धसे दूर चलागया ३४ द्रोणाचार्य्यने समय पाकर तीक्ष्ण धारवाले लोहेके शिली मुख नाम पैंसठ बाणों से भीमसेन को घायल किया ३५ हेभरत बंशी युद्धमें प्रशंसा पाने वाले भीम सेनने पिताके समान गुरूकोभी पैंसठ भल्लोंसे घायल किया,३६ फिर अर्जुनने बहुतसेलोहेके बाणोंसेसुशर्माको घायल करके उसकी उस भुजाको ऐस अलगकरदिया जैसेकिवायु बादलों को अलग करदेताहै ३७ उसके पीछे भीष्म और (राजा कौशल्य) (वृहद्वल) यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर भीमसेन और अर्जुन के सन्मुखगये ३८ इस रीतिसेशूर पांडव और पर्षतका पुत्र धृष्टद्युम्न उस मृत्यु के समान भीष्म के सन्मुख गये ३९ और अत्यन्त प्रसन्न चित्त शिखंडीभरत बंशियोंके पितामहको पाकर और उससे निर्भय होकर सन्मुख हुआ ४० और युधिष्ठिर आदि पांडव सब सृंजियों समेत शिखंडी को आगे करके युद्धमें भीष्मजी से युद्ध करनेलगे ४१ इसी प्रकार आपके सब पुत्रभीष्मजी को आगेकरके युद्धमें उन पांडवोंसे जिनका अग्रवर्ती शिखंडीथायुद्धकरने में प्रवृत्त हुए ४२ उसके पीछे वहांपर भीष्मकी विजय केविषयमें कौरवोंका भयकारी युद्ध पांडवों के साथजारी हुआ हेधृतराष्ट्र तब भीष्मजी आपके पुत्रों की बिजय के ग्लह अर्थात् चौपड़के दावहुए वहां पर बिजय वा पराजय के निमित्त द्यूत प्रारंभहुआ, फिर धृष्टद्युम्न ने सब सेनाको आज्ञाकरी कि हे श्रेष्ठ रथियो निर्भय होकर भीष्मके सन्मुख चलो मनमें किसी प्रकारका भी सन्देह मतकरो ४५ तब पांडवों की सेना अपने सेनापतिके बचन को सुनकर प्राणों के मो

हको त्यागकर उस महायुद्धमें शीघ्रही भीष्मके सन्मुख गई ४६ हे महाराज रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजीने उस आईहुई बड़ी सेनाको ऐसा रोका जैसे कि महासमुद्र को किनारा रोकताहै ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिपंचदशोपरिशततमोऽध्यायः ११५ ॥

एकसौसोलहका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय शंतनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्मजी दशवेंदिन पांडव और सृंजियों के साथ कैसे२ युद्धकरते हुए और कौरवोंने युद्धमें पांडवों को कैसे रोका हे संजय तू युद्धमें शोभापाने वाले भीष्मजी के महाभारी युद्ध को मुझसे वर्णन करके कह २ संजय बोले कि हे भरतबंशी कौरवलोगोंने पांडवोंके साथ जैसेयुद्ध को किया और जैसे युद्ध हुआ वह यथार्थ तुमसे कहताहूं ३ अर्जुन के बड़े अस्त्रों से आपके महारथी अत्यन्त क्रोध पूर्वक प्रतिदिन परलोकमें भेजेगये ४ और युद्धको बिजय करनेवाले उस कौरवो भीष्मने भी अपने कियेहुए सत्यसंकल्पके अनुसार पांडवोंकी सेना का सदैव नाश किया ५ हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र कौरवों समेत भीष्म और धृष्टद्युम्नसमेत अर्जुन इनदोनों युद्धकरनेवालोंको अपने२ बिजय करने में सन्देहहुआ ६ फिर उस दशवेंदिन के युद्धमें भीष्म और अर्जुन की सन्मुखतामें बारम्बार बड़ी भयकारी प्रलय बर्त्तमानहुई, उसदिनमें शत्रु संतापी उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता भीष्मजीने हजारों बड़े २ शूरबीरों को मारा ८ उनलोगों के नाम और गोत्र अज्ञात कल्पके समान थे अर्थात् नहीं मालूम सेही थे वह युद्ध में पीठ न मोड़नेवाले महाशूर भीष्मजी के हाथ से मारेगये ९ इसके पीछे धर्मात्मा भीष्मजीने दशदिन तक पांडवी सेनाको अच्छीरीति से संतप्त करके जीवन से बैराग्य पाया १० वह युद्धमें सन्मुख शीघ्रही अपने मरनेका इस रीति से बिचार करनेवाला हुआ कि मैं युद्धमें बहुतसे श्रेष्ठ मनुष्यों को नहीं मारूंगा ११ हे महाराज आपके पिता देवव्रत महाबाहु भीष्मजी चिन्ता करके पांडवों केस-

न्मुख होकर यह बचन बोला १२ कि हे बड़े ज्ञानी सर्ब शास्त्रज्ञ युधिष्ठिर मेरे इस स्वर्गके देनेवाले धर्मरूपी बचनोंको सुन १३ हे भरतवंशी बेटा मैं इस शरीर से अत्यन्त प्रीति रहितहूं और युद्धमें अनेकों जीवधारियों को मारते हुए मेरा समय व्यतीत हुआ १४ इस हेतुसे जो तू मेरा भला चाहता है तो तू अर्जुन को और इसी प्रकार पांचाल देशियोंको और सृंजियों को आगे करके मेरे मारनेका बिचार पूर्व्वक उपाय कर १५ सत्य दर्शी पांडव राजा युधिष्ठिर उनके इस अभिप्रायके मतकोजानकर सृंजियों समेतयुद्ध में भीष्मजीके सन्मुख गया १६ हे राजा उसके पीछे धृष्टद्युम्न और पांडव युधिष्ठिरने भीष्मजीके ऐसे बचनोंको सुनकर सेना को आज्ञाकरी १७कि चलकर युद्धकरो और युद्धमें सत्यसंकल्प एकही रथसे बिजय करनेवाले अर्जुनसे रक्षित होकर तुम भीष्म जीको बिजयकरो १८ निश्चय करके यह बड़ा धनुषधारी सेनापतिधृष्टद्युम्न और भीमसेन भी युद्धमें तुम्हारी रक्षाकरेंगे १९ हेसृंजियो अब युद्धमें तुमको भीष्मसे कोई प्रकार का भयनहींहोगा निश्चय करके हम शिखण्डी को आगेकरके भीष्मको बिजयकरेंगे २० वह क्रोधसे मूर्छित पांडव दशवें दिन उसी प्रकार का नियम करके ब्रह्म लोक को उत्तम मानते हुए सब मिलकर चले २१ और शिखण्डी को और पांडव अर्जुन को आगे करके भीष्मके गिराने के लियेबड़े उपायों में नियतहुए २२ उसके पीछे आपके पुत्रकी आज्ञासे नाना देशों के राजालोग द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा और सेना समेतमहाबली धनुषधारी दुश्शासन सब अपने इष्ट मित्र और बिरादरी वालों से युक्त इन सबोंने आकर युद्धमें निधत भीष्मजीको चारोंओर से रक्षित किया २४ इसके पीछे आपके शूरबीर पुत्र भीष्मजी को आगेकरके उन पांडवों से लड़नेकेलिये जिनका कि अग्रगामी शिखण्डी था युद्धमें प्रवृत्तहुए २५ फिर वह बानरध्वज अर्जुन चंदेरी देशके और पांचाल देशके लोगोंके साथ शिखण्डी को आगे करके शंतनुके पुत्र भीष्मजीके सन्मुखगया २६ सात्विकीने अश्वत्थामा

को और धृष्टकेतुने कौरवोंको और अभिमन्युने मंत्रियों समेत उस दुर्योधनको युद्धमें सन्मुखहोकर युद्धकिया २७ और सेनासमेतराजा विराटने बार्द्धक्षेमके पुत्र जयद्रथसे सेनासमेत सन्मुखता करी २८ और युधिष्ठिरने बड़े धनुषधारी सेनासमेत राजा मद्रकोसन्मुखपाया और चारोंओरसे रक्षित भीमसेन बड़ी सेनाकीओर चला २९ और मतवाला धृष्टद्युम्न अपने निज भाइयों और नातेदारों समेत उस अजेय सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ स्वाधीन न होनेवाले अश्वत्थामा के सन्मुखगया ३० शत्रुओंका विजयकरनेवाला सिंह की ध्वजासे युक्त राजकुमार बृहद्बल उस कर्णिकार वृक्षकी चिन्ह धारी ध्वजावाले अभिमन्युके सन्मुखगया ३१ आपके सब राजा सेनाओंसमेत शिखरडी और पांडव अर्जुन के मारनेके इच्छावान युद्धमें अर्जुनके सन्मुख दौड़े ३२ उस समय उन भयानकसेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रोंके दौड़ने से पृथ्वी अच्छेप्रकार से कंपायमान हुई ३३ हे भरतर्षभ भीष्मजीको युद्धमें देखकर आपके पुत्रों की और पांडवोंकी सेनापरस्परमें बड़े २पराक्रमोंको करकरके लड़ी ३४ इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ामान परस्पर दौड़नेवालों का बड़ा भारी महाशब्द सब ओरको जारीहुआ ३५ और शंख दुन्दुभियों के शब्द वा हाथियोंकी चिंहाड़ अथवा सेनाके मनुष्योंके सिंहनादोंसे महाभारी भय उत्पन्नहुआ ३६ सब राजाओंका चन्द्रमा और सूर्यके समान तेज वा शूरबीर लोगोंके बाजूबन्द और मुकुटप्रभा से रहित होगये, ३७ शस्त्ररूपी बिजलीसेयुक्त धूलके बादल उत्पन्नहुए और धनुषोंके भी भयकारी शब्दवर्त्तमानहुए, ३८ दोनोंसेनाओंका आकाश शक्ति पाश और दुधारे खगड और बाणोंके समूहों से व्याप्त होकर प्रभासे रहित होगया ४० उस बड़े भारी युद्ध में रथी घोड़े हाथी ऐसे परस्पर में लड़े कि हाथीको हाथीने पदाती को पदाती ने मारा, हे नरोत्तम वहां भीष्म के कारण पांडव और कौरवों का ऐसा महा भारी युद्ध हुआ जैसा कि पराये मांस के निमित्त दोबाज पक्षियों का युद्ध होताहै ४२ उन विजयाभिलाषी

शूर वीरोंका भयानक युद्ध परस्पर में एक एकके मारने के निमित्त वर्त्तमान हुआ ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिषोड़शोत्तरशततमोऽध्यायः ११६ ॥

एकसौसत्रहका अध्याय ॥

संजय बोला हे महाराज पराक्रमी अभिमन्युने भीष्मके कारण बड़ी सेनासे संयुक्त आपके पुत्रसे युद्ध किया, १ तब क्रोधयुक्त दुर्य्योधन नेझुकी गांठवाले नौ बाणों सेअभिमन्युको व्यथित करके तीन बाणों से फिर उसको घायल किया २ तब अत्यन्त कोपयुक्त अभिमन्यु ने मृत्यु के समान भयकारी शक्तीको दुर्य्योधनके रथपर चलाया ३ हे राजा आपके पुत्र महारथी ने उस अकस्मातगिरती हुई भयकारी शक्तीको क्षुरप्र बाणों से दोखंड करदिये ४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अभिमन्युने उसटूटकर गिरीहुई शक्तीको देखकर दुर्य्योधन की भुजा और छाती को तीन बाणोंसे घायल करदिया हे राजा वह भयकारी युद्ध अपूर्व्व रूप का चित्त का आनन्द देने वाला सब राजाओंसे पूजित हुआ, वह सुभद्राका पुत्र और कौरवों में श्रेष्ठ दुर्य्योधन दोनों शूरवीर भीष्मके मारने वा अर्जुनके विजय के निमित्त युद्ध करने वाले हुए शत्रुओं के तपाने वाले युद्धमें बेगवान ब्राह्मणों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने सात्विकीको नाराचनाम बाण से छातीपर घायल किया ६ फिर बड़े बुद्धिमान सात्विकी ने भी गुरू के पुत्रको नौ बाणोंसे सब मर्म स्थलों में घायल किया १० तिस पीछे अश्वत्थामा ने सात्विकी को नौ बाणोंसे छातीपर और तीस बाणोंसे भुजाओं पर घायल किया ११ द्रोणाचार्य्य के पुत्रसे अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी यशवान सात्विकीने अश्वत्थामा को तीन बाणोंसे घायल किया १२ महारथी पौरवनेबड़े धनुषधारी धृष्टकेतु को बाणों से ढककर अत्यंत घायल किया, इसी प्रकार महारथी धृष्टकेतु ने शीघ्रता से तेजधार वाले बाणोंसे पौरव को घायल किया १४ फिर महारथी पौरव धृष्टकेतु के धनुष को काट

कर महा घोर शब्द से गर्जा और तीव्र बाणोंसे घायल किया १५ हे महाराज उसने दूसरे धनुष को लेकर शिलीमुख नाम तीक्ष्ण बाणों से पौरव को व्यथित किया १६ तब वहां उन दोनों बड़े धनुषधारी शोभायमान महा रथियों ने बाणोंकी बड़ी वर्षासे परस्पर में घायल किया १७ वह दोनों क्रोध युक्त परस्पर में धनुष काटकर वा घोड़ों को मारकर बिरथ हो खड्गप्रहारी युद्ध करनेके लिये सन्मुख हुए १८ हे राजा वह दोनों शूर वीर अत्यन्त स्वच्छ सूर्य्य चन्द्रमा से प्रकाशित खड्ग और उत्तमचित्रोंसे चित्रितढालों को १९ लेकर परस्पर में ऐसे सन्मुख गये जैसे कि महा बनमें सिंहनी के मिलाप में उपाय करने वाले दो सिंह होतेहैं २० परस्पर दिखलाने और चाहतेहुए दोनोंवीरोंने विचित्र दाहैंबायें मंडलों को किया २१ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पौरव बड़े खड्गसेधृष्टकेतु कोशंखनाम अंगमें घायल करके अर्थात बाणों केनीचे छातीके ऊपर इधर उधरके हाड़ौंमें प्रहार करके तिष्ठतिष्ठ यह शब्दबोल २२ राजा चन्देरी ने भी युद्ध में पौरव को तीक्ष्ण धार वाले बड़े खड्ग से जत्रु देश नाम अंगमें अर्थात् जावड़े में घायल किया २३ हे शत्रुहन्ता वह दोनो महा युद्धमें परस्पर भिड़े हुए तीव्रता से परस्पर घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े २४ उसके पीछे आपका पुत्र जितसेन युद्ध भूमिमें पौरवको अपने रथपर सवार करकेउसी रथके द्वारा युद्धभूमिसे दूर लेगया २५ फिर माद्री का पुत्र प्रताप वान शूर पराक्रमी सहदेव युद्धमें धृष्टकेतु को दूरलेगया २६ चित्रसेन ने सुशर्मा को बहुत से लोहे के बाणों से घायल करके फिर साठ बाण से और नौ बाणों से घायल किया २८ तब उस क्रोधयुक्तने भी उस चित्रसेन को झुकी गांठ वाले ३० बाणों से घायल किया फिर उसने उसको घायल किया, २९ हे राजा भीष्मके युद्धमें यश कीर्त्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ातेहुए अभिमन्यु ने रुहरुल नाम राज कुमारसे युद्ध किया ३० और अर्जुनके कारणसे भीष्म की युद्ध भूमि में पराक्रम करने वाला हुआ और राजा

कौशिल ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को पांच लोहे के बाणों से बेध कर ३१ फिर गुप्त ग्रन्थीवाले बीस २० बाणसे घायल किया और अभिमन्यु ने राजा कौशिल को आठ लोहेके बाणोंसे घायल और कम्पायमान करके उसके धनुषकोभी काटा ३३ और कंकपक्षवाले तीस बाणों से भी घायल किया उस युद्धमें क्रोधयुक्त राज कुमार बृहद्बल ने दूसरे धनुष को लेकर ३४ अभिमन्यु को बहुतसे बाणों से घायल किया हे शत्रुओं के संतप्त करने वाले उन दोनों का युद्ध भीष्म के कारण ऐसा अच्छाहुआ जैसा कि देवता और असुरों के युद्धमें राजा बलि और इन्द्र का हुआ था ३५, ३६ भीमसेन रथों की सेना से लड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बज्रको धारण करनेवाला इन्द्र उत्तम पर्व्वतोंको फाड़ता हुआ शोभितहोताहै ३७ भीमसेन के हाथसे घायल पर्वतों के समान वह सब हाथी एक साथही पृथ्वी को शब्दायमान करतेहुए भूमिपर गिरे ३८ पर्वतके समान टूटेहुए अंजन के समान वह हाथी पृथ्वीपर वर्त्तमान ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि टूटे हुए पहाड़ होते हैं ३९ बड़ी सेना से रक्षित बड़े धनुष धारी युधिष्ठिर ने युद्धमें सन्मुख आये हुए राजा मद्रकोपीड़ामानकिया४० फिर क्रोधयुक्तमहारथी राजामद्रनेभीष्मके कारण से धर्मपुत्रयुधिष्ठिर को पीड़ामान किया ४१ राजा सिन्धने गुप्तग्रन्थीवाले नौबाणों से विराट् को बेधकर तीस बाणोंसे घायल किया ४२ फिर वाहिनीपति विराटने राजा सिन्धु को तीक्ष्ण धार वाले तीस बाणों से छातीमें घायल किया ४३ वह दोनों जड़ाऊ धनुष खड्ग बर्म ध्वजा शस्त्र वाले अपूर्व रूप विराट और जयद्रथ युद्धमें महा शोभायमान हुए ४४ द्रोणाचार्य्य ने अपूर्व युद्धके बीच धृष्टद्युम्न के साथ बढ़कर गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से महा प्रबल युद्ध किया ४५ इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्न के बड़े धनुष को काटकर पचास बाण से उसको बेधा ४६ फिर धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर द्रोणाचार्य्यके देखतेहुए शायकों को चलाया ४७ उस महारथीने बाणोंके प्रहारसेही उन बाणोंको काटा फि

द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्नके लिये पांच शायकों को चलाया ४८ इसके पीछे क्रोध युक्त धृष्टद्युम्न ने यमदण्ड के समान गदा को द्रोणाचार्य्य के ऊपर फेंका ४९ और द्रोणाचार्य्यने उस गिरनेवाली गदा को पचास बाणों से रोका ५० हे राजा द्रोणाचार्य्य के धनुष से निकलेहुए बाणोंने उस गदा को चूर्ण करके पृथ्वीपर गेरा ५१ शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नने गदाको टूटीहुईदेखकर सबलोहमयी दृढ़शक्तीको द्रोणाचार्यके ऊपर फेंका ५२ फिर द्रोणाचार्यने भी उस बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नको पीड़ितकिया ५३ हे राजा इसप्रकार भीष्मके सन्मुख द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न का महा भयानकरूप युद्धहुआ ५४ फिर तीक्ष्ण बाणोंसे सबकोपीड़ित करताहुआ अर्जुन गांगेय भीष्मजी को पाकर उनके सन्मुख ऐसा गया जैसे कि बनमें अत्यन्त मतवाला हाथी मदोन्मत्त गजेन्द्र के सन्मुखहोवे ५५ प्रतापवान् महाबली राजा भगदत्त तीन अंगोंसे मदचूनेवाले महा मतवालेहाथी की सवारीसे सन्मुखगया ५६ तब अर्जुन बड़े उपाय में नियतहोकर उस गजेन्द्र ऐरावतके समान महाबली गिरतेहुए हाथीके सन्मुख हुआ ५७ उसके पीछे प्रतापवान् भगदत्तने बाणोंकी बर्षासे ढकदिया ५८ फिर अर्जुनने चांदी के समान स्वच्छ लोहेकेबाणोंसे उस आतेहुए हाथीको बेधा ५९ हे महाराज फिर अर्जुनने शिखण्डीको भीष्मकी ओर प्रेरितकिया और कहा कि जाओ २ इसको मारो ६० हे पांडु के ज्येष्ठ भ्राता धृतराष्ट्र फिर राजा प्राग्ज्योतिष अर्जुनको छोड़कर शीघ्रही द्रुपदके रथके समीपगया ६१ इसके पीछे अर्जुन शिखण्डीको आगेकरके शीघ्रही भीष्मके सन्मुख गया और युद्ध जारी हुआ ६२ तदनन्तर आपके शूरबीर पुत्र पुकारतेहुए बड़े वेगसे अर्जुनके सन्मुख दौड़े वह आश्चर्यसाहुआ ६३ वहां अर्जुनने आपके पुत्रोंकी नानाप्रकार की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि वायु आकाश में बादलोंको छिन्न भिन्न करदेताहै ६४ फिर उस सावधानशिखंडीने भरतबंशियोंके पितामहभीष्मकोपाकर अनेकबाणोंसे ढकदिया ६५

उस रथरूप अग्निशाला और धनुषरूप ज्वाला वा खड्ग शक्ती रूप इन्धन वा बाणसमूह रूप प्रज्वलितरूपवाले भीष्मने युद्धमें क्षत्रियोंको भस्मकरदिया ६६ जैसे कि बनमें वृद्धियुक्त बड़ी अग्निवायुके साथ घूमतीहै उसीप्रकार दिव्यअस्त्रों को चलातेहुए भीष्मजी भी अग्निकी वर्षाकरनेवाले हुयेहु७ भीष्मजीने अर्जुनके पीछे चलनेवाले सोमकोंको मारकरसब सेनाको भी रोका ६८ हे राजाभारीयुद्धमें दिशा और विदिशाओंको शब्दायमान करते और सुनहरी पुंखवाले वा गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे ६६ रथी घोड़े और सवारोंको गिरातेहुए भीष्मने रथकेसमूहोंको मुंड ताल बनोंके समान करदिया ७० सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ भीष्मने युद्धमें रथ हाथी और घोड़ोंको सवारोंसे रहित किया७१हे राजा उसके धनुष प्रत्यंचाके बज्रकेसमान शब्दको सब ओरसे सुनकर सब सेना अत्यन्त कंपायमान हुई ७२ इसकेपीछे वह बाण बारंबार सफलहोकर गिरे और भीष्मके धनुषसे निकलेहुए बाण शरीरों में लग २ कर पारही होगये ७३ हे राजा मैंने तीव्रगामी घोड़ोंसेयुक्त और वायुकेसमान चलनेवाले रथोंको बिना सवारोंके धरेहुए देखा ७४ चंदेरी काशी क्रोश देशियोंके कुलीन महारथी शरीरकेमोहकोत्यागनेवाले महा प्रसिद्ध युद्धसे मुख न मोड़नेवाले अतिशूर सुनहरी ध्वजावाले घोड़े रथ हाथियोंसमेत उस मृत्युके समान भीष्मको युद्धमें पाकर परलोकको सिधारे हे राजा उस युद्धमें सोमकों का ऐसा कोई महारथी नहीं हुआ ७६ । ७७ जो युद्ध भूमिमें भीष्मको पाकर जीवताहुआ जावे सब मनुष्योंने भीष्मजी के पराक्रम को देखकर उन सब शूरबीरोंको यमपुरको पहुंचा हुआही माना युद्धमें ७८, ७६ श्वेत घोड़े वाले श्रीकृष्णजीको सारथी रखनेवालेबीर अर्जुन और बड़े तेजस्वी पांचालदेशी शिखंडीके सिवाय कोईमहारथी उनके सन्मुख नहीं गया ८० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७ ॥

—※—

एकसौअठारहकाअध्याय॥

संजय बोले हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र शिखंडी ने युद्धमें भीष्मजी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले दशभल्लों से छाती में घायल किया १ फिर तिरछी दृष्टिसे भस्मकरते हुए भीष्मजीने क्रोधयुक्त नेत्रोंसे शिखंडीको देखा २ हे राजा उसके स्त्रीपनको ध्यानकरतेहुए भीष्मजी ने सबके देखतेहुए प्रहार नहीं किया और उस शिखंडीने उसको नहीं जाना ३ इसके पीछे अर्जुनने शिखंडीसे कहा कि शीघ्रहीइन पितामहको सन्मुख चलकर मारो ४ हेवीर मैंने मारनेकीहीइच्छा से तुझको आगे कियाहै कि तुम इस महारथी भीष्म को मारो मैं युधिष्ठिरकी सेनाभरमें किसी और को ऐसा नहीं देखताहूं जो तेरे सिवाय इस प्रबल युद्धमें भीष्मजीके सन्मुख युद्ध करने को समर्थ होवे हे पुरुषोत्तम मैं यह सत्यहीसत्य कहताहूं५।६ फिर अर्जुन से इसरीतिसे कहेहुए शिखंडीने शीघ्रही नानाप्रकारके बाणोंसे पितामहको ढकदिया ७ इसके पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजी ने उन बाणोंको तुच्छ समझकर क्रोधयुक्तहोके युद्धभूमिमें अर्जुनको शायकोंसे रोका ८ इसीप्रकार उस महारथी अर्जुनने सब सेनाको अपनेबाणोंसे परलोकमें भेजा ९ इसप्रकार बड़ी सेनासमेत पांडवोंने भीष्मको ऐसे घेरलिया जैसे कि बादल सूर्यको घेरलेतेहैं १० फिर चारोंओरसे घिरेहुए भीष्मजी ने शूरबीरों को ऐसा भस्मीभूत किया जैसे कि कोपित अग्नि बनको भस्मकरदेताहै ११ वहां हमने आपकेपुत्रके पुरुषार्थको देखा जो अर्जुनसे युद्धकरके पितामह को रक्षितकिया १२ आपके धनुषधारी पुत्र दुश्शासनके उस कर्म से युद्धमें सब लोगोंको विश्वासहुआ कि १३ इस अकेलेनेही अर्जुन से उसके सब साथी पांडवों समेत युद्धकिया और प्रत्यक्ष में उसको पांडवलोग युद्धसे नहीं हटासके १४ उस युद्धमें दुश्शासन के हाथसे रथी बिरथहुए और बड़े धनुषधारी सवार और महाबली हाथी १५ तीक्ष्णबाणोंसे घायलहोकर पृथ्वीपरगिरे और इसी

प्रकार बाणोंसे पीड़ामान अन्य हाथी चारोंदिशाओं में भागे १६ जैसे कि अग्नि इंधनकोपाकर प्रकाशित ज्वलित होकर प्रत्यक्ष कोपयुक्तहोतीहै उसीप्रकार पांडवोंकीसेनाको जलाताहुआ आपका पुत्र भी ज्वलित अग्निकेसमान होगया १७ हे भरतवंशी पांडवों के किसी महारथीने श्वेतघोड़े वाले श्रीकृष्ण महाराज को सारथी बनानेवाले महारथी इन्द्रके पुत्र अर्जुनके सिवाय उस बड़े शोभायमानके विजयकरने को साहस और उत्साह नहीं किया और न किसी रीतिसे सन्मुखजाने का बिचारकिया १९ हे राजा फिर वह विजयी अर्जुन युद्धमें उसको जीतकर सब सेनाके देखतेहुए भीष्म जी के सन्मुखगया और वह पराजय पानेवाला आपकापुत्र महा मदोन्मत्त उन भीष्मजीकी भुजाओंका आश्रय लेकर २० बारंबार साहस्यको करके फिर युद्ध करनेलगा तब वह अर्जुन युद्धमें लड़ताहुआ महा शोभायमान हुआ २१ हे राजा फिर शिखंडी ने युद्धमें बज्रके समान स्पर्शवाले विषभरेसर्पके समान बाणोंसे पितामह को घायल किया २२ उन बाणोंसे आपके पिताकुछभी पीड़ित नहीं हुए उस समय आश्चर्य्य करते हुए भीष्मजीने उन बाणों को सह लिया २३ जैसे प्याससे दुःखी मनुष्य जलकी धाराओं को चाहताहै उसीप्रकार भीष्मजीने शिखण्डीकी बाणधाराओंको सहज हीमें सहलिया २४ फिर क्षत्रियोंने महात्मा पांडवों की सेनाओं के भस्म करने वाले भीष्मजी को युद्धमें भयंकरदेखा २५ इसके पीछे आपका पुत्र सब सेनाओं से बोलाकि युद्धमें सब ओरसे अर्जुनके सन्मुख जाओ २६ धर्मके जानने वाले भीष्मजी युद्धमें तुमसब की रक्षा करेंगे वह भयको अत्यन्त त्यागकर के पांडवोंके सन्मुख युद्ध करते हैं युद्धमें धृतराष्ट्र के सब पुत्रोंके सुख रूपचित्त की रक्षाकरते हुएभीष्मजी सुनहरी तालध्वजा समेत नियतहैं २८ बड़े २ उपाय करनेवाले देवता लोगभी भीष्म के सन्मुख खड़े होनेको समर्थ नहीं हैं तो मरण धर्म वाले पांडव उस महात्मा के सन्मुख होनेको कैसे समर्थ होसक्ते हैं २९ इस निमित्तमेरे सब शूरवीर लोग जाकरयुद्ध

में अर्जुन को पाकर संग्राम करो अब युद्धमें चैतन्य होकर मैं तुम सब राजाओं समेत पांडव युधिष्ठिर से लड़ूंगा हे राजा आप के धनुष धारी पुत्रके इस बचन को सुनकर ३०,३१ सब शूरबीरलोग अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबलीविदेह(कलिंग) (दासै रक्कगण) (निषाद) (सौबीर) (बाल्हीक) दरद और (पश्चिमोत्तरीय राजालोग) मालव ३३ (अभिषाह शूरसेन) शिवय) (वशातय) शाल्वशक त्रिगर्त्त के कथोंसमेत(अम्बष्ठ) ३४यहसबउस महायुद्धमें अर्जुनके सन्मुखदौड़े हे राजा जैसे कि पतंग और शलभा अग्नि में गिरते हैं इसी प्रकार युद्धमें उस अद्वितीय अर्जुनको ओरको दौड़े ३५ फिरउस महाबली अर्जुनने दिव्य अस्त्रोंको विचार पूर्व्वक प्रयोग करकेउन बड़े उत्तम दिव्य अस्त्रों और बाणोंके उष्ण तेजसे शीघ्रही इन सब सेनासमेत महारथियों को ऐसे भस्मकिया जैसेकिअग्नि पतंगों को भस्म करदेताहै ३६,३७ उसमहाबली अर्जुनका वहगांडीव धनुष हजारों बाणों को छोड़ता हुआ आकाशमें प्रकाशमान दृष्टपड़ा,वह बाणोंसे पीड़ामान राजा लोग जिनकी बड़ी २ ध्वजा टूटगईथीएक साथउस बानरध्वज अर्जुनके सन्मुख बर्त्तमान् नहींरहे ३६ अर्जुन केबाणोंसे घायल रथीलोग ध्वजाओंसमेत और घोड़ों समेत अश्वारूढ़ वा हाथियों समेत हाथियों के सवार पृथ्वीपर गिरे ४० इस के पीछे अर्जुन के हाथोंके छूटे हुएबाणोंसे और चारोंओरसे राजाओंकी भगीहुई सेनाओं से पृथ्वी व्याप्त होगई ४१ फिर अर्जुनने सेनाको भगाकर दुश्शासन के ऊपर बहुतसे बाणोंकी बर्षाकरी ४२ वह लोहेके सब बाण आपके पुत्र दुश्शासनको४३ बेधकर पृथ्वीमें ऐसे प्रवेश करगये जैसेकि सर्पबामीमें प्रवेश करताहै तदनन्तरप्रभु अर्जुनने उसके घोड़ोंकोमारकर सारथीकोगिराया और बीसबाण से बिविंशतिकोरथसे बिरथ करदिया ४४ और झुकी गांठवालेपांच बाणोंसे अत्यन्त घायलभी किया इसी रीतिसे उसश्वेत घोड़े वाले अर्जुनने(कृपाचार्य्य) कर्ण और शल्यको बहुत से लोहे केबाणोंसे बेधकर विरथकरदियाहेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसप्रकारवह सबकृपाचार्य्य

और शल्य विरथहुए४५,४६ औरयुद्धमें अर्जुनसे पराजित दुश्शासन विकर्ण और विविंशतिमुखको मोड़गये४७हे भरतर्षभमध्याह्न कालमें अर्जुन महारथियों को विजय करके युद्ध में निर्धूम अग्नि के समान प्रकाश मानहुआ४८ इसी प्रकार बाणोंकी वर्षासे अन्य राजाओंकोवा महारथियोंके मुखोंको फिरवाके युद्धमेंरुधिररूप जल रखनेवालीबड़ीनदीको जारीकिया ५० फिर पांडव और कौरवों की सेनाओंमेंबहुधाहाथी घोड़े और रथोंकेसमूह रथियोंके हाथसे मारे गये ५१ हाथियों सेरथ और पैदलोंसे घोड़े मारेगये और बीचमेंसे कटेहुएहाथी घोड़े रथ और वीर सवारोंके शरीर दिशाओंमें गिरे हे राजाकुंडल बाजूबंद धारणकरनेवालोंसे युद्धभूमि आच्छादितहोगई ५२,५३ और गिरे वा गिरतेहुए महारथी राजकुमारों से वा रथों की नेमियों से कटे और मरेहुए हाथियोंसेभी वह युद्धभूमि ढकगई ५४ पैदल भी दौड़े और अश्व सवार जंघी घोड़ों समेत दौड़े वा हाथी घोड़े और रथों के शूर वीर चारों ओरसेगिरे ५५ और वह रथ जिनके पहियेजुए ध्वजा टूटगईथी पृथ्वीपर पड़े हुए हाथीघोड़े और रथ समूहोंके रुधिरसे छिड़की हुई वा ढकी हुई वह युद्ध भूमि ऐसी शोभायमानहुई जैसेकि शरदऋतुका लालबादल होताहै फिर कुत्ते कौए गिद्ध भेड़ियेशृगाल और विपरीत रूपके पशुपक्षी अपने भक्षको पाकर शब्द करने लगे और सब दिशाओंमें अनेक प्रकार की वायु चली ५८ राक्षसों के देखने और जीवों के शब्द करनेपर सुनहरी रस्सी वा माला वा बहु मूल्यकी पताका ५९ अकस्मात् हवासे चलायमान होकर दृष्टिगोचरहुई हज़ारों श्वेतछत्रवा बड़े २ रथ ध्वजाओं समेत टूटेहुए दिखाई पड़े और बाणों से पीड़ामान हाथी पताकाओं समेत चारोंदिशाओंको चलेगये ६०, ६१ हेमहाराज गदाशक्ति और धनुष के धारण करनेवाले क्षत्रीलोग चारों ओरसे पृथ्वीपर पड़े हुए दृष्ट आये ६२ इसके पीछे भीष्मजी ने दिव्य अस्त्रों को प्रकट किया और सब धनुषधारियों के देखते हुए अर्जुनके सन्मुख दौड़े ६३ तब शस्त्रोंसे अलंकृत शिखंडी उनभी

जीके सन्मुखपहुंचा इसको देखतेही भीष्मजीने उस अग्निकेसमान प्रकट किये हुए अस्त्रको खैंचलिया ६४ हे राजा श्वेत घोड़े रखने वाले मझले पांडव अर्जुनने शीघ्रही पितामह को मोहित करके आपकी सेनाको मारा ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्व्वणिअष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

एकसौउन्नीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतबंशी इस रीतिसे उन बहुतसी सेनाओं के तैयार होनेपर युद्धमें मुखन मोड़ने वाले सब शूरवीर ब्रह्मलोक को उत्तम मानने वाले बर्त्तमान हुये,इस तुमुल युद्धमें सेनासे सेना नहींभिड़ी किन्तु इसरीतिसे लड़े कि रथी रथियोंसे पदाती पदातियोंसे घोडे घोडोंसे हाथी हाथियोंके सवारोंसे युद्ध करने वाले हुये हेराजा उन्मत्तके समान युद्ध करने वाली दोंनों सेनाओंको बड़ाभय कारी दुःखबर्त्त मानहुआ अर्थात् सबप्रकारसे मनुष्य और हाथियों के मरनेपर उसभयकारी नाशरूप प्रलयमें अनीति जारीहुई इसके पीछे (शल्य) (कृपाचार्य्य) (चित्रसेन) (दुश्शासन) बिकर्ण इन सब शूरोंने प्रकाशित रथोंपर सवार होकर पांडवों की सेनाको बहुत कंपाय मान किया हे राजा युद्धमें महात्माओं के हाथ से घायल पांडवों की सेना अनेक प्रकार से ऐसे घूमी जैसेकि जल में बायुके कारण नौकाघूमती है, जैसेकिमाघफाल्गुणके समयमेंलोग गोभियों के मर्मों को करते हैं उसी प्रकारभीष्मजी पांडवोंके मर्मों को काटते हैं ८ महात्मा अर्जुनके हाथ से तुम्हारी सेनाके बहुतसे हाथी जोकि नबीन बादलके समानथे युद्धमें गिराये गये ९ अर्जुन के हाथसे सेनाके प्रधान लोग मर्दन कियेहुए दृष्टआतेहैं और वहां पर नाराच नामबाणोंसे घायलहुए हजारों १० बड़े २हाथी दुःखसे महाभयानक शब्दों को करके गिरपड़े मृतक हुए महात्माओं के २ पर्णों से अलंकृत शरीरों से ११ और कुंडल धारी शिरों से ढकी हुई युद्ध भूमिबड़ी शोभाय मानहुई हे राजा उत्तम बीरोंकेबड़े नाश

होनेपर युद्धमें भीष्म और पांडव अर्जुन को परस्पर में चढ़ाइयां होनेपर वह आपके सब पुत्र जिनके कि आगेसेना चलतीथी युद्धमें पितामह को पराक्रम करने वालादेखकर स्वर्गकोही श्रेष्ठ स्थान मनाकर युद्धमें मरण को चाहतेहुए १३।१४ उस उत्तम बीरोंकेनाश में पांडवों के सन्मुख हुएहे महाराजब्रह्मलोकके लिये युद्धमें प्रवृत्त शूर बीरपांडव पूर्व समयमें पुत्र समेत आपके दियेहुए नानाप्रकार के कष्टोंको स्मरणकरते युद्धमेंभयको त्याग करके १५,१६ अत्यन्त प्रसन्न के समान आपके पुत्र और शूरबीरों से लड़तेहैं फिरमहा रथी सेनापतिने अपनी सेनासे कहाकि सब सृंजियों समेत सोमक लोग शीघ्र भीष्मके सन्मुखचलो वह सोमक और संजयनामक्षत्री सेनापतिके बचनको सुनकर १८शस्त्रोंकीबर्षासे घायलहुए भीष्मजी के सन्मुखगये हे राजा इसकेपीछेआपके पिताभीष्मजी महाघायल और क्रोध केबशी भूतहोकर उनसृंजियोंसे युद्ध करने लगे हे तात पूर्वसमयमें बुद्धिमान् परशु रामजीने उसनेक नामको अच्छे प्रकार से शिक्षाकरी जोकि शत्रुकी सेनाके नाशकरने वाले और कौरवों के वृद्धपितामह भीष्मने उस शिक्षाको काममें लाकर शत्रुओंकीसेना का नाशकरते हुएप्रतिदिन पाण्डवोंकी दश हजार सेना को मारा २१।२२ हेभरतर्षभ उसदशवें दिनकेवर्त्तमान होनेपरअकेले भीष्म ने युद्धमें मत्स्य और पांचाल देशीसेना में २३ दशहजार हाथियों का यूथमारकर सातमहारथी मारे फिर पांच हजार रथियोंको मार कर प्रबलयुद्धमें मनुष्यों के चौदह हजार समूहको मारके हाथियों के बहुत हजार और घोड़ोंके दशहजार यूथ पराक्रमके द्वाराआप केपिताके हाथसे मारेगये इसकेपीछे सब राजाओंकी सेनाकोइधर उधर करके २६ बिराट्के प्यारेभाई सतानीक को रथसे गिराया हे राजाप्रतापवान् भीष्मने सतानीकको मारकर २७ हजारों राजाओं कोभल्लोंसे मारडाला और जो कोई राजापांडवों के वा अर्जुनके आगेपीछे चारोंओरको चलनेवालेथे २८वह राजा लोगभी भीष्मको पाकर यमलोकको सिधारे भीष्मजीने इसरीतिसे बाणोंके जालों से

चारों ओरकी दशोंदिशाओं को ढकदिया २६ और आप पांडवों की सेनाको उल्लंघन करकेसेना मुखपर नियतहुआ वह उसदशवें दिन में बड़े कर्मको करके३० धनुषको हाथमें पकड़ने वालादोनों सेनाओं के मध्य में नियत हुआ कोई राजा लोगयुद्धमें उसके देखने को ऐसे समर्थनहींहुए ३१ जैसे कियीष्म ऋतुमें आकाश स्थल संतप्त करते सूर्य्य को नहींदेखसक्ता और जैसेकि इन्द्रने युद्धमें दैत्योंकी सेनाको तपाया ३२ इसीप्रकार भीष्मजीने पांडवोंके शूरबीरोंको भी संतप्त किया मधुदैत्यके मारनेवाले देवकीके पुत्र श्रीकृष्णजी इसप्रकार पराक्रम करनेवाले भीष्मको देखकर अपनेमित्र अर्जुनसे बोले कि यह शांतनुका पुत्र भीष्म दोनों सेनाओंमें नियतहै ३३, ३४ बड़े बलसे इसको मारकर तेरी विजय होगी तू बलसे इसको वहां नियतकर जहां यह सेना घायलहोतीहै ३५ हे समर्थ भीष्मकेबाण सहनेको कोई साहस नहीं करताहै इसके अनन्तर उस क्षणमेंप्रेरित बानरध्वज अर्जुनने ३६ बाणोंसे भीष्मकोध्वजा रथ और घोड़ों समेत गुप्तकरदिया फिर उस प्रतापी भीष्मने भी पांडवोंके चलाये हुए बाणसमूहोंको अपने बाणोंसे अनेक प्रकारकरके छिन्न भिन्न करदिया ३८ इसकेपीछे राजा द्रुपद और पराक्रमी धृष्टकेतुपांडव (भीमसेन) (धृष्टद्युम्न (नकुल) (सहदेव) (चेकितान) पांचोभाई (केकय) ३६ महाबाहु (सात्विकी) (अभिमन्यु) (घटोत्कच) द्रौपदीके (पांचोपुत्र) (शिखंडी) पराक्रमी राजा कुन्त भोज ४० (सुशर्मा) राजा विराट् यह सब और अन्य बहुत से पांडवोंके शूरबीर भीष्मजी के शायकोंसे पीड़ामानहुए ४१ अर्जुनके हाथसे पीड़ित शूरबीर शोकसमुद्रमें डूबगये इसके पीछे बड़ी तीव्रतासे शिखंडी उत्तमधनुषको लेकर ४२ अर्जुनसे रक्षाकियाहुआ भीष्मके सन्मुख चला युद्ध के प्रकारों का ज्ञाता अजेय अर्जुनके सब साथियों को मारकर उन के सन्मुखचला (सात्विकी) (चेकितान) (धृष्टद्युम्न) ४४ विराट् द्रुपद माद्रीके दोनोंपुत्र यह सब दृढ़ धनुष युक्त अर्जुन से रक्षित होकर युद्ध भूमिमें भीष्मके सन्मुख गये ४५ और अभिमन्यु वा

द्रौपदीके पांचोपुत्र यह भी बड़े शस्त्रोंके धारणकरनेवाले युद्धमें भीष्मकी ओर चले ४६ और दृढ़धनुषधारी युद्धमें मुख न मोड़नेवाले बाणोंसे घायल उन सबने भी पितामह भीष्म को बाणोंकी बड़ी बर्षासे आच्छादित किया ४७ फिर प्रसन्न चित्त भीष्मने उनबाण समूहोंको जिनको कि उत्तम राजाओंने छोड़ा था काटकर पांडवों की सेनाको मझाया४८ क्रोड़ा करतेहुए पितामहने बाणोंकोनिष्फलकर बारंबार आश्चर्य्य युक्त होकर उसके स्त्रीपनेको स्मरणकरके बाणोंको पांचालदेशी शिखंडी पर नहीं चलाया फिर उस महारथी ने द्रुपदकी सेनामें सात रथियोंको मारा ४६, ५० इसके अनन्तर क्षणमात्रहीमें उस अकेलेकी ओर दौड़तेहुए (मत्स्य) (पांचाल)और चंदेरी देशके क्षत्रियोंका कलकला शब्द उत्पन्नहुआ ५१ हे शत्रु संतापी उन मनुष्योंने रथके समूह और बाणों से उस युद्धमें शत्रुके तपानेवाले भागीरथीके पुत्र अकेले भीष्म को ऐसे ढक दिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढकदेतेहैं इसके पीछे देव दानवोंकेसमानदोनों केयुद्धमेंअर्जुननेशिखंडीकोआगेकरकेभीष्मकोमोहितकिया ५२,५३

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकोनविंशदधिकशततमोऽध्यायः ११६ ॥

एकसौबीसका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसप्रकार से उन सब पांडवों ने शिखंडी को आगे करके और युद्धमें चारों ओरसे भीष्मजी को घेरकर घायल किया १ बड़े भयानक (शतघ्नी) (परिघ) (फरसे) (मुद्गल) मुसल प्रास क्षेपणी कनकपुंखवाले शरशक्ति तोमर कंपन नाराच वत्सदन्त भुशुंडी आदि अनेक शस्त्रोंके द्वारा युद्धमें सब सृंजियों ने एक साथही भीष्मको बहुत प्रकार से घायलकिया तब वह भीष्म टूटे कवच बहुतशस्त्रोंसे पीड़ामान ४ और मर्मस्थलोंके घायलहोने पर भी दुःखी नहीं हुए जिसकेबाण और अस्त्रोंसे प्रकटहोनेवाली प्रकाशित अग्नि और रथकी चक्रधारा का शब्द वा पट्टिश आदि बड़े २ अस्त्रोंका प्रकाश और जड़ाऊ धनुषवाले बड़े २ शूरबीरोंकानाश

ही बड़ा इंधनथा ६ वह प्रलयाग्निके समान शत्रुओंके सन्मुखहुआ और अवकाश पाकर रथोंकेसमूहोंमेंसे बाहर निकलगया, फिर राजाओंके मध्यमें वर्त्तमान होकर घूमता दृष्टपड़ा इसके पीछे राजा पांचाल और धृष्टकेतुको ध्यान न करके पांडवों की सेनाके मध्यवर्त्तीहोकर भीष्मजीने (सात्विकी) (भीमसेन) (अर्जुन) (द्रुपद)(विराट) (धृष्टद्युम्न) इन छः महारथियोंको बड़े भयकारी युद्धमें घाय लकरनेवाले उत्तम तीक्ष्ण बाणोंसे घायलकिया फिर उन महारथियोंने उनके उन तीक्ष्ण बाणोंको दूरकरके बड़े बेगसे दश दशबाणोंके द्वारा भीष्मजीको पीड़ामान किया और महारथी शिखंडीने सुनहरी पुंखवाले शिलापर तीक्ष्णकिये बाणों को मारा वह बाण शीघ्रही भीष्मजीके शरीरमें प्रवेश करगये इसके पीछे क्रोध युक्त अर्जुनने शिखंडीको आगेकरके भीष्मजी के सन्मुख दौड़कर उनके धनुषको काटा फिर (द्रोणाचार्य्य) (कृतवर्मा) महारथी (जयद्रथ)(भूरिश्रवा) (शल्य) और भगदत्त भीष्मके धनुषको तोड़ना न सहकर बड़े क्रोधयुक्त होकर सातों मिलकर अर्जुनके सन्मुखगये वहां दिव्य अस्त्रोंको दिखातेहुए १६ पांडवोंको शस्त्रोंसे ढकते उन सबक्रोध भरे महारथी पुरुषोंके ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि प्रलय काल में उठेहुए समुद्रके शब्द होतेहैं और अर्जुनके रथपर ऐसे कठिनशब्द हुए कि लेचलो पकड़ो घायलकरो मारो १८ हे राजा पांडवों के महारथी उस कठिन कठोर शब्दको सुनकर अर्जुन को चाहते हुए उन महारथियोंके सन्मुख दौड़े सात्विकी भीमसेन धृष्टद्युम्न विराट द्रुपद नकुल सहदेव घटोत्कच राक्षस और अत्यन्त क्रोध युक्त अभिमन्यु यह सातों महाक्रोधमें ज्वलित होकर अपूर्व्व धनुषों को लिये उन महारथियोंके सन्मुख दौड़े इन सब लोगोंका युद्धऐसा महाघोर रोमहर्षणहुआ २२ जैसा कि दैत्योंसे और देवताओं से हुआ था फिर युद्धमें अर्जुनसे रक्षित शिखंडीने उन टूटे धनुष वाले भीष्मको दश बाणोंसे बेधा और दशही बाणोंसे सारथीकोघायल किया और एक बाणसे उसकी ध्वजाको भी छेद डाला २४ गांगेय

भीष्मजी बड़े बेगवान् दूसरे धनुषको लेकर युद्धकरनेलगे अर्जुन ने उनके उस धनुषको भी तीन तीक्ष्ण बाणोंसे काटा २५ इसरीतिसे उस शत्रुसंतापी क्रोधभरे अर्जुनने बारंबार लियेहुए भीष्मके धनुषोंको काटा २६ तब उन टूटे धनुष अत्यन्त क्रोधयुक्त होठोंको चाबतेहुए भीष्मजीने पर्व्वतोंको भी फाड़नेवाली घोरशक्तीको हाथ में लिया २७ और बड़े क्रोधसे उस शक्तीको अर्जुनके रथपरफेंका उस बज्रकेसमान प्रकाशमान आतीहुई शक्तीकोदेखकर पांडुनन्दन अर्जुन ने पांच तीक्ष्ण भल्लोंको हाथमेंलिया और उनकी उस शक्ती को पांच बाणोंसे टुकड़े टुकड़े करदिया २८ हे राजा अर्जुन ने भीष्मकी भुजासेफेंकीहुई शक्तीको काटा फिर अर्जुनसे कटीहुईशक्ती रथसे ऐसे गिरपड़ी ३० जैसे कि बादलोंके समूहोंसे अलगहोकर बिजलीगिरतीहै-शत्रुओंके पुरोंकेविजयकरनेवाले बीर भीष्मने उस टूटीहुई शक्तीको देखकर युद्धमें चिन्ताकरी कि मैं अकेले धनुष से सब पांडवोंके मारनेको कैसे समर्थहूंगा ३१, ३२ दूसरे इन्हों के रक्षक महाबली श्रीकृष्णजी हैं इन दोनों कारणों से मैं पांडवों से नहीं लड़ूंगा प्रथम तो पांडवोंके अबध्यहोनेसे दूसरे शिखंडीके स्त्री पनेसे पूर्व्व समयमें मेरे प्रसन्न चित्त पिताने काली नाम माताको बिवाहा ३४ उस समय मुझको बरदान दिया था कि तू अपनी इच्छा के अनुसार मरैगा और युद्धमें सबसे अवध्य होगा इसकारणसे मैं अपनी मृत्युको समयपर बर्त्तमान मानताहूं ३५ बड़े तेजस्वी भीष्मजीके इसप्रकारके निश्चयको जानकर आकाशमेंनियत ऋषियों ने और अष्ट वसुओंने भीष्मजी से कहा ३६ हे तात जो तुमने निश्चय किया वही हमको भी अभीष्ट है हे महाराज तुम इसीको करो और युद्धसे अपने चित्तको हटाओ ३७ इस बचन के समाप्तहोनेपर चारोंओर से वह वायु प्रकटहुई जो कि आनन्दरूप त्रिविध प्रकार से सुगन्ध युक्त थी ३८ उस समय देवताओं की भी दुन्दुभियां अच्छेप्रकारसेबजीं और भीष्मजीकेऊपरपुष्पोंकीवर्षाहुई, हे राजा व्यास मुनिके तेजसे मेरे और महाबाहु भीष्म के सिवाय

उन बार्त्तालाप करनेवालोंके बचनको किसी ने भी नहीं सुना ४० तब सब लोकके प्यारे भीष्मजीको रथसे पृथक्होनेपर भीष्मकेचाहनेवाले सब देवताओं को बड़ा आश्चर्य्य हुआ ४१ इसके पीछे शंतनुका पुत्र तेजस्वी भीष्म देवगणोंके बचनको सुनकर अर्जुनके सन्मुख नहीं रहा ४२ जो कि सब पत्तोंके तोड़नेवाले तीक्ष्ण बाणों से भी घायल था तो भी क्रोधयुक्त शिखंडी ने भरतबंशियों के पितामहको ४३ तीक्ष्णधारके नौबाणोंसे छातीपर घायलकिया वह कौरवोंके पितामह भीष्मजी युद्धमें उस प्रहारसे घायलहोकर भी ऐसे कंपायमान नहीं हुए जैसे कि भूकम्प होनेपर पर्वत नहीं हिलता इसकेपीछे गांडीवधनुषको खेंचनेवाले अर्जुनने हंसकर गांगेय भीष्मजीको क्षुद्रक नामके पच्चीस बाणोंसे घायलकिया फिर शीघ्रताकरनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने जैसे भीष्मको सैकड़ोंबाणोंसे सब अंग और मर्मस्थलों पर घायल किया इसीप्रकार दूसरे शत्रुओंने भी इनको अनेकप्रकारसे घायलकिया ४७ फिरमहारथी भीष्मने शीघ्रही उनको अपने बाणोंसे घायलकिया और उनके छोड़े हुए बाणोंको गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे जहांका तहां रोंकदिया४८ इसके पीछे महारथी शिखण्डी ने युद्धमें जिन बाणोंको छोड़ा उन सुनहरीपुंखवाले तीक्ष्णधार युक्त बाणोंने उन भीष्मजी को पीड़ित नहीं किया ४९ इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन शिखण्डी को आगेकरके भीष्मके सन्मुख वर्त्तमानहुआ और उनके धनुषको काटा ५० उसीप्रकार इनको दशबाणोंसे बेधकर एक बाणसे उन की ध्वजाको भी काटा और दश विशिखबाणोंसे उनके सारथी को अत्यन्त कंपायमान किया ५१ फिर भीष्मने दूसरे प्रबल धनुषको लेकर तैयार किया इस धनुष के भी अर्जुनने तीन तीक्ष्ण भल्लों से तीन खंडकिये ५२ इसी प्रकार से अर्जुनने आधेही निमिषमें उस युद्धभूमिमें हाथ में लियेहुए उनके अनेक धनुषोंको काटा ५३ फिर शंतनुके पुत्र भीष्म अर्जुन के सन्मुख वर्त्तमान नहीं हुए तब अर्जुन ने उनको क्षुद्रकनाम पच्चीस बाणोंसे घायल किया ५४ फिर वह

अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी भीष्मजी दुश्शासनसे बोले किइस पांडवोंके महारथी युद्धमें क्रोधरूप अर्जुनने युद्धकेबीच हजारों बाणोंसे मुझको घायलकिया है यह अर्जुन युद्धमें बज्रधारी इन्द्र से भी विजयकरनेके योग्य नहीं है ५५ और बीर देवता दानव राक्षस भी सब मिलकर मेरे विजयकरनेको समर्थ नहीं हैं फिर पृथ्वी के नर महारथी क्या पदार्थ हैं ५६ इस रीतिसे इन दोनोंके वार्त्तालाप होनेपर अर्जुनने शिखंडीको आगेकरके भीष्मजी को तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे फिर घायलकिया ५७ तब तो उस गांडीवधनुषधारीके तीक्ष्णबाणोंसे अत्यन्त घायल और आश्चर्य्य युक्त भीष्मजी दुश्शासनसे कहनेलगे ५८ कि युद्धमें इन्द्र बज्रकेसमान अर्जुन के छोड़े हुए स्पर्शकरनेवाले बाण सब सफलहुए हैं इससे विदित होताहै कि ये बाण शिखंडी के नहीं हैं ५९ बड़े दृढ़ और मर्मस्थलों के काटनेवाले पर्वतों को भेदनकरनेवाले बाण मुसलोंकेसमान मुझ को मारतेहैं यह बाण किसीप्रकार से शिखंडीके नहीं हैं ६० ब्रह्म दण्ड के समान स्पर्शवाले वा बज्रकेसमान तीक्ष्ण कष्टसे सहने के योग्य बाण मेरे प्राणोंको पीड़ा देते हैं इससे यह शिखंडी के बाण नहीं हैं ६१ यमदूतोंके समान अप्रिय गदा और परिघ के समान स्पर्शवाले बाण मेरेप्राणोंको निकालतेहैं यह बाण शिखंडीके नहीं हैं ६२ सर्पोंकेसमान अत्यन्त क्रोधयुक्त बिषभरे चाटतेहुए मेरेमर्मों में प्रवेशकरतेहैं इससे यह बाण शिखंडी के नहीं हैं ६३ यह बाण अवश्य अर्जुनके हैं शिखंडीके नहीं हैं क्योंकि यह बाण मेरेअंगों को ऐसे चूर्णकिये डालतेहैं जैसे कि भाद्रपदके महीनेमें प्रचंडसूर्य्य अंगोंको संतप्तकरके चूर्णीभूतकरतेहैं ६४ विजयी गांडीवधनुषधारी बानरध्वज बीर अर्जुनके सिवाय अन्य पृथ्वीके सब राजालोग भी मुझको व्यथित नहीं करसक्ते ६५ हे भरतर्षभ इसप्रकारबोलते वा पांडवोंको भस्मकरना चाहते उन शंतनु के पुत्र भीष्मने अर्जुन के ऊपर शक्तीको छोड़ा ६६ इसको देखकर अर्जुनने आपकेसबकौरवी बीरोंके देखतेहुए इनको शक्तीको विशिखनाम तीनबाणोंसेकाट

कर गिराया ६७ फिर दोबातोंमेंसे एकको चाहते गांगेय भीष्मजीने सुवर्ण जटितढाल और तलवारको मृत्युके लिये वा बिजयके निमित्त हाथमेंपकड़ा६८ तबअर्जुनने उसरथसे नहींउतरेहुएकीउस ढालको शायकनाम बाणोंसे सौटुकड़े किया यहबड़ा आश्चर्य्यसाहुआ ६९ इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने अपनीसेनाओंको आज्ञाकरी कि भीष्म के सन्मुख जाओ तुमको थोड़ासाभी भय न होगा ७० यह सुनकर वह सेना चारोंओरसे(तोमर)(प्रासबाण समूह)(पट्टिश)सुन्दरखड्ग (तीक्ष्णनाराच) ७१बत्सदन्त और भल्लोंसमेत उसअकेलेके सन्मुख गये इसकेपीछे पांडवोंके महाभयकारी सिंहनाद जारीहुए ७२इसी प्रकार भीष्मकी बिजय चाहने वाले आपके पुत्रभी गर्जे और उस अकेले भीष्मके ओर पासबर्त्तमान होकर सिंहनाद करने लगे७३ हे राजेन्द्र वहां दशवें दिन भीष्म और अर्जुनकी सन्मुखतामें आप के पुत्रोंका युद्ध अन्यलोगों से महाघोर रूपहुआ ७४ परस्पर में मारती और लड़ती हुई सेनाकेभ्रमणचक्र एक मुहूर्त पर्य्यन्तगंगा और समुद्रके गिर्द्दावके समान हुए ७५ तबपृथ्वी अशुभरूपी और रुधिरसे पूर्ण होगई उस समय अच्छा बुरा कुछनहीं मालूम हुआ ७६ वह भीष्म उस दशवें दिनमें दश हजार बीरोंको मारकर मर्म स्थलों में महाघायल होनेपरभी युद्धमें नियत रहे ७७ इसके पीछे उससेना मुखपर नियत धनुषधारी अर्जुनने कौरवी सेनाके मध्यमेंसे सेनाको भगाया ७८ तबहम उसश्वेत घोड़े रखने वालेकुन्तीके पुत्र अर्जुनसे भयभीत वा तीक्ष्ण शस्त्रोंसे पीड़ामान होकर युद्धसे भगे ७९ (सौबीर) (कितव) वा पूर्व्वी पश्चिमी और उत्तरीयराजा वा (मालव देशी) (अभीषाह) (शूरसेन) (शिवय) (बशातय) (शाल्व) (आश्रय)(त्रिगर्त्त)(अंवष्ट)केकयोंसमेत इन सब बाणोंसेपीड़ित और घावोंसेदुखी महात्माओंने युद्धमें अर्जुनके साथ लड़तेहुए भीष्मको त्याग नहीं किया इसके पीछे बहुत से क्षत्रियोंने चारों ओरसे उस अकेले को घेरकर ८२ और सब कौरवोंको हटाकर बाणोंकोबर्षासे ढकदिया और गिराओ पकड़ो लड़ो काटो यह कठिन शब्दभीष्मके

रथके पास हुए और युद्धमें हज़ारों को मारकर ८४ उस के शरीर मेंदोऊ दलकाभीअन्तरघावोंसे बाकी नहींरहा ऐसीदशावालेअर्जुन के तीक्ष्ण नोकवाले बाणोंसे अत्यन्त घायल कियेहुए आपके पिता भीष्मजी कुछ सूर्य्यके शेषरहनेपर आपके पुत्रोंके देखतेहुए रथपर से औंधे शिरहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े ८५,८६ हे भरतवंशीरथसे भीष्मजीके गिरतेही राजाओंमें और आकाशके देवताओंमेंहाय २ आदि बहुत से शब्द होनेलगे ८७ उसमहात्मा पितामह को गिरतेहुए देखकर भीष्मकेसाथ हमसबकेभी हृदय फटगये ८८ वह महाबाहु इन्द्र ध्वजाकेसमान ऊंचा और सब धनुष धारियोंमेंध्वजा रूप भीष्म पृथ्वीको अच्छी रीतिसे कंपाय मान करता गिरा ८९ उन बाणसमूहोंसे वेधित होनेपरभी भीष्मजीने पृथ्वीको स्पर्श नहीं कियाअर्थात् बाणशय्याहीके ऊपररहेफिर उसबाणशय्यापरसोतेहुए बड़े धनुष धारी पुरुषोत्तमरूप रथसेगिरेहुए भीष्मजीमें दिव्यभाव प्रविष्टहुआबादलबर्षाकरनेलगे पृथ्वीकंपायमानहुई९१उसगिरतेहुए नेभी दक्षिण दिशामें नियत सूर्य्य को देखा हे भरतर्षभ उसप्रतापी शूरवीरने कालज्ञानको बिचार कर सावधानी को पाया ९२ और अन्तरिक्ष में चारोंओर से यह दिव्यबचनसुने कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महात्मा पुरुषोत्तम भीष्म दक्षिणायन सूर्य्य बर्त्तमान रहने पर किसीप्रकार सेभी अपना शरीर नहीं त्यागेगा भीष्मजी इस बचनको सुनकर बोलेकि मैं अभी नियत बर्त्तमानहूं ९३,९४पृथ्वी पर गिरेहुए उत्तरायणकोचाहते उन कौरवों के पितामह भीष्मजीने प्राणोंको धारण किया ९५ हिमाचलकी पुत्री श्री गंगाजीने उनके अभिप्रायको जानकर महर्षि लोगोंको हंस रूपकरके उनके समीप भेजा ९६ इसकेपीछेवह बहुतउड़ने वालेशीघ्रगामी हंस एकसाथही उस कौरवों के पितामह भीष्मजो के देखने को ९७ उस स्थानपर आयेजहां नरोत्तम भीष्म पितामह शरशय्या पर सोतेथे वहां आकर उन हंसरूपमहर्षियोंने उस शरशय्यापर नियतहुए कौरव भीष्मजी को देखा और उनको दक्षिणायन सूर्य्यमें पड़ाहुआ देखकर बड़ी

परिक्रमाकर परस्पर में सलाहकरके यह कहा ९८,९९,१०० कि भीष्म सरीकामहात्मा दक्षिणायनमें कैसेजायगा ऐसाकहकर वहहंस दक्षिणकी ओरको चलेगये १०१ हे भरतर्षभ बड़े बुद्धिमान् भीष्मजी अच्छी रीतिसे उनको देख बिचारकर शोचपूर्व्वक बोलेकि हे महर्षियो मैं किसी रीतिसेभी दक्षिणायन सूर्य्यमें नहींजाऊंगा यहीमेरे मनमें दृढ़ता है उत्तरायण सूर्य्य होनेपरमैं अवश्य अपने उस स्थान पर जाऊंगा जोकि मेरा प्राचीन स्थानहै १०२,१०३ हे हंसरूप महात्मा लोगो मैं आपलोगों से कहताहूंकि मैं उत्तरायण की इच्छा से प्राणोंकोधारण करूंगा १०४ क्योंकि अपने प्राणोंका त्यागना मेरेही स्वाधीनहै इसहेतुसे उत्तरायण सूर्य्यमें प्राण त्यागकरने की इच्छा से मैं तबतक अपने प्राणोंको धारण करूंगा १०५ उस महात्मा पिताने जो मुझको अपनी इच्छाके अनुसार जबचाहै तब मरें यहजोवर प्रदान कियाहै उसकोमैं वैसेही समझताहूं और वास्तवमेंभी वहयथार्थहै,१०६ इसकारण देहत्याग निश्चय होजानेपर भीअपने प्राणोंको धारणकरूंगा उनहंसोंसे ऐसाकहकर शरसैय्यापर शयन करगये १०७ इसप्रकार उसबड़े पराक्रमी कौरवोंके वृद्ध और प्रधान भीष्मजीके गिरनेपर पांडवोंने और सृंजियोंने सिंहनाद किया १०८ हेराजाउनबड़े बलिष्ठ प्रतापवान् कौरवोंके वृद्धपितामहके आसन्न मृत्युहोनेपर आपके पुत्रोंनेकुछ करनेके योग्यकर्मको नहींमाना १०९ उससमय कौरवोंको बड़ाभारी मोह उत्पन्नहुआ उसकेपीछे कृपाचार्य्य और दुर्य्योधन आदिसबलोग श्वासाओंको लेलेकर बड़ारुदन करनेलगे और इसीव्याकुलतामेंबहुत बिलम्बतकअचेत नियत होकर महा शोचग्रस्त तासेयुद्धमें चित्तनहीं लगाया ११०,१११ हृदय के ग्राहसे पकड़े हुये अर्थात् शोचसे ग्रसितहोके पांडवोंकेसन्मुख भीनहींदौड़े ११२ जिनके कि बड़े २ शूरबीरमारेगये ऐसेहम लोगोंने दुर्य्योधन कानाशहोना चित्तसे बिचारकिया ११३ अर्जुनसे परास्तहोकर हमलोगोंने करनेके योग्य कर्मकोभी नहींजाना और परिघके समान भुजाधारी सबशूरबीर पांडवोंने इसलोक

मेंतो बिजय रूपी कीर्तिको और परलोकमें उत्तमगतिको पाकर बड़े २ शंखोंकोबजाया हेराजा पांचालों समेत सोमकलोग अत्यन्त प्रसन्नहुए ११४,११५ फिरहज़ारों बाजोंके बजनेपर उस महाबलीभीमसेनने भुजदंडोंके कठिनशब्दकिये अर्थात् दोनोंखंभ ठोककर बड़ी गर्जनाकरी ११६ उस समर्थगांगेय भीष्मजीके आसन्न मृत्यु होनेपर दोनोंसेनाओंकेशूरबीरोंने शस्त्रोंको त्यागकरके चारोंओरसे बड़ाध्यान किया ११७ कोईपुकारा कोईभागा कोईअचेत हुआकिसीने क्षत्रीकुलकी प्रशंसाकरी किसीने भीष्मजीकी प्रशंसाकरी ११८ ऋषियोंने और पितरोंनेभी महाव्रतभीष्मजीकी प्रशंसाकरी और भरतबंशियोंके जो पूर्व्वके स्वर्गबासी पुरखा लोग थे उन्होंने भी उनकी बड़ी प्रशंसाकी ११९ पराक्रमी और बुद्धिमान् भीष्मजी महा उपनिषदरूपी योगमें बर्त्तमान होकर जपमें प्रवृत उत्तरायण सूर्य्य कालके इच्छावान् होकर नियतहुए १२० ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिविंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइक्कीसवांअध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय उन पराक्रमी देवताकेसमान गुरूपिता के निमित्त ब्रह्मचारी भीष्मसे पृथक् होकर शूरबीर लोग किसदशा में होकर कौन काम करनेलगे १ जब कि भीष्मजी ने दया करके शिखंडी के ऊपर किसी शस्त्रका प्रहार नहीं किया तभीसे मैं कौरवोंको पांडवोंके हाथसे मृतकरूप मानताहूं २ हे संजय अब इससे अधिक दूसरा कौनसा दुःखहोगा कि पिताको भी मृतक सुनकर मैं निर्बुद्धी जीताहूं ३ हे तात निश्चयकरके मेराहृदय लोहेसे भी कठोरहै जो अपनेपिता भीष्मजीको भी सुनकर सौटुकड़े नहींहोता हे सुन्दर ब्रतधारी संजय यहां युद्धभूमिमें विजयाभिलाषी कौरवोत्तम आसन्न मृत्यु भीष्मजीने जो कामकिया वह मुझसे कहो५ मैं युद्धमें मृतक देवब्रत भीष्मको बारंबार स्मरणकरके अधैर्यहोता हूं कि जो भीष्म पूर्व्व समय में परशुरामजी के भी दिव्य अस्त्रोंसे

नहीं मारागया वह द्रुपदके पुत्र पांचाल देशी शिखंडी के हाथ से मारागया ६ संजय बोले कि सायंकालके समय धृतराष्ट्रके पुत्रोंके व्याकुलकरनेवाले पांचालदेशियोंको कौरवोंके पितामह भीष्मजीने आनन्दकिया, और बाण शय्यापर नियत पृथ्वीको बिना स्पर्शकिये शयनकरनेवालेहुए रथसे भीष्मके गिरने और पृथ्वीतल से ऊपर पड़नेपर जीवोंका हाय हाय शब्द अत्यन्ततासे हुआ कौरवोंके युद्ध की सीमाके वृक्षरूप महाविजयी भीष्मके गिरनेपर ६ दोनोंसेनाओंके क्षत्रियोंमें महाभय उत्पन्नहुआ हे राजा शंतनु के पुत्र भीष्म को टूटा कवच और ध्वजासेरहित देखकर चारोंओरसे कौरव और पांडव बर्त्तमानहुए आकाशमें अंधेरी छागई सूर्य्य में अप्रकाशता आगई ११ और पृथ्वी ऐसे शब्दोंसे शब्दायमानहुई कि यह ब्रह्म ज्ञानियोंमें वा ब्रह्मके जाननेवालोंमें श्रेष्ठहै १२ जीवोंने उस सोते हुए पुरुषोत्तमके विषयमें यह बचनकहा कि पूर्व्वसमयमें इसीश्रेष्ठ पुरुषने अपनेपिता शन्तनु को कामाग्नि से पीड़ित जानकर अपनेको ब्रह्मचारीकिया और चारणोंसमेत ऋषियोंने उन बाणशय्या पर नियत कौरवोंके पितामह भीष्मजीके आसन्न मृत्युहोनेपर यह बचनकहा १४ । १५ कि आपके पुत्रोंने कुछ करनेकेयोग्य कर्मको नहीं जाना हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उन शोभा से रहित खिन्नस्वरूप लज्जायुक्त ईर्षासेभरे युद्धमें प्रवृत्त पांडवोंने विजय को पाकर १७ सुवर्ण जालोंसे अलंकृत बड़े २ शंखोंको बजाया हे निष्पाप बड़े आनन्दके हज़ारोंबाजोंके बजनेपर हमने महाबली कुन्तीके पुत्र भीमसेन को बड़ी प्रसन्नतायुक्त क्रीड़ाकरताहुआ देखा १६ बड़े बली पांडव शत्रुको अपनेवेगसे मारकर महा प्रसन्नहुए तब कौरवों में महाकठिन मोह उत्पन्नहुआ २० इसीप्रकार भीष्मजीके मरनेपर कर्ण और दुर्योधनने भी बारंबार श्वासलिये २१ सबहाय २ रूप हुआ और अमर्य्यादा वर्त्तमानहुई आपकापुत्र दुश्शासन भीष्मजी को गिराहुआ देखकर २२ बड़ी तीव्रतामें नियतहोकर द्रोणाचार्य्य की सेनामें गया वह भाईका भेजाहुआ अपनीसेनासे अलंकृत बीर

दुश्शासन अपनीसेनाको विह्वल करताहुआ गया हे राजा कौरवों ने उस आयेहुए दुश्शासनको देखकर चारोंओरसे इस निमित्तघेर लिया कि देखिये यह क्या कहता है २४ इसके पीछे दुश्शासन ने भीष्मजीके मरनेका वृत्तान्त द्रोणाचार्य्यजी से कहा २५ तब द्रोणाचार्य्य उसके अप्रिय बचनको सुनकर शोकसे अचेतहोगये फिरउस प्रतापवान् द्रोणाचार्य्यने सचेतहोकर २६ अपनीसेनाओंकोऔर कौरवोंने भी लौटेहुए अपने कौरवीलोगोंको देखकर अपनी प्रबल सेनाको निषेधकरदिया २७ और शीघ्रगामी घोड़ोंपर सवार अपने दूतोंको इधर उधर भेजकर सब को निषेध करवा दिया २८ फिर सब राजालोग अपने २ कवचोंको उतार २ कर भीष्मजीके पास गये तदनन्तर लाखों शूरबीर युद्ध को विश्राम करके उस महात्मा भीष्मके पास आकर ऐसे नियतहुए जैसे कि देवता लोग ब्रह्माजी के पास इकट्ठे होतेहैं हे राजा इसके पीछे सब पांडव लोग भी कौरवोंसमेत उस शयनकरतेहुए भीष्मजीको पाकर ३० दोनों हाथोंसे दण्डवत्करके नियतहुए इसकेपीछे शंतनुके पुत्र भीष्मजी सबकी यथायोग्य शिष्टाचारी करके अपने सन्मुख बैठेहुए पांडव और कौरवोंसे बोले हे महाभागो तुम्हारा आगमन सफल हो और हे महारथीलोगो तुम्हारा आगमनश्रेष्ठहो ३२ हे देवताओंके समान पुरुषलोगो मैं तुम्हारे देखनेसे बड़ा प्रसन्न होताहूं इन सबलोगों से ऐसा कहकर फिर शिरको लटकायेहुए कहनेलगे ३३ कि मेरा शिर अत्यन्त लटकताहै इससे मुझे तकिया दो यह सुनकर राजाओंने बड़े उत्तम मृदुस्पर्शवाले तकिये लाकरदिये ३४ उन तकियों को पितामहने नहीं चाहा और हसकर राजाओंसे कहा कि ३५ हे राजाओ यह तकिये बीरोंकी शय्याओंपर शोभित नहीं होतेहैं फिर सब लोकके महारथी प्रतापी पांडव अर्जुनको देखकर बोले किहे महाबाहु अर्जुन मेरा शिर लटकता है तू मुझको उचित तकिये देदे ३६। ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिएकविंशत्युत्तरशततमोऽध्यायः १२१॥

एकसौबाईसका अध्याय ॥

संजय बोले कि इस बचनको सुनतेही अर्जुन बड़े भारी धनुष को हाथमेंलेके अश्रुपातयुक्तहो पितामहको दण्डवतकरके यहबच-नबोला १ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ सब शस्त्रधारियोंके शिरोमणि महादु-र्जय पितामह मैं आपकादासहूं आप मुझ को जो आज्ञादें वही मैं करूं २ भीष्मजीने कहा हे तात कौरवोंमें श्रेष्ठ अर्जुन मेराशिरल-टकताहै तू मुझको तकियादे ३ हे बीर बहुतशीघ्र मेरेशयनकेयोग्य तकियादेदे हे अर्जुन तूही समर्थहोगा तूही सब धनुषधारियोंमेंश्रेष्ठ होगा तूही क्षत्रीधर्मका जाननेवाला बुद्धिमान सतोगुणयुक्त होगा यहसुनकर अर्जुनने भी बहुत श्रेष्ठ कहकर उपाय और परिश्रमको अंगीकारकिया ५ और गांडीवधनुषको हाथमेंलेकर गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंको अभिमंत्रितकर भीष्मजीकी प्रतिष्ठाकरके तीक्ष्ण और वेग युक्त तीनबाणोंसे उनके शिरको सीवाकिया चित्तका प्रिय ज्ञातहो-नेपर धर्मात्मा और मुख्यताके जाननेवाले भरतर्षभ भीष्मजी इस कर्मको देखकर अर्जुन पर अत्यन्त प्रसन्नहुये और इस तकिये के देनेसे अर्जुनकी बड़ी प्रशंसाकी ७, ८ और सब भरतबंशियों के मध्यमें इस श्रेष्ठ मित्रोंकी प्रीतिके बढ़ानेवाले कुन्तीके पुत्र अर्जुन से बोले कि ९ हे पांडव तुमने शयनकेसमान मुझको तकियादिया और जो कदाचित् विपरीत कर्म करते तो मैं अवश्य तुमको शाप देता १० हे महाबाहु धर्मोंमें नियत शरसैयापर बर्त्तमान क्षत्रीको युद्धभूमिमें निश्चयकरके इसीरीतिसे शयनकरना योग्यहै ११ इस रीति के बचन अर्जुनसे कहकर और पास बैठेहुए राजकुमारों से बोले १२ कि पांडवके लगायेहुए मेरे तकिये को देखो मैं इससैया पर तबतक शयन करूंगा जब तक कि सूर्य्य दक्षिण मार्गसे उत्तर मार्गमें अर्थात् दक्षिणायनसे उत्तरायन होजायंगे १३ जो राजा उस समय मुझको मिलेंगे वह मुझको देखेंगे तात्पर्य्य यह है कि जब सूर्य्य कुबेरकी दिशाको जायगा १४ तब मैं अवश्य सात घोड़ों के

उत्तम प्रकाशवान् रथपर चढ़कर अपने सुहृद इष्टमित्रों समेत प्राणोंको त्यागूंगा १५ हे राजालोगो यहां मेरे निवासस्थान पद तुम खाईको खुदवाओ क्योंकि मैं इसरीतिसे हजारोंबाणोंसे छिदेहुएशरीरसे सूर्य्यकी उपासना करूंगा और तुम सब लोग शत्रुताकात्यागकर युद्ध मतकरो १६ इसके अनन्तर हे राजा वहां सब भूषण और चिकित्सा के यन्त्रों से अलंकृत पंडितों से स्तूयमान सर्ब्बवैद्य लोग आनकर बर्त्तमानहुए १७गांगेय भीष्मजी उनकोदेखकर आप के पुत्रसे बोले कि इन बैद्योंको सत्कार करके दक्षिणा पूर्व्वक तुम बिदाकरदो १८ अब यहां मेरो यह दशाहोनेपर मुझकोबैद्योंसे क्या प्रयो जन है क्योंकि मैं क्षत्रीधर्म में श्रेष्ठ होकर परम गति को प्राप्तहूं १९ हे राजाओ मुझ बाणसैया पर बर्त्तमान का यही धर्म है कि मैं इन्हीं बाणों समेत जलाया जाऊं २० उनके इस बचन को सुनकर आपके पुत्र दुर्योधनने अपनी योग्यता के अनुसारउन बैद्योंको पारतोषिक देकर बिदाकिया २१ फिर नानादेश के राजाओंनेबड़े तेजस्वीभीष्म जीकोअपने धर्ममें दृढ़देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया २२ इसके पीछे आपके पिताको तकिया देकर वहसब महारथी राजा वा पांडव और कौरव एकसाथही शुभ सैयापर सोते हुए महात्मा भीष्मके पास जाकर दंडवत पूर्व्वक तीनपरिक्रमा कर २४ सायंकालके समय सबवीरचारोंओर से ध्यानकरते बड़ेदुःखी रुधिर से भरेहुए अपने २ डेरोंमें बिश्राम करनेके लिये गये और महाबली माधवजी उस प्रसन्न चित्त बैठेहुए महारथी भीष्मजी के गिरनेपर प्रसन्न हृदय पांडवों के पास जाकर समय पाकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहनेलगे २५। २६। २७ हेकौरव तुमप्रारब्धसे विजय पातेहो और यहमनुष्यों से अवध्य सत्य प्रतिज्ञ महारथी भीष्म प्रारब्ध से गिरायागया २८ अथवा देवताओं समेत सबशस्त्रोंमें पूर्ण तुल्यनेत्र से मारनेवाले को पाकर घोरनेत्र से भस्महोगया २९ यह सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजीको उत्तरदिया कि आपके प्रसन्नहोने से विजय है और आपकेही अप्रसन्न होने से पराजय है ३० हे भक्त

भयहारी श्री कृष्णजी आपही हमारेरक्षा स्थानहो और उन लोगों को विजयकापाना कुछ आश्चर्य्य नहींहै जिनके हितकरने में सदैव प्रवृत्त चित्त और युद्धमें सदैव रक्षकहो आपको सबप्रकार से प्राप्त होकर विजयका होनाकुछ आश्चर्य्य नहींहै यहमेरा मतहै ३२ इस रीतिके युधिष्ठिर के बचनों को सुनकर श्री कृष्णजी बड़ो मन्दमुसकान समेत बोलेकि हे राजाओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर यहकहना तुझी को योग्यहै ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणि द्वाविंशत्युत्तरि शततमोऽध्यायः १२२ ॥

एकसौ तेईसका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज रात्रि के व्यतीत होनेपर सबराजा वा पांडव और धृतराष्ट्र के पुत्र पितामहके पास वर्त्तमानहुए १ क्षत्री लोग उन कौरवोत्तम क्षत्रियों मे श्रेष्ठ बीरसैया परसोते हुए बीर भीष्मजीको दण्डवत करके उनके पास नियतहुए २ वहांपरहजारों कन्याओंने जाकर चन्दन चूराखील और सब प्रकार की मालाओं से भीष्मजीका पूजन किया३ वृद्धास्त्रीवा बालास्त्री और देखने वाले अन्य सावधान लोगभी उनभीष्मजीके समीप ऐसेगये जैसे कि सूर्य्य की उपासना को मनुष्य और स्त्रीजातेहैं ४ तालस्वर समेत ईश्वर का बर्णनकरने वाले बाजेगाजे समेत नाचनेवाले नट नागर और कारीगर लोग भी वृद्धपितामह भीष्मजी के पासगये ५ वह कौरव पांडव युद्धोंसे निवृत्तहो शरीरके कवचादिकों को उतारसब शस्त्रोंको त्याग एकसाथ मिलेहुए ६ उन दुर्जय शत्रुंजय देवव्रत भीष्मजी के पास आकर बैठगये और सब लोगपूर्व के समान अवस्थाके क्रमसे परस्पर में प्रीतिमानथे, वह सैकड़ों राजाओं से व्याप्त भीष्मजी से शोभाय मान भरतबंशियों की सभा ऐसी शोभाय मानहुई जैसे कि आकाशमेंसूर्य्य मंडल शोभित होताहै८ गंगाजीके पुत्रको उपासना करने वाले राजाओंकी बहसभा ऐसो प्रकाश मानहुई जेसेकि देवताओंके ईश्वर ब्रह्माजीकी उपासना करनेवाली देवशभा होतीहै९

हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ बाणों से पीड़ामान सर्प के समान श्वास लेते बाणोंसे पीड़ित शरीर और शस्त्रोंके प्रहार से मूर्छावान भीष्म जी उन राजाओंको देखकर धैर्य्य से पीड़ाको सहकर यह बचन बोले कि हमारे लियेजलको लाओ १०, ११ इसके पीछेउनक्षत्रियोंने चारोंओर से छोटे बड़े भोजन पात्र और शीतलजलके घटादिक पात्रोंको मंगाया १२ भीष्मजी उसप्रकारसे लायेहुए जलको देखकर बोले कि हे तात अबकोईमानुषी भोगमुझसे भोगानहीं जाता १३ मैं मनुष्योंसे पृथक् बाणसैयापर बर्त्तमानचन्द्रमाऔर सूर्य्यकेलौटने की बाट देखताहुआ नियतहूं १४ हे धृतराष्ट्र भीष्मजी इसप्रकारसे कहकर अपने मुखसे राजाओंकी निन्दा करते हुए फिर बोलेकि मैं आज इनको देखा चाहताहूं १५ इसके पीछे महाबाहु अर्जुन पितामहकेसमीप दण्डवत पूर्व्वक आकर बड़ी नम्रतासे झुकाहुआ नियत हुआ और हाथ जोड़कर बोलाकि मुझैक्या आज्ञाहोतीहै १६ फिर धर्मात्मा भीष्मजी बहुत प्रसन्नहोके उसबिनीति हाथजोड़े हुएबर्त्तमान संसार के धनादि संपत्ति योंके विजय करने वाले अर्जुन को अपने सन्मुख खड़ाहुआ देखकरबोले १७ कि तेरेबाणोंसे भराहुआ मेराशरीर जलरहा है और मर्मस्थलों में बड़ीपीड़ा है मुख सूखा जाताहै १८ हे अर्जुन मुझ दुःखसे पीड़ावान को जलपिलादे हे बड़े धनुषधारी तूही बुद्धि के अनुसार जलदेने को समर्थ है १९ इतनी बातके सुनतेही उस पराक्रमी अर्जुनने बहुत अच्छा ऐसा कहकर रथपर सवारहो बड़े पराक्रमी गांडीव धनुष को प्रत्यंचा युक्त करके बलसे खैंचा २० उसकोप्रत्यंचाका और धनुषकी टंकार का शब्द इन्द्रबज्रके समान था उसशब्दको सुनकर सब जीवधारी और राजालोग भयभीत होगये २१ तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठअर्जुन ने रथके द्वाराउस भरतर्षभ महाशस्त्र धारी सोतेहुए भीष्मजी की परिक्रमा करके धनुषपर प्रकाश वान अभिमंत्रित बाणको चढ़ाकर मेघ अस्त्रसे संयुक्त करके सब लोगों के देखते हुए २३ भीष्मजीके दक्षिण ओर में पृथ्वी को वेधा उसके वेधतेही पृथ्वीमें से निर्मल

महाशुभ पवित्र जलकीधारा ऊपरको ओर फुव्वारेकेसमान निकली २४ वहजल महाशीतल अमृतके समान दिव्य सुगन्धित औररससे भराहुआथा उसशीतलजलकी धारासे अर्जुनने कौरवोंमें श्रेष्ठदिव्य कर्मऔर बलवालेभीष्मजीको तृप्तकरदिया इसके पीछेइन्द्रकेसमान अर्जुनके उसकर्मसे २५, २६ उनसबराजाओंको बड़ा आश्चर्य्यहुआ अर्जुन के इस अमानुषी कर्म और बलको देखकर कौरवलोगऐसे महाकंपायमानहुए जैसे कि शीतसे कंपायमान गौयं होतीहैं राजा लोगोंने बड़े आश्चर्य्यसे सब ओरको अपने २ डुपट्टोंको हिलाया २८ और सब ओरसे शंख दुन्दुभियों के कठिनशब्द हुये हे राजा उस जलसे तृप्तहुए भीष्मजी सब शूरवीर राजाओंके सन्मुख बड़ी प्रशंसाकरके अर्जुनसे यह बचनबोले कि हे महाबाहु हे कौरवनन्दन यह तुझमें आश्चर्य्यकीबातनहीं है ३० हे बड़े तेजस्वी तुमको नारदजीने प्राचीन ऋषि बर्णनकियाहै तुम वासुदेवजीके संगहोकर बड़े २ कर्म करोगे ३१ जिस कर्मके करनेको देवताओंसमेत इन्द्र भी असमर्थहै हे अर्जुन मुख्य वृत्तान्तके ज्ञातालोगोंने तुझको सब क्षत्री कुलमात्रका धनुषजाना है ३२ तुम उत्तम धनुषधारियों में अद्वितीयहो और पृथ्वीके सब मनुष्योंमें तुम अत्यन्त श्रेष्ठहो इस संसारमें मनुष्य सब से उत्तम है पक्षियोंमें गरुड़ श्रेष्ठहै ३३ नदियोंमें समुद्र श्रेष्ठहै पशुओंमें गौ उत्कृष्टहै प्रकाशवानोंमें सूर्य्यश्रेष्ठ है पर्व्वतोंमें हिमालय जातियों में ब्राह्मण श्रेष्ठहै इसीप्रकार तुम धनुषधारियोंमें श्रेष्ठहो धृतराष्ट्रके पुत्रने मेरा कहना वा बिदुरजी द्रोणाचार्य्य परशुरामजी और श्रीकृष्णजी का जो कहना और बारंबार संजयका भी कहना नहीं सुना ३५ निश्चयकरकेनिर्बुद्धीऔर अचेतोंकेसमान दुर्य्योधन उस कहनेपर श्रद्धा नहीं करता है वह शास्त्रके बिपरीत कर्म कर्ता भीमसेनके बलसे हाराहुआ मराहुआ बहुतकाल तक सोवेगा ३६ कौरवोंका राजा दुर्य्योधन उनके इस बचनको सुनकर चित्तसे उदासहोगया इसको उदास देखकर भीष्मजीनेकहा कि हेराजा अबभी समझकर निरहंकारीहोजाओ ३७

हे दुर्य्योधन तुमने यह देखा जैसे कि बुद्धिमान् अर्जुन ने शीतल अमृत के तुल्य सुगन्धियों से व्याप्त उत्तम जलकी धारा उत्पन्न करी ३८ इसलोकमें इस कर्मका करनेवाला दूसरा कोई मनुष्य नहीं है (आग्नेय) (वारुण) (सौम्य) (वायव्य) (वैष्णव) ऐन्द्र पाशुपति पारमेष्ठ्य (प्रजापत) (धाता) (त्वष्टा) और सबिताकेअस्त्र और सौरि इन सब अस्त्रोंको भी इस नरलोकमें अकेला अर्जुनहीजानताहै वा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी जानतेहैं इन दोनों महापुरुषोंके सिवाय इस लोकमें दूसरा कोई नहीं जानताहै ४१ हे तात युद्धमें इन पांडवोंको देवता और असुर भी जीतनेको समर्थ नहीं हैं जिस महात्माके यह अमानुषी कर्महैं हे राजा उस युद्धमें पराक्रमी शूरबीर युद्धमें शोभापानेवाले अर्जुनके साथ सन्धिकरनेमें बिलम्बमतकरो ४३ हे कौरवोत्तम जब तक महाबाहु श्रीकृष्णजी अपनेस्वाधीनहैं तब तक शूरबीर अर्जुनके साथ तुझको सन्धिकरलेनायोग्य है ४४ हे तात जब तक अर्जुन गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से तेरी सब सेनाका नाश नहीं करे तब तक तुझको सन्धिकरलेना अत्यन्त ही योग्यहै ४५ हे राजा जब तकयुद्धमें मरनेसे शेष बचेहुए अपनेनिजबांधव लोग वा बहुतसे राजालोग नियतहैं तब तक सन्धि होजाय और जब तक कि क्रोध से अग्निरूप नेत्र युधिष्ठिर इस तेरी सेनाको भस्मनहीं करता है वा पांडव नकुल सहदेव और भीमसेन सब ओरसे सेनाका नाश नहीं करें ४८ तब तकवीर पांडवोंकेसाथ तेरी प्रीतिहोना मुझको अभीष्टहो हे तात मैं चाहताहूं कि यह महाप्रबल युद्ध मेरेही मरण पर्य्यन्त रहै तू अवश्य पांडवोंसेसन्धि कर ४९ इस बातको तू मनसे समझकर अंगीकारकर हे तातयह मैंने तुझको समझायाहै अगर तू समझैगा तो तेरी और कुलकेलोगोंकी कुशल अवश्य होगी ५० अहंकारको त्यागकरके पांडवों से सन्धिकर अर्जुनके इतनेही करनेको तूबहुत समझ भीष्मकेही मरणान्तसे तुम्हारी और पांडवों की प्रीतिहो यह बहुत श्रेष्ठहै इसी प्रीतिमें शेष बचेहुएक्षत्री बचजांयगे हेराजा मेरे इसकहनेपर प्रसन्न

होके पांडवों के आधेराज्य को देदो और धर्मराज राजा युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थको जाय हे कौरवेन्द्र तू मित्रों से शत्रुता करनेवालाराजाओंमें नीच मतहो नहीं तो पापरूपी अपकीर्तिको पावेगा ५२ मेरे नाशहोने से प्रजाओं को सुखहो और प्रीति रखनेवाले राजालोग परस्परमें मिलें हे तात पिता पुत्रसे मामा भानजेसे भाई भाईसेआनन्दपूर्व्वक मिलें जो मोहसे भरेहुए निर्बुद्धितासे समयके अनुसार मेरे कहेहुए बचनको नहीं मानेगा तो अन्तमें महादुःखोंको पावेगा और सबकी एकसीही दशाहै मैं इस बातको सत्यसत्यही कहताहूं ५४ गांगेय भीष्मजी राजाओंके मध्यमें बड़ी शुभचिन्तकतासेकौरवोंके राजा दुर्य्योधनको यह बचन सुनाकर भालोंसे पीड़ित अंगोंके दुःखोंको सहकर मनबुद्धिको आत्मामें लयकरके मौनहोगये ५५ संजय बोले कि आपके पुत्रने धर्म अर्थ से संयुक्त होकर प्रियकारी निर्दोष निरुपाधि बचनों को सुनकर ऐसे स्वीकार नहीं किया जैसे कि सन्निकट मरने वाला पुरुष बैद्यकी औषधी को नहीं अंगीकार करता है ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्मोपदेशत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

एकसौचौबीसवांअध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज शंतनुके पुत्र भीष्मजीके मौनहोने पर वह सब राजा लोग फिर अपने २ डेरोंको गये १ पुरुषोत्तम कर्ण भीष्मजीको मृतक सुनकर कुछेक व्याकुलसाहोकर बड़ी शीघ्रतासे उनके पासगया २ वहां उसने जब उस महात्मा समर्थ शूरबीरजन्म शय्यापर बर्त्तमान स्वामिकार्त्तिक के समान शरशय्यापरनियत भीष्मजीको देखा ३ तब अश्रुपातोंसे गद्गद कराठहोकर बड़ा तेजस्वी कर्ण उस निमीलताक्षसे बोला हे महाबाहु भीष्म हे कौरवोत्तम मैं राधाका पुत्र सदैव आपके नेत्रोंके आगे रहनेवालाहूं हे सर्वज्ञ मैं आपका द्वेषीहूं इन बातोंको सुनकर बड़े बलसे नेत्रोंको खोलकर गांगेय भीष्मजीने अपने निवासस्थानको एकान्तरूपदेख

कर स्थानके रक्षकोंको उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेह करताहै उसीप्रकारसे कर्णको एक हाथसे छातीकेद्वारा मिलकर बड़े धीरे २ यह बचन बोले ७ कि हे मेरे द्वेषी आओ आओ तू मेरे साथ ईर्षाकरताहै जो तू मुझको नहीं मिलता तोनिश्चयकरके तेराभला नहीं होता ८ तू राधाका पुत्र नहीं है किन्तु कुन्तीकाही पुत्रहै और पिता अधिरथी नहीं है तू सूर्य्यका पुत्र है यह भेद मुझको नारदजी ने बतायाहै ९ और व्यासजी वा केशवजीसे भी बिदितहुआ इसमें किसी बात का भी सन्देह नहीं है और यह बात भी मैं सत्य २ कहताहूं कि तेरे साथ मेरी किसी प्रकार की भी द्वेषता नहीं है १० मैंने तेरे तेजनष्टहोनेके लिये कठोर बचनकहे थे हे सुन्दरव्रत वाले कर्ण तू अकस्मात सब पांडवोंको मारेगा ११ हे सूत नन्दन इसी कारण से राजा दुर्य्योधन ने तुमको बारंबार कहकर उद्युक्त किया है तू धर्मके यूपसे उत्पन्न हुआ है इसहेतुसे तेरी ऐसी बुद्धि है १२ गुणवान् मनुष्यों की बुद्धि भी नीचोंकेसंगसे वा ईर्षासेद्वेष करनेवाली होजातीहै इसीहेतुसे कौरवोंकी सभा में बहुधा रूखे २ बचन सुनेगये १३ मैं युद्धमें तेरे पराक्रमको पृथ्वीभरके भी शत्रुओं से असह्य जानताहूं और वेद ब्राह्मणकी रक्षा करने में शूरतामें और दानमें तेरी बड़ी दृढ़ताको जानताहूं १४ मनुष्यमात्रोंमें तेरेसमान देवताओंके समान पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेषताके भयसे सदैव कठोर बचन कहे १५ बाण और अस्त्रोंके चलानेमें और हस्तलाघवतामें वा अस्त्रबलमें तू महात्मा श्रीकृष्णजी और अर्जुन के समान है १६ हे कर्ण तुझ अकेले धनुषधारीने काशीपुरीमेंजाकर कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े २ राजाओंका युद्धमें मर्दनकिया १७ इसीप्रकार पराक्रमी और दुःखसे विजय होनेवाला कीर्तिवान राजा जरासन्ध युद्धमें तेरेसमान नहींहुआ १८ तुम वेद और ब्राह्मणोंकी रक्षाकरनेवाले अपने तेज बलसे युद्धकरनेवाले देवगर्भ के समान युद्धमें मनुष्योंसे अधिकहो १९ अब वह मेरा क्रोध दूर हुआ जो पूर्व्वसमय में मैंने तुझपर किया था दैवीबात को अर्थात्

होनहारको कोई भी उपायोंसे उल्लंघन नहीं करसक्ता २० हेशत्रु हन्ता यह वीर पांडव तेरे सगे भाई हैं हे महाबाहु जो तू मेराहित चाहताहै तो उनसे मिलापकर २१ हे सूर्य्यनन्दन अब तू मेरेकहनेसे शत्रुताको त्यागकर जिससे कि पृथ्वीके सब राजालोग निर्विघ्नहों २२ कर्णने कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्सन्देह सब प्रकारसे जानताहूं कि मैं कुन्तीका पुत्रहूं सूतका पुत्र नहींहूं परन्तु मुझे कुन्तीने त्याग करदिया तब सूतने मेरा पोषण किया इससे दुर्य्योधन के ऐश्वर्य्य को भोगकर उसको निष्फल करना मैं उचित नहीं समझताहूं जैसे कि वसुदेवजी के पुत्र श्रीकृष्णजी पांडवों के निमित्त दृढ़ व्रत वालेहैं उसी प्रकार मैंने भी २५ धन जन पुत्र स्त्री परिवार और कीर्ति दुर्य्योधन के निमित्त बिचार कर लियेहैं हे बड़ी दक्षिणावाले कौरव कुल क्षत्री में रोगादिकों से मरना योग्य नहीं समझताहूं २६ मैंने दुर्य्योधन के आश्रयमें होकर पांडवोंको सदैव क्रोधित कियाहैं और होतव्यताहै वह तो अवश्यही होगीउस का मिटानेवाला कोई भी नहीं है कौनसा मनुष्य होनहार को उपायों के द्वारा लौटा सक्ता है हे पितामह संसारके मनुष्योंके नाश कारी चिन्ह आप लोगों ने देखे हैं और सभा में वर्णन किये हुए पांडव और वासुदेव जी सब प्रकार से मेरे जाने हुए हैं २९ वह अन्य मनुष्यसे अजेय हैं परन्तु उत्साह पूर्वक कहताहूं कि मैं उन पांडवों को विजय करूंगा यह मेरे चित्तका निश्चय है ३० जो कि यह महा भयकारी शत्रुता त्याग करने के योग्य नहींहै इसकारण अपने धर्म में प्रसन्न चित्त होकर मैं अर्जुन से लड़ूंगा ३१ हे तात युद्धके निमित्त तुम्हीं निश्चय करके मुझको आज्ञा दो आपकी ही आज्ञा से मैं युद्ध करूं यही मैं चाहताहूं ३२ और जो मैंने निर्बुद्धिता व चपलता से अत्यन्त बुरी २ विपरीत बार्ता करीं आप उनमेरे कठोर वचनों को क्षमा करने के योग्यहैं ३३ भीष्म जी बोले कि जो यह अत्यन्त भय उत्पन्न करने वाली शत्रुता त्याग करने के योग्य नहीं है तो हे कर्ण मैं तुझको आज्ञा देता हूं कि स्वर्ग को

इच्छा से तू युद्धकर ३४ क्रोध अहंकारसे रहित बल और साहस्य के अनुसार युद्धमें क्षमा करने वाला शक्ति और उत्साह के समान सत लोगों की वृत्ती करे ३५ मैं तुझको आज्ञादेताहूं और जो तू चाहता है उसको प्राप्तहो क्षत्री धर्म से पराजय पानेवाले निस्सन्देह उत्तम लोकों को पातेहैं ३६ अहंकार रहित बलिष्ट अपनी सामर्थ के आश्रय में रहनेवाले को धर्म युद्धके सिवाय क्षत्री का कल्याण करनेवाला दूसरा कोई भी धर्म नहीं है ३७ अर्थात् बहुत काल तक सन्धिमें बहुतसा उपाय किया परन्तु करने को समर्थ नहीं हुआ हे कर्ण यह तुझसे सत्यही सत्य कहता हूं ३८ संजय बोले कि गांगेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर राधा का पुत्र कर्ण दण्डवत पूर्व्वक अत्यन्त स्तुतिकर रोताहुआसा अपने रथपर सवार होकर आपके पुत्रके पास आया ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिचतुर्विन्शत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४ ॥

वेदाऽब्धिनन्दविधुसम्मितवैक्रमेब्दे आषाढ़शुक्लदलकालतिथौच भौमे। किंचाऽर्गलाख्यनगरस्थबुधोग्रजन्माकालीपदोहिविदधेखलु भारतार्थम् १ ॥

समाप्तम् शुभम्भूयात् ॥

इस पुस्तकको पं० रामविहारी, पं० रामसेवक, पं० बन्दीदीन, पं० रामेश्वर, पं० गौरीशंकर, पं० रामलाल, पं० कामताप्रसाद, पं० हरदयालजीने शुद्धकिया है ॥

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपी ॥
सितम्बर सन् १८८० ई०

प्रकटहो कि इस पुस्तकको मतबेने निजख़र्चसे तर्जुमा कराया है इस कारण इस मतबेकी आज्ञाबिना कोई छापनेका अधिकारी नहीं है ॥

नामकिताब
दुर्गायननवकाण्ड
देवीभागवतभाषाबारहों-स्कंध
दास्तानअमीरहमज़ा
दैवज्ञाभरण
दोहावलीरत्नावली
(न)
निर्णयसिंधु
नाममाहात्म्य
नानार्थनवसंग्रहावली
नबोनसंग्रह
नवरत्नभाष्य
निघंटभाषा
नारीबोध
(प)
परमार्थसार
प्रेमसागर
पारसभाग
प्रेमरत्न
प्रेमामृतसार
पद्मावतभाषा
पत्रासंवत् १९४३
षटवारियोंकीपुस्तकके तीनों भाग
प्रबोधचन्द्रोदयनाटक
पत्रहितैषिणीनागरीवर्णमाला
प्रेमप्रकाश
पद्यसंग्रह
(ब)
बृहज्जातक

नामकिताब
बृहत्संहिता
बिनयपत्रिकामूल व टीका सहित
ब्रजबिलास
ब्रजबिलाससारावली
ब्रह्मोत्तरखण्ड
बिष्णुपुराणभाषा
बारहपुराण
बीजककबीरदास
बीजगणितदोभाग
बैतालपच्चीसी
बकावलीसुमन
बैद्यजीवन
बैद्यमनोत्सव
बैद्यप्रिया
बालशिक्षा दो भाग
(भ)
भक्तमाल
भविष्यपुराण
भोजप्रबन्धसार
भाषाव्याकरण
भाषातत्वदीपिकाव्याकरण
भूगोलतत्व
भाषाचन्द्रोदय
भूगोलवर्णन
(म)
मार्कंण्डेयपुराण सटीक
माधवनिदान
मुहूर्तचक्रदीपिका
मुहूर्तचिन्तामणि सटीक

नामकिताब
मुहूर्तमार्तण्डसटीक
मुहूर्तगणपति
मुहूर्तदीपक
महाभारतदर्पण
तथाअलग २ उन्नीसों पर्व
महाभारत सबलसिंह
कोबनाई
मिश्रितमाहात्म्य
मनमोहनी
मनमोहन
महारामायण
मनुस्मृति
मंगलकोष
(य)
याज्ञवल्क्यस्मृति
योगवाशिष्ठ
युगलसंवादबोधप्रकाश
यमुनालहरी
युगलबिलास
(र)
रेखागणितदोनोंभाग
रघुवंशसंस्कृत व भाषा दो जिल्दोंमें
रामायण मूल तुलसी कृत
मोटेअक्षरकी
रामायणमूलतुलसीकृत
रामायणतुलसीकृत मूल छो० भैकांड
इत्यादि

इश्तहार

माहमार्च सन् १८८६ ई० से मुमालिक मग़रबी व शिमालीका बुकडिपो इलाहाबाद बयूरेटर बुकडिपो से मतबा मुंशीनवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ में आगया है इस डिपो में मग़रबी व शिमाली एजूकेशनलबुकडिपो के सिवाय और भी हर एक विद्या की किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबों की ख़रीदारी की कुल शर्तें क़ीमत के सहित इस छापेख़ाने की छपी हुई फ़ेहरिस्त में दर्ज हैं जो दरख्वास्त करनेपर हर एक चाहने वालों को बिला क़ीमत मिलसक्ती है जिन साहबों को इन किताबों का ख़रीद करना हो वे इस छापेख़ाने से ख़रीदकरें और फ़ेहरिस्त तलब करें॥

द० मनेजर अवध अख़बार
लखनऊ मुहल्ला हजरतगंज

—*—

महाभारत भाषा॥

द्रोणपर्व्व

जिसमें

द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, दुश्शासन, दुर्य्योधनादिवीरों से अर्जुन, भीमसेन और अभिमन्युआदि वीरोंका घोरयुद्ध और दुश्शासनके पुत्रके हाथसे चक्रव्यूह में अभिमन्युकी मृत्यु और अर्जुन के हाथसे जयद्रथ, भगदत्तादि सहस्रोंवीरोंका बध और धृष्टद्युम्नके हाथसे गुरु द्रोणाचार्य्यका बध इत्यादि मनोहर कथा बर्णन कीगई हैं॥

जिसको

भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशी नवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेखाने में छपा

नवम्बर सन् १८८८ ई०

पहलीबार ६००

प्रकट हो कि इस पुस्तककी मतबे ने अपने व्ययसे तर्जुमा कराया है इस से कापीराइटआदि सब हक़ूक़ छापाख़ाना मुन्शीनवलकिशोर लखनऊके हैं॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै बरन बहुधालोग इस बिचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदबताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोंयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० बर्षकेबीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेखानेमें छपीथी और क़ीमत बहुत सस्ती यानेवाजिबी १२) थे जैसाकारख़ानेकादस्तूरहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़े हरफों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसारअलग २ भीमिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व (२) सभापर्व (३) बनपर्व

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व(५)उद्योगपर्व(६) भीष्मपर्व (७) द्रोणपर्व

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व(९)शल्यपर्व(१०)सौप्तिकपर्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व(१२)स्त्रीपर्व(१३)शान्तिपर्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म

चौथेभागमें (१४) शान्तिपर्व दानधर्म्म व अश्वमेध (१५) आश्रमवासिकपर्व(१६)मूसलपर्व (१७)महाप्रस्थानपर्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व

महाभारत द्रोणपर्व्व भाषा का सूचीपत्र ॥

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
१	धृतराष्ट्र संजय संवाद	१	५
२	भीष्मजी के गिरजाने पर कर्णका क्रोधितहोकर पांडवोंके सन्मुख लड़ने को जाना	५	९
३	कर्णकाभीष्मसे वार्त्तालाप करना व अर्जुनकी प्रशंसा करके उससे लड़नेको आरूढ़होना	९	११
४	भीष्मका कर्णकी प्रशंसा करके युद्ध करनेकीआज्ञा देना व उसकायुद्धभूमिमें आना	११	१३
५	दुर्योधन का कर्णसे सेनापति बनाने के विषय मे सलाह पूछना व उसका द्रोणाचार्य्य के सेनापति बननेकी सलाहदेना	१३	१४
६	दुर्योधन का द्रोणाचार्य्य से सेनापति बननेके लिये प्रार्थना करना	१४	१५
७	द्रोणाचार्य्य का सेनापति बनकर पांडवोंसे घोरयुद्ध करके उनको व्याकुल करना	१५	२०
८	द्रोणाचार्य्यका बड़ी वीरताके साथ युद्धकरके धृष्टद्युम्नकेहाथसे माराजाना	२०	२२
९	द्रोणाचार्य्य को मरासुनकर धृतराष्ट्र का व्याकुल होकरपृथ्वीपर गिरजाना	२२	२९
१०	धृतराष्ट्रका संजयसे द्रोणाचार्य्य के मारेजाने का हाल पूछना	२९	३१
११	धृतराष्ट्रका संजयसे वासुदेवजी के दिव्यकर्मों का बर्णन करना	३१	३५
१२	संजयका धृतराष्ट्रसे द्रोणाचार्य्यके मारे जानेका संपूर्णहाल बर्णन करना	३५	३७
१३	संजयको धृतराष्ट्रसे जिस तरह कि द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिरकेपकड़नेकी प्रतिज्ञाकीथी उसका बर्णन	३८	४०
१४	द्रोणाचार्य्य का पाण्डवों की सेनामें भयको उत्पन्न करना और सेनाको भस्म करतेहुये घूमना	४०	४६
१५	धृतराष्ट्रका संजयसेअतीर्थानि और अभिमन्यु के युद्धकाहाल पूछना और संजयका बर्णन करना	४६	४९
१६	संजयका धृतराष्ट्रसे यह बर्णन करना कि अकेले पराक्रमी वृषसेन ने आपकी सेनाको पराजितदेख केअस्त्रोंकी मायासेधारण किया	४९	५३
१७	द्रोणाचार्यका दुर्योधन से कहनाकि अर्जुन और श्री		

अध्याय	विषय	पृष्ठ	पृष्ठतक
	कृष्णजीअजेयहैं इनकेजी		
	वतेयुधिष्ठिर नहींपकड़ेजा		
	सक्ते तब त्रिगर्त देश के		
	राजाका दुर्योधनसेकहना		
	कि मैं युधिष्ठिरको पकड़		
	लाऊंगा	५३	५६
१८	संजयका धृतराष्ट्र से कह-		
	ना कि अर्जुन के साथ		
	त्रिगर्त देशियों का युद्ध		
	और अर्जुन से उनमें से		
	कुछलोगोंका माराजाना	५६	५८
१९	अर्जुन और संसप्तकों का		
	घोर युद्धहोना	५९	६१
२०	द्रोणाचार्य्य का संसप्तकों		
	और अर्जुन से युद्धप्रारम्भ		
	कराकर आप युधिष्ठिरके		
	पकड़नेलिये उनकीतरफ़		
	गये और यहां अर्जुन से		
	महाघोर युद्धहुआ	६१	६६
२१	द्रोणाचार्य्य और सत्य		
	जित्के युद्धमें सत्यजित्		
	कानाशहोना और सेना		
	कातितिरबितिरहोजाना	६६	७१
२२	धृतराष्ट्र कासंजयसे पूछ		
	ना कि द्रोणाचार्य्य से		
	पीड़ित कौन २ लोगफिर		
	युद्धभूमि में प्राप्तहुये यह		
	सुनकर संजयका सम्पूर्ण		
	हालबर्णन करना	७१	७३
२३	धृतराष्ट्र का संजय से		
	भीमादि के रथों के		
	चिह्नों का पूछना और		

अध्याय	विषय	पृष्ठ	पृष्ठतक
	संजय का बर्णन करना	७३	८०
२४	धृतराष्ट्र का संजयसेपूछना		
	कि ऐसे पराक्रमी द्रोणा		
	चार्य्यजी किसप्रकार धृष्ट		
	द्युम्न के हाथसेमारेगये	८०	८२
२५	द्रोणाचार्य्य का पाण्डवों		
	के बाणों से आच्छादित		
	होकर मृतक के तुल्य		
	होजाना	८२	८६
२६	धृतराष्ट्र का संजयसेपूछना		
	कि किसप्रकार पाण्डवों		
	और संसप्तकों और मेरे		
	पुत्रोंसे युद्धहुआ यह सब		
	संजयका सुनाना	८६	९१
२७	संजयका धृतराष्ट्र सेअर्जुन		
	की बीरता बर्णन करना	९२	९४
२८	अर्जुनका सुशर्माके भाई		
	को यमलोक पठाना और		
	भगदत्त से महाघोर युद्ध		
	होना	९४	९६
२९	अर्जुन और भगदत्त के		
	घोरयुद्धमें अर्जुनके हाथ		
	से भगदत्त का बध होना	९६	१००
३०	अर्जुनका गान्धार के पुत्र		
	वृषक और अचल नामी		
	दोनों पुत्रोंको मारना	१००	१०३
३१	अश्वत्थामाकेहाथसेराजा		
	नीलका माराजाना और		
	पांडवोंकी सेनाका व्याकु		
	ल होना	१०३	१०५
३२	अर्जुनादि पांडवोंकाकर्णा		
	दिकोंसेमहाघोरयुद्धकरना	१०५	११०

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
३३	दुर्योधनका द्रोणाचार्य्य से कहना कि आपने युधिष्ठिरको समय पाकर भी नहीं पकड़ा तब द्रोणाचार्य्यने कहा कि हम उद्योग करेंगे	१११	११३
३४	पांडवों और कौरवों का युद्धहोना और संजय का धृतराष्ट्र से कहना कि श्रीकृष्णजीसमेत पांचोंपांडव देवताओंसेभीबिजयकरने को कठिनहैं	११३	११५
३५	युधिष्ठिरका अभिमन्युसे कहनाकि तुम द्रोणाचार्यके सन्मुखचक्रव्यूहमेंयुद्धकरो पीछे२हमलोग रक्षाकरेंगे	११५	११७
३६	द्रोणाचार्य्य और अभिमन्युका चक्रव्यूह में घोर युद्धहोना	११७	१२०
३७	अभिमन्युका द्रोणाचार्यादिकों से युद्धकरना और शल्य को घायल करना	१२१	१२३
३८	अभिमन्युकेहाथसेशल्यके भाईकाबधहोनाऔर कौरवोंकी सेनाका भागजाना	१२३	१२५
३९	अभिमन्यु और दुश्शासनादि कौरवोंसे घोरयुद्धहोनाऔर कर्णका बाहुलोक और दुश्शासनादिकों से कहना कि द्रोणाचार्य्यजी शिष्यका पक्षकरके अभिमन्युको न मारेंगे	१२५	१२७
४०	अभिमन्यु का कर्णादिकों से घोरयुद्धहोना	१२७	१३०
४१	अभिमन्यु का कौरवों से घोर युद्धकरना और अभिमन्युके हाथसेकर्णकेभाई का बधहोना	१३०	१३२
४२	अभिमन्यु और कौरवोंका महायुद्ध होना	१३२	१३३
४३	धृतराष्ट्र का संजय से सिंधदेशके राजाका पराक्रम पूंछना औरसंजयका उनसे कहना	१३४	१३५
४४	अभिमन्युके हाथसे बिशातपका माराजाना	१३५	१३७
४५	अभिमन्युके हाथसे मद्रदेशके राजा रुक्मरथ के पुत्रका माराजाना और बहुतसी फौजका नाश और दुर्योधनकाभी घायल होके मुख फेरजाना	१३७	१३९
४६	द्रोणाचार्य्य, कर्ण, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामादि बीरों का अभिमन्यु के युद्धसे हटजाना	१३९	१४१
४७	अभिमन्युके हाथसे वृहद्बलका माराजाना	१४१	१४३
४८	कर्ण और अभिमन्युका घोर युद्धहोना	१४३	१४९
४९	दुश्शासनकेपुत्रके हाथ से महाबली अभिमन्यु का बधहोना और कौरवोंको आनन्द और पांडवों को		

अध्याय	विषय	पृष्ठम्	पुस्तक
	शोकहीना	१४८	१४९
५०	पांडवोंका मृतक अभिमन्युका शोच और सायंकाल के समय वैतरणी नदीके समान रणभूमिसे ढेरोंमें जाना	१४९	१५०
५१	चौथेदिनकेयुद्धका प्रारंभ युधिष्ठिरादि पाण्डवों का अभिमन्युकोबीरताकहर के शोच करना	१५१	१५२
५२	व्यासजी का युधिष्ठिर के पास आकर नारदजी का कहाहुआ राजा अकंपन के पुत्रशोकका इतिहास कहना	१५२	१५५
५३	रुद्र ब्रह्मा और मृत्युका वार्त्तालाप नारद कथित वर्णन	१५६	१५७
५४	व्यासजीका नारद कथित मृत्युकीतपस्या और संवादसे कुछ २ युधिष्ठिर का शोक शान्तहोना	१५७	१६२
५५	राजासंजय की कन्या के विवाहके अभिलाषीनारद और पर्वतऋषिका परस्पर शापऔरनारदकेबरदानसे राजाको सुवर्णष्ठीव नाम जोकि सुवर्णकी खानिहो था उसका उत्पन्नहोना और लालचवश चोरोंके हाथसे बधहोकर राजाको अत्यन्त शोकहोना पुनि		

अध्याय	विषय	पृष्ठम्	पुस्तक
	नारदद्वारा शोक शान्ति वर्णन	१६०	१६१
५६	नारदकथित राजासुहोत्र की मृत्युद्वारा कुछ युधिष्ठिरका शोकशान्त होना	१६१	१६०
५७	फिर पौरव की मृत्युका कथन	१६०	१६८
५८	औशीनरके पुत्रशिबीकी मृत्युका वर्णन	१६८	१६९
५९	पुनि दशरथके पुत्र रामचन्द्रजीके शरीरत्याग का वर्णन	१६९	१७१
६०	नारद और संजयराजाके संवादमें राजा भगीरथकी मृत्युका वर्णन	१७१	१७३
६१	फिर अलीलके पुत्रदिलीप की मृत्युका व्याख्यान	१७३	१७४
६२	युवनाश्वकेपुत्र मान्धाता की मृत्युका वर्णन	१७४	१७५
६३	पुनिनहुषके पुत्र ययाति की मृत्युहोनी	१७५	१७६
६४	नाभागके पुत्र अम्बरीष की मृत्युका वर्णन	१७६	१७७
६५	फिर राजाशशिबिन्दु की मृत्युका व्याख्यान	१७७	१७८
६६	अमूर्तरयकी मृत्युहोनी	१७८	१८०
६७	सांकृति रन्तिदेवकेमृतक होनेका व्याख्यान	१८०	१८१
६८	पुनि दुष्यन्तके पुत्रभरत के मृतक होनेका वर्णन	१८१	१८३
६९	वेणुके पुत्र राजा पृथुकी मृत्युका व्याख्यान	१८३	१८५

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
७०	फिरजमदग्निके पुत्र परशु रामकी मृत्युका वर्णन	१८५	१८७
७१	व्यासजीका युधिष्ठिर को समझाके उसी स्थानपर गुप्त होजाना	१८७	१८९
७२	अर्जुनकाभी युद्धसे डेरोंमें आना और अशुभशकुनों से अभिमन्युका बधजान के अत्यन्त शोक करना	१९०	१९५
७३	युधिष्ठिरका अर्जुनसे अभि मन्यु के मारेजाने का संपूर्ण हाल कहना यह सुनकर अर्जुनका जय द्रथ के कल्हमारने की प्रतिज्ञा करनाकि सूर्यास्त के पहले मारूंगा नहींतो अग्निमें प्रवेश करूंगा	१९९	१९९
७४	जयद्रथका अपने मारने का प्रणसुनके दुर्योधनादि और द्रोणाचार्य्यजी के पास रक्षामांगने जाना और उनलोगोंका समझा ना वर्णन	२००	२०१
७५	श्रीकृष्णजीका अर्जुन से कहना कि तुमने बिना हमारी और भाइयोंकी भी सलाहके जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञाकी है यहप्रण ठीकनहींहै	२०२	२०४
७६	तब रात्रिहीमें अर्जुन का अपनीबीरता वर्णनकरना कि आप शीघ्ररथ तैयार		

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
	करायेंगे मैं अवश्यही क ल्ह जयद्रथको मारूंगा	२०५	२०६
७७	श्रीकृष्णजीका पुत्रशोकसे पीड़ित सुभद्रा को बधू समेत समझाना	२०६	२०८
७८	सुभद्रा द्रौपदी उत्तराआ दि स्त्रियों का अत्यन्त बिलाप करना और श्री कृष्णजीका समझाना	२०८	२११
७९	श्रीकृष्णजीका दारुक से कहना कि बड़ी सावधा नीसे आज चलो आज अर्जुनजयद्रथको सूर्यास्त के पहलेही मारडालेंगे	२११	२१४
८०	श्रीकृष्णजी और अर्जुन जीका पाशुपतअस्त्र जय द्रथके मारनेकेलियेपानेको शिवजीकी स्तुति करना	२१५	२१६
८१	स्तुतिसे प्रसन्नहोकर शिव जीका अर्जुनको पाशुपत अस्त्रदेनावर्णन	२१६	२२१
८२	श्रीकृष्ण और दारुक को बातचीतहीमें रात्रि बिता ना और प्रातःकाल युधि ष्ठिरको मागधादिकों से जगाना वर्णन	२२१	२२३
८३	युधिष्ठिर का श्रीकृष्णसे अर्जुनकी प्रतिज्ञा पूर्णहोने के लिये विनय करना और श्रीकृष्णजीका कह ना कि वही युक्तिहोगी जिसमें अर्जुन अवश्य		

अध्याय	विषय	पृष्ठ सं	पृष्ठांक
	जयद्रथको मारें	२२३	२२६
८४	अर्जुनादिको युद्धमें शुभ शकुन औरकौरवोंको कुशकुन होना	२२६	२२८
८५	धृतराष्ट्रका संजयसे पूंछना कि अभिमन्युके मारेजाने में पांडवों ने क्या किया और मेरेपुत्रोंने किसविधि से युद्धकिया	२२६	२३२
८६	संजय का उत्तर देना कि आपही ने बड़ा अन्याय कियाथा जिसका फलभोगते हो पांडवलोग बड़े धर्मनिष्ठ थे	२३३	२३४
८७	द्रोणाचार्य्यजी का शकट व्यूह बनाना और दुर्योधनादिकोंको सेना समेत तैयारहोके अत्यन्त प्रसन्न होना	२३४	२३६
८८	दोनों सेनाओंका तैयार होके शंखध्वनि करना और उसशब्द से कौरवों को भयभीत होना	२३७	२३८
८९	पाण्डवों और कौरवों के घोरयुद्धमें कौरवोंको व्याकुल होना	२३६	२४१
९०	अर्जुन और दुश्शासनका घोरयुद्ध होना	२४१	२४३
९१	अर्जुनका जयद्रथकेमारने कोलिये चलना परन्तु कौरव वीरोंका रोकना	२४३	२४६
९२	अर्जुनकाद्रोणाचार्य्य,कृतवर्मा, श्रुतायुध और सुदक्षिणसे घोरयुद्ध और अर्जुनके हाथसे सुदक्षिण और श्रुतायुध को मृत्यु होनी	२४६	२५२
९३	अर्जुन के हाथसे श्रुतायु और अच्युतायुआदिबीरों कीमृत्यु और उन्हींके पुत्र नियतायु और दीर्घायुऔर भरतबंशी अम्बष्ठका बध	२५२	२५७
९४	दुर्योधनका द्रोणाचार्य्यसे जयद्रथके बचानेके लिये कहना तब गुरूनेकहा कि अर्जुन अजेय है आपहो इस स्वर्णमयी कवच बांधकर लड़िये तब दुर्योधन गुरुकी आज्ञानुसार कवच धारकर तैयारहुये	२५७	२६३
९५	कौरवपांडवोंकाघोरयुद्धहो०	२६३	२६६
९६	कौरव और पांडवोंके युद्धमें नकुल सहदेवसे शकुनी को पीड़ित होना और घटोत्कचसे अलायुधऔर विविंशतिकोचित्रसेनऔर विकर्णको भीमसेनसे युद्ध हुआ	२६६	२६८
९७	कौरव पांडववीरोंके घोर युद्धमें सात्यकीके हाथसे द्रोणाचार्य्य को पीड़ित होना	२६६	२७१
९८	द्रोणाचार्य्य और सात्यकीका महाघोर युद्धहोना	२७१	२७५

अध्याय	विषय	पृष्ठ	पुस्तक
९९	अर्जुनके हाथसे अनुबिन्द का बध और कृष्णजीके कहनेसे अर्जुनका घोड़ों के जलपीनेकेलिये बाणों से पृथ्वीको फोड़के जल निकालनातिसमे कृष्णजी का अत्यन्त प्रसन्न होना	२७५	२७९
१००	अर्जुनका बाणोंसे महल भी बनाना और जयद्रथ और दुर्योधनादि बीरोंसे घोर युद्ध होना	२८०	२८२
१०१	जयद्रथ और अर्जुनका घोरयुद्ध होना	२८२	२८५
१०२	अर्जुन और दुर्योधन का घोरयुद्ध होना	२८६	२८८
१०३	अर्जुन का दुर्योधन और जयद्रथादि बीरोंसे महा युद्ध करना	२८८	२९१
१०४	अर्जुनका अश्वत्थामादि बीरोंसे घोरयुद्ध करना	२९२	२९४
१०५	अर्जुनका दुर्योधनादि रा जाओंसे महासंग्रामकरना	२९४	२९७
१०६	पाण्डव और कौरवबीरों का महाघोर युद्ध होना	२९७	३००
१०७	सात्यकी का कौरवों की सेनाको ब्याकुल करना	३००	३०३
१०८	भीमसेन और अलम्बुष राक्षसकामहासंग्रामहोना	३०३	३०६
१०९	घटोत्कच और अलम्बुष का महाघोर युद्ध और घटोत्कचके हाथसे अल म्बुषकी मृत्यु	३०६	३०८
११०	सात्यकी और द्रोणाचार्य का घोरयुद्ध होना	३०९	३१५
१११	पांडव युधिष्ठिर सात्यकी को लड़नेकेलिये समझाना	३१५	३१९
११२	युधिष्ठिर और भीमसेनके समझानेपर सात्यकीका कौरवोंकी सेनासे युद्धके लिये चलना	३१९	३२५
११३	सात्यकी का द्रोणाचार्य कृतबर्मासे युद्धकरना और कृतबर्माके सारथीकोमार डालना	३२५	३२९
११४	कृतबर्माके बाणोंसे सम्पूर्ण पांडव सेनाको ब्याकुलहो कर पलट आना	३२९	३३९
११५	सात्यकीका कौरव बीरोंसे घोरयुद्ध करना और सात्य कीहीके हाथसे जलसिंधु का माराजाना	३३९	३४०
११६	सात्यकीका कृतबर्मा से महासंग्राम होना	३४१	३४५
११७	द्रोणाचार्य और सात्यकी का घोर युद्धहोना	३४५	३४६
११८	सात्यकी और कौरव बीरों से युद्ध और सात्यकीके हाथसे राजकुमार सुदर्शन का सारथी समेत मारा जाना	३४६	३४८
११९	सात्यकीका फिर कौरवों की सेनामें जाकर सबको व्याकुल करना इनके इस चरित्रको देखकर शूरोंने		

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
	बड़ी प्रशंसा की	३४८	३५२
१२०	सात्यकी और कौरवोंकी सेनाका घोरयुद्ध होना और सात्यकी से कौरवों की सेना का हटजाना वर्णन	३५२	३५५
१२१	सात्यकी और दुश्शासन का महासंग्राम होना	३५५	३५६
१२२	द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्न के घोरयुद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे धृष्टद्युम्न के सारथीका नाशहोना	३५६	३६४
१२३	सात्यकी और धृष्टद्युम्न के घोरयुद्धमें सात्यकीकी बिजयहोनी	६६४	३६०
१२४	सात्यकी अर्जुनादि और द्रोणाचार्यादिकोंसे महा संग्रामहोना	३६०	३७०
१२५	द्रोणाचार्य बृहत्क्षत्र का युद्ध और द्राणाचार्य के हाथसे धृष्टकेतु और उसी के पुत्रका बधहोना	३७०	३७५
१२६	युधिष्ठिरका भीमसेन से कहना कि सात्यकी और अर्जुनका खोजकरो	३७६	३७६
१२७	युधिष्ठिर की आज्ञानुसार भीमसेनका अर्जुन और सात्यकीके खोजमेंजाकर भीमसेन के हाथसे कई दुर्योधनके विन्दु अनुविन्दु और सुवर्मानाम पुत्रोंका माराजाना	३७६	३८४
१२८	भीससेनका द्रोणाचार्य्यसे और सात्यकीका कृतवर्मा से युद्ध और भीमसेन का पश्चात्तापकिमैंकबसूर्य्यास्त के पहले अर्जुनके हाथ से जयद्रथ का मराहुआ देखूंगा	३८४	३८८
१२९	भीमसेन और कर्णकेयुद्ध में भीमसेनकी बिजयहोने से पांडवोंको हर्षके बाजे बजाना और कौरवों को शोच करना	३८८	३९१
१३०	दुर्योधनका द्रोणाचार्य्यसे कहना कि आपको वह यत्नकरनो योग्यहै जिसमें जयद्रथकी रक्षाहो आप की पराजयको लोगहँसते हैं ऐसाकहकर युधामन्यु से घोरयुद्ध करना	३९१	३९४
१३१	कर्ण और भीमसेन का महायुद्धहोना तिसमेंफिर भी कर्णहीकी हारहुई	३९४	३९८
१३२	भीमसेन और कर्णका परस्पर युद्धहोना	३९८	४०१
१३३	कर्ण और भीमसेन का अत्यन्त युद्धहोना	४०१	४०४
१३४	भीमसेनके हाथसे दुर्मुख कीमृत्यु और कर्णकेसाथ घोरयुद्ध होनेसे कर्णका भागना वर्णन	४०४	४०६
१३५	कर्णको भगाहुआ जान कर धृतराष्ट्र के पांचपुत्रों		

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
	भीमसेनसे लड़ना भीमने घोड़े और सारथियोंसमेत उन पांचोंको यमलोक पठाया फिर कर्णका आके भीमसेनसे घोरयुद्ध होना	४०६	४०६
१३६	कर्ण और भीमसन का अत्यन्त युद्ध होना	४०६	४१२
१३७	कर्ण और भीमसेनका युद्ध और संजय का धृतराष्ट्र से भीमसेन की बीरता का बर्णन कि उसबैरको स्मरण करके जो कि तुम्हारे पुत्रोंने द्रौपदी के बस्त्रादि खींचे इसीसे आपको पुत्रों को संहार कररहाहै	४१२	४१५
१३८	कर्ण और भीमसेनकाघोर युद्ध होना	४१६	४१७
१३९	भीमसेन और कर्णका युद्ध और अर्जुन और अश्वत्थामाकाभी घोरयुद्ध होना	४१७	४२५
१४०	सात्यकी और अलंबुष का महायुद्ध और सात्यकीके हाथसे अलंबुषकी सारथी समेत मृत्युहोनो	४२५	४२७
१४१	सत्यकीका त्रिगर्तदेशियों से युद्धहोना	४२८	४३०
१४२	भूरिश्रवाके चरणोंसे सात्यकीका घायलहोना और फिरउसने सात्यकीकेबाल पकड़के खींचके खडगसे शिर काटनाचाहा यहदेख के अर्जुनने बाणसे भूरि श्रवाकी भुजा काटली	४३०	४३५
१४३	भुजाकटीहुईदेखकर भूरिश्रवा और कौरवोंने अर्जुन से कहा कि तुमने यह अधर्म कियाहै तब अर्जुन ने कहा कि आपलोगों ने अभिमन्युके मारनेमें कौन सा धर्म्म कियाथा फिर सात्यकी ने भूरिश्रवा का शिरकाटके स्वर्गलोक भेज दिया	४३५	४४०
१४४	संजयका धृतराष्ट्र से सोमदत्तकाशिवसे बरदानपाने काहालकहनाकि उन्होंने शिवजीको प्रसन्न करकेयह बरपाया कि मेरापुत्रसात्यकीको गिराकर चरणों से घायलकरे इसीसे भूरिश्रवा ने यहकाम कियाथा	४४०	४४२
१४५	अर्जुनकाअश्वत्थामा और कर्णादिकोंसे घोरयुद्ध करके कौरवीय सेनाको बहुत संहार किया	४४२	४४९
१४६	अर्जुनका सब कौरव वीरों से युद्धकर जयद्रथके शिर को काटकर उसके बापके गोदमें गिराना जोकि जय कररहाथा जब उसकाबाप उठा तो शिरपृथ्वीपर गिर पड़ा और उसके पिताबृद्धसत्रके शिरके भी सौटूक होगये क्योंकि बृद्धसत्रने		

अध्याय	विषय	पृष्ठांक	पुस्तकांक
	बरदान शिवजी से लिया था कि जिससे मेरेपुत्रका शिर गिरे उसके सौटूक होजावें	४४६	४५८
१४७	कर्णऔर सात्यकीकामहा संग्राम होना	४५८	४६४
१४८	भीमसेनको कर्णनेदुर्वाक्य कहा था तब अर्जुन ने क्रोधित होकर कर्ण को बहुत धिक्कार दिया और कहा कि आपपुत्र सहित समरमें अपनाको अब मृत कहीसमझिये	४६४	४६६
१४९	युधिष्ठिरका बहुत प्रकारसे श्रीकृष्णजीकीप्रशंसाकरना कि यह विजय आप हीकी कृपासेहुईहै फिर सात्यकी और भीमसेन से मिलकर आनन्दाश्रुओं को छोड़ा	१६६	४७३
१५०	दुर्योधनका द्रोणाचार्य्यके पास आकर कहनाकि मैं महापापीहूं कि मेरेही निमित्त सबराजा नाश हुये अब मैं अवश्य पांडवोंको मारकर उनसे उऋणहूंगा	४७३	४७५
१५१	धृतराष्ट्रका संजयसे पूछना कि इनसबके मारेजानेपर तुम्हारा चितकैसा हुआ-फिर दुर्योधनके वार्तालाप से द्रोणाचार्य्य को फिर युद्धार्थ तैयारहोना वर्णन	४७५	४७८
१५२	दुर्योधन और कर्णकावार्ता		

अध्याय	विषय	पृष्ठांक	पुस्तकांक
	लापहोना	४७८	४८१
१५३	पांडवों और कौरवों का महा संग्रामहोना	४८१	४८३
१५४	द्रोणाचार्य्य और सृंजियों का महायुद्ध होना और कौरवों को महा अशुभ अशकुन होना	४८४	४८६
१५५	युद्धमें द्रोणाचार्य्यके हाथ स धृष्टद्युम्नके पुत्रोंका के कर्योंसमेत बध फिर शिवी के हाथसे द्रोणाचार्य्य के सारथीकानाश और द्रोणाचार्य्यसे शिवीकाबध और भीमसेनके हाथसे कलिंग के पुत्र और ध्रुवका बध	४८६	४८६
१५६	सोमदत्त और सात्यकीका फिर द्रोणाचार्य्य और अर्जुनका और अश्वत्थामा सात्यकीका और घटोत्कच और अश्वत्थामादि वीरोंका युद्ध और घटोत्कचके पुत्र अंजन परवाको अश्वत्थामासे मृत्यु और द्रुपदके पुत्र सुरथ नामक और द्रौपदीके पुत्र शत्रुजय, बलानीक, जयानीक, और जयासू नामक और राजा श्रुतायुध, हेममालो, वृषध्र, चन्द्रसेन, कुन्तभोज के पुत्रोंको भी अश्वत्थामाहीसे मृत्युहोनो	४९०	५०३
१५७	द्रोणाचार्य्य व युधिष्ठिर		

अध्याय	विषय	पृष्ठांक	पृष्ठांक
	का युद्ध	५०३	५०६
१५८	द्रोण व कृपाचार्य्यका युद्ध के निमित्त परस्पर वार्त्ता खण्डन करना	५०६	५११
१५९	द्रोण व अर्जुन का युद्ध होना	५११	५१७
१६०	धृष्टद्युम्न व अश्वत्थामा का युद्ध	५१८	५२२
१६१	संकुल युद्ध वर्णन	५२२	५२३
१६२	घोररात्रि युद्ध वर्णन	५२३	५२७
१६३	दीपोद्योतन युद्ध वर्णन	५२७	५३०
१६४	संकुल युद्ध वर्णन	५३०	५३३
१६५	कृतवर्मा करके युधिष्ठिर का युद्धसे हटजाना	५३३	५३५
१६६	दुर्योधन व भीमसेन का युद्ध	५३५	५४०
१६७	घोरयुद्ध वर्णन	५४०	५४१
१६८	अर्जुन करके कौरवों की सेनाका घायल होना	५४१	५४३
१६९	घोररात्रि युद्ध वर्णन	५४३	५४६
१७०	घोररात्रि संकुल युद्धवर्णन	५४६	५४९
१७१	महाघोर युद्ध वर्णन	५४९	५५४
१७२	शकुनी व अर्जुनका युद्ध वर्णन	५५४	५५८
१७३	कौरवों करके पांडवोंकी सेनाका भागना	५५८	५६०
१७४	पांडवोंका कर्णसे लड़नेके अर्थ घटोत्कचको भेजना	५६०	५६५
१७५	अलम्बुष वध वर्णन	५६५	५६८
१७६	धृतराष्ट्रका संजयसेद्रोण व घटोत्कच के युद्धका हाल पूछना व उसका वर्णन		

अध्याय	विषय	पृष्ठांक	पृष्ठांक
	करना	५६८	५७५
१७७	अलायुध व घटोत्कचका युद्ध	५७६	५८०
१७८	अलायुध का भीमसेन व घटोत्कचसे युद्धकरना	५८०	५८०
१७९	घटोत्कचके हाथसे अलायुधका माराजाना	५८१	५८३
१८०	इन्द्रकी दीहुई शक्तिकरके कर्णका घटोत्कचको मारना	५८३	५८९
१८१	श्रीकृष्ण व अर्जुनका कर्ण से लड़नेकेनिमित्त सलाह करना	५८९	५९१
१८२	श्रीकृष्णजीका अर्जुन से जरासन्ध व शिशुपाल आदिक के मारेजानेका कारण कहना	५९१	५९४
१८३	धृतराष्ट्र व संजय संवाद	५९४	५९७
१८४	युधिष्ठिर प्रति व्यासशिक्षा वर्णन	५९७	६०२
१८५	दोनोंसेनाओं को रात्रिमें युद्धकरते हुये अमितदेखकर अर्जुनका सोनेकेलिये दोनोंसेनाओंकोआज्ञादेना	६०२	६०५
१८६	दुर्योधन व द्रोणाचार्य्य का वार्त्तालाप करना	६०५	६०८
१८७	द्रोणाचार्य्यका द्रुपद व उसके तीनोंपौत्रोंको मारना	६०८	६१२
१८८	दोनोंओर की सेनाओं में बड़ा भयंकर युद्धहोना	६१२	६१६
१८९	अर्जुन व द्रोणाचार्य्य का महाभयंकर युद्धहोना	६१६	६२०

अध्याय	विषय	पृष्ठम	पृष्ठतक
१९७	संकुलयुद्ध वर्णन	६२०	६२४
१९१	श्रीकृष्णजीके सम्मतसेभी मसेनका अश्वत्थामानाम हाथी को मारना और द्रोणाचार्य्य के सन्मुख पुकारकर कहना	६२४	६२८
१९२	द्रोणाचार्य्यका पुत्रकोमरा हुआ सुनकर युधिष्ठिर से पूछना व युधिष्ठिरके मिथ्याकहने पर द्रोणाचार्य्य का पुत्रके शोकमें व्याकुल होना	६२९	६३३
१९३	द्रोणवध वर्णन	६३४	६३७
१९४	द्रोणाचार्य्य के मारेजाने पर कौरवोंकी सेना का भयभीतहोकरभागना व अश्वत्थामाका कृपाचार्य से इसका कारण पूछना	६३८	६४२
१९५	धृतराष्ट्रका संजयसे पूछना कि अश्वत्थामाने पिताके मारेजाने पर क्या कहा	६४२	६४३
१९६	अश्वत्थामाका पिता के शोकसे रोदनकरना और पांडवोंके मारनेकी प्रतिज्ञा करना	६४४	६४७
१९७	द्रोणाचार्य्य के मारेजाने पर अर्जुनका शोककरना और युधिष्ठिरको मिथ्या बोलनेसे निन्दाकरना	६४७	६५१
१९८	अर्जुनको युद्धकरनेकेलिये भीमसेन व धृष्टद्युम्न का समझाना	६५१	६५५
१९९	सात्यकीका धृष्टद्युम्न के ऊपर क्रोधित होकरमारने कोदौड़ना व भीमसेन का पकड़लेना	६५५	६५९
२००	अश्वत्थामाका पांडवों के ऊपरनारायणास्त्र छोड़ना व उसकरके पाण्डवी सेना को व्याकुल देखकर श्री कृष्णजी का सबसे अस्त्र त्यागने व युद्धकरनेसे मना करना व उस अस्त्र करके भीमसेनका ढकजाना	६५९	६६४
२०१	अश्वत्थामा व भीमसेन का महा भयानक युद्ध करना व अन्तमें अश्वत्थामा करके पाण्डवों की सेनाका भागना	६६४	६७२
२०२	अश्वत्थामा अपने चलाये हुये बाणको निष्फल देख कर व्यासजी से इसका कारण पूछना व उनके समझाने से श्रीकृष्ण व अर्जुनकोनारायणरूप जान कर उनको श्रेष्ठ मानना व व्यासजीको दण्डवत्करके युद्धको बन्द करना	६७२	६८०
२०३	धृतराष्ट्रका संजयसे पूछना कि द्रोणाचार्य्य के मारे जाने उपरांत मेरे पुत्र व पांडवोंने क्या किया व संजय का सबहाल बर्णन करना	६८०	६९१

अथभाषामहाभारतेद्रोणपर्वणि

मङ्गलाचरणम्

—※—

श्लोक

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराममस्त कमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ यामातिवीणामिववादयन्ती महाकवी नांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रविम्बा ध्येयःप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पाण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्म्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्देवादरा यणम् ३ विद्याविदग्धे सरभूषणेन विभूष्यतेभूतलभव्ययेन ॥ तंशारदालब्धवर प्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम्४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणा भिधानः ॥ कथानुगंमंजुलद्रोणपर्व्व भाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथद्रोणपर्वणिभाषावार्त्तिकप्रारंभः ॥

श्रीनारायणजीको और नरोत्तम नररूप को और श्रीसरस्वती देवीको नमस्कार करके जयनाम इतिहासको वर्णन करताहूं जनमे जय बोले कि हे ब्रह्मऋषि उसबुद्धि बल तेजके निधान अतुल पराक्रमी देवव्रत भीष्मजीको पांचालदेशी शिखंडीके हाथसे मरा हुआ सुनकर १ महाशोकाकुल नेत्रवाले बड़े पराक्रमी राजा धृतराष्ट्रने उक्त प्रभाववाले अपने पिताके मरनेपर क्याकिया २ और हेतपो-

धन भगवन् उसका पुत्र दुर्योधन जोकि भीष्म द्रोणाचार्य्य आदिक रथियोंकी सहायतासे बड़े धनुर्द्धर पांडवोंको विजय करके राज्य को चाहताथा ३ उसने सब धनुषधारियोंमें विजयरूप भीष्मजी के मरनेपर सब कौरव लोगों समेत जो कुछ मनकिया वह सब आप मुझसेबर्णनकीजिये४ बैशंपायनजी बोलेकिपितामहको मृतकसुनकर चिन्ता और शोकसे व्याकुल कौरवोंके राजा धृतराष्ट्रने शान्तीको नहींपाया ५ तदनन्तर उसराजाके दुःख और शोचको बारंबार शोचतेहुये अत्यंत शुद्ध अन्तष्करणवाले संजय युद्धभूमिसे लौटकर आये ६ हे महाराज अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्र ने उस युद्धभूमि के डेरोंमेंसे हस्तिनापुर में आयेहुये संजय से भी पूछा ७ जब संजयने भी उन के मरने का सब वृत्तान्त कहा उसको सुनकर अत्यन्त अप्रसन्न और व्याकुल चित्त धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंकी बिजयको चाहताहुआ महाबेदना युक्त रोगी के समान रुदन करनेलगा ८ और रोदनकरने कीही दशा में संजयसे यहबचन बोलाकि हेतात महाभयानक कर्म करनेवाले मेरेपिता महात्मा भीष्मजीके बड़े २ शोक बिचारोंको करके कालसे प्रेरित कौरव लोगोंने फिर क्या काम किया ९ अर्थात् उस दुर्जय शूरबीर महात्मा भीष्मके मरनेपर शोक समुद्रमें डूबेहुये कौरवोंने कौनसा काम किया १० और हे संजय महात्मा पांडवोंकी उस तीनोंलोकों को भयभीत करने वाली ११ असंख्य सेनाके बड़े २ राजालोगोंने भी उसदेवब्रत भीष्जीके मरने पर जो जो कामकिया उस सबकोभी मुझसे बर्णनकरो १२ संजय बोले कि हेराजा देवब्रत भीष्मजीके इसरीतिसे मरनेपर आपकेपुत्रों ने जो २ कामकिये उस सब वृत्तान्तको तुम अपने चित्तको सावधान करके मुझसे सुनो १३ हेराजा तब सत्यपराक्रमी भीष्मजीके मरनेपर आपकेपुत्रोंने और पांडवोंने पृथक २ बड़ा शोचकिया१४ वहसब लोग क्षत्रीधर्मको देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर आश्चर्य्य युक्तहुये हे नरोत्तम फिर उन अपने धर्मकी निन्दा करनेवाले लोगों ने महात्मा भीष्मजीको दंडवत् करके १५ गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे

उस अमितकर्मी भीष्मजीकेअर्थ उपधान समेत शयनकल्पितक्रिया अर्थात् उक्त असंख्य बाणोंसेही शरीरको आच्छादित करके तकिये समेत शयनके लिये शरशय्याको बनाया १६ फिर उनगांगेयभीष्मजीकी रक्षा करके परस्पर में वार्तालाप करते हुये उनकी प्रतिष्ठा पूर्वक परिक्रमा करके १७ क्रोधसे अत्यन्त रक्तनेत्र कालसे प्रेरित क्षत्रीलोग परस्परमें मिलकर फिर युद्ध करने के निमित्त उपस्थित हुये १८ तदनन्तर आपके पुत्रोंकी और पांडवोंकी सेना तूरी और भेरी आदि बाजों समेत चली १९ हे राजेन्द्र दिनके अन्तमें गंगा पुत्रके गिरने पर क्रोधके आधीन कालसे व्यथित चित्त २० भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ आपके पुत्रलोग महात्मा भीष्मजीके बड़ेशुभ और हितकारी बचनोंको तिरस्कार करके शस्त्रोंको उठा २ कर बड़ी शीघ्रतासे चले २१ आपके पुत्रके मोहसे और भीष्मजीके मरणसे सबराजाओंसमेत बहुत कौरवलोग कालसे प्रेरणा कियेगये २२ जैसे कि हिंस्रजीवों से व्याप्त बन में रखवालिये से रहित बकरी और भेड़ें व्याकुल होतीहैं उसी प्रकारभीष्मजीके बिना अरक्षित और निराशायुक्त वह सबलोगभी अत्यत व्याकुल चित्त हुये २३ उस भरतर्षभ के गिरजाने पर कौरव लोगोंकी सेना ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्रों से रहित औरबायु से खाली आकाश होता है २४ उस शरशय्याके ऊपरराजा भीष्मके शयनकरनेपर सेनाऐसेप्रकार की दिखाई पड़ी जैसे कि असुरोंकी सेना ब खेती आदिसे रहित पृथ्वी अथवा असंस्कृतबाणी होतीहै २५ जैसेकि सुन्दररूपवाली स्त्री बिधवा होय ब जलसे रहित नदीहोय अथवा जैसे कि वनमें व पर्बत की कन्दरामें सिंहसे मरेहुये शरभानाम यूथपके बिनाभेड़ियों से घिराहुआ पृषतीनाम मृगोंका यूथ व्याकुल होताहै २६ इसी प्रकार भरतबंशियों में श्रेष्ठ गांगेय भीष्मजी के गिरने पर भरतबंशियों की सेना महाभयभीतहोगई २७ महाबली लक्षभेदी वीर पांडवों से अत्यन्त पीड़ामान सेना ऐसे स्वरूपवाली होगई जैसे कि संसारकी वायुसे ताड़ित टेढ़ीहुई नौका महा समुद्रमेंहोती

है २८ अर्थात् वह सेना जिस के घोड़े हाथी रथ व्याकुल थे और असंख्य मनुष्यों का नाश होगयाथा वह महा दुःखी और मनसे उदास होरहीथी २९ आशय यह है कि देवव्रत भीष्मजीसे रहित होकर उस सेनामें राजालोग और भिन्न २ प्रकारके सेनाके पुरुष भयभीत होकर पातालमें डूबेहुये के समान होगये ३० उससमय कौरव लोगोंने सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठपराक्रम और युद्धमें भीष्मजीके समान राजा कर्णको ऐसे स्मरण किया जैसे कि चित्तसेचाहे हुये अतिथिको ३१ स्मरण करतेहैं और उसी में सबका चित्तऐसा गया जैसेकि आपत्तियों में फंसेहुये पुरुष का मन बन्धुमें जाता है और हे भरतबंशी वहां उनराजाओंने हे कर्ण हेकर्ण३२ हे राधा के और सूतके पुत्र कहकर पुकारा और कहा कि इस शरीर त्यागने वाले भीष्मको हमारा प्रियकर्त्ता और रक्षक समझकर वहकर्णअपने भाइयों समेत दश दिनतक निश्चय करके नहीं लड़ा उस कर्णको शीघ्रलाओ बिलम्ब न करो वह महा बाहुकर्ण क्षत्रियोंके देखते बल और पराक्रमसे स्तुतिमान रथियोंकीगणनाओंमें भीष्मसेअर्द्ध रथी गिनागया परन्तु वह नरोत्तम अर्द्ध रथी नहींहै किन्तु भीष्मजी से द्विगुणितहै ३३। ३५ जोशूरोंकामानाहुआ रथी और अति रथियों में श्रेष्ठहै और जो असुरों समेत देवताओंके साथयुद्धमें युद्धाभिलाषी होकर साहसकरे हेराजाउसने उसीक्रोधसे गांगेय भीष्मजीसेकहा थाकिहे कौरव्य मैं तेरेजीतेजी कभीनहींलडूंगा३६।३७ और हेकौरवोत्तमइस महायुद्धमें आपके हाथसे पांडवोंके मरनेपर दुर्य्योधन को पूंछकरवनकोजाऊंगा ३८ अथवापांडवोंके हाथसे आपकेस्वर्गाभिलाषीहोनेपर आप जिनको रथीमानतेहो उनसब रथियोंको एक ही रथसेमारने वालाहूंगा ३९ वह महाबाहु यशस्वीकर्ण इस प्रकारसेकहकर आपकेपुत्रके मतसे नहींलड़ा४० हेभरतवंशी अतुल बलयुद्धमें शूरबीर भीष्मने पांडवोंके बड़े२युद्धकर्त्ताओंको युद्धमेंमारा ४१ फिर उस सत्यसंकल्प बड़े तेजस्वी शूरभीष्मके मरनेपर आपके पुत्रोंने कर्णकोऐसे स्मरणकिया जैसेनदीकेपार उतरनेकेअभिलाषी

लोगनौकाको स्मरणकरतेहैं ४२ आपके सबयुद्धबर्त्ती औरदुर्य्योधनादिक पुत्रराजाओं समेत यहकहकर पुकारे कि हायकर्णहायकर्णयही समयहैउसपरशुरामजीके आज्ञावर्त्ती शस्त्रविद्यामें अजेयकर्णकेपराक्रममेंहमारा चित्त ऐसेगया जैसेकि नाशहोनेवालोंका मन बन्धुओंमें जाताहै ४४ हेराजा वहकर्ण हमलोगोंको बड़ेभारी भयसे ऐसे रक्षा करनेकोसमर्थहै जैसे कि गोविन्दजीबड़े २ भयोंसे देवताओंकीरक्षा करनेको समर्थहैं ४५ बैशम्पायनजीबोले कि यहसुनकर राजाधृतराष्ट्र सर्पके समानश्वासाओंको लेकर उस बारंबार कर्णकेबखानकरनेवालेसंजयसे यहबचन बोले४६ किजब तुम्हाराचित्त शरीरसे कवच त्याग करनेवाले सूर्य्यके पुत्र कर्णमेंगया तब उस कवचत्यागी राजा और सूतके पुत्रको देखाभीहै ४७ उससत्य पराक्रमी कर्णनेउनव्याकुल दुखी भयभीत और रक्षाके अभिलाषी कौरवोंकी इस आशाको कहीं निष्फल तो नहींकिया ४८ उस श्रेष्ठधनुषधारीने युद्धमेंउनकी आशाको पूर्णकिया यानहीं अर्थात् भीष्मजीके मरनेके पीछे अपनेबल पराक्रमसे उसने उस खंडकोपूराकरके दूसरोंको भयभीत किया यानहीं क्योंकि हे संजय इसलोकमें वही अकेला कर्ण पुरुषोत्तम कहाजाताहै ४९ । ५० युद्धमें अपने प्राणोंको त्यागकर अधिकतर रुदनकर वे पीड़ा मान बांधवोंकी रक्षाके निमित्त उनके कल्याणको करके मेरेपुत्रोंको विजयरूपी आशाको भी सफल किया या नहीं५१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिधृतराष्ट्रसंजयसम्बादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेराजा तब धनुष धारियोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ शत्रुओं को जीतनेवाला वह सूतका पुत्रकर्ण उन पुरुषोंके इन्द्रअजेय शन्तनुके पुत्र महारथी अथाह समुद्रमें डूबतेहुये कौरवोंके नौकारूप भीष्मको गिराया और मराहुआ सुनकर अपनेनिज सहोदरभाईके समान आपके पुत्रकीसेनाको कठिन दुःखोंसे छुटानेका अभिलाषी होकर अकस्मात् समीपआया १।२ शत्रुओंके हाथसे समुद्रमें डूब

जाने वाली नौकाके समान रथियोंमें श्रेष्ठ भीष्मके मरनेपर आपके पुत्रकीसेनाकोदुःखसमुद्रसे तारनेकी इच्छाकरताहुआ शीघ्रतापूर्वक कौरवोंकेपास ऐसेआयाजैसेकिपुत्रोंको डूबतेदेखकर उनकेनिकालने कीअभिलाषासे पिताआताहै ३ कौरवोंकेपासआकर कर्ण यहवचन बोला कि जिस भीष्ममें धैर्य्य बलबुद्धि प्रताप सत्यतास्मरणतावीरों केसंपूर्ण गुण अशेषदिव्य अस्त्रसन्नति लज्जाप्रियभाषणता औरदूसरोंके गुणोंमें दोष न लगाना आदि अनेकगुणहैं उस सदैव कृतज्ञ और ब्राह्मणोंके शत्रु संहारी में यह सब गुण इसरीति से प्राचीन हैं जैसे कि चन्द्रमामें लांछनरूप चिन्ह होताहै जोवही शत्रुओं के बीरोंका मारनेवाला शान्तहोगया तो मैंअन्य सबबीरोंकोभी मृतक केही समान समझताहूं४।५ यहांकोईभी अविनाशी नहीं है इसलोक में कर्मके विनाश मानहीनेसे इस महाव्रत भीष्मके मरनेपर सूर्य्योदयके समयअपनी वर्तमानताको कौननिस्सन्देह करसक्ताहै ६ अष्टबसुनाम देवताओंकेअंश और बसुओंकीही शक्तिसे प्रकट होनेवाले राजा भीष्मको बसुओंसे एकता होनेपर धनपुत्रों समेत पृथ्वीऔर कौरवोंको और इससेनाको शोचो अर्थात् इनकीचिन्ताकरो७संजय बोले कि बड़े प्रभाववाले बरकेदाता लोकेश्वर शासनकर्ता प्रतापोंसे पूर्ण भीष्मके गिरने व भरत बंशियोंकेपराजय होनेपर उद्विग्नचित्त होकर अश्रुपातोंको डालतेहुये कर्णने अत्यन्त श्वासलीं ८ हे राजा आपकेपुत्र और सेनाके मनुष्योंने कर्णके इस बचनको सुनकर परस्परमें बारंबार मोहसे उत्पन्न होनेवाले शब्दकिये और सब लोगों ने शब्दोंको करतेहुये अश्रुपातोंकोभी डाला९फिर राजाओंसेमझाई हुई सेनामें महायुद्धके बर्तमान होनेपर वहमहारथियोंमें श्रेष्ठअतुल पराक्रमीकर्णउत्तम रथियोंकोप्रसन्नताका बढ़ानेवालाबचनबोला१० कि सदैव अहर्निशव्यतीत होनेवाले इसविनाशमान संसारके मध्य में अब अत्यन्त शोचताहुआ मैं किसीको अविनाशी नहीं देखताहूं यहां आप लोगोंके नियत होनेपर पर्व्वतके समान महातेजस्वी कौरवोंमें श्रेष्ठभीष्मजी युद्धके मध्यमें किस रीतिसे गिरायेगये ११

पृथ्वीतलमें वर्तमान सूर्य्यकेसमान महारथी भीष्मजीके गिरने पर राजालोग अर्जुनके सहनेको ऐसे समर्थ नहींहैं जैसेकि पर्व्वत पर चलनेवाले बायुके वेगको वृक्षनहीं सहसक्ते १२ निश्चय करके यह कौरवोंकी सेना जिसका कि अधिपति मारागया वह शत्रुओंकेहाथ से साहसको त्याग महादुखी होकर अनाथ होरहीहै वहसबसेना युद्धके मध्यमें मुझसे उसीप्रकार रक्षाकेयोग्यहै जैसे कि उसमहात्मा भीष्मजीसे रक्षितथी १३ जोकि मैंने अपने ऊपर इसप्रकारकाभार अच्छे प्रकारसे नियतकियाहै इसहेतुसे इसजगत्को भी अविनाशी देखताहूं जो युद्धमें कुशल भीष्मके युद्धमें गिरनेसे भय उत्पन्नहुआ है वहभय मैं नहीं दिखाऊंगा मैं उन कौरवोंमें श्रेष्ठ पुरुषोंको युद्धके मध्यमें सीधे चलनेवाले बाणोंसे ढकता यमलोकमें पहुंचता हुआ संसारमें बड़े यशको उत्पन्न करके कर्मवर्त्ती हूंगा अथवा शत्रुओं के हाथसे मरकर पृथ्वीपर शयनकरूंगा १४।१५ संसारमें सत्य संकल्प युधिष्ठिर और दशहजारहाथीके समानपराक्रमी भीमसेन और बली तरुण अवस्थावाला अर्जुनभी इन्द्रका पुत्रहै इसलोकमें वह पांडवों की सेना देवताओं समेत इन्द्रसेभीसुगमता पूर्व्वक विजयहोनेके योग्यनहींहै १६ जिस युद्धमें बलमें अश्विनी कुमारोंकीसमानतारख नेवाले नकुल और सहदेवहैं और जिसमेंसात्विकी समेत श्रीकृष्ण जीहैंउसी सेनाके सन्मुखआनेवाला नपुंसक मृत्युके मुखसे जीवता नहीं लौटताहै १७ बड़ातपस्याहीसे शान्त औरबिजय होताहै इसी प्रकार बड़े साहसी प्रतापी पुरुषों की सेना से सेनापीड़ा पातीहै निश्चय करके मेराचित्त शत्रुओंके पराजयकरने और अपनी रक्षामें चलायमान के समान नियतहै १८ हे सूतअब मैं जाकर उन सबके प्रभाव को इस प्रकार से मथन करके बिजय करताहूं यह मित्रके साथ शत्रुता मुझसे सहने के योग्य नहींहै क्योंकि सेना के आगे होकर सन्मुखताकरे वही मित्रहै १९ अबमैं सत्पुरुषों के इस कर्म को करना चाहताहूं और प्राणों को छोड़कर भीष्मजी केही साथ जाऊंगा मैं युद्धमें शत्रुओंके सब समूहों को मारूंगा अथवा उनके

हाथसे मरकर बीरोंके लोकोंको पाऊंगा २० दुर्योधन का पराक्रम न्यून और हतहोने वा अतिशय प्रत्युत्तरमें और स्त्री समेत कुमारोंके रोदन करनेपर मुझको युद्ध कर्मकरना योग्यता पूर्वक उचितहै हे-सूत मैं यह जानताहूं इसीहेतुसे अबमैं राजा दुर्योधनके शत्रुओंको विजय करूंगा २१ मैं इस महाभयकारी युद्ध में कौरवों की रक्षा करता और पांडवोंको मारता अपने प्राणोंकी आशा छोड़ लड़ाई में शत्रुओंके सब समूहों को मारकर दुर्योधनके अर्थ राज्य को दूंगा २२ मेरेउस कवचको बांधो जोकि उज्ज्वल सुबर्णमयमहाअपूर्व्व होकर मणि रत्नादिकों से प्रकाशमानहै और सूर्य्य के समान प्रकाशित शिरस्त्राणको और अग्नि वा बिषके समान धनुष बाणों को २३ सोलह उपासंगों समेत रथपर लगाओ और इसी प्रकार मेरेदिव्य धनुषोंको लाओ इसके बिशेष खड्ग शक्ति वा भारी २ गदा और सुबर्णजटित प्रकाशमान शंखोंको लाओ २४ इसस्वर्ण मयी अपूर्व्व नागकक्षाको और कमलके समान शोभायमान ध्वजा को और अच्छी बंधीहुई अद्भुत मालाको शुद्धबस्त्रों से स्वच्छकरके जाल समेत लाओ २५ हे सूतपुत्र श्वेत बादल के समान प्रकाश मानहृष्ट पुष्ट शरीरवाले मन्त्रोंसे पवित्र कियेहुये जलों से स्नान कराये वा संतप्त कियेहुये सुबर्णपात्रोंसे युक्त शीघ्रगामी घोड़ोंको तुरन्तलाओ२६ स्वर्णमयी मालाओं से अलंकृत सूर्य्य चन्द्रमा के समान प्रकाशमान रत्नोंसे जटितयुद्धकेयोग्य घोड़ोंसेयुक्त आलस्य को दूर करने वाले द्रव्यों सहित उत्तम रथको शीघ्रवर्तमान करो २७ वेगवान् बिचित्र धनुष वा अच्छे प्रकार बांधनेके योग्य प्रत्यंचाओंको और२ बाणोंसे भरेहुये बड़े २ तूणीरोंको वा कवचों को पाकर लाओ २८ यात्राका सब सामान शीघ्रलाओ और हेबीर दहीसेभरेहुये सुबर्ण और कांस्यपात्रलाओ मालाको लाकर अंगमें बांधकर शीघ्रतासे बिजयके निमित्त भेरी को बजाओ २९ हे-सूत तू वहां पर बड़ी शीघ्रता से चल जहांपर अर्जुन भीमसेन युधिष्ठिर और नकुल सहदेवहैं मैं युद्धमें सन्मुख होकर उनको मारूंगा

अथवा शत्रुओंके हाथसे मरकर भीष्म जीके साथ जाऊंगा३० जिस सेनामें सत्य धैर्य्यवाला राजा युधिष्ठिर नियत है और भीमसेन, अर्जुन,सात्विकी,सबसृंजय,और बासुदेबजी नितय हैं वह सेना अन्य राजाओंसे अजेयहै ऐसामैं मानताहूं३१ यद्यपियुद्धमें सबका मारनेवालाकाल बड़ी सावधानीसे उस अर्जुन की चारों ओर से रक्षा करताहै तौभी मैं संग्राममें सन्मुख होकर मारने वालाहूं वा यमराज के निमित्त भीष्मजीके साथजाऊंगा ३२मैंउन शूर लोगोंके मध्यमें नहीं जाऊंगा क्योंकि मैं कहताहूं कि उसमें मित्रसे शत्रुता करनाहै जो अल्पपराक्रमी और पापात्माहैं वेमेरे सहायक नहींहैं ३३संजयबोले किरत्नादिसेजटितदृढ़स्वर्णमयीशुभकारी कूबररखने वाली पताका धारणकिये बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त उत्तम रथपर बैठकरबिजयके निमित्त चला३४तब जैसेकि देवताओं के समूहोंसे इन्द्रपूजित होताहै उसी प्रकार कौरवोंसे अच्छे प्रकार पूजित महात्मा रथियोंमें श्रेष्ठ भयानक धनुषधारी कर्णबड़ी सेना समेत ध्वजाधारी सुबर्ण मोती और मणि रत्नोंकी मालाओंसे युक्त उत्तम घोड़ोंसहित बादलके समान शब्दायमान अग्निके समान प्रकाश मान शुभरूप और लक्षणोंसे शोभित रथपर नियत होकर उस युद्ध भूमिमें शोभितहुआ जहांपर कि भरतर्षभ राजा दुर्य्योधन कानिवास स्थानथा अर्थात् उसस्थानपर ऐसे शोभितहुआ जैसे कि विमानमें नियतहोकर सब देवताओंमें इन्द्रशोभितहोताहै ३६।३७

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

संजयबोले कि उसबड़े प्रतापी तेजस्वी महात्मा शर शय्यापर सोने वाले बड़े बायु समूहसे शुष्क समुद्रके समान १ सब क्षत्री कुलोंके नाश कर्त्ता बड़े धनुष धारी अर्जुनके दिव्य अस्त्रोंसे गिराये हुये गुरूरूप भीष्म पितामह को देखकर आपके पुत्रोंकी बिजय और सुखवा कल्याणकी आशा सबनष्ट होगई २ अतलस्पर्श समु-

द्रमें थाह चाहनेवाले और पार न पहुंचनेवाले द्वीपऔर यमुनाजी के सोतके समान बाणों के समूहों से भरे हुये ३ महाइन्द्र के हाथ से गिराये हुये असह्यताके योग्य मैनाक पर्व्वत के समान प्रकाशित और आकाश से गिरकर पृथ्वीतलमें पड़े हुये सूर्य्यके समान देदीप्यमान ४ और पूर्व्व समयमें वृत्तासुर से बिजय किये हुये अचिन्त्य इन्द्रके समान भीष्मको जिसका कि युद्धमें गिराना-ही सबसेनाका मोहित करनाहै५ सबसेनाके प्रधान और सब धनुष धारियोंके ध्वजारूप अथवा अर्जुनके उत्तम बाणोंसे विदीर्ण शरीर वीर शय्यापर शयन करनेवाले पुरुषोत्तम वीर उसमेरे और भरत बंशियोंकेपिताभीष्मकोइस बढ़तेजस्वी अधिरथीकर्णनेदेखकर ६।७ महापीड़ा युक्त अश्रुपातों समेत गद्गद बाणीसे युक्त कर्ण रथसे उतर दण्डवतकरहाथ जोड़कर प्रशंसाकरताहुआयहबचनबोला८ हेभरतबंशी मैं कर्णहूं आपका शुभहोय अब आप पवित्रता और कल्याण संयुक्त बचनोंसे मेरे सन्मुख वार्तालापकरिये और नेत्रोंसे देखो ९ निश्चय करके इसलोकमें कोई पुरुष उत्तमकर्मके भोगको नहीं भोगताहै जिसस्थानपर कि धर्मको उत्तम जाननेवाले आप वृद्ध पृथ्वीपर सोतेहैं १० हेकौरवोंमें श्रेष्ठ मैं कौरवोंकी वाधनागार की सम्मतकी व्यूहको और शस्त्र चलानेकी वृद्धिमें किसीदूसरेको नहीं देखताहूं ११ अत्यन्त पवित्रबुद्धिसे युक्त जो भीष्म कौरवोंको भयसे तारनेवालाथा वह बहुतसे युद्धकर्त्ताओंको मारकर अबपितृ लोकको जायगा १२ अबसे लेकर अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडव लोग कौरवोंके कुलका ऐसे नाशकरेंगे हेभरतबंशी जैसेकि व्याघ्र मृगों कानाश करतेहैं १३ अब अर्जुनके गांडीव धनुषके पराक्रम और सामर्थ्यके जाननेवाले कौरव ऐसे भयभीत होंगे जैसेकि बज्रधारी इन्द्रसे असुर भयभीत होतेहैं १४ अब गांडीव धनुषसे छोड़ेहुयेबज्र के समान बाणोंके शब्द कौरवोंकी और राजाओंको भयभीत करेंगे १५ हेवीर जैसेकि बड़ी वृद्धिमान और अत्यन्त प्रचंड अग्नि वृक्षोंको भस्मकर डालतीहै उसीप्रकार अर्जुनके बाणभी धृतराष्ट्र

के पुत्रोंको भस्मकरेंगे १६ बनके मध्यमें वायुऔर अग्नि एकसाथ जिस २ मार्गसे चलतेहैं उस २ गतिसे बहुतसे गुल्म तृण और वृक्षादिकोंको जलातेहैं १७ औरजिसप्रकारकी अग्नि है उसीप्रकारका अर्जुनभी निस्संदेह उत्पन्न हुआहै और हे नरोत्तम जैसाकि वायुहोताहै उसीप्रकारके निस्संदेह श्री कृष्णजी हैं १८ हे भरतवंशी पांचजन्य शंखके बजानेपर और गांडीव धनुषके शब्दायमान होतेही सब सेनाके लोग उसशब्दको सुनकर भयभीतहोंगे १९ हेवीर भीष्मजी शत्रुओंके जीतनेवाले वानरध्वज अर्जुनके रथकेदौड़नेपर आपके सिवाय अन्य राजालोग उसशब्दके सहनेको समर्थ नहींहोंगे २० आपके सिवाय दूसरा कौनसाराजा अर्जुनसे लड़नेके योग्यहै क्योंकि उस अर्जुनको सबबुद्धिमान लोग दिव्यकर्मी कहतेहैं २१ जिसका अमानुषी युद्धशिवजीके साथ ऐसाहुआ जोकि बुद्धिसेबाहरथा और उन शिवजीसे वह बरपाया जोकि अपवित्रात्मा पुरुषोंसे कठिनतासेभी प्राप्तकरना असंभवहै २२ उसको युद्धमें कौन पुरुष बिजय करनेको समर्थहै जिस आपके भुजबलके पराक्रमसे क्षत्रियोंके नाशकर्त्ता और देवता दानवोंकेभी अहंकारोंके दूर करनेवाले भयकारी परशुरामाजी बिजयहुये २३ ऐसे महा पराक्रमी आपसेभी वहअर्जुननहीं बिजयहुआ अबमैं आपकीआज्ञानुसार युद्धमें महाप्रबल औरकुशल बुद्धिमानपांडव अर्जुनको न सहकर अपने अस्त्रोंकेबलसे उससर्पके समान विषले दृष्टिकेआकर्षण करनेवाले बड़े भयकारी शूरबीरके मारनेको समर्थहूंगा २४

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय॥

संजयबोलेकि कौरवोंके वृद्ध पितामह प्रसन्न चित्त भीष्मजीउस बिलापकोकरतेहुये कर्णसेदेशकालकेसमान बचनबोले १ जैसेकिनदियोंके समुद्र प्रकाश करनेवालोंकेसूर्य्य सत्यताकेसन्तलोग बीजोंकी पृथ्वी औरजीवोंका आश्रयस्थान और प्रतिष्ठारूप बादल हैं उसी

प्रकार मित्रोंमें तेरी प्रतिष्ठाहै औरबांधव लोग तेरेपास ऐसेजीविका सहित निर्बाह करतेहैंजैसेकि देवतालोग इन्द्रकेपास अपनानिर्बाह करतेहैं ३ शत्रुओंके मानका तोड़नेवाला औरमित्रों के आनन्दका बढ़ानेवाला होकर कौरवोंके वैसीगति रूपहो जैसेकि देवताओंकी गति विष्णुभगवान् होतेहैं ४ हेदुर्य्योधनकी बिजयचहनेवाले कर्ण तुमने राजपुरको जाकर अपनेभुजबल औरपराक्रमसे काम्बोजदेशी विजयकियेथ्र और गिरिव्रजमें बर्तमानहोकर नग्नजित आदिकराजा और अम्बष्टदेशी विदेहदेशी और गान्धारदेशी राजाओंको भी बिजयकिया ६ हेकर्ण पूर्व्व समय में हिमालयपर्व्वतके दुर्गमस्थानों के रहनेवाले युद्धमें महानिर्द्दय किरातलोगों कोभी तुम्हींने दुर्य्योधनके आज्ञावर्ती किये ७ तुम्हींने उत्कलदेशी, मेकलदेशी, पौंड्र २ कलिंग, आन्ध्र, निषाद, त्रिगर्त्त, और बाल्हीक देशीभी युद्धमें बिजय किये ८ हेदुर्य्योधनके प्रिय चाहनेवाले बड़ेतेजस्वी कर्ण तुमने जहां तहां युद्धमें अन्य २ अनेक वीरोंकोभी बिजयकिया ९ हेतात जैसे दुर्य्योधन ज्ञातिकुल और बांधवों समेतहैं उसीप्रकार तुमभी सब कौरवोंकीगतिहो १० मैंतुझको आनन्द पूर्व्वक कहताहूं कितुमजाओ औरशत्रुओंकेसाथ युद्धकरो और लड़ाईमें कौरवोंके शिक्षकहोकर दुर्य्योधनको बिजयदो ११ जिस प्रकार दुर्य्योधनहै उसी प्रकार तुम भी हमारे पौत्रको समानहो और हमजिस प्रकार दुर्य्योधन के हैं उसी प्रकार से तुम्हारेभीहैं १२ हे नरोत्तम ज्ञानीलोगों का कथन है कि अच्छे लोगोंकी मित्रता जो सत्पुरुषोंके साथ होतीहै वह नाते दारी आदिसेभी अधिकहै १३ सोमेरा यहनिश्चय कियाहुआहैकि तुमसच्ची प्रीति करके कौरवोंकी सेनापर ऐसी प्रीति करो जैसे कि दुर्य्योधन करताहै १४ सूर्य्यका पुत्रकर्ण भीष्मजीके बचनों को सुन कर उनके चरणों को दंडवत करके सब धनुष धारियों के सन्मुख गया १५ और सेनाके समूहवर्ती पुरुषों को अनुपम उत्तम सभाको देखकर नियतहुआ तब उसको देखकर दुर्य्योधनादिक सब कौरव लोग प्रसन्न हुये १६ उस महात्मा युद्धोत्सुक सेना के अग्रवर्ती

महाबाहु कर्ण को समीपआयाहुआ देखकर १७ कौरवोंनेसिंहनाद वा भुजदंडोंकेशब्द और अनेक प्रकारके धनुषोंके शब्दोंके द्वाराउस कर्णकी अच्छीरीतिसे प्रतिष्ठाकरी १८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः४॥

पांचवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजाउस पुरुषोत्तम कर्ण को रथमें सवार और नियत देखकर प्रसन्न चित्त दुर्योधन इस बचन को बोले १ कि आपसेरक्षित और पोषित सेनाको सनाथजानताहूं यहां आपअपने चित्तसे जिस बातको श्रेष्ठ और प्रियकारी जानतेहो उसीको करो २ कर्ण बोले हेपुरुषोत्तम राजादुर्योधन तुमबड़े बुद्धिमानहोजैसे किअर्थ पति अर्थात् प्रयोजन वाला पुरुष कहताहै उसी प्रकार तुम अपने प्रयोजन की बातको कहो ३ हे राजा हमसबलोग आपके बचनों के सुनने के अभिलाषी हैं आपन्याय के बिपरीत बचनों को नहीं कहोगे यह मेरासिद्धांतहै ४ दुर्योधन बोले कि जैसे आयुबल शास्त्र और ज्ञानसेपूर्णसब युद्धकर्ताओंके समूहोंसे युक्तभीष्मजी सेनापति हुये ५ हे कर्णउस वृद्ध और मेरेशत्रु समूहोंके मारनेवाले महात्मा ने अच्छीरीतिके युद्धोंको करके दशदिनतक हमलोगोंकी रक्षाकरी६ उसकठिनकर्म करने वाले भीष्म के स्वर्गबासी होने पर अबकिस कोसेनापति करनेके योग्यमानतेहो ७बिनास्वामीके सेनाएकमुहूर्त मात्रभीयुद्धमें ऐसे नियतनहीं रहसक्ती ८ जैसेकि मल्लाह से रहित नौका जलमें नहीं रहसक्ती ९ जैसे कि कर्णधारसे रहित नौकाऔर जैसे सारथी न रखने वालारथ इच्छा के अनुसार अर्थात् स्वेच्छा चारी होकर चलतेहैं इसी प्रकार के सेनापतिके बिना सेनाभी स्वतन्त्र होकर स्वेच्छाचारी अपनेसे छिन्न भिन्नहोजातीहै १० जैसे कि परदेश को न जानेवाला व्यापारी सब दुःखोंको पाताहै उसीप्रकार बिनासेना पतिके सब सेनाभी सब प्रकार के दोषोंको पातीहै सो आपयहां हमारे सब महात्मा शूरबीरों में से किसी महात्मा पुरुष

को भीष्मजीके पीछे सेनापतिके अधिकार के योग्यदेखो ११ आप जिसको युद्धमें सेनापतिके योग्यकहोगे उसीको हमसाथवाले सेना का स्वामी बनावेंगे १२ कर्णबोलेकि ये सब महात्मा शूरबीरलोग निस्सन्देह सेनापतिके योग्यहैं इसमें किसी प्रकार का भी बिचार न करना चाहिये १३ येसब कुलीन शरीर ज्ञान बल पराक्रम बुद्धि और शास्त्रज्ञ होकरयुद्धमें मुखको न मोड़ने वालेहैं १४ परन्तु वेसब एक साथही अधिपति सेनाधीश करनेके योग्य नहीं हैं इन सबमें सेअनेक गुणवालाएकही सेनापति करना उचितहै १५ जो इनपरस्पर ईर्षा करने वालोंमेंसे किसी एकको स्वामी बनाओगे तो प्रकट हैकि बाकीबचेहुये शेष शूरबीर प्रसन्नहोकर आपके अभीष्टकोनहीं करेंगे १६ ई सब युद्धकर्ताओं के गुरूवृद्ध द्रोणाचार्य्य जी सेनापति करनेके योग्यहैं १७ इसअजेय शस्त्र धारियों में श्रेष्ठशुक्र और वृहस्पति जीके दर्शन के समान द्रोणाचार्य्य जीके सिवाय दूसरा कौन सेना पतिहोनेके योग्यहै १८ हे भरतबंशी सबराजाओंमें ऐसाकोई तेरा शूरबीर भी नहींहै जो युद्ध भूमिमें लड़ाईके निमित्त जाने वाले द्रोणाचार्य्य के साथजाय १९ हे राजायह आपकेगुरू सबसेनापतियोंमें श्रेष्ठहैं यहीसब शस्त्रधारियोंमें उत्तमहैं यही बुद्धिमानों मेंभी अधिकहैं २० हेदुर्योधनइसबिचारसेआचार्य्यजीको शीघ्रहीसेनापति करना चाहिये जैसेकि असुरों के बिजय करनेके लिये देवताओंने कार्तिकेय जीकोसेनापति किया उसीप्रकार तुम इन द्रोणाचार्य्यजी को सेनापतिकरो २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय॥

संजय बोलेकि राजा दुर्योधन कर्णके इस बचनकोसुनकर सेना के मध्यमें बर्तमान द्रोणाचार्य्य जीसे यहबचनबोले १ वर्णोंमें उत्तमता, कुलकी उत्पत्ति, शास्त्र, अवस्था, बुद्धि, पराक्रम, चतुराई, अजेयता, अर्थज्ञता, बुद्धित्व, तप, उपकारज्ञता, सर्वगुणविशिष्टता, इत्यादिगुणोंसे

युक्तआपके समान योग्य और सेनाकारक्षक राजाओं मेंकोईदूसरा बर्तमान नहींहै २।३सो आपहमको ऐसेरक्षाकरो जैसेकि इन्द्रदेवता ओंकी रक्षा करताहै हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ आपकीआज्ञाके अनुसारहम लोगशत्रुओंको बिजय करना चाहतेहैं ४ जैसेकि रुद्रोंका स्वामी कापाली, बसुओंका, अग्नि, यक्षोंका,कुवेर,मरुत,नामदेवताओंका इन्द्र ५ ब्राह्मणोंका बशिष्ठ, प्रकाशमानोंका सूर्य्य, पितरों का धर्म, देवताओंका इन्द्र, जलके जीवोंका बरुण ६ नक्षत्रोंकाचन्द्रमा,और दितीके पुत्रोंका स्वामी शुक्रहै इसी प्रकार सेनापतियोंमें श्रेष्ठआप हमारे सेनापति हूजिये ७ हेपापोंसे रहित यह ग्यारह अक्षौहिणी आपकी आज्ञानुवर्ती होंगी इनसबसेनाओं के साथ ब्यूहको रचकर शत्रुओंको ऐसेमारो जैसेकि इन्द्रदानवों को मारताहै ८ आपहम लोगोंके आगेऐसेचलो जैसेकि देवताओंके आगेअग्नि देवताचलते हैं और हम युद्धभूमिमेंआपके पीछे ऐसेचलेंगे जैसेकि गौओंकेसाथ उनके बच्चे बैल चलते हैं ९ अथवा जैसे पिताके साथपुत्र चलतेहैं हेशत्रुओंके भय भीत करनेवाले बड़ेउग्र धनुषधारी गुरूमहाराज आपदिव्य धनुषको टंकोरतेहुये आगे हूजिये आप को देख कर अर्जुन कभी प्रहार न करेगा १० हेपुरुषोत्तम जो आप सेना पति होंगे तो निश्चय करके युद्धमें उसकेबान्धव और सबसाथियों समेत युधिष्ठिरको बिजय करूंगा ११ संजय बोले कि उसके इस प्रकार कहने पर राजालोग बड़े सिंहनाद से आपके पुत्रको प्रसन्नकरते हुये द्रोणाचार्य्यजी से यह बचन बोलेकि बिजय कीजिये १२ और प्रसन्नता से युक्त बड़े यशकी अभिलाषा करते सेनाके मनुष्यों ने दुर्योधनकेआगे ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यकी बड़ीप्रशंसाकरी इसके पीछे द्रोणाचार्य्यजी दुर्योधनसे बोले १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय॥

द्रोणाचार्य्य बोले कि मैं छः अंग रखने वालेबेदको और मनुष्यों

के अर्थ विद्या अर्थात् देशप्रबन्धनी विद्याको और पाशुपति बाण अस्त्र और अन्य नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रोंको जानता हूं १ और बिजयाभिलाषी आप लोगों ने भीजो २ गुण मुझमें बर्णन कियेहैं उन सबको करने का अभिलाषी होकर मैं पांडवों से लड़ूंगा २ परंतु हे राजामैं किसी दशामेंभी युद्धके मध्यमें धृष्टद्युम्नको नहीं मारसकूंगा क्योंकि वही पुरुषोत्तम मेरे मारनेकेनिमित्त उत्पन्नकियागयाहै ३ मैंसब सोमकोंका नाश करता हुआ सेनाओंसे लड़ूंगा और पांडव प्रसन्नता पूर्वक मुझसे नहीं लड़ेंगे ४ संजय बोले कि हे राजा इसके अनन्तर इसरीतिसे उनके आज्ञावर्ती होनेवालेआपके पुत्रने शास्त्रमें देखेहुये कर्मकेद्वारा द्रोणाचार्य्यको सेनापति बनाया५ फिर उन सब राजाओंने जिनमें अग्रगामी दुर्योधन था द्रोणाचार्य्य जीको सेनाके सेनानीपद पर इसरीतिसे अभिशेष किया जैसे कि पूर्व समय में इन्द्रादिक देवताओंने स्कन्दजीको कियाथा६तब द्रोणाचार्य्य के सेनापति करने पर बड़े २ बाजे और शंखोंके शब्दों के द्वाराप्रसन्नता प्रकटकरी७इसकेपीछे पुण्याह बाचनकेघोष स्वस्ति बाचन के शब्द सूत मागध बंदियोंके स्तवगीत बाद्यके शब्द उत्तम ब्राह्मणोंके जय शब्द बिजयशब्द और शुभांगनाओंके नृत्यसे बुद्धि के अनुसार द्रोणाचार्य्यजी का सत्कार करके पांडवों को पराजित माना८।९संजय बोले कि फिरमहारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजीसेनाकी अधिपताको पाकर युद्धाभिलाषी सेनाओंको अलंकृत करके आपके पुत्रों के साथचले १० सिन्धका राजा और कलिंग देशका राजा और आपका पुत्र विकर्ण दाहिने पक्षमें बर्तमान होकर शस्त्रों से अलंकृत अच्छी रीति से नियतहुआ ११ और उन सेनाओं का रक्षक परपक्ष वाला राजाशकुनी निर्मलशस्त्रोंसे लड़नेवाले गान्धार देशी और अत्यन्त उत्तम अश्वारूढ़ों समेतचला १२ और कृपाचार्य्य कृतबर्मा चित्रसेन विविन्शति और दुश्शासनादि सावधान लोगोंने वामपक्षको रक्षित किया १३ उन्होंके परपक्ष कांबोजदेशी यवनों समेत शकुनि जिनका कि अग्रगामी राजासुदक्षणथा वह बड़े

शीघ्रगामी घोड़ों समेत चले १४ मद्र, त्रिगर्त्त, अम्बष्ट, पश्चिमीय उत्तरीय राजालोग मालवीय शिवय सूरसेन और मलयदों समेत सौवीर १५ कि तब सब पूर्व्वीय और दक्षिणीय राजा आपके पुत्र-को आगे करके कर्णकेपीछे १६ अपनी सेनाओंको प्रसन्न करतेआप के पुत्रोंके साथचले सब शूरवीरोंमें शिरोमणि द्रोणाचार्य्यजीनेसेना ओंमें पराक्रम नियतकिया १७ और सूर्य्यके पुत्र कर्णने सबधनुष धारियों के आगे होकर बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक अपने शरीरके प्रकाश से सब सेनाको प्रसन्नकिया १८ हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवा-ली बड़ी उत्तम ध्वजा धारण करनेवाला सूर्य्यके समानतेजस्वीकर्ण बड़ा शोभायमान हुआ उसकर्णको देखकर किसीनेभी भीष्मके दुःख को नहीं माना १९ और कौरवों समेत सब राजालोगशोकसेरहित हुये उस समय प्रसन्न चित्त बहुत से शूररवीर बड़ी तीव्रतासे और दर्पसेबोले कि इसकर्णको देखकर पांडवलोग युद्धमें नियत नहीं होंगे यह कर्ण युद्धमें इन्द्र समेत सब देवताओंके विजय करने को समर्थहै २१ बल पराक्रमसे रहित पांडवोंको युद्धमें विजय करना क्या बातहै बाहुशाली भीष्मने पांडवोंको दयाकरके पोषण किया और रक्षाकरके नहीं मारा २२ परन्तु अब यह कर्ण उनको युद्धमें तीक्ष्ण बाणोंसे नष्ट करदेगा हे राजा इस रीतिसे वह सब राजा लोग परस्परमें कहते २३ और कर्णकोपूजते उसकी प्रशंसा करते हुये चलदिये हमारी सेनाका यह शकटव्यूह द्रोणाचार्य्यनेरचा२४ हे भरतबंशीराजा धृतराष्ट्र दूसरे महात्मा अर्थात् पांडवोंका क्रौंच व्यूह प्रसन्नचित्त धर्मराज युधिष्ठिरनेरचा २५ उनके व्यूहकेमुखपर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी और अर्जुन अपनीबानर ध्वजाकोऊंचीकरके नियत हुये २६ उस अर्जुन की जो ध्वजाथी वह सब सेनाओं का राजचिह्न और सब धनुष धारियोंकी ज्योति रूपथी बड़े तेजस्वी महात्मा अर्जुनकीध्वजा जोकि सूर्य्यकेमार्गमें बर्त्तमानथीउसनेउस सेनाको ऐसे प्रकाश मानकिया जैसे कि प्रलयके समय बड़ी अग्नि की ज्वाला और सूर्य्यका तेज पृथ्वीको प्रकाशित करताहै २७।२८

उसी प्रकार से वह अर्जुन की प्रकाश करनेवाली ध्वजा सबस्थानोंपर प्रकाश करती हुई दिखाईपड़ी युद्धकर्त्ताओं में श्रेष्ठ अर्जुन है और धनुषोंमें महा उत्तम गांडीव धनुषहै २९ सब जीव धारियोंमें बासुदेवजी और चक्रोंमें सर्बोत्तम सुदर्शन चक्रहै इनचारों तेजोंका ले चलनेवाला श्वेतघोड़ेवाला रथ ३० कालचक्रके समान उदय होनेवाला शत्रुओंके आगे नियत हुआ इस रीतिसे वह दोनोंमहात्मा सेनाके आगे चलनेवालेहुये ३१ आपके पुत्रोंके आगेकर्ण और पांडवोंके आगे अर्जुनहुआ तब उसके पीछे बिजयके निमित्त क्रोध से भरे परस्पर मारनेके अभिलाषी ३२ कर्ण और पांडव अर्जुनने युद्धमें जाकर परस्पर बाटदेखी अर्थात् एकने दूसरेका पैंड़ादेखा इसकेपीछे अकस्मात महारथी द्रोणाचार्य्य के चलनेपर ३३ दुःखों से भराहुआ महाशब्दहुआ पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई और बड़ी धूलने सूर्य्य समेत आकाशको ढकदिया ३४ तदनन्तर रेशमी बस्त्रोंके समूहोंके समान कठिन और असह्य धूलउठी और बिना बादलोंकेही आकाश से मांस रुधिर और अस्थियोंकी बर्षा होने लगी ३५ और हे राजा उस समय हजारों गिद्ध बाज बगले कंक काक आदि अशुभ द्योतकपक्षी सेनाके ऊपर गिरे ३६ और शृगाल बड़े भयकारी अशुभ शूचक शब्दों को करनेलगे और बहुत से पक्षियोंने आपकी सेनाको दक्षिण किया ३७ वहपक्षी मांसके खाने और रुधिरके पान करने के अभिलाषी हुये और अग्निसे प्रज्वलित प्रकाशमान उल्काप्रहारोंके शब्दों समेत कंपायमानकरती पीठ की ओर से सबको घेरकर युद्धभूमिमें गिरी हे राजा सेनापतिके चलनेपर सूर्य्यका बड़ा मंडल बिजली और बादलकी गर्जना समेत बाहरको उदय हुआ यहसब और अन्य २ भी अनेक भयकारी उत्पात प्रकट हुये ३८।३९।४० यह सब उत्पात युद्धमें बीरलोगोंके नाश करने वालेथे इसके पीछे परस्पर मारने के इच्छावान बीरोंकेयुद्ध ४१ कौरव और पांडवोंकी सेनाओं के शब्दों से संसारको व्याप्त करते हुये जारीहुये और वह पांडव

कौरवोंके साथ परस्पर क्रोधमें भरे बिजयके अभिलाषी तीक्ष्णश-
स्त्रोंसे प्रहारकरनेलगे फिर वह बड़ा तेजस्वी युद्धमें हजारों बाणोंसे
ढकता बड़ीतीव्रतासे महापुरुष पांडवोंके सन्मुखगया हेराजा जब
पांडवों ने सृंजियों समेत युद्धमें प्रवृत्तरूप द्रोणाचार्य्यको देखा४३
तब उनको देखकर पृथक् २ बाणोंकी बर्षाओंसे रोका द्रोणाचार्य्यके
हाथसे अत्यन्त व्याकुल और घायलहुई बड़ीसेना४५पांचालोंसमेत
ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि हवासे बादल इधर उधर होजाते हैं
फिर युद्धमें बहुत से अस्त्रों को प्रकट करतेहुये द्रोणाचार्य्य जी ने
एक क्षण मात्रमेंही पांडव और सृंजियोंको ऐसे पीड़ामानकियाजैसे
कि इन्द्रके हाथसे दानव पीड़ित होतेहैं इसीप्रकार द्रोणाचार्य्यके
हाथसे घायल वह सब पांचाल ४७ जिनकाकि अग्रगामी धृष्टद्यु-
म्नथा अत्यन्त कंपायमानहुयेइसकेपीछे दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले
शूर महारथी धृष्टद्युम्न ने ४८ बाणोंकी बर्षासे द्रोणाचार्य्यकीसेना
को अनेक प्रकारसे घायलकिया अर्थात् उस पुर्षतके पौत्रपराक्रमी
धृष्टद्युम्नने अपने बाणोंकी बर्षासे द्रोणाचार्य्यके बाणोंकी बर्षा को
४६ अच्छी रीतिसे रोककर सब कौरवोंकोभी घायल किया तदन-
न्तर बड़े धनुष धारी द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें अपनी सेनाको इकट्ठा
करके और अच्छे प्रकसोर नियत करके धृष्टद्युम्न के सन्मुख गये
और वहांजाकर उन्होंने धृष्टद्युम्नके ऊपर ऐसी बड़ीभारी बाणोंकी
बर्षाकरी ५१ जैसेकि अत्यन्त कोपयुक्त इन्द्र अकस्मात दानवों पर
करताहै द्रोणाचार्य्यके बाणोंसेकंपायमान वहपांडव औरसृंजय५२
बारंबार भयभीत होकर कांपनेलगे जैसेकि सिंहसेअन्य मृगादिक
कांपतेहैं उसी प्रकारवह बलवान द्रोणाचार्य्यजी पांडवोंकी सेनामें
अलातचक्र अर्थात् बनेठीके समान घूमनेलगे यहसबको बड़ाआ-
श्चर्य्यसाहुआ ५४ आकाशमें घूमनेवाला नगरके समान शास्त्रके
अनुसार बनायाहुआ अथवा सब शत्रुओंके डरानेवाले उस उत्तम
रथपर जोकि आनन्दरूप चलायमान घोड़ेवाला अथवा वायुसे
चलायमान पताका रखनेवालाथा और स्फटिकके समान जिसकी

स्वच्छ ध्वजाथी ऐसे रथपर सवार होकर द्रोणाचार्य्यजीने शत्रुओं की सेनाकोमारा ५५

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

संजयबोलेकि इसरीतिसेघोड़े औरसारथियों समेतरथ औरहाथियोंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यको देखकर पांडवलोग बड़े पीड़ामान हुये औरउनको न रोकसके १ इसकेपीछे राजायुधिष्ठिरने धृष्टद्युम्न और अर्जुनसे कहाकि सब ओरसे उपाय करनेवाले शूरबीरों समेत द्रोणाचार्य्यको हटाना चाहिये २ वहां अर्जुन और अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्नने उनको घेरलिया फिरतोसब महारथो चारोंओर सेदौड़े ३ पांचोंकैकेय भीमसेनअभिमन्यु घटोत्कच युधिष्ठिर नकुल सहदेव मत्स्य देशीय और इसीप्रकार राजाद्रुपदके पुत्र ४ अत्यन्त प्रसन्नचित्त द्रौपदीकेपुत्र और सात्विकी समेत धृष्टकेतु और अत्यन्त क्रोधयुक्त चेकितान महारथो युयुत्सु और हे राजा पांडव केपीछे चलनेवाले जो अन्य २ राजाथे उनसबनेकुलऔर पराक्रमके अनुसार कर्मोंको बहुत प्रकार से किया ६ फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें पांडवोंसे अच्छी रीतिसे रक्षित उससेनाको देखकर बड़े क्रोध युक्तदोनोंनेत्रोंको निकालकर देखा ७ युद्धमें कठिनतासे बिजय होनेवाले उन द्रोणाचार्य्यजीने बड़े क्रोधयुक्त होकर पांडवों की सेनाको ऐसे घायल किया जैसेकि बायु बादलको करताहै ८ द्रोणाचार्य्य जहां तहां रथघोड़ेमनुष्य और हाथियोंके भी सन्मुख दौड़े और वृद्धहोकरभी तरुण और मदोन्मत्तकेसमान घूमनेलगे ९ हेराजा निश्चय करके उस के वह लालरंगकेसे घोड़े जोकि रुधिर से लिप्त शरीर बायुकेसमान शीघ्रगामी आजानेय जातवालेथे वह बिना बिश्राम लेतेहुये घूमतेथे१०उसकालके समानक्रोधयुक्त सावधान व्रतको आताहुआदेखकर पांडवोंके शूरबीर जहां तहांभागे११ उनभागते फिर लौटते देखते और नियत होतेहुये युद्ध कर्त्ताओंके

शब्द महाभयकारी और कठिनहुये १२ वीरलोगोंकी प्रसन्नता उत्पन्नकरनेवाले भयभीतोंके भयबढ़ानेवाले शब्दने पृथ्वी और आकाशके मध्यभागको सबओरसे भरदिया १३ इसके अनन्तर युद्धमें नामकोसुनातेहूये सैकरोंबाणोंसेशत्रुओंको ढकते द्रोणाचार्य्यनेफिर अपनेरूपको रुद्ररूपकिया१४ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र वह वृद्धद्रोणाचार्य्य तरुण और महाबलवानके समान पांडवोंकी उन सेनाओंके मध्यमें कालके समान भ्रमणकरनेलगे१५ भयकारी शिरोंको और भूषणोंसे अलंकृत भुजाओंकोभी काटकर रथके ऊपर नियत होनेवालेशूर बीर महारथियोंको पुकारे१६ हेसमर्थ उसकी प्रसन्नताके शब्दोंसे और बाणोंके वेगसे शूरबीरलोग ऐसे अत्यन्त कंपायमानहुये जैसे कि शरदीसे पीड़ामान गौएं कंपायमान होतीहैं १७ द्रोणाचार्य्य के रथके व धनुष और प्रत्यंचाके खैंचनेके शब्दोंसेआकाशमें महाभयकारी शब्द उत्पन्नहुये १८ इन द्रोणाचार्य्यके धनुषसे निकलकर घूमनेवाले हजारोंबाण सबदिशाओंको व्याप्तकरके हाथी घोड़ेरथ और पदातियोंके ऊपरगिरे १९ पांडवोंसमेत पांचालोंने उनद्रोणाचार्य्यकी सन्मुखताकही जिनके बड़े वेगवान धनुष और प्रकाशित अग्न्यास्त्रथे २० द्रोणाचार्य्यने थोड़ेही समयमें उनसबको हाथी घोड़े और पदातियों समेत यमलोककोभेजा और पृथ्वीको रुधिर रूपकीचवाली करदिया २१ उत्तम शस्त्रोंको छोड़ते और बराबर बाणोंको चलाते द्रोणाचार्य्यका रचाहुआ बाणोंकाजाल दिशाओं में दिखाईदिया २२ उसके ध्वजा पदाती और रथकेघोड़े औररथों के मध्यभी सब ओरसे ऐसे दृष्टपड़े जैसे कि बादलोंमेंघूमती हुई बिजली होतीहैं२३ वे बड़े साहसी हाथ में धनुषबाण धारणकरनेवाले द्रोणाचार्य्य केकय देशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ पांचों राजकुमार और राजाद्रुपदको बाणोंसे मथनकर युधिष्ठिरके सन्मुखगये २४ भीमसेन अर्जुन और शिनीकापौत्र, द्रुपदकापुत्र, सात्विकी, शैव्यात्मज, काशिपति, शिवि, इनसब शूरोंने उन द्रोणाचार्य्यजीको देखकर बाणोंके समूहोंसे ढकदिया २५ द्रोणाचार्य्यजी के धनुषसे छूटेहुये

सुनहरी पुंखवालेबाण उनसब वीरोंके और हाथी घोड़े और अन्य वीरलोगोंके शरीरोंको वेधकररुधिरमें भरेहुये पृथ्वीमें समागये २६ वहपृथ्वी शूरवीरोंके समूह टूटेहुये बाण और गिरेहुये हाथीघोड़ोंसे ऐसी ढकगई जैसेकि कालके मेघोंसे आच्छादित आकाशहोताहै २७ आपकेपुत्रोंका ऐश्वर्य्य चाहनेवाले द्रोणाचार्य्यनेसात्विकी, भीमसेन, अर्जुन, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु, द्रुपद, काशीनरेश, और युद्धमें अलंकृत अन्य बहुतसे बीरोंको पराजयकिया २८ हेकौरवेन्द्र राजा धृतराष्ट्र महात्मा द्रोणाचार्य्यभी इनकर्मोंको औरअन्य२ कर्मोंको करके और कालरूपसूर्य्यके समान लोगोंको तपाकर इसलोकसे स्वर्गकोगये २९ इसरीतिसेवह शत्रुओंकी सेनाको पीड़ादेनेवाले स्वर्णमयीरथपर सवार द्रोणाचार्य्य महाभारीकर्मकोकरके औरयुद्धमेंपांडवोंके लाखों शूरबीरोंको मारकर धृष्टद्युम्नके हाथसे गिरायेगये ३० युद्धमें मुख न मोड़नेवाले आचार्य्यने शूरोंके एक अक्षौहिणीसेभी अधिक समूह को मारकर और आपभी घायल होकर परमगतिको पाया ३१ हे-राजावह स्वर्णमयी रथपरसवार द्रोणाचार्य्य अत्यन्त कठिनकर्म-कोकरके अशुभऔर क्रूरकर्मी पांचालोंसमेत पांडवोंसे मारेगये ३२ तदनन्तर युद्धमें उन आचार्य्यजीके मरनेपर आकाशमें जीवोंकेऔर सेनाके मनुष्योंके बड़े शब्द प्रकटहुये ३३ स्वर्ग पृथ्वी आकाश दिशा और विदिशाओंकोभी शब्दायमान किया और जीवों के यह उच्च स्वरसेशब्दहुये कि क्षत्री धर्मको धिक्कारहै ३४ देवता पितरों ने और जो उसके पीछे बान्धवथे उन्होंने वहांपर मरेहुये महारथी द्रोणाचार्य्यको देखा ३५ फिरपांडवोंने बिजयकोपाकर सिंहनादोंको किया औरअत्यन्त सिंहनादोंकेहोनेसे पृथ्वीबड़ी कंपायमानहुई ३६

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजीबोले कि पांडवऔरसृंजियोंने उनअस्त्रोंमें कुशलसबशस्त्र धारियोंके शिरोमणि द्रोणाचार्य्यको क्याकर्मकरते हुयेमारा १ इनका

रथ टूटा अथवा खिंचाहुआ धनुष टूटा या यह द्रोणाचार्य्य विमोह को प्राप्तहुये जिससे कि उन्होंने मृत्युको पायाः हेतात राजाद्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्नने उन शत्रुओंसे भय न करनेवाले और सुनहरी पुंखवाले बाणोंके समूहोंको बहुत प्रकारसे फैलानेवाले३ हस्तलाघवी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठसाधु अपूर्व्व युद्धकर्त्ता दूरः के स्थानोंपरदौड़ने वाले जितेन्द्री शस्त्रोंके युद्ध में प्रवीण ४ दिव्य अस्त्रोंके धारण करनेवाले अजेय भयकारी कर्मों के करनेवाले महासाहसी और महारथी द्रोणाचार्य्यको मारा ५ प्रकटहैकि उपाय करनेसे होनहार भावीप्रबल है यहमेरा मतहै जिसके कारणसे कि महात्मा धृष्टद्युम्न के हाथसे द्रोणाचार्य्यमारेगये ६।७ जिस शूरबीरमें चार प्रकारके अस्त्र नियतथे उसबाण और अस्त्रोंके धारण करनेवालेमेरे आचार्य्यको मराहुआ कहताहै अबमैं उसव्याघ्र चर्मसेमढ़े सुनहरी जात रूपनाम सुवर्णसे चित्रित रथवालेको मृतक सुनकर शोकको करताहूं ८ हे संजय निश्चय करके कोई मनुष्यभी दूसरेके दुखसे नहीं मरताहै जो मैं निर्बुद्धी उन द्रोणाचार्य्यजीको मृतक सुनकर जीवताहूं ९ मैं होनहारको अधिकतर मानताहूं और उपायकरना निरर्थकहै जो मैं अल्पबुद्धी उन द्रोणाचार्य्यको मृतकहुआ सुनकर जीवताहूं १० निश्चय करके मेराहृदय बज्रसेभी कठोरहै जोद्रोणाचार्य्यजीको मृतक सुनकर सौप्रकारसे खण्ड २ नहींहोता है ११ गुणके चाहनेवाले ब्राह्मण और राजकुमारोंने ब्रह्मास्त्र और देवताओंकेअस्त्र इसीप्रकारबाणविद्यामें भी जिसकीउपासनाकरी वहकैसे मृत्युसे हरागया १२ शुष्क समुद्र वा मेरुकीचलायमानता अथवा सूर्य्यके पतनहोनेके समान द्रोणाचार्य्यके गिरानेको नहींसहसक्ता हूं १३ वह पापियोंको निषेध करनेवाला और धर्म करने वालोंका रक्षक हुआ और जिसशत्रुसंतापीने उसनीचके निमित्तप्राणोंको भी त्यागकिया१४ और जिसकेपराक्रममें मरेअभागे पुत्रोंको बिजयकी आशाथी औरजो बुद्धिमें बृहस्पतिजी और शुक्रजीके समानथा वह कैसे मारागया १५ वह लालरंगवाले बड़े घोड़े सुनहरी जालोंसे

ढकेहुये बायुके समान शीघ्रगामीरथमेंजुड़े और युद्धमेंसब शस्त्रोंको उल्लंघनकरके चलनेवाले १६ पराक्रमी हिंसन शब्दकरनेवाले शिक्षा पायेहुये सिंधदेशी श्रेष्ठलोगोंके सवारकरवानेवाले युद्धमें भयाकुल होकर भयभीततोनहींहुये १७ युद्धमेंशंखऔर दुन्दुभियोंके शब्दोंसे चिंघारते हाथियोंको प्रत्यंचाकेआघातको और बाणोंसमेतशस्त्रोंकी बर्षाके सहनेवाले १८ शत्रुओंके बिजय करनेकी आशाकरने वाले श्वास और पीड़ाके जीतनेवाले शीघ्रगामी द्रोणाचार्य्य के रथ के लेचलने वाले घोड़े पराजयहुये १९ हेतात स्वर्णमयी रथमें जुड़े हुये नरबीरोंकेहाथसे घायलउनघोड़ोंने पांडवोंकी सेनाको कैसेनहीं तरा २० सत्यपराक्रमी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य जीने जातरूप नाम सुबर्णसे अलंकृत और उत्तमरथ परसवार होकर युद्धकेमध्यमें क्या किया२१ सबलोककेधनुषधारी जिसकीबिद्यासे अपनीजीविकाऔर निर्बाहकरतेहैं उस सत्यसंकल्पी पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने युद्धमेंक्या किया २२ जिसप्रकारकि स्वर्गमें इन्द्रउत्तमहै उसी प्रकार कौनसे रथी युद्धमें उसश्रेष्ठ और धनुष धारियोंके वृद्धभयकारी कर्म करने वालेके सन्मुखगये २३ पांडवलोग उस स्वर्णमय रथवाले दिव्य अस्त्रोंके चलानेवाले महाबलीको युद्धमें देखकर भागे २४ कहोंकि धर्मराज युधिष्ठिरने अपनेछोटेभाई और सबसेना समेत धृष्टद्युम्न सेनापति होनेमें द्रोणाचार्य्यको सबओरसे घेरलिया २५ निश्चय करके अर्जुनने सीधे चलनेवाले बाणोंसें अन्यरथियोंको रोकदिया इस हेतु से पापकर्म करने वाला धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के ऊपर चढ़ाई करके प्रबल होगया २६ मैं उस अर्जुनसे रक्षित रुद्र धृष्टद्युम्न के सिवाय द्रोणाचार्य्य के मारने की सामर्थ्य किसी शूर में नहीं देखता हूं २७ इस हेतुसे पांचाल देशियों में नीच और सब ओरसे उन कैकेय चन्देरी कारुष्य और मत्स्य देशियों के शूरबीर आदि अन्यराजाओं से घिरेहुये शूर धृष्टद्युम्न ने २८ कठिन कर्मों में प्रवृत्त जैसेकि चेटियों से व्याकुल सर्पहोताहै उसीप्रकारसे महा व्याकुल आचार्य्य जोकोमाराहै यहमेरा मतहै २९ जो अंगोंसमेत

चारों वेद जिनमें कि पांचवां इतिहास है उनको पढ़कर ब्राह्मणों में ऐसा प्रतिष्ठावानहुआ जैसे कि नदियोंमें समुद्रको प्रतिष्ठाहोती है ३० जो शत्रुओं का तपाने वाला इसलोकमें क्षत्री और ब्राह्मण के धर्ममें नियत हुआ उस वृद्धब्राह्मणने किसप्रकारसे शस्त्र बिद्यामें लड़ कर गति को पाया ३१ सदैव मुझसे अप्रसन्न और कुन्ती के पुत्रसे पूजन नपाने वाले अशान्त चित्त में उसको क्षमाकिया उसी का यह फल है ३२ लोकके मध्यमें सब धनुष धारीजिसके कर्म के अनुसार कर्मोंको करते हैं वह सत्य संकल्पी शुभकर्मी किस रीतिसे धनाभिलाषी पुरुषोंके हाथसे मारागया ३३ स्वर्ग में रहने वाले इन्द्रके समान श्रेष्ठ महाबली और पराक्रमी थे वह पांडवोंके हाथ से ऐसे क्योंमारे गये जैसेकि छोटी मछलियों के हाथसे तिमि नाममत्स्य मारा जाताहै ३४ वह हस्तलाघवी महाबली बड़े दृढ़ धनुष का रखने वाला और शत्रुओंका मर्द्दनकरनेवालाथा बिजयाभिलाषी जिसके देशको पाकर जीवता नहींरहताहै ३५ जिस जीवते हुये को दो प्रकार के शब्दोंने कभी नहीं त्याग किया वेद चाहने वालोंको वेदध्वनि और धनुष धारियों को प्रत्यंचाका शब्द ३६ मैं उसबड़े साहसी पुरुषोत्तम लज्जायुक्त अजेयसिंह औरहाथीके समान पराक्रमी द्रोणाचार्य्य का मरना नहीं कह सक्ता हूं ३७ हे संजय धृष्टद्युम्नने युद्धकेमध्यमें सबराजाओंके देखतेहुये उसनिर्भय अजेय यशी और महा पराक्रमीको किस प्रकारसे मारा ३८ द्रोणाचार्य्य को सन्मुख से रक्षा करते हुये कौनआगे युद्ध करने वाले हुये और दुःखसे मिलने वाली गतिके पानेवाले उसी द्रोणाचार्य्य के पीछे कौन २ बर्तमान हुये ३९ युद्धमें लड़ते हुये उसीबीर महात्मा के दाहिने और बायें चक्रको किस २ ने रक्षितकिया और किनलोगोंने आगेसे रक्षाकरी४० और किन२पुरुषोंने उसयुद्धमें शरीरोंको त्याग कर बिपरीत मृत्युको पाया और कौनसे बीरोंने द्रोणाचार्य्यके युद्ध में परम गतिको पाया ४१ निर्बुद्धी रक्षा करनेवाले क्षत्रियोंने भय से युद्धमें उसको त्यागतो नहींकर दिया जिससे कि एकाकीहोकर

शत्रुओंके हाथसे मारागयाहो४२ वहमहा आपत्तिमेंभी प्राप्तहोकर अपनी बीरताके कारण शत्रुओं के भयसे पीठनहीं दिखला सक्ताथा वह किसरीतिसे शत्रुओंके हाथ से मारागया ४३ हे संजय दुःख और आपत्तियोंकेप्राप्त होजानेपर श्रेष्ठलोगोंको यहोकरनेके योग्य है कि सामर्थ्यके अनुसार पराक्रमकरे तो वहीगुण उसमें नियत है ४४ हे तात अब मेरा चित्त मोहित अर्थात् बिह्बल हुआ जाताहै तबतक कथा बन्दकरो जब मुझको सावधानी होगी तब मैं फिर तुमसे पूछूंगा ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिनवमोऽध्यायः ९ ॥

दसवां अध्याय ॥

बैशंपायनजी बोलेकि सूतके पुत्र संजय से इतना पूछकर हृदय के शोकसे अत्यन्त पीड़ामान पुत्रोंकी बिजयमें निराशावान होकर धृतराष्ट्र पृथ्वीपर गिरपड़े १ तब सेवक लोगोंने उस असावधान निश्चेष्ट गिरे हुये सजीवके ऊपर अत्यन्त शीतल और सुगन्धित जलसे सींचा २।३ हे महाराज भरत बंशियोंकी स्त्रियोंने उसपृथ्वी परगिरेहुये धृतराष्ट्र को देखकर चारोंओरसे घेरकर हाथोंसेस्पर्श किया अर्थात् पकड़ा अश्रुपातोंसे पूर्ण सुन्दर मुखवाली स्त्रियोंनेबड़े धीरेपनेसे इसराजाको पृथ्वीपरसे उठा कर आसन पर बैठाया ४ तबमूर्च्छासे संयुक्त राजा आसनकोपाकर चारोंओरसेपंखोंको बायु का लेनेवाला होकर निश्चेष्ट और निश्चल होकर नियत हुआ ५ उस कंपायमान राजाने बड़ेधीरेपने से सावधानी को पाकर फिर गोलकनके पुत्र सूतसंजयसे सत्यवृत्तान्तपूछा ६ कि उस सूर्य्यके समान उदयहोनेवाले अपनी ज्योतिसे अन्धकारको दूर करनेवाले अजातशत्रु युधिष्ठिर को किसने द्रोणाचार्य्य की ओर से हटाया ७ मदझाड़नेवाले क्रोधयुक्त वेगवान् हाथीकेसमान प्रसन्नमुखहाथीके सन्मुख जानेवालेको किसनेरोका ८ जोकि उसरीतिसे बिजय करने के योग्यनथा जैसेकि अपनी हस्थिनीसे संग करते झुंडके प्रधानोंसे

हाथी अजेयहोताहै उसपुरुषोत्तम बीरने युद्धमें बड़े२ बीरोंकोमारा ६ जो बड़े बली धैर्य्यवान् सत्यसंकल्पी अकेलाही अपने घोर नेत्रों से दुर्योधन की सबसेनाको भस्मकर सक्ताथा १० उस नेत्रसेमार ने वाले बिजय में प्रवृत्त धनुषबाणधारी अजेय जितेन्द्री और लोक में महा मान्यको किन २ शूरोंने रोका ११ वहांपर मेरेकौन २ से शूरोंने उस निर्भय धनुषबाणधारी अबिनाशी पुरुषोत्तम राजा युधिष्ठिरसे अच्छे प्रकार करके सन्मुखता करी १२ फिर जो तीव्रता से आकर द्रोणाचार्य्यके सन्मुख दौड़ा और जो बड़ा पराक्रमी शत्रुओंके युद्धमें बड़े कर्मका करने वालाहै १३ वहबड़े शरीर और उत्साहवाला बलमें दशहजार हाथीकेसमानहै उसआतेहुये भीमसेन को किन२शूरोंनेरोका१४।१५ जबबादलके समान बड़ेरथमेंबैठाहुआ महा पराक्रमी बीर्य्यमान इन्द्रके समान बाणरूप बज्रों को फेंकता तल और नेमियोंके शब्दोंसे सब दिशाओं को शब्दायमान करता अर्जुनआया धनुषरूपबिजलीका प्रकाश रखनेवालाभीके शब्दरूप गर्जना का करने वाला व बाणोंके शब्दोंसे अत्यन्त सुन्दर१६।१७ क्रोधजन्य जीमूतनाम बादल रखनेवाला चित्तके बिचारके समान शीघ्रगामी मर्मोंको भेदकर चलनेवालेबाणोंका धारण करने वाला रुधिररूप अथाह जल रखनेवाला दिव्य दिशाओं को चलायमान करता मनुष्योंसे पृथ्वीको आच्छादित करता भयकारी शब्दवाला जो अर्जुनहै १८उसबुद्धिमान गांडीवधनुषधारी अर्जुननेयुद्धमें दुर्योधनादिकोंको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे स्नान कराया तब तुम्हारा मनकैसा हुआ १६। २० आकाश को बाणों से पूर्ण करता उत्तम बानरी ध्वजा रखनेवाला जब वह अर्जुन आयाउस समय तुम्हारा चित्त कैसा हुआ२१गांडीव धनुषकेशब्दसे सेनाकातो नाशनहींहुआ जब वहअर्जुन महाभयकारी युद्ध करता तुम्हारे सन्मुख आया उस समय अर्जुननेबाणोंसे तुम्हारेप्राणोंको तोशरीरसे पृथक् नहींकिया और जैसेबायु वेगसे बादलोंको घायल करताहै उसी प्रकारबाणोंके समूहोंसे राजाओंको घायलकिया२२।२३ कौनमनुष्य युद्धमेंगांडीव

धनुषधारी के सहनेके योग्यहै तब सेना के पुरुषके समूह जिसको सेनाके आगेहुआ सुनकर व्याकुल होकर भागतेहैं २४ वह सेना जब अत्यन्त कंपायमान हुई अथवा बीरोंको भयने स्पर्श कियाथा उससमय किन २ लोगोंने द्रोणाचार्य्य को नहींत्याग किया और कौनसे नीचपुरुष भयसे व्याकुल होकर भागे २५ वहांकिन लोगों ने शरीरको त्यागकरके बिपरीत मृत्यु को पाया जहां कि युद्ध में देवताओंकेभी बिजय करनेवाले अर्जुनको अपने सन्मुखपाया २६ मेरे पुत्र अथवा अन्यशूरबीर उसश्वेत घोड़े रखने वाले अर्जुनके वेगको और वर्षाऋतुके बादलके समान गांडीव धनुषके शब्द को सह नहीं सकेंगे २७ जिसके सहायक श्रीकृष्णजीहैं और युद्ध करने वाला बीरअर्जुनहै वहरथी देवता और असुरों सेभी बिजय करना असंभवहै यहमुझे पूर्ण निश्चयहै २८ यह पांडव सुकुमार युवाशूर बीरऔर दर्शनीय होकर मेधावान निपुण बुद्धिमान और संग्राम में सत्य पराक्रमी है २९ बड़े शब्दको करते सब सेनाके मनुष्यों को पीड़ामान करतेहुये और द्रोणाचार्य्यके सन्मुख आनेवाले उसनकुल को कौन २ से शूरबीरोंने रोका ३० जब सर्पके समान क्रोध युक्त युद्धमें अपने तेजसे पराजय नहोने वाले सहदेव शत्रुओंके नाशको करता हुआ सन्मुख आया ३१ उस श्रेष्ठ पुरुषोंके व्रत रखने वाले सफल बाणवाले लज्जावान् अजेययुद्धमें आतेहुये सहदेवको किन२ शूरबीरोंने रोका ३२ जिसने राजा सौबीर को सेनाको मथनकरके शरीरसे शोभायमान सुन्दर भोजबंशी पटरानीको हरणकिया ३३ और उसी पुरुषोत्तम युयुधान में सत्यता धैर्य शूरता और पबित्र ब्रह्मचर्य्य व्रत इत्यादि सब गुणथे ३४ उस पराक्रमी सत्य कर्मी उदार बुद्धिमहासाहसी अजेय युद्धमें बासुदेवजीके समान अथवा बासुदेवजीसे अन्तरहित ३५ अर्जुनकी शिक्षासे बाण और अस्त्रों के कर्ममें श्रेष्ठ अस्त्रबिद्यामें अर्जुनके समान उस युयुधानको किसने द्रोणाचार्य्य की ओरसे रोका ३६ जोकि वृष्णि बंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठबड़ा बीरसब धनुष धारियोंमें प्रबल शूरयश पराक्रम केसाथ

अस्त्रों में बलदेवजीके समान है ३७ सत्यता धैर्य्य बुद्धि शूरता सर्बोत्तम ब्रह्मास्त्र यह सब उसी यादव में इसरीतिसे नियतहैं जैसे कि तीनोंलोक केशव जी में नियत हैं ३८ इसरीतिके सब गुणों से युक्त और देवताओंसे भी अजेय बड़े धनुषधारी उस यादव को किन शूरोंनेरोंका ३९ पांचालदेशियोंमें श्रेष्ठवीर औरउत्तम जीवोंके प्यारे सदैव उत्तम कर्म वाले युद्धमें उत्तम पराक्रम वाले ४० अर्जुन के हित करनेमें प्रवृत्त और मेरे अनर्थके निमित्त तत्पर और यमराज कुबेर सूर्य्य महा इन्द्र और बरुण नाम देवताओंके समान४१ महारथी नामसे विख्यात और तुमुल युद्धमें द्रोणाचार्य्यके बिजय करनेके निमित्त उपाय करनेवाले प्राणोंके त्यागनेवाले धृष्टद्युम्नको किस २ शूरबीरनेरोंका ४२ जो अकेलाही चंदेरी देशबासियोंसेपृथक् होकर पांडवोंमें संयुक्तहुआ उस द्रोणाचार्य्यके सन्मुख आनेवाले धृष्टकेतुको किसनेरोंका ४३ जिस ध्वजाधारीवीर ने कठिनता से बिजय होनेवाले पर्व्वतके द्वारपर भागनेवाले राजकुमारको मारा उसको द्रोणाचार्य्यकी ओरसे किसनेरोंका ४४ जो पुरुषोत्तम स्त्री और पुरुषके गुण अवगुणोंका जाननेवालाहै उसयुद्धमें प्रसन्न मन और लड़ाईमें महात्मा देवव्रत भीष्मजी की मृत्युके कारण और द्रोणाचार्य्य के सन्मुखजातेहुये राजाद्रुपदके पुत्र शिखंडीकोकिन२ शूरोंने रोंका ४५ जिसबीरमें सबगुण अर्जुनसे अधिकहैं औरजिस में सब अस्त्र सत्यता ब्रह्मचर्य्य सदैव बल पराक्रममें बासुदेवजीके समान बलमें अर्जुनके तुल्य तेजमेंसूर्य्यके समान बुद्धिमें बृहस्पति जीके सदृश ४६ महात्मा व्यात्तानन मृत्युके समान द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जातेहुये अभिमन्युको किन शूरोंने रोंका ४७ तरुण अवस्था युवा बुद्धि शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला अभिमन्यु जबद्रोणाचार्य्यके सन्मुख दौड़ा तब तुम्हारा चित्तकैसा होगयाथा ४८ जैसे कि नदियां समुद्रको वेगसे जातीहैं उसीप्रकार पुरुषोत्तम द्रौपदी के पुत्र अपने आपहीजब द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये तब उनकोकिस २ शूरने रोंका ४९ जोवह धृष्टद्युम्नके पुत्र बालक वीर बारहबर्ष की

अवस्थावाले और क्रीड़ा कुतूहलोंको छोड़कर उत्तम व्रतको धारण करतेहुये अस्त्रोंके निमित्त भीष्मजीके पास निवासीहुये ५० जिनके नाम क्षत्रंजय क्षत्रदेव क्षत्रबर्मा और मानद हैं उनको द्रोणाचार्य्यकी ओरसे किस २ शूर बीरने रोंका ५१ वृष्णियोंने जिस बड़े धनुषधारी चेकितानको सौ शूरबीरोंसेभी उत्तममाना उसको द्रोणाचार्य्यकीओरसे किसनेरों का ५२ जिस अनाधृष्टी अदीनात्मा वार्द्धक्षेमीने युद्धमें कलिंगदेशियोंकी कन्याकोहरणकिया उसको किसने द्रोणाचार्य्यको ओरसे रोंका ५३ पांचोंकैकेय आदि धार्मिक और सत्यविक्रम इन्द्र गोपकनाम जीवकेसमान रक्तवर्ण कवचशस्त्र और ध्वजाको भी अरुणही रखनेवाले ५४ पांडवोंकी मौसोकेपुत्र बड़े बीर पांडवोंकीही बिजयके चाहनेवालेहैं द्रोणाचार्य्यके मारने को आनेवाले उनपांचोंको द्रोणाचार्य्यको ओरसे कौन २ से बीरोंने रोंका ५५ क्रोधयुक्त मारनेकेअभिलाषी छः महीनेतक लड़ते हुये राजालोगोंनेभी जिसशूरबीरोंके प्रधानको वारणावत नगरमेंबिजय नहीं किया ५६ उस धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ नरोत्तम शूरसत्य संकल्प महाबली युयुत्सुको किसने द्रोणाचार्य्यकी ओरसेरोंका ५७जिसने बाराणसी अर्थात् काशीमें काशीके राजाके पुत्र महारथी स्त्रियों में आसक्त होनेवालेको युद्धमें अपने भल्लकेद्वारा रथसे गिराया ५८ उस बड़े धनुषधारी पांडवोंमें मुख्यमंत्री दुर्य्योधनके अनर्थमें प्रवृत्त द्रोणाचार्य्य के मारनेके निमित्त उत्पन्न ५९ युद्ध में शूरबीरोंको जलाते और सब ओरसे छिन्न भिन्न करते और द्रोणाचार्य्यके सन्मुखआते उसधृष्टद्युम्नको कौन २ से शूरबीरोंनेरों का ६० द्रुपदकी गोदीमें पोषण पानेवाले अस्त्रों के उत्तम जाननेवाले शस्त्रोंसे रक्षित शिखंडीको कौन से युद्ध कर्त्ताओं ने द्रोणाचार्य्यकी ओरसे रों का ६१ जो श्रेष्ठ शत्रुओंका मारनेवाला महारथी रथके बड़े शब्दके साथ इस सम्पूर्ण पृथ्वीको चमड़े के समान लपेट लेवे और प्रजाओंको पुत्रोंकेसमानपोषण करते इसराजानेअच्छे अन्न६२ पान और उत्तम दक्षिणा वाले दश अश्वमेधोंको किया वह सब

यज्ञ अर्गल से रहितथे अर्थात् उस यज्ञ में किसी देखने वाले की रोंक नथी ६३ गंगा नदी में जितने किबालूके कणहैं उतनीहीगौयें यज्ञमें उसबीर उशीनरके पुत्रने दानकींह्न४कठिनतासे करनेकेयोग्य कर्मके करनेपर देवताओंने बड़े उच्चस्वरसे यहबचन कहा कि पहले और दूसरेमनुष्योंमेंसे किसीने यह नहींकियाह्न५अब तीनोंलोक में जीवधारियों के मध्य सिवाय उशीनरके पुत्र शिवीके राज्यका भार उठाने वाला अन्य किसी बर्त्तमानको अथवा आगेउत्पन्न होनेवाले को भी नहीं देखतेहैं लोकबासी मनुष्य जिसकी गतिको नहींपावेंगे ६६।६७ उसकेपौत्र धनसे अत्यन्त उदार मृत्युके समान द्रोणाचार्य्य के सन्मुख आनेवाले शिवीको किस पराक्रमी शूरने रोंकाह्न८शत्रुओंको मारने वाली राजाविराट की रथसेना जोकि युद्धमें द्रोणाचार्य्य को चाहने वालीथी उस सेना को किन२ बीरोंने रोका ६९ भीमसेभी अधिक बल पराक्रमका रखने वाला मायाबी बीरराक्षस जोकि शीघ्रही उत्पन्न हुआहै उससे मुझको बड़ाहीभय उत्पन्नहोता है ७० पांडवोंके विजयकरनेके अभिलाषी मेरे पुत्रोंके कंटक रूप उस बड़े साहसी घटोत्कचको द्रोणाचार्य्य की ओरसे किसने रोंका ७१ हे संजय जिन्होंके निमित्त यह और अन्य बहुतसे शूरबीरलोग युद्धमें प्राणोंके त्याग करने वालेहैं युद्ध में जिनका अजेय कोई भी नहींहै ७२ जिन पांडवोंका रक्षा स्थानशार्ङ्ग धनुषधारी पुरुषोत्तम है और उनके प्रियहित का भी चाहने वालाहै उनकी पराजय कैसे होसक्ती है ७३ लोकों के गुरू लोकनाथ और सनातन नारायण दिव्यात्मा दिव्य प्रभु श्रीकृष्णजीयुद्धमें जिनके स्वामीहैं ७४ ज्ञानी लोग जिनके जिनकर्मों को कहते हैं मैं अपने धर्मके निमित्त भक्ति पूर्व्वक उनको कहूंगा ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय अब बासुदेवजी के दिव्यकर्मों को

सुनो जिन २ कर्मोंको कि श्री गोबिन्दजीने किया उनकर्मोंको कोई अन्य पुरुष कहीं भी नहीं करसक्ता १ हे संजय गोपकुल में पोषणपाने वाले महात्मा बालकनेही तीनों लोकोंमें अपने भुजबलको बहुत प्रकारसे अच्छी रीतिसे विख्यात किया २ और उच्चैःश्रवाके समान बल शीघ्रगामीपनेमें तीव्र वायुकेसमान जमनाके बनबासी घोड़ोंके राजा केशीकोमारा३ बाल्यावस्थामें भयकारीरूप गौवोंका काल रूप बैलकी सूरत धारण करने वाला वृषभासुरको अपनी भुजाओंसे मारा ४ इसीकमललोचन ने प्रलम्ब नरकासुरजंभपीठ और मृत्युके स्वरूप मुरनाम दैत्यकोभी मारा ५ और इसीप्रकार से जरासन्धसेपोषणपाया हुआ बड़ातेजस्वीकंस अपने सबराक्षसों के समूहों समेत युद्धमें श्रीकृष्णजी से मारागया ६ इसी प्रकार कंस का भाई महाबली युद्धमें पराक्रमी और पूरी अक्षौहिणी सेना का स्वामी बड़ा बेगवान् शूरसेन देशके राजा भोजराजके मध्यवर्ती सुनामा नामभी इस शत्रु संहारी बलदेवजीको साथमें रखने वाले श्रीकृष्णजीके हाथ से युद्ध में अपनी सब सेनासमेत मारा गया७।८ इसी प्रकार स्त्री समेत श्रीकृष्णजीने महाक्रोधी दुर्बासा ऋषिको भी सेवन किया उसने उनको अनेकबरदान दिये ९ इसी प्रकार यह कमललोचन बीर श्रीकृष्णजी स्वयंवर में राजाओंको बिजय करके गांधार देशके राजाकी पुत्रीकोलाये १० सहन न करने वाले राजा लोग एकजातिके घोड़ोंके समान जिसके बिवाहके रथ में जोते गये और चाबुकसे घायलहुये ११ जनार्द्दनजीनेपूरी अक्षौहिणी के स्वामी महाबाहु जरासन्धको बड़े उत्तम उपायसेमारा१२ और इसी बलवान् ने चदेरीके स्वामी महापराक्रमी अर्घपर प्रथम पूजनकेबिवाह करनेवाले शिशुपाल को पशुके समान मारा १३ इन्हींमाधवजीने आकाशमें नियतराजाशाल्वसे रक्षित और अजेय दैत्योंके सौभ नामपुरको पराक्रम करके समुद्र की कुक्षिमें गिराया १४ और युद्धमें अंग, बंग, कलिङ्ग, मागध, काशी, कौशल, वात्स्य गार्ग्य, करूंष्प, और पौण्ड्र देशियों को भी बिजय किया १५

आवन्त्य और दाक्षिणात्य पर्वती पदशेटक् काश्मीरके और सिक पिशाच मुद्गल १६ कांबोज वाट धान चोल पाण्ड्य संजय त्रिगर्त मालव और बड़ेदुर्जय वदरद देशियों कोभी बिजय किया १७ और नाना दिशाओं से सन्मुख होने वाले अनुगामियों समेत वश और शक जातवालों को और यवन अर्थात् यूनानके राजा को भी बिजय किया १८ पूर्व समय में इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजो ने जलचारी जीव समूहोंके निवास स्थान समुद्रमें प्रवेश करके जल के मध्यवर्त्ती बरुण देवता को युद्ध में बिजय किया १६ और पाताल वासी पंजजन दैत्यको मारकर पांचजन्य नाम शंखको बजाया२० इस महाबली नेही अर्जुन को साथ लेकर खांडवबन में अग्नि को प्रसन्न करके अजेय और महाउत्तम अग्न्यास्त्र चक्रको पाया २१ यही बीर गरुड़पर सवार होकर अमरावती पुरीको भयभीत करके महा इन्द्रके भवनमें से कल्पवृक्ष को लाये २२ इन श्रीकृष्णजी के पराक्रमको जानकर इन्द्रने क्षमाकरी अर्थात् शान्तरहा यहां राजाओंके मध्यमें भी श्रीकृष्णजी से अजेय किसी को नहीं सुनतेहैं २३ हे संजय कमललोचन श्रीकृष्णजीने मेरीसभा में वह महाअपूर्व कर्म किया उसकर्मके करने को इनके सिवाय कौन पुरुष करने को समर्थ है २४ जिस हेतुसे कि मैंने भक्तिके साथ प्रसन्न मूर्ति श्रीकृष्ण ईश्वर को देखा इसी कारणसे सब इनका कर्म मेराजानाहुआहै जैसे कि वेद और शास्त्र से निश्चय करनेके योग्य है २५ हे संजय पराक्रम और बुद्धिसे युक्त इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजीके कर्मोंका अन्तपानेके योग्य नहींहै २६ इसी प्रकार गद, सांब,प्रद्युम्न, बिदूरथ,अंगावह,अनिरुद्ध,चारुदेष्ण,सारण २७ उल्मुक,निशठ, झिल्लो पराक्रमी बभ्रु,पृथु,विपृथु,शमीक, अरिमेजय २८ यह और इनके विशेष अन्यपराक्रमी आघातकरनेवालेबीर वृष्णिबंशीहैं वह वृष्णी बीर महात्मा केशवजीके बुलायेहुये किसी प्रकारसे युद्धमें नियत होकर पांडवोंकी सेनामें संयुक्तहोंगे इनके संयुक्तहोनेके पीछेसब संशयसे युक्त होंगे यहमेराबिचार पूर्वक मतहै २६।३०दशहजार

हाथीकेसमान पराक्रमी और कैलासके शिखरके समान शरीरवाले बनकीमाला और हलमूसलके धारण करनेवाले बीर बलदेवजीभी उधरहीहैं जिधर श्रीकृष्णजी हैं ३१ ब्राह्मणोंने जिन बासुदेवजीको सबका पालन करनेवाला बर्णन किया हेसंजय यह श्रीकृष्णजीभी पांडवोंके निमित्त युद्ध करेंगे ३२ हेतात संजय जब वह पांडवों के निमित्त युद्ध करने को उपस्थितहोयं तो उनके सन्मुख लड़ने वाला हमारी सेनामें कोई न होगा ३३ जोवह अकेलेही सब कौरव और पांडवोंको बिजय करें तो उससमय श्रीकृष्णजी उन पांडवोंके निमित्त उत्तम सलाहको देंगे ३४ तब वह महाबाहु पुरुषोत्तम युद्ध में सबराजाओं और कौरवोंको मारकर इस सब पृथ्वीको कुन्तीको देंगे३५ जिसके सहायक श्रीकृष्णजी और युद्ध करनेवाला अर्जुन है उसके रथके सन्मुख कौन सारथी शूरता करसक्ताहै ३६ किसी प्रकारसेभी कौरवोंको बिजयनहीं दिखाईदेतीहै इस हेतुसे वह सब मुझसे कहो जैसे कि युद्ध जारी हुआ३७ अर्जुन केशवजीकीआत्मा है और श्रीकृष्णजो भी अर्जुनकी आत्माहैं अर्जुनमें सदैव पूर्ण बिजयहै और श्रीकृष्णजी में अबिनाशी कीर्त्ति है ३८ सब लोकोंमें अकेला वही अर्जुन सबसे अजेयहै और केशवजी में उत्तमता के साथ असंख्य गुणहैं ३९ जो दुर्य्योधन यहां अपने मोहसे श्रीकृष्णजीको नहीं जानताहै इसीसे वहदैवयोग से मोहित होके फांसीके आगे नियत है ४० वह श्रीकृष्णजीको और पांडव अर्जुनको नहीं जानताहै वह दोनों महात्मा पूर्बके नरनारायण नाम देवताहैं ४१ यह एक आत्मा दो रूपोंको धारण कियेहुये पृथ्वीपर मनुष्यों को देखनेमें आतेहैं यह दोनों अजेय यशस्वी इच्छाहीसे अर्थात् चित्त के संकल्पही से इस सेनाका नाश करसक्ते हैं ४२ परन्तु नररूप होनेसे ऐसा करना नहीं चाहतेहैं समयको बिपरीतता और लोगों का मोहनहै ४३ हेतात जो यह महात्मा भीष्मजी का और द्रोणाचार्य्यजी का मरनाहै ब्रह्मचर्य्य वेदका पढ़ना ४४ यज्ञ और अस्त्रों के द्वाराभी कोई मनुष्य मृत्युसे नहीं छूट सक्ता है लोक के प्रधान

प्रतिष्ठित और अस्त्र शस्त्रादिके युद्धमें महादुर्मद ४५ शूरवीर भीष्म और द्रोणाचार्य्यको मृतक हुआ सुनकर मैं क्या जीवताहूं अर्थात् मृतकके‌ही समानहूं हेसंजय हम पूर्वसमयमें जिसलक्ष्मीको युधिष्ठिरकेपास देखकर दोष लगातेथे४६ अब उसलक्ष्मीको भीष्म और द्रोणाचार्य्यके मरने से अंगीकार करेंगे यहकौरवोंका नाशभी मेरे ही कारणसे वर्त्तमान हुआहै ४७ हेतात पक्के फलों के नाशकरनेमें घास आदिक तृणभी अत्यन्त कठोर होजातेहैं लोकमेंइसअत्यन्त ऐश्वर्य्यको युधिष्ठिरने पाया ४८ जिसके क्रोधसे महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य जी गिरायेगये उसने स्वभावसे ही धर्मको पाया वह धर्म मेरे पुत्रोंमें नहींहै ४९ यह निर्दय काल सबके नाशके निमित्त पृथक् नहीं होताहै हेतात चित्तवाले मनुष्योंसे अन्य प्रकार से शोचेहुये प्रयोजन ५० दैवकी इच्छासे अर्थात् होनहार और प्रारब्धसे बिपरीतबर्त्तमानहोतेहैं यह मेरामतहै इस हेतुसे हटाने केअयोग्य असंख्य ध्यानसेभी बाहर बड़ेदुःखके बर्त्तमान होनेपर जैसे प्रकारसे हुआ उस सबको ब्यौरे समेत मुझसे कहौ ५१।५२

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बहुत अच्छा जिस प्रकारसे कि मैंने अपने नेत्रोंसेदेखाहै अर्थात् जैसे किपांडव और सृंजियोंसे मारे हुये द्रोणाचार्य्यजी पृथ्वीपरगिरे उस सब बृत्तान्तको मैं आपसे कहताहूं १ महारथी भरद्वाज द्रोणाचार्य्यजी सेनाकी प्रधानताको पाकर सबसेनाके मध्यमें आपके पुत्रसे यह बचनबोले २ हेराजा कौरवोंमेंउत्तम गांगेय भीष्मजीके पीछेजो तुमने अब मुझको सेनाका सेनापतिबनायाहै ३ हे भरतवंशी उसके कर्मके सदृश फलको पावोगे अब तूक्या चाहताहै उसको मांग मैं तेरे कौनसे कामको करूं ४ इसके पीछे राजा दुर्योधन कर्ण औरदुश्शासन आदि समेत उसबड़े विजय कर्त्ताओं में श्रेष्ठ अजेय आचार्य्यजी सेयह बचन बोले ५ कि हे आचार्य्यजी जो

आप मुझको बरदेतेहो तो रथियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिरको जीवता पकड़ कर यहां मेरे सन्मुखलावो ६ यह सुनकर कौरवों के आचार्य्यजो सब सेनाको प्रसन्न करते यह बचनबोले ७ हे राजा कुन्तीकापत्र युधिष्ठिर धन्य है अर्थात् प्रशंसनीय अभीष्ट मनोरथ वाला और प्रतापीहै तुमउसके पकड़नेको चाहतेहो परन्तु उस निर्भयकेमारने को नहींचाहतेहो ८ हेनरोत्तम किसहेतुसे उसकेमरणको नहींचाहताहै दुर्य्योधन निश्चय करके इस हेतु से उसके मारने को नहीं कहताहै ९ कि उस धर्मराज युधिष्ठिरका शत्रु कोई नहींहै जो तुम उसको जीवता चाहतेहो और अपने कुलकी रक्षा करतेहो १० हे भरतर्षभ अथवा तुम युद्ध में पांडवलोगोंको बिजय करके व अपनो ओरसेराज्यको देकर भाईपनेको प्रीति प्रकट किया चाहतेहो ११ कुन्तीकापुत्र राजायुधिष्ठिरधन्यहै औरइससेउसबुद्धिमान्‌कीअजात शत्रुता निश्चय होतीहै क्योंकि जिसपर तुमभी प्रीति करतेहो १२ इसरीतिके द्रोणाचार्य्यके बचनोंकोसुनकरआपकेपुत्रकेमनकी अभिलाषा अर्थात् वह चित्तका भाव अकस्मात् चित्तसे बाहर निकला जोसदैव उसके मनमेंनियतथा १३ जिसका वहहृद्गतभाव वृहस्पति सरीखे पुरुषोंसे भी जानने के अयोग्यथा हेराजा इसीहेतुसे आप कापुत्र अत्यन्त प्रसन्न मनहोकर यहबचनबोला १४ किहे आचार्य्यजी युद्धभूमिमें युधिष्ठिरकेमरनेसे मेरीपूर्ण विजय नहींहै क्योंकि युधिष्ठिरके मरनेपर निश्चय करके पांडव लोग हम सबको मारेंगे क्योंकि वह सब देवताओंसे भी युद्धमें मारनेके योग्य नहींहैं उनमें से एक भी कोई शेष रहेगा वह भी हम सबको मारसक्ता है अर्थात्हमारा मूलसेनाश करसक्ताहै १५।१६ उस सत्यसंकल्पयुधिष्ठिरके पकड़लाने और फिर उस को द्यूतमें हरानेसे उसकी आज्ञा पाकर फिर पांडवलोग बनको चलेजायगे निश्चय करके वह मेरी विजय बहुत कालतक होगी इसकारणसे मैं धर्मराजके मारनेको नहींचाहताहूं १७।१८ मुख्यप्रयोजनके जाननेवाले बुद्धिमान् चतुर द्रोणाचार्य्यजी ने उसके चित्तकी बड़ी नीच निन्दित और अयोग्य

इच्छाको जानकर अपने चित्तमें बहुतसा बिचारकर वह वरप्रतिज्ञा केसाथ उसको दिया १९ द्रोणाचार्य्यजी बोले कि जो बीर अर्जुन युद्धमें युधिष्ठिरकी रक्षा नहीं करता होगा तो पांडवोत्तम युधिष्ठिर को पकड़ा हुआही जानो अर्थात् अपने बशीभूतही जानकर लाया हुआही जानो २० अर्जुनयुद्धमें इन्द्रसमेत देवताओंसे और असुरों सेभीजीतनेके योग्य नहींहै२१हेतात इस हेतुसेमैं उसकोनहीं सह सक्ताहूं यद्यपि वहअस्त्र कर्ममें निस्सन्देहमेरामन बाणी औरउत्तम कर्मोंसेयुक्त दृढ़चित्तसे २२ शिष्यहै इसकेविशेष उसने इन्द्रऔररुद्र-जीसेभी अनेक अस्त्र अच्छे प्रकारसे पायेहैं और हे राजा तुझपर क्रोधयुक्त है इसहेतुसेमैं उसकोनहीं सहसक्ताहूं २३ बहजब किसी उपायसे युद्धसे पृथक् होजाय अर्थात् अर्जुनके अलग होने और युद्धसे दूरलेजानेपर वहधर्मराजतुझसेबिजय होसक्ताहै २४हेपुरु-षोत्तम उसके पकड़नेमें ही तुम्हारी बिजय है इस उपाय से उसको अच्छी रीतिसे तुम पकड़ोगे २५ हे राजा अब मैं धर्मकी सत्यतामें नियत राजायुधिष्ठिर को पकड़ करके निस्सन्देह तेरी आधीनता में लाऊंगा २६ जो कुन्तीके पुत्र नरोत्तम अर्जुनके दूर लेजाने पर युद्धमें एक मुहूर्त्त भी मेरे आगे नियत होगा तो मैं उसको तेरे आ-धीन करसक्ताहूं २७ नहीं तो हेराजा युद्धमें अर्जुनके समक्षमें राजा युधिष्ठिर इन्द्रादिक देवता और असुरोंसे भी पकड़ने के योग्य नहीं है २८ संजयबोले कि राजाके पकड़ने में द्रोणाचार्य्यजी के नियम पूर्व्वक प्रतिज्ञा करने पर आपके अज्ञानी पुत्रोंने उसको पकड़ाही जाना २९ आपका पुत्र द्रोणाचार्य्यको पांडवोंसे संबंध रखने बाला जानताहै इसकारण प्रतिज्ञाके दृढ़करनेके निमित्त उसने वह अपना गुप्त मंत्र प्रकट किया ३० हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले धृतराष्ट्र इसके अनन्तर दुर्योधनने भी युधिष्ठिर के उस पकड़ने को सेनाके सब स्थानों पर प्रसिद्ध करवादिया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय॥

संजय बोले कि राजायुधिष्ठिरके पकड़ने के विषयमें द्रोणाचार्य को नियम पूर्व्वकप्रतिज्ञा करने पर और दुर्योधनके सर्वत्र बिख्यात करने से आपकी सेनाके मनुष्योंने युधिष्ठिरके उस पकड़ने को सुनकर सिंहनादपूर्व्वकशब्दोंको किया १ और भुजा अर्थात् तालों को ठोंका हे भरतबंशी धर्मराज युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य की उस कर्म करने की इच्छाको न्यायके अनुसार २ प्रमाणीक दूतोंके द्वारा शीघ्रही जानकर सब भाइयोंको और अन्य सब राजाओंको बुलाकर ३ अर्जुनसे यह बचन कहा कि हे पुरुषोत्तम तुमने भी द्रोणाचार्य्यजी के कर्म करने की इच्छाको सुना ४ अब जिसरीतिसे वह उनकी इच्छा सत्यन होय उसी प्रकारका बिचार करना चाहिये हे शत्रुओंके पराजय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने नियम पूर्व्वक प्रतिज्ञाकरीहै ५ हे बड़े धनुषधारी वह नियम उन्होंने तुझमेंही नियत किया है हे महाबाहो सो तुम अब मेरे पीछे लड़ो ६ जिससे कि दुर्य्योधन इस अभीष्टको द्रोणाचार्य्य से नहीं पावे अर्जुनने कहा हे राजा जिस रीतिसे मैं आचार्य्यजीको कभी मारने के योग्यनहीं हूं ७ उसी प्रकार मैं आपके भी त्यागनेको नहीं चाहता हे पांडव चाहैं युद्धमें मेरे प्राणभी जातेरहैं ८ परन्तुमैं किसी दशामेंभी आचार्य्यजी का शत्रुनहींहोसक्ता यह दुर्य्योधन आपको पकड़कर राज्य को चाहताहै ९ सो वह दुर्य्योधन इस जीवलोक में उस अभीष्ट को किसी दशामें भी नहीं पावेगा चाहे नक्षत्रों समेत स्वर्ग गिर पड़े अथवा पृथ्वीके खण्ड २ होजायं १० परन्तु निश्चय करकेमेरे जीवतेहुये द्रोणाचार्य्यजी आपको नहीं पकड़सक्तेजो युद्धमें आप बज्रधारी इन्द्रभी उनकी सहायताकरें ११ अथवा देवताओं समेत विष्णुजी भी सहायक हो जायं तौ भी वह द्रोणाचार्य्य आपको युद्धमें नहीं पकड़सकैंगे हे राजेन्द्र मेरे जीवते रहने पर आपकिसी प्रकार कभी भय के करने को योग्यनहींहो १२ अस्त्र धारियों में

और शस्त्र धारियोंमें भी श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य से तुम कभी भय मत करो हे राजेन्द्रमैं दूसरी बात और भी कहताहूं कि मेरी प्रतिज्ञा सत्य ही है १३ मैं अपने मिथ्या बचन को कभी स्मरण भी नहीं करताहूं और न कभी अपनी पराजयको याद करताहूं और कुछ प्रतिज्ञा करके आजतक कभी मिथ्या होजाने का भी मुझको स्मरण नहीं आताहै तात्पर्य्य यहहै कि मैंने मिथ्या न कभी किया और न करूंगा १४ संजय बोले हे महाराज इसके अनन्तर पांडवोंकेनिवास स्थानों में शंखभेरी मृदंग और ढोलोंके बडेशब्द हुये १५ अर्थात् महात्मा पांडवों के शंखोंकेनादोंसे धनुष प्रत्यंचा और तलोंके महा भयकारी शब्द आकाशके स्पर्श करनेवाले हुये १६ बड़ेतेजस्वी पाण्डवोंके शखोंके शब्दोंको सुनकर आपकी सेना ने भी बाजोंकोबजाया १७ हेभरतवंशी इसकेपीछे आपकी औरपाण्डवोंकीअलंकृत सन्नद्धसेनाके लोग बड़ेधैर्य्यसेयुद्धमें लड़तेहुये परस्परमेंसन्मुख हुये १८ फिर तो पांडवकौरवों समेत द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नकाभी युद्धरोमांच खड़ाकरनेवाला लोमहर्षणनाम महा कठिन युद्धजारीहुआ १९ युद्धमेंबड़े बिचार पूर्व्वक उपायकरनेवाले संजय उन द्रोणाचार्य्यजीकी सेनाके मारनेको समर्थ नहींहुयेक्योंकि वहसेना द्रोणाचार्य्यजीसे रक्षितथी २० इसीप्रकार आपके पुत्र के प्रहारकर्त्ता बड़ेरथी उस अर्जुनसे रक्षित पांडवीसेनाके भी मारने को समर्थनहीं हुये २१ परस्परमें रक्षित वहदोनों सेना ऐसीस्तम्भित और निष्फलसी होगई जैसे कि रात्रिके समय संसारीलोगों के शयन करनेपर अच्छी प्रफुल्लित बनकी परम्परा अर्थात् पंक्ति निश्चल होजातीहै २२ हेराजा इसकेपीछे स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्य प्रकाशमान सूर्य्यके समान रथपर सवारहोकर सेनाको सन्मुख करके सेनाके मुखपर भ्रमण करनेलगे २३ रथकी सवारीसे उपाय पूर्वक परिश्रम करनेवाले युद्धमें शीघ्रकर्त्ता अकेले उसद्रोणाचार्य्यहीको पांडव और सृंजयोंने भयभीतहोकर बहुतोंके समान माना २४ हे महाराज उसके हाथसे छोड़ेहुये भयकारी बाण

पांडवोंकी सेनाको डरातेहुये सबदिशाओंमें चलायमान हुये २५ सैकड़ों किरणोंसे संयुक्त दिवसमें वर्त्तमान ऊष्मकिरणोंका रखने वाला सूर्य्य जैसा दिखाई देताहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्यभी सबको दिखाईपड़े २६ हे भरतवंशी पांडवोंके मध्यमें पांडवोंकी सेनामेंसे कोईभी शूरबीर उसयुद्धमें क्रोधरूप द्रोणाचार्य्यके देखनेको ऐसे समर्थ नहींहुआ जैसे कि दानवलोग महाइन्द्रके देखनेको समर्थनहीं हुयेथे २७ इसकेपीछे प्रतापवान् भरद्वाज द्रोणाचार्य्य ने सेनाको मोहित करके तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे धृष्टद्युम्नकी सेनाको शीघ्र ही छिन्नभिन्न करदिया २८ अर्थात् उन द्रोणाचार्य्यने सब ओरसे दिशाओंको रोंककर और बाणोंसे आकाशको व्याप्तकरके जहांपर धृष्टद्युम्न था वहांजाकर पांडवोंकी सेनाको मर्दनकिया २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणित्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर उन द्रोणाचार्य्यजीने पांडवोंकी सेनामें बड़े भयको उत्पन्नकिया और सेनाको भस्मकरतेहुये ऐसे भ्रमण करनेलगे जैसे सूखेबनमें अग्निदेवता घूमते हैं १ संजय नामक्षत्री उस साक्षात् अग्निके समान प्रकटहोकर सेनाको भस्मीभूतकरते क्रोधसेपूर्ण सुवर्णके रथपर सवार द्रोणाचार्य्यको देखकर अत्यन्त कंपायमानहुये २ बारंबार क्रोधयुद्धमें शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्यके धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द अत्यन्यतासे ऐसे सुनेगये जैसे बज्रके शब्द सुनाई देतेहैं ३ द्रोणाचार्य्यके छोड़ेहुये भयकारी शायकोंने रथी सवार हाथी घोड़े और पदातियोंको अत्यन्त मर्दन किया ४ जैसे कि ग्रीष्मऋतुके अन्तमें बड़ीवृद्धितायुक्त गर्जताहुआ बादल वर्षा करताहै उसी प्रकार पाषाणोंकीसी वर्षा करनेवाले होकर शत्रुओंको भयके उत्पन्न करनेवालेहुये ५ हेराजा तब उस भ्रमण करते और सेनाको महाव्याकुल करते द्रोणाचार्य्यने बुद्धिसे बाहर शत्रुओंके भयकोबढ़ाया ६ जैसे कि बिजली बादलोंमें घूमती

हुई दिखाई देतीहै उसी प्रकार सुवर्ण से जटित उनका धनुष उस बादलरूपी रथके बीचमें बारम्बार घूमता हुआ दृष्टि पड़ा ७ फिर उस पूर्ण बुद्धिमान् सत्यवक्ता सदैव धर्मके अभ्यासी द्रोणाचार्य्य जीने प्रलय कालके समान जीवोंके समूहों से युक्त घोर भयानक रूपनदी को जारीकिया ८ जो कि तीव्रक्रोध से प्रकटहोने वाले गर्दभआदि जीव समूहोंसे व्याप्त और सबओर से सेनाके समूहों से पूर्ण ध्वजा रूपवृक्षोंको दूरफेंकने वालीथी ९ रुधिर रूप जल रथ रूप आवर्त्त हाथी घोड़े रूप किनारे रखने वाली कवच रूपी नौकाओंसे व्याप्तमांसरूपी कीचसे भरीहुई १० मेदमज्जाऔर अस्थि रूप सीपी धारण करनेवाली वेष्टनी रूप फेनोंसे युक्त युद्ध रूपबादलोंसे घिरीहुई प्रास नाम शस्त्र रूपी मछलियोंसे पूर्ण ११ मनुष्य घोड़े और हाथियों से प्रकट तीक्ष्णबाणों के समूह रूपप्रवाहोंसे बहने वाली शरीर रूपी लकड़ी से परस्पर में घिसावट वाली रथ रूपी कछुओंसे पूर्ण १२ शिर और खड्ग रूपझषनाम मछलियों से भरी हुई रथ हाथी सूरतगत्तों से युक्त और नानाप्रकारके भूषणों से शोभायमान १३ महा रथ रूपी शत्रावर्त्त रखने वाली धूल पृथ्वी रूप लहरोंकी पंक्ति रखने वाली युद्ध में बड़े२ पराक्रमी बलवानोंको बड़ी सुगमता से तरने के योग्य और भयभीतों को दुर्गम्य १४ हजारों शरीरों से परस्पर घिसावट वाली गृध्र कंकनाम जीवोंसे सेवित औरहजारों महारथियों को यमलोक में पहुंचाने वाली १५ शूल रूप सर्पों से पूर्ण जीवों की पंक्तियों से सेवित टूटे छत्र रूप बड़े हंस रखने वाली मुकुट रूपपक्षियों से शोभित १६ चक्र रूप कूर्म गदा रूप नक्र और बाण रूपी छोटी २ मछलियोंसे पूर्ण बगले गृध्र और शृगालोंके भय कारी समूहों से सेवित १७ और युद्ध में द्रोणाचार्य्य से मारेहुये सैकरों जीवों को पितृ लोकके निमित्त बहाने वाली १८ सैकड़ों शरीरांसे परस्पर घिसावट वाली बाल रूप शैवल और शाड्बलों को रखने वाली भयभीतों के भय को बढ़ाने वाली नदीको जारीकिया १९ फिरजिन

का अग्रगामी युधिष्ठिर है वह सब शूर बीर उन कौरवोसेनाओंको घुड़कते हुये महारथी द्रोणाचार्य्य के सन्मुख दौड़े २० उस समय आयके दृढ़पराक्रमी शूरबीरोंने उनकेसन्मुख दौड़तेहुये बीरोंकोसब ओर से घेरा वहां का युद्ध भी रोमांच खड़े करने वाला हुआ २१ हजारों कलोंसेभराहुआ शकुनि सहदेवके सन्मुखगया और तीक्ष्ण धार वाले बाणों से सारथी ध्वजा और रथको घायल किया २२ माद्रीके पुत्र क्रोध युक्त सहदेवने उसके उन ध्वजाधनुष और घोड़े को भी बाणोंसे काटकर सात बाणोंसे शकुनी को पीड़ितकिया २३ फिर शकुनी गदा को लेकर उत्तम रथ से कूदा हेराजा उसने गदा से उसके सारथीको रथसे गिराया २४ इसके अनन्तर वह दोनो महाबली शूरबीर रथ से रहित होकर गदा हाथोंमें लिये युद्धमें क्रीड़ाकरने वाले ऐसेहुये जैसे कि शिखरधारी दोपर्व्वतहोतेहैं २५ द्रोणाचार्य्य ने शीघ्रगामी दशबाणोंसे राजा द्रुपदको वेध कर, जितने बाणोंसे द्रुपदनेघायल कियाथा उससे अधिक बाणों से आचार्य्यने घायल किया २६ बीर भीमसेन ने तीक्ष्ण धारवाले बीस बाणों से विविंशतिको वेधकर कंपायमान नहीं किया यह महा आश्चर्य्य साहुआ २७ हे महाराज फिर विविंशतिने अकस्मात् भीमसेनको घोड़े ध्वजा और धनुष से रहित करदिया इस हेतुसे सेनाके लोगों से उसकी प्रशंसा करी २८ उस बीरने युद्ध में उस शत्रुके पराक्रम कोन सहकर अपनीगदासे उसके सब सिखायेहुये घोड़ोंको गिराया २९ हे राजा फिर वह महाबलीमृतकघोड़ेवालेरथसेढालको लेकर भीमसेनके सन्मुख ऐसे गया जैसेकि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सन्मुख जाताहै ३० फिर हंसते प्यार करते और क्रोधकरतेबीर शल्यने अपने प्यारेभानजे नकुलको बाणोंसे घायल किया ३१ प्रतापवान् नकुलने उसके घोड़े छत्रध्वजा सारथी और धनुष को गिराकर युद्धमें अपने शंखको बजाया ३२ धृष्टकेतुने कृपाचार्य्यके चलायेहुये अनेक प्रकार के बाणोंको काटकर सत्तर बाणोंसे कृपाचार्य्यको घायल किया और उसकी ध्वजाके चिह्नको भी तीन

बाणोंसे तोड़ा ३३ कृपाचार्य्यने बाणोंकी बड़ी वर्षासे उसको ढक दिया और बहुत क्रोधित होकर धृष्टकेतुको घायल किया ३४ सात्यकीने कृतवर्माको नाराचनाम बाणोंसे छातीमें वेधकर बड़ी मन्द मुसकान समेत फिर दूसरे सत्तर बाणों से घायलकिया ३५ फिर उस भोजवंशीने शीघ्रही तीक्ष्ण धार वाले सतहत्तर बाणोंसे सात्यकीको वेधकर कंपायमान नहीं किया ३६ सेनापति धृष्टद्युम्नने सुशर्माको मर्म स्थलोंपर अत्यन्त घायल किया फिर उसनेभी उसको तोमर से जत्रुस्थानपर घायलकिया ३७ बिराट ने बड़े पराक्रमी मत्स्य देशियों समेत युद्धमें सूर्य्यके पुत्र कर्णको रोका यहभी आश्चर्य्य साहुआ ३८ वहां कर्णने वह भयकारी बीरता करी कि सबसेनाको गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे रोका ३९ और आप राजाद्रुपद भगदत्तके साथ भिड़ा हेमहाराज उनदोनोंका युद्ध अपूर्व्वरूपका हुआ ४० फिर पुरुषोत्तम भगदत्तने अपने बाणोंसे राजा द्रुपदको सारथी ध्वजा और रथसमेत घायलकिया ४१ इसकेपीछे क्रोध युक्त द्रुपदने महारथी भगदत्तको झुकी गांठवाले बाणोंसे शीघ्रही छातीपर घायल किया ४२ लोकके सब शूरबीरों में श्रेष्ठ अस्त्रविद्यामें पण्डित भूरिश्रवा और शिखण्डीने ऐसा युद्ध किया जोकि जीवमात्रोंका भयकारीथा ४३ हे राजा पराक्रमी भूरिश्रवाने युद्धमें महारथी शिखण्डीको शायकोंके बड़े समूहोंसे ढकदिया ४४ हेभरत बंशी राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे क्रोधयुक्त शिखण्डीने भूरिश्रवाको नब्बे शायकों से कंपायमान किया ४५ बड़े भयकारी कर्मकर्त्ता परस्परमें बिजयाभिलाषी घटोत्कच और अलम्बुषनाम दोनों राक्षसोंने अत्यन्त अपूर्व्व युद्धकिया ४६ सैकड़ों मायाकेउत्पन्न करने वाले अहंकारी मायासे एक दूसरेको बिजयकरनेवाले आश्चर्य्यकारी वह दोनों राक्षस अत्यन्त भ्रमण करने वाले हुये ४७ चेकितानने अनुबिन्दके साथ महा भयकारी ऐसायुद्ध किया जैसे कि देवता और असुरोंके युद्धमें महाबली राजा बलि और इन्द्रका हुआथा ४८ लक्ष्मणने क्षत्र देवसे ऐसा बड़ा युद्ध किया

जैसेकि पूर्व्व समयमें विष्णु भगवानने युद्ध भूमिके बीच हिरण्याक्षके साथमें कियाथा ४९ हे राजा इसकेपीछे राजा पौरव अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़े वाले वृद्धिके अनुसार तैयार कियेहुये रथकी सवारीमें गर्जना करता हुआ अभिमन्युके सन्मुख गया ५० फिर वह युद्धाभिलाषी शत्रुओंका विजय करनेवाला महाबली अभिमन्यु भी शीघ्रतासे सन्मुख आया और उससे बड़ा भारी युद्धकिया ५१ फिर पौरवने बाणोंके समूहोंसे अभिमन्यु कोढकदिया अर्जुनकेपुत्र अभिमन्युने उसके ध्वजा छत्र और धनुषको पृथ्वी पर गिराया ५२ अभिमन्युने पौरवको दूसरे सात बाणोंसे वेधकर उसके सारथी समेत घोड़े को पांच शायकोंसे घायलकिया ५३ इसके अनन्तर सेनाको महाप्रसन्न करते सिंहके समान बारम्बार गर्जते अर्जुन के पुत्र अभिमन्युनें पौरवके नाशकरने वाले बाणको शीघ्रतासे हाथमें लिया ५४ फिर पौरवने उस धनुष पर चढ़ाये हुये महाभयकारी शायकको जानकर दोबाणोंसे बाण समेत धनुषकोकाटा ५५ तब शत्रुओंके बीरोंकेमारने वाले अभिमन्युने उस टूटे धनुषके डालते और दूसरेधनुषके लेतेहुये तीक्ष्ण खड्गको उठाया५६ वह हस्तलाघव अपने पराक्रमके दिखलाता बहुतसेनक्षत्र चिह्नवाली ढालको लेकर अनेकमार्गोंमें घूमा ५७ हेराजा प्रथमतोढाल और तलवारके के घुमानाऊंचेशे उठाना नीचेगिराना और फिर उठाना बिनाअन्तर दिखाई नहींपड़ा ५८ अकस्मात् गर्जना करतेहुये उस अभिमन्युने पौरवकेरथांगईशाको चलायमान करके उसीके रथमें नियत होकर कौरवकी चोटीकोपकड़लिया५९ और इसके सारथीको पावोंसे मार कर खड्गसे ध्वजाकोगिराया और जिस प्रकार गरुड़ समुद्रको चलायमान करके सर्पको पकड़ लेताहै उसी प्रकारसे उसको पकड़ लिया ६० सबराजालोगोंने सिंहसे गिराये हुये बैलके समान उस टूटीचोटीवाले महाव्याकुल अचेत रूपकोदेखा ६१ जयद्रथनेअभिमन्युको आधीनतामें बर्त्तमान अनाथके समान खैंचे और गिराये हुये पौरव को देखकर नहींसहा ६२ हेमहाराज वह सौक्षुद्रघंटिका

ओंके जालसेयुक्त मयूरोंके चित्रोंसेयुक्त ढाल तलवारको लेकर गर्जताहुआ रथसे उतरा ६३ इसकेपीछे अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु जयद्रथको देखकर पौरवको छोड़ रथसे उछलकर बाज पक्षीके समान गिरा ६४ और गिरकर उस अर्जुनके पुत्रने शत्रुओं से चलायमान कियेहुये प्रासऔर पट्टिश और तलवारोंको अपनीतलवारसे काटा और ढालसे ही रोका ६५ अपनी हस्त लाघवता अपनीही सेनाओंको दिखलाकर वह पराक्रमी शूरबीर अभिमन्यु उस बड़े खड्ग और ढालको उठाकर वृद्धक्षत्रके पुत्रपिताके बड़ेभारीशत्रु जयद्रथके सन्मुख ऐसेगया जैसेकि शार्दूलसिंह हाथीके सन्मुख जाताहै ६७ खड्ग दांत और नखरूप शस्त्ररखनेवाले वहदोनों परस्परमें सन्मुख होकर प्रसन्न चित्तों के समान होकर ऐसे युद्धक्रीड़ा करने लगे जैसेकि व्याघ्र और केशरी क्रीड़ा करतेहैं ६८ किसीने भी उननरोत्तमोंका अन्तर, वा ढाल तलवार का गिरना परस्परकेआघातोंमेंनहीं देखा ६९ घुड़कना खड्ग का शब्द शस्त्रोंकी रोकटोक का दिखलाना वाह्याभ्यन्तरीयघात यहसब उनदोनोंके बिनाअन्तरके दृष्टिपड़े७० वह दोनों महात्मा बीर वाह्याभ्यन्तरीय उत्तम मार्गों में घूमते हुये पक्षधारी पर्व्वतों के समान दिखाई पड़े ७१ इस के पीछे जयद्रथ ने यशस्वी अभिमन्युके चलायमान कियेहुये खड्गको ढालकेकिनारे पर रोका ७२ उस सुनहरी पर और प्रकाशमान ढाल के मध्यमें लगाहुआ वह खड्ग जयद्रथके पराक्रमसे चलायमानहोकर टूटा७३ खड्ग को टूटा हुआ जानकर और छः चरणहटकर एक निमेषही मात्रमें अपने रथ पर नियत हुआ देखाईदिया युद्धसे रहित उत्तम रथपर निषत अभिमन्युको सबराजाओंने एकसाथही चारों ओरसे घेरलिया ७५ तदनन्तर अर्जुनका पुत्र महाबली ढाल तलवारको छोड़कर जयद्रथको देखता हुआ गर्जा ७६ शत्रुके मारनेवाले अभिमन्युने उससिंधके राजा जयद्रथको छोड़कर उससेनाको ऐसातपायाजैसे कि सूर्य्य भुवनको संतप्तकरताहै ७७ शल्यने अत्यन्त लोहमयी और सुवर्णसे जटित भयकारी महा प्रकाशमान अग्नि ज्वाल

केसमान शक्तीको युद्धमें उसके ऊपर फेंका ७८ अर्जुनकेपुत्रअभिमन्युने उछलकर उसको पकड़लिया और खड्गको ऐसे मियानसे बाहर किया जैसेकि गरुड़ गिरतेहुये सर्पको७९ उसअमिततेजस्वी अभिमन्युकी हस्त लाघवता और पराक्रमको जानकर सबराजाएक साथही सिंहनादको करतेहुये गर्जे८० शत्रुके वीरोंको मारने वाले अभिमन्युने उसवैडूर्य्य जटित श्वेत वर्णवाली शक्तिको अपनी भुजा के पराक्रमसे शल्यके ऊपर छोड़ा ८१ उससर्पाकार छोड़ीहुई शक्ति ने उस शल्यके रथकोपाकर उसके सारथी को मारा और उसको भी रथसे गिराया ८२ इसके पीछे विराट,द्रुपद,धृष्टकेतु,युधिष्ठिर, सात्यकीपांचों कैकेय,भीमसेन,धृष्टद्युम्न, शिखण्डी ८३ नकुल और सहदेव यहसब धन्य हैं २ ऐसाकहकर पुकारे और नाना प्रकारके बाणोंकेशब्दोंसहित सिंहनाद८४उसमुख न मोड़ने वाले अभिमन्यु कोप्रसन्नकरते प्रकट हुये आपके पुत्रनेशत्रुके उस विजय के शब्द रूपचिह्नकोनहीं सहा ८५ हेमहाराज फिर सबने अकस्मात् उस कोचारों ओरसे तीक्ष्ण धारवाले बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादलपहाड़को ढकदेता है ८६ फिर उन्होंकाप्रिय चाहनेवाला शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त आर्त्तायनि अभिमन्यु के सन्मुख गया ८७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि चतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं तेरे कहेहुये बहुतसे विचित्र द्वन्द्वनाम युद्धोंको सुनकर नेत्रवाले मनुष्योंकी इच्छाकरताहूं१देवासुरोंके युद्धोंके समान इसकौरव पांडवोंके युद्धकोलोकमें मनुष्य लोगआश्चर्य्य रूपही वर्णन करेंगे इस उत्तम युद्धके सुनने से मेरी तृप्त नहीं होतीहै इसहेतुसेआर्त्तायनि और अभिमन्युकेयुद्धकोमुझसे वर्णनकरो २।३ संजय बोले किराजाशल्य अपने सारथीको नाश हुआ देख कर केवल लोहमयी गदाको उठाकर महा क्रोधसे गर्जना करता हुआ उत्तमरथसेकूदा४ और भीमसेन बड़ीशीघ्रतासे २ अपनीउत्तम

गदाकोलेकर उसकालाग्नि के समान प्रकाशित दण्डधारी यमराज के समान राजाशल्यके सन्मुख दौड़ा५ और युक्तिपूर्व्वक भीमसेनसे शल्यको रुका हुआ जानकर अभिमन्युभी बड़ी गदाको लेकर शल्य से बोलाकि आवोआवो ६ फिर प्रतापवान भीमसेन अभिमन्यु को रोककर युद्धमें शल्यको पाकर पर्व्वतके समान निश्चल होकर नियतहुआ७ और मद्रदेशका राजाशल्यभी महाबली भीमसेनको देख कर शीघ्रतासे ऐसेसन्मुख गया जैसे कि शार्दूल हाथीके सन्मुख जाताहै ८ इस के पीछे हज़ारों तूरी बाजे शंख भेरी आदिके बड़े २ शब्दों समेत सिंहनाद जारीहुये ९ देखते हुये परस्पर में सन्मुख दौड़ते हुये पांडव और कौरवोंके सैकड़ों ऐसे शब्द प्रकट हुये कि धन्यहै धन्यहै १० हेभरतवंशी सब राजाओं में शल्य के सिवाय युद्धमें भीमसेनके वेगके सहनेको दूसराकोईभी राजा सामर्थ्य नहीं रखताथा इसी प्रकार इसलोकमें भीमसेन के सिवाय महात्माशल्य कोभी गदाके वेगको कौन पुरुष सहनेको समर्थ होसक्ता है १२ स्वर्णमयी रेशमी बस्त्रों से मढ़ीहुई वह गदा मनुष्योंको प्रसन्न करने वालीहुई तब भीमसेनसे फेंकीहुई बड़ी गदा अग्नि रूपहुई उसी प्रकार सब प्रकार के मडलों और मार्गोंको घूमतीहुई वह शल्यकी गदाभी बड़ी बिजलीकी सूरतहोकर शोभायमान हुई १४ फिर वह बैलों के समान गर्जते हुये शल्य और भीमसेन जिनके गदारूपी सींग चारोंओरको फैलेहुयेथे मंडलोंमें घूमे १५ उनदोनों पुरुषोत्तमों कायुद्ध चक्रमंडलरूपमार्गों और गदाके प्रहारोंमें समानहुआ अर्थात् किसी प्रकारका उनमें अन्तर नहीं हुआ १६ तब भीमसेनसे ताड़ित वह शल्यकी गदा जो सबको भयकारी और अग्निरूप थी शीघ्रही टूटी १७ इसीप्रकार भीमसेन की भी गदा शत्रुसे ताड़ित होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि बर्षाऋतुके त्रिदोषकालमें पट बीजनोंसे युक्त वृक्षहोताहै १८ हेभरतवंशी युद्धमें मद्रदेशीय राजा शल्यकी फेंकीहुई आकाशको प्रकाशित करतीहुई उसगदाने बारंबार अग्निको उत्पन्नकिया १९ इसीप्रकार शत्रुके ऊपर भीमसेन

की भेजीहुई गदानेभी सेनाको ऐसे तपाया जैसे कि गिरतीहुई बड़ी उल्का संतप्त करतीहै २० गदाओं में श्रेष्ठ नाग कन्याओं केसमान श्वास लेनेवाली उन गदाओंने परस्पर में मिलकर अग्नि को उत्पन्न किया २१।२२ जैसे कि बड़ेव्याघ्र नखों से और बड़े हाथी दांतोंसे आघातकरतेहैं उसीप्रकार वह गदाको नोंकोंसे घायलहुये दोनों महात्मा एकक्षण में ही रुधिरसे लिप्त ऐसे दिखाईदिये जैसे कि फूलेहुये किंशुकके वृक्षहोते हैं २३ उनदोनों पुरुषोत्तमोंकी गदाओंके आघात शब्द इन्द्रके बज्रके समान सब दिशाओंमें सुनेगये २४ तब मद्रदेशके राजाकी गदासे दाहिने और बायें पक्षमें ताड़ित होकर भीमसेन ऐसे कंपायमान होकर चलायमान नहीं हुआ जैसे कि घायलहुआ पर्वत अचलहोता है २५ उसी प्रकार भीमसेनकी गदाके वेगोंसे ताड़ित महाबली शल्यभी धैर्य्यसे ऐसे नियतरहा जैसे कि बज्रोंसे ताड़ित पर्व्वत अचल रहताहै २६ गदाको उठाने वाले बड़े वेगवान् दोनों बीर दौड़े और फिर अन्तर्मार्गमें नियत होकर दोनों मंडलों को घूमे २७ फिर आठचरण जाकर हाथियों के समान गिरकर अकस्मात् लोह दंडोंसे परस्परमें घायल किया २८ परस्परकी तीव्रतासे और गदाओंसे अत्यन्त घायलहुये वह दोनों बीर इन्द्र धनुषके समान एक साथही पृथ्वी पर गिरे२९ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा बड़ी शीघ्रता से उस व्याकुल और बारंबार श्वास लेनेवाले शल्यके पासगया ३० हे महाराज गदासे बारंबार पीड़ित सर्पके समान चेष्टा करनेवाले मूर्च्छासे संयुक्त को देखकर महारथी कृतवर्मा युद्धमें से मद्रदेशियों के राजा शल्यको अपने रथमें बैठाकर युद्ध भूमिसे दूरलेगया ३१।३२ मतवाले के समान व्याकुल बीरशल्य एक निमिष में ही फिर उठखड़ा हुआ और बड़ा महा बाहु भीमसेन भी हाथमें गदा लियेहुये दिखाई पड़ा ३३ हे श्रेष्ठ इसके अनन्तर आपके पुत्र मद्रदेश के राजा को मुखफेरने वाला देखकर हाथी प्रधान घोड़े और रथों समेत अत्यन्त कंपायमान हुये ३४ विजयसे शोभा पानेवाले पांडवोंसे पीड़ामान वह

आपके शूर बीर भयभीत होकर दिशाओं को ऐसे भागे जैसे कि वायुसे चलायमान बादल भागतेहैं ३५ हे राजा महारथी पांडव आपके पुत्रोंको बिजय करके युद्धमें प्रकाशित अग्नियों के समान शोभायमान हुये ३६ और बहुत प्रसन्न मनहोकर सिंहनाद करके भेरी मृदंग और ढोलोंके बाजों समेत शंखोंको बजाया ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले हेराजा अकेले पराक्रमी वृषसेनने उस आपकी संपूर्ण सेनाको पराजित देखकर अस्त्रों की मायासे धारण किया १ युद्धमें वृषसेन के छोड़े हुये वह बाण मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को घायल करके दशों दिशाओंमें घूमे २ उसके हजारों प्रकाशित बड़े२ बाण इस प्रकार की चेष्टाकरनेवाले हुये जैसे कि ऊष्णऋतुमें सूर्य्य की किरणें होती हैं ३ हे महाराज उसके हाथ से पीड़ामान रथी और अश्वसवार अकस्मात् पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायुसे ताड़ित वृक्ष टूटकर पृथ्वी पर गिरतेहैं उस महारथीने युद्ध में घोड़े रथ और हाथियोंके सैकड़ों हजारों समूहोंको गिराया ५ फिरयुद्ध में निर्भयके समान उस अकेलेको घूमतेहुये देखकर सब राजाओंने एक साथही चारों ओरसे घेरलिया ६ और नकुलका पुत्र शतानीक वृषसेन के सन्मुखगया और मर्मभेदी दश नाराचोंसे उसको घायल-किया ७ कर्णके पुत्रने उसके धनुषको काटकर ध्वजाको गिराया तब द्रौपदीके पुत्र अपने भाईको चाहतेहुये उसके सन्मुख गये ८ और शीघ्रही बाणों के समूहोंसे कर्णके पुत्रको दृष्टिसे गुप्तकरदिया फिर अश्वत्थामा आदिक महारथी गर्जतेहुये उनके सन्मुख दौड़े ९ हे महाराज द्रौपदी के महारथी पुत्रों को बड़ी शीघ्रता पूर्वक नाना प्रकारके बाणों से ढकतेहुये ऐसे सन्मुख गये जैसे कि बादलपर्वत को ढकतेहुये सन्मुख जातेहैं १० बेटोंको चाहते शीघ्रता करनेवाले पांडव शस्त्रधारी पांचाल कैकय मत्स्य और सृंजयों ने उनको घेर

लिया ११ वहां आपके शूरबीरों के साथ पांडवों का वह युद्ध महा भयकारी रोमहर्षण ऐसा हुआ जैसा कि देवताओं के साथ असुरों का युद्ध महाभयकारीहुआ था १२ परस्पर अपराध करनेवाले और देखने वाले क्रोधमेंभरेहुये बीर कौरव और पांडव इसरीतिसे युद्धों के करने वाले हुये १३ उन असंख्य तेजस्वियोंके शरीर क्रोधसे ऐसे दिखाई दिये जैसे कि पक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुड़से युद्धाभिलाषी सर्पोंका रूप आकाशमें होताहै १४ भीमसेन, कर्ण, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, धृष्टद्युम्न, और सात्यकी से वह युद्धभूमि ऐसी प्रकाश· मान हुई जैसे कि उदयहोनेवाला समय सूर्य्यसेप्रकाशमान होता है१५ परस्परमें युद्धकरनेवाले उन महाबलियोंका युद्ध ऐसाकठिन हुआ जैसे कि पराक्रमी देवताओंके साथ दानवोंका युद्धहोताहै १६ इसके अनन्तर समुद्रके समान शब्दायमान युधिष्ठिर की सेनाने आपकी उस सेनाकोमारा जिसके कि महारथीभागगयेथे १७ द्रोणा चार्य्यजी उसपराजित शत्रुओंसे अत्यन्तपीड़ामान सेना को देखकर बोले कि हे शूरबीर लोगो तुममत भागो १८ इसकेपीछे लालघोड़े रखनेवाले और चारदांत रखनेवाले हाथी के समान द्रोणाचार्य्य क्रोध रूपहो पाण्डवीय सेनामें प्रवेशकर युधिष्ठिरके सन्मुखगये १९ युधिष्ठिरने कंकपक्षोंसेयुक्त तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उनकोवेधा फिर द्रोणाचार्य्य भी शीघ्रतासे उसके धनुषको काटकर सन्मुखगये २० फिर पांचालों को यश बढ़ानेवाले चक्रके रक्षककुमारने उनआतेहुये द्रोणाचार्य्यको ऐसे रोका जैसे कि समुद्रको समुद्रकी मर्यादा वा किनारा रोकताहै २१ कुमार से रुकेहुये ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य्य को देखकर धन्य धन्य बचनोंके साथ सिंहनादों के शब्दहुये २२ इस केपीछे अत्यन्त क्रोध युक्त सिंहके समान बारंबार गर्जते कुमारने उस बड़े युद्धमेंद्रोणाचार्य्यको अपने शायकोंसे छातीपर घायलकिया २३ फिर महाबली हस्तलाघवी और श्रमसे रहित कुमारने युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रोका २४ ब्रह्मणवर्य द्रोणाचार्य्य ने उस शूर बीर श्रेष्ठव्रत रखनेवाले अस्त्रोंके मन्त्रोंमें परिश्रम करनेवाले चक्रकी

रक्षा करने वाले कुमारको मर्द्दनकिया २५ वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य सेनाओंके मध्यको पाकर सब दिशाओंमेंघूमतेहुये आपकी सेनाके रक्षकहुये २६ शिखंडी कोबारह बाणोंसेउत्तमौजस को बीसबाण से नकुल को पांच बाण से और सहदेव को सात बाणोंसे घायल करके २७ युधिष्ठिरको बारह बाणोंसे द्रौपदीकेपुत्रोंको तीन२ बाणोंसे सात्यकी को पांचबाणसे राजा द्रुपदको दश बाणोंसे घायल करके २८ युद्ध में जाकर बड़े २ शूरबीरोंको ब्याकुल किया और बड़े २ श्रेष्ठ बीरों के सन्मुख दौड़े और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर को चाहते हुये सन्मुख आकर बर्त्तमान हुये २९ हे राजा इसके पीछे युगन्धरने बायुसे उठाये हुये समुद्रके समान क्रोध युक्त महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यको रोका ३० उसने गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे युधिष्ठिरको घायलकरके भल्लसे युगंधर को रथके बैठनेके स्थानसे गिरा दिया ३१ तदनन्तर विराट द्रुपद कैकयसात्वकी शिवि व्याघ्रदत्त पांचालदेशी और प्रतापी सिंहसेन ३२ यह सब और अन्य बहुतसे शायकोंके फैलाने वाले और युधिष्ठिरके चाहने वाले बीरोंने उन द्रोणाचार्य्यके मार्गको चारोंओरसे रोका ३३ फिर पांचाल देशी व्याघ्रदत्तने द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्ण पचास बाणोंसे घायलकिया हेराजा इस हेतुसे सेनाके मनुष्योंने बड़ाउच्च शब्द किया ३४ फिर सिंहसेन शीघ्रतासे महारथी द्रोणाचार्य्य को घायल करके महारथियों को भय भीत करताहुआ अकस्मात् हंसनेलगा ३५ उसकेपीछे द्रोणाचार्य्य अपनेदोनों नेत्रोंको खोलेधनुषकीप्रत्यंचा को टंकार तलके बड़े शब्दको करके उसके सन्मुख गये ३६ वहां जाकर उस पराक्रमीने सिंहसेन और व्याघ्रदत्तके शरीरसे कुंडलोंसमेत कानोंकोदोभल्लोंसे काटकर गिराया ३७ और पांडवोंके उन महारथियों को बाणोंके समूहोंसे मर्द्दनकरके नाशकरने वाले कालके समान उस युधिष्ठिरके रथकेपास नियत हुये ३८ हेराजा इनकेपीछे व्रतमें सावधान द्रोणाचार्य्य के सन्मुख नियत होनेपर युधिष्ठिर की सेनाके मध्यमें युद्ध कर्त्ताओंके बड़ेशब्द हुये ३९ वहां

सेनाके लोग द्रोणाचार्य्यके पराक्रमको देखकर बोले कि निश्चय करके अब राजा दुर्योधन अभीष्ठ प्राप्तकरेगा ४० इस मुहूर्त्त में प्रसन्नचित्त द्रोणाचार्य्य पांडव युधिष्ठिर को पकड़ कर दुर्योधनके युद्धमें हमारेसन्मुख आवेंगे ४१ इसप्रकार से आपके शूरवीरों के कहतेहुये ही महारथी अर्जुन रथके शब्द से गर्जताहुआ बड़ीतीव्रतासे आया ४२ और आतेही अर्जुन ने सेनाके मारनेमें उस रुधिर रूप रथ रूप भंवर वाली शूरोंके अस्थि समूहोंसे युक्त मृतकोंको किनारेसे दूर फेंकने वाली नदीको जारीकरके ४३ उस बाणसमूह रूप बड़ेफेण रखनेवाली प्रासशस्त्ररूपी मछलियोंसे व्याकुल नदी को बड़ी तीव्रतासे पारहोकर और कौरवोंको भगाके ४४ वह मुकुट धारी अर्जुन अकस्मात बाणोंके बड़े जालोंसे ढकता और मोहित करता द्रोणाचार्य्य की सेनाके सन्मुख गया ४५ बाणोंको बराबर चढ़ाते और शीघ्रतासे छोड़तेहुये यशस्वी अर्जुन का अन्तर किसी ने भी नहीं देखा ४६ हे महाराज न तो दिशा दीखीं न अन्तरिक्ष आकाश और पृथ्वी दिखाईपड़े सब बाण रूपही होगया ४७ उस समय गांडीव धनुषधारी से किये हुये बड़े अन्धकार में किसी को कुछभी नहीं दिखाई दिया ४८ तब सूर्य्य के अस्त होने और अन्धकार में संसार के प्रवृत्त होने पर मित्र शत्रु आदि कोई भी नहीं जान पड़े ४९ इसके पीछे उन द्रोणाचार्य्य और दुर्योधनादिक ने बिश्राम किया फिर अर्जुन ने उन शत्रुओं को भय भीत और युद्धसे मन हटानेवाला जान कर ५० धीरे पने से अपनी सेनाओं को भी बिश्राम दिया इस के पीछे अत्यन्त प्रसन्नचित्त पांडव सृंजो और पांचालोंने चित्त रोचक बचनों से अर्जुन की ऐसे प्रशंसापूर्वक स्तुति करी जैसे कि ऋषिलोग सूर्य्यकी प्रशसा पूर्वक स्तुति करते हैं इस रीतिसे अर्जुन शत्रुओं को बिजयकरके अपने डेरों को गया ५१ ५२ और केशव जी प्रसन्नचित्त होकर उस की सेनाओं के पीछे की ओर से गये ५३ पांडु का पुत्र अर्जुन इन्द्र नीलमणि और सुवर्ण रजत वज्र स्फटिक आदि उत्तमवस्तुओं से जटित रथमें ऐसा

प्रकाशमानहुआ जैसे कि नक्षत्रों से अलंकृत वा जटित आकाश में चन्द्रमा शोभित होता है ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सचहवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा वह दोनों सेना डेरोंको जाकर यथा भाग यथान्याय यथागुल्म सब ओर से बिश्राम करने वाली हुई १ अत्यन्त खेदित मन द्रोणाचार्य्य सेनाओं का बिश्राम करके दुर्य्योधन को देखकर लज्जायुक्त होकर यह बचन बोले २ कि मैंने पूर्व्व मेंही कहाथा कि अर्जुन के नियत होने पर युद्धमें देवताओं से भी युधिष्ठिर पकड़े जानेके योग्य नहींहै ३ अर्जुनने युद्धमें उपाय करने वाले तुमलोगों का वह बिचार तोड़ दिया तुम मेरे बचन परशंका मत करना मैंसत्य २ कहताहूं कि श्रीकृष्ण जी और अर्जुन सबसे अजेय हैं ४ हे राजा किसी हेतुसे अर्जुन के दूर लेजाने पर यह युधिष्ठिर तेरी स्वाधीनता में बर्त्तमान होगा ५ कोई युद्ध में उसको बुलाकरदूसरे स्थानपर लेजाय और अर्जुनउसको न जीतकरकिसी दशा में भी लौट कर न आवे ६ तो हेराजा मैं उसी अन्तरमें धृष्टद्युम्न के देखते हुये सेनाको छिन्न भिन्न करके अकेलेपने में धर्मराज को पकड़ूंगा ७ जो अर्जुन से पृथक् वह मुझको समीप आयाहुआ देख कर युद्ध को नहीं त्यागे तो पांडव युधिष्ठिर को पकड़ा हुआ हीजानों हेमहाराज अबमैं इस रीतिसे धर्मके पुत्र युधिष्ठिर कोउस के सब समूहों समेत तेरी आधीनता में बर्त्तमान करूंगा इस में किसी प्रकार का सन्देह न समझो ९ जो पांडव एक मुहूर्त्तभी युद्धमें नियत होगा तोमैं उसको युद्ध भूमिमें से पकड़ लाऊंगा क्योंकि वह अर्जुनही के कारणसे प्रबलहै १० संजय बोले हेराजातब त्रिगर्तका राजा अपने भाइयों समेत द्रोणाचार्य्य के उस बचन को सुनकर बोला११ किहमसदैव गांडीव धनुषधारीसे निरादरकियेगये निश्चय करके उसी ने हम निरपराधीलोगों पर भी बड़ी द्वेषता

करीहै १२ हमसब लोग उन पृथक् २ प्रकारके अपमानोंको स्मरण करते अपनी क्रोधाग्नि से भस्मीभूत होकर कभी रात्रि में नींद भर कर नहीं सोते हैं १३ वह अस्त्रों से युक्त हमारे प्रारब्ध से हमारे नेत्रों केही सन्मुख दीखता हुआ बर्त्तमान है हम अपने हृदयबर्त्ती उस कर्म को करने वाले हैं जिस को कि हम अच्छा समझतेहैं १४ वह कर्म आपका प्रियकारी और हमारे यशकाकरनेवालाहै अर्थात् हम उसको युद्ध भूमिसे बाहर लेजाकर मारेंगे १५ अब चाहै पृथ्वी अर्जुन से रहित होय अथवा फिर त्रिगर्त्त देशियों से रहित होय परन्तु हमतुमसे सत्य२ प्रतिज्ञा करतेहैं हमारीप्रतिज्ञा मिथ्या नहीं होगी १६ हे भरतबंशी महाराज दश हजार रथियों समेत वह पांचोंभाई इस रीतिके बचनों को कह कर १७ युद्ध में शपथखाकर लौटे सबमालव और तुंडकेर तीसहजार रथोंसमेत प्रस्थलका राजा त्रिगर्त्त देशी नरोत्तमराजासुशर्मा मावेल्लकललित्थ मद्रक १८।१९ दश हजाररथ और भाइयोंके साथगया और नाना प्रकारके देशियोंसे युक्तउत्तमपुरुषोंका समूह दशहजार रथों समेत शपथखाने के निमित्त पासगया इसके पीछे सबने पृथक्२ अग्नि लाकर पूजन करके २०।२१ कुशोंकेचीर और अलंकृत कवचोंको लिया वहकवच धारण करनेवाले घृतसे संयुक्त शरीर कुशाओं के चीरधारी २२ मूंजकी मेखला धारण करने वाले लाखोंदक्षिणा देने वालाबीर अथवा यज्ञ करनेवाले सन्तानमान स्वर्ग लोकके योग्य कृतकर्मी शरीरके अभिमानोंको दूरकरने वाले२३ यश और बिजय के साथ आत्माको पूजते वेदके मुख और कालदक्षिणावाले यज्ञों से ब्रह्मचर्य्य को पाकर २४ उत्तम युद्ध से शीघ्रही लोकोंको जानेके अभिलाषी सब ब्राह्मणों को संतुष्ट और तृप्त करके पृथक्२ निष्कों की दक्षिणा देकर २५ गौ और बस्त्रोंका दान करके परस्परमें बारं बार बार्त्तालाप करते अग्नि को प्रज्ज्वलित कर युद्ध व्रतको धारण करके २६ उन दृढ़ व्रत और निश्चयवालों ने उस अग्निके समक्ष में प्रतिज्ञा करी और सब जीवों के सुनते हुये उच्चस्वरसे बचनोंको

कहा २७ और सबोंने अर्जुन के मारने की भी प्रतिज्ञा करी कि जो लोक मिथ्या बादियों के हैं और जो ब्राह्मणों के मारने वालों केहैं २८। २९ जो मद्यपान औ गुरूकी स्त्रीसेसंभोग करने वालों के ब्राह्मणों का धन चुरानेवालों के राजपिण्ड चुराने वालों के शरणागत के त्यागने वालोंके प्रार्थना करनेवालोंके मारनेवालों के घरों में अग्नि लगाने वालोंके और गौओं के मारने वालों के जो लोक हैं ३० अथवा दूसरों के अप्रिय करने वालों के ब्राह्मणों से शत्रुता करने वालों के ऋतुकाल में मोहसे अपनी स्त्रीके पास न जानेवालों के जो लोकहैं ३१ व श्राद्ध में संभोग करने वालोंके आत्म घातियों के दूसरे की घरोहड़ मारनेवालों के शास्त्रके नाश कर्त्ताओं के नपुंसक से लड़नेवालों के अथवा नीचोंके पीछे चलने वालोंके जोलोकहैं ३२ और नास्तिक लोगोंके जोलोक हैं और अग्नि व माता पिताको त्याग करने वालों के अथवा अन्य प्रकार केभी पाप करने वालों के जोलोकहैं ३३ उन सब लोकोंको हम प्राप्तहोयं जो हम अर्जुन को युद्ध में मारे बिना लौट कर आवें ३४ और उनलोगों से पीड़ामान होकर भयसे मुखकोमोड़ें जो लोकके मध्य युद्धमें कठिन कर्मों को करतेहैं ३५ इसीसे अब हम सब लोग अपने अभीष्ट लोकोंको निस्सन्देह पावेंगे हे राजा तब वह बीर इस प्रकार से कहकर अर्जुन को दक्षिण दिशा में बुलाते हुये युद्ध में सन्मुख बर्त्तमान हुये उन नरोतमोंसे बुलाया हुआ शत्रुओं के पुरों को बिजय करने वाला अर्जुन ३६। ३७ धर्मराज से शीघ्रही यह बचन बोला किमैं बुलाया हुआ होकर नहीं लौटताहूं यह मेराव्रत नियतहै ३८ हे राजा प्रतिज्ञा करने वालेसंसप्तक मुझको बड़े युद्धमें बुलातेहैं और यह सुशर्मा भी भाइयोंसमेत युद्धाभिलाषी होकर युद्धमें बुलारहाहै ३९ सो आप उसके सब साथियों समेत मारने के निमित्त मुझको आज्ञादीजिये हे पुरुषोत्तम मैं इस बुलाने के सहने को समर्थ नहींहूं ४० मैं आपसे सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं कि युद्धमें सब शत्रुओंको मराहुआ ही जानो ४१ युधिष्ठिर बोले

हे तात जो द्रोणाचार्य्य के चित्तमें कर्म करने की इच्छा है उसको तुमने अच्छीरीतिसे मुख्यता पूर्वक सुनाहै उनकी वह प्रतिज्ञा जैसे प्रकार से मिथ्याहोय वही तुमको सब प्रकार से करना उचित्त है ४२ निश्चय करके द्रोणाचार्य्यजो महापराक्रमी शूरबीर अस्त्रज्ञ और श्रमसे रहितहैं हे महारथी उसने मेरे पकड़ने की प्रतिज्ञा करीहै ४३ अर्जुन बोले कि हे राजा निश्चय करके यह सत्यजित युद्धमें आपकी रक्षा करेगा औरधृष्टद्युम्न के जीवतेहोने पर द्रोणाचार्य्य अपने अभीष्ट को नहीं पावेंगे ४४ हे प्रभु युद्धमें पुरुषोत्तम सत्यजित के मरने पर मिले हुये सबका भी किसी दशामें नियत न होना चाहिये ४५ संजय बोले कि इसके अनन्तर अर्जुन राजा से आज्ञादिया गया और छातीसे मिलाया गया और बहुत प्रसन्न चित्त होकर राजाने अनेक प्रकार के आशीर्बाद दिये ४६ तब वह पराक्रमी अर्जुन इस रीतिसे कह सुनकर त्रिगर्त देशियों के सन्मुख ऐसे गया जैसेकि क्षुधामान सिंह अपनी क्षुधादूर करने के निमित्त मृगोंके यूथोंके सन्मुख जाताहै ४७ इसके पीछे दुर्य्योधन की सेना बड़ी प्रसन्न हुई और अर्जुनकेजानेपर धर्म राजकेपकड़ने में अत्यन्त क्रोधयुक्त हुये ४८ फिर वह दोनों सेना शीघ्रतासे ऐसे परस्पर में फिड़ीं जैसे कि जल वाली वर्षा ऋतुमें गंगा और सरजू यह दोनों नदी वेगसे मिलतीहैं ४९

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा इसके पीछे प्रसन्नता से युक्त संसप्तक लोग रथोंसे सेनाको चन्द्रमा के आकारकी बनाकर समभूमि वाले स्थान पर नियत हुये १ हे श्रेष्ठतब वह नरोत्तम आतेहुये अर्जुन को देखकर प्रसन्न होकर बड़े शब्दोंसे पुकारे २ उस शब्दने सब दिशा और बिदिशाओं समेत आकाश को व्याप्त करदिया और शब्दसे लोकके अत्यन्त भरजाने पर वहां पर कोई प्रकार का दू-

सरा शब्द नहीं हुआ ३ वहअर्जुन उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त क्षत्रियों को देखकर कुछ मन्द मुसकान करताहुआ श्रीकृष्णजी से यह बचन बोला ४ कि हेदेवकीनन्दन अब तुम युद्ध में इन मरने के अभिलाषी और रोनेके योग्यस्थानपर अत्यन्त प्रसन्न चित्त त्रिगर्त्त देशी भाइयों को देखो ५ निस्संदेह त्रिगर्त्त देशियोंकी प्रसन्नताका यह समय है कि वह उन श्रेष्ठ उत्तमलोकों कों पावेंगे जो कि नीच मनुष्यों को कठिनता से प्राप्तहोतेहैं ६ इसके पीछे महाबाहुअर्जुन ने इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी को ऐसे प्रकार के बचन कहकर युद्धमें त्रिगर्त्त देशियोंकी अलंकृत सेनाको सन्मुख हुआ पाया७तब उसने सुबर्ण से जटित देवदत्त नाम शंखको लेकर बड़ी तीव्रता से बजाया और उसके शब्द से सब दिशाओं को व्याप्त करदिया ८ उस शब्द से संसप्तकों की सेना महा भयभीत होकर पाषाण की मूर्त्तियोंके समान युद्धमें निश्चल होकर नियतहुई ९ और उनको सवारियों के बहानोंने नेत्रोंको फाड़कर कानों को खड़ा कर ग्रीवा और शिरों को स्तब्ध करके अपने चरणोंको स्थिर करते मूत्रऔर रुधिर को गेरा १० इसके पीछे सावधान और सचेत हो सेना को नियत कर एक बार ही सब इकट्ठे होकर अर्जुन के ऊपर बाणोंकी बर्षा करने लगे ११ पराक्रमी अर्जुनने उन पन्द्रह हजार बाणोंको शीघ्रही अपने तीव्र बाणों से बीचही में काटा १२ इसके पीछे फिर उन लोगोंने अर्जुन को दश २ बाणों से घायल किया फिर अर्जुन ने उनको तीन२ बाणों से घायल किया १३ हे राजा इसके पीछे प्रत्येकने अर्जुन को पांच २ बाणोंसे व्यथित किया इस पराक्रमीने भी उनको दो २ बाणोंसे घायल किया १४ फिर उन क्रोधयुक्तों ने केशव जी समेत अर्जुनको तीक्ष्ण बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि बर्षा की बूंदें तालाबको घायल करतीहैं १५ तदनन्तर हजारों बाण अर्जुन के ऊपर ऐसे गिरे जैसे कि भ्रमरोंके गण फूले हुये बनके वृक्षोंपर गिरतेहैं फिरसुबाहुने तीस लोहमयी बाणों से अर्जुनको मुकुट पर बहुत घायल किया १७ सुवर्णका मुकुट रखने

वाला अर्जुन उन सुनहरी पुंख युक्त सोधे चलने वाले मुकुट पर नियतहुये बाणोंसे उदय हुये सूर्य्यके समानशोभायमान हुआ १८ अर्जुनने युद्धमें सुबाहूके हस्ताबाय अर्थात् लोहे के हस्थत्राण को काट कर बाणोंके जालोंसे ढकदिया १९ इसके पीछे सुशर्मा सुरथ सुधर्मा सुधनु और सुबाहुने अर्जुनको दश२ बाणोंसे घायलकिया २० हनुमान्जी को ध्वजा रखनेवाले अर्जुनने उन सबको पृथक् २ बाणों से बेधा और भल्लों से उन सबकी ध्वजा और शायकों को काटा २१ फिर सुधन्वाके धनुष को काद उसके घोड़ों को मार उसके शरीर समेत शिरको पृथक्२ करके गेरदिया २२ उस बीर के गिराने पर उसके अनुगामी भय भीत होकर महा व्याकुलता से उधर को भागे जिधर दुर्योधन की सेना थी २३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोध युक्त इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने अखंडित बाण जालों से उस बड़ी सेनाको ऐसे माराजैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अन्धकारको नाश कर देताहै २४ उस सेनाके पराजय और चारोंओर के भागजाने व गुप्तहोजाने पर अथवा अर्जुनके अत्यन्तकोप युक्त होने पर त्रिगर्त्त देशियोंने भय प्रविष्टहुआ २५ वह सब अर्जुन के गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे घायल जहां तहां मृगोंके समूहोंके समान भयभीत और अचेत हो गये २६ इसके पीछे क्रोधयुक्त त्रिगर्त्त का राजा उन महारथियों से बोला कि हे शूरलोगो तुम मत भागो तुमको भयकरना योग्य नहीं है २७ सब सेनाके सन्मुख भयकारी शपथों को खाकर यहां आयेहो अब दुर्योधन की सेना में शीघ्रता से जाकर क्याकहोगे २८ हम सब एक साथ युद्धमें ऐसे कर्म करने से इसलोकमें क्यों नहीं हास्यके योग्यहोंगे अवश्य निन्दित गिने जायंगे इससे तुम सबसाथहोकर सेना समेत युद्धकरो २९ हेराजा ऐसे कहे हुये वे बीर परस्परमें प्रसन्न करते बारबार पुकारे और शंखोंकोबजाया ३० इसके पीछे वह संसप्तकोंके समूह जिनका कि नारायण और गोपाल नामथासृत्युको निवृत्तकरके फिरलौटे ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

संजयजी बोले कि अर्जुन फिर उन लौटे हुये संसप्तकों के समूहों को देखकर अर्जुन महात्मा वासुदेवजी से बोले १ कि हे श्रीकृष्णजी घोड़ों को संसप्तकों के समूहों पर चलायमानकरो ये लोग जीवते हुये युद्ध को त्याग नहीं करेंगे यह मेरा बिचारहै २ अब आप मेरे भुजबल और धनुष के भयकारी पराक्रम को देखो अबमैं इनसबको ऐसे गिराऊंगा जैसे कि क्रोधयुक्त रुद्रजी पशुओंको गिरातेहैं ३ इसके पीछे निर्भय श्रीकृष्णजीने मन्द मुसकान करके बड़े आनन्दसे उसको प्रसन्न करके सेनामें जाकर जहां जहां अर्जुन ने चाहा वहां वहां उसकोप्रवेशित किया ४ तब युद्धमें श्वेतघोड़ोंसे खैंचाहुआ वहरथऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में चलायमान कियाहुआ बिमानहोताहै ५ फिर दाहिने और बायें मंडलों को भी ऐसाकिया जैसे कि पूर्व्वसमय में इन्द्रके रथने देव दानवों के युद्धमें कियाथा ६ इसके पीछेबड़े क्रोधयुक्तनानाप्रकारके शस्त्रोंको हाथमें रखने वाले बाणों के समूहों से ढकतेहुये नारायण नाम क्षत्रियोंके समूहने अर्जुनको चारों ओरसे घेरलिया ७ हे भरतर्षभ फिर उन्होंने युद्धके मध्यवर्त्ती श्रीकृष्णजी समेत कुन्तीके पुत्र अर्जुनको एक मुहूर्त्त मात्रही में दृष्टि से गुप्तकर दिया ८ फिर क्रोध भरेयुद्धमें पराक्रमको द्विगुणित करने वाले अर्जुनने शीघ्रही युद्धमें अपनेगांडीव धनुषको हाथ में लिया ९ और क्रोध को सूचन करने वालीभृकुटीको मुखपरबांधकर देवदत्त नामबड़े शंखको बजाया १० और शत्रु समूहोंके मारनेवाले त्वाष्ट्रनाम अस्त्रकोचलायाउसकेचलते हीहजारों रूप पृथक् २ प्रकटहुये ११ अपने रूपके समान अथवा बहुत प्रकारके रूप रखने वाले उन रूपों से क्षत्री लोग अत्यन्त मोहित हुये और एकने दूसरेको अर्जुन मानकर अपने आप अपने को मारा १२ यह अर्जुन है यह गोबिन्दजीहै यह पांडव लोगऔर यादव हैं ऐसे २ बचनोंको बोलतेहुये उन आज्ञानियों ने परस्पर युद्ध

में एकने एक को मारा १३ अर्थात् उन अचेतोंने परम अस्त्र से परस्परमें नाशकिया उस युद्धमें शूर बीर लोग प्रफुल्लित किंसुक वृक्षके समान शोभायमानहुये १४ इसके पीछे उस अस्त्रने उनके छोड़ेहुये हजारों बर्णोंको धूलमें मिलाकर उनबीरोंको यम लोकमें पहुचा या १५ फिर अर्जुन ने हंसकर ललित्थ मालव मावेल्लक औरत्रिगर्त देशीय शूर बीरोंको बाणों से पीड़ामान किया १६ उनकालके प्रेरित और बीर अर्जुनसे घायलहुये क्षत्रियों ने अर्जुन के ऊपरनाना प्रकारके बाण जालोंको फेंका १७ वहां उस भय कारी बाणों को बर्षासे ढकीहुईन ध्वजा दृष्टपड़ी न अर्जुन रथ और न केशवजी दिखाई दिये १८ तबतो वह लब्धहुये लक्षसे परस्परमें पुकारे कि दोनों अर्जुन और केशवजीको माराहै ऐसा पुकारकर प्रसन्नतासे बस्त्रोंको हलाया १९ हेश्रेष्ठ वहां हजारों बीरोंनेभेरी मृदंग और शंखोंकोभी बजाया और महाभयकारी सिंह नादोंके शब्दों को किया २० इस के पीछे श्रीकृष्णजी प्रश्वेदसे व्याप्त होगये और महा दुःखी होकर अर्जुन से बोले हे अर्जुन तू कहांहै मैं तुझको नहीं देखताहूं हे शत्रुओं के मारनेवाले तू जीवताहै २१ श्रीकृष्णजीके इसबचनको सुन कर शीघ्रता करने वाले अर्जुनने बायु अस्त्रसे उनके छोड़ेहुये बाणों के समूहों को दूरकिया २२ इसके अनन्तर उस समर्थ बायुने संस तकोंके समूहों को घोड़े रथ हाथो और शस्त्रों समेत ऐसे उड़ाया जैसे कि सूखेपत्तों के समूहोंको उड़ाताहै २३ हे राजा वह फिरबायुसे चलायमान होकर ऐसे बड़े शोभायमान हुये जैसे कि समय पर वृक्षसे उड़ने वाले पक्षी शोभायमान होतेहैं २४ फिर शीघ्रता करने वाले अर्जुनने उनसबको इसरीतिसे व्याकुल करके तीक्ष्णबाणों से हजारों को मारा २५ भल्लोंसे शिर और शस्त्रों समेत भुजाओंको काटा हाथोकी शूंड़के समान उन सब की जंघाओंको बाणोंसे पृथ्वी पर गिराया २६ अर्जुनने शत्रुओंको टूटोपीठ औरभुजाचरण कमर और नेत्रोंको तोड़कर नाना प्रकारके शरीर के अंगोंसे रहित किया २७ फिर बुद्धिके अनुसार गन्धर्व नगर के समान अलंकृत

किये हुये रथोंको बाणोंसे चूर्ण करके अर्जुनने उन सब लोगों को रथ घोड़े और हाथी आदि सवारियों से भी रहित कर दिया २८ वहां पर कहीं कहीं टूटे रथ और ध्वजाओं के समूह स्थान स्थान परमुंडतालबनों के समान प्रकाशमान हुये उत्तरायुधपताका और अंकुशों समेत हाथी भी ऐसे गिर पड़ेजैसे कि इन्द्रके बज्रसे ताड़ित वृक्षधारी पर्व्वतगिरतेहैं२९।३० चामरआपीड़ और कवचोंके रखने वाले और इसी प्रकार आंत निकलने वाले घोड़े अपने सवारों समेतअर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वीपर गिरे ३१ जिनके खड्ग और नख कटगये और ढाल,दुधारा,खड्ग,शक्ति और कवचभी टूटगये ऐसे मर्मोंसे छिन्न महादुखी पतिलोगभी मृतक हुये ३२ उन मृतक घायल पड़े गिरते घूमते और शब्दों को करते शूर बीरों सेवहयुद्ध भूमि शोभायमान हुई ३३ उस पृथ्वी की महाभयानक धूलि रुधिर की बर्षा से दबगई और सैकड़ों बिना शिर के शरीर अर्थात् रुंडोंसे भी युक्त होकर वह पृथ्वी दुर्गम्य होगई ३४ अर्जुन का वह भयकारी रथ युद्धमें ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि प्रलय के समय पशुओंके मारने वाले रुद्रजीको क्रीड़ाका स्थान होताहै ३५ अर्जुन से घायल हुये घोड़े रथ और हाथियों वाले और अर्जुन के सन्मुख नाशवान उन क्षत्रियोंने इन्द्रकी आतिथ्यताको पाया ३६ हे भरतर्षभ उन चारों ओर से मृतकरूप महा रथियों से आच्छादित वह पृथ्वी महा शोभायमान हुई ३७ इसी अन्तरमें अर्जुन के अज्ञात होने पर सेनाको अलंकृत करके द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर के सन्मुख गये ३८ शीघ्रता से युक्त अलंकृत सेनावाले प्रहार कर्त्ता युधिष्ठिर को चाहने वालों ने उसको घेर लिया उस समय वहां बड़ा कठिन युद्धहुआ ३९ ॥

इति श्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि एकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजेन्द्र महारथी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी उस

रात्रिको व्यतीतकर दुर्य्योधन को बहुतसे बचन कहके १ अर्जुन और संसप्तकों से युद्धको नियत करके संसप्तकोंके रथों को और अर्जुन की यात्राहोने पर २ अलंकृत सेनावाले द्रोणाचार्य्य धर्मराज के पकड़नेकी इच्छासे पांडवों कीबड़ी सेनाके सन्मुख गये ३ तबयुधिष्ठिरने भारद्वाज केरचेहुये गरुड़ व्यूहको देखकर मण्डलार्द्धनाम व्यूहसे अपनी सेनाको अलंकृत किया महारथी भारद्वाज तो गरुड़ व्यूहके मुखपरहुये ४ राजा दुर्य्योधन अपने सगे भाइयों समेतपीछे चलने वालोंसे संयुक्त होकर शिरके स्थान पर हुआ धनुषधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य और कृतवर्मा ये दोनों नेत्र हुये ५ भूतशर्मा, क्षेमशर्मा, पराक्रमी करवर्ष, कलिङ्गदेशी, सिंहलदेशी, पूर्व्वीय, राजा, लोग, शूर, अभीरक, दशेटक, ६ शक, यवन, कांबोजदेशी, इसी प्रकार हंसपथ शूरसेनदेशी, दरददेशी मद्रदेशी और जोकेकयदेशीहैं ७ वे ग्रीवामें संयुक्त हुयेऔर हाथी घोड़े रथ और पत्तियों के समूह अच्छे अलंकृत होकर नियतहुये भूरिश्रवा शल्य सोमदत्त औरबाल्हीक ८ ये सबबीर अक्षौहिणी से संयुक्त दक्षिण पक्षमें नियतहुये और बिन्दु, अनुबिन्दु, अवन्ति, देशके राजालोग काम्बोज और सुदक्षिण ९ बामपक्षमें आश्रित होकर अश्वत्थामाके आगे नियत हुये और पृष्टभाग पर कलिंग, अम्बष्ट, मागध, पौण्ड्र, मद्रक १० गान्धारदेशी, शकुनदेशी, पूर्व्वीय राजा पर्व्वतीयराजा और वशातयनियत हुये और पुच्छ पर सूर्य्यका पुत्र कर्ण अपने सब पुत्र बांधव और ज्ञाति वालों समेत नियतहुआ ११ नाना प्रकारके देशियोंसे उत्पन्न होने वाली बड़ीसेना समेत जयद्रथ, भीमरथ, संपाति, याजभोज, भूमिंजय, वृष, क्राथ १२ और पराक्रमी राजा निषध हे राजायुद्ध में सावधान और ब्रह्मलोकके अर्थ संस्कारी बड़ीसेनासेयुक्त व्यूह की छातीपर नियत हुये द्रोणाचार्य्य, सेरचाहुआ व्यूह रथघोड़ेहाथीऔर पदातियोंसमेत १३।१४ वायुसे उठायेहुये समुद्र के रूप नर्तक के समान दिखाईदिया उसके पक्ष और प्रपक्षोंसेयुद्धाभिलाषी शूरबीर लोग ऐसेनिकले १५ जैसेकिऊष्मऋतुमें बिद्युत और गर्जना समेत

सब ओरसे बादल निकलतेहैं हे राजाउ सराजा प्राग्ज्योतिषका हाथी सेना केमध्यमें बिधिके अनुसार अलंकृत १६ और नियत होकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि उदयाचलमें सूर्य्यहोताहै मालायुक्त श्वेतक्षत्रधारी हाथीसे ऐसीशोभाहुई १७जैसेकि पूर्णमासीकेदिन कृत्तिकानक्षत्रके योगसे युक्त चन्द्रमासमेत नीलेबादलकी शोभाहोतीहै उस प्रकार उस मदसे अन्धे हाथी कीशोभा हुई १८ जैसे किबड़ा पर्व्वत बड़े बादलोंकीकठिन बर्षासे युक्त होय उसी प्रकार नानाप्रकार केदेशोंके बीर राजाओं से व नाना प्रकारके शस्त्र और भूषणों से अलंकृत पर्व्वतीय राजाओंसे ऐसे संयुक्त हुआ१९जैसे किदेवताओं केसमूहोंसे इन्द्र संयुक्त होताहै इसके पीछेराजायुधिष्ठिर उस दिव्य युद्धमें शत्रुओंसे अजेय व्यूहको देखकर धृष्टद्युम्नसे यह बचनबोले कि हेसमर्थ अब मैं जैसी रीतिसे ब्राह्मण के स्वाधीनता में नआऊं २०।२१ हे कपोतग्रीव बर्ण अश्वोंके रखने वाले वही उपाय करना चाहिये धृष्टद्युम्न बोले कि हे उत्तमब्रत धारण करनेवाले अब तुम उस उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्यके स्वाधीनता में नहीं होगे क्योंकि अब मैं उनके अनुगामियों समेत युद्ध में उनको रोकूंगा २२ हे युधिष्ठिर मेरे जीवते हुये आपको व्याकुलकभी न होनायोग्यहै द्रोणाचार्य्ययुद्धमें किसी दशामें भी मुझको बिजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते २३ संजय बोले कि कपोतग्रीव बर्णके घोड़े बाला पराक्रमी द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न बाण जालों को फैलाता आपही द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया २४ द्रोणाचार्य्य उस अप्रिय दर्शन धृष्टद्युम्न को नियत देख कर क्षण मात्रहीमें अप्रसन्न चित्त वाले के समान हुये २५ तब शत्रुओंके बिजय करने वाले आप के दुर्मुख नाम पुत्रने धृष्टद्युम्न को देखकर द्रोणाचार्य्य का प्रियकरने कोइच्छा से धृष्टद्युम्न को रोंका २६ हे भरतबंशी शूर धृष्टद्युम्न और दुर्मुखका वह साम्हना बड़ा कठिन और भय कारीहुआ २७ धृष्टद्युम्न ने शीघ्रही बाणों के जाल से दुर्मुख को ढककर बाणोंके बड़े समूहों से द्रोणाचार्य्य को रोंका २८ द्रोणाचार्य्यको रुका हुआ देख

कर आप का पुत्र शीघ्रता से आया और नाना प्रकार के चिन्हित बाण समूहोंसे धृष्टद्युम्न को मोहित किया २९ युद्ध में उन धृष्टद्युम्न और दुर्य्योधन के भिड़ने पर द्रोणाचार्य्यने बाणों से युधिष्ठिर की सेनाको अनेक प्रकारसे छिन्न भिन्न कर दिया ३० जैसे कि बादल वायु से चारों ओर को उच्छिन्न हो जातेहैं उसी प्रकार पांडवयुधिष्ठिर की सेनाभी जहां तहां उच्छिन्न हो गई ३१ हे राजा वहयुद्ध एक क्षण मात्रतो अपूर्व्व दर्शनीय हुआ तदनन्तर शूरवीर लोग उन्मत्तोंके समान मर्य्यादा से रहित कर्मों को करने लगे ३२ यहांतक कि परस्परमें अपने और दूसरोंको नहीं जाना ध्यान और नामोंके द्वारा वह युद्ध वर्त्तमान हुआ ३३ उन शूर वीरों की सूर्य्य वर्णवाली किरणों से युक्त चूड़ामणि निष्क और भूषणोंसे अलंकृत कवच प्रकाश मानहुये ३४ युद्धमें गिरीहुई पताका वालेरथ हाथी और घोड़ों का वह रूपबगलोंके समूहोंके समान श्वेतरंगका दिखाई पड़ा ३५ मनुष्योंने मनुष्यों को ऊंचे घोड़ों ने नीचेघोड़ों को रथियों ने रथियोंको और हाथियों ने उत्तम हाथियों को मारा ३६ ऊंचीपताका वाले हाथियों का युद्ध उत्तम हाथियों के साथ एक क्षण मात्रमें महा भय कारी और कठिन वर्त्तमानहुआ ३७ उन छुटे अंग और परस्पर खैंचनेवाले हाथियों के दांतोंके संघात औरसंघर्षणसे सधूम अग्नि उत्पन्नहुई ३८ जिनकी पताका फैलगई और दांतोंसे अग्निप्रकटहुई वह भिड़कर बिजली रखने वाले बादलोंके समान होगये ३९ दौड़ते गर्जते और गिरते हुये हाथियों से पृथ्वी ऐसी आच्छादितहोगई जैसे कि बादलोंसे शरदऋतु का आकाश होजाताहै ४० बाण और तोमरों की वर्षा से घायल उन हाथियों के शब्द ऐसे उत्पन्न हुये जैसे कि बड़ी चल बिचलतामें बादलों के शब्द होतेहैं ४१ कितनेही उत्तम हाथी तोमर और बाणोंसे घायल होकर भय भीतहुये और कितनेही अन्यहाथियोंके शब्दोंसे ही भाग गये ४२ वहां हाथियों के दांतों से घायल कितनोहीने पीड़ा युक्त होकर ऐसे भयानक शब्दकिये जैसे कि उत्पात के बादल शब्द करते

हैं ४३ उत्तम हाथियोंसे विरुद्ध कियेहुये हाथी हाथियों को मथ कर उत्तम अंकुशों से प्रेरित फिर लौट आये ४४ अच्छे अलंकृत बाण और तोमरों से घायल हुये हाथियोंके अलंकृत वह सवार हाथियों से पृथ्वीपर गिरे जिनके कि हाथों से अंकुश और शस्त्र छूट गये थे ४५ अपने सवारों से रहित हाथी जहां तहां शब्दों को करतेहुये परस्पर प्रवेश करके टूटे हुये बादलों के समान गिर पड़े ४६ अकेले घूमने वाले के समान कितनेही बड़ेहाथी उन मृतक और गिरे हुये शस्त्र वाले मनुष्यों को लियेहुये दिशाओं को गये ४७ तब उसमार घार में तोमर दुधारे खड्ग और परसोंसे घायल व ताड़ित हाथी कष्टित शब्दों को करते हुये पृथ्वी पर गिर पड़े ४८ उस पर्वता कार चारों ओर को गिरने वाले हाथियों के शरीरों से आघातित पृथ्वी अकस्मात् कंपायमानहो कर शब्दायमानहुई ४९ अश्वारूढ़ व पताका धारी हाथियों के सवार और हाथियों से वह पृथ्वी चारों ओर से ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि फैले हुये पर्व्वतोंसे शोभि-तहोतीहै ५० वह अच्छे अलंकृत हाथियोंके सवार जिनके हृदय युद्ध में घायलहुये फैले अंकुश और तोमर और रथियोंके भल्लोंसे गिरा-येगये ५१ और बहुत से हाथी नाराचोंसे घायल क्रौंचके समान गर्जते हुये शत्रुओंको और अपनी सेनाके भी लोगोंको मर्द्दन करते हुयेदशों दिशाओं को भागे ५२ हे राजा पृथ्वी हाथी घोड़े रथऔर युद्ध कर्त्ताओंके असंख्य शरीरों से संयुक्त होकर मांस रुधिर रूप कीचकी रखने वालीहुई ५३ दांतों की नोकसे मथकर हाथियों से उछाले हुये और पहिये रखने वाले बड़े २ रथोंसेही बिना पहिये किये हुये ५४ रथ अपने२ रथियों से रहित हुये और घोड़े भी अपने२ अश्वारूढ़ों से खाली होगये और जिनके सवार मारे गये वे भयसे दुखी हाथी भी दिशाओं को भागे ५५ इस युद्धमें पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको भी मारा अर्थात् ऐसाकठिन युद्धहुआ कि जिस में किसीने किसी को नहीं जाना ५६ उस युद्धमें मनुष्य रुधिरकी कीचोंसे डाढ़ी मूछों समेत लिप्त होकर ऐसे दुखीहुये जैसे

कि प्रकाशित अग्निसे संयुक्त बड़े २ वृक्ष होते हैं ५७ रुधिर से लिप्त वस्त्र कवच छत्र और पताका येसब लालरंग के दृष्टपड़े ५८ गिराये हुये घोड़े रथ और मनुष्यों के समूह पृथ्वी पर पड़े हुये फिर रथ की नेमियों से दबकर अनेक प्रकार से खंड २ हुये ५९ वह सेनारूपी समुद्रहाथियों के समूहसे बड़ी तीव्रतासेयुक्त निर्जीव मनुष्य रूप शैवल रखनेवाला और रथोंके समूहरूपकठिन भंवरवाला हो कर महा शोभायमान हुआ६० बिजयरूपी धनकेचाहनेवाले शूरबीरोंने सवारी रूपी बड़ी२ नौकाओं के द्वारा उस सेना सागर को मझाकर डूबने वालोंने मोहको नहीं किया ६१ बाणोंकी बर्षासे अत्यन्त बर्षा युक्त घात चिन्हों समेत उन शूरबीरोंके मध्य में किसी बिना घायलने भी चितकी दृढ़ताको नहीं पाया ६२ इसी प्रकार भयकारी रूप मद के उत्पन्न करनेवाले युद्ध के बर्त्तमान होने पर द्रोणाचार्य्यजी शत्रुओंको मोहित और अचेत करके युधिष्ठिर के सन्मुख गये ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिविंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसके अनन्तर युधिष्ठिरने समीपआयेहुये द्रोणाचार्य्यकोदेखकरनिर्भयपुरुष के समान होकर बाणों की बर्षा से उनको ढकदिया १ इसकेपीछे युधिष्ठिर की सेना में बिलबिला नाम शब्द उत्पन्न हुआ कि बड़ा सिंह हाथियोंके स्वामीको पकड़ना चाहताहै २ फिर बड़ा शूरबीर सत्य पराक्रमी सत्यजित द्रोणाचार्य्य को देखकर युधिष्ठिर को चाहताहुआ आचार्य्य के सन्मुख गया ३ तब महाबलीद्रोणाचार्य्य और पांचालदेशी उस सेनाको व्याकुल करते हुये इन्द्र और बैरोचनके पुत्र असुराधिप राजाबलि के समान युद्ध करने लगे ४ इसके पीछे बड़े धनुषधारी सत्यपराक्रमी उत्तम शस्त्रको दिखाते हुये सत्यजित ने द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे घायल किया ५ उसी प्रकार विषैले सर्पके समान मृत्यु

रूप पांच बाणोंकोउन के सारथी पर छोड़ा और उन बाणोंके लगने से उनकासारथी अचेत हुआ ६ फिर अकस्मात् दशबाणों से उनके घोड़ोंको घायल किया और फिर इसीकोप संयुक्तने दशदशबाणों से उसके पार्ष्णि समेत सारथी को बेधा ७ फिर मंडल को घूमकर सेना के मुखपर घूमने लगा इन सब बातों के पीछे उस शत्रुओंके मारने वालेने क्रोधकरके द्रोणाचार्य्यकी ध्वजाको काटा ८ फिरशत्रुओंके बिजय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने युद्धमें उसके उसकर्म कोदेख कर अपने मनसे मरणप्राय समझा ९ औरशीघ्रही बाणसमेत उसके धनुषको काटकर मर्मवेधी तीक्ष्ण दशबाणोंसे सत्यजितको घायल किया १० हेराजा फिर उस प्रतापीने शीघ्रतासे दूसरे धनुषको लेकर तीस बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको व्यथित किया ११ युद्धमेंसत्यजितसेग्रसेहुये द्रोणाचार्य्यको देखकर पांचालदेशी बृकने सौ तीक्ष्ण बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको पीड़ामान किया १२ तबयुद्धमें महारथी द्रोणाचार्य्यको बाणोंसे ढकाहुआ देखकर पांडव प्रसन्नतासे पुकारे और बड़ी प्रसन्नतासे बस्त्रोंको फिराया १३ हेराजाबड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त बृकने फिर द्रोणाचार्य्यको साठ बाणोंसे छातीपरघायल किया और बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ १४ बाणोंकी बर्षासे ढकेहुये बड़ेवेगवानमहारथी द्रोणाचार्य्यने क्रोधसे दोनोंनेत्रोंको निकालकरबड़ा वेगकिया १५ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने सत्यजित और बृकके धनुषोंको काटकर छः बाणोंसे सारथी और घोड़ोंसमेत बृककोमारा १६ इसके पीछेसत्यजितने बड़ेवेगवान दूसरे धनुषको लेकर विशिखनाम बाणोंसे घोड़े सारथी और ध्वजा समेत द्रोणाचार्य्यको घायल किया १७ पांचालदेशीसे युद्धमें पीड़ामान द्रोणाचार्य्यने भीउसके प्रहारोंको नहींसहा और उसके नाशकरने केलिये शीघ्रही बाणोंको छोड़ा १८ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने हजारोंबाणोंकी बर्षासे उसकेघोड़े धनुषध्वजा सारथी और पृष्टके रक्षकोंको आच्छादित करदिया १९ इसीप्रकार बार बार धनुषके टूटनेपर उत्तम अस्त्रोंके ज्ञाता पांचालदेशी सत्यजितने रक्तबर्ण घोड़े रखनेवाले द्रोणाचार्य्य से बड़ा युद्धकिया २० द्रोणा-

चार्य्यने युद्धमें उस सत्यजित को इस प्रकारका शूरबीर जानकर अपने अर्धचन्द्र नाम बाणसे उस महात्मा के शिरको काटा २१ उस पांचालोंके महारथी बड़े पराक्रमीके मरने पर द्रोणाचार्य्य से भयभीत राजा युधिष्ठिर शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा हटगया २२ पांचाल, केकय, मत्स्य, चेदि, कारुष्य और कोशल देशियोंके शूरबीर युधिष्ठिर को चाहते उस द्रोणाचार्य्य को देखकर उनके सन्मुख गये २३ इसकोपीछे शत्रुसमूहोंके मारनेवाले आचार्य्यने युधिष्ठिर की चाहनेवाली उनसेनाओं को ऐसे भस्म करदिया जैसेकि तृण समूह कोअग्नि भस्म करदेता है २४ राजा विराटका छोटा भाई सतानीक उस सब सेनाके बारंबार नाश करनेवाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुख वर्त्तमान हुआ २५ और सूर्य्यकी किरणोंके समान प्रकाशमान कारीगरके स्वच्छ किये हुये छः बाणों से सारथी और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य्य को अत्यन्त घायल करके बड़े वेगसे गर्जा २६ निर्दय कर्म में प्रवृत्त कठिनता से होनेके योग्य कर्मको करना चाहते सतानीकने महारथी द्रोणाचार्य्य को सैकड़ों बाणोंसे ढक दिया २७ फिर द्रोणाचार्य्यने भी शीघ्रता करके क्षुरनाम बाणसे उस गर्जते हुये सतानीक के शरीर से कुण्डल धारी शिरको काट कर पृथ्वी पर गिराया इसके मत्स्य देशी लोग भागगये २८ भारद्वाजने मत्स्य देशियों को बिजय करके चन्देरी कारुष्य केकय पांचाल सृंजय देशी और पांडवों को भी बारंबार बिजय किया २९ जैसे कि अग्नि बनको भस्म करताहै उसी प्रकार सेनाओं के भस्म करने वाले क्रोध रूप स्वर्णमयी रथ वाले द्रोणाचार्य्यको देखकर सृंजयनाम क्षत्री अत्यन्त कम्पायमान हुये ३० इस शीघ्रता करने वाले उत्तम धनुषधारी शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य्यकी प्रत्यंचाकाशब्दसब दिशाओं में सुना गया ३१ हस्तलाघवी द्रोणाचार्य्य के छोड़े हुये मर्म कारी शायकों ने हाथी घोड़े पदाती रथारूढ़ और गजारूढ़ों को बहुत मथा ३२ जैसे कि हिम ऋतुके पीछे वायु से युक्त गर्जता हुआ बादल वर्षाको करताहै उसी प्रकार पाषाण वृष्टिके समान

वर्षाकरते द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंके भयको उत्पन्न किया ३३ पराक्रमी शूरबीर बड़े धनुष धारी मित्रोंके अभय देनेवाले द्रोणाचार्य्य सेनाको व्याकुल करते सब दिशाओंमें घूमे ३४ हमने उस बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य के स्वर्णमयी धनुष को सब दिशाओं में ऐसे देखा जैसे कि बादलों में बिजली होतीहै ३५ हे भरतवंशी हमने इस युद्धमें अत्यन्त घूमते द्रोणाचार्य्य की ध्वजा में शोभायमान हिमा चलके शिखरकी समान वेदीको देखा ३६ फिर द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिर की सेनाके मध्यमें ऐसा बड़ा बिध्वंसन किया जैसेकि देवता औरअसुरोंसे प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले विष्णुभगवान् दैत्यों के समूहोंमें बिध्वंसन करते हैं ३७ उस शूरबीर सत्यबक्ता ज्ञानी पराक्रमी सत्य पराक्रमी महानुभाव द्रोणाचार्य्य ने उस नदीको जारी किया ३८जोकिप्रलयकालीन भयकारी नदीके समानभयभीतों को डराने वाली कवच रूप तरंग ध्वजा रूप भंवर मृतकोंको किनारेसे दूरहटाने वाली हाथी घोड़े रूपी बड़ेग्राह और खड्गरूपी मछली रखने वाली कठिनता से स्पर्श करने के योग्य ३९ बीरों के अस्थिरूप ककड़ रखने वाली भयकारी भेरी मृदंग रूपीकछुये रखने वाली ढालऔर कवचरूपी नौका रखनेवाली महाभयानक केशरूप शैवल और शाड्वल रखने वाली ४० बाण समूहों को रखने वाली धनुषरूप झिरनोंसे युक्त भुजा रूप पत्तोंसे व्याप्त युद्ध भूमिमें बहने वाली कठिन कौरव और सृंजियों से प्राप्तकरने वाली ४१ मनुष्यों के शिर रूप पाषाण रखने वाली शक्ति रूप मछली गदा रूप मुड्गनाम नौका रखने वाली पगड़ी रूपी फेनों से आच्छादित निकली हुई आंतरूपी सर्पोंसे युक्त ४२ बीरों को मारने वाली और भयकारी मांस रुधिर रूप कीच रखने वाली हाथी रूप ग्राह ध्वजारूप वृक्षों सहित क्षत्रियों को डुबानेवाली ४३ निर्दय शरीरों से परस्पर घिसावट रखनेवाली अश्वारूढ़ रूप नक्रोंकी रखने वाली ऐसी दुर्गम नदीको द्रोणाचार्य्यने प्रकट किया वह नदी मृत्यु रूप कालसे मिली हुई थी ४४ राक्षस और

गिद्ध आदि के समूहोंसे सेवित श्वान शृगालोंकेसमूहों से युक्त बड़े भयकारी मांसभक्षी जीवों करके चारों ओरसे सेवितथी ४५ वह युधिष्ठिरादिक उस कालरूप के समान सेनाके नाश करने वाले बड़े रथी द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ४६ वहां उन शूरों ने एक साथही द्रोणाचार्य्यको सबओरसे ऐसे रोंका जैसे कि किरणोंसे संसार के तपाने वाले सूर्य्य रुकते हैं ४७ शस्त्र उठाने वाले आप के बेटे राजा लोग और राजकुमारों ने बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य को चारों ओरसे घेरलिया ४८ इसके पीछे शिखण्डीने पांचबाणसे क्षत्रधर्माने बीस बाणोंसे बसुदान ने पांच बाणसे उत्तमौजा ने,तीन बाणोंसे क्षत्रदेवने सात बाणों से सात्यकी ने सौ बाणोंसे युधामन्यु ने आठ बाणों से ४९ युधिष्ठिर ने बारह शायकों से द्रोणाचार्य्यको घायल किया ५० और धृष्टद्युम्न भी तीन बाणसे व्यथित किया ५१ इस के पीछे सत्यसंकल्पी महारथी द्रोणाचार्य्य ने मतवाले हाथीके समान रथ वाली सेनाको उल्लंघन करके इस दृढ़ सेनाको गिराया५२फिर निर्भयके समान प्रहार करने वाले राजाको पाकर नौ बाणोंसे क्षेमको ऐसाघायल किया कि मृतक रथसे गिरपड़ा५३ वह रक्षा के योग्य गुरू द्रोणाचार्य्य सेना के मध्य को पाकर सब दिशाओं में घूमे और किसी दशामें भी अन्य लोगोंके रक्षक नहीं हुये ५४ बारह बाणसे शिखण्डी को बीस बाणसे उत्तमौजस को घायल करके भल्लसे बसुदानको यम लोकमें भेजा५५ अस्सी बाणों से कृतबर्माको छब्बीस बाणसे सुदक्षिण को घायल करके भल्लसे क्षत्रदेवकोरथके नीड़स्थान सेगेरा५६ फिर उस स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्यने साठबाणसे युधामन्यु को तीस बाण से सात्यकीको घायल करकेशीघ्रही युधिष्ठिर के सन्मुख गये ५७ फिर राजाओं में श्रेष्ठयुधिष्ठिर शीघ्र गामी घोड़ों के द्वारा शीघ्रही गुरूके सन्मुख से हट गये और पांचालदेशी शूरबीर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया ५८ फिर द्रोणाचार्य्यने उसको धनुष घोड़े और सारथी समेतऐसा मारा कि वह मृतक होकर रथसे पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि

आकाशसे तारागिरताहै ५९ उसपांचाल देशियोंके यश करनेवाले राजकुमारके मरनेपर यह बड़ाभारी शब्द हुआ कि द्रोणाचार्य्यको मारो मारो ६० पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने उन अत्यन्त क्रोध युक्त पांचाल मत्स्य और केकय देशियों समेत सृंजयोंसे युक्त पांडवों को छिन्न भिन्न करदिया ६१ सात्यकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, वार्धक्षेम, चित्रसेन, सेनाबिन्दु, सुवर्चस ६२ इन समेत अन्य२ नाना प्रकारके देशाधिपति अनेक राजाओं को कौरवोंसे घिरेहुयेद्रोणाचार्य्यने बिजय किया ६३ हेमहाराज आपके शूर बीरोंने महा युद्ध में बिजयको पाकर युद्धमें चारोंओरसे छिन्न भिन्नहुये पांडवोंके शूर वीरोंको मारा६४हे भरतवंशी जैसेकि इन्द्रके हाथसे दानवघायल होतेहैं उसी प्रकार महात्मा द्रोणाचार्य के हाथसे घायलहुये वह पांचाल केकय और मत्स्य देशीभी अत्यन्त कंपायमानहुये ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले उस बड़े युद्धमें द्रोणाचार्य्यसे पांचालोंके औरपांडवों के पराजयहोने पर कोईभी दूसरा सन्मुख न रहा १ क्षत्रियों के यशकी बढ़ाने वाली उत्तम बुद्धिको जिस पर कि नीच मनुष्यनहीं चलते और उत्तम पुरुष उस पर कर्मकरते हैं उस बुद्धिको युद्धमें करके सन्मुख बर्त्तमान हुआ २ वही बड़ा पराक्रमी और शूरबीर है जो छिन्न भिन्न होने वालोंमें लौटताहै बड़ा आश्चर्य्यहै कि कोई मनुष्यभी द्रोणाचार्य्य को नियत देखकर सन्मुख नहीं हुआ ३ व्याघ्रके समान जंभाई लेने वाले मतवाले हाथीके समान युद्धमें प्राणोंके त्यागनेवाले अलंकृतहोकर अपूर्व्व युद्धकरने वाले ४ बड़े धनुषधारी नरोत्तमशत्रुओंको भयबढ़ानेवाले उपकारके ज्ञाता सत्य बक्ता दुर्योधन का प्रिय चाहनेवाले ५ शूर वीर द्रोणाचार्य्य को सेनामें देखकरकौन२सेशूरबीर लौटे हेसंजय यहसबमुझसेकहो ६ संजय बोलेकि पांचाल पांडव मत्स्य देशी सृंजयी चेदेरी देशियों

और केकयोंकोयुद्धमेंद्रोणाचार्य्यके शायकोंसेघायलऔरछिन्नभिन्न को ७ जैसेकि समुद्रके बड़े समूहसे नौका हरणकी जातीहैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य के धनुषसे छोड़ेहुये और शीघ्रमारनेवाले बाणों के समूहोंसे स्वाधीनता में होनेवालोंको देखकर८कौरवोंने नाना प्रकारके बाजोंके शब्द और सिंहनादोंको करतेहुये रथ हाथी और मनुष्योंको सब ओरसे घेरलिया ९ सेनाके मध्यमें नियत अपने मनुष्योंसे युक्त राजादुर्य्योधन उनको देखताहुआ अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक कर्ण से बोला १० हे कर्ण द्रोणाचार्य्य के शायकों से घायलहुये पांचालोंको देखो कि जैसे सिंहसेबनमें मृग भयभीतहोते हैं उसीप्रकार दृढ़ धनुषधारी द्रोणाचार्य्यसे भयभीत इनलोगोंको भी देखो ११ यह मेरी बुद्धिमें आताहै कि यह कभी युद्ध को नहीं चाहेंगे क्योंकि द्रोणाचार्य्यसे इसरीतिपर पराजय हुयेहैं जैसे कि बायुसे बड़े २ वृक्षताड़ित होकर गिरतेहैं १२ इनमहात्मा के सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे पीड़ामान जहांतहां घूमतेहुये ये लोग एक मार्गसे नहींजातेहैं१३कौरवोंसे और महात्मा द्रोणाचार्य्यसेरोकेहुये ये और अन्य शूरबीर लोग ऐसे मंडलरूप घिरावमें हुये जैसे कि अग्निसे हायीहोतेहैं १४ द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्ण धारवाले भ्रमररूप बाणोंसे युक्तशरीर भागनेमें प्रवृत्त चित्त होकर परस्पर में भिन्न २ होगये १५ हेकर्ण यहबड़ा क्रोधी भीमसेन पांडवों और सृञ्जयोंसे पृथक होकरमेरे शूरबीरोंसे घिराहुआ मुझको प्रसन्नकरता१६प्रकटहैअबयह दुर्बुद्धीलोकको द्रोणाचार्य्यरूप देखताहै इससेनिश्चय होताहै कि यह भीमसेन अबअपने जीवनसे और राज्य से निराश होगयाहै १७ कर्णबोला यहमहाबाहु अपने जीतेजी कभी युद्ध को नहीं त्यागेगा यह पुरुषोत्तम इनसिंह नादोंको नहींसहैगा १८ और पांडवभी युद्धमेंसे कभी पृथक नहींहोंगे यहमेरा विचारहै क्यों कि पराक्रमी शूरबीर अस्त्रज्ञ होकर युद्धमें दुर्मद हैं १९ ये पांडवलोग विष अग्नि द्यूत और बनबास करनेके दुःखोंको स्मरणकरतेयुद्धको नहीं त्यागेंगे यहमेरा निश्चय सिद्धान्तहै २० बड़ातेजस्वी महाबाहु

कुन्तीका पुत्रभीमसेन लौटता हुआभी बड़े २ उत्तम रथियोंको मारे गा २१ खड्ग धनुषशक्ति घोड़ेहाथी और मनुष्यों के समूहों को रथ और लोहेके दंडसे मारेगा२२पांचाल केकय मत्स्यदेशी शूर सात्यकी आदिकरथी पांडवअधिकतर इस भीमसेनके पीछेकर्मकरनेवाले होतेहैं २३ शूरवीर पराक्रमी और बड़े २ बलवान महारथी लोग इस अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेनकी प्रेरणासे मारनेवाले २४कौरवों में श्रेष्ठ भीमसेनको चाहतेहुये लोग सबओर से द्रोणाचार्य्य के सन्मुख ऐसे वर्तमानहैं जैसेकि बादलोंके समूह सूर्य्यको सबओरसे घिरेहुये होतेहैं २५ एकस्थानपर वर्त्तमान ये लोग इस अरक्षित व्रतमें सावधान द्रोणाचार्य्यको ऐसेपीड़ा देतेहैं जैसेकि मरणकेअभिलाषी टीड़ियों के समूह दीपकको कष्टदेतेहैं २६ निस्सन्देह ये लोग अस्त्रज्ञ होकरयुद्धमेंभी पूरेहैं अबमैं भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के ऊपर बड़ाभारी बोझानियत मानताहूं २७ हमवहां शीघ्रही जायंगे जहां कि द्रोणाचार्य्यजी नियतहैं ये लोग इससावधान व्रत द्रोणाचार्य्य को ऐसे न मारडालें जैसेकि कीकनाम जीव बड़ेसर्पको मारडालता है २८ संजयबोले हेराजा इसकेपीछेराजा दुर्य्योधनकर्णके वचनको सुनकरभाइयों समेत द्रोणाचार्य्य के रथके समीप गया २९वहां पर नानाप्रकारके वर्ण रखने वाले उत्तम घोड़ों को सवारी से लौटेहुये अकेले द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी पांडवों का बड़ा भारी शब्द हुआ ३०॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वाविन्शोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय सब के रथोंके चिन्हों को मुझसे वर्णन करो जो क्रोध युक्त शूरबीर जिन में अग्रणीय भीमसेन था वे सब द्रोणाचार्य्य के सन्मुख हुये १ संजय बोले कि सुवर्ण वर्ण वाले घोड़ों की सवारी से जाते हुये भीमसेन को देखकर रुक्म वर्ण वाले अश्वों की सवारी वाला शूर बीर रथी सात्यकी लौटा२ और

निर्भयता पूर्व्वक क्रोधयुक्त कपूर वर्ण वाले घोड़ोंको चलाता हुआ युधामन्यु भी द्रोणाचार्य्य के रथ के समीप वर्त्तमान हुआ ३ राजा पांचाल का पुत्र धृष्टद्युम्न कपोतग्रीव वर्णवाले बड़े शीघ्रगामी सुवर्णके आभूषणादिक सामानोंसे अलंकृत घोड़ोंकी सवारीसे लौटा ४ षितको चाहता और उसकी सिद्धी का अभिलाषी व्रतमें सावधान श्वेत घोड़े वाला क्षत्रधर्मा लौटा ५ शिखण्डी का पुत्र कमलपत्र और मल्लिका के समान नेत्र रखने वाला क्षत्रदेव अपने सुन्दर अलंकृत घोड़ोंको आप चलाता हुआ गया ६ तोते के परके समान हरित वर्ण वाले दर्शनीय सामान रखने वाले कांबोज देशी घोड़ों पर सवार होकर नकुल भी आपके शूरवीरों के सन्मुख गया ७ हे भरतर्षभ मेघके समान श्यामवर्ण क्रोधभरे घोड़े कठिन युद्ध करने के विचार से अपने स्वामी उत्तमौजस को लेचले ८ इसी प्रकार उस तुमुल युद्धमें तीतरके समान चिन्ह रखने वाले वायुके समान शीघ्रगामी घोड़े उसशस्त्राधारी सहदेव को लेचले ९ श्वेत रंग काली पूंछ महाभयकारी तीव्रतासे युक्त वायुके समान शीघ्र गामी घोडे उस नरोत्तम राजा युधिष्ठिर को लेचले १० सुवर्ण निर्मित सामानों से अलंकृत वायुके सदृश शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से युधिष्ठिर के पास आकर वर्त्तमान हुये ११ राजायुधिष्ठिरके पीछे पांचाल देशका राजा द्रुपदहुआ वह बड़ा धनुषधारी महानिर्भय युद्धमें सबप्रकार के शब्दोंको सहनेवाले घोड़े सुवर्ण के क्षत्र और घोड़ों के सामानों से युक्त राजाओं में सब से रक्षित होकर सन्मुख वर्त्तमान हुआ १२ । १३ राजा विराट सब महारथियों समेत शीघ्रतासे उस के पीछे चला सब केकय देशी शिखण्डी धृष्टकेतु १४ ये सब अपनी २ सेनाओं से परिवेष्ठित राजा विराट के पीछे २ चले उस शत्रुहन्ता राजा विराटके पाटलि पुष्पके समान वर्ण रखने वाले उत्तम घोड़े उस राजा विराट की सवारी में महा शोभायमान हुये हल्दीके समान पीतरंग तीव्रगामी सुवर्ण माला धारी घोड़े १५ । १६ राजा विराट के पुत्र को

शीघ्र लेचले पांचोंभाई केकय इन्द्र गोपक जीव अर्थात् वीरबहूटी के समान लालरंग वाले घोड़ों की सवारी से चले १७ जात रूप सुवर्ण के समान प्रकाशित रक्त ध्वजा और सुवर्ण की माला रखने वाले शूर बीर युद्ध में कुशल वह सबभाई १८ शस्त्रों से अलंकृत बादलोंके समान बाणों को वर्षाकरते दिखाई दिये हरित पत्रके समान रंगवाले और तुम्बुर गन्धर्वके दियेहुये दिव्य घोड़े उस बड़ेतेजस्वी पांचालदेशी शिखण्डीको लेचले इसी प्रकार पांचालदेशोंके महारथी बारह हजार थे १९। २० उनमें छःहजारतो वे थे जो शिखण्डी के पीछे चले हे श्रेष्ठ नरोत्तम धृतराष्ट्र प्रतापी शिशुपालकेपुत्रको २१ कपूरी रंगकेघोड़े बड़ीक्रीड़ा करते हुये ले चले फिर चंदेरी देशियोंमें श्रेष्ठ दुर्ज्जय रक्तवर्णकी पोशाक वाला धृष्टकेतु २२ नाना प्रकारकेरंग रखनेवाले काम्बोजदेशी घोड़ोंको सवारीसेसन्मुख वर्त्तमानहुआ२३वेफिर केकयदेशीसुकुमारवृहत्क्षत्र कोभीबड़े २ उत्तमघोड़े लेचले वे घोड़ेभी पलाल धूसर वर्णके सिन्ध देशीथे चमेलीके समान नेत्र रखनेवाले कमलवर्ण अच्छे अलंकृत बालेहीकदेशी घोड़े २४ शिखण्डी केपुत्र शूरवीर क्षत्रने देवकोलेचले और स्वर्णमयी सामानसे अलंकृत रेशमी वर्णवाले घोड़े २५ उसशत्रु विजयीसिना बिन्दुकोयुद्धमें लेचले और क्रौंचके समानरंग वाले शान्तरूपउत्तमघोड़े राजाकाशीकेपुत्र युवा सुकुमार अतिभुवको युद्धमें लेचले हेराजा उसकुमार प्रतिबिन्दुको श्वेतरंग कालोगर्दने और चित्तके समान शीघ्रगामी २६। २७ सारथीकेप्रसन्नकरने वालेघोड़े लेचले फिरजिस पांडवने अपूर्व्व दर्शनीय सुतसोम नामपुत्रको उत्पन्न किया २८ उसको उर्दके फूलके रंगवाले घोड़ेयुद्धमें लेचले कौरवोंके उदयेन्दुनाम पुरमें हजार चन्द्रमाके स्वरूप वाला उत्पन्नहुआ और जो कि वह सोमसंक्रंद के मध्यमें उत्पन्नहुआ इसहेतुसे उसपुत्रका नाम सोमहुआ २९ नकुलके पुत्र प्रशंसनीयसतानीक नामको शाल पुष्पके वर्णवाले और तरुणसूर्य्य केसमान प्रकाशित घोड़े लेचले ३० सुवर्णके समान योक्त्र मोर

की ग्रीवके समान रंगवाले घोड़े उस द्रौपदीके पुत्रनरोत्तम श्रुतकर्माको युद्धमें लेचले ३१ नीलकण्ठके पक्षके समान रंगवाले उत्तम घोड़ोंने उस द्रौपदीकेपुत्र शस्त्रज्ञ युद्धमें अर्जुनकेसमानश्रुतकीर्त्तिको सवारकिया ३२ जिसकोयुद्धमेंश्रीकृष्णजी और अर्जुनसे ड्योढ़ाकहाहै उस कुमार अभिमन्युको पिंगलवर्ण घोड़े युद्धमें लेचले ३३ जो अकेलाही धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे पृथक् होकर पांडवोंके पासशरणागतहुआ उस युयुत्सूको बड़े शरीर वाले बड़े घोड़े लेचले ३४ और बड़े तुमुलयुद्धमें प्रसन्न और अच्छे अलंकृत पलाल काशडके वर्णवाले घोड़े वेगवान् वार्द्धकेशीको लेचले ३५ श्वेत वा श्याम चरण सारथीके आज्ञावर्त्ती घोड़े बड़े सामानवाले सुनहरी रथकेद्वारा उसकुमारसौचित्तिको लेचले ३६ स्वर्णमयी जीनपोश वाले रेशम शरीर सुवर्ण निर्मित मालाधारी शान्तरूप घोड़े श्रेणिमन्तको लेचले ३७ सुनहरी मालाधारी बड़े शूर स्वर्णमयी जीनपोशधारी अच्छे अलंकृत घोड़े उस प्रशंसनीय नरोत्तम काशीके राजाको लेचले ३८ उस अस्त्रज्ञ धनुर्वेदज्ञ ब्रह्मअस्त्र और वेदोंमें पूर्ण सत्यधृतिको लालघोड़े लेचले ३९ जिस पांचालदेशी पतिने अपनाअंश अर्थात् भागद्रोणाचार्य्यको नियत किया उस धृष्टद्युम्नको कपोत वर्णवाले घोड़ेलेचले ४० सत्यधैर्य्यसे युक्तयुद्धमें दुर्म्मद सौचित्ति श्रेणिमान बसुदान और बड़ासमर्थ काशीकेराजाकापुत्र ये सब उसकेपीछेचले ४१ तीव्रगामी सुवर्णमयी मालाधारी कांबोजदेशी उत्तमघोड़ेसे संयुक्त रथों परसवार यमराज और कुबेरके समान वे सबलोग शत्रुकी सेनाको डराते हुयेचले ४२ प्रभद्रक और कांबोजदेशी शस्त्रोंसे अलंकृतसुनहरीरथ और ध्वजाओंके रखनेवाले छःहजार शूरबीर नानाप्रकारके वर्णवाले घोड़ोंकी सवारीसे ४३ धनुषखेंचने वाले बाणोंके समूहों से शत्रुओंको कपायमान करनेवाले वे सबलोग मृत्युके समान होकर धृष्टद्युम्नकेपीछेचले ४४ लालरेशमके वर्ण उत्तम सुवर्ण के माला रखने वाले उत्तमघोड़े चेकितान कोलेचले ४५ सव्यसाची अर्जुनका मामा पुराजित कुन्तभोज इन्द्र धनुषके वर्णबड़े श्रेष्ठ घोड़ों

की सवारी के द्वारा आया ४६ अन्तरिक्ष वर्ण चित्रित तारागणों के समान घोडे राजा रोचमान को युद्धमें लेचले ४७ नानाप्रकार के रंग रखनेवाले श्वेत चरण सुवर्णके जाल आदि सामानों से अलंकृत उत्तमघोड़े उस जरासन्धके पुत्र सहदेवको लेचले४८और जो घोड़े किंकमलनाल के समान वर्ण शीघ्रता में बाज पक्षी के समान महाअपूर्व उत्तम थे वह सुदामाको लेचले ४९ शशलोहित वर्ण श्वेतरेखा रखनेवाले घोड़े पांचाल देशी पति के पुत्र सिंहसेन को लेचले ५० जो नरोत्तम जन्मेजय नामपांचालदेशियोंका राजा प्रसिद्धहै उसके सरसोंके पुष्प वर्णवाले उत्तम घोड़े पीतवर्णथे ५१ मापवर्ण शीघ्रगामी स्वर्णमयी मालाधारी श्वेतपृष्ठ और चित्र मुखवाले बड़े घोड़े उसपांचाल देशीको शीघ्रतासे लेचले ५२ शूर भद्रकशर कोडके समान किंजल्क वर्ण प्रकाश मान घोड़े दंडधारको लेचले ५३ रास भारुण वर्णपृष्ठ भागमें मूखकवर्ण सावधान अपनी चाल चलते हुये घोड़े व्याघ्रदत्तको लेचले ५४ कालक प्रकारवाले अपूर्व्व मालाओं से अलंकृत घोडे पांचाल देशी नरोत्तम सुधर्माको लेचले इन्द्रबज्रके समान स्पर्श वाले बीरबहूटी के वर्ण शरीरों में नाना प्रकार के चित्रोंसे चित्रितअद्भुत घोड़ेचित्रायुधकोलेचले ५६ चक्रवाकके समान उदर रखनेवाले स्वर्णमयी मालाधारी घोड़े राजाकोशलके पुत्रसुक्षत्रको लेचले ५७ हरताल के वर्ण बडे शिक्षित सुनहरी मालाधारी ऊंचे शुंभ घोडे युद्ध में सच्चे धैर्य्यवाले क्षेमी को लेचले ५८ एकही श्वेत रंगवाली ध्वजा कवच धनुष औरघोड़ों से युक्त राजा शुक्र लौटा ५९ शशांक वर्ण समुद्र देशी घोड़े समुद्र सेनके पुत्र चन्द्रसेन जोकि रुद्रजी के समान तेजस्वी था उस को लेचले ६० नीले कमलके वर्ण स्वर्णालंकृत अपूर्व्व माला धारी घोड़े युद्ध में शिवीके पुत्र चैत्र रथको लेचले ६१ गुलाबके पुष्पके समान रंग वाले श्वेत रक्तपंक्ति रखने वाले घोड़े उस युद्धमें दुर्मद रथसेन को लेचले ६२ जिस राजा को सब मनुष्यों से उत्तम और शूर बीर कहतेहैं उस पटच्चरथा को तोतेके समान वर्णवाले घोड़े

लेचले ६३ और किंशुक के पुष्प के समान वर्ण रखने वाले उत्तम घोड़े उस चित्रायुध को लेचले जो कि अपूर्व्व माला कवच शस्त्र और ध्वजा का धारण करने वाला था ६४ राजानील एक नीले रंग वाली ध्वजा कवच धनुष रथ और घोड़ों से युक्त सन्मुखआकर वर्त्तमान हुआ ६५ नाना प्रकार के रूप वाले रत्नों से चिह्नित कवच धनुष अपूर्व्व घोड़े और ध्वजा पताकाओंसे युक्त राजा चित्र सन्मुखआया ६६ जो कमल वर्णके समान रंगवाले उत्तम घोड़े हैं वह रोचिमान के पुत्र हेमवर्ण को लेचले ५७ युद्ध कर्त्ता शुभ रूप शर दंड अनुदंड श्वेतांड और कुकुटांड वर्णवाले घोड़े दंड केतुको लेचले ६८ हे राजा युद्धमें केशव जी के हाथ से पिताके मरने पर पांड्यदेशियों के द्वार खंडितहोने और बांधव लोगों के भाग जाने पर ६९ भीष्म द्रोणाचार्य्य राम और कृपाचार्य्यसे अस्त्रोंको पाकर और अस्त्रों के द्वारा रुक्म कर्ण अर्जुन और श्रीकृष्ण जी के साथ समानता को पाकर ७० द्वारका के नष्ट करने वा सब पृथ्वीके बिजय करने की आभिलाषा करी इसके अनन्तर बुद्धिमान मित्रों की ओर से उसीकी भलाई के निमित्त निषेध किया गया ७१ जोराजा शत्रुता के हठको त्यागकर अपने राज्यमें शासन करताहै वह पराक्रमी सागरध्वजनाम राजा पाण्ड्यचन्द्ररश्मिके समानवर्णवाले७२ वैडूर्य्य मणिके जालोंसे ढकेहुये घोड़ोंकेद्वारा बीर्य्यद्रविणको धरेहुये अपने दिव्यधनुषको टंकारताहुआ द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया ७३ आटरूशक वर्णवाले एक लाख चालीसहजारघोड़े राजा पांड्यके पीछे चलने वाले उत्तम रथोंको लेचले ७४ नानाप्रकारकेरूप और मुखोंकी आकृति रखनेवाले घोड़े उस शूरबीर घटोत्कचजिसकी ध्वजा में रथके चक्रका चिह्नथा उसको लेचले ७५ जोअकेला मिलेहुये भरत वंशियोंके मतोंकोत्यागकर अपनेमनकेसबमनोरथोंसेरहितहोकर प्रीतिसे युधिष्ठिरमेंआकर संयुक्तहुआ७६ उस रक्तनेत्र महाबाहु सुवर्ण के रथ में नियत उस वृहंतको चक्ररूप ध्वजाधारी बड़े पराक्रमी और उन्नत शरीरवाले घोड़े ले चले ७७ सुवर्ण वर्ण सब घोड़ें।

में श्रेष्ठ घोड़े सब ओर से और मुख्यकर पृष्ठ भागसे उस धर्मज्ञरा-
जाओं में श्रेष्ठ सेनाके मध्यवर्ती युधिष्ठिर के साथचले ७८ देवता
रूप बहुतसे प्रभद्रक कुमार नानाप्रकारके शरीरवाले अन्य २ उत्तम
घोड़ोंकी सवारी से युद्ध के निमित्त लौटे ७९ हे राजेन्द्र वह स्वर्ण-
मयी ध्वजावाले भीमसेनके साथ उपाय करनेवाले ऐसे दिखाईदिये
जैसे कि इन्द्रके साथमेंदेवता होतेहैं ८० धृष्टद्युम्ननेउन सबआयेहुओं
को अत्यन्त अंगीकारकिया और भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी सबसेना
ओंको उल्लंघकर शोभायमान हुये ८१ हे महाराज उनकी ध्वजा-
जोकि काले मृगचर्मसे संयुक्त थी और उनके शुभदर्शनीय सुनहरे
कुंडलभी अत्यन्त शोभित होरहेथे ८२ मैंनेभीमसेन की उसध्वजा
को जिसमें कि बैडूर्य्य मणिकी आंख रखने वाला महा प्रकाशित
शोभायुक्त बड़ासिंह था अच्छे प्रकारसे देखा और उसीमें ग्रहों के
समूहों से संयुक्त चन्द्रमाभी प्रकाशमान होरहा था ८३ मैंने बड़े
तेजस्वी कौरव राज पांडव युधिष्ठिरकी सुनहरी ध्वजाकोभी देखा
कि उसमेंभी सबग्रह समूहों समेत चन्द्रमादे दीप्यमान था ८४ यहां
नन्द उपनन्दबजायदो बड़े मृदंग जोकि सुन्दर शब्दवाले और आ-
नंदके बढ़ानेवालेथे वह यन्त्रद्वारा बजाये गये ८५ हमने नकुल की
बहुतबड़ीध्वजा जोकि शरभनाम पशुका चिह्न रखनेवाली सुबर्णपृष्ठ
रथमेंभयानकरूप नियतथी उसकोभीदेखा ८६ सहदेवकी ध्वजामें
सुबर्ण निर्मित हंसघंटा और पताका रखनेवालामहादुर्जय शत्रुओंके
दुखऔर शोकका बढ़ानेवालाभी देखा ८७ द्रौपदीकेपांचोंपुत्रोंकीध्व-
जाधर्मबायु इन्द्र और महात्मा अश्विनीकुमारकी मूर्तियोंसे शोभाय
मानथी ८८ हे राजा अभिमन्यु कुमारके रथमें तपाये हुये सुबर्ण
केसमान अतिउज्ज्वलऔर श्रेष्ठ ऐसीध्वजाथी जिसमें सुनहरीसारंग
नामपक्षीथा ८९ हे राजेन्द्रघटोत्कचको ध्वजामें गिद्धशोभायमान
था और उसके घोड़ेऐसे इच्छाके अनुसार चलने वालेथे जैसे कि
पूर्व्वसमय में रावणके घोड़ेथे ९० हेराजा धर्मराज युधिष्ठिरके पास
माहेन्द्र नाम दिव्य धनुष और भीमसेन के पास बायव्यनाम उत्तम

दिव्यधनुष था ९१ ब्रह्माजीने तीनोंलोकोंकी रक्षाकेनिमित्त जो धनुष उत्पन्न किया वह दिव्य और रूपान्तर दशा से रहित धनुष अर्जुन केलिये व शार्ङ्ग नाम बिष्णुधनुष नकुलके लिये व अश्विनीकुमार का धनुष सहदेवकेलिये और रावणका दिव्य और भयका उत्पन्न करनेवाला धनुष घटोत्कच के निमित्त आकर बर्त्तमान था ९३ हे भरतबंशी द्रौपदी के पांचोंपुत्रोंके धनुष रूपरत्न यहथे रुद्रजी का धनुष अग्नि का धनुष कुवेरका धनुष यमराज का धनुष और शिवजीका धनुष ९४ बलदेवजीने जिस धनुषोंमें श्रेष्ठ महाउत्तम रुद्रधनुष को पाया और प्रसन्न होकर बलदेवजी ने वह धनुष महात्मा अभिमन्युके निमित्तदिया ९५ शूरलोगोंकी यहवर्ण कीहुई और अन्य २ सुवर्ण से अलंकृत ध्वजा शत्रुओं के शोभा की वह बढ़ानेवाली वहां देखने में आई ९६ हे महाराज द्रोणाचार्य्य की वहउत्तम लोगोंकी सेना ध्वजाओं से ऐसे व्याप्त हुई जैसेकि वस्त्रपर खैंचाहुआ चित्र शोभित होताहै ९७ तब युद्ध मे द्रोणाचार्य्य के सन्मुख दौड़नेवाले बीरोंके नाम गोत्र ऐसेसुनेगये जैसे कि स्वयंबर में सुनेजाते हैं ९८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचत्वारिंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले हेसंजय यह देवताओंकोभी सेनाकोपीड़ामानकरने वाले राजा लोग जिनमें मुख्य भीमसेन है युद्धमें लौटे १ निश्चयकरके यह पुरुष प्रारब्धसे अच्छी रीतिसे संयुक्त होताहै उसी में पृथक्२ प्रकारके राज्य धनआदिक अर्थदिखाई देतेहैं २ जटाऔर मृगचर्म धारी होकर युधिष्ठिर ने बहुत कालतक बनमें निवास किया और लोकों से अज्ञात होने पर क्रीड़ाकरने वाला हुआ ३ उस नेयुद्धमें बड़ी सेनाको प्रवृत्त किया और मेरे पुत्रकी भी सेनाइकट्ठी हुई दैव संयोग से दूसरी बातक्या है ४ निश्चय करके प्रारब्ध से संयुक्त मनुष्य चेष्टाकरता है और उससे वह उस प्रकार से खैंचा

जाताहै जिसप्रकारको कि वह आप नहीं चाहताहै ५ युधिष्ठिर द्यूत के दुःखको पाकर दुखित होगयाथा और फिर उसने प्रारब्धसेही सहायकों कोपाया ६ अब मुझको केकय देशीमिले और जोकाशी देशी कोशल देशी चंदेरी और बंगदेशीहैंवहमेरे पास आकर बर्त्तमान हुये ७ हे तात जैसे यह संपूर्ण पृथ्वी मेरीहै उस प्रकार पांडव युधिष्ठिरकी नहींहै हेतात पूर्व्व समयमें निर्बुद्धी दुर्य्योधनने मुझसेकहाथा ८ कि उस कीसेनाके समूहोंमें अच्छे प्रकारसे रक्षित हुये द्रोणाचार्य्यजी युद्धभूमिमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये इस हेतुसे मेरी बुद्धिमें प्रारब्धसे अन्य और क्याबातहै ९ सदैव युद्धको अच्छा माननेवाले सब अस्त्रोंके पारगामी महाबाहु द्रोणाचार्य्य को राजाओंके मध्यमें किसरीतिसे मृत्युने प्राप्त किया १० बड़ी आपत्तियोंके भोगने वाले मैंने बड़ेभारी मोहको पायामैंभीष्म और द्रोणाचार्य्य को मृतक सुनकर जीवते रहनेको साहसनहीं करसकाहूं ११ हे तात मुझको बेटेका लोभी देखकर जोर बिदुरजीने कहाथा हे सूत वह सबमुझ समेत दुर्य्योधन ने पाया १२ जो दुर्य्योधन को त्याग करने सेमेरीनिर्द्दयता न समझी जाय तोपुत्रों को बाकीरक्खूं अर्थात् सब न मारे जायं १३ जो मनुष्य धर्मको त्याग करके धनादिक अर्थ को उत्तम मानने वाला होताहै वह इस लोकसे भी पतित होताहै और नीच भावकोपाताहै १४ हे संजयअब मैं छत्रादिकके मर्द्दितहोने पर इस उत्साहसे रहित देशके भी बाकी रहने कोनहीं देखताहूं १५ नाश होनेवाले दोनों राजाओंका शेष कैसे होय हम जिन शान्त क्षमावान पुरुषों के पास सदैव अपना निर्वाह करतेहैं १६ हे संजय इस बातको प्रकट करकेमुझ से कहो जिस प्रकारसे कि युद्ध जारी हुआ कौन २ लड़े और कौन २ युद्धसे हटगये और कौनसे नीचभयसे भागे १७ उस अर्जुन को भी मुझसे कहो कि जिस रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तम नेजो २ कर्मकिये और मेरे भतीजे भीमसेनसे भी मुझको बड़ाभयहै १८ हे संजय पांडवोंके शूर बीरोंके लौटने पर मेरी शेष बाकी बचीहुई सेनाकी अत्यन्त भय

कारी सन्मुखता कैसी रीतिसे हुई १६ हेतात पांडवोंके लौटने पर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ औरमेरे पुत्रों समेत शूर बीरों में जो बड़े शूरहैं उनमें से किन्हांने किन लोगोंको रोका २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः२४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि पांडवोंके लौटने पर जैसे कि बादलोंसे सूर्य्यगुप्त होताहै उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य को उनलोगोंसे ढकाहुआ देखकर बड़ा भयकारी युद्धहुआ १ उनसे उठीहुई कठिन धूलने आपकी सेनाको ढकादिया इसकेपीछे हमने दृष्टि के मार्गबन्दहोजाने पर द्रोणाचार्य्यको मृतक माना२ उन शूरबीर बड़े धनुषधारी निर्दय कर्म करने के अभिलाषी लोगोंको देखकर दुर्य्योधनने शीघ्रही अपनी सेनाको चलायमानकिया३ और सबसे यह बचनकहा कि हेराजाओपराक्रमबुद्धिबल सामर्थ्यऔर समयकेअनुसार पांडवोंकीसेनाको हटाओ ४ इसके पीछे आपकापुत्र दुर्मर्षण समीपसे भीमसेन को देखकर बाणोंको फैलाता उसके मारनेकी अभिलाषा करता हुआ सन्मुख गया ५ युद्धमें मृत्युकेसमान क्रोधयुक्तनेउसकोअपनेबाणों स्टेढकादिया और भीमसेननेभीउसकोबाणोंसे महापीड़ितकिया उस समय बड़ाकठिन युद्धहुआ ६ वह ईश्वरकी आज्ञासे बड़ेज्ञानी शूर बीर प्रहार करनेवाले राज्यको और मरनेके भयको त्यागकरके युद्धमें शत्रुओंके सन्मुख नियतहुये ७ हेराजा कृतवर्माने युद्धकोशोभादेने वाले द्रोणाचार्य्यको चाहनेवाले आतेहुये शूरसात्यकीकोरोका८ फिर क्रोधयुक्त सात्यकीने उस क्रोधयुक्त कृतबर्मा को बाणोंके समूहोंसे रोका और कृतबर्माने सात्यकिको ऐसेरोका जिसप्रकार मतवाला हाथी मतवाले हाथीको रोकताहै ९ फिर भयकारी धनुषवाले बड़े उपायमें प्रवृत्त सिंधके राजा जयद्रथने बड़े धनुषधारी आतेहुये क्षत्रधर्माको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यकी ओरसे रोका १० क्षत्रधर्माने सिन्धके राजाकी ध्वजा और धनुषको

काटकर बड़े क्रोध पूर्बक दशनाराचों से उसके सब मर्मस्थलों को घायल किया ११ इसकेपीछे हस्तलाघवी राजा सिन्धने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें लोहमयी बाणों से क्षत्रधर्माको घायल किया १२ पांडवके निमित्त उपाय करनेवाले भाई शूर बीर महारथी युयुत्सूको उपायकरनेवाले सुबाहुने द्रोणाचार्य्यकी ओर सेरोकायुयुत्सूने बाणचलानेवाले सुबाहु की दोनोंभुजा जो कि सुन्दर धनुष बाणको रखनेवाली और परिघके समानथीं उनको श्वेत और पीत क्षुरनाम बाणोंसे काटा १४ और मद्रके राजाशल्य ने धर्मात्मा पांडवोंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिरको ऐसी अच्छी रीति से रोका जैसे कि मर्य्यादा वा किनारा बड़े व्याकुल समुद्र को रोकते हैं १५ धर्मराजने मर्मोंके भेदी अनेक बाणों से उसको ढकदिया फिरराजा मद्र चौंसठ बाणोंसे उसको बेधकर बड़े शब्दसेगर्जा १६ तबयुधिष्ठिरने क्षुरनाम दोबाणोंसे उस गर्जनेवालेकी ध्वजाऔरधनुषकोकाटा औरकाटतेहीसबमनुष्यपुकारे१७और इसीप्रकार सेना समेतराजा बाल्हीकनेभी आतेहुये राजाद्रुपदको सेना समेतबाणों सेरोका १८ उनदोनों वृद्धोंकायुद्ध सेनाओं समेत ऐसा बड़ा भयकारीहुआ जैसे कि बड़े२ समूहोंको आदिपति दो हाथियों का युद्ध होताहै १९ और अवन्ति देशों के राजा बिन्द अनुबिन्दने अपनी सेनाओं समेत मत्स्य देशके राजा विराटको सेनासमेत ऐसे प्राप्त किया जैसे कि पूर्व समयमें इन्द्र और अग्नि दोनोंने राजाबलि को प्राप्तकिया था २० केकयोंके साथ मत्स्यदेशियों का वह युद्ध महा भयानक देवासुर युद्धके समान हुआ जिसमें कि हाथी घोड़े और रथ भयभीतथे २१ उसराजा भूतकर्माने बाणोंके जालोंको छोड़ने वाले और द्रोणाचार्य्यकी ओरको जातेहुये नकुलके पुत्र सतानीक को रोका २२ इसकेपीछे नकुलके पुत्रनेयुद्धमें जाकर अत्यन्त तीव्र धारवाले तीनबाणोंसे भूतकर्माको भुजा और शिरसे रहितकिया २३ फिर पराक्रमी बाण समूहोंके रखनेवाले द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जाते पराक्रमी शूरबीर सुतसोम को बिविंशतिने रोका २४ तब वह

अत्यन्त क्रोधभरा सुतसोम उस पिताके भाई बिविंशति को सीधे चलनेवाले बाणोंसे घायल करके सन्मुख बर्त्तमान नहीं रहा २५ इसकेपीछे भीमरथने शीघ्रगामी तीक्ष्णलोहमयी छःबाणोंसेशाल्वको घोडे और सारथी समेत यमपुरकोभेजा २६ हे महाराज चित्रसेनने मोरके समान बर्णवाले घोड़ोंकी सवारीसे आतेहुये आपकेपुत्र श्रुत बर्माको रोका २७ उनआपके दोनों निर्भय और परस्पर मारने के अभिलाषी पौत्रोंने पिताओंके अभीष्ट सिद्धिके लिये बड़ा भारी युद्ध किया २८ पिताकी प्रतिष्ठा करतेहुये अश्वत्थामाने युद्धमें सन्मुख बर्त्तमान उस प्रतिबिन्धकोबाणोंके द्वाराअच्छे प्रकार से रोका २९ फिर प्रतिबिन्धने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उसक्रोधयुक्त सिंह लांगूलके चिह्नरखने वाले और अपने पिताके हेतुयुद्धमें नियतअश्वत्थामा को घायलकिया ३० हे भरतबंशी नरोत्तम जैसे बीजबोनेके समय बीजोंको बोतेहैं उसी प्रकार बाणोंको फैलाते हुये द्रौपदी के पुत्रोंने अश्वत्थामाको बाणोंकीबर्षासे आच्छादितकिया ३१ अर्जुन और द्रौपदीके महारथीपुत्र श्रुतकीर्त्ति को जोकि द्रोणाचार्य्यकी ओर जाताथा उसको दुश्शासन के पुत्रने रोका ३२ फिर श्री कृष्णजीके समान श्रुतकीर्त्ति अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले तीनभल्लोंसे उसके धनुष ध्वजा और सारथीको काटकर द्रोणाचार्य्यके पासगया ३३ हेराजा जो दोनों सेनाओंके मध्यमें बड़ाशूर गिनाजाताथा उसपटच्चरहन्ता को लक्ष्मणने रोका ३४ हे भरतबंशी वह लक्ष्मण के धनुष और ध्वजाको काटकर और उसीके ऊपरबाण जालोंको छोड़ता अत्यन्त शोभायमानहुआ ३५ फिर बड़ेज्ञानी और तरुण अवस्थावाले बिकर्णने राजा द्रुपदके पुत्र युवा शूरबीर युद्धमें आतेहुये शिखंडीको रोका ३६ इसके अनन्तर राजा द्रुपदके पुत्रने उस को बाणों के जालसे ढकदिया उससमय आपका पराक्रमी पुत्रउसबाणों केजाल को काटकर महा शोभायमान हुआ ३७ अंगदने द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जातेहुये उत्तमौजसकोबाणोंके समूहों सेरोका ३८उन दोनों पुरुषोत्तमों का वह बड़ा भारीयुद्ध हुआ और सबसेनाके मनुष्योंका

युद्धभी उनदोनोंको प्रसन्नताका बढ़ानेवाला हुआ ४० फिरबड़ेधनुष धारीपराक्रमी दुर्मुखने द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जातेहुये बीरपुरजित को बत्सदन्तनाम बाणोंसे रोंका ४१ फिर उसने दुर्मुखको नाराच से दोनों भृकुटियों के मध्यमें घायल किया उसका वहमुख सनाल कमलके समान शोभायमानहुआ ४२ फिरकर्णने लाल ध्वजारखनें वाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जातेहुये केकय देशी पांचों भाइयों को बाणोंकी बर्षासेरोंका ४३ उनअत्यन्तपीड़ा मानोंनेभी उसकोबाणों की वृष्टिसे ढकदिया उसने उनको फिर बाणों की बर्षा से बारंबार ऐसेढक दियाकि घोड़ेसारथी और ध्वजा समेत दोनोंबाणों से ढके हुयेनवहपांचों दिखाईपड़े और नकर्णदिखाईपड़े ४४ आपके दुर्ज्जय जय और बिजय तीनोंपुत्रोंनेनील काशीकेराजा और जयत्सेन इन तीनोंकोरोंका ४५ वहयुद्धभी महाभयकारी और तमाशादेखनेवालों का ऐसामहा आनन्दकारीहुआ जैसे कि सिंह और व्याघ्रों का युद्ध उत्तमरीछ और भैंसाओंके साथहोताहै ४६ क्षेत्रधूर्त्त और वृहन्त इन दोनों भाइयों ने द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जाते हुये सात्य की यादवको तीव्र बाणोंसे घायल किया ४७ उन दोनोंका और उसका वह युद्ध ऐसा अत्यन्त अपूर्व्व हुआ जैसे कि बनके मध्य में सिंह का युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियों से होता है ४८ उसी प्रकार क्रोध युक्त बाणों को छोड़ते चन्देरी के राजाने युद्ध को श्रेष्ठ मानने वाले अकेले राजा अम्बष्ट को द्रोणाचार्य्य की ओर से रोंका ४९ इसके पीछे अम्बष्टने हाड़ोंको भेदनकरने वाली शलाकासे उस को ऐसा घायलकिया कि वह बाण समेत धनुष को छोड़ कर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५० शारद्वत महासाहासी कृपाचार्य्य ने क्षुद्रक नाम बाणों से यादव बार्द्धक्षेमी को रोंका ५१ जिन्हों ने उन अपूर्व्व युद्ध करने वाले कृपाचार्य्य और बार्द्धक्षेमी को लड़ते हुये देखा उन युद्ध में चित्त लगाने वालोंने दूसरे कर्मको नहींजाना ५२ और द्रोणाचार्य्य के यश को बढ़ाते सोमदत्तने चैतन्य होकर आते हुये राजा मणिमन्त को रोंका ५३ फिर उस शीघ्रता करने वाले

सोमदत्तने उसको धनुष ध्वजा पताका सारथी और छत्र समेत रथसे गिराया ५४ इसके पीछे शत्रुओं के मारने वाले ध्वजा में यूप चिन्ह रखने वाले सोमदत्त ने शीघ्रही रथ से कूद कर घोड़े सारथी ध्वजा और रथ समेत उस को उत्तम खड्ग से काटा ५५ हेराजा दूसरे रथमें सवार होकर दूसरे धनुषकोलिये हुये आपही घोड़ोंके हांकने वालेने पांडवीय सेनाको छिन्नभिन्न करदिया ५६ असुरों के ऊपरइन्द्रके समान आतेहुयेदुर्ज्जय राजा पांड्यको समर्थ वृषसेनने बाणों से रोंका ५७ गदा, परिघ, खड्ग, पट्टिश, दुधारेखड्ग, भुशुंडी, प्रास, तोमर, शायक और जोर युद्धभूमिके मल्लयुद्ध हैं ५८ मूसल, मुद्गर, चक्र, भिण्डपाल, परश्वध, धूली, बायु, अग्नि, जल, भस्म, लोष्ट, तृण और वृक्षोंसे ५९ पीड़ा देता और चलायमान करता तोड़ता मारता भगाता गिराता और सेना को डराता द्रोणाचार्य्य को चाहता घटोत्कच सन्मुख आया ६० फिर क्रोध युक्त अलंबुष राक्षसने नाना प्रकारके शस्त्रोंसे और बहुत प्रकारके युद्ध रीतियों से उस राक्षसको अच्छी तरह घायल किया ६१ उनदोनों राक्षसोत्तमों का वह युद्ध उस प्रकारका हुआ जैसा कि पूर्व्व समय में शम्बर और देवराज इन्द्रका हुआथा ६२ आप का कल्याण होय इसरीतिसे आपके और उन्होंके कठिन युद्धमें हजारों रथ हाथी घोड़े और पदातियों के द्वन्द्व नाम युद्ध हुये ६३ इस प्रकार का युद्ध मैंने कभी सुना भी नहीं था जैसे कि द्रोणाचार्य्य को बर्त्तमानता अथवा अबर्त्तमानतामें शूर बीरोंने किया ६४ हे समर्थ यह युद्ध बड़ा भयकारी अपूर्व और भयानक रूप वाला हुआ इस प्रकार के फैले हुये अनेक युद्ध देखनेमें आये ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचविंशतितमोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले इस प्रकार उनके लौटने और भागियोंके सन्मुख जाने पर वे गवान पांडव और मेरे पुत्र किस प्रकार से युद्धमें प्रवृत्त

हुये १ हे संजय अर्जुनने भी संसप्तकों की सेनामें क्या२ कर्म किये अथवा संसप्तकोंने अर्जुन से युद्ध करने में जो २ कर्म किये उन सब कोमुझसेकहो २ संजय बोले कि उस प्रकार से उन्होंके लौटने और भागियोंके सन्मुख जाने पर आपका पुत्र हाथियों की सेनासे युक्त आय भीमसेन के सन्मुख दौड़ा ३ जैसे कि हाथी हाथी को और गोवृष गोवृष को युद्धमें बुलाता है उसी प्रकार आप राजासे बुलायागया वह भीमसेन हाथियोंकी सेनाके सन्मुख गया४ हे श्रेष्ठउस युद्धमें सावधान और भुजबल से युक्त पराक्रमी भीमसेनने थोड़ेही समय में हाथियों की सेनाको छिन्न भिन्न करदिया ५ वह पर्व्वताकार हाथी सब ओरसे मदको छोड़ते हुये उस भीमसेनके नाराचों से मुख फेर फेर कर मदों से रहित होगये६ जैसे कि अत्यन्त कठोर और प्रबल बायु बादलके जालोंको तिर्र बिर्र करदेताहै उसी प्रकार बायुके पुत्रने भी उन सब सेनाओं को छिन्न भिन्न करदिया ७ वह भीमसेन उन हाथियों पर बाणोंको छोड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि उदयमान सूर्य्य सब संसार पर अपनी किरणों को छोड़ता हुआ शोभित होता है ८ भीमसेन के बाणोंसे घायल और अच्छे प्रकार से छिदेहुये वह हाथी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि आकाशमें सूर्य्य की किरणों से नाना प्रकारके बादल शोभा पाने वाले होते हैं ९ क्रोध युक्त दुर्य्योधनने इस प्रकार हाथियों के नाशकरने वाले बायु पुत्र भीमसेन को देख और सन्मुख जाकर उसको तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया १० इसके अनन्तर रक्तनेत्र और राजादुर्य्योधनके नाशकरने की इच्छा करते भीमसेन ने क्षण भरहीमें अपने तीक्ष्ण धार वाले बाणोंसे राजाको घायल किया ११ बाणोंसे छिदे हुये शरीर महाक्रोधित मन्द मुसकानकेसाथ बड़े आश्चर्य्य को कर तेउस दुर्य्योधन ने सूर्य्य की किरणके समान प्रकाशित नाराचों से पांडव भीमसेनको घायल किया १२ फिर पांडवने दोभल्लोंसे उस के रत्न जटित ध्वजा में वर्त्तमान मणियों से जटित नागको और धनुष को शीघ्रही काटा १३ हे श्रेष्ठ हाथी पर नियत राजा अंग

दुर्योधनको भीमसेन से पीड़ामान देखकर उस के व्याकुल करने कोइच्छासे उसके सन्मुख गया १४भीमसेनने उस बादलके समान शब्द करते हुये गजेन्द्रको नाराचोंसे मस्तकके मध्यमें अत्यन्तपीड़ा मान किया १५ वह बाण उसके शरीर को वेधकर पृथ्वी में प्रवेश करगया उसके पीछे वह हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिरपड़ा जैसे किबज्र से ताड़ित पर्व्वत पृथ्वी पर गिर पड़ता है १६ फिर शीघ्रता करने वाले भीमसेनने भल्लसे उस हाथीसे रहित नीचेको गिराना चाहते हुये म्लेच्छ का शिर काटा १७ उस वीर के गिरने पर वह सेना जिसके कि घोड़े हाथी और रथ महा व्याकुलथे पदातियोंको मर्द्द-नकरते हुये भागे १८ उन सब सेनाओंके पराजयहोने और चारों ओरके भागने पर राजा प्राग्ज्योतिष हाथी की सवारी से भीम-सेनके सन्मुख आया १९ इन्द्रने जिस हाथी की सवारी से दैत्यऔर दानवों को बिजय किया उस घराने या जातिके हाथीकी सवारीसे भीमसेन के सन्मुख गया २० वह हाथियों में बड़ाश्रेष्ठ दोनों पैर और लिपटी हुई सूंड़से अकस्मात् भीमसेन के सन्मुख गया २१ उस बड़ी आंखवाले क्रोध युक्त भीमसेन के मथन करने के अभि-लाषी हाथीने भीमसेन के रथको घोड़ों समेत चूर्णकिया २२ इसके पीछे पावोंसे दौड़ता हुआ भीमसेन उसके अंगोंमें चिपट गया और जोकि भीमसेन अंजलिका वेधनाम पेंचको जानताथा इसीसे नहीं हटा २३ अंगोंके मध्यमें बर्त्तमान होकर बारं बार हाथों से घाय-लकरते हुये भीमसेनने उस मारनेकेअभिलाषी अति दुर्ज्जय हाथी को प्यार किया २४ तब वह हाथी शीघ्रही कुम्हारके चक्रकेसमान घूमने लगा दशहजार हाथीके समान पराक्रमी श्रीमान् भीमसेन उस को चलायमान करने वालाहुआ २५ इस के पीछे भीमसेन भी अंगोंसे निकलकर उस सुप्रतीक नामहाथी के आगे हुआ उस ने भीमसेनको सूंड़सेझुकाकर अपनी जंघाओंसे घायलकिया २६ उस हाथीनेउसको गर्दनमें लपेटकर मारनाचाहा तबभीमसेनने घुमाव देकरसूंड़की लपेटनको छुड़ादिया २७ फिरभीमसेन हाथीकेअंगों में

प्रवेशकरगया जबतक अपनी सेनामें नियत हाथीके सन्मुख आये हुये हाथीकोदेखा२८तबभीमसेन हाथी के अंगोंसे निकलकर बड़ी तीव्रतासे दूर चलागया उसकेपीछे सबसेनाका बड़ा शब्दहुआ २९ किबड़ेखेदकी बातहै कि भीमसेन हाथीसे मारागयाहेश्रेष्ठधृतराष्ट्र उसहाथीसे पांडवोंकी सेना भयभीतहोगई ३० हेराजा सबशूरवीर अकस्मात् उसस्थानपर आगये जहांपर कि भीमसेन नियतथाउस केपीछेराजा युधिष्ठिरने भीमसेनको मृतकजानकर ३१ धृष्टद्युम्न समेत भगदत्तको सबओरसे घेरलिया उनशत्रु संतापी रथियों में श्रेष्ठोंने उसरथको घेरकरके ३२ हजारों तीक्ष्ण बाणों से ढकदिया पृषत्कनाम बाणोंके आघातको अंकुशसे निष्फल करतेहुये ३३ उस पर्व्वतीय राजानेहाथीसे पांडवों और पांचालोंको छिन्नभिन्न करदिया हेराजायुद्धमें उसप्रकारके वृद्धभगदत्तके उसअपूर्व ३४ कर्मको हाथी के द्वारादेखा इसकेपीछे दशार्ण देशियोंका राजा भगदत्तके सन्मुख गया ३५ तिरछेचलनेवाले मतवाले शीघ्रगामी हाथी के द्वार उन भयानकरूपवाले दोनोंहाथियोंका ऐसा बड़ाभारी युद्धहुआ३६जिस प्रकारसेकि पूर्व समयमें पक्षधारी और वृक्षोंसेसंयुक्त दोपर्वतोंकेहुये राजाप्राग्ज्योतिषके हाथीने लौटकर और दूरजाकर राजादशार्णके हाथीको पार्श्वमें घायल करके गिरायाथा ३७फिर भगदत्तने सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशित सात तोमरोंसे ३८ उस हाथीपर सवार प्रचलित आसनवाले शत्रुकोमारा तब युधिष्ठिरने राजा भगदत्तको बहुत प्रकारसे घायलकरके ३९ रथकीबड़ीभारी सेनासे चारों ओर को घेरलिया वहहाथी परचढ़ाहुआ भगदत्त सबओर को रथियों से संयुक्त होकर ऐसा शोभायमान हुआ ४० जैसे किपर्वत में बन के अन्तर्गतवर्त्ती अग्निका पुंजहोताहै उसहाथीने उनबाणों की वर्षाओं कोफैलाते और भयानक धनुष धारी रथियों के मंडल जो कि सब ओरसे चिपटाथा उससे सन्मुखताकरी इसकेपीछे राजाप्राग्ज्योतिष ने बड़ेहाथीको रोंककर ४१। ४२अकस्मात् युयुधानके रथपर भेजा फिरउस बड़े हाथीने शिनीके पौत्रकेरथको पकड़कर ४३ बड़ीतीव्रता

सेफैंकदिया और युयुधान रथसे कूदगया फिरसिन्धदेशी सारथी बड़े घोड़ोंको अच्छीरीतिसे खड़ाकरके ४४ सात्यकी को पाकर नियत हुआ और वह अपने रथपरगया इसकेपीछे वहहाथी मौकेको पाकर शीघ्रही रथमंडलसे निकलगया४५ और फिरसबराजाओंकोव्याकुल किया उसशीघ्रगामी हाथीसे भयभीतहुये उन नरोत्तमोंने ४६ युद्धमें उसअकेले हाथीको सैकड़ों हाथियोंके समान माना व पांडवहाथी परचढ़ेहुये भगदत्तसे ऐसेपृथक् २ होतेथे ४७ जैसेकि ऐरावत हाथी परचढ़ेहुये देवराज इन्द्रसे दानवलोग पृथक् होतेहैं इसके अनन्तर इधरउधर से बोलतेहुये उन पांचालों के भयकारी शब्द ४८ और हाथीघोड़ोंके बहुत बड़ेशब्द उत्पन्नहुये युद्धमें भगदत्तसे पांडवों के छिन्नभिन्न होनेपर ४९ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन राजा प्राग्ज्योतिषके सन्मुख गयाउसके सन्मुख जातेहुये भीमसेनकेघोड़ोंको हाथीनेसूंड़से निकालेहुये जलसे५० तराबोरकरके भयभीतकिया फिर वहघोड़े भीमसेनको दूरलेगये तब आकृतीका पुत्र रुचिपर्वा शीघ्रही उसके सन्मुखगया५१ वहकालरूपरथपरसवार बारह बाणोंसेअच्छी रीतिसे घायल करता हुआ ५२इसकेपीछे उस सुन्दर तेजवाले पहाड़ी राजाने गृध्रपत्र्यीवाले बाणसे रुचिपर्व्वाको यमलोककोमें पहुंचाया उसबीरके गिरनेपर उनअभिमन्यु द्रौपदीकेपुत्र ५३ चेकितान धृष्टकेतु और युयुत्सूने उसहाथीको बाणोंकी वर्षासे ऐसासींचा जैसे कि जल की धाराओंसे बादल सींचताहै ५४ और मारने के अभिलाषी होकर बड़े भयानक शब्दोंसे गर्जनाकरी इसकेपीछे योग्य पार्ष्णीके अंकुश और अंगूठेसे चलायमान वह हाथी ५५ जिस की फैलीहुई सूंड़ कान आंख खड़े थे बड़ीशीघ्रतासे चला और अपनेपैरोंसे घोड़ों को दाबकर युयुत्सूको पीड़ामान किया ५६ हे राजा शीघ्रतासे युक्त युयुत्सूरथसे कूदगयाउसकेपीछे मारनेके अभिलाषी भयकारीशब्दों को गर्जते उन युधिष्ठिरके शूरबीरोंने बाणोंसे शीघ्रही हाथीको व्यथित किया फिर आपकापुत्र भ्रान्तीसे युक्तहोकर अभिमन्युके रथपर गया ५७। ५८ वह हाथी परनियत राजाभगदत्त शत्रुओं के ऊपर

बाणोंको छोड़ता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि भुवनोंके ऊपर किरणोंको डालता सूर्य्य शोभायमान होताहै ५९ उसको अभिमन्युने बारह बाणोंसे युयुत्सूने दशबाणोंसे और द्रौपदीके पुत्रों समेत धृष्टद्युम्नने तीन २ बाणोंसे पीड़ामानकिया ६० वह हाथीबड़े उपाय पूर्व्वक मारेहुये बाणोंसे छिन्नशरीरहोकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि सूर्य्यकी किरणों से व्याप्तहोकर बड़ा बादल शोभित होताहै ६१ हाथीवानकी शिल्पविद्याके उपायोंसे चलायमान और शत्रुके बाणोंसे पीड़ामान उस हाथीने शत्रुओंको दायें बायें फिरनेसे कंपाया ६२ जैसे कि ग्वालिया बनमें पशुओंके समूहोंको दण्डसे घेरताहै उसीप्रकार भगदत्तनेभी बारंबार उससेनाको घेरलिया ६३ जैसेकि बाजपक्षीके अपराधी अथवा सन्मुख जानेवाले काकपक्षियोंके शीघ्रतासे शब्दहोतेहैं उसीप्रकार भागते अथवा दौड़ते पांडवोंके शूरवीरोंके शीघ्रशब्दहुये ६४ हे राजा जैसे कि पूर्व समय में पक्षधारी उत्तम पहाड़ घायल होताहै उसी प्रकारके अत्यन्त उत्तम अंकुशसे घायलहुये उस गजराजने शत्रुओंके मध्यमें ऐसेबड़ेभयको उत्पन्नकिया जैसे कि क्षुभितहुआ समुद्र व्यापारीलोगोंके भयको बढ़ाताहै ६५ इसकेपीछे मार्गमें उन हाथी रथ और राजालोगजो कि भयसे भागतेथे उनसे बड़ा भयकारी शब्द उत्पन्नहुआ हे राजा इसी प्रकार उस शब्दसे युद्धमें पृथ्वी आकाश स्वर्ग दिशा और विदिशा व्याप्तहोगईं ६६ उसराजाने उस अत्यन्त श्रेष्ठ हाथीकेद्वारा शत्रुओंकी सेनाको ऐसे अत्यन्त मझाया जैसे कि पूर्व समय में देवताओंसे सुरक्षित देवसेनाको युद्धमें बिरोचन असुरने मझाया था ६७ बड़ेवेगवाली वायुचली और धूलने बारंबार आकाशको और सेनाकेमनुष्योंकोभी ढकदिया फिरमनुष्योंने चारोंओरसे चेष्टा करनेवाले चलायमान उस अकेलेहाथी को हाथियों के समूह की समान माना ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाबाहो जोतुम युद्ध में अर्जुन के कर्म को मुझसे पूंछते हो सो तुम उसको सुनो जो कि अर्जुन ने युद्धमें काम किया १ उठी हुई धूलको देखके और हाथी के शब्दको सुन कर भगदत्तसे भय का जानने वाला अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले २ कि हे मधुसूदन जो जैसे राजा प्राग्ज्योतिष सवारी में बैठा हुआशीघ्रता करता हुआ निकला है निश्चय करके उसी का यह शब्दहै ३ युद्धमें इन्द्र के समान हाथी की सवारी में अति कुशल और युद्ध के हाथियों के सवारोंमें सबसे श्रेष्ठ है यह मेरी रायहै ४ उस श्रेष्ठहाथी के भीसमान युद्ध में कोई नहीं है वह युद्ध में सब शस्त्रोंको उल्लंघन करके चलने वाला बड़ा कर्मकरने वाला और थकावट से रहित होकर ५ शस्त्रोंके प्रहार और अग्निके स्पर्श का सहने वालाहै हे-पार्थसे पृथक् श्रीकृष्ण जी अब वह अकेलाही हाथी पांडवों कीसब सेनको नाश करेगा ६ हम दोनों के सिवय दूसरा कोई भी पुरुष उसके रोंकनेको समर्थ नहींहैं आप शीघ्रही उधरही कोचलोजिधर राजा प्राग्ज्योतिष है ७ मैं युद्ध में इस हाथीके पराक्रम से अहंकार में भरे हुये वृद्धावस्था से भी आश्चर्य्य युक्त इन्द्र केप्यारे अतिथि को स्वर्ग में भेजूंगा ८ इसके अनन्तर श्रीकृष्ण जी अर्जुनके इस बचनसे वहां गये जहां पर कि पांडवो सेना भगदत्त से छिन्नभिन्न होरही थी ९ इसके पीछे चौदहहजार संसप्तक महारथी उसजाते हुयेको पीछेसे पुकारते हुये चढ़ाई करने वालेहुये १० त्रिगर्त्त देशियोंके दशहजार महारथी और चारहजार बासुदेव की सेना के मनुष्य भी चढ़ाई करनेवाले हुये ११ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र भगदत्त से छिन्न भिन्न करीहुई सेनाको देखकर उन संसप्तकों से बुलाये अर्जुनका हृदय दो प्रकारका हुआ १२ और शोचनेलगा कि इन दोनों कामों मेंसे कौनसा काम आनन्द से सुफल करने के योग्य है इस चिन्ता में पड़ा कियहां लौटूं कि युधिष्ठिरके पासजाऊं १३

तब अपनी बुद्धिसेही बिचार कर उस अर्जुन को बड़ी बुद्धि संसप्त कों केही मारने में नियत हुई वह हनुमान् जी को ध्वजाकाधारण करने वाला इन्द्र का पुत्र अर्जुन अकेलाही उन हजारों रथियों के मारने को अकस्मात् युद्धमेंलौटा १४ दुर्योधन और कर्ण दोनों काभी वही बिचार अर्जुन के मारने के उपाय में हुआ अर्थात् उन दोनों ने उसके मारने को कल्पना करी १५ वे पांडव दोप्रकार के बिचार से डोलायमान हुये तब उत्तम पुरुषों के मारनेमें उस को नहीं छिपाया १६ हे राजा इस के पीछे संसप्तक नाम महा रथियोंने गुप्त ग्रन्थो वाले लाखों बाण अर्जुन के ऊपर छोड़े १७ फिर वह बाणों से ढकाहुआ कुन्तीनन्दन अर्जुन दृष्ट नहीं पड़ा न जनार्दन श्रीकृष्ण जी घोड़े और रथसमेत दिखाई पड़े १८ उस समय जनार्दन जी ने मोह को पाया अर्थात् पसीने में तर होगये तब अर्जुन ने उनको अक्षर ब्रह्मास्त्र से मारा १९ उस समय शूर बीरोंके बाण प्रत्यंचा और धनुष समेत सैकड़ों हाथकट गये ध्वजाओं समेत घोड़े सारथी रथ और रथी भी पृथ्वीपर गिर पड़े २० सवृक्ष पर्व्वत के शिखर और बादल के समान शरीर वाले अच्छे अलंकृत हाथी जिन के कि सवार मारे गये वे सब अर्जुन के बाणों से घायल होकर पृथ्वी पर गिरे २१ टूटी झूल बिखरे हुये भूषणों समेत निर्जीव हाथी सवारोंसमेत युद्ध में बाणों से अत्यन्त मथन किये हुये गिर पड़े २२ अर्जुन के भल्लोंसे मरे हुये बहुत से मनुष्यदुधारे खड्ग पाशनखर मुद्गर परशेआदि शस्त्रोंसमेत पृथ्वी पर गिर पड़े २३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र बाल सूर्य्य कमल और चन्द्रमा के समान रूपवान अर्जुन के बाणोंसे कटे हुये पृथ्वी पर बर्त्तमान हुये २४ तब नाना प्रकार की सूरतों से शत्रुओंको क्रोध युक्तअर्जुनके हाथ से मारे जाने पर वह अलंकृत सेना उन प्राणों के हरने वालेअर्जुन के बाणों से अग्निके समान होगई २५ जैसे कि हाथी कमलों के समूहोंको बिध्वंस करता है उसी प्रकार सेनाको व्याकुलकरनेवाले अर्जुन को जीवों के समूहों ने पूजा अर्थात् धन्यहै

धन्य है ऐसा कह कर स्तुति करी २६ माधव जी इन्द्र के समान अर्जुनके उस कर्मको देखकर बड़े आश्चर्य्य युक्तहोकर बड़ी नम्रता पूर्व्वक उससे बोले २७ हे अर्जुन जो युद्धमें तैंने कर्म किया ऐसा कर्म इन्द्र यमराज और कुवेरसे भी होना महा कठिनहै यह मेरा मत है २८ मैंने संसप्तक नाम महारथी हजारों एक साथही युद्ध भूमि में गिरे हुये देखे २९ इसके पीछे अर्थात् उन सन्मुख बर्त्तमान असंख्य संसप्तकों को मार कर श्रीकृष्ण जी से कहा कि अब भगदत्त के सन्मुख चलो ३०॥

इतिश्रीमद्भारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी ने जाने के अभिलाषी अर्जुन के उन घोड़ोंको जो कि चित्त के समान शीघ्रगामी स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत होकर शीघ्र चलने वाले थे द्रोणाचार्य्य की सेनाकी ओर चलाया १ युद्धाभिलाषी सुशर्मा अपने भाइयों समेत उस कौरव्य अर्जुनके पीछे की ओर से जो कि द्रोणाचार्य्य से संतप्त किये हुये अपने भाइयों के पास जाता था पीछे२ चला२ इसके अनन्तर वह महाबिजयी अर्जुन उन अजेय श्रीकृष्ण जी से बोले हे अबिनाशी यह सुशर्माभाइयों समेत मुझको बुलाता है ३ हेमधुसूदन जी वह सेना उत्तर दिशासे छिन्न भिन्नहोती है अब मेरा चित्त संसप्तकों ने दो प्रकार का किया अब मैं संसप्तकों को मारूं अथवा शत्रुओं से पीड़ामान अपने भाई बन्धु आदि की रक्षा करूं आप मेरे चित्त के ज्ञाता हैं अब मुझको क्या करना योग्यहै ४ अर्जुन के इस कहने से श्रीकृष्णजी ने रथ को लौटाया और उसी मार्ग होकर चले जिस मार्गमें त्रिगर्त्त के राजा ने अर्जुनको बुलायाथा ५ फिर अर्जुन ने सात बाणोंसे सुशर्मा को बेधकर उस के धनुष को क्षुरप्र नाम दो बाणों से काटा ६।७ उनको काटकर अर्जुनने बड़ीशीघ्रता पूर्व्वक अपने छः बाणों से राजा त्रिगर्त्त के भाई को घोड़े और सारथीसमेत

यमलोकको पहुंचाया ८ तदनन्तर सुशर्माने अर्जुनको लक्षबनाकर सर्पाकार लोहेकी शक्तिको बासुदेवजी के ऊपरकोफेंका ९ फिरअर्जुन तीनबाणसे शक्तिको और तीनहीसे तोमरकोभी काटकरशरोंके समूहोंसे सुशर्माको अचेतकरकेलौटा १० हेराजा आपकी सेनाओं मेंसे किसी ने भी उस बाणों की बर्षाकरने वाले भयकारी इन्द्रके समान आतेहुये अर्जुनको नहींरोंका ११ फिर अर्जुन अपने बाणोंसे उन कौरवी महा रथियोंको ऐसे मारताहुआआया जैसे कि सूखेबन कोजलाताहुआ अग्नि आता है १२वह सबलोगभी उस बुद्धिमानी अर्जुन के उस महाअसह्य बेगके सहने को ऐसे समर्थनहीं हुये जैसे कि प्रजा के लोग अग्नि केस्पर्शको नहीं सह सक्के १३ हेराजा वह अर्जुन बाणोंकी बर्षासे सेनाओंको ढकता गरुड़के झपटने के समान राजा प्राग्ज्योतिषके सन्मुख आया १४ और अर्जुननेभागने वाले भरतबंशियोंका शुभदायक और युद्ध में शत्रुओं को अश्रुपातों का बढ़ानेवाला अपना धनुष लचाया १५ अर्थात् हेराजा अर्जुननेदुष्ट द्यूत करनेवाले आपके पुत्रके कारणसे क्षत्रियों के नाश के निमित्त उसी धनुषको खेंचा १६ फिर अर्जुनके हाथसे व्याकुलहुई आपकी सबसेना ऐसे भयभीत होकर खंड मंडहोगई जैसे कि पर्व्वत सेटक्करखाकर नौका खंडमंड होजातीहै १७ इसकेपीछे धनुषधारीदश हजार शूरबीर युद्धमें जयपराजय के निमित्त बुद्धि को निर्दय करके लौटे १८ वहांउन निर्भय चित्तवाले महारथियोंने उस अर्जुन को घेरलिया फिर युद्धमेंसबभारके सहनेवाले अर्जुनने बड़ेकठिन भार कोसहा १९ जैसे कि क्रोधयुक्त मतवालाहाथी वनको मर्दन करता है उसीप्रकार अर्जुननेभी आपकी सेना को मर्दन किया २० उस सेनाके अत्यन्त मथनेपर राजाभगदत्त अकस्मात् उसहाथी समेत अर्जुनके सन्मुखगया २१ नरोत्तम अर्जुनने रथकेद्वारा उसकोरोंका रथ और हाथीका वहभिड़नाभी अत्यन्त कठिनहुआ २२ वहभगदत्त और अर्जुन दोनोंबीर शास्त्रकेअनुसार अलंकृत रथ और हाथी की सवारीके द्वारा घूमनेलगे २३ इसकेपीछे इन्द्रके समान समर्थ

भगदत्तने बादलके समानहाथी परसे अर्जुनके ऊपर बाणोंके समूहों की बर्षाकरी २४ उसपराक्रमी इन्द्र के पुत्र अर्जुन नेभी भगदत्त के उसबाणवृष्टिको मार्गहीमें काटा २५ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे उसराजा प्राग्ज्योतिषने उसबाणोंकी बर्षाको रोंककर अपने बाणों सेमहाबाहुअर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायलकिया २६ और बाणों के बड़ेजालसे उनदोनोंको ढककर उसहाथीको श्रीकृष्ण और अर्जुन के मारनेके निमित्त प्रेरितकिया २७ जनार्द्दनजी ने उसकालके समान क्रोध युक्त आतेहुये हाथी को देखकर रथ के द्वारा दक्षिण किया २८ धर्मको देखतेअर्जुनने उससन्मुख बर्त्तमान समीपपहुंचे हुये हाथीकोभीउसकेसवार समेतमार डालनेकीइच्छा नहींकी २९ हे श्रेष्ठ फिरउसहाथीने हाथी घोड़े और रथोंको मर्द्दन करके यमलोक को भेजा इस हेतुसे अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ ३० ॥

इतिश्रीमद्दाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८

उन्तीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रजीबोलेकि इसप्रकारसे क्रोधयुक्त अर्जुनने भगदत्तकाक्या किया अथवा उसराजा प्राग्ज्योतिषने अर्जुनका क्याकिया हेसंजय इसको यथार्थता से बर्णनकरो १ संजयबोले कि सबजीवोंनेराजा प्राग्ज्योतिषसे भिड़ेहुये पांडव अर्जुन और श्रीकृष्ण जीको काल के गालमें फंसाहुआ माना २ हे समर्थ महाराज वह भगदत्त गजेन्द्र के कंधेपरसे उनरथपर सवार दोनोंअर्जुन और श्रीकृष्णजी पर इस रीतिसेबाणोंकी बर्षाकरताथा ३ फिरउसनेपूरेधनुषसे निकलेहुयेसुनहरी पुंखतीक्ष्णधार और कालेलोहेके बाणोंसे श्रीकृष्णजीकोबेधा४ अग्निके स्पर्शसे संयुक्त भगदत्तसे प्रेरित सुन्दरपक्षवाले बाण श्रीकृष्णजीको घायलकरके पृथ्वीमें समागये ५ अर्जुनने उसके धनुष को काटकर रक्षकोंको मारकर राजाभगदत्त से लालनकरतेहुये के समान युद्धकिया ६ उसअर्जुनने सूर्य्यकी किरणों के समान तीक्ष्ण चौदह तोमरोंको चलाया और उसने प्रत्येकतोमरोंकेदो२ खंडकर

दिये७इसकेपीछे इन्द्रकेपुत्र अर्जुनने हाथीके उसकवचकोबाणोंके बड़े जालसे टुकड़े २ करदिया और वहपृथ्वीपर गिरपड़ा यहांयहभीप्रसिद्धहैकिराजा भगदत्तने अपनेगिरतेहुये मरे हाथी को अपनीजंघाओं सेपृथ्वीपर नहींगिरनेदियाट्फिरवहकवचसे रहित बाणोंसे अत्यन्त पीड़ितहाथी ऐसाशोभायमानहुआ जैसे कि जलकी धाराओंसेसंयुक्त बादलसे रहित गिरराज होताहै ९ इसकेपीछे राजा प्राग्ज्योतिषने सुनहरी दंडरखनेवाली लोहेकी शक्तिको बासुदेवजीके ऊपर छोंड़ा और अर्जुनने उसको बीचमेंसे दोखंड करदिये १० इसकेपीछेमन्द मुसकान करतेअर्जुनने राजाकेछत्र ध्वजाको काटकर शीघ्रतापूर्व्वक दशबाणोंसे उसपर्ब्बतीय राजाको पीड़ितकिया ११ पुंखवाले कंक पक्षसेयुक्त अर्जुनके बाणोंसे घायल क्रोधयुक्त राजा भगदत्तने १२ उस श्वेतघोड़े वालेपांडवके मस्तकपर तोमरोंको छोंड़ा और बड़े उच्चस्वरसे गर्जा युद्धमें उनबाणोंसे अर्जुनका मुकुट लौटगया १३ उस लौटे हुये मुकुट को संभालते उस अर्जुनने राजा से कहा कि लोकमेंदेखाहुआ कर्मकरना चाहिये१४इसरीतिसे कहेहुये अर्जुनके बचनसे क्रोधयुक्त भगदत्तने प्रकाशित धनुषको लेकर बाणों की अर्जुन और गोबिन्दजीपर बर्षाकरी १५ फिरवे अर्जुनने उसके धनुषको काट तूणीरोंको तोड़के बड़ीशीघ्रता पूर्व्वक बहत्तर बाण से सब मर्मोंको बिदीर्णकिया १६ इसके पीछे घायल और अत्यन्त पीड़ामान क्रोधयुक्त विष्णु अस्त्रको प्रयोगकरतेहुये भगदत्तने अंकुश को मन्त्रसे संयुक्तकरके अर्जुनको छातीपर छोंड़ा १७ केशव जीने अर्जुनको ढककर भगदत्तके छोंड़हुये सबके मारनेवाले उसअस्त्रको अपनी छाती परलोंका १८ वहअस्त्र केशव जी की छातीपर जाकर बैजयन्ती मालाहोगया जोकिअपूर्व्व कमलोंके समूहोंसेसंयुक्तसर्बत्र पुष्पोंसे जटित १९ अग्निसूर्य्य और चन्द्रमा के समान प्रकाशित और अग्निहीके समान प्रकाशित पत्रों से संयुक्त अलसीकेपुष्प के बर्णवालीथी उस मालासे श्रीकृष्णजी अत्यन्त शोभायमान हुयेवह मालाबायुसे कंपायमान कमलके पत्तोंके समानथा इसके पीछेदुखी

चित्तहोकर अर्जुन श्रीकृष्णजी से बोले २० । २१ कि हे निष्पाप केशवजो मैं युद्धको त्यागकर घोड़ोंकोहाकूंगा यहकहकरकि अपनी प्रतिज्ञाकीरक्षानहीं करतेहोजो मैं आपत्तिमेंफंसाहुआ २२ अथवारोंकने में असमर्थ होजाऊंतो तुमकोऐसाकरना योग्यहै मेरे नियत होने पर यह आपको न करना चाहिये २३ धनुषबाणको रखनेवाला मैं होकर इनलोकोंको देवता असुर और मनुष्यों समेत आपकीकृपा से बिजय करनेको समर्थहूं यहसब आपको बिदितहै २४ फिरउस वृत्तान्तके जाननेवाले बासुदेबजी अर्जुनसे बोले हे निष्पाप अर्जुन तुमइस प्राचीन और गुप्तवृत्तान्त को सुनो २५ मैंचारमूर्त्तियों का रखनेवाला संसारकी रक्षाके निमित्त सदैव प्रवृत्त होकर रहाअबयहां आपलोगों को बिभागकरके लोकोंके कल्याणको किया २६ मेरी एकमूर्त्ति तो पृथ्वीपरनियतहोकर तपस्याकरतीहै दूसरीमूर्त्ति शुभा शुभ कर्मोंकी करनेवाली संसारको देखतीहै २७तीसरीमूर्त्ति नरलोक में नियत होकर कर्मको करतीहै और चौथीमूर्त्ति दिव्यहजारबर्षकी नींदमेंसोतीहै २८ जो यहमेरी मूर्त्ति हजार बर्षकेअन्तपरसोतेसेउठती है वहउस समयपर बरकेयोग्य भक्तोंके निमित्त उत्तम बरदानोंको देतीहै २९एकसमय मेरोचौथी मूर्त्ति के उठनेके समयपृथ्वीने समय वर्त्तमान जानकर अपने नरक नाम पुत्रके अर्थ बरकोमांगा उसको सुनो ३० अर्थात् उसने याचनाकरी कि मेरापुत्र वैष्णवास्त्रसे संयुक्त देवताऔर दानवोंसे अजेयहोययह बरआपमुझे देनेके योग्यहैं ३१ मैंने पूर्व समयमें इसप्रकारके बरको सुनकर पृथ्वीके पुत्रको सबसे श्रेष्ठसफल वैष्णवास्त्रको दिया ३२और यहभीमैंनेकहा कि हे पृथ्वी निश्चय करके यह अस्त्र नरककी रक्षाके निमित सफलहोय इसको कोईनहीं काटेगा ३३ इस अस्त्रसे रक्षित होकर तेरापुत्र सदैव सब लोकोंके मध्यमें शत्रुकी सेनाको पीड़ा देने वाला और निर्भय होगा ३४ तब वह चित्तसे प्रसन्न देवी पृथ्वी ऐसा होय यह कहकर अभीष्टपाने वाली हुई और वह नरकभी निर्भय होकर शत्रुओं को तपाने वालाहुआ ३५ हे अर्जुन इस कारण से वह मेरा अस्त्रराजा

प्राग्ज्योतिष को प्राप्त हुआ हे श्रेष्ठ इस अस्त्रसे इन्द्र रुद्रादि समेत कोईभी लोकों में अवध्य नहीं है अर्थात् सब को बध करनेवाला है ३६ इसी निमित्त इस अस्त्रको मैंने तेरे कारण से बिपरीत करदिया हे अर्जुन इस उत्तम अस्त्रसे यह रहित होगया अब इस महा असुर को मारो ३७ इस निर्भय और देवताओं से शत्रुता करने वाले अपने शत्रु भगदत्त को ऐसे मारो जैसे कि मैंने पूर्व्व समय में संसार के कल्याण के लिये नरकासुर को माराथा ३८ तब तो महात्मा केशवजीसे इस प्रकार कहेहुये अर्जुनने भगदत्तको तीक्ष्णबाणों से अकस्मात् ढकदिया ३९ इसकेपीछे निर्भय और बड़े साहसी अर्जुन ने हाथी को दोनों कुंभोंके मध्यमें नाराचसे घायल किया ४० जैसे कि बज्र पर्व्वतको पाकर उसमें समा जाताहै उसी प्रकार वह बाण भी हाथीको पाकर पुंख समेत ऐसे समा गया जैसे कि सर्पबामीमें समा जाताहै ४१ तब भगदत्तसे बारं बार प्रेरणा किया हुआ वह हाथी उसके बचन को ऐसे नहीं करताथा जैसे कि स्त्रियां दरिद्रीके बचन को नहीं करतीहैं ४२ वह बड़ा हाथी अपने अंगोंको रोककर दांतोंके बल पृथ्वी पर गिरपड़ा और महापीड़ा के शब्दोंको करता हुआ मृत्युके बश हुआ ४३ यह राजा नेत्र खोलनेके निमित्त पटका बांधने वालाथा अर्जुनने देवता के बचनसे उस पटके को अपनेबाण से काटा ४४ उसपटके के टूटतेही वह अंधा होगया इसके अनन्तर सूर्य्य और चन्द्रमाके मंडल के समान रूपवाले गुप्त ग्रन्थीके बाणों से ४५ अर्जुन ने राजा भगदत्तके हृदय को घायल किया तब वह राजा भगदत्त अर्जुन के बाणों से घायल हृदय हुआ ४६ और निर्जीव होकर धनुष बाण को छोंड़ दिया उस समय उसके शिरसे उत्तम मुकुट भी ऐसे गिर पड़ा ४७ जैसे कि नालके छेदन करने से कमलके वृक्ष से गिराहुआ पत्ता होताहै ४८ वह सुवर्ण की माला रखने वाला भगदत्त उस स्वर्णमयी माला वाले पर्व्वताकार हाथी से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि अच्छा फूलाहुआ और बायुसे झुकाया हुआ कर्णिकारका वृक्ष पर्व्वत के शखरसे गिरता है ४९ इन्द्रके

समान पराक्रमी और इन्द्रके मित्र भगदत्तको युद्धमें मारकर फिर उस इन्द्रके पुत्र बिजयाभिलाषीने आपके अन्य लोगोंको ऐसेपराजय किया जैसे कि प्रबलबायु वृक्षोंको संहार करती है ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनात्रिंशत्तमोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुनने सदैवसे इन्द्रकेप्यारे मित्रबड़े तेजस्वी राजा प्राग्ज्योतिषको मारकर प्रदक्षिण किया १ इसके पीछे राजा गान्धारके पुत्र उन वृषक और अचल नामदोनों भाइयोंनेजोकिशत्रुओंके पुरके विजय करनेवालेथे युद्धमें अर्जुनको पीड़ामान किया २ उनदोनों बीर धनुष धारियोंने सन्मुख होकर बड़े बेगवान शोघ्रगामी तीक्ष्ण धारवाले बाणोंके द्वारा अर्जुनको आगे और पीछेसेअत्यन्त घायल किया ३ अर्जुनने सौबलकेपुत्र वृषिकके घोड़ेसूत धनुष छत्र रथ और ध्वजाको अपनेतीक्ष्ण बाणोंसे तिलके समान खण्ड २ करदिया ४ तदनन्तर अर्जुनने सौबल आदि गांधारियों को बाणोंके समूह और अन्यनाना प्रकार शस्त्रोंसे भीमहा व्याकुल किया५ इसके पीछेक्रोध युक्त अर्जुनने बाणोंसे उनशस्त्र उठानेवाले पचास गांधार देशीबीरोंको यमलोकको भेजा ६ वह महाबाहु मृतक घोड़े वाले रथसे शोघ्रही उतरकर भाईके रथपर तीव्रतासे सवार होगया और दूसरे धनुषको जल्दीसेहाथमें लिया ७।८ उनएकरथमें सवार वृषिक और अचल दोनों भाइयोंने बाणोंकी बर्षासे बारंबार अर्जुनकोऐसे घायल किया जैसेकि वृत्रासुर और बलिने इन्द्रको कियाथा ९ फिर उनदोनों लक्षभेदी गांधार देशियोंने पांडवको इस प्रकारसे व्यथित किया जैसेकि लोकमें गरमी और वरसातके महीने गरम और ठंढ़े जलोंसे पीड़ित करते हैं १० हेराजा अर्जुनने उन अंगोंसे शिथिल रथमें नियत नरोत्तम वृषिक और अचल दोनों भाइयोंको एकही बाणसे मारा ११ तबवेसिंहके समान लालनेत्र महाबाहु एक लक्षण वाले दोनोंशूर बीर और सगेभाई रथसे गिरपड़े १२ उनदोनों

के रथसे गिरने पर उनके पवित्र और बन्धु जनोंके प्रियशरीर दशों दिशाओं में यशको प्रसिद्ध करके नियत होगये १३ हेराजा आपके पुत्रोंने युद्धमें भागनेवाले मृतक रूपदोनों मामाओंको देखकर बारंबार अश्रुपातोंको छोड़ा १४ इसकेपीछे हजारों मायाओंके ज्ञाता शकुनीने उनदोनों भाइयोंको देखकर अर्जुन और श्रीकृष्ण जीको मोहित करके मायाका करना प्रारंभ किया १५ लकुट, अयूगढ़, पाषाण, शतघ्नी, शक्ति, गदा परिघ, तलवार, शूल, मुद्गर, पट्टिश १६ सकम्पन, दुधारे खड्ग, नखर, मुशल, परश्वध, क्षुर, क्षुरघ्न, नालीक, बत्सदन्त, अस्थिसंधि, चक्र, विशिख, प्राश और अन्य २ प्रकारके सैकड़ों शस्त्र दिशाओंसे अर्जुनके ऊपर गिरे १७।१८ खर, उष्ट्र, महिष, सिंह, व्याघ्र, समर, चिल्लक, ऋक्ष शृगालआदि गर्धभ और बन्दरके रूप १९ और नानाप्रकारके राक्षस और अनेक प्रकार के पक्षी भी बड़े क्रोध युक्त भूखे होकर अर्जुनको ओरको दौड़े २० इसके पीछे दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले शूरवीर बाणजालोंको फेंकते हुये कुन्तीके पुत्र अर्जुनने अकस्मातही उनको घायल किया २१ फिर वहसब शूरवीर अर्जुनके अत्यन्त दृढ़ बाणोंसे घायल होकर बड़ेभारी शब्दोंसे गर्जना करते सबओरसे मरकर नाशहोगये २२ इसके पीछे अर्जुनके रथपर अंधेरा प्रकट हुआ उसअंधेरेमेसे बड़े २ कठोरबज्रनोंसे अर्जुनको घुड़का २३ अर्जुनने उस बडे भयानक बड़े युद्धमें भयके उत्पन्न करनेवाले अन्धकार को अपने बडे उत्तम ज्योतिषनाम अस्त्रसे दूरकिया २४ उसके नाश करनेपर भयानक जलके समूह प्रकटहुये तब अर्जुनने उस जलके नष्ट करनेके निमित्तआदित्य अस्त्रको प्रयोग किया इसके पीछे उसअस्त्रके द्वारा बहुतप्रकारसे जलको २५ नष्टकिया अर्थात् शुष्ककिया इसी प्रकार से शकुनीकी उत्पन्नकीहुई अनेक मायाओंको दूरकिया २६ तबहंसते हुये अर्जुनने शीघ्रही अस्त्रोंके प्रभावसे मायाओंको नाश किया उन मायाओंके दूरहोनेपर अर्जुनके बाणोंसे घायलकिया हुआ वह भय भीत २७ शकुनी साधारण मनुष्यके समान शीघ्रगामी घोड़ों के

द्वाराशुद्ध भूमिसे हटगया इसके पीछे अस्त्रोंका जानने वाला अर्जुन अपनेशत्रुओं में तीव्रताको दिखाता २८ कौरवोंकी सेनापर बाणों के समूहोंसे बर्षा करनेलगा हे महाराज अर्जुन के हाथसे घायल आपकेपुत्रकी वहसेना २९ ऐसे दोप्रकारकी होगई जैसेकि गंगाजी समुद्रसे मिलकर होतीहैं वहांपर कितनेही नरोत्तम तो द्रोणाचार्य्य की शरणमें गये ३० और कितनेहीअर्जुनसे पीड़ामान होकरदुर्योधनके परिकरमें जामिले उसकेपीछे धूलसे सेनाके गुप्त होजाने पर हमने उसको नहींदेखा ३१ मैंनेगांडीव धनुष का शब्द दक्षिण की ओरको सुनाकि उस गांडीव धनुषके शब्दमें शंख दुन्दुभी आदि बाजोंके शब्दोंको उल्लंघन करके आकाशको स्पर्श किया ३२इसके अनन्तर दक्षिण ओरसे अपूर्व्व युद्धकरने वालोंका युद्ध फिर जारी हुआ ३३ वहांअर्जुनको अच्छा युद्धहुआ फिरमैं द्रोणाचार्य्यके पीछे गया युधिष्ठिरकी सेनाजहां तहां से प्रहार करतीथीं ३४ हे भरतबंशी अर्जुनने समयपर आपके पुत्रोंकी नाना प्रकारकी सेनाओंको ऐसेछिन्न भिन्न करदिया जैसे कि आकाशमें बायु बादलोंको तिर्रबिर्र करदेताहै ३५ बड़ेधनुपधारी नरोत्तमोंने उस इन्द्रके समानआनेवाले बहुत बाणोंकी बर्षाकरनेवाले भयानकरूप अर्जुनको नहींरोंका ३६ अर्जुनसे घायल उन आपके अत्यन्त पीड़ामान जहां तहां भागते हुये अनेक शूरबीरोंने अपनेही लोगोंको मारा ३७ अर्जुन के छोड़े कंकपक्षसे युक्त शरीरके छेदनकरने वाले वे बाण दशों दिशाओंको ढकतेहुये टीड़ीके समानगिरे ३८ हेश्रेष्ठ वहअर्जुनके बाणघोडेहाथी रथी और पदातियोंकोभी घायल करके पृथ्वीमेंऐसे समागये जैसे कि बामींमें सर्प समाजाताहै ३९ उसने हाथीघोड़े और मनुष्योंपर दूसरे बाणको नहींछोंड़ा उसीसे एकबाणसे इनसबके सिवाय वह सबध्वजाभी टूटटूटकर गिरपड़ीं ४० तबवह युद्धभूमि मृतकमनुष्य हाथी और सबओरसे छोंड़हुयेबाणोंके द्वारा गिरायेहुये घोड़ोंसे अपूर्व्व रूपहोकर श्वान और शृगालोंसे शब्दाय मान होगई ४१ पिताने पुत्रको मित्रने उत्तम परममित्र को त्यागकिया और इसी

प्रकार बाणोंसे दुखी पुत्रने पिताको त्याग किया तबअपनी रक्षामें बिचार करनेवाले और अर्जुनसे पीड़ामान मनुष्योंने सवारियोंको भी त्याग किया ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिंशत मोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रजीबोले हेसंजय अर्जुनसे उस सेनाके पराजय होनेपर चेष्टाकरते और भागतेहुये तुम लोगोंका चित्त कैसाहुआ १ पराजित और आश्रय देखने वाली अर्थात् शरण ढूंढ़ने वाली सेनाओं का सन्मुख करना बड़ा कठिन है हे संजय वह सब मुझसे कहौ २ संजय बोले हे राजा इसी प्रकार आपके पुत्रके प्रिय चाहने वाले बड़े २ बीर लोकों के मध्य में अपने २ यशकी रक्षा करते द्रोणाचार्य्य के पीछे चले ३ अस्त्रों के प्रकट होने और युधिष्ठिरके सन्मुख आने अथवा भयकारी युद्धके बर्तमान होनेपर निर्भयके समान उत्तम २ कर्मोंको किया ४ और अमितौजस भीमसेन के ऊपर और बीर सात्यकी व धृष्टद्युम्नके ऊपरभी चढ़ाईकरी ५ निर्दय चित्त पांचालोंने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्यको मारो और आपके पुत्रोंने सब कौरवोंको यह प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्यका नाश मतकरावो ६ कोई यहबोले कि द्रोणाचार्य्यको द्रोणाचार्य्य को और किसी २ ने यह कहा कि द्रोणाचार्य्य को नहीं किन्तु कौरव और पांडवों का द्यूत द्रोणाचार्य्यसे संबन्ध रखनेवाला जारी हुआ है ७ द्रोणाचार्य्य पांचालोंके जिन २ रथ समूहोंको मथन करतेथे वहां वहां पांचालदेशी धृष्टद्युम्नही उनके सन्मुख होता था ८ इसी प्रकार भागके बिपर्य्ययसे और भयकारी युद्धके होनेपर भयानक शब्दोंके करनेवाले बीरोंने बीरोंको सन्मुख पाया ९ वहां पर पांडव लोग शत्रुओंके कंपायमान करनेवाले हुये और अपने कष्टोंको स्मरण करके उन्होंने सेनाओंको कंपायमान किया १० वह क्रोधके बशीभूत होकर लज्जासे युक्त पराक्रमसे चेष्टा करनेवाले उस बड़े

युद्धमें प्राणोंको त्यागकरके द्रोणाचार्य्य को घायल करनेमें प्रवृत्त हुये ११ तुमुल युद्धमें प्राणोंपर खेलते बड़े तेजस्वी लोगोंके लोहेके शस्त्रोंका गिरना शिलाओंके समानहुआ १२ हे महाराज वृद्धलोग भीऐसे युद्धका देखना और सुनना कभीस्मरण नहींकरतेहैं १३ उस बीरोंके नाशमें उस लौटेहुये सेनाके बडे समूहके भारसे पीड़ामान पृथ्वी बड़ी कंपायमानहुई १४ और उस घूमतेहुये सेनाके समूहके बड़े भयानक शब्दभी आकाशको पूर्णकर के युधिष्ठिरकी सेनामें प्रवेशित होगये १५ पांडवोंकी हजारों सेना सन्मुख होकर युद्धमें घूमतेहुये द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णधार बाणोंसे पराजितहुई १६ अपूर्व्व कर्मी द्रोणाचार्य्य से उससेनाओंके अत्यन्त मथेजाने पर आपसेना पतिने द्रोणाचार्य्य कोपाकर घेरलिया १७ वहां द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नको वह युद्ध अपूर्व्व हुआ मेरे चित्त से उसकी किसी से समानता नहीं होसक्ती है १८ इसके पीछे अग्निके समान उस राजानीलने जिसका कि प्रस्फुलिङ्ग अग्निके समान धनुषथा कौरवीय सेनाको ऐसे भस्मकर दिया जैसेकि सूखेबनको अग्निभस्म करता है १९ प्रथम बचन कहनेवाले आश्चर्य्यकारी प्रतापवान् अश्वत्थामा जी उस सेनाके भस्मकरने वाले राजा नीलसे यह शुद्ध बचन बोले २० कि हेनील तेरेबाणरूप अग्निसे बहुतसे शूर बीरोंके भस्महोने से क्या लाभ है तू केवल मुझ अकेलाही के साथ युद्धकर और क्रोधितहोकर तू बड़ी शीघ्रतासे मुझपर प्रहारकर २१ खिले हुये कमलके समान प्रकाशमान मुमुख वाले राजानीलने उस कमल समूहोंके समानरूप और कमल पत्रके समान नेत्रधारी अश्वत्थामाको शायकनाम बाणोंसे घायलकिया २२ अकस्मात् उससे अत्यन्त घायल अश्वत्थामा जीने तीन तीक्ष्ण भल्लोंसे उस शत्रुके धनुष ध्वजा और छत्रको विध्वंसन किया २३ फिरउत्तम ढालतलवार रखनेवाले राजानीलने पक्षीके समान उसरथसे कूदकर अश्वत्थामाके शरीरसे शिरको काटनाचाहा २४ हेनिष्पाप धृतराष्ट्र फिर मन्द मुसकान करते अश्वत्था

माने उसके शरीरसे ऊंचेकन्धे सुन्दर नाक और कुंडलधारी शिरको भल्लसे काटकर गिराया २५ पूर्णचन्द्रमाके समान मुख व कमलपत्र के समान नेत्र और अत्यन्त प्रकाशित कमलपत्र के समान प्रकाश मान वह मारा हुआ राजानील पृथ्वीपर गिरा २६ उसके पीछे आचार्य्यके पुत्रके हाथसे देदीप्य तेजवाले राजानीलके मरनेपर पांडवीयसेन अत्यन्त व्याकुल होकर पीड़ा मानहुई २७ हे श्रेष्ठ उस समय पांडवों के उन सब महा रथियोंने यह चिन्ताकरी कि इन्द्रका पुत्र अर्जुन शत्रुओंसे किसप्रकार करके हमारी रक्षाकरेगा २८ क्योंकि वह बलवान् सेनाके दक्षिण भागमें संसप्तकोंकी शेष बची हुई नारायण नाम सेनाका नाश कररहाहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि फिर भीमसेन अपनी सेनाके घायलपनेको नहीं सहसका उसने गुरूको साठ बाणोंसे और कर्णको दश बाणोंसे घायल किया १ फिर उसके मरणको चाहते द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्ण धार तीव्रसीधे चलनेवाले बाणोंसे शीघ्रही भीमसेनको मर्मस्थलों को घायलकिया २।३ भीमसेनके पराजयको चाहते द्रोणाचार्य्यने छब्बीसबाणस कर्णने बारह बाणोंसे और अश्वत्थामाने सातबाणों से घायलकिया महाबली भीमसेननेभी उनसबको घायलकिया ४ द्रोणाचार्य्यको पांचसौ बाणसे कर्णको दशबाणसे दुर्योधनको बारह बाणसे अश्वत्थामाको आठबाणसे घायलकिया ५ और युद्धमें कठिन शब्दको करता उनके सन्मुख बर्तमानहुआ उसकी ओर से प्राणोंकी प्रीतिको अत्यन्त त्यागने और मृत्युके साधारण करनेपर ६ अजातशत्रु युधिष्ठिरने उनशूर वीरोंको प्रेरणाकरी कि भीमसेन को रक्षाकरो फिरवह बडेतेजस्वी युयुधानआदि और पांडव नकुल सहदेव ये सब भीमसेनके पासगये वह अत्यन्त क्रोधयुक्त पुरुषोत्तम सब साथ मिलकर ७।८ उत्तम धनुष धारियोंसे रक्षित और

द्रोणाचार्य्यकी सेनाको पराजय करनेके अभिलाषी बड़े पराक्रमी भीमसेन आदिक रथी चढ़ाई करनेवालेहुये ९ रथियोंमें श्रेष्ठऔर सावधान द्रोणाचार्य्यनेभी उनबड़े पराक्रमी युद्धभूमिके लड़नेवाले वीर महारथियोंकोरोका १० फिर पांडवराज भी मृत्युकेभयको त्यागकरके आपके शूरवीरोंके सन्मुख गये अश्वारूढ़ोंने अश्वारूढ़ों को और रथियोंने रथियोंकोमारा ११ शक्ति खड्गोंका गिरना और फरसोंसेभी युद्धहुआ प्रकृष्ट तलवारोंसे वह युद्ध बड़ा कठिन और तीव्रताका प्रकट करनेवाला हुआ १२ हाथियोंकी चढ़ाईमें महा भयकारी युद्धहुआ कोई हाथीसे औरकोई घोड़ेसे औंधेमुख होकर गिरा १३ और हे श्रेष्ठ बहुतसे मनुष्य बाणोंसे घायलहोकर रथसे गिरे बड़े गई मर्दहोनेवाले युद्धमें हाथीने किसी२ बिनाकवचवाले गिरेहुये मनुष्यके शिरको छातीपर दबाकर तोड़डाला और किसी हाथीने अन्य २ बहुतसे गिरेहुये मनुष्योंको मर्दनकिया १४।१५ और दांतोंसे पृथ्वीको पाकर बहुतसे रथियों को भी मर्दन किया कोई २ हाथी भयकारी रुधिरमें भरेहुये दांतोंसे युक्त १६ युद्धमें सैकड़ों मनुष्योंको मर्दनकरते घूमनेलगे और पड़ेहुयेकार्ष्णलोहेके कवचधारी मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को दूसरे हाथियों ने ऐसा मर्दनकिया १७ जैसेकि नरकुलनाम मोटेतृणकोकरतेहैं वहां लज्जायुक्त राजालोग समयके योग से उन शयन स्थानोंपर सोये जोकि गृध्रपत्र रूप वस्त्रोंसे आच्छादित बड़े दुःख रूपथे इसयुद्धमें पितानेरथकी सवारीसे सन्मुख होकर पुत्रको १८।१९ और पुत्रने मोहसेपिताको मारा यहबड़ाअमर्यादावाला युद्धवर्तमान हुआ रथ-टूटे ध्वजा कटगई छत्रपृथ्वीपरगिरे २० और घोडे टूटे हुयेआधेजुवें को लियेहुये भागे और कुंडलधारी शिरके खण्ड २ हुये खड्ग रखने वाली भुजाभी गिरपड़ी २१ पराक्रमी हाथीनेरथको पृथ्वीपर दबा-कर चूर्णकिया और रथीके नाराचसे घायल हुआ हाथी पृथ्वीपर गिरा २२ हाथी से अत्यन्त घायल कियाहुआ घोड़ा अपने सवार समेत गिरा बड़ा भयकारी युद्ध वर्त्तमान हुआ २३ हायपिता हाय

पुत्र हायमित्र कहांहै खड़ाहो कहां दौड़ता है प्रहारकर और मन्द मुसकान और सिंहनाद समेत इसको मार २४ इसप्रकार की बातोंके नाना प्रकारके बचन सुने गये और मनुष्य घोड़े व हाथियोंका भयदूर हुआ २५ पृथ्वीकी धूलशान्त होगई और भयभीत लोगोंको मूर्च्छा हुई प्रत्येक वीरने अपने चक्र से दूसरे बीरके चक्रको पाकर २६ अस्त्रमार्गके बन्दहोनेके समय गदा से शिरको गिराया बालोंका पकड़ना आदि मुष्टिक युद्ध भी बड़ा भयकारी हुआ २७ तब बिजयाभिलाषी बीरोंका युद्ध दन्त नखके प्रहारोंसे हुआ वहां खड्ग समेत उठी हुई शूरों की भुजा भी कटीं २८ इसी प्रकार किसी २ की भुजा धनुष बाण और अंकुश समेत कट गईं इस युद्धमें एकने दूसरे को पुकारा औरदूसरा मुख फेर कर भागा २९ एक ने दूसरेके शिरको स्वाधीन करके शरीरसे पृथक् किया कोई शब्द के साथही दौड़ा कोई शब्दसे अत्यन्त भय भीतहुआ ३० किसी ने सेनाके मनुष्यों को और किसी ने अपने शत्रुओंको तीक्ष्ण बाणों से मारा इस युद्धमें पर्व्वतके शिखरके समान हाथी नाराच बाणसे गिराया हुआ ३१ पृथ्वीपर गिरा जैसे कि ऊष्म ऋतुमें नदीका रोधहोताहै उसी प्रकार पर्व्वताकार हाथी रथीको मारता और पीड़ा देता ३२ घोड़े और सारथी समेत पृथ्वी पर नियत हुआ शस्त्रज्ञ भय भीत और प्रहार करनेवाले शूरोंकोदेख कर ३३ दूसरे भय भीत और निर्बल चित्तवाले बहुत से लोगों में मोह पैदा हुआ सब व्याकुल हुये और कुछ नहीं जाना गया ३४ सेनाकी उठीहुई धूलसे गुप्त मर्य्यादासे रहित युद्ध वर्त्तमान हुआ इसके पीछे सेनापति शीघ्रतासे यह बोलताथा कियहीसमयहै ३५ सदैव शीघ्रता करने वाले पांडवोंको प्रेरणा करने वाला हुआ फिर बाहुशाली पांडव उसकी आज्ञाको करते ३६ और मारते हुयेद्रोणाचार्य्यके रथपर ऐसे गिरे जैसे कि सरोवर पर हंस गिरतेहैं परस्पर दौड़ो पकड़ो भय मत करो मारो ३७ उस निर्भय द्रोणाचार्य्य के रथ पर यह कठिन शब्द हुये इसके पीछे द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य

कर्ण अश्वत्थामा राजा जयद्रथ ३८ बिन्दु अनुबिन्दु अवन्ती देशके राजा लोग और शल्यने उनको रोकाउन उत्तम धर्मसे संयुक्त क्रोध भरे कठिनता से हटाने और पकड़नेके योग्य ३९ बाणसे पीड़ामान पांचालोंने पांडवों समेत द्रोणाचार्य्यको त्यागनहीं किया इसकेपीछे अत्यन्त क्रोध युक्त सैकड़ों बाणोंको छोड़ते हुये द्रोणाचार्य्य ने ४० चंदेरी देशी पांचाल देशी और पांडवों का बड़ा मर्द्दन और नाश किया हे श्रेष्ठ उसके धनुषकी प्रत्यंचा और तलका शब्द दशोंदिशा ओंमें सुना गया ४१ वह शब्द हजारों मनुष्यों का भय भीत करने वाला बज्रकेसमानथा इस अन्तरमें बिजयका अभ्यासी अर्जुनबहुत से संसप्तकोंको बिजय करके ४२ वहां आया जहां पर कि वह द्रोणाचर्य्य जी पांडवों का मर्द्दन कररहेथे संसप्तकों को मार कर उन बड़े भारी भंवर और रुधिर रूप जल संयुक्त हद रखने वाली रुधिर प्रबाहसे बहने वालीनदीसे पार उतरा हुआअर्जुन दृष्टि गोचर हुआ हमने उसकीर्तिमान् और सूर्य्यके समान तेजस्वी अर्जुनके चिह्न४३।४४बानरीध्वजाको तेजसे प्रकाशमान देखाउससंसप्तका नाम समुद्रकोअस्त्रोंकी किरणों से शुष्क करके ४५ प्रलय काल के समानउस पांडव अर्जुनने कौरवोंकोभी तपायाअर्जुनने अस्त्रोंकेसंता पसेसबकौरवोंको ऐसे भस्म करदिया ४६ जसे कि प्रलयकाल की उठी हुई अग्नि सब जीवोंको भस्म करदेतीहै इसके बाणों के हजारों समूहों से घायल हुये हाथी घोड़े और रथोंकी सवारी से लड़नेवाले ४७ शूरबीर पृथ्वी पर गिरे और कितनेही बाल खुले बाणों से पीड़ित मनुष्यों ने महापीड़ा के शब्द किये और कितनेही नाश होगये ४८ और कुछेक मनुष्य अर्जुन के बाणों से पीड़ितऔर निर्जीव होकर गिरपड़े उन सब में से कितनेही उछल २ कर गिरे और मुख फेरने वाले शूरबीरों कोशूरोंके व्रतको स्मरणकरतेअर्जुन ने नहींमारा फिर वह गिरेहुये और अपूर्व्व रथ वाले मुखोंको फेर२ कर बहुत से कौरव पुकारे ४९।५० कि हाय कर्ण हाय कर्ण तब अधिरथी कर्ण उन शरण चाहने वालोंके दीनता के बचनों कोसुन-

करु१ भयमतकरो यह कहकर अर्जुनके सन्मुखगया हेभरतवंशो उन रथियों में श्रेष्ठ सब भरतबंशियोंके प्रसन्न करने वाले ५२और अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ कर्णने अग्न्यास्त्रको प्रकट किया तब अर्जुन ने उस प्रकाशित बाण समूह और धनुष रखनेवाले कर्ण के ५३ बाण समूहों को अपने बाण समूहों से काटा और कर्णने भी उस अग्नि रूपअर्जुन के भी बाणोंको काटा ५४ और अस्त्रको अस्त्रसे अच्छी रीतिसेरोंककर बाणोंको छोड़ताहुआ अत्यन्तगर्जा फिर धृष्टद्युम्न भीमसेन और महारथी सात्यकिने५५ कर्णको पाकर तीन २ बाणों से घायलकिया कर्णने अर्जुनके अस्त्रको बाणकी बर्षासे हटाकर५६ उनतीनोंके धनुषों को तीन बिशिखों से काटा वह टूटे धनुष और निर्विष सर्पोंके समानशूरबीर ५७ रथसेअपनी शक्तियों को फैंककर सिंहोंके सदृश अत्यन्त गर्जे हाथसे छोड़ी हुई और बड़ी शीघ्रगामी सर्पोंके समान ५८ प्रकाशमान महा शक्तियां कर्णके ऊपरगईं तब बाणों के समूहोंसे और मुख्य तीन २ बाणों से उन शक्तियों को काटकर ५९ अर्जुनके ऊपर बाणों को छोंड़ताहुआ बलवान् कर्ण गर्जा फिरअर्जुनने भी सात बाणोंसेकर्णको घायलकरके ६० तीक्ष्ण धारवाले बाणसे कर्णके छोटेभाई को मारा इसके पीछे अर्जुनने छः बाणोंसेशत्रुंजयको मारकर६१शीघ्रही भल्लसेबिपाटकेशिरको रथ से गिराया धृतराष्ट्रके पुत्रोंके देखते हुये अकेले अर्जुननेद६ २ कर्णके सन्मुखही उसके तीनभाइयोंको मारा उसकेपीछे भीमसेनने गरुड़ के समानअपने रथसे उछलकर ६३ उत्तम खड्गसे कर्णके पन्द्रह पक्ष वालोंकोमारा फिर रथमें नियतहो द्वितीय धनुषकोलेकर ६४ दशबाणोंसे कर्णको औरपांच बाणोंसेसारथीसमेत घोड़ोंको घायल किया धृष्टद्युम्ननेभी उत्तम खड्ग और प्रकाशित ढालको लेकर ६५ निषध देशी वृहच्छत्र और चन्द्रवर्माको मारा इसके पीछे धृष्टद्युम्न ने अपनेरथमें नियतहोकर दूसरे धनुषको लेकर ६६ युद्धमें गर्जना करके तिहत्तर बाणोंसे कर्णको घायल किया फिर चन्द्रमाकेसमान सात्यकीभी दूसरे धनुष को लेकर ६७ चौंसठ बाणों से कर्णको

बेधकर सिंहके समान गर्जा अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुये दोभल्लों से कर्ण के धनुष को काट कर ६८ फिर कर्णको तीन बाणों से भुजा और छातीपर घायल किया इसके पीछे दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्य और राजाजयद्रथने ६९ डूबे हुये कर्णको सात्यकीरूप समुद्र से निकाला फिर आपके अन्य २ सैकड़ों प्रहार करनेवाले शूरवीर पति घोड़े रथ और हाथियोंको ७० दौड़तेहुये कर्ण के समीप दौड़े तब धृष्टद्युम्न भीमसेन अभिमन्यु अर्जुन ७१ नकुल और सहदेव ने युद्धमेंजाकर सात्यकीकी रक्षाकरी इसरीतिसे आपके और पांडवों के सब धनुष-धारियों के नाशके निमित्त प्राणों को त्याग करके यह बड़ा भारी भयानक युद्ध हुआ पदाती रथी हाथी और घोड़े दूसरे रथ हाथी और घोड़ोंके अन्य २ पतियोंकेसाथ युद्ध करनेवाले हुये ७२।७३ रथी हाथीसे पती घोड़ोंसे रथपति अन्यघोड़े रथ और हाथियों के साथ घोड़ोंसे घोड़े हाथियोंसे हाथी और रथियों से रथी युद्ध करनेवाले हुये ७४ पतीभी पतियोंकेसाथ भिड़ेहुये दिखाईपड़े इसप्रकारमांसा-हारियोंका प्रसन्न करनेवाला घोर और कठिन युद्धहुआ ७५ उन महापुरुषोंके साथ निर्भय लोगों का युद्ध यमराजके दर्शोंकाअत्यन्त वृद्धि करनेवालाहुआ७६ इसकेपीछे बहुतसे हाथी रथपति औरघोड़े दूसरे रथघोड़ेहाथी और मनुष्योंसे मारेगये हाथियोंसे हाथी और रथियोंसे शस्त्रधारीरथीघोड़ोंसेघोड़े और पतियोंकेसमूहोंसे पतिमारे गये ७७ रथियोंसेहाथी और उत्तम हाथियोंसे बड़ेघोड़े और घोड़ोंसे मनुष्य और उत्तम रथियोंसेवहघोड़े जिनकी जिह्वा दांत और आंखें निकलपड़ीं और कवच समेत भूषण टूटे उन सबने मृत्युकोपाया ७८ इसीप्रकारअन्य बहुतसी क्रियावाले उत्तम शस्त्रोंसे मरेहुये भयानक रूपहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े घोड़े और हाथियोंके पैरोंसे घायल और मर्दनकियेहुये अत्यन्त व्याकुल और घोड़ोंके खुर और रथके पहियों से कुचले हुयेथे७९ वहां महाभयानक कुत्ते शृगाल पक्षी और राक्षसों के अत्यन्त प्रसन्न करनेवाली पुरुषों की प्रलय वर्त्तमान होने पर वह क्रोधयुक्त बड़ीसेना परस्पर मारती हुई पराक्रमसे घूमने वाली

हुईं ८० हे भरतबंशी तदनन्तर सूर्य के अस्ताचल पर नियत होने पर वह अत्यन्त चलायमान रुधिरसे भरीहुई परस्पर में देखनेवाली दोनोंसेना डेरोंमेंगईं ८१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्वाचिन्शोऽध्यायः ३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि प्रथम बड़े तेजस्वी अर्जुन से हमारे शूरबीरों के पराजय होने पर और द्रोणाचार्य्यके निष्फल प्रतिज्ञा होने और युधिष्ठिर के रक्षित होने पर १ आपके सब युद्धकर्त्ता टूटे कवच और युद्ध में पराजित धूलमें लिपटे अत्यन्त व्याकुलहोकर दशों दिशाओंके देखनेवाले हुये इसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के कहने से बिश्रामको करके युद्ध में लक्षभेदी बाणों से घायल और कठिन कर्मोंके करनेसे निश्चेष्ट होगये २। ३ स्तुतिमान् पुरुषों में अर्जुन के असंख्य गुण और अर्जुन में केशवजी की प्रीतिको कहने पर ४ दुष्ट कर्मोंसे अपवाद युक्तों के समान ध्यान रूप मौनता में नियत हुये इसके पीछे प्रातःकालके समय दुर्योधन द्रोणाचार्य्य जीसेबोला ५ अर्थात् शत्रुओंकी वृद्धि से खेदित चित्त महाक्रोधयुक्त बार्त्तालाप में कुशल दुर्य्योधन नम्रता और अहंकार से सब शूरों के समक्षमें यह बचन बोला ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ निश्चय करके हम आपके कारण से बध्यपक्ष में हैं अब भी आपने इस प्रकार सन्मुख पायेहुये युधिष्ठिर को नहीं पकड़ा ७ देवताओं समेत पांडवों से रक्षित युद्धमें नेत्रके सन्मुखआयेहुये शत्रुको आप पकड़ना चाहैं तो वह किसी प्रकारसे भी नहीं छूट सक्ताहै८ आपनेप्रसन्नतासे मुझको बरदान देकर बिपरीत कर्मकियाहै उत्तमपुरुष किसी दशामें भी अपने भक्त को निराश नहीं करते हैं इसके पीछे बड़े लज्जित होकर भारद्वाज जी दुर्योधनसेबोले कि मैं तेरे प्रियमें उपाय करनेवालाहूं तुमकोमुझे वैसा न जानना चाहियेह।१० देवता असुर गन्धर्व यक्ष सर्प और राक्षसों समेत सब लोक भी इस अर्जुन के

रक्षा कियेहुये पुरुष को बिजय करने को समर्थ नहीं हैं ११ जहां सबके पति जगत्के स्वामी गोबिन्दजी और सेनापति अर्जुनहैं वहां सिवाय प्रभु शिवजीके और किसकी सेना जासक्तीहै १२ हे तात अब मैं सत्य २ कहताहूं यह कभी मिथ्या न होगा कि अबमैं किसी एक अत्यन्त उत्तम महारथीको गिराऊंगा १३ मैं उस ब्यूहको रचूंगा जो कि देवताओं से भी नहीं टूट सक्ताहै हे राजा अब तुम किसी उपाय से अर्जुन को दूर लेजाओ १४ युद्ध में कोई बात भी उससे अबिदित और करनेके अयोग्य नहीं है उसने सम्पूर्णप्रकार के ज्ञान बिद्या आदि जहां तहां से प्राप्त किये हैं १५ द्रोणाचार्य्य के इस प्रकार कहनेपर संसप्तकों के समूहोंने अर्जुनको दक्षिण दिशाकी ओर बुलाया १६ फिर इसके पीछे अर्जुन का युद्ध शत्रुओं से उसप्रकारका हुआ जैसा कभी न देखाथा न सुनाथा १७हेराजा वहां द्रोणाचार्य्य का रचा हुआ ब्यूह ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि मध्याह्नके समय अत्यन्त संसप्तकर्त्ता कठिनता से देखने के योग्य घूमताहुआ सूर्य्य होताहै १८ हेभरतबंशी अभिमन्युने अपने ताऊजी के बचन से उस कठिनता से तोड़नेके योग्य ब्यूहको युद्ध में अनेक प्रकार से तोड़ा १९ फिर वह उस कठिनकर्म को करके और हजारों बीरोंको मार कर छःबीरोंसे भिड़ाहुआ दुश्शासनकेपुत्र के आधीन हुआ २० हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्रउस सुभद्रा के पुत्र अभिमन्युने प्राणोंकोछोड़ा उसके सुनने से हम अत्यन्त प्रसन्न और पांडव शोकग्रस्त हुये हे राजा अभिमन्युके मरने पर हमने बिश्राम लिया २१ धृतराष्ट्र बोले हे संजय उस पुरुषोत्तमके पुत्रको जिसने तरुणता को भी नहीं पायाथा युद्धमें मराहुआ सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त दुर्बिघ्न्य होताहै २२ धर्म नियत करने वालों ने यह क्षत्री धर्म बड़ा भयकारी नियत कियाहै जिस धर्ममें राज्यके अभिलाषी शूरबीरोंने बालकके ऊपर शस्त्रोंका प्रहार किया २३ हेसंजय अब तुम यह बताओ कि बड़ेभारी अस्त्रज्ञ लोगों ने उस महासुखी और निर्भयके समान घूमनेवाले बालक को कैसे २ मारा २४ हे

संजय जैसे कि रथकी सेना के तोड़ने के अभिलाषी बड़े तेजस्वी अभिमन्युने युद्धमें क्रीड़ा करी वह सब तुम मुझसेकहो २५ संजय बोले हे राजा जो आप अभिमन्युका मारना मुझसे पूछतेहो वह मैं संपूर्णता पूर्व्वक तुमसे कहताहूं तुम बड़ी सावधानीसे सुनो कि जिस प्रकार सेनाके तोड़नेके अभिलाषीकुमारने क्रीड़ाकरी औरजैसे आपत्तिमें भी पड़कर कठिनता से बिजय करने के योग्य बीरों को मारा जैसे कि बहुत से गुल्म तृण और वृक्षवाले बनमें दावानल नाम अग्निसे घिरेहुये बनबासीजीवों को भय होता है उसीप्रकार आपके शूरबीरों को भी भय उत्पन्नहुआ २६।२८॥

इतिश्रीमन्महाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयस्त्रिंशतमोऽध्यायः३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि युद्धमें अत्यन्त भयकारी कर्म वाले और कर्म में शस्त्रों का अभ्यास प्रकट करने वाले पांचोपांडव श्रीकृष्णजी समेत देवताओं से भी बिजय करनेको कठिनहैं १ बुद्धिका पराक्रम कर्म कुल बुद्धि कीर्त्ति यश और लक्ष्मीसे युक्त ऐसे नहैं न होंगे नथे और न वैसे सदैव सर्ब गुण संपन्न वाले पुरुष हैं २ और निश्चय सच्चे धर्म में प्रीति रखने वाला जितेन्द्री राजा युधिष्ठिर ब्राह्मणादिकरके पूजनादि गुणोंसे सदैव स्वर्गका प्राप्त करनेवाला है ३ हे राजा प्रलयकाल में मृत्यु व पराक्रमी परशुरामजी और युद्धमें नियत भीमसेन यह तीनोंएकसे कहेजातेहैं ४ प्रतिज्ञा और कर्ममें कुशल और सावधान गांडीव धनुषधारी अर्जुन के समान दृष्टान्त के अर्थ उपमाके देनेको इस पृथ्वीपर युद्धमें लड़ने वाला मैं किसीको नहीं पाताहूं ५ नकुल में गुरु भक्ति सेवा परायणता नम्रता शान्ती जितेन्द्रीपन बीरता और अनुपम स्वरूपता यह गुणबर्त्तमानहैं६ निश्चय करके शास्त्र गंभीरता मधुरता सत्यता और स्वरूपसे बीर सहदेव यह दोनों अश्विनीकुमार देवताओं के समान हैं ७ जो बुद्धियुक्त गुण श्रीकृष्णाजी में हैं और जो गुण कि पांडव अर्जुनमें हैं

निश्चय करके वह सब गुण अभिमन्यु में वर्त्तमान दीखते थे वह अभिमन्युपराक्रममें युधिष्ठिर के और कर्म में श्रीकृष्णजी के और भयानककर्म करनेमें भीमसेनके समान था ८।९ और रूप पराक्रम औरशास्त्रमेंअर्जुन के और नम्रतामें सहदेव और नकुल के समान था१० धृतराष्ट्रबोलेहेसूत मैंउसअजेय सुभद्राके पुत्रअभिमन्युकेसब वृत्तान्त को यथार्थ सुनाचाहताहूं वहऐसा बीर बालक युद्धभूमि में कैसे मारागया ११ संजय बोले हे महाराज स्थिर चित्त होकर दुस्सह शोकको सहो अबमैं बांधवों के बड़ेनाशको तुमसे कहताहूं तुम उसको सावधानी से सुनो १२ हे महाराज आचार्य्य जीने चक्रव्यूह को रचा उसमें इन्द्रके समान सबराजा नियत किये १३ और द्वारोंपर सूर्य्यके समान तेजस्वी कुमार नियत किये तब सब राजकुमार इकट्ठे हुये १४ सब नियम करने वाले सुनहरी ध्वजा लालवस्त्र रक्ताभरणधारी १५ लाल पताकावाले सुनहरी माला युक्त अगर चन्दनसेलिप्त अंग होकर सूक्ष्म बस्त्रोंकेही धारण करने वालेथे १६ वहसब मिलकर अभिमन्युसे युद्धाभिलाषी होकर एक साथहीदौड़े उनदृढ़ धनुषधारियोंकी दशहजार संख्याथी १७ वह सब आयके दर्शनीयपौत्र लक्ष्मणको आगे करके समानदुःखी और समानही साहसी १८ परस्परमें ईर्षायुक्त और प्रिय करनेमें प्रवृत्त चित्तथे हेराजा दुर्य्योधन भी सेनाकेमध्यमें आकर१९ राजाकर्ण दुःशासन और कृपाचार्य्य आदिक महारथियों समेत देवराज इन्द्रके समान शोभायमान श्वेतछत्रसे संयुक्त होकर नियतहुआ २० और चमररूप पंखोंके चलानेसे उदय होनेवाले सूर्य्यके समान था उस सेनाकेमुखपर सेनापति द्रोणाचार्य्यके नियत होनेपर २१ श्रीमान् राजा सिंधभी मेरुपर्व्वतके समान निश्चल होकर नियतहुआ और देवताओंके समान आपके वहतीसपुत्र जिनके अग्रगामी अश्वत्थामाजीथे यहसब सिंधके राजाके पक्षमें नियतहुये हेमहाराज राजा गान्धार कितवशल्य और भूरिश्रवा २२।३३ यह सबमहारथी राजासिंध के पक्षमें नियतहुये उसके पीछे अपने जीवनसे निराश

होकर आप के शूरबीर और दूसरों का युद्ध महाकठिन और रोमहर्षण करनेवाला जारीहुआ २४। २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय॥

संजयबोले कि वहपांडव जिनका अग्रगण्य भीमसेनहै उसभारद्वाजजीसे रक्षित और अजेयसेनाके सन्मुख बर्त्तमानहुये १ सात्यकी, चेकितान, पुरुषतकापुत्रधृष्टद्युम्न, पराक्रमी कुन्तभोज, महारथी द्रुपद, अभिमन्यु, छत्रधर्मा, पराक्रमी बृहच्छत्र, धृष्टकेतु, चन्देरीकारा जानकुल, सहदेव, घटोत्कच, २।३ पराक्रमी युधामन्यु, अजेयशिखंडी, साहसी उत्तमौजा, महारथी बिराट, ४ द्रौपदीके पुत्रक्रोधमूर्त्ति शिशुपालका पुत्र पराक्रमी बड़ेबलीकेकय औरहजारोंसृंजी ५ यह और अन्य २ अस्त्रज्ञयुद्धमें दुर्मद अपनेसमूहों समेत द्रोणाचार्य्यसे लड़नेके अभिलाषी एकाएकी सन्मुख दौड़े ६ बड़ेपराक्रमीऔरनिर्भय भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने उन सन्मुख बर्त्तमान शूरबीरोंको अपने बाणोंके बड़ेसमूहोंसे रोंका ७ जैसे कि जलका बड़ासमूह दुःख से पराजय होनेवाले पहाड़को पाकर नियतनहीं रहताहै उसी प्रकार यह सबबीरभी द्रोणाचार्य्यके सन्मुख ऐसे नियत नहीं रहे जैसे कि नदियांमर्य्यादापर नियतनहींरहतीं ८ हेराजाभारद्वाजद्रोणाचार्य्य के धनुषसे निकलेहुये बाणोंसे पीड़ामान पाण्डव उनके सन्मुख खड़े होनेको समर्थनहींहुये९ हमने द्रोणाचार्य्यकी दोनों भुजाओंका वह अपूर्वपराक्रम देखा जो सृंजियों समेत पांचाल देशी उनके सन्मुख नियत नहींरहे युधिष्ठिरने उसअत्यन्तक्रोधयुक्तआतेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर उनके रोकनेको अनेकप्रकार से बिचार किया१०।११ फिर युधिष्ठिरने उन द्रोणाचार्य्य को अन्यसे अजेयमानकर बड़ेभारी असह्य कठिन भार को अभिमन्यु के ऊपर छोड़ कर १२ बासुदेव जी और अर्जुन के समान बड़े तेजस्वी शत्रुओं के बीरोंको मारनेवाले अभिमन्यु से यह बचनकहा १३ कि हे तात अर्जुन आकर जिस

प्रकार से हमारी निन्दा न करे उसी प्रकार को करो हम चक्रव्यूह का तोड़ना किसी प्रकारसे भी नहीं जानते हैं १४ उस चक्रव्यूहको अर्जुन श्रीकृष्ण जी प्रद्युम्नजी अथवा तुम तोड़ सक्तेहो हे महाबाहु तुम चारों के सिवाय पांचवां कोई तोड़नेवाला नहीं है १५ हे पुत्र अभिमन्यु तुम पिता आदिक वा मामा अथवा सब सेनाओं का मांगा हुआ यह बरदान देने को योग्यहो १६ नहींतो हे पुत्र अर्जुन युद्ध भूमिसे आकर हमारी निन्दा करेगा इस हेतुसे तुम शीघ्रहीअस्त्रको लेकर द्रोणाचार्य्य की सेनाको मारो १७ अभिमन्यु बोला कि मैं पिता लोगों की बिजयको चाहता हुआ युद्ध में द्रोणाचार्य्य की अत्यन्त उत्तम दृढ़ और बड़ी भयकारी शीघ्रगामिनी सेनाको मँझाऊंगा १८ मेरे पिताने सेनाके नाश करने में मुझको योगका उपदेश किया है परन्तु मैं किसी आपत्ति में बाहर निकलनेको उत्साहनहीं करताहूं १९ युधिष्ठिर बोले कि हे शूरबीरोंमेंश्रेष्ठ तू सेनाको पराजित करके हम लोगोंकेद्वारको उत्पन्नकर हे तात हमसबभी तेरे पीछे उसी मार्गसे जायँगे जिस मार्ग से तुम जावोगे २० हे तात हम युद्धमें अर्जुनके समान तुमको लड़ाई में आगे करके सब ओरको मुख कियेहुये तेरीरक्षा करतेहुये पीछे २ चलेंगे २१ भीमसेनबोले कि मैं तेरे पीछे जाऊंगा और धृष्टद्युम्न,सात्यकी, पांचालदेशी, कैकय, मत्स्यदेशी और सब प्रभद्रक भी तेरे पीछे २ चलेंगे २२ हम एकबार तेरे तोड़ेहुये व्यूहको जहां तहां उत्तम २ शूरबीरोंको मारतेहुये बार २ सबका नाश करेंगे २३ अभिमन्यु बोले कि मैं द्रोणाचार्य्य के इस दुःख से सन्मुखता के योग्य सेना में ऐसी रीति से प्रवेशकरूंगा जैसे कि अत्यन्त क्रोधयुक्त पतंग पक्षी प्रज्वलित अग्नि में जाता है २४ अब मैं उस कर्मको करूंगा जो दोनों कुलोंका प्रिय होगा और वह मे मामूरे व पिताकी प्रसन्नता है उसीको उत्पन्न करूंगा २५ निश्चय करके सब जीवधारी युद्ध में मुझ बालकसे हटाये हुये शत्रुओंकी सेनाओंके समूहों को देखेंगे २६ मैं अर्जुन से पैदा नहीं अथवा सुभद्रासेभी उत्पन्न नहींहूं जो

अब मेरे युद्धमें कोईभी जीवता बचसकै २७जो मैं युद्धमें एकरथ सेसंपूर्णक्षत्री मंडलको आठ खंड न करूंतो अर्जुनका पुत्र नहींहूं २८ युधिष्ठिर बोलेकि हे अभिमन्यु तुझ ऐसे बचन कहने वालेके पराक्रमकी वृद्धिहोय जो तू द्रोणाचार्य्य की उस सेना के पराजय करने को उत्साह करताहै जोकि कठिनतासे सन्मुख होनेके योग्य और साध्यरुद्र मरुतनाम देवता बसु अग्नि और सूर्य्यकेतुल्य पराक्रमी महाबली बड़े धनुषधारी पुरुषोत्तमोंसे रक्षितहै ३० संजय बोले कियुधिष्ठिरने अभिमन्युकेइस बचनको सुनकर सारथीको प्रेरणा करी ३१ किहे सुमित्र युद्धमें घोड़ोंको शीघ्रता से द्रोणाचार्य्य की सेनामें चलाय मानकरो ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

संजय बोलेकि हे भरत बंशी अभिमन्यु ने बुद्धिमान धर्मराजके उस बचनको सुनकर सारथीको द्रोणाचार्य्यकी सेना में चलने की आज्ञादी १ चलोचलो ऐसी रीतिसे उसकी आज्ञा को पाकर वह सारथी अभिमन्यु से यह बचन बोला २ हे चिरंजीवि पांडवोंने यह बड़ाभारी बोझा तुझपर नियत कियाहै एकक्षणभर बुद्धि से बिचार कर फिरतुमयुद्ध करनेको योग्यहो ३ द्रोणाचार्य्य बड़े अस्त्रादिक कर्मोंकेज्ञाता और परिश्रमीहैं और तुमबड़े सुखमें पोषण पानेवाले हो अभी युद्धमें अतिकुशल नहीं हो ४ इसके पीछे अभिमन्यु अत्यन्त हंसताहुआ सारथी से यह बचन बोला हे सारथी यह द्रोणाचार्य्य अथवा संपूर्ण क्षत्रीमंडलभी क्या पदार्थहैं ५ मैंयुद्धमेंदेवताओं समेत ऐरावत हाथीपर सवार इन्द्रको अथवा सब जीवधारियों के समूहोंसे पूजित ईश्वर रुद्रजीसे भी युद्ध करसक्ताहूं अबमुझको इसक्षत्री मंडलमें किसी प्रकारका भय नहींहै ६ यहशत्रुओंकी सेना मेरीसोलहवीं कलाके भी योग्य नहींहै हे सूतके बेटे बिश्व भर के स्वामी अपनेमामा बिष्णुजी को पाकर और युद्धमें अर्जुन को भी

पाकर मेरे सन्मुख भयनहीं आवेगा इन बातोंसे अभिमन्यु सारथी के उसबचनकोतुच्छऔरकदर्थी करके८उससेकहनेलगा कि द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलबिलम्ब मतकर उसकेपीछे उस सारथीने जो कि मनसे अत्यन्त अप्रसन्नथा सुनहरी सामान और तीन वर्षकीअवस्थावाले घोड़ोंको शीघ्रही चलायमान किया सुमित्रसे द्रोणाचार्य्य कीसेनामें भेजेहुये वह घोड़े ९।१० बड़ेवेग और पराक्रमवाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गये हे राजा सब कौरव जिनके अग्रगामी द्रोणाचार्य्यथे वहसब उसआते हुये अभिमन्यु को देखकर सन्मुख बर्त्तमानहुये और पांडव लोग उसकेपीछेचले ११ वहश्रेष्ठतम कर्णिकार वृक्षके चिह्नवाली ध्वजाको ऊंचाकरनेवाला अर्जुनके समान पराक्रमी सुबर्णकी ध्वजावाला अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु युद्धाभिलाषी होकर द्रोणाचार्य्य आदिक महारथियों के सन्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सिंहका बच्चा हाथियोंके सन्मुख होय वह सब प्रसन्नतासे युक्त होकर प्रवेशित हुये और ऐसाबड़ा भारी युद्ध एक मुहूर्त्त तक किया जैसेकि गंगाजीका आवर्त समुद्रमें होताहै १३ हे राजा परस्पर मारते और लड़तेहुये शूरबीरोंका युद्ध कठिन और महाभयकारी बर्त्तमानहुआ १४ उस अत्यन्त भयानक युद्धके बर्त्तमान होनेपर अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु द्रोणाचार्य्य के देखतेव्यूह को बेधकर प्रवेश करगया १५ हाथीघोड़े रथ और पत्तियोंके शस्त्र उठाने वाले समूहोंने उस प्रवेश करके शत्रुओंके समूहोंको मारतेहुये महाबली अभिमन्युको चारोंओर से घेरलिया १६ नाना प्रकारके बाजे और कठिन गर्जनाओंकी ध्वनिटंकार सिंहनाद और खड़ाहोखड़ाहो इन शब्दोंके १७ और घोरहला हलानाम शब्दोंके साथमतजाओ यहां मेरेसन्मुख खड़ाहो हे शत्रु यहमैंहूं इसरीतिसे अनेकभांति बारंबार बचन कहनेवालेहुये १८ हाथियोंकी चिंहाड़ गर्जनाहंसनाखुर और रथकेपहियोंके शब्दोंसे पृथ्वीको शब्दायमानकरते अभिमन्युके सन्मुखगये १९ हेराजा शीघ्रतासे युद्ध करने वाले और अस्त्र चलाने वाले मर्मस्थलोंके जाननेवाले महाबली बीर अभिमन्युने मर्म भेदी

बाणोंसे उन आनेवाले शूरबीरोंको घायलकिया २० नानाप्रकारके चिह्न वाले तीक्ष्ण बाणों से घायल अस्वतंत्र वह बहुतसे शूरवीर उसके सन्मुख ऐसे आये जैसे कि टीड़ीदल अग्निके सन्मुख आताहै २१ इसके पीछे उस अभिमन्युने उन शूरोंके शरीर और शरीरों के अंगोंसे ऐसे शीघ्र पृथ्वीको आच्छादित किया जैसे कि यज्ञके मध्य मेंकुशाओंसे बेदीको आच्छादित करतेहैं २२ हस्तत्राण के धारण करने वाले, धनुष, बाण, तलवार, ढाल, अंकुश, लगाम, तोमर, फरसे, २३ गदा, आयोगुड़, प्रास, दुधारे खड्ग, तोमर, पट्टिश, भिन्दपाल, परिघ, शक्ति, बाण, कंपन २४ चाबुक, महाशंख, भल्ल, कचग्रह, मुद्गर, क्षेपणी, पाश, परिघ और उपलके रखने वाले २५ केयूर, बाजूबन्द आदि भूषणों से युक्त मनोहर सुगन्धियोंसे संयुक्तआपके शूरबीरों की हजारों भुजाओंको जो२ कि दृष्टिके सन्मुख आईं उन सबको अभिमन्यु ने काटा २६ हे श्रेष्ठ महाराज उनफड़कती औरअत्यन्त रक्तवर्णवाली भुजाओंसे पृथ्वी ऐसी शोभाय मानहुई जैसे किगरुड़ जी के काटे हुये पंचमुखी सर्पोंसे शोभित होतीहै सुन्दरनाक मुखके शान्त धारी और स्वच्छ कुंडल रखने वाले और बहुत रुधिर को छोड़ते क्रोध से दोनों ओठोंको काटने वाले २८ मणिरत्नों से अलंकृत सुन्दर मुकुट और पगड़ी रखने वाले नाल से रहित कमल के स्वरूप सूर्य्य चन्द्रमा के समान प्रकाश मान २६ समय पर प्रिय बाणोंसे शुभ वार्त्ताके कहनेवाले बहुत पवित्रसुगंधियोंसे युक्त शत्रुओं के शिरोंसे उस अभिमन्युने पृथ्वीकोआच्छादित करदिया ३० गन्धर्व नगर के समान बिधिपूर्व्वक अलंकृत ईशा रूप मुख और बिचित्र त्रूणवाले रथोंको जिनके दंडकबंधुर गिर पड़े ३१ चक्र उपस्कर और उपस्थोंसे रहित और सबसामानभी टूटगयेथे अथवा जिनके उपस्तरण गिरपड़े और हजारों जीव धारी जोकि जांघचरण नाक और दांतोंसे भी रहित होगयेथे वह सब मरगये उनरथोंको खंड२करता सब दिशाओंमें दिखाई पड़ा ३३ फिर हाथी और हाथी के सवार बैजयन्ती अंकुश ध्वजा तरकस छ कवच हाथी के बंधन

की रस्सीगलेका भूषणकम्बल३४घंट,सूंड़,दांतकीनोक, छत्र, माला, पदानुग शत्रुओंके इन सब सामान आदिकों को तीक्ष्ण धार वाले बाणों से नाश किया ३५ बानायुज प्रकार के पहाड़ी कांबोजदेशी और बाह्लीक देशी घोड़ोंको जिनकी आंख कान और पूंछनियतथी शीघ्रगामी और अच्छे लोगों के सवार कराने वाले थे३६ और शक्ति दुधारे खड्ग और पासोंसे युद्धकरनेवाले होकर शिक्षितशूरबीरोंसे युक्तथे जिनके चामरमुख टूटे उनप्रसिद्ध घोड़ों को ३७ और जिनकी जिह्वा और आंखें निकल पड़ीथीं कान आंखसे रहित जिनके कि सवार मरगये घंटेटूटगयेऔर गिद्धराक्षसादि केसमूहोंके प्रसन्न करने वाले थे ३८ और जिनके चर्मका कवच कटगया बारंबार मूत्र रुधिरसे लिप्तथे उन आपके उत्तम घोड़ोंको गिराता हुआ शोभायमानहुआ३९ अकेले बिष्णुभगवान के समान एकाकी नेही ध्यानसे अगम्य बड़े दुःखसे करने के योग्य कर्मको करके उसनेइस रीतसे आपकीतीनअंग रखनेवाली बड़ी सेनाको बारंबार ऐसे मथ डाला ४० जैसेकि बड़े तेजस्वी शिव जी असुरों की बड़ी घोर सेना को मथते हैंअर्जुन के पुत्रने शत्रुओं के साथ असह्य कर्म को करके ४१ आपकेसब शूरबीरों को बाणोंसे घायलकिया जैसे कि देवताओंके सेनापति स्वामकार्त्तिकजी असुरों की सेनाको मारते हैं उसी प्रकार उस अकेले अभिमन्यु के तीक्ष्ण बाणों से उस सेनाको अत्यन्त घायल देखकर आप के पुत्र और शूरबीर दशों दिशाओं को देखते ४२।४३ अत्यन्त सुष्कमुख और चलायमान नेत्र पसीने से लिप्त शरीर रोमांचों से युक्त भागने के विचार में चित्तसे प्रवृत्त शत्रुके बिजय करने में साहसोंकोत्यागेहुये४४ जीवनके अभिलाषी सबलोग गोत्र और नामों के द्वारा परस्पर में पुकारे मरे हुये पुत्र पिता भाई बांधव और नातेदारोंको ४५ छोड़ कर घोड़े और हाथियोंको शीघ्र चलाते सन्मुख गये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि बड़े तेजस्वी अभिमन्यु से उस अत्यन्तपराजित हुई सेना को देखकर अत्यन्त कोप में भराहुआ दुर्योधन आपही अभिमन्युके सन्मुख गया १ तदनन्तर युद्धमें अभिमन्यु के सन्मुख लौटे हुये राजा को देखकर द्रोणाचार्य्य जी शूर बीरों से बोले कि राजा को चारों ओर से रक्षित करो २ पराक्रमी अभिमन्यु हमारे देखते हुये समीप ही लक्ष भेदन करता है उस के सन्मुख जाओ भय मत करो शीघ्रता से इस दुर्य्योधनकी रक्षा करो ३इसके पीछे कृतज्ञ पराक्रमी बिजयसे शोभापानेवाले और भयसे भयभीत सुहृदोंने आपके पुत्र बीर दुर्य्योधन को चारोंओर से घेर कर रक्षित किया ४ द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण, कृतबर्मा, शकुनी, वृहद्बल, शल्य, भूरिश्रवा, पौरव, वृषसेन इन सब शूर बीरों ने तीक्ष्ण बाणों की बर्षा करके अभिमन्यु को ढकदिया ६ फिर उस अभिमन्यु को अचेत करके दुर्य्योधन को छुटाया अर्जुन के पुत्रने मुखसे गिरे हुये ग्रास के समान उस को न सहकर७ वह सुभद्राका पुत्र बाणों के बड़े समूहों से उन महारथियों को घोड़े और सारथियों समेत मुख मोड़ने वाला करके फिर सिंहनाद को गर्जा८इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यादिक रथियोंने उस मांसाभिलाषी सिंहके समान गर्जना करनेवाले अभिमन्यु के शब्दको सुनकर नहींसहा ९ हे श्रेष्ठ फिर उनसबोंने रथोंके समूहों से उसको घेरकर नानाप्रकारके रूपवाले बाणजालोंके समूहोंको उत्पन्नकिया १० आपके पोतेने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उन सबके बाणजालोंको अन्तरिक्षमेंही अर्थात् बीचमेंही काटा और उनको भी घायलकिया यह बड़ा आश्चर्य्यसाहुआ ११ इसकेपीछे उससे क्रोध रूपकिये हुये सर्पके बिषके समान बाणोंसे मारनेके अभिलाषी उन लोगोंने अजेयअभिमन्युको चारोंओरसे घेरलिया १२ हे भरतर्षभ उस अकेलेअभिमन्युने बाणोंसे आपकेउस सेनारूपी समुद्रको ऐसे

धारणकिया जैसे किकिनारा या मर्य्यादासमुद्रको धारणकरताहै १३ परस्पर मारते और लड़ते हुये अभिमन्यु और शत्रुओंके शूरोंमें से किसीने भी मुखनहीं मोड़ा १४ उस घोर और भयकारी युद्धकेवर्त्तमान होने पर अन्य शत्रुओंने नौ बाणों से अभिमन्युको घायल किया १५ दुश्शासनने बारहबाणों से सारद्वत कृपाचार्य्यने तीन बाणसे द्रोणाचार्य्यने ऐसे सत्रह बाणोंसेजोकि सर्पके बिषके समानथे १६ बिबिंशतिने सत्रहबाणोंसे कृतवर्माने सातबाणोंसे वृहद्बलने आठबाण से अश्वत्थामाने सात बाण से भूरिश्रवाने तीन बाणसे राजामद्रने छः बाण से शकुनीने दो बाणसे और राजा दुर्य्योधनने तीनबाणसे घायल किया १८ हे महाराज उसधनुष हाथ में लिये नृत्य करते के समान प्रतापी अभिमन्युने तीन २ बाणोंसे उनको घायल किया १९ इसके पीछेआपके पुत्रोंसे व्याकुल अत्यन्त कोप युक्त और शिक्षित अभ्याससे उत्पन्नबड़ेभारी पराक्रम को दिखलाते अभिमन्युने गरुड़ और वायुके समान शीघ्रगामी सारथीके आज्ञावर्त्ती और शिक्षापाये हुयेघोड़ोंके द्वारा शीघ्रता करने वाले अश्मक पुत्रकोरोंका २१ और दश बाणोंसे घायल किया और तिष्ठतिष्ठ इस बचनको भी बोला फिर मन्दमुसकानकरते अभिमन्युने दशबाणोंसे घोड़े सारथी ध्वजा २२ भुजा और धनुष समेत उसके शिरको पृथ्वीपर गिराया अभिमन्युके हाथसे उस बीर राजा अश्मक के मरने पर २३ सब सेनाभागनेमें प्रवृत्तचित्त होकर अत्यन्त कंपायमान हुई इसको देखकर कर्ण,कृपाचार्य्य,द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, राजा गान्धार,शल, २४ शल्य,भूरिश्रवा,क्राथ,सोमदत्त, बिबिंशति, वृषसेन, सुषेण,कुण्डभेदी, प्रतर्द्दन २५ वृन्दारक, ललित्थ, सुबाहु, दीर्घलोचन, और क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने बाणोंकी बर्षाओं सेढक दिया २६ बड़े धनुषधारियोंके बाणोंसे अत्यन्त घायल हुये उस अभिमन्युने कवच और शरीर के भेदन करनेवाले बाणको कर्ण के मारने के लिये हाथमें लिया २७ वह बाण उसके कवचको काट कर शरीर को घायल करके ऐसेपृथ्वीमें समागया जैसेकि सर्पबामी

में प्रवेश कर जाता है उस प्रहारसे पीड़ामान महा व्याकुल के समान कर्ण युद्धमें ऐसे अत्यन्त कंपमान हुआ जैसे कि भूकम्प होनेसे पर्व्वत कम्पाय मान होता है २९ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त ने उसीप्रकार दूसरे तीक्ष्ण तीन ३ बाणों से सुषेण दीर्घ-लोचन और कुण्डभेदी को घायल किया ३० फिर कर्णने पञ्चीस नाराचोंसे अश्वत्थामाने बीस बाणसे कृतवर्माने सात बाण से घायल किया ३१ वह इन्द्रकापोता बाणों से युक्त सब शरीर होकर भी पाशको हाथ में लिये सेनाके भीतर कालके समान घूमताहुआ दिखाई दिया ३२और सन्मुख नियत हुये शल्यको बाणोंकी वर्षासे ढकदिया फिर वह महाबाहु आपकी सेनाओंको भय भीत करता हुआ गर्जा ३३ हे राजा इसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अभिमन्युके मर्म भेदी बाणों से घायल वह शल्य रथके बैठने के स्थान पर बैठगया और अचेत होगया ३४ यशस्वी अभिमन्यु से इस प्रकार घायल शल्यको देखकर सब सेना द्रोणाचार्य्यजीके देखते हुये भागी सुन-हरी पुंखोंवाले बाणों से युक्त उस महाबाहु को देखकर आपके शूर बीरऐसेभागे जैसेकि सिंहसेपीड़ामानहोकर मृगभागते हैं ३५।३६ फिरवह पितर, देवता, चारण, सिद्ध औ यक्षोंके समूहों से और पृथ्वी तल परवर्त्ती संपूर्ण जीव धारियों के समूहों से युद्ध में कीर्त्तिमान स्तुतिमानप्रतिष्ठामानहोकर ऐसा अत्यन्त शोभायमानहुआ जैसे कि घृतसे सींचाहुआ अग्नि प्रकाश मान होकर शोभितहोता है ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अठतीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसप्रकार बाणों से बड़े धनुष धारियों को मर्दन करते उस अभिमन्यु को कौनसे शूरबीरोंने रोका १ संजय बोले कि हे राजन भारद्वाज द्रोणाचार्य्य से रक्षित रथकी सेना के तोड़नेको अभिलाषी अभिमन्यु कुमारके युद्ध क्रीड़ाको सुनो २ सु-भद्राके पुत्र अभिमन्यु के बाणों से युद्धमें पीड़ामान राजा मद्र को

देखकर शल्यका छोटाभा महा क्रोधित होकर बाणों को फैलाता हुआ सन्मुख आया और अन्ही दश बाणोंसे घोड़े सारथी समेत अभिमन्युको घायल करके बड़े शब्द से तिष्ठ २ इसबचनको पुकारा १ अर्जुनके पुत्र हस्तलाघवी अभिमन्युने उसके शिर, ग्रीवा, हाथ पैर, धनुष, घोड़े, छत्र, ध्वजा, सारथि, त्रिवेणु, कल्प, ५ दोनों चक्रयुग धनुषकी प्रत्यंचा तुणीर, अनुकर्ष, पताका, चक्र के रक्षक और सब छत्रादिक सामानको बाणों से ६ काटा उसको किसीने नहींदेखा फिरवह मराहुआ जिसके कि सब भूषण और बस्त्र टूट गयेथे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि बड़े तेजस्वी बाजुसेटूटा हुआ पर्व्वत गिरताहै इसके अनन्तर उसके सबसाथीलोगभी महाभयातुर होकर सब दिशाओंको भागे ८ हे भरत बंशी सब जीवधारी अभिमन्युके उस कर्मको देखकर धन्यहै धन्यहै इसशब्द के साथ चारों ओरसे शब्द करनेवाले हुये ९ इसशल्यके भाई के मरने पर बहुतसे सेनाके मनुष्य अपनाकुल, देश, नाम, अर्जुनके पुत्रको सुनाते अत्यन्त क्रोधित नाना प्रकारके शस्त्र हाथमें लिये सन्मुखदौड़े और कोईरथ घोड़े और हाथियों को सवारी से और कितनेही बल से प्रमत्त पदातीभी सन्मुखदौड़े ११ बाणोंके रथकी नेमियोंके हुंकार और हिन हिनाहट गर्जना बड़ेसिंहनादज्यातलत्रआदिके शब्दोंको करते अभिमन्युकेऊपरगर्जतेथे १२ कोई शूरबीर यहबोलतेथे जीवता तो रहता परन्तु अबहमारे हाथसे जीवतानहीं बचसकेगा १३ हंसतेहुये अभिमन्युने उन उसप्रकार बोलते हुये शूरबीरों को देखकर जिस२नेपूर्बमें इसपर प्रहार किया उस२ कोघायल किया १४ शूर अभिमन्यु अपूर्ब तीक्ष्ण अस्त्रों को अच्छीरीति से दिखलाता युद्धमें मृदुताकेसाथ युद्ध करने लगा १५ जो अस्त्र बासुदेव जी से और अर्जुनसेलियेथे उनको अभिमन्यु ने प्रकट किया वहदोनोंअस्त्रभी श्रीकृष्णा और अर्जुनकेही समानथे १६ बारंबार उसबड़े बोझेको और भयको हटाते सहते बाणों को चढ़ाते और छोड़ते निर्बिशेष दिखाई पड़े १७ इसका धनुष मंडल दिशाओं में चलायमान होकर ऐसा

दिखाई दिया जैसेकि शरदऋतु में अत्यन्त प्रकाशमान सूर्य्य का मंडल होता है १८ उसको प्रत्यंचा का और नलका शब्द ऐसा भयकारी जान पड़ताथा जैसेकि बर्षाके समय बड़ी बिजली छोड़ने वाले बादलका शब्दहोताहै १९ महा नम्रतासे युक्त क्रोधसेअग्नि रूपमान करने वाला अपूर्व दर्शनीय अभिमन्यु बीरों को अच्छी रीतिसे प्रतिष्ठा करता बाणोंसे और अस्त्रोंसे युद्धको करके हे महाराज वह नम्र होकर भी फिरऐसा कठिन बर्त्तमान हुआ जैसे कि बर्षा ऋतु को उल्लंघन कर शरदऋतुमें भगवान् सूर्य्यदेवताप्रचंड होतेहैं २१ उस क्रोधाग्नि रूपने बिचित्र तीक्ष्ण धार सुनहरीपुंख वालेबाणोंको ऐसेछोड़ा जैसेकि सूर्य्यकिरणोंको छोड़ताहै २२ उस बड़े तरुण अवस्थावाले यशस्वीने क्षुरप्र, बत्सदन्त, बिपाट, नाराच अर्द्धचन्द्राकार भल्ल और अंजलिकों से भी २३ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के देखतेहुये रथवाली सेनाको आच्छादित करदिया उसके पीछे बाणोंसे पीड़ामान होकर वह सेनामुख फेरफेरकरभागी २४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मेरा चित्त भय औरप्रसन्नतासे दोप्रकार का होताहै जो अभिमन्युने मेरेपुत्रकी सेनाको अच्छी रीतिसे रोंका १ हे संजय फिर उस कुमारको सबक्रीड़ाको व्योरेसमेत मुझसेकहो जो कि असुरों के साथ स्वामकार्त्तिक जो की क्रीड़ाके समानथी २ संजयबोले कि बड़ेखेदकी बात है कि मैं इस भयकारी युद्धको उसी प्रकार से आपके आगे कहूंगा जैसे कि अकेलेएक का और बहुत से शूरबीरों का युद्ध हुआ ३ रथमें सवार बड़ासाहसी अभिमन्यु उन परस्परमें शत्रुओंके पराजय करनेवाले आपके सब रथियोंपर बर्षा करने वाला हुआ४ द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, शल्य, अश्वत्थामा, भोज, वृहद्वल, दुर्योधन, सोमदत्त, महाबली शकुनि ५ बहुत राजा और राजकुमार और नानाप्रकार के सेनाओं के मनुष्यों को उस

अलात चक्र अर्थात् बनेठी के समान घूमते हुये अभिमन्युने घायल किया ६ हे भरत बंशी वह प्रतापवान तेजस्वी अभिमन्यु परम अस्त्रोंसे शत्रुओंको मारता सब दिशाओंमें दिखाई दिया ७ उस बड़े तेजस्वी अभिमन्युके उस कर्मको देखकरआपकी हजारोंसेना भयभीत होकर कंपायमान हुई ८ इसके पीछे प्रसन्नतासे प्रफुल्लित नेत्र प्रतापवान महाज्ञानी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य शीघ्रहीकृपाचार्य्य को संबोधन करके यह बचन बोले ९ अर्थात् हे भरतर्षभ आपके पुत्रकेमर्मोंकेकंपायमान करनेवाले युद्धमेंकुशल अभिमन्युको युद्धभूमिमें देखकर यहबचन बोले १० यह सुभद्राकापुत्र अभिमन्यु व पांडवोंका प्रसिद्धयुवा सब सुहृदोंको और राजा युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव बांधव अन्य नातेदार और मध्यम स्नेही लोगोंसमेत अन्यसब सुहृदोंको प्रसन्न करताहुआ जाता है १२ मैं इसके समान अन्यकिसी धनुषधारीको नहीं मानताहूं यह जो चाहै तोइससेनाको भी मार सक्ताहै फिर किसनिमित्तइच्छा नहींकरताहै १३ आपका पुत्र द्रोणाचार्य्य के प्रीति संयुक्त बचनों को सुनकर और मंदमुसकान करताहुआ द्रोणाचार्य्य को देखके अर्जुनके पुत्रपर अत्यन्त क्रोध युक्तहुआ १४ और कर्णराजा बाह्लीक दुश्शासन और राजा भद्र और अन्य२ भी महारथियोंसे यह बचन बोला १५ कि यह ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ सब महाराजाओं का आचार्य्य अज्ञानी द्रोणाचार्य्य अर्जुनके पुत्रको नहीं मारना चाहताहै १६ हे मित्र इस आततायी के युद्धमें काल भी नहीं युद्ध करसक्ताहै फिर दूसराकौन मनुष्य लड़सक्ताहै यहमैं तुमसे सत्य२ हीकहताहूं १७ यह अर्जुनके पुत्रकी शिष्यता के कारणसे रक्षा करतेहैं शिष्य औरपुत्र बड़ेप्यारे होतेहैं वह धर्मात्मा पुरुषोंकी सन्तानहै १८ वहअहंकारी अज्ञानी द्रोणाचार्य्य से रक्षित अपने को पराक्रमी मानताहै इसको मर्दन करो बिलम्ब न करो १९ राजा करके इसप्रकार कहेहुये महाक्रोध रूप मारने को अभिलाषी वह सबलोग भारद्वाजजीके देखते अर्जुन के पुत्र अभिमन्युके सन्मुखगये तब कौरवोंमें श्रेष्ठ दुश्शासन दुर्य्यो-

धनके उस बचन को सुनकर दुर्य्योधनसे यह बचन बोला २१ हे-महाराज मैं तुमसे कहताहूं कि पांडवोंके और पांचालोंके देखतेमें ही इस सुभद्राके पुत्र अभिमन्युको ऐसे ग्रसूंगा जैसेकि सूर्य्य को राहुग्रस लेताहै यह बड़ी बातें करके दुर्य्योधनसे कहनेलगा २३कि वह दोनोंमुख्य श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सुभद्राके पुत्र अभिमन्युको मुझ से ग्रस्त हुआ सुनकर निस्सन्देह जीवलोक से प्रेतलोक को जायंगे २४ प्रत्यक्षहै कि वह दोनों इस अभिमन्यु को मृतकसुन-कर प्राणों को त्यागदेंगे और पांडुके क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले पुत्र अर्थात् पांडव सुहृदों के समूहों समेत एकही दिनमें नपुंसकता से जीवन को त्याग करेंगे इस हेतुसे इस शत्रुके मरने से आपके सब शत्रु मारे जायंगे हे राजा कल्याण पूर्व्वक मुझकोध्यान करो कि मैं आपके शत्रुओं को मारूंगा २६ हे राजा आपकापुत्र दुश्शासन इस प्रकार कह कर गर्जा और महा क्रोधित होकर बाणों की वर्षा से अभिमन्युको ढकता सन्मुख गया २७ फिरशत्रु बिजयी अभिमन्युने आपकेअत्यन्त क्रोध भरे पुत्रको आताहुआ देखकर छब्बीस तीक्ष्ण बाणों से घायल किया २८ फिर मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोध युक्त दुश्शासन युद्ध में अभिमन्युसे युद्ध करने लगा २९ रथ की शिक्षामें सावधान वह दोनों रथों करकेदायें बायें अपूर्व्व मंडलों को घूमते युद्ध करनेवाले हुये ३० इसकेपीछे मनुष्योंने पणव मृदंग दुन्दुभी क्रकच बड़ा खेल भेरी और झर्झर नाम बाजों के वह शब्द जो कि शंख और सिंहनादों के शब्दों से संयुक्तथे बजाये ३१॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्व्वणि एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे बाणों से घायलअंग बुद्धिमान अभि-मन्यु मन्द मुसकान करता उस सन्मुख नियत दुश्शासन शत्रु से बोला १ कि मैं प्रारब्धसे युद्ध में उस आयेहुये मानी शूर बीर को देखताहूं जो कि कठिन प्रकृति धर्मका त्यागने वाला और केवल

असभ्य बार्त्ताओंका करने वालाहै २ जो तुमने सभा में राजाधृतराष्ट्र के सुनतेहुये कठोर बचनों से धर्मराज युधिष्ठिरको क्रोधितकिया ३ और भीमसेनको भी तुझ बिजय से मदोन्मत्तने बहुत से कठोर और अयोग्य बचन कहे फिर शकुनिके छली पाशेके आश्रयी भूत होकर तुमनें अपने पराक्रम को प्रकट किया इसीहेतु करके उसमहात्मा के क्रोध से तुझको यह फल मिलाहै ४ दूसरेके धन कालेना क्रोध बिरोधता लोभ ज्ञानध्वंस शत्रुता अप्रिय भाषण ५ अथवा उग्र धनुषधारी मेरे पिता लोगों के राज्यका हरना इनसब पापोंकाफल उन सब महात्माओंके क्रोधसे तुझको प्राप्तहुआ है ६ हे दुर्बुद्धी तू उस अधर्मके महा भय कारी फलको प्राप्तकर अब मैं सब सेनाके देखतेहुये बाणों से तुझको दंड देने वालाहूं ७ मैं युद्धमें असहा होकर कृष्णाकी व्याकुलताके और अपने पिताके चित्तकी व्याकुलता के ऋणसे अऋण हुआ चाहताहूं ८ हे कौरव अब मैं युद्धमें भीमसेन के भी ऋणसे अऋण होने वालाहूं जो तू युद्धसे न भागेगा तोमुझ से युद्धमें जीवता न बचैगा ९ शत्रुओंके बीरोंके मारने वाले महाबाहु अभिमन्युने इस प्रकार से कह कर दुश्शासन के मारने वाले कालाग्नि और बायुके समान प्रकाशित बाणको धनुष पर चढ़ाया १० वह बाण शीघ्रही उस की छाती को पाकर जत्रुस्थान को घायल करके पुंखों समेत ऐसे समा गया जैसे कि बामी में सर्प समा जाता है ११ इसके पीछे भी अग्नि के स्पर्शके समान कानतक खैंचे हुये पच्चीस बाणों से उस को घायल किया १२ हे महा राज वह कठिन घायल और पीड़ामान दुश्शासन रथ के बैठने के स्थान पर बड़ा अचेत होकर बैठगया १३ फिर शीघ्रता करने वाला सारथी उस अभिमन्यु के पीड़ित किये हुये अचेत दुश्शासन को युद्धमेंसे दूर लेगया १४ इस के पीछे पांडव द्रौपदी के पुत्र राजा बिराट पांचालदेशी और केकयों ने उसको देखकरसिंहनाद किये १५ वहां पांडवों की सेनाके अत्यन्त प्रसन्न मनुष्योंने नाना प्रकार के रूपवाले बाजों को सब ओर से अच्छी रीति से

बजाया १६ और आश्चर्य्य करने वाले प्रति पक्षी लोगों ने अभिमन्यु के युद्ध कर्म को देखा और बड़े अहंकारी शत्रु को पराजित देख कर ध्वजाके शिर पर धर्म, बायु, इन्द्र, और अश्विनीकुमारों के स्वरूप १७ धारण करने वाले द्रौपदी के पुत्र महारथी सात्वकी, चेकितान, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी, १८ केकयदेशी, धृष्टकेतु, मत्स्यदेशी, पांचाल, संजय, और प्रसन्नता से युक्त युधिष्ठिर आदि पांडव शीघ्रता करने वाले द्रोणाचार्य्य की सेना के तोड़ने के अभिलाषी होकर सन्मुख दौड़े १६ इसके पीछे बिजयाभिलाषी मुख न मोड़ने वाले आपके शूर बीरोंका बड़ा भारी युद्ध उन शत्रुओं के साथ हुआ २० हे महाराज इस प्रकार उसअत्यन्त भयकारी युद्धके बर्त्तमान होने पर दुर्य्योधन कर्ण से यह बचन बोला २१ कि इस सूर्य्य के समान संतप्तकरने वाले युद्ध में शत्रुबर्गोंके मारनेवाले बीरदुश्शासनको अभिमन्यु के आधीनता में हुआ देखो २२ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सिंहके समान पराक्रमसे मतवाले बड़े सन्नद्ध यह पांडव अभिमन्यु की रक्षा करने को सन्मुख दौड़े २३ इसके अनन्तर आपके पुत्रका प्रिय करने वाला बड़ा क्रोध युक्त कर्ण अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उस कठिनता से सन्मुख होने के योग्य अभिमन्यु पर बर्षा करने वाला हुआ २४ शूर बीर कर्ण ने युद्ध भूमिमें बड़े उत्तम तीक्ष्ण बाणोंसे उस अभिमन्यु के साथ पीछे चलने वालोंको बड़े अनादर पूर्व्वक घायल किया २५ हे राजा द्रोणाचार्य्य कोचाहते बड़े साहसी अभिमन्यु ने तिहत्तर बाणों से बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक कर्णको घायल किया २६ इसीप्रकार रथों के समूहोंको पीड़ामान करते उस इन्द्रके पोते रथी अभिमन्यु को द्रोणाचार्य्य की ओर से कोई शूर बीर रोकने को समर्थ नहीं हुआ २७ तदनन्तर बिजयाभिलाषी सब धनुष धारियों में श्रेष्ठ कर्णने उत्तम अस्त्रोंको दिखलाकर सैकड़ों प्रकारसे अभिमन्यु को घायल किया २८ उस अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ परशुराम जी के शिष्य प्रतापी कर्ण ने युद्धमें अस्त्रोंकरके उस शत्रुओं से निर्भय अभिमन्यु को पीड़ामान किया २६ वह देवता

के समान इस प्रकार कर्ण के अस्त्रों की बर्षा से पीड़ामान भी अभिमन्यु व्याकुल नहीं हुआ ३० इस के पीछे अर्जुन के पुत्रने तीक्ष्ण और तीक्ष्ण गुप्त ग्रन्थी वाले भल्लोंसे शूर बीरोंके धनुषों को काट कर कर्ण को पीड़ामान किया ३१ और मन्द मुसकान करते अभिमन्युने धनुष मंडलसे छोंड़े हुये सर्पके बिषकी समान बाणों से शीघ्रही छत्र ध्वजा सारथी समेत उस कर्णको घायल किया ३२ कर्णने भी गुप्तग्रन्थी वाले बाणों को उसके ऊपर फेंका ३३ अर्जुन के निर्भय पुत्रने उन सबको सहा इसके पीछे पराक्रमी बीरने एक बाणसे कर्ण धनुष को ध्वजा समेत काटकर पृथ्वीपर गिराया ३४ इसके पीछे कर्णका छोटाभाई आपत्तिमें पड़ेहुये कर्ण को देखकर दृढ़धनुषको उठाकरशीघ्रही अभिमन्युके सन्मुखगया ३५ तब पांडव समेत उसके पीछे चलने वाले मनुष्य उच्चस्वरसे पुकारे और बाजोंको बजाय अभिमन्युको प्रसन्नकिया ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि चत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह अत्यन्त गर्जता और बारंबार प्रत्यंचा को खैंचता धनुष हाथमें लिये अभिमन्यु बड़ी शीघ्रता से उन दोनों महात्माओंके रथोंपर जाकरगिरा १ कि मन्दमुसकान करतेहुये उस कर्णके भाईनेबड़ी जल्दी करके दशबाणों से दुखसे सन्मुख होनेके योग्य अभिमन्युको छत्र ध्वजा सारथी और घोड़ों समेत घायल किया २आपके शूरबीर बाप दादोंके अमानुषी कर्मके करनेवाले अभिमन्युको बाणोंसे पीड़ामान देखकर प्रसन्नहुये ३ फिरमन्द मुसकान करते अभिमन्युने एकबाणसे उसके शिरको काटकर गिरायातब वहरथसे पृथ्वीपर गिरपड़ा ४ हेराजा कर्णनेबायुसे कंपित अथवा पर्व्वतसे गिरेहुये कर्णकार वृक्षके समान भाईको मृतक देखकर अत्यन्त पीड़ाकोपाया ५फिरसुभद्राकापुत्र अभिमन्यु कर्ण को अपनेबाणोंसे मुखफेरने वालाकरके शीघ्रही दूसरेबड़े धनुषधा-

रियोंकेभी सन्मुखगया ६ इसके पीछे बड़ेतेजस्वी महारथी क्रोधभरे अभिमन्यु ने उसबड़ी सेनाको जो कि हाथी घोड़े रथ और पतियों से संयुक्तथी घायलकिया ७ अभिमन्युके बहुत बाणों से पीड़ामान कर्ण शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा दूरचलागया उसकेपीछे सेना छिन्न भिन्न होगई८ हेराजा अभिमन्युके बाणोंसे ऐसे कुछनहीं जानागया जैसे कि टीड़ियोंसे व जलकी धाराओंसे व्याप्तहुये आकाशमें कुछ नहीं जानाजाताहै ९ फिर तीक्ष्णबाणोंसे घायल आपके शूरबीरोंमें राजा सिन्धके सिवाय कोईनियत नहींरहा १० हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र इसकेपीछे पुरुषोत्तम अभिमन्यु शंखबजाकर भरतवंशियों की सेना के ऊपर जापहुंचा ११ और सूखेबनमें प्रज्वलित अग्निके समान अपनेवेगसे शत्रुओंको भस्म करता वह अभिमन्यु सेनाओंके मध्यमें भ्रमण करनेलगा १२ रथ हाथी घोड़े और मनुष्योंको अपने तीक्ष्णबाणोंसे भस्मकरते उस अभिमन्युने प्रवेशकरके बिना शिर वाले रुण्डोंके समूहोंसे व्याप्तकरदिया १३ अभिमन्युके धनुष से प्रकटहुये उत्तम बाणोंसे घायल और जीवनकी इच्छा करनेवाले शूरबीर सन्मुखतामें वर्त्तमान अपनीही सेनाके मनुष्योंको मारतेहुये भागे १४ वहभयकारी दुखसे सहनेके योग्य कर्मकरने वाले विपाठ रथऔरघोड़ोंकोमारतेहुये शीघ्रही पृथ्वीमेंसमागये १५ स्वर्ण मयी भूषणों से अलंकृत शस्त्र अंगुलित्राण गदा और बाजबन्दोंकी रखनेवाली बहुत भुजायुद्धमें कटीहुई दिखाई देतीथीं १६ कुंडल मालाधारी शिर शरीर खड्ग धनुष और हजारोंबाण पृथ्वीपर गिरे हुये दिखाई पड़े १७ छत्रआदि रथके चक्र ईशादंड मुकुटअक्ष और मथेहुये चक्र और बहुत प्रकार से पड़ेयुग १८ शक्ति धनुष तलवार और गिरीहुई बड़ी २ ध्वजा ढाल धनुषबाण इन सबचारोंओर से फैलीहुई वस्तुओं से १९ और मरेहुये क्षत्रीघोड़े और हाथियोंसे पृथ्वीएक क्षणहीमेंकठिन दुर्गम्यरूप और भयकारीहुई २० परस्पर पुकारते और घायल होतेहुये राजपुत्रोंके बड़ेशब्द भयभीतोंकोभय बढ़ानेवाले प्रकट हुये २१ हे भरतर्षभ उसशब्द ने सबदिशाओंको

भीशब्दायमान करदिया और अभिमन्युउत्तम घोड़े रथ और हाथियोंको मारता सेनाकी ओरदौड़ा २२ हेभरतबंशी सूखेबनमें छोड़ेहुये अग्निकेसमान वेगसेशत्रुओंको भस्म करताहुआ अभिमन्युसेनाओं के भीतर दिखाईपड़ा २३ उस समय धूलसे सेनाव्याप्त होगईउस दशामें हमने सब दिशाविदिशाओंमें भी घूमते हुये अभिमन्यु को नहींदेखा२४हेराजा फिरहमने एकक्षणमेंही हाथी घोड़े औरमनुष्यों की अयुर्द्धाओं को आकर्षण करनेवाले उसअभिमन्यु को ऐसे देखा जैसेकि मध्याह्न के समय सूर्य्य होताहै २५ हे महाराज इस रीति से शत्रुओंके समूहोंको अत्यन्त संतप्त करतेहुये अभिमन्युको देखा वह इन्द्रका पोता युद्धमें इन्द्रके समान अभिमन्यु सेना में अत्यन्त शोभायमानहुआ २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले युधिष्ठिर की सेनासे कोई बलवान् उस बालक अत्यन्त सुखिया भुजबलसे अहंकारी युद्ध में कुशल बीर कुल को पुत्रशरीर कीप्रीती सेरहितऔरतीनबर्षकी अवस्थावाले उत्तमघोड़ों के द्वारा सेनाओं के मझाने वाले अभिमन्यु के पीछेआया १।२ संजयबोले युधिष्ठिर भीमसेन शिखंडी सात्यकी नकुलसहदेव धृष्टद्युम्न बिराट द्रुपद केकय ३ धृष्टकेतु क्रोधभरे मत्स्यदेशी युद्ध में समीप आये उसी मार्ग से उसके पिता मामाओं के साथचले ४ वह अलंकृत सेना और घायल करनेवाले अभिमन्यु को चाहने वाले सन्मुख दौड़े उन चढ़ाई करनेवाले शूरबीरों को देखकर आप के शूरबीर मुखफेर गये ५ इसके पीछे आपका तेजस्वीजमाई आप के पुत्रकी उसबड़ी सेनाको मुखफेरने वाली देखकर नियत कराने की इच्छासे दौड़ा ६ हेमहाराजसिन्धके राजाकेपुत्र उसराजा जयद्रथने आपने पुत्रको चाहने वाले पांडवोंको सेनाओं समेतरोंका ७ वह वार्द्धक्षत्र का पुत्र उग्र धनुष धारी और बज्रबाणप्रहारी दिव्य

अस्त्रोंको प्रकट करता ऐसे सन्मुख नियत हुआ जैसे कि चौराहेमें हाथी नियत होताहै ८ धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं सिन्ध के राजा परबड़ा भारनियत मानताहूं कि जिस अकेलेने उनक्रोध युक्त और पुत्रको चाहनेवाले पांडवोंको रोका ९ मैं सिन्धके राजामें अत्यन्त अपूर्व्व पराक्रम और शूरताको मानताहूं उस महात्मा के पराक्रम और उत्तमकर्मकोतुमतुझसेकहो १० इसनेऐसाक्याहोमदानऔरतप अच्छे प्रकार से कियाहै जिसके द्वाराअकेले राजा सिन्धने पांडवों को रोका ११ संजयबोले कि जोवह जयद्रथ द्रौपदी हरणमें भीमसेनसे बिजय कियागया उस बरके चाहनेवाले राजाने पूजनकरके बड़े तपको अच्छे प्रकारसे तपा १२ इन्द्रियोंको इन्द्रियों के प्यारे बिषयों से रोककर क्षुधा तृषा और तपके सहनेवाले बडेकृश शरीर केवल अस्थिमात्र शरीर १३ उस सनातन ब्रह्म देवता शिवजी को स्तुति करके जयद्रथने पूजाथा उसकेपीछे भक्तोंपर कृपा करनेवाले भगवान् शिवजीने उसपरदयाकी १४ और शयनके समयपर सिन्ध केपुत्रसे कहा कि हे जयद्रथ मैं प्रसन्नहूं क्या बर चाहता है उसको मांग १५ शिवजीके इसप्रकारके बचनको सुनकरसावधानचित्त और नम्रतासे हाथजोड़ सिंधके राजा जयद्रथने कहा १६ किमैं अकेलाही एकरथके द्वारायुद्धमें भयकारी बल पराक्रमवाले पांडवोंको रोकूंयह बरदानचाहता हूं १७ इसके इसबचनको सुनकरदेवताओंके ईश्वर शिवजी जयद्रथसेबोले किहेसौम्यमैं तुझको बर देताहूं कि सिवाय पांडव अर्जुनके १८ चारोंपांडवोंको युद्धमें रोकेगाफिर राजा जयद्रथ तथास्तुकहकर निद्रासेजागपड़ा १९ उसअकेलेने उसबरदान और दिव्य अस्त्रके प्रभाव सेपांडवोंकी सेनाको अच्छीरीतिसे रोका २० उसके धनुषकी प्रत्यंचाऔर तलके शब्दसे शत्रुक्षत्रियोंमेंभय प्रवृत्त हुआ और आपकीसेनाकोबड़ा आनन्दहुआ २१ हेराजा फिरक्षत्री लोगराजासिंधपर नियतहुये सबभारको देखकर बड़ासाहस करके उधर को दौड़ेजिधर की ओर राजा युधिष्ठिरकी सेना थी २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तेंतालीसवां अध्याय॥

संजयबोले कि हे राजेन्द्र जो तुम सिन्धके राजाके पराक्रम को पूछते हो और जैसे वह पांडवोंसे युद्धकरनेवाला हुआ उस सब को मैंकहताहूं तुमसुनो १ आज्ञाकारी और अच्छे लोगोंको सवार करानेवाले वायुके समान वेगवान् प्रसन्नतासे प्रफुल्लित मुख और शिरपरकेबाल सिन्धदेशी बड़े बड़े घोड़े उसकोलेचले २ जिसका बिधि पूर्व्वक गंधर्बनगरके समानरथ अलंकृत कियागया बाराहका चिह्न रखनेवाली महा प्रकाशित उसकी ध्वजा शोभायमानहुई ३ वह जयद्रथ श्वेत छत्र पताका और चमर व्यजनादिक राजाचिह्नों से ऐसा शोभायमानहुआ जैसेकि आकाश में तारा ओंका स्वामी चन्द्रमा शोभित होताहै ४ उसकावह लोहमयी कवच मोती हीरा मणि और सुबर्णसे जटित होकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि नक्षत्रादिकोंसे संयुक्त आकाश शोभितहोताहै ५ बड़ेधनुषको चलायमानकरके बाणोंके बहुत समूहोंको फैलाते उसने उस उस खण्डको पूर्णकिया जिस जिसको अभिमन्युने हटायाथा ६ उसने सात्यकी को तीनबाणसे भीमसेनको आठबाणसे धृष्टद्युम्नको साठि बाणोंसे बिराटको दशबाणोंसे७ द्रुपदको तीक्ष्ण पांचबाणों से शिखंडी को सातबाणोंसे केकयोंको पचीसबाणोंसे द्रौपदीके पुत्रोंको तीन तीन बाणोंसे ८ और युधिष्ठिरको सत्तरिबाणोंसे घायलकिया उसकेपीछे शेष बचेहुये शूरबीरोंकोबाणोंके बड़े जालोंसे जोपीड़ामान कियायह भी बड़ा आश्चर्यसाहुआ९ फिर हंसतेहुयेधर्मपुत्र प्रतापवान् राजा युधिष्ठिरने श्वेत और पीततायुक्तभल्लसे उसकेधनुषको लक्षबनाकर काटा १० उसनेएक निमिषहीमें दूसरे धनुषको लेकर दशबाणोंसे पांडवोंको औरतीन तीनबाणोंसे उन अन्यमनुष्योंकोघायलकिया११ भीमसेनने उसकी हस्तलाघवताको जानकर तीन२ भल्लोंसे उसके धनुष ध्वजा और छत्रको शीघ्रतासे पृथ्वीपर गिराया १२ हे श्रेष्ठ उस बलवान्ने दूसरे धनुष को तैयार करके भीमसेनकी ध्वजा

धनुष और घोड़ोंको गिराया १३ वह धनुष टूटा भीमसेन मृतक घोड़ेवाले उत्तम रथसे कूदकर सात्यकी के रथपर ऐसे सवार होगया जैसे कि केशरी सिंह पहाड़की चोटीपर चढ़जाता है १४ इसके पीछे आपके शूरबीर राजा सिन्धके उस श्रद्धाके योग्य अपूर्व्व कर्म को देखकर बहुत श्रेष्ठहै इस बचनको कहते अत्यन्त प्रसन्नहुये१५ जिस अकेलेने अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडवोंको अपने अस्त्रों के तेजसे रोका उसके उसकर्म की प्रशंसा सब जीवमात्रों ने करी १६ फिर अभिमन्युसे मारेहुये मार्गमें मरेहुये हाथियों से दिखलाया हुआ पांडवका मार्ग राजासिंधने रोका १७ और उपाय करनेवाले वह मत्स्य पांचाल केकय और बीर पांडव सन्मुख हुये परन्तु सिन्धके राजाको पराजय नहीं करसके १८ जो जोआपका शत्रु द्रोणाचार्य्यकी सेनाके तोड़नेका उपाय करताथा उस २ को बरपानेवाले राजा सिन्धने रोका १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चौवालीसवां अध्याय॥

संजयबोले कि राजासिंधसे बिजयाभिलाषी पांडवों के रुकजाने पर आपके शूरबीरोंका और शत्रुओंका महाघोर और भयकारी युद्धहुआ १ फिर सत्य संकल्प कठिनतासे सन्मुख होनेके योग्य तेजस्वी अभिमन्युने प्रवेश करके सेनाको ऐसेव्याकुल किया जैसे कि समुद्रको मगर भयभीत और व्याकुल करता है २ इस प्रकार बाणोंकी बर्षासे व्याकुल करने वाले शत्रुओंके बिजयी उस अभिमन्युके सन्मुख वह उत्तम रथी हुये जो कि प्रधान गिने जातेथे ३ बाणोंकी बर्षाके उत्पन्न करनेवाले बड़े तेजस्वी उनलोगों का और अभिमन्युका वह युद्ध बड़ामयकारी और कठिन जारीहुआ ४ उन शत्रुओंके रथोंसे इसप्रकार रुकेहुये अभिमन्यु ने वृषसेनके सारथी को मारकर धनुषको काटा ५ और इसी बलवान्ने सीधे चलने

वाले बाणोंसे उसके घोड़ोंकोभी अत्यन्त घायलकिया फिर वहउन भागनेवाले घोड़ोंकेद्वारा युद्धसे दूर हटाया गया अर्थात् अभिमन्यु केउस अन्तरसे सारथी रथको दूरलेगया इसकेपीछे रथके समूह प्रसन्न होकर पुकारे कि बहुत अच्छा बहुतअच्छा ६ । ७ फिर वशातीय उस सिंहके समान क्रोधी बाणोंसे शत्रुओंको मथनेवाले सन्मुखसे आतेहुये अभिमन्युके समीपआकर शीघ्रही सन्मुख गया ८ उसने सुनहरीपुंखवाले साठिबाणोंसे अभिमन्युको ढकदिया और यह बचन बोला कि मेरे जीवते तू इस युद्धमें बचकर जीवता नहीं छूटेगा ९ अभिमन्युने उसलोहेके कवचधारी बिशातपको दूरगिरनेवाले बाणसे हृदयपर घायलकिया तब वह निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा १० हे राजा तब मारनेके अभिलाषी अत्यन्त क्रोध भरे उत्तम क्षत्रियोंने उस मरेहुये विशातपको देखकर आपके पोते को चारों ओरसे घेरलिया ११ वह क्षत्री नानारूपवाले धनुषों को अनेक प्रकारसे चलानेवाले थे वह अभिमन्युका युद्ध शत्रुओं से महा भयकारी हुआ १२ फिर क्रोधयुक्त अभिमन्युने उनके बाण धनुष शरीर और कुंडल समेत मालाधारी शिरोंको काटा १३ तब खड्ग पट्टिश अंगुलित्राण और फरसों समेत कटीहुई सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत भुजा दिखाईपड़ीं १४ माला भूषण वस्त्र और पड़ी हुई बड़ी २ भुजा कवच ढाल हार मुकुट छत्र चामर १५ उपस्कर अधिष्ठान ईशादण्ड कवन्ध अक्ष टूटेहुये चक्र अनेक प्रकारके टूटेहुये जुए अनुकर्ष पताकासारथी घोड़े टूटेरथ और मृतक हाथियों से पृथ्वीव्याप्तहुई १६ । १७ नानाप्रकारके बिजयाभिलाषी देशाधिपति मरेहुये शूरबीर क्षत्रियोंसे संयुक्त पृथ्वी बड़ी भयानक बर्तमान होगई १८ उस क्रोधयुक्त युद्धको सब दिशा बिदिशाओंमें घूमते हुये अभिमन्युका रूप दृष्टिसे गुप्तहोगया १९ इसके कवच भूषण धनुष और बाणोंका जो २ अंग सुनहरीथा हमने उन सबोंमें से केवल उसीको देखा २० तब कोई पुरुषभी उसबाणों के द्वारा शूरबीरोंको आधीन करनेवाले अभिमन्युके देखनेको ऐसे समर्थ नहीं

हुआ जैसे कि मध्याह्न वर्ती सूर्य्यको कोई देखनेको समर्थ नहीं होताहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय

संजय बोलेकि अर्जुनका पुत्र शूरबीरोंकी आयुर्दाओंका ऐसे हरनेवाला हुआ जैसेकि समय आनेपर काल सब जीवोंके प्राणोंको हरलेताहै १ तब वह इन्द्रके समान पराक्रमी इन्द्रकापोता बलवान् अभिमन्यु सेनाको व्याकुल करता हुआ दिखाईदिया २ हेराजेन्द्र फिर राजाओंके कालरूप अभिमन्युने सेनामें प्रवेश करके सत्यश्रवसको ऐसे मारा जैसे कि गर्जताहुआ व्याघ्रमृगको मारताहै ३ सत्यश्रवसके मारनेपर शीघ्रता करनेवाले महारथी बड़े शस्त्रोंको लेकर अभिमन्युके सन्मुखगये ४ ईर्षा करनेवाले उत्तम क्षत्री पहिले मैं पहिले मैं इस वचन के कहनेवाले अर्जुनके पुत्रको मारनेके अभिलाषी होकर सन्मुखगये ५ अभिमन्यु ने उन चलती और सन्मुख दौड़ती हुई क्षत्रियोंकी सेनाको ऐसे आपने स्वाधीन किया जैसे कि समुद्रकेमध्यमें तिमि नाम जलजन्तु छोटी२ मछलियोंको पाकर अ ने स्वाधीन करताहै ६ जो कोई मुख न मोड़नेवाले क्षत्री उसके सन्मुख गये वह फिरकर अर्थात् लौटकर ऐसे नहींआये जैसे कि सिन्ध नदी समुद्रसे लौटकर नहीं आती ७ समुद्रमें बड़ेग्राहसे पकड़े और वायुके बेगसे पीड़ामान डूबे हुये जहाजके समान वहसेना कंपायमानहुई ८ इसकेपीछे रुक्मरथ नाम मद्रदेशकेराजाकेपुत्रनेउस भयातुरसेनाको विश्वास कराया और यहबचन बोला ९ हेशूरबीरो तुमभय मतकरो मेरे विद्यमान और नियतहोनेपर यह कुछनहींहै मैं इसकोनिस्सन्देहजीवताहुआही पकड़ूंगा १० वहपराक्रमी इसप्रकारकहकर बड़ेसुन्दर अलंकृतशोभितरथपर सवार अभिमन्युके सन्मुखगया ११ और अभिमन्युको तीनबाणोंसेछातीपर और तीन२बाणोंसे दाहिनी और बाईं भुजाघायल करके बड़े शब्दसे गर्जा १२ उसअर्जुनके पुत्रनेउसके

धनुषकोकाटकरदाहिनी बाईंभुजाओंको और सुन्दरनेत्र औरभृकुटी रखनेवालेशिरकोशीघ्रही पृथ्वीपर गिराया १३ अभिमन्युको जीवता हुआपकड़नेके अभिलाषी शल्यके प्यारे रुक्म रथपुत्रको यशस्वी अभिमन्युके हाथसे मराहुआ देखकर १४ युद्धदुर्मद प्रहार करनेवाले रुक्मरथके समान अवस्था सुनहरी ध्वजा रखनेवाले १५ महाबली तालवृक्षके समान बारंबार धनुषोंको खैंच तेजकुमारोंने बाणोंकी बर्षासे अर्जुनके पुत्रको चारोंओरसे रोंका १६ पराक्रम और शिक्षा से युक्त तरुणअवस्थावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त शूरोंसे युद्धमें उसअकेलेशूर अजेय अभिमन्युको१७बाणोंके समूहोंसे ढकाहुआ देखकर दुर्योधन बड़ा प्रसन्नहुआ और उसको यमराजके भवनमें गयाहुआ माना १८ उन राजकुमारोंने एकनिमिषमेंही अर्जुनके पुत्रको सुनहरी पुंखवाले अनेक चिह्नधारी सुन्दर बेतरखनेवाले बाणोंकेद्वारा दृष्टिसे अगोचर करदिया १९ हेश्रेष्ठ हमने उसके उसरथ को सारथी घोड़े और ध्वजासमेत छिपाहुआ टीड़ियोंसे व्याप्तके समान देखा २० जैसेकि चाबकोंसे पीड़ामान हाथीहोताहै उसीप्रकार अत्यन्त घायल और पीड़ामान महाक्रोध युक्तउस अभिमन्युने गन्धर्वअस्त्रों समेत बहुतसी मायाओंको प्रकटकिया २१ अर्जुनने तपस्याओं को करके तुंबुरु आदिक गंधर्वोंसे जो अस्त्रलिये उन्हींमेंसे एक अस्त्र करके उन शत्रुओंको इसनेभी अचेतकरदिया २२ हेराजा वह युद्ध में शीघ्रही अस्त्रोंको दिखलाता हुआ बनेटीके समान एकप्रकार दो प्रकार और अनेकों प्रकारोंसे दिखाईदिया २३ फिर उस शत्रुसंतापीने रथ और अस्त्रोंके भ्रमण चक्रकी मायासे सबको अचेत करके उन राजाओंके शरीरोंको सौ २ प्रकारसे काटा २४ हेराजा युद्धमें तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे भेजेहुये राजाओं के प्राणों ने परलोक कोपाया और मृतकशरीर पृथ्वीपर गिरपड़े २५ अर्जुनके पुत्रने तीक्ष्ण शरोंसे उनसबके धनुष घोड़ेसारथी ध्वजा और बाजूबन्दों समेत भुजाओं समेत शिरोंकोकाटा २६ जैसे कि पांचवर्षका लगाहुआ आंबोंका फलवान् बागकाटाजाताहै इसीप्रकार अभिमन्यु

के हाथसे राजकुमारोंका एकसौ मनुष्योंका समूहगिराया गया २७ क्रोधयुक्त सर्पोंके समान सुकुमार सुखके योग्य राजकुमारोंको अकेले अभिमन्युके हाथसे मराहुआ देखकर दुर्योधन बड़ाभयभीत हुआ २८ और अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर दुर्योधन रथहाथी घोड़े और पदातियोंकेमर्द्दन करनेवाले उसअभिमन्युको देखकर शीघ्रहीसन्मुखआया२९ एक क्षणभरतक तो उनदोनोंका बड़ाकठिन युद्ध हुआ उसकेपीछे सैकड़ोंबाणोंसे घायल आपका पुत्र मुखफेरगया ३०॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेसूत तू जिसप्रकार एककाबहुतोंके साथ कठिन और भयकारी युद्धको और उसी महात्मा की बिजय को जैसे मुझसे कहता है १ अभिमन्युका पराक्रम श्रद्धाकेअयोग्य अद्भुत है फिर क्या उन्होंका पराक्रम अत्यन्त अपूर्व्व नहीं है जिन्होंका कि रक्षाश्रयधर्म है २ और दुर्य्योधन के मुख फेरने और राजकुमारोंका सैकड़ा मरने पर मेरे शूरबीरों ने अभिमन्यु के बिषय में किस कर्मके ज्ञान को पाया ३ संजयबोले कि अत्यन्त शुष्क मुख चलायमान अर्थात् भैंचक नेत्र प्रस्वेदोंसे युक्त रोमांच खड़े भागने में प्रवृत्त चित्त शत्रुकी बिजय में असाहसी वह आपके शूरबीर ४ मरे हुये पिता भाई बेटे मित्र नातेदार और बान्धवों को छोड़ २ अपने२ घोड़े हाथी आदिको शीघ्रतासे चलातेहुये हट गये ५ उन सबको उस प्रकार से अलग २ हुआ देख कर द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा वृहद्बल कृपाचार्य्य दुर्य्योधन कर्ण कृतबर्मा शकुनि ६ यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उस अजेय अभिमन्युके सन्मुख दौड़े हे राजा फिर वह भी आपके पौत्रसे मुखों को मोड़ गये ७ सुखसे पोषण किया हुआ बालकपने में अहंकार से निर्भय बाण अस्त्रोंका ज्ञाता बड़ा तेजस्वी लक्ष्मण अकेलाही अभिमन्यु के सन्मुखगया ८ और उसका पिता पुत्रको चाहता हुआ उसके पीछे चलने

वाला होकर फिर लौटा और दुर्य्योधन के पीछे दूसरे महारथी भी लौटे ९ उन्होंने उसको बाणों से ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धाराओंसे बादल पर्व्वत को सिंचन करता है फिर उस अकेलेने उनको ऐसे अत्यन्त मर्द्दन किया जैसे कि बायु संसारी बादलों को मर्द्दन करताहै १० अर्जुनके पुत्र अभिमन्युने उस निर्भय प्रिय दर्शनीय पिताके सन्मुख बर्त्तमान शूरबीर ऊंचा धनुष करनेवाले बड़े सुख पूर्व्वक लालन किये हुये कुबेर के पुत्रकी समान आपके पौत्र लक्ष्मणको युद्धमें सन्मुख पाया ११।१२ शत्रुओं के बीरोंके मारनेवाले अभिमन्युने लक्ष्मण से भिड़कर अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले तीव्र बाणों से छाती और भुजाओं पर घायल किया १३ हे महाराज अत्यन्त घायल सर्पके समान क्रोधयुक्त आपकापोता आपके दूसरे पोतेसे बोला १४ कि लोकका दर्शन अच्छी रीतिसे करो परलोकको जावोगे मैं तुमको सब बांधवोंके देखते हुये यमलोक में पहुंचाताहूं १५ शत्रुओंके बीरों के मारनेवाले महाबाहु अभिमन्यु ने इस प्रकार कहकर कांचली से रहित सर्प के समान भल्ल को हाथमें लिया १६ उसकी भुजा से छूटे हुये उस भल्लने उस लक्ष्मण के शिरको जो कि सुन्दर नाक केशान्त और कुंडलोंसे शोभितथा काटकर गिराया १७ सेना के लोग लक्ष्मण को मरा हुआ देखकर हाय हाय पुकारे इसके पीछे पुत्रके मरनेसे क्रोध युक्त क्षत्रियों में श्रेष्ठ दुर्य्योधन १८ क्षत्रियों को पुकारा कि इसको मारो इसके पीछे द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण अश्वत्थामा वृहद्बल १९ हार्दिक्य का पुत्र कृतबर्मा इन छः रथियोंने अभिमन्युको चारों ओर से घेर लिया अर्जुन का पुत्र उनकोभी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे मुखके फेरने वाला करके २० क्रोध युक्त होकर सिंधके राजाकी सेनापर दौड़ा कलिंग निषाद और क्राथके पराक्रमी पुत्र हाथियों की सेनासे अलंकृत इन सबने उस अभिमन्युके मार्ग को रोकाहे राजा वह युद्ध भी बड़ा कठिन हुआ २१। २२ इसके पीछे क्राथने बाणों के समूहों से अभिमन्यु को बहुत अच्छा ढका उसके पीछे

द्रोणाचार्य्य आदिक अन्य सब रथी भी फिर लौटे २३। २४ और परम अस्त्रों को चलाते हुये अभिमन्युके सन्मुख गये अभिमन्युने बाण से उनको हटाकर फिर क्राथके पुत्रको पीड़ामान किया २५ शीघ्रता करनेवाले अभिमन्युने मारने को इच्छा से धनुष बाण और केयूर नाम भूषणों समेत उसकी दोनोंभुजा और मुकुट समेत शिरको २६ और छत्र ध्वजा और सारथी समेत रथको और घोड़ों को गिराया कुलवान् प्रिय भाषी वेदज्ञ पराक्रमी कीर्त्ति और अस्त्र बलसे संयुक्त उस बीरके मरने पर दूसरे बहुधा शूरबीर लोग मुखोंको फेर गये २७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि इस प्रकार सेनामें प्रबिष्ट तरुण अवस्था वाले अजेय सुभद्राके पुत्रनकुलके समान कर्मकरनेवाले कभीयुद्धों में पराजय नहोनेवाले १ अच्छे पराक्रमी छःबर्षके अवस्थावाले आजानेयजातिके घोड़ों से संयुक्त और आकाशमें चेष्टा करनेवालेके समान अभिमन्युको किनशूरोंने रोका २ संजय बोलेकिपाण्डव नन्दनअभिमन्युने सेनामें प्रवेशकरके इनआपके सबशूरबीर राजाओंके मुखोंको फेरदिया ३ फिर द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण अश्वत्थामा बृहद्बलहार्दिक्यका पुत्र कृतबर्मा इन छवोंरथियोंनेउस कोचारोंओरसे घेरलिया ४ हे महाराज फिरआपकी सेनाके लोग राजासिंधकेऊपर बड़ेभारी बोझेको देखकर युधिष्ठिरके सन्मुख दौड़े ५ और दूसरे महाबली शूरबीर तालवृक्षके समान बड़े २ धनुषोंको खैंचते हुये बाणरूपी जालोंसे अभिमन्युके ऊपर बर्षा करनेलगे६ शत्रुओंके बीरों के मारने वाले अभिमन्युने युद्धमें बाणोंसे इनसब बड़े२धनुषधारी और सब बिद्याओं में पूर्ण लोगोंको रोका ७ द्रोणाचार्य्य को पचासबाणों से बृहद्बलको बीस बाणोंसे कृतबर्माको अस्सीबाणोंसे और कृपाचार्य्य को साठ बाणों से घायल किया ८ अर्जुन के पुत्रने सुनहरी पुंख

वाले बड़े बेगवान् कान तक खिंचे हुये दशबाणों से अश्वत्थामा को घायल किया ९ और पीतरंग के तीक्ष्ण उत्तम बाणों से शत्रुओं के मध्यमें कर्णको कानके ऊपर घायल किया १० फिर कृपाचार्य्य के घोड़ों को और दोनों ओरके रक्षकों समेत सारथी को गिराकर उनकोभी दशबाणों करके छातीपर घायल किया ११ इसकेअनन्तर उस बलवान्ने आपके शूरबीर पुत्रोंके देखते हुये कौरवोंके कीर्त्ति बढ़ानेवाले बीर वृन्दारक को मारा १२ अश्वत्थामाने उस निर्भय के समान उत्तम २ शत्रुओं के पीड़ा देनेवाले अभिमन्यु को क्षुद्रक नाम पच्चीस बाणोंसे घायल किया १३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर उस अभिमन्यु ने आपके पुत्रोंके समक्षमें अश्वत्थामा को शीघ्रही तीक्ष्ण बाणों से घायल किया १४ अश्वत्थामाने तीक्ष्णधार और उत्तम बेत रखने वाले साठि बाणोंसे उसको घायल करके ऐसे कंपित नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्व्वतको कंपित नहीं करसक्ते १५ उसबड़े तेजस्वी बलवान्ने सुनहरी पुंखऔर सीधे चलनेवाले तिहत्तरि बाणों से अप्रिय करनेवाले अश्वत्थामाको घायल किया १६ फिरपुत्रको चाहने वाले द्रोणाचार्य्य ने उसपर सौ बाण गिराये इसी प्रकार पिताके चाहने वाले अश्वत्थामाने युद्ध में आठबाण मारे कर्णने बाईस भल्लोंको कृतबर्माने बीसबाणों को वृहद्बलने पचासबाणोंको और शारद्वत कृपाचार्य्यने दशबाणोंको मारा १७।१८ सब ओरसे उनके तीक्ष्ण बाणोंसे पीड़ामान अभिमन्युने उन सबको दश २ बाणों से घायल किया १९ कौशिल देशियों के राजाने उसको करणीनाम बाणसे हृदयमें घायल किया उसने उसके घोड़े ध्वजा धनुष और सारथी को पृथ्वीपर गिराया २० फिर रथसे रहितढाल तलवार रखनेवाले राजा कौशिलने अभिमन्यु के शरीरसे कुंडल-धारी शिरको काटना चाहा २१ उसने कौशिल देशियोंके स्वामी राजपुत्र वृहद्बलको बाणों से हृदय पर घायलकिया और हृदयमें घायल होकर पृथ्वीमें गिरपड़ा २२ अयोग्य और अशुभ बचनोंको बोलते महात्माने खड्ग धनुषधारी राजाओं के दशहजार यूथको

छिन्नभिन्न किया २३ इसरीतिसे वृहद्वलको मारकर सुभद्राकापुत्र युद्धमेंघूमनेलगा और उसीदशामें बड़ेधनुषसेआपके शूरबीरोंकोबाण रूपजालोंकी वर्षासेरोका २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अरतालीसवां अध्याय ॥

संजयबोलेकि उसअर्जुनके पुत्रनेकरणीनाम बाणसेकर्णको फिर घायलकिया और अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर उसने पचासबाणसेफिर घायलकिया १ तबकर्णने भी उतनेही बाणोंसे उसको घायलकिया हे भरतबंशी उन बाणोंसे संयुक्त सबशरीर के अंगोंसमेत वहअभिमन्यु बहुतही शोभायमान हुआ २ फिरउस क्रोधयुक्त अभिमन्युने कर्ण कोभी रुधिरकी वेदनाओं से युक्त करदिया ३ और बाणों से जटित और रुधिरसे लिप्त वह दोनों महात्मा फूलेहुये किंशुक वृक्ष के ससान शोभायमान हुये ४ इसके पीछे अभिमन्युने कर्ण के छः मंत्रियों को जोकि बड़ेशूर और उत्तम युद्धके करने वालेथे घोड़े सारथीरथ और ध्वजाके समेत मारा ५ इसी प्रकार निर्भय अभिमन्युने दश २ बाणोंसे अन्य २ धनुषधारियों को घायल किया वह आश्चर्य्यसा हुआ ६ इसी प्रकार छः बाणों से राजा मगध के तरुण पुत्र अश्वकेतु को घोड़े और सारथी समेत मारकर गिराया ७ इसके पीछे ध्वजामें हाथीका चिह्न रखने वाले राजामार्त्तिकावर्तिकभोज नामको क्षुरप्रसे मथकर बाणोंको छोड़ता हुआ गर्जा ८ दुश्शासन के पुत्रने चारबाणों से उसकेचारों घोड़ों को घायलकरकेएक बाणसे सारथी और दश बाणों से अभिमन्यु को घायल किया ९ इसके पीछे अभिमन्यु सात बाणों से दुश्शासन के पुत्रको घायल करके क्रोधसे रक्तनेत्र उच्चस्वर से इस बचन को बोला १० तेरापिता नपुंसक के समान युद्धको त्याग करके गया तूभी प्रारब्ध से युद्ध करना जानता है अब नहीं बचसक्ता है ११ इतना बचन कहकर कारीगरके साफ कियेहुये नाराच को

उस पर छोड़ा तब अश्वत्थामाने उसको तीन बाणों से काटा १२ अभिमन्युने उसकी ध्वजाको काटकर तीनबाणोंसेशल्यको घायल किया शल्यने नव बाणों से उसको घायल किया १३ अर्थात् निर्भय के समान हृदय पर घायल किया हे राजा यह भी आश्चर्य्यसा हुआ अर्जुन के पुत्रने उसकी ध्वजा को काट दोनों ओरके रक्षकों को संहार कर १४ उसको छः लोहेके बाणों से घायल किया वह दूसरे रथ में सवार हुआ शत्रुंजय चन्द्रकेतु मेघवेग सुवर्चस १५ सूर्य्यभास इन पांचों को मारकर शकुनी को घायल किया शकुनी तीनबाणों से घायल करके दुर्योधन से बोला १६ हमसब मिलकर इसको मथन करैं क्योंकि यह हम एक एकको मारता है फिर सूर्य्य का पुत्र कर्ण युद्धमें द्रोणाचार्य्य से बोला १७ कि यह पहलेही से हम सब को मथन करता है इसके मारने को शीघ्र हमसे कहौ इसके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्यजी उन सबसे बोले कि १८ इस कुमारका कुछ छिद्रही देखो अब सबदिशाओं में घूमते हुये इसका छोटाहीसा छिद्र है १९ इस नरोत्तम पांडवके पुत्रके उस छिद्रको शीघ्रतासे देखो इसका धनुष मंडलही रथके मार्गोंमें दिखाई पड़ताहै २० जोकि बिशेष नाम बाणोंको धनुषपर चढ़ा २कर शीघ्रता से छोड़ने वाला है फिर यह शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला अभिमन्यु शायकों से मेरेप्राणोंको पीड़ित और मोहित करता हुआ मुझ को अत्यन्त प्रसन्न करता है अर्थात् यहशत्रुओंके बीरोंका मारनेवालाअभिमन्यु मुझको अत्यन्त प्रसन्नकरताहै २१।२२ क्रोधयुक्तमहारथी इस हस्तलाघव और बड़े तीक्ष्णबाणोंसे सबदिशाओंको चलायमान करतेहुयेभी अभिमन्युके अन्तर अर्थात् छिद्रको नहीं देखतेहैं २३ मैं युद्धमेंगांडीवधनुष धारी कीभी ऐसी मुख्यताको नहीं देखताहूं अर्थात् अर्जुन और अभिमन्यु में कुछ अन्तर नहींहै इसके पीछे अभिमन्युके बाणोंसे घायलहुआ कर्ण फिर द्रोणाचार्य्यसे बोला २४ नियतहोना योग्यही है इसी हेतुसे कि अभिमन्युसेपीड़ामानहोकर भीमैं युद्धमें नियतहूं इसकुमार

के बाणबड़े भयकारी हैं २५ अब अग्निकी समान प्रकाशित भयकारी उसके बाणमेरे हृदयको पीड़ादेतेहैं यहसुनकर हंसतेहुये आचार्य्यजी उसकर्णसे बोलेकि २६ इसका कवच अभेद्यहै अर्थात्टूट नहीं सक्ताहै और युवापुरुष शीघ्रतासे पराक्रम करनेवाला है मैंने इसके पिताको कवचका धारण करना सिखलायाहै २७ यहशत्रुके पुरका विजय करने वाला अभिमन्यु निश्चय करके उससबको जानताहै इसका धनुष और प्रत्यंचा अच्छीरीति से चलायेहुये बाणोंसे काटना संभवहै २८ इसीप्रकार लगाम घोड़े पृष्ठरक्षक और सारथीकाभी मारना संभवहै हेबड़े धनुषधारी कर्णतुम जोसमर्थ होतो यहीकरो २९ इसकेपीछे उसको मुख फिरवाके प्रहारकरो धनुषका रखनेवाला यह देवता और असुरोंसेभी विजय करना संभवनहींहै ३० जो तुम चाहतेहोतो इसका रथ और धनुषसेरहित करो सूर्य्यके पुत्रकर्णने आचार्य्यजीके उस बचनको सुनकर शीघ्रतासे ३१ उस हस्तलाघव और धनुष खैंचनेवालेके धनुषकोप्रस्तक बाणोंसे काटा भोजने उसके घोड़ों कोमारा और कृपाचार्य्यने पृष्ठ रक्षक समेत सारथीको मारा ३२ फिरशीघ्रता करनेवाले बाकीछः महारथियोंने उस टूटे धनुष और विरथको बाणोंकी बर्षाओं से ढकदिया ३३ उन निर्दयलोगोंने बाणोंकी बर्षासे अकेले बालकको ढकदिया वह टूटे धनुष रथसे बिहीन ढालतलवारका रखनेवाला श्रीमान् अभिमन्यु अपने धर्मको पालनकर्त्ता आकाशसेगिरा और कौशिक आदिक मार्गोंसे और हस्तलाघवता पूर्व्वक पराक्रमसे ३४।३५ ऐसे अत्यन्त घूमनेलगा जैसे कि पक्षियोंका राजा गरुड़ भ्रमण करता है आकाशमें खड्ग हाथमेंलिये प्रत्येककोऐसा बिदितहुआ कि यह मेरेही ऊपर गिरताहै इस हेतुसे ऊपरको दृष्टि रखने वाले ३६ युद्धमें छिद्र देखनेवाले शूरबीरोंने उस बड़े धनुषधारीको पीड़ामान किया द्रोणाचार्य्यने उसकी मुष्टिकासमेत मणिजटित खड्गको काटा ३७ अर्थात् शत्रुके बिजय करनेवाले और शीघ्रता करनेवाले बड़ेतेजस्वी द्रोणाचार्य्यने उसकी खड्ग संयुक्त

मुष्टिकाको क्षुरप्र सेकाटा कर्णने उसकी उत्तम ढालको तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे तोड़ा तलवार और ढालके टूटनेपर बाणोंसे भराहुआ शरीर वह अभिमन्यु फिर अन्तरिक्ष से पृथ्वीपर नियत हुआ और क्रोधसेभराहुआ,रथकेचक्रको उठाकर द्रोणाचार्य्यकेसन्मुखदौड़ा ३९ अत्यन्त उज्ज्वलचक्रकोहाथमें रखनेवाला भ्रमणसे उत्पन्नउज्ज्वल धूलिसे शोभायमान शरीरवाला वह अभिमन्यु प्रकाशमान हुआ और बासुदेवजी के समान कर्मकोकरता युद्धमें एक क्षणभर को तो रुद्ररूप हुआ ४० गिरे हुये रुधिरसे रंगेहुये सब वस्त्र और भृकुटी पुटोंसे अत्यन्त व्याकुल बड़े सिंहनादों का करने वाला समर्थ अतुल पराक्रमी अभिमन्यु युद्धमें उत्तम राजाओं के मध्यमें बर्त्तमान होकर अत्यन्त शोभायमान हुआ ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय॥

संजय बोले कि बिष्णु की भगिनी को प्रसन्नता का उत्पन्न करने वाला बिष्णुजीकेही शस्त्रोंसे अलंकृत दूसरे श्रीकृष्णके समान अतिरथी अभिमन्यु युद्धमें शोभाय मान हुआ १ उस बायु से गिरे हुये के शान्त उत्तम शस्त्रों के उठाने वाले देवताओं से भी दुःखसे देखने के योग्य शरीरको देखकर २ व्याकुल चित्त वाले राजाओं ने उस चक्रको अनेक प्रकारसे काटा इसके पीछे उस महारथी अभिमन्यु ने बड़ी भारी गदाको लिया ३ उन शत्रुओं से धनुष रथ खड्ग और चक्रसे रहित किये हुये गदा हाथमेंलिये अभिमन्यु ने अश्वत्थामा को पीड़ामान किया ४ वह नरोत्तम अश्वत्थामा जी बज्रके समान प्रकाशित उठाये हुये गदा को देखकर रथके बैठने के स्थान से तीन चरण हटगये ५ अभिमन्यु गदा से उस के घोड़ों को मारकर उसके पृष्ठ रक्षकसमेत सारथीको मारता हुआ बाणों से भरा हुआ घायल शरीर वाला दिखाई पड़ा ६ उसके पीछे सौबलके पुत्रकालिकेय कोमारा और उसके अनुगामी

सतत्तरि गान्धार देशियों को भी मारा ७ फिर दशरथी बिशातय लोगोंको मारा और केकयों की सातरथ और दश हाथियों को मार कर ८ गदासे दुश्शास न के पुत्र के रथको घोड़ों समेत मारा हेश्रेष्ठ इसके पीछे क्रोधयुक्त दुश्शासनकापुत्र गदा को उठाकर ९ अभिमन्यु के सन्मुख जाकर तिष्ठ २ इस बचनको बोला वह गदा धारी बीर परस्पर में मारने को अभिलाषी दोनों शत्रु ऐसे प्रहार कर्त्ता हुये जैसे कि पूर्व्व समय में त्र्यंबक और अन्धक युद्ध करने वालेहुये थे वह दोनों पुरुषोत्तम गदाओंसे परस्परमें प्रहार करके पृथ्वीपर गिर पड़े ११ शत्रुओंके तपाने वाले वह दोनों युद्ध के बीच में पड़ेहुये इन्द्र ध्वजाके समान दिखाईदिये इसके पीछे कौरवों की कीर्त्ति के बढ़ानेवाले दुश्शासनके पुत्रनेउठकर १२ उठतेहुये अभिमन्युको गदासे मस्तक पर घायल किया गदाके बड़ेवेग और परिश्रमसे अचेत १३ शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला अभिमन्यु निश्चेष्ट होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजा इसप्रकार वह अकेलाही बहुत से शूरबीरोंसे युद्धमें मारागया १४ जैसेकि हाथी नलनीको छिन्न भिन्न करतेहैं उसी प्रकार सबसेनाको व्याकुल करके वह मराहुआ बीर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि व्याधाओं करके माराहुआजंगलीहाथी होताहै १५ उस प्रकार गिरेहुये उस शूरबीरको आपके बीरोंने चारों ओरसे ऐसे घेरलिया जैसे कि शिशिरऋतु में अर्थात् माघफाल्गुनके अन्तमें बनको भस्म करके शान्तहुई अग्निको घेर लेतेहैं १६ वृक्षकी शाखाओंको मर्द्दनकरके लौटेहुये वायुकेसमान भरत बंशियोंकी सेनाको तपाकरअस्त हुये सूर्य्यके समान अथवा ग्रसेहुये चन्द्रमाके सदृश सूखेसमुद्र के तुल्य पूर्णचन्द्रमाके समान मुख वाले बालोंसे संयुक्त नेत्र १८ उस अभिमन्युको पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर वह आपके महारथी बड़े आनन्दमें भरेहुये सिंहके समान बारंबार गर्जे १९ हे राजा आपके पुत्रोंको बड़ा आनन्दहुआ और दूसरे शत्रुओंके नेत्रों से अश्रुपात गिरे २० हे-राजा आकाश से गिरे हुये चन्द्रमाके समान पड़ेहुये बीर अभि-

मन्युको देखकर पृथ्वी और आकाशके मध्यमें सब जीव पुकारे २१ कि द्रोण कर्ण आदिक छःरथियों के साथ धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रोंसे माराहुआ यह अकेलाअभिमन्यु सोताहै हमने इसकेमारने में धर्म नहीं माना किन्तु इन सबने इसको अधर्म से माराहै २२ इसबीरके मारनेपर पृथ्वीऐसी अत्यन्त शोभायमानहुई जिसप्रकार नक्षत्र मंडलका रखनेवाला आकाश सूर्य्य और चन्द्रमा से शोभाय मानहोताहै २३ सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे पूर्ण अत्यन्त रुधिर से भरेहुये और शूरबीरोंके शोभादेनेवाले कुंडल धारी शिरों से पृथ्वी शोभायमान हुई २४ विचित्र प्रस्तों में और पताकाओं से संयुक्त चामरझूलें और खंडित उत्तम चमर २५ घोड़ेमनुष्य और हाथियों अच्छे प्रकाशित भूषणोंसे और कांचली से निकले हुये सर्पोंके समान बिषसे बुझायेहुये तीक्ष्णधार खड्ग कटे हुये नानाप्रकार के धनुष शक्ति दुधारे, खड्ग, प्रास, कम्पन और अन्य २ प्रकार के नानाशस्त्रोंसे संयुक्त होकर पृथ्वी शोभायमान हुई २७ अभिम-न्युसे गिरायेहुये श्वाशोंको लेते रुधिरसे भरेहुये सवारों से रहित निर्जीव घोड़ोंसे भी पृथ्वी दुर्गम्य होगई २८ बहुमूल्य अंकुशकवच शस्त्र ध्वजा और बिशिखनाम बाणों से मथेहुये पर्व्वताकार हा-थियों से २९ घोड़े सारथियों समेत पृथ्वीपर गिरेहुये शूरबीरों से व ह्रदोंके समान क्षुभित मरेहुये उत्तमहाथियोंसे ३० नानाप्रकार से शस्त्रोंसे अलंकृत मरेपदातियों के समूहों से पृथ्वी भयभीतों के भयों की उत्पन्न करनेवाली भयानक रूप की होगई ३१ चन्द्रमा और सूर्य्यके समान प्रकाशमान उस अभिमन्युको देखकरआप के शूर बीरोंको बड़ा आनन्द और पांडवोंको बड़ा खेदहुआ ३२ हे राजा उस बालक और तरुणता न पानेवाले अभिमन्यु के मरनेपर सबसेना धर्मराज के देखतेहुये भागी ३३ अजात शत्रु युधिष्ठिर उस अभिमन्युके गिराने पर सेनाको छिन्न भिन्न देखकर उनबीरों से यह बचन बोले ३४ कि यह शूर स्वर्गको गया जो कि मुख फेर कर नहीं मारागया नियत होजाओ भय मत करो हम युद्ध

में शत्रुओंको बिजय करेंगे ३५ इस प्रकार शोक युक्तोंसे बार्त्तालाप करते बड़े तेजस्वी और प्रकाशमान शूरबीरों में श्रेष्ठ धर्मराजने दुःखको सहा३६ वहअर्जुनका पुत्र अभिमन्यु पहिले युद्ध में सर्पके बिषके रूप शत्रुहुये राजकुमारोंको मारकर पीछे से युद्ध में सन्मुख गया ३७ श्रीकृष्ण और अर्जुनके समान अभिमन्यु दश हजार शूरबीर और महारथी कौशिलो को मारकर निश्चय इन्द्रलोक को गया ३८ वह पबित्रकर्मी हजारों रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों को मारकर युद्धसे तृप्त न होनेवाला शोचने के योग्यनहीं है उसने पबित्र कर्मोंसे बिजय किये हुये उन उत्तम लोकों को पाया जोकि पबित्र कर्मी जीवोंके लोकहैं ३९ ॥

इतिश्रीमन्महाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर हम उन्होंके उत्तम रथीको मारकर उनके बाणोंसे पीड़ामान रुधिर भरेहुये शरीरों से सायंकाल के समय अपने डेरोंकोगये १ हे राजा हम और दूसरे लोग धैर्य्यसे युद्ध भूमि को देखते ग्लानिको प्राप्तहोकर महा व्याकुलता पूर्व्वक हटगये २ इसके पीछे दिवस के अन्तमें शृगालों के शब्दों समेत अशुभ रूप संध्या बर्त्तमान हुई अस्ताचल पर्व्बतको पाकर कमल और आपीड़ के समान सूर्य्य के बर्त्तमानहोनेपर ३ श्रेष्ठ खड्ग शक्ति कवचढाल और भूषणों के प्रकाशों को आकर्षण करते स्वर्ग और पृथ्वीको एकसा करते सूर्य्यने अपने प्यारे शरीर रूप अग्नि को प्राप्तकिया४ बड़ेबादलों के समूहके समान बज्रसे गिराये हुये पर्व्बत के शिखर के तुल्य बैजयन्तीमाला अंकुश कवच और हाथीवानों समेत गिरायेहुये अनेकहाथियों से युक्त पृथ्वी बड़ी दुर्गम्यहुई ५ जिनके स्वामी मारे गये वह सब सामान चूर्णहुई घोड़े और सारथी मारे गये पताका और ध्वजा टूटीं उन बिध्वंस किये हुये रथोंसे पृथ्वी ऐसे शोभित होगई ६ हेराजा जैसे कि शत्रुओंसे नाश किये

हुये पुरोंसे शोभित होतीहै सवारोंके साथमरेहुये रथ और घोड़ोंके समूहोंसे और पृथक् २ प्रकार के टूटेहुये सामान और भूषणों से और निकली हुई जिह्वा दांत नेत्र और आंतोंसे पृथ्वी भयानक और अशुभ रूप देखने में आई ७ जिनके कवच भूषण वस्त्र और शस्त्र टूटे और हाथी घोड़ेरथ और आगे पीछे के मनुष्योंका नाश हुआ वह बहु मूल्य सैया और उपरिधान समेत परिधानोंके योग्य मरे हुये बीर अनाथों के समान पृथ्वी पर सोतेहैं ८ युद्धमें कुत्ते शृगाल काक बक गरुड़ भेड़िये तरक्ष और रुधिर पीनेवाले पक्षी और महाभयानक राक्षस और पिशाचों के समूह अत्यन्त प्रसन्न हुये ९ खालको फाड़कर बसाओंके रुधिर को पीते और बसामांस को खाते बहुत से मृतकों को खैंचते बसा को काट २ कर हंसते और गातेहैं १० शरीरोंके समूहों की बहाने वाली रुधिर रूप जल रथरूप नौका हाथीरूपी पर्व्वतोंसे दुर्गम्य मनुष्योंके शिररूप पाषाण मांस रूपकीच और नानाप्रकारके टूटेअस्त्रोंकी मालारखने वाली ११ भयकारी बैतरणीके समान दुर्गम उत्तम शूरबीरोंसेउत्पन्न की हुई नदीयुद्ध भूमिमें जारीहुई जोकि अत्यन्त भयको उत्पन्नकरने वाली और मृतक जीवोंकी बहाने वालीथी १२ जिसनदीमें भयानक रूप पिशाचोंके समूह खाते पीते और शब्दोंको करतेहैं और जीवों के नाश करनेवाले समान भोजन वाले अत्यन्त प्रसन्न कुत्ते शृगाल और पक्षीभी १३ जिसमें वर्त्तमान थे फिर सायंकाल के समय धैर्य्यसे देखते हुये मनुष्योंने उस भयानक दर्शन यमलोक की वृद्धि करने वाले उठे हुये और नृत्य करते हुये धड़ोंसे व्याकुल युद्धभूमि कोत्याग किया १४ तब मनुष्योंने बड़े लोगोंके योग्य और टूटे हुये भूषणों से रहित इन्द्रके समान बड़े पराक्रमी गिराये अभिमन्युको ऐसे युद्धमें देखा जैसे कि हव्यसे रहित अग्निको अग्नि होत्र वाली शालामें देखतेहैं १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय॥

चौथेदिनकेयुद्धकाप्रारंभ॥

संजय बोले कि उस बड़े पराक्रमी और महारथी अभिमन्युके मरने पर रथ और कवच से रहित धनुष को त्यागने वाले सब शूर बीर १ अभिमन्युमें प्रसक्त चित्त उसी युद्ध को ध्यान करते हुये धर्म राज युधिष्ठिरको घेरकरके समीप बैठ गये २ इसके पीछे अपनेभ्राता जे महारथी अभिमन्युके मरने परबड़े शोक ग्रस्त होकर राजा युधिष्ठिरने बिलाप किया ३ यह अभिमन्यु मेरे प्रिय करनेकी इच्छा से द्रोणाचार्य्य की महा अजेय सेनाको पराजयकरके व्यूहमेंऐसेप्रबेश कर गया जैसे कि बैलोंके मध्यमें केसरीसिंह प्रबेशकर जाताहै ४ बड़े धनुष धारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद शूरबीर जिसकी सेनाकेसन्मुख गये हुये पराजय होकर लौटे ५ जिसने युद्ध में हमारे बड़े शत्रु सन्मुख आयेहुये दुश्शासनको शीघ्रही बाणोंसे मुख फेरने वाला करके अचेतकिया ६ उस अर्जुनके पुत्रने कठिनतासे वृद्धिके योग्य द्रोणाचार्य्यकी सेनारूपी समुद्रकोतरकर दुश्शासनके पुत्रको पाकर सूर्य्यकेपुत्र यमराजकेलोकको पाया ७ सुभद्राकेपुत्रअभिमन्युकेमरने पर पांडव अर्जुनको अथवा प्यारे पुत्रकोन देखने वालीमहाभागा सुभद्राको कैसे देखूंगा ८ और हमउनदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन से प्रयोजनसे रहित युक्तिके बिना इस अप्रिय बचनको कैसेकहेंगे ९ प्रिय चाहनेवाले बिभयाभिलाषी मैंनेही सुभद्रा केशवजीऔर अर्जुन काभी यहमहाअप्रिय किया १० अर्थीदोषोंको नहींजानताहै क्योंकि वह लोभ और मोहमें फंसाहुआ होताहै मुझशहदकेचाहनेवालेने इस प्रकार की भावोंको नहीं देखा ११ जो बालक भोजनसवारी शयन और भूषणोंमें आगे करने के योग्य था उसको मैंने युद्ध के सन्मुख किया १२ युद्धमें अकुशल युवा बालक उत्तम घोड़े के सदृश किस प्रकारसे परस्पर के मर्दन और कठिन स्थानोंपर कल्याणके योग्य है १३ दुःखकी बातहै किअब क्रोधसे ज्वलित अर्जुनकी

दुखी नेत्रों से हम लोग भी भस्म होकर इस पृथ्वी पर सोवेंगे१४ जो कि लोभसे रहित ज्ञानी लज्जावान क्षमावान रूपवान महाबली तेजस्वी मान का करने वाला बीर प्रिय और सत्य पराक्रमी है १५ जिस बड़े कर्मी के कर्मोंको देवता लोग भी बड़ा और अच्छा कहते हैं और जिस पराक्रमी ने निवात कवच और पराक्रमी कालिकेयनाम असुरोंकोमारा १६ और जिसने कि नेत्रोंके एक पलक मारनेसे महा इन्द्र के शत्रु हिरण्य पुर के बासी पौलोमोंको उनके सब समूहों समेत मारा १७ जो समर्थ कि निर्भयता चाहने वाले शत्रुओंको भी निर्भयता देताहै उस का पराक्रमी पुत्र हम लोगोंसे रक्षित नहीं होसका १८ फिर उस महाबली से धृतराष्ट्रके पुत्रों को बड़ाभय प्राप्तहुआ पुत्र के मार डालने से क्रोध युक्त अर्जुन कौरवों को भस्म करेगा १९ प्रकटहै कि नीच लोगोंको सहायक रखने वाला अपने पक्षका नाशक नीच दुर्य्योधन देखकर शोचकरताहुआ अपने जीवन को त्याग करेगा २० इस अतुल पराक्रमी महा इन्द्रके पौत्र अभिमन्यु को गिरा हुआ देखकर बिजयकाहोनाभी मेरी प्रसन्नता का करने वाला नहींहै और यह राज्य व देवतारूप होना और देवताओं के साथ सालोक्यताका होना भी मेरी प्रसन्नता का देने वाला है २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इस के पीछे कृष्ण द्वैपायन महर्षिव्यासजी वहां इस बिलापको करते कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर के पास आये १ भतीजे के मरने से शोकयुक्त युधिष्ठिर समीप आकर बैठेहुये ऋषिको न्यायके अनुसार पूजन कर के बोले २ कि युद्ध में लड़ता हुआ अभिमन्यु बड़े धनुष धारी अधर्म वाले अनेक महारथियों से घेर कर मारा गया ३ वह बालक वृद्धोंकी सी बुद्धि रखने वाला शत्रुओं के बीरों का मारने वाला सुभद्राका पुत्र अधिक तर युद्धमें बिना

युक्तिऔर बिचारके लड़ने वाला हुआ ४ उससे मैंनेही कहाथा कि युद्धमें हमारे द्वारको उत्पन्न कर सेनाके मध्य में उसके पहुंच ने पर हम लोग राजा सिंधसे रोंकेगये ५ प्रकटहै कि युद्धकी जीविका करने वालों को सत्य सत्य युद्ध करना चाहिये यह इस प्रकारका युद्ध बिपरीत है जिस को कि शत्रु लोगोंने किया ६ इस हेतुसे मैं अत्यन्त दुखी और शोक के अश्रुपातों से महाव्याकुल हूं और बारंबारचिन्ता करताहुआ शान्ती को नहीं पाताहूं ७ संजय बोले कि भगवान् व्यासजी इस प्रकार बिलाप करते शोकसे उद्विग्न चित्त होकर युधिष्ठिर से यह बचन बोले ८ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ बड़े ज्ञानी सर्व्वशास्त्रज्ञ पंडित युधिष्ठिर तेरे समान के क्षत्री दुःखोंमें मोहको नहींपाते हैं ९ निश्चय करके यह शूरबीर पुरुषोत्तम वृद्धों के समान कर्मको करके युद्धमें असंख्य शत्रुओं को मार करस्वर्ग को गया १० हेभरतबंशी युधिष्ठिर निश्चय करके शुभाशुभकर्म उल्लंघन के योग्यनहींहै क्योंकि वहीकर्म मृत्युरूपहोकर देवता दानव और गन्धर्बों को भी मारता है ११ युधिष्ठिर बोले कि निश्चय करके यहमहाबली राजालोग सेनाके मध्यमेंमरे और मृतकनाम होकर पृथ्वीपर सोतेहैं १२ इसीप्रकार जो दूसरे दश हजार हाथियों के समान पराक्रमी और बायुके वेगके समान बल वाले हैं वे भी बारंबार समान रूपवाले मनुष्यों के हाथसे युद्ध में मारेगये १३ मैं युद्धमें इन जीवोंके मारनेवालेको कहींनहीं देखता हूं क्योंकि वे सब पराक्रमसे संयुक्त और तपस्याके बलसे भी युक्त हैं १४ सदैव जिनके चित्तमें बिजय करनेकी अभिलाषा नियत रहतीहै वहबड़े २ पूर्ण बुद्धिमान् मृतक होकर निर्जीव सोतेहैं १५ इस अर्थका बाचीशब्द बर्त्तमान् होजाता है कि ये मर गये इसहेतु से पुरुषको दूसराकौन मारताहै यहभयकारी पराक्रम करनेवालेराजा लोगबहुधा मरगये १६ अर्थात् अस्वतन्त्र प्रसन्नता रहित निश्चेष्ट होकर वे सब शूरशत्रुके आधीनहुयेऔरबहुतसे क्रोधयुक्त राजकुमार बैश्वानर अग्निकेमुखमेंगये १७ अबमुझको इससस्थानपर यहसन्देह

उत्पन्न हुआहै कि मृतकयहनाम कैसे और कहांसेहै और मृत्युकिसकी होतीहै और मृत्यु कहांसेहै और किसप्रकार करके संसार को मारतीहै हे देवताके समान पितामह जिस प्रकारसे वह सबसंसार को मारतीहै उसको आप मुझसे कहिये १८संजयबोले कि भगवान् ऋषिइसकुन्ती पुत्र युधिष्ठिरके इसबात के पूंछनेपर युधिष्ठिरसे यह बिश्वास करानेवाला बचनबोले १९ हे राजा इसस्थानपर राजा अकंपनके उस प्राचीन इतिहासको कहताहूं जो कि पूर्व्व समय में नारदजीने कहाहै २० हेराजा उस राजाने भी लोकमें असह्यताके योग्य बड़ेभारी पुत्र शोकको पायाहै मैंमृत्युकी उसप्रथम उत्पत्ति को कहताहूं २१ इसके सुननेसे तू पुत्रकेस्नेह बन्धन और शोकसेनिवृत्त होगा २२ उसको चित्त लगाकर सुनोंजोकिसब पापोंके ओघों का नाश करनेवाला धनआयु की पूर्णता का देनेवाला शोकका शान्त करनेवाला और निरोग्यताका बढ़ानेवालाहै २३ पबित्रात्माशत्रुओंके समूहोंका मारनेवाला और मंगलोंका भी मंगलहै जैसे कि वेदका पढ़नाहै उसी प्रकार यहउपाख्यानभीहै २४ हेमहाराजयह आख्यान पुत्रधन आयु और राज्यके चाहनेवालेउत्तम राजाओंकोसदैव प्रातःकालके समयसुननेकेयोग्यहै २५ हेतातपूर्व्वसमयमें सतयुगकेमध्यमें राजाअकंपन हुआवह युद्धभूमिमें दैवयोगसे शत्रुके आधीनहुआ २६ उसकापुत्रहरिनामथाजोकिबलमें नारायणकेसमान श्रीमान् अस्त्रज्ञ शास्त्र रखनेवाली बुद्धिकास्वामी पराक्रमी युद्धमें इन्द्रकेसमानथा २७ वहयुद्ध भूमिमें शत्रुओंसे बहुतघिराहुआ शूरबीर और हाथियोंपरहजारों बाणोंकोचलाता २८ युद्धमें शत्रु संतापी कठिन कर्मकोकरकेसेनाकेमध्य शत्रुओंके हाथसे मारागया २९ शोचसेयुक्त उस राजाने उसके प्रेतकर्मों को करके अहर्निश शोचयुक्त होकरकभी सुखको नहीं पाया ३० इसकेपीछे देवऋषि नारदजी पुत्रके दुःखसे जनित इसके शोकको जानकर उसके सन्मुखआये ३१ तबउस महाभाग राजा ने देवऋषियोंमें श्रेष्ठ नारदजीको देखकर न्यायके अनुसार पूजन करके सब वृत्तान्त कहा ३२ राजाने जैसा कि वृत्तान्त युद्धमें परा-

जय और पुत्रके मरनेकाथासब ज्योंकात्यों वर्णनकिया ३३ बड़ापराक्रमी इन्द्र और विष्णुके समान तेजस्वी बड़ाबली मेरापुत्र युद्ध में पराक्रम करके बहुतसे शत्रुओंके हाथसे मारागया ३४ हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ समर्थ ऋषि यह मृत्यु क्याहै और किस बल पराक्रम और बीरताकी रखनेवालीहै इसकोमैं ब्यौरेसमेत सुनना चाहता हूं ३५ वरदाता समर्थ ऋषियोंमें श्रेष्ठनारदजीने उसके उसबचनको सुनकर पुत्रके शोकका दूर करनेवाला यह बड़ा आख्यान वर्णनकिया ३६ अर्थात् नारदजीनेकहाकिहेमहाबाहु राजा अकंपन इस बड़े बिस्तारवाले आख्यानको सुनोकि वहजैसेहुआ और मैंने सुना ३७ जब सबके प्रथम प्रपितामह ब्रह्माजीनेसृष्टिको उत्पन्नकियाफिरउसी बड़ेतेजस्वी प्रभुनेइस संसारको मरण धर्मा देखकर ३८ उसकेनाश करनेकी चिन्ताकरी हे राजाचिन्ता करतेहुये ब्रह्माजीने इस संसार के नाशको नहींजाना ३९ फिर उनके क्रोधद्वारा आकाशसे अर्थात् उनके कर्णादि बिवरसेअग्नि उत्पन्नहुई अन्तर्दिशों समेत सबदिशों के भस्म करनेके अभिलाषी उस अग्निसे सबदिशा व्याप्तहुई ४० उसके पीछे प्रभु भगवान् अग्निने स्वर्ग पृथ्वी और ज्वालाकीमालाओंसेव्याकुल सबस्थावर जंगम जड़ चैतन्य संसार को भस्म कर दिया ४१ जबसब जड़चैतन्य जीवनाशहुये अर्थात् पराक्रमीअग्नि ने क्रोधकेबड़े वेगसे भयको उत्पन्नकरके सबको भस्मकिया ४२ इसके पीछे जटाधारी निशाचरोंके स्वामी रुद्र हर शिवजी उस देवतापरमेष्ठी ब्रह्माजीकी शरणमें गये ४३ सृष्टिके प्रियकरनेकी इच्छा से उन शिवजीके परम देवता महामुनि ब्रह्माजी ज्वलित अग्नि के समान बचनबोले ४४ हेमनोरथोंके योग्य मैं तुम्हारे किस मनोरथ कोकरूं हे पुत्र तू इच्छासे उत्पन्नहुआहै इससेतेरीसब इच्छाओंको पूर्ण करूंगा हेरुद्रजोतुम्हारी इच्छाहोय सोकहो ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय॥

रुद्रजी बोले कि हेसमर्थतुमने संसारके उत्पत्तिको निमित्तउपाय किया और भिन्न २ प्रकारके जीवसमूह तुमसे उत्पन्नहोकर पोषण पानेवालेहुये १ वहसब सृष्टिअबयहां आपके क्रोधसे फिर भस्मी भूतहोतेहैं उनको देखकर मुझको दयाआईहै सो हे प्रभु भगवान् प्रसन्नहो २ ब्रह्माजीबोलेकि मारनेमेंमेरी इच्छा नहींहै यह ऐसाही होय मुझको पृथ्वीके प्रियकरनेकी इच्छाथी इसहेतुसे शूझ में क्रोध होगया ३ हेमहादेवजी इससंसार के भारसे पीड़ित और घायल पतिव्रता देवीपृथ्वीमें संसारकेनाशके निमित्त बारंबार मुझको प्रेरणाकरी ४ तबउसके पीछेमैंने उसरीतिके असंख्य संसारके नाशको नहींपायाइस कारण मुझमें क्रोधआया ५ रुद्रजी बोलेकि हे पृथ्वी के स्वामी संसारकेनाशके लियेक्रोध मतकरो प्रसन्न हूजिये और सबजड़ चैतन्य संसारको नाशमतकरो ६ हे भगवन् आपकीकृपासे यहतीन प्रकारका जगत अर्थात् जोप्रकट नहींहुआ और जो भूत कालमेंहुआ और जोअबवर्त्तमानहै वहसब प्रकटहोय ७ हेभगवन् क्रोधसे ज्वलितरूप आपने अपने क्रोधरूप अग्निकोउत्पन्नकिया८ वहपर्व्वत के शिखरनदी और रत्नोंको भस्म करताहै पल्वलनाम तड़ाग और सबबनोंसमेत स्थावर जंगम संसारका नाशकरताहै ९ हे भगवन् आप प्रसन्नहूजिये आपमेंक्रोध नहोय यहमेरा बरहै हे देवता आपके सबसृष्टिके जीवकिस प्रकार से नाशको पातेहैं १० इसहेतु यहतेज लौटजाय और आपमेंही लयहोजाय हे देवतासृष्टि के उपकारको इच्छासे उसको आपअच्छी रीतिसे बिचारकरो ११ जैसीरीतिसे ये सब जीवप्रकटहोयं वहीरीति आपको करना योग्य है यहांअपने बालबच्चों समेतसब सृष्टि के जीवनाश न होयं १२ हे संसारके स्वामीमैं तुम्हारी ओरसेलोकोंके मध्यमें संसारकोवृद्धि के लिये प्रवृत्तकिया गयाहूं हे जगत्पति यह स्थावर जंगम रूप जगत्नाशको न पावे १३ इसहेतुसे मैंकपालुदेवतासे प्रार्थनाकरता

हूं नारदजी बोलेकि देवताने उसवचनको सुनकर प्रजाओंके हितकी इच्छासे तेजको फिर अन्तरात्मामें धारणकिया १४ इसकेपीछेलोक के प्रतिष्ठित प्रभु भगवान् ब्रह्माजीने अग्निको अपने में लय करके संसारकी उत्पत्तिसे संबंध रखनेवाले कर्मको और मोक्षसंबंधीकर्मों कोभी बर्णनकिया १५इस प्रकारसे क्रोधसे उत्पन्न अग्निको अपनेमें लयकरते उस महात्माकी सब इन्द्रियोंसे एकऐसीस्त्री प्रकटहुई १६ जोकिकृष्णरक्त और पिंगलबर्ण औरक्तर जिह्वा और नेत्रोंसेयुक्तनिर्मलकुंडलोंसमेतपवित्र आभूषणोंको धारण करनेवालीथी १७ इस प्रकारवहइनइन्द्रियोंसे निकलकर मन्द मुसकानकरतीहुई बिश्वके ईश्वरदोनोंदेवताओंको देखकर दक्षिण दिशामें नियतहुई १८हेराजा तब संसारके उत्पत्ति प्रलयके कर्ता देवता ब्रह्माजी उसको बुलाकर बोलेकि हेमृत्युइन सृष्टियोंका नाशकर १९ तूसंसारके नाशसे संबंध रखनेवाली वृद्धिके कारण मेरेक्रोधसे प्रकट हुईहै इस हेतु से तूइस सबजड़ चैतन्यको नाशकर २० तूमेरी आज्ञासे इसकर्मकोकर सब प्रकार कल्याणको पावेगी फिरउनके इसप्रकारके बचनोंको सुनकर उस कमललोचनी अबला मृत्युने २१ बड़ाध्यान किया और बड़ेस्वरों से रोनेलगी पितामहने उसके अश्रुपातोंको हाथोंमें लिया २२ तब सब जीवोंकी वृद्धिकेलिये उसकोभी बिश्वास कराया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि वह लता के समान एकही आश्रय रखने वाली मृत्युरूप अबला दुःख को आत्मामें लयकरके हाथ जोड़कर ब्रह्माजीसे बोली १ कि हेवक्ताओंमें श्रेष्ठ बिचार करनेका स्थान है कि तुमसे इस प्रकारकी उत्पन्नकी हुई मैं स्त्री जान बूझकर किस रीति से निर्दय और अप्रिय कर्म को करूं २ मैं अधर्म से डरती हूं हे भगवन् प्रभु प्रसन्न हूजिये हे देवता प्रिय पुत्र समान बय भाई माता पिता और भर्त्ताओं की मुझ मारने वालीको ३ मृत-

कों के पास बैठीहुई स्त्रियां खोटेबचनकहकर २ शापदेंगी मैं उन से डरतीहूं निश्चय करके दुखी और रोते हुये जीवोंके जो अश्रुपातों के बुन्द गिरतेहैं ४ हे भगवन् मैं उन से भयभीत होकर आपकी शरणमें आईहूं हे देवताओंमें श्रेष्ठ देवता मैं यमराजके भवन को नहींजाऊं ५ हे संसार के पितामह मस्तक अंजुली और शरीर के द्वाराबड़ी नम्रता पूर्व्वक मैं आपसे इस अभीष्टको चाहतीहूं ६ हे-संसारके ईश्वर मैं आपकी कृपासे तपकरना चाहतीहूं हे भगवन् प्रभु देवता तुमयहबर मुझकोदो ७ तुम्हारी आज्ञानुसार मैं धेनुक नाम उत्तम आश्रमको जाऊंगी आप के पूजन में बड़ीप्रीति करने वालीमैं कठिन तपस्याको करूंगी ८ हेदेवताओंके ईश्वर मैं बिलाप करतीहुई जीवोंके प्यारे प्राणों के हरनेमें समर्थनहीं हूं ९ मुझ को अधर्मसे रक्षाकरो ब्रह्माजी बोलेकि हे मृत्यु तू संसार के नाशहीके हेतुसे उत्पन्नकी गईहै तुम सबसृष्टिको जाकरमारोऔरतू किसीबात का शोचमतकर १० यहमेरी इच्छाहै ऐसेही होगा इस में किसी प्रकार बिपरीत न होगा तू लोकमें निन्दितहो और मेरे बचन को कर ११ नारदजी बोलेकि इस प्रकारके ब्रह्माजी के बचनोंको सुन कर वहस्त्री भगवान्को ओर हाथजोड़कर प्रसन्नहुई और संसारके उपकारकी इच्छासे संसारके नाशमें बुद्धिको नहीं प्रवृत्त किया १२ तब प्रजाओंके ईश्वरोंकेभी ईश्वर ब्रह्माजी मौनहुये आपही शीघ्र प्रसन्न हुये १३ वह देवदेव ब्रह्माजी सब लोकों को देखकर मन्द मुसकान करनेवाले हुये उन क्रोध रहित ब्रह्माजी के देखने से वह लोग प्रथमके समान प्रकटहुये १४ उस अजेय भगवान् को क्रोधसे रहित होजानेपर वह कन्याभी उस बुद्धिमानके सन्मुख से चलीगई १५ हेराजेन्द्र तबवह मृत्यु सृष्टिके नाशकोस्वीकार न कर के वहांसे शीघ्रही चलकर धेनुकाश्रममें गई १६ उसने वहां जाकर बड़ेकठिन और उत्तम व्रतको किया तबसृष्टिके प्रियकी चाहनेवाली मृत्यु दया करके इक्कीस पद्मवर्षतक एकपैरसे खड़ीरहीवह इन्द्रियों कोप्यारे बिषयोंसेअच्छे प्रकार रोंककर तपस्या करनेलगी १७।१८

इसके पीछे सात पवित्र बनों में चौदह पद्म बर्षतक एक चरण से खड़ीरही १६ इसके पीछे वह दशहजार पद्म बर्षतक मृगों के साथ भ्रमण करनेवालीहुई फिर पवित्र शीतल और स्वच्छ जल वाले नन्दातीर्थपर जाकर २० उस निष्पापने नन्दानदी पर नियम को धारण करके जलकेमध्य में आठ हजार बर्षव्यतीत किये २१ वह नियमसे वृद्धिमान प्रथम पवित्र नदी कौशिकीपरगई वहां बायुजल काआहार करके फिर नियमकिया २२ फिर उसपवित्रकन्याने पांचों गंगा और वेतसकोंमें बहुतप्रकार की तपस्याओंसे अपने शरीरको जीर्ण करदिया २३इसकेपीछे वह आकाशगंगा और महामेरुपर जाकर प्राणायाम करनेवाली प्रकाशितपत्थरपर केवल निश्चेष्टहोकर नियत हुई २४ फिरवह शुभ औरश्रेष्ठस्त्री उस हिमाचलके मस्तकपर जहांदेवताओंने पूर्व्वसमयमेंयज्ञकिया वहांएकनिखर्ब बर्षतक नियत हुई २५ फिर पुष्कर में गोकर्ण नैमिष और मलयाचलमें बड़ीप्रीति से चितके नियमोंसे अपनेशरीरको कृषकिया ब्रह्माजी की दृढ़ भक्ति रखने वाली और सदैव ब्रह्माजी को सर्व रूप मानकरदूसरे देवता को न रखने वाली अनन्य भक्तिमें नियत हुई २६ और धर्मसे पितामह को प्रसन्न किया २७ हे राजा तब उसके पीछे लोकोंकेस्वामी अबिनाशी प्रसन्न चित प्रीतिमान ब्रह्माजी बड़े हित प्रिय बचन उससे बोले २८ कि हेमृत्यु यहक्या बातहै तब बड़ेतपोंके करने के पीछे वह मृत्यु उन भगवान् पितामह से फिरयह बचन बोली कि हे देवता इष्ट मित्र नातेदार आदि के मध्यमें नियत पुकारते हुये सृष्टिके लोगोंको मैंनहींमारूं २६ हेसब के ईश्वर प्रभुमैं इसबरको तुमसे चाहतीहूं ३० मैं धर्मके भय से भयभीतहूं इसी हेतु से तपमें नियत हुईहूं हे महाभाग अबिनाशी मुझ भयभीत को निर्भय करो ३१ मैं पीड़ावान निरपराधीस्त्री आपसेप्रार्थना करतीहूं तुम मेरी गति अर्थात् आश्रय स्थान हूजिये इसके पीछे भूत भविष्य बर्त्तमान के ज्ञाता देवताओं के देवता ब्रह्माजी उससे बोले ३२ हे मृत्यु इन सब सृष्टियों के नाश करने में तुझको अधर्म नहीं है

हे कल्याणिनि मेरा कहा हुआ किसीदशामें भी मिथ्या नहीं है और न होगा ३३ इस हेतुसेतुम चारों प्रकारकी सब सृष्टिको मारो तुझको सनातन धर्म सब प्रकार से याचना करेगा ३४ लोकपाल यमराज और सम्पूर्ण रोगादिक भी तेरेसहायक होंगे औरमैं और सब देवता मिलकर तुझको वह वर देतेहैं ३५ कि जैसे तू पापोंसे रहित होकर बिरजानाम से बिख्यात होगी हे महाराज ब्रह्माजी के इस बचन को सुनकर वह मृत्यु शिरसे ब्रह्माजी को प्रसन्न करती हुई हाथ जोड़कर यह बचन बोली कि जो यह इसीप्रकार करने के योग्य है तो हे प्रभु वह मेरे बिना नहीं होय ३६।३७ मैंने आपकी आज्ञाको मस्तक पर धारण किया अब जो मैं आपसे कहतीहूं उसको आप सुनिये क्रोध लोभ दूसरे के गुणमें दोष लगाना ईर्षा शत्रुता देहमें मोह करना ३८ निर्लज्जता और परस्पर कठोरबचन यह सबभी पृथक् २ प्रकार से शरीरको व्यथित करें ब्रह्माजी बोले कि हे मृत्यु इसी प्रकार से होगा बहुत श्रेष्ठ है तुमसृष्टि को मारो तुझको कभी अधर्म न होगा हे शुभ स्त्री मैं तुझकोशापनहीं दूंगा३९ मैंने जिन अश्रुपातों को हाथ में लिया वह जीवों के शरीरों से उत्पन्न होने वाले रोग हैं वह निर्जीव मनुष्यों को मारेंगे तुझको अधर्म नहीं होगा भय मतकर ४० प्राणियों को मारकर तुझ को अधर्म नहीं होगा निश्चय करके तूही धर्म है और तूही धर्म की स्वामिनीहै तूही धर्म रूप होकर सदैव धर्ममें नियत होके सब को धारण करने वाली है इस हेतुसे इन सृष्टियों के प्राणों को सब प्रकार करके अपने स्वाधीनकर ४१ तू क्रोध और इच्छाको अच्छी रीति से त्याग करके इस लोकमें सब प्राणियों के जीवोंको भी आधीन कर इस प्रकार से तुझको अत्यन्त धर्म होगा अधर्म दुराचारी लोगों को मारेगा ४२ इस कारण तुम आत्माके द्वारा आत्मा को पबित्र करो और सतोगुण से रहित लोग अपने पापसे ही अपने को नाश करेंगे इस हेतु से तुम अपने सन्मुख आये हुये इच्छा और क्रोधको श्रेष्ठ रीति से त्याग करके अवस्थाके अन्त

होने पर जीवों को मारो ४३ नारदजी बोले कि निश्चय करके वह मृत्यु नाम के उपदेश से और शाप से भयभीत होकर उन ब्रह्माजी से बोली कि बहुत अच्छा ऐसा कहकर इच्छा और क्रोध को त्याग करके वह मृत्यु मारने के कर्म में प्रवृत्त होकर समय के अन्तहोनेपर जीवोंके प्राणोंको हरती है ४४ मृत्यु और उस मृत्यु से ही उत्पन्न होने वाले इनसब जीवों के रोग और मारने वाले रोग जिनसे कि जीव पीड़ा पाता है यह सब संपूर्णजीवों के शरीर त्यागने के समय आते हैं इस हेतुसे तुम निरर्थक शोकमत करो ४५ सब इन्द्रिय रूप देवता शरीरके त्यागनेके समयजीवात्माओं के साथ मृतक के समान जैसे परलोक में जाते हैं उसी प्रकार वहां लौट करभी आतेहैं अपने कर्मसे देवता रूप होनेवाले कर्म देवभी लौट कर आतेहैं और सच्चे परमात्मासे प्रकाशित रूप होने वाले ज्ञान देव फिर लौट कर नहीं आतेहैं हे राजाओंमें श्रेष्ठ इस प्रकार जीव धारियों के प्रथम देवता शीघ्रतासे मृतक के समान जाकर फिर प्रकट हुये ४६ यह सर्वत्र वर्त्तमान भय कारी और भयानक शब्द बड़ा बेगवान प्राण वायुजीवोंके शरीरों को मारने वालाहै अत्यन्त प्रकाशित उग्र वायु रूप शिव और अपूर्व्व प्राण जन्म मरणको नहीं पाताहै अर्थात् जीवन्मुक्त है ४७ सब देवता मृतक नाम के योग्यहैं हे राजेन्द्र इस हेतुसे तुम पुत्रका शोक मत करो तेरा पुत्र रमणीक बीर लोकोंको पाकर स्वर्ग में वर्त्तमान होकर सदैव आनन्द करताहै ४८ दुःखको त्यागकर पबित्र कर्मी पुरुषों के साथमें बैठो यह सृष्टिभरे की मृत्यु देवता की आज्ञा से समय आने पर बिधिके अनुसार मारने वालीहै यह सृष्टिके शरीरों के प्राणोंको हरण करने वाली आप अपनेही से उत्पन्न कीगई है ४६ निश्चय करके सब जीवधारी अपना आपही अपघात करतेहैं दराडधारी मृत्यु उनको नहीं मारती है इस हेतुसे पण्डित लोग बास्तवमें मृत्युको ब्रह्माजीसे उत्पन्न जान कर मृतकों को नहीं शोचते हैं इस सृष्टि भरको देवताकी सृष्टिजानकर मृतक पुत्रों के

शोकोंको शीघ्र त्यागो ५० व्यासजीबोलेकि राजाअकंपन नारदजी के कहे हुये इस सार्थक बचनको सुनकर अपने मित्र नारद जीसे बोला ५१ हेभगवन् ऋषियोंमें श्रेष्ठमैं आपके मुखसे इस इतिहास को सुनकर शोक से रहित और प्रसन्नहोकर अबमैं कृतार्थहूं और आपको दंडवत् करताहूं ५२ नारदजी शीघ्रही नन्दन बनको गये ५३ इसी प्रकार सदैव इस इतिहासका सुनना और सुनाना पुण्य कीर्त्ति स्वर्ग धन और पूर्णायुका देनेवाला है ५४ संजय बोले कि तब राजा युधिष्ठिर इस प्रयोजन वाले पदको सुनकर क्षत्री धर्म और शूरोंकी परमगतिको जानकर शान्तहुआ और जाना ५५ कि यह महापराक्रमी महारथी अभिमन्यु सब धनुष धारियोंके सन्मुख शत्रुओंको मार कर स्वर्ग लोक को अच्छी रीति से प्राप्तहुआ ५६ वह बड़ा धनुष धारी महा रथी युद्धमें सन्मुख होकर खड्गगदाशक्ति और धनुष से लड़ता हुआ मारागया ५७ और वह चन्द्रमा का पुत्र रजोगुण से रहित फिर अपनेहीतेज में लय होताहै इस हेतु से पांडव युधिष्ठिरअपने भाइयोंसमेत बड़े धैर्य्यको करके सावधानता से अच्छा अलंकृत होकर शीघ्रही लड़ने को सन्मुख गया ५८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४॥

पचपनवां अध्याय॥

संजय बोले कि धर्मराज युधिष्ठिर मृत्युकी उत्पत्ति समेत अद्भुतकर्मोंको सुन कर और व्यास जी को प्रसन्न करके फिर यह बचन बोले १ अर्थात् युधिष्ठिर ने कहा कि हे निष्पाप पबित्रात्मा सत्यबक्ता गुरू और इन्द्र के समान पराक्रमी राजऋषि सत्य लोकादिक स्थानों में निवास करते हैं २ तुम फिर भी मुझको सत्य बचनों से संतुष्ट करो और प्राचीन राज ऋषियों के कर्मोंसे भी मुझ को बिश्वास कराओ ३ किन२ पबित्रात्मा राज ऋषियोंने कितने २ दक्षिणादीं वह सब आप मुझसे बर्णन की जिये ४ व्यासजीबोले कि राजा शैव्यका पुत्र संजय नामथा उसके परम मित्र नारद और

पर्व्वत ऋषिथे ५ वह दोनों ऋषि एक समय उस राजा के देखनेकी इच्छा से उस के घरमें गये वहां राजा से बिधिके अनुसार पूजित होकर बड़ी प्रसन्नता से निबासी हुये ६ फिर दैवयोगसे एकसमय पबित्र मुसकान और सुन्दर बर्ण वाली उसकी कन्या उन दोनों ऋषि के समीप आनन्द पूर्व्वक बैठे हुये राजा संजयके पास आई७ उसने राजा को प्रणामकिया फिर उसको प्रणाम लेने वाले राजा ने उस समीप में बैठी हुई कन्या को बिधिके अनुसार उसके योग्य और चित्तके अभीष्ट आशीर्बादों से प्रसन्नकिया८ तब पर्व्वत ऋषि उस को अच्छी रीति से देख कर हंसते हुये इस बचन को बोलेकि यह चंचलाक्षी सब लक्षणों से युक्त महा सुन्दर किस की कन्या है ९ आश्चर्य्य है कि यह सूर्य्य का प्रकाश है व अग्नि की ज्वाला है या लक्ष्मी हरि कीर्त्ति धृति पुष्टि सिद्धि नाम देबी है अथवा चन्द्रमा का प्रकाशहै १०इस प्रकारसे कहने वाले देव ऋषिपर्व्वतसे राजा संजय बोले हे भगवन् यह मेरी कन्या है और मुझसे अपने बरको चाहती है ११ फिर नारद जी उससे बोले कि हेराजा जो तुम अपना बड़ा कल्याण चाहते हो तो इस कन्या को भार्य्या करने के अर्थ मुझकोदो १२ यह सुन कर अत्यन्त प्रसन्न होकर राजा संजय ने नारद जी से कहा कि दूंगा फिर अत्यन्त क्रोधित होकर पर्व्वतऋषि नारद जी से यह बचन बोले १३ कि निश्चय प्रथम मेरे हृदयसे बरी हुई इस कन्या को तुमने मांगाहै हे ब्राह्मण जो आपने मेरे चित्तसे बरी हुई कन्या को तुमने बरा है इस हेतुसे तुम अपनी इच्छा के अनुसार स्वर्ग को न जाओगे १४ इस प्रकार से शापित होकर नारदजी उत्तम रूप बचन उससे बोले कि मन, बचन, बुद्धि, और बाणी,से जलसंयुक्त दीहुइ, अथवा कन्या,और बरकाहाथ, मिलना, और मन्त्र यह सातों कन्याके बरहोने केचिन्ह प्रसिद्धहैं१५ परन्तु यह निष्टा निश्चयात्मक नहींहै सत्पुरुषोंकीनिष्टा सप्त पदीहै १६ तुमने बिना बिवाह होने केही मुझको शाप दिया है इस हेतुसे तुमभी मेरे बिना कभी स्वर्गको न जाओगे १७ तब

वह दोनों परस्पर में शाप देकर वहां निवास करनेलगे फिर पुत्रके आकांक्षी पवित्रात्मा उस राजाने भी बड़ो सामर्थ्य और उपाय से खाने पीने की वस्तुओं समेत वस्त्रोंके आस्तरणोंसे ब्राह्मणोंकी सेवा करी१८ एक समय तपस्यासे युक्त वेदपढ़नेमें प्रवृत्त बेदवेदांग पारगामी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ और उस पुत्राभिलाषी राजापर प्रसन्नहोकर सब ब्राह्मणलोग मिलकर नारदजी से बोले किइस राजाको चित्तके अनुसार पुत्र दो १६। २० ब्राह्मणों से यह बचन सुनकर नारद जी तथास्तु कहकर राजा संजयसे बोले कि हे राज ऋषि ये सब ब्राह्मण प्रसन्न होकर तेरेपुत्र होनेके निमित्त याचना करतेहैं २१ तेरेकल्याण होय तू जैसापुत्र चाहताहै उसको मांग इस प्रकार के नारदजीसे बचन सुनकर राजाने हाथजोड़कर ऐसा सर्वगुण संपन्न पुत्र नारदजीसेमांगा२२जोकि यशस्वी कीर्तिमान् तेजस्वो शत्रुओं को बिजय करनेवालाहो और जिसका मूत्रबिष्टा थूक और प्रस्वेद ये सब सुबर्ण होजायं २३ उनकी कृपा से वैसाही पुत्रहुआ इस रीतिसेउसकानाम सुबर्णष्टीव इसपृथ्वीपर बिख्यातहुआ बरप्रदानसे उसराजाके पास असंख्य धन बढ़ता था २४ तब उस सुवर्णष्टीव राजाने गृह प्राकारदुर्ग ब्राह्मणोंके स्थान और सब सामान सुबर्णके अपनी रुचिके समान बनवाये २५ सैया आसन सवारियां थाली हंडे आदिपात्र और उसराजाके जोमहलआदि बाहरीसामानथे२६ वे स्वर्णमई और समय के अनुसार बड़े वृद्धिमान हुये इसके पीछे चोरोंके समूह सुनकर और इसकोइस प्रकारका देखकर २७ उस राजाका निरादर करके बुराइयां करनेके लिये दुष्टकर्म करनेलगे कितनेही चोरोंने कहाकि हमआप जाकर इसराजा के पुत्रकोही पकड़ें २८ क्योंकिवही इसको सुबर्णको खानहै उसका उपाय करें इसकेपीछे उनलोभी चोरोंने राजाके घरमें प्रवेश करके २६ पराक्रमसे सुबर्णष्टीव नाम राजकुमार को हरण करलिया उपायके न जानने वाले बड़े निर्बुद्धी उनचोरोंने उसको पकड़कर बनमें लेजाके ३० मारकर खंड २ करके लोभियोंने कुछभी धनको नहींदेखा

प्राणोंसे रहित उस बालकका वह धनजो कि बरप्रदानसे प्राप्तहुआ था वहसब नाशहोगया तबमूर्ख और अचेत चोरोंनेपरस्परमेंअपना२ भी अपघात किया और उस कुमारको मारकर इस पृथ्वीसे आप नष्टहोगये ३२ वे दुष्ट कर्मी चोर कठिन और भयानक नर्क को गये फिर उसबड़े तपस्वी और अत्यन्त दयावान राजाने उसबर से प्राप्तहुये पुत्रको मराहुआ देखकर ३३ महादुखी और पीड़ा से व्याकुल होकर बिलापकिया पुत्रके शोकसेघायल और बिलाप करते राजा को सुनकर देवऋषि नारदजीने उसके सन्मुख आकर दर्शनदिया ३४ उन नारदजीने उसके पासआकर उसदुःखसे पीड़ित और अचेततासेबिलाप करनेवाले राजासेजोकहा ३५ हेयुधिष्ठिर उस को समझो अर्थात् नारदजीने कहाकि यहां अभीष्टोंसे तृप्त न होने वाला होकर तू मरजायगा ३६ हम ब्रह्मबादी जिसके घरमेंनियत होकरठहरे हेसंजय हमउस राजा मरुत और आवीक्षितको मृतक सुनतेहैं ३७ जिसमरुतने प्रसन्नतापूर्व्वक वृहस्पतिजी से संबर्त्तकको पूजन कराया उस भगवान् प्रभुने नानाप्रकारके यज्ञोंसे पूजनक-रनेके अभिलाषी जिसराज ऋषिको धन और हिमालय पर्व्वतकेस्व-र्णमयी चौथेभागको दिया ३८ जिसकेयज्ञके पासउस देवताओंके समूहजिनमें मुख्य इन्द्रसमेत वृहस्पतिजीहैं ३९ और संसारकेउत्पन्न करने वाले सब देवता बर्त्तमान हुये और यज्ञ शालाके सब सामान स्वर्णमयी हुये ४० तबवेद पीठी भोजनों के अभिलाषी सब ब्रा-ह्मणोंने उसके उस अन्नको जो इच्छाके अनुसार पबित्र बिचार कियाथा यथेच्छ भोजन किया ४१ जिसके सब यज्ञोंमें दूधदही घृत सहत और भक्ष्य भोज्यकी बस्तु और बस्त्र भूषणादिभी उत्तम सुडौल मनोहर और चित्त रोचकथे ४२ उस यज्ञमें वेद बेदांगपारग अत्यन्त प्रसन्न मूर्त्ति ब्राह्मणलोग जिस २ बस्तुको चाहतेथे वहसब बर्त्तमानहोतीथी उस राजा मरुत के गृहमें मरुत देवताको परो-सने वाले हुये ४३ और राज ऋषि आवीक्षित के सभासद बिश्वे-देवानाम देवता हुये जिस पराक्रमी राजाकी धन रूप खेती अच्छी

बर्षासे थी ४४ जिसने अच्छे प्रकार से तैयार किये हुये हव्य से ऋषि पितर और सुख पूर्व्वक जीवन करने वाले देवताओं के स्वर्ग बासी प्रकाशोंको ४५ सदैव ब्रह्मचर्य्य बेदोक्त यज्ञ और सब प्रकार के दानों के द्वारा तृप्तकिया सैया आसन खान पान की बस्तु और दुःखसे त्याग करने के योग्य सुबर्ण केचय ४६ और सब प्रकार का असंख्य धन अपनी इच्छा से ब्राह्मणोंको दिया वह श्रद्धावान राजा प्रजा को प्रसन्न करके इन्द्रके बुलाने से प्रजा राज्य मंत्री स्त्री संतान और बांधवों समेत बिजय किये हुये कर्म फल के देने वाले अबिनाशी लोकोंको गया ४७।४८ राजा मरुतने तरुणतासे हजार बर्षतक राज्यकिया हे संजय जोवहधर्म ज्ञान बैराग्य ऐश्वर्य्य अथवा धर्म अर्थ काम बल इन सब कल्याणों को तुझसे भी अधिक रखनेवालाहै४९ और तेरे पुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा मरगया तब तुम यज्ञोंसे रहित दक्षिणाओंके न देने वाले होकर पुत्रका शोच मतकरो यह नारदजीने कहा ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम उस राजा सुहोत्रको भी मरा हुआ सुनतेहैं जो कि एक बार देवताओंसे भी अजेय हुआ देखा गया १ जिसने राज्य को धर्मसे पाकर ऋत्विज ब्राह्मण और पुरोहितोंसे अपना कल्याण पूंछा और पूंछ कर उनकी आज्ञामेंनियत हुआ २ सुहोत्रने प्रजाके पोषणधर्म दान यज्ञ और शत्रुओंकी बिजय इन सब बातों को जान कर धर्मके अनुसार धनको प्राप्तीको चाहा ३ धर्म से देवताओंको पूजा और बाणों से शत्रुओं को बिजय किया और अपने गुणोंसे सबजीवों को प्रसन्न करके बिदित किया ४ जिसने म्लेक्ष और आटबिक देशोंके सिवाय इस सब पृथ्वीको भोगा और जिसके निमित्त इन्द्रने बर्षों तक सुबर्ण को बरसाया ५ वहां पूर्व्व समय में इच्छा के अनुसार जारी होनेवाली

सुवर्णकी उत्पत्ति स्थान नदियोंने ग्राह कर्कट और अनेक प्रकारके असंख्य मत्स्योंको धारण किया ६ और इन्द्र देवता अभीष्ट पदार्थ और नानाप्रकारकी स्वर्णमयी अनुपम मूर्त्तियोंको बरसाताथा और बावड़ी एक २ कोशकी लम्बीथी ७ तब स्वर्णमयी सैकड़ों बौनेकुबड़े नक्र मकर और कच्छपोंको देखकर आश्चर्य्य किया ८ यज्ञ करने वाले राजऋषि ने कुरुजांगल देशके मध्य बिस्तृत यज्ञ में उस असंख्य सुवर्ण को ब्राह्मणोंके अर्थ संकल्प किया ९ उसने हजार अश्वमेध और सौ राजसूय और अन्य बहुत दक्षिणा वाले पबित्र यज्ञोंसे १० और सदैव नैमित्तिक कर्मोंके करनेसेंचित्तकीअभीष्ट गति को पाया हेसौत्यके पुत्र संजयजो वह राजा सौहोत्रादि व धर्मादि चारों कल्याणों को तुझ से अधिक रखने वाला और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा मर गया तो तुम यज्ञ न करने व दक्षिणा के भी न देने वाले होकर पुत्रका शोच मत करो यह नारद जीने कहा ११ । १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हेसंजय हम बीर राजा पौरवको मृतकहुआ सुनतेहैं जिसने दश लाख श्वेत घोड़ों को यज्ञ के निमित्त छोड़ा १ उस राज ऋषिके यज्ञ में देश २ के आनेवाले पंडितोंकी गणनानहीं होसकी जोकि शिक्षा अक्षर और बिधिके जानने वाले अर्थात् बेदके पढ़ने की रीति से सूत्र व्याकरणादि के जानने वाले २ बेद बिद्या और व्रतसे स्नान किये हुये दान के अभ्यासी अपूर्ब प्रिय दर्शन और संन्यासी आदिके भोजन भिक्षाके देनेवाले वस्त्र गृह सैया आसन और सवारी वालेथे ३ वे वहां सदैव उपाय और क्रीड़ा करनेवाले नट नर्त्तकगन्धर्बपूर्णक और बर्धमानकोंके द्वारा प्रसन्न कियेगये ४ उस ने प्रतियज्ञ में समय के अनुसार श्रेष्ठ दक्षिणा बांटी दशहजार ऐसे हाथी जो सुवर्ण भूषणों से अलंकृत होकर प्रकाशमान और

अत्यन्त मतवालेथे ५ उसीप्रकार ध्वजा पताका समेत सुबर्णके रथ दान किये और जिसने स्वर्ण भूषणों से अलंकृत दशलाख कन्या६ अच्छी जाति वाले घोड़े और हाथियों परसवार और सुन्दरघर और खेत रखने वाले सैकड़ों बैलऔर एक लाख सुबर्णकीमालाओं समेत गौयें और हजार दास इस प्रकारकी दक्षिणा जिसनेदीं७सुबर्णशृंग चांदीके खुर कांस्य दोहनी रखने वाली सबत्सा गौयें ८ दासी दास खच्चर ऊंट और बहुत से कंबल आदिको दान किया ९ उस यज्ञके बिस्तार होने पर दक्षिणा बहुतसीबांटी उसमें पुराण के ज्ञाता लोग इसकी गाथाको गातेहैं १० उस उपाय करने वाले राजा अंगके निज धर्म से प्राप्त गुणों में श्रेष्ठ सब अभीष्ट बस्तुओं से युक्त वह शुभ यज्ञथा ११ हे सौत्यके पुत्र संजय जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्र सेभी अधिक धर्मात्मा मरगयातब तुम यज्ञ न करनेवाले और दक्षिणाके न देनेवाले होकर पुत्रका शोकमत करो १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम औसीनरके पुत्र शिबीको भी मृतक सुनते हैं जिसने इस संपूर्ण पृथ्वीको चमड़ेके समान लपेटा अर्थात् अपने स्वाधीन किया १ उस शत्रुओंके बिजय करनेवाले रथ के शब्दसे पर्व्वत द्वीपसमुद्र और बनसमेत पृथ्वी भरको शब्दायमान करते शिबीने सदैव उत्तम शत्रुओंको मारा२ उसने पूर्णदक्षिणा वाले बहुत प्रकार के यज्ञोंसे पूजन किया वह पराक्रमी बुद्धिमान राजा बहुतधनको पाकर ३ युद्धमें सब महाराजोंका अंगीकृतहुआ जिसने इससबसंसार की पृथ्वीको बिजयकरकेउन अश्वमेधोंसे पूजनकिया४ जो कि अमंल न रखनेवाले बहुत फलोंसे युक्तथे उस हजारों कोटि निष्कों के दानकरनेवाले ने हाथी घोड़े आदि पशु धान मृग गौ और भेड़बकरियों समेत ५ इस नानाप्रकारवाली पबित्र पृथ्वीको

ब्राह्मणों के अर्थ भेटकिया बादल की जितनी धारा होती हैं और आकाश में जितने नक्षत्र हैं ६ और जितने कि गंगा की बालू के कण हैं और मेरु पर्व्वतके जितने पाषाण हैं और समुद्रमें जितने रत्न और जलजीव हैं औसीनर के पुत्र शिवीने उतनीही गौयें यज्ञमेंदानकरी ७ संसार के स्वामी ने उस के कर्म के बोझेको उठानेवाला कोई पुरुष तीनों कालमें नहीं पाया ८ उस के नाना प्रकारके यज्ञसब अभीष्ट बस्तुओं से युक्तहुये ९ जिनमें सुनहरी यूप आसन गृह भित्ती परिधि और बाह्यद्वार और खाने पीने की पबित्रबस्तु और प्रयुत संख्यावाले ब्राह्मण थे १० उस के यज्ञके बाड़ोंमें नाना प्रकार की भोजनादिक की बस्तुओं के साथ दूध दही के ह्रद नदी और उज्ज्वल अन्न के पर्व्वत और चित्त रोचक कथाहुई ११ स्नान भोजन पान इनमें से जो जिसको प्रिय होय वह करो ऐसीआज्ञा सब लोगोंको दे रक्खीथी इस पबित्र कर्मसे प्रसन्न होकर रुद्रजीने जिस राजा को बरदिया १२ कि हे राजा तेरे धनकांक्षा कीर्त्ति और जो तूकरे वहसब कर्म अबिनाशी होंय और जीवों की प्रीति समेत उत्तम स्वर्ग को पाओगे १३ शिवी इन अभीष्ट बरदानों को पाकर समय पर स्वर्ग को गया हे संजय जो वह चारोंकल्याणोंमें तुझसे अधिक हैं १४ और तेरे पुत्र सेभी अधिक महात्मा पुरुष मरगया तब तुम यज्ञ और दक्षिणा से रहित अपने पुत्र का शोच मत करो यह नारदजी ने कही १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जीको भी शरीर त्यागनेवाला सुनते हैं जिस के साथ प्रजा लोग ऐसे प्रसन्नहुये जैसे कि औरस पुत्र को देखकर पिता प्रसन्न होताहै १ जिस बड़े भारी तेजस्वीमें असंख्यों गुणभरे हुयेथे और जो अबिनाशी लक्ष्मणजी के ज्येष्ठ भ्राता अपने पिताकी आज्ञा से

स्त्री समेत चौदहबर्ष तक बनमें नियतहुये उस नरोत्तम ने जो तप-स्वियों की रक्षाके निमित्त जन लोकनें चौदहहज़ार राक्षसोंकोमारा और रावण नाम महा प्रबल प्रतापी अतुल बल राक्षसने वहां पर निवास करने वाले २।३।४ रामचन्द्रजी की भार्य्या सीताजी को हरण किया उस राक्षस को अपने छोटेभाई समेत जाकर महा-हितकर युद्धमें अत्यन्त कोप करके श्री रामचन्द्रजी ने उस अपराधी अन्यसे अजेय पुलस्त्यबंशी रावण को ऐसे मारा ५ जैसे कि पूर्व्व समयमें शिवजी ने अन्धक को मारा था उस देवता असुरों सेभीन मरने वाले देवता और ब्राह्मणों के दुखदाई कंटक रूप ६ पुलस्त्य-बंशी रावण को उस महाबाहु रामचन्द्रजी ने युद्धमें उसके सब राक्ष-सोंके समूहोंसमेत मारा वह रामचन्द्रजी प्रजाओं परअनुग्रहकरके देवताओं से भी पूजनकिये गये ७ देवता और ऋषियों के समूहों से पूजित और सेवित सब जीवों पर दया करने वाले उन रामचन्द्र जीने संपूर्ण संसार को अपनी कीर्त्ति से व्याप्त करके नाना प्रकार के राज्यको पाकर फिर धर्म से प्रजा पालन करनेवाले समर्थ दश रथात्मजने अनर्गल बड़े राजसूय और अश्वमेध को किया और ह-बिषसे देवताओं के ईश्वर इन्द्र को प्रसन्न किया फिर उस राजा-धिराजने बहुत गुणवाले नानाप्रकार के अन्य२यज्ञोंसे भीपूजनकि-या १० सदैव अपनेगुणोंसे संयुक्तअपने तेजसे प्रकाशित रामचन्द्रजो शरीरवर्त्ती सम्पूर्ण रोगरूपक्षुधा पिपासा आदिकोभी बिजय किया अर्थात् निवृत्त किया ११ दशरथके पुत्र रामचन्द्रजो सबजीवमात्रों को उल्लंघन करके शोभायमान हुये राज्यमें श्रीरामचन्द्रकेसमान करने पर पृथ्वी के ऊपर ऋषि देवता और मनुष्यों का निबास हुआ १२ उस समय राज्य में रामचन्द्र जीके राज शासन करने पर जीवधारियों के प्राण नाशको प्राप्तनहीं हुये और प्राणअपान समान किसी के बिपरीत नहीं हुये अर्थात् किसी प्रकार का अनर्थ नहींहुआ १३ और किसीकी अपमृत्यु आदि कभी नहींहुई चारों ओरसे लोगोंकी वृद्धिहुई सबप्रजा पूर्णायुवालीहुई उससमय तरुण

अवस्था वाला नहींमरताथा और चारों वेदोंके मंत्रोंसे प्रसन्नदेवता अनेक प्रकार के हव्यकव्य और तड़ागादिक केही पूजन और यज्ञकोहीपातेथे और सबदेशमच्छरडांस और बिषवाले सर्पादिकों से रहितथे १५। १६ जलमें जीवोंकी मृत्यु नहींहुई और बिनासमयके अग्निने किसीको न जलाया उनके राज्य में मनुष्य लोभी मूर्ख और अधर्म करने वालेनहींहुये १७ तबसब वर्णअच्छे लोगों के प्रियकारी ज्ञानियोंके कर्मोंको करनेवाले हुये उस ईश्वरने जनस्थानपर राक्षसोंसे नाशकरीहुई स्वधा और पूजाको उनराक्षसोंको मारकरपितृ और देवताओंके अर्थदिया उस समय मनुष्यहज़ार २ पुत्रवाले और हज़ारोंवर्षोंकी अवस्था वाले उत्पन्न हुये थे उसकाल में बड़े भाइयोंने छोटेभाइयों से श्राद्धोंको नहीं करवाया उसश्याम तरुण अरुणाक्ष मतवाले हाथीकेसमान पराक्रमी आजानुबाहु सुन्दर भुजासिंहस्कन्ध महाबली सबजीवोंके आनन्ददायक श्रीरामचंद्र जीने ग्यारह हज़ार बर्षतक राज्यकिया राम रामति रामेति यही सब प्रजाकी रटना रहतीथी २१।२२ राज्यपर रामचन्द्रजीके राज्य शासन करने पर संसार रामचन्द्रजी से मनोहर और शोभायमान हुआ वहरामचन्द्र जी चार प्रकारकी सृष्टि को स्वर्गमें पहुंचा कर आपभी स्वर्गकोगये २३ वह रामचन्द्रजी इसलोकमें अपनेराजवंश को आठप्रकारसे नियतकरके शरीरके त्यागनेवाले हुये हे सृंजय वह भी सुधर्मादि चारों कल्याणों में तुझसे २४ और तेरे पुत्रसेभी अधिक धर्मात्माथे तब तुम यज्ञ और दक्षिणा देनेसे रहित होकर अपनेपुत्रकाशोककयों करतेहो यहनारदजीका कथनहै २५॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

साठवां अध्याय॥

नारदजी बोलेकि हेसृंजय हमराजा भगीरथको भी मृतक हुआ सुनते हैं जिसने श्रीभागीरथी गंगाके दोनों किनारे सुवर्णके चयोंसे संयुक्तकिये १ उसनेराजा और राजकुमारोंको उल्लंघनकर स्वर्ग-

मयी भूषणोंसे अलंकृत दशलाख कन्या ब्राह्मणोंकोदीं कि वह सब कन्या ऐसेरथोंपर सवारथीं किचार २ घोड़ोंसे संयुक्त प्रत्येक रथके साथ सौ२ हाथीसुवर्णकी मालाओंसे शोभितथे ३ और हरएकहाथी केपीछे हज़ार हज़ारघोड़े और घोड़े २ केपीछे सौ २ गाएं और गौ वोंकेपीछे भेड़ बकरियांभीथीं ४ और जोकि गंगाके सन्मुख बहुतसी दक्षिणा देनेवाला राजाबर्त्तमानथा उसकारणसे स्थानकी संकोचतासे जलकी आधिक्यताके भारसे आक्रांत और पीड़ामानहोकर गंगा उस राजाकी गोदमें बैठगई ५ इसके अनन्तरपूर्वकाल में जब भागीरथी गंगा जंघापर बिराजमानहुई तब गंगाजीने राजाकी पुत्री होनेकेभावकोपाया और नरकसेरक्षा करनेके कारण पुत्रभावको भी पाया ६ सूर्य्यके समान प्रकाशमान मनोहर बचनवाले गन्धर्वों ने पितृ देवता और मनुष्योंके सुनतेहुये उस गाथाको गाया ७ समुद्र में मिलनेवाली गंगादेवीने बड़ी दक्षिणासे यज्ञोंके करनेवालेइक्ष्वाकुबंशी भगीरथको अपनार्पिता बर्णनकिया ८ उस का यज्ञ इन्द्र समेत देवताओं के समूहों से सुन्दर अलंकृत और श्रेष्ठ रीति से रक्षित बिघ्नरोग और उपाधियों से रहितहुआ ९ निश्चय करके जिस २ वेदपाठी दैवज्ञब्राह्मणने जहांजहांपर अपनेअभीष्टको चाहा उसी २ स्थानपर भगीरथ ने अत्यन्त प्रसन्न होकरदिया १० उस राजाकेयहां ब्राह्मणको अदेयकोई भी बस्तु नहीं हुई जो जिसको अभीष्ट धनथावही उसने उसकोदिया वहराजाभी ब्राह्मणोंकीकृपा से ब्रह्मलोकको गया ११ जिस हेतुसे बालखिल्य आदि का ऋषि कर्मयज्ञ और ज्ञानयज्ञके प्राप्तहोनेके द्वारारूपसूर्य्य और उसकेभीतर नियत ज्योतिस्वरूप ब्रह्म के सन्मुख होना चाहतेहैं वहउसी प्रयोजनकेलिये उस भगीरथके सन्मुख होना चाहतेहैं क्योंकिवह मोक्षसे प्रकाशमान ईश्वर है अर्थात् सूर्य्यके दर्शन से जो पापनष्ट होतेहैं वही उसकेभी दर्शनसे पापका नाशहोताहै और जो सूर्य्यके अन्तर्य्यामीकी उपासनासे सत्य संकल्पादिकफल प्राप्तहोतेहैं वह उसकीभी उपासनासे प्राप्तहोतेहैं तात्पर्य्य यहहैकि ब्रह्मभावप्राप्त

करने से यहराजाभी उनऋषियोंकी उपासना और देखनेके योग्य हुआ १२ हे सृंजय जो वह भगीरथभी अर्थ धर्मादि चारोंकल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्र से भी धर्मात्मा शरीरका त्यागने वाला हुआ तबयज्ञ और दक्षिणासे रहित तुमअपने पुत्रका शोक मतकरो यह नारदजीका कहाहुआहै १३। १४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषष्टितमोऽध्यायः ६०॥

इकसठवां अध्याय॥

नारदजी बोलेहे सृंजय हमअलोलकेपुत्र दिलीपको मृतकहुआ सुनतेहैं जिसके शतयज्ञ में प्रयुत अयुत संख्यक ऐसे ब्राह्मणबर्त्तमानथे १ जोकि ब्रह्मज्ञान और अर्थ शास्त्र ज्ञाता याज्ञिक और पुत्र पौत्रादिसे संपन्नथे जिसयज्ञ करनेवाले राजाने इसधनसे भरी हुई पृथ्वीको २ विस्तृतहुये यज्ञमें ब्राह्मणोंके अर्थ दानकिया उस दिलीपकेयज्ञोंमें स्वर्णमय मार्ग बनायेगये उसके धर्मरूपकरनेवाले देवता अपने ईश्वर इन्द्रके समेतआये ३ जिसमें पर्व्वताकारहजार हाथी सामिग्री पहुंचानेकोजातेथे बहसबसभासुनहरी और अत्यन्त प्रकाशितहुई४ जिसमें रसोंकेतड़ाग औरभोजनकी बस्तुओंकेपहाड़ बर्त्तमानथे हेराजा सुनहरी यज्ञस्तंभ जिस में हजार व्यायाम के लम्बेथे ५ इन्द्र समेत देवता और अन्यजीवधारी उसको धर्म रूप करनेवाले हुये जिसके सुनहरी यज्ञस्तंभमें चषाल और प्रचपाल थे ६ उसके यज्ञमें छः हजार अप्सरा सात प्रकारसे नृत्यकरतीथीं और बिश्वावसु गंधर्वभी जहांपर अपनी प्रीतिसे आपही वीणा को बजाताथा और सबजीवोंने राजा को सत्य स्वभाव युक्त माना ७ मीठे २ भोजनों से मतवाले मार्गोंमें सोतेथे उस के उसकर्मको मैं अपूर्व्व मानताहूं उसके समानदूसराकोई राजा नहींहै ८ जोजल के मध्यमें युद्ध करनेवाले राजाके दोनोंरथके पहिये जलमेंनहींडूबे जिनमनुष्योंने उसदृढ़ धनुषधारी सत्यवक्ता ९ बड़ीदक्षिणादेनेवाले राजा दिलीपको देखाथा वहभी स्वर्गके विजयकरने वालेहुये उस

खट्वाङ्ग नामदिलीपके घरमें यहपांच प्रकारके शब्दकभी बन्दनहीं होतेथे वेदध्वनि, धनुष और प्रत्यंचाकाशब्द, और खाओपीओ भोगो यहशब्द, हेसृंजय जो वह चारों कल्याणों में तुझसे और तेरेपुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा मृत्यु बश होगया तो तुमयज्ञ और दक्षिणासे रहित होकर अपने पुत्रका शोकमतकरो यह नारदजीने कहा १२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकषष्टितमोऽध्यायः६१ ॥

बासठवां अध्याय॥

नारदजी बोले हे सृंजय हम युवनाश्व के पुत्र राजा मांधाता को भी मृतक सुनते हैं जोकि देवता असुर और मनुष्यों समेततीनों लोकों का बिजय करनेवाला था १ अश्विनीकुमार नाम देवताओंने जिसको पूर्व पिताके गर्भसे आकर्षण किया वह राजा आखेट में घूमता हुआ घोड़ों के थकित होने और परिश्रम से तृषित हुआ और कहीं घुएंको देख कर यज्ञ शालामें गया और दही मिलेहुयेघृत को पाया वैद्यों में श्रेष्ठ अश्विनी कुमार देवताओं ने युवनाश्व के उदरमें पुत्र रूप प्राप्त करने वाला उसको देखकर गर्भ से खैंचलिया पिता के पास सोने वाले देवता के समान तेजस्वी उसको देख कर ३।४ देवता लोग परस्पर में बोले कि इस का पोषण कौन करेगा इन्द्र ने कहा कि यह प्रथम मुझीको धारण करे अर्थात् मैंहीं इसका पोषण करूं ५ इसके पीछे इन्द्र की उंगलियों से दूध रूप अमृत प्रकट हुआ इन्द्रने जोकि उसपर कृपा करी कि यह मुझीको धारण करेगा ६ इस हेतुसे उसका अपूर्व्व नाम मांधाता कियागया इस के अनन्तर महात्मा इन्द्रके हाथने उस मांधाता के मुखमें दूध और घृत कीधारा गिराई उसने इन्द्र के हाथको पिया और एकही दिनमें बड़ा होगया ७।८ फिर वह पराक्रमी बारह दिनमें बारह बर्ष की अवस्थाके समान हुआ उसने इस संपूर्ण पृथ्वी को एकही दिनमें बिजय किया ९ उस धैर्य्ययुक्त धर्मात्मा सत्यसंकल्प जितेन्द्री मनके जीतने वाले बीर मांधाताने जन्मेजय, सुधन्वा, गय, पुरु, बृह-

इल, १० असित, और नृग, को बिजय किया सूर्य्य के उदय से अस्त पर्य्यन्त जितनी पृथ्वी है ११ वह सब युवनाश्व के पुत्र मांधा ताका क्षेत्र कहा जाताहै हे राजा उसने सैकड़ों अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञों से पूजन करके १२ ब्राह्मणोंके अर्थ ऐसी सुबर्ण बर्ण की रोहित मछलियां दान करीं जो कि एक योजन ऊंची और सौ-योजन लंबी थीं १३ उन यज्ञों में ब्राह्मणों से शेष बचेहुये भोजनों-को मनुष्य खातेथे और आदर करते थे उन अनेक प्रकारके भक्ष्यभो ज्यचूस्य लेह्य आदि सुस्वादु पदार्थोंके और अन्नके पर्व्वत लगेथे १४ खाने पीने की बस्तुओं के ढेर और अन्नके पहाड़ महाशोभायमान हुये घृत रूप ह्रद और सूप आदिक रूप कीच दधि रूप फेण और रस रूप जल १५ सहत दूधसे बहने वाली शुभ नदियों ने उन अन्न के पहाड़ों को घेर लिया वहां पर देवता असुर मनुष्य यक्ष गन्धर्व सर्प पक्षी १६ और बेद बेदाङ्ग पार गामी वेद पाठी ब्राह्मण और ऋषि लोग भी आकर नियतहुये वहां आने वालों में कोई भी अपंडित नहीं था १७ तब वह राजा अपने यशों से सब दिशाओं को व्याप्त करके पबित्र कर्मी पुरुषों के लोकों को गया हे सृंजय वह चारों कल्याणों में तुझ से और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा पुरुष मृत्यु बश हुआ उस दशामें यज्ञ और दक्षिणासे रहित तू अपने पुत्रका शोक मतकरे यह नारदजी ने कहा॥ १९। २०॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विषष्ठितमोऽध्यायः ६२॥

तिरसठवां अध्याय॥

नारद जी बोले हे सृंजय हम नहुष के पुत्र ययाति को मृतक सुनतेहैं उसने सैकड़ों राजसूय अश्वमधों सें पूजन करके १ ह-जार पुण्डरीक यज्ञ सैकड़ों बाजपेय यज्ञ हजार अतिरात्र यज्ञ अपनी इच्छा से चातुर्मास यज्ञ अग्निष्टोम आदि नाना प्रकार के दक्षिणा वाले यज्ञों से पूजन करके २ पृथ्वी पर ब्राह्मणों के शत्रु म्लेच्छोंका जो कुछ धन था वह सब छीन कर ब्राह्मणोंके अर्थ भेट

किया ३ देव दानवोंके अलंकृतयुद्धमें देवताओं की सहायता करके इस सम्पूर्ण पृथ्वी भरको चार ऋषियों को चार भाग करके बांट दी और नाना प्रकार के यज्ञों से पूजन कर उत्तम सन्तान को उत्पन्न करके ४ वह देवता के समान शुक्रजी की पुत्री देवयानी में और धर्म से शर्मिष्ठा में सन्ततिको उत्पन्न करके सब देवबनोंमें बिहार करने वाला हुआ ५ अपने स्वेच्छा चारी कर्म से दूसरे इन्द्रके समान सब बेदोंके ज्ञाताने जब इच्छाओंकी पूर्णताको नहीं पाया ६ तब इस गाथाको गाकर स्त्री समेत बनको चलागया पृथ्वी पर जितने धान्य जव सुवर्ण पशु और स्त्रीहैं ७ वह सब मिलकरभी एककी तृप्ति नहीं करसक्तेहैं ऐसा मानकर जितेन्द्री होना चाहिये इस प्रकार राजाययाति अपनी इच्छादिकों को त्यागकर धैर्य्यको पाकर ८ अपने पुत्र पुरुके राज्य पर नियत करके बनको गया हे सृंजय जो वह भी चारों कल्याणोंमें तुझसे ९ और तेरे पुत्र से भी अधिक धर्मात्मा प्रतापी होकर देहको त्याग गया तो तू यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित अपने पुत्रके शोक को मत कर यह नारदजीने कहा १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे सृंजय जो हम नाभाग के पुत्रअम्बरीष को मृतकहुआ सुनतेहैं कि जिसअकेलेनेहीलाखोंराजाओं सेयुद्धकिया १ बिजयाभिलाषी और अस्त्र युद्धकेज्ञाता और अशुभ अयोग्य बचनों के कहने वाले घोर रूप शत्रु युद्धमें उसके चारों ओर से सन्मुख गये २ तब वह राजा बल हस्त लाघवता शिक्षित अस्त्रोंके पराक्रम से उन्हों के छत्र ध्वजा और शस्त्रोंको काटकर प्राणोंको पीड़ादेने वालाहुआ ३ वह कवचके त्यागने वाले जीवनके अभिलाषी शरणागत शब्दके कहने वाले प्रार्थना को करते हुये उस शरण्य राजा की शरण में गये ४ हे निष्पाप फिर उस राजाने उन राजाओं

को आज्ञावर्त्ती कर और इस पृथ्वीको बिजयकरके शास्त्र की रीतिसे सैकड़ों यज्ञोंसे पूजन किया ५ उस यज्ञ में बेद पढ़ने वाले उत्तम ब्राह्मण बड़े पूजित होकर तृप्त हुये और दूसरे मनुष्योंने सदैव सब बस्तुओं से संयुक्त अन्नको भोजन किया ६ वहां पर ब्राह्मण लोग मोदक पूरिक पूप स्वादुष्ट शस्कुली करंभ पृथक् और अच्छे प्रकार बनेहुये रुचिदायक अन्न सूप मैरिक पूप राग खांडव पानक और अच्छी रीतिसेबनाये हुये मृदु सुगंधित मिष्टान्न ८ घृत सहत दूध जल दही यह सब और रसोंसे युक्त अत्यन्त चित्त रोचक फल औरमूलोंको भोजन करतेथे ९ मदकी उत्पन्न करने वाली पापकी मूल मद्यादिकों को अपना आनन्द दायक जानकरमद्यपीनेवालोंने गीत बाद्यों समेत अपनी २ इच्छानुसार सबने पान किया १० वहां पर प्रसन्न और मदों से उन्मत्तोंने नाभाग की प्रशंसाओंसे भरीहुई गाथाओंको गान कर करके पढ़ा और हजारों नृत्य करने लगे ११ राजा अम्बरीष ने उन यज्ञों में दक्षिणाओं को दिया उस यज्ञ में एक लाख दश प्रयुत १२ राजाओंकी संख्याथी उन सब सुनहरी कवच श्वेत छत्र और चामर रखने वाले सुनहरे रथ पर चढ़ेहुये राजाओंको उनके बस्तु लेचलने वाले अनुगामियों समेत १३ और मूर्द्धाभिषिक्त राजाओंको और सैकड़ों राज कुमारोंको उसबिस्तृत यज्ञ में पूजन करने वाले राजा ने दक्षिणा दिया १४ हे सृंजयजो वह चारों कल्याणों में तुझ से और तेरे पुत्र सेभी अधिक धर्मात्मा काल बश हो गया तो तू यज्ञ और दक्षिणाओं से रहित पुत्र के शोचने को नहीं योग्य है यह नारदजीने कहा १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुष्षष्ठितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि हे सृंजय हम राजा शशिबिन्दु को मृतक सुनते हैं उस श्रीमान् सत्य पराक्रमी ने नाना प्रकार के यज्ञों से पूजन किया १ उस महात्माकी एक लाख स्त्रियांथीं प्रत्येक भार्य्या

के हजार २ पुत्रहुये २ वह सब बड़े पराक्रमी नियुत यज्ञोंके कर्त्ता वेद वेदांगों के पारगामी उत्तम याज्ञिक राजा नाम ३ उत्तम सुनहरी कवच और श्रेष्ठ धनुषधारी अश्वमेधी शशिबिन्दुके कुमारथे ४ हे महाराज उनके पिताने अश्वमेध यज्ञमें उन कुमारों को ब्राह्मणों की भेंट किया तब प्रत्येक राज पुत्र के पीछे सौ २ रथ और हाथी गये तब सुवर्ण भूषणों से अलंकृत कन्याओं का दानकिया हरएक कन्याके साथ सौ हाथी और हर हाथीके साथ सौ २ रथ दिये ६ और हर एक रथ के साथ पराक्रमी और सुनहरी माला रखनेवाले सौ २ घोड़े और घोड़े २ के साथ हजार २ गौ और प्रत्येक गौके साथ पचास कंबल ७ महा भाग शशिबिन्दुने बड़े अश्वमेध यज्ञमें यह असंख्य धन ब्राह्मणों को दान किया ८ बड़े अश्वमेध यज्ञ में जितने यज्ञस्तंभ और चैत्यथे वह उसी प्रकार बनेरहे फिर उतने ही दूसरे स्वर्ण मयी हुये ९ उस राजा के अश्वमेध यज्ञके समाप्त होने पर एक कोश ऊंच खाने पीने के पर्व्वताकार ढेर तेरह बाकी रह गये राजा शशिबिन्दु प्रसन्न और नीरोग शरीर मनुष्यों से पूर्णरोगादि बिघ्नोंसे रहित इसपृथ्वीको बहुतकाल तक भोगकर स्वर्गकोगये ११ हेसृंजय जोवहचारों अर्थधर्मादिक चारोंकल्याणों में तुझसे औरतेरेपुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा इसदेहको त्यागगये तो तुमदक्षिणा सहित यज्ञके नकरनेवाले होकर अपने पुत्रकोशोकमत करो यह नारद जीनेकहा है १२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

छाछठवां अध्याय॥

नारदजी बोलेकि हे सृंजयहम अमूर्त्तरयस कोभी मृतक हुआ सुनतेहैं निश्चय करके यहराजा सौवर्षतक यज्ञके शेषबचेहुयेहव्य का भोजन करनेवालाहुआ १ अग्निने उसको वरदिया फिर गयने उससे वरमांगा कि तप, ब्रह्मचर्य्य, व्रत, नियम और गुरुओं की प्रसन्नता समेत वेदों को जानना चाहताहूं और अपने धर्मसे दूस-

रोंको न मारकर अविनाशी धनको चाहताहूं ३ ब्राह्मणोंमें दानदेने की सदैव मुझको श्रद्धाहोय औरदूसरेमें चित्त न लगानेवालीसजातीय स्त्रियोंमें मेरेपुत्रोंका जन्महोय ४ अन्नदान करने में मेरीश्रद्धा होय धर्ममें मेरामनरमे और हे अग्निमेरे धर्मकार्य्योंमें कभीविघ्न न होय तथास्तु अर्थात् ऐसाही होगा ऐसेकहकर अग्नि उसीस्थान में गुप्तहोगये गयनेभी उनसब बरदानों को पाकर धर्मसे शत्रुओं को बिजयकिया ६ उसराजाने दर्श,पूर्णमास, आग्रयण, चातुर्मास, और पूर्ण दक्षिणावाले नानाप्रकार के यज्ञोंसे पूरे सौबर्षतक श्रद्धा समेत पूजनकिया एकलाख गौ दशहजार घोड़े ८ एकलाख निष्क प्रातःकालके समय प्रतिदिन उठ २ कर ब्राह्मणों को दानकी ६ नक्षत्रों के समान दक्षिणा देनेवाले सबनक्षत्रों में दानकिया और अन्य २ बहुतप्रकारके यज्ञों से ऐसे पूजन किया जैसे सोम और अंगिराने कियाथा १० जिस राजाने बड़ेभारी अश्वमेध यज्ञ में पृथ्वीको स्वर्णमयी और मणिरूप कंकड़ रखनेवाली बनवाकरवेद पाठी ब्राह्मणोंके अर्थदानकरी ११ राजागयके सब सुबर्ण के यज्ञस्तंभ रत्नोंसे जटित बड़ेधनवाले होकर सबजीवोंके चित्त रोचक हुये १२ तबगयने सबअभीष्ट बस्तुओंसे युक्त अन्नको अत्यन्तब्राह्मण आदि सब जीवोंके निमित्त दानकिया समुद्र समेत बन,द्वीप, नदी, नद,नगर,देश औरस्वर्ग आकाशादि में१४ जो नानाप्रकारके जीवों के समूहहैं वहसबयज्ञके धनधान्यसे अच्छेप्रकारतृप्तहुये और तृप्त होकरकहनेलगे किराजागयके समानदूसराकिसीका यज्ञनहींहै १५ छब्बीसयोजनचौड़ी और तीसयोजनलंबी और आगेपीछेसे चौबीस योजन सुनहरी बेदी उस यजमान रूप राजागय की थी उसने मोती हीरे मणि श्रवे बस्त्रऔर भूषणादिक ब्राह्मणों के निमित्त दान किये १७ और बड़ी दक्षिणा देने बालेने शास्त्र की आज्ञानुसार दूसरी दक्षिणा ब्राह्मणोंके लिये दानकी यहां पर यज्ञ से शेष बचे हुये भोजनों के पच्चीसपर्व्वत थे १८ तब रसोंके तड़ागों से पृथ्वी पर चेष्टा करने वाली नदियां बहींऔर बस्त्र भषण और सुगन्धित

बस्तुओंकेढेर पृथक् प्रकार के थे १६ और जिसके प्रभावसे राजा गय तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ वह अबिनाशी अंगवाला पबित्र बट ब्रह्मसर नाम है २० हे सृंजय जो वह अर्थ धर्मादिक चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा होकर मर गया तो यज्ञ और दक्षिणाओंसे रहित पुत्रका शोक मत कर यह नारदजीने कहा २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हेसृंजय हम सांकृतिरन्तिदेवको मृतकहुआ सुनतेहैं जिस महात्माके भोजनबनानेवालेसूपशास्त्रज्ञ दोलाखथे १ जोकि घरमें आये हुये अतिथि ब्राह्मणोंको अमृत के समान उत्तम पक्के और कच्चेअन्नको अहर्निश परोसा करतेथे २ न्याय से प्राप्त हुये धनको ब्राह्मणों के अर्थ दानकिया और धर्मसे बेदोंको पढ़कर शत्रुओंको अपने आधीन किया ३ स्वर्ग के चाहने वाले बहुत से पशु बिधिके अनुसार जिस यज्ञ से पूजन करने वाले स्तुतिमान राजाकेपास आप आआकर नियतहुये४जिसकेरसोईके घरके चर्म समूहों से नदी बर्त्तमान हुई उसी हेतु से पूर्व्व समय में अग्निहोत्रके मध्यमें चर्मण्वती नाम नदी बिख्यात हुई ५ वह तेजस्वी ब्राह्मणों के अर्थ सुवर्णके निष्कों को देताहुआ बड़ी प्रसन्नता से बोला कि तेरे अर्थ निष्क तेरे अर्थ निष्क तेरेअर्थ २ ऐसी रीतिसे कहकर हजारों निष्कों को दानकिया ६ फिर उसके पीछे बिश्वास कराके निष्कों को देताथा ७ अब मैंने थोड़ादिया यह कहता हुआ एकही दिनमें हजारों कोटि निष्क देताथा कि फिर दूसरा इसको कौनदेगा ८ ब्राह्मण का हाथखालीहाने से निस्संदेह मुझकोबड़ा दुःख होगा इस प्रकार से राजाने धनको दान किया ६ सैकड़ों गौ के पीछे चलने वाले सुनहरे हजारों बैल और इसी प्रकार वह निष्कधन जोकि एक सौ आठ सुवर्ण का कहा जाता है हर एक

पक्षमें सौ बर्ष तक ब्राह्मणों को दानकिया अग्निहोत्र की सामग्रियां यज्ञ के उपकारी औ जारहैं अर्थात् कमंडल, घट, स्थाली, पीठर, शयन, आसन, सवारियां, महल, गृह १२ नाना प्रकारके वृक्षऔर अनेकप्रकार के अन्न व धनोंको ऋषियों के अर्थ दिया इस बुद्धिमान रन्तिदेवका सब पुर सुवर्णका था १३ वहां पर जो २ पुराणके ज्ञाता पुरुषथे वे सब उस बुद्धिमान से परे रन्तिदेवकी लक्ष्मीको देखकर उसकी गाथाको गाने लगे १४ ऐसा पूर्ण धन जो इसके यहांथा वह पहले कभी कुबेरके यहां भी नहीं देखाथा तो मनुष्यों में क्याहोगा १५ वहां मनुष्यों ने आश्चर्य्यित होकर यह कहा कि प्रकटहै कि उस रन्तिदेवके घरमें जो अतिथि एकरात्रि निवासकरे वह उत्तम धनों को पाता है यह जानकर उसके घरमें अतिथि आये १६ तब उन अतिथियों ने इक्कीस हजार गौओंको पाया और वहांपर अत्यन्त स्वच्छमणि कुण्डलधारी रसोइये पुकारे १७ कि बहुत से शाका दिकों को और तरकारियों को खाओ अबपूर्वके समान मांस नहीं है तब रन्तिदेव का जो कुछ रसोई आदिका सामानथा वह सब सुनहरी होगया १८ बिस्तृत यज्ञमें वह सब ब्राह्मणोंके अर्थ दानकिया देवताओंने उसके समक्षमें हव्यों को लिया १९ समयपर पितरों ने कव्योंको लिया औरश्रेष्ठ ब्राह्मणोंने सब अभीष्टोंको प्राप्तकिया हेसंजय जो वह चारों कल्याणोंमें तुझसे और तेरे पुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा मृत्यु बशहुआ तब यज्ञ और दक्षिणासे रहित तुम अपने पुत्रके शोकको क्यों करतेहो यह नारद जीने कहा २१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

अड़सठवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे संजय हम दौषीनत के पुत्र भरतको भी मराहुआ सुनतेहैं जिसबालकने बनके मध्यमें अन्यसे कठिनतासे होनेके योग्य कर्मकोकिया १ अर्थात् उसपराक्रमी ने हिमावटप्रकार

के नख डाढ़ रूप शस्त्रधारी सिंहोंको अपनी तीव्रता से निर्बल करके खैंचा और बांधा २ और जिसने निर्दयी भय कारी रक्त पीत रंगवाले व्याघ्रोंको पराजय करके अपने स्वाधीन किया ३ फिर बड़े पराक्रमी ने व्याल और सुप्रतीकबंशी हाथी जोकि मुख फिरे हुये सूखे मुख वालेथे उनके दांतोंको पकड़ कर अपने बशीभूत किया ४ उस बड़े बली ने बलवान भैंसों को भी खैंचा और सैकड़ों अत्यन्त दृप्त सिंहोंको अपनेबलसे खैंचा बड़े बली समर गैंड़े आदि अनेक प्रकार के जीवोंको भी प्राणोंके कष्ट समेत बनमें बांध कर और अपने स्वाधीनकर करके फिर छोड़ दिया ६ ब्राह्मणोंने उसके उस कर्म से उसका नाम सर्बदमन नामरक्खा माताने उस को निषेध किया कि तू जीवोंको मत मार ७ उस पराक्रमी ने यमुना जीके समीप सौ अश्वमेध से पूजन करके सरस्वती के तटपर तीनसौ घोड़ों को और गंगाजी के समीप चारसौ घोड़ोंको छोंड़ा ८ फिर उसने उत्तम पूर्ण दक्षिणावाले बड़े २ हजार यज्ञ सौ अश्वमेध औ सौ राजसूय यज्ञों से पूजन किया ९ अग्निष्टोम और अतिरात्र नाम यज्ञों से पूजनकर बिश्वजित यज्ञसे पूजन करके अच्छी रक्षासे युक्त लाखों बाजपेय नाम यज्ञोंसे भी पूजन किया १० जिन यज्ञोंमें शकुन्तला के पुत्र राजा भरतने ब्राह्मणोंको देखकर धनों से तृप्त करके कण्व ऋषिके अर्थ हजार पद्ममुद्रा दिये ११ बड़े यशस्वीने जाम्बूनद नाम शुद्ध सुवर्ण को दिया और उसका सुनहरी यज्ञस्तंभ दोसै गज लंबा था १२ जिस प्रतापी ने ब्राह्मण और इन्द्र समेत सब देवताओं से मिलकर सब प्रकारके चित्तरोचक रत्नोंसे अलंकृत और प्रकाशमान १३ स्वर्णालंकृत घोड़े हाथी रथ ऊंट भेड़ बकरी दास दासी धन धान्य और दूध देनेवालीसबत्सा गौ १४ ग्राम गृह क्षेत्र और अनेक प्रकारके किरोड़ों सामानों को ब्राह्मणों के अर्थ दान किया १५ निश्चय करके वह चक्रवर्त्ती प्रतापवान शत्रुओं को पराजय करने वाला और शत्रुओं से सदैव अजेय था हे संजय जो व चारों कल्याणों में तुझसे और तेरे पुत्रसे

भी अधिक १६ धर्मात्मा कालकेवशीभूतहुआ तो तू यज्ञ और दक्षिणा से रहित अपने पुत्रका शोक क्यों करताहै यह नारदजीनेकहा १७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

नारदजी बोले कि हे संजय बेणुके पुत्र राजापृथु को भी हम मृतक हुआ सुनते हैं जिसको राजसूय यज्ञ में महर्षियों ने सम्पूर्ण संसार के राज्य पर अभिषेक कराया १ सबके ऊपर अपना आतंक प्रबल करते हुये राजाने उपाय करके इसधराको पृथ्वी प्रसिद्धकिया इसी हेतुसे इस राजाको पृथु कहते हैं और वह हम सब घायलोंकी रक्षा करताहै इस कारण से वह क्षत्री हुआ २ और जिस निमित्तसे प्रजाके लोग पृथुको देख कर यह बचन बोले कि हमसब प्रीतिसे युक्त अत्यन्त प्रसन्न हैं इस हेतुके द्वारा उसकी प्रीति से इसका नाम राजा हुआ ३ जिस पृथुकी पृथ्वी कामधेनु अर्थात् अभीष्टों को प्राप्त करने वाली और अकृष्टपच्या अर्थात् जोतने आदिके भी बिना अनाजों की उत्पन्न करनेवाली हुई औरसब गौयें कामनाओं की दाता पुट पुट में मधुकी रूप होगईं ४ दर्भ सुख से स्पर्श करने के योग्य महा सुखदाई सुनहरी रंग की हुईं उन्होंके बस्त्रोंको प्रजालोगोंने अपने शरीरका आच्छादन बनाया और उन्हीं पर शयन भी किया ५ फल अमृत के समान स्वादु युक्त औरमधुरतासे युक्तहुये वही उन सबका आहार हुआ निराहार कोईनहीं हुये ६ सब मनुष्य रोगों से रहित अभीष्ट काम निर्भय होकर वृक्षों के नीचे अथवा पर्व्बतों की गुफाओंमें निवासी हुये उस समयतक देश और पुरोंका बिभाग नहीं हुआ था इसी प्रकारसे यह सब प्रजा सुख पूर्व्बक अपनी इच्छानुसार प्रसन्न हुई ८ उस समुद्रमें जाने वाले राजा के जल अच्छी रीतिसे नियत हुये और पर्व्बतोंने मार्ग दिया उसकी ध्वजा भी कभी नहीं टूटी ९ बनस्पति, पर्व्बत, देवता, असुर, मनुष्य, सर्प, सप्तऋषि, पबित्र देहधारी गन्धर्ब, अप्सरा,

और पितृ, देवता, उस सुख पूर्व्वक बैठे हुये राजाके पास जाकर यह बचन बोले कि आप सब संसरके राजाहो क्षत्रीहो और हमारे राजा और रक्षक होनेसे पितारूप हो ११ हे महाराज आप समर्थहो इस निमित्त से हम सब को वह अभीष्ट बरदानदो जिन बरप्रदनों के द्वारा हम सब सुख पूर्व्वक सदैव तृप्ती को प्राप्त करें १२ राजा पृथुने तथास्तु अर्थात् ऐसाही होय यह कह कर अजगव नाम धनुषको और अनुपम भय कारी बाणों को लेकर बड़ी चिन्ताकरताहुआ पृथ्वीसे बोला १३ कि हे पृथ्वी तेरा कल्याण होय आओ आओ और शीघ्रता से इन प्रजाओं के निमित्त अभीष्ट दुग्ध कोदो इसके पीछे मैं उस अन्नको दूंगा जो जिसको अभीष्ट है १४ पृथ्वी बोली कि हे बीर तुम मुझको अपनी पुत्री करके संकल्प करने के योग्य हो फिर उस योगी राजापृथुने ऐसाही होय यह बचनकहकर सब बिधान को किया १५ तब उस के पीछे उस जीवोंकी निवासस्थान पृथ्वी को दोहन किया प्रथम उसके दोहनेकी अभिलाषा वाली बनस्पति उठीं १६ वह प्रीतिसे संयुक्त पृथ्वी बछड़ेको दूध निकालने वाले को और पात्रोंको चाहती हुई नियतहुई तब फूलोंसे संयुक्त शालका वृक्ष तो बछड़ाहुआ और दुहने वाला प्लक्षका वृक्षहुआ १७ काटनेसे अंकुरका निकलना दूध हुआ और औदुम्बर पात्रहुआ और उदयाचल पर्व्वत बछड़ा और सब से बड़ा मेरुपर्व्वत दुहने वाला १८ रत्न औषधी आदिक दूध और पाषाण रूपपात्र हुआ फिर सबदेवताओंका समूह तो बछड़ाहुआ और इन्द्रसुनहरी पात्रहुआ और सबिता देवता दूधके निकालने वालेहुये और दूधपराक्रम उत्पन्न करनेवाला अथवा जीवदान देने वाला सबका प्रियकारी हुआ १ असुरों ने आमपात्र में मद्य को दुहा वहांपर दूध निकालनेवाला द्विमूर्द्धाहुआ और बछड़ा वैरोचन नामअसुर हुआ इसी प्रकार पृथ्वीपर मनुष्योंने खेतीके अनाजों को दुहा वहां स्वायंभूमनुबछड़ा औरउन्होंका दूध निकालने वालाराजा पृथुहुआ २१ इसी प्रकारतांबे के पात्र में पृथ्वी के बिषको दुहा

वहांधृतराष्ट्र सर्पतो दूधको दुहनेवाला और बछड़ा तक्षकहुआ २२ इसी प्रकार सुगम कर्मी सप्तऋषियों के द्वारा वेदकोभी दुहा वहां दुहनेवाले वृहस्पतिजी छन्दपात्र और बछड़ा सोमराट हुआ २३ विराटने धर्मात्मा पुरुषोंके साथ आमपात्र में आन्तर्द्धान शक्ति को दुहा उन्होंका दुहनेवाला वैश्रवण अर्थात् कुबेरदेवता और शिव जी बछड़ेहुये २५ गन्धर्व और अप्सराओं ने कमल पात्रमें पबित्र सुगंधियों को दुहा उनका बछड़ा चित्ररथ गन्धर्व और दुहिनेवाले बिश्वरुचि प्रभुहुये २५ पितरोंने चांदीके पात्रमें स्वधारूप पितरों के अन्नको दुहा तब उन्होंकाबछड़ा वैवस्वत और दुहनेवाले यमराजहुये २६ इसप्रकार करके उसबिराटने उन समान धर्मवालोंजीव समूहों समेत अभीष्ट दुग्धोंकोदुहा निश्चय करके अब जिन पात्र और बछड़ोंके द्वारासदैव निर्बाह करतेहैं २७वेणुकेपुत्र प्रतापवान राजापृथ्वीने नाना प्रकारके यज्ञोंसे पूजनकर और चित्तके प्यारे सब अभीष्टोंसे जीव धारियोंको अत्यन्त तृप्तकरके २८ धनवान कर दिया और जोकोई राजापृथ्वी परथे उनसबको राजानेबड़े अश्वमेध नामयज्ञमें ब्राह्मणोंके अर्थदानकिया ३० राजाने इसमणि रत्नोंसे अलंकृत सबपृथ्वीको स्वर्णमयी किया और सुबर्ण मय करके सब ब्राह्मणोंको दानकरदी ३१ हे संजय जो वह चारों कल्याणोंमें तुझ से और तेरेपुत्रसे भी अधिक धर्मात्मा पुरुष इससंसारको त्यागगया तबयज्ञऔर दक्षिणा देनेसे रहित अपने पुत्रकाशोक मतकर यह नारदजी ने कहा ३२।३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

नारदजी बोले कि बड़े तेजस्वी पराक्रमी लोकमें कीर्त्तिमानबड़े यशस्वी जमदग्निजो के पुत्र परशुरामजी संसार से तृप्तो न पाने वाले भी अपने शरीरको समय पर त्यागकरेंगे १ जिस हेतुसेइस संसार को सुखी करतेहुये परशुराम जीनेइस पृथ्वी में भ्रमणकिया,

और अतुल्य धनको पाकर भी जिनकी रूपान्तर दशा नहीं हुई २ जिन्होंने बनमें क्षत्रियों के हाथसे पिताके घायल करने औरमारने पर युद्धमें अन्योंसे विजय न होनेवाले कार्त्तबीर्य्यको मारा ३ तब अकेलेनेही मृत्यु के पंजेमें दबेहुये चौंसठ अयुत हजार क्षत्रियों को एकही धनुष से विजयकिया ४ ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवाले उन क्षत्रियों के विध्वंस करनेमें चौदह हजार को मारा और बहुतों को पकड़कर दन्तक्रूर को मारा ५ हजारोंको मूशलसे हजारोंको खड्ग से हजारोंको फांसीसे और हजारोंकोजलमें डुबोडुबोकर मारडाला ६ हजारों के दांतोंको तोड़कर नाक कानों को काटा इसके पीछे सातहजार को कटु धूमवाली अग्नि में गिराया ७ शेषबचेहुयोंको बांधकर मृतककर उनके मस्तकोंकोविदीर्ण करके गुणावतीकउत्तर खांडोव बनके दक्षिण ओरको युद्धमें मारेहुये लाखोंही क्षत्री पृथ्वी में समागये८पिताके मरने से महाक्रोधभरे बुद्धिमान परशुरामजी के हाथ से रथ घोड़े और हाथियों समेत मारेहुये बड़े २ बीर उस स्थान में शयन करनेवाले हुये ९ तब परशुरामजीने अपने फरसे से दशहजार क्षत्रियोंको मारा और उन बचनों को नहींसहा जोकि उन ब्राह्मणोंसे बारम्बार कहे गयेथे १० जब उत्तम ब्राह्मण पुकारे कि हेभृगुबंशी परशुरामजी दौड़ो उसके पीछे प्रतापवान परशुरामजी ने काश्मीर, दरद, कुन्ति, क्षुद्रक, ११ अंग, बंग, कलिंग, बिदेह, ताम्र, लिप्तक, रक्षोबाह, बीतिहोत्र, त्रिगर्त्त, मार्त्तिकावत, शिवी, और देशदेशके दूसरे हजारों राजाओं को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मारा १३ क्षत्रियों के लाखों कोटि संहार किये इन्द्रगोपकअर्थात् बीरबहूटीके रंग वाले अथवा बंधुजीव वृक्षके समान१४ रुधिरों के समूहों से नदियोंको पूर्ण करके उन भार्गवजी ने अष्टादश द्वीपोंको अपने स्वाधीन करके १५ उत्तम पूर्ण दक्षिणा वाले हजारों पबित्र यज्ञोंसे पूजन किया और आठ ताल वृक्षोंके समान ऊंची ब्रह्माजीकी बनाईहुई स्वर्णमयी वेदीको सब प्रकार के हजारों रत्नोंसे जटित सैकड़ों पताका रूपमाला रखने वाली ग्रामीण और

बनके बसने वाले पशुओंके समूहोंसे पूरित उस पृथ्वीको १७फिर स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत लाखों गजेन्द्रोंको यमदग्निजी के पुत्र परशुरामजी के दिये हुयोंको कश्यप जीनेलिया १८ परशुरामजी ने पृथ्वी को चोरोंसे रहित करके उत्तम अभीष्ट पदार्थों से पूर्ण धरा देवीको बड़े अश्वमेध यज्ञमें काश्यपजीके अर्थ दानकरदिया १८ उस प्रभुपराक्रमी वीरने इक्कीसबार इस पृथ्वीकोक्षत्रियों से रहित करके और सैकड़ों यज्ञोंसे पूजन करके ब्राह्मणोंकेनिमित्त दानकिया २० मरीचिके पुत्र कश्यप ब्राह्मणने सप्तद्वीपा पृथ्वीको दानमेंलेकर परशुरामजी से कहा कि अब मेरी आज्ञासे आप इस पृथ्वीसे बाहर निकलजाओ २१ ब्राह्मण की आज्ञा पालन करने वालेउस श्रेष्ठशूरवीर प्रतापीने कश्यपजी के वचनसे बाणोंकेगिरनेके स्थानतक समुद्रको हटाकर २२ पहाड़ोंमें श्रेष्ठ वायुके समान महेन्द्र पर्वतपर निवासस्थान किया इस रीतिसे हजारों गुणोंसे संपन्न भृगुवंशियोंको कीर्त्ति के बढ़ानेवाले २३ बड़े यशस्वी तेजस्वी परशुरामजी भी अपने शरीरको त्यागकरेंगे जो कि चारों कल्याणों में तुझसे और तेरेपुत्रसेभी अधिक धर्मात्मा हैं २४ फिर तू यज्ञ न करने वाले दक्षिणा देनेसे रहित अपने पुत्र को मतशोच हे नरोत्तम सञ्जय यह सब तुझसे चारों कल्याणों में अधिक किन्तु सैकड़ों कल्याण अधिक रखने वाले बशहुये २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

यह सोलह राजाओंका वर्णन समाप्त हुआ ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

व्यासजी बोलेकि वहराजा संजय सोलह राजाओंके इस आख्यानको जोकि धर्मउत्पन्न करनेवाला और पूर्णायुका करनेवाला है सुनकर बोलताहुआ मौनहुआ १ भगवान् नारद ऋषि उस मौन होनेवाले राजा से बोले कि हेबड़ेतेजस्वी तुमने मेरेकहे हुये

इतिहासोंको सुनकर अंगीकारकिया २ अबकहो कि इन इतिहासों के सुननेसे यहतेरा शोकऐसा दूरहुआ जैसाकि शूद्रास्त्री के पति में श्राद्धनाश होताहै इसबचनको सुनकर राजा सञ्जय हाथजोड़कर बोले ३ हे महाबाहो प्राचीन यज्ञ करनेवाले और दक्षिणा देनेवाले राज ऋषियों के इसधन धान्यादि को देनेवाले उत्तम इतिहास को सुनकर ४ जैसेकि सूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकार दूरहोताहै उसीरीति से आश्चर्य्य समेत शोकके दूरहोनेपर पापोंसे रहित और पीड़ासे बिगतहूं अब आपआज्ञाकरें कि मैं क्याकरूं ५ नारदजी बोले कि तुम प्रारब्धसे निःशोक होकर जो चाहतेहो सो मांगो वहसब तुम को मिलैगा हमें मिथ्या बादीनहींहैं ६ सञ्जय बोले कि अबजो आप मुझपर प्रसन्नहैं मैं इसीसे बहुत आनन्दितहूं जिसपर आपप्रसन्न हैं उसको कोईबस्तु दुष्प्राप्य नहींहै ७ नारदजी बोले कि यज्ञ के निमित्त संस्कार कियेहुये पशुके समान नर्करूप दुखसे उठाकरतेरे उस पुत्रको फिर देताहूं जोकि चोरों से निरर्थक मारा गयाहै ८ व्यासजी बोलेकि इसके पीछे प्रसन्न हुये ऋषिका दियाहुआ पुत्र फिर प्रकट हुआ वहपुत्र अपूर्व्व प्रकाशमान कुवेरके पुत्र केसमान था ९ इसके पीछेराजा अपनेपुत्रसे मिलकर प्रसन्नहुआ और धर्म उत्पन्न करनेवाले पूर्ण दक्षिणा के यज्ञों से पूजन किया १० वह अभीष्टोंको न प्राप्त करनेवाला भयभीत यज्ञोंसे रहित असन्तान बालक युद्धमें नहींमारा गयाइसी हेतुसे वहफिर सजीव हुआ ११ शूर बीर अभीष्टोंको प्राप्त करनेवाला अभिमन्यु हजारों शत्रुओंको संतप्त करके सेनाके सन्मुख माराहुआ होकर गया १२ ब्रह्मचर्य्य ज्ञानशास्त्र और इष्टोनाम यज्ञों से जिन लोकोंको जातेहैं तेरापुत्र उन्हीं अबिनाशी लोकोंको गया १३ ज्ञानीलोग सदैव धर्मउत्पन्न करने वाले कर्मोंके द्वारा स्वर्गकोचाहतेहैं परन्तु इससंसारी पृथ्वी को स्वर्गबासी लोग स्वर्गसे श्रेष्ठ न समझकरनहीं चाहतेहैं १४ इस हेतुसे युद्धमें माराहुआ स्वर्गबासी अर्जुनका पुत्र यहां लानेकेयोग्य नहीं है और कोई पदार्थ उसको अपेक्षित नहीं हैं क्यों कि

सब उत्तमपदार्थ उसको प्राप्त हैं १५ ध्यानसे एकान्त में ब्रह्मका दर्शनकरने वाले योगी जिस को पाते हैं और यज्ञ करने वाले उत्तम पुरुष जिसको पातेहैं और वृद्धि पानेवाले जिसको तपोंके द्वारा पाते हैं उस अबिनाशी गतिको तेरे पुत्रने पायाहै १६ फिर वह भगवत् भक्तवीर चन्द्रमा की किरणों से राजाके समान समीप बर्त्तमान है वह अभिमन्यु ब्राह्मणोंसे वृद्धिपाने के कारण चन्द्रमाके शरीरको प्राप्त हुआ वह शोकके योग्य नहीं है १७ इसप्रकार से जानकर दृढ़चित्ततासे शत्रुओंको मारधैर्य्यको प्राप्तकरो हे निष्पाप हमजीवतेही शोचने के योग्यहैं और स्वर्ग में पहुंचे हुये जीवधारी तो कभीभी शोचनेके योग्य नहीं हैं १८ हे महाराज शोच करने से पापही बढ़ता है इस हेतुसे मनुष्य अपने शोकको त्याग करके अपने कल्याणके निमित्त उपायकरे १६ बड़ी प्रसन्नता ज्ञान और सुखकी प्राप्तीका बिचारकरे बुद्धिमानों ने इसको जानकर कल्याण को कहाहै शोक कल्याण नहीं कहा जाताहै २० हे ज्ञानी तुमइस प्रकारसेउठो और नियमके धारण करनेवाले होकर शोचको त्याग करो तुमनेमृत्युके प्रतापोंको अनुपम उपमाओंसेयुक्त दृष्टान्त समेत सुना २१ और सबऐश्वर्य्य बिनाशवानहैं यहभी सुनाऔर मराहुआ और फिर सजीव हुये संजयके पुत्रको भी सुना २२ हे ज्ञानी महा राज तुम इस प्रकार से शोचमतकरो मैंअब जाताहूं इतना कहकर भगवान् व्यास ऋषि उसी स्थान पर गुप्त होगये २३ युधिष्ठिर को इसरीतिसे समाश्वासन करके उनबक्ताओंमें श्रेष्ठ भगवान् बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ स्वच्छ अभ्रके समान प्रकाशित व्यासजीके चले जाने पर २४ महा इन्द्रके समान तेजस्वी न्यायसे धन उपार्जन करने वाले प्रथम महाराजाओंके यज्ञों के धनों को सुनकर २५ चित्त से प्रशंसा करता हुआ वह ज्ञानी युधिष्ठिर शोक से रहित हुआ परन्तु फिर भी उस के दुखी मन ने चिन्ता करी कि मैं अर्जुन से क्याकहूंगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस भय कारी जीवों के नाश करने वाले दिनके समाप्तहोने और श्रीमान् सूर्य्यके अस्तहो-ने संध्याकाल वर्त्तमान होने १ और निवास के लिये सब के चले जाने पर हनुमान् जीकी ध्वजा रखने वाला अर्जुन दिव्य अस्त्रों से संसप्तकोंके समूहोंको मारकर २ अपने बिजयी रथ पर सवारहोकर अपने डेरोंको आया अश्रुपातों से पूर्ण गद् द्ग कण्ठ अर्जुन चलता हुआ गोबिन्द जीसे बोला कि हे केशवजी मेराहृदय क्यों भयभीत होताहै ३ और बचनरुकताहै और अप्रियअशुभ शकुन दिखाईदेते हैं और शरीर में क्लेश प्राप्तहोता है ४ और मेराअप्रिय दुःख हृदय से दूर नहीं होताहै पृथ्वी और दिशाओं में जो अत्यन्त भय कारी उत्पात हैं वह मुझ को भयभीत करते हैं ५ वे सब उत्पात अनेक प्रकार के दुःखोंके शूचक दिखाई पड़ते हैं मंत्रियों समेत मेरे गुरू रूपराजा युधिष्ठिर को कुशल होय ६ बासुदेवजी बोले कि प्रकटहै कि मंत्रियों समेत तेरे भाई का कल्याण होगा शोच मतकर वहां औरही कुछ अशुभ औरअप्रिय होगा ७ संजय बोलाकि इसकेपीछे दोनों बीर श्रीकृष्ण और अर्जुन बीरोंको मरण भूमि में संध्याकी उपासना करके रथ में नियत होकर युद्ध के वृत्तान्तों को कहते हुये चले ८ इसके अनन्तर बासुदेवजी और अर्जुनअत्यन्त कठिनकर्मको करके अपने उनडेरों में पहुंचे जोकि आनन्दसे रहित अप्रकाशमान थे ९ उसके पीछे शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला हृदय से ब्याकुल अर्जुन डेरेको नाशमान रूप देखकर श्रीकृष्ण जीसे बोला १० किहे जनार्द्दनजी अब दुन्दुभियों के शब्द से संयुक्त प्रसन्नता के बाजे और आनन्दके शब्दोंसमेत शंखभीनहींबजतेहैं ११ अब शम्यातालके शब्दों समेत बीणा नहीं बजतीहैं और आनन्दके गीतों कोभी कोई नहीं गातेहैं १२ और मेरीसेनाओंमें बन्दीजन प्रशंसा सेयुक्त चित्तरोचक स्तुतियों को नहीं पढ़ते हैं और शूरबीर भी मुझकोदेखकर नीचाशिर

किये हुयेलौटे जातेहैं १३ और पूर्वकेसमान कर्मोंको करके मुझआये हुयेकोप्रतिष्ठानहींकरतेहैं अर्थात्अभ्युत्थाननहींदेतेहैंहेमाधवजीअब मेरे भाइयोंकी भीकुशलहोय १४ अपने मनुष्योंको व्याकुलदेखकर मेरेचित्तकी व्याकुलता दूर नहीं होतीहै हेबड़ाई देनेवाले राजा पांचाल औरविराटकेसबशूरबीरोंकोभीसामग्यमताअर्थात्मुलाकातमुझसे होय हेअविनाशीअब भाइयोंसमेत अत्यन्त प्रसन्नअभिमन्यु १५ मुझ युद्धसेआयेहुयेप्रसन्नचित्तकेसन्मुख हंसताहुआनहींआताहै १६ संजय बोलेकिइस प्रकार से कहतेहुये और अपनेडेरेमें प्रवेश करनेवालेउन दोनोंने महा व्याकुल और अचेतसबपांडवोंको देखा १७ हनुमान्जी कीध्वजा रखने वाला अर्जुन भाइयोंको उदास चित्तदेख और अभिमन्युको न देखकर यह बचन बोला १८ कि तुमसबोंके मुखकाबर्ण अप्रसन्न दिखाई देताहै और अभिमन्युको नहीं देखताहूं औरतुम मुझको प्रसन्न नहीं करते हो १६ मैंने सुनाहै कि द्रोणाचार्य्यने चक्र व्यूहबनाया२० और उसबालक अभिमन्युके बिना तुमसबमेंउसव्यूह कोतोड़ने वाला कोई नहीं था परन्तु मैंने सेनासे बाहर निकलना उसको नहीं सिखलायाथा क्यातुम लोगोंने उसबालक को शत्रुओं की सेनामें प्रबेशित तोनहीं किया २१ वह बड़ा धनुष धारीशत्रुओं के बीरोंका मारनेवाला अभिमन्यु युद्धमें शत्रुओंकी बहुतसी सेनाको पराजय करके युद्धमें मारातो नहीं गया २२ वह लाल नेत्र बड़ी भुजावालापर्व्वतोंमें उत्पन्न हुये सिंहके समान बिष्णुके समान कहौ कि किस प्रकार से युद्धभूमिमें मारा गया २३ उस सुकुमार बड़े धनुषधारी इन्द्रके पौत्र सदैव मेरे प्यारे का बर्णन करोकि वहकैसे२ युद्धमें मारागया २४ मृत्युसे अचेत होकर किस पुरुषने उससुभद्रा के प्यारे पुत्र और सदैव द्रौपदी व केशवजी अथवा अम्बामाता के प्यारेको मारा २५ पराक्रम शास्त्र बुद्धिकी प्रबलता से वृष्णियों के बीर महात्मा केशबजीके समान अभिमन्युकोकैसे२ युद्धभूमिमें मारा २६ यादवी सुभद्राके प्यारे और आप से सदैव पोषण पाये हुये शूर बीर पुत्र को जोनहीं देखताहूं तो यमलोककोजाऊंगा २७ मृदु

और घूंघर वाले बालोंसे युक्त मृग शावकके समान नेत्र वाले मत वाले हाथीके समान पराक्रमी सिंहके बच्चेके समान उन्नत २८ बालक मन्द मुसकानके साथ बोलने वाले जितेन्द्री सदैव गुरुपरायण बाल्यावस्थामें भी बड़ेकर्म वाले ईर्षासे रहित प्रियभाषी २९ महोत्साह महाबाहु दीर्घनेत्र भक्तोंपर दया करनेवाले शिक्षित नीचोंके संगसे रहित ३० कृतज्ञ ज्ञानी अस्त्रज्ञ वृद्धोंके आज्ञाकारी सदैव युद्धाभिनन्दनशत्रुओंके भयके बढ़ानेवाले ३१।३२इष्ट मित्र जातिकुटुम्ब नातेदार आदिके प्रियबातोंकी वृद्धिमें प्रवृत्त पिताओंकी बिजयों काअभिलाषी प्रथमनमारने वाले युद्धमेंनिर्भय ३३।३४ऐसे पुत्रकोजो नहीं देखताहूं तो मैं यमलोकको जाऊंगा सुन्दर नासिका उत्तम ललाट कन्ध नेत्र भृकुटी दांतोंकी सुन्दर पंक्तिवाले ३५ उस मुखकोनदेखतेहुये मेरेहृदयकी क्याशांती होसक्तीहै ३६ और उसबीरकीउस अनुपम शोभा को जो कि देवताओं को भी कठिनता से प्राप्त होस क्तीहै ३७ न देखतेहुये मेरे हृदयकी कैसे शान्ती होसक्ती है प्रणाम करनेमें सावधान और पिताओं के बचन में प्रीति करने वाले उस अभिमन्युकोजोमैं अबनहीं देखताहूं ३८तोमेरेहृदयकी क्या शान्तीहै वह सुकुमारबीर बड़े मूल्यके शयनस्थान के योग्य ३९ सनाथोंमें श्रेष्ठ अनाथके समान निश्चय करके पृथ्वी पर सोताहै पूर्व्व समय में उत्तम स्त्रियां जिस शयन करने वाले की उपासना करतीथीं४० अब उस अत्यन्त घायल शरीर वाले के शरीर की अशुभ शृगाल उपासना करतेहैं प्रथम जो सोयाहुआ सूतमागध और बन्दीजनों से जगाया जाताथा ४१ अब निश्चय करके उसको कुत्ते और शृगाल अपने अशुभ शब्दों से जगातेहैं उस का वह शुभ मुख छत्र की छायाके योग्यथा ४२ अब युद्ध भूमिकी धूली उसको भस्मसे मिश्रितकरेगी४३ हा पुत्र प्रियदर्शनीयसदैव मेरे देखने के उत्सुक हे अभागेके पुत्र तू कालके पराक्रम से खैंचाजाताहै निश्चय करकेसदैव शुभ कर्म करने वालोंकीगति यमपुरी४४जो कि अपने प्रकाशों से प्रसन्नता पूर्व्वक सुन्दरहै तुझसे अत्यन्त शोभा पातीहै

निश्चय तुझ निर्भय प्यारे अतिथि पाये हुये को यमराज वरुण ४५ इन्द्र और कुबेर पूजन करतेहैं जैसेकिवह व्यापारी जिसका जहाज टूट गयाहो हाय २ कर पुकारे उसी प्रकार अनेकप्रकारका बिलाप करके ४६ बड़े दुःखसे भरे हुये अर्जुनने युधिष्ठिर से पूंछा कि हे-कुरुनन्दन वह अभिमन्यु शत्रुओंका नाश करके ४७ युद्धमें सन्मुख हुये नरोत्तमोंसे युद्ध करताहुआ स्वर्गको गया निश्चयकरके उपाय करने वाले बहुत नरोत्तमों से लड़ते ४८उस असहाय और सहाय ता चाहने वालेने मुझको स्मरण किया मेरा पुत्र अभिमन्यु कर्ण द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य आदि बड़े २ बीरों के तीक्ष्ण बाणों सेपीड़ा मान ४६ नाना प्रकार के रूप युक्त अत्यन्तसाफ नोकवाले बाणों से अचेत हो इस स्थानपर मेरा पितारक्षक होय ५० इस प्रकार बारंबारबिलाप करता हुआ निर्द्दय लोगोंके हाथ से गिराया गया मैं यह मानताहूं कि मेरा पुत्र अथवा माधव जी का भानजा ५१ सुभद्रा में जन्मलेनेवाला इसरीतिसे कहनेके योग्य नहींहै निश्चय करके मेरा बज्रके समान हृदय अत्यन्त कठोरहै ५२ जो लम्बी भुजा और रक्तनेत्र वाले अभिमन्युको बिना देखते हुये नहीं फटता है५३ उन बड़ेधनुष धारीमर्मस्थलोंके भेदनकरने वाले निर्द्दयलोगों ने किस प्रकार उस बालकपर जो कि बासुदेवजीका भानजा और मेरा पुत्रथा बाणोंको छोड़ा जो साहसी सदैवशत्रुओं को मार कर समीपआयेहुयेमुझकोदेखकर अभिबादनकरके प्रतिष्ठाकरताथा५४ वह अब मुझको क्यों नहीं देखताहै निश्चय वह गिराया हुआ रुधिर में भरा पृथ्वीपर सोताहै ५५ और सूर्य्यके समान पृथ्वीको शोभित करता हुआ सोताहै मैं उस सुभद्राको शोचताहूं जो युद्धमें मुख न फेरने वाले पुत्रको ५६ युद्धमें मराहुआ सुनकर शोक से नाशको पावेगी सुभद्रा औरद्रौपदी अभिमन्युको न देखकर मुझको क्या कहैंगी और मैं उन दुःख से पीड़ामान उसकी माताओं से क्या कहूंगा ५७।५८निश्चय मेरा हृदय बज्रहै जो शोकसे पूर्ण रो-तीहुई बधूको देखकर हजारों टुकड़े नहीं होता है मैंने धृतराष्ट्र

के अहंकारी पुत्रोंके सिंहनाद सुने ५६ और श्रीकृष्णजीने बीरों को कठोर बचन कहता हुआ युयुत्सू को सुना हे महारथियों अर्जुन को न सहकर तुम बालक को मारकर ६० क्या प्रसन्न होते हो हे धर्म के न जानने वाले तुम पांडव अर्जुन के पराक्रम को देखो युद्ध में उन केशवजी और अर्जुनके अप्रियको करके ६१ शोकका समय बर्त्तमान होनेपर प्रसन्नहो होकर तुमसिंहके समान क्या गर्जतेहो इसबुरे कर्मकाफल तुमको शीघ्रही मिलैगा ६२ निश्चय करके तुमलोगोंने बड़ाकठिन अधर्मकिया वहकैसे बिलम्बतक निष्फल होसक्ताहै निश्चय करके बड़ा बुद्धिमान् क्रोध और शोकसेयुक्त वैश्याका पुत्र उनसे कहताहुआ शस्त्रोंको छोड़कर हटगया हे श्रीकृष्णजी आपने युद्धमें किसकारण यहमुझको नहींकहा ६३।६४ मैंउसी समय उन निर्हियो महारथियोंको भस्मकरता संजयबोले कि बासुदेव श्रीकृष्णजी उसपुत्रके शोकसे पीड़ामान अश्रुपातों सेपूर्णनेत्र पुत्रके दुःखोंसे भरे शोकसे संयुक्त ध्यान करने वाले उसअर्जुन को पकड़कर ६५ यहबोलेकि तुमइस रीतिसे शोक मतकरो मुख न मोड़ने वालेशूरोंका यहीमार्गहै ६६ मुख्यकरके युद्धसे जीविका रखनेवाले मुख न फेरने वालेशूरबीर क्षत्रियोंकी शास्त्रज्ञ लोगोंने यहीगतिबर्णनकीहै६७और ऐसेमुख न मोड़कर लड़नेवाले शूरोंका मरना युद्धहीमें होताहै ६८ निश्चय अभिमन्यु पवित्रकर्मी पुरुषोंके लोकोंको गया हे भरतर्षभ सबबीरोंकी यहीचित्तकी इच्छाहै६९कि युद्धमेंसन्मुखहोकर मृत्युको पावेंहेप्रतिष्ठाकेदेनेवाले वह अभिमन्यु बीरोंसमेत बड़े२राजकुमारों को मारकर७० युद्धमें सन्मुखहोने वाले बीरोंकी चाहीहुई मृत्युको प्राप्त करनेवालाहुआ हेपुरुषोत्तमशोचमतकरयुद्धमेंक्षत्रियोंकोनाशरूपयह सनातन पर्व्वकेधर्मकरनेवालोंसे नियतकियागयाहै हेभरत बंशियोंमें श्रेष्ठ येतेरेसब भाईमहा दुखीहैं ७१।७२ और तेरे शोकयुक्तहोने पर राजालोग और तेरेमित्र बर्मआदिक शोक से युक्त हैं हे प्रतिष्ठा करनेवाले तुमउनको अपनेविज्ञान बचनोंसे आश्वासन करो ७३ जो जाननेके योग्यहै वह तेरा जानाहुआ है शोक करने

केयोग्य नहींहै उनअपूर्व्वकर्मी श्रीकृष्णजीसे ऐसा विश्वासित और आश्वासन कियाहुआ अर्जुन७४उन गद्गदकंठवाले सबभाइयोंसे बोलाकिवहलंबी भुजाबड़े स्कन्धकमललोचन वाला अभिमन्यु ७५ जैसेवृत्तान्त वालाहै मैं उस को वैसाही यथार्थ सुना चाहताहूं मेरे पुत्रकेउन शत्रुओंको इष्टमित्र भाईबन्धु नातेदार आदिक समेत घोड़े हाथी और रथोंसमेत युद्धमें मेरे हाथ सेमरे हुये देखोगे अस्त्रज्ञ और अस्त्र धारो तुमलोगोंके समक्षमें७६।७७ किसरीति से इन्द्रसे घायलभी अभिमन्यु नाश को पावे जोमैं इस प्रकार अपने पुत्रकी रक्षा में पांडव और पांचालोंको असमर्थ जानतातो वहमुझसे रक्षितहोता बाणोंकी बर्षा करतेरथमें सवार तुमलोगोंका किसप्रकार ७८।७६ अनादर करके शत्रुओं के हाथसे अभिमन्यु मारागया आश्चर्य्य है कितुम्हारा उद्योग और उपायनहींहै न तुम्हारा पराक्रमहै८० जिस स्थान पर युद्ध में तुम्हारे देखतेहुये युद्ध में अभिमन्यु गिराया गया मैं अपनी निन्दा करूं किजो अत्यन्त निर्बल ८१ भयभीत और निश्चयन करनेवाले तुम लोगों को जतलाकर चलागया॥ दुःखकी बातहै कि तुम्हारे कवच और शस्त्रादि शोभाही के दिखाने वालेहैं ८२ मेरेपुत्रकी रक्षा न करने वालोंके बचन अच्छे लोगोंके मध्यमें कहनेके योग्यहैं इस प्रकार बचन को कहकर धनुष और उत्तम खड्गको धारणकरने वालानियत ८३ अर्जुनकिसीकेदेखने को समर्थ नहींहुआ सुहृदजनलोग उसमृत्युके समान क्रोधसेपूर्ण बारंबार श्वासलेनेवाले ८४ पुत्रके शोकसेदुःखी अश्रुपातोंसे व्याप्त मुखवाले अर्जुनके उत्तर देनेको अथवा देखनेको ८५ बासुदेव जी और बड़े पांडुनन्दन युधिष्ठिरके सिबाय कोईसमर्थ नहीं हुआ वह दोनों सब दशा में प्रिय करनेवाले और अर्जुन के मन के अनुसार थे ८६ वहीदोनों बड़ेमान और प्रीतिसे इससे बोलने को समर्थहैं इसकेपीछे पुत्रके शोकसे अत्यन्त दुखीमन ८७ कमललोचन क्रोध से भरेहुये उसअर्जुनसे राजायुधिष्ठिर बचनकोबोले ८८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोलेकि हे महाबाहो संसप्तकोंकी सेनामेंतेरे जानेपर आचार्य्यनेमेरे पकड़नेमें बड़ाभारी कठिन उपायकिया १ हमसबने भी रथकीसेनाको अलंकृत करके उसप्रकार के उपाय करने वाले द्रोणाचार्य्यको युद्धमेंरोंका २ मेररक्षितहोनेपर रथियोंसेरुकेहुयेवह द्रोणाचार्य्य तीक्ष्ण बाणों से पीड़ामान करते हुये शीघ्रही हमारे सन्मुखआये ३ द्रोणाचार्य्यसे पीड़ामान वहसबबीर युद्धभूमिमें द्रोणाचार्य्यकी सेनाके देखनेको भी समर्थनहीं हुये तो उसके पराजय करने को कहांसे समर्थ होते ४ हे समर्थ भाई फिर हम सबने उस पराक्रममें असादृश्य अभिमन्युसे कहाकि इस सेनाको पराजय कर ५ उस पराक्रमी उत्तम घोड़ेके समान और हमसे उसप्रकार आज्ञा पाये हुये ने सहने के अयोग्य उस भारको भी उठाना प्रारंभकिया ६ तेरे अस्त्रोंकी शिक्षा और पराक्रमसे संयुक्त वह बालक उससेना में ऐसे प्रबेश करगया जैसे कि समुद्रमें गरुड़जी प्रबेश करजातेहैं ७ हम युद्धके मध्य सेनामें प्रबेश करने के अभिलाषी उस यादवी के पुत्र बीर अभिमन्युके पीछे उसी मार्ग से चले जिस मार्ग से कि वह सेनामें गयाथा ८ हेतात इसके अनन्तर सिंधके राजा नीच जयद्रथने रुद्रजीके बरदान से हम सबको रोंका ९ उसके पीछे द्रोणाचार्य्य,कृपाचार्य्य,कर्ण अश्वत्थामा,कौशिली,कृतबर्मा,इन छः रथियोंने अभिमन्युको चारों ओरसे रोंका १० वहबड़े पराक्रमसे उपाय करनेवाला बालकयुद्धमेंउन सब महा रथियों से घिरकर बिरथकिया गया ११ इसके पीछे उन महारथियों से बिरथ कियेहुये अभिमन्यु को दुश्शासन के पुत्रने बड़े संशय को पाकर मारा १२ वह अभिमन्यु मनुष्य घोड़े रथ और हजारों हाथियों को मारकर अर्थात् आठ हजार रथ नौसे हाथी १३ दो हजार राजकुमार और दृष्टिमेंन आने वाले बहुत से बीरोंको और राजा बृहद्बलको युद्ध भूमिमेंस्वर्ग में भेजकर १४ फिर बड़े धर्मात्माने मृत्युको पाया हमारे शोक का

बढ़ानेवाला यहीवृत्तान्तहै १५ हेपुरुषोत्तम उसनेइसप्रकारसे स्वर्ग-लोकको पाया इसके पीछे अर्जुन धर्मराजके कहेहुये बचनको सुन-कर१६ हायपुत्र इसप्रकार वह बड़ी २ श्वासोंकोलेताहुआ महापी-ड़ितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर व्याकुलचित्तहोकर वह सबभाई बन्धुआदिक बीर अर्जुनको चारोंओरसे घेरकर १७ महादुःखी मन पलक न मारनेवाले नेत्रोंसे परस्पर देखनेलगे इसके पीछे क्रोधसे मूर्च्छामान इन्द्रका पुत्र अर्जुन चैतन्यता को पाकर ज्वरसे कंपा-यमानके समान बारंबार श्वासों को लेताहुआ हाथको हाथमें पीस कर श्वासलेता अश्रुपातों से पूर्ण नेत्र १६ उन्मत्तके समान देखकर इसबचनको बोला कि मैं तुमसेसत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं कि कल्ह-ही जयद्रथ को मारूंगा जो वह मरने के भयसे डरा हुआ होकर धृतराष्ट्रके पुत्रोंको त्याग नहींकरेगा २० हे महाराजजो वह हमारी अथवा पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजीकी वा आपकी शरण में नहीं आवे तो कल उस जयद्रथको अवश्य मारूंगा २१ मैं उस दुर्य्योधनके प्रिय करनेवाले और मेरी प्रीतिको भूलजानेवाले और बालक के मारने के मुख्य कारण रूप जयद्रथको कल मारूंगा २२ हे राजा जोकोई युद्धमें उसकी रक्षकरनेवाले और द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य जी भी जो मुझसे युद्ध करेंगे तो मैं उनकोभी बाणोंसे ढकूंगा २३ हे पुरुषोत्तमो जो मैं युद्धमें इसप्रकार किये हुये प्रणको नहीं करूं तो धर्म उत्पन्न करनेवाले कर्म से प्रकट शूरों के लोकों को नहीं पाऊं २४ माता पिताके मारनेवालों के जो लोक हैं अथवा गुरुकी स्त्री से संभोग करनेवालों के जो लोकहैं सदैव दुःख देनेवालोंके जो लोकहैं २५ साधुओं के गुणोंमें दोष लगानेवालों के जो लोक हैं परोक्ष निन्दा करनेवालोंके जो लोकहैं किसीकी धरोहर मारनेवालोंके जो लोक हैं बिश्वासघातियों के जो लोकहैं २६ ब्राह्मण मारनेवालों के जो लोकहैं और गोबध करनेवालों के भी जो लोकहैं २७ खीर यव आदिके भोजनशाक कृसर संयाव पूप मांस और निरर्थक मांसखाने वालों के जो लोकहैं २८ मैं एकही दिनमें उन लोकों को जाऊं जो

जयद्रथ को नहीं मारूं वेदके बहुत पढ़नेवाले तेज व्रतवाले उत्तम ब्राह्मण २६ वृद्ध साधू और गुरुलोगों का अपमान करनेवाले जिन लोकों को जाते हैं और चरणसे अग्नि गौ और ब्राह्मण के छूने वालों की जो गति होय ३० और जलमें थूक मूत्र और बिष्टा छोड़नेवालों की जोगति है उस दुःख रूप गति को पाऊं जो जयद्रथ को न मारूं ३१ नंगेस्नान करनेवाले की और बंध्या के आतिथि की जोगति है उत्कोची अर्थात् घूसलेनेवाले मिथ्यावादी और छली लोगोंकी जो गतिहै ३२ आत्मघातकरनेवालोंकी जोगतिहै मिथ्या भाषण करनेवालोंकी जो गति है नौकर पुत्र स्त्री और शरणागत लोगोंके साथ बिवाद करनेवालों की जोगतिहै ३३ और मिष्टान्न को बिना बिभाग करके खानेवालोंकी जोगतिहै इन सब भयकारी गतियोंको पाऊं जो मैं जयद्रथको न मारूं ३४ जो निर्दयचित्तवाला अपने आज्ञाकारी साधू और शरणागतको भी त्याग करके पोषण नहीं करताहै और उपकार करनेवालों की निन्दा करताहै ३५ जो प्रातःकालका समय वेश्या के निमित्त देता है और श्राद्ध को नहीं करताहै और जो अयोग्यब्राह्मणोंके निमित्तदे और वृषलीपतिके अर्थ दे३६ और जो मद्यपीनेवाला बेमर्याद और उपकारको भूलनेवाला और स्वामीकीनिन्दाकरनेवाला है मैं उन सबकी गतियोंको शीघ्रही पाऊंजो जयद्रथको नहींमारूं३७ बामहाथसे भोजनकरनेवाले और गोदीमें रखकर खानेवालोंकीभी जो गतिहै और पलाशका आसन और तिंदुककी दांतनको ३८ त्यागन करनेवालोंके जोलोकहैं और प्रातःकाल सायंकालके समय सोनेवालोंके जो लोकहैं जोब्राह्मण शीतसे भयभीत और क्षत्रिय युद्धसे भयभीतहै उनके ३६ और वेदध्वनिसे रहित और एकही कूपके जलसे निर्बाह करनेवाले गांव में जो छःमहीने निवास करनेवालों के जो लोक हैं उसीप्रकार शास्त्र की अधिक निन्दा करनेवालोंके जो लोकहैं ४० जो लोक कि दिनमें स्त्री संग करनेवालोंके हैं और जो दिनमें सोतेहैं उनके और घरों में अग्नि लगानेवालों के और बिष देनेवालोंके जो लोक मानेगये

हैं ४१ अग्निके पूजनेसे रहित गौके जलपान करने में बिघ्न करने वाले रजस्वला से भोग करनेवाले मूल्य लेकर कन्यादान करने वाले४२ और धर्मसे बिरुद्ध जो अन्य २ लोग यहां नहीं कहे गये और जो कहेगये उनसबोंकी गतिको मैं जल्दीसे पाऊं ४३ जोरात्रि व्यतीत होनेपर कलकेदिन जयद्रथको नहींमारूं इसके बिशेष मेरी इस दूसरी प्रतिज्ञाकोभी जानो ४४ बहुतसे मनुष्योंको यज्ञकराने वाले श्वानवृत्तीरखने ब्राह्मणों को जो गति है और मुखसेसंभोग करनेवालोंकी जो गति है और जो दिनके संभोग करनेमें प्रवृत्त चित्तहैं जो ब्राह्मणसे प्रतिज्ञा करके लोभ से फिरनहीं देतेहैं उनकी गतिको पाऊं जो कल जयद्रथको न मारूं ४६ जो इसपापीके मरने पर सूर्य्य अस्त होजायगा तो मैं इसी स्थानपर प्रकाशित अग्नि में प्रवेशकरजाऊंगा ४७ असुर, देवता, मनुष्य, पक्षी, सर्प, पितृ, राक्षस, ब्रह्मऋषि, देवऋषि और यह जड़ चैतन्य जीव भी और इनसे भी परेहैं वहभी मेरे शत्रुकी रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हैं ४८ जो वह रसातल अग्नि आकाश देवताओंके पुर और असुरोंके पुरमें प्रवेश करजाय तौभी मैं प्रातःकाल बाणों के समूहों से उस अभिमन्युके शत्रुका शिरकाटूंगा ऐसे कहकर अपने गांडीव धनुष को दाहेंबायें फिराया तबधनुषके शब्दने उसकेशब्दको उल्लंघन करके आकाश को स्पर्शकिया ५० अर्जुनके इस प्रतिज्ञाके करनेपर श्रीकृष्णजीने अपने पांचजन्य शंखको बजाया और अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने अपने देवदत्त शंखको बजाया ५१ श्रीकृष्णजी के मुखकी वायु से अत्यन्त पूरित उदर और ध्वनि उत्पन्न करनेवाले पांचजन्य शंखने जगत्को पातालआकाश और दिगेश्वरोंसमेतऐसेकंपायमान किया जैसे कि प्रलय के समय संसार कंपितहोताहै ५२ इसके पीछे उस महात्माके प्रतिज्ञाकरनेपर पांडवोंके सिंहनाद और हजारोंबाजोंके शब्द प्रकटहुये ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रयसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

—※—

चौहत्तरवांअध्याय॥

संजय बोले कि वहां जयद्रथ दूतोंकेमुखसे इसवृत्तान्तको जान कर और विजयाभिलाषी पांडवों के उस बड़े शब्दको सुनकर १ अपने स्थानसे उठके शोकसे अज्ञानरूप दुःखसे भराहुआ अथाह शोक समुद्रमें डूबाहुआ २ बहुत शोचकोकरता सिन्धकाराजा जयद्रथ राजाओंकी सभामें गया और वहांजाकर उसने उन राजाओं के सन्मुख विलाप किया ३ अभिमन्यु के पिता से भयभीत और लज्जायुक्तहोकर इसबचन को बोला निश्चय करके जो यह अर्जुन पांडुके क्षेत्रमें कामी इन्द्रसे उत्पन्नहुआ ४ वह निर्बुद्धी मुझ अकेले को निश्चय यमलोक में पहुंचाया चाहता है इसहेतु से मैं प्रणाम करताहूं आपका कल्याणहोय मैंअपने जीवनकीअभिलाषासे अपने घरको जाऊंगा हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ अस्त्रों के बल रखनेवालो अर्जुन से चाहेहुये मुझको तुम सब मिलकर मेरी रक्षाकरो हे बीरलोगो तुम मुझको अभयदानदो ६ द्रोणाचार्य्य,दुर्योधन,कृपाचार्य्य,कर्ण, शल्य, वाल्हीक और दुश्शासनादिक मुझ मृत्युसेपीड़ामानको रक्षा करनेको समर्थहैं ७ हे मित्रो आपसब पृथ्वीकेस्वामी इसमारने के अभिलाषी अकेले अर्जुनसे क्यामेरीरक्षा नहीं करसक्तेहो ८ पांडवों की बड़ी प्रसन्नता को सुनकर मुझको बड़ाभयहै हे राजाओ मरने के अभिलाषी मनुष्यकेसमान मेरेअंग शिथिलहोतेहैं९ निश्चयकरके गांडीव धनुषधारीने मेरे मारनेका प्रण कियाहै और इसीप्रकार दुःखके समय प्रसन्न होकर पांडवोंने शब्दकिये १० वहां देवता, गन्धर्ब,असुर, सर्प और राक्षसभी उसकी प्रतिज्ञा मिथ्या करनेको समर्थ नहीं होसक्ते हैं फिर राजालोग कैसेकरसक्तेहैं ११ इसनिमित्त हे राजालोगो आपकाभलाहो आप सब मुझको आज्ञादो कि मैं भागकर ऐसागुप्त होजाऊंगा जहां पांडव मुझको न देखसकेंगे राजादुर्योधनअपने कार्य्यकी महत्त्वतासे उस महाव्याकुल विलाप करनेवाले भयसे पीड़ित चित्तवाले जयद्रथसेबोले १३ कि हे नरो-

त्तम तुमको भय न करना चाहिये हे पुरुषोत्तम कौनसा बीर युद्ध में क्षत्रियों के मध्यमें नियतहुये तुझको अपने आधीन करसक्ताहै १४ मैं और सूर्य्यकापुत्र कर्ण, चित्रसेन, बिबिन्शति, भूरिश्रवा, शल्य, और दुःखसे सन्मुखताके योग्य वृषसेन १५ पुरु, मित्रोजय,भोज, काम्बोज, सुदक्षिण, सत्यव्रत महाबाहु बिकर्ण, दुर्मुख,दुश्शासन, सुबाहु, और शस्त्रधारी राजाकलिंग बिन्द, अनुबिन्द, अवन्ती देश के राजालोग, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, शकुनि १७ यह सबलोग और दूसरे नानादेशोंके राजा और हे राजासिन्ध आपभी रथियों में श्रेष्ठ शूरबीरहो सो तुम किसप्रकार पांडवों करके भय को करते हो १६ मेरी ग्यारह अक्षौहिणीसेना तेरी रक्षामें कुशलहोकर युद्ध करैंगी हे सिन्धके राजा तुम भय मतकरो तुम्हाराभय दूरहोय २० संजयबोले कि हे राजा आपके पुत्रसे इसरीतिपर बिश्वासित किया हुआ सिन्धकाराजा जयद्रथ दुर्योधन समेत रात्रि के समय द्रोणाचार्य्यके समीप गया २१ वहां जाकर उसने द्रोणाचार्य्य के चरणोंमें दण्डवत् करके बड़ी नम्रता से समीप बैठकर इस बात को पूछा २२ कि हेभगवान् लक्षभेदन करना दूरगिराना हस्तलाघवता और दृढ़ घायल करने में अर्जुन का अधिक गुण मुझसे कहौ २३ हे आचार्य्यजी मैं मूलसमेत उस अर्जुनकी और आपकी सबबिद्याओंको जानना चाहताहूं आप अपनी और अर्जुनकी ठीक २ संपूर्ण बिद्याको बर्णनकरो २४ द्रोणाचार्य्यबोले कि हेतात तेरी और अर्जुन की शिक्षा समानहै परन्तु योग और दुःखके सहने में अर्जुन तुझसे अधिकहै २५ तुझको किसी दशामें भी अर्जुन से भय न करना चाहिये हे तात मैं तुझको निस्सन्देह भयसे रक्षा करूंगा २६ देवताभी मेरे भुजोंसे रक्षित पर प्रबल नहीं हो सक्ते हैं मैं उस व्यूह को तैयार करूंगा जिसको कि अर्जुन नहीं तरसकेगा २७ इसहेतुसे तुम युद्ध करो भय मतकरो अपने धर्म का पालनकरो हे महारथी तुम बाप दादे के मार्ग पर चलो २८ तुमने बुद्धिके अनुसार बेदों को पढ़कर अग्नियों में अच्छीरीति से हवन किया है और

बहुत से यज्ञोंसे भी पूजन किया है तेरी मृत्यु भयको उत्पन्न करने वाली नहीं है २९ नीच मनुष्यों से दुष्प्राप्य बड़े प्रारब्ध को पाकर भुज बल से विजय होकर उत्तमलोकों को पावेगा ३० कौरव पांडव औरयादव और जो दूसरे मनुष्यहैं और मैंभी अपने पुत्र समेत सब बिनाशमान हैं यहबिचारकरो ३१ हमसब क्रमपूर्व्वक पराक्रमी कालसे घायल हुये पड़े हैं अपने २ कर्म से संयुक्त होकर परलोक को जायंगे ३२ तपस्वी तपस्याओंको करके जिनलोकोंको पाते हैं उन लोकों को क्षत्रीलोग क्षत्री धर्म में प्रवृत्त होकर प्राप्त करतेहैं ३३ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के इसप्रकार के समझाने और दृढ़ता करने के कारण से राजा जयद्रथ ने अर्जुन से भयको दूरकिया और युद्ध में चित्त को लगाया ३४ हे राजा इसके पीछे आपकी सेनाओं को भी बड़ी प्रसन्नता हुई और सिंहनादों के शब्दों समेत बाजोंकी कठिन ध्वनि हुई ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि चतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवांअध्याय॥

संजय बोले कि तब सिंधके राजाके मारने में अर्जुन की प्रतिज्ञाहोने पर महाबाहु बासुदेव जी अर्जुन से बोले १ कि तुमने भाइयोंके मतको न जानकर अपने वचनोंसे प्रतिज्ञाकरी कि मैं जयद्रथ को मारूंगा यह तुमने बिना बिचारके कर्म किया २ और मुझसे सलाह न करके कठिन बोझेको उठाया हम किसप्रकारसे सबलोकके योग्य पढ़े हुये न होवें ३ मैंने दुर्य्योधन के डेरोंमें दूत नियत किये वह दूत बड़ी शीघ्रता से आकर इसवृत्तान्त को कहते हैं ४ कि हे समर्थ सिंधके राजाके मारने की तेरी प्रतिज्ञा करने पर उन लोगों से किये हुये बड़े सिंहनाद बाजों समेत सुने गये ५ धृतराष्ट्र के पुत्र जयद्रथ समेत उस शब्द को सुनकर भयभीत हुये कि यह सिंहनादनि हेतुकनहीं है यह मानकर नियत हुये ६ हे महाबाहो कौरवों के बड़े शब्दका भी प्रादुर्भाव हुआ और हाथी घोड़े पत्ति

और रथों के शब्द बड़े भयकारी हुये ७ अर्जुन निश्चय करके अभिमन्यु के मरण को सुनकर पीड़ामान होकर रात्रिही में क्रोधयुक्त होकर सन्मुख आवेगा यह समझकर सब नियत हुये ८ हे कमलवत् नेत्रवाले अर्जुन उन उपाय करनेवालों ने सिन्ध के राजा के मारने में तुझ सत्यवक्ताकी सत्यप्रतिज्ञा सुनी ९ इसकेपीछे दुर्योधन के मंत्री और वह राजा जयद्रथ यह सब चित्तसे दुखित नीच मृगोंके समान भयभीत हुये १० इसके पीछे सौवीर और सिंध देशों का स्वामी अत्यन्त दुःखी जयद्रथ मंत्रियों समेत वहांसे उठकर अपने डेरे को आया ११ वह सलाह करनेके समय परिणाम में कुशल करनेवाले कर्मकी सलाहकरके राजसभाके मध्य सुयोधन से जाकर यहबचनबोला कि १२ अर्जुन अपने पुत्रकामारनेवालामुझ को समझकर कलकेदिन मेरेसन्मुखआवेगा और सबसेनाके मध्यमें उसने मेरेमारनेकीप्रतिज्ञाकरीहै १३ अर्जुनकीप्रतिज्ञाकोदेवता गन्धर्ब राक्षस असुरऔर सर्पादिक कोईभी मिथ्याकरनेको समर्थनहींहोसक्ते हैं १४ सो तुममुझकोयुद्धमें रक्षाकरो अर्जुनतुम्हारे मस्तकोंकोउल्लंघनकरकेलक्षको न पावे इसहेतुसे इसस्थानपर रक्षाकरनेकाउपाय करो हे कुरुनन्दन जो युद्धमें मेरी रक्षा नहीं करसक्तेहो तो मुझको आज्ञादो कि मैं अपने घरको जाऊंगा १६ इसप्रकार कहे हुये उस शिर झुकाये हुये और बे मन सुयोधन ने उस प्रतिज्ञा को सुनकर बिचार किया १७ कि निश्चय करके उसराजा जयद्रथने उसपीड़ामान दुर्य्योधनको देखकर मृदु और अपनी वृद्धिका करनेवाला प्रतिज्ञा पूर्व्वक यहबचन कहा १८ कि यहां आपलोगोंके मध्यमें उस प्रकार का प्रबल धनुषधारी नहीं देखताहूं जो बड़े युद्ध में अर्जुनके अस्त्रको अपने अस्त्रसे निवारण करे १९ बासुदेवजीकी सहायता रखनेवाले और गांडीव धनुष के चलायमान करनेवाले अर्जुन के आगे कौननियतहोसक्ताहै जोसाक्षात् इन्द्रभीहो यवहभी नियत नहीं होसक्ताहै २० सुनाजाताहै कि पूर्व्वसमय में बड़ेपराक्रमी प्रभुमहेश्वरजीभी हिमालय पर्व्वतपर पदाती अर्जुनके साथ युद्धकरनेवाले

हुये २१ और उसी देवराजकी आज्ञापाये हुये ने एकही रथके द्वारा हिरण्यपुरवासी हजारों दानवोंको मारा २२ बुद्धिमान् बासुदेवजी से संयुक्त अर्जुन देवताओं समेत तीनोंलोकों को भी मारसक्ता है यह मेरामतहै २३ सो मैं आज्ञादेनेको अथवा पुत्र समेत महात्मा बीर द्रोणाचार्य्यसे रक्षित होनेको अभिलाषा करताहूं जो तुममानते हो २४ हे अर्जुन वहां आप राजाने जाकर द्रोणाचार्य्य से प्रार्थना करी और यह आगे लिखे हुये लोग रक्षित नियत किये गये और निश्चय करके रथ तैयार कियेगये २५ कर्ण, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, वृषसेन, दुर्जय, कृपाचार्य्य, और शल्य यह छःरथी अग्रगामी हैं द्रोणाचार्य्यने शकट पद्मक अर्द्धव्यूह सेनाके आगे बनाया और पद्मकर्णक नाम व्यूह मध्यमें नियत हुआ और व्यूह के एक पक्षमें शूची रचा गया २७ बीरोंसे रक्षित अत्यन्तदुर्मद वह सिंधका राजा जयद्रथ नियत होगा धनुषबिद्या अस्त्रबिद्या पराक्रम और स्वाभाविक बलमें २८ यह छःरथी सहनेके अयोग्य किये गयेहैं इनछओं रथियोंको बिना विजय कियेहुये यह जयद्रथ आधीन होनेके योग्य नहींहै २९ तुम छओं रथियोंमें प्रत्येकके पराक्रमको बिचारकरो हे नरोत्तम यहसब मिलेहुये शीघ्रतासे विजय करनेके योग्यनहींहैं ३० मैं फिर कार्य्यको सिद्धीके अर्थ और अपनी वृद्धिके निमित्त सलाह के और मंत्र बिचारके जाननेवाले मंत्री और मित्रोंके साथ नीतिको निर्णय करूंगा ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

अर्जुनबोले कि आप दुर्य्योधनके जिन छओं रथियों को पराक्रम मानतेहो उन सबका पराक्रम मेरे आधे पराक्रमकेभी समाननहीं है यह मेरामतहै १ हे मधुसूदनजी मुझ जयद्रथके मारनेके अभिलाषी के अस्त्र से इनसबों के अस्त्रों को आप कटाहुआ देखोगे २ मैं द्रोणाचार्य्य के देखतेहुये अपने समूहके साथ विलाप करते राजा

सिंधके मस्तकको पृथ्वीपर गिराऊंगा ३ जो साध्य, रुद्र, वसु, अश्विनी कुमार, इंद्रसमेत मरुत, ईश्वरोंसमेत विश्वेदेवा ४ पितृ, गन्धर्व, गरुड़, समुद्रादिक, स्वर्ग, आकाश और यह पृथ्वी दिग्गीश्वरों समेत सर्वादशा ५ गांव और वन के जीव और सैकड़ों स्थावर जंगम जीव भी राजासिन्ध के रक्षक होजायं ६ हे मधुसूदन जी तौभी प्रातःकाल के समय मेरे बाणों से युद्धमें उसको मराहुआही देखोगे हे श्रीकृष्णजी मैं सत्यता पूर्व्वक शपथ खाता हूं और उसी प्रकार शस्त्रको उठाताहूं ७ हे केशवजी जिसपापी दुर्बुद्धोका रक्षक वहबड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य्यहै प्रथम उसीद्रोणाचार्य्य के सन्मुख मैंजाऊंगा८ वहदुर्य्योधन उस द्रोणाचार्य्यमें इसजुआको बंधाहुआ मानताहै इस हेतुसे उसकी सेनाके मुखकोतोड़कर जयद्रथकोआधीन करूंगा ९ तुम प्रातःकालके समय मेरे अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से बड़े धनुषधारियोंको युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न और व्याकुल हुआदेखोगे जैसेकि बज्रोंसे फटेहुये पर्व्वतोंके शिखर होतेहैं १० गिरते व गिरे हुये अथवा तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्तघायल मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरोंसे रुधिरको जारीकरूंगा ११ गांडीव धनुष के छोड़ेहुये शीघ्रगामितामेंमन और वायुके समान असंख्य बाणहजारों हाथी घोड़े और मनुष्योंके शरीरोंको प्राणोंसे पृथक् करेंगे १२ मैंने यम, कुवेर, वरुण, इन्द्र और रुद्रजीसेंजो घोर अस्त्रलियेहैं उनको मनुष्य इस युद्धमें देखेंगे १३ राजासिंधके संपूर्ण रक्षकों के अस्त्रोंको युद्ध में मेरेब्रह्मास्त्रसे दूरकियेहुये देखोगे १४ हेकेशवजी प्रातःकाल युद्ध में मेरेबाणोंके वेगों से कटेहुये राजालोगों के शिरोंसे इस पृथ्वीको आच्छादितहुआ देखोगे १५ मैं मांसभक्षी जीवोंको तृप्तकरूंगा शत्रु लोगोंको भगाऊंगा मित्रोंको प्रसन्न करूंगा और राजा सिन्ध को मथूंगा १६ बड़ाअपराधी दुष्टनातेदार पापदेश में उत्पन्नहुआराजा सिन्धमेरे हाथसे मरकर अपने इष्टमित्र नातेदार आदिको शोचेगा १७ सब्रक्षोरों के पीनेवाले पापाचारीजयद्रथको रणभूमिमें मेरे हाथसे मराहुआ देखोगे १८ हे श्रीकृष्णजी मैं प्रातःकाल वहकर्म

करूंगा कि जिसको देखकर कोईभी लोकमें युद्धके बीचमेरे समान दूसरे धनुषधारीको नहींमानेगा १९ हे नरोत्तम मेरा दिव्य धनुष गांडीवहै और मैंयुद्धकरनेवालाहूं और हेइन्द्रियोंके स्वामीआपसारथी हो फिर मुझसे अजेय कौनहोसक्ताहै २० हे भगवन् आपकीकृपा से युद्धमें मुझकोअप्राप्त पदार्थक्याहै हेहृषीकेशजी मुझको असहिष्णु शीलजानतेहुये आपक्या निन्दा करतेहो २१ जिसप्रकार चन्द्रमा में चिन्ह नियतहै और जैसेकि समुद्रमेंजल नियतहै हे जनार्द्दनजी उसी प्रकार मेरी इस सत्यप्रतिज्ञा कोभीजानो २२ मेरे अस्त्रों का अपमान मतकरो और मेरेदृढ़ धनुषका भी अपमान मतकरो और दोनोंभुजाओंके पराक्रम काभी अपमान मतकरो और मुझ संसारके धनके बिजय करनेवालेकाभी अपमान मतकरो२३ मैंयुद्ध में जाकर बिजय करूंगा नहींतो जीवता नहींरहूंगा इस सत्यता से युद्धमें जयद्रथको मृतकहुआहोजानो २४ ब्राह्मणोंमें सत्यता अचल हैसाधुओं में नम्रता अचलहै यज्ञोंमें लक्ष्मी अचलहै श्री नारायण जीमेंबिजय अचलहै २५ संजय बोलेकि इन्द्रकेपुत्र गर्जतेहुये अर्जुन ने इन्द्रियों के स्वामीको इसप्रकार कहकर भी फिर केशवजी से कहा २६ हे श्रीकृष्णजी जिसप्रकारसेकि मेरा रथ प्रातःकाल इी-अलंकृत होजाय वही प्रकार आपको करना योग्यहै निश्चय करके बड़ा भारी कार्य्य बर्त्तमान हुआ है २७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

संजय बोलेकि दुःख शोकसे पीड़ामान सर्पके समान श्वासलेने वाले बासुदेवजी और अर्जुनने उस रात्रिको निद्रानहींली १ नर-नारायणको क्रोधयुक्त जानकर इन्द्रसमेत देवताओं नेभी पीड़ामान होकर चिन्ताकरी कि यह क्याहोगा२ उससमयसूक्ष्मभयको शूचन करनेवाली दारुण बायुचली और सूर्य्यमें कबन्ध समेत परिघदृष्टि गोचर हुआ३ परस्पर आघात करतीहुईबायु और बिद्युत समेतसूखे

बज्रगिरे और बनपर्व्वतों समेत पृथ्वीभी कंपायमान हुई ४ हेमहाराज मकरादिक जीवोंके आश्रयस्थान समुद्र उमगनेवाले हुये और झरने नदी आदिकभी चलने को उद्युतहुये ५ रथघोड़े हाथी और मनुष्यों के नाशका समय मांस भक्षियोंको प्रसन्नता यहसब यमराजके देशकी वृद्धि के निमित्त बर्त्तमान हुये ६ सवारियों ने मूत्र बिष्टाको करके रुदनकिया उनभयकारी रोमांच खड़ेकरनेवाले सब उत्पातोंकोदेखकर ७ और बड़ेपराक्रमी अर्जुनकी भयकारी प्रतिज्ञा को सुनकर आपकी सबसेना पीड़ामानहुई ८ इसके पीछे इन्द्रका पुत्रमहाबाहु अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोलेकि तुमअपनी बहिनसुभद्रा को पुत्रबधू समेत बिश्वास कराके ढाढस बंधाओ ९ हे माधवजी इसकीबधू और समान बय वालोंको शोकसे रहितकरो हेप्रभु मीठे और सत्यता से युक्तबचनों से उसको आश्वासनकरो १० इसके पीछे अत्यन्त दुखित चित्त बासुदेवजीने अर्जुनके घरजाकर पुत्रके शोकसेपीड़ामान और दुखी होनेवाली अपनी बहिनको ढाढसबंधाया ११ बासुदेवजी बोलेकि हेयादवी बधूसमेत तूअभिमन्युके बिषय में शोचमतकर सब जीवधारियोंकी यहनिष्ठा कालदेवतासे नियत की गईहै १२ यहतेरे पुत्रका मरना मुख्यकर कुलमें उत्पन्न पंडित क्षत्रीके समानहै शोचमतकर १३ महारथीबीर पिताके समानपराक्रमी अभिमन्युने प्रारब्धसे क्षत्रियोंकी बिधिसेबीरोंकी अभीष्ट गति को पाया १४ बहुतसे शत्रुओंको बिजय करताहुआ उनको मृत्युके पासभेजकर पवित्र कर्मसे प्रकट और सब कामनाओं के देनेवाले अबिनाशी लोकोंको पाया १५ सन्तलोग तप ब्रह्मचर्य्य शास्त्र और बुद्धिकेद्वारा भी जिसगतिको चाहते हैं उस गतिको तेरेपुत्रने पाया १६ तू बीरपुत्रको उत्पन्न करनेवालीबीर पुरुषकीस्त्री बीरकी पुत्री और बीरही बांधव रखनेवाली है हेकल्याणिनि पुत्रको मत शोच क्योंकि उसने परमगति को पाया है १७ यह पापी और बालकका मारनेवाला राजासिंधु मित्रभाईयोंके समूहों समेत इस पापके फलको पावेगा १८ रात्रिके व्यतीत होनेपर यहपाप कर्म

करनेवाला अमरावती पुरीमें भी प्रवेश करताहुआ अर्जुनके हाथ से बिनामरे नहींछूट सक्ता १६ कल्ह उस राजासिन्धका शिर युद्ध में स्यमन्तपंचक से बाहर डालाहुआ लोगसुनेंगे शोक से रहित होजा रोदन मतकर २० उसशूरने क्षत्रीधर्मको आगेकरके सत्पुरुषोंकी गतिको पाया जिसको हम और अन्यलोग जो यहां शस्त्रों से निर्बाह करनेवालेहैं अन्तमें पावेंगे २१ बड़ावक्षस्थल और बड़े भुजा वाला मुख न फेरनेवाला रथियोंको मारनेवाला तेरापुत्र स्वर्गको गया अब तू मनकेतापको दूरकर २२वहपराक्रमी माता और पिताके पक्षका अनुयायी हुआवह शूर महारथी हजारों शत्रुओंको मारकर मरगया २३ हे रानीतू अपनी पुत्रबधू को बिश्वासित कर क्षत्रीके बिषयमें बड़ेशोचको मतकरहे नन्दनी कल्ह बड़ी प्रिय बातको सुन कर शोकसे रहित हो २४ अर्जुन ने जो प्रतिज्ञा करीहै वह यथार्थ है मिथ्या नहीं होसक्ती तेरेपतिकी कर्म की इच्छाभी निष्फल नहीं होती २५ जो प्रातःकाल मनुष्य सर्प पिशाच राक्षस पशु देवता और असुर भी युद्ध में बर्त्तमान होकर जयद्रथके साथ में होंगे तौ भी वह नहीं बच सकैगाअर्थात् नाशको पावेगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उन महात्माकेशवजी के इस बचन को सुन कर पुत्रके शोक से पीड़ामान और अत्यन्त दुखी सुभद्राने बिलाप किया १ हाय पुत्र मुझ अभागिनी के बेटे और पिताके समान पराक्रमी तुमने युद्ध को पाकर कैसे अपने जीवकोगंवाया २ हेपुत्रउत्तम कमलकेसमान श्यामसुन्दरडाढ़ीऔरनेत्रवाला तेरामुख कैसायुद्धकी धूलसे लिपटाहुआ दिखाई देताहै ३ निश्चयकरके तुझ मुखनफेरने वाले सुन्दर शिरग्रीवा भुजास्कन्ध आयत बक्षस्थल पतले उदर वाले शूर बीर को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखकर ४ जंगलके सबजीव तेरे सुन्दर नेत्र युक्त अलंकृत और शस्त्रों से युक्त घायल शरीरको

उदय हुये चन्द्रमा के समान देखते हैं ५ जिसके शयन के स्थान पूर्व्व समय में बहु मूल्य वाले विस्तरों से युक्त थे उस सुखके योग्य तू अब कैसे घायल होकर पृथ्वी पर सोरहाहै ६ पूर्व्व कालमें जो बड़ी भुजा वाला उत्तम बीर स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करता था अब वह युद्ध भूमिमें पड़ाहुआ किसप्रकार शृगालों के साथ अनुरक्त है ७ पूर्व्वकालमें जो प्रसन्न चित्त बीर सूत मागध और बन्दीजनों सेस्तूयमान हुआ अब वह अधिक शब्द करने वाले भयकारी मांसभक्षी गिद्ध आदिके समूहों से उपासना किया जाताहै ८ हेसमर्थ अपने स्वामी पांडव बीर वृष्णी और बीर पांचालों के मध्यमें किस कारणसे अनाथ के समान मारागयाहै ९ हे पापोंसेरहित बेटा प्रकट होताहै कि तेरे देखने से तृप्त न होनेवाली मैं अभागिनी यमलोक को जाऊंगी १० हेपुत्र बड़े नेत्र सुन्दर केशान्त मृदुभाषी सुगन्धित और स्वच्छ तेरे मुखको फिर देखूंगी ११ भीमसेनके बलको धिक्कार अर्जुन के धनुष रखने को धिक्कार वृष्णी बीरोंके पराक्रम को धिक्कार और पांचालों के बल पुरुषार्थको धिक्कार है १२ केकयदेशी चंदेरी देशी मत्स्यदेशी और सृञ्जय देशियोंका भी धिक्कारहै जो कि तुझ युद्धमें बर्त्तमान शूरबीर की रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुये १३ अब शोकसे व्याकुल नेत्र और अभिमन्युको न देखनेसे मैं पृथ्वी कोशून्य देखतीहूं १४ अब मैं बासुदेवजी के भानजे गांडीव धनुषधारी के पुत्र गिरायेहुये अतिरथी को कैसे देखूंगी १५ हेपुत्र आओ आओ मुझ अभागिनी और पुत्रके देखने से तृप्त न होने वाली की बगल में चढ़कर तू दूधसे भरी हुई छातियों को शीघ्रता से पानकर १६ हायबीर नाश पाया हुआ तूमेरे स्वप्नके धनके समान दिखाई दिया है आश्चर्य्यहै कि यह नरलोक बिनाशमान पानीके बुल बुले के समान चंचलहै १७ इस तेरी तरुणभार्य्याको तेरे दुःखसे पूर्णवछड़े से जुदीहुई गौके समान को मैं किस प्रकार से रक्खूंगी १८ हेपुत्र बड़े खेदकी बातहै कि तुमने मुझ अत्यन्त पुत्रके दर्शनाभिलाषिणी को फलके उदय होनेके समय त्याग करके बिना समयके

यात्राकरी है१९ निश्चय करके बलवान कालकी गति श्रेष्ठ लोगों सेभी जाननी कठिनहै जिस युद्धमें केशवजीके नाथहोनेपर अनाथ केसमान मारा गया २० यज्ञकरनेवाले और दानकी प्रकृति रखनेवाले शुद्ध अन्तःकरण और ब्रह्मचर्य्य करने वाले पबित्र तीर्थों के स्नान करने वाले२१ब्राह्मण के और उपकार के ज्ञाता अतिदानी गुरु भक्तिपरायण और हजारों दक्षिणा देने वालों की जोगति है उसको तुम पाओ २२ युद्ध करने वाले मुखके न फेरने वाले और युद्धमें शत्रुओं को मार कर मारने वाले शूरों की जोगतिहै उसको पाओ २३ हजारों गौ दानकरने वाले और यज्ञमें दान देने वालों कीजोगतिहै उसकोपाओ और प्रियस्थानोंके दानकरने वालोंकीजो शुभ गतिहै २४ शरणके योग्य ब्राह्मणोंकोरक्षा करने वालोंकी और अपराधोंके क्षमाकरनेवालोंकीजोगतिहै हेपुत्रउसकोपाओ२५तेजप्रशंसा और व्रतोंके धारण करने वाले मुनि ब्रह्मचर्य्यके द्वारा जिसगतिको पातेहैं और एकस्त्री रखने वाले जिसगतिको पातेहैं हे पुत्र तुम उसगतिको पाओ २६ राजाओंके सुन्दर आचरणोंसे जो सनातन गति होतीहै और पबित्र शरीर वाले चारों आश्रमियोंके पबित्र कर्मोंसे जोगति होतीहै २७ दीनोंपर दया करने वालोंके समान भाग करने वालोंके और परोक्षमें निन्दाकरके रहित मनुष्योंकी जो गति होतीहै हेपुत्र तुम उसगतिको पाओ २८ व्रत करने वाले धर्म के अभ्यासी गुरु भक्तिसे गुरूकी सेवाकरने और आतिथ्य करनेवालोंकी जो सफल गतिहोतीहै हे पुत्र तुम उसको पाओ २९ संकट और दुःखमें जीवन करनेवाले और शोककी अग्निसे जलने वालोंकी जो गतिहै उसगतिको पाओ ३० जो इस लोकमें माता पिताकी सेवाको करते हैं उनकी और जो पुरुष अपनीही स्त्रीमें प्रीति रखनेवाले हैं उनको जो गतिहै उसको पाओ ३१ ऋतुकाल में अपनी स्त्रीके पास जानेवाले और अन्यकी स्त्रियोंसे बचने वाले बुद्धिमानोंकी जो गतिहै हे पुत्र उनकोगतिको पाओ ३२ जो ईर्षासे रहित मनुष्यसब जीवधारियों को क्रोधसे रहित प्रीतिके साथ देखते हैं और मर्मोंको

पीड़ा न देने वालोंकोजो गतियांहैं हेपुत्र उनकोपाओ ३३ मद्यमांस अहंकार छल और मिथ्यासे रहित होनेवाले अथवा दूसरेके दुःखों के दूरकरनेवाले मनुष्यों कीजो गतिहै हेपुत्र तुम उसकोपाओ ३४ लज्जा युक्त सर्व शास्त्रज्ञ परमार्थ से तृप्त और जितेन्द्री साधु पुरुष जिसगतिको पातेहैं हे पुत्र तुम उसगतिको पाओ ३५ तब द्रौपदी उत्तरा समेत उस सुभद्राको इसरीति से बिलाप करती और दुखी देखकर उसकेपासआई ३६ हे राजा वह सबअत्यन्त दुखीचित्त बारंबार रोदनोंको करके उन्मत्तके समान अचेत होकर पृथ्वी परगिर पड़ीं ३७ फिरबिश्वासित बचनोंके द्वारा पुण्डरीकाक्ष श्रीकृष्णजीउस महादुखीसुभद्राकोजलसेसिंचनकर उन२प्रिय बचानोंको कहके ३८ बहुतसा ढाढस बंधाकर उसअचेतरूपा मर्मस्थलोंसेभिदीहुई अत्यन्त कपायमान बहिनसे यह बचनबोले कि ३९ हेसुभद्रा पुत्रका मतशोचकर हेद्रौपदी उत्तराको बिश्वासकरा क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ अभिमन्युने परम गतिको पायाहै ४० हे सुन्दरमुखो जो अन्यपुरुषभी हमारे बंशमेंहैं वह सबभी उस यशस्वी अभिमन्युकीगतिपाओ ४१ हम औरहमारेसब मित्रादिक उसकर्मको करें जिसकर्मको कि तेरे अकेले महारथी पुत्रने किया ४२ शत्रुओं के बिजय करने वाले महाबाहु श्रीकृष्णजी अपनी बहिन सुभद्रा द्रौपदी और उत्तराको इस प्रकार से बिश्वासित करके फिर अर्जुनकेहीपासगये ४३ हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्णजी राजाओंको बन्धु जनोंको और अर्जुन को आज्ञा देकर अन्तःपुर में गये और वे सब लोगभी अपने २ डेरों को गये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उनासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे समर्थ कमललोचन श्रीकृष्णजीने अर्जुनके अति उत्तम महल में प्रबेश करके आचमनादिक करशुभ लक्षण और समान भूमिपर१बैडूर्य्यके समान कुशाओं से शुभसैया

को बिछाया उसके पीछे माला धान आदिकबड़े मंगलीक सुगन्धादिकों से २ उस सैया को अलंकृत करके उत्तम अस्त्रोंसे घेर दिया इसके पीछे अर्जुन के स्नान और आचमन करने पर अच्छे शिक्षितबिनीति परिचारकोंने ३ समीपही देखतेहुये शिवजीके रात्रि संबंधी बलिप्रदान को तैयारकिया इसके पीछे प्रसन्न चित्त अर्जुनने चन्दन और पुष्पमाला आदि से माधवजी को ४ अलंकृत करके उस रात्रिके बलिदानको उनके अर्पण किया फिर मन्द मुसकान करते हुये गोबिन्दजी अर्जुन से बोले ५ हे अर्जुन तेरा कल्याण होय तुम अपनी वृद्धिके निमित्त शयनकरो मैं जानताहूं इसके पीछे श्रीमान् कृष्णजी द्वारपाल और शस्त्र उठाने वाले रक्षक मनुष्योंको नियत करके ६ अपने डेरेमें गये उनके पीछे दारुक सारथी था उस समय बहुत कर्मोंमें बिचार करते हुये उज्ज्वल शयन सैया पर शयन करने वाले हुये ७ भगवान् श्रीकृष्णजीने शोकदुःखोंको दूर करने वाला तेज प्रतापको बढ़ाने वालीं सब बिधियां अर्जुन के निमित्त करीं ८ सब के महेश्वर जगदात्मा बड़े यशस्वी अर्जुन का प्रिय करने वाले कल्याण चाहनेवाले बिष्णुजीने योगमें नियतहोकर उस बिधिको किया ९ उस रात्रिको पांडवों के डेरोंमें कोई भी न सोया हे राजा सब मनुष्यों की नींदेजातीरहीं १० पुत्रके शोकसे दुखी महात्मा गांडीवधनुषधारीके हाथसे एकाएक सिन्धके राजाका मारना प्रतिज्ञाकियागया११ शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला महाबाहु इन्द्रका पुत्र अर्जुन किस रीतिसे उस अपनी प्रतिज्ञाको सफल करेगा इस बिषय में उन्होंने बड़ी चिन्ता करी १२ महात्मा पांडव ने यह कठिन कर्म निश्चय किया और वह राजा बड़ा पराक्रमीहै ईश्वरकी कृपासे वह अर्जुन अपनी उस प्रतिज्ञाको पूराकरे १३ पुत्र के शोकसे महादुखी अर्जुनने बड़ी प्रतिज्ञाकी और पराक्रमी भाइयों समेत बहुतसी सनाओंको धृतराष्ट्रके पुत्रनेउसके सन्मुखकिया १४ वहअर्जुन युद्धमें सिन्धके राजाको मारकर फिरमिलो १५ अर्जुन शत्रुओंके समूहोंको बिजय करके व्रतको पूराकरताहुआ कल्ह सिन्ध

के राजाको न मारकर निश्चय अग्निमें प्रवेश करेगा १६ यह अर्जुन अपनी प्रतिज्ञा को मिथ्या करने को समर्थ नहीं है अर्जुनके मरनेपर धर्मका पुत्र राजायुधिष्ठिर कैसाहोजायगा १७ क्योंकि उस धर्म-पुत्र पांडवने उसी अर्जुनमें संपूर्ण बिजय नियत करीहै जो हमार कर्म है दान कियाहै और जो हवन कियाहै १८उस सबके फलसे अर्जुन शत्रुको बिजय करो हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र इसप्रकारसे उन बिजय के आशीर्बाद देनेवाले शूरबीरों के कहते हुये १९ बड़े दुःखोंसे रात्रिव्यतीत हुई फिर उसरात्रि के मध्य में जागे हुये श्री कृष्णजी२० अर्जुनकी प्रतिज्ञाको स्मरण करके बोले कि उस पीड़ा-मान अर्जुनने जिसका कि पुत्र मारागया यह प्रतिज्ञा करीहै २१ कि कल्ह जयद्रथको मारूंगा हे दारुक उसबातको सुनकर दुर्यो-धन अपने मंत्रियों के साथ मिलकर सलाह करेगा २२ कि जिससे अर्जुन युद्धमें जयद्रथको न मारसके और वह उसकी सब अक्षौहिणी सेना जयद्रथकी रक्षाकरेंगी २३ और द्रोणाचार्य्य अपने पुत्रसमेत सब अस्त्रों के चलाने में अत्यन्त कुशलहैं और अकेला इन्द्रभीदैत्य और दानवोंके अभिमानोंका दूरकरनेवालाहै २४ वह भीयुद्धमेंद्रो-णाचार्य्यजीसे रक्षित मनुष्यके मारनेको साहसनहीं करसक्ता अबमैं प्रातःकाल वही करूंगा जिसप्रकार से कि कुन्तीका पुत्र अर्जुन २५ सूर्य्यास्त होने से पूर्व्वही जयद्रथ को मारेगा क्योंकि कुन्तीनन्दन अर्जुनसे अधिक मेराकोई प्यारा नहींहै जैसा वह मुझको प्याराहै वैसा भाई बन्धु स्त्री नातेदारआदिभी मुझकोनहीं प्यारेहैं हे दारुक मैं एकमुहूर्त्त भी अर्जुन से रहित होकर इस लोकके २६।२७ देखने को समर्थ नहींहूं औरवह वैसा नहीं होगा मैं अकस्मात् उनसबको घोड़े हाथियों समेत बिजय करकेकर्ण और दुर्य्योधनसमेत सबको अर्जुनके निमित्त मारूंगाप्रातःकाल तीनोंलोकमेरे पराक्रमको देखो २८।२९ हेदारुक युद्धमें अर्जुनके निमित्त मुझपराक्रम करनेवाले का बलदेखो हे दारुकप्रातःकाल हजारों राजा और राजकुमारों को३० घोड़ेहाथीऔररथोंसमेत युद्धभूमिमेंसे भगाऊंगाप्रातःकाल उनराजा

ओंकी सेनाओंको चक्रसे मथाहुआदेखेगा ३१ युद्धमेंअर्जुनके निमित्त मुझ क्रोध युक्त से गिराई हुई सेनाको देखेगा प्रातःकाल देवता और गन्धर्वों समेत पिशाच सर्प औ राक्षस ३२ और सबलोक मुझ को अर्जुन का मित्र जानेंगे जो अर्जुन से शत्रुता करता है वह मुझीसे शत्रुताकरता है और जो उसका साथी है वह मेरा साथी है ३३ अर्थात् श्रीकृष्णजी नारायण हैं और अर्जुन नर हैं इसहेतुसे यह दोनों परमात्मा और जीवात्मा रूपसे शरीर में साथही रहते हैं ३४ उसको बुद्धिसे संकल्प करके अर्जुन मेरा आधाशरीर है तुम इसरात्रिके व्यतीत होने पर मेरे उत्तम रथ को शास्त्र के अनुसार अलंकृत करके हांकतेहुये सावधानी से मेरे साथ चलो कौमोदकी नाम गदा दिव्य शक्ति चक्र धनुष बाण ३५ और सब सामग्री को रथ पर रखकर और रथके बैठनेकेस्थानपर मेरी ध्वजाकेस्थान को बिचार करके ३६ युद्ध में रथकोशोभा देनेवाले बीर गरुड़ के स्थानको बिचार करके सूर्य्याग्निके समानप्रकाशितसुबर्ण जालोंसे युक्त उस छत्रको ३७ जिसके जाल बिश्वकर्मा के बनाये हुये दिव्य हैं और अलंकृत बलाहक मेघ पुष्य शैब्य और सुग्रीव नाम घोड़ों में श्रेष्ठ जुड़ेहुये घोड़ोंको अपनेस्वाधीन करके सावधानी से कवच धारणकरके नियत होजाओ हेदारुक वृषभके शब्दकेसमान पांचजन्य शंखके भयकारी शब्दको ३८ सुनकर बड़ी शीघ्रतासे मेरेपास आवो हे दारुक मैं एकही दिनमें फूफी के पुत्र भाई अर्जुन के क्रोध और सब दुःखोंको दूर करूंगा जैसे कि अर्जुन युद्धमें ४० । ४१ धृतराष्ट्र के पुत्रोंके देखतेहुये जयद्रथको मारेगा अथवा अर्जुनजिस२ के मारने में उपाय करेगा हेसारथी मैं कहताहूं कि वहां २ उसकी बिजय होगी ४२ दारुकबोला कि उसकी बिजयतो अवश्यहै पराजय कैसे होसक्तीहै हेपुरुषोत्तम जिसकी रथवानीको आपनेपाया है ४३ मैं इस रात्रिके व्यतीत होने पर अर्जुनकीबिजयके निमित्त यह सब बातें इसीप्रकार करूंगा जैसी कि आप मुझकोआज्ञा देरहेहैं ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय॥

संजय बोले कि ध्यान और बुद्धिसे परे पराक्रमी कुन्तीका पुत्र अर्जुन उस सलाह को स्मरण करता और अपनी प्रतिज्ञाकी रक्षा करताहुआ अचेत होगया १ फिर बड़े तेजस्वी गरुड़ध्वज ने उस शोकसे दुःखी ध्यान करते बानरध्वज अर्जुनको स्वप्नमेंदर्शन दिया२ धर्मात्मा अर्जुन सदैव भक्ती औरप्रेमके साथ सब दिशा में श्रीकृष्ण जीकी प्रतिष्ठाको बन्द नहीं करताथा ३ उसने उठकर उनगोबिन्द जी के निमित्त आसन दिया तब अर्जुनने आसनमें अपनी बुद्धिमानी नहींकी ४ इसके पीछे अर्जुनके निश्चयको जानते बड़ेतेजस्वी बिराजमान श्रीकृष्णजी उस नियत हुये अर्जुन से यह बचन बोले ५ हे अर्जुन अपने चित्तको व्याकुल मत करो निश्चयकरके काल बड़ी कठिनता से बिजय होनेवाला है वह काल सब जीवमात्र को परमेश्वरमें लय करताहै ६ हे द्विपादोंमें श्रेष्ठ तेरी व्याकुलता किस हेतुसे है उसको कहो हेज्ञानियोंमें श्रेष्ठ शोक न करनाचाहिये शोक ही नाशकारक कर्म है ७ जो कार्य करने के योग्य होय उसकोकर्म से करो कर्मसे पृथक् जो मनुष्य का शोकहै हे अर्जुन वही शत्रुहै ८ शोचकरताहुआ मनुष्य अपने शत्रुओंको प्रसन्न करताहै और बांधवोंको दुःखदेताहै उससे मनुष्य नाशको पाताहै इसहेतुसे तुमशोच करने के योग्य नहीं हो ९ बासुदेवजीके इसप्रकार के बचनोंको सुनकर बिद्यावान् और अजेय अर्जुन इस सार्थक वचनकोबोला१० हे केशवजी मैंने जयद्रथ के मारने में बड़ी प्रतिज्ञाकरी कि प्रातःकाल इसदुष्टात्मा पुत्र घाती जयद्रथको मारूंगा ११ हे अबिनाशी निश्चय करके सब महारथियोंसे रक्षित राजा सिन्धमेरी प्रतिज्ञाके मिथ्या करनेके अर्थधृतराष्ट्रके पुत्रोंसे यह पीछेकीओर करनेके योग्यहै १२ हे श्रीकृष्ण माधवजी दुखःकीबात है कि वहां वह मरनेसे शेष बचीहुई ग्यारह अक्षौहिणी सेना बड़ीकठिनतासे बिजय होनेवालीहै १३ हेमाधवजी युद्धमें उन सेनाओंसे और सबमहारथियों से

घिरांहुआ वह दुष्टात्मा जयद्रथकैसे देखनेको संभवहै १४ हेकेशव जी जोमेरी प्रतिज्ञा पूरीनहोगी तोप्रतिज्ञाके निष्फल होनेपर मुझसा क्षत्रीकैसे जीवतारहैगा १५ हेबीर मुझको दुःखके दूरकरनेके उपायकी बड़ी अभिलाषाहै और सूर्य्यबड़ी शीघ्रतासे आता है इसहेतुसे मैंयहकहताहूं १६ तदनन्तर गरुड़ध्वज श्रीकृष्णजीअर्जुनके उसशोक स्थानकोसुनकर अपनेआचमनादिकको करकेपूर्व्वाभिमुख नियत हुये १७जयद्रथके मारनेमें कर्मकरनेवाले बड़ेतेजस्वी श्रीकृष्णजीपांडवों कीवृद्धिके अर्थ यह बचनबोले १८ हेअर्जुन पाशुपत नाम सनातन परम अस्त्रहै श्री महेश्वर देवताने जिसअस्त्रके द्वारायुद्धमें सब दैत्यों कोमारा १९ जोअब वह अस्त्रतुझको याद है तो प्रातःकाल अवश्य जयद्रथको मारेगा और विस्मरण होगयाहै तो प्राप्तकर और मनसे शिवजीको ध्यानकर २० हे अर्जुन उसदेवताको मनसे ध्यानकरके प्रसन्नहो फिरतुम उनके भक्तहो उसी देवताकी कृपासे उसबड़े अस्त्र कोपावोगे २१ इसके अनन्तर अर्जुनने श्रीकृष्णजीके बचनको सुनकर आचमन पूर्व्वक सावधान होकर पृथ्वीपर बिराजमान श्रीशंकरजीको मनसेध्यानकिया२२ फिरशुभलक्षणब्राह्मयमुहूर्त्तके बर्त्तमानहोनेपर अर्जुनने केशवजी समेत अपनेको आकाशमेंदेखा २३ हिमालयके पवित्रभाग प्रकाशोंसे संयुक्त सिद्धचारणोंसे सेवितमणिमन्तपर्व्वतको चला२४बायुकेवेगकेसमान चलनेवाला अर्जुनकेशव जीकेसाथ आकाशको गया और दहिनी भुजापर वह अर्जुन समर्थ केशवजीसे पकड़ाहुआथा २५ और अपूर्व्व दर्शनीय बहुतसे चमत्कारोंको देखतागया उस धर्मात्माने उत्तर दिशा में श्वेत पर्व्वत को देखा २६ कुवेरजीके बिहारमें कमलोंसे शोभायमान कमलनी को और नदियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त जलकी रखनेवाली उस श्री गंगाजी कोभी देखता चला जोकि सदैव फूलफल रखनेवाले वृक्षोंसे कीर्ण युक्त स्फटिक पाषाणोंसे युक्तसिंहव्याघ्रोंसेव्याप्तनानाप्रकारकेमृगों से व्याकुल २७।२८ पवित्र आश्रमों समेत सुन्दर चित्तरोचक पक्षियोंका आश्रय स्थानथा और मन्दराचलके स्थानोंको जो कि किन्न-

रोंके उद्गीतोंसे शब्दायमान स्वर्णमयी और रजतमयी शिखरोंसे युक्तअपूर्व्व नानाप्रकारकी औषधियोंसे अत्यन्त प्रकाशित औरउसी प्रकार फूलेहुये मन्दार वृक्षोंसे भी महा शोभायमान थी ३० और स्वच्छस्निग्धप्रकाशके समूहरूप कालपर्व्वत ब्रह्म तुंगआदि बहुत सी नदी और देशोंको भीदेखा ३१ और तुंग शतशृङ्गपर्व्वत समत शर्य्यातिके बनको और पुण्यकारी अश्वशिरनाम पवित्रस्थान और अथर्वणऋषिके आश्रमकोदेखा ३२ और वृषदेश और अप्सराओंके आश्रयस्थानकिन्नरोंसे शोभित पर्वतोंकेइन्द्र महामन्दरकोदेखा ३३ उस पर्व्वतपर श्रीकृष्णजीके साथचलते हुये अर्जुनने उस पृथ्वीको भी देखाजो कि शुभ निर्झरों से शोभित सुवर्ण धातुमयी चन्द्रमाको किरणोंकेसमान प्रकाशितअंगवाली मालिनियोंसे व्याप्तथीऔरबहुतसे आकारवालेअपूर्व्वरूप अनेकखानोंसे युक्त समुद्रोंकोदेखा ३५ श्रीकृष्णजी के साथ में आश्चर्य्य युक्त अर्जुन आकाश स्वर्ग और पृथ्वीपर चलता हुआ छोड़े हुये बाणके समान आकाशकोगया ३६ तब अर्जुनने ग्रह नक्षत्र चन्द्रमा सूर्य्य औरअग्निके समान प्रकाशमान अतिज्वलित रूप पर्व्वत को देखा ३७ फिर पर्व्वतके शिखर पर नियत उस ज्योति रूप पर्व्वतको पाकर सदैव तप करनेवाले उन महात्मा वृषभध्वज शिवजीको देखा ३८ जो कि अपने तेज से हजार सूर्य्य के समान प्रकाशित गौर वर्ण शूल जटाधारी केवल मृगचर्म के धारण करनेवाले ३९ हजारों नेत्रोंसे अद्भुत शरीर बड़े तेजस्वी देवता प्रकाशित जीवोंसेव्याप्त श्री पार्वतीजीके साथ बिराजमानथे ४० गीतवाद्योंकेशब्द और हास्य नृत्य करती हुई अप्सराओंके घूमने के उत्तम शब्दों सेमनोहर पवित्र सुगन्धियों से शोभायमान ४१ ब्रह्मवादी ऋषियों के दिव्य स्तोत्रों से स्तूयमान होकर सब जीवधारियों के रक्षक धनुषको धारण किये अविनाशी वर्त्तमान थे ४२ फिरसनातन ब्रह्म को स्तुति करते हुये अर्जुनसमेत धर्मात्मा बासुदेवजीने उनशिवजीको देखकरशिरसे पृथ्वीपरसाष्टांङ्ग प्रणाम किया ४३ जोकि सृष्टि के आदि विश्वकर्मा अजन्मा अवि-

नाशी चित्तकी वृत्ति निवृत्त के हेतु उत्पत्ति स्थान ईशान रूप आकाशादि पंचभूतों के और तेजोंके निवास स्थान ४४ जलकीधाराओंके उत्पन्न करनेवाले महत्तत्व और प्रकृतिसे परे देवता दानव यक्ष और मनुष्योंके साधनरूप ४५ योगियोंके आश्रयस्थान अपने स्वरूपमें मग्न ब्रह्मज्ञानियों के आवागवनके स्थान जड़ चैतन्यजीवोंके स्वामी प्रलय कर्त्ता ४६ कालके समान क्रोधरखनेवाले होकरमहात्मा हैं और उन्हीं से इन्द्र और सूर्य्य के गुणोंका उदयहै तब श्रीकृष्ण जीने मन वाणी और बुद्धिकेकर्मोंसे उन शिवजीको प्रणाम किया ४७ सूक्ष्म अध्यात्म पदके चाहने वाले ज्ञानी लोग जिसकोप्राप्त होतेहैं उस अजन्मा कारणात्मा शिवजीकी शरण में प्राप्त हुये ४८ अर्जुन ने भी उस देवता को सब जीवधारियोंका आदि तीनोंकालोंका भी उत्पत्ति स्थान जान कर बारम्बार प्रणाम किया ४९ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्नचित्त और हंसतेहुये शिवजी उन आये हुयेदोनों नर नारायणजीसे बोले ५० हे नरोत्तमो तुम्हारा आना सफल होय तुम आनन्द से उठो हे बीरो तुम्हारे चित्त की क्या अभिलाषा है शीघ्र कहो ५१ तुम जिसप्रयोजनसे मेरे पास आयेहो उसको कहो मैं उसकोकरूंगा तुम अपने कल्याण को मांगो मैं सब तुमकोदूंगा इस केपीछे बड़े बुद्धिमान् महात्मा प्रशंसनीय बासुदेव जी और अर्जुनने उनके उस बचनको सुनकरऔर उठकर भक्तिपूर्व्वक हाथ जोड़कर शिवजीकी दिव्यस्तोत्रों से स्तुति करी ५३।५४ अर्जुन और श्रीकृष्णजी बोले कि ॥ स्तुति ॥

नमोभवायशर्वायरुद्रायबरदायच । पशूनांपतयेनित्यमुग्रायचकपर्दिने ५५ महादेवायभीमाय त्र्यंबकायचशांतये । ईशानायमखघ्नाय नमोस्त्वंधकघातिने ५६ कुमारगुरवेतुभ्यंनीलग्रीवायवेधसे । पिनाकिनेहविष्याय सत्यायविभवेसदा ५७ विलोहितायधूम्रायव्याधायानपराजिते । नित्यंनीलशिखंडायशूलिनेदिव्यचक्षुषे ५८ हेत्रेहोत्रेत्रिनेत्रायव्याधायवसुरेतसे । अचिन्त्यायांबिकाभर्त्रेसर्वदेवस्तुतायच ५९ वृषध्वजायमुंडायजटिनेब्रह्मचारिणे । तप्यमानायसलिलेब्रह्म

यायाजिताय च ६० विश्वात्मनेविश्वसृजेविश्वमावृत्यतिष्ठते। नमो नमस्तेसेव्यायभूतानांप्रभवेसदा ६१ ब्रह्मवक्त्रायसर्वायशंकरायशिवायच। नमोस्तुवाचांपतयेप्रजानांपतयेनमः ६२ नमोविश्वस्यपतये महतांपतयेनमःनमःसहस्रशिरसेसहस्रभुजमन्यवे ६३ सहस्रनेत्रपादायनमोऽसंख्येयकर्मणे। नमोहिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचायच। भक्तानुकंपिनेनित्यं सिध्यतांनोवरःप्रभो ६४ ॥

इति ॥

संजयबोले कि अर्जुन समेत बासुदेवजी ने अस्त्रमिलनेके निमित्त उन महादेवजीको इसप्रकार से स्तुतिकरके प्रसन्न किया ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिअशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

इसके पीछे प्रसन्न चित्त प्रफुल्लित नेत्र हाथजोड़े हुये अर्जुन ने उन तेजों केभंडार शिवजी के संपूर्ण रूपको देखा१ और उस अच्छी रीतिसे दृष्ट गोचर कीहुई अपनी भेंटको जोकि रात्रिके समय सदैव अर्पण की जातीथी उसको शिवजीके पास वर्त्तमान देखा अर्थात् जिसको कि बासुदेवजीके अर्थ निवेदन कियाथा २ इसके पीछे पांडव अर्जुन चित्तसे श्रीकृष्णजी को और शिवजी को पूजकर शंकरजी सेबोले कि कृपासिंधु भक्तवत्सल मैं दिव्यअस्त्र को चाहताहूं फिर बरके निमित्त अर्जुनके उस बचन को जानकर मन्दमुसकान करते देवता शिवजी बासुदेवजी और अर्जुन से बोले ४ कि हे नरोत्तम पुरुषो तुम्हारा आना श्रेष्ठ हुआ तुम्हारे चित्त का मनोरथ विदित हुआ तुम दोनों जिस अभिलाषा के लिये यहां आये हो उस मनोरथ को मैं तुम्हारे अर्थ देताहूं हे शत्रुओं के मारने वालो समीपही अमृत से भरा हुआ दिव्य सरोवर है उसमें मैंने पूर्वकालके समयसे वह दिव्यधनुष और बाण रक्खाहै ५।६ जिसके द्वारा मैंने युद्ध में देवताओं के शत्रु सब दैत्यों को माराथा हे श्रीकृष्ण और अर्जुन तुम दोनों उस उत्तम धनुष और बाण को लाओ ७ यह सुनकर

उनके बचनको अंगीकार करके वह दोनों शिवजीके सब पार्षदों समेत उस दिव्य सरोवरको चले जो कि सैकड़ोंदिव्य ऐश्वर्य्यों से भराहुआ पवित्र दिव्य अभिलाषओंका देनेवाला शिवजी काब तलाया हुआथा वह दोनों नरनारायण ऋषिनिर्भय उस सरोवरपर गये ८। ९ तदनन्तर उन दोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजीने सूर्य्य मंडलके समान उस सरोवरपर जाकर जलके भीतर भयकारी सर्प कोदेखा १० औरहजारशिर रखनेवाले अग्निकेसमान प्रकाशमान बड़ोज्वालाओंके उगलनेवाले एकदूसरे उत्तमसर्पको देखा ११इसके पीछेश्रीकृष्णजी औरअर्जुन आचमनादिक करके शिवजीकोनमस्कारकर हाथजोड़करके उनदोनोंसर्पोंके सन्मुख खड़ेहुये वेदोंके जानने वाले वहदोनों अर्जुन और श्रीकृष्णजी सर्वात्म भाव से शिवजीको प्राप्तहोकर उसअतुल्य प्रभाववाले ईश्वरको प्रणामकरके ब्रह्मरूप शतरुद्रीका पाठकरनेलगे १३ फिरवह दोनोंसर्परुद्रजीके माहात्म्यसे सर्परूपको छोड़करधनुषबाण रूपहोगये वहीशत्रुओंकामारनेवाला जोड़ाप्राप्तहुआ १४ उन प्रसन्न चित्तदोनों महात्माओंने उसअच्छे प्रकाशमान धनुष बाणको उठालिया और वहांसे लाकर महात्मा शिवजीको लाकरदिया १५ इसकेपीछे शिवजी के बगलसे उनका दूसरा रूपब्रह्मचारी और पिंगल बर्णनेत्र तपका स्थान पराक्रमी आरक्त नीलारंग रखनेवाला प्रकट हुआ १६ फिर वह सावधान उस उत्तम धनुषको लेकर खड़ाहुआ और बाण समेत उस उत्तम धनुषकोबुद्धिके अनुसार खैंचा १७ निस्सन्देह पराक्रमी अर्जुनने उसकी मौर्वी अर्थात् प्रत्यंचा और मूठके स्थान को देखकर और शिवजीके कहेहुये मन्त्रकोसुनकर अस्त्रकोलेलिया फिरउसबड़ेपराक्रमी प्रभुने उसबाण को सरोवरही में छोड़ा अर्थात् उस वीरने उसधनुष को फिरसरोवरही में नियत किया १९ तब उसके पीछे स्मरण करनेवाले अर्जुनने शिवजीको प्रसन्न जानकर बनमें दिये हुयेवरको और शंकरजीके दर्शनको २० अपने मनसे यादकिया और कहा कि वह अस्त्र मुझको प्राप्तहोय तब प्रसन्न मन होकर शिव

जीने उसकी उस अभिलाषाको जानकर २१ उस श्रेष्ठ और भयकारी उसकी प्रतिज्ञाके पूरेकरनेवाले पाशुपत अस्त्रको दिया उसके पीछे ईश्वरसे उस पाशुपतनाम दिव्यअस्त्रको पाकर २२ रोम२से प्रसन्नचित्त निर्भय अर्जुनने अपने कार्यको कियाहुआ माना और अत्यन्तप्रसन्नमन दोनोंने शिरोंसेमहेश्वर शिवजीको दंडवत्की२३ उस समय शिवजी से आज्ञा लेकर बीर अर्जुन और श्रीकृष्णजी बड़े आन्दसे युक्तहोकर अपने डेरेमें पहुंचे २४ असुरसंहारि शिवजी से ऐसे आज्ञालेने वाले हुये जैसे कि पूर्व्व समयमें जंभके मारनेके अभिलाषी प्रसन्नचित्त इन्द्र और बिष्णुहुयेथे २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार से उन दोनों श्रीकृष्ण और दारुक सारथी के बार्त्तालाप करते हुये वह रात्रि ब्यतीत हुई और राजा युधिष्ठिर भी जगे १ उस समय पाणिस्वनिक, (अर्थात् हाथ की चुटकी बजानेवाले) मागध, मधुपर्किक, बैतालिक, और सूत इन सब लोगोंने उस पुरुषोत्तम युधिष्ठिर की प्रशंसा करी २ नर्त्तक लोग नृत्य करनेलगे और चित्त रोचक स्वर वाले गायकों ने यहगान किया कि आपका बंश तुम्हारे अभीष्टोंको प्राप्तकरे ३ मृदंग झरझर भेरी पणव आनक गोमुख आडंबर शंख और बड़े शब्द वाली दुन्दुभी ४ इनके सिवाय अन्य २ बाजों कोभी उन सब लोगों ने बजाया जो कि अत्यन्त प्रसन्न सर्ब गुणसंपन्न अपने काम में कुशल बड़े २ प्रबीणोंके शिक्षित शिष्य थे ५ उन बादल के शब्दों के समान बड़े भारी शब्दों में स्वर्गको स्पर्शकरके उस सोये हुये राजशिरोमणि युधिष्ठिरको जगाया ६ वह बड़ों के योग्य उत्तम शयन पर से सोकर जागा हुआ राजा सैयासे उठकर आवश्यक कार्य्यके निमित्त स्नानालयको गया ७ फिर वहां स्नान करने के पीछे श्वेत वस्त्रों की पोशाकोंसे अलंकृत स्नानकराने

वाले एकसौ आठ तरुण पुरुष सुनहरी जल से पूर्ण कलशों समेत आन कर सन्मुख नियत हुये ८ तब वह लघु अम्बरों को धारण करके शुभ आसन पर बिराजमान हुआ और चन्दनसे युक्त अभिमंत्रित जलों से राजाने स्नान किया ९ फिर पराक्रमी सुशिक्षित मनुष्यों के द्वारा सर्वौषधी के उबटनों से उबटन कियेहुये सुगन्धयोंसे युक्त जलसे स्नान करके अग्निकी दी हुई राजहंस के समान वर्ण वाली पगड़ी को मस्तक के जलके सुखाने के लिये शिर पर बांधा ११ वह महा बाहु श्वेत चन्दन से शरीर को लेपन करके माला धारी और पवित्र वस्त्रोंका धारण करने वाला हाथ जोड़कर पूर्वाभिमुख नियत हुआ १२ सत्पुरुषोंके मार्ग में नियत युधिष्ठिर ने जयकरने के योग्य मंत्रको जपा फिर नम्रता पूर्वक वह युधिष्ठिर ज्वलित अग्नि की शाला में पहुंचा१३ वहां पवित्रासन समेत समिध आहुती और मंत्रों से संयुक्त अग्निको पूजकर उस घरसे निकला १४ फिर उस पुरुषोत्तम राजाने दूसरे महलमें जाकर वेदज्ञ और बड़े श्रेष्ठ वृद्ध ब्राह्मणों का दर्शन किया १५ उन जितेन्द्री वेद व्रतमें स्नानकिये हुये अनृत नामस्नानसे स्नानकिये हुये हजारों शिष्यों समेत सूर्य्य के उपासक अन्य ब्राह्मणोंकोभी देखा१६ फिर उस महा बाहुने उन सब ब्राह्मणों को अक्षत पुष्पोसे स्वस्ति बाचन कराके प्रत्येक ब्राह्मण को सहत घृत फल और उत्तम मंगली अनेक बस्तुओं से युक्त १७ एक२ निष्क सुवर्ण का दानदिया फिर अलंकृत सौ घोड़े अच्छे२ बस्त्र और यथाभिलाष दक्षिणादीं १८ इसी प्रकार उस पांडुनन्दन ने दूधकी देने वाली सुवर्ण शृङ्गी चांदीके खुर रखनेवालीं सवत्सा कपिला गोओं को दान करके परिक्रमा करी १९ स्वस्तिक अर्थात् शुभ बस्तु संपुट सुवर्णके अर्घपात्र माला जल पूरित घट और प्रकाशित अग्नि २० अक्षत पूर्ण पात्र मंगली रूप गोरोचन अच्छी अलंकृत शुभ कन्या दही, घृत, सहत, जल २१ मंगली रूप पक्षी, और अन्य२ भी जो मंगलीबस्तु हैं उन बस को युधिष्ठिर देखकर और स्पर्श करके बाहरके द्वार पर

गया २२ उस के पीछे उस द्वार पर महा बाहु युधिष्ठिर के नियत होनेपर सेवक लोगोंने बिश्वकर्माजीके बनाये हुये उस दिव्यउत्तम आसनको प्राप्त किया जो कि स्वर्णमय सब ओर से कल्याण रूप मुक्ता और बैडूर्य्य मणियों से शोभायमान २३ बहुमूल्य बस्त्रादिकों से अलंकृत और रत्नों से जटित था २४ उस आसनपर बिराजमानहुये युधिष्ठिर के उनवृद्धोंके योग्य बड़े उत्तम आभूषणों को सेवक लोगोंनेलाकर उपस्थितकिया २५ हे महाराज माला मणि मुक्ताओंकेभूषण और पोशाकधारी महात्मा युधिष्ठिरका रूप शत्रुओंके शोकोंका बढ़ानेवाला हुआ २६ सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित शोभायमान सुनहरी दंडवाले चलायमान चामरों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजिलियों से बादल शोभायमान होता है २७ फिर वह कौरवनन्दन सूत लोगों से स्तूयमान बन्दी जनों से बंद्यमान गंधर्बों से गीयमान होता हुआ २८ फिर एक मुहूर्त्त में ही बन्दियोंके बड़ेशब्द हुये रथोंकी नेमियों के और घोड़ोंके खुरोंके शब्द प्रकटहुये २९ हाथियोंकेघंटोंकेशब्द शंखोंकी ध्वनि और मनुष्यों के चरणों के आघात से पृथ्वी कंपायमान के समान हुई ३० इस के पीछे कुण्डल धारी खड्ग युक्त कवच धारी तरुण पुरुष द्वार पालक ने द्वारके भीतर जाकर जंघाओं से पृथ्वी पर नियत होकर प्रणाम के योग्य राजा को शिरसे दंडवत औरप्रणाम करके धर्मपुत्र ३१। ३२ महात्मा युधिष्ठिर से समीप आये हुये श्रीकृष्णजी के आने का समाचार निवेदन किया वह पुरुषोत्तम आगमन के धन्यबाद के साथ श्रीकृष्णजी से बोला ३३ और कहने लगा कि परम पूजित अर्घ आसनादिक इन श्रीकृष्णजी को दो इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी को बैठा कर और आपभी उत्तम आसन पर बैठ कर ३४ उन का बिधि के अनुसार पूजन किया ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि इस के पीछे अत्यन्त प्रसन्न कुन्ती नन्दन राजा युधिष्ठिर जनार्द्दन जी को प्रसन्न करके उन देवकी नन्दनजी से बोले १ हे मधुसूदन जी क्या आपकी रात्रि सुख पूर्व्वक व्यतीतहुई और हे अबिनाशी आप के सब ज्ञान निर्मल हैं २ फिर बासुदेव जीने भी युधिष्ठिर को उन के योग्य सत्कार किया इसके अनन्तर सूत ने आये हुये सेवक नौकर आदि के आनेका निवेदन किया ३ फिर राजाकी आज्ञासे उस सूतने उन मनुष्यों को सभामें बुलाकर बैठाया बिराट, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्विकी, ४ धृष्टकेतु, चन्देरी काराजा महारथी द्रुपद, शिखण्डी, नकुल, सहदेव, चेकतान, केकय,युयुत्सू, पांचालदेशी,उत्तमौजस, युधामन्यु,सुबाहु और द्रौपदीके सब पुत्रों को राजसभामें लाकर बैठाया ५ यह सब लोग और अन्य क्षत्री उन क्षत्रियों में श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरके पासआये और सब शुभ आसनोंपर बैठगये ७ महाबली महात्मा बड़े तेजस्वी दोनों बीर श्रीकृष्ण और युयुधान एकआसन पर बैठे ८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उन महात्माओं के समक्षमें मधुदैत्य संहारी कमल लोचन श्रीकृष्णजी से बड़ी नम्रता और मधुर बाणी से यह बचन बोले कि जिस प्रकार से देवता लोग इन्द्र की रक्षामें हैं उसी प्रकार हम सबलोग आप अकेलेकी शरणमें होकर युद्धमें विजयपूर्व्वक अबिनाशी सुखोंको चाहते हैं १० हे श्रीकृष्णजी आपउस हमारे राज्य के नाशको वा शत्रुओं से अप्रतिष्ठा आदि नाना प्रकार के कष्टोंको भी जानते हैं ११ हे सबके ईश्वर हे भक्तों के प्यारे हे मधुदैत्य के मारने वाले श्रीकृष्णजी हम सबके बड़ेसुख और यात्रा तुम्ही में नियत हैं १२ हे श्रीकृष्णजी सो तुम सब प्रकार से वही करने को योग्यहो जिसको कि मेरा चित्त आप में अभिलाषा करताहै अर्थात् वह अर्जुन की प्रतिज्ञा जिसको कि उसने करना चाहाहै वह सत्यहोय १३ सो आप इसदुःख और क्रोधरूप अथाह

समुद्र से पार उतारो हे माधवजी अब पार उतरने के अभिलाषी हम सब लोगोंकी आपही नौका हूजिये १४ शत्रु के मारने को उद्युक्त रथी युद्धमें वह बात नहीं करता है जैसे कि हे माधवजी उपाय करनेमें प्रवृत्त सारथी करताहै १५ हे महाबाहु जनार्दन जी जिस प्रकारसे कि आप बड़ी२ आपत्तियोंसे यादव लोगोंकी रक्षा करते हो उसी प्रकार हम लोगोंकी भी दुःखोंसे रक्षाकरनेको योग्य हो १६ हे शंख चक्र गदा धारी आप नौका रूप हो कर नौका से रहित महा गंभीर कौरवरूपी समुद्रमें डूबेहुये पाण्डवोंको बाहर निकालो १७ हे देवताओं के ईश्वर देवता आदि अन्तसेरहित संसारके संहार कर्त्ता संसारके सब लघुदीर्घोंसेव्याप्त बिजयकेअभ्यासी पापोंके नाश करने वाले बैकुंठ परमात्मा श्रीकृष्णजी आपको नमस्कारहै १८ नारदजीने आपको प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठ बरदाता शार्ङ्गधनुष धारी और सबसे परे कहाहै हे माधवजी उसको सत्य करो १९ सभाके मध्यमें इसरीतिसे धर्मराज युधिष्ठिरके कहनेपर सजल बादलके समान शब्दवाले पीताम्बर कमललोचन श्रीकृष्ण जी युधिष्ठिर से यह बचन बोले २० देवताओं समेत सब लोकोंमें भी उस प्रकार का धनुष धारी कोईनहीं है जैसा कि संसारके सब धनोंका बिजय करने वाला २१ महाबली अस्त्रों का ज्ञाता अतुल पराक्रमी युद्धमें कुशल सदैव क्रोध युक्त और तेज धारियोंमें श्रेष्ठयह पांडव अर्जुनहै २२ वह तरुण अवस्थावाला उन्नतस्कन्ध दीर्घबाहु महाबली उत्तम सिंहके समान चलनेवाला श्रीमान् अर्जुन तेरे सब शत्रुओंको मारेगा २३ और मैं वह करूंगा जिस प्रकार कुन्तीका पुत्र अर्जुन उठी हुई अग्निके समान दुर्य्योधन की सेनाओंको भस्म करेगा २४ अब अर्जुन उस दुर्बुद्धी नीच अभिमन्यु के मारने वाले दुष्टात्मा जयद्रथको अपने बाणों से उसमार्ग में डालेगा जिसमें कि फिर उसका दर्शन न होगा अब गिद्ध बाज कठिन शृगाल आदि अनेक जीवजो मनुष्यों के खाने वालेहैं वह सब उसके मांसकोखायेंगे २६ जो कदाचित् इन्द्र समेत देवता भी उसके रक्षक होंय तो

भी यह जयद्रथ अब युद्धमें माराहुआ होकर यमराजकी राजधानी को पावेगा २७ अब अर्जुन जयद्रथको मारकर आपकेपास आवेगा हे ऐश्वर्य्यके आगे रखने वाले राजा युधिष्ठिर तुम निस्संदेह होकर शोचसे रहित होजाओ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिन्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि इस प्रकार से उनलोगों के वार्त्तालाप करनेकी दशामें भरतर्षभ राजा युधिष्ठिरके देखने के लिये अपने मित्र बर्गों समेत अर्जुनभीआकर प्रकटहुआ १ फिर पांडवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरअपने आसनसे उठकर उसमंगलकारी सभामें नमस्कारपूर्व्वक आगे नियत हुये अर्जुन को बड़े प्रेमसे छातीसे मिलाकर मिले २ औरउसके मस्तकको सूंघकर भुजासेअपनी बगलमें लेकर उत्तम २ आशीर्बादों को देकर मन्द मुसकानके साथ यहबचन बोले ३ हे अर्जुन प्रकट है कि युद्धमें निश्चयकरके तेरेचित्तके अनुसारतेरीबड़ी बिजयहै क्योंकि श्रीकृष्णजीप्रसन्नहैं ४ फिरअर्जुन युधिष्ठिर से बोले कि आपका भलाहोय मैंने केशव जीकीही कृपा से दृष्टि गोचरहोने वाले एक बड़े आश्चर्य्य को देखा ५ तदनन्तर अर्जुन ने अपने शुभ चिन्तकों की प्रसन्नता और बिश्वास के निमित्त जिस प्रकार से कि उन महात्मा योगेश्वर शिवजी से मुलाक़ात हुई उस सब वृत्तान्तको बर्णन किया ६ तदनन्तर वह सबलोग आश्चर्य्यित होकर शिरोंसे पृथ्वीको स्पर्श पूर्व्वक शिवजी को नमस्कार करके धन्यहै धन्यहै यह शब्द बोले ७ तदनन्तर सब इष्टमित्र व भाई बन्धु धर्म पुत्र युधिष्ठिर से आज्ञा लेकर शस्त्रोंको धारण किये हुये प्रसन्न चित्त होकर बड़ी शीघ्रतासे युद्धकेनिमित्त निकले८और वह सात्यकी अर्जुन और श्रीकृष्णजीभीबड़े प्रसन्नचित्तराजाको नमस्कार करके युधिष्ठिर के डेरे से बाहर निकले ९ फिर वह सात्यकी और श्री कृष्णजी दोनोंबीर एक रथकी सवारी में साथ बैठकर अर्जुनके

डेरेमें गये और श्री कृष्णजीने वहां जाकर सारथी के समान युद्धमें रथियोंमेंश्रेष्ठ अर्जुनके उसरथको जिसपर कि हनुमान्जीका स्वरूप था अलंकृत किया वह बादल के समान शब्दायमान संतप्त किये हुये सुवर्ण के समान प्रकाशित ११ अलंकृत कियाहुआ उत्तम रथ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बाल सूर्य्यसे प्रकाशित होकर शोभित होताहै इसकेपीछे सबसामानसे अलंकृत पुरुषोत्तमने उस अलंकार किये हुये रथको नित्य कर्म जपादिक से निवृत्त होनेवाले अर्जुनसे वर्णनकिया फिर पुरुषोंमें मुकुटकेसमानश्रेष्ठ सुवर्णकीमाला रखने वाले १३ । १४ धनुषबाणधारी अर्जुनने उसरथको दाहिना किया और तप, विद्या, और अवस्थामें बड़े क्रियावान जितेन्द्री पुरुषों के विजयकारी आशीर्वादों से स्तूयमान अर्जुन उस बड़े रथमें सवार हुआ तदनन्तर युद्धकी विजय से संबंध रखने वाले मन्त्रोंसे वह श्रेष्ठ और प्रकाशित रथ १५ ऐसे अभि मंत्रित किया गयाजैसे कि उदय होने वाला सूर्य्य अभिमंत्रित होता है फिर वह सुवर्णके भूषणों से अलंकृत रथियोंमेंश्रेष्ठ १६ अर्जुन ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि मेरु पर्वत पर स्वच्छ और प्रकाश मान सूर्य्य होताहै फिर सात्यकी और श्रीकृष्णजी भी अर्जुनके सन्मुख ऐसे सवार हुये १७ जैसे कि राजा शर्यातके यज्ञमें जातेहुये इन्द्र देवता के आगे दोनों अश्विनी कुमार होतेहैं फिर सारथियों में श्रेष्ठ गोबिन्दजीने बाग डोरोंको ऐसे पकड़ा १८ जैसे कि वृत्रासुर के मारनेको जाते हुये इन्द्रके रथकी रस्सियोंको इन्द्रके सारथी मातलिने पकड़ाथा उन दोनोंके साथ अत्यन्त उत्तम रथमें बैठाहुआ अर्जुन १९ जयद्रथ के मारनेका और शत्रुओंके समूहों के नाश करने का अभिलाषी होकर ऐसे चला जैसे कि बुध और शुक्रके साथ अन्धकार को दूर करता हुआ चन्द्रमा चलताहै २० अथवा जैसे कि वरुण और मित्र देवताओंके साथ तारक संबंधी युद्धमें इन्द्र गयेथे इसके पीछे मागधों ने मंगली रूप शुभ स्तोत्र और बाजोंके शब्दोंके साथ २१ जाते हुये उस बीर अर्जुन की स्तुति को किया वह बिजय के

आशीर्वाद पुण्याहवाचन, घोष सूत मागधों के शब्द २२ बाजोंके शब्दोंसे संयुक्त उन्होंकी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवालेहुये इसके पीछे चलनेवाली सुगन्धियों से युक्त पवित्र वायु भी २३ अर्जुन को प्रसन्न करती और शत्रुओं को सुखाती हुई चली और हे राजा उसी क्षण में नानाप्रकार के मंगलों के सूचक २४ बहुत से शकुन पांडवोंकी विजयके निमित्त प्रकटहुये और हेश्रेष्ठ वही उनके शकुन तुम्हारे पुत्रोंके अशकुन रूपहुये २५ अर्जुन विजय के निमित्त उन दाहिने शकुनोंको देखकरबड़े धनुषधारी सात्यकीसे यह बचनबोले कि २६ हे सात्यकी अबयुद्धमेंमेरीविजय अवश्य दिखाई देती है हे शिनि वंशमें पुंगव जोकि शकुन दिखाई देतेहैं २७ इस हेतु से मैं अवश्य वहांजाऊंगा जिसस्थानपर यमलोकमें जाने का अभिलाषी राजा सिंधु मेरे पराक्रमकी बाटदेखरहाहै २८ जैसे कि जयद्रथका मारना मेराउत्तम कर्महै उसी प्रकार धर्मराजकी रक्षाकरना भी मेराबहुतबड़ा परमकर्महै २९ हेमहाबाहु सो तुमअब राजाकोचारों ओरसे ऐसेरक्षित करो जैसे कि मैं रक्षाकरूं उसी प्रकार तुमसे भी रक्षित कियाजाय ३० मैं लोकमें ऐसा किसीको नहीं देखताहूं जो युद्धमें तुझ वासुदेवजी के समानको विजयकरे चाहैआप देवताओं का इन्द्रभी होय उसकोभी तेरे सन्मुख होने को समर्थ नहीं देखता हूं ३१ हे नरोत्तम मैं तुझमें और महारथी प्रद्युम्नमेंविश्वास करने वालाहोकर बिनाश्रमका हुआ जयद्रथ के मारनेको समर्थहूं ३२ हे यादवकिसी दशामेंभी मुझमें रुकावटनकरनाचाहियेतुझकोसर्वात्मा भावसे राजाकी रक्षाकरनी योग्यहै ३३ जहांपर महाबाहु वासुदेव जी वर्तमानहैं और मैं भी जहां नियतहूं निश्चयकरके वहां किसी प्रकारकी आपत्ति नहींपड़तीहै ३४ शत्रुओंके वीरों का मारनेवाला सात्यकी अर्जुनके इसप्रकारके वचनसुनकर बहुत अच्छा कहकर वहां गया जहां पर कि राजायुधिष्ठिर वर्त्तमानथे ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्वणि चतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

पचासीवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि अभिमन्युके मरने और प्रातःकाल होनेपर उन दुःखशोकसे युक्त पांडवोंने क्या किया और वहां मेरे कौन २ शूर बीरोंने युद्धकिया १ कौरव और मेरेपुत्र इसपापको करके उस अर्जुनके कर्मोंको जानतेहुये किसप्रकारसेनिर्भयहुयेउसकोमुझसेकहो २पुत्रके शोकसे दुखी व नाश करनेवालेकालके समान क्रोधयुक्त आते हुयेपुरुषोत्तम अर्जुनको किसप्रकारसे युद्धमेंदेखा ३ मेरेपुत्रोंने उस हनुमानजीकी ध्वजा रखनेवालेबड़ेधनुषको चलायमान करनेवाले पुत्रकेमरनेसे दुखी अर्जुनको युद्धमेंदेखकर क्या किया ४ हेसंजय युद्ध में दुर्य्योधनकीक्या दशाहुई अबमैंने बड़ाविलाप सुना है प्रसन्नता नहीं सुनी५ जो शब्दकि चित्तरोचक औरकानोंको सुखदेनेवालेथे वह सब अब जयद्रथकेडेरेमें नहीं सुनेजाते हैं ६ अब मेरेबेटोंके डेरेमें प्रशंसा औरस्तुतिकरनेवाले सूतमागध और नर्त्तकोंकेसमूहोंके शब्दसबरीतिसेनहींसुनेजातेहैं७ जहांपर मेरेकानशब्दोंसे सदैवशब्दायमान होतेथेउन दोनोंके शब्दोंको अब नहीं सुनताहूं८हेतातसंजय पूर्व्वसमयमें सत्यऔर धृतवाले सोमदत्तके महलमें मैंने बैठकर उत्तम शब्दको सुना ९सो मैं पापात्मा पुण्यसेरहित अपनेपुत्रोंकेडेरेको शोकके शब्दोंसे शब्दायमान औरउत्साहकेबिना देखताहूं १० बिविंशति, दुर्मुख, चित्रसेन, बिकर्ण और दूसरेमेरे पुत्रोंकेशब्दभी पूर्बके समान नहीं सुने जाते हैं ११ जिस द्रोणाचार्य्य के पुत्र और मेरे पुत्रों के रक्षास्थान बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा को ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य जातिके शिष्यलोग उपास ना करतेथे १२ और बितंडाबाद बर्णन बार्त्तालाप शीघ्रता करने वाले और बजाये हुये नाना प्रकार के चित्त रोचक बाजे और गानोंसे दिनरात्रि रमण करता हुआ हास बिलास करताथा १३ और बहुत से कौरव पांडव और यादवोंसे उपासना किया हुआ था हे सूत उस अश्वत्थामा के घरमें अबपूर्व्व के समान शब्द नहीं है १४ जो नर्त्तक और गाने वाले उस

बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाके पास सदैव नियत होतेथे उनकी भी ध्वनि नहीं सुनीजातीहै १५ रात्रिके समय बिन्दु अनुबिन्दु राजाओं के डेरे में जो बड़ी भारी ध्वनि १६ सुनी जातीथी अब उस प्रकार की नहीं सुननेमें आतीहै और प्रसन्न रहने वाले केकयलोगों के डेरेमें ताल समेत गीतोंके बड़े२ शब्द सुने जातेथे १७ और हेतात नर्त्तक लोगोंके जो शब्द सुनेजातेथे वह अब नहीं सुनेजाते जो सातवार वाले तमूरोंके फैलानेवाले शास्त्रज्ञ याजकलोग सोमदत्ति की उपासना करते थे १८ उनके भी शब्द नहीं सुनेजातेहैं धनुष प्रत्यंचा के शब्द वेदध्वनि तोमर खड्ग और रथ के जो शब्द १९ द्रोणाचार्य्य के घरमें होतेथे मैं उनको भी नहीं सुनताहूंनानाप्रकार के देश जन्यगीतोंके जो शब्द और बाजोंके जो शब्द आधिक्यता से होतेथे वह भी अब नहीं सुनेजातेहैं जब अविनाशी श्री कृष्णजी सब जीवोंकी दयाके लिये शान्तीकी इच्छासे उपप्लव्य स्थानसेआये तब उसके पीछे मैंने उस निर्बुद्धी दुर्य्योधन से कहाथा २१।२२ कि हे बेटा बासुदेव रूप तीर्थके द्वारा पांडवोंसे सन्धिकर लो मैं इस बातको समय के अनुसार उचित और योग्य जानताहूं हे दुर्य्योधन तुम बिपरीत कर्म मत करो २३ जो तुम सन्धि चाहने वाले और परिणाम में कुशल चाहने वाले केशवजी को उत्तर दोगे तो युद्धमें तेरी बिजय नहींहै २४ उसने उस सब धनुष धारियों में श्रेष्ठ और पूर्व्व कर्मोंके कहने वाले श्री कृष्णजी को उत्तर दिया और अन्याय से उनकी बातको अंगीकार नहीं किया २५ इसके पीछे वह दुर्बुद्धी कालकाखेंचाहुआ दुर्य्योधन मुझको त्यागकरके उन दोनों दुश्शासन और कर्णके मतपर कर्म करनेवाला हुआ २६ मैं द्यूत कर्म को नहीं चाहताहूं और बिदुरजी उसको निषेध करतेहैं और जयद्रथ भी उस द्यूत कर्मको नहीं चाहताहै और भीष्मजीभी बारंबार निषेध करतेहैं २७ हे संजय शल्य, भूरिश्रवा, पुरु, मित्रोजय, अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, यह सब भी द्यूतकर्म को नहीं चाहते हैं २८ जो मेरा पुत्र इन सबके मतको अंगीकार करके कर्म करेगा

तो ज्ञाति,मित्र,और अपने शुभचिन्तकों समेत वेदनासेरहित नीरोग होकर जीवतारहैगा २९ और शुद्ध मधुर भाषण करनेवाले ज्ञाति बान्धवों से प्रीति पूर्व्वक बोलने वाले कुलीन संमती और प्राज्ञ अर्थात् ज्ञानी पांडव लोग सुखको पावेंगे ३० धर्म से संबंध रखने वाला मनुष्य सदैव और सब स्थानोंमें सुखको पाताहै और मरने पर शुद्ध मोक्षको भी प्राप्त करताहै ३१ वह पराक्रम से बिजय करने वाले पांडव आधे राज्य को भोगने के योग्यहैं यह समुद्रान्त पृथ्वी उन्होंके भी बाप दादोंकी है ३२ पांडव लोग धर्ममार्गमें प्रवृत्त होकर धर्ममें ही नियतहोतेहैं हेतात वह पांडव लोग जिनलोगोंके बचनों को मानतेहैं वह मेरी ज्ञाति वालेहैं ३३ शल्य,सोमदत्त,महात्माभीष्म,द्रोणाचार्य्य,बिकर्ण,बाल्हीक,कृपाचार्य्य ३४ और अन्य सब महात्मा भरतबंशी वृद्धलोग तेरे निमित्त बार्त्तालाप करेंगे उन महात्मा लोगों के बचन को वह पांडव करेंगे ३५ क्या तुम उनको मध्यमें किसी को ऐसा मानतेहो कि वह तुम्हारे बिपरीत कहेगा श्रीकृष्णजी कभी धर्म को नहीं त्यागेंगे और वह सब उनकीआज्ञानुसार चलने वालेहैं ३६ वह बीर मुझसे भी धर्मरूप उपदेशों के द्वारा समझायेगयेहैं इससे वह पांडव लोग धर्मके बिपरीत कभी नहीं करेंगे क्योंकि वह धर्मात्माहैं ३७ हे सूत इस प्रकार बिलाप करतेहुये मैंनेअनेक प्रकारसे पुत्रको समझाया परन्तु उस अज्ञानीने मेरे बचनोंको नहीं सुना इसमें मैं कालकी बिपरीतगति मानताहूं जिसस्थान पर भीमसेन अर्जुन वृष्णियोंमें बीर सात्यकी पांचाल देशी, उत्तमौजा, दुर्जय युधामन्यु ३९ निर्भय धृष्टद्युम्न आदि करके सहित दुर्जय शिखण्डी, अश्मक, केकयदेशी क्षत्रधर्मा सोमकि ४० चन्देरी का राजा चेकितान काशीके राजा का पुत्र समर्थ द्रौपदी के पुत्र राजा विराट महारथी द्रुपद ४१ पुरुषोत्तम नकुल औरसहदेव और मंत्री श्रीकृष्णजीहैं वहां इसलोकका जीवनचाहने वाला कौनसा शूरबीर इनबड़े शूरबीरों से युद्ध करसक्ताहै ४२ सिवाय दुर्य्योधन कर्ण सौवलके पुत्र शकुनि और दुश्शासनके मेरा

कौनसा शूरबीर इन दिव्य अस्त्र चलाने वाले शत्रुओंको सहसक्ताहै मैं इन चारोंके सिवाय किसी पांचवें शूरबीरको इनके सन्मुख जाने वाला नहीं देखताहूं बाग डोरोंको हाथ में रखने वाले श्रीकृष्णजी जिसके रथ परनियत होय ४३ । ४४ और अलंकार युक्त शस्त्रों-का धारण करनेवाला अर्जुन युद्ध कर्त्ताहो उस दशामें उनकीपरा-जय किसी प्रकार से नहीं होसक्तीहै फिर यह दुर्य्योधन उन बिला-पों को स्मरण न करे कि ४५ पुरुषोत्तम भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारे गये संजयने कहा निश्चय करके यह बात तुमने मुझसे कहीथीफिर धृतराष्ट्रने कहा कि भविष्यत वृत्तान्तोंके ज्ञाता बिदुरजीके कहेहुये उन बचनों के ४६ इस प्रत्यक्ष प्रकट होने वाले फलको देखकर मेरे पुत्र शोचको करतेहैं इस से मैं यह मानताहूं किसात्यकी समे-त अर्जुन से पराजितहुई मेरी सेना को देखकर ४७ और रथ के बैठकों को खाली देखकर मेरे पुत्र शोचकरतेहैं मैं यह मानताहूंकि जिस प्रकार बायुसे चलायमान बड़ी अग्नि समूह हिमऋतु के अन्तमें सूखेहुये बनको ४८ भस्म करदेताहै उसीप्रकार अर्जुन भी मेरी सेना का भस्म करता है वह सब तुम तुझ से कहौ क्योंकि हे संजय तुमवृत्तान्तके बर्णन करनेमें बड़े कुशलहो ४९ जब अर्जुनके अपराधको करके सायंकालके समय अपने डेरेको आये हेततबतब अभिमन्यु के मरने पर तुम्हारा चित्त किस प्रकारका हुआ ५० हे संजय मेरे पुत्र बड़े भारी अपराधको करके युद्धमें गांडीव धनुषधारी के उन कर्मोंके सहने को समर्थ नहीं होंगे ५१ ऐसी दशावाले उन लोगोंके मध्य में दुर्य्योधनने क्याकरने के योग्य कहा और कर्ण दुश्शासन और शकुनि ने भी क्या करने के योग्य कहा ५२ अभागे लोभी दुर्बुद्धी क्रोध से दुष्टचित्त राज्यके अभिलाषी अज्ञानी और रोगी चित्त दुर्य्योधन के अन्यायोंसे युद्धमें इकट्ठे होने वाले मेरे सब पुत्रोंका जो वृत्तान्तहै वह चाहे न्याय के अनुसार अथवा न्यायके बिपरीत होय उस सबकोमुझसे बर्णन करो ५३ । ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

संजय बोले कि मैंने सब वृत्तान्त अपनेनेत्रोंसे देखाहै उसको यथार्थता से कहताहूं तुम चित्त लगाकरसुनो उसमें सब आपकाही बड़ा अन्यायहै १ हेराजा जैसे कि बिना जलवाली नदी में सेतु अर्थात् पुलका बांधना है उसी प्रकार यह आपका बिलाप करनाभी निरर्थक है हे भरतर्षभ शोचमतकरो २ यह कालकी मर्य्यादा उल्लंघन करने के योग्यनहींहै इसकारण आपशोचको मतकरो यह होनहार बड़ी प्राचीनहै ३ जो तुम द्यूतहोनेसे प्रथमही कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरको औरअपने पुत्रोंको खेलनेसे हटादेते तो तुमको दुःखकभी नहींहोता ४ फिर युद्धके बर्तमानहोने के समय परभी जो आप उन क्रोधयुक्तों को निषेध करदेते तब भीआपको कष्टनहोता ५ जो तुम सबकौरव लोगों को यह आज्ञा करते कि इस अनाज्ञाकारी दुर्य्योधनको पकड़कर बंधनमेंडालो तोभी आपको दुःखनहोता ६ वह पांडव पांचालदेशी यादव और अन्य २ देशीराजा लोग हैं वे भी बिपरीत बुद्धिको नहींचाहैं गे ७ जो तुम पितृ कर्मको करके और अपने पुत्रको शुभमार्ग में नियतकरके धर्मसे कर्मकरो तो तुमको दुःखप्राप्त नहोगा ८ इसलोकमें तुमऐसेबड़ेज्ञानीहोकर अपने सनातन धर्मको छोड़कर दुर्य्योधन कर्ण और शकुनिके मतोंपर कामकरनेवालेहुये९ हेराजातुझ स्वार्थी और अपनेप्रयोजनमें प्रवृत्त चित्तवालेका वहसब बिलापमैंनेसुना जोकि बिषमिलेहुये सहतके समानहै१० पूर्व्वकालमें श्रीकृष्णजी राजायुधिष्ठिर भीष्म और द्रोणाचार्य्यकोभी ऐसानहींमानतेथे जैसाकि वह अबिनाशी तुमकोमानते थे ११ जबसे उन्होंने तुमको राजधर्मसेहीन और अन्यायमें प्रवृत्त जाना तभीसे श्रीकृष्णजी तुमको वैसानहीं मानतेहैं १२ हेपुत्रोंके राज्यके चाहनेवाले धृतराष्ट्र जैसे तुमनें कठोरबचन कहकर पांडवों कोनहीं ध्यानकिया उसीकाफल तुमको प्राप्तहुआहै १३ हे पापोंसे रहित प्रथमतो बापदादोंका राज्यसन्देह युक्तहुआ फिरतुमनेपांडवों

से बिजयकीहुई संपूर्ण पृथ्वीको पाया १४ जैसे कि पांडुने कौरवोंका राज्यलेकर अपने यशको बढ़ाया उसी प्रकार उससेभी अधिक धर्मात्मापांडवोंने प्राप्तकिया१५ उनकावहउसप्रकारकाकर्मतुमकोप्राप्त होकर निष्फलहुआ जो पिताके राज्यसे तुमने उनको निकाल कर भ्रष्ट करदिया १६ हेराजा जो तुम युद्धके समयमें अब भी अपनेपुत्रोंकेदोषोंका बिचार करके उनको बुरासमझोतो अब वह दुःखप्राप्त नहींहोगा १७ युद्धमें लड़ने वालेराजा लोग जीवनकी रक्षा नहीं करतेहैं और वहक्षत्रियोंमें श्रेष्ठ पांडवोंके सेनाको मझाकर युद्धकरते हैं १८ जिससेनाको श्रीकृष्णजी अर्जुन सात्यकी भीमसेन येचारों रक्षित करतेहैं उससेनाके सन्मुखता कौरवोंके सिवाय कौनकरसक्ता है १९ जिन्होंमें लड़नेवाला अर्जुन और मन्त्री श्रीकृष्णजी हैं और जिन्होंके शूरबीर भीमसेन और सात्यकीहैं २० उनके सन्मुखकौरव लोग अथवा उनके अनुगामी लोगोंके सिवाय कौनसा धनुषधारी लड़ने को समर्थहै २१ हेराजा जबतक मित्रलोग क्षत्रीधर्ममें प्रीति रखनेवाले शूरोंसे युद्धकरना संभवहै तबतक कौरवभी करतेहैं २२ अब जिसप्रकार पुरुषोत्तम पांडवोंकेसाथ कौरवोंका कठिन युद्धहुआ उस सबको मूलसमेत सुनो २३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषड़शीतितमोऽध्यायः ८६॥

सत्तासीवां अध्याय॥

संजय बोलेकि उसरात्रिके व्यतीतहोनेपर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजीने व्यूहबनानेके निमित्त अपनी सबसेनाको समझाया१हेराजापरस्पर मारनेके अभिलाषीक्रोधयुक्तअमर्षी और गर्जने वालेशूरोंके अपूर्व्व बार्तालाप सुनीगई २ कोईतो धनुषको टंकार कर और कोईप्रत्यंचा को चढ़ाकर श्वासलेतेहुये पुकारे कि अब अर्जुनकहांहै ३ किसीने उत्तम मूठतीक्ष्ण धारवाली प्रकाशित आकाशके समानअच्छी रीतिसे उठाईहुई मियानसे जुदी तलवारोंको चलाय मानकिया ४ कोईयुद्धमें प्रवृत्त चित्त हजारों शूरबीरअपनी

सुशिक्षिताओंके प्रभाव और बलसे तलवार और धनुषोंके मार्गोंको घूमातेहुये दिखाईपड़े ५ किसी २ ने उनगदाओंको जोकिघंटा रखने वाले चन्दन से लिप्त सुबर्ण औरबज्र रूप लोहेसे अलंकृतथीं उनको उठा२कर पांडव अर्जुनको पूंछा ६ बलके मदसे मदोन्मत्त भुजासे शोभित किसी किसी ने इन्द्रकी ध्वजाके समान परिघनाम शस्त्रोंसे आकाशको रोंकदिया ७ और कोई कोई शूर बिचित्र मालाओंसे अलंकृत युद्धमें प्रवृत्त चित्त नाना प्रकार के शस्त्रों समेत जहांतहां बर्त्तमान होकर नियत हुये और युद्ध भूमिमें आकर पुकारने लगे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजी कहांहैं और प्रतिष्ठावानभीमसेनकहां ८ है और इनके सब मित्र लोग कहांहैं ९ उसके पीछे घोड़ोंको शीघ्रतासे चलाते आप द्रोणाचार्य्य शंखको बजाकर उन घोड़ों को इधर उधर से दौड़ाते हुये बड़ीतीव्रता से भ्रमणकरने लगे १० हे महाराज उन युद्ध में प्रसन्न होनेवाले सब सेनाओं के नियत होनेपर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी राजाजयद्रथ से बोले ११ कि तुमसोमदत्ति, महारथीकर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन, कृपाचार्य्य १२ और एक लाख घोड़े साठहजार रथ चौदहहजार मतवाले हाथी १३ और इक्कीस हजार शस्त्रधारी पदाती छः कोश पर मुझसे पृथक् होकर नियत होजाओ १४ इन्द्र समेत देवताभी तुझे वहां नियत होनेवाले के सन्मुखताकरने को समर्थ नहीं हैं १५ फिर सब पांडव क्याहोसक्ते हैं १६ हे राजा इस प्रकार के वचनों से बिश्वासित किया हुआ वह सिन्ध का राजाजयद्रथ उन महारथियोंसे बेष्टित होकर गान्धार देशियों के साथ चला १७ जोकिकवचधारी युद्ध में सावधान प्रास हाथों में रखने वाले सेनाओं में नियत होकर सवारों से व्याप्तथे हे महाराज जयद्रथ के सब घोड़े चामर आपीड़ रखनेवाले सुबर्ण से अलंकृत १८ अच्छे २ लोगोंके सवार करनेवालेथे उनकी संख्या सातहजारथी और तीन हजार सिन्ध देशीथे १९ आपकापुत्र दुर्मर्षण उन डेढ़हजार हाथियोंसमेत जोकि मतवाले और सावधान हाथीवानों सेयुक्त होकर

भयकारी कर्मकरने वालेथे सबसेनाके आगे लड़ताहुआ आगे नियत हुआ २० । २१ उसकेपीछे आपके दोनोंपुत्र दुश्शासनऔर विकर्ण जयद्रथके अभीष्टके प्राप्तिकेलिये सेनाकेआगे नियतहुये २२ द्रोणाचार्य्यसे वहचक्र शकटनाम व्यूह चौबीस कोशलंबा और पिछले भागमेंदशकोशबिस्तृत बनायागया २३ आपद्रोणाचार्य्यने जहांतहां हजारों शूरबीर राजारथ घोड़े औरपत्तियोंसे वहव्यूह अलंकृत किया २४ उसके पीछेके भागमें कठिनतासे तोड़नेके योग्य पद्मगर्भ नाम व्यूहअलंकृतकियाफिरपद्मव्यूहकेभीतरशूचीनामगुप्तव्यूहबनाया २५ इसप्रकारसे द्रोणाचार्य्य इसबड़े व्यूहको अलंकृत करके नियतहुये और बड़ाधनुष धारी कृतबर्मा शूचीके मुखपर नियत हुआ २६ हे श्रेष्ठउसके पीछे राजा काम्बोज औरजलसन्धनियतहुये उन दोनोंके पीछे दुर्य्योधन और कर्ण नियतहुये २७ फिरशकटके मुखके रक्षक मुखोंके नफेरने वाले लाखों शूरबीर लोगनियतहुये २८ उनकेपीछे बड़ी सेनासे व्याप्तराजा जयद्रथहुआ अर्थात् वहराजाशूचीके पार्श्व में नियतहुआ २९ हेमहाराजशकटके मुखपर द्रोणाचार्य्यजी नियतहुये उनके पीछे राजाभोजहुआ औरआपही उसकी रक्षाकरी ३० श्वेत कवच वस्त्र पगड़ी रखनेवाले बड़ेवक्षस्थल वालेकालके समान क्रोधरूप महाबाहु द्रोणाचार्य्यजी धनुषको टंकोरते हुये नियतहुये ३१ कौरव द्रोणाचार्य्यके उसरथको जोकि पताका समेत रक्तवर्णके घोड़ोंसे युक्तथा और जिसकी ध्वजामें वेदी और काले मृगचर्म काचिन्हथाउसकोदेखकरअत्यन्तप्रसन्नहुये ३२ व्याकुल समुद्रकेसमान द्रोणाचार्य्य के रचेहुये व्यूहकोदेखकर सिद्धचारणोंके समूहोंकोआश्चर्यहुआ ३३ जीवधारियोंने यहमानाकि यहव्यूह अनेकदेशपर्व्वत और समुद्रों समेत पृथ्वीको निगलजाय तोकुछ आश्चर्य्य नहीं ३४ उसअसंख्य रथ मनुष्य घोड़े हाथी और पत्तियों समेत भयकारी शब्दवाले अपूर्व्वरूप शत्रुओंके हृदयके तोड़नेवाले बनायेहुये बड़े शकट व्यूहको देखकर राजा दुर्य्योधन बड़ा प्रसन्नहुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीका अध्याय॥

संजयबोले कि सेनाओंके अलंकृतहोने औरबड़ेउच्च शब्दसे परस्पर एक२के बुलाने भेरी मृदंगोंके बजने १ सेनाओं समेत बाजों के शब्दहोने शंखोंके बजने और शरीरके रोमांच खड़े करनेवाले शब्दोंकेहोने धीरेपनेसे युद्धाभिलाषी भरत बंशियोंके अलंकृत होने और भयकारी मुहूर्त्तके बर्त्तमान होनेपर अर्जुन दिखाईदिया ३ हे भरतबंशी वहां अर्जुनके आगेहजारों काकोंकेबच्चे क्रीड़ाकरने लगे४ और इसी प्रकार चलनेवाले हम लोगोंके दाहिने भयकारी शब्दवाले मृग और अशुभ दर्शन शृगाल शब्दोंको करनेलगे ५ और हजारों प्रकाशित उल्का बायुकेसाथ परस्परके आघात शब्दोंसमेत पृथ्वी परगिरे और महाकठिन भयके बर्त्तमानहोंने पर सम्पूर्ण पृथ्वी कंपायमानहुई ६ अर्जुनके आने और युद्धमें सन्मुख नियतहोने पर महारूखो कंकड़ोंकी बर्षा करनेवाली संसारकी बायुउनके परस्परीय आघातीय शब्दोंके साथ चलनेलगी७ तबबड़ेज्ञानी नकुलके पुत्र सतानीक पर्षतकापौत्र धृष्टद्युम्न इनदोनोंने पांडवोंकी सेनाओं कोअलंकृत किया ८ इसके पीछे आपकापुत्र दुर्मर्षण हजाररथ सौ हाथी तीनहजार घोड़े और दशहजार पदातियोंके साथ डेढ़हजार धनुषके अन्तरपर सबसेनाओंकेआगे नियत यहबचन बोला १०कि अबमैं इसयुद्ध में युधिष्ठिरको और संतप्त करनेवाले गांडीव धनुष धारी अर्जुनको ऐसे रोकूंगा जैसे कि समुद्रको मर्य्यादा रोकतीहै११ अब क्रोधयुक्त और निर्भय अर्जुनको युद्धमें मुझसे भिड़ाहुआ ऐसेदेखो जैसे कि पाषाणसे भिड़ाहुआ पाषाण होताहै १२ युद्धके ज्ञातातुम सबरथी लोग नियतहो जाओ और मैं यश और मानको बढ़ाताहुआ इनसब मिलेहुओंसे युद्धकरूंगा १३ हेमहाराज वह महात्मा अति बुद्धिमान बड़े धनुषधारियों से संयुक्त बड़ा धनुषधारी इस प्रकारके बचनोंको कहताहुआ नियतहुआ १४ इसकेपीछेकालकेसमान क्रोध युक्त बज्रधारी इन्द्रके तुल्य दंडधारी कालकेसमान सहनेके अयोग्य

कालसे प्रेरित शूलधारी रुद्र वा पाशधारीवरुणके समान व्याकुलता सेरहित प्रलयकालमें फिरसंसारको भस्मकरते हुये प्रकाशितअग्नि के समान १६ क्रोध और अधैर्यसे चलायमान शरीरनिवात कवचों कामारनेवाला महाबिजयी अर्जुन बड़ेभारी व्रतको धैर्य्य और सत्यसे पूराकरनाचाहाता आकरकेनियत हुआ १७ कवचखड्गसमेत सुबर्ण का मुकुट धारण करनेवाला श्वेतमाला पोशाक औरसुन्दरबाजूबन्दोंसमेत कुंडलोंसे शोभित १८ नररूप अर्जुन नारायण श्रीकृष्णजी के साथ अत्यन्तउत्तम रथमें बैठकरयुद्धमें गांडीवधनुषको चलायमान करते उदय हुये सूर्य्य के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ १९ उस प्रतापवान अर्जुनने बड़ीसेनाके आगे एकतीरके अन्तर पररथको नियत करके धनंजय शंखको बजाया २० हे श्रेष्ठ फिरउन निर्भय श्रीकृष्ण जीनेभी अर्जुनके साथही अपने पांचजन्य शंखको बड़े वेगसे बजाया २१ हेराजा उनदोनों शंखोंके शब्दोंसे आपकी सेनामें सब कंपायमान और अचेत होकर रोमांचोंके खड़ेहोने वाले हुये २२ जैसे कि बज्रके शब्दसे सब जीवधारी भयभीत होतेहैं उसी प्रकार आपकी सेनाओंके लोग शंखोंके शब्दोंसे भयभीत होगये २३ और सब सवारियोंमेंभी मूत्र और बिष्टाको छोड़ा इसरीतिसे सवारियों समेत सबसेना व्याकुलहुई २४ हेनरोत्तम राजा धृतराष्ट्र शंखोंके शब्दोंसे कितनेहीतो सुस्तहुये और कितनेही अचेतहुये और कितनेही डरगये २५ इसके अनन्तर मुखको चौड़ा किये आपकी सेनाओंको भयभीत करते हनुमानजीने ध्वजामें रहनेवाले जीवों समेत बड़ाभारी शब्दकिया २६ आपकी सेनाके प्रसन्न करनेवाले शंखभेरी मृदंग और ढोल भी फिरबजायेगये २७ नानाप्रकारके बाजोंकेशब्द सिंहनादों समेत तालोंका ठोकना इत्यादि बाजोंसे युक्त महारथियोंसे २८ उस भयभीतोंके भयके बढ़ाने वाले बड़े कठोर शब्दके होनेपर अत्यन्त प्रसन्न इन्द्रका पुत्र अर्जुन श्रीकृष्ण जीसे बोला २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणि अष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीका अध्याय॥

अर्जुनबोलेकि हेश्रीकृष्णजी आप घोड़ोंको चलायमानकरिये मैं जहां दुर्मर्षण नियतहै उस हाथियोंकी सेनाको छिन्नभिन्न करके शत्रुओंकी सेनामें प्रवेशकरूंगा १ संजयबोले कि अर्जुनके इसबचन को सुनकर महाबाहु श्रीकृष्णजीने घोड़ोंको वहां ही चलायमान किया जहां पर कि दुर्मर्षण नियतथा २ वह अत्यन्त भयका उत्पन्न करनेवाला कठिन युद्ध उन एकरूप मिलेहुये बीरोंके साथहुआ जो कि रथ हाथी और मनुष्योंको नाश करनेवालाथा ३ इसके पीछे बादलकी वर्षाके समान बाणोंकी वर्षाकरनेवाले अर्जुन ने शत्रुओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि पर्व्वतको बादल ढकदेताहै ४ उन शीघ्रता करनेवाले रथियोंनेभी हस्तलाघवता के समान बाणों के जालोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुनको आच्छादित करदिया ५ तदनन्तर युद्धमें शत्रुओं से रुकेहुये क्रोधयुक्त महाबाहु अर्जुनने बाणों से रथियोंके शिरोंको शरीरोंसे पृथक् कियाई ऊपरको ओर घूमने वाले नेत्रोंसे युक्त दोनों ओठोंको चाबनेवालेकुण्डलपगड़ियोंके धारण करनेवाले उत्तम मुखोंसे वहपृथ्वी आच्छादित होगई ७ जैसे कि चारों ओरसे कमलोंके बन टूटतेहैं उसीप्रकार शूरबीरों के फैले हुये मुख शोभायमान हुये ८ सुवर्णके कवचोंसे अलंकृत रुधिरमें लिप्त शरीर ऐसे भिड़ेहुयेदृष्टिपड़े जैसेकि बादलोंके समूह बिजली सेभिड़े हुयेहोतेहैं हेराजा पृथ्वीपर गिरतेहुये उनशिरों के ऐसे शब्दहुये जैसे कि समयपर पककर तालके फलोंके शब्द होतेहैं १० इसके पीछे कितने ही धड़धनुषको पकड़कर नियतहुये कितनेहीखड्गको पकड़ करध्वजा से उठाकर नियत हुये ११ और कितनेही युद्धमें अर्जुन को नसहने वाले बिजयाभिलाषी पुरुषोत्तम अपनेगिरेहुयेशिरोंकोभीनहीं जानते थे १२ घोड़ोंके शिर हाथियोंकीसूंड़वीरोंकी भुजा और शिरोंसे पृथ्वी आच्छादित हुई १३ यह अर्जुनहैयह अर्जुनहै हेप्रभुइसप्रकार आपकी सेनाओं में शूरबीरोंके शब्द अर्जुनसे संबंध रखने वालेहुये १४

एकने दूसरेको मारा और दूसरेने अपनेकोभीमारा समयसे अचेत होकर उनलोगोंने संसार भरको अर्जुनरूपही माना १५ पुकारते रुधिरमें लिप्तअचेत कठिनपीड़ाओंसे युक्त बारंबार अपने बांधवोंको पुकारतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े अर्थात् मरकर पृथ्वी पर सोये १६ भिण्डपाल प्रासशक्ति दुधाराखड्ग, फरसे, यूपक, खड्ग, धनुष, और तोमरोंको रखनेवाले १७ बाण कवच भूषण गदा और बाजूबन्द धारी परिघके समान बड़े सर्पके समान भुजायें १८ पकड़ती थीं और नेष्टा करतीहुई सबओरसे आघातकरतीथीं और उत्तम बाणों से कटीहुई क्रोधयुक्त होकर वेगको करतीथीं १९ जो जो मनुष्य युद्धमें अर्जुनके सन्मुख जाताथा उस उसके शरीरको उसका नाश कारीबाण आघात करताथा २० वहां रथके मार्गों में नाचते और धनुषको खैंचतेहुये उस अर्जुनका छोटासा भी अन्तर किसीने नहीं देखा २१ उपाय पूर्वक बिचार करनेवाले और शीघ्रता से बाणों के खैंचनेवाले अर्जुनकी हस्तलाघवता से दूसरे मनुष्य आश्चर्य्य युक्तहुये २२ अर्जुनने बाणों से हाथी वा हाथी के सवार घोड़े वा घोड़ोंके सवार और सारथियों समेत रथियोंको बाणों से घायल किया २३ वह पांडव अर्जुन घूमनेवाले लौटनेवाले युद्धकरनेवाले और सन्मुख युद्धमेंनियत शूरबीरोंकोमारताथा२४ जैसे कि आकाश में उदय होताहुआ सूर्य्यबड़े अन्धकार को दूरकरताहै उसीप्रकार अर्जुनने बाणों से हाथियोंकीसेनाको मारा २५ मारेहुये और गिरे हुये हाथियोंसे आपकीसेना ऐसीदिखाईपड़ी जैसे कि प्रलयकेसमय पर्व्वतोंसे आच्छादित पृथ्वीहोतीहै २६ जैसे कि सूर्य्य मध्याह्न के समय सदैव जीव धारियोंसे दुःख से देखनेके योग्य होताहै उसी प्रकारयुद्ध में क्रोधयुक्त अर्जुन भी शत्रुओंसे कठिनता पूर्व्वक देखने के योग्यहुआ २७ हे शत्रुसंतापी इसप्रकार से आप के पुत्रकी वह सेना युद्धमें भागीहुई भयभीत और छिन्नभिन्न होकर बाणों से अत्यन्त पीड़ामान २८ ऐसे व्याकुलहुई जिसप्रकारबड़ीवायुसे बादलोंकी सेना होतीहै फिर वह छिन्न भिन्न होनेवाली सेना सन्मुख

देखनेको समर्थ नहींहुई २९ चाबुक धनुषकी कोटि वा अच्छेप्रकार कियेहुये हुंकार कोड़ेबड़े २ आघात और भयकारी शब्दों से ३० आपके अश्वसवार रथसवार औरपतिलोगउस अर्जुनकेहाथसेपीड़ा-मान होकर बड़ीशीघ्रता से अपने २ घोड़ों को चलायमान करके भागे ३१ कोई २ शूरबीर हाथियों को एड़ीअंगुष्ठ और अंकुशआदि से चलायमान करकेभागे और बहुतसे बाणोंसे अचेत होकर फिर उसीके सन्मुखगये ३२ तबआपके शूरबीर उत्साहोंसे रहितहोकर महाव्याकुलचित्त हुये ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नव्वेवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले कि उससेनाके मुखके टूटने और अर्जुन के हाथसे वहां घायल होनेपर वहां कौन२ शूरबीरअर्जुनके सन्मुखहुये १ खेद की बातहैकि सकल निश्चयवाले द्रोणाचार्य्यकी शरण मेंनियतहो-नेवाले हम सब उस शकट व्यूहमें ऐसेघुसेहुयेहैं जैसेकि गढ़अर्थात् किलेमें निर्भय होतेहैं २ संजय बोलेकि हे निष्पाप धृतराष्ट्र उसप्र-कार अर्जुनके हाथसेउस आपकी सेनाको पराजित साहससेरहित भागनेमें प्रवृत्त चित्तनाशवान बीरोंसे रहित होजाने पर ३ और इन्द्रके पुत्रके उत्तमबाणोंसे हजारोंके बारंबार मरनेपर वहांपर कोई भी युद्धमें अर्जुनके सन्मुख देखनेको समर्थ नहींहुआ ४ हेराजाउस के पीछे आपकापुत्र दुश्शासन उस दशावाली सेनाको देखकर अ-त्यन्त क्रोधयुक्त युद्धकेलिये अर्जुन के सन्मुखगया ५ हे महाराज उस सुवर्णके कवचसे अलंकृत सुनहरी मुकुट धारी तेज पराक्रमी शूरबीर ६ और हाथियोंको बड़ीसेना से पृथ्वीको निगलनेवाले के समान दुश्शासनने अर्जुनको घेरलिया ७ हाथियोंके घंटोंके शब्द शंखोंकीध्वनि धनुषों की टंकार और हाथियों की चिंहाड़ों से ८ पृथ्वीदिशा बिदिशा और आकाश शब्दों से पूर्ण होगये वहभय-कारी महा युद्ध एक मुहूर्त्त तक वर्त्तमान रहा ९ अंकुशों से प्रेरित

पेचदार सूंडवाले क्रोधयुक्त पक्षधारी पर्व्वत के समान शीघ्रता से आतेहुये उन हाथियोंको देखकर उस नरोत्तम अर्जुनने बड़े भारी सिंह नादके साथ शत्रुओंके हाथियोंकी सेनाको चारोंओरसे अपने बाणोंके जालोंसे छिन्नभिन्न करदिया ११ जैसे कि बड़े वेगवानबायु से उठायेहुये बड़ेसमुद्रमें मगर प्रवेश करताहै उसी प्रकार से वह अर्जुनभी उसहाथियोंकी सेनामें प्रवेश करगया १२ शत्रुओंकेपुरोंका बिजय करनेवाला अर्जुन सबदिशाओं में ऐसेदिखाईदिया जैसे कि मर्यादको उल्लंघन करनेवाला सूर्य्य अत्यन्त संतप्त करता हुआ प्रलय कालमें होताहै १३ घोड़ों के खुरोंके शब्द रथके पहियों की नेमियोंके शब्द प्रत्यंचाका शब्द १४ नाना प्रकार के बाजोंकेशब्द पांचजन्य और देवदत्त नाम शंखों की ध्वनि और गांडीव धनुष के शब्दसे १५ वहसब मनुष्य और हाथियोंके समूह मन्दवेग होकर अचेत होगये अर्जुनके बाणोसे जिनका स्पर्श पूर्व्वक लगना बिष धरसर्प के समानथा इसीसे सबमरगये १६ वहहाथीयुद्धमें अर्जुन के चलाये हुये तीक्ष्ण लाखों बाणोंसे सबअंगों में घायलहुये १७ अर्जुन से घायल होकर बड़े व्याकुलता के शब्द करते सब पृथ्वी परऐसे गिरपड़े जैसेकि पृथ्वीपर टूटेहुये पर्व्वतगिरतेहैं १८ और कितनेही हाथी दांतोंकी जड़मुख मस्तक और कमरोंपर बाणों से छिदेहुये क्रौंच पक्षी के समान बारंबार शब्दों को करने लगे १९ अर्जुनके चलायेहुये गुप्तग्रन्थी बाली भल्लोंसे हाथीके सवार और अन्य मनुष्योंकेशिरखंड २ होगये २० अर्जुन के बाणों से कुंडल धारी कमलोंके समान गिरेहुये शिरों के समूहों से पृथ्वी पर भेट कियेहुये २१ जंत्रोंसेबंधेहुये प्रत्यंचासे रहित घावोंसे पीड़ितरुधिर से लिप्त मनुष्य उन युद्ध में घूमते हुये हाथियों के ऊपर चिपट गये २२ कितनेही मनुष्य अच्छोरीतिसे चलायेहुये एकही बाणसे मरकर पृथ्वीपर गिरपड़े २३ नाराचों से अत्यन्त घायल मुखों से रुधिरको डालते हाथीसवारों समेत पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसे कि वृक्षरखनेवाले पर्व्वत गिरतेहैं २४ अर्जुनने गुप्तग्रन्थी वालेभल्लों

से रथकेसवारोंकी प्रत्यंचा, ध्वजा, धनुष, युग और ईशादंडोंकोचूर्ण२ करदिया २५ वह अर्जुन अपनेधनुष मंडल से नाचतेहुयेके समान नतो बाणोंको धनुषपर चढ़ाता दिखाई दिया न खैंचता छोड़ाता और उठातादिखाईदिया २६ और बहुत से हाथीनाराचोंसे अत्यन्त घायल मुखोंसे रुधिरको गेरतेएकमुहूर्त्तमें ही पृथ्वीपरगिरपड़े २७ हेमहाराज उस कठिनयुद्धमें चारोंओर से उठेहुये असंख्यों धड़देखनेमें आये २८ धनुष हस्तत्राण, खड्ग, बाजूबन्द, रखने वाली स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत भुजा युद्धमें कटीहुई दिखाईपड़ी २९ उपस्करोंके साथअधिष्ठान, ईशादण्ड, कबंधर, चक्र, मथेहुयेअक्ष और नानाप्रकारके टूटेहुयेशस्त्र ३० जहांतहां फैलीहुईढालेंधनुष धारियोंकी मालाआभूषण बस्त्रगिरीहुई बड़ी २ ध्वजा मारेहुये हाथीघोड़े और गिराये हुये क्षत्रियों से वह पृथ्वी महा भयानक देखने में आई ३२ हेमहाराज इसप्रकार अर्जुनके हाथसे मरीहुई महा व्यथित होकर पीड़ामान दुश्शासनकी सेनाभागी ३३ इसके पीछे सेनासमेत बाणोंसे पीड़ामान भयभीत और द्रोणाचार्य्य को शरणको चाहता हुआ दुश्शासन उस शकटव्यूह में चलागया ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानवेकाअध्याय॥

संजय बोलेकिमहारथी अर्जुन दुश्शासनकीसेनाको मारकरजयद्रथको खोजता द्रोणाचार्यकी सेनाके सन्मुखगया १ फिरवह अर्जुन व्यूहके मुखपर नियत द्रोणाचार्य्य कोपाकर श्रीकृष्णजी की अनुमति से हाथजोड़कर यह बचनबोला२ कि हेब्राह्मणआप मुझको कल्याणकेसाथ ध्यानकरो और मेरेकल्याणकोकहो आपकी कृपासे मैं इस कठिनतासे पराजय होने वाली सेनामेंप्रवेशकियाचाहताहूं ३ आप मेरे और धर्मराजके पिताके समानहैं और जैसेहमारेहैं उसीप्रकार श्रीकृष्णजीकेभी सदैवसेहैं यह आपसे मैं सत्य२कहताहूं ४ हेनिष्पापब्राह्मणों में श्रेष्ठ जैसेकि अश्वत्थामाजी आपसे रक्षाके योग्यहैं

उसीप्रकारमैं भी रक्षके योग्य हूं ५ हे द्विपादों में श्रेष्ठ प्रभु मैं युद्धमें आपकीकृपासे सिन्धके राजाको मारना चाहताहूंआप मेरी प्रतिज्ञा कीरक्षाकरो ६ संजयबोले कि अर्जुनके ऐसेऐसेबचनोंको सुनकरमन्द-मुसकानकरते द्रोणाचार्य्य जोबोले किहेअर्जुन मुझै जीतेबिना जयद्रथ का विजय करना तुझको योग्यनहींहै ७ इतना कहकर हंसतेहुये द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णबाणों के समूहोंसे अर्जुन को रथघोड़े सारथी और ध्वजा समेत बाणोंसे ढकदिया ८ फिर अर्जुन अपने शायकों से द्रोणाचार्य्यके बाण समूहोंको रोककर भयकारी रूपवाले बडे बाणोंसमेत द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया ९ हेराजा अर्जुनने क्षत्रीधर्ममें नियत होकर भक्तिपूर्व्वक उनकी गौरवताकी प्रतिष्ठा करके द्रोणा-चार्य्यको नौशायकोंसेघायल किया १० द्रोणाचार्य्यने उसकेबाणों को अपने बाणोंसे काटकर उनदोनो श्रीकृष्ण और अर्जुन को विष और प्रकाशित अग्निके समान बाणोंसे घायल किया ११ तबअर्जु-ननने उनके धनुषको काटनाचाहा उस महात्मा अर्जुन के इसप्रकार चिन्ताकरनेपर सावधान और पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने बाणोंसे ब-ड़ी शीघ्रता पूर्व्वक उसकी प्रत्यंचाको काटा और उसके घोड़े ध्वजा और सारथीकोभी घायल किया १३ मन्द मुसकान करते बीर द्रोणाचार्य्य ने फिर बाणों से अर्जुन को ढकादिया इसी अन्तरमें अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ आचार्य्यजी को नाश करने की अभिलाषा करने वालेअर्जुनने बड़े धनुष को तैयार करके जैसे एक बाण को लेते हैं उसी प्रकार छःसौ बाणोंको एकबारही लेकर बड़ी शीघ्रता से छोड़ा १४। १५ फिर दूसरे प्रकार के सातसौ बाणों को और बिना लक्ष्य भेदेहुये न लौटने वाले हजार बाणों को और नाना प्रकार के हजारों बाणोंको फेंका फिर अर्जुन ने द्रोणाचार्य्य की उस सेनाको मारा १६ उस पराक्रमी महा कर्मी अपूर्व्व युद्ध करने वाले अर्जुनके अच्छी रीतिसे चलाये हुये बाणों से घायल मरेहुये निर्जीवमनुष्य घोड़े और हाथी गिरपड़े १७ सूत घोड़े और ध्वजा से रहित टूटे शस्त्र जीवन वाले बाणों से पीड़ित रथों के सवार

अकस्मातरथों सेगिरपड़े १८ पर्व्वतके शिखर वा जलमें निवासकरने वाले वज्र वायु और अग्निसे चूर्ण उखड़ेहुये भस्मी भूत पर्व्वतोंके रूप हाथी पृथ्वीपर गिरपड़े १९ अर्जुन के बाणोंसे घायल हजारों घोड़े ऐसे गिरपड़े जैसे कि हिमाचल की पृष्ठपर पानीकी बर्षा से घायल हुये हंस गिरतेहैं २० जलके समूह के समान अपूर्व्व रथ हाथी घोड़े और पत्तियोंके समूह अर्जुनके उन अस्त्र और बाणों से जो कि प्रलय कालके सूर्य्यकी किरणों के समान थे मारेगये २१ उस बादल रूप द्रोणाचार्य्यने बाण रूपी बर्षाकी तीव्रता से उस पाण्डव रूप सूर्य्यके बाणरूप किरणों समूहोंको जो कि युद्धमें कौरवों के उत्तम बीरोंके तपाने वालेथे ऐसा ढकदिया जैसे कि सूर्य्यकी किरणोंको बादल ढकदेताहै २२ फिर द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंके प्राणोंके भोजन करने वाले बलसे छोड़े हुये नाराचनाम बाणसे अर्जुन की छातीपर घायल किया २३ जैसे कि पृथ्वी के कंपायमान होने पर पर्व्वत कंपायमान होताहै उसी प्रकार सब अंगोंसे व्याकुल उस अर्जुन ने स्वस्थतापूर्व्वक दृढ़ताको धारण करके बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल किया २४ फिर द्रोणाचार्य्यने पांचबाणोंसे बासुदेवजी को और तिहत्तर बाणों से अर्जुनको घायल किया और तीन बाण से उसकी ध्वजाको काटा २५ हे राजा अपने शिष्यको मारना चाहते पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने पल मात्रमें ही बाणों की बर्षासे अर्जुन को दृष्टिसे गुप्त करदिया २६ हमने द्रोणाचार्य्य के शायक नाम बाणोंको मिलकर गिराहुआ देखा और उनका धनुष भी अपूर्व्व मंडलाकार दिखाई पड़ा २७ हे राजा द्रोणाचार्य्य के छोड़े हुये कंकपक्षों से युक्त वह बहुतसे बाण युद्धमें बासुदेवजी के और अर्जुन के सम्मुख गये २८ तब बड़ेबुद्धिमान बासुदेवजी ने द्रोणाचार्य्य और अर्जुनके उस प्रकार के युद्धको देखकर कार्य्यवत्ता को चिन्तवन किया २९ तदनन्तर बासुदेवजी अर्जुनसे यह बचनबोले हे महाबाहु अर्जुन हमारा समय हाथ से न जानेपावे ३० हम द्रोणाचार्य्य को छोड़कर चले यह बहुत बड़ा काम करने के योग्यहै

फिर अर्जुनने भी श्रीकृष्णजीसे कहा कि जैसी आपकी इच्छाहोय सोई करिये ३१ इसके पीछे अर्जुन महाबाहु द्रोणाचार्य्य को परिक्रमा करके चला और परिक्रमा करने वाला अर्जुन बाणों को छोड़ताहुआ चलागया ३२ इसके पीछे आय द्रोणाचार्य्य जी यह बचन बोले कि हे पांडव कहां जाताहै निश्चय करके प्रकट है कि तू युद्धमें शत्रुओंको बिना बिजय किये हुये कभी नहीं लौटताहै ३३ अर्जुनबोले कि आप मेरे गुरूहैं शत्रु नहीं हैं और मैं शिष्य आपके पुत्र के समानहूं ऐसामनुष्य कौन है जो आपको युद्धमें बिजय कर सके३४संजयबोले कि जयद्रथकेमारनेमें उपाय करने वालाशीघ्रता से युक्त महाबाहु अर्जुन इस प्रकार से कहता हुआ उस सेनाके सन्मुख दौड़ा ३५ चक्रकेरक्षक पांचालदेशी, महात्मायुधामन्यु,उत्त मौजस, उस आपकी सेना में जानेवाले अर्जुन के पीछेचले३६ हे महाराज उसकेपीछे जय, यादवकृतबर्मा, काम्बोज का राजा और श्रुतायु ने अर्जुनको रोका ३७ उन्होंके पीछे चलने वाले दशहजार हाथीथे उनके यह आगेलिखेहुये नामहैं अभीषाह, शूरसेन,शिवय, बशात, मावेल्लिक, ललित्थ, केकय, मद्रक, नारायण, गोपाल, और जितने कि कांबोज देशियों के समूहहैं ३६ और वह शूरोंके अंगीकृत जिनको कि पूर्व्व समयमेंयुद्धके बीच कर्णने बिजय किया था वह सब प्रसन्न मन द्रोणाचार्य्यको आगे करके अर्जुनके सन्मुख गये ४० और पुत्रके शोकसेदुखी नाशकरने वाले कालके समान क्रोधयुक्त कठिन युद्धमें प्राणोंके त्याग करनेवाले कवचादिसे अलंकृत अपूर्व्व युद्धके करनेवाले गजेन्द्रके समान सेनाओंके मझानेवालेबड़े धनुषधारी पराक्रम नरोत्तम अर्जुनको रोका ४२ उन परस्पर बुलाने वाले शूरबीरोंसे अर्जुन का महाकठिन रोमहर्षण करने वाला युद्धजारी हुआ४३सबने एक साथही उस जयद्रथके मारनेके अभिलाषी आतेहुये पुरुषोत्तम अर्जुन को ऐसा रोका जैसे कि उठे रोगको औषधियां रोकती हैं ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकनवतितमोऽध्यायः६१॥

बानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि उन शूरबीरों से रुका हुआ बड़े पराक्रम वाला रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन शीघ्रही द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया १ जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणोंको फैलाताहै उसीप्रकार तीक्ष्ण बाणों के समूहों को फैलातेहुये उस अर्जुन ने उससेनाको ऐसे तपाया जैसे कि रोगोंके समूह शरीर को संतप्त करतेहैं २ घोड़ा मारागया रथ टूटा हाथी अपने सवार समेत गिराया गया छत्र टूटे रथ अपने चक्रोंसे जुदेहुये ३ और बाणोंसे पीड़ामान सेना चारों ओर से भागी वह युद्ध ऐसा कठिन हुआ कि कुछनहीं जानागया ४ सीधे चलनेवाले बाणोंसे युद्धमें उनलोगोंके परस्पर प्रहार करने पर अर्जुन ने सेना को बारम्बार कंपायमान किया ५ सत्य संकल्पी श्वेतघोड़े रखने वाला अर्जुन अपनी प्रतिज्ञाको पूरा करना चाहता रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया ६ द्रोणाचार्य्यने मर्मभेदी पच्चीसबाणों से सन्मुख नियतहुये बड़े धनुष धारी अर्जुनको घायल किया७ सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन बाणों के वेगों के नाश करनेवाले उत्तम बाणोंको छोड़ताहुआ शीघ्रही उनद्रोणाचार्य्यके सन्मुखदौड़ा८ बड़े बुद्धिमान ब्रह्म अस्त्रको प्रकट करते हुये उस अर्जुन ने शीघ्रतासे गुप्तग्रन्थी वाले भल्लोंसे उनके चलाये हुये भल्लोंको काटा ९ हमने युद्ध में द्रोणाचार्य्य के उस अद्भुत कर्म को देखा जो उपाय करने वाला बीर अर्जुन उनको घायल न करसका १० द्रोणाचार्य्य रूपी बादल अपने बाण रूपी बर्षासे अर्जुन रूपी पर्व्वत के ऊपर ऐसे बर्षा करने लगा जैसे कि हजारों जलकी धाराओं को छोड़ता बड़ा बादल होताहै ११ हे श्रेष्ठ बाणोंसेबाणोंको काटतेहुये तेजस्वी अर्जुनने उसबाणोंकी बर्षाको ब्रह्म अस्त्रसे नाश करदिया १२ फिर द्रोणाचार्य्यने शीघ्रचलने वाले पच्चीसबाणोंसे अर्जुन को और सत्तर बाणों से बासुदेव जी को भुजा और छातियों पर पीड़ामान किया१३ फिर हंसते हुये बुद्धिमान अर्जुन ने उस बाण समूहों के

धारणकरने वाले तीक्ष्णबाणोंके छोड़नेवाले आचार्य्यको युद्धमें रोका १४फिर द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल उनरथियोंमें श्रेष्ठदोनोंने उस प्रलय काल के उठे हुये प्रज्वलित अग्नि के समान दुर्विजय द्रोणाचार्य्य को हटाया १५ द्रोणाचार्य्य के धनुष से निकले हुये तीक्ष्ण बाणोंको हटाते हुये अर्जुन ने कृतबर्मा की सेनाका अत्यन्त नाश किया १६ वह अर्जुन मैनाक नाम पर्व्वत के समान द्रोणाचार्य्य को रोकताहुआ मध्यमें कृतबर्मा काम्बोज और सुदक्षिणके सन्मुख गया १७ इस के पीछे स्थिर चित्त नरोत्तम कृतबर्मा ने शीघ्रही दश बाणों से उस कौरवों में श्रेष्ठ अजय अर्जुन को घायल किया १८ हेराजा अर्जुन ने युद्ध भूमिमें उस को सौ बाणों से घायल किया फिर दूसरे तीन बाणों से अचेत करते हुये कृतबर्मा को घायल किया १९ फिर हंसते हुये कृतबर्मा ने माधव वासुदेवजी और अर्जुन को पच्चीस पच्चीस शायकों से घायल किय २० तब अर्जुन ने उस के धनुष को काटकर अग्नि ज्वाल के समान रूप क्रोध में सर्प के समान होकर सात बाणों से उसको घायल किया २१ हे भरत बंशी फिर महा रथी कृतबर्मा ने दूसरे धनुषको लेकर बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक पांच शायकों से छाती पर घायल करके २२ फिर भी पांच तीक्ष्ण बाणोंसे अर्जुन को घायल किया अर्जुननेभी उसको नौ बाणोंसे छातियों पर घायल किया २३ श्रीकृष्णजी ने कृतबर्मा के रथ पर भिड़े हुये अर्जुन को देखकर चिन्ता करी कि हमारा समय नाशहुआ जाता है २४ यह बिचार कर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले कि कृतबर्मा पर दया न करो नातेदारी को छोड़ कर उसको मथनकरके मारो २५ इसके पीछे वह अर्जुन बाणों से कृतबर्मा को अचेत करके शीघ्र गामी घोड़ों के द्वारा कांबोज देशियोंकी सेनाके सन्मुखगया २६ अर्जुन के सेनामें प्रबेशित होने पर क्रोध युक्त कृतबर्मा बाणोंको लिये धनुष को चलाय मान करता दोनों पांचाल देशियों पर दौड़ा २७ अर्जुनके पीछे चलने वाले चक्र के रक्षक आते हुये पांचाल देशियों की कृतबर्माने समीप प्रहार करने वाले बाणोंसे

रोका २८ इस के पीछे भोज बंशी कृतबर्मा ने उन दोनों को अपने तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया अर्थात् तीनबाणोंसे युधामन्यु कोऔर चारबाणोंसे उत्तमौजसको २९ उन दोनोंने भी उसकोदशबाणोंसे घायल किया और तीन २ बाणों से उस की ध्वजा और धनुष को भी काटा फिर क्रोध से मूर्च्छा मान कृतबर्मा ने दूसरे धनुष को लेकर ३१ दोनों बीरों को धनुषों से रहित करके बाणों की बर्षासे ढकदिया तदनन्तर फिर उन दोनोंने दूसरे धनुषों को तैयार करके भोज बंशी कृतबर्मा को घायल किया ३२ उसी मौकेसे अर्जुन शत्रु कीसेना में प्रबेश करगया कृतबर्मा से रुके हुये उन दोनों बीरों ने द्वारको नहीं पाया ३३ यद्यपि वह दोनों नरोत्तम दुर्योधनकी सेनाओंके मध्यमें उपायकरने वालेथे तौ भी वह द्वार न पासकेफिरशीघ्रता करने वाले शत्रुओं के नाश करने वाले युद्धमें सेनाओंको पीड़ा देते हुये अर्जुन ने ३४ बशी भूत कृतबर्मा को भी नहीं मारा उस प्रकारसे जातेहुये उस अर्जुन को देख कर शूर बीर राजा श्रुतायुध ३५ बड़े क्रोध पूर्व्वक बड़ेभारी धनुष को चलायमान करता हुआ सन्मुख गया और उसने तीन बाणोंसे अर्जुनको और सत्तर बाणों से श्रीकृष्णजीको मोहित किया ३६ और अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुर प्रनाम बाणसे अर्जुन की ध्वजा को घायल किया उस के पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन ने झुकी हुई गांठवाले नव्वे बाणों से ३७ ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथीको घायल करतेहैं हेराजा उसने अर्जुन के उस पराक्रम को नहीं सहा ३८ और उस को सत्तरनाराचों से घायल किया फिर अर्जुनने उस के धनुष को काट शराबाप को तोड़कर ३९ बड़े क्रोध पूर्व्वक छातीपर घायल किया तब क्रोध से मूर्च्छामान उसराजाने दूसरे धनुषको लेकर४० इन्द्र के पुत्र अर्जुन को नौ बाणों से भुजा और छाती के ऊपर घायल किया उसके पीछे शत्रु को पराजय करनेवाले मन्दमुसकान करते अर्जुन श्रुतायुध को ४१ हजारों बाणों से पीड़ित किया हे भरत बंशी फिर महारथी अर्जुन ने शीघ्रही उसके घोड़ों

को सारथी समेत मारा ४२ और सत्तर नाराचोंसे उसको भी घायल किया फिर वह पराक्रमी राजा श्रुतायुध मृतक घोड़े वाले रथको छोड़ कर ४३ गदाको हाथमें लेकर युद्धमें अर्जुनके सन्मुख गया वह बीर राजा श्रुतायुध बरुण देवता का पुत्रथा ४४ जिसकी माता शीतल जल रखनेवाली पर्णाशा नाम थी हेराजा पूर्व्व समय में उसकी माता पुत्रके कारण बरुण से बोली ४५ कि यहमेरा पुत्र शत्रुओं से अजेय होय फिर प्रसन्न मनसे बरुण देवताने कहा कि इसको इसकाप्रियकारी वरदेताहूं४६ अर्थात् इसको मैं वहअस्त्रदेता हूं जिसके द्वारा यह अजेय होगा और मनुष्य की अबिनाशता तो किसी दशामें भी नहीं होसक्ती ४७ हे नार्दयों में श्रेष्ठ सब सृष्टि मात्र को अवश्य मरनाहै यह तेरा पुत्र सदैव युद्धमें शत्रुओं से अजेय होगा ४८ निश्चय करके इस अस्त्रके प्रभाव से तेरे चित्त का संताप दूर होगा ऐसा कह कर बरुण देवताने मंत्रसमेत आगेकी हुई गदाको दिया ४९ जिस गदाको पाकर श्रुतायुध सब लोक में अजेय होगया जल के स्वामी भगवान बरुण देवता फिर इस्से बोले ५० कि इस गदा को बिना लड़ने वाले के ऊपर न छोड़ियो जोछोड़ेगा तो तुझपर ही गिरेगी और हेसमर्थ यह गदा बिपरीत प्रकारसे छोड़ने वाले को भी मारेगी ५१ कालके बर्त्तमान होने पर श्रुतायुधने उस बचन को नहीं किया और उस बीरोंकी मारनेवाली गदासे उसने श्रीकृष्णजी को घायल किया ५२ पराक्रमी श्रीकृष्ण जी ने उस गदाको अपने मोटे कन्धेपर लिया उसने श्रीकृष्ण जी को ऐसे नहीं कंपाया जैसे कि बायु मन्दरा चलपर्व्वतको नहीं हिलासक्ती ५३ कृत्याके समान कठितासे नियत होनेवाली और उसी के सन्मुख जाती हुई उस गदाने युद्धमें नियत क्रोधयुक्त बीरश्रुतायुध कोहीमारा ५४ और उस को मारकर पृथ्वी में गिरपड़ी फिर टूटी हुई गदाको और मरे हुये श्रुतायुध को देखकर ५५ वहां सेनाओंका बड़ा हाहाकार उत्पन्त हुआ अर्थात् शत्रुओंके मारने वाले श्रुतायुधको अपनेहीअस्त्रसे मराहुआ देखकरबड़ाहाहाकार हुआ५६

हे राजा जोकि श्रुतायुधने युद्ध न करनेवाले केशवजीके ऊपरगदा को छोड़ा उसकारण से गदाने उसीको मारा ५७ जैसे कि बरुण देवताने कहाथा उसी प्रकार से उसने युद्धमें नाशको पाया और सब धनुषधारियोंकेदेखते वह राजामृतकहोकर पृथ्वीपर गिरा५८ वह पर्णाशा नदीका प्यारा पुत्र गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बायुसे टूटाहुआ बहुतसी शाखाओं वालावृक्ष होताहै ५९ इसके पीछे सब सेना और सेनाओंके अधिपति शत्रुओं के मारनेवाले श्रुतायुध को मराहुआ देखकर भागनिकले ६० उस समय राजा काम्बोज का पुत्र शूर सुदक्षिण नाम शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा शत्रुके मारनेवाले अर्जुन के सन्मुख गया ६१ हे भरतबंशी अर्जुनने सात बाणोंको उस पर फेंका वह बाण उस शूरको घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये ६२ युद्धमें गांडीव धनुष से भेजेहुये तीक्ष्ण बाणोंसे अत्यन्त घायलहोकर उसनेभी अर्जुनको दशबाणों से घायलकिया ६३ और बासुदेवजी को तीन बाणों से घायल करके अर्जुनको फिर पांचबाणोंसे ब्यथित किया तब अर्जुनने उस के धनुषको काटकर ध्वजा को काटा ६४ और बड़ी तीव्रता पूर्वक अर्जुनने दो भल्लोंसे फिर घायल किया वह अर्जुनको तीनबाणोंसे घायल करके सिंहनादको गर्जा ६५ उसक्रोध युक्त शूरसुदक्षिण ने सब लोहेके घंटेरखनेवाली भयकारी शक्तिको गांडीव धनुष धारी के ऊपर फेंका ६६ वह बड़ी उल्का के समान ज्वलित रूप पतंग रखनेवाली महारथी अर्जुनको पाकर उसको घायल करके पृथ्वी परगिरपड़ी ६७ शक्तिसेअत्यन्त घायल मूर्च्छा से युक्त बड़ेतेजस्वी बुद्धिसे परे पराक्रम रखनेवाले हेाठोंको चाबतेहुये अर्जुन ने अपने को संभालकर कंकपक्षोंसे युक्त चौदह नाराचों से उसको घोड़ेरथ ध्वजा और सूत समेत घायलकिया ६८ और दूसरे बहुत बाणों से रथको खण्ड २ करदिया फिर उस निष्फल संकल्प और पराक्रमवाले सुदक्षिण कांबोजको ७० अर्जुनने तीक्ष्णधारवाले बाणसे हृदयपर घायलकिया वह टूटेकवच और ढीले अंगवाला शूर जिस

के मुकुट और बाजूबन्द गिरपड़ेथे ७१ यंत्र से पृथक् होने वाली ध्वजाके समान ऐसेसन्मुख गिरपड़ा जैसे कि हिमऋतु के अन्त में पर्व्वत के शिखरपर उत्पन्न शोभायमान सुन्दर डालीवाला अच्छी रीतिसे नियत कर्णिकार का वृक्षहोताहै बायु से टूटकर गिरपड़ेवह सुन्दर बस्त्रों पर सोनेके योग्य काम्बोज देशी मराहुआ पृथ्वी पर शयनकरनेवालाहुआ ७२। ७३ बहुमूल्य भूषणोंसे युक्त शिखरधारी पर्व्वतके समान अपूर्वदर्शनीय रूपवाला सुदक्षिण करणीनामबाण से ७४ अर्जुनके हाथसे गिरायाहुआ महाबाहु राजा काम्बोज का पुत्र गलेमें अग्निरूप सुबर्णकी माला रखने वाला ७५ निर्जीव पृथ्वी पर गिराया हुआ शोभायमान हुआ इसकेपीछे आपकेपुत्र की सब सेना श्रुतायुध और काम्बोज सुदक्षिणको मृतक देखकर भाग गई ७६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विनवतितमोऽध्यायः ९२॥

तिरानबेका अध्याय॥

संजय बोले हे राजा सुदक्षिण और बीर श्रुतायुधके मारेजाने पर आपकी सेनाके मनुष्य क्रोधयुक्त होकर बड़ीतीव्रता से अर्जुन के सन्मुखगये १ और अभिषाह, शूरसेन, शिबय, बशातय, यहसब भी अर्जुनके ऊपर बाणोंकी बर्षाकरने लगे २ अर्जुनने बाणों के द्वारा उनके दूसरे छःसौ शूरबीरोंको मथडाला वह भयभीत होकर ऐसेभागे जैसे कि व्याघ्रसे नीच मृग भागतेहैं ३ उनलौटे हुओंनेफिर उस अर्जुनको सब ओरसे घेरलिया जो कि युद्धमें शत्रुओंको मारने वाला और शत्रुओंकी बिजयकाअभिलाषी था ४ अर्जुनने गांडीव के छोड़ेहुये बाणोंसे शीघ्र ही उन सन्मुखता करनेवालों के भुजाओं समेत शिरोंको भी गिराया ५ वहां गिरायेहुये शिरोंसे पृथ्वीबारंबार आच्छादितहुई और युद्धमें काक और गृद्धोंके समूहोंसे बादलोंकीसी छाया होगई ६ उन के नाशहोने पर क्रोध और अमर्ष से युक्त श्रुतायु और अच्युतायु यह दोनों अर्जुनसे युद्धकरनेलगे ७

उन पराक्रमी ईर्षासे भरेकुलीन दोनों सुन्दर भुजा वालोंने उस के ऊपर दाहेंबायें होकर बाणोंकी बर्षाकरी ८ हे महाराज वहशीघ्रता से युक्तदोनों धनुषधारी आपके पुत्रके अर्थ अर्जुनके मारनेके अभिलाषी होकरबड़ेयशकीइच्छा करनेवालेथे ९ उनदोनों क्रोधयुक्तोंने झुकीगांठ वालेहजार बाणोंसे अर्जुन को ऐसेपूर्ण करदिया जैसेकि बादल तालाबको पूर्णकरदेतेहैं १० उसके पीछे क्रोधयुक्त नरोत्तम श्रुतायुने पीतरंगके तीक्ष्ण तोमरसे अर्जुनको घायल किया ११ वह शत्रुओंका पीड़ादेने वाला अर्जुन युद्धमें पराक्रमी शत्रु से अत्यन्त घायल केशवजी को मोहित करताबड़े भारीमोहको प्राप्तहुआ १२ और उसी समय पर अच्युतायुने अत्यन्त तीक्ष्ण शूलसे अर्जुन को घायलकिया १३उसनेमहात्मा पांडव अर्जुनके घावमेंनोन लगाया उस समय वह महात्मा अर्जुन भी अत्यन्त घायल होकर ध्वजाके दंडकेआश्रयसे रक्षितहुआ १४ हेराजा इसके पीछे अर्जुनको मृतक मानकर आपकी सेनाके बड़ेसिंहनाद हुये १५ वहां अत्यन्त दुःखी चित्त श्री कृष्णजीने अर्जुनको अचेत देखकर चित्तके प्रियकारी बचनों से अर्जुन को ढाढ़स बंधाई १६ फिर उन रथियोंमें श्रेष्ठ दोनों लक्षभेदियोंने अर्जुन को और बासुदेवजी को बाणों की वर्षा करके चारों ओरसे १७ युद्धमें चक्र कूवर रथघोड़े ध्वजा और पताका समेत दृष्टिसे गुप्त कर दिया वह आश्चर्य्य सा हुआ १८ हे-भरतबंशी बड़े धैर्य्यसे विश्वासयुक्त और मरकट जियेहुये के समान उस महारथी अर्जुनने १९ केशवजी समेत अपने रथ को बाणों के जालोंसे ढकाहुआ देखकर और अग्निके समान प्रकाश मान दोनों शत्रुओंको सन्मुख बर्त्तमान देखकर इन्द्रास्त्रको प्रकट किया उस अस्त्रसे झुकी गांठवाले हजारों बाण उत्पन्न हुये २१ उन्होंने उन दोनों बड़े धनुष धारियों को मारा उनदोनोंके छोड़े हुये बाण आकाशमें बर्त्तमान अर्जुनके बाणसे कट२करघूमनेलगे २२ फिरअर्जुन बाणों की तीव्रतासे शीघ्र बाणोंको काटकर महारथियों से लड़ता हुआ जहां तहां गया २३ अर्जुन के बाणों के समूहों से हाथ और

शिरोंसे रहित वह दोनों पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे कि हवासे उखाड़े हुये दो वृक्ष होतेहैं २४ इन श्रुतायु और अच्युतायु दोनों शूरबीरोंका मरना लोकका ऐसा महा आश्चर्य्य कारी हुआ जैसेकि समुद्रका सूखजाना असंभव और आश्चर्य्य कारी होता है २५ फिर अर्जुन उन दोनों के ओर पास और पीछे चलने वाले पचासरथियों को मारकर उत्तम २ शूर लोगोंको मारता हुआ भरत बंशियों की सेना में गया २६ हे भरत श्रेष्ठ श्रुतायु और अच्युतायु को मरा-हुआ देखकर क्रोधसे भरे नियतायु और दीर्घायु २७ उन दोनों के पुत्रनरों में श्रेष्ठ पिताओंके शोकसे दुखी नाना प्रकार के बाणों को फैलाते हुये अर्जुन के सन्मुख गये २८ तब अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन ने एक मुहूर्त्त में ही गुप्त ग्रन्थीवाले बाणोंसे उन दोनों को भी यमलोक में भेजा २९ जैसे कि हाथी कमल के सरोवर को उथल पुथल करताहै उसी प्रकार सेनाओंके छिन्न भिन्न और मथन करने वाले अर्जुन को वह सब श्रेष्ठ क्षत्री रोकने को समर्थ नहीं हुये ३० हे राजा उन क्रोध युक्त शिक्षापाये हुये हजारों अंगदेशी हाथियों के सवारोंने गजेन्द्रोंके द्वारा पांडव अर्जुन को रोका ३१ दुर्योधन के आज्ञावर्त्ती पूर्व्वीय और दक्षिणीय राजा जिनमें कलिंगकाराजा मुख्य और अग्रगामीथा उन्होंने पर्व्वताकार हाथियों की सवारि-योंसे सन्मुखता करी ३२ भयकारी रूप अर्जुन ने उन आनेवाले राजाओं के शिर और अच्छी अलंकृत भुजाओं को भी गांडीवधनुष से छोड़े हुये बाणों के द्वारा बहुत ही शीघ्रता से काट डाला ३३ उन शिरों और बाजू बन्द रखनवाली भुजाओं से आच्छादितपृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि सुवर्णके पाषाण और सर्पोंसे संयुक्त होतीहै ३४ बिशिख नाम बाणोंसे टूटी हुई भुजा और मथेहुये शिर पृथ्वी पर पड़े हुये ऐसे दृष्टि पड़े जैसे कि वृक्षोंसे गिरेहुये पक्षी होतेहैं ३५ बाणोंसे घायल हजारों हाथी ऐसे दिखाई पड़े जिनके शरीर से इस प्रकार रुधिर जारीथा जैसे कि गेरू धातु रखनेवाले झिरनाओं से संयुक्त पर्व्वत होतेहैं ३६ हाथीकी पीठ पर सवार

विकृत दर्शन वाले म्लेच्छ उस अर्जुनके तीक्ष्ण बाणोंसेमरेहुये अ-स्त्रोंसे ताड़ित हुये ३७ हे राजा नाना प्रकार की पोशाकों से शो-भित बहुतभांतिके शस्त्रोंके समूहोंसेसंयुक्तरुधिर में लिप्त शरीर बड़े अपूर्व्व रूपके बाणों से मरे हुये दिखाई पड़े३८ अर्जुनके बाणोंसे घायल हाथियोंने रुधिरोंकी बमनकरी और पीछे वाले अन्यहजारों सवारोंसमेत टूटेहुये शरीर वालेहुये ३९ कितनेही हाथीपुकार२कर पृथ्वीपर गिरपड़े और दिशाओंमें घूमने लगे और बहुतसे अत्यन्त भय भीत हाथियों ने अपने ही मनुष्यों को मर्दन किया ४० जोकि तीव्र बिषके समान समीपही युद्ध करने वाले हाथीथे औरजो असुर मायाके जानने वाले भयकारी रूप और नेत्रों से संयुक्त ४१ काक बर्ण दुरा चारी स्त्रियों के लोभी उपद्रवी बारदशक और वाह्लीक युद्ध करनेवालेथे ४२ और मतवाले हाथीके समानपराक्रमी द्राविड़ लोगभी युद्ध कर्त्ताथे और काल के समान प्रहार करने वाले वह म्लेच्छ जोकि बशिष्ठ जीकी गौकी योनिसे उत्पन्नहुयेथे ४३ दारव, अतिसार, दरद, हजारों पुंद्र पौर लाखों ब्रातज्ञातिवाले जिनकी संख्या करनी असंभव है ४४ वह सब तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन के ऊपर बर्षाकरनेवालेहुये नानाप्रकार के युद्धमें कुशल उन म्लेच्छोंने अर्जुनको बाणों से ढकदिया ४५ अर्जुन ने भी उनके ऊपर शीघ्रही बाणोंकी बर्षा करी उस युद्धमें बाणोंकी ऐसीशोभाहुई जैसे किशल-भपक्षियोंके समूहोंकी होतीहै ४६ अर्जुन ने बाणोंसे सेनाके ऊपर बादलके समान छाया करके उन मुंड अर्द्ध मुंड जटाधारी अपबित्र और जटिल मुखी ४७ भागे हुये सब म्लेच्छोंको अस्त्रके प्रताप से नाश कर दिया वह पहाड़ियोंके हजारों समूह बाणोंसे घायल युद्ध में भयभीत होकर भागे जो पर्व्वतके दुर्गमस्थानों में रहने वालेथे ४८ और तीक्ष्ण बाणोंसे गिरे हुये हाथी घोड़े सवार और म्लेच्छों के रुधिरको पृथ्वीपर बगले कंक और भेड़ियों ने बड़ी प्रसन्नता से पियापत्ती घोड़े रथ और हाथियों से प्रच्छन्न रूपसेतु बाणों की वर्षा रूप नौका रखने वाली भयकारी बाल रूप शैवल और शाड्वल

रखने वाली महा भयानक रुधिर के समूहों से तरंग वाली नदीको जारी किया ५० टूटीहुई उंगली सूरत छोटी २ मछली रखने वाली प्रलयके समयकाल रूप हाथियों से दुर्गम्य अत्यन्त रुधिरसे पूर्ण नदीको ५१ राज कुमार हाथी घोड़े और रथ सवारोंके शरीरों से जारी किया जैसेकि इन्द्रके बर्षाकरने परस्थल और गर्त्त नहीं रहते हैं ५२ उसीप्रकार सब पृथ्वी रुधिर से भरीहुई होगई उनक्षत्रियों मेंश्रेष्ठ अर्जुनने छःहजार अश्व सवार शूरवीरों को और एक हजार उत्तमक्षत्रियोंको ५३ मृत्युके लोक में भेजा और बिधिके अनुसार अलंकृत हजारोंहाथी बाणों से घायल ५४ पृथ्वीको पाकर ऐसेसो गये जैसे कि बज्रसे प्रहार कियेहुये पर्व्वतपृथ्वीपरगिर पड़तेहैं वह अर्जुनघोड़ेरथ और हाथियोंको मारताहुआ ऐसेघूमने वालाहुआ ५५ जैसे कि मतवाला हाथी कमलके बनको मर्द्दन करताहुआ घूमताहै और जैसे कि बहुतसे वृक्ष लतागुल्म सूखे ईंधनघास और कोमल तृण रखनेवाले ५६ बनको बायुसे प्रेरित अग्नि भस्म करता है उसी प्रकार श्रीकृष्ण रूपी बायुसे प्रेरित अर्जुन रूपी अग्निने आप की सेनारूपी बनको भस्म करदिया ५७ बाण रूपी ज्वाला रखने वाले पांडव अर्जुन रूप क्रोधभरे अग्निने भस्म करदिया रथ के आश्रय स्थानों को खाली करता और मनुष्योंसे पृथ्वीको आच्छादित करता ५८ बज्रकेसमान बाणोंसे पृथ्वीको रुधिरसे पूर्णकरता धनुषधारी अर्जुन युद्धमें घूमनेलगा ५९ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन भरत बंशियों की सेना में प्रविष्ट हुआ उसजाते हुये को श्रुतायु और अम्बष्टने रोका हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुनने शीघ्रहीउस उपाय करने वालेके घोड़ोंको कंकपक्षसे जटित तीक्ष्ण बाणों से गिराया ६१ और दूसरे बाणोंसे उसके धनुषको काटकर अर्जुन घूमनेलगा फिरक्रोधसे व्याकुलनेत्र अम्बष्टने गदाकोलेकर ६२ युद्ध में महारथी अर्जुन और केशवजीकोसन्मुखपाया हेभरतबंशोइसके पीछेगदाको उठाकर प्रहारकरतेहुये बीरने ६३ रथको गदासे रोंक कर केशवजीकोघायलकिया फिरगदासे पीड़ितकेशवजीको देखकर

शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला ६४ अर्जुन अम्बष्टकेऊपर अत्यन्त क्रोधित हुआ उसके पीछे सुनहरी पुंखवाले बाणों से उस रथियों में श्रेष्ठ को गदासमेत ६५ युद्धमें ऐसेढकदिया जैसे कि उदयहोने वाले सूर्य्य को बादलढक देताहै तब अर्जुनने दूसरे बाणों से उस महात्माकी गदाको भी ६६ टुकड़े २ किया वह आश्चर्य्यसा हुआ फिर उसने उस गिरी हुई गदाको देखकर दूसरी बड़ी गदाको लेकर के ६७ अर्जुन और बासुदेवजीको बारंबार घायल किया अर्जुनने गदा समेत उठी हुईउसकी उन दोनों भुजाओंको क्षुरप्रनाम दो बाणों से काटा ६८ जो कि इन्द्रकी ध्वजा के समान थीं और दूसरे बाण से शिरको भी काटा हे राजा वह मृतक हुआ राजा पृथ्वीको शब्दायमान करता ऐसे गिरपड़ा ६९ जैसे कि यन्त्र से पृथक् इन्द्रकी छोड़ी हुई ध्वजा गिरतीहै तब रथकी सेना से घिरा सैंकड़ों हाथी और घोड़ों से युक्त अर्जुन ऐसे दिखाई दिया जैसे कि बादलों से घिराहुआ सूर्य्य होता है ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

संजय बोले इसके अनन्तर दुःख से पार होने के योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतबर्मा की सेनाओंको छिन्न भिन्न करके जयद्रथ के मारने की इच्छासे अर्जुन के प्रवेशित होने पर १ और अर्जुन के हाथ से कांबोज के पुत्र सुदक्षिण के मारे जाने और पराक्रमी श्रुतायुध के मरने पर २ चारों ओर से सेनाओं के भागने और नाश होने पर आपका पुत्र अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर द्रोणाचार्य्य के पास गया ३ अर्थात् एक रथके द्वारा शीघ्रतासे चलकर द्रोणाचार्य्य से बोला कि वह पुरुषोत्तम अर्जुन इस सेना को गर्द मर्द करके गया ४ बुद्धिसे बिचारिये कि इन मनुष्यों के नाश करनेवाले कठिन युद्धमें अर्जुन के नाशके अर्थ शीघ्रता पूर्व्व क्या करना चाहिये ५ जैसे रीतिसे वहपुरुषोत्तम अर्जुन जयद्रथ को न

मारसके उसी प्रकार को करिये आपका भलाहोगा आपही हमारे परम गति रूप रक्षाके आश्रयहो ६ क्रोध रूप बायुसे प्रेरित यह अर्जुन रूप अग्नि मेरी सेनारूपी बनको ऐसे भस्म करदेताहै जैसे कि उठाहुआ अग्नि सूखे बनको जलाता है ७ हे शत्रुओंके तपाने वाले सेनाको पृथक्२ करकेअर्जुनके प्रवेशकरनेपर जयद्रथके रक्षकोंने बड़े संशय को पाया है ८ हे ब्रह्मज्ञानियोमें श्रेष्ठ राजाओंका यह पक्का विचार और सम्मतथा कि जीवताहुआ अर्जुन द्रोणाचार्यको उल्लंघन नहीं करेगा ९ हे बड़े तेजस्वी जो यह अर्जुन आपके देखतेहुये दूर चलागया तो अबसबको मैंब्याकुलही मानता हूं और यह सेना मेरी नहीं है १० हे महाभाग मैं तुम को पांडवोंके हितमें प्रवृत्त चित्त मानताहूं और हे ब्रह्मन् इसी प्रकार करनेके योग्य कर्मको बिचारता हुआ अचेत होताहूं मैं सामर्थ्य के अनुसार आपमें उत्तम वृत्ती को बर्त्ताहू ११ और सामर्थ्य केही अनुसार चाहता हूं आप उसको नहीं ध्यान करतेहो १२ हे बड़े पराक्रमी तुम सदैव भक्ति करनेवाले हमलोगों को नहीं चाहतेहो और हमारे अप्रिय करने में चित्तसे प्रवृत्त पांडवों को सदैव चाहतेहो १३ तुम हमारे पास अपनी जीविका करते और हमारे अप्रिय में प्रीति रखने वाले हो सहद से डूबी हुई छुरी के समान आपको मैं नहीं जानताहूं १४ जो आप पांडव अर्जुनके रोकनेमें मुझकोबरनहीं देते तो मैंघरजातेहुये जयद्रथको नहीं रोकता १५ आप से रक्षा को न जानने वाले और मुझसे समझायाहुआसिन्धकाराजाजयद्रथ आश्वासित किया गया औरमोहसेमृत्युके अर्थ दिया गया १६ यमराज की भी डाढ़में बर्त्तमान हुआ मनुष्य चाहै बच जाय परन्तु युद्ध भूमिमें अर्जुन के आधीन हुआ जयद्रथकभी नहीं बचसक्ताहै १७ हे रक्त घोड़े रखने वाले आप वही को जिये जिरूसे कि जयद्रथ आपत्तिसे बचे आप मुझदुखीके बचनोंपर क्रोध न करिये किसी प्रकार से जयद्रथ को बचाओ १८ द्रोणाचार्य्य बोले कि मैं तेरे बचनोंमें दोष नहीं लगाताहूं तूमेरे पुत्र अश्वत्थामाके समान

है तुझसे सत्य २ कहताहूं हे राजा तू उसको अंगीकार कर श्री-कृष्णजी बड़ेही उत्तम उसके सारथी हैं और उसके उत्तम घोड़ेभी शीघ्रगामी हैं अर्जुन छोटासा भी बिवर करके शीघ्र चलाजाता है २० शीघ्र चलेजाने वाले अर्जुन के एक कोश पर फेके हुये और रथ के पीछे पड़ेहुये बाणों के समूहों को क्या तू नहीं देख ताहै २१ अब मैंवृद्ध होकर शीघ्र चलनेमें समर्थ नहींहूं और हमारी सेनाके मुखपर पांडवोंकी यह सेना सन्मुख नियतहै २२ सब धनुष धारियों के देखतेहुये भी मैं युधिष्ठिर के पकड़नेको समर्थहूं हे महा बाहु मैंने उस प्रकार क्षात्रियोंके मध्यमें प्रतिज्ञा करीहै २३ हे राजा वहयुधिष्ठिर अर्जुन से पृथक् होकर मेरे सन्मुख वर्त्तमानहै इस हेतु से मैं व्यूहके मुखको छोड़कर अर्जुन से नहीं लड़ूंगा २४ शूर मनुष्यों का रखने वाला समान कुल और कर्मरखने वाले अकेले शत्रुसे भयको त्यागकर तूही क्यों नहीं लड़ता तूही तो इस पृथ्वी भरे का स्वामीहै २५ राजा शूरबीर कर्मका करनेवाला बिजय करने में सावधान शत्रुओं के पुरके बिजय करने वाले और पराक्रमी होकर तुमआपही वहांजाओ जहां कि पांडवअर्जुनहै २६ दुर्योधन बोला कि हे आचार्य्यजी सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठआप को भी उल्लंघन करनेवाला अर्जुन कैसे मुझ से पराजय होने को योग्यहै २७ बज्रधारी इन्द्र भी युद्ध में चाहै बिजय किया जाय परन्तु शत्रुओं के पुरों का बिजय करनेवाला अर्जुन युद्धमें बिजय करने के योग्य नहीं होसक्ता २८ जिस ने भोजबंशी कृतबर्मा और देवता के समान आपको भी अस्त्रोंके प्रताप से बिजय किया और राजा श्रुतायु को मारकर २९ सुदक्षिण श्रुतायुध और श्रुतायु अच्युतायु कोभी मार कर लाखों म्लेच्छोंको मारा ३० युद्धमें अग्नि के समान भस्म करनेवाले अजेय अस्त्रबिद्यामें कुशल पांडव अर्जुन से मैं कैसे लड़ सकूंगा ३१ अब आप युद्ध भूमिमें उस के साथ मेरे युद्धको योग्य और उचित समझतेहो मैं दासकेसमान आपकीस्वाधीनता मेंहूं आप मेरे यशकी रक्षा करो ३२ द्रोणाचार्य्य बोले

कौरव तू सत्य कहताहै वास्तवमें अर्जुन दुर्जयहै अब वही करूंगा जिस्से तू उसको सहैगा ३३ अब लोकमें धनुषधारी बासुदेवजीके देखते हुये तुझ से भिड़े हुये अर्जुनको और अपूर्व्व युद्धको देखेंगे ३४ हे राजा यह स्वर्णमयी कवच तेरे शरीर पर उस प्रकार का बांधता हूं जिस्से कि बाण युद्धमें व अस्त्र युद्ध में तुझपर कोई प्रहारनहीं करसके ३५ जो असुर यक्ष सर्प राक्षसदेवता औरमनुष्य समेत तीनों लोकभी तुझसे युद्धकरें तौभी तुझको किसी प्रकार का भय नहीं होसक्ता ३६ श्रीकृष्ण अर्जुन अथवा दूसरा कोई भी शस्त्र धारी युद्धमें तेरे कवच में बाणके प्रवेश करनेको समर्थनहीं होगा ३७ सो अब तू शीघ्रतासे उस कवचको शरीर में धारण करके आपही युद्धमें क्रोध युक्त अर्जुनके सन्मुख हो वह तुझको न सह सकेगा ३८ संजय बोले कि शीघ्रता करने वाले द्रोणाचार्य्य ने इस प्रकार से कहकर आचमन कर बिधिपूर्व्वक मंत्रको जपते हुये अत्यन्त अपूर्ब्ब प्रकाशमान कवचको बांधा ३९ अपनी विद्या से लोकों को आश्चर्य्य युक्त करने के अभिलाषी ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने आपके पुत्रके और अर्जुन के उसबड़ेयुद्धमें यह बचन कहा ४० ब्रह्म ब्रह्मा और ब्राह्मण लोगभी तेरे कल्याण को करो और हेभरतबंशी जो२ उत्तम सर्प हैं वहभी तेरे कल्याण को करो ४१ ययाति, नहुष, धुंधुमार, भगीरथ, सब राजऋषि यह सब भी सदैव तेरे कल्याण को करो ४२ सदैव बड़े युद्ध में एक चरण रखने वालों से भी तेरा कल्याण होय ४३ स्वाहा स्वधा औरशची भी तेरा सदैव कल्याण करैं हे निष्पाप लक्ष्मी अरुन्धती भी तेरा कल्याणकरें ४४ हेराजा असित, देवल, बिश्वामित्र, अंगिरा, बशिष्ठ, कश्यप, यहभी तेरा कल्याण करो ४५ धाताबिधाता लोकेश्वर दिगीश्वरों समेत सब दिशा और षड़ानन कार्त्तिकेयजी भी अबतुझ को कल्याण करो ४६ भगवान सूर्य्य सब प्रकारसे तेरी रक्षा करो चारोदिग्गज अर्थात् ऐरावत, बामन, अंजन, सार्बभौम, पृथ्वी, आकाश और ग्रह तेरे कल्याण को करो ४७ हेराजा जो यहसर्पोंमें श्रेष्ठ

शेषनागनीचेसे पृथ्वीको सदैव धारण करताहै वह तुझको कल्याण हो ४८ हे गान्धारी के पुत्र पूर्व्व समय में वृत्रासुरने युद्धमें पराक्रम करके उत्तम देवताओं को बिजय किया और हजारों मारडाले४९ तब महाअसुर वृत्रासुरसे भयभीत तेजबलसे रहित इन्द्र समेत सबदेवताब्रह्माजीकी शरण में गये ५० और उनसे देवताओंने कहा कि हे देवताओं में श्रेष्ठ वृत्रासुर से मर्दन किये हुये देवताओंकी आपरक्षा करिये हे सुरों में शिरोमणि हम को भय से निर्भय करो ५१ फिर ब्रह्माजी एक पक्ष में नियत बिष्णु को और देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्रादिक देवताओं से यहसत्य २ बचन बोले ५२ कि इन्द्र और ब्राह्मणों समेत सबदेवता सदैव मुझ से रक्षा करनेके योग्यहैं त्वष्टा देवता का तेज बड़ी कठिनता से सहने के योग्यहै जिससे कि यह वृत्रासर उत्पन्न हुआहै ५३ हेदेवताओ पूर्व्व समयमें त्वष्टाने महादेवजीसे बरको पाकर दशलाख बर्षतक तपस्या करके वृत्रासुरको उत्पन्न किया ५४ वहमहा बली देवताओंका शत्रु उन शिवजीको कृपासे तुम को मारताहै शिवजी के स्थान को बिनागये हुयेवह भगवान् शिव दिखाई नहीं देते ५५ उन शिवजीको देखकर उस वृत्रासुरको बिजय करोगे इस हेतुसे तुम शीघ्रही उसमंदराचल पर्व्वतपर जाओ जिसपर कि वह तपोंके उत्पत्ति स्थान दक्षके यज्ञके नाशक पिनाक धनुषधारी सब जीव धारियों के ईश्वर भगनेत्रको मारनेवाले निवास करतेहैं फिरउन देवताओंने ब्रह्माजी समेत मन्दराचल पर जाकर ५६ । ५७ उस तेजपुंज कोटिसूर्य्यके समान प्रकाशित शिवजीको देखा तब शिवजी ने कहाकि हे देवताओ तुम्हारा आना कल्याण कारीहो कहो मैं तुम्हारा कौनसा प्रयोजन करूं ५८ मेरादर्शन सफलहै इसहेतु से तुम्हारा अभीष्ट सिद्धहोय यह बचन शिवजीके सुनकर सब देवताओंनेउन शंकरजीको उत्तरदिया ५९ कि हे स्वामी वृत्रासुरने हम सबका तेजहरण किया आप देवताओं के रक्षा स्थानहो हे देवदेव उसके प्रहारों से घायलहुये देवताओंको देखो ६० हम सबआप

की शरण में आयेहैं हेमहेश्वरजी आप हमारे रक्षाश्रय हूजियेशिव-
जी बोले कि हेदेवताओ तुमको विदित है जैसे कि त्वष्टा देवता के
तेजसे सृष्टि और भयकारी ज्ञानियों से भी कठिनता पूर्व्वक हटाने
के योग्य बड़ी पराक्रमी यह कृत्या है ६१ मुझको सब देवताओं
की सहायता अवश्य करनी उचित है हे इन्द्र मेरे शरीरसे उत्पन्न
बड़े प्रकाशमान इस कवच को ले हे देवेन्द्र चित्त से कहेहुये इस
मंत्रके साथशरीर में धारण करके जाओ ६२ द्रोणाचार्य्य बोले
कि बरदाता शिवजीने यहकह कर उस कवच और मन्त्र को दिया
उस कवचसे रक्षित वह इन्द्र वृत्रासुरकी सेनापरआया ६३ बड़ेयुद्ध
में छोड़ेहुये नाना प्रकार के शस्त्रोंके समूहोंसे उस कवचका तोड़ना
असंभवथा६४इसकेपीछे इन्द्रनेआपही युद्धमें वृत्रासुरकोमारा और
मंत्ररूपजोड़ बन्दवाले उस कवचको अंगिरा ऋषिको दिया६५और
अंगिरानें बड़े मंत्रज्ञ अपनेपुत्र वृहस्पतिजीको सिखाया और वृह-
स्पतिजीने महात्मा अग्निवेश्य ऋषिको शिक्षाकरी ६६ हे राजा
ओंमेंश्रेष्ठ फिर अग्नि वेश्यने मुझकोदिया अब उस मंत्रसे तेरेकवच
कोतेरे शरीरकी रक्षाके निमित्त बांधताहूं ६७ संजयबोले आचार्य्यों
में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने इस प्रकार कहकर आप के बड़े तेजस्वी पुत्र
से बड़ेधीरे पनेसे फिर यह बचनकहा६८कि हे भरतबंशी तेरेकवच
को मैं ब्रह्मसूत्रसे ऐसेबांधताहूं जैसेकि पूर्व्वसमयमें ब्रह्माजीने युद्ध
में बिष्णुके शरीरमें बांधाथा ६९ और जिस प्रकार तारा से संबंध
रखनेवाले युद्धमें ब्रह्माजीने इन्द्रके दिव्य कवचको बांधा था उसी
प्रकार मैं इस कवचको तेरे बांधताहूं ७० द्रोणाचार्य्य ब्राह्मणने
मंत्रकेद्वारा बिधिपूर्व्वक उस कवचको बांधकर राजाको बड़ेयुद्धमें
लड़नेके निमित्त भेजा ७१ महात्मा आचार्य्यसे कवच धारण किये
हुयेवह महाबाहु प्रहार करनेवालेत्रिगर्त देशियों के हजार रथ७२
व बलसे मतवाले हजार हाथी और नियुत संख्यावाले घोड़े और
अन्य२ महा रथियोंसमेत महाबाहु दुर्य्योधन अनेक प्रकारके बाजों
के शब्दों समेत अर्जुनकेरथकेपास ऐसेगया जैसे कि बिरोचनकापुत्र

बलि इन्द्रकेपास गयाथा ७४ हेभरतबंशीइसकेपीछेबड़ेगंभीरसमुद्र में जातेहुये कौरवको देखकरआपकीसेनाओंकेबड़े शब्दहुये ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्नवतितमोऽध्यायः ६४ ॥

पच्चानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्धमें अर्जुन औरश्रीकृष्णजीके प्रवेश करने पर और पीछेकी ओर से पुरुषोत्तम दुर्य्योधन के जानेपर १ पांडवलोग सोमको समेत तीव्रता पूर्व्वक बड़े शब्दको करते हुये द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गये और युद्धजारी हुआ २ व्यूह के आगे पांडवों और कौरवोंका वह युद्ध अपूर्व कठिन और रोमहर्षण करने वालाहुआ ३ वैसायुद्ध हमनेकभी न देखाथा न सुनाथा जैसा कि वह मध्याह्नके समय हुआ ४ प्रहार करने वालो अलंकृत सेना वाले उन सब पांडवोंने जिन में मुख्य धृष्टद्युम्न था बाणों की बर्षा से द्रोणाचार्य्य की सेना को ढकदिया ५ हमसबलोग शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको आगेकरके बाणोंसे उनपांडवों के ऊपर जिनमें कि प्रधान धृष्टद्युम्नथा बर्षाकरनेलगे ६ जैसे कि हिमऋतुके अन्तमें बायुसे युक्तबड़े बादलोंकी शोभाहोती है उसीप्रकार सुन्दर रथोंसे अलंकृत दोनोंसेना शोभायमानहुई ७ फिर उन दोनों बड़ीसेनाओं ने भिड़कर ऐसा बड़ा वेगकिया जैसेकि बर्षाऋतुमें बहुतजलरखने वालीगंगा और जमनादोनोंनदी परस्पर करतीहैं ८ नाना प्रकारां के शस्त्ररूपवायु आगेरखनेवाला हाथी घोड़े और रथसेसंयुक्त गदा रूपीबिजलीसे महाभयानक युद्धरूपी बड़ा बादल ९ द्रोणाचार्य्य रूपी बायुसे उठायाहुआ बाणरूपी हजारोंधाराओंका रखनेवाला पांडवीय सेनारूपी अग्नि से घायल बड़ी सेनारूपी बादल बर्षा करने लगा १० जैसे कि बर्षाऋतु में भयकारी प्रवेश करनेवाला बड़ाबायुका वेगसमुद्र को व्याकुल करता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य ने पांडवों की सेना को छिन्नभिन्न करदिया ११ और वह सब भी उपायोंको करतेहुये द्रोणाचार्य्यके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि

अत्यन्तपराक्रमी जलका समूह बड़ेपुलके तोड़नेकी इच्छासे जाता है १२ द्रोणाचार्य्यने उन युद्धमें क्रोधरूप पांडव और पांचालों को केकयोंसमेत ऐसेरोका जैसे कि जल के समूहोंको पर्व्वत रोकता है १३ उसके पीछेबड़े पराक्रमी शूर बीर अन्यराजाओं ने घेरकर पांचालको रोका १४ तबसेनाके पराजय करनेके अभिलाषीनरोत्तम धृष्टद्युम्नने पांडवों के साथ होकर युद्ध में द्रोणाचार्य्यको घायल किया १५ जैसे कि धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य्य ने बाणोंकी बर्षाको किया उसको सुनों कि १६ खड्ग रूपी बायुआगे करनेवाले शक्ति प्रास दुधारे खड्गों से युक्त प्रत्यंचा रूप बिद्युत शब्द कहने वाला धृष्टद्युम्न रूपबादल १७ सब दिशाओं से बाण धारारूप पाषाणों की वृष्टि को उत्पन्न करता उत्तम रथ घोड़ोंके समूहों को मारता सेनाको छिन्न भिन्न करने वालाहुआ १८ द्रोणाचार्य्य ने पांडवोंके जिस २ रथों के समूहों को बाणों से घायल किया उसी २ ओर से धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य्य कोबाणों से हटाया १९ हे भरत बंशी इस रीतिसे उपाय करने वाले द्रोणाचार्य्य की सेना धृष्टद्युम्न को पाकर तीन ओर से छिन्नभिन्न होकर पृथक् २ होगई २० कोईतो कृतबर्मा के पास चले गये कोई राजा जलसन्ध के समीप जाकर शरण हुये और बहुत से पांडवों से घायल होकर द्रोणाचार्य्यही के शरण में गये २१ रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य सेनाओं को पृथक् २ करते थे और महा रथी धृष्टद्युम्नभी उनकी उन सेनाओं को छिन्नभिन्न करताथा २२ उस दशा वाले आपकेपुत्रों पांडव और सृञ्जयोंसे ऐसे घायल होतेथे जैसे कि रक्षकों से जुदा हुआ पशुओं का समूह बनमें बहुतसे मांसाहारी जीवोंसे ब्याकुल होताहै २३ उस कठिन युद्धमें मनुष्यों ने धृष्टद्युम्न के हाथसे अचेतहुये शूरबीरोंको कालका निगलाहुआ माना२४ जैसे किअन्यायी राजाका देशदुर्भिक्ष व रोगोपद्रव में अथवा चोरों से दुखी होकर भागताहै उसी प्रकार आपकी सेना पांडवों के हाथसे आपत्तिमें फंसीहुई ब्याकुल हुई २५ सूर्य्यकी किरणों से युक्त शस्त्र और कवचोंमें और उसीप्रकार सेना की धूलसे

घायल हुये नेत्रों में २६ सेनाओं के शिरोंके खंड २ होने वा पांडवों के हाथ से मारे जाने पर क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्यने बाणोंसेपांचालों को पृथक् २ कर दिया २७ उन सेनाओंके मर्दन करते बाणों से भी मारते हुये द्रोणाचार्य्य का रूप कालाग्नि के समान प्रकाश मान हुआ २८ हे राजा उस महा रथीने युद्धमें एक एक बाण से रथ हाथी घोड़े और पतियों को भी घायल किया २९ हे भरत बंशी प्रभु धृतराष्ट्र पांडवोंकी सेनाओं में कोई ऐसा नहीं था जिसने युद्धमें द्रोणाचार्य्य के धनुषसे गिरे हुये बाणों को सहलियाहो ३० हे राजा द्रोणाचार्य्य के बाणों से व्याकुल सूर्य्यसे संतप्त हुये के समान धृष्टद्युम्नकी वह सेना जहां तहांघूमी ३१ उसी प्रकार धृष्टद्युम्नके हाथ से छिन्न भिन्न आपकीभी सेनासबओरसे ऐसीअग्निके समानप्रज्वलितहुई जैसे कि अग्निसे सूखाहुआ वनज्वलितहोताहै ३२ द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नके बाणोंसे सेनाओं के पीड़ामानहोन पर सबओरको मुख रखनेवाले संपूर्ण वीरप्राणों को त्याग करके बड़े पराक्रम से लड़ते थे ३३ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ आपके और पांडवों के शूर बीरोंमें ऐसा कोईनहींहुआ जिसनेभयसेयुद्धको त्याग कियाहो ३४ बिबिंशति चित्रसेन और महारथी बिकर्ण सगेभाइयों ने कुन्तीके पुत्र भीमसेनको चारों ओरसे घेरा ३५ आपके पुत्रोंके पीछे चलनेवाले यहआगे लिखे हुये बीरथे बिन्द, अनबिन्द, अवन्तिदेशका राजा, और पराक्रमी क्षेम धूर्त्ति ३६ महा रथी तेजस्वी कुलवान राजा बाल्हीकने सेना और मंत्रियोंके साथ द्रौपदी के पुत्रों को रोक कर ३७ हजारोंशूरबीरों के सहित राजा शैब्य गोवासन काशीके राजाके पुत्र पराक्रमी अभिभुवको रोका ३८ मद्रदेशाधिपति राजा शल्यने अग्निके समान प्रकाश मान अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको घेर लिया ३९ क्रोध युक्त असहन शील शूर दुश्शासन अपनी सेनाको नियतकरकेयुद्धके बीच रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी के सन्मुख गया ४० अपनीसेनासे अलंकृत इसने कवच धारी अपने चारसौ बड़े धनुष धारियोंसमेत चेकितानको रोका ४१ फिरशकुनी

ने धनुष शक्ति और खड्गहाथमें रखने वाले सात सौ गान्धार देशो सेनाके साथ जाकर माद्रीके पुत्र को रोका ४२ मित्रकेअर्थ शस्त्रों के उठाने वाले बड़े धनुषधारी अवन्तिदेशों के राजा विन्द अनु बिन्द प्राणों को त्याग करकेमत्स्य देशकेराजा विराटके सन्मुखगये ४३ सावधान बाल्हीकने द्रुपदके पुत्र अजेयपराक्रमी और रोकने वाले शिखण्डीको रोका४४ फिर युद्धमें निर्दयप्रभद्रक औरसौबीर केसाथ राजा अवन्तीने राजा द्रुपदके पुत्रक्रोधरूप धृष्टद्युम्नको रोका ४५ अलायुधनाम राक्षस युद्धमें आतेहुयेक्रोधसे निर्दयकर्मी शूरघटोत्कच राक्षसके सन्मुख शीघ्रतासेगया ४६ बड़ीसेनासेयुक्तमहारथी कुन्त भोजने राक्षसोंके राजा क्रोध रूप अलंबुष को रोका ४७ हे भरत बंशी बड़े धनुष धारी कृपाचार्य्य आदिक रथियों से रक्षित जयद्रथ सब सेनाके पीछे था ४८ उस जयद्रथके चक्र के रक्षक दो बड़े बीर हुये दाहिनीओर अश्वत्थमा और बाईं ओरकर्णथा ४९ और उसके पृष्ठ रक्षक कृपाचार्य्य,वृषसेन, शल, शल्य औरदुर्जय हुये जिनका कि अग्रगामी सोमदत्तथा ५० नीतिज्ञ बड़े धनुषधारी युद्ध में कुशल वह सबइसरीतिसे जयद्रथकी रक्षाकरके उसकेपीछे युद्ध करने वाले हुये ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छियानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा जैसे कि कौरव और पांडवोंका वह अपूर्व युद्ध जारी हुआ उसकोसुनो कि पांडवलोग१द्रोणाचार्य्यकोसेना को पराजय करनेके अभिलाषी युद्धमें व्यूहके मुखपर नियतहोकर द्रोणाचार्य्य से युद्ध करनेलगे २ तब बड़े यशको चाहते और अपने व्यूह को रक्षित करते हुये द्रोणाचार्य्य ने भी सेना के मनुष्यों को साथ लेकर पांडवों से युद्ध किया ३ आप के पुत्र का हित चाहने वाले अत्यन्त क्रोध युक्त अवन्ति देशों के राजा बिन्द अनुबिन्द ने दशबाणों से विराट राजा को घायल किया ४ हे महाराज

बिराट ने पराक्रम करके उन युद्धमें नियत पराक्रमी दोनों राजाओं से उनके साथियों समेत युद्ध किया ५ उन्हों की लड़ाई भी महा कठिन रुधिर रूप जल रखने वाली ऐसीहुई जैसे कि बनके मध्यमें सिंहका युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियों से होताहै ६ बड़े पराक्रमी राजा द्रुपद ने मर्म और अस्थियोंके छेदनेवाले भयकारी तीक्ष्ण बिशिख नाम बाणों से उस युद्ध में बेगवान बाल्हीक को घायल किया ७ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त बाल्हीक ने सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार झुकी गांठवाले नौ बाणों से द्रुपदको घायल किया ८ वह युद्ध भय कारी बाण शक्तियों से व्याकुल भय भीतों के भय को उत्पन्न करनेवाला और शूर बीरों की प्रसन्नता का बढ़ाने वाल हुआ ९ वहां उन्होंके छोड़े हुये बाणोंसे पृथ्वी औरआकाशका मध्य और सब दिशा व्याप्तहोगईं कुछ भी नहीं जाना गया १० सेना समेत शैव्य गोवाससने युद्धमेंकाशी के राजाकेपुत्र महारथीसे ऐसा युद्ध किया जैसे कि हाथी हाथीके साथ युद्ध करताहै ११ अत्यन्त क्रोध युक्त राजा बाल्हीक युद्धमें द्रौपदी के पुत्र महा रथियों से लड़ता हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन पांचों ज्ञानेन्द्रियों के साथ लड़ताहै १२ हेदेहधारियोंमें श्रेष्ठवह चारों ओरसे बाणोंकेस मूहों से ऐसे अत्यन्त युद्धकरतेहुये जैसे कि इन्द्रियोंके बिषय सदैव शरीरसे युद्धको करतेहैं १३ आपके पुत्रदुश्शासनने युद्ध में तीक्ष्ण और झुकी गांठवाले नौ शायकोंसे वृष्णिबंशी सात्यकी को घायल किया १४ पराक्रमी बड़े बाणप्रहारी धनुषधारी से अत्यन्त घायल उस सत्य पराक्रमी सात्यकीनेशीघ्रही कुछमूर्च्छा कोपाया १५ फिर चैतन्य हुयेसात्यकीने शीघ्रही कंकपक्षसे जटित दश शायकोंसे आप केमहारथी पुत्रको पीड़ामान किया १६ हेराजा वह दोनों परस्पर कठिन घायल और बाणोंसे पीड़ामानयुद्धमें ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि फूलेहुये किंशुकके वृक्ष होते है १७ कुन्तभोजके बाणों से पीड़ामान अत्यन्त अलंबुष बड़ीशोभासे ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूलोंसे लदाहुआ किंशुकका वृक्षहोताहै १८ इसके पीछे आप की

सेनाके मुखपर नियत अलंबुष राक्षस बहुत से लोहमयी बाणों से कुन्तभोजको घायलकरके भयकारी शब्दसेगर्जा १६ उस समय परस्पर युद्धमें लड़तेहुये वह दोनों शूर सबसेनाओं को ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्र और जंभवर्त्तमान थे २० हेभरत वंशी माद्रीकेदोनों क्रोध युक्त पुत्रोंने बाणोंसे युद्धमें क्रोधयुक्त शत्रुता करनेवालेशकुनीको अत्यन्त पीड़ामान किया २१हेराजा तुझसेअधिकता उत्पन्न और कर्णसे अच्छी वृद्धिपायाहुआ मनुष्योंका नाशकरनेवाले कठिन युद्धजारीहुआ २२ अर्थात् यहक्रोधसे उत्पन्न अग्नि आपके पुत्रोंसे रक्षितहोकर इससब पृथ्वीके भस्म करनेको तैयार हुआहै २३ वह शकुनी पांडव नकुल और सहदेवके बाणोंसे मुखकोफेरगया और ऐसाव्याकुल हुआ कि उसने युद्धमें करनेके योग्य कर्म और कुछभी पराक्रमको नहीं करनाजाना २४ माद्रीके महारथी दोनोंपुत्र इसको मुख फिराहुआ देखकर फिर ऐसे बाणोंकीवर्षा करने लगे जैसे कि दो बादल बड़े पहाड़ पर बर्षा करतेहैं २५ वह गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे अत्यन्त घायल शकुनी शीघ्रगामीघोड़ोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलागया २६ इसी प्रकार घटोत्कच साधारण तीव्रतासे युक्त होकर उसयुद्धमें वेगवान शूरबीर अलायुध राक्षसके सन्मुख गया २७ हेमहाराज उन दोनोंका युद्धऐसा अपूर्व रूपकाहुआ जैसेकि पूर्व्व समयमें रामरावणका युद्ध हुआथा २८ इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने युद्धमें राजाशल्यको पचास बाणों से वेधकरफिर सातबाणोंसेबेधा २६ उनदोनोंका युद्ध भी ऐसा अपूर्व जारीहुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें इन्द्र और सम्बर दैत्यका भयकारी और अपूर्व्व हुआथा ३० बड़ी सेनासे युक्त आप के पुत्र विविंशति चित्रसेन से और विकर्ण ने भीमसेन से युद्धकिया ३१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिकर्णवधेसप्तनवतितमोऽध्यायः ६६ ॥

शेषनागनीचेसे पृथ्वीको सदैव धारण करताहै वह तुझको कल्याण हो ४८ हे गान्धारी के पुत्र पूर्व्व समय में वृत्रासुरने युद्धमें पराक्रम करके उत्तम देवताओं को बिजय किया और हजारों मारडाले४६ तब महाअसुर वृत्रासुरसे भयभीत तेजबलसे रहित इन्द्र समेत सबदेवताब्रह्माजीकी शरण में गये ५० और उनसे देवताओंने कहा कि हे देवताओं में श्रेष्ठ वृत्रासुर से मर्द्दन किये हुये देवताओंकी आपरक्षा करिये हे सुरों में शिरोमणि हम को भय से निर्भय करो ५१ फिर ब्रह्माजी एक पक्ष में नियत बिष्णु को और देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्रादिक देवताओं से यहसत्य २ बचन बोले ५२ कि इन्द्र और ब्राह्मणों समेत सबदेवता सदैव मुझ से रक्षा करनेके योग्यहैं त्वष्टा देवता का तेज बड़ी कठिनता से सहने के योग्यहै जिससे कि यह वृत्रासर उत्पन्न हुआहै ५३ हेदेवताओ पूर्व्व समयमें त्वष्टाने महादेवजीसे बरको पाकर दशलाख बर्षतक तपस्या करके वृत्रासुरको उत्पन्न किया ५४ वहमहा बली देवताओंका शत्रु उन शिवजीको कृपासे तुम को मारताहै शिवजी के स्थान को बिनागये हुयेवह भगवान् शिव दिखाई नहीं देते ५५ उन शिवजीको देखकर उस वृत्रासुरको बिजय करोगे इस हेतुसे तुम शीघ्रही उसमंदराचल पर्व्वतपर जाओ जिसपर कि वह तपोंके उत्पत्ति स्थान दक्षके यज्ञके नाशक पिनाक धनुषधारी सब जीव धारियों के ईश्वर भगनेत्रको मारनेवाले निवास करतेहैं फिरउन देवताओंने ब्रह्माजी समेत मन्दराचल पर जाकर ५६। ५७ उस तेजपुंज कोटिसूर्य्यके समान प्रकाशित शिवजीको देखा तब शिवजी ने कहाकि हे देवताओ तुम्हारा आना कल्याण कारीहो कहो मैं तुम्हारा कौनसा प्रयोजन करूं ५८ मेरादर्शन सफलहै इसहेतु से तुम्हारा अभीष्ट सिद्धहोय यह बचन शिवजीके सुनकर सब देवताओंनेउन शंकरजीको उत्तरदिया ५६ कि हे स्वामी वृत्रासुरने हम सबका तेजहरण किया आप देवताओं के रक्षा स्थानहो हे देवदेव उसके प्रहारों से घायलहुये देवताओंको देखो ६० हम सबआप

की शरण में आयेहैं हेमहेश्वरजी आप हमारे रक्षाश्रय हूजियेशिव-
जी बोले कि हेदेवताओ तुमको विदित है जैसे कि त्वष्टा देवता के
तेजसे सृष्टि और भयकारी ज्ञानियों से भी कठिनता पूर्व्वक हटाने
के योग्य बड़ी पराक्रमी यह कृत्या है ६१ मुझको सब देवताओं
की सहायता अवश्य करनी उचित है हे इन्द्र मेरे शरीरसे उत्पन्न
बड़े प्रकाशमान इस कवच को ले हे देवेन्द्र चित्त से कहेहुये इस
मंत्रके साथशरीर में धारण करके जाओ ६२ द्रोणाचार्य्य बोले
कि बरदाता शिवजीने यहकह कर उस कवच और मन्त्र को दिया
उस कवचसे रक्षित वह इन्द्र वृत्रासुरकी सेनापरआया ६३ बड़ेयुद्ध
में छोड़ेहुये नाना प्रकार के शस्त्रोंके समूहोंसे उस कवचका तोड़ना
असंभवथा६४इसकेपीछे इन्द्रनेआपही युद्धमें वृत्रासुरकोमारा और
मंत्ररूपजोड़ बन्दवाले उस कवचको अंगिरा ऋषिको दिया६५और
अंगिराने बड़े मंत्रज्ञ अपनेपुत्र वृहस्पतिजीको सिखाया और वृह-
स्पतिजीने महात्मा अग्निवेश्य ऋषिको शिक्षाकरी ६६ हे राजा
ओंमेंश्रेष्ठ फिर अग्नि वेश्यने मुझकोदिया अब उस मंत्रसे तेरेकवच
कोतेरे शरीरकी रक्षाके निमित्त बांधताहूं ६७ संजयबोले आचार्य्यों
में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने इस प्रकार कहकर आप के बड़े तेजस्वी पुत्र
से बड़ेधीरे पनेसे फिर यह बचनकहा६८कि हे भरतबंशी तेरेकवच
को मैं ब्रह्मसूत्रसे ऐसेबांधताहूं जैसेकि पूर्व्वसमयमें ब्रह्माजीने युद्ध
में बिष्णुके शरीरमें बांधाथा ६९ और जिस प्रकार तारा से संबंध
रखनेवाले युद्धमें ब्रह्माजीने इन्द्रके दिव्य कवचको बांधा था उसी
प्रकार मैं इस कवचको तेरे बांधताहूं ७० द्रोणाचार्य्य ब्राह्मणने
मंत्रकेद्वारा बिधिपूर्व्वक उस कवचको बांधकर राजाको बड़ेयुद्धमें
लड़नेके निमित्त भेजा ७१ महात्मा आचार्य्यसे कवच धारण किये
हुयेवह महाबाहु प्रहार करनेवालेत्रिगर्त देशियों के हजार रथ७२
व बलसे मतवाले हजार हाथी और नियुत संख्यावाले घोड़े और
अन्य२ महा रथियोंसमेत महाबाहु दुर्य्योधन अनेक प्रकारके बाजों
के शब्दों समेत अर्जुनकेरथकेपास ऐसेगया जैसे कि बिरोचनकापुत्र

बलि इन्द्रकेपास गयाथा ७४ हेभरतबंशोइसकेपीछेबड़ेगंभीरसमुद्र में जातेहुये कौरवको देखकरआपकीसेनाओंकेबड़े शब्दहुये ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पच्चानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्धमें अर्जुन औरश्रीकृष्णजीके प्रवेश करने पर और पीछेकी ओर से पुरुषोत्तम दुर्य्योधन के जानेपर १ पांडवलोग सोमको समेत तीव्रता पूर्व्वक बड़े शब्दको करते हुये द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गये और युद्धजारी हुआ २ व्यूह के आगे पांडवों और कौरवोंका वह युद्ध अपूर्व कठिन और रोमहर्षण करने वालाहुआ ३ वैसायुद्ध हमनेकभी न देखाथा न सुनाथा जैसा कि वह मध्याह्नके समय हुआ ४ प्रहार करने वालो अलंकृत सेना वाले उन सब पांडवोंने जिन में मुख्य धृष्टद्युम्न था बाणों की बर्षा से द्रोणाचार्य्य की सेना को ढकदिया ५ हमसबलोग शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको आगेकरके बाणोंसे उनपांडवों के ऊपर जिनमें कि प्रधान धृष्टद्युम्नथा बर्षाकरनेलगे ६ जैसे कि हिमऋतुके अन्तमें बायुसे युक्तबड़े बादलोंकी शोभाहोती है उसीप्रकार सुन्दर रथोंसे अलंकृत दोनोंसेना शोभायमानहुईं ७ फिर उन दोनों बड़ीसेनाओं ने भिड़कर ऐसा बड़ा वेगकिया जैसेकि बर्षाऋतुमें बहुत जलरखने वालीगंगा और जमनादोनोंनदी परस्पर करतीहैं ८ नाना प्रकारां के शस्त्ररूपवायु आगेरखनेवाला हाथी घोड़े और रथसेसंयुक्त गदा रूपीबिजलीसे महाभयानक युद्धरूपी बड़ा बादल ९ द्रोणाचार्य्य रूपी बायुसे उठायाहुआ बाणरूपी हजारोंधाराओंका रखनेवाला पांडवीय सेनारूपी अग्नि से घायल बड़ी सेनारूपी बादल बर्षा करने लगा १० जैसे कि बर्षाऋतु में भयकारी प्रवेश करनेवाला बड़ाबायुका वेगसमुद्र को व्याकुल करता है उसी प्रकार द्रोणाचार्य्य ने पांडवों की सेना को छिन्नभिन्न करदिया ११ और वह सब भी उपायोंको करतेहुये द्रोणाचार्य्यके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि

अत्यन्तपराक्रमी जलका समूह बड़ेपुलके तोड़नेको इच्छासे जाता है १२ द्रोणाचार्य्यने उन युद्धमें क्रोधरूप पांडव और पांचालों को केकयोंसमेत ऐसेरोका जैसे कि जल के समूहोंको पर्व्वत रोकता है १३ उसके पीछेबड़े पराक्रमी शूर बीर अन्यराजाओं ने घेरकर पांचालको रोका १४ तबसेनाके पराजय करनेके अभिलाषीनरोत्तम धृष्टद्युम्नने पांडवों के साथ होकर युद्ध में द्रोणाचार्य्यको घायल किया १५ जैसे कि धृष्टद्युम्न और द्रोणाचार्य्य ने बाणोंको बर्षाको किया उसको सुनों कि १६ खड्ग रूपी बायुआगे करनेवाले शक्ति प्रास दुधारे खड्गों से युक्त प्रत्यंचा रूप बिद्युत शब्द कहने वाला धृष्टद्युम्न रूपबादल १७ सब दिशाओं से बाण धाररूप पाषाणों की वृष्टि को उत्पन्न करता उत्तम रथ घोड़ोंके समूहों को मारता सेनाको छिन्न भिन्न करने वालाहुआ १८ द्रोणाचार्य्य ने पांडवोंके जिस २ रथों के समूहों को बाणों से घायल किया उसी २ ओर से धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य्य कोबाणों से हटाया १९ हे भरत बंशी इस रीतिसे उपाय करने वाले द्रोणाचार्य्य की सेना धृष्टद्युम्न को पाकर तीन ओर से छिन्नभिन्न होकर पृथक् २ होगई २० कोईतो कृतबर्मा के पास चले गये कोई राजा जलसन्ध के समीप जाकर शरण हुये और बहुत से पांडवों से घायल होकर द्रोणाचार्य्यही के शरण में गये २१ रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य सेनाओं को पृथक् २ करते थे और महा रथी धृष्टद्युम्नभी उनकी उन सेनाओं को छिन्नभिन्न करताथा २२ उस दशा वाले आपकेपुत्रों पांडव और सृञ्जयोंसे ऐसे घायल होतेथे जैसे कि रक्षकों से जुदा हुआ पशुओं का समूह बनमें बहुतसे मांसाहारी जीवोंसे व्याकुल होताहै २३ उस कठिन युद्धमें मनुष्यों ने धृष्टद्युम्न के हाथसे अचेतहुये शूरबीरोंको कालका निगलाहुआ माना२४जैसे किअन्यायी राजाका देशदुर्भिक्ष व रोगोपद्रव में अथवा चोरों से दुखी होकर भागताहै उसी प्रकार आपकी सेना पांडवों के हाथसे आपत्तिमें फंसीहुई व्याकुल हुई २५ सूर्य्यकी किरणों से युक्त शस्त्र और कवचोंमें और उसीप्रकार सेना की धूलसे

घायल हुये नेत्रों में २६सेनाओं के शिरोंके खंड २ होने वा पांडवों के हाथ से मारे जाने पर क्रोध युक्तद्रोणाचार्य्यने बाणोंसेपांचालों को पृथक् २ कर दिया २७ उन सेनाओंके मर्दन करते बाणों से भी मारते हुये द्रोणाचार्य्य का रूप कालाग्नि के समान प्रकाश मान हुआ २८ हे राजा उस महा रथीने युद्धमें एक एक बाण से रथ हाथी घोड़े और पतियों को भी घायल किया २९ हे भरत वंशी प्रभु धृतराष्ट्र पांडवोंकी सेनाओं में कोई ऐसा नहीं था जिसने युद्धमें द्रोणाचार्य्य के धनुषसे गिरे हुये बाणों को सहलियाहो ३० हे राजा द्रोणाचार्य्य के बाणों से व्याकुल सूर्य्यसे संतप्त हुये के समान धृष्टद्युम्नकी वह सेना जहां तहांघूमी ३१ उसी प्रकार धृष्टद्युम्नके हाथ से छिन्न भिन्न आपकीभी सेनासबओरसे ऐसीअग्निके समानप्रज्वलितहुई जैसे कि अग्निसे सूखाहुआ बनज्वलितहोताहै ३२ द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नके बाणोंसे सेनाओं के पीड़ामानहोन पर सबओरको मुख रखनेवाले संपूर्ण बीरप्राणों को त्याग करके बड़े पराक्रम से लड़ते थे ३३ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ आपके और पांडवों के शूर बीरोंमें ऐसा कोईनहींहुआ जिसनेभयसेयुद्धको त्याग कियाहो ३४ बिबिंशति चित्रसेन और महारथी बिकर्ण सगेभाइयों ने कुन्तीके पुत्र भीमसेनको चारों ओरसे घेरा ३५ आपके पुत्रोंके पीछे चलनेवाले यहआगे लिखे हुये बीरथे बिन्द, अनबिन्द, अवन्तिदेशका राजा, और पराक्रमी क्षेम धूर्त्ति ३६ महा रथी तेजस्वी कुलवान राजा बाल्हीकने सेना और मंत्रियोंके साथ द्रौपदी के पुत्रों को रोक कर ३७ हजारोंशूरबीरों के सहित राजा शैब्य गोवासन काशीके राजाके पुत्र पराक्रमी अभिभुवको रोका ३८ मद्रदेशाधिपति राजा शल्यने अग्निके समान प्रकाश मान अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको घेर लिया ३९ क्रोध युक्त असहन शील शूर दुश्शासन अपनी सेनाको नियतकरकेयुद्धके बीच रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी के सन्मुख गया ४० अपनीसेनासे अलंकृत इसने कवच धारी अपने चारसौ बड़े धनुष धारियोंसमेत चेकितानको रोका ४१ फिरशकनी

ने धनुष शक्ति और खड्गहाथमें रखने वाले सात सौ गान्धार देशो सेनाके साथ जाकर माद्रीके पुत्र को रोका ४२ मित्रकेअर्थ शस्त्रों के उठाने वाले बड़े धनुषधारी अवन्तिदेशों के राजा बिन्द अनु बिन्द प्राणों को त्याग करकेमत्स्य देशकेराजा विराटके सन्मुखगये ४३ सावधान बाल्हीकने द्रुपदके पुत्र अजेयपराक्रमी और रोकने वाले शिखण्डीको रोका४४ फिर युद्धमें निर्दयप्रभद्रक औरसौवीर केसाथ राजा अवन्तीने राजा द्रुपदके पुत्रक्रोधरूप धृष्टद्युम्नको रोका ४५ अलायुधनाम राक्षस युद्धमें आतेहुयेक्रोधसे निर्दयकर्मी शूरघटोत्कच राक्षसके सन्मुख शीघ्रतासेगया ४६ बड़ीसेनासेयुक्तमहारथी कुन्त भोजने राक्षसोंके राजा क्रोध रूप अलंबुष को रोका ४७ हे भरत बंशी बड़े धनुष धारी कृपाचार्य्य आदिक रथियों से रक्षित जयद्रथ सब सेनाके पीछे था ४८ उस जयद्रथके चक्र के रक्षक दो बड़े बीर हुये दाहिनीओर अश्वत्थमा और बाईं ओरकर्णथा ४९ और उसके पृष्ठ रक्षक कृपाचार्य्य,वृषसेन, शल, शल्य औरदुर्जय हुये जिनका कि अग्रगामी सोमदत्तथा ५० नीतिज्ञ बड़े धनुषधारी युद्ध में कुशल वह सबइसरीतिसे जयद्रथकी रक्षाकरके उसकेपीछे युद्ध करने वाले हुये ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिपंचनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छियानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा जैसे कि कौरव और पांडवोंका वह अपूर्व युद्ध जारी हुआ उसकोसुनो कि पांडवलोग१द्रोणाचार्य्यकोसेना को पराजय करनेके अभिलाषी युद्धमें व्यूहके मुखपर नियतहोकर द्रोणाचार्य्य से युद्ध करनेलगे २ तब बड़े यशको चाहते और अपने व्यूह को रक्षित करते हुये द्रोणाचार्य्य ने भी सेना के मनुष्यों को साथ लेकर पांडवों से युद्ध किया ३ आप के पुत्र का हित चाहने वाले अत्यन्त क्रोध युक्त अवन्ति देशों के राजा बिन्द अनुबिन्द ने दशबाणों से विराट राजा को घायल किया ४ हे महाराज

बिराट ने पराक्रम करके उन युद्धमें नियत पराक्रमी दोनों राजाओं से उनके साथियों समेत युद्ध किया ५ उन्हों को लड़ाई भी महा कठिन रुधिर रूप जल रखने वाली ऐसीहुई जैसे कि बनके मध्यमें सिंहका युद्ध दो मतवाले उत्तम हाथियों से होताहै ६ बड़े पराक्रमी राजा द्रुपद ने मर्म और अस्थियोंके छेदनेवाले भयकारी तीक्ष्ण बिशिख नाम बाणों से उस युद्ध में बेगवान बाल्हीक को घायल किया ७ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त बाल्हीक ने सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार झुकी गांठवाले नौ बाणों से द्रुपदको घायल किया ८ वह युद्ध भय कारी बाण शक्तियों से व्याकुल भय भीतों के भय को उत्पन्न करनेवाला और शूर बीरों की प्रसन्नता का बढ़ाने वाल हुआ ९ वहां उन्होंके छोड़े हुये बाणोंसे पृथ्वी औरआकाशका मध्य और सब दिशा व्याप्तहोगईं कुछ भी नहीं जाना गया १० सेना समेत शैव्य गोवासनने युद्धमेंकाशी के राजाकेपुत्र महारथीसे ऐसा युद्ध किया जैसे कि हाथी हाथीके साथ युद्ध करताहै ११ अत्यन्त क्रोध युक्त राजा बाल्हीक युद्धमें द्रौपदी के पुत्र महा रथियों से लड़ता हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन पांचों ज्ञानेन्द्रियों के साथ लड़ताहै १२ हेदेहधारियोंमें श्रेष्ठवह चारों ओरसे बाणोंकेसमूहों से ऐसे अत्यन्त युद्धकरतेहुये जैसे कि इन्द्रियोंके बिषय सदैव शरीरसे युद्धको करतेहैं १३ आपके पुत्रदुश्शासनने युद्ध में तीक्ष्ण और झुकी गांठवाले नौ शायकोंसे वृष्णिबंशी सात्यकी को घायल किया १४ पराक्रमी बड़े बाणप्रहारी धनुषधारी से अत्यन्त घायल उस सत्य पराक्रमी सात्यकीनेशीघ्रही कुछमूर्च्छा कोपाया १५ फिर चैतन्य हुयेसात्यकीने शीघ्रही कंकपक्षसे जटित दश शायकोंसे आप केमहारथी पुत्रको पीड़ामान किया १६ हेराजा वह दोनों परस्पर कठिन घायल और बाणोंसे पीड़ामानयुद्धमें ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि फूलेहुये किन्शुकके वृक्ष होते हैं १७ कुन्तभोजके बाणों से पीड़ामान अत्यन्त अलंबुष बड़ोशोभासे ऐसा शोभित हुआ जैसे कि फूलोंसे लदाहुआ किंशुकका वृक्षहोताहै १८ इसके पीछे आप को

सेनाके मुखपर नियत अलंबुष राक्षस बहुत से लोहमयी बाणों से कुन्तभोजको घायलकरके भयकारी शब्दसेगर्जा १६ उस समय परस्पर युद्धमें लड़तेहुये वह दोनों शूर सबसेनाओं को ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्र और जंभबर्त्तमान थे २० हेभरत बंशी माद्रीकेदोनों क्रोध युक्त पुत्रोंने बाणोंसे युद्धमें क्रोधयुक्त शत्रुता करनेवालेशकुनीको अत्यन्त पीड़ामान किया २१हेराजा तुझसेअधिकता उत्पन्न और कर्णसे अच्छी वृद्धिपायाहुआ मनुष्योंका नाशक रनेवाले कठिन युद्धजारीहुआ २२अर्थात् यहक्रोधसे उत्पन्न अग्नि आपके पुत्रोंसे रक्षितहोकर इससब पृथ्वीके भस्म करनेको तैयार हुआहै २३ वह शकुनी पांडव नकुल और सहदेवके बाणोंसे मुखकोफेरगया और ऐसाव्याकुल हुआ कि उसने युद्धमें करनेके योग्य कर्म और कुछभी पराक्रमको नहीं करनाजाना २४ माद्रीके महारथी दोनोंपुत्र इसको मुख फिराहुआ देखकर फिर ऐसे बाणोंकीवर्षा करने लगे जैसे कि दो बादल बड़े पहाड़ पर बर्षा करतेहैं २५ वह गुप्त ग्रन्थी वाले बाणोंसे अत्यन्त घायल शकुनी शीघ्रगामीघोड़ोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलागया २६ इसी प्रकार घटोत्कच साधारण तीव्रतासे युक्तहोकर उसयुद्धमें वेगवान शूरबीर अलायुध राक्षसके सम्मुख गया २७ हेमहाराज उन दोनोंका युद्धऐसा अपूर्व रूपकाहुआ जैसेकि पूर्व्व समयमें रामरावणका युद्ध हुआथा २८ इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने युद्धमें राजाशल्यको पचास बाणों से वेधकरफिर सातबाणोंसेबेधा २६उनदोनोंका युद्ध भी ऐसा अपूर्व जारीहुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें इन्द्र और सम्बर दैत्यका भयकारी और अपूर्व्व हुआथा ३१ बड़ी सेनासे युक्त आप के पुत्र विविंशति चित्रसेन से और बिकर्ण ने भीमसेन से युद्धकिया ३१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिषण्णवतितमोऽध्यायः ६६ ॥

सत्तानबे का अध्याय॥

संजय बोले कि इसप्रकारसे उस रोमहर्षण युद्ध के जारी होने पर पांडव लोग उस तीन खण्डहोनेवाले कौरवोंके सन्मुख गये १ भीमसेन उस महाबाहु जलसन्ध के सन्मुख वर्त्तमान हुआ और सेनासे युक्त राजा युधिष्ठिर युद्धमें कृतवर्मा के सन्मुख हुआ २ हे महाराज सूर्य्य के समान शोभायमान बाणों की वर्षा करताहुआ धृष्टद्युम्न युद्ध में द्रोणाचार्य्य के सन्मुखगया ३ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले परस्पर क्रोधयुक्त कौरव पांडव और अन्य सब धनुष धारियों का युद्ध जारी हुआ ४ फिर बड़े भयकारक उसप्रकार के नाश वर्त्तमान होने और सेनाओंमें निर्भयताकेसमान दोदो के द्वन्द्व युद्ध होनेपर ५ जो पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने पराक्रमी धृष्टद्युम्न के साथयुद्धकरने में बाणोंके समूहोंको छोड़ा वह आश्चर्य्यसाहुआ ६ कमल वनों के समान चारों ओर से नाश होनेलगा द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नने मनुष्यों के शिरोंको बहुत चूर्णकिया७ सेनाओंके मध्यमें चारों ओरसे शूरवीरोंके वस्त्र भूषण शस्त्र ध्वजा कवच और धनुष आदिक फैलगये ८ रुधिरसे लिप्तसुवर्णके कवच ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि भिड़े हुये बादलों के समूह बिजली समेत होते हैं ९ फिर तालवृक्ष के समानधनुषोंको खैंचते दूसरे महारथियोंने हाथी घोड़ेऔरमनुष्योंको गिराया१० उस युद्धमें महात्माशूरोंकीतलवार, ढाल, धनुष, शिर, कवच पृथ्वीपर फैल गये ११ और चारोंओर से उठे हुये अगणित धड़भी युद्ध में दिखाईपड़े १२ हे श्रेष्ठ उस युद्धमें मांसभक्षी गिद्ध कङ्क बगले बाज काक और शृगाल भी बहुत से देखने में आये १३ मांसोंको खातेरुधिरको पीते और बहुतप्रकार से बालोंसमेत शिरोंको उखाड़तेथे १४ इसीप्रकार जहांतहां मनुष्य घोड़े और हाथियोंके भी शिरोंको शरीरों के अवयवों समेत खैंचते दिखाईदिये १५ तब वहलोग युद्ध में विजय को चाहते बारंबार युद्धोंको करनेलगे जोकि अस्त्रोंकेज्ञाता युद्धकी दीक्षासे दीक्षितहोकर

युद्धकरनेमें प्रशंसनीयथे १६ सेनाके बहुतसेमनुष्य युद्धमें तलवारों के अनेक पैंतड़ोंसे मार्गोंमें घूमे और बहुतसे मनुष्य दुधारे खड्ग, शक्ति, प्रास, शूल, तोमर, पट्टिश, गदा, परिघ आदि अनेकप्रकार के शस्त्र और भुजाओंसे भी परस्पर प्रहार करतेहुये क्रोध में भरे युद्धभूमि में बर्त्तमानथे १८ रथी रथियोंके साथ और पदाती पदातियोंके साथ युद्ध करनेवाले हुये १९ मदोन्मत्तों के समान मतवाले युद्धभूमिमें बर्त्तमान बहुतसे हाथी परस्पर पुकारे और एकने दूसरेको मारा २० हे राजा उसप्रकार के बेमर्यादयुद्धके वर्त्तमान होनेपर धृष्टद्युम्नने अपने घोड़ोंको द्रोणाचार्य्य के घोड़ों से मिला दिया २१ वह बायुके समान शीघ्रगामी श्वेतकपोतबर्ण युद्धमेंमिले हुये घोड़े अत्यन्तशोभायमान हुये २२ अर्थात् वह मिलेहुये कपोत बर्ण लालरंग घोड़े ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बिजली समेत बादल शोभायमान होतेहैं २३ हे भरतबंशी बीर धृष्टद्युम्नने समीप में बर्त्तमान द्रोणाचार्य्यको देखकर धनुषको छोड़ ढाल तलवारको लिया २४ कठिन कर्मको करना चाहता शत्रुओंके बीरों का मारने वाला धृष्टद्युम्न ईर्षासे दौड़कर द्रोणाचार्य्य के रथपर पहुंचा २५ और युगके मध्य युगके बन्धनोंमें जाकर बड़ीधृष्टतासे घोड़ोंकेमध्य में प्रहारकिया फिर सेना के मनुष्यों ने उसके उस कर्म की प्रशंसा करी २६ द्रोणाचार्य्य ने लाल घोड़ोंके समीप बर्त्तमान खड्गसमेत घूमते हुये उस धृष्टद्युम्न का कोईछिद्र नहीं देखा वह आश्चर्य्य सा हुआ २७ जैसे कि बनके बीचमें मांस के अभिलाषी बाज का गिरना होताहै उसीप्रकार उस द्रोणाचार्य्यके मारनेके अभिलाषी धृष्टद्युम्नका उनकेपास जानाहुआ २८ इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने धृष्टद्युम्नकी उस ढालको जो कि सौ चन्द्रमा रखनेवाली थी अपने सौ बाणोंसे गिराया और दशबाणों से उसके खड्गको तोड़ा २९ इसी प्रकार पराक्रमीने चौंसठ बाणोंसे घोड़ोंको मारा और भल्लों से ध्वजा छत्र और पीछेबैठेहुये सारथी कोभी गिराया ३० फिर शीघ्रता करनेवालेने जीवनके नाश करनेवाले कानतक खैंचेहुये दूसरे बाण

को ऐसे छोड़ा जैसे कि बज्रधारी इन्द्र अपने बज्रको छोड़ता है ३१ तब सात्यकीने उसको चौदह तीक्ष्ण बाणोंसे काटा और आचार्य्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य की आधीनतामें बर्त्तमान होजानेवाले धृष्टद्युम्नकोछुड़ाया ३२ हे श्रेष्ठ जैसे कि सिंहसे निगलाहुआमृग होताहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्यसे आधीन कियेहुये धृष्टद्युम्नको शिनी के पौत्रोंमेंश्रेष्ठ सात्यकीने छुटाया ३३ शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य्यने रक्षाकरनेवाले सात्यकी को और धृष्टद्युम्नको देखकर बड़ेयुद्ध में छब्बीस बाणोंसे घायल किया ३४ उसकेपीछे शिनीके पौत्रने सृञ्जयोंके निगलनेवाले द्रोणाचार्य्यको छब्बीसही बाणोंसे छातीके मध्यमें घायलकिया ३५ फिर धृष्टद्युम्नकी विजयचाहनेवाले पांचाल देशी सबरथीभी उसीसमय जब कि द्रोणाचार्य्य सात्यकीके सन्मुख गये धृष्टद्युम्नको दूरलेगये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७ ॥

अट्ठानबेका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय उस वृष्णियोंमें बड़ेबीर सात्यकी के हाथसे उस बाण के टूटजाने और धृष्टद्युम्न के छूटजाने पर १ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने युद्धमें नरोत्तम सात्यकी के ऊपर क्या किया संजयबोले कि अत्यन्त शीघ्रगामी क्रोधरूप बिष रखनेवाले धनुषरूप अत्यन्न भोजन करनेवाले मुख तीक्ष्णधार बाणरूप दांत चांदीके नाराचरूपडाढ़ रखनेवाले ३ क्रोध और अशांती से लाल नेत्र बड़े सर्प के समान श्वासा लेनेवाले नरोंमें बीरअत्यन्त प्रसन्न द्रोणाचार्य्यउनबड़े शीघ्रगामी लालघोड़ों की सवारीसे ४ जो कि आकाशको उछलते और पहाड़ोंको उल्लंघन करते विदित होतेथे सुनहरी पुंखवाले बाणों को चलातेसात्यकी के सन्मुख गये ५ गिरतेहुये बाणरूप बर्षावाले रथके शब्दरूप बादल रखनेवाले धनुषके आकर्षण रूप चेष्टाकरनेवाले बहुत नाराच रूप बिजली वाले ६ शक्ति और खड्ग रूप

बिजली रखनेवाले क्रोधकी तीव्रतासे उठेहुये घोड़ेरूपवायुसेचलाय-
मान हटाने के अयोग्य उस द्रोणाचार्य्य रूप सन्मुख आनेवाले
बादलको ७ देखकर शूरबीर शत्रु पुरंजय युद्धदुर्मद सात्यकी हँसकर
सारथीसेबोला८हे सूतअत्यन्त प्रसन्नचित्तके समान तूबड़ेशीघ्रगामी
घोड़ोंकेद्वारा इस राजकुमारोंके आचार्य्य सदैवशूरों के प्रधानराजा
दुर्य्योधन के आश्रयस्थान उसके दुःखशोकोंके दूरकरनेवाले अपने
कर्ममें अद्वितीयशूरबीर ब्राह्मणके सन्मुखचल ९। १० उसके पीछे
चांदीकेसमान श्वेतरंगवायुके समान शीघ्रगामी सात्यकी के उत्तम
घोड़ेशीघ्रही द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ११ तदनन्तर उनदोनोंशत्रु-
ओंकेसंतापी द्रोणाचार्य्य और सात्यकीने युद्धकिया और हजारों
बाणोंसे परस्परमें घायलकिया १२ दोनोंपुरुषोत्तम बीरोंने आकाश
बाणोंके जालोंसे पूर्ण करदिया और दशों दिशाओंकोभी बाणोंसे
भरदिया १३ जैसे कि बर्षाऋतुमें दोबादल अपनी जलधाराओं से
बर्षाकरतेहैं उसीप्रकार उनदोनोंने परस्परमें बर्षाकरी उससमय न
सूर्य्यदिखाई पड़े न बायुचली १४ तब बाणोंके जाल से ढकाहुआ
महाभयकारीअन्धकार दूसरे शूरोंका पराजय करनेवाला चारोंओर
सेहुआ १५ उससमय शीघ्रता पूर्व्वक अस्त्रचलाने में उन दोनों
द्रोणाचार्य्य और सात्यकीके बाणोंसे लोकके अप्रकाशित होनेपर
उनदोनों १६ नरोत्तमोंके बाणोंकीबर्षाओंका अन्तर नहीं देखने में
आया बाणोंके गिरनेसे ऐसेशब्दसुनेगये जैसे कि जलधाराओंके आ-
घातसेउत्पन्न शब्दोंके होतेहैं १७अथवा जैसे इन्द्रके छोड़ेहुयेबज्रोंके
शब्द होतेहैं नाराचोंसे अत्यन्त छिदेहुयेउनदोनों शूरोंका रूप ऐसा
शोभायमानहुआ १८हे भरतवंशी जिसप्रकार बड़ेबिषैले सर्पोंकारूप
होजाताहै युद्धमें उनदोनों मतवालोंकी प्रत्यंचाओंके ऐसे शब्दसुने
गये १९जैसे कि बारंबार बज्रसेघात कियेहुये पर्व्वतोंके शिखरों के
शब्दहोतेहैं हे राजा उनदोनोंके वह दोनोंरथ घोड़े औरसारथी २०
सुनहरी पुंखवाले बाणों से ताड़ित अपूर्व्व रूप के प्रकाशमान हुये
और स्वच्छ सीधे चलनेवाले २१ कांचलीसे छुटेहुये सर्पोंके समान

नाराचोंका गिरनाभी बड़ा भयकारी हुआ उनदोनोंके छत्रों समेत ध्वजा भी गिरपड़ीं २२ दोनों के शरीर रुधिरमेंलिप्तहुये और अंगों से रुधिर को डालते दो मतवाले हाथियोंके समान २३ जीवन के नाशकारक बाणोंसे परस्पर घायलहुये हे महाराज गर्जने पुकारने और शंख दुन्दुभी आदिके बाजे बन्द हुये किसी ने वार्त्तालाप भी नहीं की सब सेना चुपहोगई शूरोंने युद्ध करना बन्द करदिया २५ जिन मनुष्यों को अपूर्व्वता के देखने का उत्साह उत्पन्न हुआ उन रथ सवार हाथीके सवार अश्व सवार और पदातियों ने उनदोनों केद्वैरथयुद्धको देखा२६ दोनों नरोत्तमोंको घेरकरके अचलनेत्रोंसे सब देखने लगे हाथियों की सेना नियत होगई औरघोड़ोंकी भी सेना ठहरगई मोती मूंगों से जटित मणि सुवर्णादि से अलंकृत २८ ध्वजाभूषण और अपूर्व्व स्वर्णमयो कवच अपूर्व्वपताका परस्तोम सूक्ष्म कंबल २९ स्वच्छ तीक्ष्णशस्त्र घोड़ोंकेमस्तकपर शोभायमान सुवर्ण भूषण मूर्द्धा और हाथियों के कुंभ और दांतोंमें लिपटी हुई मालाओं से वह सेना बादलोंकी पंक्तिके समान ऐसीदिखाई पड़ी जैसे कि वर्षाऋतुमें बलाक पटबीजने इन्द्रधनुष और बिजलीसमेत बादल होंय हमारे शूरवीर औरपांडवोंके वह शूरवीर तमाशा देखने को नियत हुये ३१। ३२ महात्मा द्रोणाचार्य्य और सात्यकी के उस युद्धको बिमानों में बैठे देवताओं ने जिनमें मुख्य अग्रगामी ब्रह्माजी और सोम देवताथे देखा ३३ सिद्ध चारणों के समूह और बिद्याधर गंधर्व और बड़े२ सर्पों ने उन दोनों पुरुषोत्तमोंकी नाना-प्रकार की गतियां अथवा लौट२ कर प्रहरोंका करना और अस्त्रोंके अपूर्व्व घातोंसे आश्चर्य्यको पाया अस्त्रोंमें अपनी २ हस्तलाघवता कोदिखलाते उनदोनों महाबली ३४।३५ द्रोणाचार्य्य औरसात्यकी ने बाणों से परस्परमें घायल किया इसके अनन्तर सात्यकीने बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य के बाणों को युद्ध में काटा ३६ और अत्यन्त दृढ़ बाणोंसे शीघ्रही धनुषकोभीकाटा भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने पल-मात्रमेंही दूसरे धनुषको ३७ तैयार किया सात्यकीने उनके उस

धनुषको भी काटा इसके पीछे जल्दी करनेवाले हाथमें धनुष लेकर नियत हुये ३८ इसीप्रकार जो २ धनुष तैयार करतेथे उस २ को वह काटता हुआ सौधनुषोंका काटनेवाला हुआ धनुष चढ़ाने और काटनेमें भी उनदोनोंका अन्तर नहीं देखा ३९ हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने प्रत्येक युद्धमें इससात्यकीके बुद्धिसे बाहर कर्म को देखकर चित्तसे यह चिन्ताकरी किजो यह अस्त्रबल परशुरामजी कार्त्तिवीर्य्य अर्जुन और पुरुषोत्तम भीष्ममेंहै वही अस्त्रबल यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी में है द्रोणाचार्य्यने उसके उस पराक्रम को चित्त से स्तूयमान किया अर्थात् प्रशंसाकरी ४१ अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ ब्राह्मणों में उत्तम द्रोणाचार्य्यजी इन्द्रके समान उसकी हस्तलाघवता को देखकर प्रसन्न हुये और इसीप्रकार इन्द्र समेत सब देवताभी प्रसन्नहुये ४२ हे राजा देवता और गन्धर्वों ने उस शीघ्रकर्मी युद्ध के करनेवाले सात्यकी की उस हस्त लाघवताको नहीं देखा ४३ सिद्ध चारणों के समूहों ने द्रोणाचार्य्यके उस कर्म को नहीं जाना इसके पीछे क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले महा अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्य ने दूसरे धनुष को लेकर ४४ अस्त्रों से युद्ध किया हे भरतवंशी सात्यकी ने उनके अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंकी मायाओं से दूर करके ४५ तीक्ष्ण बाणों से घायल किया वह भी आश्चर्य्यसाहुआ युद्धमें असादृश्य बुद्धिसेबाहर उसके कर्मकोदेखकर ४६ योग अर्थात् भिड़ जानेकेज्ञाता आपके शूरवीरों ने योगसे संयुक्तहोनेवाले उसकर्मको प्रशंसा करी द्रोणाचार्य्यजी जिस २ अस्त्रकोचलातेथे उसी उसीको सात्यकी भी चलाताथा ४७ फिर शत्रुओंके संतप्त करनेवाले निर्भय आचार्य्य ने उससे युद्ध किया हे महाराज धनुर्वेद में पूर्ण क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य ने ४८ सात्यकी के मारने के लिये दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया उस बड़े धनुषधारीने उस शत्रुके मारनेवाले बड़े भयकारी आग्नेय अस्त्रको देखकर ४९ दिव्य वारुणास्त्रकाप्रयोग किया उन दिव्य अस्त्रधारियों को देखकर बड़ा हाहाकारहुआ ५० तब आकाश में रहनेवाले जीवधारी भी आकाशके मध्यमें नहीं चले

उन दोनोंकरके बाणपर नियत किये हुये वारुणास्त्र और अग्न्यास्त्र जबतक परस्परनहीं भिड़ेथे कि सूर्य्य मध्याह्नसे आगेको बढ़े उसके पीछे पांडव और युधिष्ठिर भीमसेन ५२ नकुल सहदेव और विराटने धृष्टद्युम्न आदिक केकयों समेत सात्यकी को चारों ओर से रक्षित किया ५३ मत्स्य और शाल्वेय नाम सेना शीघ्रता से द्रोणाचार्य्य के पास आई और हजारों राजकुमार दुश्शासन को आगे करके ५४ शत्रुओं से घिरेहुये द्रोणाचार्य्यके पास बर्त्तमानहुये हे राजा इसके पीछे उन्होंके औरआपके धनुषधारियों केयुद्धहुये ५५ धूलके गुब्बारों से संसार के गुप्तहोने और बाणों के जालोंसेढक जाने पर सब संसार महाव्यकुल हुआ कुछ नहींजानागया दोनों सेना धूलसे गुप्त होगईं और अमर्य्यादगी बर्त्तमान हुई ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिअष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

निन्नानवे का अध्याय॥

संजय बोले वहां अस्ताचलके शिखरपर सूर्य्यके अधिक बर्त्तमान होने और धूलसे संयुक्त होकर सूर्य्यके न्यून प्रकाश होने पर १ युद्ध करने में नियत शूरबीर फिर लौटनेवाले अथवा पृथक् होनेवाले और विजय करनेवालों का वह दिन धीरेपनेसे गया २ इसप्रकार उन विजयाभिलाषी सेनाओं के भिड़ने पर अर्जुन और बासुदेवजी जयद्रथके मारने के निमित्तचले३ वहां अर्जुन ने तीक्ष्ण बाणों से रथके जाने के योग्य मार्ग को किया उसी मार्गसे श्रीकृष्णजीचले ४ हे राजा जहां जहां महात्मा पांडव अर्जुन का रथ जाता था वहां वहांसे आपकी सेना छिन्न भिन्नहोकर पृथकहुई ५ फिर उत्तम मध्यम निकृष्ट मंडलों को दिखलातेपराक्रमी श्रीकृष्ण जीने रथकीसुशिक्षितताको दिखलाया ६ फिर जिनपर नाम मुद्रित था और नोकपर सूक्ष्म चर्म लगा हुआथा वह पीत रंग कालाग्नि के स्वरूप सुन्दर पर्व्ववाले बड़ी दूर पहुंचने वाले ७ भयकारी लोहेके नानाप्रकारकेबाण शत्रुओं के शरीरोंमेंलगते युद्धमें पक्षियों

समेत जीवोंके रुधिरको पीनेवालेहुये ८ रथमें बैठाहुआ अर्जुन आगे से जिनबाणोंको एककोश परसे चलाताथा उसके वह बाण उससमय पर शत्रुओंको मारतेथे जब कि उसका रथ एक कोश भर मार्ग,को उल्लंघन करजाताथा ९ तब श्रीकृष्णजी संपूर्ण जगत्को आश्चर्य्य युक्त करते गरुड़ और वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम पुरुषोंके सवार करनेवाले घोड़ोंके द्वारा चलादिये १० हे राजा उसप्रकार का न सूर्य्यका न इन्द्रका न रुद्रका न कुवेर का ११ और पूर्व्वसमय में भी किसीका रथनहीं चला जैसा कि चित्तके अनुसार शीघ्रता से अर्जुनकारथगया१२ हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्र फिरशत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले केशवजीने युद्धमें प्रवेश करके सेनाके मध्यमें शीघ्रता से घोड़ोंको चलायमान किया १३ उसके पीछे उसरथ समूहोंके मध्य कोपाकर क्षुधा तृषासे युक्त उत्तम घोडों ने उस रथको बड़े दुःखसे खैंचा१४ क्योंकि वह घोड़े बडे युद्धकुशल शस्त्र विद्याके ज्ञाता शूरवीरोंके नानाप्रकार के बहुतसे शस्त्रोंसे घायल होकर बारंबार अनेक मंडलोंकोघूमथे १५ और मनुष्यों समेत मृतक घोड़े हाथी और रथियोंकेऊपरसे ऐसे उल्लंघन करनेवाले हुये जैसे कि शलभाओं के हजारोंसमूह सबको उल्लंघन करतेहैं १६ हे राजा इसीअन्तर में दोनों भाई अवन्ती के राजाओं ने सेना समेत थके घोड़ेवाले पांडव अर्जुनसेआकर सन्मुखताकरी १७ उन दोनों प्रसन्नचित्तों ने चौंसठ बाणोंसे अर्जुनको सत्तर बाणोंसे श्रीकृष्णजीको और सैकड़ों बाणोंसे घोड़ोंको घायलकिया १८ हे महाराज क्रोधयुक्त औरमर्मस्थलोंके जाननेवाले अर्जुनने झुकी गांठवाले मर्मभेदी नौबाणोंसे उन दोनोंको युद्धमें घायल किया १९ उसके पीछे उनदोनों क्रोधयुक्तोंने केशवजी समेत अर्जुनको बाणोंके समूहोंसे ढकदिया औरसिंहनाद किये २० श्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुनने युद्धमें दोभल्लोंसे उनदोनोंके जड़ाऊ धनुषोंको काटा और शीघ्रही सुवर्णके समान प्रकाशित दोनोंध्वजाओं कोभीकाटा२१ हे राजा तब अत्यन्त क्रोध युक्त उनदोनोंने दूसरे धनुषोंको लेकर युद्धमें बाणोंसे अर्जुनको

पीड़ामान किया २२ फिर उन दोनोंके बाणों से अत्यन्त क्रोधयुक्त पांडुनन्दन अर्जुनने फिरउनके दोनों धनुषोंकोकाटा २३ और सुनहरी तीक्ष्णधार दूसरेविशिषोंसे शीघ्रही पदातियों समेत घोड़ोंको मारा और दोनोंके सारथियों समेत पृष्ठ रक्षकों कोभी मार गिराया २४ और क्षुरप्रनाम बाणसे बड़ेभाईके शिरको शरीरसे काटा वह मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसेकि वायुसे उखाड़ाहुआ वृक्षगिरताहै २५ फिर प्रतापवान् महाबली अनुबिन्दको मराहुआ देखकर और उसरथको जिसके कि घोड़े मरगयेथे छोड़कर गदाको हाथमें लेकर २६ भाईके मारनेको स्मरणकरता और रथियोंमें श्रेष्ठ महारथी गदासे संयुक्तनर्त्तकके समान युद्धमें सन्मुख बर्त्तमान हुआ २७फिर क्रोधयुक्त अनुबिन्दने गदासे मधुसूदनजीको ललाटपर घायलकरके ऐसे कपित नहींकिया जैसेकि मैनाकपर्व्वतको २८अर्जुनने छःबाणों से उसकी ग्रीवा चरण भुजा और शिरको काटा वह फिर ऐसे खंड२ होकरगिरा जैसे कि पर्व्वतोंका समूह गिरताहै२९हेराजाफिरउनके पीछे चलनेवाले शूरबीर उनदोनोंको मराहुआ देखकर अत्यन्तकोप युक्तसैकड़ोंबाणोंको मारतेहुयेसन्मुख दौड़े ३०हेभरतवंशियोंमें श्रेष्ठ वह अर्जुन शीघ्रही बाणोंसे उनको मारकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि हिमऋतुके अन्तमें बनको भस्म करके अग्नि शोभायमान होताहै ३१ अर्जुन बड़ी कठिनता से उन दोनों की सेनाको उल्लंघन करके ऐसा शोभित हुआ जैसे कि बादलसे पृथक् होकर उदय हुआ सूर्य्यहोताहै ३२ सबकौरव लोग उसको देखकर भयभीतहो गये परन्तु फिरअत्यन्त प्रसन्नहुये और चारोंओरसेअर्जुनके सन्मुख हुये ३३ उसको थकाहुआ देखकर और जयद्रथ को दूर जानकर बड़े सिंहनाद पूर्व्वक सब ओरसे घेर लिया ३४ उनको अत्यन्त क्रोधयुक्त देखकर मन्द मुसकान करता हुआ पुरुषोत्तम अर्जुन बड़े धीरेपने से श्रीकृष्णजी से यह बचन बोला ३५ कि घोड़े बाणों से पीड़ामान और बलसे रहितहैं और जयद्रथ दूरहै यहां शीघ्रता से कौनसा उत्तम कर्म तुमको स्वीकारहै हेश्रीकृष्णजी आप मूलवृत्ता-

न्तकहौ आपही सदैव बड़े ज्ञानी हो यहांपर आपके आज्ञाकारी पांडव शत्रुओं को विजय करेंगे ३७ मेरा जो काम शीघ्रता से करने के योग्यहै आप उसको मुझसे सुनिये हे माधवजी सुखपूर्व्वक घोड़ों को छोड़ो और भल्लों को शरीर से निकालो ३८ अर्जुनके इस बचन को सुनकर श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया कि हे अर्जुन मेरी भी यही रायहै जो तुमने कही ३९ अर्जुन बोले हे केशवजो मैंसब सेनाओंको रोकूंगा आपही यहां शीघ्रता पूर्व्वक न्यायके अनुसार कर्म करो ४० संजय बोले कि वह निर्भय स्थिर चित्त अर्जुन रथके बैठने के स्थान से उतरकर गांडीव धनुष को लेकर पर्व्वत केसमान निश्चल होकर नियत हुआ ४१ बिजयाभिलाषी पुकारतेहुये क्षत्री यही समयहै ऐसा जानकर उस पृथ्वी पर नियत हुये अर्जुन के सन्मुख दौड़े ४२ धनुषोंको खैंचतेशायकों को छोड़ते बहुतसे रथ समूहों समेत उन क्षत्रियों ने उस अकेले को घेर लिया ४३ जैसे कि बादल सूर्य्य को ढकदेताहै उसीप्रकार बाणों से अर्जुनको ढकते क्रोधयुक्त क्षत्रियों ने वहां अपने अपूर्व्व शस्त्रोंको दिखाया ४४बड़े रथी क्षत्री वेगसे उस क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन के सन्मुख ऐसेगये जैसे कि मतबाले हाथी सिंहके सन्मुख होतेहैं ४५ वहां पर अर्जुन की भुजाओं का बड़ा पराक्रम देखने में आया कि उस क्रोधयुक्तने बहुत सी सेनाओं को सब ओर से रोका ४६ अर्थात् उस समर्थने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रोंको सब ओर से रोककर शीघ्रही बहुत बाणों से सबको ढकदिया ४७ हे राजा वहांपर पृथ्वी और आकाशमें बहुत बाणोंकी घिसावट से बड़ी ज्वलित रूप अग्नि उत्पन्न हुई ४८ और जहां तहां रुधिर से भरे हुये श्वासाओं को लेते बड़े धनुषधारी घायल और गर्जते हुये शत्रुओं से दुःखी हुये घोड़े हाथी ४९ और युद्धमें विजय चाहनेवाले क्रोधयुक्त एकस्थान में नियत बहुत से शत्रुओं के बीरों से गर्मी उत्पन्न हुई ५० तब मर्यादरूप अर्जुन ने उस बाणरूपी तरंग ध्वजा रूपी भंवर हाथी रूप ग्राह रखने वाली महादुस्तर पदाती रूप मछलियों से व्याप्त शंख दुन्दुभि-

योंसे शब्दायमान ५१ असंख्य रथ रूपी बड़ी लहरें रखनेवाली और पगड़ी मुख छत्र पताका रूपी फेनों की माला रखनेवाली ५२ हाथियों के अंगरूप शिलाओं से संयुक्त निश्चल रथरूपी समुद्र कोरोका ५३ धृतराष्ट्र बोले कि अर्जुनके पृथ्वीपर बर्त्तमान होने और घोड़ों को हाथसे पकड़नेवाले केशवजी के होनेपर ऐसे समय को पाकर भी अर्जुन कैसे नहीं मारागया ५४ संजय बोले हेराजा पृथ्वीपर नियत अर्जुन से शीघ्रही सब राजा लोग जो कि रथपर नियत थे ऐसे रोकेगये जैसे कि वेद के न जाननेवालोंके बचन रोके जाते हैं ५५ उस अकेले पृथ्वी पर नियत अर्जुनने रथपर चढ़ेहुये सब राजाओं को ऐसे हटाया जैसे कि लोभ सब गुणों को हटा देताहै ५६ उसके पीछे निर्भय महाबाहु श्रीकृष्ण जी युद्ध में उस अपने प्यारे पुरुषोत्तम अर्जुन से यह बचन बोले ५७ हे अर्जुन यहां युद्ध में घोड़ों के जल पीने का जलाशय पूर्ण नहीं है और यह घोड़े पीने के योग्य जलको चाहते हैं स्नान को नहीं चाहते हैं ५८ इस बातके कहतेही अर्जुन ने अस्त्रके द्वारा पृथ्वी को फाड़कर घोड़ों के जलपीने का ऐसा उत्तम शुभदायक जलका सरोवार उत्पन्न किया ५९ जोकि मन्त्र के प्रभाव से हंस कारण्डों से युक्त चक्रवाकों से शोभित बहुत बिस्तृत फूले हुये उत्तम कमल और स्वच्छ जल का रखनेवाला ६० कूर्म मछलियों आदिसे पूर्ण अथाह बड़े२ऋषियोंसे सेवितथा उस एकही क्षण में उत्पन्न हुये सरोवरके देखनेको नारदमुनि भी आपहुंचे ६१ त्वष्टा देवताके समान अपूर्ब कर्म करनेवाले अर्जुन ने वह बाणों का स्थान बनाया जिसमें बाण केही बांस खंभ और बाणोंकाही अद्भुत पटाव था ६२ इसके पीछे महात्मा अर्जुन से उस बाणों के महल बनाये जाने पर गोबिन्द जी अत्यन्त हंसकर बोले कि साधु है साधु है ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकोनशततमोऽध्यायः ९९॥

—*—

सौका अध्याय ॥

संजय बोले कि महात्मा अर्जुन से उस जलाशय के उत्पन्नहोने शत्रुओं की सेना हटाने और बाणमहलके बनानेपर बड़े तेजस्वी बासुदेव जीने १ शीघ्रही रथसे उतरकर बाणों से घायल घोड़ोंको छोड़दिया २ उस अपूर्व दर्शन कर्म को देखकर सिद्ध चारणों के समूहों में और सब सेनाओंमें बहुतसे प्रशंसाओं के बचन प्रकट हुये ३ महारथी लोग उस पदाती युद्ध करनेवाले महारथी अर्जुन के रोकने को समर्थ नहीं हुये यह आश्चर्य्यसा हुआ ४ तब अर्जुन बहुत हाथी घोड़े रखनेवाले रथ समूहोंके सन्मुख आजाने पर भी भयभीत नहीं हुआ वह इसका कर्म सब मनुष्यों से अधिक और अपूर्बथा ५ उन राजाओं ने अर्जुनके ऊपर बाणोंके समूहोंको छोड़ा शत्रुओं के बीरोंका मारनेवाला धर्मात्मा इन्द्रका पुत्र अर्जुन पीड़ा-मान नहीं हुआ ६ उस पराक्रमी अर्जुन ने उन बाणों के जालगदा और प्रासोंको बीचहीमें ऐसेनिगला अर्थात् ऐसेकाटा जैसेकिनदियों को समुद्र काटता है ७ अर्जुनने अस्त्रों के बड़े बेग और ध्वजा के पराक्रम से सब महाराजाओं के उन उत्तम बाणों को निगला ८ हे महाराज कौरवों ने अर्जुन और बासुदेव जी इन दोनों के उस अपूर्व्व और बड़े पराक्रमको स्तुतिकरी अर्थात् प्रशंसा करी ९ लोक में ऐसा अपूर्व कर्म न हुआ न होगा जैसे किअर्जुन और गोबिन्दजी ने युद्धमें घोड़ों को छोड़कर कियाहै १० उन दोनों नरोत्तमोंने हम लोगों में बड़ा भय उत्पन्न किया और युद्ध के मस्तक पर दोनों ने महा भयकारी अपने पराक्रम को दिखाया ११ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र तब युद्धमें अर्जुन के हाथसे बाणमहलके तैयार होनेपर स्त्रियोंके मध्यवर्त्तियोंके समान मन्द मुसकान करते कमललोचन सावधान श्रीकृष्णजीने आपकी सबसेनाओंके देखतेहुये उनघोड़ोंको जलसे तृप्त करके थकावट से भी रहित करदिया १२।१३ शालि-होत्रादिशास्त्रों के कर्मोंमें कुशल श्रीकृष्णजी ने उन घोड़ों के शरीरों

की वेदना निर्बलता झागोंका वमन करना और बड़े घाव इन सब को दूरकिया १४ हाथोंसे भल्लोंको उखाड़कर और उन घोड़ों को मलकर रीतिके अनुसार स्नान कराकर जलको पिलाया १५ उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजीने उनस्नान और जलपान करचुकनेवाले दानेआदिसे तृप्त दुःख और थकावटसे रहित घोड़ोंको फिर उस उत्तम रथमेंजोड़ा १६ सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ बड़ेतेजस्वी श्रीकृष्णजी अर्जुन समेत उस श्रेष्ठ रथपर सवार होकर शीघ्र चले १७ कौरवीय सेनामें श्रेष्ठ शूरबीर युद्धभूमिमें उस रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुन के रथको जलपान कियेहुये घोड़ोंसे संयुक्त देखकर बे मन अर्थात् चित्तसे उदास होगये १८ हेराजा टूटीहुई डाढ़वाले सर्पकी समान श्वासालेनेवाले लोग पृथक् २ होकर बोलेकि बड़ी धिक्कारहै कि वह अर्जुन और श्रीकृष्णजी निकल गये १९ वह दोनों कवचधारी बालकों के खेलहीके समान हमारे बलको निरादर करके सबक्षत्रियों के देखते एकरथ के द्वाराही निकलगये २० उन शत्रुओं के तपानेवाले पुकारते उपाय करतेशूरबीरोंमें चित्त न लगानेवाले वह दोनों सबराजाओं के मध्य में अपनेबल पराक्रम को दिखलाकर चलदिये २१ तब दूसरे सेनाके मनुष्य उन जानेवाले दोनोंको देख कर फिर बोले कि सब कौरवलोग श्रीकृष्ण और अर्जुनके मारनेमें शीघ्रता करो २२ यहरथ सवार श्रीकृष्णजीयुद्धमें सबधनुषधारियों के देखतेहुये हमलोगोंको तुच्छ और निरादर करके जयद्रथ की ओरको जातेहैं २३ वहांपर कुछ राजालोग युद्धमें पूर्व्वकभी न देखे हुये उस अद्भुत बड़ेकर्मको देखकर परस्पर में यह बोले २४ कि दुर्योधन के अपराधसे सब सेनासमेत राजाधृतराष्ट्र और क्षत्रियों के कुलोंने नाशको पाया और संपूर्ण पृथ्वीने २५ बड़ीभारी बरबादीको पाया उसको राजा नहीं जानता है हे भरतवंशी वहांपर क्षत्री और दूसरे लोग इसरीतिसे वार्त्तालाप करतेथे २६ कि यमलोकमें पहुंचे हुये जयद्रथका जोकर्महै उसको निष्फल दोषनेवाला उपाय का न जाननेवाला दुर्य्योधन करो २७ उसके पीछे सूर्य्यके

तीक्ष्ण किरणोंको अस्ताचलकीओर जानेपर पांडव अर्जुन अत्यन्त प्रसन्न जलपानादि करनेवाले तृप्त घोड़ोंकी सवारीसे बड़ी शीघ्रता पूर्ब्बक जयद्रथ के ऊपर गये २८ शूरबीर लोग उस सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ काल के समान क्रोधयुक्त जातेहुये महाबाहु अर्जुन के रोकनेको समर्थ नहींहुये २९ इसके अनन्तर शत्रुओंके तपानेवाले अर्जुनने सेनाको उच्छिन्न करके जयद्रथ के निमित्त ऐसा छिन्न भिन्न किया जैसे कि मृगों के समूहोंको सिंह छिन्न भिन्न करदेताहै ३० सेनाओंको मंझाते हुये श्रीकृष्ण जीने शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया और बलाका के समान श्वेतरंगवाले पांचजन्य शंख को बजाया ३१ आगेसे अर्जुनके छोड़ेहुये बाण उसके पीछेगिरे और बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंनेउस मार्गको बड़ीशीघ्रतासेव्यतीत किया ३२ इसके पीछे क्रोधयुक्त राजाओंने और अनेक क्षत्रियोंने जयद्रथके मारनेके अभिलाषी अर्जुनको चारोंओरसे घेरलिया ३३ सेनाओंके भागनेपर शीघ्रता करनेवाला दुर्य्योधन उस बड़ेयुद्ध में नियत होनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुनके सन्मुखहुआ ३४ सबरथी उस बायुसे खड़ी पताकावाले बादलके समान शब्दायमान भयकारी हनुमान्जीकी ध्वजा रखनेवालेरथको देखकर महाव्याकुलहुये ३५ फिर धूलसे सूर्य्यके सब ओरसे ढकजाने पर युद्धमें बाणोंसे पीड़ामान शूरबीर लोग उन श्रीकृष्ण और अर्जुन के देखनेकोभी समर्थ नहीं हुये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्ब्बणिशततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौएकका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा आपकी सेनाके राजालोग उन उल्लंघन करके पहुंचे हुये अर्जुन और बासुदेव जीको देखकर भय से पृथ्वीपर गिरपड़े १ फिर वह सब क्रोधयुक्त लज्जावान् बलसे चलायमान महात्मा नियत होकर अर्जुनके सन्मुख गये२ जो क्रोध और अधैर्य्यसेयुक्त युद्धमें अर्जुनके सन्मुखगये वह अबतकभी ऐसे

लौटकर नहींआये जैसे कि समुद्रसे फिर लौटकर नदियां नहींआतीं३ परन्तु असन्तलोग ऐसे मुखफेरनेवाले हुये जैसे कि वेदोंसे नास्तिक लोग मुखको फेरलेतेहैं उन नरकके चाहनेवालोंने पापकोही प्राप्त किया ४ वह दोनों पुरुषोत्तम रथकी सेनाको उल्लंघनकर सबसे छुटेहुये ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि राहु के मुखसे छुटेहुये दोसूर्य्य होंय ५ जैसेकि बड़ेजालको तोड़कर दुःख शोकसे रहितदोमछली दिखाई पड़ें उसीप्रकार श्रीकृष्ण और अर्जुन उससेना के जालको फाड़कर दृष्टिगोचर हुये ६ बड़े दुःखसे तोड़ने के योग्य बाणों के कष्ट रखनेवाले द्रोणाचार्य्य की सनासे छुटेहुये दोनों महात्मा ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि उदय हुये दोकालरूप सूर्य्य होतेहैं ७ अस्त्रों की पीड़ा और बाणोंके दुःखोंसे छुटेहुये वह दोनों महात्मा जोकि शत्रुओंके पीड़ाउत्पन्न करनेवालेथे दिखाई पड़े ८ अथवा जैसेअग्नि के समान स्पर्शवाले समुद्रसे पृथक होनेवाली झसनाम दोमछलियां होतीहैं फिर उनदोनोंने उससेनाको ऐसेछिन्नभिन्नकरदिया जैसे कि समुद्रको दोबड़े मगर उथलपुथलकरदेतेहैं ९ प्रथम आप के शूरबीरोंने और पुत्रोंने द्रोणाचार्य्य को सेनामें उनदोनोंकेनियत होनेपर यहबात पक्की चित्तसे जानलीथी कि यह द्रोणाचार्य्य को नहींतरेंगे १० हे महाराज फिर द्रोणाचार्य्यकी सेना को उल्लंघन करनेवाले उनदोनों बड़ेतेजस्वियों को देखकर जयद्रथके जीवनकी आशाको त्यागदिया ११ हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र जयद्रथके जीवन में द्रोणाचार्य्य और कृतबर्माकी बड़ी बलिष्ठ आशाथीकि श्रीकृष्ण और अर्जुन इस व्यूहके पारनहीं होसकेंगे १२ हे महाराज शत्रुके तपानेवाले वहदोनों उस आशाको निष्फलकरके कठिनतासे तरने के योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतबर्मा की सेनाको अच्छीरीति से तरगये १३ फिर अग्निके समान प्रकाशित सेनाके उल्लंघनकरने वाले उनदोनों को देखकर आशा से रहित शूरबीरोंने जयद्रथ के जीवनकी आशानहीं की १४ उन निर्भय दूसरे के भयके बढ़ाने वाले श्रीकृष्ण और अर्जुनने जयद्रथके मारनेमें उन २ बचनों को

बारंबार कहा १५ कि यहजयद्रथ दुर्य्योधन के छःमहारथियों ने बीचमें कियाहै यहमेरेनेत्रों के सन्मुख आयाहुआ बचनहींसक्ता १६ जो युद्धमें देवताओं के समूहों समेत इन्द्रभी इसकोरक्षा करे तौभी उसको मारेंगे यहबचन श्रीकृष्ण और अर्जुनने कहाहै १७ तब परस्पर में महाबाहु श्रीकृष्ण के इसप्रकार कहनेपर जयद्रथ को देखते हुये आपके पुत्र बहुत पुकारे १८ रेतके स्थानको उल्लंघन कर जातेहुये तृषासे पीड़ित दोहाथी जैसे जलको पीकर तृप्तहोय उसीप्रकार शत्रुओंके पराजय करनेवाले यह दोनोंहैं १९ व्याघ्र सिंह और हाथियों से व्याप्तपहाड़ों को उल्लंघन करके हानि मृत्यु और वृद्धावस्थासे छुटेहुये दो व्यापारी जैसे दिखाई पड़ें २० उसी प्रकार इनदोनों के मुखका वर्ण दिखाई देताहै आपके शूरबीर उन दोनोंको पारहुये देखकर सबप्रकार से पुकारे २१ कि सर्पके रूप अग्नि के समान प्रकाशित द्रोणाचार्य्य आदिक अन्य राजाओं से भी मुक्त वहदोनों दो सूर्य्योंके समानप्रकाशमानहुये २२ द्रोणाचार्य्यकी समुद्र रूप सेनासे पार उतरने वाले शत्रु विजयी दोनों आनन्द युक्त ऐसे दिखाई पड़े जैसे समुद्रके पारगामी पुरुषदीखतेहैं २३ अस्त्रोंके बड़े समूहोंसेछुट द्रोणाचार्य्य कृतवर्माकी रक्षित सेनासे मुक्त वह दोनोंयुद्धमें इन्द्र और अग्निकेसमान शोभितहोकर दृष्टि गोचरहुये २४ रुधिरसेलिप्त और द्रोणाचार्य्यके तीक्ष्णसायकों से संयुक्त दोनों कृष्णवर्ण ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि कर्णिकारके वृक्षों से युक्त दोपर्व्वत होतेहैं २५ द्रोणाचार्य्य रूप ग्राह रखनेवाली शक्ति रूप मार से दुःखवाली लोहेके बाणरूप नौका रूपी मगरवाली क्षत्रीरूपी जलसे भरी ह्रदसे निकलीहुई २५ कवच और प्रत्यंचा के शब्दसे शब्दायमान गदा खड्ग रूप बिजली रखनेवाले द्रोणाचार्य्यके अस्त्र रूप बादलोंसे युक्तदोनों ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि अंधेरेमें से निकले हुये सूर्य्य और चन्द्रमा २७ मानो वर्षाऋतुमें जलसे पूर्ण बड़े ग्राहोंसे व्याकुल उन नदियों को जिनका कठिन सिन्धहै अपने भुज बलसे पार हुये २८ सब जीव-

धारियों ने द्रोणाचार्य्य के अस्त्र बलके आश्चर्य्य से उन यश करके लोकमें प्रसिद्ध बड़े धनुषधारी दोनों कृष्ण और अर्जुनको इसप्रकार से माना २९ मारने की इच्छासे सन्मुख वर्त्तमान हुये जयद्रथ को देखतेहुये वहदोनों नियतहुये जैसेकि चढ़ाईमें रुरुनाम मृगकेअभिलाषी दो व्याघ्रहोतेहैं ३० उसी प्रकार इन दोनों के मुखका वर्ण था हेमहाराज आपके शूरबीरोंने जयद्रथको मृतकहुआ माना ३१ लाल नेत्र महा बाहु युद्धमें प्रवृत्त श्रीकृष्ण और अर्जुन उस सिन्ध के राजाको सन्मुख देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बारंबार गर्जे३२ उस समय बाग डोर हाथमें रखनेवाले श्रीकृष्णजी का और उस धनुषधारी अर्जुनके शरीरका प्रकाश उस प्रकार का हुआ जैसे कि सूर्य्य औरअग्निका होताहै ३३द्रोणाचार्य्यकी सेनासे मुक्तउनदोनों की प्रसन्नता जयद्रथको सन्मुखदेखकर ऐसीउत्पन्नहुई जैसे कि मांस को देखकर दो बाज़ पक्षियोंकी होतीहै ३४ फिर वह दोनों सन्मुख वर्त्तमान जयद्रथको देखकर क्रोध रूप होकर अकस्मात ऐसे दौड़े जैसे कि मांसको देखकर दोबाज़ दौड़तेहैं ३५ उल्लंघन करकेपहुंचने वाले अर्जुन और केशव जीको देखकर आपकापुत्र राजा सिंधकी रक्षा के निमित्त चला ३६ हेप्रभु धृतराष्ट्र इसके अनन्तर घोड़ों के संस्कारको जाननेवाला राजा दुर्य्योधन जिसके शरीरपरद्रोणाचार्य्यने कवच बांधाथा एक ही रथसे युद्ध भूमिमें गया ३७ अर्थात् आपका बेटाबड़े धनुषधारी श्रीकृष्ण और अर्जुनको उल्लंघन करके पुंडरीकाक्ष बासुदेवजीके आगेगया ३८इसके पीछे अर्जुनकोआपके बेटेकेउल्लंघन करनेपर सबसेनामें बड़ेआनन्दके समानबाजेबजे३९ वहां पर दोनों कृष्णके आगेनियत दुर्य्योधनकोदेखकरशंखोंकेशब्दों से संयुक्त सिंहनादें जारी हुईं ४० हेप्रभुअग्निकेसमान जोशूरबीर राजा सिन्धके रक्षकथे वहआपके पुत्रकोयुद्धमेंदेखकर अत्यन्तप्रसन्न हुये ४१ तब श्रीकृष्णजी पीछेचलनेवालोंसमेत उल्लंघन करनेवाले दुर्य्योधन को देखकर समयके अनुसार यहबचनअर्जुनसेबोले४२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकाधिकशततमोऽध्यायः१०१ ॥

एकसौदोका अध्याय ॥

बासुदेवजी बोलेहे अर्जुन इस उल्लंघन करनेवाले दुर्य्योधनको देखोमैं इसको अत्यन्त अपूर्व्व मानताहूं इसके समान कोईरथी नहीं है १ यहधृतराष्ट्रकाबेटा बड़ा पराक्रमी दूरपहुंचनेवाला धनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद दृढ़ अस्त्रवाला अपूर्व्व युद्ध करनेवाला २ बड़ेसुखपूर्व्वक पोषण कियाहुआ महारथियोंसे प्रतिष्ठित सदैव कर्मकरता हैहेअर्जुन वहसदैव बान्धवोंसे शत्रुता करताहै३ हेनिष्पाप मैं समय आनेपर तेरायुद्ध उसकेसाथमें उचित जानता हूं यहां तुम्हारा द्यूत विजय अथवा पराजयके लिये जारीहुआ ४ हे अर्जुन बहुत दिनों के रोकेहुये क्रोधरूप विषको इसपर छोड़ यह महारथी पांडवोंके अनर्थोंका मूलहै ५ वही अब आकर तेरे बाणोंके सन्मुख बर्त्तमान हुआहै अपनी सफलताको देखो कि किस प्रकारसे राज्यका चाहने वाला राजायुद्ध कोपावे अबयह प्रारब्धसे तेरेबाणोंके लक्ष्यमें बर्त्तमान हुआहै यहजिस प्रकारसे जीवनको त्यागे हेअर्जुन उसीप्रकार से कामकरो ७ राज्यके भोगनेसे मदोन्मत्त होकर इसने कभीदुःख कोनहीं पाया हे पुरुषोत्तम यहयुद्धमें तेरेपराक्रमको नहींजानताहै८ और हे अर्जुन देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनोंलोकभी युद्धमें तेरे विजयकरनेको साहस नहीं करसक्तेहैं फिर अकेला दुर्योधनक्या करेगा ९ यहप्रारब्धसे तेरेरथके पास बर्त्तमान हुआहै हेमहाबाहु उसको इसप्रकार सेमारो जैसेकि इन्द्रने वृत्रासुरको माराथा १० हे निष्पाप यहतेरे अनर्थमें सदैव उपाय करनेवाला रहाहै इसनेद्यूतमें छलकरके धर्मराजको ठगा ११ हेप्रतिष्ठा देनेवाले इसपाप बुद्धीने तुम निष्पाप लोगोंको सदैव दुःखदियेहैं १२ हे अर्जुन युद्धमें उत्तम कर्मको करके बिचारको न करके उसनीच सदैव क्रोधयुक्त काम रूपपुरुषको मारो १३ हेपांडव छलसे राज्य हरणकरना बनबास और द्रौपदी केदुःखोंको हृदयमें धारण करके पराक्रमकरो १४ यह प्रारब्धसे तेरेबाणोंके लक्षपरबर्त्तमानहै और प्रारब्धहीसे अपनेकर्मके

नाशके अर्थ तेरे आगे उपाय करताहै १५ और भाग्यसे युद्धमें तेरे साथलड़ना चाहताहै हेअर्जुन बिनाचाहेहुये सबमनोरथसिद्ध और सफलहैं १६ इसहेतुसे इसकुलमें महानीच दुर्योधनको युद्धमें ऐसे मारो जैसे कि पूर्वसमयमें देवासुरोंके युद्धमेंजंभनामअसुरको इन्द्रने माराथा १७तेरे हाथसे उस दुर्योधनके मरनेपर यह बिनास्वामीकी सेनासब पृथक २ होजायगी इस शत्रु का अष्टभूत स्नान हो अर्थात् अन्तहो दुरात्माओंके मूलकोकाटदे १८ संजयबोले कियह सुनकर अर्जुनने श्रीकृष्णजीसे कहाकि यहमेराकर्मरूपहै दूसरे सबकार्य्यों-का निरादर करके चलो जहां दुर्योधन है १९ जिसने हमारा यह निष्कण्टक राज्य बहुतकाल तक भोगाहै उसके मस्तकको पराक्रम करके युद्धमें काटूं २० हे केशवजी उस दुःखके अयोग्य द्रौपदी के केशखींचनेमें उसके कष्टोंकाबदला लेनेको समर्थहूं २१ इस प्रकार वार्त्तालाप करते प्रसन्नचित्त उस राजा को चाहते दोनों कृष्ण और अर्जुननेअपनेश्वेत उत्तमघोड़ोंको युद्धमेंहांका २२ हेभरत बंशियों में श्रेष्ठधृतराष्ट्र आपके बेटेने उनदोनोंके सन्मुख जाकर बड़ेभयकेबर्त्त-मान होने परभी भंयको नहीं किया २३ वहां सब क्षत्रियोंने उसके उस साहसकी बड़ी प्रशंसा करी जोसन्मुख आतेहुये अर्जुन और श्रीकृष्णजी को रोका २४ हेराजा वहां राजाको युद्धमें देखकरआ-पकी सब सेनाके बड़े शब्द हुये २५ मनुष्योंके उस भयकारी शब्द के बर्त्तमान होने पर आपके पुत्रने शत्रुको निरादर और तुच्छ करके रोका २६ आपके धनुषधारी पुत्र से रोके हुये शत्रुके तपाने वाले अर्जुनने फिर उस पर क्रोधकोप्रकट किया २७ भयकारीसूर-त उन क्रोध युक्त अर्जुन और वासुदेवजीको देखकर युद्धाभिलाषी हंसतेहुये आपके पुत्रने अर्जुन को बुलाया २८ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुनने बड़ा भारी शब्दकिया और अपने २ उत्तम शंखोंकोभी बजाया ३० फिर कौरव लोगउनप्रसन्न रूप दोनोंको देखकर आपके पुत्र के जीवन में सब प्रकार करके निराशा युक्त हुये ३१ उन सब कौरवोंने बड़े शोक से युक्त होकर

आपके पुत्रको अग्निके मुखमें होमाहुआ माना ३२ भयसे पीड़ामान आपके सब शूरबीर उस प्रकार से प्रसन्न मन श्रीकृष्ण और अर्जुन को देखकर बोले कि राजा मारा राजा मारा ३३ फिर दुर्य्योधन मनुष्यों के शब्दों को सुनकर बोला तुम अपने भयोंको दूरकरो मैं इन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुनको मृत्युके निकट भेजूंगा ३४ विजया भिलाषी राजा दुर्य्योधन सेनाके सब मनुष्यों से यह बचन कह कर अर्जुनको सन्मुख करके क्रोध से यह बचन बोला ३५ हे अर्जुन तुम ने स्वर्ग और पृथ्वी सम्बन्धी जो अस्त्र शस्त्र सीखे उनको मुझे शीघ्र दिखलाओ जो असल पांडुसे उत्पन्न हुआ है तो अवश्य दिखा ३६ तेरा और केशव जीका जो बल पराक्रमहै उसको शीघ्रतासे मुझ पर करो आजतेरी बीरताको देखेंगे ३७ मेरे नेत्रों के परोक्षमें तेरे कियेहुये कर्मोंको जो लोग कहा करतेहैं कि बड़े२ गुरुओंकीशिक्षा-ओं से युक्तहैं उनको यहां दिखाओ ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्वितीयोऽध्यायः १०२॥

एकसौतीनका अध्याय॥

संजय बोले कि राजाने अर्जुन से इस प्रकार कह कर मर्मोंको उल्लंघकर चलने वाले बड़े तीक्ष्ण तीन बाणोंसे अर्जुनको औरचार बाणों से चारों घोड़ोंको घायल किया १ और वासुदवजी को दश बाणों से छातीके मध्यमें घायल किया और एक भल्लसे उसकेचाबु-क को काट कर पृथ्वी पर गिराया २ फिर सावधान अर्जुनने सु-नहरी पुंख तेजधार वाले चौदह बाणों से उसको घायल किया वह अर्जुनके बाण उसके कवचसे लगकर टूट पड़े ३ अर्जुनने उनबाणों की निष्फलताको देखकर फिर चौदह तीक्ष्ण बाणोंको चलाया वह भी कवच पर लगकर टूटे ४ उन चलाये हुये अट्ठाईस बाणों को निष्फल देखकर शत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले श्रीकृष्णजी अर्जुनसे यह बचनबोले ५ कि पूर्व्व में जो कभी नहीं देखाहै उन शिलाओं के समान बाणों के गिरनेको निष्फल देखताहूं हे अर्जुन तेरेभेजेहुये

बाण प्रयोजनको नहीं करतेहैं ६ हेभरत बंशियोंमें श्रेष्ठ गांडीवका पराक्रम उसी प्रकारका है और तेरी मुष्टि और हस्त लाघवता भी पूर्व्वकेही समान है ७ अब तेरा और इस तेरे शत्रुका यह पहला समय बर्त्तमाननहींहै इसकाक्या हेतुहै उसकोमुझसेकहो ८हेअर्जुन दुर्योधनके रथपर तेरेबाणोंको निष्फल देखकर मुझको बड़ाआश्चर्य्यहोताहै ९ बज्र और बिजलीके समान भयकारी शत्रुओंके शरीरों के भेदन करने वालेतेरे बाण अभीष्टको नहीं करते हैं हे अर्जुन अब उनकाक्या तिरस्कारहै १०अर्जुनबोले हे श्रीकृष्णजी द्रोणाचार्य्यने यहमति दुर्योधनको दीहैकि यहमेरा बनायाहुआ और धारणकराया हुआ कवच अस्त्रोंसे नहीं टूटने वालाहै ११ हेश्रीकृष्णजी इसकवचमें तीनोंलोक भीगुप्तहैं इसको केवल अकेले द्रोणाचार्य्यही जानतेहैं और उसीश्रेष्ठ पुरुषसे मैंनेभी सीखाहै १२ हेगोविन्दजीयुद्धमें आप बज्र धारी इन्द्रके बाणोंसेभी यह कवच किसीदशा में टूटने के लायक नहींहै १३ हेकृष्णजी तुम जानते हुयेभी मुझ को कैसे भुलातेहो हेकेशवजी तीनोंलोकमें जोहुआहै और होरहाहै १४ और जोहोगा उससबको आपजानने वाले हैं हेमधु सूदनजी जैसे आप जानतेहो वैसे दूसरा कोईनहीं जानसक्ताहै १५ हेश्रीकृष्णजीद्रोणाचार्य्यकी दीहुई इस कवचधारणाको शरीरपर शोभित करनेवाला यहदुर्योधन युद्धमें निर्भयके समान नियत बर्त्तमान है १६ हेमाधवजी अबजोकर्म यहां करनेकेयोग्य उस को यहनहींजानता है स्त्री के समान यह दूसरेकी धारण कराईहुई इसकवच धारणा को धारण करताहै १७हेजनार्द्दनजी मेरी भुजाओंके औरधनुषके पराक्रमकोभी देखोमैं इस कवचसे रक्षितहुये भी कौरव को विजय करूंगा १८ देवताओंके ईश्वरने यहप्रकाशित कवच अंगिराऋषिको दियाउनसे बृहस्पति जीनेपाया उन बृहस्पति जोसे इन्द्रने पाया १९ फिर इन्द्र ने यह देवताओंका बनायाहुआ कवच उपदेश पूर्व्वक मुझकोदिया जोकि इसका कवच आप ब्रह्माजीका बनायाहुआहै अबयह कवच मेरे बाणोंसे घायलहोकर इस दुर्बुद्धीकी रक्षानहीं करेगा २० संजय

बोलेकि स्तुतिके योग्य अर्जुनने इसप्रकार कहकर कवचके काटने वालेतीक्ष्ण मानव अस्त्रसेबाणोंको अभिमंत्रित करके खींचा२१उस केखींचेहुये और उसके धनुषके मध्यवर्त्ती उनबाणोंको अश्वत्थामाने सब अस्त्रोंके दूरकरनेवाले अपने अस्त्रसे काटा दूरसे ब्रह्मबादी अश्वत्थामाके काटे हुये उनबाणोंको २२ देखकर आश्चर्य्य युक्त अर्जुनने केशवजीसे वर्णनकिया किहे जनार्दन जी यह अस्त्र मुझको दुबाराचलाना योग्यनहींहै २३ क्योंकि दुबारा चलाया हुआअस्त्र मुझीको मारेगा और मेरी सेनाकोभी मारेगा हे धृतराष्ट्रइसके पीछे दुर्योधनने दोनोंकृष्णार्जुनको ऐसे नौनौ बाणोंसे २४ जोकि सर्पोंके समानथे युद्धमेंघायल किया और फिरभी इनदोनोंके ऊपरबाणोंकी बर्षाकरनेलगा२५ बाणोंकी बड़ीबर्षासे आपकेशूरबीरलोगप्रसन्नहुये और बाजोंके शब्दोंसमेत सिंहनाद किये २६ इसके पीछे युद्धमें दोनों होठोंको चाटता हुआ अर्जुन बड़ाक्रोधयुक्त हुआ फिरउसके उसअंगको नहींदेखा जोकि धर्मसेरक्षित न होय२७इसकेपीछे मृत्यु केसमान अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुयेतीक्ष्णबाणोंसे उसकेघोड़ोंको और दोनोंआगे पीछेवालों समेत सारथीको शरीरसे रहित किया २८ और पराक्रमी अर्जुननेउसके धनुष हस्तावापको काटा और रथको खण्ड २ करना प्रारंभकिया २९ इसीप्रकार अर्जुन ने बिरथकिये हुये दुर्योधनको दोतीक्ष्ण बाणोंसे दोनों हाथोंकी हथेलियों पर घायलकिया ३० फिर बड़े उपायोंके ज्ञाता अर्जुनने बाणोंसे मांस और नखोंके मध्यमें घायल किया वहपीड़ासे महाव्याकुल होकर भागनेको प्रवृत्त हुआ ३१ अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान उसदुर्योधन को चाहते बड़े २ धनुषधारी उस राजा को आपत्ति में फंसा हुआ देखकर दौड़े ३२ उन लोगोंने हजारों रथोंके समूह हाथी घोड़े और क्रोध युक्त पदातियों समेत आनकर उस अर्जुन को चारोंओर से घेरलिया ३३ इसके पीछे अस्त्रोंकी बड़ी बर्षाओं समेत मनुष्यों के समूहोंसे घिरेहुये अर्जुन और गोबिन्दजी दिखाई नहीं पड़े और उनका रथ भी दिखाई नहीं पड़ा ३४ फिर अर्जन ने अपनेअस्त्रों के

बलसेउस सब सेनाकोमारा वहांपर अंगोंसेरहितसैकड़ों हाथीपृथ्वी पर गिरपड़े ३५ फिर उन मृतक और घायलों ने उस उत्तम रथको घेरलिया वह रथ चारोंओर से एक कोशतक रुकाहुआ नियतहुआ ३६ इसके पीछे वृष्णियों में बीर श्रीकृष्णजी अर्जुन से यह बचन बोले कि धनुष को अत्यन्त टंकार करो और मैं शंखको बजाऊंगा ३७ इस के पीछे अर्जुनने गांडीव धनुषको बड़े बलसे टंकार कर बाणोंकी बड़ी वर्षा और प्रत्यंचा के शब्दों से शत्रुओं को मारा ३८ धूलसे भरे पलक पसीनों से अत्यन्त तरबतरमुख पराक्रमी केशव जीने बड़े शब्दसे पांच जन्य शंखको बजाया ३९ तब उस शंख और धनुषके शब्द से पराक्रमी और बिना पराक्रमी सब मनुष्य पृथ्वी पर गिरपड़े ४० उन रथियोंसे रहित होकर रथ ऐसे शोभाय मान हुये जैसे कि बायुसे चलाय मान बादल होते हैं इसके अनन्तर जयद्रथ के रक्षक लोग पीछे चलने वालों समेत तेहेमें आये ४१ फिर पृथ्वी को कंपाय मान करते जयद्रथ के बड़े धनुषधारी रक्षकोंने अकस्मात अर्जुनको देखकर शब्द किये ४२ उन महात्माओं ने शंखोंकेशब्दोंसे संयुक्त भयकारी शब्दों समेत सिंह नादोंको प्रकट किया ४३ आपके शूर बीरोंके उठेहुये इस भयकारी शब्दकोसुन-कर अर्जुन और बासुदेवजी ने अपने२ उत्तम शंखोंको बजाया ४४ हे राजा उस बड़े शब्दसे यहपृथ्वी पर्व्वत समुद्र द्वीप और पाताल समेत भरगई ४५ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ वह शब्द दशों दिशाओं को व्याप्त करके उस कौरवीय और पांडवीय सेनामें शब्दों के करने वाले हुये ४६ वहां आपके रथी और शीघ्रता करनेवाले महारथि-योंने अर्जुन और श्रीकृष्णजी को देखकर बड़े भय से उत्पन्न होने वाली बड़ीव्याकुलताको पाया ४७ इसके पीछे आपकेशूरबीरअत्य-न्त क्रोधयुक्त उन महाभाग कवचधारी दोनों कृष्ण और अर्जुनको देखकर सन्मुख गये वह अश्चर्य्य सा हुआ ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरितृतीयोऽध्यायः १०३ ॥

—※—

एकसौचारका अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके शूर बीर वृष्णी अन्धक और कौरवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण और अर्जुन को प्रथम सन्मुख देखकर मारनेके इच्छा वान शीघ्रता करने वाले हुये उसी प्रकार अर्जुनने भी दूसरोंको १ हे राजा सुवर्ण से जटित व्याघ्र चर्मसे मढ़े हुये शब्दाय मान अग्नि कान्तिके समान बड़े २ रथों से सब दिशाओं को प्रकाशित करते २ सुनहरी पुंखदुःखसे देखने के योग्य बाण क्रोध रूप सर्पोंके समान बड़े शब्दोंको करने वाले धनुषों समेत ३ वह रथियों में श्रेष्ठ भूरि-श्रवा, शल्य, कर्ण, वृषसेन, जयद्रथ, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा, यह सब महारथी सुवर्ण मयी चन्द्रमावाले व्याघ्र चर्मकी झूलोंसे संयुक्त घोड़ों के द्वारा आकाश को स्पर्श करते दशों दिशाओंको प्रकाशों से शोभायमान करनेवाले हुये ५ उन कवच धारी अत्यन्त क्रोध युक्त बीरोंने बादलों के समूहों के समान शब्दाय मान रथोंकेसाथ तीक्ष्ण बाणोंसेअर्जुनकोदशों दिशाओंको ढकदियाद्द तबकौलूतदेशी शीघ्रगामी अपूर्व्व घोड़ेउन महारथियों को सवार करते दशोंदिशा-ओंको प्रकाशित करते अत्यन्त शोभाय मानहुये ७ हे राजा आजा-नेय प्रकारवाले बड़े वेगवान् नानाप्रकारके देशोंमें उत्पन्नहोनेवाले पहाड़ी नदीज और सिंधदेशी उत्तमघोड़ोंकी सवारीसे ८ आपकेपुत्र को चाहतेहुये उत्तम शूरबीर लोगशीघ्रही अर्जुन के रथके सन्मुख गये ६ और वहां उनपुरुषोत्तमोंने बड़ेशंखोंको लेकर बजायाउनके शब्दोंने समुद्रोंसमेत पृथ्वी और आकाशको व्याप्त करदिया १० उसी प्रकार सब देवताओंमें बड़ेश्रेष्ठ वासुदेवजी और अर्जुननेभी अपने शंखोंको बजाया ११ अर्जुनने देवदत्तको केशवजीने पांचजन्य को बजाया अर्जुन के बजायेहुये देवदत्त शंख के शब्दने १२ पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओंको व्याप्तकरदिया उसीप्रकार वासुदेवजी के बजायेहुये पांचजन्य शंखनेभी १३ सबशब्दों को उल्लंघनकर पृथ्वी और आकाशको पूर्णकिया हे महाराज भयभीतों के भय के

उत्पन्न करनेवाले शूरोंकी प्रसन्नता के बढ़ाने वाले भयकारी कठोर शब्दके वर्त्तमानहोने व भेरी झर्झर समेत ढोलोंके बजने १४।१५ और बहुत प्रकार से मृदंगोंके बजने पर दुर्य्योधन का अभीष्टचाहनेवाले बुलायेहुये १६ उस शब्दके नसहने वाले क्रोधयुक्त बड़े धनुषधारी अपनी सेनासे रक्षित नाना देशोंके राजा १७ उन क्रोध युक्त महा रथी राजाओं ने बड़े शंखों को बजाया जो कि केशवजी और अर्जुन के कर्म पर अपना कर्म करने के अभिलाषीथे १८ हे समर्थ आपकी वह सेना शंखसे चलायमान होकर व्याकुल हुई जिसके कि रथ हाथी और घोड़े व्याकुलतासे पूर्णथे १९ वह सेना शूरबीरों से घायल शंखसे शब्दायमान ऐसे महाव्याकुल हुई जैसे कि परस्पर वायुकी टक्करोंसे शब्दायमान बादलोंसे आकाश शब्दायमान होताहै २० हे राजा उसबड़े शब्दने सब दिशाओंको शब्दायमान करके उस सेनाको ऐसे भयभीत किया जैसे कि प्रलयकाल का वायु भयभीत करता है २१ उसके पीछे दुर्य्योधन और उन आठों महारथियोंने जयद्रथ की रक्षाके निमित अर्जुनको चारों ओर से घेरलिया २२ तदनन्तर अश्वत्थामाने तिहत्तरबाणोंसे बासुदेवजी को तीन भल्लसे अर्जुनको और पांच बाणों से ध्वजासमेत घोड़ोंको ताड़ित किया २३ श्रीकृष्णाजीके घायलहोने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने प्रसक्त नाम छःसौ बाणोंसे उन अश्वत्थामाजी को घायल किया २४ फिर पराक्रमीने दशबाणोंसे कर्णको तीनबाणोंसे वृषसेन को घायल करके शल्यकी मुष्टिको बाण और धनुष समेत काटा २५ फिर शल्यने दूसरे धनुष को लेकर अर्जुनको घायल किया भूरिःश्रवाने सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धारवाले तीन बाणों से २६ कर्णने बत्तीस बाणोंसे वृष सेनने सात बाणों से जयद्रथ ने तिहत्तर बाणों से कृपाचार्य्यने दश बाणों से २७ शल्यने दश बाणसे युद्धमें अर्जुन को घायल किया उसके पीछे अश्वत्थामाने साठि बाणोंसे अर्जुनको आच्छादित करदिया २८ बासुदेवजी को बीस बाण से फिर अर्जुनको पांच बाण से घायल किया तब अपनी हस्त लाघव-

ताको दिखाते हंसते हुये श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णजी को सारथी रखने वाले नरोत्तम अर्जुनने २६ उन सबको इस प्रकारसे घायल किया कि कर्णको बारह बाणसे घायल करके वृषसेनको तीनबाण से घायल किया और शल्यके धनुष समेत मुष्टिके स्थानको बाणसमेत काटा भूरिःश्रवाको तीन बाणोंसे घायलकर शल्यको दशबाणों से घायलकिया ३०।३१ अग्निकी ज्वालाके समानरूप तीक्ष्ण आठ बाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया कृपाचार्य्यको पच्चीस बाणसे जयद्रथको सौबाणोंसे ३२ फिर उसने अश्वत्थामाको सत्तरबाणोंसे घायलकिया तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भूरिःश्रवाने श्रीकृष्णजी के चाबुकको काटा ३३ और अर्जुनको भी तिहत्तर बाणोंसे घायल किया इसकेपीछे अर्जुनने सैंकड़ों तीक्ष्णबाणों से उन सब शत्रुओं को ३४ शीघ्रतासे ऐसे हटाया जैसे कि क्रोधयुक्त बायु बड़े२बादलों को हटाता है ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुर्थोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय मेरे पुत्रोंकी और पांडवों की अनेक रूपोंकी शोभायमान ध्वजाओंको मुझसे बर्णनकरो१ संजयबोले कि उन महात्माओंकीबहुतसे रूपोंकी ध्वजाओंको सुनो मैं उनको रूप रंगसमेत बर्णन करताहूं२ हेमहाराज उन उत्तम रथियोंके रथोंपर नानाप्रकारकी अग्निके समान प्रकाशित ध्वजा दिखाईदीं ३ वह ध्वजा सुबर्णमयी सुबर्णहीके पीड़ और स्वर्ण निर्मित मालाओंसे ऐसे अलंकृत थीं जैसे कि सुबर्णके बड़े पर्व्वत के बड़े २ स्वर्णमयी शिखर होतेहैं ४ अनेक रंग रखने वालीं अत्यन्त शोभायमानबहुत से रूपोंकी ध्वजायेंथीं उन्होंकी वह ध्वजा चारों ओर पताकाओं से संयुक्तथीं ५ वह नाना प्रकार की ध्वजा श्वेतपताकाओं से सब ओर को संयुक्त होकर अत्यन्त शोभायमान हुई उसके पीछे बायुसे चलायमान वह पताका ६ युद्धभूमि में प्रकाशित और नृत्य करने

वाली दिखाई पड़ीं हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इन्द्र बज्र के समान रंग रूपसे युक्त कंपायमान उन पताकाओंने ७ रथियों के बड़े २ रथोंको शोभायमान किया भयकारी ध्वनिसे युक्त हनुमान्‌जी का चिह्न रखने वाली सिंहलांगूलनाम भयकारी अर्जुनकी ध्वजा८ युद्धमें दिखाई पड़ी हे राजा हनुमान्‌जी से युक्त पताकाओं से अलंकृत ९ अर्जुनकी उस ध्वजाने उस सब सेनाको भयभीत किया हे भरतबंशी उसी प्रकार अश्वत्थामा की सिंहलांगूल १० नाम ध्वजा की नोकको हमने देखा वह ध्वजा भी बाल सूर्य्य के समान प्रकाशित सुनहरी बायु से कंपायमान इन्द्रकी ध्वजाके समान प्रकाशितथी ११ और कौरवीय राजाओंका प्रसन्न करने वाला अश्वत्थामा का ऊंचाचिह्नथा और कर्णकी स्वर्णमयी ध्वजा हाथीकी कक्षाकाचिह्न रखने वाली थी १२ हे महाराज युद्धमें वह ध्वजा आकाश को पूर्ण करतीहुई दिखाई पड़ी और कर्ण की ध्वजापर माला रखने वाली स्वर्ण मयी पताका १३बायुसे चलायमान रथके ऊपर नाचतीहुई सी दिखाई पड़ी फिर पांडवोंके आचार्य्य तपस्वीब्राह्मण १४ गौतम कृपाचार्य्य की अच्छी अलंकृत ध्वजा गोवृष का चिह्न रखनेवाली थी हे राजा वह ज्ञानी उस ध्वजा से ऐसा शोभायमान हुआ १५ जैसेकि त्रिपुरके मारनेवाले शिवजीका अत्यन्त प्रकाशित रथनन्दीगणसे शोभायमान होताहै और वृषसेनका सुनहरी मोर मणिऔर रत्नोंसे जटित १६ सेनाके आगे शोभा करता और बोलता हुआ सा नियत हुआ उस महात्माका रथ उस मोर से ऐसा प्रकाशमान हुआ १७ हे महाराज जैसे कि अत्यन्ततम प्रकाशमान मोर से स्वामिकार्त्तिकजीका रथ शोभित होताहै मद्रदेशके राजा शल्यकी ध्वजा के ऊपर प्रज्वलित अग्निके समान प्रकाशित १८ स्वर्णमयी अनूपम मंगल रूप सीताको देखा हे श्रेष्ठ वह सीता उसके रथपर नियत होकर ऐसी प्रकाशमान हुई १९ जैसे कि सब बोजों से संयुक्त शोभासे भरी हुई लक्ष्मी समेत सीता प्रकाशित होती है सिंधके राजाकी ध्वजापर बराह प्रकाशमान था २० और अरुण

सूर्य्य के समान प्रकाशित होकर सुनहरी जालोंसे अलंकृत जयद्रथ को ध्वजाथी वह जयद्रथ उस ध्वजासे ऐसा शोभायमान हुआ २१ जैसे कि पूर्व्व समयमें देवासुरोंके युद्धमें पूषा शोभायमान हुआ-था और यज्ञके अभ्यासी बुद्धिमान्सोमदत्तको ध्वजा में यज्ञस्तंभका चिह्नथा २२ वह ध्वजा सूर्य्यके समान प्रकाशमान होकर जिसमें चन्द्रमा रूप दिखाई देताहै हे राजा वह सोमदत्त का स्वर्णमयी यज्ञस्तंभ ऐसा प्रकाशमान था२३जैसे कि राजसूययज्ञमें बहुतऊंचा यूप होताहै हे महाराज उस शल्यकी ध्वजामें बड़ा हाथी भी प्रका-शमान था २४ वह ध्वजा स्वर्ण से जटित अंगवाले मोरोंसे शोभा-यमान थी हे भरत वृष्णियोंमें श्रेष्ठ उस ध्वजाने आपकी सेनाको ऐसे शोभायुक्तकिया २५ जैसे कि देवराज इन्द्रकी सेनाको बड़ाश्वेत ऐरावत हाथी शोभित करताहै आपके पुत्र राजाकी ध्वजाका हाथी मणियों से जटित सुवर्ण से खचित २६ सैंकड़ों क्षुद्र घंटिकाओंसे शब्दायमान अपूर्व्व उत्तम रथपर शोभायमान था वह ध्वजा भी अत्यन्त शोभायमान हुई तब कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्य्योधनउस अपनीध्वजाओं समेत युद्ध करनेलगा२७आपकी सेनाको उनउत्तम ऊंची प्रलयकालके सूर्य्यके समानप्रकाशित नव ध्वजाओंने आपकी सेना को अत्यन्त प्रकाशित किया और हनुमान्जी से युक्त दशवीं ध्वजा एक अर्जुनकीथी २८।२६ उसी ध्वजासे अर्जुन ऐसे शोभाय मान हुआ जैसे कि अग्नि से हिमालय पर्व्वत शोभितहोता है उस के पीछे शत्रु संतापी महारथियोंने अपूर्व्व उज्ज्वल बड़ेबड़े३० धनुषों को अर्जुन के लिये हाथोंमें लिया हे राजा उसी प्रकार आपकी दुर्मतितामें दिव्यकर्मी शत्रुहंता अर्जुन ने गांडीवधनुष को लिया फिर आपके ही अपराध से अनेक राजा मारे गये ३१।३२ और जिन राजाओंको हाथीघोड़े और रथों समेत नाना देशोंसे बुलवा-याथा उन परस्पर गर्जने वाले लोगोंकी बड़ीचढ़ाई हुई ३३ दुर्य्यो-धनादिक धृतराष्ट्र के पुत्रोंके साथ पांडवोंमें श्रेष्ठ अर्जुन का बड़ा कठिन युद्ध हुआ श्रीकृष्णजी को सारथी रखने वाले अर्जुनने वहां

बड़ा अपूर्व कर्म किया ३४ कि जो अकेलाही निर्भयके समानबहुत से बड़े २ शूरबीरों के सन्मुख युद्ध करने वालाहुआ वह महाबाहु गांडीव धनुषको चलायमान करता शोभायमान हुआ ३५ और जयद्रथके मारनेका अभिलाषी हुआ शत्रुके तपाने वाले नरोत्तम अर्जुन ने वहां पर छोड़हुये हजारों बाणोंसे ३६ आपके शूरबीरोंको दृष्टिसे अलक्षकर दिया इसके पीछे उन सब नरोत्तम महारथियों ने भी ३७ युद्धमें बाणोंके समूहों से अर्जुनको चारों ओरसे ढंकदिया उन नरोत्तमों से कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन के ढंक जाने पर उनकी सेनाओंके बड़े शब्द प्रकट हुये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचमोऽध्यायः ॥ १०५

एकसौछःका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय जयद्रथसे अर्जुन के सन्मुख होनेपर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख बर्त्तमान पांचालों ने कौरवों के साथक्या किया १ संजय बोले हे महाराज तीसरे पहरको रोम हर्षणकरने वाले युद्ध में पांचाल और कौरवों के द्यूत रूप द्रोणाचार्य्यजी बर्त्तमान हुये २ हे श्रेष्ठ अत्यन्त प्रसन्न मन द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी और गर्जते हुये पांचालों ने बाणों की बर्षाको छोड़ा ३ इसके पीछे उन पांचाल और कौरवों का युद्ध अत्यन्त कठिन अपूर्व भयकारी देवासुरों के युद्धके समान हुआ ४ उस सेनाके छिन्नभिन्न करनेके अभिलाषी पांडवों समेत पांचालों ने द्रोणाचार्य्य के रथको पाकर बड़े अस्त्रोंको दिखलाया ५ रथ में नियत रथी सामान्य तीव्रतासे युक्त होकर पृथ्वीको कंपित करते हुये द्रोणाचार्य्य के रथके समीप बर्त्तमान हुये ६ केकय देशियोंका महारथी बृहत्क्षत्र इन्द्रबज्रके समान तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करता हुआ उसके सन्मुख गया ७ फिर बड़ायशस्वी क्षेम धूर्त्त हजारों तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ता शीघ्रही उसके सन्मुख गया ८ बड़े बलसे उदय होने वाले चंदेरी देशियों में श्रेष्ठ धृष्टकेतु भी ऐसे शीघ्रता से सन्मुख गया जैसे

कि देवेन्द्र संबर दैत्यके पास गयाथा ६ अत्यन्त खुलाहुआ मुख कालके समान अकस्मात् आतेहुये उस धृष्टकेतु के सन्मुख बड़ा धनुषधारी शूर धन्वा शीघ्रता से गया १० इसके पीछे पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने बिजयाभिलाषी सन्मुखतामें नियत हुये महाराज युधिष्ठिरको सेना समेत रोका ११ हे प्रभु आपका पुत्र पराक्रमी बिकर्ण उस युद्ध कुशल बड़े पराक्रमी आते हुये नकुल के सन्मुख हुआ १२ शत्रुबिजयी दुर्मुखने तीक्ष्ण चलने वाले हजारों बाणोंसे उसी प्रकार आतेहुये सहदेवको ढंकदिया १३ अत्यन्त तीक्ष्ण धार वाले बाणोंसे बारंबार कंपायमान करते व्याघ्रदत्त ने नरोत्तम सात्यकीको रोका १४ सोमदत्तने उत्तम बाणों को छोड़ते अत्यन्तक्रोध युक्त नरोत्तम उत्तम रथी द्रौपदी के पुत्रों को रोका १५ तब भयकारी रूप बड़े उत्कट महा रथी आर्षश्रृङ्गीने उस क्रोधयुक्त आते हुये भीमसेन को रोका १६ हेराजा युद्धभूमिमें उन दोनों नर और राक्षस का ऐसा कठिन युद्ध हुआ जैसा कि पूर्व्व समय में रामऔर रावण का हुआथा १७ हे भरतबंशी इसके पीछे भरतबंशियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ने झुकी गांठवाले नब्बे बाणों से द्रोणाचार्य्य को सब मर्मोंपर घायल किया १८ तब यशस्वी युधिष्ठिर से घायल क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य ने पच्चीस बाणोंसे उसको छातीपर घायल करके १६ सब धनुषधारियों के देखते उसको घोड़े ध्वजा और सारथी समेत बीस बाणों से बेधा २० फिर हस्तलाघवता दिखलाते धर्मात्मा पांडवने द्रोणाचार्य्य के उन छोड़े हुये बाणोंको अपने बाणों की बर्षासे हटाया २१ इसके पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य ने युद्ध भूमिके बीच उस धर्मात्मा धर्मराज के धनुषको काटा २२ और बड़ी शीघ्रता से हजारों बाणों के द्वारा इस टूटे धनुष वाले राजा युधिष्ठिर को सब ओरसे आच्छादित किया २३ सब जीवधारियों ने भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के बाणों से ढंके हुये राजा युधिष्ठिरको देखकर मृतक रूप माना २४ हे महाराज इसीप्रकार बहुत से मनुष्यों ने इस मुख फेरने वाले राजाको देखकर माना कि

यह राजा इस महात्मा ब्राह्मणके हाथसे मारागया २५ फिर बड़ी आपत्तिमें पड़े हुये उस धर्मराज युधिष्ठिर ने युद्ध में द्रोणाचार्य्य के काटे हुये उस धनुषको छोड़कर २६ दूसरे प्रकाशमान अत्यन्त दिव्य तीव्र धनुषको लेकर उस बीरने द्रोणाचार्य्य के उन चलायमान हजारों बाणों को २७ युद्धमें काटा यह आश्चर्य्य सा हुआ और क्रोध से रक्तनेत्र वाले युधिष्ठिर ने उन बाणोंको काटकर२८ युद्ध में पहाड़ोंको भी विदीर्ण करने वाली सुवर्ण दंड युक्त आठघंटे रखने वाली महा भयकारी भयानक शक्तिको हाथमेंलिया २६ हे भरतबंशी वह पराक्रमी प्रसन्न मुख उस शक्तिको फेंककर सब जीव धारियोंको भयभीत करता हुआ बड़े बलसे गर्जा ३० युद्धमें धर्मराज की उठाई शक्तिको देखकर सब जीवधारी अकस्मात् बोले कि द्रोणाचार्य्य का कल्याणहो ३१ राजाकी भुजासे छोंड़ीहुई कांचलीसे निकले हुये सर्पकी समान वह शक्ति आकाश दिशाबिदिशाओंको प्रकाशमान करती प्रकाशित मुख वाले सर्प की समान द्रोणाचार्य्यके पास पहुंची ३२हेराजा इसके पीछे अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने उस अकस्मात् गिरती हुई शक्ति को देख करब्रह्मास्त्रको प्रकट किया वह अस्त्र उस भयकारी दर्शन वाली शक्तिको अत्यन्त भस्म करके ३३।३४ शीघ्रता से यशस्वी धर्मराज के रथ पर गया हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे बड़े ज्ञानी राजा युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य्य के चलाये हुये उस अस्त्रको३५ब्रह्म अस्त्रसेही शान्त किया फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्य को पांच बाणों से घायल करके ३६ क्षुरप्रनाम अत्यन्त तीक्ष्ण बाणसे उनके बड़े धनुष को काटा तब क्षत्रियों के मर्दन करने वाले द्रोणाचार्य्य ने उस टूटे हुये धनुषको डालकर ३७ युधिष्ठिर के ऊपर अकस्मात् गदाको फेंका युधिष्ठिर ने उस अकस्मात् गिरती हुई गदाको देखकर ३८ बड़े क्रोधयुक्त होकर गदाको हीलिया और लेकर फेंका हे शत्रुसंतापी वह अकस्मात् छोड़ी हुई दोनों की दोनों गदा परस्पर मिलकर ३६ घिसावट से अग्नियों को छोड़कर पृथ्वी पर गिर पड़ीं हे श्रेष्ठ उस

केपीछे अत्यन्त क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य ने धर्मराज के चारों घोड़ोंको बड़े तीव्रचार उत्तम बाणोंसे मारा४० और इन्द्र की ध्वजाके समान धनुष को एक भल्लसे काटा ४१ एक बाणसे ध्वजा को काट कर तीन बाणों से युधिष्ठिर को पीड़ामान् किया हे भरतबंशियों मेंश्रेष्ठ फिर ऊपर को भुजा रखनेवाला अशस्त्र राजा युधिष्ठिर मृतकघोड़े वाले रथ से शीघ्रही कूदकर खड़ा हुआ उसको बिरथ और अधिकतर निश्शस्त्र देखकर ४२ । ४३ द्रोणाचार्य्यने शत्रुओंको और सब सेनाओं को अत्यन्त मोहित किया और इसके पीछे फिरतीव्रव्रती द्रोणाचार्य्य तीक्ष्ण बाणोंकेसमूहोंको छोड़ते४४ राजाकेसन्मुख ऐसे दौड़े जैसेकि गर्जताहुआ सिंहमृगके सन्मुख जाता है शत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यसे पराजितहुये उस युधिष्ठिरको देखकर४५ अकस्मात् पांडवोंके हायहाय शब्द प्रकटहुये हे श्रेष्ठ फिर पांडवों कीओरसे ऐसाशब्दभीहुआ कि भारद्वाजके हाथसे राजा मारागया ४६ हेभरतबंशी इसके पीछे कुन्तीका पुत्र राजायुधिष्ठिर शीघ्रही सहदेवके रथपर चढ़कर शीघ्रगामी घोड़ोंकेद्वारा दूर हटगया ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषष्ठोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय ॥

संजयबोले कि हेमहाराज क्षेमधूर्त्तीने उसदृढ़ पराक्रमीकेकयदेशी आतेहुये वृहत्क्षत्रको बाणोंसे छातीपर घायलकिया १ और द्रोणाचार्य्यकी सेनाको छिन्नभिन्न करनेके अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले राजा वृहत्क्षत्रने उसको नव्बेबाणों से व्यथित किया २ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने महात्मा वृहत्क्षत्र के धनुषको तीक्ष्ण पीतवर्णके भल्लसे काटा ३ फिर सब धनुषधारियोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ इस वृहत्क्षत्रको जिसकाकि धनुष टूटगयाथा गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से शीघ्रही युद्धमें घायल किया ४ फिर हंसतेहुये वृहत्क्षत्रने दूसरे धनुषको लेकर महारथी क्षेमधूर्त्तीको घोड़े सारथी और रथसे रहित करदिया ५ इसकेपीछे तीक्ष्ण धार पीतरंगवाले दूसरे भल्लसेत्रका-

कुंडल रखनेवाले राजा के शिर को शरीर से अलग किया ६ वह घुंघुरवाले बालोंवाला अकस्मात कटाहुआ उस का कुंडल समेत शिर पृथ्वीको पाकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि आकाशसे गिरा हुआ ताराहोताहै ७ फिर प्रसन्न चित्त महारथी वृहत्क्षत्र युद्ध में उसको मारकर अर्जुनके कारण से आपकी सेनापर अकस्मात दौड़ा ८ हे भरतवंशी पराक्रमी बड़े धनुषधारी बीर धन्वाने द्रोणाचार्य्य के निमित्त इस प्रकार जातेहुये धृष्टकेतु को रोका ९ बाण रूप डाढ़रखनेवाले बेगवान उन दोनोने परस्पर सन्मुख होकर हजारों बाणोंसे एकने दूसरे को घायलकिया १० वह दोनोंनरोत्तम परस्पर में ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि महाबन में बडे मतवाले गजराज लड़तेहैं ११ अर्थात् वह दोनों बड़े पराक्रमीपरस्पर मारनेकी अभिलाषासे ऐसे युद्ध करतेहुये जैसे कि क्रोधयुक्त दोशार्दूल पहाड़की गन्दरा को पाकर लड़तेहैं १२ हे राजा वह कठिन युद्ध देखने के योग्य सिद्ध चारणोंके समूहोंके आश्चर्यों से अपूर्व्वही देखनेके योग्य हुआ १३ इसके पीछे क्रोधयुक्तहंसते हुये बीरधन्वाने धृष्टकेतुके धनुष को भल्लसे दो खंड कर दिया १४ महारथी राजा चन्देरी ने उस टूटे धनुषको छोड़कर सुनहरी दंडवाली लोहेकी बड़ी शक्तिको हाथमें लिया १५ हे राजा फिर उस सावधानने उस बड़ी पराक्रमवाली शक्तीको दोनों हाथों से अकस्मात बीरधन्वा के रथपर फेंका १६ तब उस बीरोंकी मारने वाली शक्तीसे अत्यन्त घायल और टूटे हृदय वाला बीरधन्वा शीघ्रही रथसे पृथ्वीपर गिरा १७ हे समर्थ त्रिगर्त्तदेशियोंके उस महारथी बीरके मरनेपर आपकी सेना पांडवोंकी चढ़ाई से चारों ओर को छिन्न भिन्न हुई १८ उसके पीछे दुर्मुखने साठबाणों को सहदेवपर छोड़ा और युद्धमें पांडव सहदेवको घुड़कताहुआबड़ेशब्द से गर्जा १९ इसके पीछे हंसतेहुये क्रोधयुक्त भाई सहदेवने तीक्ष्ण बाणोंसे उसआतेहुये भाई दुर्मुख को घायल किया २० फिर दुर्मुखने युद्धमें उस बेगवान महाबली सहदेव को देखकर नवबाणों

से घायल किया २१ महाबली सहदेवने भल्लसे दुर्मुख की ध्वजा को काटकर तीक्ष्णधार वाले चार बाणों से चारोंघोड़ोंको मारा२२ फिर पीतरंग दूसरे तीक्ष्ण भल्लसे सारथी के शरीर से प्रकाशित कुंडल रखने वाले शिरको काटा २३ इसके पीछे सहदेवने क्षुरप्र-नाम तीक्ष्णबाणसे युद्धमें उसके बड़े धनुषको काटकर पांचबाणोंसे उसको भी घायल किया २४ हे भरतबंशी धृतराष्ट्र तब बिमन दुखी दुर्मुख उस मृतक घोड़ेवाले रथको त्याग करके निरमित्रके रथपर सवार हुआ २५ इसके पीछे शत्रुओं के संतापी क्रोधयुक्त सहदेव ने बड़े युद्धमें सेनाके भीतर भल्लसे निरमित्रको घायल किया २६ वह त्रिगर्त के राजाका पुत्र निरमित्र अपनी सेनाको दुःख युक्त करता रथके बैठने के स्थान से पृथ्वीपर गिर पड़ा २७ महाबाहु सहदेव उस को मारकर ऐसे अत्यन्त शोभायनान हुआ जैसे कि दशरथात्मज श्री रामचन्द्रजी बड़े पराक्रमी खर राक्षसको मारकर शोभितहुयेथे २८ हे राजा उस महारथी राजकुमार निर-मित्र को मृतक देखकर त्रिगर्त्तदेशियों में बड़ा हाहाकार हुआ२९ फिर नकुलने आपके पुत्र बड़े नेत्रवाले विकर्ण को भी एक मुहूर्त मात्रमें बिजय किया वह भी सबको आश्चर्य्यसा हुआ ३० तब व्याघ्रदत्तने सेनाके मध्यमें गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे सात्यकी को घोड़े सारथी और ध्वजा समेत दृष्टिसे गुप्त करदिया ३१ शूरसात्य-कीने हस्तलाघवताके समान उन बाणोंको रोककर अपने बाणोंसे व्याघ्रदत्तको घोड़े ध्वजा और सारथी समेत रथसे गिराया ३२ हे प्रभु उस मगधके राज कुमार के मरने पर युद्धमें कुशल मगधदेशी उस सात्यकीके सन्मुखगये ३३ बाणोंकोछोड़ते हजारों तोमर भिड-पाल प्राश मुद्गर औरमूशलोंकोछोड़तेहुये शूरोंनेयुद्धमें दुर्मदयादव सात्यकी से युद्धकिया हंसतेहुये पुरुषोत्तम पराक्रमीयुद्ध दुर्मद सा-त्यकीनेउनसबको३५बड़ी सुगमतासे बिजय किया हेसमर्थ मरनेसे बाकी बचेहुये चारोंओर से भागते हुये मगध देशियों को देखकर ३६ सात्यकी के बाणों से पीड़ामान आपकी सेना भिन्नभिन्न होगई

मधु देशियों में श्रेष्ठ सात्यकी युद्धमें आपकी सेनाको मारकर ३७
बड़ा यशस्वी उत्तम धनुष को चलायमान करता अत्यन्त शोभाय-
मान हुआ हे राजा महात्मा सात्यकी के हाथ से छिन्न भिन्न ३८
उस लम्बी भुजा वालेसे भयभीत वह सेना युद्धकेनिमित्त सन्मुख-
तामें बर्त्तमान नहीं रही इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य
अकस्मात दोनों नेत्रोंको उघाड़कर आपही उस सत्य कर्मा सात्य-
की के सन्मुख गये ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौआठका अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़ेयशवान् सौमदत्त ने बड़े धनुषधारी द्रौपदीके
पुत्रोंको पांच २ बाणोंसे घायल करके फिर प्रत्येक को सातसात
बाणोंसेछेदा १ हे समर्थ उसभयकारी सौमदत्तसे अकस्मात् अत्यन्त
पीड़ामान औरअचेत द्रौपदीकेपुत्रोंने युद्धमें करनेकेयोग्य किसी कर्म
कोभी नहीं जाना२शत्रुका पराजय करने वाला नकुलकापुत्र सता-
नीक नरोत्तम सौमदत्तको दो बाणोंसे घायल करके बड़ी प्रसन्नता
सेगर्जा ३ इसीप्रकार युद्धमें कुशल अन्यलोगोंने भी युद्धमें तीन २
बाणोंसे शीघ्रही उसक्रोधयुक्त सौमदत्तको घायल किया ४ हेमहा-
राज उसबड़ेयशस्वी सौमदत्तने उनकेऊपर पांचबाणोंको फेंका और
प्रत्येकको एक २ बाणसे हृदय पर घायल किया ५ इसकेपीछे उस
महात्माके बाणोंसे बहुत घायल उन पांचों भाइयोंने युद्धमें उसको
घेरकर शायकों से अत्यन्त घायल किया ६ फिर अत्यन्त क्रोध
युक्त अर्जुन के पुत्रने तीक्ष्ण धारवाले चार बाणों से उसके घोड़ों
को यमलोकमें पहुंचाया ७ भीमसेन का पुत्र उस महात्मा सौम-
दत्तके धनुषको काटकर बड़े बेग वाले शब्दको गर्जा और तीक्ष्ण
बाणों से घायल किया ८ युधिष्ठिर के पुत्रने उसकी ध्वजाको काट
कर पृथ्वी पर गिराया फिर नकुल के पुत्रने सारथी को रथके
बैठने के स्थानसे गिराया ९ और सहदेवके पुत्रने अपने भाइयों

से मुख फेरनेवाला जानकर क्षुरप्रनाम बाणसे महात्मा के शिरको काटा १० उसका शिर सुवर्णसे अलंकृत बालार्कके समान प्रकाशित युद्ध भूमिको सुशोभित करता पृथ्वीपर गिरपड़ा ११ हेराजामहात्मा सोमदत्तके कटेहुये उस शिरको देखकर आपकी सेनाके लोग भयभीत होकर अनेक प्रकारसे भागे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अलंबुष महाबली भीमसेन से युद्धमें ऐसे युद्ध करनेवाला हुआ जैसे कि रावण का पुत्र मेघनाद लक्ष्मणजी के साथ करनेवाला हुआ था १२ उन दोनों नर और राक्षसको युद्धमें कठिन युद्ध करने वाला देखकर सब जीवों को आश्चर्य्य पूर्व्वक बड़ी प्रसन्नता प्राप्तहुई १४ हे राजा इस के पीछे हंसते हुये भीमसेन ने तीक्ष्ण धार वाले नवबाणों से उस क्रोधयुक्त राक्षसाधिप अलंबुष राक्षसको घायल किया १५ इसके अनन्तर युद्धमें घायल हुआ वह राक्षस भयकारी शब्दको करके भीमसेन के सन्मुख दौड़ा और जो उसके आगे पीछे रहनेवाले थे वे भी दौड़े १६ उस राक्षस ने युद्धमें गुप्त ग्रन्थी वाले पांचबाणोंसे भीमसेन को घायल करके शीघ्रही भीमसेनके तीस रथोंको मारा १७ फिर चारसौ शूरबीरों को मारकर बाण से भीमसेन को घायल किया इस प्रकार उस राक्षसके हाथ से अत्यन्त घायल वह महा बली भीमसेन १८ मूर्च्छासे युक्त होकर रथके बैठने के स्थान पर बैठगया इसके पीछे महाक्रोध भरे बायुपुत्र भीमसेन ने १९ बोझेके साधनेवाले भयकारी उत्तम धनुषको खैंचकर तीक्ष्ण बाणों से अलंबुषकोसब ओर से पीड़ामान किया २० हे राजानीले बादलों के समान वह राक्षस बहुत बाणों से घायलहोकरफूलेहुये किंशुकके समान शोभायमान हुआ २१ युद्धमें भीमसेन के धनुषसे गिरेहुये बाणोंसे घायल हुआ राक्षस महात्मा पांडव के हाथ से भाई के मरने को स्मरण करता २२ भयानक रूप बनाकर भीमसेन से बोला हेकुन्तीके बेटे अब युद्धमें नियत होकर मेरे पराक्रम को देख २३ हे दुर्बुद्धी वह युद्ध मेरे पीछे जारी हुआ था जिसमें राक्षसोंमें श्रेष्ठ बड़ा पराक्रमी बकनाम मेरा

भाई तेरे हाथसे मारा गया २४ इसके पीछे अन्तर्द्धान होजाने वाले राक्षसने बाणोंकी बड़ी बर्षासे उस भीमसेन को अत्यन्त घायल किया २५ तब राक्षसके गुप्तहोने पर भीमसेन ने गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे आकाश को पूर्ण कर दिया २६ भीनसेन के हाथ से घायल वह नीच राक्षस क्षण भरही में रथ पर चढ़कर पृथ्वी पर आया और अकस्मात् आकाशको गया २७ बादलके समान शब्द करतेहुये उस राक्षसने छोटे और बड़े नाना प्रकार के अनेक रूपों को धारण किया अर्थात् कभी छोटा कभी लम्बा और कभी मोटा होजाता था २८ इसी प्रकार नाना प्रकार के बचनों को भी चारोंओर से बोला और आकाश से बाणोंकीहजारोंधारा गिरीं२९ शक्ति,क्षणिप,प्रास,शूल, पट्टिश,तोमर,शतघ्नी, परिघा,भिण्डिपाल, फरसा ३० शिलाखड्ग,अगुड़,दुधाराखड्ग,बज्र, यह सब आकाश से गिरे राक्षस की छोड़ीहुई अत्यन्त भयकारी शस्त्रोंकी बर्षाने३१युद्ध में जाकर पांडवकी सेनाके मनुष्योंको मारा उसयुद्धमें पांडवोंसेनाओं के हाथी नाशहुये ३२ हे राजा इसी प्रकार अनेक घोड़े और बहुत से पत्तिलोगभी नाशको प्राप्तहुये और उसके बाणोंसे घायल रथ सवार रथों से गिरपड़े ३३ रुधिर रूपी जल रथ रूपी भंवर छत्र रूप हंसरखने वाली हाथी रूप ग्राह और भुजा रूपसर्पों से व्याकुल३४राक्षसोंके समूहोंसे व्याकुल चंदेरी सृञ्जय और पांचाल देशियोंकी बहुधा बहाने वाली नदी जारी होगई ३५ तब अत्यन्त व्याकुल पांडवोंने उस प्रकार निर्भयके समान घूमने वाले राक्षसको और उसके पराक्रम को देखा ३६ फिर आपकी सेना में बड़ी प्रसन्नता हुई और बाजोंके बड़ेभारी भयकारी रोमहर्षण करने वाले शब्दजारीहुये ३७ पांडवने आपके भयकारी शब्दों को सुनकर ऐसे नहीं सहाजैसे कि हथेली से किये हुये शब्दको सर्प नहीं सह सक्ता ३८ इसके पीछे क्रोधसे रक्तनेत्रज्वलितअग्निके समान वायुपुत्र भीमसेनने आपही त्वष्टा देवताके समान त्वाष्ट्र अस्त्रको धनुष पर चढ़ाया ३९ उस अस्त्रसे हजारों बाण चारोंओरको प्रकट

हुये उन बाणोंसे आपकी सेनाके अत्यन्त भागने पर ४० युद्धमें भीमसेन से चलाये हुये उस अस्त्रने राक्षस की बड़ी मायाको नाश करके पीड़ामान किया ४१ भीमसेन के हाथसे बहुत घायल हुआ वह राक्षस युद्धमें भीमसेनको त्याग करके द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलागया ४२ हे राजा महात्मा भीमसेन के हाथ से उसराक्षसाधिपके बिजयहोने पर पांडवोंने अपने सिंहनादों से सब दिशाओं को शब्दायमानकिया ४३ उन अत्यन्त प्रसन्न मन वालोंने बायुके पुत्रमहाबली भीमसेनकी ऐसी प्रशंसाकरी जैसे कि मरुद्गण नाम देवतानेयुद्धमेंप्रह्लादको बिजयकरके इन्द्रकी स्तुति करीथी ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टमोऽध्यायः१०८ ॥

एकसौनवका अध्याय॥

संजय बोले कि इस प्रकार युद्धमें निर्भय के समान घूमने वाले अलंबुषके सन्मुख घटोत्कचगया औरशीघ्रहीतीक्ष्णधार वालेबाणों से उसकोघायल किया १ नानाप्रकारकी मायाको प्रकटकरने वाले उन दोनों राक्षसोत्तमों का युद्धऐसा भयकारीहुआ जैसा कि इन्द्र और संबर दैत्यकाहुआथा २ अत्यन्त क्रोधयुक्त अलंबुषने घटोत्कचको घायलकिया फिर उन दोनों प्रबलराक्षसोंका ऐसायुद्धहुआ ३ जैसे कि पूर्व्वसमयमें रामचन्द्रजी और रावणका युद्धहुआथा हे प्रभु फिर घटोत्कच ने बीस नाराचों से छाती के मध्य में ४ अलंबुष को घायल करके बारंबार सिंहनाद किया हे राजा इसी प्रकार अलंबुष भी उस युद्ध दुर्मद घटोत्कचको बेधकर ५ प्रसन्न मन चारों ओरसे आकाश को व्याप्त करता हुआ गर्जा उसी प्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी दोनों राक्षसाधिप ६ मायाओं के द्वारा परस्पर समान बल करने वाले हुये सदैव सैकड़ों मायाके करने वाले परस्पर एक एक को मोह युक्त करने वाले ७ मायाके युद्धोंमें सावधान मायाही के युद्ध करने वाले हुये घटोत्कच ने जिस जिस माया को प्रकट किया ८ हे राजा अलंबुषने उस उस मायाको मायाही

से नाश किया उस माया युद्धमें कुशल और युद्ध करने वाले उस राक्षसाधिप अलंबुष को देखकर पांडव लोग क्रोध रूप हुये अत्यन्त व्याकुल क्रोधयुक्त वह भीमसेनादिक पांडव रथों के द्वारा सब ओर से उस के सन्मुख गये हे श्रेष्ठ उन्हों ने अपने बहुत से रथोंसे उस को घेरकर १०।११ सब ओरको बाणोंसे ऐसा ढकदिया जैसे कि उल्काओं से हाथीको ढकते हैं वह मायाके अस्त्रोंसे उन्होंके बेगोंको दूर करके १२ उन रथ समूहोंसे ऐसे निकलगया जैसे कि बनकी अग्नि से हाथी निकल जाता है वह इन्द्र वज्र के समान शब्दायमान भयकारी धनुष को टंकार कर १३ वायु के पुत्र भीमसेन को तीस बाणसे युधिष्ठिर को तीन बाणों से सहदेव को सातबाण से नकुल को बहत्तर बाणों से और द्रौपदीके पुत्रोंको पांच पांच बाणों से छेदकर बड़े भयकारी शब्दसे गर्जा १५ भीमसेन ने उस राक्षस को नवबाणोंसे सहदेव ने पांच बाण से युधिष्ठिर ने सौ बाणों से घायल किया १६ फिर नकुल ने चौंसठ बाणसे द्रौपदी के पुत्रों ने तीन २ बाणसे घटोत्कचने पचासबाणसे उसको घायलकरके १७ फिर सत्तर बाणसे घायल करता हुआ बड़े बेगसे गर्जा हे राजा उसके बड़े शब्दसे यह पृथ्वी १८ पर्व्वत वृक्ष और नदियों समेत कंपायमान हुई सब ओरसे उन बडे धनुष धारी महारथियों से अत्यन्त घायल उस राक्षस ने १९ उन सबको पांच पांच बाणोंसे घायल किया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त घटोत्कच राक्षस ने उस क्रोध भरे राक्षस को २० सात बाणोंसे घायल किया तब उस बलवान्के हाथसे अत्यन्त घायल उसबड़े पराक्रमीराक्षसाधिपने २१ शीघ्रही सुनहरी पुंख तीक्ष्ण वाले बाणों को छोड़ा वह झुकी हुई गांठ वाले बाण राक्षस के शरीर में ऐसे प्रविष्ट होगये २२ जैसे कि बड़े बलवान् प्रसन्न सर्प पर्बत के शिखरमें प्रविष्ट करते हैं हेराजा उसके पीछे उन व्याकुल पांडवों ने चारोंओर से तीक्ष्ण धार वाले बाणोंको २३ बर्षाया और हिडम्बाके पुत्र घटोत्कच ने युद्ध में बिजय से शोभापानेवाले पांडवों से घायल २४ मरण धर्मको पाने

वाले उस राक्षस ने करने के योग्य कर्म को नहीं जाना इसके पीछे युद्धमें भीमसेन के पुत्र घटोत्कचने २५ ऐसी दशावाले उस राक्षसको देखकर उसके मारनेके निमित्त मनसे बिचारकिया और उसराक्षसाधिपके रथपर बड़ा बेगकिया २६ क्रोधयुक्त घटोत्कच नेरथ के द्वारा सन्मुख जाकर भस्महुये पर्व्वतके शिखरकेसमान टूटे हुये बादलोंके समूहके सदृशरथको पकड़लिया २७जैसेकिगरुड़जो सर्पकोपकड़लेते हैं उसीप्रकार उसराक्षसकोभी रथसेउठालिया और भुजाओंसेदबा करबारंबार घायल करके २८शीघ्रही पृथ्वीपर ऐसापिसाजैसेकिपूर्ण घटको पत्थर पर घिसतेहैं बल पराक्रमको तीव्रतासे युक्त २९क्रोधयुक्त घटोत्कचने युद्धमें सबसेनाओं को डराया सब अंगोंसे रहित चूर्णीभूत अस्थि भयकारी सूरतवाला राक्षस ३०उसबीर घटोत्कचके हाथसे मारागया फिर उस राक्षसके मरनेपर प्रसन्नचित्त पांडव ३१ सिंहनादसे गर्जना करनेलगे और बस्त्रोंकोभी फिराया और आपके शूरबीर और सेनाके लोगोंने उसबड़े पराक्रमी राक्षसोंके राजा ३२ अलंबुषको अत्यन्त फटेहुये पर्व्वतके समान देखकर हाहाकारोंको किया उस अपूर्व्व दर्शनीयके देखनेके इच्छावान् मनुष्योंने दैवइच्छासे मंगल नक्षत्रके समान पृथ्वीपर पड़ेहुये उस राक्षस कोदेखा ३४ फिर घटोत्कचने उसबड़े पराक्रमी राक्षसको मारकर बडे बलको प्रकट करके ऐसा शब्दकिया जैसेकि राजाबलिको मारकरके इन्द्रने कियाथा ३५ तबउस कठिन कर्मके करनेपर बान्धव और पिताओंसे स्तुतिमान वह घटोत्कच पकेहुये लजालूवृक्षके समान अलंबुषशत्रुको मारकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ३६ इसकेपीछे शंखोंके और नाना प्रकारके बाणोंके शब्दों समेत बहुतबड़े शब्दहुये जिसको सुनकर पांडव लोग गर्जे फिर इतना बड़ा शब्दहुआ कि स्वर्गलोककोभी स्पर्शकरगया ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिनवमोऽध्यायः १९॥

—*—

एकसौदशकाध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हेसंजय द्रोणाचार्य्यनेयुद्धमें कैसेसात्यकी कोरोका इसकोमूलसमेत मुझसेकहो इसके सुननेका मुझकोबड़ा उत्साहहै १ संजय बोले हे बड़ेज्ञानी राजा धृतराष्ट्र जिनका अग्रगामी सात्यकी है उन पांडवोंके साथ उस रोमांच खड़े होनेवाले द्रोणाचार्य्यके युद्धको मुझसेसुनो २ हे राजा सात्यकीसे घायलहुई सेनाको देखकर आप द्रोणाचार्य्यजी उस सत्य पराक्रमी सात्यकीके सन्मुखगये ३ सात्यकीने उस अकस्मात् आतेहुये महारथी द्रोणाचार्य्यको पच्चीस बाणोंसे घायलकिया ४ युद्धमें पराक्रमी और सावधान द्रोणाचार्य्यनेभी सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण पांचबाणोंसे सात्यकीको घायल किया ५ हे राजा शत्रुके मांसके भोजन करनेवाले वहबाण अत्यन्त दृढ़ कवचको काटकर सर्पोंके समान श्वासा लेतेहुये पृथ्वीपर गिर पड़े ६ उसलम्बी भुजावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त चाबुकसे संतप्तकिये हाथीके समान सात्यकीने अग्निके समान नाराचनाम पचास बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छेदा७ युद्धमें सात्यकीके हाथसे घायल द्रोणाचार्य्यने उपाय करनेवाले सात्यकीको बहुतसे बाणोंसेछेदा ८ इसके पीछे क्रोधयुक्त बड़े धनुषधारी महापराक्रमी द्रोणाचार्य्यने गुप्तग्रन्थी वाले बाणसे फिर यादव सात्यकीको पीड़ित कियाह हे राजा युद्धमें द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल सात्यकीने करनेकेयोग्य किसीकर्मको नहीं पाया १० युद्धमें तीक्ष्णबाणोंके छोड़नेवाले द्रोणाचार्य्य को देखकर सात्यकी भी व्याकुल मुखहुआ११ आपकेपुत्र और सेना के लोग उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न मनसे सिंहके समान बारंबार गर्जे १२ हे भरत वंशी वह राजायुधिष्ठिर उसभयकारीशब्दको और माधव सात्यकी को पीड़ामान सुनकर सबसेनाके लोगोंसे बोला १३ कि वृष्णियों में श्रेष्ठ सत्यपराक्रमी वहसात्यकी युद्धमेंवीरद्रोणाचार्य्यसे ऐसेग्रसा जाताहै जैसे कि सूर्य्य राहुसे १४ चलो वहांजावो जहांपर कि सात्यकी लड़ताहै यहबात राजानेपांचालदेशी धृष्टद्युम्न

सेकही १५ हे पुरुषत के पौत्र क्यों खड़ेहो तुम द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जावो तुम द्रोणाचार्य्यसे हमारे समक्षमें नियत कठिनभयकोनहींदेखतेहो १६ यह बड़ा धनुषधारी द्रोणाचार्य्य युद्ध में सात्यकीके साथ ऐसे क्रीड़ा करता है जैसे कि बालक सूतमें बंधे हुये पक्षी के साथ करताहै १७ भीमसेन जिनमें अग्रगणनीय है वह सब उसके पास जावो और सब तुम्हारे साथमें होकर सात्यकी के रथ के समीप पहुंचे १८ मैं सेनासमेत तुम्हारेपीछे चलूंगा अब तुम सबयमराजके मुखफंसेहुये सात्यकी को छुड़ावो १९ हे भरतबंशी राजा इसप्रकार सब से कहकर सबसेनाके लोगोंसमेत सात्यकीके कारणसे युद्ध में द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया २० आपका कल्याणहो वहां अकेले द्रोणाचार्य्यसे लड़नेके अभिलाषी पांडव और सृञ्जयों के बड़े शब्द सब ओर से प्रकट हुये २१ वह नरोत्तम महारथी द्रोणाचार्य्य के सन्मुख होकर कंकपक्ष और मयूरपक्षों से युक्त तीक्ष्ण बाणों से वर्षा करनेवाले हुये २२ फिर मन्द मुसकान करते द्रोणाचार्य्य ने आपही उन बीरोंको ऐसे लिया जैसे कि आये हुये अतिथियों को जल और आसनसे लेतेहैं २३ वह धनुषधारी लोग उन द्रोणाचार्य्य के बाणों से ऐसे तृप्त हुये जैसे कि अतिथि लोग राजाकी अतिथि शालाको पाकर तृप्त होतेहैं हे प्रभु वह सब लोग द्रोणाचार्य्य की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहींहुये जैसेकि मध्याह्न के समय सूर्य्यके देखनेको समर्थ नहीं होते हैं २५ फिर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने उन सब बड़े धनुषधारियों को बाणों के समूहों से ऐसे संतप्त किया जैसे कि अपनी किरणों से सूर्य्य सबको तप्त करता है २६ हे महाराज इसप्रकार घायल हुये पांडव सृंजियों ने अपना रक्षक ऐसे नहीं पाया जैसे कि कीच में फंसा हुआ हाथी २७ द्रोणाचार्य्य के बड़े बाण अच्छेप्रकार से चलाय मान होकर ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि चारोंओर से तप्त करनेवाले सूर्य्य की किरणें होती हैं २८ उस युद्ध में द्रोणाचार्य्य के हाथसे वह पच्चीस पांचाल देशी मारेगये जो कि धृष्टद्युम्नके अंगीकृत

महारथी प्रसिद्धथे २९ सबसेनाओंके मध्यमें पांचाल और पांडवोंके उत्तम २ शूरबीरों के मारनेवाले शूरबीर द्रोणाचार्य्य को देखा ३० हे महाराज वह द्रोणाचार्य्य केकयलोगों के सौ शूरबीरों को मार कर चारोंओरसे छिन्न भिन्न करके मुख फैलाकर मृत्यु के समान नियत हुये ३१ महाबाहु द्रोणाचार्य्यने सैकड़ों हजारों पांचाल सृञ्जी मत्स्य और केकय लोगोंको विजय किया ३२ द्रोणाचार्य्य के शायकों से घायल उनलोगों के शब्द ऐसे प्रकट हुये जैसे कि बनके मध्यमें अग्नि से व्याप्त बनबासियों के होतेहैं ३३ हे राजा वहांपर देवतालोग गन्धर्ब पित्रों समेत बोले कि यह पांचाल और पांडव लोग सेना के सब मनुष्यों समेत जातेहैं ३४ युद्ध में इसी प्रकार सोमकों के मारनेवाले उस द्रोणाचार्य्य के सन्मुख भी नहीं गये कितनेही लोग घायल भी नहींहुये ३५ इसरीतिपर उनउत्तम बीरोंके उस महाभयकारी नाशके होनेपर युधिष्ठिरने अकस्मात् पांचजन्य शंख के शब्दको सुना ३६ जयद्रथ के सहायक बीरों के लड़नेपर बासुदेवजी का पूर्णकियाहुआ वह शंखोंकाराजा पांचजन्य अत्यन्त शब्द करताहै ३७ अर्जुनके रथके पास धृतराष्ट्र के पुत्रों के गर्जने और चारोंओर से गांडीव धनुष के शब्द न सुनाई देनेसे ३८ मूर्च्छासे घायलराजा युधिष्ठिरनेचिन्ताकरी कि निश्चय करके अर्जुनका कल्याण नहींमालूम होताहै क्योंकि ऐसे शंखशब्द करताहै और कौरव लोगप्रसन्न होकर बारंबार गर्जतेहैं इसप्रकार बिचार करते बारंबार अचेत होतेहुये अजात शत्रु युधिष्ठिर जयद्रथ केमारनेमें निर्विघ्नता चाहनेवाला अन्तःकरणसे व्याकुल अश्रुपातों से गद्गद बचनों समेत शिनी बंशियों में श्रेष्ठ यादव सात्यकी से बोला ४०।४१ हे सात्यकी आपत्तिकालमें मित्रोंके काममें जोवह सनातनधर्म पूर्ब्बसमय में अच्छे लोगोंसे देखागया है वहीसमय अब बर्त्तमान हुआहै ४२ हे शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी मैं सब बीर लोगोंमें सबको शोचता हुआ तुझसे अधिकतर किसी अपने शुभचिन्तकको नहींदेखताहूं ४३ कि जो सदैव प्रसन्न मन और सदैव

अनुकूलहै आपत्तिकाल में प्रवृत्त होकरभी वह कर्म करनेके योग्य है ४४ जैसेकि केशवजी सदैव पांडवोंके रक्षकहैं हे सात्यकी उसी प्रकार तुमभी श्रीकृष्णजी केही समान पराक्रमीहो ४५ मैं तुम्हारे ऊपर भारको रक्खूंगा तुम उसके उठाने के योग्य हो तुम मेरे बिचारकोकभीव्यर्थ करनेकेयोग्य नहींहो ४६ हेनरोत्तमसोतुम युद्धमें भाईके समान अवस्था और गुरूरूप अर्जुन की आपत्तिकाल में सहायताकरो ४७ तुम सत्यसंकल्पी होकर मित्रों के निर्भय करने वाले प्रसिद्धहो ४८ हे सात्यकी मित्रके निमित्तजो युद्ध करनेवाला पुरुष शरीर को त्यागकरे और जो ब्राह्मणों के अर्थ पृथ्वीको दान करे वह दोनों समानहैं ४९ जो राजा इस सब पृथ्वीको बिधिके अनुसार ब्राह्मणों के लिये दान करके स्वर्ग को गये उन सबको हमने बहुत सुनाहै ५० हे धर्मात्मा अब मैं यहां हाथजोड़कर तुझसेभी प्रार्थना करताहूं हे समर्थ पृथ्वीदान के समान अथवा इससेभी अधिक फल होगा ५१ हे सात्यकी मित्रोंके निर्भय करनेवाले एक श्रीकृष्णजी सदैव युद्धमें प्राणोंकी प्रीतिको त्याग करतेहैं और दूसरे तुम ५२ युद्धमें यशके चाहनेवाले और पराक्रम करने वाले बीरका सहायक बीर पुरुषही होसक्ताहै दूसरा सामान्य पुरुषनहीं होसक्ताहै ५३ हे माधव इसप्रकार के युद्धमें बर्त्तमान अर्जुन का रक्षक युद्धमें तेरेसिवाय कोई दूसरा बर्त्तमान नहींहै ५४ तेरे सैकड़ों कर्मोंकी प्रशंसा करते और मेरी प्रसन्नताको उत्पन्न करतेहुये पांडव अर्जुन ने तेरे कर्मोंको बारंबार कहाहै ५५ कि हस्तलाघवी अपूर्व्व युद्ध कर्त्ता तीव्र पराक्रमी और सब अस्त्रज्ञों में बुद्धिमान् शूर सात्यकी युद्धमें अचेत नहीं होताहै ५६ वह महात्मा महारथी महास्कन्ध बड़ा बक्षस्थल महाबाहु महाहनु महाबली और महाबीर्य्यवानहै ५७ और मेरा शिष्य होकर और मित्रहै मैं उसका प्याराहूं और वह मेरा प्याराहै मेरा सहायक सात्यकी कौरवोंको छिन्नभिन्न करके मर्दन करेगा ५८ हे महाराज जो हमारे निमित्त केशवजी वीर्यमें प्रवृत्त होंय व बलदेवजी व अनिरुद्ध व महारथी प्रद्युम्न ५९

गद दशार्ण और शाम्ब भी वृष्णियों समेत युद्ध के मुखपर ६० सन्नद्ध होकर सहायताके लिये आकर नियत होंय हे महाराज तौ भी मैं इस सत्य पराक्रमी नरोत्तम सात्यकी को अपनी सहायता में संयुक्त करूंगा उसके समान दूसरा कोई नहीं है ६१ हे तात द्वैत बनके मध्य अच्छेलोगों की सभामें तेरे परोक्ष में तेरेसत्य गुणों को कहते हुये अर्जुनने मुझसे कहाहै ६२ हे वृष्णिबंशी तुम उसअर्जुन के इस संकल्प और मेरे और भीमसेनके संकल्पको निरर्थक और मिथ्या करने को योग्य नहीं हो ६३ जो मैं तीर्थों में घूमता द्वारकापुरी को गया वहां भी मैंने तेरी भक्ति को अर्जुन में देखा ६४ हे सात्यकी मैंने तेरीसी प्रीति दूसरों में नहीं देखी जैसे तुम युद्ध में वर्त्तमान हम लोगोंको चाहतेहौ ६५ हे महाबाहु बड़े धनुषधारी माधव सात्यकी तुम कुलीनता से भक्ति से मित्रता से शिष्यता से प्रीतिसे पराक्रम से कुलके गुणों से ६६ और सत्यता के अनुसार अर्जुन पर दया करने के लिये कर्म करने को योग्यहो भीमसेन और हम सब सेना समेत युद्धमें प्रवृत्त होकर उन द्रोणाचार्य्यको रोकेंगे जो तेरे सन्मुख जांयगे हे सात्यकीयुद्धमें चलायमान सेनाओं को और भरतबंशियों की छिन्नभिन्न सेनाओंको देखो और युद्धमें होनेवाले बड़े शब्दको भी सुनो ७१ जिसप्रकार से पर्व्वों में कठिन बायु की तीव्रता से समुद्र व्याकुल होता है उसीप्रकार अर्जुन के हाथसे दुर्योधन की सेना उच्छिन्न होगई ७२ चारोंओर से दौड़ते हुये रथ घोड़े और मनुष्यों से उठीहुई यह धूलभी चारों ओरसे बर्त्तमान है ७३ शत्रुके बीरोंका मारनेवाला अर्जुन अत्यन्त समीपी बर्त्तमान नखर प्रांसोंसे लड़नेवाले सिन्धु सौवीरनाम शूरबीरों से घिराहुआ है ७४ यह सेना हटाने के योग्य है और जयद्रथ का विजय करना संभव है यह सब लोग जयद्रथ के अर्थ अपने२ जीवन को त्यागे हुये हैं ७५ धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी उस सेनाको देखो जो कि उत्तम बाण शक्ति ध्वजाकी रखनेवाली घोड़े हाथियों से व्याकुल होकर कठिनतासे सन्मुखताके योग्य है ७६ दुन्दुभी

और शंखों के बड़ेशब्द सिंहनाद वा रथ की नेमियों के शब्दों को सुनो ७७ हजारों हाथी पति और चेष्टा करते वा पृथ्वीको कंपायमान करते सवारों के शब्दोंको सुनो ७८ प्रथम जयद्रथ की सेनाहै उसके पीछे द्रोणाचार्य्य की सेनाहै हे नरोत्तम वह इतनी अधिक है कि देवराज को भी पीड़ित करसके ७९ उस असंख्य सेनामें डूबा हुआ अर्जुन भी जीवन को त्यागे हुये है जो युद्धमें वह जीवन को त्यागदेगा तो उसके मरने पर मुझसा राजा कैसे जीसक्ताहै ८० तेरे जीवते हुये मैंने सब रीतिसे बड़े कष्टको पाया हे तात वह श्याम तरुण दर्शनीय शीघ्रता से अस्त्रोंका चलानेवाला अपूर्व्व युद्धकर्त्ता महाबाहु पांडव अर्जुन सूर्य्य के उदय होने के समयपर भरतवंशियोंकी सेनामें प्रवेशित हुआहै और अब दिन ढलावपर है ८१।८२ हे यादव मैं उसको नहीं जानताहूं कि वह जीवता है अथवा नहीं जीवता है और कौरवोंकी वह सेना भी समुद्र के समान बड़ीहै८३ हे तात वह अकेला महाबाहु अर्जुन बड़े युद्ध में देवताओं से भी असह्य भरतवंशियोंकी सेना में प्रविष्टहुआ है८४ अबमेरी बुद्धि किसी दशामें भी युद्धमेंनियतनहीं होती और युद्धमें वेगवान् द्रोणाचार्य्यभी मेरी सेनाको पीड़ादेते हैं ८५ हे महाबाहो जिसप्रकार यह ब्राह्मण घूम रहा है वह तेरे नेत्रों के समक्ष है तुम साथही आगे आजाने वाले कार्य्यों में सावधान और कुशल हो ८६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले सात्यकी शीघ्र करने के योग्य बड़े कर्म के करने को योग्य हो इस कामको मैंने सब कामों से बड़ा मानाहै ८७ कि युद्धमें अर्जुनको रक्षा और सहायता करनी योग्यहै मैं उस जगत् के स्वामी रक्षक श्रीकृष्ण जी को नहीं शोचताहूं ८८ हे तात वह पुरुषोत्तम युद्ध में सन्मुख होनेवाले तीनोंलोकों को भी विजय करने को समर्थ है यहतुझसे सत्य २ कहताहूं ८९ फिर दुर्य्योधन की यह अत्यन्त निर्बल सेना क्या पदार्थ है हे यादव युद्ध में बहुत बीरों से पीड़ामान वह अर्जुन ९० युद्धमेंही कहीं प्राणों को न त्याग दे इसहेतु से मैं मूर्च्छित हुआ जाताहूं तुम उसकेही मार्गपर जावो जैसे कि तुम सरीखे

बीर जाते हैं ९१ उसप्रकारवाले समयपर मुझ सरीखे राजासे प्रेरणा किये हुये तुम जावो वृष्णियोंके बड़ेबीरों में युद्धके करनेवाले दोही अतिरथीकहे हैं ९२एक महाबाहु प्रद्युम्न और दूसरे यादवों मेंप्रसिद्ध तुमहो हे नरोत्तम तुमअस्त्रोंमें नारायणके समान बलपराक्रममें बलदेवजीके समान ९३ और बीरतामें अर्जुनके सम तुल्यहो लोकमें सन्त लोग भीष्म और द्रोणाचार्य्यको उल्लंघनकर तुझपुरुषोत्तम को सब युद्धोंमें कुशल और सावधानकहते हैं और हे माधव यहभी वर्णन करते हैं कि लोकमें ऐसा कोई कर्म नहीं है जिसको सात्यकी नहीं करसके ९४।९५ इसहेतुसे हे बलवान् पराक्रमी जो मैं तुमसे कहूं उसके करनेको तुमयोग्यहो हेमहाबाहु तुममेरे अर्जुन के और लोकके विश्वासपात्रहो ९६ अन्यथा करनेके योग्यनहींहो प्यारे प्राणोंको त्याग करके युद्धमें वीरोंके समान भ्रमण करो९७ हे सात्यकी युद्ध में यादव लोग अपने जीवन और प्राणों की रक्षा नहीं करते हैं युद्ध न करना युद्धमें नियत न होना और भागना ९८ यहमार्ग भयभीत और नीचलोगोंका है यादवलोगोंका किसीदशा में भी नहींहै हे शिनियोंमें श्रेष्ठ तात सात्यकी धर्मात्मा अर्जुन तेरा गुरूहै ९९ और वासुदेवजीभी तेरे औरबुद्धिमान् अर्जुन के गुरूहैं इन दोकारणोंको मैं जानताहूं इसीसे मैंने तुझसे कहाहै १०० मेरे वचनका अपमान मतकर मैंतेरेगुरूकाभी गुरूहूं वासुदेवजीका अर्जुनका और मेरा वह मतहै १०१मैंने तुझसे यहसत्य२ होकहाहै अब तुममेरे कहनेसे शीघ्र वहांजावो जहां कि अर्जुनवर्त्तमानहै हे सत्य पराक्रमी इस मेरे वचनको जानकर १०२ दुर्बुद्धी दुर्योधन की इससेनामें प्रविष्ट होकर न्यायके अनुसार महारथियों सेभिड़कर जैसा उचितहै वैसाहीयुद्धमें अपना कर्म दिखलावो१०३

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौग्यारहका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ प्रीतिसे संयुक्त वृद्ध मधुराक्षसोंसे

लिष्ट समयके अनुसार अद्भुत औरन्यायके अनुसारभी जो २ कहा १ उस धर्मराज के बचनों को सुनकर शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकीने युधिष्ठिरको उत्तर दिया २ हे अधिकारसे च्युत न होनेवाले आपके कहेहुये इनसब बचनोंको मैंने सुना यह आपके वचन न्यायसे युक्त अपूर्व्व और अर्जुनके प्रयोजनमें यशके करनेवालेहैं ३ हे महाराज इसप्रकारके समयपर मुझसरीखे शुभचिन्तकको देखकर आपको उसीप्रकार की आज्ञाकरनी उचित है जैसे कि अर्जुनको करतेहो ४ किसीदशामेंभी अर्जुन के प्रयोजनमें मेरे प्राण रक्षाके योग्य नहींहैं फिरमैं युद्धमें आपकी आज्ञासे कौनसा कर्म नहीं कर सक्ता अर्थात् जो आपकहेंगे उसी को करूंगा ५ हे महाराज आपकी आज्ञाको पाकर मैं देवता असुर और मनुष्यों समेत तीनोंलोकोंसे भी युद्ध करसक्ताहूं यहां यह अत्यन्त अल्प पराक्रमी सेना कौन वस्तुहै ६ हे राजा अब मैं युद्धमें चारोंओरसे दुर्योधनकी सेनासे युद्धकरूंगा और युद्धमें सबको विजयकरूंगा ७ हेराजा आप सावधान रहिये मैं बुद्धिमान् अर्जुनको पाकर जयद्रथके मरनेपर आपके पास आऊंगा ८ हे राजा वासुदेवजीका औरबुद्धिमान् अर्जुनका जो वचनहै वह सबभी मुझको आपसे कहना अत्यन्त योग्यहै ९ सबसेनाके मध्यमें वासुदेवजी के समक्ष में अर्जुन मुझको वारंवार यह समझागया है १० कि हे माधव अबतुम युद्धमें उत्तम बुद्धिकोकरके बड़ी सावधानीसे सचेत होकर जबतक किमैं जयद्रथ को मारकर आऊं तब तक श्रेष्ठ रीतिसे राजाकी रक्षा करो ११ हे महाबाहो मैं तुझपर अथवा महारथी प्रद्युम्नपर राजाको धरोहड़ के समान सुपुर्द करके निर्पेक्ष होकर जयद्रथके सन्मुख होऊंगा १२ तुम दुर्य्योधन के विश्वासपात्र और शुभचिन्तक द्रोणाचार्य्य को युद्धमें जानतेहो हे समर्थ उस देखने वालेने दुर्य्योधनसे यह प्रतिज्ञाकीहै किमैं देखतेही युधिष्ठिरको पकड़कर तेरेसुपुर्द करूंगा इसकारण भारद्वाज द्रोणाचार्य्य भी युधिष्ठिरके पकड़नेकीअभिलाषा करताहै यहद्रोणाचार्य्यजी युद्ध में युधिष्ठिर के पकड़नेको समर्थहैं १४ अब मैं इस

रीति से नरोत्तम धर्मराज युधिष्ठिर को तेरे सुपुर्द करके जयद्रथके मारने को जाऊंगा १५ हे माधव मैं जयद्रथको मारके शीघ्र आऊंगा ऐसा न होय कि युद्ध में द्रोणाचार्य्य बलकरके युधिष्ठिरको पकड़ें १६ हे सात्यकी भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के हाथ से धर्मराज युधिष्ठिर के पकड़ने पर वैसीही मेरी अप्रसन्नता होगी १७ अर्थात् सत्य बक्ता नरोत्तम युधिष्ठिरके पकड़ेजाने पर फिर हम लोगों को बनमें जाना होगा १८ और यह सब मेरीबिजय की हुई अत्यन्त व्यर्थ और निरर्थक होजायगी जो क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर को पकड़ेंगे हे माधव सो तुम युद्ध में मेरे प्रिय के निमित्त और बिजय रूपी यशके अर्थराजाकी रक्षाकरो २० हे समर्थसदैव द्रोणाचार्य्य से भयको मानने वाले अर्जुनकी ओरसे आप मुझको धरोहड़ रूप सुपुर्द कियेगयेहो २१ हे समर्थ महाबाहो मैं सदैव युद्धमें प्रद्युम्न के सिवाय किसी दूसरेको उससे सन्मुखता करनेको नहीं देखताहूं२२ वहमुझको बुद्धिमान द्रोणाचार्य्यकेयुद्धमें योग्यसमझताहैसो मैं इसबिश्वास औरगुरूकेउस बचनको २३ अथवातुम्हारे त्याग करनेको साहस नहीं करताहूं अजेय कवचधारी द्रोणाचार्य्य २४ तुमको युद्धमें सन्मुख पाकर अपनी हस्तलाघवतासे इस प्रकार क्रीड़ा न करैं जैसेकि बालक पक्षी के साथ करता है जो धनुष हाथमें लेनेवाला मकरध्वज प्रद्युम्न यहां होवे तो मैं तुमको उसके पास छोड़ूं क्योंकि वह अर्जुनके समान तुम्हारी रक्षाकरेगा और तुमभी अपनी रक्षाकरो मेरेजानेपर आपका ऐसा रक्षककौन है २६ जोकि युद्धमें तबतक द्रोणाचार्य्यकी सन्मुखताकरे जबतक कि मैं जयद्रथ को मारकर युधिष्ठिर के पास न आजाऊं हे राजा अबतुम अर्जुनकी ओरका कभी भयमतकरो २७ वहमहाबाहुअपने ऊपर भार को उठाकर कभी पीड़ामान नहीं होताहै जो सौबीरक सिन्धु बासी पौरव उत्तरीय दक्षिणीय शूरबीर आदिक महारथी हैं और जो कर्णमुख नाम बड़े रथी बिख्यात हैं २८ यह सब क्रोध युक्त अर्जुनके सोलहवीं कलाके भी समान नहीं हैं हे राजा देवता

असुर मनुष्य राक्षसोंके समूह किन्नर और बड़े २ सर्पोंसमेतउपाय करने जड़ चैतन्य जीवों समेत सब पृथ्वी युद्धमें अर्जुनके साथलड़ने कोसमर्थ नहींहैं ३१हे महाराज इसप्रकार जानकर आप अर्जुन के बिषयमें उत्पन्न भय को कभीमनमें भी न लाओ जहांपर सत्य पराक्रमी धनुषधारी बीर अर्जुन और श्रीकृष्णजीहैं ३२ वहांकिसी प्रकारकाभी आपत्ति कर्मनहीं व्याप्तहोताहै तुम युद्धमें भाईअर्जुन के दिव्य अस्त्रोंके योगक्रोध ३३ यादव कृष्णकोउपकार और दयाको बिचारकरो और मेरेदूरजाने अर्थात्अर्जुन के पासचले जानेपर३४ तुम युद्धमें द्रोणाचार्य्यकी अपूर्व्व अस्त्रबिद्या को बिचारो हेराजा आचार्य्यजी आपके पकड़नेको अत्यन्तइच्छाकररहेहैं ३५ हेभरत बंशी वहगुरूजी अपनीप्रतिज्ञाके सत्यकरनेकोतुम्हारेपकड़नेकेअभिलाषीहैं अबअपनीरक्षाकरिये मेरेजानेपर आपकारक्षककौन है ३६ जिसपर भरोसाकरके और उसके सुपुर्द गोमें आपको करकेमैंअर्जुन के पास चलाजाऊं हे महाराज मैं इस महायुद्ध में आपको सुपुर्दन करके३७कहीं नहीं जाऊंगा हेकौरव मैं यह आपसेसत्य २ कहताहूं हेबुद्धिमानों में श्रेष्ठ तुम अनेक प्रकारकी बुद्धि से इसको बिचारकरये३८और बुद्धिसेही अपने बड़ेकल्याणको देखलो तबमुझकोआज्ञा करो३९युधिष्ठिर बोले हे महाबाहो माधव सात्यकीयहइसी प्रकार है जैसा कि तुम कहतेहो हे श्रेष्ठ परन्तु मेरे चित्तका वृत्तान्त अर्जुन के बिषय में स्पष्ट नहीं होताहै ४० मैं अपनी रक्षामें बड़े उपायोंको करूंगा मेरी आज्ञानुसार तुम वहां जाओ जहां अर्जुन गयाहै ४१ युद्धमें अपनी रक्षाको और अर्जुन के पासजानेको मैंने अपनी बुद्धि से बिचार कर दोनों कार्यों में से वहां का तुम्हारा जानाही मैं ठीक बिचार करताहूं ४२ सोतुमजहां अर्जुनहै वहीं जाओ मेरीरक्षा को बड़ा बली और पराक्रमी भीमसेन करेगा ४३ हे तात सगे भाइयों समेत धृष्टद्युम्न आदिक बड़े२पराक्रमी राजालोग और द्रौपदी के पुत्रमेरी निस्सन्देह रक्षा करेंगे ४४ हे श्रेष्ठ पांचो भाई केकय घटोत्कच राक्षस राजा बिराट द्रुपद महारथी शिखण्डी ४५ महा

बली धृष्टकेतु कुन्तभोज नकुल सहदेव सब पांचालदेशी और सृ-ञ्जय देशी ४६ यह सब सावधानी से निस्सन्देह मेरी रक्षा करैंगे युद्धमें सेना समेत द्रोणाचार्य्य और कृतवर्मा मेरे पकड़नेको समर्थ नहीं हैं और न मुझको पराजय करसकैंगे जहां शत्रुओंका तपाने वाला धृष्टद्युम्न नियत होगा ४६ वहां पर द्रोणाचार्य्यजी किसी प्रकार सेभी सेनाको उल्लंघन नहीं करसक्ते क्योंकि यह धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके ही नाशकेनिमित्त कवच बाण धनुष खड्ग औरउत्तम आभूषणों समेत अग्नि से उत्पन्न हुआ है ५० हे सात्यकी तुम बिश्वास करो और मेरे बिषयमें व्याकुलताको मतकरो युद्धमें क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य को धृष्टद्युम्न रोकेगा ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिएकादशोपरिशततमोऽध्यायः १११ ॥

एकसौबारहका अध्याय ॥

संजय बोले कि वह शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी धर्मराजके बचन को सुनकर राजा युधिष्ठिर के त्याग से अर्जुन से भयभीतताको कहता १ और मुरुयकर संसारकी ओरसेअपनी इस अपकीर्त्तिको देखकर कि सब लोग मुझको अर्जुन की ओर न जानेसे भयभीत न कहैं २ ऐसे अनेक बातोंका निश्चय करके वह युद्धमेंदुर्मद पुरुषोत्तम सात्यकी धर्मराजसे यह बचनबोला ३ हे राजाजो आपअपनी रक्षाको की हुई मानतेहो तो आपका कल्याण होय मैं अर्जुनके पास जाऊंगा और आपकी आज्ञाको करूंगा ४ हे राजा तीनों लोक में अर्जुन से प्यारा मुझको कोई नहीं है यह मैं सत्य२ आपसे कहता हूं ५ हे प्रतिष्ठाकेदेने वाले मैं आपकी आज्ञासेउसके मार्गको जाऊंगा आपके अर्थ किसी दशामेंभी मेरा कोई काम न करनेके योग्य नहीं है ६ हेद्विपादों में श्रेष्ठ जैसेकि गुरूका बचन मुझको माननीय और श्रेष्ठ है उसी प्रकार आपका भी बचन मुझ को श्रेष्ठ समझकर मानना योग्यहै ७ दोनों भाई श्रीकृष्ण और अर्जुन आपके हितमें प्रवृत्त होकर कर्म कर रहेहैं हे राजाओंमें श्रेष्ठ आप

मुझको उन दोनों पुरुषोत्तमोंके मनोरथों में प्रवृत्त और नियत जानों ८ हे समर्थ नरोत्तम युधिष्ठिरमैं आपकी आज्ञाको शिरसे अंगीकार करके अर्जुनके निमित्त उसकठिनतासे पृथक्होंने वालीसेनाको छिन्न भिन्न करके जाऊंगा ९ हे राजा अबमैं द्रोणाचार्य्यकी सेनामें ऐसे प्रबिष्ट होताहूं जैसे कि क्रोध युक्त झस नाम जलजीव समुद्र में प्रबेश करताहै मैं वहां पर जऊंगा जहां पर कि राजा जयद्रथहै १० जहांपर पांडव अर्जुनसे भयभीत होकर अश्वत्थामा कर्ण और कृपाचार्य्य आदिक उत्तम रथियों से रक्षित जयद्रथ सेनामें शरणागतहोकरनियत है ११ हेराजा यहांसे मैंउसमार्गको तीनयोजन मानताहू जहां पर कि जयद्रथ के मारने में प्रवृत्त अर्जुन नियत है १२ मैं जयद्रथ के मरने से पुर्व्वही बड़े दृढ़ अन्तरात्मा के द्वारा तीन योजन पर बर्त्तमान उस अर्जुन के चरणको पाऊंगा १३ गुरूसे आज्ञा पाये बिना कौन मनुष्य युद्ध कर सक्ताहै हे राजा गुरूकी आज्ञाको पाकर मुझसा कौन मनुष्य युद्धको नहीं करे १४ हे प्रभु मैं उस स्थान को जानताहूं जहां पर कि जाऊंगा और शूल शक्ति गदा प्रास ढाल खड्ग दुधाराखड्ग तोमर १५ और उत्तम बाण अस्त्रों से भी दुर्गम्य सेना रूपी समुद्रको उथल पुथल करूंगा जो इस हजारों सेनाओंके समान हाथियों की सेना को देखतेहो १६ जिनका कुल आजनक नाम है जिस सेनामें यह प्रहार करने वाले युद्धमें कुशल शूर बीर लोग बहुत से म्लेच्छों के साथ नियत हैं १७ हे राजा बर्षा करनेवाले बादलों के समान मदझाड़ने वाले बादलके ही रूपवाले यहहाथी हैं यह हाथी अपने हाथीवानोंके प्रेरणा किये हुये होकर कभी मुखोंको नहीं फेरते १८सो हेराजा इन हाथियों को मारने के सिवाय किसी प्रकार सेपराजय नहीं है और हजारों रथियों के समानजिन रथियों को सन्मुख देखते हो १९ हे श्रेष्ठ यह सुबर्णके रथवाले राजकुमार महारथी रथ बाण अस्त्र और हाथीकी सवारीमें सावधानहैं २० धनुर्बेद में पूर्ण मुष्ठिक युद्धमें कुशल गदा युद्धके बिशेष ज्ञाता भुजाओं के युद्धोंमें प्रबीण २१ खड्ग चलाने में योग्य ढाल

तलवारके उठाने चलानेमें प्रशंसनीय शूर बिद्यावान परस्पर में ईर्षा करने वाले हैं २२ हेराजा कर्ण करके नियत किये हुये दुश्शासन के आज्ञावर्त्ती यह सब लोग सदैव युद्धमें मनुष्यों को बिजय करनाचाहते हैं २३ बासुदेवजी भी इन बड़े रथियों की प्रशंसा करतेहैं यहसब लोग सदैव हित करने के अभिलाषी कर्णके आधीनबर्त्तमान हैं २४ उसीके बचनसे अर्जुनसे हटायेगये वह दृढ़ धनुष और कवच वाले थकावट और दुःख से रहित हैं २५ निश्चय करके यह लोग दुर्योधन की आज्ञा से मेरे निमित्त नियत हैं हे कौरव्य आपके प्रिय के अर्थ इन्हींको युद्धमें मथकर २६ अर्जुनके मार्गको जाऊंगा हेराजा और जो दूसरे तरुण कवच धारी किरात पुरुषों की सवारी मेंनियत उन सातसौ हाथियों को देखते हो जिन हाथियोंको कि राजाकिरातने अर्जुनको दिया २७।२८ और उसी प्रकार फिर अपने जीवन को चाहते हुये उस राजा किरातने अच्छे अलंकृतकरके नौकरोंको दिया हे राजा पूर्व्वसमयमें यहसब लोग आपहीके दृढ़ कार्य्यकर्त्ता थे २९ अब यह आपहीसे लड़तेहैं इससमयकी बिपरीतताको देखो यह सब किरात बड़े धनवान युद्धमें दुर्मद ३० हाथियोंकी शिक्षा के ज्ञाता अग्निसे उत्पन्न होने वालेहैं इनको युद्धभूमिमेंअर्जुनने बिजय कियाथा ३१दुर्य्योधनके आज्ञावर्त्ती होकर अबयह लोगमेरे निमित्त उद्युक्तहैं हेराजा इनयुद्ध दुर्मदकिरातोंकोयुद्धमें बाणोंसे मारकर ३२ जयद्रथके मारने में प्रवृत्त अर्जुनके पीछे जाऊंगा फिर आंजन कुल में उत्पन्न होनेवाले यह बड़ेहाथी ३३महाकर्कश विनीत औरगंडस्थलोंसेमदझाड़नेवाले स्वर्णमयी कवचोंसे अलंकृत ३४ युद्धमें लक्षभेदी ऐरावतके समान युद्ध करनेवाले हैं यहहाथी उत्तरीय पर्व्वतोंके बड़े उग्र चोरोंके साथ नियतहैं ३५ यहांपर गौ से उत्पन्न होनेवाले और बन्दरसे उत्पन्न होनेवाले शूरबीर अत्यन्त श्रेष्ठ लोहेके कवचआदि धारण करने वालेबीरों समेत वर्त्तमान हैं ३६ और बहुत से अनेक प्रकारके उत्पत्ति स्थान वाले और मनुष्योंसेभी उत्पन्न होने वालेहैं जिनको धूम्रवर्णकहतेहैं वहहिमाचल पर्व्वतके दुर्गमस्थानों

के रहने वाले और पापकर्त्ता होकर महा म्लेच्छहैं दुर्योधनने इस संपूर्ण राजमंडलकोपाकर ३८ रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य सोमदत्त जयद्रथ और कर्णको पाकर पांडवोंका अपमान किया ३९ फिर कालके चक्रमें फंसाहुआ दुर्योधन अपनेको कृतार्थ मानता है अबवह सबमेरे बाणोंके गोचरतामें बर्त्तमानहुएहैं ४० हे युधिष्ठिर जोमैं चित्तके अनुसार तीव्रभावोंहूं तो यहकिसी प्रकारसे छुटकर नहीं जासक्ते दुर्य्योधनने सदैवसे दूसरेके बलसे अपना निर्वाह कियाहै ४१ हेराजा जो यह सुनहरी ध्वजा वालेरथी दृष्ट पड़ते हैं वहमेरे बाणोंसे पीड़ामान होकर नाशको पावेंगे ४२ यह कांबोज देशी शूर विद्यावान और धनुर्वेदमें पूर्ण आपने सुनेहैं वह दुर्वारण नामहैं ४३ यह परस्पर अभीष्ट चाहने वाले अत्यन्त दृढ़शरीर हैं हे भरतबंशी दुर्य्योधनकी ग्यारह अक्षौहिणी सेना क्रोधयुक्तहै ४४ और चारोंओरसे रक्षित कुरुवीर मेरेनिमित्त बड़ी सावधानीसे नियतहैं हे महाराज वहसब चैतन्य होकरअभ्रान्तचित्तमेरेही सन्मुख बर्त्तमानहैं ४५ मैं उन को ऐसे मथूंगा जैसे कि तृणों को अग्नि मथताहै इस कारणसे सब तूणीरादिउवासंग औरसबसामान ४६ को रथकेतैयारकरने वाले मनुष्य बिधिके अनुसारमेरेरथपर नियत करें निश्चय करके इसबड़ेभारी युद्धमें नाना प्रकारके शस्त्र हाथमें लेनेके योग्यहैं ४७ जैसे कि गुरुओं सेसिखलाये गयेहैं उस प्रकार से रथोंको पंचगुने करने चाहिये फिर तीक्ष्णसर्पोंकेसमान कांबोज देशियोंसे भिड़ूंगा ४८ उननाना प्रकारके शस्त्र समूहोंके रखने वाले विषके समान प्रहार करनेवाले किरातोंसेभी लड़ूंगा ४९ राजासे सदैव पालन किये हुये दुर्य्योधनका हितचाहनेवाले इन्द्रकेसमान पराक्रमी शकों के साथ भिड़ूंगा ५० इसी प्रकार अग्निके समान अजेय और तेजस्वी और कालकेसमानदुःखसेआधीन करनेकेयोग्य नानाप्रकारके अन्य २ शूरबीरोंसेभीलड़ूंगा ५१ हेराजा युद्धमेंदुर्मद बहुतसे शूरबीरोंके साथ युद्धभूमिमें भिड़ूंगा इस हेतुसे शुभलक्षण वाले घोड़ों में श्रेष्ठ प्रशंसनीय ५२ और पृथ्वीके लेटनेसे ही थका-

वटसे रहित जलसे तृप्त घोड़े फिर मेरे रथमें संयुक्त किये जायं संजय बोले कि राजा ने उसके सब तूणीरादिक सामान ५३ और नाना प्रकार के शस्त्रोंको उसके रथ पर अलंकृत करवाया इसके पीछे चार मनुष्यों ने उन सब सामानों से युक्त उत्तम घोड़ोंको ५४ रसयुवान नशेदार जलपिलाया उन थकावटसे रहित दाना जल आदि से तृप्त स्नान किये हुये अच्छे अलंकृत बिनाघाव सुवर्ण की माला रखने वाले योग्य सुवर्ण वर्ण विनीत शीघ्रगामी ५६ अत्यन्त प्रसन्न मन बिधिके अनुसार अलंकृत चारो घोड़ों को उस रथमें जोड़ा जो कि स्वर्णमयी केशरकी मालाओंसे युक्त सिंहमूर्त्ति रखने वाली ध्वजासे शोभित ५७ मणि मूंगोंसे जटित सुनहरी केतुओं से संयुक्त श्वेत बादल के समान प्रकाशमान पताकाओं से अलंकृत५८सुनहरी दंडसे ऊंचे छत्र वाला और बहुत शस्त्रों समेत सामानों सेभराहुआ था उस स्वर्णमयी सामानसे अलंकृत रथको बिधि पूर्व्वक जोड़ा ५९ दारुक के छोटे भाई और उसके सखा सूतने तैयार कियेहुये रथको ऐसे वर्णन किया जैसेकि इन्द्रकेतैयार किये हुये रथको मातलि नाम सारथी कहता है ६० इसके पीछे स्नान करने वाले सात्यकी ने जिसका कौतुक मंगल किया गया पबित्र होकर स्नातक नाम ब्राह्मणोंको हजार २ अशर्फियांदीं ६१ उसके पीछे आशीर्बादों समेत सबसेमिल श्रीमानोंमें श्रेष्ठ मधुपर्कके योग्य सात्यकी कैलातक नाम मदिराको पानकर ६२ अरुण नेत्र होकर महाशोभायमानहुआ फिर बड़ी प्रसन्नतासे युक्त मदसे घूर्ण और घूर्ण नेत्र सात्यकी बीरोंके कांस्य पात्रको पाकर ६३ अग्निके समान प्रकाशित द्विगुणित तेजवाला रथियों में श्रेष्ठ बाण समेत धनुष को गोदमें लेकर ६४ ब्राह्मणों से स्वस्ति बाचन किया हुआ कवच धारण किये लाजा अर्थात् धानकी खील चन्दनादि सुगन्धित बस्तु और मालाओं से अच्छी रीति से अलंकृत कन्याओं करके अभिनन्दित ६५ युधिष्ठिर के दोनों चरणों को दोनों हाथोंसे दण्डवत करके और युधिष्ठिर करके मस्तक परसूंघाहुआ सात्य-

की बड़े रथ पर सवार हुआ ६६ उसके पीछे उन प्रसन्न हर्षित शरीर वायुकेसमान शीघ्रगामी अजेय आनन्द से प्रफुल्लित मुख सिन्धुदेशी घोड़े उस विजय करने वाले रथको लेचले ६७ इसी प्रकार धर्मराजसे पूजित भीमसेनभी युधिष्ठिरको दण्डवत करके सात्यकीके साथ चले ६८ आपकी सेनामें प्रवेशित होनेको अभिलाषी शत्रुओंके बिजय करने वाले उनदोनों बीरोंको देखकर आप के सबपुत्र जिनमें मुखिया द्रोणाचार्य्यथे नियत हुये ६९ तब वह प्रसन्नतासे पूर्णबीर सात्यकी कवच धारण किये पीछे चलनेवाले भीमसेन को देखकर उसको भी प्रसन्न करके प्रसन्नता उत्पन्न करने वाले बचनको बोला कि हे भीमसेन तुमराजा की रक्षाकरो यह कर्म तेरेही करने के योग्य माना है ७० । ७१ मैं इस काल से पक्कीहुई सेनामें प्रवेश करूंगा और राजाकी रक्षा करना बर्त्तमान और भविष्यत दोनों कालोंमें कल्याण करने वालीहै ७२ हेशत्रुओंके पराजय करनेवाले भीमसेन तुममेरे पराक्रमको जानते होओ मैंतुम्हारी सामर्थको जानताहूं इसहेतुसे जोतुम मेराहितचाहते हो तो लौटो७३ सात्यकीके इसबचनको सुनकर भीमसेन सात्यकी से बोले हे पुरुषोत्तम तुमप्रयोजन सिद्धकरने के अर्थ यात्रा करो मैं राजाकी रक्षाकरूंगा ७४ इसरीति से कहाहुआ माधव सात्यकी भीमसेन से बोलाकि हेपांडवतुमअवश्य जाओ निश्चयकरके मेरीही बिजयहै ७५ क्योंकि जो मेरी रक्षा में प्रीति रखने वाले तुम मेरी आधीनता में नियतहो और हे भीमसेन यह शुभ शकुन भी मेरी बिजयको सूचन करतेहैं ७६ और इसी हेतुसे महात्मा अर्जुनके हाथ से पापी जयद्रथ के मरने पर मैं धर्मात्मा युधिष्ठिरसे आकर मिलूंगा७७ उस बड़े यशस्वी ने इतना कह कर भीमसेनको बिदा करके आपकी सेना को इस प्रकार से देखा जैसे कि व्याघ्र मृगों के समूहोंको देखताहै ७८ हे राजा सन्मुख देखते हुये उस सात्यकी को देखकर आपकी सेना अत्यन्त अचेत होकर फिर कंपायमान हुई ७९ तदनन्तर अर्जुन के देखनेका अभिलाषी वह सात्यकी

धर्मराजकी आज्ञासे अकस्मात् आपकी सेनाकी ओर चला८० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्वादशोपरिशततमोऽध्याय. ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्धाभिलाषी होकर आपकी सेनाकी ओर सात्यकी के जाने पर सेना से युक्त धर्मराज १ द्रोणाचार्य्यके रथको चाहनेवाले सात्यकी के पीछेचला २ उसके पीछे युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न और बसुदान पाण्डवी सेनामें पुकारे कि आवो आवो प्रहार करो शीघ्रतासे ऐसे दौड़ो ३ जैसे कि युद्ध दुर्मद सात्यकी सुख पूर्व्वक जाताहै और बहुत से महारथी उसके पराजय करनेमें उपाय करते हैं ४ इस रीतिसे बोलते हुये वह महारथी बड़ीतीव्रतासे दौड़े वहां बिजयाभिलाषी हम सब लोग उनके सन्मुख गये ५ उसके पीछे सात्यकी के रथ पर बड़े शब्द हुये अर्थात् चारोंओरसे बर्त्तमान दौड़ती हुई आपके पुत्रकी सेना ६ यादव सात्यकी के हाथसे सैकड़ों प्रकारसे छिन्नभिन्न हुई उस सेनाके तितिरबितिर होजानेपर महारथी सात्यकीने७ सब सेनाओंके आगेबड़े धनुषधारी सात शूरवीरोंको मारा हेमहाराज फिर अनेक प्रकारके देशों के स्वामी अन्य२ राजा लोगोंको भी ८ अग्नि रूप बाणों से यमलोक में पहुंचाया एक बाण से सौको घायल किया और सौबाणों से एक को ९ हाथीके सवारों समेत हाथियोंको घोड़ेके सवारों समेत घोड़ों को और घोड़े सारथियों समेत रथोंको भी ऐसे मारा जैसे किपशुओंको शिवजी मारते हैं १० आपकी सेनाके कोई भी शूरवीर लोग उस प्रकार अपूर्व्वकर्मी बाणरूपी वर्षा करने वाले सात्यकी के सन्मुख नहीं दौड़े ११ उन भयभीत घायल और लम्बी भुजावाले सात्यकीसे मले हुये बीरोंने उस बड़े शूर प्रतापी को देखकर युद्धभूमिको त्याग किया उसके तेज से अचेत उन लोगों ने उस अकेले को अनेक प्रकार से देखा १२ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र मथे हुये टूटे नीढ़ वाले रथ और टूटे हुये रथ चक्र गदा छत्र ध्वजा १३ अनुकर्ष

पताका सुनहरी मुकुट बाजूबन्द रखने वाली चन्दन से लिप्त भुजा १४ और हाथी की सूंड़के समान सर्पके फणाकी सूरत जंघाओंसे पृथ्वी आच्छादित होगई १५ वह पृथ्वी उत्तम चक्षु वाले शूरबीरोंके पड़े हुये चन्द्रमा के समान प्रकाशित कुंडलधारी मुखों से अग्नि के समान प्रकाशमान होगई १६ अनेक प्रकारसे टूटे पर्वतों के समान पड़े हुये हाथियों से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि पड़े हुये पहाड़ों से शोभित होतीहै १७ मोतियों के जालों से अलंकृत सुनहरी ईशा दण्ड आदिक अपूर्व्व जेरबन्दों समेत घोड़े भी अपूर्व्व शोभायमानहुये १८ निर्जीव पृथ्वी को पाकर उस बड़ी भुजावाले से अत्यन्त मर्दितकिये गये फिर वह यादव सात्यकी आपकोअनेक प्रकार की सेनाओं को मारकर १९ और शेष सब सेनाको उच्छिन्न करके आपकी सेनामें घुस गया वहां जाकर सात्यकीने जिसमार्ग से कि अर्जुन गयाथा उसी मार्गसे जानाचाहा२० उसके पीछेद्रोणाचार्य्य से रोका गया अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी भारद्वाजको पाकर ऐसे उल्लंघन करनेवाला नहींहुआ २१जैसे मर्यादाको समुद्र नहीं उल्लंघन करसका फिर द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें महारथी सात्यकीको रोक कर २२ मर्म भेदी तीक्ष्ण पांच बाणोंसे घायल किया हेराजा फिर सात्यकी ने भी उनको ऐसे सात बाणोंसे व्यथित किया २३ जोकि सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धार कंक और मोर के परोंसे संयुक्त थे फिर द्रोणाचार्य्य ने छः बाणोंसे घोड़े और सारथी समेत उसको घायल किया २४ महारथी सात्यकी ने उन द्रोणाचार्य्यजी को नहीं सहा इसके पीछे सात्यकी ने सिंहनाद करके द्रोणाचार्य्य को व्यथित किया २५ और दूसरे चौबीसबाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल करके भी फिर दश बाणोंसे घायल किया २६ हे श्रेष्ठ युद्धमें एक बाणसे उनके सारथी को चार बाणों से चारों घोड़ों को और एक बाण से उनकी ध्वजाको भी काटा २७ फिर शीघ्रता करने वाले द्रोणाचार्य्य ने टीड़ी दलों के समान तीक्ष्ण चलने वाले बाणों से उसको घोड़े सारथी रथ और ध्वजा समेत ढंक दिया २८ उसी प्रकार भयसे

उत्पन्न होने वाली व्याकुलता से रहित सात्यकी ने तीव्र चलने वाले अनेक बाणोंसे द्रोणाचार्य्य को ढकदिया इसके पीछे द्रोणाचार्य्य बोले २९ किहे सात्यकी तेरा आचार्य्य तो मुझ लड़ने वालेको त्याग करके नपुंसक के समान युद्धको छोड़ कर गया और परिक्रमा करी ३० हे माधव अब तुम मुझसे युद्ध करते जीवते नहीं जावोगे जो तुमभी अपने गुरूके समान मुझको युद्धमें छोड़कर नहीं जावोगे तो ३१ सात्यकी बोला हे ब्रह्मन् आपका कल्याण हो मैं धर्मराज को आज्ञा से अर्जुन के खोजने को जाऊंगा मेरासमय व्यर्थ न होजाय ३२ आचार्य्योंका खोलाहुआ मार्ग सदैव शिष्यों से वर्त्ताव किया जाताहै इस हेतुसे मैं उसी प्रकार शीघ्र जाताहूं जिस प्रकार से कि मेरे गुरू गये हैं ३३ संजय बोले हे राजा सात्यकी इतना कहकर आचार्य्यजी को त्याग करता हुआ चलनेके समय सारथीसे यह बचनबोला ३४ कि द्रोणाचार्य्यजी सब प्रकारसे मेरे रोकनेको उपाय करेंगे हे सूत युद्ध में सावधान होकर चल और इस उत्तम वचनको सुन ३५ कि अवन्तिदेशियों की यहसेना बड़ी प्रकाशमान दिखाईदेतीहैऔर उसकेपीछे यहदाक्षिणात्योंकी बड़ीसेना दृष्टपड़ती है३६ उसकेआगे बाह्लीकदेशियोंकीभी वाहबड़ीसेना औरबाह्लीक देशियोंकेपास कर्णकीबड़ीसेना नियतहै ३७ हेसारथीयहसब सेना एक दूसरेसे एथक् नियतहैं और युद्धभूमि में एकदूसरेकी सहायता लेकर परस्पर रक्षाकरतीहैं ३८ सोहेसारथी इस अवकाशको पाकर अत्यन्त प्रसन्नके समान घोड़ोंको चलायमानकरो मध्यम तीव्रतामें नियतहोकर मुझकोवहांलेचल ३९ जहांपर कि नानाप्रकारके शस्त्रों के उठानेवालेबाह्लीक देशी औरबहुतसे वाह दाक्षिणात्य जिनका अग्रगामीकर्णहै दिखाईदेतेहैं ४० औरजहांपर नानाप्रकारके देशोंमें उत्पन्नहोनेवाले पदातियोंसेव्याप्त हाथीघोड़े औररथोंसेदुर्गम्यसेना दिखाई पड़तीहै ४१ द्रोणाचार्य्य ब्राह्मणको त्याग करताहुआसात्यकीअपनेसारथीसे इतना कहकर कि जो कर्णकी भयकारी बड़ी सेना हैउसमें होकर चलो यह कहकर चलदिया ४२ फिर बहुत बाणोंको

फैलातेहुये क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य उस मुख न मोड़नेवाले जातेहुये महाभाग सात्यकीके पीछेचले ४३ वह सात्यकी तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णकी बड़ीसेनाको घायल करके उस भरतवंशियोंकी सेनामें प्रवेश करगया जोकि असंख्यातथी ४४ फिर चलायमान सेनाके मध्यमें सात्यकीके प्रवेशित होजाने पर क्रोधयुक्त कृतवर्मा ने सात्यकी को रोका४५पराक्रमी सात्यकीने छः बाणोंसे उस आतेहुये कृतवर्माको घायल करके चारबाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको घायल किया ४६ इसके पीछे सात्यकीने तीव्र चलानेवाले सोलह बाणोंसे कृतवर्माको छातीके मध्यमें फिर घायल किया ४७ हेमहाराज यादव सात्यकी के अत्यन्त प्रकाशवान् अनेक बाणोंसे घायल उसकृतवर्माने सहनता नहींकी ४८ उस सात्यकीने टेढ़े चलनेवाले बायुके समान वत्सदन्तनाम बाणकोधनुषपर चढ़ाकर कानतक खैंचकर छातीपर घायलकिया ४९ वह सुन्दर पुंख और पक्षवाला शायक नामबाणउसके शरीरके कवच को छेदकर रुधिरमें लिप्तहोकर पृथ्वीमें प्रवेश करगया५० हेराजा इसकेपीछे उत्तम अस्त्रके ज्ञाता कृतवर्माने सात्यकी के धनुषको बाणोंके समूहों समेत अपने बहुतसे बाणोंसेकाटा ५१ हेराजा इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधकरके दूसरे दश तीक्ष्ण बाणोंसे सत्य पराक्रमी सात्यकीको छातीके मध्यमें घायल किया ५२ तब धनुषके टूटनेपर शक्तिमानोंमें श्रेष्ठ सात्यकीने अपनीशक्तिसे कृतवर्माकी दाहिनी भुजाको घायलकिया५३इसकेपीछे सात्यकीने अत्यन्तदृढ़ पूर्ण धनुषको चलाकर बड़ी शीघ्रतासे हजारोंहीबाणोंकोछोड़ा५४ इसकेपीछेभी सात्यकीने हार्दिक्यके पुत्रकृतवर्माकोरथसमेत चारोंओरसे ढंकदिया और बाणोंसे ढंककर५५फिर उसके सारथीके शिरको भल्लसेकाटा फिर मृतक सारथी कृतवर्माके बड़े रथसे गिर पड़ा ५६ तदनन्तर सारथीसे रहितवहघोड़े अत्यन्तभागे फिरतोभ्रान्तीसे युक्त भोजन वंशीवीर कृतवर्मा आपही घोड़ोंको पकड़कर५७ धनुष हाथमें लेकर नियतहुआ सेनाके लोगोंने उसकी प्रशंसाकरी उसने एकमुहूर्त्त दम लेकर उन उत्तम घोड़ों को चलायमान कि

या५८और बड़ीनिर्भयतासे शत्रुकेभयको उत्पन्नकिया सात्यकी वहां से चलदिया और वह कृतबर्मा भीमसेनके सन्मुखगया ५९ हेमहाराजकृतबर्माकी सेनासे बाहर निकलाहुआ सात्यकीभीबड़ी शीघ्रता सेकांबोज देशियोंकी बड़ीसेना कोगया६०वहां बहुतसे शूरबीरमहारथियोंसे रोकाहुआ वह सत्य पराक्रमी सात्यकी कंपायमान नहीं हुआ ६१ युद्धमें उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्य सेनाको नियत स्थान पर नियत करके कृतबर्मापर भारको रखकर युद्ध की इच्छासे सात्यकीके सन्मुखगये ६२ पांडवीसेना में प्रसन्नचित्त बड़े शूरबीरोंने इसप्रकार सात्यकीके पीछे दौड़नेवाले द्रोणाचार्य्यको रोका६३ फिर जिनका अग्रगामी भीमसेन है वेसाहसी पांचालदेशी रथियों में अत्यन्त श्रेष्ठ कृतबर्मा कोपाकर ६४ और पराक्रम करके उसबीर कृतबर्मासे रोकेहुये उनसब उपाय करनेवाले कुछेक विमनलोगोंको ६५ बाणोंके समूहोंसे चारों ओरसे थकी सवारी वालाकिया कृतबर्माकी सेनाको चाहनेवाले वहबीर युद्धमें उस भोजबंशीसे रुकेहुये ६६ कुलीनोंके समान बड़े सुयशको चाहते नियत हुये ६७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणित्रिदशोपरिशततमोऽध्यायः११३॥

एकसौचौदहका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हेसंजय ऐसी असंख्यसेना और ऐसे२ अगणित शूरबीर और इस रीतिके न्यायके अनुसार रचेहुये व्यूहवाली अगणितसेना १ सदैव हमलोगोंसे पारितोषिक पानेवाली प्रतिदिन हम सेप्रीति रखनेवाली अत्यन्त वृद्धियुक्त अपूर्व्व रूप प्रथमहीसे दृढ़ पराक्रम रखने वाली २ न बहुत वृद्धनबालक न दुर्बल न स्थूलचित्त रोचक चालचलनेकी वृद्धि रखनेवाली उत्तम नीरोग अंगवालीशरीरोंमें कवच धारण किये बहुत शस्त्रादिक सामानोंसे अलंकृत शस्त्र बिद्याओंमें बड़ीकुशल ३।४ चढ़ने उतरने चलने और समय पाकर अच्छी रीतिसे प्रहार करने सन्मुखजाने और हटजानेमें सावधान५ हाथी घोड़े और रथोंकी सवारियोंमें अच्छे परीक्षा कियेहुये और

परीक्षा लेकर न्यायके अनुसार मासिक पानेवाले ६ और न केवल बात चीत सेवा और नातेदारोंके कारणसे नियतहोनेवाले और दैव इच्छासे किसीसे न मिलनेवाले मेरीसेनाके लोगथे ७ और कुलीन श्रेष्ठ लोगोंसे संयुक्त प्रसन्न प्रफुल्लित नम्र कार्य्यकर्त्ता यशस्वी साह-सी८उत्तम पवित्रकर्मी लोकपालोंके समान नरोत्तम दूसरेअनेक मंत्रियोंसे रक्षित ९ अपनी इच्छासे सेना और पीछेचलने वालों समेत हमारेपास पास आनेवाले हमारे हितकरनेके अभिलाषी बहुतसेराजाओंसे रक्षित१०चारों ओरसे नदियोंसे पूर्णहुये समुद्रके समान पक्षियोंके समान बिना पक्षवाले रथ घोड़ोंसेयुक्त ११ और गंडस्थलोंसे मदझाड़नेवाले हाथियोंसे संयुक्तमेरीबड़ी सेनाजोमारी गईइस में प्रारब्ध के सिवाय दूसरी बात क्या है १२ शूरवीररूपी अविनाशी जल रखने वाले भयकारी सवारी रूप लहरोंसे युक्त यन्त्र खड्ग गदा शक्ति बाण और प्रासरूप मछलियों से व्याप्त १३ ध्वजाओंके आभूषणों से दुर्गम्यरत्न रूप पाषाणोंसे युक्त दौड़-ने वाली सवारियों रूप वायुकी तीव्रतासे कंपायमान द्रोणाचार्य्य रूप गंभीर पाताल वाले कृतवर्मा रूपी महाह्रदवाले बड़े राजाजल सिन्धु रूपी बड़े ग्राहवाले कर्ण रूपी उदयमान चन्द्रमासे उन्नत होने वाले समुद्रकी समान सेनाहै१।४१५ हेसंजय तीव्रता से मेरी समुद्र रूप सेनाको पराजय करके एक रथ केही द्वारा अर्जुन और सात्यकी के जाने पर १६ उस सेनामें अर्जुन और बड़े रथी यादव सात्यकी के पहुंचने पर मैं अपनी शेष रही हुई सेनाको भी बचता नहीं देखताहूं १७ वहां सबको उल्लंघन कर जाने वाले तीव्रगामी उन दोनों को देखकर गांडीव के लक्ष्य में राजा जयद्रथ को देख कर १८ कालसे प्रेरित कौरवों ने किस कर्मको किया उस अत्यन्त भयकारी समय पर वह लोग किस रीतिसे कर्म करने वालेहुये१९ हेतात मिले हुये कौरवों को कालसे निगला हुआ मानताहूं उन्हों का पराक्रम भी युद्धमें वैसा नहीं दिखाई देताहै २० वहां युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन बिना घायल ही सेनामें पहुंच गये हे संजय

यहां उन दोनों का रोकने वाला कोई नहींहै २१ और ऐसे बहुतसे शूरबीर मारे गये जो महारथी परीक्षा लेकर योग्यताके समान मासिकादिसे पोषण किये गये और बहुत से मीठे बचनोंसे प्रसन्न किये हुये २२ हे तात मेरी सेनामें आदर सत्कार से कोईभी रहित नहींहै अपने २ कर्मके अनुसार मासिक आदि प्रतिदिन का सब खर्च मिलताहै २३ हेसंजय मेरी सेनामें कोई न लड़ने वाला वा थोड़ा पारितोषिक पाने वाला और बिना मासिक का कोई भीमनुष्य नहीं होगा २४ मैंने सामर्थ्य के अनुसार सबको दानमान और सत्कारादिकों से प्रसन्न किया हे तात इसी प्रकार सजातीय बांधवोंके साथ अपने इष्ट मित्रों कोभी मेरे पुत्रोंने प्रसन्न कियाहै २५ उनको युद्धमें पाकर अर्जुनने बिजय किया और सात्यकी से मर्दित किये गये इसमें प्रारब्ध के सिवाय और कौनसी बात समझना चाहिये २६ हे संजय जो युद्धमें रक्षित किया जाताहै और जोरक्षा करने वालाहै रक्षकों समेत रक्षितोंका साधारण एकही मार्गहै २७ युद्धमें जयद्रथ के सन्मुख अर्जुन को नियत देखकर अत्यन्त निर्बुद्धी मेरे पुत्रने किस कर्मको किया २८ और युद्धमें निर्भयकेसमान प्रवेश करने वाले सात्यकी को देखकर दुर्य्योधन ने समय के अनुसार किस कर्मको माना २९ सब शस्त्रोंको उल्लंघन करके चलने वाले रथियों में श्रेष्ठ उन दोनों को सेना में पहुंचने वाला देखकर मेरे पुत्रोंनेक्या बुद्धि करी ३० मैं मानताहूं कि अर्जुनके निमित्त नियत श्रीकृष्ण को और शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी को देखकर मेरे पुत्र शोचकरतेहैं ३१ मैं मानताहूं कि सात्यकी अर्जुन से उल्लंघन की हुई सेनाको और भागने वाले कौरवों को देखकर मेरे पुत्र शोच करते हैं ३२ मैं यहभी मानता हूं कि मेरेपुत्र रथ सवारोंको पृथक् २ और शत्रुको बिजय करने में असाहसी होकर भागनेमें प्रवृत्त चित्त देखकर शोच करतेहैं ३३ यह भी अनुमान करता हूं किमेरे पुत्र यादव सात्यकी और अर्जुनसे खाली कियेहुये रथके बैठनेके स्थानोंको औरमृतक शूरबीरों को देखकर शोच करतेहैं ३४

यहभी अनुमान होताहै कि मेरेपुत्र युद्ध में हजारों घोड़े हाथी रथ और वीरोंको व्याकुलचित्त दौड़ताहुआ देखकर शोचतेहैं३५ यहभी मानताहूं कि अर्जुनके बाणोंसे घायल भागतेहुये बड़े२ हाथी और गिरते हुये अनेक हाथियोंको देखकर मेरेपुत्र शोच करतेहैं ३६ मैं मानताहूंकि वहां सात्यकी और अर्जुनके सवारोंसे बिहीन कियेहुये घोड़े और रथ से बिहीन कियेहुये मनुष्योंको देखकर मेरेपुत्र शोच करतेहैं ३७ मैं मानताहूं कि युद्धमें सात्यकी और अर्जुनके मारेहुये और जहां तहांसे भागतेहुये घोड़ोंकेसमूहोंको देखकर मेरेपुत्र शोच करते हैं ३८ मैंमानता हूं कि युद्धमें सब प्रकारसे दौड़ते समूहोंके पतियोंको देखकर बिजय से निराश होकर मेरेसब पुत्र शोचकरते हैं ३९ मैं मानताहूं कि यह एकक्षणभर मेंही द्रोणाचार्य्यकी सेनाको उल्लंघन करनेवाले महाबिजयी दोनों अजेय वीरोंको देखकर मेरे पुत्र शोकमें डूबरहेहैं ४० हेतातसात्यकीसमेतमेरीसेनामें प्रबेशकर तेवाले इनदोनों अजेय श्रीकृष्ण और अर्जुनको सुनकर अत्यन्त अचेतहूं ४१ शिनियोंमें अत्यन्त उत्तम रथी उस सात्यकीके सेनामें आजाने और कृतबर्माकी सेनाके उल्लंघनकरने पर कौरवोंने क्या किया ४२ इसी प्रकार उसयुद्धमें पांडवोंके रोकेजानेपरकैसे प्रकार का युद्ध हुआ हेसंजय वहसब मुझसे बर्णनकरो ४३ निश्चय करके द्रोणाचार्य्य पराक्रमी और श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ होकर युद्धमें दुर्मदहैंऐसे बड़े धनुषधारी बीरको उस युद्धमें कैसे घायल किया ४४ अर्जुनकी बिजय चाहने वाले वह लोग द्रोणाचार्य्यसे शत्रुता [illegible] वाले हैं इसी हेतुसे भरद्वाजका पुत्र महारथी द्रोणाचार्य्य उनसे कठिन शत्रुताकरनेवालेहैं ४५ अर्जुनभी जयद्रथकेमारनेमेंजो२ कर्म किये वह सब भी मुझसे कहो क्योंकि हेसंजय तुमबर्णन करनेमेंबड़ेकुशलहो ४६ संजयबोले कि हेभरतवंश बीर धृतराष्ट्र तुम अपनेहीअपराधसे उत्पन्न होनेवाले दुःखोंको पाकर साधारण मनुष्यकेसमान शोचकरनेके योग्यनहींहो ४७ पूर्व्व समयमें अत्यन्त बुद्धिमान् बिदुर आदिक शुभचिन्तकोंने जो तुमकोसमझायाथा कि तुमपांडवोंकोमत

यागकरो हेराजा उनके बचनों को तुमने नहीं सुना निश्चयहै कि जो अपनी वृद्धिचाहनेवाला मनुष्य अपने शुभचिन्तकोंकी बातोंको नहीं सुनताहै वहबड़े दुःखोंको पाकर ऐसेशोचता है जैसे कितुम शोचते-४९ होहेराजा पूर्व्व समयमें सन्धिके बिषयमें श्रीकृष्णजीने भी आप से अनेक प्रकारकी प्रार्थना कीथी उससमय बड़े यशस्वी श्रीकृष्णजीनेभी उस मनोरथको नहीं पाया अर्थात् तुमने उनके भी कहने को नहींमाना ५० तुम्हारी अगुणता पुत्रोंका पक्ष और धर्ममें अदृढ़ता और पांडवोंकेऊपर ईर्षा जानकर ५१ और श्रेष्ठ पांडवोंमें तेरी कुटिलता पूर्वकबहुत पीड़ाके शब्दोंको जानकर ५२ सबलोकोंके मूलके जाननेवाले सर्बेश्वर प्रभु बासुदेवजीने कौरवोंके महायुद्धको किया ५३ हेबड़ाई देनेवाले तुमने अपनेबहुत बड़ेअपराधसे बड़ेभारीनाश को पाया यह अपराध दुर्योधनमें लगानेके योग्य नहींहै ५४ हे-भरतबंशी आदि अन्तमें आगे पीछेसे तुम्हाराकुछ शुभकर्म नहीं दिखाई देताहै इससे तुम पराजयके मूलहो ५५ इसहेतु से चित्तमें दृढ़ता करके और लोककी मूलदशाको जानकर देवासुर युद्धके समान भयकारी युद्ध जैसे जारीहुआ उसकोसुनो ५६ आपकी सेनामें सत्य पराक्रमी सात्यकीके प्रवेश करनेपर भीमसेन आदिक पांडव आपकी सेनाके सन्मुखगये ५७ महारथी अकेले कृतबर्माने उनक्रोध के रूप पीछे चलनेवालों समेत अकस्मात् आते हुये पांडवों को-रोका ५८ निश्चय करके जैसे उठेहुये समुद्रको मर्यादा रोकतीहै उसी प्रकार कृतबर्माने युद्धमें पांडवीसेना को रोका ५९ वहां हमने कृतबर्माके अपूर्व्व पराक्रमकोदेखा कि जिसको पांडवोंने एकसाथ होकर भी युद्धमेंउल्लंघन नहींकिया ६० इसकेपीछे सब पांडवोंको प्रसन्न करते महाबाहु भीमसेनने तीव्र चलनेवाले तीनबाणोंसे कृतबर्मा को छेदकर शंखको बजाया ६१ फिर सहदेवने बीसबाणसे धर्मराजनेपांच बाणसे और नकुलनेभी सौबाणोंसे कृतबर्माको घायलकिया ६२ द्रौपदीकेपुत्रोंने तिहत्तर बाणोंसे घटोत्कचने सातबाणोंसे और धृष्टद्युम्नने तीन बाणोंसे कृतबर्माको पीड़ित किया ६३ बिराट और यज्ञसेनके

पुत्र द्रुपदने पांचबाणोंसे और शिखण्डीने कृतवर्माको पांचबाणोंसे छेदकर ६४ फिरभी हंसते २ बीस शायकोंसे घायल किया हेराजा इसकेपीछे कृतवर्माने सब ओरसे उन प्रत्येक महारथियोंको ६५ पांच २ बाणोंसे घायल करके सातबाणोंसे भीमसेन को व्यथित किया और उसकेधनुष और ध्वजाकोभी पृथ्वीपर गिराया ६६ फिर शीघ्रता करनेवाले क्रोधयुक्त उसी महारथीने सत्तरि तीक्ष्ण बाणोंसे टूटेधनुष वाले भीमसेनको छातीपर घायलकिया ६७ तब रथमें बैठा पराक्रमी भीमसेन कृतवर्माके उत्तम बाणोंसे अत्यन्त घायल होकर ऐसे कंपायमान हुआ जैसेकि पृथ्वीके कंपनेसे पर्व्वत कंपितहोता है ६८ हेराजा उनपांडवोंने जिनके अग्रगामी धर्मराजथे उस दशावाले भीमसेनको देखकर बाणोंकेद्वारा कृतवर्माको पीड़ामानकिया ६९ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्रउन प्रसन्न चित्तोंने उस कृतवर्माको अपने रथ समूहोंसे इस प्रकार घेरकर युद्धमें भीमसेनकी रक्षाके निमित्त शायकोंसे घायल किया ७० इसके पीछे महाबली भीमसेनने चेतको पाकर सुनहरी दंड रखनेवाली लोहेकी शक्तिको लिया ७१ और शीघ्रही अपनेरथसे कृतवर्माके रथपर फेंका भीमसेकेहाथसे छोड़ीहुई वह कांचलीसे छूटेहुये सर्पकी समान ७२ अत्यन्त भयकारी शक्ति कृतवर्मा के सन्मुख आकर अग्नि के समान प्रज्वलित हुई तब कृतवर्माने उस प्रलय कालके समान प्रकाशमान अकस्मात् आतीहुई शक्तिको ७३ दो बाणों से बीच में से दोखंड किये वह सुवर्णसे जटित शक्ति खंड २ होकरपृथ्वीपर गिरपड़ी ७४ हेराजा वह दिशाओंको प्रकाशित करतीहुई शक्ति ऐसेगिरी जैसेकि आकाशसे गिरीहुई बड़ी उल्का होतीहै भीमसेन उस शक्तिको टूटी हुई देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्तहुआ ७५ इसकेपीछे युद्ध में क्रोधभरे भीमसेनने वेगवान् बड़े शब्द वाले दूसरे धनुषको लेकर कृतवर्माको रोका ७६ हेराजा आपकी कुमतिसे पराक्रमी भीमसेनने पांचबाणोंसे छातीके मध्यमें कृतवर्माको व्यथित किया ७७ हे श्रेष्ठ फरि भीमसेनके हाथसे घायलहुये सब अंग वह कृतवर्मा युद्धभूमि

में फूलेहुये लाल अशोक वृक्ष के समान शोभायमानहुआ ७८ इस के पीछे क्रोधयुक्त हंसतेहुये कृतबर्माने तीनबाणों से भीमसेनको घायल करके युद्ध में उन सबको भी अत्यन्त घायल किया ७९ बड़े धनुषधारी कृतबर्माने उन उपाय करनेवाले महारथियों को तीन २ बाणोंसे व्यथित किया उन्होंने भी उसको सात २ बाणोंसे घायल किया ८० इसके पीछे हंसते हुये क्रोधयुक्त महारथी यादव कृतबर्माने युद्धमें क्षुरप्रनाम बाणसे शिखण्डीके धनुषकोकाटा ८१ फिर धनुषके टूटनेपर क्रोधयुक्त शीघ्रता करनेवाले शिखण्डीने युद्धमें खड्गको हाथमें लिया और सौचन्द्रमा रखनेवाली प्रकाशित ८२ सुवर्णसे अलंकृत बड़ी ढालको घुमाकर उस खड्गको कृतबर्माके रथपर चलाया ८३ हेराजा वहबड़ा खड्ग उसके बाणसमेत धनुषको काटकर पृथ्वीपर ऐसा गिरपड़ा जैसे कि आकाशसे गिरा हुआ नक्षत्र ८४ उसी समयपर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले उनमहारथियोंने कृतबर्माको शायकोंसे अत्यन्त घायलकिया ८५ हेभरतर्षभ इसकेपीछे शत्रुहंता कृतबर्माने उसटूटेहुये बड़ेधनुषको त्यागके अन्य दूसरे धनुषको लेकर ८६ युद्धमें तीन २ बाणोंसे पांडवोंको घायल किया और आठबाणोंसे शिखंडीको घायल किया ८७ फिर बड़े यशस्वी शिखंडीने दूसरे धनुषको लेकर कच्छपके नखाकारक लक रखनेवाले बाणोंसे हार्दिक्यकेपुत्र कृतबर्माकोरोका ८८ इसकेपीछे युद्धमेंक्रोधयुक्त कृतबर्मा तीव्रतासे उसयाज्ञसेनकेपौत्रमहारथी शिखंडीके सन्मुख गया ८९ हेराजा वहशूर युद्धमें महात्मा भीष्मजी के मरनेकेकारण शिखंडीको अपना पराक्रम दिखलाताहुआ ऐसे चला जैसेकिशार्दूलहाथी पर जाताहै ९० वहदोनों दिग्गजों के समान अग्निके समान ज्वलित शत्रुओं के पराजय करने वाले कृतबर्मा और शिखंडी बाणोंकी परस्पर बर्षाकरते हुये दोनों परस्पर सन्मुख दौड़े ९१ उत्तम धनुषोंको चलायमान करते शायकों को धनुषों पर चढ़ातेहुये जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों को छोड़ता है उसी प्रकार सैकड़ों बाणोंको छोड़ते ९२ और बाणोंकी तीव्रतासे परस्पर संतप्त

करते दोनों महारथी वीर प्रलय कालीन दो सूर्य्योंके समान शोभायमान हुये ९३ कृतबर्माने युद्धमें महारथी शिखण्डी को तिहत्तर बाणों से घायल करके फि रसात बाणोंसे घायलकिया ९४ वह कठिन घायल पीड़ित मूर्च्छा में डूबाहुआ धनुषबाण को छोड़कर रथके बैठने के स्थानपर बैठगया ९५ हेपुरुषोत्तम आप के शूरबीरों ने युद्धमें उसको व्याकुल देखकर कृतबर्मा की प्रशंसा करी और कपड़ोंको हलाया ९६ शीघ्रता करने वाला सारथी कृतबर्माके बाणोंसे पीड़ामान महारथी शिखण्डी को उस दशामें युक्त जानकर युद्ध भूमिसे दूरले गया ९७ उस रथके बैठने के स्थान पर शिखण्डीको पीड़ामान जानकर पांडवोंने रथोंकेद्वारा शीघ्रही कृतबर्माको घेरलिया ९८ वहां पर महारथी कृतबर्माने बड़ा अपूर्वकर्म किया जो अकेलेनेही साथियों समेत पांडवों को युद्धमें रोंका ९९ महारथी कृतवर्माने पांडवों को बिजयकरके चन्देरी पांचाल संजय और केकय देशी महापराक्रमी शूरबीरोंको भी बिजयकिया १०० कृतबर्मासे घायल इधर उधर दौड़नेवाले पांडवों ने युद्ध में धैर्य नहीं किया १०१ वह हार्दिक्यका पुत्र कृतबर्मा भीमसेनादिक पांडवोंको युद्धमें बिजय करके निर्द्धूमअग्नि के समान युद्धमें नियत हुआ १०२ युद्धमें कृतबर्मासे भागेहुये बाणोंकी बर्षा से पीड़ामान वह सब महारथी मुखोंको फेर गये १०३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिचतुर्द्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४ ॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा चित्तको स्थिर करके सुनो जैसे कि महात्मा कृतबर्मासे उस सेनाके भागने पर १ और अत्यन्त प्रसन्न आपके शूरबीरों के कारण से भी लज्जा से नीचा शिर करने पर अथाह में थाह चाहनेवाले पांडवों का जो द्वीप अर्थात् रक्षाश्रय हुआ २ हे श्रेष्ठ बड़े युद्धमें आपके शूरबीरों के उस भयकारी शब्दको सुनकर सात्यकी शीघ्रही कृतबर्माके सन्मुखआया ३ वहां

क्रोध और अधैर्य से युक्त सात्यकी अपने सारथी से बोला कि हे सूत मेरे उत्तम रथको कृतवर्मा के सन्मुख कर ४ औरदेखयह क्रोध युक्त होकर पांडवो सेनाको नाश करता है हेतात इसको विजय करके अर्जुन के पास जाऊंगा ५ हे बड़े ज्ञानी धृतराष्ट्र इस बचन के कहने पर उसका सारथी एक पलभरमेंही कृतवर्माके सन्मुख गया ६ अत्यन्त क्रोध युक्त हार्दिक्यके पुत्र कृतवर्माने तीक्ष्णबाणों से सात्यकी को ढंका उस कारण से वह सात्यकी क्रोधरूप हुआ ७ फिर सात्यकीने युद्धमें शीघ्रही तीक्ष्ण भल्लको कृतवर्मा के ऊपर चलाया और दूसरे ऐसे चारबाणोंको भी फैंकाटकिजिन्होंने उसके घोड़ों को मारा और भल्ल से उसके धनुष को काटा और इसी प्रकार पृष्ट रक्षक और सारथी को भी तीक्ष्ण बाणों से छेदा ९ इसके पीछे सत्य पराक्रमी सात्यकी ने उसको बिरथ करके गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से उसकी सेनाको पीड़ामान किया १० तब सात्यकी के बाणोंसे पीड़ित होकर सेना पृथक् २ होगई यह सब काम करके वह सत्य पराक्रमी सात्यकी शीघ्रता से चल दिया ११ हे राजा वह सात्यकी इस प्रकारसे आपकी सेनामें कर्म कर और द्रोणाचार्य्य की समुद्ररूपी सेनाको उल्लंघन करके १२ अत्यन्त प्रसन्न चित्त से युद्ध में कृतवर्माको पराजय करके सारथी से बोला कि भय और व्याकुलतासे रहित होकर धीरेधीरेचलो १३ और रथ घोड़े हाथी और पदातियों से पूर्ण आपकी उस सेनाको देखकर फिर सारथीसे बोला १४ कि द्रोणाचार्य्य की सेनाके बाईं ओर जो यह बादल रूपीबड़ी भारी हाथियों की सेना है जिसका मुख सुबर्णका रथ रखनेवाला बीरहै १५ हेसूत यह बहुत से शूर बीर युद्धमें कठिनता से हटाने के योग्य और मेरे निमित्त जीवन के त्यागनेवाले दुर्य्योधनके आज्ञावर्ती १६ सबबड़े धनुषधारी और सिंहके समान लड़नेवाले सुबर्ण जटित ध्वजाधारी त्रिगर्त देशियों के बड़ेरथी राजकुमार १७ बीर युद्धाभिलाषी मेरे सन्मुख नियत हैं हे सारथी अब घोड़ोंको चलायमान करके मुझको वहां पहुंचा

क्रोध और अधैर्य से युक्त सात्यकी अपने सारथी से बोला कि हे सूत मेरे उत्तम रथको कृतबर्मा के सन्मुख कर ४ औरदेखयह क्रोध युक्त होकर पांडवो सेनाको नाश करता है हेतात इसको विजय करके अर्जुन के पास जाऊंगा ५ हे बड़े ज्ञानी धृतराष्ट्र इस बचन के कहने पर उसका सारथी एक पलभरमेंही कृतबर्माके सन्मुख गया ६ अत्यन्त क्रोध युक्त हार्दिक्यके पुत्र कृतबर्माने तीक्ष्णबाणों से सात्यको को ढंका उस कारण से वह सात्यकी क्रोधरूप हुआ७ फिर सात्यकीने युद्धमें शीघ्रही तीक्ष्ण भल्लको कृतबर्मा के ऊपर चलाया और दूसरे ऐसे चारबाणोंको भी फेंकाटकिजिन्होंने उसके घोड़ों को मारा और भल्ल से उसके धनुष को काटा और इसी प्रकार पृष्ट रक्षक और सारथी को भी तीक्ष्ण बाणों से छेदा ९ इसके पीछे सत्य पराक्रमी सात्यकी ने उसको बिरथ करके गुप्त ग्रन्थोवाले बाणों से उसकी सेनाको पीड़ामान किया १० तब सात्यकी के बाणोंसे पीड़ित होकर सेना पृथक् २ होगई यह सब काम करके वह सत्य पराक्रमी सात्यकी शीघ्रता से चल दिया ११ हे राजा वह सात्यकी इस प्रकारसे आपकी सेनामें कर्म कर और द्रोणाचार्य्य की समुद्ररूपी सेनाको उल्लंघन करके १२ अत्यन्त प्रसन्न चित्त से युद्ध में कृतबर्माको पराजय करके सारथी से बोला कि भय और व्याकुलतासे रहित होकर धीरेधीरेचलो १३ और रथ घोड़े हाथी और पदातियों से पूर्ण आपकी उस सेनाको देखकर फिर सारथीसे बोला १४ कि द्रोणाचार्य्य की सेनाके बाईं ओर जो यह बादल रूपीबड़ी भारी हाथियों की सेना है जिसका मुख सुबर्णका रथ रखनेवाला बीरहै १५ हेसूत यह बहुत से शूर बीर युद्धमें कठिनता से हटाने के योग्य और मेरे निमित्त जीवन के त्यागनेवाले दुर्य्योधनके आज्ञावर्ती १६ सबबड़े धनुषधारी और सिंहके समान लड़नेवाले सुबर्ण जटित ध्वजाधारी त्रिगर्त देशियों के बड़ेरथी राजकुमार १७ बीर युद्धाभिलाषी मेरे सन्मुख नियत हैं हे सारथी अब घोड़ोंको चलायमान करके मुझको वहां पहुंचा

दे १८ मैं भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के देखते हुये त्रिगर्त्त देशियों से लड़ूंगा इसके पीछे यादव सात्यकी के बिचारमें नियत होकर सूत बड़े धैर्यसे १९ सूर्य्यबर्ण प्रकाशित पताकाधारी रथकी सवारीसे चला सारथीके आज्ञाकारी और अपनी गतिसे चलने वाले २० युद्धमें बायुके वेगके समान कुन्दनामफूल और चन्द्रमा और चांदी के समान प्रकाशमान उत्तम घोड़े उसको लेचले तदनन्तर तीक्ष्ण छेदने वाले नानाप्रकार के तीक्ष्ण शायकों को फैलाते शूरों ने सिंहबर्ण उत्तम घोड़ों की सवारी से युद्ध में आतेहुये उस सात्यकीको सब ओरसे हाथियों की सेनाओं के द्वारा आकर घेरलिया २१ । २२ यादव सात्यकीने भी तीव्रबाणों के द्वारा हाथियों की सेनासे ऐसा युद्ध किया जैसेकि बर्षाऋतुमें बड़ा बादल अपनी बर्षासे बड़े पहाड़ोंके ऊपर वर्षा करताहै २३ शिनियोंमें बीरसात्यकी से प्रेरित बज्र और बिजली के स्पर्शके समान बाणों से घायल हुयेहाथी युद्धको त्याग २ करभागे २४ हेराजा टूटे दांत रुधिर में लिप्त टूटे मस्तक गिरेहुये कान मुख ध्वजा सारथी और पताकाओं से रहित २५ टूटे कवच घंटे टूटीहुई बड़ीध्वजा कम्बल से रहित और मृतक सवारीवाले हाथी दिशाओंकोभागे २६ यादव सात्यकीके नाराच, बत्सदन्त, भल्ल, अंजलिक, क्षुरप्र और अर्द्धचन्द्रनाम बाणोंसे खण्ड २ अंगबादलके समानशब्द करनेवाले हाथीनाना प्रकार के शब्दों को करते रुधिर मूत्र और बिष्टा को छोड़ते हुये भागे २७। २८ और बहुतसे हाथी घूमनेवाले और चेष्टा करने वाले हुये और कितनेही पृथ्वी पर गिरपड़े इसी प्रकार बहुत से मृतकप्राय होगये इस प्रकारसे वह हाथियोंकी सेना महा पीड़ामानहुई २९ अग्नि और सूर्य्य के समान बाणों से चारों ओर को भागे उस हाथियोंकी सेना के मरनेपर बड़े पराक्रमी और उपाय करनेवालेजलसिन्धुने ३० चांदीबर्णके घोड़े रखनेवाले सात्यकीके रथ पर अपने हाथी को पहुंचाया वह जलसिन्धु स्वर्णमयी कवचधारी शूरबीर सुबर्ण के बाजूबन्दों समेत पवित्र ३१ कुंडल मुकुट और

खड्ग रखनेवाला लाल चन्दन से लिप्तांग शिरपर स्वर्ण निर्मित प्रकाशित मालाधारी ३२ छातीपर निष्क और प्रकाशित कण्ठ सूत्रको धारण कर्त्ता हाथीके मस्तकपर स्वर्णमयी धनुषको चलायमानकरता ३३ ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि बिजलीसमेत बादल होताहै राजा मगधके अकस्मात् आतेहुये उस उत्तम हाथीको ३४ सात्यकीने ऐसे रोका जैसे कि समुद्रको मर्यादा रोकती है हे राजा सात्यकी के उत्तम बाणोंसे रुकेहुये उस हाथीको देखकर ३५ बड़ा पराक्रमी जलसिन्धु युद्धमेंक्रोधरूपहुआ इसके अनन्तर क्रोध युक्त जलसिन्धुने भारके साधनेवाले बाणोंसे ३६ शिनीकेपौत्रको छाती पर घायल किया इसके पीछे बिषमें बुझाये हुये तीक्ष्ण दूसरे भल्ल से ३७ वृष्णियों में बीर धनुषधारी सात्यकी के धनुष को काटा हे भरतबंशी फिर उस हंसतेहुये मगध देशी बीरने उस टूटे धनुष वाले सात्यकी को पांच तीक्ष्णबाणों से घायलकिया जलसिन्धुके बहुत बाणों से घायल वह पराक्रमी ३८। ३९ महाबाहु कंपायमान नहींहुआ यह आश्चर्य्यसा हुआ बाणोंको ध्यान न करते पराक्रमी सात्यकी ने दृढ़ता और बिश्वास समेत ४० दूसरे धनुष को लेकर तिष्ठ तिष्ठ इस शब्दको कहा सात्यकी ने इतना कह कर जल सिन्धुको वह वृहद्वक्षस्स्थलपर ४१ साठ बाणों से अत्यन्त घायल कियाऔर फिर हंसते हुयेने अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्रसे जलसिन्धुके बड़े धनुषको मुष्टिके स्थानपर काटा ४२ और तीन बाणोंसेघायल किया फिर जलसिन्धुने उसधनुषको बाणसमेत त्याग करके ४३ शीघ्रही सात्यकी के ऊपर तोमरको छोड़ा वह भयकारी तोमर उस बड़े युद्धमें सात्यकीकी बामभुजाको छेदकर ४४ बड़ेसर्पके समान श्वास लेता पृथ्वीपर गिर पड़ा फिर बाम भुजाके छेदनेपर सत्य पराक्रमी सात्यकीने ४५ तीस तीक्ष्ण बिशिखों से जलसिंन्धुको घायल किया इसके पीछे बड़े पराक्रमी जलसिन्धुने खड्ग को लेकर ४६ और सौचन्द्रमाओं से युक्त बड़ी उत्तम ढालको लेकर खड्गको घुमाकर सात्यकी पर छोंड़ा ४७ वह खड्ग सात्यकी के धनुष को काटकर

पृथ्वीपर गिर पड़ा और पृथ्वीपर गिरकर बनेटीके समान शोभायमान हुआ ४८ फिर सात्यकीने सब शरीरके चीरने वाले शालकी शाखाके रूप इन्द्र वज्रकेसमान शब्दायमान दूसरे धनुषको लेकर ४९ क्रोध से टंकारकर बाणके द्वारा जलसिन्धुको घायल किया इसके पीछे मधुदेशियों में श्रेष्ठ हंसते हुये सात्यकीने जलसिन्धुकी भूषणों से अलंकृत दोनों भुजाओंको क्षुरप्रनाम दो बाणों से काटा फिर वह परिघके समान उसकी दोनों भुजा उस उत्तम हाथीके ऊपरसे पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़ीं ५०।५१ जैसेकि पर्व्वतसे गिरे हुये पांचशिरवाले दो सर्प इसके पीछे सात्यकीने सुन्दर दाढ़ और कुंडलोंसे शोभित ५२ उसके बड़े उत्तम शिरको तीसरे क्षुरप्र नाम बाण से काटा जलसिन्धुके उस भयकारी दर्शन वाले धड़ने जिसके शिर और भुजा काट डालेथेहाथीको रुधिर से सींचा ५३ हेराजा युद्धभूमिमें जलसिन्धुको मारकर शीघ्रता करनेवाले सात्यकी ने बिमानको हाथीके कन्धेसे गिराया ५४ जलसिन्धुका हाथी रुधिरमें भराहुआ लटकते और चिपटेहुये उत्तम आसनको लेचला ५५ यादव के बाणोंसे पीड़ामान वह बड़ा हाथी अपनी सेना को पीड़ित और मर्दन करता हुआ बड़े भयकारी शब्दोंको करता हुआ भागा ५६ हे श्रेष्ठ फिर वृष्णियों में श्रेष्ठ सात्यकी के हाथ से मरे हुये जलसिंधुको देखकर आपकी सेनामें बड़ा हाहाकार हुआ ५७ आपके शूरबीर भागने में प्रवृत्त चित्त शत्रुओंके बिजय करनेमें असाहसी और मुख मोड़मोड़कर चारों ओर से भागे ५८ इसी अन्तरमें शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य शीघ्रगामी घोड़ोंको सवारी से महारथी सात्यकी के सन्मुख गये ५९ बड़े २ कौरव लोग उसप्रकार के पराक्रम करनेवाले सात्यकीको देखकर द्रोणाचार्य्यके साथ क्रोध रूप सात्यकी के सन्मुख गये ६० इसके पीछे यादव सात्यकी द्रोणाचार्य्य और कौरवों का युद्ध महाभयकारी देवासुरोंके युद्धके समान जारी हुआ ६१॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतीपरिपंचदशोऽध्यायः ११५ ॥

एकसौसोलहका अध्याय॥

संजय बोलेकि बाण समूहों के फैलाने वाले सावधान प्रहार कर्त्ता और शीघ्रता करने वाले उनसबने सात्यकी से युद्धकिया १ द्रोणाचार्य्यने सत्तर तीक्ष्ण धार वाले बाणोंसे उसको घायलकिया दुर्मर्षणने बारहबाणसे दुस्सहने दशबाणोंसे२ बिकर्णने भी तीक्ष्ण धार वाले तीसबाणों से बामभागमें और दोनों छातियोंके मध्यमें घायल किया ३दुर्मुखने दशबाणोंसे दुश्शासनने आठ बाणसेऔर चित्रसेन ने दो बाणों से सात्यकीको घायल किया ४ हेराजादुर्योधनने युद्धमें बाणोंकी बड़ीबर्षा से माधव सात्यकी को पीड़ामान किया औरअन्य २ बहुतसे शूर महारथियोंने भी घायलकिया ५ फिर आपके महारथी पुत्रोंसे रुकेहुये यादव सात्यकीने उन सबको पृथक् २ बाणोंसे घायल किया ६ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य को तीन बाणसेदुस्सहको नवबाणोंसे बिकर्ण को पच्चीसबाणोंसे चित्रसेन कोसात बाणसे ७ दुर्मर्षणको बारहबाणसे बिबिंशति को आठबाणों से सत्यव्रतको नवबाणोंसे और बिजय को दशबाणोंसेघायलकिया ८ इसके पीछे धनुषको टंकारताहुआ महारथी सात्यकी शीघ्रतासे आपके महारथी पुत्र सुबर्ण के बाजूबन्द रखने वाले दुर्य्योधन के सन्मुख गया ९ सब पृथ्वीके राजा और सबलोक के महारथी को बाणोंसे कठिन घायल किया इसकेपीछेउन दोनोंका युद्ध हुआ १० तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते शायकोंको धनुष पर चढ़ाते उनदोनोंमहारथियोंने युद्धमें परस्पर दृष्टिसे गुप्तकिया ११ कौरव राज दुर्योधन से घायल सात्यकी अत्यन्तशोभित हुआ और ऐसे बहुत रुधिरको डाला जैसेकि लाल चन्दन अपनेरसको डालताहै १२ औरयादव के बाण समूहोंसे घायल आपका पुत्रभी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि स्वर्णमयी भूषणोंका रखनेवाला ऊंचा यज्ञस्तंभ होता है १३ हे राजा युद्धमें हंसते हुये माधव सात्यकीने युद्धमें धनुषधारी दुर्योधनके धनुषको क्षुरप्रसेकाटा १४ फिर इस टूटे धनुषवाले को

अनेक बाणोंसे ढकदिया उस शीघ्रता करने वाले शत्रुके बाणोंसे घायल १५ राजाने युद्धमें शत्रुके बिजय चिह्नको नहीं सहा १६ इसके पीछे सुबर्ण पृष्ठ कठिनता से खैंचने के योग्य दूसरे धनुषको लेकर शीघ्रही सौशायकोंसे सात्यकीको घायल किया १७ आपके पराक्रमी धनुष धारी पुत्रसे अत्यन्त घायल क्रोधके बशीभूत हुये उस सात्यकीने आपके पुत्रको पीड़ामान किया १८ आपके महारथी पुत्रोंने राजाको पीड़ित देखकर बड़ेबलसे बाणोंकीबर्षाके द्वारा सात्यकीको ढकदिया १९ आपके बहुतसे महारथी पुत्रोंसे ढके हुये सात्यकी ने प्रत्येक को पांच २ बाणोंसे घायल करके फिर सात बाणों से घायल किया २० और शीघ्रही आठ बाणोंसे दुर्य्योधन को घायल किया और हंसते हुये सात्यकी ने उसके उस शत्रुओं के डराने वाले धनुषको भी काटा २१ और मणिजटितनाग वाली ध्वजाको बाणों से गिराया औरबड़े यशवानने तेज धारवाले चार बाणों से चारो घोड़ों को मारकर क्षुरप्रनाम बाणसे सारथी को गिराया २२ इसी अन्तरमें प्रसन्न चित्तसात्यकी ने मर्मोंके छेदने वाले बहुत बाणों से महारथी राजा दुर्योधन को आच्छादितकर दिया २३ हे राजा युद्धमें सात्यकी के उत्तम बाणोंसे घायल वह आपका पुत्र दुर्योधन अकस्मात भागकर २४ धनुष धारी चित्रसेनके रथपर सवार हुआ जैसेकि आकाशमें राहुसे ग्रसेहुयेचन्द्रमा को देखतेहैं उसीप्रकार युद्धमें सात्यकी से पराजय कियेहुये राजा को देखकर संसार भर हाहाकार रूप होगया फिर महारथी कृतबर्मा उसशब्दको सुनकर अकस्मात वहांपर सन्मुखआया जहांपर कि वह समर्थ सात्यकी था २५। २६ उत्तमधनुषको टंकारताऔर घोड़ोंकोचलायमानकरता सारथीको घुड़कताकिशीघ्रआगे चलो २७ हे महाराज सात्यकी उस खुलेहुये मुखकाल के समान आते हुये को देखकर सारथीको यह बचनबोला २८ कियह बाण रखनेवाला कृतबर्मा रथकी सवारी से शीघ्र आताहै सो तू अपनेरथके द्वाराइस सर्बोत्तम धनुषधारी के सन्मुख चल २९ इसके पीछे अत्यन्त तीव्र

गामी घोड़े वाले विधिपूर्व्वक अलंकृत रथकी सवारी से सात्यकीने धनुष धारियों के मूर्त्तिरूप भोजवंशी कृतवर्मा को युद्धमें सन्मुख पाकर ३० अत्यन्त क्रोधसे अग्निरूप व्याघ्रके समान वेगवानदोनों नरोत्तम परस्पर सन्मुख हुये ३१ कृतवर्माने सात्यकी कोछब्बीस तीक्ष्ण धारवाले शायकोंसे घायलकिया ३२ सारथीकोपांच बाण से औरचारउत्तम बाणोंसे उनचारोघोड़ोंको ३३ घायलकिया जोकिबहुत उत्तमजातिके सिन्धु देशीथे फिर उसी सुनहरीध्वजावाले सुवर्णपृष्ठो बड़ेधनुषको टंकारकरनेवाले ३४ सुवर्ण केबाजूबन्द और कवचधारीने सुवर्णके पुंखवाले बाणोंसे उसे ढकदिया इसके पीछे शीघ्रतासे युक्त अर्जुनकेदेखनेके अभिलाषी सात्यकीने अस्सीशायकोंको कृतवर्माके ऊपरफेंका ३५ उसपराक्रमीके हाथसे अत्यन्त घायल शत्रुओं का तप्राने वाला अजेय कृतवर्मा ऐसे अत्यन्तकंपायमान हुआ जैसे कि भूकम्प होनेमें पर्व्वत कंपायमान होताहै ३६ सत्यपराक्रमी सात्यकी ने शीघ्रतासे ही तीक्ष्ण धारवाले तिरसठ बाणों से उसके चारो घोड़ोंको और सात बाणों से सारथीको घायल किया ३७ इसके पीछे सात्यकी ने सुनहरी पुंखवाले बिशिख नाम बाण को धनुषपर चढ़ाकर उस बड़े अग्नि रूप क्रोध युक्त सर्पके समान बाणको छोड़ा ३८ यमदण्डके समान रूपवाले उस बाणने कृतवर्माको छेदा ३९ वह भयकारी बाण सुवर्ण से जटित उसके प्रकाशित कवच को काटकर रुधिर से लिप्त होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा ४० युद्धभूमिमें यादव सात्यकी के बाणोंसे रुधिरसे पूर्ण पीड़ामान होकर वहकृतवर्मा बाणसमेत धनुषको छोड़कर अपने उत्तमरथसे गिर पड़ा ४१ अर्थात् सिंहकी समान दंष्ट्रावाला अतुल पराक्रमी वह नरोत्तमकृतवर्मा सात्यकी के बाणों से पीड़ामान रथ के बैठने के स्थान पर जंघाओं से गिर पड़ा ४२ सहस्त्रबाहु और समुद्रकेसमान व्याकुलता से रहित कृतवर्मा को रोक कर फिर सात्यकी चलागया ४३ वह शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी सबसेनाके लोगोंके देखते हुये खड्ग धनुष और शक्तियों से व्याप्त हाथी घोड़े और रथोंसे व्याकुल और

सैकड़ों उत्तम क्षत्रियों के कारण भयकारी रुधिरसे लिप्त सेनाको छोड़कर बीचमें से ऐसेचला जैसेकि वृत्रासुरका मारनेवाला इन्द्र असुरोंकी सेनामेंसे गयाथा४४।४५ फिरवह पराक्रमी कृतवर्मासचेत होकर दूसरे बड़े धनुषको लेकर वहां युद्धमें पांडवोंको रोकताहुआ नियत हुआ ४६ ॥

इतिश्रीमन्महाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषोड़शोऽध्यायः ११६ ॥

एकसौसचहका अध्याय ॥

संजय बोलेकि जहां तहां सात्यकीके हाथसे सेनाके पृथक्२होने परभारद्वाज द्रोणाचार्य्यने बाणोंके बड़ेसमूहोंसे सात्यकीको ढकदिया १ द्रोणाचार्य्य और सात्यकीका वहकठिन युद्ध सबसेनाके लोगोंकेदेखते ऐसा हुआ जैसे कि राजाबलि और इन्द्रका हुआ था २ इसकेपीछे द्रोणाचार्य्यने अपूर्व्व लोहेकेबनेहुये सर्पके समानरूप तीन बाणोंसे सात्यकी के ललाटपर छेदा ३ हेमहाराज वह सात्यकी ललाट पर लगेहुये सीधे चलनेवाले उन बाणों से ऐसा शोभाय मानहुआ जैसेकितीन शिखर रखनेवाला पर्व्वत ४ इसके पीछे अवकाश के चाहनेवाले भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने इन्द्रबज्रकेसमानशब्दायमान दूसरे बाणोंको उसके ऊपर चलाया ५ उत्तम अस्त्रकेजाननेवाले सात्यकीने द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छुटे और गिरते हुयेउनबाणोंको सुन्दर पुंखवाले दो२ बाणोंसे काटा ६ हेराजा द्रोणाचार्य्यने उसकी इस हस्तलाघवताको देखकर बहुत हंसकर तीस बाणोंसे सात्यकीको घायलकिया ७ इसकेपीछे सात्यकीकी हस्तलाघवता को अपनी हस्तलाघवता से नाशकरते द्रोणाचार्य्यने फिर पचास बाणोंसे उसको घायल किया ८ जैसे कि बामीसे क्रोधयुक्त बड़े २ सर्पउछलतेहैं हेराजा उसीप्रकार द्रोणाचार्य्यके रथसे शरीरके छेदनेवाले बाण गिरतेथे ९ उसी प्रकार सात्यकीके छोड़े हुये रुधिर पीनेवाले बाणोंने द्रोणाचार्य्यके रथको ढकदिया १० हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों मेंश्रेष्ठद्रोणाचार्य्यऔरयादव सात्यकीकी हस्तलाघतामें मुख्यताको

हमने नहींपाया वहदोनो नरोत्तम समानथे ११ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकीने नव बाणोंसे घायल किया और तीक्ष्णधारबाणसे भुजाको १२ और भारद्वाज जीके देखते हुये सौबाणोंसे सारथीको घायल किया महारथी द्रोणाचार्य्यने सात्यकीकी हस्तलाघवताको देखकर १३ सत्तर बाणसे सारथीको घायल करके तीन २ बाणोंसे घोड़ोंको घायलकिया १४ फिर सुनहरी पुंखऔर पक्षरखने वाले दूसरे भल्लसे महात्मासात्यकी कीध्वजाकोभीकाटा १५ उसके पीछेक्रोधयुक्त महारथी सात्यकीने धनुषको त्यागकर बड़ी गदाको लिया और भारद्वाजके ऊपर फेंका १६ द्रोणाचार्य्यने उस रेशमी कपड़ेसे मढ़ीहुई लोहमयी अकस्मात् आतीहुई गदाको बहुतप्रकारके अनेकबाणोंसे रोका १७ फिर सत्य पराक्रमी सात्यकीने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्णधारवाले बहुत बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल किया १८ उसने युद्धमें द्रोणाचार्य्यको छेदकर सिंहनादको छोड़ा निश्चय करके सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उसको नहीं सहा १९ इसकेपीछे सुनहरी दण्डवाली लोहेकीशक्तीको लेकरवेग से सात्यकी के रथपर फेंका २० वह कालके समान भयकारी शब्द युक्त महाभयानक रूप शक्ति सात्यकीको न पाकर रथको आघातित करके पृथ्वी पर गिर पड़ी २१ हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र इस के पीछे बाणसे दाहिनी भुजाको पीड़ामान करते हुये सात्यकी ने द्रोणाचार्य्य को घायल किया २२ द्रोणाचार्य्य ने भी युद्धमें अर्द्ध चन्द्र नाम बाणसे सात्यकी के बड़े धनुषको काटा और रथ शक्ति नाम शक्तिसे सारथी को घायल किया २३ और उसका सारथी रथ शक्ति से घायल होकर अचेत हो गया वह एक मुहूर्त तकरथ की बैठक को पाकर बैठगया २४ हे राजासात्यकी ने बुद्धिसे बाहर सारथ्य कर्मको किया जो द्रोणाचार्य्य से युद्ध करने वाला होकर आपही घोड़ों की बाग डोरोंको पकड़ा २५ इसके पीछे प्रसन्न रूप महारथी सात्यकी ने युद्धमें सौबाणों से ब्राह्मण को घायल किया २६ हे भरतबंशी फिर द्रोणाचार्य्य ने पांच बाण उस पर

चलायेयुद्धमें उन पांचों भय कारी बाणोंने कवच को छेदकर रुधिर का पानकिया २७ फिर भयकारी बाणोंसे घायल सात्यकी अत्यन्त क्रोधयुक्त हुआ और अपने शायक नामबाणोंको सुवर्णमयी रथ वाले द्रोणाचार्य्य पर छोड़ा २८ उसके पीछे एक बाणसे द्रोणाचार्य्य के सारथी को पृथ्वी पर गिरा कर मृतक सारथी वाले घोड़ों को बाणों से इधर उधर भगाया २९ हे राजा उस प्रकाशमान और चलायमान रथने युद्ध में ऐसे हजारों मंडल किये जैसे कि सूर्य्य करते हैं ३० सब राज कुमार राजाओं समेत पुकारे कि चलोदौड़ो द्रोणाचार्य्य के घोड़ोंको पकड़ो ३१ हे राजा वह महारथी युद्धमें शीघ्रही सात्यकी को छोड़ कर जिधर द्रोणाचार्य्यथे उधरहीको चले गये ३२ युद्धमें सात्यकी के बाणों से पीड़ामान और दौड़ते हुये उन लोगोंको देखकर आपकी सेना फिर व्याकुलहोकर छिन्न भिन्न होगई ३३ फिर वायुके समान शीघ्रगामी सात्यकी के बाणोंसेपीड़ा मान घोड़ोंसे पहुंचाये हुये द्रोणाचार्य्य व्यूहके मुखको पाकरनियत हुये ३४ पराक्रमी ने पांडव पांचाल और सात्यकी से पृथक् किये हुये व्यूह को देख कर उपाय किया औरव्यूहकी ही रक्षा करी ३५ अग्निके समान भस्म करने वाले पांडव और पांचालों को रोक कर काल सूर्य्यके समान उदय हुये द्रोणाचार्य्य रूपी प्रकाशित अग्नि नियत हुई ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोधिकसप्तदशोऽध्यायः १७१ ॥

एकसौअठारहका अध्याय ॥

संजयबोले कि वह पुरुषोंमें और शिनियोंमें बड़ा बीर और श्रेष्ठ कौरवोंसे भी अति श्रेष्ठ सात्यकी द्रोणाचार्य्य और कृतवर्मा आदिक आपके बड़े२ शूरबीरों को विजय करके हंसता हुआ सारथी से यह बचन बोला १ कि हे सारथी हम यहां केवल एकनिमित्तमात्रहीहैं क्योंकि केशवजी और इन्द्रके पुत्र अर्जुन के हाथ से मरे हुये अथवा मारे हुयेही शत्रुओं को हमने मारेहै वा मारेंगे २ तब वह

उत्तम धनुषधारी शत्रुओं का मारने वाला पराक्रमी शिनिवंशियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी युद्धमें उसको इस प्रकार से कहता सब ओर कोबाणों की बर्षा करता हुआ अकस्मात ऐसा दौड़ा जैसे मांसको देखकर बाज पक्षी दौड़ता है ३ हेभरतबंशी जितने कि आपकी सेनाकेसमूह थे वे सब लोग चारों ओर से उस चन्द्रमा और शंखके समान श्वेत घोड़ोंकी सवारी वाले इन्द्रके समान प्रभाव और पराक्रम वाले असह्य पराक्रमी सूर्य्यके समान तेजस्वी रथियों में श्रेष्ठ सेनाको मझाकर जाने वाले नरोत्तम सात्यकी के रोकने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि आकाश में बादल सूर्य्यको नहीं रोकसके ५ क्रोध युक्त और अत्यन्त अपूर्व्व युद्ध करने वाले धनुष धारी उस स्वर्ण मयी कवच धारी राजाओं में श्रेष्ठ सुदर्शनने हटकर के आते हुये सात्यकी को रोका ६ हे भरतबंशी उन दोनोंका युद्ध बड़ा भयकारी हुआ उस युद्धको आपके शूरबीर और सोमकों ने ऐसीप्रशंसा करी जैसे कि देवताओं के समूहोंने वृत्रासुर और इन्द्रके युद्धको करी थी ७ सुदर्शनने युद्ध भूमि में अत्यन्त तीक्ष्ण सैकड़ों बाणों से उस यादवों में श्रेष्ठ सात्यकीको घायल किया हे राजा सात्यकी नेभी उन बाणों को बीचही में काटा ८ इसी प्रकार इन्द्रके समान सात्यकीने भी राजा सुदर्शनपर जिन शायकों को फेंका उन शायकों को उत्तम रथपर सवार सुदर्शन ने अपने उत्तम बाणों से खराड२ करदिया ९ इस के अनन्तर बड़े तेजस्वी सुदर्शन ने सात्यकीके बाणों की तीव्रतासे उन अपने पूर्व बाणों को कटा हुआ देखकर क्रोध से भस्म करने वाले के समान उसने सुवर्ण जटित बाणों कोछोड़ा १० फिर उसने तीक्ष्ण धार सुन्दर पुंख अग्नि के समान कानतक खेंचेहुये तीन बाणोंसे छेदा वह बाण कवच को काटकर सात्यकी के शरीर में प्रवेश करगये ११ फिरउस राजकुमारने धनुष चढ़ाकर दूसरे अग्नि रूप चार बाणों से हट करके उसके चांदीके वर्णचारो घोड़ोंको घायल किया १२ इसी प्रकार उसके हाथसे घायलवेग वान इन्द्र के समान पराक्रमी सात्यकी अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों के

समूहों से शीघ्रही सुदर्शन के चारो घोड़ों को मार कर बड़े शब्द से गर्जा १३ फिर शिनियों में बड़े बीर सात्यकी ने इन्द्र बज्रके रूप कालाग्नि के समान क्षुरप्रनाम बाणसे उसके सारथी के शिरको काटकर सुदर्शन के भी उस शिरको १४ जोकि कुंडल धारी और पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाश मान था शरीर से ऐसा जुदा किया जैसे कि पूर्व्व समय में बज्रधारी इन्द्रने हट करके बड़े पराक्रमी राजा बलिके शिरको काटाथा १५ हेराजा वह यादव में श्रेष्ठ वेग वान बड़ी प्रसन्नतासे युक्त महात्मा इन्द्रकेसमान सात्यकी उसराज कुमार को मार कर युद्धमें शोभाय मान हुआ १६ हे राजा इसके पीछे लोकको आश्चर्य्य युक्तकरनेका अभिलाषी नरों में बीर अर्जुन बाणों के समूहों से आपकी सेनाको हटाकर उत्तम घोड़ों से युक्त रथकी सवारी के द्वारा जिस मार्ग होकर गयाथा उसी मार्ग में होकर यह भी गया १७ इकट्ठे उत्तम शूरबीरों ने उसके उस आश्चर्य्य युक्त किये हुये कर्म को बड़ी प्रशंसाको कि इसने बाणों केलक्षों पर बर्त्तमान हुये शत्रुओंको ऐसेभस्म करदिया जैसेकिअग्नि करताहै १८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टादशोऽध्यायः ११८

एकसौउन्नीसका अध्याय॥

संजय बोलेकि इसके अनन्तर वह बुद्धिमान और बड़ासाहसी वृष्णियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी युद्धभूमिमें सुदर्शनको मारकर सारथीसे फिरबोला १ कि रथहाथी औरघोड़े रूप कीचरखनेवाले बाणशक्ति रूप तरंग मालाधारी खड्ग रूप मछली और गदा रूप ग्राहरखनेवाले शूरोंके धनुष आदिसे बड़े शब्दवाले २ प्राणोंके घातक भय कारी बाजे और सिंहनादोंसे शब्दाय मान शूरबीरोंसे कठिनता पूर्व्वक स्पर्श होनेवाले और बिजयाभिलाषियों को दुखसेविजय होनेवाले ३ दुखसे तरनेके योग्य इस द्रोणाचार्य्यके महासमुद्रसे हम पारहोगये वह समुद्र युद्धभूमि में जल सिन्धुकी सेना रूप मनुष्य

खादकों से घिरा हुआथा ४ इसके सिवाय दूसरी शेषबचीहुई सेना को थोड़े जलवाली उतरनेके योग्य छोटीनदी मानताहूं अबतुमघोड़ोंको निर्भयतासेचलायमानकरो ५ अबमैंयुद्धमें दुःखसेसन्मुखताके योग्यद्रोणाचार्य्यको उनकेसाथियों समेतबिजयकरकेअर्जुनकी प्राप्ती कोमानताहूं ६ और शूरबीरोंमें श्रेष्ठ कृतबर्माकोबिजयकरकेभी अर्जुनको मिलाहुआ मानताहूं नानाप्रकार की सेनाओंको देखकर मुझको ऐसेभय नहीं उत्पन्न होताहै ७ जैसेकि सूखीघास और लता वाले सूखे बनमें ज्वलित अग्निका पांडवोंमें श्रेष्ठ मुकुटधारी अर्जुन सेचलीहुई ८ और पड़ेहुये घोड़े हाथी रथ और पतियोंके समूहोंसे बिषम कीहुई पृथ्वीको ऐसी देखो जैसेकि उसमहात्मासे पराजित हुई बहुसेना भागती है ९ हेसूत चारों ओरको दौड़तेहुये रथहाथी औरघोड़ोंसे यह धूलउठतीहै जोकि सोसनीरंगवाले रेशमी कपड़ेके समानहै १० मैं श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णको सारथी रखनेवाले अर्जुनको समीपही नियत मानताहूं बड़ेतेजस्वी गांडीव धनुषके यह शब्द सुनाई देतेहैं ११ निश्चय करके जैसे शकुन मेरेआगे प्रकट होतेहैं उनसे प्रत्यक्षहै किसूर्य्यास्तके पूर्व्वही अर्जुन जयद्रथको मारेगा १२ धीरेपनेसे घोड़ोंको विश्वास देताहुआ वहांपर चल जहां कि शत्रुओंकी सेनाहै और जहांपर हस्तत्राण रखनेवाले दुर्य्योधन कोआगे रखनेवाले यह १३ कवचधारी निर्दयकर्मी युद्ध मेंदुर्मद काम्बोजदेशी बाणधनुधारी प्रहार करनेवाले यव, १४शक, किरात, दरद, बर्बर, ताम्रलिप्तक, और नाना प्रकारके शस्त्र हाथमें रखनेवाले अन्य अनेक म्लेच्छहैं १५ जहांपर हस्तत्राणयुक्त दुर्योधन कोआगे रखने वाले युद्धाभिलाषी यह सब लोगमेरे सन्मुख नियत हैं १६ इन शत्रुओंको रथहाथी और घोड़ों समेत युद्धभूमिमें मारकर इसबड़ेभयकारी दुर्गम्य सेनारूपीसमुद्रको तराहुआ जानो १७ सूतबोला हे सत्यपराक्रमी माधव सात्यकी भयसे उत्पन्नहोने वाली व्याकुलता मुझको नहीं उत्पन्न होसक्ती चाहै क्रोधयुक्त परशुरामजीभी आपके आगे नियत होजांय १८ अथवा रथियोंमें श्रेष्ठ

द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और शल्यभी सन्मुख होंय हेमहाबाहु उस दशामेंभी आपकी रक्षामें होकर मुझको भयनहीं होसक्ता १६ हे शत्रुओंके मारनेवाले तुमने युद्धमें कवचधारी निर्दय कर्मी युद्धमें दुर्मद बहुतसे कांबोज देशी विजय किये २० धनुष बाण रखने वाले प्रहारकर्त्ता यवन, शक, किरात, दरद, बर्बर, ताम्रलिप्तक २१ और नाना प्रकार के शस्त्रहाथ में रखनेवाले अन्यबहुतसे म्लेच्छभी बिजयकिये तबतो किसी दशामेंभी मुझको भय नहीं हुआ २२ हे पंडित अब गोखुरु के समान युद्ध को पाकर मैं क्याभय करूंगा हे दीर्घायुवाले किसी मार्ग से तुमको अर्जुनके पास पहुंचाऊंगा २३ हे यादव तुम किन लोगों पर क्रोधितहो और किन का काल सन्मुखबर्त्तमान है और किन्होंका मन यमपुरकेजानेकी अभिलाष करताहै २४ और युद्धमें पराक्रम करनेवाले अथवानाशकरनेवाले कालके समान तुमसे पराक्रमी को देखकर किन्हों की सेना भागेगी हे महाबाहो अब यमराज किन को याद करता है २५ सात्यकी बोला किमैं अपनी प्रतिज्ञाको पूराकरूंगा और काम्बोज देशियों समेत इनमुंडोंको भी ऐसे मारूंगा जैसे दानव लोगोंको इन्द्र मारताहै तू मुझ को लेचल २६ अब मैं इन्हों का नाश करके प्यारेपांडव अर्जुन से मिलूंगा अब दुर्योधन समेत कौरव लोग मेरे पराक्रमको देखेंगे २७ हे सूत अब बारंबार मुंडों की सेना और सबसेना के मनुष्यों केमरने पर युद्धमें छिन्न भिन्न होने वाली कौरवी सेना के २८ शब्द को सुनकर दुर्योधन अनेक प्रकार से दुखी होगा अब मैं श्वेत घोड़े रखने वाले अपने आचार्य्य महात्माअर्जुन के किये हुये मार्ग को देखूंगा २९ अब राजा दुर्योधन मेरे बाणोंसे हजारों उत्तम शूरबीरों को मरा हुआ देखकर पछतावेगा ३० अब कौरव मुझ हस्तलाघव वा उत्तम बाणों के फेकने वालेके धनुष को बनेटोके रूप को देखेंगे ३१ मेरेबाणोंसे संयुक्त अंग वा बारंबाररुधिर छोड़ने वाले सेनाके लोगों के नाश को सुनकर दुर्योधन दुःखी होगा ३२ अब दुर्योधन मुझ क्रोधरूप और उत्तम २ बीरोंकोमार-

नें वाले के कर्मको देखकर इस लोकको दो अर्जुन रखनेवालामानेगा ३३ अब राजा दुर्योधन बड़े युद्धमें मेरेहाथसे मारे हुयेहजारों राजाओं को देख कर दुखी होगा ३४ अब हजारों राजाओंको मारकर राजाओं के मध्यमें महात्मा पांडवों में अपनी प्रीति और भक्तिको दिखलाऊंगा कौरव लोग मेरे बल पराक्रम और कृतज्ञताको जानेंगे ३५ संजय बोले कि सात्यकी के इस प्रकार के बचनों को सुन कर उस सारथीने चन्द्र बर्ण अति शीक्षितश्रेष्ठोंके सवार कराने बाले घोड़ोंको अत्यन्त चलायमान किया ३६ मन और बायु के समान शीघ्रगामी आकाशको पान करतेहुये उत्तमघोड़ोंने सात्यकी को यवनों के सन्मुख पहुंचाया ३७ उन बड़ेहस्तलाघवी यवनों ने सेनाओं से मुखन फेरने वाले सात्यकी को सन्मुख पाकर बाणों की बर्षासे ढकदिया ३८ हेराजा तब उस बेगवान सात्यकीनेअपने बाणों से उनसबके बाण और अस्त्रोंको काटा और उनके बाणोंने उसको नहीं पाया ३९ उस भयकारी रूप सात्यकीने सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धार सीधे चलने वाले बाणों से यवनों के शिर और भुजाओंको भी काटा ४० वह बाण चारों ओरसे लालरंग लोहे कांसीके कवचोंको और उनके शरीरोंको छेदकर पृथ्वीपर गिर पड़े ४१ युद्धमें बीर सात्यकी के हाथसे मारे हुये वह हजारों निर्जीव म्लेच्छ वहां पृथ्वी पर गिर पड़े ४२ कान तक प्रत्यंचाको खैंचकर छोड़ेहुये अटूट धार बाणोंसे पांच छः सातआठ यवनोंको छेदा ४३ हे राजा वहां आपकी सेनाको मारते सात्यकी ने कांबोज देशियों समेत शक शवर किरात और हजारों बर्बरों से ४४ पृथ्वीको गुप्त मांसरुधिर सूरत कीच रखने वालीकिया ४५ शिरत्राण रखनेवाले टूटेबाल डाढ़ीमूंछ रखनेवाले सैन्यनामम्लेच्छों के शिरोंसेपृथ्वीऐसी आच्छादितहोगई जैसेकिबिनापक्षवाले पक्षियोंसे व्याप्तहोतीहै४६ तब उन रुधिर से लिप्तसर्बांग और धड़ों से युक्त सबयुद्ध भूमिऐसी शोभाय मानहुई जैसेकि लालबादलोंसे व्याप्त आकाशहोताहै ४७ इन्द्र बज्रके समान स्पर्श वाले सुन्दर पर्व्व सीधेचलने वालेयादव

केबाणोंसे मृतकहोकर उन लोगोंने पृथ्वीको आश्रयस्थान किया ४८ प्राणोंकी आपत्तिमें फंसे हुये अचेत रूपथोड़े शेष बचेहुये लोग छिन्नभिन्न होकर पृथक होगये हेमहाराज उन कवच धारियोंको युद्धमें सात्यकीने बिजय किया ४९ एड़ी और चाबकों से घोड़ोंको मारते और भयके कारण बड़ीतीव्रतामें नियतहोकर सब ओरसे भागे५०हेभरत बंशी युद्ध में कठिनता से बिजय होनेवाले कांबोज देशियोंकी सेनाको भगाकर और यवनोंकी उसअनीकको छिन्नभिन्न करके ५१ सेनामें प्रवेशकर वहपुरुषोत्तम सत्यपराक्रमी सात्यकी आपके पुत्रोंको बिजय करके अपनेसारथी सेकहने लगाकि चलो ५२ गन्धर्बों समेत बाणोंने युद्धमें उसके कियेहुयेउसकर्मको जोकि पूर्व्व समय में किसीने नहीं कियाथा देखकरबड़ी प्रशंसा करी ५३ हेराजा प्रसन्न चित्त धारण और आपके शूरबीरोंने उस आतेहुये सात्यकीको जोकि अर्जुनका पृष्टरक्षक थादेखकर प्रशंसाकरी५४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनविंशतितमोऽध्यायः ११९॥

एकसौबीसका अध्याय॥

संजय बोलेकि इसके अनन्तर रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी यवन और कांबोजोंको बिजय करके आपकी सेनामें होकर अर्जुनकी ओरको चला १ सुन्दर दंष्ट्रा अपूर्व कवच ध्वजा रखनेवाले नरोत्तम नेआपकी सेनाको ऐसाभयभीत किया जैसे कि व्याघ्र मृगोंको संघ करभय भीत करताहै २ रथकी सवारीसे मार्गोंको घूमते उस सात्यकीने सुबर्ण पृष्टबड़े वेगवान सुनहरी चन्द्रमाओंसेसंयुक्तधनुषको अच्छे प्रकारसेघुमाया ३ सुबर्ण केबाजू बन्दोंसे अलंकृत स्वर्णमयी कवच धारी सुबर्णकीही ध्वजा वाधनुषका धारण करनेवाला शूर सात्यकी मेरुपर्व्वतके शिखरके समान शोभाय मानहुआ ४युद्धमें धनुष मंडल और पराक्रम रूपी किरणोंका रखनेवाला वहनर रूपी सूर्य्य ऐसे शोभाय मानहुआ जैसेकि शरद ऋतुका उदयहुआ सूर्य्य होताहै ५ उत्तम भुजा पराक्रमी उत्तम चक्षुवाला नरोत्तम

सात्यकी आपके शूरबीरोंके मध्यमें ऐसे शोभायमानहुआ जैसेकिगौ ओंकेमध्यमें बली बर्द्धशोभित होताहै ६ व्याघ्रोंके समान मारनेके अभिलाषीआपके शूरबीर उस मदोन्मत्तहाथीके समान मदोन्मत्तहा थीके समान चलनेवाले और समूहके मध्य में नियत मद झाड़ने वाले हाथीके समान सात्यकी के सन्मुख गये कठिनतासे तरनेके योग्य द्रोणाचार्य्य और कृतबर्माकी सेनाओंके उल्लंघन करनेवाले ७।८ राजा जलसिन्धु और कांबोज देशियोंकी सेनारूपी समुद्रसे पारहोकर कृतबर्मा रूपी नक्रसे रहित सेनारूपी सागरसे पारहो नेवाले ९ सात्यकीको अत्यन्त क्रोधरूप आपके इन रथियोंने घेर लियाजिनके कि नामयहहै कि दुर्य्योधन, चित्रसेन, दुश्शासन, बि-बिंशति १० शकुनि, दुस्सह, तरुण, दुर्धर्षण, क्रथ, और दूसरे अन्य बहुत से शूर जोकि शस्त्रोंके धारण करने वाले कठिनतासे आधीन होंने वाले थे वह क्रोध रूप होकर उस जातेहुये सात्यकी के पीछे दौड़े११ हेश्रेष्ठ फिर आपकी सेनाका ऐसाबड़ा शब्द हुआ जैसे कि पूर्व्वकालमें बायुसे व्याकुल कियेहुये समुद्रकाशब्दहोताहै १२सा-त्यकी उन सब सन्मुख दौड़नेवालोंकोदेखकर हंसता हुआसारथी से बोला कि चल १३ हाथी घोड़े रथ और पतियों से पूर्णजो यह दुर्योधनकी सेनामेरे सन्मुख आईहै जिसने कि रथोंके शब्द से सब दिशाओंको शब्दायमान कियाहै और पृथ्वीआकाशऔरसमुद्रादिकों कोभीकंपितकिया १४।१५ हे सारथीमैं बड़ेयुद्धमेंइस सेनारूपीसमुद्र कोऐसे रोकूंगा जैसेकि पूर्णमासीके उठेहुये समुद्रकोमर्यादा रोकती है १६ हे सारथी इस बड़े युद्धमें इन्द्रके समान मेरे बड़े पराक्रम को देखो इन शत्रुओंकी सेनाओंको अपने तीक्ष्णबाणों सेशब्दाय मान करताहूं १७ युद्धमें अग्निके समानमेरे बाणोंसे घायलशरीर और मरे हुये हजारों पदाती घोड़े रथ औरहाथियोंको देखोगे १८ इस प्रकार कहतेही कहते उस बड़े तेजस्वी सात्यकी के सन्मुख सेनाके लोग युद्धाभिलाषी होकर शीघ्रही जा पहुंचे मारो चलो भिड़ो देखो देखो ऐसे शब्द करते हुये गये १९ सात्यकीने तीक्ष्ण

धार वाले बाणोंसे उन इस प्रकार से बोलते हुये बीरोंको घायल किया और तीनसौ घोड़ों समेत चारसौहाथियों को मारा २० उस सात्यकी का और उन धनुष धारियों का वह कठिन युद्ध हुआ कि जिसमें देवासुरयुद्ध के समान मनुष्यादिकों का नाश हुआ २१ हे श्रेष्ठ उस सात्यकी ने सर्पोंके समान बाणोंसे आपके पुत्रकी उस बादलों के जालोंके समान रूप वाली सेनाको आच्छादित कर दिया २२ हे महाराज युद्धमें बाणोंके जालोंसे ढकेहुये आपकेबहुतसे शूरबीरोंको उस सात्यकी ने मारा हे महाराज वहां मैंने बहुत बड़ेआश्चर्य्यको देखा हे प्रभु सात्यकीका कोई बाणभी निस्फलनहीं हुआ२३।२४ रथ हाथी और घोड़ेरूपकीचरखने बाला पदातीरूप तरंगों से व्याप्त सेनारूपी सागर सात्यकी रूप मर्यादाको पाकर स्थिर हुआ २५ चारों ओरको उसके बाणोंसे घायल वह सेना जिसकेमनुष्य घोड़े हाथीआदिक व्याकुलथे बारंबार सन्मुखहुये २६ और जहां तहां ऐसे भ्रमण करनेलगे जैसे कि शरदीसे दुखित गौ. एंमैंनेवहां सात्यकी के शायकों से बिना घायलहुयेपदातीरथ हाथी और सवारों समेत किसी घोड़े को भी नहीं देखा २७।२८ हेराजा वहां अर्जुन ने भी वैसा नाश नहीं किया था जैसा कि सेनाओंका नास सात्यकी ने किया २९ अभय हस्तलाघवता से युक्त पुरुषोत्तम सात्यकी अर्जुन को उल्लंघन कर अपने कर्म को दिख लाता हुआ युद्ध करताहै ३० इसके पीछे राजा दुर्योधन ने तीक्ष्ण धार वालेतीन बाणोंसे सात्यकीके सारथीका और चारबाणसे चरोंघोड़ों को घायल किया ३१ सात्यकीको तीन बाणों सें छेदकर फिर आठ बाणों से घायल किया दुश्शासन ने सात्यकी को सोलह बाणों से ३२ शकुनिने पच्चीसबाणसे चित्र सेनने पांच बाणोंसे और दुस्सहने पन्द्रह बाणोंसे सात्यकी को छातीपर घायलकिया ३३ हेमहाराज इस प्रकार बाणोंसे घायल मन्दमुस कान करते वृष्णियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने उन सबको तीन२ बाणोंसे घायल किया ३४बड़ा उग्र पराक्रमी सात्यकी अत्यन्त प्रकाशित बाणोंसे शत्रुओंको कठिन

घायल करके युद्धमें बाजके समान घूमने लगा ३५ फिर शकुनीके धनुष को और हस्तत्राणों को काट तीन बाणोंसे दुर्य्योधन कोछाती केमध्यमें घायल किया ३६ सात्यकी ने सौबाणोंसे चित्र सेन कोदश बाणोंसेदुस्सहको औरबीसबाणोंसे दुश्शासनको घायल किया ३७ हे राजा आपके साले शकुनिने दूसरे धनुष को लेकर आठबाणसे सात्यकी को घायल करके फिर पांच बाणोंसे घायलकिया ३८ हे राजा दुश्शासन ने दश बाणोंसे दुस्सहने तीनबाणोंसे और दुर्मुख ने बारहबाणोंसे सात्यकीको घायल किया ३९ इसके पीछे दुर्योधनने तिहत्तर बाणोंसे माधव सात्यकी को घायल करके तीन तीक्ष्णबाणोंसे उसके सारथी को घायल किया ४० सात्यकी ने एक साथ होकर उपाय करने वाले उन शूर बीर महा रथियों को पांच २ बाणोंसे फिर घायल किया ४१ और उस रथियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने आपके पुत्रके सारथी को शीघ्रही भल्लसे मारा और वह मरकर पृथ्वी पर गिर पड़ा ४२ हे प्रभु धृतराष्ट्र उस सारथी के गिरनेपर आपके पुत्र का रथ बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध भूमि से दूर चलागया ४३ हे राजा इसके पीछे आपके पुत्र और सैकड़ों सेनाके मनुष्य राजा के रथ को देख कर भागे ४४ वहां सात्यकी ने उस सेनाको भगा हुआ देख कर सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे ढक दिया ४५ हे राजा इस रीति से सात्यकी आप की हजारों सेनाओं को भगाकर अर्जुन के रथके समीप गया ४६ आपके शूर बीरों ने उस बाणोंके लेने वाले सारथी समेतअपने शरीरकी रक्षा करने वाले सात्यकी की बहुत प्रशंसा करी ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिविंशतितमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइक्कीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मेरे उन निर्लज्ज पुत्रोंने उस बड़ी सेना को मर्द्दन कराके अर्जुन के पास जाते हुये सात्यकी को देख कर क्या किया १ उस समय अर्जुन के और सात्यकी के इस प्रकार के

कर्मों को देखकर इन काल पाने वाले मेरे पुत्रोंकी स्थिरता युद्धमें कैसे हुई २ सेना के मध्यमें वह पराजय हुये क्षत्री क्या कहेंगे और बड़ा यशस्वी सात्यकी युद्धमें कैसे सबको उल्लंघन करके गया ३ हे संजय युद्धमें सात्यकी किस प्रकार से मेरे जीवतेहुये पुत्रोंके सन्मुखगया वह सब मुझ से कहो ४ हे तात मैं तेरे मुखसे ही उसअत्यन्त अपूर्व युद्धको सुनताहूं जो कि एक के साथ बहुत से महा रथी शत्रुओं का हुआ ५ मैं अपनेअभागे पुत्र में इस विपरीतताको मानताहूं जिस युद्ध में यादव के हाथ से महारथी मारे गये ६ हे संजयजो सेना उस क्रोध युक्त अकेले सात्यकी केही साथ लड़नेको समर्थनहीं है तो उसका स्वामी पांडव अर्जुन ७ महा कर्मी और अपूर्व्व युद्ध कर्त्ता द्रोणाचार्य्य को बिजय करके मेरे पुत्रोंको इस प्रकार से मारेगा जैसे कि पशुओंके समूहों को सिंह मारता है ८ जो पुरुषोत्तम सात्यकी युद्धमें कृतबर्मा आदिक मतवाले शूरों सेभी नमर सका ९ वहां अर्जुन ने भी इस प्रकार का युद्ध नहीं किया जैसा कि युद्ध बड़े यशस्वी सात्यकी ने किया १० संजय बोले कि हे भरत बंशी राजा धृतराष्ट्र दुर्य्योधन के कारण से आपके कुमंत्र होने पर जो युद्ध हुआ है वह मैं तुमसे कहता हूं तुम चित्तलगाकर सुनों ११ कि वह पररुपर शपथ खाने वाले युद्धमें बड़ी निर्दयबुद्धि को करके आपके पुत्रकी आज्ञासे लौट आये १२ हे महाराज जिन मेंमुख्य दुर्य्योधन है वहतीन हजार सवार शक, काम्बोज, बाल्हीक, यवन, पारद, १३ कुणिग, तंगण, अम्बष्ठ, बर्बर समेत पैशाच और पहाड़ी यह सब क्रोध युक्त हाथमें पाषाण लिये १४ सात्यकी के सन्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि शलभ नाम पक्षी अग्नि में जातेहैं हे राजा पांच सौ शूरबीर सात्यकी के सन्मुख गये १५ इस के पीछे हजार रथ सौ महा रथ हजार हाथी दो हजार घोड़े नाना प्रकारके महारथी और असंख्य पात लोग बाणों की बर्षाओं को छोड़ते सात्यकी के सन्मुख गये १६ हे भरतबंशी महा राज दुश्शासन ने सबको यह प्रेरणा करी कि इसको मारो इस प्रकारसे सबकोकहने

वाले दुश्शासन ने सात्यकी को घेरा १८ वहां पर हमने सात्यकी के महाअद्भुत कर्म को देखा जो अव्याकुल चित्त होकर अकेले-नेही सबसे युद्ध किया १९ उस हाथी और रथोंवाली सब सेना को और सब सवारियों समेत दस्युनाम जातिवालों को भी मारा २० वहां मथेहुये चक्र और टूटेहुये धनुष और अनेक प्रकार के टूटे हुये ईशा दण्ड कवंधुर और अक्षोंसे २१ और मथेहुये हाथी और गिराईहुई ध्वजा और कवचधारी सेनाओं से भी पृथ्वी आच्छादित होगई २२ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ वहां माला भूषण वस्त्र और अनुकर्षोंसे पृथ्वी ऐसी ढकगई जैसे कि यहोंसे आकाश आच्छादित होताहै २३ हेश्रेष्ठ जो हाथी कि अंजन वंशमें उत्पन्न हुये और जो बामन बंशमें सुप्रतीक बंशमें और महापद्मबंश में उत्पन्न हुये वह पर्व्वताकार उत्तम हाथी भी पृथ्वीपर गिरपड़े २४ हे राजा जो हाथी ऐरावत वंशमें और बहुत से अन्य २ बंशमें उत्पन्न हुये वह बहुत से हाथी भी मृतक होकर पृथ्वी पर सोतेहैं २५ वहां सात्यकी ने बानायुज पहाड़ी कांबोज और बाल्हीक देशी उत्तमघोड़ों को भीमारा २६।२७ और नाना प्रकार के देशोंमें उत्पन्न होने वाले बहुत प्रकार की जाति वाले सैकड़ों हजारों हाथियोंको मारा २८ उन्हों के छिन्न भिन्न होनेपर दुश्शासन दस्युज्ञातिवाले शूर बीरों से बोला कि हे धर्मके न जाननेवालो लौटो युद्धकरो भागने से क्या लाभ होगा २९ आप के पुत्र दुश्शासन ने अत्यन्त छिन्न भिन्न उन लोगोंको देखकर पत्थरोंसे लड़नेवाले पहाड़ी शूरोंको चलाय मान किया ३० और कहा किहे पाषाण युद्धमें सावधान लोगो सात्यकी इस युद्धको नहीं जानताहै इस पाषाण युद्धके न जाननेवाले युद्धाभिलाषी सात्यकी को मारो ३१ इसी प्रकार सब कौरव भी पाषाण युद्धमें कुशल नहीं हैं तुम सन्मुख जाओ भय मतकरो सात्यकी तुमको नहीं पासकेगा ३२ पाषाणों से लड़नेवाले वह सब पहाड़ी राजा सात्यकी के सन्मुख ऐसे गये जैसे कि मंत्रीलोग राजा के सन्मुख होतेहैं ३३ इसके पीछे वह पहाड़ी राजा हाथीके मस्त-

कोंके समान पाषाणों को हाथोंमें लिये युद्धमें सात्यकी के आगेखड़े हुये ३४ और इसी प्रकार आपके पुत्रके कहनेसे यादवके मारनेके अभिलाषी अन्य शूर लोगोंने भी भल्लों को लेलेकर सब ओर से दिशाओं को रोंका ३५ सात्यकी ने बाणोंको धनुषपर चढ़ा कर उन पाषाण युद्ध करने के अभिलाषियों पर तीक्ष्णधार बाणों को फेंका ३६ और उन पहाड़ियोंके चलायेहुये कठिन पाषाण समूहों को सर्पाकार नाराचों से काटा ३७ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र खद्योतों के समूहोंके समान प्रकाशित उन पाषाणखंडों से हाहाकार करने वाले सेनाके लोगही घायल होगये ३८ हे राजा उसके पीछे बड़े २ पाषाण उठानेवाले वह पांचसौ शूरबीर जिनकी भुजा कट गई थीं सब पृथ्वीपर गिरपड़े ३९ फिर अन्य हजारों लाखों मनुष्य सात्यकीको न पाकर पत्थर रखनेवाले कटी हुई भुजाओंसमेत गिर पड़े ४० पाषाणों से लड़नेवाले वा उपाय करनेवाले हजारों नियत शूरबीरोंको मारा वह भी आश्चर्य्यसा हुआ ४१ इसके पीछे उनव्यात्तमुख, दरद, तंगण, खश, लंपाक, और कुणिन्द नाम म्लेच्छ जिनके हाथमें शूल औरखड्गथे उन्होंने सब ओरसे पाषाणों को बर्षाया तब बुद्धिमानीके कर्म में कुशल सात्यकीने उन पाषाण वृष्टियोंको नाराचोंसे काटा ४२ । ४३ अन्तरिक्षमें तीक्ष्ण बाणों से टूटेहुये पत्थरोंके शब्दों से रथ घोड़े हाथी और पतिलोग युद्धसे भागे ४४ पाषाण खण्डोंसे घायल मनुष्यहाथी औरघोड़े खड़ेहोने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि भौरों से काटेहुये नहीं ठहरसक्के ४५ तब मरनेसे बचेहुये रुधिरमें लिप्त टूटेमस्तक औरपिण्डवाले हाथियोंने सात्यकी के रथको त्याग किया ४६ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे सात्यकी से पीड़ित होकर आपकी सेनाके ऐसेबड़े शब्द हुये जैसेकि पर्व्वोंमें सागर के शब्द होतेहैं ४७ द्रोणाचार्य्यजी उस कठिन औरकठोर शब्दको सुनकर सारथीसे बोले हेसूतयह यादवों का महारथी युद्धमें क्रोधयुक्त ४८ सेनाको अनेक प्रकार से पराजय करता हुआ कालके समान घूमताहै सो हे सारथी जहां पर यह

कठोर शब्दहै वहांही रथको लेचल ४९ निश्चय सात्यकी पत्थरों से युद्ध करने वालों के साथ भिड़ा है और यह सब रथी भी शीघ्र-गामी घोड़ोंके द्वारा युद्धभूमिसे शीघ्रजाते हैं ५० शस्त्र और कवचों से रहित बड़े पीड़ित होकर जहां तहां गिरतेहैं और कठिन युद्धमें सारथी लोग घोड़ोंको नहीं संभाल सक्ते हैं ५१ इस बचनको सुन कर द्रोणाचार्य्यका सारथी शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ भारद्वाजजीसे बोला ५२ कि हे दीर्घायु वाले यह कौरवी सेना चारों ओरसे भागतीहै और युद्धमें छिन्नभिन्न हुये जहां तहां दौड़ते हुये शूरबीरोंको देखो ५३ यहशूर पांचालपांडवोंकेसाथ मिलेहुये तुमकोमारने की इच्छा से चारोंओर दौड़तेहैं ५४ हे शत्रुओंके पराजय करने वाले यहां स्थिरतासेअथवाचलायमान होकर समयके अनुसार कर्मकरोसात्य-की दूर गया ५५ हेश्रेष्ठ इस प्रकार भारद्वाजकी बार्त्तालापमेंही सात्यकी अनेक प्रकारके रथियोंको मारताहुआ दिखाई दिया ५६ युद्धमें सात्यकी के हाथसे घायल वह आपके शूरबीर सात्यकी के रथको त्यागकरके द्रोणाचार्य्यकी सेनामें चलेगये ५७ फिर दुश्शा-सन पूर्व्वमें जिनके साथ लौटा था वह रथ भी द्रोणाचार्य्य के रथकी ओर दौड़े ५८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकविंशतितमोऽध्यायः १२१॥

एकसौबाईसका अध्याय॥

संजय बोले कि दुश्शासन के रथको सन्मुख नियत देखकर द्रोणाचार्य्यजी दुश्शासन से यह बचन बोले १ कि हे दुश्शासन यह सब रथ किसरीतिसे भागे कहो राजा कुशल है और जयद्रथ जीवताहै २ तूभी राजकुमार औरराजाका भाईहोकर महारथीहै तू किस निमित्त युद्धमें भागताहै युवराज पदवीको प्राप्तकर ३ तूद्यूत के समय द्रौपदी से कहताथा कि तू द्यूतमें बिजय कीहुई दासीहै और मेरे बड़े भाई दुर्योधन के बस्त्रोंकी लानेवाली होकर हमारी आज्ञानुसार कामकरनेवालीहै ४ अब थोथेनलोंके अर्थात् नपुंसकों

के समान सब पांडव तेरे पतिनहीं हैं हे दुश्शासन पूर्व्व में तुम ऐसे बचन कहकर क्यों भागतेहो ५ तू आपही पांचाल औरपांडवों के साथ शत्रुता करके अकेले सात्यकी को सन्मुख पाकर युद्धमें किस हेतुसे भयभीतहै ६ तुम पूर्व्व समयमें नष्टद्यूतमें पांसोंको लेतेहुये नहीं जानतेथे कि यह सब भयकारी सर्पोंके समान बाण होंगे ७ पूर्वमें सबसे प्रथम अधिकतर तुमहीं पांडवोंके साथ असभ्य और अयोग्य अप्रिय बचनों के कहनेवाले और द्रौपदीके दुःखदेने के मूलहो ८ तेरीबड़ाई अहंकार और अहंकार से उत्पन्न होनेवाला पराक्रम कहां गया अब सर्पके समान पांडवों को क्रोध युक्त करके कहां जायगा ९ यह भरतबंशियोंकी सेना राज्य और राजादुर्योधन शोचने के योग्यहै जिसके कि तुम भाई होकर युद्धसे मुखफेरने वाले हो १० हे बीर अपनी भुजाके बलमें नियत होकर सेनाके छिन्नभिन्न होनेसे तुझ भयभीत के कारण पीड़ामान सेना रक्षाके योग्यहै सो तुमयुद्धमें भयभीत होकर युद्धको त्याग करके शत्रुओं को प्रसन्न करतेहो हेशत्रुओं के मारनेवाले तुझ सेनाके अधिपति और रक्षाश्रयके भयभीत होकर भागने पर युद्धमें कौनसा भयभीत नियत होगा ११।१२ अब युद्ध करने वाले अकेले सात्यकी के कारण से तेरी बुद्धि युद्धसे भागने में प्रवृत्तहै १३ हे कौरव जब तुम युद्धमें गांडीव धनुषधारी अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेव को देखोगे तब क्याकरोगे १४ युद्धमें सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान जैसे अर्जुन के बाणहैं उन बाणोंके समान सात्यकीके बाण नहीं हैं जिनसे कि भयभीत होकर तुम भागतेहो १५ हे बीर तुम शीघ्रजाओ और गान्धारी के गर्भमें फिर प्रबेशकरो तुझ पृथ्वी पर दौड़नेवाले का जीवन मैं और किसी प्रकार से नहीं देखताहूं १६ जो तेरी बुद्धि भागने मेंही प्रवृत्तहै तो सन्धि पूर्व्वक इसपृथ्वी को युधिष्ठिरको दो १७ जबतक अर्जुन के कांचली से छुटे सर्पकी समान छोड़े बाण तेरे शरीरमें नहीं लगतेहैं तब तक पांडवों से सन्धिकरो १८ जब तक महात्मा पांडव तेरे सौ भाइयोंको युद्धमें

मारकर पृथ्वीको नहीं लेते हैं तबतक पांडवों से सन्धि कर १६ जबतक कि धर्म का पुत्र राजा युधिष्ठिर और युद्धमें प्रशंसनीय श्रीकृष्णजो कोप युक्त नहीं होतेहैं तबतक पांडवों के साथ सन्धि-कर २० जब तक महाबाहु भीमसेन बड़ीसेना को मंझाकर तेरे सगे भाइयों को आधीन नहीं करताहै तब तक पांडवों के साथ सन्धि-कर २१ पूर्व्व समय में इस तेरे भाई दुर्योधन को भीष्मजीने सम-झाया था कि हे सुचाल और सुन्दर स्वभाववाले युद्धमें पांडवलोग अजेयहैं उनसे अवश्य सन्धि करले २२ तब तेरे निर्बुद्धी भाईदुर्यो-धनने उनके कहनेको नहीं किया सो तुम अब सावधान होकरबड़ी धीरतासे पांडवों के साथ युद्धकरो २३ और मैंने सुनाहै कि भीम-सेन तेरे रुधिरको पियेगा यहभी सत्यहै औरवहअवश्य उसीप्रकार होगा २४ हे अज्ञानीक्या तू भीमसेन के पराक्रम को नहीं जानता है जो युद्धमें मुख फेरनेवाले होकर तुमने उनसे शत्रुता प्रारंभ की २५ शीघ्रही रथ की सवारीसे वहांजाओ जहां सात्यकी बर्तमान है हे भरतवंशी तुझ से पृथक् होकर यह सबसेना भागजायगी अपने अर्थ युद्ध में सत्यपराक्रमी सात्यकी के साथ युद्धकरो २६ इतने समझाने और कहनेपर भी आपके पुत्रने कुछभी नहींकहा सुनी अनसुनी करके उस मार्गकोचला जिसमार्गमें होकर वह सा-त्यकी जाताथा २७ मुख न फेरनेवालेम्लेच्छोंकी बड़ीसेना समेत युद्धमें सावधान वह दुश्शासन सात्यकीसे युद्ध करनेलगा २८ र-थियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य भी मध्यम तीव्रता से संयुक्त पांचाल और पाण्डवोंके सन्मुख गये २६ द्रोणाचार्य्यने युद्ध में पांचालोंकी सेनामें प्रवेश करके सैकरों हजारोंशूरबीरोंको भगा-या ३० हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने युद्धमें अपने नामको सुनाकर पांडव पांचाल और मत्स्य देशियोंका बड़ा बिनाश किया ३१ द्रुपदका पुत्र तेजस्वी वीरकेतु जहां तहां सेनाओं के विजय करनेवाले उन भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजीके सन्मुख गया ३२ उसमें गुप्तग्रन्थीवाले पांच बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको घायल करके एकबाण

से ध्वजाको भेदा और सातबाणोंसे उसके सारथीको घायलकिया ३३ हे महाराज वहां युद्धमें मैंने अपूर्व कर्म्मको देखा जो द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें वेगवान् धृष्टद्युम्नके सन्मुख नियत नहीं रहे ३४ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र युद्धमें रुकेहुये द्रोणाचार्य्य को देखकर उन बिजयाभिलाषी पांचालोंने धर्मपुत्र युधिष्ठिरको सब ओरसे आवर्ण करलिया ३५ हे राजा उन लोगोंने अग्निरूप बाण और बड़े बादलरूप तोमर और नानाप्रकारके शस्त्रोंसे अकेले द्रोणाचार्य्यकोढक दिया ३६ कि द्रोणाचार्य्य उनको बाणोंके समूहोंके द्वारा सबओर से घायल करके ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बड़े आकाशमें बादलोंको घायलकरके वायुशोभित होतेहैं ३७ इसके पीछे शत्रुहन्ता ने सूर्य्य और अग्निके समान बड़े भयकारी बाणों को बीरकेतुके रथपर चलाया ३८ हे राजा वहबाण द्रुपदके पुत्र बीरकेतुको छेद कर रुधिरसे लिप्त अग्निरूपके समान शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ इसके पीछे राजा पांचालका पुत्र शीघ्रही रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायुसे पीड़ित चंपेका बड़ा वृक्ष पर्व्वतके शिखरसेगिरता है ४० उस बड़े धनुषधारी बड़ेपराक्रमी राजकुमारके मरनेपर शीघ्रता करनेवाले पांचालों ने द्रोणाचार्य्यको सबओरसेघेरलिया ४१ हे भरतबंशी भाईके दुःखसे पीड़ामान चित्रकेतु सुधन्वा चित्रवर्मा चित्ररथ ४२ यह सब वर्षाऋतुके समान बाणोंकी वर्षा करते युद्धाभिलाषी होकर एक साथही द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गये ४३ महारथी राजकुमारों से बहुत प्रकारसे घायल उसउत्तमब्राह्मणने उनके बिनाशके अर्थ क्रोध करके ४४ बाणोंके जालोंको उनपर छोड़ा हे राजाओंमें श्रेष्ठ धृतराष्ट्र कानतक खींचेहुये द्रोणाचार्य्य के बाणों से घायल ४५ कुमारोंने करनेके योग्य कर्मको नहीं जाना हेभरत बंशी हंसते और क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य ने उन अचेत कुमारोंको ४६ युद्धमें घोड़े रथ और सारथियोंसे रहित किया और फिर बड़े यशस्वी द्रोणाचार्य्य ने अत्यन्त तीक्ष्णधार बाण और भल्लों से उन सबके ४७ शिरोंको फूलोंके समान गिराया फिर बहतेजस्वी राज-

कुमार मृतक होकर रथोंसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ४८ जैसे कि पूर्व समयमें देवासुरोंके युद्धमें दैत्य और दानव गिरेथे हे राजा प्रतापवान् भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने युद्धमें उनको मारकर ४९ सुवर्णपृष्ठी कठिनतासे चढ़ानेके योग्य धनुषको घुमाया देवताओंके रूपसमान महारथी पांचालदेशी कुमारोंको मृतक देखकर ५० युद्धमें क्रोध युक्त धृष्टद्युम्नने नेत्रोंसे जलको गिराया और क्रोधयुक्त होकर बाणोंको मारता हुआ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके रथके पास आया ५१ हे राजा इसकेपीछे युद्धमें धृष्टद्युम्नके बाणोंसे ढकेहुये द्रोणाचार्य्यको देख कर अकस्मात् हाहाकार शब्द उत्पन्नहुआ ५२ परन्तु महात्माधृष्टद्युम्नके हाथसे बहुत प्रकारसे ढकेहुये वह द्रोणाचार्य्य पीड़ामान नहीं हुये और मन्द मुसकान करते युद्ध करने लगे ५३ हे महाराज इसके पीछे क्रोधसे मूर्च्छावान् क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नने नब्बे बाणोंसे द्रोणाचार्य्यको छातीपर घायल किया ५४ उस पराक्रमी के हाथसे कठिन घायल बड़े यशस्वी द्रोणाचार्य्यजी रथके बैठने के स्थानपर बैठकर मूर्च्छावान् होगये ५५ फिर महाबली पराक्रमी धृष्टद्युम्नने उस दशामें युक्त उन द्रोणाचार्य को देखकर धनुषको त्यागकर शीघ्रही खड्गको लिया ५६ हे श्रेष्ठ वह महारथी धृष्टद्युम्न शीघ्रही अपने रथसे कूदकर द्रोणाचार्य्यके रथपर चढ़गया ५७ क्रोधसे लालनेत्रने शरीरसे शिरको काटना चाहा उसके पीछे सचेतहुये द्रोणाचार्य्यने नवीन धनुषको लेकर ५८ मारने की अभिलाषा से सन्मुख वर्त्तमान धृष्टद्युम्नको देखकर समीप से छेदनेवाले वैतस्तिक नाम बाणोंसे घायलकिया ५९ और युद्ध में महारथी शत्रुसे लड़े हे राजा वह समीपसे मारनेवाले द्रोणाचार्य्यके छोड़ेहुये जो वैतस्तिक बाणथे ६० उन बहुत से शायकों से घायल और वेगसे रहित दृढ़ पराक्रमी बीर महारथी धृष्टद्युम्न ने अपने रथपर चढ़कर और बड़े धनुषको लेकर युद्धमें द्रोणाचार्य को घायल किया ६२ द्रोणाचार्य्यने भी बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकिया तब द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नका वह महायुद्ध ऐसा

अत्यन्त अपूर्वहुआ ६३ जैसा कि तीनोंलोकोंके चाहनेवाले इन्द्र और प्रहलादका युद्ध हुआथा यमक आदि अनेक मंडलों के घूमने वाले ६४ युद्धकी रीति के ज्ञाता और युद्ध भूमिमें शूरवीरोंके चित्तों को अचेत करनेवाले द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्नने बाणोंसे परस्पर घायल किया ६५ वर्षाऋतुमें बलाहकनाम बादलोंकेसमान बाणों की वर्षा करतेहुये दोनों महात्मा बाणोंसे आकाश दिशा और पृथ्वी को ढकनेवाले हुये ६६ हे महाराज वहांपर जीवोंके समूह क्षत्रियों के समूह और जो अन्य २ सेनाके मनुष्यथे उन सबने इन दोनों के अपूर्व युद्धकी प्रशंसाकरी ६७ हे महाराज फिर पांचालदेशीपुकारे कि युद्धमें धृष्टद्युम्नसे भिड़ेहुये द्रोणाचार्य्य अवश्यही हमारे आधीनतामें वर्तमानहोंगे ६८ फिर शीघ्रता करनेवाले द्रोणाचार्य ने युद्धमें धृष्टद्युम्न के सारथीके शिरको ऐसे गिराया जैसे कि वृक्ष के पकेहुये फलको गिराते हैं ६९ हे राजा इसके पीछे उस महात्मा के घोड़े भागे उनके भागनेपर पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने जहां तहां युद्धमें पांचाल और सृञ्जियों से युद्ध किया ७० हे समर्थ धृतराष्ट्र शत्रु बिजयी प्रतापी द्रोणाचार्य्य पाण्डव और पांचालों को विजय करके फिर अपने व्यूहमें नियतहोकर खड़ेहुये पांडवोंने युद्धमें उनके विजय करनेको साहस नहीं किया ७१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्वाविंशतितमोऽध्यायः १२२ ॥

एकसौतेईसका अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे बादलकेसमान बाणोंकी वर्षा करताहुआ दुश्शासन सात्यकीके सन्मुख गया १ उसने सात्यकी को साठ बाणों से और सोलह बाणों से युद्धमें घायल करके युद्धमें नियत हुये को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि मैनाक पर्वत कोनहीं करसक्के २ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ फिर नानादेशोंमें उत्पन्न होनेवाले रथोंके समूहों समेत सब ओरसे असंख्य शायकों को छोड़ते और बादलके समान शब्दोंसे दशोंदिशाओंको शब्दायमान

करते शूरबीर दुश्शासनने शायकनाम बाणोंसे उस सात्यकीको बहुत ढका ३।४ महाबाहु सात्यकीने युद्धमें उस आतेहुये दुश्शासन को देखकर सन्मुख में जाकर शायकों से ढकदिया ५ बाणों के समूहों से ढकेहुये युद्धमें भयभीत वह लोग जिनमें मुख्य दुश्शासनथा आपकी सेना के देखतेहुये भागे ६ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उन लोगोंके भागनेपर आपका पुत्र दुश्शासन सेनासे पृथक् होकर नियत हुआ और बाणोंसे सात्यकीको पीड़ामान किया ७ उसने चारबाणोंसे उसके घोड़ों को तीन बाणोंसे सारथी को और सौ बाणोंसे सात्यकी को युद्धभूमि में घायल करके सिंहनाद को किया८इसकेपीछे क्रोधयुक्त सात्यकीने युद्धमेंउसके रथ ध्वजा और सारथीको बाणोंसे गुप्त करदिया ९ उसने शूरबीर दुश्शासन को शायकोंसे ऐसा अच्छा ढका जैसे कि मकड़ी प्राप्तहोनेवाले मशक जन्तुको अपने जालोंसे ढकतीहै शत्रुके बिजय करनेवाले शीघ्रता युक्त सात्यकीने अपने बाणोंसे आच्छादित करदिया १० राजा दुर्योधनने इसप्रकार सैकड़ों बाणोंसे ढकेहुये दुश्शासनको देखकर त्रिगर्त्त देशियों को सात्यकी के रथ पर भेजनेकी प्रेरणाकरी११ तब वह निर्दयकर्मी युद्धकुशल त्रिगर्त्त देशी तीन हजार रथीसात्यकी के सन्मुख गये १२ वहां जाकर उनलोगोंने परस्पर शपथ खाकर युद्धमें बुद्धिको प्रवृत्त करके उससात्यकी को रथोंके बड़े समूहों से घेरलिया १३ युद्धमें उपाय करने वाले और बाणोंकी बर्षा करने वाले उन त्रिगर्त्त देशियों के पांचसौ उत्तम शूरबीरोंको सब सेनाके देखतेहुये सात्यकीने मारडाला१४ शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी के हाथसे मरेहुये वह लोग ऐसे शीघ्रगिरे जैसे कि बड़े वायुके वेगसे पर्व्वत से टूटेहुये वृक्ष गिरते हैं १५ हे राजा वहां बहुतप्रकारसे टूटे अंगवाले हाथियोंसे ध्वजाओं से सुवर्णभूषित पड़ेहुये घोड़ोंसे १६ और सात्यकी के बाणों से टूटे हुये रुधिर में मनुष्यों के शरीरों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि प्रफुल्लित किंशुक के वृक्षों से शोभितहोती है १७ युद्धमें सात्यकी के हाथसे घायल

उन आपके शूरबीरों ने अपने रक्षक को ऐसे नहीं पाया जैसे कीचमें फंसा हुआ हाथी अपने रक्षक को नहीं पासक्ता १८ इसके पीछे वह सब द्रोणाचार्य्य के रथके पास ऐसे वर्त्तमानहुये जैसे कि पक्षियों के राजा गरुड़के भयसे बड़े२ सर्प बिलोंमें गुप्त होतेहैं १९ वह बीर सर्पाकार बाणों से पांच सौ बीरों को मारकर धीरेसे अर्जुन के रथकी ओर को चला २० आपके पुत्र दुश्शासनने शीघ्रही गुप्तग्रन्थी वाले नव बाणों से उस जाते हुये नरोत्तम सात्यकी को घायल किया २१ फिर उस बड़े धनुषधारीने तीक्ष्णधार सुनहरी पुंख वाले गृद्ध पक्ष युक्त सीधे चलनेवाले बाणों से उसको घायल किया २२ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र हंसते हुये सात्यकी ने तीन बाणों से दुश्शासन को छेदकर फिर पांच बाणोंसे घायल किया २३ फिर सात्यकी तीक्ष्ण शीघ्रगामी पांच बाणों से आपके पुत्रको घायल करके और युद्धमें उसके धनुषको भी काटकर हंसता हुआ अर्जुन की ओर चला २४ इसके पीछे मारनेके इच्छावान् क्रोध भरे दुश्शासन ने केवल लोहेकी बनी हुई शक्तिको चलते हुये सात्यकी के ऊपर छोड़ा २५ हे राजा तब सात्यकी ने आपके पुत्रकी उस भयकारी शक्तिको तीक्ष्ण धार वाले बाणोंसे काटा २६ हे राजा फिर आप के पुत्रने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंसे सात्यकी को घायल करके सिंहनाद किया २७ फिर युद्धमें क्रुद्ध सात्यकी ने आपके पुत्रको अचेत करके अग्निके समान बाणोंसे छातीमेंघायल किया २८ फिर उसी महाभागने गुप्त ग्रन्थी वाले केवल लोहेके तीक्ष्ण मुख तीन बाणोंसे छेद कर फिर आठ बाणोंसे घायल किया २९ दुश्शासन ने बीस बाणसे सात्यकीको घायलकिया सात्यकीने भी गुप्तग्रन्थी वाले तीन बाणोंसे छाती के मध्यमें व्यथित किया ३० इसके पीछे महारथी सात्यकी ने तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके घोड़ोंको मारा और बड़े तीव्र गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे सारथीको भी मारा ३१ एक भल्लसे धनुषको पांच बाणसे हस्त त्राणको दोभल्ल से ध्वजा समेत रथकी शक्ति को काटा उसी प्रकार बिशिख नाम

तीक्ष्ण बाणसे सारथी के पीछे वाले को मारा ३२ वह टूटे धनुष रथ से बिहीन मृतक घोड़े और सारथी वाला दुश्शासन सेनापति त्रिगर्त्त देशियोंकी सेनाके मुख्य रथ के द्वारा हटाया गया ३३ हे भरतबंशी महाबाहु सात्यकीने एक मुहूर्त्त भर सन्मुख जाकरभीमसेन के बचन को स्मरण करके उस दुश्शासन को नहीं मारा ३४ हे भरतबंशी भीमसेन ने सभाके मध्यमें आपके सब पुत्रोंके मारने की प्रतिज्ञा करी है ३५ हे समर्थ राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे युद्धमें सात्यकी दुश्शासन को बिजय करके उसी मार्गमें शीघ्रता से चला जिस मार्ग होकर कि अर्जुन गयाथा ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रयोविंशतितमोऽध्यायः १२३ ॥

एकसौचौबीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय क्या मेरी उससेनामें कोई महारथी नहींथे जिन्हों ने उस प्रकार जाते और मारते हुये सात्यकी कोभी नहीं रोंका १ युद्धमें उसने वह कर्म किया जैसे कि महाइन्द्रनेदानवों के मध्यमें कियाथा २ अथवा वह पृथ्वी शूरबीरों से रहितथी जिधर होकर सात्यकी गया वा वह बहुत मृतक वालीथी जिसमार्ग से सात्यकी गया ३ हे संजय युद्धमें बीर सात्यकी के किये हुयेजिस कर्म को कहता है ऐसे कर्म करने को इन्द्रभी साहस नहीं करसक्ता है ४ हेसंजय जैसा तू कहता है वह श्रद्धा से रहित बुद्धि से बाहर है निश्चय करके उस अकेले सत्य पराक्रमी ने बहुतसी सेनाओं को बिध्वंस किया ५ अकेला सात्यकी किस प्रकार उन युद्धकरनेवाले बहुत महात्माओं को बिजय करके दूर चलागया हे संजयवह मुझसे कहौ ६ संजयबोले हेराजा आपकी सेनाके मनुष्य रथ हाथी घोड़े और पतियों की चढ़ाई बड़ी कठिन प्रलय कालके समानहुई ७ हे बड़ाई देनेवाले आह्निक समूहोंमें संसारके मध्य आपकी सेना के समान कोई समूह नहीं हुआ यह मेरा मत है ८ वहां पर आने वाले देवता और चारण लोग बोले कि इस पृथ्वी पर सेनाओं के

समूह इस्से बढ़ कर कभी नहीं होंगे ९ हेराजा इस प्रकारका कोई व्यूहनहीं हुआ जैसा कि जयद्रथ के मारने में द्रोणाचार्य्य की ओर से नियतहुआ १० युद्धमें परस्पर सन्मुख दौड़ते हुये सेनाओं के समूहों के ऐसे शब्द हुये जैसे कि कठिन वायुसे ओतप्रोत समुद्रों के शब्द होतेहैं ११ हे नरोत्तम आपकी और पांडवोंकी सेनामें इक ट्ठे होने वाले हजारों राजाथे १२ वहां युद्धमें दृढ़कर्मी क्रोधयुक्त बड़े बीरोंके बड़े रोमहर्षण करनेवाले कठिन शब्द हुये १३ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव और धर्मराजयुधिष्ठिर पुकारे १४ कि आओ प्रहार करो शीघ्र चारोंओर से दौड़ो बीर सात्यकी और अर्जुन शत्रुकी सेनामें पहुंचे हुये हैं १५ सुख पूर्व्वक जयद्रथ के पास चलो शीघ्रता से ऐसाही करो इस प्रकारसे सेनाओं को प्रेरणा करी १६ उन दोनों के मरनेपर कौरव अभीष्ट सिद्धि करैं और हम हारजावैं बड़े वेगवाले तुम सब साथ होकर शीघ्रहीसेना सागरको१७ ऐसे उथल पुथलकरो जैसेकिवायु समुद्रको उथल पुथल करताहै हे राजा भीमसेन और धृष्टद्युम्नकी आज्ञानुसार उन लोगों ने अपने प्राणोंको त्याग करके युद्धमें कौरवोंको घायल किया युद्धमें शस्त्रोंके द्वारा मृत्युकोचाहते स्वर्गाभिलाषी बड़े तेजस्वियों ने १९ मित्रके कार्य्यमें अपने जीवन की इच्छा को नहीं किया हे राजा उसी प्रकार बड़े यशको चाहते आपके शूर बीरयुद्धमें उत्तमबुद्धिको करके नियत हुये२० उसकठिन भयकारी युद्धके उत्पन्न होनेपर सात्यकी सबसेनाको बिजय करके अर्जुनके पासगया २१ उसयुद्ध में सूर्य्यकी किरणों से प्रकाशमान शरीरों के कवचों के प्रकाशने सेनाके लोगों की दृष्टियोंको चारों ओर से घायलकिया २२ हे महाराज इसप्रकार उपायकरनेवाली महात्मा पांडवों की बड़ी सेनाको राजा दुर्य्योधन ने मंझाया २३ हेभरतबंशी उन्होंका और उसका वह कठिन युद्ध सब जीवोंका महा विनाशकारी हुआ २४ धृतराष्ट्र बोले हेसूत इसप्रकार सेनाके भागने परआपत्तिमें फंसेहुये दुर्य्योधनने आपहीपीछेकीओरसेयुद्धकिया २५

बड़ेयुद्धमें एकका औरबहुतकामुख्यकरके राजाका युद्ध मुझकोबहुत कठिनबिदितहोताहै २६ बड़े सुखसेपोषणकिया हुआ औरलक्ष्मीसे लोककाईश्वर अकेला वह दुर्योधन बहुतशूरबीरोंको पाकर मुखको तोनहीं फेरगया२७संजय बोलेकि हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्र आप के अकेले पुत्रका अपूर्व्व युद्ध जैसेकि बहुतोंसे हुआ उसको मैं तुम से कहताहूं तुम चित्तसे सुनो २८ युद्धमें दुर्योधनने पांडवी सेनाको ऐसा तिर्र बिर्र किया जैसे कि कमलों का बनहाथीसे छिन्न भिन्न होताहै २९ हेराजा इसकेपीछे आपके पुत्रके हाथसे घायल हुई उस सेनाको देखकर वह पांचाल देशी जिनमें मुख्य भीमसेनथा उसके सन्मुख गये ३० उसने पांडव भीमसेनको दशबाणोंसे बीर नकुल व सहदेवको तीन २ बाणसे और धर्मराज को सात बाणसे घायल किया ३१ बिराट समेत द्रुपदको छः बाणसे शिखराडीको सौ बाणसे धृष्टद्युम्नको बीस बाणसे और द्रौपदीके पुत्रोंको तीन २ बाण से छेदा ३२ और युद्ध में हाथी और रथों समेत अन्यसैकड़ों शूरबीरोंको भयकारी बाणोंसे ऐसे मारा जैसे कि क्रोधयुक्त काल सृष्टिको मारताहै ३३ गुरूकी आज्ञा पूर्व्वक अपने अस्त्रोंके बलसे शत्रुओंको मारा वह दुर्योधन जिसकाकि धनुष मंडलरूपथा वह न बाणको चढ़ाता और न छोड़ता दिखाई पड़ा ३४ मनुष्योंने युद्धमें उस शत्रुहन्ता दुर्योधनका स्वर्णमयी पृष्ठवाला बड़ा धनुष मंडल रूपदेखा ३५ हेकौरव इसकेपीछे राजा युधिष्ठिरने दोभल्लसे आप-के उपाय करने वालेपुत्रके धनुष को युद्धमें काटा ३६ और अच्छे प्रकारसे चलाये हुये उत्तम दश बाणोंसे उसको घायलकिया वह शीघ्रही कवचको फाड़ शरीरको छेदकरपृथ्वीपर गिरपड़े ३७ इस केपीछे अत्यन्त प्रसन्न पांडवोंने युधिष्ठिरको ऐसे आवरण कियाजैसे कि पूर्व्व समयमें देवता और महर्षियोंने वृत्रासुर के मारनेमें इन्द्र को आवर्णित कियाथा ३८ उसकेपीछे आपका प्रतापी पुत्र दूसरे धनुषको लेकर राजा युधिष्ठिरको तिष्ठतिष्ठ शब्द कहकर सन्मुख गया ३९ बड़े युद्धमें आतेहुये उस आपके पुत्रको सन्मुख आया-

हुआ देखकर अत्यन्त प्रसन्न बिजयके इच्छावान पांचाल देशीउस के सन्मुख गये ४० युद्धमें पांडवको चाहते द्रोणाचार्य्य ने उनको ऐसे रोका जैसेकि कठिन बायुसे उठायेहुये जलछोड़नेवाले बादलोंको बायु रोकताहै ४१ हेमहाबाहो राजा धृतराष्ट्र उस युद्धमें पांडवोंका और आपके पुत्रोंका ऐसाबड़ा संग्राम हुआजोकि रोमांचोंको खड़ा करताथा ४२ रुद्रजीके क्रीड़ा स्थानके समान सब देह धारियोंका बिनाश हुआ इसकेपीछे जिधर अर्जुनथा उस ओरसे ऐसाबड़ाभारी शब्दहुआ ४३ जोकि सबशब्दोंसे अधिकतररोमांचों का खड़ा करने वालाथा महाबाहुअर्जुनके और आपके धनुषधारियोंके शब्द ४४ और भरत बंशियोंकी सेना के मध्यवर्त्ती बड़ेयुद्धमें सात्यकीकेशब्द औरव्यूहके द्वारपर शत्रुओंके साथबड़ेयुद्धमें द्रोणाचार्य्यके भीबड़े शब्द हुये ४५ हेराजा अर्जुन द्रोणाचार्य्य और महारथी सात्यकी के क्रोधरूप होनेपर इसरीतिसे यह बड़ा भारी बिनाश पृथ्वीपर बर्त्तमान हुआ ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुर्विंन्शतितमोऽध्यायः १२४ ॥

एकसौपच्चीसका अध्याय ॥

संजय बोलेकि हेमहाराज सौमकोंके साथ द्रोणाचार्य्यकाबड़ाभारी युद्धहुआ वह युद्ध बादलके समान शब्दायमानथा १ नरोंमें बीरऔर सावधान द्रोणाचार्य्य लालघोड़े वाले रथपर सवार होकर मध्यमतीव्रतामें नियत होकर युद्धमें पांडवोंके सन्मुखगये २ हेभरत बंशी आप के प्रियहितकी वृद्धिमें प्रवृत्त बड़ेधनुषधारी पराक्रमी उत्तम कलशसे उत्पन्न होनेवाले प्रतापी भारद्वाज द्रोणाचार्य्यअपूर्व्व पुंखवाले तीक्ष्ण बाणोंसे उत्तम २ शूरबीरोंकोचुनतेहुये युद्धमें क्रीड़ा करनेवाले हुये ३।४औरयुद्धमेंनिर्द्दयकेकर्योंका महारथी पांचोभाइयोंमें श्रेष्ठ बृहत्क्षत्र उनके सन्मुखगया५ और तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते उसने ऐसा अत्यन्त पीड़ामान किया जैसेकि गंधमाधन पर्व्वतपर वर्षाके जलको बरसाताहुआ बड़ा बादल होताहै ६ हे महाराजअ-

त्यन्त क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्यने सुनहरी पुंखतीक्ष्ण धारवाले पन्द्रह बाणोंको उसकेऊपर फेंका ७ प्रसन्न चित्तके समान उसने युद्धमें द्रोणाचार्य्य के छोड़े हुये उन प्रत्येक बाणों को जोकि क्रोध भरे सर्पकीसूरत थे पांचबाणों से काटा ८ उत्तम ब्राह्मणने उसकी उस हस्तलाघवता को देख बहुतहंसकर गुप्त ग्रन्थीवाले आठ बाणों को चलाया९ द्रोणाचार्य्यके धनुषसे निकले हुये शीघ्रता से गिरने वाले उन बाणों को देखकर युद्धमें उसने उतनेही तीक्ष्ण बाणों से रोका १० हेमहाराज वृहत्क्षत्रके कियेहुयेकठिनतासे करनेकेयोग्य उस कर्मको देखकर आपकी सेनावालोंको आश्चर्य्यहुआ ११इस केपीछेवृहत्क्षत्रको मारनेकी इच्छासे द्रोणाचार्य्यने युद्धमें बड़े कष्ट सेविजयहोनेवाले दिव्य ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया १२तब उस वृहत्क्षत्रनेद्रोणाचार्य्यके छोड़ेहुये अस्त्रको देखकरब्रह्मअस्त्रसेही उसब्रह्म अस्त्रको निवारण किया १३ हे भरतबंशी इसकेपीछे अस्त्रसेही उस ब्रह्मअस्त्रकेशान्तहोनेपर वृहत्क्षत्रने सुनहरीपुंखतीक्ष्णधारवालेसाठ बाणोंसे ब्राह्मण को घायलकिया १४ फिर द्विपादों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उस को नाराच से घायलकिया वह बाण उसके कवच को काटकर पृथ्वीमें समागया १५ हे राजाओं में श्रेष्ठ जैसे कांचली से छुटाहुआ काला सर्प बामी में प्रवेश करता है उसी प्रकार वह बाणयुद्धमें वृहत्क्षत्रको घायल करके पृथ्वी में समागया १६ हे महाराज द्रोणाचार्य्य के शायकोंसे अत्यन्त घायल बड़े क्रोधसे पूर्ण उसवृहत्क्षत्रने अपने दोनों शुभ नेत्रों को खोलकर १७ सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार वाले सत्तर बाणों से द्रोणाचार्य्य को व्यथित किया और एक बाणसे उनके सारथीको मर्मस्थलमें अत्यन्त घायल किया १८ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र वृहत्क्षत्रके बहुत बाणोंसे घायल द्रोणाचार्य्यने बड़े तीक्ष्णबाणोंको वृहत्क्षत्रके रथपर फेंका १९फिर द्रोणाचार्य्यने उस महारथी वृहत्क्षत्रको व्याकुलकरके उसके चारों घोड़ोंको चार बाणोंसेमारा २० एक बाणसे सारथीको रथके बैठने केस्थानसेगिरादिया औरबाणोंसे ध्वजासमेतछत्र को काटकरपृथ्वी

पर गिराया २१ इसके पीछे उत्तम ब्राह्मणने अच्छे प्रकार छोड़े-हुये नाराचसे वृहत्क्षत्रको हृदयपर छेदा तब वह हृदयसे बिदीर्णहो कर गिर पड़ा २२ हेराजा केकयोंके महारथी वृहत्क्षत्रके मरनेपर अत्यन्त क्रोध युक्त बीरोंमें उत्तम शिशुपालका पुत्र अपने सारथीसे यह बचन बोला २३ हे सारथी तू वहांचल जहांयह कवच धारी-द्रोणाचार्य्य सबकेकय और पांचालदेशियोंकी सेनाको मारता हुआ नियतहै २४ रथियोंमें श्रेष्ठ को सारथीने शीघ्रगामी कांबोज देशी घोड़ोंके द्वारा द्रोणाचार्य्यके सन्मुखकिया २५ चंदेरी देशियोंमेंउत्त-म बड़े पराक्रमसे उदयमान धृष्टकेतु मारनेके निमित्त द्रोणाचार्य्य के सन्मुख ऐसेगया जैसेकि पतंग अग्निमें जाताहै २६ तब सोते हुये व्याघ्रको पीड़ामान करतेहुये उस धृष्टकेतुने साठबाणोंसे ध्वजा रथ और घोड़ों समेत द्रोणाचार्य्यको घायलकिया फिर दूसरे अन्य तीक्ष्ण बाणोंसेभी व्यथितकिया २७ तब द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णऔर पक्षवाले क्षुरप्र से उस उपाय करनेवाले धृष्टकेतुके धनुषको मध्य से काटा २८ महारथी धृष्टकेतुने फिर दूसरे धनुषको लेकर कंक और मोरके पंखोंसे मढ़े शायकोंसेद्रोणाचार्य्यको घायलकिया २९ हंसते हुये द्रोणाचार्य्यने चारबाणोंसे उसके चारोंघोड़ोंको मारकर सारथी के शरीर समेत उसके शिर को काटा ३० फिर उसको पच्चीसशायकों से घायल किया राजा चन्देरीने शीघ्रही रथसे कूद शीघ्रही गदाको लेकर ३१ क्रोध युक्त सर्पिणीके समानउसगदाको द्रोणाचार्य्यके ऊपरफेंका उस काल रात्रिके समान उठाईहुई लो-हेकी भारी सुवर्णसे खचित आती हुई गदा को देखकर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने हजारों तीक्ष्ण बाणों से काटा ३३ हे श्रेष्ठ कौरव धृतराष्ट्र भारद्वाजके बहुतबाणोंसे टूटीहुई वहगदापृथ्वीको शब्दाय-मान करतीहुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ३४ फिर क्रोधयुक्त बीरधृष्टके-तुने उस गदाको टूटीहुई देखकर तोमर और सुवर्णके समानप्रका-शमान शक्तिको छोड़ा ३५ तोमर को पांचबाण से तोड़कर शक्ति को पांचबाणों से काटा और गरुड़ से काटेहुये दो सर्पोंके समान

वहदोनों पृथ्वीपर गिर पड़े ३६ इसकेपीछे मारने के उत्सुक प्रतापवान द्रोणाचार्यने इसके मारनेके निमित्त युद्धमें तीक्ष्ण बाणको चलाया ३७ वहबाण उस तेजस्वीके कवच और हृदय को तोड़कर पृथ्वीपर ऐसेगया जैसे कि कमलके बनमें हंसजाताहै ३८ जैसेकि भूखानीलकंठ क्रोधसे पतंगको निगल जाताहै उसी प्रकारसे शूर द्रोणाचार्य्यने युद्धमें धृष्टकेतुको मारा ३९ चंदेरी केराजा के मरने पर क्रोधके आधीन उत्तम अस्त्रोंका जानने वाला उसकापुत्र उस सेनाके भागमें पहुंचा ४० करतेहुये द्रोणाचार्य्यने बाणोंसे उसको भी यमलोकमें ऐसे पहुंचाया जैसे कि बड़े बनमें पराक्रमी बड़ाव्याघ्र मृगके बच्चेको खाजाताहै ४१ हेभरतबंशी शूरबीरोंके नाशहोनेपर जरासन्ध का बीरपुत्रआपही द्रोणाचार्य के सन्मुखगया ४२ फिर उस महाबाहुने युद्धमें बाणोंकी धाराओं से शीघ्रही द्रोणाचार्य्य को ऐसे दृष्टिसे गुप्तकरदिया जैसे कि बादल सूर्य्यको आच्छादित करदेताहै ४३ क्षत्रियों के मर्दन करने वाले द्रोणाचार्य्य ने उसकी उस हस्तलाघवताको देखकर शीघ्रही सैकड़ों औरहजारों शायकों को छोड़ा ४४ द्रोणाचार्य्य ने उस रथियों में श्रेष्ठ रथ पर सवार जरासन्धके पुत्रको युद्धमें बाणोंसे ढककर सब धनुष धारियों के देखते हुये शीघ्रही मारा ४५ जो शूरबीर वहांगया उसको काल रूप द्रोणाचार्य्यने ऐसे मारा जैसे कि समयके अन्तपर काल सब जीव धारियों को मारताहै ४६ हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें नामोंको सुनाकर हजारों बाणों से पांडवों के शूरबीरोंको ढकदिया ४७ द्रोणाचार्य्यके चलाये हुये तीक्ष्ण धारवाले उनबाणों ने जिनपर कि नामखुदा हुआथा युद्धमें सैकड़ों मनुष्य हाथी और घोड़ोंको मारा ४८ जैसेकि इन्द्रके हाथसे महाअसुर घायल होतेहैं उसी प्रकार द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल हुये वह पांचाल ऐसे कंपायमानहुये जैसे कि शरदी से पीड़ामान गौएं होतीहैं ४९ हे भरत बंशियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके हाथसे सेनाओं के मरने और घायल होने पर पांडवोंके दुखदाई शब्द उत्पन्नहुये ५० तब सूर्य्यसे संतप्त

और शायकों से घायल पांचाल चित्तसे भयभीत हुये ५१ युद्धमें द्रोणाचार्य्य के बाण जालोंसे अचेत बड़े ज्ञानमें आश्रित पांचाल देशियों के महारथी ५२ और चंदेरी सृञ्जय काशी और कौशिल देशियों के शूरबीर अत्यन्त प्रसन्न युद्धकी इच्छासे द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गये ५३ चंदेरी पांचाल और सृञ्जय देशियोंके वह शूरबीर युद्धमें परस्पर यह कहतेहुये कि द्रोणाचार्य्य को मारो द्रोणाचार्य्य को मारो द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गये बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्यको यमलोक में पहुंचानेके अभिलाषी वह पुरुषोतम अपनी २ सब सामर्थियोंसे उपाय करनेवाले हुये ५५ भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने उन उपाय करनेवाले बीरोंको मुख्य करके चंदेरीदेश के उत्तम शूरोंको बाणोंसे यमलोकको भेजा ५६ उन चंदेरी देशियोंके उत्तम बीरोंके नाशहोनेपर द्रोणाचार्य्यके बाणों से पीड़ामान सब पांचाल बड़े कंपायमान हुये ५७ हे श्रेष्ठ भरतबंशी धृतराष्ट्र वह पांचाल द्रोणाचार्य्यके उस प्रकारके कर्म्मोंको देखकर भीमसेन और धृष्टद्युम्नको पुकारे ५८ कि निश्चय करके इस ब्राह्मण ने दुखसे होनेके योग्य महातपको कियाहै जो क्रोध होकर युद्धमें इस प्रकारसे क्षत्रियोंका बिध्वंस करताहै ५९ क्षत्रीका धर्म युद्धहै और ब्राह्मणका धर्म उत्तम तपस्याहै यह तपस्वी विद्यावान दृष्टि से भी भस्म करसक्ते हैं ६० हे भरत बंशी बहुतसे उत्तम क्षत्री द्रोणाचार्य्यके अस्त्रोंकी उस अग्निमें जोकि अग्निके समान स्पर्शवाली कठिनतासे तरनेके योग्य महाभयकारीथी प्रवेशित हुये और वहां जाकर भस्म हुये ६१ बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य बल पराक्रम और साहसके अनुसार सब जीवों को अचेत करते हमारी सेनाओं को मारतेहैं ६२ क्षत्रधर्मा उन सबके बचनोंको सुनकर सम्मुखनियत हुआ और क्रोधसे व्याकुल चित्त बड़े पराक्रमी क्षत्रधर्माने अर्द्धचन्द्रनाम बाणसे द्रोणाचार्य्यके धनुषबाणको काटा क्षत्रियोंके मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर६३।६४प्रकाशित और बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेकर शत्रु की सेनाके मारने

वाले तीक्ष्णबाण को उसपर चढ़ाकर ६५ पराक्रमी आचार्य्यजीने कानतक खैंचेहुये बाणको छोड़ा वह बाण क्षत्रधर्मा को मारकर पृथ्वीपर गया ६६ फिर वहभी हृदयसे विदीर्ण सवारी से पृथ्वी में गिरपड़ा इसके पीछे धृष्टद्युम्न के पुत्रके मरनेपर सबसेना कंपायमानहुई ६७ तबबड़े पराक्रमी चेकितानने द्रोणाचार्य्यके ऊपरचढ़ाई करीउसने द्रोणाचार्य्यको दशबाणोंसे छेदकर छातीमें घायलकिया ६८ चारबाणसेउनके सारथीको और चारहीबाणोंसे उनकेघोड़ोंको घायल किया द्रोणाचार्य्यने सोलह२बाणोंसेउसकीदक्षिणभुजा६९ ध्वजाको और सात बाणसे सारथीको मारा उसके सारथीके मरने पर वह घोड़े रथको लेकर भागे ७० हे श्रेष्ठ युद्धमें भारद्वाजके बाणोंसे चेकितान के रथको मृतक घोड़ेऔर सारथीसे रहित देखकर पांचाल और पांडवों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ ७१ उस समय युद्ध में इकट्ठे हुये उन चंदेरी पांचाल और सृञ्जय देशियोंके शूरोंकोचारोंओरसे प्रसन्न करतेहुये द्रोणाचार्य्य बहुत शोभायमान हुये ७२ कानतक श्वेतबाल रखनेवाले अवस्थामें पचासी बर्षके वृद्ध द्रोणाचार्य्य सोलहवर्षकी अवस्थावाले के समान युद्धमें घूमने लगे७३ तब शत्रुओंनेउन निर्भयके समानघूमनेवालेशत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्यको बज्रधारी इन्द्रमाना ७४ इसके पीछे बुद्धिमान् महाबाहुराजा द्रुपद बोले कि यह लोभ कर्म्मी क्षत्रियोंको ऐसे मारता है जैसे कि व्याघ्र छोटे मृगोंको ७५ दुर्बुद्धी और पापी दुर्योधन दुख रूपी लोकोंको पावेगा जिसके लोभसे युद्धमें उत्तम २ क्षत्रीलोग मारेगये ७६ उत्तम गौ बैलोंके समान मारेहुये रुधिर से लिप्तअंग कुत्ते और शृगालों के भोजन रूप सैकड़ों शूरबीर पृथ्वीपर सोते हैं ७७ हे महाराज तब अक्षौहिणीसेनाका स्वामी राजाद्रुपदइस प्रकार से कहकर युद्ध में पांडवों को आगे करके द्रोणाचार्य के सन्मुख गया ७८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचविंशतितमोऽध्यायः १२५ ॥

एकसौछब्बीसका अध्याय ॥

संजय बोले जहांतहां पांडवोंकी सेनाओंके छिन्न भिन्न करनेपर पांडवलोग पांचाल और सोमकों समेत बहुत दूरगये १ हे भरत बंशी जैसे कि प्रलयकालमें संसारका कठिन बिनाश होताहै उसी प्रकार भयकारी रोमहर्षण करनेवाले युद्धमें संसारके अत्यन्तनाश होनेपर २ युद्धमें पराक्रम करनेवाले द्रोणाचार्यके बारंबार गर्जते वा पांचाल देशियोंके नाशयुक्त होने और पांडवोंके घायल होनेपर धर्म राज युधिष्ठिर ने किसी आश्रय स्थानको नहीं देखा ३ हेमहाराज उससमय उसने चिन्ता करी कि यह कैसे होगा तदनन्तरअर्जुनके देखने की इच्छा से सब दिशाओं को देखा ४ फिर नरोत्तम युधिष्ठिरने न अर्जुन को देखा न श्रीकृष्ण जी को और हनुमान जी की मूर्त्ति रखने वाली ध्वजाको भी नहीं देखा ६ तब उनदोनों नरोत्तमोंको नदेखकर चिन्तासे पूर्ण शरीर धर्मराज युधिष्ठिरने शान्तीको नहीं पाया ७ बड़े साहसी महाबाहु धर्मराज युधिष्ठिर ने संसार के अपकीर्त्ति के भय से सात्यकी के रथके बिषय में चिन्ता करी कि मित्रोंका अभय करने वाले सत्य संकल्प शिनीके पौत्र सात्यकी को युद्धमें मैंनेही अर्जुनके खोजके लिये भेजाहै ६ अब निश्चय करके मुझको दो प्रकार की चिन्ता उत्पन्न हुई सात्यकी पांडव अर्जुन समेत अन्वेषण करने के योग्य है १० अर्जुनके पीछे चलने वाले सात्यकी को भेजकर युद्धमें सात्यकी के पीछे चलने वाले किसबीर को भेजूंगा ११ जोमैं सात्यकी को खोजन करके बड़े उपायसेभाई के खोजको करूंगा तो संसार मुझको बुरा कहैगा १२ कि धर्मका पुत्र युधिष्ठिर भाई को तलाश करके सत्य पराक्रमीयादव सात्यकी को त्याग कर देताहै १३ सो मैं संसार के अपवादके भयसे पांडव भीमसेन को महात्मा सात्यकी की तलाश को भेजूंगा १४ शत्रुओं के मारने वाले अर्जुनमें जैसी मेरी प्रीतिहै उसी प्रकार युद्धमें दुर्मद वृष्णियों में बीर प्रतापी सात्यकी में भी मेरी बड़ी प्रीतिहै १५ मैंने

सात्यकी को बड़े भारमें संयुक्त कियाहै वह बड़ा पराक्रमी मित्रकी प्रेरणा और बड़प्पन से १६ भरतबंशियों की सेना में ऐसे पहुंचा जैसे कि सागरमें मगरजाताहै मुख न फेरने वाले बुद्धिमान वृष्णी बीरके साथ परस्पर युद्ध करने वाले शूरवीरों के यह शब्द सुनेजाते हैं मैंने समयके अनुसार बहुतप्रकारसेनिश्चयकियाहै १७। १८ कि धनुषधारी पांडव भीमसेनका वहां जानामुझको स्वीकार हैजहांपर वहदोनों महारथी गये हैं १९ इस पृथ्वीपर भीमसेनकाअसह्य कुछ भीनहीं वर्त्तमानहै युद्धमें उपाय करने वाला यह भीमसेन अपनेभुज बलमें नियतहोकर पृथ्वीके सब धनुषधारियोंसे सन्मुखता करनेको समर्थहै२०।२१हम सब जिस महात्माके भुजबलके आश्रित होकर बनबास से निवृत्त हुये और युद्धमें पराजय नहीं हुये २२ इधरसे सात्यकीके पास पांडव भीमसेनके जाने पर वह दोनों अर्जुन और सात्यकी सनाथ होंगे २३ मेरी बुद्धि से शस्त्र चलाने में कुशल वह दोनों सात्यकी और अर्जुन आप श्री बासुदेवजी से रक्षित शोचके योग्य नहीं हैं परन्तु मुझको अपने शोच का दूर करना अवश्य उचितहै इस हेतुसे सात्यकीके खोजने के निमित्त भीमसेन को आज्ञा दूंगा २५ इसके पीछे सात्यकीके बिषयमें कर्मको कियाहुआ मानताहूं धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर इस प्रकार मनसे निश्चय ठहराकर सारथी से बोला कि मुझको भीमसेन के पास लेचल २६ अश्वविद्या में कुशल सारथीने धर्मराज के बचनको सुनकर सुबर्ण के समान वाले रथको भीमसेन के पास पहुंचाया २७ फिर भीमसेन को आज्ञा देकर समयके अनुसार चिन्ताकरी अर्थात् वहां पर राजा आज्ञा करताहुआ बड़ा मूर्च्छित हुआ २८ वह मूर्च्छा से व्याप्त कुंती का पुत्र राजा युधिष्ठिर भीमसेन को बुलाकर यह बचन बोला २९ हे भीमसेन जो अकेला रथीहोकर देवता गन्धर्व और दैत्यों को भी बिजय करसक्ता है उस तेरे छोटेभाईके ध्वजा के चिह्नको नहीं देखता हूं ३० इसके पीछे भीमसेन उस दशावाले धर्मराज से बोले कि आपकी इस प्रकार की मूर्च्छा मैंने

न कभी देखी और न सुनी ३१ निश्चय पूर्व्व समय में बड़े दुःखसे व्याकुल हमलोगों के आप गतिरूप हुये हेमहाराज आप उठिये उठिये जो आप कहैं वही हमकरें ३२ हे बड़ाई देनेवाले मेरा कर्म निष्फल नहीं है हे कौरवों में श्रेष्ठ आज्ञा करो और चित्तमें खेद न करो ३३ काले सर्पके समान श्वास लेता अश्रुपातों से युक्त अप्रकाशित मुख राजा युधिष्ठिर उस भीमसेन से यह बचन बोले ३४ कि क्रोध युक्त यशस्वी बासुदेवजी के पांच जन्य शंख का शब्दजैसा सुनाई देता है ३५ निश्चय मालूम होताहै कि अब तेरा भाई अर्जुन मृतक होकर सोताहै उसके मरने पर अब यह श्रीकृष्णजी लौटते हैं ३६ पांडव जिस पराक्रमी के बलसे अपना जीवन करते हैं और बड़े२ भयोंमें जिस को ऐसे शरण लेते हैं जैसे कि देवता इन्द्रकी लेते हैं ३७ जयद्रथ के मारने की इच्छा से वह शूर भरतबंशियों की सेनामें गयाहै हे भीमसेन हम उसकी यात्राको तो जानते हैं परन्तु लौटने को नहीं जानते हैं ३८ वह अर्जुन श्याम तरुण दर्शनीय महारथी बड़े बक्षस्थल और भुजाओं का रखनेवाला मतवाले हाथी के समान पराक्रमी ३९ चकोर के समान नेत्रधारी रक्त मुख शत्रुओंके भयका बढ़ाने वाला है हे शत्रु बिजयी तेरा कल्याणहो मेरे शोचका यह हेतुहै ४० हे महाबाहु भीमसेन सात्यकी और अर्जुन के कारण से मुझको इतना कष्ट बढ़ रहाहै जैसे कि बारं बार घृत की आहुतिसे वृद्धि युक्त अग्नि ४१ उसकी ध्वजा के चिह्नको नहीं देखता हूं इसीहेतु से मूर्च्छा को पाताहूं उस पुरुषोत्तमको औरमहारथी सात्यकी को खोज करो वह सात्यकी उस तेरे छोटे भाई अर्जुन के पीछे गयाहै मैं उस महाबाहु को न देखकर मूर्च्छा युक्त होता हूं ४३ निश्चय करके उस अर्जुन के मरने पर वह श्रेष्ठ सात्यकी लड़ताहै इस का कोई सहायक नहीं है इसहेतु से मूर्च्छाको पाता हूं ४४ उस अर्जुन के मरने पर वह युद्धमें कुशलसात्यकी लड़ता है इससे तुम वहां जाओ जहां अर्जुन गयाहै ४५ और जहांपर बड़ा पराक्रमी सात्यकी भी गयाहै हे धर्मज्ञ जोमेरा बचन करने के योग्य

तूमानताहै तो करमैं तेरा बड़ा भाईहूं ४६ अर्जुन तुझसे उसप्रकार खोजने के योग्य नहीं है जैसे कि सात्यकी खोजने के योग्यहै ४७ हे भीमसेन वह सात्यकी मेरे हितको चाहता हुआ अर्जुन के खोज करने को गयाहै जोकि कठिनतासे प्राप्त भयकारी और मूर्खोंको अप्राप्त है हे भीमसेन दोनों कृष्ण और यादव सात्यकी को कुशल पूर्व्वक देख कर अपने सिंहनादसे प्रकटकरो ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषड्विंशतितमोऽध्यायः १२६ ॥

एकसौसत्ताइसका अध्याय ॥

भीमसेन बोले कि पूर्व्व समयमें जिस रथने ब्रह्मा शिव इन्द्र और वरुण नाम देवताओं को सवार किया उसी रथपर श्रीकृष्ण और अर्जुन भी सवार होगये हैं उन दोनों को कभी भय उत्पन्न नहीं है मैं आपकी आज्ञाको शिर से धारण करके जाताहूं शोच मत करो मैं उन नरोत्तमों से मिल कर आपको बिदित करूंगा २ संजय बोले कि इस प्रकार कहकर वह पराक्रमी भीमसेन युधिष्ठिर को धृष्टद्युम्न आदिक शुभ चिन्तकों के सुपुर्द करके चल दिया ३ बड़ा बली भीमसेन धृष्टद्युम्न से यह बोला कि हे महाबाहो तुमको बिदित है जैसे कि यह महारथी द्रोणाचार्य्य हैं वह सब उपायों से धर्म राज के पकड़नेमें प्रवृत्तहैं हे धृष्टद्युम्न मेरा काम यात्रामेंऐसा वर्त्तमान नहीं है ५ जैसा कि हमारा बड़ा काम राजा की रक्षामें है मुझको राजा की यह आज्ञा हुईहै मैं उनको उत्तर नहीं देसक्ताहूं ६ अब मैं वहां जाऊंगा जहां पर कि वह मृत्युकी इच्छा करने वाला जयद्रथ नियतहै निस्सन्देह धर्मराज के बचन पर नियत होना योग्य है ७ मैं बुद्धिमान यादव सात्यकी और भाई अर्जुन के ढूंढ़ने को जाऊंगा सो अब तुम युद्धमें सावधान होकर राजा युधिष्ठिर की चारों ओर से रक्षा करो ८ युद्ध के मध्यमें सब कामों से मुख्यकाम यहीहै हे महाराज यह सुनकर धृष्टद्युम्न भीमसेन से बोला ९ हे भीमसेन तू किसी बातकी चिन्ता नकर और यात्रा करो मैं तेरे अभीष्ठ

को करूंगा द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्न को युद्धमें बिना मारे हुये किसी दशा में १० भी धर्मराजको नहीं पकड़ सक्ते इसके पीछे भीमसेन राजा युधिष्ठिर को धृष्टद्युम्नके सुपुर्द करके ११ और बड़े भाईगुरू रूप को दंडवत कर धर्म राज से मिलकर यात्रा करने वालाहुआ हेभरत बंशी जिस प्रकार से अर्जुन गयाथा १२उसी प्रकार मस्तक पर सूंघा हुआ शुभ मंगल कारी आशीर्बाद सुनाया हुआ भीमसेन पूजित प्रसन्न चित्त ब्राह्मणों को दक्षिणावर्त्ती करके १३ अग्नि, गौ, सुबर्ण, दूर्बा, गोरोचन, अमृतके स्थान में जल घृत, अक्षत, दही, इन आठों मंगलीक बस्तुओं को स्पर्श करके और कैरातिक नाम मधुको अर्थात् मादक रस को पीकरदूने युद्धके सामानो को रख मदसे रक्त नेत्र वाला बीर १४ ब्राह्मणों से स्वस्ति बाचन किया हुआ बिजय के उत्पत्तिको जताने वाली बिजया नन्द बढ़ाने वाली अपनी बुद्धिको देखता १५अनुकूल पवनोंसे शीघ्रही बिजयके उदय का देखने वाला महाबाहु भीमसेन कवच और शुभ कुंडल धारी १६ बाजू बन्द हस्त त्राण वा रथ का रखने वाला रथियों में श्रेष्ठ होकर प्रस्थित हुआ उसका सुबर्ण से जटित लोहमयी कवच बहुमूल्य धनुष १७ सब ओरसे शरीरमें चिपटा हुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल पीतरक्त कृष्ण और श्वेत बस्त्रोंसे अलंकृत १८ कण्ठत्राण समेत ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र धनुष रखनेवाला बादल आपकी सेनासे युद्धाभिलाषी भीमसेनके यात्रा करनेके समय १९ फिर पांचजन्य शंखका भयकारी शब्दहुआ हेराजा उस तीनो लोकोंके भयकारी पांचजन्य केबड़े शब्दको सुनकर २० धर्मकापुत्र युधिष्ठिर महाबाहुभीमसेनसे बोलाकि यह शंख वृष्णियोंमें बड़ेबीर श्री कृष्णाजीने बड़ेबेगसे कठिन बजायाहै २१ इस शंखोंके राजाने पृथ्वी अन्तरिक्षऔर आकाशको महाशब्दायमान करदियाहै निश्चय करकेबड़ेदुःखमें अर्जुनके पड़ जानेसे २२चक्रगदा धारी श्रीकृष्णजी आपही सब कौरवोंसे लड़तेहैं निश्चय करके आर्य्या कुन्ती वा देखनेवाली

द्रौपदी और सुभद्राने बान्धवोंसमेत पापरूप शकुनोंकोकहाहै सो हे भीमसेन अब शीघ्रताकरकेतुमवहांजाओजहांपरकिअर्जुनहै २३।२४ हेवृकोदर अर्जुनके और यादव सात्यकीकेन देखनेके कारणमेरीसब दिशाऔरबिदिशामोहसे गुप्तहोतीहैं २५ हेराजा धृतराष्ट्र वह भीमसेनगुरूसेयह आज्ञादिया गयाकि जाओजाओ इसकेपीछे पांडुका पुत्रप्रतापवान भीमसेन २६ धर्मके हस्तत्राण और अंगुष्टत्राणका धारणकरनेवाला हाथोंमें धनुषलिये भाईका हितकरनेवालाबड़ेभाई काभेजाहुआ २७भीमसेनदुन्दुभीकोबजाकरऔर बारंबारशंखकोभी शब्दायमानकरके सिंहनादसे गर्जकर बारंबार प्रत्यंचाको खैंचताहुआ चला २८ उस शब्दसे बीरोंके चित्तोंको गिराकर अपनेशरीरकोभयकारी दिखलाता अकस्मात् शत्रुओंके सन्मुख चला २९ शिक्षित हींसतेमन और बायुके समान शीघ्रगामी बिशोक नामसारथीसेयुक्त बहुत उत्तम शीघ्रगामी घोड़े उसको लेचले ३० मारतेपीड़ा देतेहाथसे प्रत्यंचाको अच्छीरीतिसे खैंचते लक्षबांधकर बाणोंको छोड़ते पांडवभीमसेनने सेनामुखको इधरउधरकरकेछिन्नभिन्नकरदिया ३१ सौमकों समेत पांचालदेशी शूर उस चलनेवाले महाबाहुकेपीछे ऐसेचले जैसेकि इन्द्रके पीछे देवता चलतेहैं ३२ हेमहाराज आपके उनशूरबीरोंने मिलकर उसको घेरलिया जिनके कि यह नामहैं दुःशल, चित्रसेन, कुण्डभेदी, बिविंशति ३३ दुर्मुख, दुस्सह, बिकर्ण, शल्य, बिन्द, अनुबिन्द, सुमुख, दीर्घबाहु, सुदर्शन ३४ वृन्दारक, सुहस्त, सुषेण, दीर्घलोचन, अभय, रुद्रकर्मा, सुबर्मा, दुर्बिमोचन ३५ यह सब रथियोंमें श्रेष्ठ सेनासे युक्तऔरपीछे चलनेवालों समेत शोभायमान हुये और युद्धमें कुशल वह सबबीर भीमसेन के सन्मुख गये ३६ युद्धोंमें बड़ा शूर बीर महारथी चारों ओर से उन युद्धकर्ता लोगोंसे घिराहुआ कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन उनको देखकरसन्मुखतामें ऐसे बर्त्तमान हुआ जैसे कि वेगमान सिंह छोटेमृगोंके सन्मुख होताहै ३७ वहां उन बीरोंने दिव्य महाअस्त्रों को दिखलाया और बाणों से भीमसेन को ऐसे ढकदिया जैसे कि उदय हुवे सूर्य्य

को बादल आच्छादित करदेते हैं ३८ वह वेग से उनको उल्लंघन कर द्रोणाचार्य्य की सेनापर दौड़ा और आगेसे हाथियोंकी सेनाको बाणों की बर्षा से ढक दिया ३९ उस बायु पुत्र ने थोड़ेही समय में सब दिशाओं को आच्छादित करके तीक्ष्णधार वाले बाणों से उस हाथियों की सेना को छिन्न भिन्न किया ४० जैसे कि बनके मध्यमें शरभ के गर्जनेसे मृग भयभीत होते हैं उसीप्रकार भीमसेन के गर्जने से सब हाथी भयभीत होकर भागे ४१ फिर वेग से उस हाथियों के समूहोंको उल्लंघनकर द्रोणाचार्य्य की सेनाके सन्मुख गया वहां आचार्य्य जीने उस को ऐसे रोका जैसे कि उठेहुये समुद्रको मर्यादारोकतीहै ४२ और मन्दमुसकान करते हुये आचार्य्य जीने उसको ललाट पर घायल किया उससे भीमसेन ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि उन्नतज्वाला रखनेवाला सूर्य्यहोताहै ४३ आचार्य्यजीनेकहा कि जैसामेरा शिष्यअर्जुनहै उसीप्रकार यह भीमसेनहैयहमेरा पूजन करेगा इस प्रकारमानतेहुये उनआचार्य्य ने भीमसेनसेकहा४४ हेमहाबाहु भीमसेन अब युद्धमें मुझशत्रुकोबिना बिजय किये हुये तुझको शत्रुओंकी सेना में प्रबेश करना योग्य नहीं ४५ जो वह तेरा छोटा भाई अर्जुन मेरी अनुमतिसे सेनामें प्रबिष्ट हुआ परन्तु यहां तुझसे मेरी सेनामें प्रवेश करना असंभवहै४६ फिर निर्भय क्रोधसे रक्त नेत्र शीघ्रता करने वाला भीमसेन गुरूके बचन को सुनकर द्रोणाचार्य्य से बोला ४७ हे ब्रह्मबन्धु अर्जुन आपकी अनुमति से युद्धभूमि में नहींगया वह निर्भय होकर इन्द्रकी सेना में भी प्रवेश कर सक्ताहै ४८ उत्तम पूजन के करने वाले अर्जुन से आप पूजित होकर प्रतिष्ठा दिये गयेहो हे द्रोणाचार्य्य मैं दयावान अर्जुन नहीं हूं मैं आपका शत्रु भीमसेन हूं ४९ तुम हमारे पिता गुरू और बन्धुहो और उसी प्रकारसेहम आपके पुत्रहैं प्रतिष्ठा पूर्ब्बक नम्रता से नियत हम सब आपको इस रीतिसे मानते हैं ५० अब आपकी बातों के करने में गुरुभक्ति पूर्ब्बक गुरूकी प्रीति बिपरीत दिखाई देतीहै जो तुम अपने को शत्रु मानतेहो तो

वैसाही होय ५१ मैं भीमसेन तुमशत्रु रूपकेयोग्य कर्मको करताहूं हे राजा जैसे कि यमराज काल दण्डको घुमाता है उसी प्रकार भीमसेनने गदाको घुमाकर ५२ द्रोणाचार्य्यके ऊपर छोड़ा वह रथ से कूदपड़े तब उस गदाने द्रोणाचार्य्य के रथको घोड़े सारथी और ध्वजा को भी खण्ड२ अर्थात् चूर्णकरदिया ५३ और बहुत से शूर वीरोंको ऐसे मर्द्दनकिया जैसे कि वायु अपने वेग से वृक्षोंको करता है फिर आपके उन पुत्रोंने उस उत्तम रथीको घेर लिया ५४ प्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य दूसरे रथपरसवार होकर व्यूह केद्वार को पाकर युद्धके निमित्त सन्मुख नियत हुये ५५ हेमहाराज उसके पीछे क्रोध युक्त पराक्रमी भीमसेन ने आगेसे रथोंकी सेनाको बाणों की बर्षासे ढकदिया ५६ वह युद्धमें घायल महारथी युद्धमें भयकारी पराक्रमी और बिजयाभिलाषी आपके पुत्र भीमसेन से युद्ध करने लगे ५७ इसके पीछे पांडुनन्दन भीमसेन के मारने के अभिलाषी दुश्शासन ने अत्यन्त लोहमयी रथ शक्तिको फेंका ५८ भीमसेन ने आपके पुत्र की फेंकी हुई उस महा शक्ति को आताहुआ देखकर दोखंडकिये यह आश्चर्य्यसा हुआ ५९ फिर पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने दूसरे तीक्ष्ण तीन बाणोंसे गण्डभेदी सुषेण और दीर्घनेत्र इनतीनों आपके पुत्रोंको मारा ६० और युद्ध करने वाले आपके बीर पुत्रोंके मध्य कौरवों की कीर्त्ति बढ़ानेवाले बीर वृन्दारक कोभीमारा ६१ फिर भीमसेन ने अभय रुद्रकर्मा और दुर्बिमोचन इन तीनों आपके पुत्रोंको तीनबाणोंसे मारा ६२ हेमहाराज उस बलवान के हाथसे घायल आपकेपुत्रोंने प्रहार कर्त्ताओं में श्रेष्ठ भीमसेन को चारों ओरसे घेरलिया ६३ वह सब उसयुद्ध में भयकारी कर्मकर्त्ता भीमसेन पर ऐसे बाणोंकी बर्षा करने लगे जैसे कि बर्षाऋतुमें बादल अपनी धाराओं से पर्ब्बत पर बर्षाकरतेहैं ६४ जैसे कि पर्ब्बत पाषाण वृष्टि को सहता है उसी प्रकार शत्रुओं का मारनेवाला वह पांडव भीमसेन उन बाणरूपी बर्षाको सहता हुआ पीड़ामान नहीं हुआ ६५ फिर हंसते हुये भीमसेन ने

बाणोंसे बिन्द अनुबिन्दको एक साथही आपके सुबर्मा नाम पुत्र समेत यमलोक में पहुंचाया ६६ हे भरतबंशीयों में श्रेष्ठ इसकेपीछे युद्धमें आपकेपुत्र बीर सुदर्शनकोभी घायल किया और वह शीघ्रही गिरकर मर गया ६७ उस पांडुनन्दन ने सब दिशाओं को अच्छी रीतिसे देख कर थोड़ेही समयमें उस रथकी सेनाको तीक्ष्ण चलने वाले बाणों से छिन्न भिन्न करदिया ६८ हेराजा इसके पीछेआपके पुत्र युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न होगये जैसे कि रथके शब्दसे और गर्जने से मृग छिन्न भिन्न होकर इधर उधर भग जाते हैं ६९ भीमसेन केभयसे वह सब अकस्मात् भागे और भीमसेन आपके पुत्रोंकीबड़ी सेनापर दौड़ा ७० हे राजा युद्धमें उसने सब ओर से कौरवों को घायल किया फिर भीमसेन के हाथसे घायल आपके शूरबीर ७१ भीमसेनको त्यागकर उत्तम घोड़ोंको चलायमान करते युद्धभूमिसे चलेगये महाबली पांडव भीमसेनने युद्धमें उनको बिजयकरके७२ सिंहनाद और भुजाओंके शब्दोंको किया फिर महाबली भीमसेन अपने हाथोंकी हथेलियोंसेभी बड़ेभारी शब्दोंको करके ७३ रथकी सेनाको दौड़ाकर उत्तम २ शूरोंको मारता उत्तम२ रथियोंको उल्लंघनकर द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सन्मुख गया ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तविंशतितमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौअट्ठाइसका अध्याय ॥

संजयबोले कि युद्धमेंरोकनेके अभिलाषी हंसतेहुये आचार्य्यजीने रथकी सेनासे पारहोनेवाले भीमसेन को बाणोंकी बर्षासे ढक दिया१ द्रोणाचार्य्यके धनुषसे गिरेहुये उन बाणोंके समूहोंको पानकरता अपने बलके प्रभावसे सबको अचेत करता वह भीमसेनभाइयोंके सन्मुख गया२ आपके पुत्रकी प्रेरणासे उत्तम धनुषधारी राजाओंने बड़े वेगमें नियतहोकर युद्धमें सब ओरसे उसको घेरलिया३ हेभरतबंशी उन सिंहसमान गर्जनेवाले राजाओंसे घिराहुआ उस भीमसेनने उन राजाओंके निमित्त अपनी घोर गदाको उठाया ४

और शत्रुओंके मारनेवाली उस गदाको बड़े वेगसे ऐसे फेंका जैसे कि दृढ चित्तवाले इन्द्रसे घुमायाहुआ इन्द्रबज्रहोता है हेमहाराज उसगदाने आपकी सेनाके मनुष्योंका चूर्णकरडाला५हेराजा बड़ेशब्दसे पृथ्वीको शब्दायमानकरती अपने तेजसे प्रकाशित उस भयकारी गदाने आपकेपुत्रोंको भयभीतकियाह आपकेसब शूरबीर उस वेगमान प्रकाशित गदाको गिरताहुआ देखकर भयकारी शब्दोंकोकर करके इधर उधरको भागे ७ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र तब वहां रथसवार और मनुष्य उस गदाके असह्य शब्दको सुनकर अपने २ रथोंसे गिरपड़े ८ गदाहाथमें लेनेवाले भीमसेन से घायल आपके शूरबीरह युद्धमें ऐसे भागे जैसे कि व्याघ्रके सूंघेहुये भयभीत मृगभागतेहैं उस भीमसेनने युद्धमें उनकाठिनतासे बिजयहोनेवाले शत्रुओंको भगाकर पक्षियोंके राजागरुड़केसमान बड़ेवेगसे सेनाओंको उल्लंघनकिया १० हेराजा भारद्वाज द्रोणाचार्य्यजी उसप्रकार अप्रिय कर्म करनेवाले महारथी भीमसेनके सन्मुख गये११ द्रोणाचार्य्यने युद्धमें बाणरूपी तरंगोंसे भीमसेनको रोककर अकस्मात् शब्दोंको करके पांडवोंके भयको उत्पन्नकिया १२महाराज महात्मा भीमसेन और द्रोणाचार्य्यका वह महायुद्ध ऐसा हुआ जैसा कि महाभयकारीदेवासुरोंका युद्धहुआथा १३ जब द्रोणाचार्य्यके धनुष से निकले हुयेतीक्ष्ण बाणोंसे सैकड़ों और हजारोंवीर युद्धमें मारे गये १४हेराजा इसकेपीछे पांडव रथसे कूदकर बड़ेवेगमें नियत होकर दोनों नेत्रोंको बन्दकरके पदाती द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया १५ पराक्रमी भीमसेनने कन्धेपर शिर और छातीपर दोनोंहाथोंको नियतकरके मन बायु और गरुड़के समान तीव्रतामें नियत होकर १६ जैसेकि उत्तम वृषभ लीलाहीसे जलकी वृष्टिको सहताहै उसी प्रकार नरोत्तम भीमसेनने बाणोंकी बर्षाको सहा १७ हेश्रेष्ठ युद्धमें घायल उस बड़े पराक्रमीने द्रोणचार्य्यके रथको हाथसे ईशादंडपर पकड़कर फेंकदिया हेराजा फिर युद्धमें भीमसेनके हाथसे फेंकेहुये द्रोणाचार्य्य शीघ्रही दूसरे रथपर सवार होकर व्यूहके द्वार पर

गये १९ तब फिर उस निरुत्साहरूप गुरुको उसीप्रकारसे आता-हुआदेखकर भीमसेनने वेगसे रथकीधुरीको पकड़कर २० बडेक्रोध पूर्व्वक उस बड़े रथ को भी फेंकदिया इसी प्रकार लीलापूर्वक भीमसेन ने द्रोणाचार्य्य के आठरथों को फेंका २१ फिर एक पल भरमेंही अपनेरथपर नियत दिखाई पड़ा और आश्चर्य्य करके आपके शूरोंने उसकी ओरकोदेखा २२ हेकौरव उसी क्षणमें भीम-सेनके सारथीने शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया वहभी आश्चर्य्य साहुआ इसके अनन्तर बड़ापराक्रमीभीमसेन अपने रथमें नियतहो कर वेगसे आपके पुत्रकी सेनाकी ओरदौड़ा २४ जैसे कि उठाहुआ वेगवान बायु वृक्षोंका मर्द्दन करताहै उसीप्रकार युद्धमें क्षत्रियों को मर्द्दन करता अथवा जैसे कि समुद्रका वेगपहाड़ोंको घेरलेता है उसी प्रकार सेनाको रोकतागया २५ वहबड़ापराक्रमी बीरभोजवंशीकृत-वर्मासे रक्षित सेनाको पाकर और उसको बड़ेवेगसे मथकर २६ तलकेशब्दोंसे सेनाओंकोडरातेहुये भीमसेनने सब सेनाओं को ऐसे बिजयकियाजैसेकि शार्दूलसिंह गौ औरबैलोंकोबिजयकरताहै २७ कृतवर्माकी सेनाको उल्लंघनकर दुर्योधनकी सेनाको भी बिजय किया उसीप्रकार म्लेच्छोंके उनबड़ेसमूहोंको जोकि युद्धमें कुशलथे उनकोभी बिजयकिया २८लड़तेहुये महारथी सात्यकी कोदेखकर उपाय करनेवाला भीमसेन रथकी सवारीपर बड़ी तीव्रतासे चला २९ हेमहाराज अर्जुनके देखनेका अभिलाषी पांडुनन्दन भीमसेन युद्धमें आपके शूरबीरोंको उल्लंघन करके३० उस पराक्रमीने जय-द्रथके मारनेके निमित्त पराक्रम और युद्धकरनेवाले महारथी अर्जुन को वहां देखा ३१ हे महाराज बर्षाऋतु के समयमें गर्जनेवाले बादल के समान पुरुषोत्तम भीमसेनने उस अर्जुन को देखकर बड़े शब्द किये ३२ हे कौरव अर्जुन और बासुदेव जीने युद्धमें उस गर्जनेवाले भीमसेनके भयकारी शब्दकोसुना ३३ वहदोनोंबीर एक साथ बारंबार गर्जनेवाले पराक्रमी भीमसेनके शब्दको सुनकर देखनेके अभिलाषीहुये ३४ हेमहाराज इसकेपीछे अर्जुन और सा-

त्यकोने बड़े शब्दोंको किया और उत्तम वृषभोंके समान गर्जतेहुये सन्मुखगये ३५ फिर धर्मकापुत्र युधिष्ठिर धनुषधारी अर्जुन और भीमसेनके शब्दोंको सुनकर प्रसन्नहुआ उनदोनोंके शब्दोंको सुनकर राजा शोचसेरहित हुआ और उस समर्थ युद्धमें अर्जुनकीही बिजयकी आशाकरी ३७ उसरीतिसे मदोन्मत्त भीमसेनके गर्जनेपर धर्मपुत्र महाबाहु धनुर्धरयुधिष्ठिरने मन्दमुसकान पूर्व्वकचित्तसे ध्यानकरके स्नेहमें प्रवृत्तहोकर यहबचनकहा हेभीमसेन तुमने मुझको जतलाया और मुझगुरूकी आज्ञाका पालनकिया ३८।३९ हेपांडव तुम जिनकेशत्रुहो युद्धमें उनकी बिजयनहीं होसक्ती सव्यसाची और संसारके धनोंका बिजयकरनेवाला अर्जुन युद्धमें प्रारब्ध से जीवताहै ४० और प्रारब्धहीसे सत्य पराक्रमी बीरसात्यकीभी आनन्द पूर्व्वक है और मैंभी प्रारब्धही से वासुदेवजी और अर्जुनको गरजताहुआ सुनताहूं ४१ जिसने युद्धमें इन्द्रको बिजय करके अग्निदेवता प्रसन्न किये वह शत्रुओंका मारनेवाला अर्जुन युद्धमें प्रारब्धहीसे जीवताहै ४२ हमसब जिसके भुजोंके आश्रयसे जीवतेरहे वह शत्रुओंकी सेनाओंका मारनेवाला अर्जुन प्रारब्धसे चिरंजीवीहै ४३ जिसने देवताओंसेभी कठिनतासे बिजय होनेवाले निवात कवचीनाम दैत्योंको एकही धनुषके द्वारा बिजयकिया वह अर्जुन भाग्यसे जीवताहै ४४ जिसने बिराटनगर में गौओंके हरनेके निमित्त एकसाथ आतेहुये सब कौरवोंको बिजयकिया वहअर्जुन प्रारब्धसेजीताहै ४५ जिसने बडेयुद्धमें अपने भुजबलसे चौदहहजार कालकेय नाम असुरोंको मारा वह अर्जुन प्रारब्धसे जीवताहै ४६ निश्चयकरके जिसने दुर्योधनके निमित्त पराक्रमी गंधर्वोंके राजाको अपनेअस्त्रोंके बलसे बिजय कियावह अर्जुन प्रारब्धसे जीवताहै ४७ मुकुट मालाधारी पराक्रमी श्वेतघोड़ोंसे युक्त श्रीकृष्ण जीको सारथी रखनेवाला और सदैव मेरा प्याराहै वह अर्जुन प्रारब्धसेजीवताहै ४८ पुत्रके दुखसे दुखी और कठिनकर्मके करनेकाअभिलाषीजयद्रथके मारनेकी प्रतिज्ञाको जिस अर्जुनने पूरा किया ४९

वह अर्जुन कब जयद्रथको युद्ध में मारेगा और कब मैं सूर्य्यास्त होनेसे पूर्व्वही उसजयद्रथको मारकर प्रतिज्ञा पूरी करनेवाले वासुदेवजी से रक्षित अर्जुनसे मिलूंगा और कब दुर्योधनकी वृद्धि में प्रीति रखनेवाला राजा जयद्रथ ५०।५१ अर्जुन के हाथसे मरा हुआ शत्रुओंको प्रसन्न करेगा क्या राजा दुर्योधन अर्जुनके हाथसे गिराये ५२ सिन्धुके राजा जयद्रथ को देखकर युद्धमें हमारे विषय में कल्याणको धारणकरेगा युद्धमें भीमसेनके हाथसे मारेहुये अपने भाइयोंको देखकर निर्बुद्धी दुर्योधन हमारे विषय में कल्याण को धारण करेगा ५३ कहीं अभागा दुर्योधन पृथ्वीपर गिरायेहुये दूसरे बड़े शूरबीरोंको देखकर पश्चात्तापको करेगा ५४ कहीं हमारी शत्रुता अकेले भीष्मसेही शान्तीको पावेगी और शेषों की रक्षाके निमित्त दुर्योधन सन्धिकरेगा ५५ तब इस प्रकारसे बहुत प्रकारकी चिन्ता करनेबाले कृपासे संयुक्त शरीरवाले उसराजा का घोर युद्ध बर्त्तमान हुआ ५६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टाविंशतितमोऽध्यायः १२८॥

एकसौउन्तीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोलेकि इसप्रकारसे गर्जने वालेमेघस्तनितके समान शब्दायमान महाबली भीमसेन को किनबीरोंने रोका १ मैं तीनों लोकोंमें ऐसे किसी शूरबीरको नहीं देखताहूं जोकि युद्धमें क्रोध युक्त भीमसेन के सन्मुख नियत होय २ हे संजयमैं यहां उस पुरुष को नहीं देखताहूं जो इसकालके समान गदाके घुमानेवाले भीमसेनके आगे नियत होय ३ जो रथसे रथको तोड़े हाथीको हाथीसे मारे उसके युद्धमें कौन नियतहोसक्ता है साक्षात् इन्द्रभी वहां नहीं ठहर सक्तेहैं ४ दुर्य्योधनके हितमें प्रवृत्त कौन २ से बीर उस मेरे पुत्रोंके मारने के अभिलाषी क्रोध युक्त भीमसेन के आगे अच्छे प्रकारसे नियत हुये ५ कौन मनुष्य घासके समान मेरे पुत्रोंको जलाने के अभिलाषी भीमसेन रूपी दावानलके आगे युद्धके मुख

पर नियत हुये ६ जैसेकि काल से सब सृष्टि परलोक को जातीहै उसीप्रकार भीमसेन के युद्धमें मेरे पुत्रोंकोभगाहुआ देखकर किन बीरोंने भीमसेनको रोका ७ मुझको वैसा भय अर्जुन श्रीकृष्ण और सात्यकीसे भी नहींहै जैसा कि भय अग्निसे उत्पन्नहोनेवाले धृष्टद्युम्नसे औरभीमसेनसेहै ८ कौन शूरबीर उसमेरे पुत्रोंके नाशकरने के अभिलाषी अत्यन्त प्रकाशित भीमसेनरूपीअग्निके सन्मुख वर्त्तमान हुये हेसंजय वह सबमुझसे कहो ९ संजयबोले कि पराक्रमी कर्णभी कठोर शब्दसे युक्त इस प्रकार गर्जनेवाले महाबली भीमसेनके सन्मुख गया १० बड़े युद्धको चाहते और युद्धमें अपने पराक्रमको दिखलाना चाहते और बहुत धनुषको चलायमान करते क्रोध युक्त कर्णनेभीमसेनके मार्गको ऐसे रोका ११ जैसेकि बायुके मार्गको वृक्षरोकताहै भीमसेन ने भी अहंकारी सन्मुख बर्त्तमान सूर्य्यके पुत्र कर्णको देखकर १२ कठिन क्रोध किया और बड़ी शीघ्रतासे बीरने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको उसके ऊपरफेंका कर्णने भी उन बाणोंको न सहकर शत्रुपर बाणों को छोड़ा १३ इसके अनन्तर कर्ण और भीमसेनके युद्धमें उपायकरनेवाले और तमाशा देखनेवाले शूरबीरोंके अंग अत्यन्त कंपायमान हुये १४ उनदोनों की प्रत्यंचाके शब्दोंको सुनकर रथ सवार और अश्व सवारोंके भी अंग कांपनेलगे युद्धभूमिमें भीमसेनके भयकारी शब्दको सुनकर १५ उत्तम २ क्षत्रियों ने आकाश और पृथ्वीको एक माना फिर महात्मा पांडव भीमसेनके घोरशब्दसे १६ युद्धमेंसब शूरबीरोंकेधनुष गिर पड़े और दोनों हाथों से शस्त्रभी गिर पड़े कितनेहीशूरबीरोंके प्राण निकलगये १७ और सब भयभीत लोगोंने मूत्र और बिष्टाकोछोड़ा और सब सवारियां निरुत्साह हुईं १८ और भयकारी अनेकअशकुन प्रकटहुये गृध्रकंकआदिक पक्षियोंके समूहोंसे पृथ्वी और आकाश मध्यभाग पूर्ण हुआ १९ हे राजा कर्ण और भीमसेन का अत्यन्त घोर युद्ध हुआ इसके पीछे कर्णने भीमसेन को बीस बाणोंसे पीड़ामान किया २० और शीघ्रही उसके सारथीको पांच

बाणोंसे घायल किया भीमसेनभी हंसकर युद्ध में कर्णके सन्मुख दौड़ा २१ और शीघ्रता करके उस यशस्वी ने चौंसठ बाण मारे बड़े धनुषधारी कर्णने चार बाण उसपरफेंके २२ हेराजन्हस्तलाघवताको दिखलाते हुये भीमसेनने झुकेपक्ष वाले बाणोंसे बीचहीमें उनको काटा २३ कर्णने उसको बाण समूहों से बहुत रीति करके ढंकदिया कर्णके हाथसे अत्यन्त ढंके हुये पांडुनन्दन २४ महारथी ने कर्णके धनुष को मूठके स्थान पर से काटा और गुप्तपर्व वाले बहुत बाणोंसे उसका छेदा २५ फिर भयकारी कर्म करनेवाले कर्ण ने दूसरे धनुष को लेकर युद्धमें भीमसेनको छेदा २६ अत्यन्त क्रोध युक्त भीमसेन ने वेगसे कर्णकी छाती पर गुप्तपर्व वाले तीनबाणों कोमारा २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उस समय कर्ण छातीपर वर्त्तमान हुये उन बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि तीन शिखर वाला ऊंचापहाड़ शोभित होताहै २८ उत्तम बाणोंसे घायल उस कर्ण का रुधिर ऐसे निकलने लगा जैसे कि धातुके गिरानै वाले पर्व्वत से धातु निकलती है २६ घटित प्रहारसे पीड़ित और कुछ कंपायमान कर्णने कान तक खैंचकर बाणोंसे भीमसेन कोबेधा ३० फिर हजारों बाणों को फेंका उस दृढ़ धनुषधारी कर्ण के बाणों से पीड़ामान भीमसेनने शीघ्रही क्षुर से उसको प्रत्यंचा कोकाटा ३१ और फिर महारथीनेउसके सारथी कोभी भल्लसे रथकेस्थान सेनीचे गिरादिया और उसके चारों घोड़ोंको यमपुर भेजा ३२ हेराजन्फिर कर्ण उस मृतक घोड़े वाले रथसे कूदकर भयसे शीघ्रही वृषसेनके रथपर सवार हुआ ३३ फिर प्रतापवान् भीमसेन युद्धमें कर्णको विजय करके बादलके समान शब्दायमान गर्जना को गर्जा ३४ युधिष्ठिर उसके उस शब्दको सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये युद्धमें भीमसेन के हाथसे कर्णको पराजित मानकर ३५ पांडवो सेनाने चारों ओरसे शंखोंके शब्द किये आपके शूरवीर शत्रुओंकी सेनाके शब्दको सुनकर अत्यन्त गर्जे ३६ उस राजा युधिष्ठिर ने प्रसन्नता पूर्व्वक युद्धमें शंख वीणा आदिक प्रसन्नता के बाजोंसे अपनी सेना

को प्रसन्न किया ३७ अर्जुन ने गांड़ीवधनुष को टंकार और श्रीकृष्णजी ने पांचजन्य शंखको बजाया हेराजन् तबगर्जतेहुये भीमसेन के शब्द उन सब शब्दोंको दबाकर सब सेनाओं में बड़ेकठोर सुने गये ३८ इसके पीछे पृथक्२ बाण और अस्त्रोंसे कर्णने बड़ी नम्रतासे प्रहार किये और भीमसेनने कठोरतासे प्रहार किये३६॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतीपरिएकोनात्रिंशतितमोऽध्यायः १२६ ॥

एकसौतीसका अध्याय॥

संयज बोले कि उस सेनाके पृथक् २ होने और जयद्रथके लिये अर्जुन सात्यकी और भीमसेन के जानेपर आपका पुत्र द्रोणाचार्य्य के पास गया १ एक रथके द्वाराही शीघ्रता करता और बहुत बातोंको बिचारता हुआ गया आपके पुत्रका वह रथ बड़ी शीघ्रतासे युक्त २ मन बायुके समान वेगमान शीघ्रही द्रोणाचार्य्य के पास गया और क्रोधसे रक्तनेत्रहोकरआपका पुत्र उनसे बोला ३ अर्थात् हे कौरवनन्दन भय से उत्पन्न होनेवाले वेग से युक्त वह दुर्योधन यह बचन बोला कि अजेय महारथी अर्जुन सात्यकी औरभीमसेन सब बड़ी सेनाको बिजय करके बिनारुके हुये जयद्रथ के सन्मुख बर्त्तमान हुये ४। ५ वह सब अजेय महारथी सब सेनाओंको बिजय करके वहां भी प्रहार करते हैं ६ हे बड़ाई देनेवाले आप किसरीति से सात्यकी और भीमसेनसे उल्लंघन किये गयेहो इस लोकमें यह आश्चर्य्य कीसी बात है जैसे कि समुद्र का सूखजाना ७ हे उत्तम ब्राह्मण सात्यकी अर्जुन और भीमसेन के हाथसे आपके पराजय होनेको लोग बड़ा आश्चर्य्य करते हैं ८कि धनुर्वेदके पारगामी द्रोणाचार्य्य युद्धमें कैसे बिजयकियेगये सब शूरबीरइसप्रकार से कहते हैं यह आपकी पराजय श्रद्धा और बिश्वासके योग्य नहीं है ६ निश्चय करके मुझ अभागेका युद्धमें पराजय पूर्व्वक बिनाश होहै जिस स्थान में कि तीनरथियोंने तुमसरीखे पुरुषोत्तमको उल्लंघन किया १० ऐसी दशामें इस करने के योग्य कर्ममें जो आपक

कहना योग्य है उसको कहौ जो वहव्यतीत हुआ सो व्यतीत हुआ अब आगे शेषबचे हुये को विचारो ११ शीघ्रतासे समयके अनुसार जयद्रथका जो कामहै उसको अच्छी रीतिसे बिचारकर करो व्याकुल मतहो १२ द्रोणाचार्य्य जी बोले कि जो बहुतप्रकारसे बिचारने और करनेके योग्यहै हेतात उसकोमुझसे सुनो कि पांडवोंके तीनों महारथी उल्लंघन करने वाले हुये १३ उन्होंके पीछेसे जितनाभय है उतनाही उनके आगेहै मैं उसको बड़ी बात मानताहूं जिसस्थान पर श्रीकृष्ण और अर्जुनने १४ वह भरतवंशियोंकी सेना आगेऔर पीछे से आधीनतामें करी वहां मैं जयद्रथकी रक्षाको करने के योग्य मानताहूं १५ हे तात क्रोधयुक्त अर्जुनसे भयभीत वह जयद्रथहम से बड़ी रक्षाके योग्यहै भयकारी रूप सात्यकी और भीमसेन जयद्रथके सन्मुख गये १६ यह वह द्यूत प्राप्तहुआ जोकि शकुनिकीबुद्धि से उत्पन्न हुआ है उससभामें न बिजय हुई न पराजय हुई १७ अब यहां बाजीकरने वाले हम लोगों की जय पराजयहै पूर्व्व समयमें शकुनी कौरवोंकीसभामें जिन भयकारी पांशोंको मानताहुआ खेला है वहकठिनतासे सहनेके योग्यबाणहैं १८।१६ हेराजन्जहां पर वह बहुत से कौरव नियत हैं हेतात उस सेनाको द्यूत खेलनेवाला और बाणोंको पांशे जानो २० उसमें जयद्रथ दांवहै फिर जयद्रथ केही विषय में बड़ा द्यूत शत्रुओंसे हुआ २१ हे महाराज यहां तुम सब अपने जीवन को त्याग करके युद्ध में बुद्धिके अनुसार जयद्रथ की रक्षा करने के योग्य हो २२ दांव लगाने वाले हमलोगों को उस स्थान पर बिजय और पराजय है जहां पर कि वह बड़े उपाय करने वाले धनुषधारी जयद्रथ की रक्षा करतेहैं २३ तुम आप वहां शीघ्र जावो और रक्षा करनेवालों की रक्षा करो मैं इसी स्थान पर नियतहूंगा और शत्रुओंको यमलोकमें भेजूंगा २४ पांचालों को पांडव और सृञ्जियोंसमेत मारूंगा इसके पीछे गुरूकी आज्ञा पाते ही दुर्य्योधन शीघ्र चलागया २५ पीछे चलने वालों समेत अपने को कठिन कर्मके अर्थ उद्युक्त करके गया पांचाल देशी धृष्टद्युम्न

और उत्तमौजस जो कि चक्रके रक्षक थे २६ वह बाहर की ओरसे सेनामें प्रवेश करके अर्जुनके पास गये हे महाराज जो कि पूर्व्वमें कृतवर्मा से रोके गयेथे २७ हे राजन् युद्धाभिलाषीपने से आपकी सेनामें अर्जुन के प्रवेश करनेपर दोनों ओर बगलसे आपकी सेना को चीरकर सेनामें प्रवेशित हुये २८ राजा दुर्य्योधनने बगल में से आये हुये उन दोनों को देखा पराक्रमी शीघ्रता करने वाले भरतबंशी दुर्य्योधनने उन जल्दी करने वाले दोनों भाइयों के साथ उत्तम युद्ध किया २६ वह दोनों जो प्रसिद्ध महारथी और क्षत्रियों में अत्यन्त श्रेष्ठ जिन्होंने धनुष को ऊंचा कर रक्खाथा उसके सन्मुखगये ३० युधामन्यु ने तीस बाणोंसे उसको घायल करके बीस बाणसे उसके सारथीको और चार बाण से चारोंघोड़ों को घायल किया ३१ आपके पुत्र दुर्य्योधन ने एक बाणसे युधामन्युकी ध्वजा को दूसरे बाणसे उसके धनुषको काटकर ३२ भल्लसेउसके सारथी को रथके बैठक के स्थानसे नीचे गिरादिया उसके पीछे चारतीक्ष्ण बाणों से चारों घोड़ों को छेदा ३३ अत्यन्त क्रोधयुक्त शीघ्रताकरने वाले युधामन्यु ने युद्धमें तीस बाण आपके पुत्र पर छोड़े ३४ और इसी प्रकार अत्यन्त क्रोध युक्त उत्तमौजा ने सुवर्ण जटित तीक्ष्ण बाणोंसे छेदा और उसके सारथी को यमलोक में भेजा ३५ हे राजेन्द्र दुर्य्योधन ने भी उस पांचाल देशी उत्तमौजा के चारों घोड़ों को और उन दोनों आगे पीछे वाले सारथियों को मारा ३६ युद्धमें मृतक घोड़े और सारथी वाला उत्तमौजा शीघ्रता से अपने भाई युधामन्युके रथ पर सवार हुआ ३७ उसनेभाईके रथको पाकर दुर्य्योधन के घोड़ों को बहुत बाणोंसे घायल किया वह घोड़े मृतक होकर पृथ्वीपर गिरपड़े ३८ युधामन्युने घोड़ों के गिरनेपर युद्ध में शीघ्रहीउत्तम बाणसे उसके धनुष और तरकसको काटा ३६ आपके पुत्रराजाने मृतक घोड़े और सारथीवाले रथसेउतरगदाको लेकरउनदोनों पांचाल देशियोंको पीड़ामान किया ४० तबउसक्रोध युक्त आते हुये कौरवपति दुर्य्योधनको देखकर युधामन्यु और

उत्तमौजा रथसे कूदकर पृथ्वीपर चलेगये ४१ इसके पीछे उसक्रोध युक्त गदाधारीने गदा से उस सुवर्ण जटित रथको घोड़े सारथी और ध्वजा समेत खण्ड २ कर दिया ४२ शत्रु संतापी वह मृतक घोड़े और सारथी वाला आपका पुत्र रथको तोड़कर शीघ्रही शल्य के रथपर सवार हुआ ४३ इसके पीछे पांचालदेशियोंमेंश्रेष्ठ दूसरे राजपुत्र महारथी रथपर सवार होकर अर्जुन के पास गये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रिंशततमोऽध्यायः १३० ॥

एकसौइकतीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि हे महाराज रोमहर्षण करनेवाले युद्ध के वर्त्तमान होने सबके व्याकुल होने और सब प्रकार से पीड़ामान होने पर १ कर्णने भीमसेनकोयुद्धके निमित्त ऐसेरोका जैसे कि बनमेंमतवाला हाथी मतवाले हाथीके सन्मुख जाताहै २ धृतराष्ट्र बोले कि जो वह महाबली कर्ण और भीमसेन कठिन युद्ध करनेवाले हुयेतब कहो कि यह युद्ध अर्जुनके रथकेपास कैसाहुआ ३ युद्धमें भीमसेन से कर्णपूर्व्वही बिजयकिया गयाथा फिर वह महारथी कर्ण किस प्रकार से भीमसेनके सन्मुखहुआ ४ अथवा भीमसेनही युद्धमें कैसे उस कर्णके सन्मुख गया जोकि पृथ्वीपर रथियोंमें अत्यन्तश्रेष्ठ महारथी बिख्यातहै ५ धर्मराज युधिष्ठिरने भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य्यको छोड़कर सिवाय महारथी कर्णकेकिसी और से भय नहीं पायाहै ६ हे महाबाहो वह युधिष्ठिर सदेवमहात्मा कर्णके पराक्रमको शोचता और उससे भयको करता हुआ बहुत बर्षसे नहीं सोताहै भीमसेनने किस प्रकार करके उसकर्णसेयुद्ध किया ७ पांडव भीमसेन ने उस ब्राह्मणोंकेभक्त पराक्रमी युद्धोंमें मुख न फेरनेवाले शूरबीरोंमें श्रेष्ठ कर्णसे कैसे २ युद्धकिया ८ जो वह बड़े बीर पराक्रमी कर्ण और भीमसेन युद्धमें सन्मुखहुये उनदोनोंका किस प्रकार का युद्ध हुआ ९ जिसने पूर्व्वमें अपना भाईपनेका नातादिखाया वह दयावान् कर्णभी कुन्तीके बचनोंको स्मरण करताभीमसेनके साथ

मेंकैसे लड़ा १० अथवा शूरबीर भीनसेन प्राचीन शत्रुताको स्मरण करता हुआ सूतके पुत्र कर्णसे कैसे युद्ध करने वाला हुआ ११ मेरा पुत्र दुर्य्योधन सदैव कर्णमेंही यह भरोसा करताहै किकर्णही सब पांडवों को बिजय करेगा १२ मेरेअभागे पुत्र दुर्य्योधनकोयुद्ध में बिजयकी आशा जिसमें है वह कर्णभयकारी कर्म करनेवाले भीमसेनके साथ किस प्रकारसेलड़ा १३ मेरे पुत्रों ने जिसको अपना आश्रय जानकर महारथियों से शत्रुताकरी हे तात वह भीमसेन उस सूतके पुत्रके साथ कैसे लड़ने वालाहुआ१४ सूत पुत्रके किये हुये अनेक अनुपकारी कर्मोंको स्मरण करतेहुये राधेयकर्णसे कैसे युद्धकिया १५ जिस पराक्रमीअकेलेने सबपृथ्वीको एक रथके द्वारा बिजय किया उस सूतके लड़के के साथ भीमसेनने किस प्रकार से युद्ध किया १६ जोकि दो कुंडल और कवचधारी शरीरसे उत्पन्न हुआ उस सूत पुत्रके साथ भीमसेन ने कैसे युद्ध किया १७ जिस प्रकार से उनदोनों का युद्ध हुआ और दोनोंमें जो बिजयोहुआ उस को मुख्यता समेत मुझसे कहो १८ क्योंकि हेसंजय तुमवृत्तान्तोंके बर्णन करने में बड़े सावधानहो संजय बोले फिर भीमसेनने रथियों में श्रेष्ठ कर्णको छोड़कर वहां जानेकी इच्छाकरी जहांपर कि वह दोनों बीर श्रीकृष्ण और अर्जुनथे १६ हेमहाराज कर्ण उसजातेहुये भीमसेनकेपास जाकर बाणोंसे ऐसे बर्षाकरनेलगा जैसे कि बादल पर्व्वत पर पानीकी बर्षा करताहै २० तबप्रफुल्लित कमलके समान मुखसे हंसते हुये पराक्रमी अधिरथी कर्णने जातेहुये भीमसेनको युद्धमें बुलाया २१ कर्ण बोला हेभीमसेन शत्रुओं के साथतेरायुद्ध स्वप्नमें भी अधिक चिन्ताके योग्य नहीं हुआ सो तुम किस हेतुसे अर्जुन के देखनेकी इच्छासे मुझकोपीठ दिखलातेहो २२ हे पांडुनन्दन यह बात कुन्तीके पुत्रोंके समान नहीं है इसहेतुसे मेरे सन्मुख नियत होकर बाणोंकी बर्षासे मुझको ढंको २३ तबभीमसेन युद्धमें कर्णके बुलानेको न सहसका और आधे मंडल को घूमकर सूतके पुत्रसे युद्ध किया २४ वह बड़े सीधे चलने वाले बाणों से उस

कवचधारी और सब शस्त्रोंमें कुशल और रथ आने वाले कर्णपर शरोंकी वर्षा करने लगा २५ युद्धका अन्तकरनाचाहते और मारने के अभिलाषी बड़े पराक्रमी भीमसेनने उसके पीछे चलनेवाले को मारकर उस कर्णको घायल किया २६ हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र शत्रुसंतापी क्रोध भरे भीमसेन ने क्रोध से भयकारी नाना प्रकारके बाणोंकी वर्षा उसपर करी २७ फिर उत्तम अस्त्रके जानने वाले कर्णने उस मतवाले हाथीके समान चलनेवाले भीमसेनके उन बाणोंको वर्षाको अस्त्रोंकी मायाओं से दूर किया २८ वह महाबाहु बड़ा नामी धनुर्द्धर पराक्रमी कर्ण अपनी विद्याके बल से विधिके अनुसार आचार्य्यके समान भ्रमण करनेलगा २९ हेराजन् वह हंसता हुआ कर्ण उस क्रोधसे लड़ने वाले कुन्तीके पुत्र भीमसेनके सन्मुखहुआ ३० चारों ओरसे वीरोंकेलड़ने और देखने पर भीमसेनने युद्धमेंकर्णकी उसशस्त्रज्ञताकोनहीं सहा ३१ पराक्रमी क्रोध युक्त भीमसेनने वत्सदन्त नाम बाणों से उससन्मुख वर्त्तमानकर्ण को हृदयपर ऐसाघायलकिया जैसे कि चाबुकोंसेबड़ेहाथीको घायल करतेहैं ३२फिर सुवर्ण कवचसे अलंकृतसूतपुत्रको सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार वाले अच्छी रीतिसे छोड़े हुयेसातबाणोंसेछेदा ३३ कर्णने सुनहरी जालोंसे ढंके वायुके समान शीघ्रगामी भीमसेनके घोड़ों को पांच २ बाणोंसे घायल किया ३४ हेराजन्इसके पीछे आधेही निमिषमें कर्णका उत्पन्न किया हुआ बाणरूपी जाल भीमसेन के रथपरदिखाई दिया ३५ तब भीमसेन कर्णके धनुषसेनिकलेहुयेबाणों से रथ ध्वजा और सारथी समेत ढंकगया ३६ कर्णने चौंसठ बाण से उसके दृढ़ कवच को तोड़ा और मर्म भेदी बाणों से बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक भीमसेन को घायल किया ३७ इसके पीछे भयसे उत्पन्न होने वाली व्याकुलता से रहित महाबाहु भीमसेन ने कर्णके धनुष से निकले हुये बाणोंसे भयको न करके सूतपुत्र से युद्ध किया ३८ हे महाराज उस भीमसेन ने कर्णके धनुष से प्रकट हुये सर्पाकार बाणों को सहा और युद्धमें पीड़ा को नहीं पाया ३९ इसके पीछे

प्रतापवान् भीमसेन ने युद्धमें कर्णको तीक्ष्ण बेतवाले पच्चीस भल्लोंसे घायल किया ४० कर्णने बिना उपाय केही अपने बाणों से उस जयद्रथ के मारने के इच्छावान् भीमसेन को अत्यन्त ढक दिया ४१ कर्णने युद्ध भूमिमें साधारणतासे भीमसेन के साथ युद्ध किया और वैसेही प्रथम की शत्रुता स्मरणकरके भीमसेन ने क्रोध से कठोरता पूर्व्वक युद्ध किया ४२ क्रोधयुक्त शत्रुओं के मारने वाले भीमसेनने उसअपमान को न सहा और शीघ्रतासे बाणोंकी बर्षा उसपरकरी युद्ध में उस भीमसेन के छोड़े हुये वह बाण सब ओरसे पक्षियों के समान शब्द करते बीर कर्णके ऊपर गिरे ४४ भीमसेन के धनुष से सुनहरी पुंख और साफ नोकवाले उन बाणों ने कर्णको ऐसे ढक दिया जैसेकि शलभ नामपक्षी अग्निको आच्छादित करते हैं ४५ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र फिर चारों ओर से ढकेहुये रथियों में श्रेष्ठ कर्णने भयकारी बाणों की बर्षाकरी ४६ भीमसेन ने उस युद्धमें शोभा पानेवाले कर्णके उन बाणों को जो कि बज्रके समान थे बहुत भल्लों से बीचही में काटा ४७ हे भरतबंशी फिर शत्रुहन्ता सूर्य्य के पुत्र कर्णने युद्धमें उस भीमसेन को बाणोंकी बर्षासे ढक दिया ४८ वहां युद्धमें सब शूरबीरोंने भीमसेनको शायकोंसे छेदाहुआ शरीरऐसा देखा जैसेकि शललोंसे घायल कुत्ता होताहै उसबीरने युद्धमें कर्णके धनुषसे निकलेहुये साफ बाणोंको ऐसे धारणकिया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों को धारण करताहै ५० बसन्तऋतु में बहुत से पुष्पोंसे युक्त अशोकवृक्ष के समानरुधिरसेलिप्त अंग भीमसेन महाशोभायमानहुआ ५१ फिर क्रोधसे रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेनने युद्धमें महाबाहु कर्ण के उस कर्मको नहींसहा ५२ उसने कर्णको पच्चीस बाणों से ऐसे घायल किया जैसे कि श्वेत पर्व्वतको बड़ेबिषधारी सर्पों से घायल करतेहैं फिरभी देवताके समान पराक्रमी भीमसेनने शरीरसे कवचत्यागने वालेसूतपुत्रको मर्मोंपर चौदह बाणों से घायल किया ५४ फिर प्रतापवान् हंसतेहुये भीमसेनने शीघ्रहीदूसरे बाणसेकर्णकेधनुषको

काटकर ५५ और तीक्ष्ण बाणोंसे चारोंघोड़े और सारथीको मार और सूर्य्यके समानप्रकाशित नाराचनाम बाणसे कर्णको छातीपर घायलकिया ५६ वहबाण बड़ेशीघ्र कर्णको घायल करके पृथ्वीमें ऐसेसमागये जैसे कि बादलको तोड़कर सूर्य्यकी किरणें समाजाती हैं ५७ उसप्रकार बाणोंसेघायलटूटा धनुषपुरुषोत्तम कर्णबड़ीव्याकुलताकोपाकर दूसरे रथपर चलागया ५८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकत्रिंशततमोऽध्यायः १३१॥

एकसौबत्तिसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि जो भृगुबंशियों में श्रेष्ठ और धनुषधारीश्री महादेवजी के शिष्य कर्ण ने उन परशुरामजी की शिष्यता को पाया और अस्त्रविद्या में उनके समान है १ अथवा शिष्यता के गुणोंसेयुक्त कर्ण उनसे बिशेषहै वह कुन्तीकेपुत्र भीमसेनसेलीला पूर्व्वकही विजय कियागया २ हे संजय जिसमें मेरेपुत्रोंकीबिजय की बड़ी आशाहै उस कर्णको भीमसेनसे पराजित देखकर दुर्य्योधनने क्याकहा ३ हे तात बल में प्रशंसित पराक्रमी भीमसेन ने कैसे २ युद्धकिया अथवा इससे पूर्व कर्णने युद्ध में उस अग्नि के समान प्रज्वलित क्रोधरूप भीमसेनको देखकर क्या किया संजय बोले कि बायुसे उठायेहुये समुद्रके समान कर्ण विधि के अनुसार तय्यार किये हुये दूसरे रथपर सवार होकर पांडव भीमसेन के सन्मुख आया ५ हे राजा आपके पुत्रोंने कर्णको क्रोधयुक्त देखकर भीमसेनको अग्निके मुख में होमाहुआ माना ६ इसके पीछे कर्ण धनुष और तलके भयकारी शब्दों को करके भीमसेनके रथकीओर चला ७ फिर उस सूर्य्यके पुत्र शूरकर्ण और बायुपुत्र महात्मा भीमसेनका युद्धभयकारी हुआ ८ क्रोधयुक्त और परस्पर मारनेके अभिलाषीनेत्रोंसे भस्म करनेवाले दोनों महाबाहोंने परस्परमें देखा ९ क्रोधसे रक्तनेत्रसर्पकीसमान श्वासलेनेवाले शत्रुविजयी दोनोंशूरोंने सन्मुख होकर परस्पर घायल किया १० व्याघ्रों के समान क्रोध

युक्त और बाजपक्षियोंके समान शीघ्रगामीऔरशरभ नामपक्षियोंके समानक्रोधभरे परस्पर युद्धकर्त्ताहुये११उसकेपीछेशत्रुविजयी भीमसेन द्यूतके फांसे बनके दुःख और बिराटनगरमें पायेहुये दुःखों को १२ और आपके पुत्रों के हाथ से वृद्धियुक्त रत्नवाले देशोंके हरणको और पुत्रोंसमेत तुमसेदियेहुये बारंबारके कष्टों को १३जिस दुर्य्योधनने निरपराधिनी कुन्तीकोपुत्रोंसमेत भस्मकरनाचाहा और उसीप्रकार सभामें दुराचारियोंके हाथसे द्रौपदीके कष्टोंको १४ हे भरतबंशी उसीप्रकार दुश्शासनके हाथसे शिरकीचोटी का पकड़ना और कर्णकी ओर कठोर बचनोंका कहना १५ कि दूसरे पति को इच्छाकर तेरेपति नहींहैं थूथेतल अर्थात् नपुंसकों के समान सबपांडव नरकमें पड़े इन सब बातोंको स्मरण करता १६ और हे कौरव उस समय आपके सन्मुख जो २ बातें कौरवोंने कहीं और आपके पुत्र दासीभावमें करके द्रौपदीके भोगनेके अभिलाषीहुये १७ और कर्णने आपके सन्मुख सभाके मध्यमें श्याम मृगचर्मधारी बनबासको जानेवाले पांडवोंकोभी जो कठोरवचन कहे १८ और जैसे कि सुखीहुये क्रोधयुक्त निर्बुद्धी आपके पुत्रने दुःखी पांडवोंको तृण के समान करके भीमसेनके चलनेकी नकल करके उपहासकिया और बहुतसी बातेंकरीं १६ शत्रुओंका मारनेवाला धर्मात्मा भीमसेन अपनी बाल्यावस्था से दुःखोंको शोचता जीवन से दुःखी हुआ २० इसकेपीछे भरतबंशियों में श्रेष्ठ शरीरकी प्रीति त्यागने वालाभीमसेन सुबर्ण पृष्ठी बड़ी कठिनतासे चढ़ानेके योग्य धनुष को चढ़ाकर कर्णके सन्मुखगया २१ उस भीमसेनने कर्णके रथपर प्रकाशित तीक्ष्णधार बाणोंके जालोंसे सूर्य्यकी किरणोंकोरोका२२ इसकेपीछे कर्णने हँसकर शीघ्रही तीक्ष्णधार बाणोंसे इस भीमसेन केबाण जालोंको तोड़ा २३ तब उसमहाबाहु महाबलीकर्णनेतीक्ष्ण धारवाले नौबाणोंसे भीमसेनको घायलकिया २४ चाबुकोंसे रोके हुये हाथीके समान बाणोंसे रोकाहुआ वह भ्रांतीसे युक्त भीमसेन कर्ण के सन्मुख दौड़ा २५ कर्णभी उस वेगसे गिरते महा वेगवान्

पांडवोंमें श्रेष्ठ भीमसेनके सन्मुखऐसेगया जैसेकि युद्धमें मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सन्मुख जाताहै २६ इसकेपीछे सौभेरी के शब्द के समान शंखको बजाया तब सेना प्रसन्नता से ऐसे चलाय-मानहुई जैसे कि उठाहुआ समुद्र२७भीमसेनने हाथी घोड़े रथ और पतियोंसे पूर्ण उस उठीहुई सेनाको देखकर और कर्ण को पाकर शायकोंसे ढकदिया २८ कर्णने युद्ध में ऋक्षबर्ण घोड़ोंको हंसबर्ण वालेउत्तम घोड़ोंसे मिलादिया और पांडवको बाणों से ढक दि-या २९ बायुके समान शीघ्रगामी ऋक्षबर्ण घोड़ोंको श्वेतरंगवाले घोड़ोंसे मिलाहुआ देखकर आपके पुत्रोंकी सेना हाहाकार करने वालीहुई ३० हे महाराज वहबायुके समान शीघ्रगामी श्वेत और श्याम रंगवाले घोड़े ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि आकाशमें बादल होतेहैं आपके पुत्रोंके महारथी उन क्रोधरूप और क्रोध से रक्त नेत्र कर्ण और भीमसेनको देखकर बड़े भयपूर्व्वक कंपायमानहुये ३२ उनदोनोंकी युद्धभूमि यमराजवाले देश के समान भयकारी और ऐसे कठिनता पूर्व्वक देखनेके योग्यहुई जैसे कि प्रेतोंके राजा यम-राजका पुरहोताहै ३३ उस अपूर्व्व रंगभूमिको देखते महारथियों ने बड़े युद्धमें प्रत्यक्षता से एककोभी विजयको नहींदेखा ३४ हे राजा पुत्रकेसाथ आपका दुर्मन्त्र होनेपर उनबड़े अस्त्रज्ञोंके कठिन युद्धको देखा३५ तीक्ष्ण बाणोंसे परस्पर ढकतेउनदोनों शत्रुसंतापि-योंने बाणोंकी वृष्टीके द्वारा आकाशको बाणजालों से संयुक्त कर दिया ३६ तीक्ष्ण बाणों से परस्पर प्रहार करनेवाले वह दोनों महारथी ऐसे बड़े दर्शनके योग्य हुये जैसे कि बर्षा करनेवाले दो बादल होतेहैं ३७ हे प्रभु सुबर्ण जटित बाणोंको छोड़ते उनदोनों शत्रुविजयियों ने आकाशको ऐसा प्रकाशित किया जैसे कि बड़ी उल्काओंसे होताहै हे राजा उन दोनों के छोड़े हुये बाण जो कि गिद्धके पक्षसे युक्तथे ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि शरदऋतु में आकाशमें मतवाले सारसों की पंक्तियां होती हैं श्री कृष्ण और अर्जुनने शत्रुओंके विजय करने वाले भीमसेनको कर्णके साथ युद्ध

करनेवाला देखकर भीमसेनके ऊपर बड़ाभारी भारमाना ४० वहां कर्ण और भीमसेन के छोड़ेहुये बाणों से महाघायल घोड़े मनुष्य और हाथी बाणोंके पतन स्थानोंको उल्लंघन कर गिर पड़े ४१ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उन गिरते गिरेहुये और निर्जीव बहुत से मनुष्य घोड़े आदिसे आपके पुत्रोंके मनुष्यों का बिनाश हुआ ४२ हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ पृथ्वी एकक्षण भरमेंही निर्जीव मनुष्य घोड़े और हाथियों के शरीरों से पूर्णहोगई ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्वात्रिंशोऽध्यायः १३२ ॥

एकसौतेंतिसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले किहे संजयमैं भीमसेनके पराक्रमको अत्यन्त अपूर्व्व मानताहूं जो युद्धमें तीव्रपराक्रमी कर्णसेयुद्धकरनेवाला हुआ १ जो कर्ण युद्ध भूमिमें सब शस्त्रधारी चढ़ाई करनेवाले देवताओं कोभी यक्ष असुर और मनुष्यों समेतको हटासक्ताहै २ उसने उस युद्धमें उसलक्ष्मीसे शोभित पांडव भीमसेनको युद्धमेंकैसेनहीं विजय किया हे संजय इसहेतुको मुझसे कहो ३ प्राणोंके द्यूतमें उनदोनों का युद्ध किसप्रकार से हुआ मैं मानताहूं कि इस युद्धमें जयाजय दोनों मिलीहुईहैं ४ हे सूत मेरापुत्र दुर्य्योधन युद्धमें कर्णको पाकर गोबिन्दजी और यादवों के साथ पांडवोंके विजय करने की साहस करताहै ५ युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेनके हाथसे कर्ण को बारंबार पराजित हुआ सुनकर बड़ा मोह होताहै ६ मैं अपने पुत्रके अन्यायोंसे कौरवों को बिनाश हुआ मानताहूं हे संजय वह कर्ण बड़े धनुषधारी पांडवों को विजय नहीं करसकेगा ७ कर्णने पांडवों के साथ जो युद्ध किया तोसर्वत्र पांडवोंनेही युद्धभूमिमें कर्ण को विजय किया ८ हे तात पांडव लोग देवताओं समेत इन्द्रसेभी अजेयहैं वह मेरा पुत्र निर्बुद्धी दुर्य्योधन नहीं जानताहै ९ मेरा निर्बुद्धी पुत्र दुर्योधन कुबेरके समान अर्जुनके धनको हरण करके सुहृदके चाहने के समान उपाधियों को नहीं जानता है १० मैंने

विजयकर लियाहै इसबातका माननेवाला छल संयुक्त बुद्धिरखने वाला दुर्योधन बड़े छलसे महात्माओं के राज्यको छलकर पांडवों का अपमान करताहै ११ पुत्रकी प्रीतिसे विमोहित व म्लानचित्त मुझसेभी धर्ममें नियत महात्मा पांडव लोग अपमानकियेगये ५२ सगेभाइयों के साथ सन्धिको अभिलाषी ऊंचीदृष्टिवाला युधिष्ठिर यह मानकर कि यह असमर्थहै मेरे पुत्रोंसे अपमान कियागया १३ उन बहुत से दुःख बुरे कर्म और उन अपकारोंको हृदय में करके महाबाहु भीमसेन कर्णके साथ युद्ध करनेवाला हुआ १४ हे संजय उसीहेतुसे जिसप्रकार युद्धमें श्रेष्ठ परस्पर मारने के अभिलाषी कर्ण और भीमसेनने युद्धभूमि में युद्धकिया उसको मुझसे कहो। संजय बोला कि हे राजा जैसे कि कर्ण और भीमसेनका युद्धजारी हुआ उसको कहताहूं जैसे कि बनमें परस्पर मारनेवाले दोहाथियों का युद्ध होता है उसीप्रकार इनदोनों का युद्धहुआ १६ हे राजा क्रोधयुक्त कर्णने पराक्रम करके तीसबाणोंसे उस पराक्रमीशत्रुहन्ता भीमसेन को घायल किया हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ सूर्य्यके पुत्र कर्णने बड़े बेगवान् साफनोक सुवर्ण जटित बाणोंसे भीमसेन को घायलकिया १८ भीमसेनने उस खैंचनेवालेके धनुषको तीनबाणोंसे काटा और भल्लसेसारथीको रथसेगिराया १६ भीमसेनकेमारनेको सदैव चाहते उस कर्णने सुवर्ण और बैडूर्य मणियोंसे जटित दंड शक्तिको हाथमें लिया २० अर्थात् वहां बलीकर्णने उसद्वितीय काल शक्तिके समान उस दंडशक्तिको उठाकर और पराक्रमसे पकड़ कर २१ उस जीवनकी नाशकारिणी शक्तिको भीमसेन के ऊपर फेंका इन्द्रवज्रके समान शक्तिको छोड़कर २२ वह सूत का पुत्रकर्ण बड़े भारी शब्दसे गर्जा इसकेपीछे उसशब्दकोसुनकर आपके पुत्रप्रसन्न हुये २३ भीमसेनने उस कर्णके हाथ की फेंकीहुई शक्तिको सात बाणोंसे आकाशहीमें काटा २४ हे श्रेष्ठ उसकी सर्पकेसमानशक्तिको काटकर कर्णके प्राणोंको चाहते क्रोधयुक्त भीमसेनने २५ युद्ध में तीरपरसे जटित सुनहरीपुंख और स्वच्छ यमराजके दण्डके समान

वाले बाणोंको चलाया २६ तब कर्णने भी सुवर्ण पृष्ठी दुःप्राप्य दूसरे धनुषको लेकर बहुत खेंचकर शायकोंको छोड़ा २७ हे राजा पांडव भीमसेनने कर्णके छोड़ेहुये नौबड़े बाणोंको टेढ़ेपर्ववाले बाणों से काटा २८ फिर भीमसेन उन बाणोंको काटकर सिंह के समान गर्जा जैसेकि गौवोंके मध्य में दोबैल गर्जें उसीप्रकारबहदोनोंपराक्रमी शब्द करनेवाले हुये २९ और जैसे कि दोशार्दूल मांसके अर्थगर्जें उसीप्रकार परस्पर प्रहार करनेके अभिलाषी परस्पर छिद्र देखनेवाले और चाहनेवाले दोनों परस्परमें गर्जे ३० जिसप्रकार गौशाला में दो बैल परस्पर देखते हैं उसीप्रकार परस्परमें देखने वालेहुये दांतोंकी नोकोंसे बड़े हाथियों के समान परस्पर सन्मुख होकर ३१ कानतक खेंचेहुये बाणोंसेपरस्पर घायल किया हेमहाराज बाणों की बर्षा से एकएकको क्रोधित करनेवाले ३२ और क्रोधयुक्त फैलेहुये नेत्रोंसे देखने और हँसनेवाले और बारंबारआपसमें घुड़की देनेवाले ३३ शंखोंको शब्दायमान करनेवाले होकर परस्पर युद्धकरनेलगे हे श्रेष्ठ फिर भीमसेनने उसकेधनुषको मुष्टिका के स्थानपरकाटा ३४ और बाणों से उन शंखवर्ण घोड़ोंको यमलोकमें पहुंचाया और इसीप्रकार उसके सारथीको भी रथकेनीड़ से नीचे गिरा दिया ३५ इसके पीछे युद्धमें बाणों से ढकेहुये सूर्य्य के पुत्र कर्णने जिसके कि घोड़े और सारथी मरगये थे बड़ीभारी चिन्ताको पाया ३६ और बाण जालसे मोहित होकर करनेके योग्य कर्म को नहीं पाया इसके पीछे क्रोधसे कंपायमान राजा दुर्योधनने उसप्रकारकी आपत्तिमें पड़े हुये कर्णको देखकर दुर्जयको आज्ञाकरी कि हे दुर्जय तुम कर्णके सन्मुख जावो वह भीमसेन आगे से उसको ग्रसे लेताहै ३७। ३८ तू कर्णके पराक्रमको आश्रित होकर इस बड़े भोजन करनेवाले को मार इसप्रकार आज्ञा दिया हुआ आपका पुत्र तथास्तु कहकर ३९ उस भिड़ेहुये भीमसेनको बाणोंसे ढकता सन्मुख दौड़ा उसने भीमसेनको नौ बाणों से और घोड़ों को आठ बाण से घायल किया ४० छः बाणों से

सारथीको तीनबाणसे ध्वजाको और सात बाणोंसे फिर उसको घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेनने भी शीघ्र चलने वाले बाणोंसे घोड़े सारथी समेत ४१ टूटे कवचवाले दुर्जय को यमलोकमें पहुंचाया फिर पीड़ामान और रोतेहुये कर्णनेउसअच्छे अलंकृत पृथ्वी परगिरे सर्पके समान कड़कड़ाते आपके पुत्रको प्रदक्षिणा किया तब उस हंसतेहुये भीमसेनने उस बड़े शत्रु कर्ण को बिरथ करके ४२। ४३ बाणोंके समूह और दिव्य शतघ्नी शंकुओंसे चिनदिया उसके बाणोंसे घायल शत्रुसंतापी अतिरथी कर्ण नेयुद्धमें क्रोध रूप भीमसेनको त्याग नहीं किया ४४। ४५॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचत्वस्त्रिंशतितमोऽध्यायः १३३॥

एकसौचौंतिसका अध्याय॥

संजय बोले किइस प्रकार बिरथ और भीमसेनसे पराजितहुये कर्णने फिर दूसरे रथपर सवार होकर पांडव भीमसेन को फिर घायल किया १ दान्तको नोकोंसे बड़े हाथियों के समानपररूपर सन्मुख होकर कान तक खैंचे हुये बाणोंसे पररूपर घायल किया २ अर्थात् कर्ण बाणोंके समूहोंसे भीमसेन को घायल करके बड़े शब्दको गर्जा और फिर भी छातीपर घायल किया ३ भीमसेन ने सीधे चलने वाले दश बाणोंसे उसको घायल किया फिर टेढ़े पर्व्व वाले सत्तर बाणोंसे घायल किया ४ हे राजा भीमसेनने कर्ण को हृदय पर नौ बाणों से घायल करके तीक्ष्ण धारवाले एकशायकसे ध्वजा को छेदा ५ इसके पीछे पांडवने तरेसठ बाणोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं और कोड़ेसे घोड़े को ६ यश मान पांडवके हाथसे अत्यन्त घायल क्रोधसे रक्तनेत्र बीर कर्ण ने होठों को चाटा ७ हे महाराज इसके पीछे सत्र शरीरों के चीरने वाले बाण को भीमसेन के लिये ऐसेफेंका जैसे कि बलिके अर्थ इन्द्र बज्रको फेंकता है ८ कर्णके धनुष से वह गिरा हुआ सुनहरी पुंख वाला बाण युद्धमें भीमसेनको घायल

करके पृथ्वीको फाड़ पृथ्वीमें समा गया ९ इसके पीछे बिचार रहित क्रोधसे रक्तनेत्र महाबाहु भीमसेन ने बज्रके समान चारहाथ मोटी स्वर्णमयी बाजूबन्द रखने वाली छः पक्ष रखनेवाली भारी गदाको कर्णके ऊपर फेंका उस गदाने श्रेष्ठोंको सवारीके योग्य कर्णके उत्तम घोड़ोंकोमारा १०।११ अर्थात् क्रोधयुक्त भरतबंशी भीमसेनने गदा से घोड़ोंको ऐसेमारा जैसे कि इन्द्र बज्र से मारताहै हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे महाबाहु भीमसेन ने क्षुरनाम दो बाणों से १२ कर्ण की ध्वजाको काटकर बाणों से सारथीकोभी मारा फिर धनुष को टंकारता महादुःखी चित्त कर्ण उस घोड़े सारथी और ध्वजा से रहित रथको त्याग करके खड़ा होगया वहां हमने कर्णके अपूर्व्व पराक्रमको देखा १३।१४ जिस रथियोंमें श्रेष्ठ बिरथरूपने शत्रुको रोका युद्धमें उस नरोत्तम कर्णको बिरथ देखकर १५ दुर्य्योधन ने दुर्मुख से कहा हे दुर्मुख यह कर्ण भीमसेनके हाथ से बिरथ किया गया १६ उस नरोत्तम महारथी कर्णको रथ संयुक्त करो इसके पीछे दुर्मुख दुर्य्योधनके बचनकोसुनकर १७ शीघ्रहीकर्णके पासआया और बाणोंसे भीमसेनको ढक दिया युद्धमें कर्णकेपीछे चलनेवालादुर्मुख को देखकर १८ बायुपुत्र भीमसेन होठोंको चाटताहुआ अत्यन्तप्रसन्नहुआ हे राजा इसके पीछे पांडवने शिली मुखनाम बाणोंसेकर्ण को रोककर १९ शीघ्रही अपने रथको दुर्मुखके पास पहुंचाया हेमहाराज इसके पीछे भीमसेनने एकक्षण भरमेंही टेढ़े २० सुन्दर मुख वाले नौ बाणोंसे दुर्मुखको यमलोकमें पहुंचाया हे राजा दुर्मुखके मरने पर कर्ण उसीरथ पर सवारहोकर सूर्य्यके समान तेजस्वी शोभायमान हुआ टूटेहुये मर्मस्थल और रुधिरमें भरे हुये दुर्मुखको देखकर २१।२२ अश्रुपातोंसे भरेनेत्रवालाकर्ण एकमुहूर्त्त तक सन्मुख बर्त्तमान नहीं हुआ लंबे और उष्णश्वास लेतेहुये बीर कर्णने उस निर्जीवको उल्लंघकर प्रदक्षिणा करके करने के योग्य कर्मको नहीं जाना हे राजा उस अवकाशमें भीमसेनने गृध्र पक्षसे जटित चौदह नाराचोंको २३ । २४ कर्णके निमित्त चलाया हे

महाराज उन प्रकाशमान सुनहरी पुंख वाले बाणोंने उसके स्वर्ण जटित कवचको तोड़कर २५ दिशाओंको प्रकाशित किया और उन रुधिर पीने वालोंने कर्णके रुधिर को पानकिया २६ हे महाराज कालके प्रेरित क्रोधयुक्त तीव्र गामी सर्पोंके समान वह बाण पृथ्वी पर ऐसे शोभायमान हुये२७जैसेकि पृथ्वीके बिवरोमें आधेघुसे हुये बड़े २ सर्प होतेहैं फिर बिचार से रहित कर्णने सुबर्ण से शोभित भयकारी चौदहों नाराचोंसे छेदा वह भयकारी बाण भीमसेन की बाईं भुजाको छेदकर २८ । २९ पृथ्वीमें ऐसे प्रवेशकर गये जैसेकि क्रौंच पक्षी पर्व्वतमें प्रवेश करजातेहैं पृथ्वीमें घुसे हुये वह नाराच ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि सूर्य्यके अस्त होनेपर प्रकाशित किरणें होतीहैं युद्धमेंमर्मभेदी नाराचोंसेघायल उस भीमसेनने३०।३१ ऐसे रुधिरको गिराया जैसे कि जलको पर्व्वत गेरताहै उस दुःखित हुये भीमसेनने गरुड़के समान शीघ्र गामी तीन बाणोंसे कर्णको और सात बाणोंसे उसके सारथीको घायल किया हेमहाराजभीमसेनकेबाणों सेघायल हुआ व्याकुल कर्ण ३२।३३ बड़ेभयसे युद्धको त्याग कर शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा भागा फिर अग्निके समान प्रकाशमान अति रथी भीमसेन सुबर्ण जटित धनुषको टंकारकर युद्ध में निरत हुआ ३४ । ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुस्त्रिंशततमोऽध्यायः १३४ ॥

एकसौपैंतीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं दैवको अर्थात् प्रारब्धको बड़ा मानताहूं इस निरर्थक उपाय और उद्योग करने को धिक्कारहै इसस्थान पर उपाय करने वाले कर्णने भीमसेन को नहीं तरा १ कर्ण युद्ध में गोविन्दजी समेत सब पांडवों को बिजय करने का उत्साहकरताहै मैं लोकमें इस कर्णके समान किसी शूरबीरको नहींदेखताहूं २ मैंने बारम्बार यह बात कहने वाले दुर्य्योधन के मुख से सुना कि कर्ण पराक्रमी शूर और दृढ़ धनुषधारी और महा परिश्रमीहै ३ हे

सूत पूर्व्व समयमें निर्बुद्धी दुर्य्योधन ने मुझसे यह बचन कहा कि देवता भी मुझ कर्णको साथ रखनेवाले के सन्मुख होनेको समर्थ नहीं हैं ४ फिर निर्बुद्धी निर्बल बिचारे पांडव कैसे हो सक्ते हैं अर्थात् कभी नहीं होसक्ते वहां निर्विष सर्प के समान पराजित कर्ण को देख कर ५ उस युद्ध से मुख मोड़नेवाले को दुर्य्योधन ने क्याकहा दुःखकी बात है कि मोहित हुये कर्ण ने युद्धों में अकुशल अकेले दुर्मुखको ६ पतंग के समान अग्नि में प्रवेशित किया हे संजय निश्चय करके अश्वत्थामा, शल्य, कृपाचार्य्य, और कर्ण यह सब एक होकर भी ७ भीमसेन के सन्मुख नियत होनेको समर्थ नहीं हैं वह भी इस भीमसेन के बड़े भयकारी दशहजार हाथियों के समान बलको और बायुके समान कठिन पराक्रमी के कठिन बिचार को जानते उस निर्दयकर्मी कालमृत्यु और यमराज के समान भीमसेन को किस निमित्त ८।९ युद्धमें क्रोधयुक्त करते हैं जोकि उसके बल क्रोध और पराक्रम के जानने वाले हैं अपनेभुज बल से अहंकारी महाबाहु अकेले कर्णने भीमसेन को तिरस्कार करके युद्धभूमिमें संग्राम किया जिस भीमसेन ने युद्धमें कर्णको ऐसे बिजय किया जैसे कि इन्द्र असुर को बिजय करताहै १०।११ वह पांडव भीमसेन युद्धमें किसी से भी बिजय करने के योग्य नहीं जो अकेलाही द्रोणाचार्य्य की सेनाको मथकर मेरी सेना में प्रवेशित हुआ १२ भीमसेन अर्जुनके खोजने में प्रवृत्तहै कौन जीवन की इच्छा करने वाला उसको पराजय कर सक्ताहै हे संजय कौनसा बीर है जो भीमसेन के आगे सन्मुख होनेको उत्साह करे जैसे कि बज्र के उठाने बाले महा इन्द्रके आगे आनेको कोई दानव मनुष्य साहस नहीं कर सक्ता है उसी प्रकार भीमसेनके भी सन्मुख होनेको समर्थ न होकर कोई उत्साह नहीं कर सक्ताहै १३ चहै बज्रधारी इन्द्र के आगे दानव मनुष्य यमराजके पुरको पाकर लौटआवे परन्तु १४ भीमसेन को पाकर कभी नहीं लौट सक्ता जैसे कि पतंग अग्नि में प्रवेश करताहै उसी प्रकार वह सब उसमें भस्म हुये १५ जब अचेत

पुरुष अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन के सन्मुख दौड़े तब क्रोधयुक्त भयकारी रूप वाले भीमसेन ने सभामें कौरवों को सुनाकर तेरे पुत्रों के मारने से संबंध रखने वाला जो उसने बचन कहाथा उसको बिचार कर और कर्ण को बिजय किया हुआ देखकर १६।१७ दुश्शासन अपने भाई समेत भयकरके भीमसेनसे हटगया हे संजयजिस दुर्बुद्धी ने सभाके मध्यमें बारंबार यह बचन कहाथा कि १८ कर्ण दुश्शासन और हम मिलकर युद्धमें पांडवोंको बिजय करेंगे निश्चय करके वह मेरा पुत्र भीमसेन से पराजित बिरथ कर्ण को देख कर १६ श्रीकृष्णजी के अपमान से अत्यन्त दुःखपाता है निश्चयहै कि मेरा पुत्र युद्धमें कवचधारी भाइयों को मराहुआ देखकर अपने अपराध से बड़ा पछतावा करके दुःखोंको पाताहै अपने जीवन का चाहनेवाला बिरुद्ध हुये पांडव भीमसेनके आगे जासकाहै २० जो कि भयकारी रूप और शस्त्रोंका धारण करने वाला क्रोध से पूर्ण साक्षात् कालके समान बर्त्तमान है चाहै बड़वानल अग्नि के मुखसे भी मनुष्य बचसके २१ परन्तु भीमसेन के मुखमें पहुंचकर फिर नहीं छुट सक्ता यह मेरा मत है क्रोध युक्त अर्जुन पांचालदेशी सात्यकी और केशवजी २२ जीवनको रक्षा करनेको जानतेहैं हेसूत बड़े कष्टकीबात है किमेरेपुत्रोंका जीवन आपत्तिमें फंसाहुआहै २३ संजयबोले कि हे कौरव जोतुम बड़ेभयके बर्त्तमान होनेपर भयको करतेहो सोतुम्हीं निस्सन्देह इस संसारके नाशके मूलहो २४ पुत्रोंकेबचनोंपर नियत होकर आपबड़ी शत्रुताको करके समझानेसेभी तुम ऐसेनहीं मानतेथे जैसे कि मरणहार मनुष्य नीरोगकारी औषधीको नहीं अंगीकार करताहै २५ हेमहाराज नरोत्तम तुम आपबड़ी कठिनतासे पचनेवाले काल कूटनाम बिषको पानकरके अब उसके पूरे२ सब फलोंको पावोगे २६ फिर जो तुम युद्धकरनेवाले बड़े पराक्रमी शूरबीरोंकी निन्दा करतेहो उसका वृत्तांत तुमसे इसस्थानपरकहताहूं जैसेकि युद्ध प्रारंभ हुआ २७ हे भरतबंशी इसके अनन्तर आपके पुत्रोंने भीमसेनसे पराजित कर्ण

कोदेखकर बड़े धनुषधारी पांचोंसगे भाइयोंने नहींसहा २८ दुर्मर्षण, दुस्सह, दुर्मद, दुर्धर और जय, यह पांचों अपूर्व कवचों को धारण कियेहुये पांडव भीमसेनके सन्मुखगये २९ उन्होंने सबओर से महाबाहु भीमसेनको घेरकर बाणोंसे दिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसेकि शलभनाम पक्षियोंके समूहोंसे आच्छादित होतीहैं ३० हंसतेहुये भीमसेनने युद्धमें उन अकस्मात् आतेहुये देवरूप कुमारोंको लिया ३१ भीमसेनकेआगे चलनेवाले आपकेपुत्रोंको देखकर कर्णभी फिरबढ़े पराक्रमी भीमसेनके सन्मुखगया ३२ उस समयमो आपके पुत्रोंसे रोकाहुआ वह भीमसेन तीव्रसुनहरी पुंखतीक्ष्ण धारवाले बाणोंको छोड़ता शीघ्रही उस कर्णके सन्मुखगया ३३ फिरकौरवोंने सब ओरसे कर्णको मध्यमेंकरके टेढ़े पर्ब्बवालेबाणोंसे भीमसेनको ढंकदिया ३४ हेराजा भयकारी धनुष रखनेवाले भीमसेनने पच्चीस बाणोंसे उन नरोत्तमोंको घोड़े सारथियों समेत यमलोकमें पहुंचाया ३५ वह मृतक होकर सारथियों समेत रथोंसे ऐसेगिर पड़े जैसेकि अपूर्ब्ब पुष्प रखनेवाले वायुसे टूटेहुये बड़े२ वृक्षहोते हैं ३६ वहां हमने भीमसेन के अपूर्ब्ब पराक्रमका देखा जो बाणोंसे कर्णको रोककर आपके पुत्रोंकोमारा ३७ हेमहाराज चारों ओरसे भीमसेनके तीक्ष्ण बाणोंसे रुकेहुये उस कर्णने भीमसेनकोदेखा ३८ और क्रोधसे रक्तनेत्र भीमसेनने बड़े धनुषको टंकार कर बारंबार उस कर्णको देखा ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्ब्बणिशतोपरिपंचत्रिंशत्तमोऽध्यायः १३५ ॥

एकसौछत्तीसका अध्याय ॥

संजय बोलेकि फिर वह प्रतापवान् कर्ण पृथ्वीपर पड़ेहुये आपके पुत्रों को देखकर बड़े क्रोधमें भरा जीवनसे निराश हुआ १ तब कर्णने अपनेकोही अपराधीमाना जो कि उसकेनेत्रोंके समक्षमें आपके पुत्र भीमसेनके हाथसे मारेगये २ उसकेपीछेभ्रांतिसेयुक्तक्रोधभरेपूर्ब्ब शत्रुताको स्मरण करते भीमसेनने कर्णकेतीक्ष्णधारबाणोंको काटा ३

फिर उस हंसते हुये कर्णने भीमसेन को पांच बाणोंसे घायल करके फिर सुनहरी पुंख वाले सत्तर तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया ४ भीमसेन ने कर्णके चलायेहुये उन बाणोंको ध्यान करके युद्धमें सुनहरी पुंख वाले सौ बाणों से कर्णको घायल किया ५ हे श्रेष्ठ फिर पांच बाणोंसे उसके मर्मस्थलोंको छेदकर एक भल्ल से कर्णके धनुषको काटा ६ हे भरतबंशी इसके पीछे शत्रु संतापी दुःखी चित्त कर्णने दूसरे धनुष को लेकर बाणों से भीमसेन को ढंकदिया ७ फिर भीमसेन उसके घोड़े और सारथी को मारकर बदला लेनेवाला कर्म होने पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ ८ तब पुरुषोत्तम ने बाणोंसे उसके धनुष को काटा हे महाराज वह सुवर्ण पृष्ठी और बड़े शब्दवाला धनुष भी गिरपड़ा ९ फिर तेा महारथी कर्ण उस रथसे उतरा और क्रोधकरके गदाको भीमसेनके ऊपर फेंका १० भीमसेनने उसआती हुई बड़ी गदाको देखकर सब सेनाके देखतेहुये अपने बाणोंसेरोक दिया ११इसके पीछे कर्णके मारनेके अभिलाषी शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेनने हजारों बाणोंको चलाया १२ कर्णने उस बड़े युद्धमें इन बाणोंको अपने बाणोंसे रोककर शायकों से भीमसेन के कवचको गिराया १३ इसकेपीछे सब सेनाके लोगोंके देखते पचीस नाराचों से उसको घायल किया यह आश्चर्य्यसा हुआ १४ हे श्रेष्ठ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेनने नौबाणोंको कर्णके ऊपर चलाया १५ वह तीक्ष्णबाण उसके कवच और दाहिनी भुजाको छेदकर पृथ्वीमें ऐसे समागये जैसेकि सर्पबामीमें समाजातेहैं १६ भीमसेनके धनुषसे गिरेहुये बाणोंके समूहोंसे ढंकाहुआ कर्ण फिरभी भीमसेनसे मुखफेर गया १७ राजा दुर्य्योधन भीमसेनके बाणोंसे ढंकेहुये मुखफेरनेवाले पदाती कर्णको देखकर बोला १८ कि सब ओर से उपायोंको करके तुम शीघ्रही कर्णके रथके समीप जाओ हेराजा इसके अनन्तर आपके पुत्रभाईके अपूर्व्व बचन को सुनकर १९ युद्धमें बाणोंको छोड़ते भीमसेनके सन्मुखगये उनकेनाम चित्र, चित्रायुध, चित्राक्ष, चारुचित्र, शरासन, मित्रायुध, चित्रवर्मा

यहसबयुद्धमेंअपूर्व्व युद्ध करनेवालेथे२० महारथी भीमसेननेइनआते हुये २१ आपके पुत्रोंको एक २ बाणसे युद्ध भूमि में गिराया वह मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़े जैसेकि बायुसे उखाड़े हुयेवृक्ष होतेहैं २२ हेराजाआपके महारथीपुत्रोंकीमराहुआ देखकरअश्रुपातोंसेभीजेहुये मुखवालेकर्णने बिदुरजीके बचनोंकोस्मरणकिया २३ फिरयुद्ध में शीघ्रता करनेवाला पराक्रमी कर्णबिधिकेअनुसार अलंकृतकियेहुये दूसरे रथपर सवारहोकरभीम सेनकेसन्मुखगया २४ वहदोनों सुनहरी पुंखतीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे परस्पर में घायल करकेऐसेशोभायमानहुये जैसेकि सूर्य्यकीकिरणोंसे घिरेयेहुये२५ दो बादल उसकेपीछे क्रोधयुक्त पांडवनेतीक्ष्णधारऔर तीक्ष्ण बेंतवाले छत्तीस भल्लोंसे कर्णकी प्रत्यंचाको तोड़ा २६ हे भरतबंशियोंमेंश्रेष्ठ महाबाहु कर्ण ने भी टेढ़े पर्व्व वाले पचास बाणों से भीमसेन को घायल किया २७ रुधिर से लिप्त अंग औरबाणोंसेटूटे कवचशरीर वह दोनों कर्णऔरभीनसेन ऐसे शोभायमान हुये जैसेकि कांचली से छूटे हुये दोसर्पहोतेहैं २८ जैसेकि दोव्याघ्रडाढ़ोंसे परस्पर रुधिर की बर्षाकरें उसी प्रकार से बाण धाराको उत्पन्न करने वाले दोनों नरोत्तम बीर बादलोंके समान बर्षा करने वाले हुये २९ जैसेकिसी गौसे दोबैल परस्परमें घायलकरें उसी प्रकार शायकों से अंगोंको घायल करने वाले वह दोनों शत्रु बिजयी अच्छे शोभायमान हुये ३० वह रथियों में श्रेष्ठ शब्दोंको करके प्रसन्न होते परस्पर क्रीड़ा करते रथोंसे मंडलोंको भी करनेवाले हुये ३१ सिंहोंके समान पराक्रम करनेवाले नरोत्तम महा बली ऐसे गर्जे जैसे किगौ के स्पर्शकोदो महाबलीबैल गर्जनाकरतेहैं ३२ परस्परदेखने वाले क्रोध से रक्त नेत्र बड़े पराक्रमी वह दोनों इन्द्र और राजा बलि के समान युद्धकर्त्ता हुये ३३ हेराजा इसके पीछे महा बाहु भीमसेन युद्धमें भुजाओं से धनुष को चलायमान करता ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बिजली रखनेवाला बादल होताहै नेमी रूप शब्द रखने वाले भीमसेन रूपी बड़े बादल ने धनुष रूप बिजली और

बाण रूपजल धाराओंसे कर्णरूपी पर्व्वतको ढकदिया ३४।३५ हे भरतबंशी इसकेपीछे भयकारी पराक्रम करनेवाले भीमसेनने अच्छे प्रकारसे छोड़े हुये हजार बाणसे कर्णकोआच्छादित करदिया ३६ वहां पर आपके पुत्रों ने भीमसेन के पराक्रम को देख ३७ जो उसने कर्ण को सुन्दर पुंख गृध्र पक्ष युक्तबाणों से ढक दिया और अर्जुनसमेत यशस्वी केशवजीको युद्धमेंप्रसन्नकिया ३८ और दोनों चक्रके रक्षक सात्यकी को भी प्रसन्नकिया और कर्ण से युद्धकिया हे महाराज उसके विख्यात बलकेपराक्रम भुज बल और धैर्य्य को देखकर आपके पुत्र उदासचित्तहुये ३९ । ४०

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्त्रिंशत्तमोऽध्यायः १३६ ॥

एकसौसैंतीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि कर्ण नेभीमसेनकी प्रत्यंचा और तलके शब्दको सुनकर ऐसे नहीं सहा जैसे कि मतवालाहाथी अपने सन्मुख आने वाले मतवाले हाथीके शब्दको १ उसने भीमसेनके सन्मुखसे एक मुहूर्त दूरहटकर भीमसेन के हाथसे गिराये हुये आपके पुत्रों को देखा २ हेनरोत्तम उनको देखकर लंबी और उष्ण श्वासलेकर फिर भीमसेन के सन्मुख गया ३ वह क्रोधसे रक्त नेत्र कर्ण बड़े सर्पकी समान श्वास लेता और बाणों को छोड़ता ऐसा शोभाय मान हुआ जैसे कि किरणों को फैलाता हुआ सूर्य्य शोभित होताहै ४ हेभरतवंश जैसेकि सूर्य्यकी किरणों से पर्व्वत ढक जाताहै उसी प्रकारभीमसेन भी कर्णके फेंके हुये बाणोंसे ढक गया ५ कर्णके धनुष से प्रकट होनेवाले मोर पक्ष से जटित वह बाण सब ओरसे भीमसेन के शरीर में ऐसे प्रवेश कर गये जैसे कि पक्षी निवास स्थानकेलिये वृक्षमें घुसजातेहैं ६ कर्णके धनुष से गिरे हुये और जहां तहां गिरते सुनहरी पुंख वाले वह बाण भी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि पंक्ति बांधे हुये हंस होतेहैं ७ हे राजा कर्ण के बाण धनुष ध्वजा सामान छत्र और ईशा मुख और युगसे प्रकटहोनेवाले दिखाई पड़े

आकाश को पूर्ण करते कर्णने बड़े वेगमान और पक्षियोंके परोंसे जटित आकाशगामी सुवर्ण गुंफित अपूर्व बाणोंको छोड़ भीमसेनने बाणोंको त्याग करके बिजयी होकर तीक्ष्णधार वाले बाणों से उस कालके समान तीव्र प्रकृति युक्त आयेहुये कर्णको घायल किया ९।१० पराक्रमी भीमसेनने उसकर्णको असह्य तीव्रता को देखकर उनबड़े बाण समूहोंको हटाया ११ इसके पीछे भीमसेनने कर्णके बाणजालोंको तोड़कर दूसरे तीक्ष्ण धारवाले बीसबाणसे कर्णको घायल किया १२ जैसे कि वह पांडव कर्णके बाणोंसे ढक गया था उसी प्रकार पांडवने भी युद्धमें कर्णको बाणों से ढक दिया १३ हे भरतवंशी युद्धमें भीमसेन के पराक्रमको देखकर आपके शूरबीरोंने प्रशंसा करी १४ भूरिश्रवा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य, जयद्रथ, उत्तमौजा, युधामन्यु, सात्यकी, अर्जुन केशवजी १५ कौरव और पांडवोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ दश महारथी वेग से धन्य धन्य शब्द करके पुकारे और सिंहनाद किये १६ हेराजा उस कठिन और रोमहर्षण करनेवाले शब्दके उठनेपर आपका पुत्र दुर्य्योधन शीघ्रता करता हुआ बोला १७ राजा राजकुमार और मुख्य करके सगेभाइयोंसे बोला तुम्हारा भलाहो भीमसेन से कर्णको रक्षाकरतेहुये जाओ १८ भीमसेनके धनुषसे गिरेहुये बाण कर्णको बहुत शीघ्रही मारना चाहतेहैं हे बड़े धनुषधारियों सो तुम कर्णकी रक्षा करनेमें उद्योग करो १९ हे भरतबंशी फिर दुर्य्योधन की आज्ञानुसार सातसगे भाइयोंने सन्मुख जाकर भीमसेनको घेर लिया २० उन्होंने भीमसेनको पाकर बाणोंकी बर्षासे ऐसे ढकदिया जैसे कि बर्षा ऋतुमें बादल जलकी धाराओं से पर्व्वतको ढँकदेता है २१ हे राजा उनक्रोधरूप सातों महारथियोंने भीमसेनको ऐसे पीड़ामान किया जैसेकि प्रलयकाल में सातोंग्रह सोम देवता को पीड़ित करतेहैं २२ इसकेपीछे समर्थ भीमसेनने वेगसे मुष्टिका के द्वारा अच्छे अलंकृत धनुषको खैंचकर २३ और मनुष्योंको संख्या कोजानकर उनके समान सातशायकों को चढ़ाकर सूर्य्यकी किरणों

के समान बाणोंको उनकी ओरको छोड़ा २४ हे महाराज पहली शत्रुताको स्मरण करते और आपके पुत्रों के शरीरों से प्राणों को निकालते भीमसेनने उन बाणोंकोछोड़ा २५ हे भरतबंशी भीमसेन के छोड़ेहुये सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारबाण उनसातों आपके पुत्रभरत बंशियोंको मारकर आकाशकोउछले २६ अर्थात् वहसुवर्णसेअलंकृत बाणउन सातोंके हृदयोंको फाड़कर आकाशचारी गुणोंके समान शोभायमान हुये हे राजेन्द्रवह रुधिर में लिप्तनोक और पक्षवाले सुवर्ण जटित सातोंबाण आपके पुत्रों के रुधिरों को पान करके आकाशकोगये २७। २८ बाणोंसेघायल मर्मस्थलवालेवहसातोंमृतक होकर पृथ्वीऐसे गिरपड़े जैसेकि पर्व्वतके शिखरपर उत्पन्नहुये हाथी सेतोड़ेहुये बड़े वृक्ष गिरतेहैं २९ शत्रुंजय, शत्रुसह, चित्र, चित्रायुध दृढ़, चित्रसेन, विकर्ण, यह सातों मारेगये ३० पांडव भीमसेन आपके सब मृतक पुत्रों के मध्यमें से एकप्यारे बिकर्ण को अत्यन्त शोचताथा ३१ अर्थात् इस बचनको कहताथा कि हे बिकर्ण मैंने यह प्रतिज्ञाकीहै कि धृतराष्ट्रके सब पुत्र मारनेके योग्यहैं उसहेतुसे तूभी मारागया और मैंने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया ३२ हेबीर क्षत्री धर्मको स्मरण करतातू युद्ध करनेको आया इसीहेतु से युद्धमें मारागया निश्चय करके धर्मयुद्ध बड़ा कठिनहै ३३ तुम बड़े तेजस्वी होकर राजाकी और हमारी दोनों ओरकी वृद्धिकरने में प्रीतिरखने वालेथे इसप्रकार के न्यायसे तुमन्यायके ज्ञाताकाही केवल दुःखहै ३४ पृथ्वीपर बृहस्पति जीके समान अति बुद्धिमान् श्रीगंगाजीके पुत्र भीष्मजीने युद्धमें प्राणोंको त्यागकिया इसहेतुसे युद्ध बड़ा कठिन है ३५ संजय बोले कि महाबाहु पांडवनन्दनने कर्ण के देखते उनको मारकर भयकारी सिंहनाद को किया ३६ हे भरतबंशी उस शूरके उस शब्दने वहयुद्ध और अपनी बड़ी बिजय धर्मराज युधिष्ठिर को बिदितकरी ३७ धनुषधारी भीमसेन के उसबड़े शब्दको सुनकर बुद्धिमान् धर्मराजको बड़ीप्रसन्नताहुई ३८ हे राजा इसके पीछे प्रसन्न चित्त युधिष्ठिर ने भाई के सिंहनाद के

शब्दको बाजोंके बड़ेशब्दोंके साथलिया ३९ भीमसेनके इससंज्ञाकरने पर बड़ी प्रसन्नतासेयुक्त सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर युद्धमें द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ४० हेमहाराज दुर्य्योधनने आपके इकतीस पुत्रोंको गिराये और मारेहुये देखकर बिदुरजीके उस बचनको स्मरणकिया ४१ बिदुरजीका वह कल्याणकारी बचनबर्त्तमान हुआ ऐसा जान आपकेपुत्रने इसबातको शोचकर उत्तरनहीं पाया ४२ आपके निर्बुद्धी अज्ञानी और अचेत पुत्रने कर्णके साथ होकर द्यूतके समय द्रौपदीको बुलाकर सभामें जोकहा ४३ और कर्णने पांडवोंके और आपकेसमक्षमें सभाके मध्यमें द्रौपदीसे जो कठोर बचनकहे ४४ अर्थात् हेराजेन्द्र आपके और सब कौरवोंके सुनतेहुये यहबचन कहे किहेद्रौपदी पांडव नाशहुये और सनातन नरककोगये ४५ तुमदूसरे किसी पतिकोबरो उसीकायहफल अब प्राप्तहुआहै और जो नपुंसक आदि कठोरबचन क्रोधयुक्त करनेकीइच्छासे आपकेपुत्रोंने महात्मा पांडवोंकोसुनाये ४६ पांडव भीमसेनतेरहबर्षसे नियतहुये उसक्रोधकी अग्निको उगलताहै और उसअग्निमें आपके पुत्रोंका हवनकरता है ४७ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ बहुत बिलाप करतेहुये बिदुरजी ने आपके बिषयमें शान्तीको नहींपाया सो तुमपुत्रसमेत उसकेउदयहुये फलकोभोगो ४८ तुझवृद्ध पंडित और फलकी मुख्यताके देखनेवाले ने शुभचिन्तकोंके कहनेको नहींमाना और न उनकी शिक्षाको किया इसमें दैवबड़ा बलवान् है ४९ हे नरोत्तम सो तुम शोच मतकरो आपकाही इसमें महा अन्यायहै आपही अपने पुत्रोंके नाशके मूल हो यहमेरा कथनहै ५० हे राजेन्द्र बिकर्ण और पराक्रमी चित्रसेन मारेगये आपके पुत्रोंमें अत्यन्त श्रेष्ठ अन्य २ बहुतसे महारथी भी मारे गये ५१ हे महाराज भीमसेन ने नेत्रोंके सन्मुख आये हुये जिन२ आपके दूसरे पुत्रोंको देखबड़ी शीघ्रतासे उनको मारा ५२ निश्चयकरकेमैंने आपके कारणसे भीमसेन और कर्णके छोड़हुये हजारों बाणों से भस्म होनेवाली सेनाको देखा ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तचिन्शतितमोऽध्यायः १३० ॥

एकसौअड़तीसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सूत इसमें मेराही अधिकतर अन्यायहै हे संजय मैं मानताहूं कि अब वही मुझ शोच करने वालेके सन्मुख आया १ जो हुआसो हुआ यहमेरे चित्त में नियत हुआ अब इस स्थानपर अर्थात् बर्त्तमान दशामें क्या करना चाहिये हे संजय मैं उसको करूंगा २ मेरेही अन्यायसे यहबीरों का बिनाशहुआ वह मुझसे कहोमैं नियतहूं संजयबोले कि हे महाराज पराक्रमी महाबलीकर्ण और भीमसेनने बाणोंकीबर्षा ऐसीकरी जैसेकि बर्षाकरने वाले दोबादल होतेहैं ३।४ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवालेबाण जिनपरकि भीमसेनका नाम चिह्नितथा जीवनकोक्षयकर कर्णकोपाकर उस के शरीरमें प्रविष्ट हुये ५ उसीप्रकार मोरपक्षसे जटित कर्ण केछोड़ेहुये हजारों बाणोंनेबीर भीमसेनको ढकदिया ६ चारोंओरसे गिरते उनदोनोंके बाणोंने उसयुद्धमेंसेनाके उनलोगोंको व्याकुलता हुई जोकि समुद्रके समानथे ७ हे शत्रुबिजयी उसभीमसेनके धनुष से निकले और सर्पके समान भयकरी बाणोंसे आपकी सेना सब सेनाके बीचमें मारीगई ८ हे राजा मनुष्यों समेत मरकर गिरेहुये हाथी और घोड़ोंसे आच्छादित पृथ्वीऐसी दिखाईपड़ी जैसेकिबायु सेगिरेहुयेवृक्षोंसे होतीहै ९ युद्धमेंभीमसेनके धनुषकेद्वारा गिरेहुये बाणों से घायल होकरवह आपकेशूरबीरभागे और यहबोलेकिक्या आपत्तिहै उसकेपीछे सिन्धुसौबेर और वह कौरवोंकी सेनाकर्ण और भीमसेनके बड़ेवेगवान् बाणोंसे हटाईहुई पृथक्२ होगई१०।११वह शूरजिनके बहुतमनुष्य मारेगये और रथहाथी और घोड़ोंकानाशहुआ वहभीमसेन और कर्णको छोड़कर सबदिशाओंकोभागे १२ निश्चय करके देवताअर्जुनके अभीष्ट के निमित्त हमको मोहित करतेहैं जो हमारीसेनाकर्ण और भीमसेनके छोड़ेहुये बाणोंसे मारीजातीहै १३ आपके शूर बीर भयसे दुःखी और इसप्रकार बोलते बाणके पतन स्थानोंको छोड़कर देखनेके अभिलाषीहोकर युद्धमें नियतहूये १४

इसके पीछे युद्धभूमि में वह नदी उत्पन्न हुई जो कि भयकारी सूरत शूरबीरों की प्रसन्नताकरनेवाली भयभीतों के भयको बढ़ानेवाली १५ हाथी घोड़े और मनुष्योंके रुधिरों से उत्पन्न निर्जीव हाथी घोड़े और मनुष्यों से युक्त १६ अनुकर्षों समेत पताका हाथी घोड़े और रथके भूषण टूटेरथचक्र अक्षकूबर १७ और सुबर्ण से जटित धनुष सुनहरी पुंखवालेबाण हजारोंनाराच १८ औरकर्ण व भीमसेन के छोड़ेहुये कांचली से रहित सर्पाकारप्रास तोमरों के समूह फरसों समेत खड्ग १९ सुबर्णजटित गदा मूसल पट्टिश और नानारूपों के बज्र शक्ति परिघ २० और जड़ाऊ शतघ्नियों से शोभायमानथो हे भरतबंशी इसी प्रकार सुनहरी बाजूबन्द हार कुण्डल मुकुट २१ और टूटे बलय, अपबिद्ध, अंगुलबेष्टक, चूरामणि सुबर्ण सूत्रकी बेष्टनी २२ कवच हस्तत्राण हार निष्क पोशाक छत्र टूटेचंवर व्यजन २३ घायल हाथी घोड़े मनुष्य रुधिर भरे बाण और जहां तहां इन नानाप्रकारकी टूटीहुई बस्तुओंसे २४ और टूटे गिरेहुये सामानों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि ग्रहों से आकाश शोभित होताहै ध्यानसेबाहर अपूर्व बुद्धिसे परेउन दोनोंके कर्मोंको देखकर २५ सिद्ध चारणों कोभी आश्चर्य्य हुआ जैसेकि सूखेबनमें बायुके साथ रखनेवाले अग्निकी गति होतीहै हे राजा उसी प्रकार युद्धमें २६ भीमसेनको साथमें रखनेवाले कर्ण से युक्त वह मेघजालोंके समान सेना जिसके ध्वजा रथ घोड़े हाथी और मनुष्य मारे गयेथे ऐसी भयकारी रूप वालीहुई जैसेकि भिड़ेहुये दोहाथियों से कमलका बन होता है २७। २८ युद्ध में कर्ण और भीमसेन लड़ते २ बड़े नकसेल हुये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टत्रिंशत्तितमोऽध्यायः १३८ ॥

एकसौउन्तालिसकाअध्याय ॥

हे महाराज इसके पीछे कर्णने तीन बाणों से भीमसेन को घायल करकेबहुत उत्तम बाणोंकी बर्षाको छोड़ा घायलहुये पर्व्वत

के समान कर्ण केहाथसे घायल महाबाहु पाण्डव भीमसेन पीड़ा-मान नहीं हुआ १।२ हे श्रेष्ठ उसने कर्णको बिषमिले तीक्ष्ण तेल से सफाकियेहुये करणीनाम बाणोंसे कानपर अत्यन्त घायल करके३ कर्ण के सुवर्ण जटित शोभायमान बड़े कुंडलको पृथ्वी पर ऐसे गि-राया जैसे कि आकाशसे तारा गिरताहै ४ इसके पीछे हँसते और क्रोध युक्त भीमसेनने कर्णको दूसरे भल्लके द्वारा हृदयपर अत्यन्त घायल किया हे भरतबंशी फिर शीघ्रता करने वाले महाबाहु भीमसेनने युद्धमें कांचली से रहित बिषैले सर्पके समान दशना-राचोंको उसके ऊपर चलाया ५।६ उस भीमसेन से चलाये हुयेवह बाण कर्णके ललाटको छेदकर ऐसे घुसगये जैसेकि सर्प बामी में घुसताहै ७ उसके पीछे कर्ण ललाटपर नियत हुये बाणोंसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसेकि पूर्व्व समय में कमल की मालाको धारण करता हुआ देवता शोभित होताहै ८ बेगवान् पाण्डवके हाथसे अत्यन्त घायल उसकर्णने रथके कूबर का बड़ा सहारा लेकर दोनों नेत्रोंको बन्दकर लिया ९ शत्रुके तपानेवाले उस कर्णनेएक मुहुर्त्त में ही फिर सचेतता को पाया और रुधिर से लिप्त शरीर कर्णने महाक्रोधको धारणकिया १० इसके पीछे दृढ़ धनुषधारी से पीड़ा-मान क्रोध युक्तबड़े बेगवान् कर्णने युद्धमें भीमसेनके रथपर बेग किया ११ हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्र क्षमासे रहित पराक्रमीकर्ण ने गृध्र पक्षवाले सौ बाणों को उसके ऊपर फेंका १२ इसके अन-न्तरउसकेपराक्रमको ध्यान न करते पांडव भीमसेनने युद्धमें उसको तिरस्कार करके बाणोंको भयकारी बर्षाकरी १३ हे शत्रुओंके तपाने वाले महाराजधृतराष्ट्र क्रोधभरे कर्णने क्रोधसे ज्वलित भीम-सेनको नव बाणोंसे छातीपर घायल किया १४ डाढ़ रखने वाले शार्दूलके समान वह दोनों नरोत्तम युद्धमें दो बादलोंके समान पर स्पर बाणोंकी बर्षा करनेलगे १५ तलके शब्दोंसे परस्पर दोनोंने भयभीतकर नानाप्रकार के बाण जालोंसे भी भययीत किया १६ और युद्धमें क्रोध युक्त परस्पर युद्ध कर्म करनेके अभिलाषी हुये

हे भरतबंशी इसके पीछे शत्रुओंके बीरोंका मारने वाला भीमसेन कर्णके धनुष को १७ क्षुरप्रसे काटकर गर्जा महारथी कर्णने टूटे धनुषको डालकर १८ भारके दूर करनेवाले बड़े बेगवान् दूसरे धनुष को लिया भीमसेनने इसके उस धनुषको भी आधेही निमेष में काटा १६ इसी प्रकार पराक्रमी भीमसेनने कर्णके तीसरेचौथे पांचवें छठे सातवें आठवें नवें दशवें २० ग्यारहवें बारहवें तेरहवें चौदहवें पन्द्रहवें सोलहवें २१ सत्रहवें अठारहवें आदि अनेक धनुषोंको काटा २२ इतने धनुषोंके कटनेपरभी आधेही निमिषमें फिर धनुष हाथ में लिये कर्ण उपस्थितहुआ कौरव लोग सौबेर और सिन्धुके बीरोंके बड़े नाशको २३ और पड़ेहुये कवच ध्वजा और शस्त्रोंसे व्याप्त पृथ्वीको देखकर अथवा हाथी घोड़े और रथ सवारोंके शरीरोंको अनेक प्रकारसे निर्जीव देखकर २४ क्रोध के मारे कर्णका शरीर अग्निरूपहुआ उस कर्णनेबड़े धनुषको चलाय-मानकरके घोरआंखोंसे घोररूप भीमसेनको देखा इसकेपीछे क्रोध युक्त कर्ण बाणोंको छोड़ता ऐसे शोभायमानहुआ २५।२६जैसे कि शरदऋतु में मध्याह्न का सूर्य्य होताहै हे राजा सैकड़ों बाणों से चिताहुआ कर्णका शरीर ऐसा भयानक रूपहुआ जैसे कि किरण समूहोंका धारणकरनेवाला सूर्य्यका शरीर होताहै बाणोंको हाथों से लेते और चढ़ाते२७।२८खैंचते और छोड़ते कर्णका अंतर युद्धमें दिखाई नहींदिया दाहिने और बायें बाणोंको फेंकते कर्ण का धनुष अग्नि चक्रकेसमान भयकारी मंडलरूप हुआ हे महाराज कर्णके धनुषसे निकलेहुये सुनहरी पुंखवाले बाणोंने २६।३०सब दिशाओं समेत सूर्य्यकी किरणोंको ढंकदिया उसके पीछे सुनहरी पुंख और टेढ़ेपर्व्ववाले धनुष से निकले हुये बाणोंके बहुत समूह आकाशमें दिखाईपड़े कर्णके धनुषसे शायकनाम बाण प्रकटहुये३१।३२ और आकाशमें पंक्ति वाले क्रौंचपक्षियों केसमान शोभायमान हुये कर्ण ने गृध्रके पक्षोंसे जटित स्वच्छ सुवर्ण से शोभित ३३ बड़े बेगवान् प्रकाशित नोकवाले बाणोंको छोड़ा धनुषके बेगसे फैंके औरसुवर्ण

से अलंकृत वह बाण ३४ बारंबार भीमसेन के रथ पर पड़े सुवर्ण से जटित और कर्णसे चलायमान वह हजारों बाण आकाश में ऐसे शोभायमान हुये ३५ जैसेकि शलभनाम पक्षियों के समूह कर्णके धनुष से निकले हुये बाण ऐसे शोभित हुये ३६ जैसे कि अत्यन्त लंबा एक बाण आकाशमें नियत होताहै और जिस प्रकार बादल जलोंकी धाराओंसे पर्व्वतको ढक देता है ३७ उसी प्रकार क्रोध युक्त कर्णने बाणोंकी बर्षाओंसे भीमसेनको ढकदिया हेभरत-बंशी वहां पर भीमसेन केवल पराक्रम और निश्चयको आपके पुत्रों ने और सब सेनाके लोगोंने देखा कि उठेहुये समुद्र के समान बड़ी भारी उस बाण वृष्टिको कुछ ध्यान न करके क्रोध युक्त भीमसेन कर्णके सन्मुख गया ३८।३९ हे राजा भीमसेन का सुवर्ण पृष्ठी बड़ा धनुष कानसे लेकर मंडलरूप दूसरे इन्द्र धनुष के समानथा ४० उस धनुष से आकाश को पूर्ण करते हुये बाण प्रकटहुये ४१ सुन-हरी पुंख टेढ़े पर्व्व वाले बाणों से आकाशमें भीमसेन की रचीहुई स्वर्णमयीमाला शोभायमानहुई ४२।४३ युद्धमें उनदोनों कर्ण और भीमसेनके बाण जालोंसे जोंकि अग्निके पतंगोंके समान स्पर्श वाले थे४४ और जिनकी परस्पर गतियां भी मिली हुई थीं बाण जालोंसे आकाशको व्याप्तहोने पर कुछभी नहीं जानागया वह कर्णपृथक् २ प्रकार के बाणोंसे भीमसेनको ढकता हुआ४५।४६ उस महात्माके पराक्रमको तिरस्कार करके पास गया हे श्रेष्ठ वहां उनदोनों के छोड़े हुयेबाणोंके जाल ४७ परस्पर में मिले हुये बायुरूप दिखाई पड़े और उन बाणोंके परस्पर भिड़ने से ४८ आकाशमें अग्नि उत्पन्न हुई हे भरत बंशियों में श्रेष्ठ उसी प्रकार क्रोध युक्त कर्णने कारी गरके साफ कियेहुये तीक्ष्ण ४९ सुवर्ण जटित बाणोंको उस के मारनेके निमित्त चलाया भीमसेनने उनप्रत्येक बाणोंको विशिख नाम बाणोंसे खंड २ करदिया ५० कर्णके मारने के अभिलाषी भीमसेन बोले कि हे कर्ण खड़ाहो ऐसा कहकर उसभीमसेनने फिर भयकारी बाणोंकी बर्षाकी ५१ जोकि असहिष्णुबली क्रोधसे युक्त

होकर भस्म करने वाली अग्निके समानथा इसके पीछे उन दोनों गदाके प्रहारों से चट चटा नाम शब्द हुये ५२ औरबहुत बड़े बलके शब्द व भयकारी सिंहनाद और रथकी नेमियोंकी ध्वनियों से बड़ा भयकारी शब्द उत्पन्न हुआ ५३ हे राजा परस्पर मारने के अभिलाषी कर्ण और भीमसेन के पराक्रम के देखने के इच्छावान् शूर बीर लोगोंने युद्ध करना बन्दकरदिया ५४ देवता ऋषि सिद्ध और गन्धर्वोंने बड़ी प्रशंसाकरीकि धन्यधन्यहै उसीप्रकार बिद्या धरोंके समूहोंने पुष्पों की बर्षाकरी ५५ इसके पीछे क्रोध युक्तदृढ़ पराक्रमी महाबाहु भीमसेनने अस्त्रोंसे अस्त्रोंको रोककर बाणोंसे कर्णको घायल किया ५६ महाबली कर्णने भी युद्धमें भीमसेन के बाणों को हटाकर सर्पकेसमान नौनाराचोंको चलाया ५७ फिर भीमसेन ने उतनेही बाणोंसे कर्णके नाराचोंको आकाशमें काटा और तिष्ठ तिष्ठ बचनको कहा ५८ फिर महाबाहु भीमसेनने क्रोधरूप होकर काल और यमराजके समान दूसरे दण्डके समान बाणको कर्णके ऊपर छोड़ा ५९ हे राजा तब हंसतेहुये प्रतापवान् कर्ण ने पांडव के उस आतेहुये बाणको तीन बाणों से काटा ६० फिर भीमसेनने भयकारीबाणोंकी बर्षाकरी तब निर्भयकेसमान कर्णने उसके उनसब अस्त्रोंको सहकर ६१ बड़े क्रोधसे अस्त्रोंकी मायासे उस लड़नेवाले भीमसेन के दोनों तरकस धनुष व प्रत्यंचाको गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से काटकर ६२ घोड़ोंकी रस्सी औरईशादण्ड आदिको युद्धमें काटा फिर उसकेघोड़ोंको मारकरसारथीकोपांचबाणोंसे घायल कियाद्द ३ वह सारथी शीघ्रही दूरजाकर युधामन्युके रथ पर गया फिरक्रोध युक्त कालाग्निके समान तेजस्वी हंसतेहुये कर्णने भीमसेनकी ६४ ध्वजाको काटकर पताकाकोभी गिराया उसधनुषसे रहित महाबाहु भीमसेनने रथ शक्तिको धारण किया ६५ उस शक्तिको घुमाकर क्रोध युक्त भीमसेनने कर्णके रथपर फेंका उपाय करनेवाले कर्णने उस सुबर्ण जटित ६६ बड़ी उल्काके समान आतीहुई शक्तिको दश बाणोंसे काटा कर्णके तीक्ष्ण बाणों से दशस्थान पर कटी हुई वह

शक्ति गिर पड़ी ६७ उस भीमसेनने मित्रके अर्थ अपूर्व युद्ध करने वाले कर्णसे बाण प्रहार करतेही करते सुवर्ण जटित ढालको हाथमें लिया और छेद्रान्वेषण करनेवाले ने मृत्यु व बिजयकेखड्गको भी हाथमें लिया तब कर्णने बड़ेवेगसे उसकी उस स्वर्णमयी प्रकाशित ढालको बहुतसे भयकारी बाणोंसे तोड़ा हे महाराज कवच रथसे रहित क्रोधसे मूर्च्छामान७० शीघ्रताकरनेवाले भीमसेनने खड्गको घुमाकर कर्णकेरथपर छोड़ा वह बड़ा खड्गकर्णके सन्नद्ध धनुषको काटकर७१पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि आकाशसे क्रोधयुक्त सर्प गिरताहै इसके पीछे क्रोधयुक्त अतिरथी कर्णने हंसकर युद्ध में शत्रुओंके मारनेवाले दृढ़प्रत्यंचावाले दूसरे धनुषकोलेकर भीमसेनके मारनेकीइच्छासे बाणोंको छोड़ा ७२।७३ हेमहाराज सुनहरी पुंख और सुन्दरवेतवाले हजारों बाणोंको मारा कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणोंसे घायल पराक्रमी ७४ कर्णके मन को पीड़ित करताहुआ भीमसेनआकाशको उछला उस युद्धमें बिजयाभिलाषी भीमसेन के कर्मकोदेखकर ७५ उसकर्णनेशरीरको सिकोड़कर भीमसेनको ठगा उस इन्द्रियों से पीड़ित रथके बैठनेके स्थानमें छिपे और सिकुड़े हुये कर्णकोबैठाहुआ देखकर ७६ भीमसेन उसकीध्वजापर चढ़कर फिर पृथ्वीपर नियतहुआ सब कौरवोंने और चारणलोगोंने उसके उसकर्मकी बड़ी प्रशंसाकी ७७ उसने रथसे कर्णको ऐसे हरनाचाहा जैसे कि गरुड़ सर्पको हरण करताहै वह टूटा धनुष और रथसे बिहीन भीमसेन अपने धर्मको पालन करताहुआ अपने रथको पीछेकीओर को करकेयुद्धके निमित्त नियतहुआ७८इसकेपीछेकर्ण उसकेउसबिचार को निष्फल करके क्रोधसे युद्धभूमिमें युद्धके निमित्त आगेबर्त्तमान भीमसेनके सन्मुख हुआ हेमहाराज वहदोनों ईर्षा करनेवाले महाबलीपरस्परमें भिड़े ७९। ८० बर्षा ऋतुके बादलों के समान दोनों नरोत्तम गर्जने वालेहुये उन क्रोधयुक्त और असह्य दोनों के प्रहार युद्धमें देवता और दानवों के प्रहारोंके समानहुये फिर टूटे शस्त्रवाला भीमसेन कर्णकेसाथ सन्मुखतामें प्रवृत्त होकर अर्जुनके

हाथसे मरकरपर्व्वताकार पड़े हुये हाथियोंको देखकर रथकेमार्गके बिघातन के अर्थ बिनाही शस्त्र के प्रवेश करगया ८३ हाथियों के समूहोंको पाकर और रथोंके दुर्गम मार्गों में प्रवेशकर के जीवनकी इच्छासे भीमसेननेकर्णको नहींपकड़ा शत्रुकेपुरको विजयकरनेवाला पांडव भीमसेन अर्जुनके बाणोंसे घायल रक्षास्थान को चाहते हुये हाथोको उठाकर ऐसे नियतकिया ८५ जैसेकि हनुमानजी महौषधियोंसे युक्त द्रोणागिरिपर्व्वतकोउठाकर शोभित हुयेथे फिरकर्ण ने उसके उस हाथीकोखण्ड २ किया ८६ तब पांडुनन्दनने हाथी और घोड़ोंको पकड़२करकर्णके ऊपरफेंका और क्रोधसे युक्तहोकर रथके चक्रघोड़े आदिजिस२ सामानको पृथ्वीपर देखा ८७ उस उसको कर्णके ऊपरफेंका कर्णने उसके उन सब फेंकेहुये सामानोंको अपने बाणोंसेकाटा८८ फिर अर्जुनको स्मरणकरतेहुयेभीमसेननेबड़ीभयकारीबज्र रूप मुष्ठिकाको उठाकर कर्णको मारनाचाहा ८९ परन्तु अर्जुनकी प्रतिज्ञाकी रक्षा करतेहुये समर्थ पांडुनन्दन भीमसेननेभी कर्णको नहीं मारा ९० कर्णने उस प्रकार व्याकुलहुये भीमसेनको तीक्ष्ण बाणोंके बारंबार प्रहारोंसे मूर्च्छायुक्त किया ९१ कुन्तीके बचनको यादकरते हुये कर्णने इस अस्त्रको नहींमारा फिर कर्णने समीप जाकर उसको धनुषकी नोकसे घायलकिया ९२ धनुषके प्रहारसे क्रोधयुक्त उस भीमसेनने उसके धनुषको तोड़कर कर्णको मस्तक पर घायल किया ९३ भीमसेनके हाथसे घायल और क्रोध सेरक्तनेत्र हंसताहुआ कर्ण इस बचन को बोला ९४ हे बारंबार बहुत भोजन करनेवाले निर्बुद्धी दीर्घ उदरवाले अस्त्रके न जानने वाले युद्धमें नपुंसक बाल युद्ध मतकर ९५ हेदुर्बुद्धी पांडव भीमसेन जिस स्थानपर अनेक प्रकार के भक्ष्य भोज्य और पान करने की अनेक बस्तुहैं वहांकेही तुमयोग्यहो युद्धके योग्यतुम किसीप्रकारसे नहींहो ९६ हेभीमसेन तुम बनकेमध्यमें व्रत और नियमोंमें मूलफल फूलके आहारके योग्यहो तुम युद्धमें कुशल नहींहो ९७ कहांयुद्ध और कहां मुनिभाव हेभीमसेन तुमबनको जाओ हेतात तुमबन-

बासमेंही प्रीति रखने वाले होकर अब युद्धके योग्य नहीं हो ९८ हेभीमसेन तुम शीघ्रताकरनेवाले होकर घरमें भोजनके अर्थ रसोंइया नौकर ९९ और दासोंको क्रोधसे अत्यंत शासना करने के योग्य हो हेदुर्व्वुद्धो भीमसेन तुम मुनिहोकर फलोंको प्राप्त करो हेकुन्तीके पुत्र बनको जाओ तुम युद्धमें सावधान नहींहो १०० हे भीमसेन तुम फल मूलादि केखाने और अतिथिके पूजनमें समर्थहो मैंतुमको शस्त्र बिद्यामें योग्यनहीं समझताहूं १०१हेराजा बाल्यावस्थाकेजो अप्रिय वृत्तान्तथे उन सबकोभी रूखे२ बचनोंसेखूब सुनाया१०२ फिरवहां सिकुड़कर बैठेहुये उसको धनुषसे स्पर्शकिया तबहंसतेहुये कर्णने भीमसेनसे यहबचन कहा१०३ हेश्रेष्ठ दूसरे स्थानमें लड़ना चाहिये मुझसरीके शूरबीर से न लड़नाचाहिये मुझसे लड़ने वाले शूरबीरोंकी यह दशा और अन्य अनेक प्रकारकी दशाहोजाती हैं १०४अथवा तुमभीवहीं जाओ जहां वह दोनोंकृष्णहैं वह तेरीयुद्धमें रक्षा करेंगे हेकुन्तीके पुत्र अथवा घरकोजाओ हेबालक तुझको युद्धकरनेसे क्या प्रयोजनहै १०५ भीमसेन कर्णकेअति कठोरबचन कोसुनकर सबको सुनाकर हंसताहुआ कर्णसेयहबचनबोला१०६ हेदुष्ट तुझको बारंबार मैंनेविजयकिया तूनिरर्थक अपनी क्योंबड़ाई करताहै पूर्व्वके वृद्धोंने महाइन्द्रकी विजय और पराजय दोनोंको देखाहै १०७ हेदुष्ट कुलमें उत्पन्न होनेवाले जो तू बड़ाईकरताहै तो मुझसे मल्लयुद्धकर जैसे कि महाबली और महाभोगी कीचक मारागया १०८ उसीप्रकार सबराजाओंके देखतेहुये मैं तुझको मारूंगा बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ कर्ण भीमसेनके बिचारको जानकर १०९ सब धनुषधारियोंके देखतेहुये उस युद्धसे अलगहोगया हेराजा इस प्रकार कर्णने उसको बिरथ करके महात्मा अर्जुन और श्रीकृष्ण जीके समक्ष में ऐसे कठोर बचनकहे हेराजा इसकेपीछे केशवजी की प्रेरणासे बानरध्वज अर्जुनने साफबाणोंको कर्णके निमित्त भेजा ११०फिर अर्जुनकी भुजासे छूटे सुबर्णसे जटित गांडीव धनुषसेप्रकटहुये बाण१११कर्णकेशरीरमें ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि हंसक्रौंच

पर प्रवेश करतेहैं ११२ उस अर्जुनने सर्पोंके समानघुसे और गांडीव धनुषके भेजेहुये बाणोंके द्वारा ११३ कर्णको भीमसेनसे दूरहटादिया भीमसेनके हाथसे टूटा धनुष और अर्जुनके बाणसे घायल वह कर्ण बड़े रथके द्वारा शीघ्रही भीमसेनके पाससे हटगया नरोत्तम भीमसेनभी सात्यकीके रथपर सवार होकर ११४। ११५ युद्धमें अपने भाई पांडव अर्जुनके पीछे गया उसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले क्रोध सेरक्तनेत्र नाशकारी कालकेसमान अर्जुनने कर्णको लक्ष्यबनाकर नाराच नामबाणकोभेजा गांडीवधनुषसे चलायमान और आकाशमें सर्पको चाहनेवाले गरुड़जीके समान ११६।११७ वह नाराच कर्ण केसन्मुख गिरा अश्वत्थामाने उस बाणको अपने बाणसे अन्तरिक्ष में ही काटा ११८ अर्जुनके भयसे कर्णकी रक्षाके अर्थमहारथीनेऐसा किया इसकेपीछे क्रोधयुक्त अर्जुनने अश्वत्थामाको चौंसठ बाणोंसे घायल किया ११९ और फिर शिलीमुखनाम बाणोंसे भी घायल कियाऔर तिष्ठ तिष्ठ कहकर गमनंमाकुरु अर्थात् मतजाओ यह भी कहा वहअश्वत्थामा अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान शीघ्रही मतवाले हाथियों से पूर्ण और रथोंसे संकुलित १२० सेनामें चलागया उसकेपीछे पराक्रमी अर्जुनने गांडीव धनुष के शब्दसे युद्ध में शब्द करनेवाले सुवर्ण पृष्ठी धनुषोंके शब्दोंको १२१ निरादरकिया और अर्जुन पीछेकी ओरसे उसप्रकार से जातेहुये अश्वत्थामाके सन्मुख गये १२२ जो कि बहुतलंबा मार्ग नहींथा सेनाको भयभीतकरते हुये अर्जुनने नाराचोंसे मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों को चीर कर १२३ कंक और मोरपक्षसे जटित बाणोंसे सेनाको छिन्नभिन्न किया फिर उपाय करनेवाले इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने उस घोड़े हाथी और मनुष्यों वाली सेनाको मारा १२४।१२५॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिभीमकर्णयुद्धेशतोपरिएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः १३९॥

एकसौ चालीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय दिन दिन मेरा प्रकाशमान यश क्षीण

होताजाता है मेरे बहुत से शूरबीर मारेगये इसमें मैं समय की बिपरीततामानताहूं १ अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुन मेरीसेनामें पहुंचा जो अश्वत्थामा कर्णसे रक्षित होकर देवताओंसेभी अजेय है २ जब से वह बड़ा पराक्रमी उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण भीमसेन और शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी समेत सेनामें पहुंचाहै ३ तब से मुझको शोक ऐसे भस्मकररहा है जैसे मकानको अग्नि भस्म करताहै और जयद्रथके साथ राजाओंको ग्रसित देखताहूं ४ सिन्ध का राजा उस अर्जुन का बड़ा असह्य अपराध करके नेत्रोंके सन्मुखबर्त्तमान कैसे जीवन को पासक्ताहै ५ हे संजय अनुमान से देखताहूं किजय द्रथ नहीं है वह युद्ध जैसे जारीहुआ उसको मूल समेत बर्णनकर६ जो क्रोध युक्त अकेलाही बड़ी सेनाको छिन्न भिन्न करके और बार बार मझाकर ऐसे प्रवेशित हुआ जैसे कि कमलके बनमें हाथी प्रवेश करताहै ७ उसवृष्णियों में बीर सात्यकी कावह युद्ध मुझसे ठीक २ कहो जो उसने अर्जुनके निमित्त कियाहै हे संजय तुमसावधान हो ८ संजय बोले हे राजा इसप्रकार कर्णसे पीड़ामान पुरुषों में बड़े बीर शीघ्रतासे जातेहुये उस भीमसेनको देखकर शिनियों में बड़ा बीर सात्यकी नर बीरोंके मध्यमें रथकी सवारी से चला ९ बर्षा ऋतुके बादलके समान गर्जता और बादलों के हटजाने पर सूर्य्यके समान प्रकाशित दृढ़ धनुष से शत्रुओंको मारता और आपके पुत्रकी सेनाको कंपाताहुआ चला १० हे भरतबंशी आपके सब रथी उस मधुदेशियोंमें श्रेष्ठ युद्ध भूमिमें गर्जते और चांदीके बर्ण घोड़ोंकीसवारीसे जाते सात्यकीके रोकनेको समर्थ नहींहुये ११ तब क्रोध से पूर्ण सन्मुख लड़ने वाले धनुषधारी सुबर्ण कवचधारी राजाओंमें श्रेष्ठअलंबुषने समीप जाकरसात्यकी कोरोका १२ हेभरतवंशीउनदोनोंकायुद्ध ऐसाहुआ जैसा कि कोईनहीं हुआथा आपके शूरबीर आदि सब लोगोंने उन युद्धमें शोभापाने वालेदोनों बीरों को देखा १३ राजाओं में श्रेष्ठअलंबुषने इसको निरादरकरके दश बाणों से घायल किया सात्यकी ने भी बाणों से उन प्रषत्क नाम

बाणोंकोबीचहीमें काटा१४फिर उसने अग्निके समान कानतकखेंचे हुयेतीक्ष्णधार सुन्दर पुंखवाले तीनबाणोंसे कवचको काटकर छेदा वह बाण सात्यकी के शरीरमें प्रवेश करगये १५ अग्नि और बायु के समान प्रभाव वाले तीक्ष्णधार अग्नि रूप उन बाणों से उसके शरीर को अनादर पूर्व्वक घायल करके चार बाणों से उन रजत वर्ण चारों घोड़ोंको घायल किया १६ चक्रधारी श्री कृष्णजी के समान प्रभाव वाले बेगवान उस घायल हुये सात्यकीने बड़े बेगवान चारबाणों से अलंबुषके चारों घोड़ोंको मारा१७ फिर कालाग्निके समान भल्लसे उसकेसारथी के शिरको काटकर कुंडलधारी पूर्ण चन्द्रमाके समान प्रकाशमान और शोभायमान उसके मुखको भी शरीर से काटा १८ हे राजा यादवों में श्रेष्ठ शत्रुहन्ता अकेला सात्यकी युद्धमें उससूर्य्य बंशीको मार आपकी सेनाको हटाकर फिर अर्जुनके पीछे चला १९ अर्जुनके पीछेचलने वाले शत्रुओंके मध्य में घूमनेवालेने जिस प्रकार बायु बादलके समूहोंको नाश करे उसी प्रकार बाणों से कौरवी सेनाको मारते वृष्णी सात्यकी को देखकर २० श्रेष्ठ लोगोंसे शिक्षा पाया हुआ गौके दूध कुन्द फूल और बरफके समान श्वेत बर्ण वाले सुनहरीजालोंसे अलंकृत सिन्धुदेशी उत्तम घोड़े जहां जहां वह चाहताथा वहां वहां उसको लेजातेथे २१ हे भरतबंशी इसके पीछे वह आपके पुत्रादि सबशूरबीर शीघ्रही आपके पुत्र उस अजमीढ़ वंशी दुश्शासनको जो कि शूरबीरोंमें मुख्यथा आगे करके एक साथही सन्मुख गये २२ सेना समेत उन बीरोंने सात्यकीको युद्धमें सबओरसे घेरकर घायलकिया हे बीर उस यादवों में श्रेष्ठ सात्यकीने भी उन सबको बाणोंके जालोंसे रोका २३ हे अजमीढ़ बंशी शत्रुहन्ता सात्यकीने धनुषको उठाकर शीघ्रही अग्निके समान बाणों से उनको रोक कर दुश्शासनकेघोड़ोंको मारा २४ इसके पीछे अर्जुनने पुरुषोंमें बड़े बीर श्रीकृष्णजीको देखकर युद्धमें बड़ी प्रसन्नताको पाया २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४० ॥

एकसौइकतालीसका अध्याय॥

संजयबोले कि शीघ्रता योग्य कर्मोंमें शीघ्रता करनेवाले दुश्शासनके रथके पास बर्त्तमान१ सेनारूपी समुद्रमें प्रवेशित महाबाहु सात्यकी को उन त्रिगर्त्तदेशियोंके धनुषधारियोंने जिन की ध्वजा सुबर्ण जटितथीं चारोंओरसे घेरलिया २ उसके पीछे उन क्रोध रूप बड़े धनुषधारियोंने रथोंके समूहोंसे उसको सब ओरसे घेर कर बाणोंसे आच्छादित करदिया ३ फिर सत्य पराक्रमी अकेले सात्यकीने बड़े युद्धमें तत्वके शब्दोंसेव्याकुल खड्ग गदा शक्तियों से पूर्ण बिनानौकावाली नदीकेसमान भरतबंशियोंकी सेनाको पाकर उन शोभासे युक्तपचास राजकुमारशत्रुओंको बिजयकिया ४।५ उस युद्धमेंहमने सात्यकीके अपूर्व्वकर्मकोदेखा कि उसको पश्चिमदिशामें देखकर शीघ्रतासेही पूर्व्वमें देखा ६ वह शूर उत्तर दक्षिण पूर्व्व पश्चिम आदि बिदिशाओंमें नाचताहुआ ऐसाघूमा जैसे कि रथोंका एकसैंकड़ाघूमताहै उसकेउसकर्मकोदेखकरसिंहकेसमानचालचलने वाले पीड़ामान त्रिगर्त्तदेशी अपने लोगोंमें लौटगये ८ बाणोंके समूहोंसे घायल करते शूरसेन देशियोंके दूसरे शूरोंने युद्धमें उसको ऐसे रोका जैसे कि अंकुशसे मतवाले हाथीको ९ उत्तम बुद्धि सात्यकीने एक मुहूर्त्त उनकेसाथ युद्धकिया फिर बहु बुद्धि से बाहर बल पराक्रम रखनेवाला सात्यकी कलिङ्गदेशियों से युद्ध करने लगा १० कलिङ्गदेशियोंकी सेनाको उल्लंघन करके महाबाहु सात्यकी पांडव अर्जुनके पास पहुंचा ११ और उनको पाकर इतना प्रसन्नहुआ जैसे कि जल का थकाहुआ स्थलको पाकर प्रसन्नहोताहै सात्यकी उस पुरुषोत्तमको देखकर बिश्वासितहुआ १२ केशव जीने उस आतेहुये सात्यकीको देखकर अर्जुनसे कहा हेअर्जुन तेरे पीछे चलनेवाला यह सात्यकीआताहै यहसत्यपराक्रमी तेराशिष्य और मित्रहै उस पुरुषोत्तमने सब शूरवीरोंको निरादरकरके बिजय किया१४ हेअर्जुन प्राणोंसेभीतेराप्यारा और परममित्रयहसात्यकी

कौरवी शूरबीरोंके घोर उपद्रवोंको करके आताहै १५ हेअर्जुन यह सात्यकी विशिखनाम बाणोंसे द्रोणाचार्य्य और भोजवंशी कृतवर्मा इनदोनोंको बिजयकरकेआताहै १६ हेतात यह धर्मराजके प्रियका खोजनेवाला अस्त्रज्ञ शूरसात्यकी उत्तम २ शूरोंको मारकर तेरेपास आताहै १७ हे अर्जुन यह बड़ा पराक्रमी सात्यकी युद्धमें कठिनतर कर्मोंको करके तेरेदर्शनकी अभिलाषाको करता पासआता है १८ हेअर्जुन यह सात्यकी युद्धभूमिमें एकरथकेद्वारा आचार्य्यादिक अनेक महारथियोंसे युद्धकरके आताहै १९ हेअर्जुन धर्मराजका भेजा हुआ यह सात्यकी अपने भुजबलके भरोसेसेसेनाको चीरकरपास आता है २० हेअर्जुन कौरवों में जिसके समान कोई शूरबीर नहीं है वह युद्धमें दुर्मद सात्यकी आताहै २१ जैसे कि सिंह गौओंके मध्यमें से अलग होता है उसीप्रकार कौरवी सेनाओं से पृथक् होकर यह सात्यकी बहुत सेनाओंको मारकर पास आताहै २२ हेअर्जुन यह सात्यकी कमल समानमुखवाले हजारों राजाओंके शिरोंसे पृथ्वीको आच्छादितकरके शीघ्रतासेआताहै २३ यहसात्यकी युद्धमें सब भाइयों समेत दुर्य्योधनको बिजय करके और जलसिन्धुको मार करके शीघ्र आताहै २४ यह सात्यकी रुधिर समूह से युक्त रुधिररूपी कीच रखने वाली नदीको जारी करके और कौरवोंको तृणके समान छोड़ करके आताहै २५ यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न चित्त अर्जुन केशवजीसे यहबचनबोले कि हे महाबाहु मुझको स्वीकार नहींहै जो सात्यकी मेरेपास आताहै २६ हेकेशवजी मैं धर्मराज के वृत्तान्त को नहीं जानताहूं सात्यकी से पृथक् होकर वह जीवताहै या नहीं २७ हेमहाबाहु श्रीकृष्णजी वहराजा युधिष्ठिर इस सात्यकी सेही रक्षाके योग्यथा यह उसको छोड़कर किस हेतुसे मेरेपीछे चलनेवाला हुआ २८ राजा युधिष्ठिरको इसने द्रोणाचार्य्यकेलिये छोड़ा और राजासिन्धु नहीं मारागया और यह भूरिश्रवा युद्धमें सात्यकीके सन्मुख आताहै २९ यहबड़ाभारी भार जयद्रथके निमित्त नियत हुआ मुझसे राजा युधिष्ठिर जाननेकेयोग्य

और सात्यकी रक्षाकरनेके योग्य है ३० जयद्रथ मारने के योग्यहै और सूर्य्य अस्ताचल की ओरको जाते हैं अब महाबाहु सात्यको निर्बल और थकाहुआ है ३१ और उसका घोड़ों समेत सारथी भी थकगयाहै हेमाधव केशवजी भूरिश्रवा थकाभी नहींहै औरसहायता रखने वालाहै ३२ अब इस युद्धमेंभी इसकी कुशल होय सत्य पराक्रमी सात्यकी सेनारूपी समुद्रको तरकर ३३ गायके खुरके समानजलरूप स्थानको पाकर नाशको न पावे बड़ातेजस्वी सात्यकी भी कौरवोंमें श्रेष्ठ अस्त्रज्ञ महात्मा ३४ भूरिश्रवा के साथ भिड़कर कुशल पूर्व्वकरहै हे केशवजी मैं धर्मराज के इस बिपर्य्यय को मानताहूं ३५ जो आचार्य्यसे भयको त्यागकरके सात्यकीको भेजा जैसे कि आकाशगामी सचान मांसकोचाहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य धर्मराजकेपकड़नेकोचाहतेहैं ३६ वहसदैव चाहतेहैं तो राजायुधिष्ठिरकी कैसे कुशलरहै ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४१॥

एकसौबयालीसका अध्याय॥

संजयबोले कि हे राजा भूरिश्रवा उस युद्ध में दुर्मद आते हुये यादव सात्यकी को देखकर क्रोधसे एकाएकी सन्मुख गया १ हे महाराज सन्मुख होकर वह कौरव सात्यकी से बोला कि अब तू प्रारब्ध से मेरे नेत्रोंके सन्मुख बर्त्तमान हुआहै २ मैं बहुत कालसे चाहेहुये अभिलाषको अब युद्धमें पाऊंगा जो तू युद्धको न त्यागेगा तो मुझ से जीवता बचकर न जायगा ३ हे यादव अब मैं तुझ सदैव शूरताके अभिमान रखनेवाले को युद्धमें मारकर कौरवराज दुर्य्योधनको प्रसन्न करूंगाबीर अर्जुन और केशवजी दोनों एक साथही अब तुझको युद्धमें मेरेबाण से मराहुआ पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखेंगे ४।५ अबधर्मपुत्र युधिष्ठिरभी मेरेहाथसे तुझकोमराहुआ सुनकर शीघ्रही लज्जा युक्त होगा जिसने कि तुझको इससेनामें भेजा है अब तुझको रुधिरमें भरे पृथ्वीपर गिरेहुये मृतक होकर सोने

पर पांडव अर्जुन मेरे पराक्रमको जानेगा६।७यह तेरे साथ में युद्ध का करना मैं बहुत कालसे ऐसे चाहता हुआहूं जैसे कि पूर्वसमय में देवासुरों के युद्धमें इन्द्रका भिड़ना राजाबलि से चाहा हुआथा हे यादव अब बड़ा भारीयुद्ध तुझसे करूंगा उस्से तू मेरे बल पराक्रम और बीरताको जानेगा८।९अब तू युद्धमें मेरे हाथसे माराहुआ यमलोकको ऐसेजायगा जैसे कि रामचन्द्रजीके छोटेभाईलक्ष्मणजी के हाथसे रावणकापुत्रमेघनाद यमलोकको भेजा गयाथा १०।११ हेमाधव अब तीक्ष्ण शायकोंसे तुझको दंडदेकर उनस्त्रियोंको प्रसन्न करूंगा जिनको कि युद्धमें तैंने बिधवा करके माराहै १२ हे माधव मेरे नेत्रोंके सन्मुख आयाहुआ तू ऐसे नहीं छुट सक्ता जैसेकि सिंह के देशमें बर्त्तमान छोटा मृग नहीं जासक्ता हैराजा फिर सात्यकी नेभी हंसकर उसको उत्तर दिया कि हे कौरव युद्ध में मुझको भय नहीं बर्त्तमान है १३।१४ केवलतेरी बातोंसे मैं भयके योग्य नहींहूं युद्ध में वही मुझको मार सक्ताहै जो मुझको अशस्त्र करे १५ जो मुझको युद्धमें मारै वह सदैव सबको बिजयकरै निरर्थक बहुतसी बातोंसे क्या लाभहै अपना कर्मकरके दिखलाओ १६ शरद ऋतु के बादलोंके समान तेरा गर्जना वृथाहै हेबीर तेरी गर्जनाको सुनकर मुझको हंसी आतीहै १७ हे कौरव अब लोक में बहुत काल से चाहा हुआ युद्ध होय हे तात तेरेयुद्ध को चाहनेवाली मेरीबुद्धि शीघ्रता कररहीहै १८ हे नीच पुरुष अब मैं तुझको बिनामारे नहीं लौटूंगा इसप्रकार बाक्य पारुष्योंसे परस्पर घायलकरनेवाले वह दोनों नरोत्तम १९ मारनेके अभिलाषी और अत्यन्त क्रोध रूप होकर युद्धमें सन्मुख हुये वह बड़े धनुषधारी पराक्रमी ईर्षा करने वाले युद्धमें ऐसे भिड़े जैसे कि मतवाले दोहाथी हथिनीके लिये बनमें भिड़ जाते हैं शत्रुहन्ता भूरिश्रवा और सात्यकीने बादलों के समान भयकारी बाणों की बर्षाओं को परस्पर बर्षाया फिर भूरिश्रवाने शीघ्र चलने वाले बाणोंसे सात्यकीको ढकर २०।२१।२२ मारनेकेअभिलाषीने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे घायलकिया हेभरत-

बंशीइसकेपीछेभी भूरिश्रवाने दशबाणोंसे सात्यकीको छेदनकर २३ मारने की इच्छासे दूसरे तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ा हे राजा सात्यकीने उसके उन तीक्ष्ण बाणोंको अन्तरिक्षमें २४ अस्त्रोंको मायासेकाटा और हे प्रभु फिर वह दोनों पृथक् २ होकर बाणोंकी बर्षा से बर्षा करनेवाले हुये २५ बड़ेकुलवान् कौरव और वृष्णियोंके यशको उत्पन्न करने वाले वह दोनों बीर ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि नखोंसे शार्दूल और दांतोंसे दो मतवाले हाथी लड़तेहैं २६ अंगोंसे घायल रुधिर छोड़नेवाले उन दोनोंने रथ शक्ति और बिशिखनाम बाणोंसे परस्पर घायलकिया २७ प्राणोंकेद्यूत खेलनेवाले उनदोनोंने परस्पर रोका इस प्रकार उत्तमकर्मी कौरव और वृष्णियोंके यश बढ़ानेवाले वहदोनों २८ परस्पर मेंऐसे युद्धकरनेवाले हुये जैसे कि सम्हेांके अधिपति दो हाथी युद्ध करतेहैं थोड़ेही समयमें ब्रह्मलोक को उत्तम माननेवाले २९ उत्तम स्थानों में जानेके अभिलाषी वह दोनों परस्परगर्जे सात्यकी और भूरिश्रवा प्रसन्न मनके समान धृतराष्ट्रकेपुत्रोंके देखतेहुये परस्पर बाणोंकी बर्षाकरनेलगे लोगोंने उन शूरबीरों के अधिपतियों को लड़तेहुये ऐसे देखा ३०।३१ जैसे कि हथिनीकेलिये यूथोंकेस्वामी दो हाथी लड़तेहैं परस्पर घोड़ोंको मार धनुषोंको तोड़ ३२ विरथ होकर बड़े युद्धमें खड्ग चलानेकेलिये सन्मुखहुये उत्तम जटित सुन्दर २ बड़ी२ ढालोंको लेकर ३३ खड्गों को मियानसे बाहर करके दोनों युद्धमें भ्रमण करनेवाले हुये नाना प्रकार के मार्गोंको घूमते अपने२ भागके मंडलोंको करते ३४ उन क्रोधयुक्त शत्रुहन्ताओंने परस्पर बारम्बार प्रहारकिये खड्गकवच निष्क और बाजूबन्द रखनेवाले ३५ दोनोंयशस्वियोंने घुमानाऊंचे घुमाना तिरछे मारना छेदना रुधिरसे लिप्तकरना रुधिर में डुबोना हटाना गिराना आदि अनेक चमत्कारी खड्गोंके प्रहारों को दिखलाया ३६ और दोनों खड्गोंसे परस्पर प्रहार कर्त्ताहुये और अन्तर चाहनेवाले दोनोंबीरोंने अपूर्व भ्रमण किये ३७ शिक्षा तीव्रता और उत्तमताको दिखलाते युद्ध करनेवालोंमें श्रेष्ठ दोनों पुरुषोत्तमोंनेयुद्ध

में परस्पर एकने दूसरेको खींचा ३८ हेराजा दोनोंबीर सबसेना के लोगोंके देखते एक मुहूर्त्त परस्पर युद्धकरके फिर विश्राम करनेवाले हुये ३९ फिर उनपुरुषोत्तमोंने सौचन्द्रमा रखनेवाली सुबर्णजटित ढालोंको खड्गोंसे काटकर भुजाओंसे युद्धकिया ४० बड़ी छातीऔर लम्बी भुजा रखनेवाले भुजाके युद्धमें कुशल वह दोनों लोहेकी परिघोंकेसमान भुजोंसेभुजोंको मिलाकर चिपटगये ४१ हेराजा उन दोनों की भुजाओंके आघातसे उस बल और शिक्षासे उत्पन्न होनेवाले निग्रह प्रग्रह नाम पेंच सबशूरों के प्रसन्न करनेवालेहुये ४२ तब युद्धमेंलड़नेवाले उनदोनों नरोत्तमों के शब्द बड़े भयकारी ऐसे प्रकट हुये जैसे कि बज्र और पर्व्वत के भयकारी शब्दहोते हैं ४३ और जैसेकि दोहाथी दांतों और दोबड़ेबैल सींगों से युद्धकरें उसी प्रकार भुजाओंकी गसावट और शिरको टक्कर चरण का खैंचना पैंतरेबदलना खम्भठोकना नोचना चरणसेपेटको दबाना चारोंओर को घूमनाजाना आना फेंकना पृथ्वीपर लोटजाना उठबैठनाकूदना दौड़ना इनपेंचोंसे४४।४५ कौरव और यादवोंमें श्रेष्ठदोनों महात्माओंका युद्धहुआ ४६ हेभरतबंशी जो युद्धकि बत्तीस अंग रखनेवाला है उन सब अंगोंको उन युद्ध करनेवाले महारथियोंने वहां दिखलाया ४७ इसकेपीछे टूटेशस्त्रवाले यादवके युद्धकरने पर बासुदेवजी अर्जुनसे बोले कि सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ रथसे विहीन युद्ध में लड़नेवाले सात्यकीको देखो४८हेभरतवंशी अर्जुन यह सात्यकीतेरे पीछे भरतवंशियोंकी सेनाको छिन्न भिन्न करके आपहुंचा है और बड़े२ पराक्रमी सब भरतवंशियोंसे युद्धकिया ४९ और युद्धका अभिलाषी भूरिश्रवा इसबड़े शूरबीर थकेहुये आते सात्यकी के सन्मुख हुआहै हेअर्जुन यहि समयके अनुसार योग्यबातनहींहै५० इसके पीछे युद्धमें दुर्मद क्रोधयुक्त भूरिश्रवा ने सात्यकी को उठाकर ऐसे पटका जैसेकि मतवाला हाथी मतवाले हाथीको पटकता है हेराजा युद्धमें रथपरनियत क्रोधयुक्त शूरवीरोंमें श्रेष्ठ अर्जुन और केशवजीके युद्धमें देखनेपर ५१।५२ महाबाहु श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे कहा कि

वृष्णी और अन्धकों में श्रेष्ठ सात्यकीको भूरिश्रवा की आधीनता में देखो ५३ हेअर्जुन कठिन कर्मको करके थके पृथ्वीपर वर्त्तमान तेरे पास आनेवाले वीरसात्यकी की रक्षाकरो ५४ हेपुरुषोत्तम अर्जुन यह उत्तम सात्यकी तेरे कारणसे भूरिश्रवाके आधीन न होजाय हे समर्थ सो तुम शीघ्रता करो ५५ इसके पीछे प्रसन्न चित्त अर्जुन बासुदेवजीसे बोले कि कौरवोंमें श्रेष्ठ भूरिश्रवा को वृष्णियोंमें बड़े बीर सात्यकी के साथ ऐसे क्रीड़ा करनेवाला देखो ५६ जैसे कि बनमें यूथके स्वामी सिंहको मतवाले बड़ेहाथीके साथ संजय बोले हेभरतर्षभ पांडव अर्जुनके इसप्रकार कहनेपर ५७ सेनाओं में बड़ा हाहाकार हुआ फिर उस महाबाहुने सात्यकीको उठाकर पृथ्वीपर पटका ५८ वह कौरवोंमें श्रेष्ठ भूरिश्रवा उसज्ञाति में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकीकोयुद्धमेंखींचता ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि सिंहहाथियोंको खींचताहुआ शोभित होताहै ५९ फिर भूरिश्रवाने मियानसे खड्गको निकालकर उसके केशोंको पकड़लिया और वैसेले छातीपर घायलकिया ६० इसके पीछे उसके शरीर से उसका कुण्डल धारी शिरकाटनाचाहा फिर शीघ्रता करनेवाले यादवनेभी एकक्षण तक बालपकड़नेवाली भूरिश्रवाकी भुजाकेसाथ शिरको ऐसाअच्छा घुमाया जैसे कि दंडसे छेदाहुआ कुम्हारका चक्र होताहै ६१। ६२ हेराजा फिर बासुदेवजी युद्धमें खींचते हुये उस यादव को देखकर अर्जुनसे बोले ६३ हेमहाबाहु तुम भूरिश्रवाकी आधीनता में आये हुये उस सात्यकीको देखोजो वृष्णिबंशी और अन्धक बंशियों में श्रेष्ठ और तेराशिष्यहै और धनुष बिद्यामें तेरेसमानहै ६४ हेअर्जुन वहां पराक्रम मिथ्या है जहां भूरिश्रवा युद्धमें सत्य पराक्रमी यादव सात्यकी को मारताहै ६५ बासुदेवजी के इसबचनको सुनकर महाबाहु अर्जुन ने युद्धमें भूरिश्रवाकी चित्तसे प्रशंसाकी ६६ कौरवोंकी कीर्त्तिका बढ़ाने वाला युद्धमें क्रीड़ा करनेवाला भूरिश्रवा यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी को खींचकर मुझको फिर प्रसन्न करताहै ६७ जो वृष्णि बंशियों में अत्यन्त श्रेष्ठ सात्यकी को नहीं मारताहै

और जैसे बनमें बड़े हाथी को सिंहखैंचताहै उसी प्रकार यह भी खैंचताहै ६८ हे राजा महाबाहु पांडव अर्जुनने इसप्रकार मनसे कौरवको पूजकर बासुदेवजीसे कहा ६९ कि जयद्रथमें दृष्टिलगनेसे इस माधव सात्यकीको नहीं देखताहूं इससे मैं इस कठिन कर्मको यादवके निमित्तकरताहूं ७० बासुदेवजी के बचनको करते हुये अर्जुनने यह कहकर उसके पीछे तीक्ष्णधार क्षुरप्रको गांडीवधनुष पर चढ़ाया ७१ जैसेकि आकाशसे गिराहुआ उल्का होताहै उसी प्रकार अर्जुनकी भुजासे छूटेहुये उस बाणने भूरिश्रवाकीउस बाजूबन्दसे शोभितखड्गपकड़नेवाली भुजाको शरीरसे काटा ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४२ ॥

एकसौतेंतालीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि वह भुजाखड्ग और शुभबाजूबन्द समेतपृथ्वीपर गिरपड़ी उस उत्तम भुजाने जीव लोकके बड़े दुःखको नियतकिया मारने की इच्छावान् भुजा दृष्टिसे गुप्त अर्जुनके बाणसे काटी हुई पांचफण रखनेवाले सर्पकी समान बेगसे पृथ्वी पर गिरपड़ी १।२ उस कौरवने अर्जुनके कारण अपने को निष्फल देख सात्यकी को छोड़कर क्रोधसे पांडवकी निन्दाकरी ३ अर्थात् भूरिश्रवा बोला हे कुन्तीके पुत्र दुःखकीबातहै कि तुमने यह निर्दय कर्मकिया जो मुझ दूसरेसे प्रवृत्त युद्ध न देखनेवालेकी भुजाको काटा ४ धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर जब पूछेंगे कि युद्धमें मेरे साथ किस कर्म के करने से भूरिश्रवा मारागया तब तुम उसको क्या उत्तर दोगे हे अर्जुन साक्षात् महात्मा इन्द्र रुद्र द्रोणाचार्य्य और कृपाचार्य्यने यह अस्त्र बिद्या तुझको उपदेशकी ५।६ निश्चय करके तुम अस्त्र धर्मोंके ज्ञाता और लोकमें सब शूरबीरों से अधिक होकर भी तुमने मुझ युद्धन करनेवालेको कैसेमारा ७ उत्तम चित्तवालेपुरुष अचेतभयभीत बिरथ प्रार्थना करने वाला और आपत्तिमें फँसाहुआ इतने प्रकारके शूरबीरोंपर प्रहार नहीं करते ८ यह कर्म जो तुमने कियाहै सो सत्पु-

रुषोंसे त्यागाहुआ और नीचोंकाकियाहुआ है हे अर्जुन तुमने इस कठिनता से करने के योग्य पापकर्मको कैसे किया ९ हे अर्जुन उत्तम कर्मका करना उत्तम पुरुषोंसे सुगमकहा है और बुरा कर्म अच्छे लोगोंसे इस पृथ्वीपर करना कठिनहै १० हे नरोत्तम मनुष्य जिन २ अच्छे और बुरे मनुष्योंमें और जिन २बुरे भले कर्मोंमें बर्त्तमान होताहै उसी २ प्रकृति को शीघ्रतासे पाताहै वह सब तुझ में दिखाई पड़ताहै ११ सुन्दर चलन और व्रत करने वाला और राजाओंके बंशमें उत्पन्न मुख्य करके कौरव बंशी होकर तू क्षत्री धर्म से किस निमित्त जुदाहुआ १२ जो यह अत्यन्त नीचकर्म सात्यकी के निमित्त तुमने किया निश्चयकरके यह बासुदेवजी का मत है तेझमें नहीं विदित होताहै १३ प्रकट है कि दूसरे के साथ युद्ध करने वाले और अचेतके अर्थ सिवाय श्रीकृष्णके अपने मित्र को और कौन ऐसे दुःख देसक्ताहै १४ हे अर्जुन तुमने इस व्रात्य दुष्कर्मी स्वभावही से निन्दित वृष्णी और अन्धक बंशीको किस प्रकारसे प्रमाण किया युद्ध भूमिमें उसके ऐसे बचनोंको सुनकर अर्जुन भूरिश्रवासे बोला कि प्रत्यक्ष है वृद्ध मनुष्य अपनी बुद्धिको भी वृद्धकरदेताहै यहजो तुमनेकहाहै सबवृथाहै १५।१६इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजीको जानतेहुये तुम मुझ पांडवकी निन्दा करतेहो जो कि तुम युद्धोंके धर्मोंके ज्ञाता और सब शास्त्रोंके अर्थों में पूर्णता से कुशलहो १७ मैं अधर्म कभी नहीं करसक्ता तुम जानतेहुये मोहित होतेहो अपने मनुष्योंसे संयुक्त क्षत्री लोग शत्रुओंसे लड़तेहैं १८ वह भाई, पिता, चाचाआदि और पुत्र, नातेदार मित्रऔर समान बय वालोंके साथ होकर शत्रुओंसे लड़तेहैं वह सब भुजामें रक्षित हैं १९सो मैं अपने शिष्य सुखदायीनातेदार और कठिनतासे छोड़ने के योग्य प्राणोंको छोड़कर हमारे निमित्त युद्ध करने वाले २० मेरी दक्षिण भुजा रूप युद्धमें दुर्मद सात्यकी को कैसे रक्षा नहीं करूं हे राजा निश्चय करके युद्धभूमिमें बर्त्तमान बीर से अपना शरीर रक्षा करने के योग्य नहींहै २१ जो जिसके मनोरथ प्राप्त करने में

प्रवृत्त होताहै निश्चय करके वह रक्षाके योग्यहै वह राजा बड़े युद्धोंमें उन रक्षितोंसे रक्षाके योग्यहै २२ जो मैं इस बड़े युद्धमें सात्यकीको मृतक देखूं तो उस अनर्थ से और उसके पृथक् होनेके बिरहसे मुझको पापहोवा २३ इस हेतुसे मैंने उसकी रक्षाकरीइस कारणसे तुम मुझपर क्यों क्रोध करतेहो हे राजा जो तुम दूसरेके साथ भिड़ेहोनेसे मेरी निन्दा करतेहो २४कि मैं तुझसे ठगागयाहूं उसमें तेरे कवचको अस्तव्यस्त करतेऔरआप रथपर सवार धनुष की प्रत्यंचाको खींचते हुये वह शत्रुओंके साथ लड़ने वाली बुद्धि भ्रान्तिहै इस प्रकार रथ हाथियोंसे पूर्ण रथके सवार और पतियों से व्याकुल २५।२६ सिंहनादोंसे शब्दायमान सेना रूपी गंभीर सागर में मिले हुये अपनी सेनाके लोग दूसरोंसे यादव समेत सन्मुख होने में २७ किस रीतिसे एक का युद्ध एकहीके साथ होसक्ताहै यह सात्यकी बहुत बीरोंसे भिड़कर और महारथियोंको बिजय करके २८ थकाहुआ थकीही सवारी वाला बेमन और शस्त्रों से पीड़ामानहै ऐसी दशावाले और अपने बलके आधीन होनेवाले महारथी सारथीको युद्धमें बिजय करके २९ अपनीही अधिकता जानतेहो और युद्धमें खड्गसे उसके शिरको काटना चाहतेहो ३० उस प्रकार की आपत्तिमें फँसे हुये सात्यकी को कौनसहसकेगा तुम अपनीही निन्दाकरो जो अपनी भी रक्षानहीं करतेहो जो मनुष्य तुम्हारी शरण में आवे तो हे बीर उसके विषयमें तुम कैसी करोगो ३१ संजय बोले कि अर्जुनके इन बचनोंको सुनकर महा बाहु भूरिश्रवा सात्यकी को छोड़कर युद्धमें मरने के निमित्त बैठ गया ३२ उस पबित्र लक्षण और ब्रह्मलोक के जानेके अभिलाषी भूरिश्रवा ने बायें हाथ से बाणों को बिछाकर अपने प्राणों को प्राणों में नियत किया ३३ सूर्य्य में नेत्रोंको और जलमें स्वच्छमन को लय करके महा उपनिषदोंको ध्यानकरता हुआ वह भूरिश्रवा योगमें नियत चित्त होगया ३४ उसके पीछे सब सेनाके मनुष्यों ने श्रीकृष्ण और अर्जुनकी निन्दाकरी और उस मृतक पुरुषोत्तमकी

प्रशंसाकरी ३५ इस प्रकार से निन्दा किये हुये दोनों पुरुष कुछ अप्रिय बचन को नहीं बोले उसके पीछे वह स्तुतिमान भूरिश्रवा प्रसन्ननहींहुआ हेराजा चित्रसे उनके और उसके बचनको न सहता क्रोध रहित मनसे बचनों को ध्यान करता पांडव अर्जुन इस प्रकारसे निन्दाकरनेवाले आपकेपुत्रोंसेबड़ीनिन्दा पूर्व्वकबोला३६। ३७। ३८ कि सब राजा भी मेरे बड़े व्रतको जानते हैं मेरा वह शूरबीर मारनेके योग्य नहींहै जो मेरे बाणके सन्मुखहोवे ३९ भूरिश्रवाकी इस बातको देखकर मेरी निन्दा करनी योग्यनहीं है धर्म्म को न जानकर शत्रुनिन्दाकरने के योग्य नहींहै४० युद्धमेंशस्त्रउठाने वाले और तृष्णी बीरको मारने के अभिलाषी भूरिश्रवा की भुजा को जो मैंने काटा वह धर्म से निन्दित कर्म नहीं है ४१ शस्त्रऔर कवचसे रहितबिरथ बालक अभिमन्यु का मारना धर्मरूपहै हेतात उसको कौन अच्छा कहसक्ताहै ४२ अर्जुनके इस प्रकार के बचन को सुनकर उसने शिरसे पृथ्वीको स्पर्शकिया और बायें हाथसे अपने कटेहुये दाहिने हाथको अर्जुनकी ओर फेंका ४३ इसके पीछे बड़ातेजस्वी भूरिश्रवा अर्जुनके इसबचनको सुनकर नीचाशिरकरके चुपहोरहा ४४ अर्जुन बोले किजो मेरी प्रीति धर्मराज में वा पराक्रमी भीमसेनमें औरनकुल सहदेवमेंहै हेशल्यके बड़ेभाई भूरिश्रवा वही मेरीप्रीति तुझमें है ४५ तुम मुझसे और महात्मा श्रीकृष्णजी से आज्ञालेकर पबित्रलोकोंको ऐसे जावो जैसे कि औशीनरकापुत्र शिविस्वर्गको गया ४६ बासुदेवजी बोलेकिहेसदैव अग्निहोत्रकरने वाले भूरिश्रवा जो मेरे निर्मल लोक एक बारही प्रकाशकरतेहैंऔर देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजी आदिक जिनको चाहते हैं उन लोकों को तुम शीघ्रता से जाओ और गरुड़के उत्तम शरीर पर सवारीकरने वाले होकर तुम मेरे समान हो ४७ संजय बोलेकि भूरिश्रवा के हाथसे छूटकर उठेहुये उस सात्यकी ने खड्ग को लेकर उस महात्माके शिरको काटनेकी इच्छासे ४८ अर्जुनके हाथसे मारेहुये परमेश्वर में प्रवृत्त चित्त निष्पाप भूरिश्रवाको मारनाचाहा ४९ बड़े

दुःखी मनसे सब सेनाओं को पुकारते निन्दा करते और श्रीकृष्ण महात्मा अर्जुन भीमसेन दोनों चक्रके रक्षक अश्वत्थामा कृपाचार्य कर्ण वृषसेन और जयद्रथके निषेध करनेपरभी सात्यकी नेसेनाओंके पुकारते हुये उस व्रतधारी टूटे भुज टूटी शूंड़वाले हाथी के समान बैठेहुये भूरिश्रवाकोमारा ५०।५१।५२ सात्यकीनेयुद्ध में शरीरके त्यागनेके अर्थ अर्जुनकेबाण टूटे भुजवाले बिराजमान भूरिश्रवाके शिरको खड्गसे काटा ५३ फिर सनाकेलोगोंने सात्यकीको उस कर्णके करने से अच्छा नहीं कहा जो पूर्व्वमें अर्जुनके मारे हुये कौरवको मारा ५४ सिद्ध चारण और मनुष्योंने उस इन्द्रकीसमान भूरिश्रवाको युद्धमें शरीर त्यागनेके निमित्त बैठा औरमराहुआ देखकर ५५ उसके कर्मोंसे आश्चर्य्यित उन देवताओंने उसको पूजा अर्थात् प्रशंसाकरी और आपकी सेनाके लोग पक्षपात के अनेक बचनोंको बोले ५६ कि इसमें यादव सात्यकी का अपराध नहीं है यह ऐसीही होनहारथी इस हेतुसे तुमको क्रोध न करना चाहिये मनुष्यों का क्रोधही बड़ा दुःखहै मैंने इसकी मृत्यु सात्यकी कोही नियत कियाहै ५७।५८ सात्यकी बोला हेधर्मसे मुख फेरनेवाले और धर्म के मार्गमें नियत होने वाले शूरलोगो यह मारने के अयोग्यहै इन धर्म रूप बचनों से जोमुझको कहतेहो ५९ तो उस कालमें जबकि सुभद्राका पुत्र बालक बिनाशस्त्रकेयुद्धमें तुम्हारे हाथ से मारागया तब तुम्हारा धर्म कहां जातारहाथा ६० मैंने अपने किसी अपमानमें यह प्रतिज्ञाकरी कि जो मुझजीवतेको युद्धमें खैंच कर क्रोध पूर्व्वक पैरोंसे घायल करे ६१ वह मेरा शत्रु मुझसे ही मारनेके योग्य होय यद्यपि मुनिका व्रत रखने वाला भी होय मुझ नेत्र वाले प्रहारमें भुजासमेत चेष्टा करने वालेको मरा हुआ मानतेहोयह तुम्हारी स्वल्प बुद्धिताहै हेउत्तम कौरवो मैंने इसका मारना योग्य समझ करकियाहै६२।६३ प्रतिज्ञाकी रक्षाकरनेवाले अर्जुन ने जो उसकी खड्ग समेत भुजाकोकाटा उससेठगा गयाहूं ६४ जो होनहारहै वही होनेके योग्य है और दैव अर्थात् प्रारब्धही कर्म

करताहै सो मैंइस युद्धमें उपाय करने वाला हुआ इसमें कौनसा अधर्म किया ६५ पूर्व्व समयमें बाल्मीकिजीने भी यहश्लोककहाहै कि स्त्रियां मारनेके योग्य नहीं हे वानर जोतुम कहतेहो सोसुनोकि निश्चयवाले मनुष्यको सदैव सब समय ६६ वह कर्म करना योग्य है जो शत्रुओंके दुःखोंको उत्पन्न करने वाला होय संजय बोले किहे महाराज सात्यकी के इन बचनों को सुनकर सब उत्तम कौरवों ने कुछ भी नहीं कहा और मनसे प्रशंसाकी ६७ बड़े यज्ञोंमें मन्त्रसे पबित्र यशस्वी हजारों दक्षिणा देने वाले बनबासी मुनिके समान उसभूरिश्रवाके मारनेकी वहां किसीने प्रशंसा नहींकी ६८ उसबर-दाता शूरबीर भूरिश्रवा का वह शिर जिसके बाल बहुत नीले और कपोतके समान रक्तनेत्रथे ऐसे गिर पड़ा जैसेकि हवनके योग्ययज्ञ शालामें कटा हुआ घोड़ेका शिर रक्खा हुआ होताहै ६९ शस्त्र से उत्पन्न तेजसे पबित्र वरके योग्य वह बरदाता अर्थात् बिष्णुपद के मिलने से भूरिश्रवा अपने उत्तम धर्म से पृथ्वी और आकाश को व्याप्त करके उत्तम शरीर को त्यागकर ऊपरकी ओर चला ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रयश्चत्वारिंशतमोऽध्यायः १४३ ॥

एकसौचवालीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि बीर सात्यकी युधिष्ठिरके पास प्रतिज्ञा करके द्रोणाचार्य्य कर्ण बिकर्ण और कृतबर्मा से अजेय सेना रूपी समुद्र से पार उतरा १ युद्धोंमें नहीं हटाया हुआ वह सात्यकी किसप्र-कार कौरव भूरिश्रवाके बलसे पकड़ करगिरायागया २ संजयबोले कि जैसे पूर्व्व समय में सात्यकी का और भूरिश्रवाका जन्महुआ है औरउसीमेंआपका सन्देहहै उसको मुझसे सुनो कि ३ अत्रिका पुत्र चन्द्रमाहुआ चन्द्रमा का पुत्र बुध और बुध का एकपुत्र इन्द्रके समान पुरूरवानाम हुआ पुरूरवाका पुत्रआयु और आयु का पुत्र नहुष नहुष का पुत्र राजा ययाति हुआ वह ययातिदेव ऋषियों काअंगी कृतहुआ ४।५ देवयानमें ययातिका बड़ा पुत्र यदु हुआ

यदुके वंशमें देवमीढ़ नाम पुत्र हुआ ६ उसकापुत्र यदुवंशी शूरसेन नाम तीनोंलोकोंमें विख्यात कीर्त्त हुआ शूरसेन के पुत्र नरोत्तम बड़े तेजस्वी बसुदेवजी हुये ७ शूरसेन धनुष विद्यामें असादृश्य और युद्धमें कार्त्तवीर्य्य के समान हुआ और उसी कुलमें उसी के समान पराक्रमी शिनि हुआ ८ हे राजा उसी समय में महात्मा देवककी पुत्री देवकीके स्वयंबरमें सब क्षत्रियों के इकट्ठे होने पर९ उस स्थानमें राजा शिनिने सब राजाओं को विजय करके देवी देवकी को बसुदेवजी के अर्थ शीघ्रता से रथपर बैठालिया १० तब बड़े तेजस्वी शूर सोमदत्त ने उस रथपर नियत हुई देवकीकोदेख कर शीनीसे क्षमा नहींकी ११ और उन दोनों को अनेक प्रकारका अद्भुत युद्ध मध्याह्नतकहुआ हे पुरुषोत्तम लड़ते२उनदोनों बीरोंका बाहुयुद्धभी हुआ १२ और शिनि के हाथसे सोमदत्त पृथ्वी पर गिराया गया फिर खड्ग उठाकर शिरके बालोंकोपकड़ चारोंओरसेदेखनेवाले हजारों राजाओं के मध्य में पैरोंसे घायल किया फिर उसने दया करके उसको जीवता हुआ छोड़ दिया १३।१४ हेश्रेष्ठ फिर उस संशय से उस दशावाले क्रोधयुक्त सोमदत्त ने महादेवजी को प्रसन्न किया १५ फिर उस बड़े बरदानी शिवजी ने उसपर प्रसन्न होकर उसको बरदान मांगने को उत्सुक किया फिर उस राजा ने बरमांगा १६ कि हे भगवान् मैं ऐसे पुत्र को चाहता हूं जो कि युद्धमें हजारों राजाओं के मध्यमें शिनीके पुत्रको गिराकर चरणों से घायल करे १७ हे राजा वह शिवजी उस सोमदत्त के उस बचनको सुनकर औरतथास्तु कहकर उसीस्थान में गुप्तहोगये १८ उसने उसी वरप्रदानसे भूरिश्रवानाम पुत्रको पाया और उस सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवा ने शिनीके पुत्रको युद्धमें गिराया १९ और सब सेनाओं के देखते हुये उसको चरणों से घायल किया हे राजा जो आपने मुझसे पूछा सो मैंने तुमसे कहा २० यादव सात्यकी युद्धमें उत्तम पुरुषों से भी विजय करने के योग्यनहीं है क्योंकि यादव लोग युद्धमें लक्ष्य भेदी और अद्भुत योद्धा २१

देव दनुज और गंधर्बों के विजय करनेवाले आश्चर्य्य से रहित और अपने पराक्रम से विजय में प्रवृत्त होनेवाले हैं यह दूसरे के आधीन नहींहैं २२ हे प्रभु पुरुषोत्तम इसलोक में बल पराक्रम से वृष्णियों के समान तीनोंकाल में भी कोई शूरबीर उत्पन्न होने वा-लानहीं जाना जाताहै २३ वह जातिका अपमान नहीं करते हैं और वृद्धोंकी आज्ञाओं में प्रीति रखनेवाले होते हैं देवता असुर गन्धर्ब यक्ष उरग और राक्षस भी २४ वृष्णी बीरों के विजय करने वाले नहीं हैं फिर मनुष्यों की क्या सामर्थ्य है ब्राह्मण, गुरू, और ज्ञानवालों के धनोंके रक्षक हैं और जोकि किसी दशा में बन्धनमें पड़े हों उनके भी रक्षक हैं और धन अहंकार से रहित साधू ब्राह्म-णों की सेवा करनेवाले और सत्यवक्ता है २६ वह समर्थ होकर किसीप्रकार के दुःखी लोगों का अपमान नहीं करते हैं सदैव पर-मेश्वरके भक्त जितेन्द्री रक्षक और आत्म श्लाघाके करनेवालेनहीं हैं २७ इसीहेतु से वृष्णी बीरों के प्रताप का नाश नहीं होताहै चाहै कोई पुरुष समुद्रको तरकर मेरुपर्व्वत को भी उठाले २८ पर-न्तु सन्मुख होकर वृष्णी बीरों के अन्तको नहीं पासक्ता है हे राजा जिन२ बातोंमें आपको सन्देह था वह सब मैंने तुमसे कहा २९ हे नरोत्तम कौरव राज आपका बड़ा अन्याय है ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसात्यकीप्रशंसायांशतोपरिचतुश्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४४ ॥

एकसौपैंतालिसका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस दशा वाले उस कौरव भूरिश्रवा के मरने पर फिर जैसे युद्ध हुआ उसको मुझसे कहो १ संजय बोले कि हे भरतवंशी परलोक में भूरिश्रवा के जाने पर महाबाहु अर्जुन ने बासुदेवजीसे प्रर्थना करी २ कि हे श्रीकृष्णजी घोड़ोंको अत्यन्त प्रेरित करके वहां लेचलो जहांपर राजा जयद्रथहै हे निष्पाप आप मेरी प्रतिज्ञा को भी सकल करने को योग्य हो ३ हे महाबाहो शीघ्रता करनेवाला सूर्य्य अस्ताचलको प्राप्त होताहै हे पुरुषोत्तम

मैंने भी बड़े कर्मकी प्रतिज्ञाकरी है ४ और कौरवीय सेना महारथियों से रक्षितहै जैसे कि सूर्य्य अस्त न होय और मेरा बचन सत्य हो ५ और जैसे मैं जयद्रथ को मारूं हे श्रीकृष्ण जी उसीप्रकारसे आप घोड़ों को चलायमान करो इसके पीछे घोड़ोंके हृदयके जानने वाले महाबाहु श्रीकृष्णजी ने रजत बर्ण वाले घोड़ोंको ६ जयद्रथके रथकी ओरको चलाया बायुके समान उछलकर चलते हुये घोड़ों के द्वारा जानेवाले उन सफल बाणवाले अर्जुन को ओर ७ शीघ्रता करनेवाले जो सेनाके अधिपति लोग दौड़े उनके नामयह हैं दुर्य्योधन, कर्ण, वृषसेन, शल्य, ८ अश्वत्थामा, कृपाचार्य, और आपजयद्रथ, अर्जुनने सन्मुख नियतहुये जयद्रथको पाकर ९ क्रोधसे अग्नि रूप नेत्रों से उसको देखा हे राजा इसके पीछे राजा दुर्य्योधनशीघ्रही जयद्रथके मारनेके अर्थजानेवाले अर्जुनको देखकर कर्ण से बोला हे सूर्य्य के पुत्र महात्मा यह वह युद्धका समय है अबतुम अपने उसबलको दिखलाओ जिससे अर्जुनकेहाथसे युद्धमें जयद्रथ नहीं माराजाय हे कर्ण उसीप्रकार करना योग्य है १२ हे नरवीर दिन थोड़ाही बाकीहै अब शत्रुको बाणोंके समूहों से अच्छे प्रकार से घायलकर हे नरोंमें बड़ेबीर कर्ण दिनकेअन्तको पाकर निश्चय हमारी विजय होगी १३ सूर्य्यास्तके समय जयद्रथके बचजानेपर मिथ्या प्रतिज्ञा करनेवाला अर्जुन अग्नि में प्रवेश करेगा १४ हे बड़ाई देनेवालेकर्ण अर्जुनसे रहित पृथ्वीपर इसके सबभाई अपने साथी सहायकों समेत एक मुहूर्त्तभी जीवते नहीं रहसक्के १५ हे कर्ण पांडवोंके नाशहोनेके पीछे इस अकंटक पृथ्वीको पर्व्वत बन और काननों समेत भोगेंगे १६ हे बड़ाई देनेवाले कर्ण दैव से मोहित प्रकृतिके बिपरीत कार्य्याकार्य्यके न जाननेवाले अर्जुनने युद्ध में प्रतिज्ञाकरी १७ हे कर्ण निश्चय करके पांडव अर्जुनने अपनेही नाशके निमित्त जयद्रथके मारनेमें यह प्रतिज्ञाकरीहै १८ सो हेकर्ण तुझअजेयके जीवते होनेपर अर्जुन सूर्य्यास्तसे पूर्व्वही कैसे राजा जयद्रथ को मारसक्ता है १९ यह अर्जुन मद्रके राजा शल्य और

महात्मा कृपाचार्य्यसे रक्षितहुये जयद्रथको युद्धकेमुखपर कैसेमारे-
गा २० कालसे प्रेरित अर्जुन अश्वत्थामा दुश्शासन और मुझसे
रक्षित जयद्रथको किसप्रकारसे पावेगा २१ बहुतसे शूरबीरलड़ने
वालेहैं और सूर्य्य जल्दीसे अस्तंगत होनेवालेहैं मैं निश्चय करके
अनुमान करताहूं कि अर्जुन जयद्रथ को नहींपावेगा २२ हे कर्ण
सो तुम मेरे साथ और अश्वत्थामा शल्य और कृपाचार्य्य और
अन्य २ महारथी शूरबीरोंके साथ२३बड़े उपाय पूर्व्वकयुद्धभूमि में
नियत होकर अर्जुनसे युद्धकरो हे श्रेष्ठ आपके पुत्रके इनवचनों को
सुनकर कर्णने २४ कौरवोंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधनसे यहबचन कहा कि
मैं कठिन प्रहार करनेवाले धनुषधारी बीर भीमसेनके २५ नाना-
प्रकारके बाण जालोंसे अत्यन्त घायल शरीरहूं हे बड़ाई देनेवाले
नियतहोना योग्यहै इसहेतुसे मैंभी युद्धमेंनियतहूं२६ बड़ेबाणों से
अच्छासंतप्त कियाहुआ मेराकोई अंगचेष्टा नहींकरताहै सामर्थ्यके
अनुसार मैं उसीप्रकार से लड़ूंगा जिसमें कि यह अर्जुन जयद्रथ
को नहींमारेगा क्योंकि मेराजीवन तेरेही निमित्तहै मेरे युद्ध करते
और तीक्ष्ण शायकोंके छोड़ते २७। २८ संसारके धनोंका विजय
करनेवाला बीर अर्जुन जयद्रथको नहीं पावेगा भक्ति रखनेवाले स-
दैव दूसरेकी भलाई चाहनेवाले पुरुषोंसे जो कर्म करनेके योग्य है
२९ हे कौरव मैं उसीको करूंगा आगे विजय होना ईश्वर के आ-
धीनहै हे महाराज अबमैं जयद्रथके अर्थ और तेरे प्रियके निमित्त युद्ध
में उपाय करूंगा परन्तु विजय ईश्वर के आधीनहै हे पुरुषोत्तम अब
अपनी बीरतामें नियत होकर मैं तेरेनिमित्त अर्जुनसे लड़ूंगा विजय
ईश्वरकेआधीनहै हेकौरवों में श्रेष्ठ अबमेरे औरअर्जुनकेउसयुद्धको३२
जोकि भयका उत्पन्न करनेवाला और रोमहर्षण करनेवाला होगा
सबसेनाओंके मनुष्योंके देखतेहुये युद्धमेंकर्ण और दुर्य्योधनकी इस
प्रकारकी बातें होनेपरही ३३ अर्जुनने तीक्ष्णबाणोंसे आपकीसेना
कोमारा और तीक्ष्णधारबाणोंसे मुख न फेरनेवाले शूरोंकी३४ भुजा
जो कि परिघ और हाथीकी सूंड़ोंके समानथीं उनको युद्धमें काटा

महाबाहुने फिर तीक्ष्ण धारवालेबाणोंसे उनके शिरोंकोभीकाटा३५ हाथियोंकीसूंड़ें घोड़ोंकीगर्दनें और चारोंओरसे रथियोंके अक्ष परिघ और तोमरवाले रुधिरमें भरे अश्वसवारोंको ३६ घोड़ों और उत्तम हाथियोंको अर्जुनने अपने क्षुरोंसे दोदो और तीनतीन खंडकरदिये फिरवह कट २ कर चारोंओरसे गिरपड़े ३७ध्वजा छत्र चामर और शिर चारोंओरसेगिरे और जैसे उठाहुआ अग्नि सूखे बनको भस्म करताहै उसीप्रकार अर्जुनने आपकी सेनाको भस्मीभूत करदिया ३८ अर्जुनने थोड़ीही देरमें पृथ्वीको रुधिरसे पूर्णकरदिया वह पराक्रमी अर्जुन उस आपकी सेनाको अनेक शूरोंसे रहित करके भीमसेन और सात्यकी से रक्षित होकर ४० ऐसा प्रकाशमानहुआ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ जैसे कि प्रज्वलित अग्निहोताहै फिर बड़ेधनुर्धारी पुरुषोत्तम आपके शूरबीरोंने उसप्रकारसे नियत उस अर्जुनको देखकरबलरूपी धनसे अर्जुनकोनहींसहा दुर्योधनकर्ण वृषसेनशल्य ४१।४२अश्वत्थामा कृपाचार्य्य आप जयद्रथ इनसब कवचधारीबीरों ने जयद्रथके निमित्त अर्जुनको घेरलिया ४३ युद्धमें कुशल और निर्भय कालके समान खुलेहुये मुखवालेउनसबने उस युद्धकुशल रथके मार्गोंमें धनुष प्रत्यंचा और तलके शब्दोंके साथ नृत्य करनेवाले अर्जुनकोचारों ओरसे घेरलिया श्रीकृष्णऔरअर्जुनके मारनेकेइच्छावान् उनलोगोंने जयद्रथको पीछेकी ओर करके४४।४५सूर्य्यकेरक्तवर्णहोनेपर सूर्य्यास्तकोअभिलाषा करतेहुओंने सर्प्पके फणोंके रूप हाथोंसे धनुषोंको लचाकर सूर्य्य के समान प्रकाशमान हज़ारों बाणोंको छोड़ा उसकेपीछे युद्ध दुर्मद अर्जुनने उनखैंचे हुये प्रत्येक बाणोंको ४६। ४७ दोदो तीन २ खंडकरके उन रथियोंको घायल किया हे राजा आपने पराक्रमको दिखाते सिंह लांगूल ध्वजा वाले ४८ सारद्वतके पुत्र अश्वत्थामाने अर्जुनको रोका अर्जुन को दश बाणों से और बासुदेवजी को सातबाणों से घायल करके ४९ जयद्रथको रक्षित करताहुआ रथके मार्गोंमें नियत हुआ इसकेपीछे सब उत्तम कौरवोंने उसको ५० बड़े रथोंके समूहों के द्वारा सब

ओर से रोका धनुषोंको टंकारते शायकों को छोड़ते ५१ लोगोंने आपके पुत्रकी आज्ञासे जयद्रथको चारों ओरसे रक्षितकिया इसके पीछे शूरबीर अर्जुनकी दोनोंभुजाओंका पराक्रम देखनेमेंआया५२ और बाणोंकी और गांडीव धनुषकी अबिनाशताको भी देखा कि अश्वत्थामा और कृपाचार्य्यके अस्त्रों को अस्त्रोंसे रोककर ५३ प्रत्येक को दश२ बाणोंसे घायलकिया अश्वत्थामाने उसको पच्चीसबाणों से वृषसेनने सात बाणोंसे ५४ दुर्य्योधन ने बीस बाणों से कर्ण और शल्यने तीन२बाणोंसे इसप्रकार गर्जते और बारम्बार घायल करते ५५ धनुषों को कंपाते उन बीरोंने सबओर से अर्जुन को रोका और शीघ्र अपने रथमंडल को लगाया ५६ सूर्य्यास्त को चाहते और उसके सन्मुख गर्जते धनुषों को चलायमान करते शीघ्रता करनेवाले महारथियोंने ५७ उसको तीक्ष्णबाणों से ऐसा आच्छादित किया जैसे कि जलकी धाराओं से बादल पर्ब्बत को आच्छादित करता है हे राजा परिघ के समान भुजाधारी उन शूरबीरों ने अर्जुन के शरीर पर दिव्य महाअस्त्रों को दिखलाया फिर उस पराक्रमी ने आपकी सेनाको बहुत मृतक शूरबीरवाली करके ५८।५९ सत्य पराक्रमी निर्भय ने जयद्रथ को पाया हे राजा कर्णने बाणों से उसको रोका ६० हेभरतबंशी फिर अर्जुनने युद्धभूमि के मध्य भीमसेन और सात्यकी के देखते हुये उस कर्ण को दश बाणोंसे छेदा ६१ महाबाहु अर्जुन ने यह युद्धकर्म सब सेनाके देखते हुये किया हे श्रेष्ठ यादव सात्यकी ने कर्ण को तीन बाणोंसे घायल किया ६२ भीमसेन ने तीन बाण से और फिर अर्जुन ने सात बाण से इसके पीछे महारथी कर्ण ने साठ२ बाणों से उनको घायल किया हे श्रेष्ठ वहां हमने कर्णके अपूर्व्व कर्म को देखा ६४ कि जिस क्रोधयुक्त अकेलेनेही युद्धमें तीन रथियों को रोका फिर महाबाहु अर्जुन ने सूर्य्य के पुत्र कर्ण को युद्धमें ६५ सौ शायकों से सब मर्मोंपर घायल किया रुधिर से लिप्त सब शरीर प्रतापवान् बीर कर्ण ने ६६ पचास बाणों से अर्जुन को घायल किया अर्जुन

ने युद्धमें उसकी उस हस्तलाघवताको देखकर नहींसहा ६७ फिर शीघ्रता करनेवाले बीर अर्जुनने धनुषको काटकर नौ शायकों से उसको हृदयपर पीड़ामान किया ६८ इसके पीछे प्रतापी कर्ण ने दूसरे धनुषको लेकर आठ हजार शायकों से अर्जुन को ढक दिया ६९ अर्जुन ने कर्णके धनुष से निकले हुये उन बड़ी बाणबर्षा को शायकों से ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि शलभ नाम पक्षियों को बायु तिर्बिर कर देताहै ७० तब अर्जुन ने भी शायकों से उसको ढक दिया और शीघ्रतायुक्त अर्जुनने शीघ्रताके समय युद्धमें उसके मारने के निमित्त सूर्य्यके समान प्रकाशित शायक को फैंका ७१ अश्वत्थामा ने उस बेगसे आते हुये शायकको अर्द्धचन्द्र नाम तीक्ष्ण बाणोंसे काटा वह कटाहुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा ७२ इसके पीछे प्रतापवान् कर्णने दूसरे धनुषको लेकर हजारों शायकों से अर्जुन को ढकदिया ७३ अर्जुनने उस कर्णकी शस्त्रबर्षा को शायकों से ऐसे उच्छिन्न करदिया जैसे कि बायु शलभाओं को करताहै ७४ तब उसने अर्जुन को सब शूरबीरों के देखते और हस्तलाघवता को दिखाते हुये शायकों से ढक दिया ७५ शत्रुओं के मारनेवाले कर्णने भी युद्ध कर्मके बदला करने को इच्छासे अर्जुनको हजारों शायकों से ढक दिया ७६ बैलोंके समान गर्जना करनेवाले उन नरोत्तम महारथियों ने सीधे चलनेवाले शायकों से आकाश को गुप्तकिया ७७ बाणों के समूहों से गुप्त उन दोनोंने परस्पर में घायल किया और कहा कि हे कर्ण मैं अर्जुनहूं ठहरो ७८ तब इसप्रकार घुड़कनेवाले दोनोंने बचन बज्रों से परस्पर पीड़ित किया और दोनों बीर युद्धमें अपूर्व्व चित्तरोचक तीव्र युद्ध करते ७९ सब शूरबीरों के समूहों में देखनेके योग्यहुये सिद्ध चारण औ सर्पों ने भी उनकी प्रशंसा की ८० हे महाराज परस्पर मारने के अभिलाषी वह दोनों युद्ध करनेवाले हुये इसके पीछे दुर्य्योधन आपके शूरबीरों से बोला ८१ कि उपाय से कर्णकी रक्षाकरो यह कर्ण युद्धमें अर्जुन को बिनामारे हुये नहीं लौटेगा क्योंकि उसने मुझसे

कहाहै ८२ हे राजा इसी अन्तरमें कर्णके पराक्रम को देखकरश्वेत घोड़े रखनेवाले अर्जुनने कान तक खैंचकर छोड़े हुये चार बाणोंसे कर्णके चारों घोड़ों को ८३ प्रेतलोक में पहुंचाया और भल्लसेउसके सारथीको रथकी नीढ़से गिराया ८४ और फिर आपके पुत्रकेदेखते हुये बाणोंसे उसको ढक दिया युद्धमें बाणोंसे ढके हुये मृतक सारथी और घोड़े वाले ८५ बाणजालों से मोहितने करने के योग्य कर्मको नहीं पाया हे महाराज तब उसप्रकार उस कर्णको रथ से रहित देखकर अश्वत्थामा ने ८६ रथपर बैठाकर फिर अर्जुन से युद्धकिया और मद्रके राजा शल्यने अर्जुनको तीस बाणोंसे छेदा ८७ फिर कृपाचार्य्य ने बीस बाणसे बासुदेवजी को घायल किया और शिलीमुख नाम बारह बाणोंसे अर्जुन को घायल किया ८८ जयद्रथ ने चार बाणसे वृषसेन ने सात बाण से उसको घायल किया हे महाराज जैसे पृथक् २ श्रीकृष्ण और अर्जुन को उन सबने घायलकिया ८९ उसी प्रकार कुन्ती के पुत्र अर्जुन ने भी उनको घायल किया और चौंसठ बाणोंसे अश्वत्थामाको और सौबाणसे शल्यको ९० दश बाण से जयद्रथ को तीन बाण से वृषसेन को और बीस बाणसे कृपाचार्य्य को घायल करके गर्जा ९१ अर्जुनकी प्रतिज्ञाके नाशको चाहनेवाले वह सब इकट्ठे शूरबीर एकसाथही अर्जुन के सन्मुख दौड़े ९२ इसके पीछे धृतराष्ट्र के पुत्रों को सब ओर से भयभीत करते हुये अर्जुन ने वारुणास्त्र को प्रकट किया बाणों को बर्षा ते कौरव बहुमूल्य रथोंकी सवारी से उस अर्जुनके सन्मुख गये ९३ हे भरतबंशी उसके पीछे उस कठोर और बड़ेभयकारी मोह के उत्पन्न करनेवाले युद्धके जारी होने पर वह राजपुत्र अचेत नहीं हुआ फिर उस मुकुट और मालाधारी राज कुमार ने सन्मुख होकर बाणोंके समूहोंको छोड़ा ९४ कौरवों के राज्यकेइच्छावान् बारह वर्षके पाये हुये महाखेदों को स्मरण करते महात्मा बुद्धिसे बाहर प्रभाववाले अर्जुन ने गांडीव धनुषके छोड़े हुये बाणों से सब दिशाओंको ढकदिया ९५ और अन्तरिक्ष बड़ी प्रकाशमान

उल्काओं से व्याप्त हुआ और मृतक शरीरों पर पक्षी गिरे जिस हेतुसे क्रोध युक्त अर्जुन पिंगल वर्णकी प्रत्यंचावाले अजगवनाम धनुषसे शत्रुओंको मारताथा९६ इसकेपीछे बड़े यशस्वी शत्रुओंकी सेनाके विजय करनेवाले अर्जुनने बड़े धनुष से बाणोंको चलाकर उत्तम घोड़े और हाथियोंकी सवारियोंसे घूमनेवाले कौरवीय शूरबीरोंको बाणोंसे गिराया ९७ भयकारी दर्शनवाले राजालोग भारी गदा और लोहेकी परिघ खड्ग शक्तिआदिक बहुतसे बड़े२ शस्त्रोंको लेकर युद्धमें अकस्मात् अर्जुनके सन्मुख गये ९८ इसकेपीछे यमराजके देशको बढ़ानेवाले अर्जुनने प्रलयकालके बादलके समान शब्दायमान महाइन्द्रके धनुषरूप गांड़ीवनाम बड़े धनुषको दोनों हाथोंसे खैंचा और बहुत हँसताहुआ आपके शूरबीरोंको भस्मकरता शीघ्रहीचला९९ उसबीरने उन बड़े धनुषधारियों समेत पदातियोंके बड़ेसमूहोंको जिनकेसबशस्त्र और जीवनभी नष्टहोगयेथे हाथी और रथ सवारों समेत यमराजके देशकावृद्धि करनेवाला किया १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिजयद्रथसकुलयुद्धेशतोपरिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः१४५ ॥

एकसौछियालीसका अध्याय ॥

संजयबोले कि अर्जुनके खैंचेहुये उस धनुषका शब्दजो कि मृत्यु के शब्दके समान अच्छे प्रकारसे प्रकट उन्नत इन्द्र बज्रके समान महाभयकारीथा उसको सुनकर आपकी वहसेनाभयसे ऐसीव्याकुल हुई जैसे कि प्रलयकालकी वायुसेव्याकुल और चलायमान तरंगों से उत्तरंग २ गुप्त मछली और मगरवाला सागरका जल होताहै वह पांडव अर्जुनदेखताहुआ युद्धमेंघूमा३एक साथही सबदिशाओंमें सबअस्त्रोंको प्रकटकरताघूमनेलगा हे महाराज हमनेउसकी हस्तलाघवतासे उस लेते चढ़ाते४खैंचते छोड़तेहुये पांडवको नहीं देखा इसके पीछे सब भरत बंशियोंको डराते क्रोधयुक्त महाबाहु अर्जुनने कठिनतासे सहनेकेयोग्य इन्द्रास्त्रको प्रकटकिया इसके पीछे दिव्य मंत्रोंसे अभिमंत्रित ५।६ अत्यन्त प्रकाशमान सैंकड़ों और हजारों

बाण प्रकटहुये कानतक खैंचकर छोड़े हुये अग्नि सूर्य्यकी किरणों के समान बाणोंसे ७ आकाश दुःख से देखने के योग्य ऐसा हुआ जैसे कि उल्काओंसे संयुक्तहोताहै इसकेपीछे कौरवोंसे प्रकटकिये हुये उस शस्त्रोंके अन्धकार को८ घूमते हुये पांडवने पराक्रम करके दिव्य अस्त्रोंके अभिमंत्रित बाणोंसे नाश करदिया जोकर्म दूसरोंके मनसेभी करनेके योग्य ऐसे नहींथा ९ जैसे कि प्रातःकालके समय सूर्य्य अपनी किरणोंसे रात्रिके अन्धायोंको शीघ्रही दूरकर देताहै उसकेपीछेआपकीसेनाप्रकाशित बाणोंकीकिरणोंसे१० ऐसेआकर्षण युक्तहुई जैसे उष्णऋतुमेंप्रभु सूर्यदेवता छोटे२ तालाबोंके जलोंको आकर्षण करताहै उससमय दिव्य अस्त्रज्ञ अर्जुनसे छोड़ेहुये शायक रूप किरणोंने ११ शत्रुओंकी सेनाको ऐसेस्पर्श किया जैसे कि सूर्य्य की किरणें लोकको स्पर्श करतीहैं इसकेपीछे छोड़ेहुये दूसरे कठोर प्रकाशितबाण १२ शीघ्रही बीरोंके हृदयमें प्यारे बान्धवोंके समान लगकर प्रवेशहुये जो शूरोंमें बड़े आपके युद्धकर्त्ता लोग युद्धमें उसके सन्मुख गये १३ उन्होंने ऐसे नाशको पाया जैसे कि शलभ नाम पक्षी अग्निको पाकर नाशहोतेहैं इसप्रकार देहधारीकालके समान अर्जुन शत्रुओंकेजीवन और यशोंको मर्दनकरता१४ युद्धमेंघूमनेलगा उसने कितनेही बीरोंके मुकुट बस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली बड़ी भुजा और कुंडलोंके जोड़े धारण करनेवाले कानोंको अपनेबाणोंसे काटा १५ उसपांडवने तोमर रखनेवालेहाथीके सवारोंकीभुजाओंको और प्रास रखनेवाले अश्वसवारोंकी भी भुजाओं को काटकर १६ ढाल रखनेवाले पदातियों की भुजाओं को और धनुष बाण रखने वाले रथियोंकी भुजाओंको और चाबुकरखनेवाले सारथियोंकी भी भुजाओंको काटा १७ वहांपर अर्जुन अत्यन्त प्रकाशित और भयकारी बाणरूपी किरणोंका धारण करनेवाला होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि फुलिंगों का धारण करनेवाला देदीप्य अग्नि होताहै १८ फिर वह उपायकरनेवाले राजालोगभी उसदेवराजके समान सबशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ रथपर सवार पुरुषोत्तम बड़े अस्त्रोंके

चलानेवाले दर्शनीय रूप रथके मार्गोंमें नाचनेवाले धनुष प्रत्यंचा और तलसे शब्द करनेवाले पांडव अर्जुनको सब दिशाओंमें एकबार देखनेकोभीऐसे समर्थनहीं हुये जैसेकि मध्याह्नके समय आकाशमें तपानेवाले सूर्य्यको कोई देख नहींसक्ता १६।२०।२१ वहप्रकाशित नोकवाले बाणोंका रखनेवाला ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वर्षा ऋतुमें इन्द्र धनुषके साथ बहुत जलोंसेभरा बड़ाबादल शोभित होताहै २२ उत्तमशूरबीरलोग अर्जुनके जारी कियेहुये उसकठिनता से तरनेके योग्य बड़े भयानक महा अस्त्ररूप समुद्र में डूबगये २३ टूटेमुख और भुजावालेशरीर टूटेहाथवाली भुजा उंगली टूटेहुये हाथटूटीहुईसूंड़ नोकदांतमदसे मतवालेहाथी ग्रीवारहितघोड़े चूर्णीभूतरथ२५टूटेआंत पैर इसीप्रकार टूटे जोड़वाले अन्यशूरबीर चेष्टा करनेवाले वा अचेष्टहजारों युद्धकर्त्ताओंसे २६ उस बड़ी युद्धभूमि को भयभीतोंके भयकेबढ़ानेवाली मृत्युकालकीसंहारभूमिके समान ऐसाचित्तरोचकदेखा २७जैसेकि पूर्व्वकालमें शूरोंके पीड़ा देनेवाले रुद्रजीका क्रीड़ास्थानहोताहै क्षुरसेकाटीहुई हाथियोंकीसूंड़ोंसे पृथ्वी ऐसीजुदीशोभायमानहुई जैसे कि सर्पोंसेयुक्तहोतीहै२८ किसीस्थान परमुखरूपी कमलोंसेआच्छादितपृथ्वी मालाधारीकेसमानशोभायमानहुई बिचित्र पगड़ी मुकुट कुंडल केयूर बजुबन्दों से २६ और सुवर्ण जटित कवच घोड़े हाथियोंके सामान और हजारों मुकुटोंसे जहां तहां आच्छादित और संयुक्त पृथ्वी नवीन बधू के समान अत्यन्त अद्भुत शोभायमानहुई बसा मस्तकरूप कीच रखनेवाली रुधिर समूहोंसे उत्तरंग मर्म और अस्थियोंसे अथाहकेशरूप शैवल शाड्वल रखनेवाली शिरभुजारूप तटके पाषाण रखनेवाली कटेहुये घोड़ोंकी छातियोंके हाड़ोंसे अगम्य३२चित्रध्वजापताकाओंसे युक्त छत्रधनुषरूप तरंगमाला रखनेवाली मृतक शरीरोंसेपूर्ण हाथियोंके शरीरोंसे बिगतरूप ३३ रथरूपी हजारोंनौकाओंसे युक्त घोड़ोंके समूहरूप किनारेवाली और रथकेचक्र जुये ईशा अक्ष और कूबरोंसे अत्यन्त दुर्गम ३४ प्रास खड्ग शक्ति फरसे और बिशिखरूप स-

पर्व्वोंसे कठिन काक कंकरूप नक्रोंसेपूर्ण शृगालरूप मगरोंसेकठिन रूप३५ बड़ेगृद्धरूप भयानक ग्राह रखनेवाली शृगालोंके शब्दोंसे भयानक रूप और नाचतेहुये प्रेतपिशाचादि हजारों भूतोंसे युक्त ३६ मृतक और निश्चेष्टशूरबीरोंके हजारों शरीरोंकी बहानेवालीबड़ीभयानकरुद्र बैतरणी नदीके समान घोर३७ भयभीतोंके भयोंकी बढ़ानेवाली नदीको बहाया उसयमराजरूप अर्जुनके उस पराक्रम को जिसके समान पूर्व्व कोई नहींहुआ ३८देखकर युद्धभूमिकेमध्य कौरवोंमें भयउत्पन्नहुआ रुद्रकर्ममें नियत अर्जुनने बीरोंके अस्त्रोंको अपनेअस्त्रोंसे आधीनकरके ३९ अपनेकोरुद्ररूप प्रकटकिया हेराजा इसकेपीछे अर्ज्जुनने उत्तमरथियोंकोउल्लङ्घनकिया४० और सब जीवधारी अर्जुनको ओरदेखनेको ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे मध्याह्नके समय संतप्तकरनेवाले सूर्यको कोईदेख नहींसक्ता ४१ उसमहात्मा के गांडीव धनुष से निकले हुये बाणोंके समूहोंको युद्धमें ऐसा देखा जैसा कि आकाशमें हंसोंकी पंक्तियोंको ४२ वह सबओरसेबीरों के अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे रोककर अपने शरीरको रुद्ररूपदिखलाता भयकारी कर्म्ममें प्रवृत्त हुआ ४३ हे राजा तब नाराचों से मोहित करते सब दिशाओंमें बाणोंको छोड़ते श्रीकृष्ण को सारथी रखने वाले अर्जुनने जयद्रथके मारनेकी अभिलाषासे उन महारथियोंको उल्लंघन किया ४४ फिर वह दर्शनीय रथी अर्जुन शीघ्रतासेचला और महात्मा शूरबीर अर्जुन के घूमते हुये बाणों के समूह ४५ हजारों अन्तरिक्षमें दिखाई पड़े निश्चय करके उससमय हमने शायकों को लेते चढ़ाते छोड़ते ४६ बड़े धनुषधारी पांडवको नहीं देखा हे राजा जिसप्रकार वह कुन्ती का पुत्र सब दिशाओं को और सब रथियों को युद्ध में ४७ व्याकुलकरता जयद्रथके सन्मुख गया और टेढ़ेपर्ववाले चौंसठ बाणोंसे घायल किया ४८ शूरबीर जयद्रथ के सन्मुख जातेहुये अर्जुनको देखकर सबलोग उसके जीवनसे निराश हुये ४९ हे प्रभुआप का जो २ शूरबीर उस युद्धमें अर्जुनके सन्मुख दौड़ा उस उसके शरीर में वह नाशकारी बाण

समागये ५० बिजय करने वालोंमें श्रेष्ठ अर्जुनने अग्निकी किरण के समान बाणोंसे आपकी सेनाको धड़ोंसे पूर्णकिया ५१ हेराजा तब अर्जुनआपकी चतुरंगिणी सेनाको व्याकुल करके जयद्रथ के पासगया ५२ पचास बाणसे अश्वत्थामा को बीसबाण से वृषसेन को घायलकरके दयावान् अर्जुनने कृपाचार्य्यको नौबाणोंसे घायल किया ५३ शल्यको सोलह बाणों से कर्णको बारह बाण से और जयद्रथको चौंसठ बाणसे घायल करके सिंहके समान गर्जा ५४ गांडीव धनुषधारीके बाणोंसे उस प्रकार घायल होकर बड़े क्रोध युक्त जयद्रथने ऐसेनहीं सहा जैसे कि चाबुकोंसे पीड़ितहाथीहोताहै उस बराहध्वज जयद्रथने शीघ्रही सीधे चलनेवाले क्रोधभरे सर्पके समान और कारीगरकेसाफ़ कियेहुये ५६ कानतक खैंचेहुयेबाणों को अर्जुन के रथपर फैंका फिर तीनबाणों से केशवजीको और छः नाराचसे अर्जुनको घायल करके ५७ एक बाण से ध्वजा को और आठ बाणोंसे घोड़ोंको घायल किया फिर अर्जुनने शीघ्रही जयद्रथके चलाये हुये बाणोंको हटाकर ५८ एकही बारमें दो बाणों से उसके सारथीके शिरको काटकर उसकी अलंकृत ध्वजाको भी काटा ५९ अर्जुनके बाणसे घायल वह जयद्रथकी ध्वजाका बहुत बड़ा देदीप्य अग्निके समान बराह जिसकी कि यष्टी टूटगई थी गिरपड़ा ६० हे राजा उसीसमय सूर्य्यके शीघ्रजानेपर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्ण जी अर्ज्जुन से बोले ६१ हे महाबाहु अर्ज्जुन इस जयद्रथ को छः महारथी बीरोंने अपने मध्यमें कियाहै यह जीवन की इच्छा किये महा भयभीत नियतहै ६२ हे महारथी अर्जुन युद्धमें इन छः महारथियोंके बिना विजय किये जयद्रथ मारनेके योग्यनहींहै तुमबड़ी सावधानीसे प्रहार करो ६३ मैं यहां सूर्य्यके अस्तंगत होनेमें योग करूंगा वह अकेला जयद्रथही सूर्य्यको अस्तंगत देखेगा ६४ हे प्रभु अर्जुन वह जीवनकी इच्छा करनेवाला दुराचारी जयद्रथ प्रसन्नतासे तेरे नाशके लिये अपनेको किसी दशामें भी नहीं छुपावेगा ६५ हेकौरवोंमें श्रेष्ठ उससमयपर तुझको इसपर प्रहारकरना

चाहिये सूर्य्य अस्तहुआ यह ध्यान न करना चाहिये ६६ अर्जुनने केशवजीको उत्तरदियाकि तथास्तु ऐसाहोय उसके पीछे योगसेयुक्त योगी और योगियोंके ईश्वर हरि श्रीकृष्णजीसे सूर्य्यके गुप्त होनेके निमित्त अंधकार उत्पन्न करनेपर सूर्य अस्तहुआ जानकर ६७ । ६८ आपके शूरबीर अर्ज्जुन के नाश से प्रसन्न हुये हे राजा उन प्रसन्न मनहुये सेनाके लोगोंने मुखोंको ऊंचा करके सूर्य्यकोदेखा ६९ तब उसराजा जयद्रथनेभी सूर्य्यकी ओर दृष्टकरी तब सूर्य्यको उसजयद्रथके दिखाई देनेपर ७० श्रीकृष्णजी अर्जुनसे फिर यहबचनबोले कि हे भरत वंशियोंमें श्रेष्ठ तुझसे अत्यन्त निर्भय होकर सूर्य्यको देखनेवाले बीर जयद्रथ को देखो हे महाबाहो इस दुरात्माकेमारने का यहीसमयहै ७१ । ७२ शीघ्रही इसके शिरको काटकर अपनी प्रतिज्ञाकी सफलताकोकर केशवजीसे इसबचनको सुनकर प्रतापवान् अर्जुनने ७३ सूर्याग्नि के समान प्रकाशित बाणोंसे आप की सेनाकोमारा बीसबाणसेकृपाचार्यको और पचासबाणसेकर्णको ७४ और छः बाणोंसे शल्य समेत दुर्य्योधनको आठ बाणसे वृषसेनको और साठबाणोंसे जयद्रथको घायलकिया ७५ हेराजा वहमहाबाहु पांडुनन्दन इसी रीति से आपके पुत्रों को भी कठिन घायल करके जयद्रथके पासगया ७६ जयद्रथके रक्षकोंने अग्निकेसमान चाटनेवाले सन्मुखनियतहुये अर्जुनको देखकर बड़े सन्देहकोकिया ७७ हे महाराज फिर आपके सबबिजयाभिलाषी शूरबीरोंने युद्धमेंबाणोंकी धाराओंसे इन्द्रकेपुत्र अर्जुनको सींचा ७८ बहुत बाणजालोंसे ढका हुआ वहअजेय महाबाहु कौरवनन्दन अर्जुन क्रोधसे पूरितहुआ७९ इसके पीछे इन्द्रनन्दन पुरुषोत्तम अर्जुन ने सेनाके मारनेकीइच्छा से बाण जालोंको उत्पन्न किया हे राजा बीर अर्जुनके हाथसे घायल और भयभीत आपके शूरबीरोंने युद्धमें जयद्रथको त्याग किया और दो पुरुष भी साथ में न रहे ८१ वहां हमने अर्जुनके अपूर्व्व पराक्रम को देखा जो कर्म उस यशवान्ने किया वह न हुआहै न होनेवाला है ८२ अर्थात् हाथी हाथीकेसवार घोड़े घोड़ोंके सवार और सारथी

लोगोंको भी ऐसे मारा जैसे कि रुद्रजी पशुओंको मारतेहैं ८३ हे राजा उस युद्धमें हाथी घोड़े और मनुष्यों में ऐसा किसीको नहीं देखा जो कि अर्जुन के बाणोंसे घायल नहीं हुआहो८४अंधेरे और धूलसे गुप्त नेत्रवाले शूरबीर घोर मोहमें प्रवृत्तहुये और एकनेदूसरे को नहीं जाना ८५ हे भरतबंशी बाणोंसे छिदे मर्मकाल से प्रेरित वह सेनाके लोग घूमें और घूम २ कर चलायमान गिरेहुये पीड़ावान् और मृतक प्राय शरीर हुये ८६ उस बड़े भयकारी प्रलयके समान कठिनतासे पारहोनेके योग्य बड़े भयानक युद्धके बर्त्तमान होने पर रुधिरकी आर्द्रता और वायुकी तीव्रतासे और पृथ्वीको रुधिरसे आर्द्र होने पर पृथ्वीको धूलदबगई ८८ नाभि पर्य्यन्त रुधिरमें रथके चक्र डूबगये हे राजा युद्धभूमिमें आपके पुत्रोंकेमतवाले और वेगवान् ८९ टूटे अग मृतक सवारवाले हजारों हाथी अपनी सेनाको मर्दनकरते क्रंदित चिंघाड़ोंको मारते भागे ९० और अर्जुनके बाणोंसे घायल पति लोग और घोड़े जिनके कि सवार गिर पड़े थे वह सब भी भयभीत होकर भागे ९१ फैले हुये बालकवचों से रहित घावोंसे रुधिर बहाते भयभीत लोग युद्धको त्याग करके भागे९२वहां कोई तो पृथ्वीमेंदुःखी होगये कोई मृतक हाथियों में गुप्त होगये हे राजा अर्जुनने इसप्रकार से आपकी सेनाको भगाकर जयद्रथके रक्षकों को घोर शायकों से घायल किया ९४ अर्जुनने तीक्ष्ण बाणजालोंसे अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य, कर्ण, शल्य, वृषसेन, और दुर्योधनको ढकदिया ९५ हे राजा वह अर्जुन शीघ्र अस्त्र चलानेसे युद्धमें बाणोंको पकड़ता चढ़ाता खैंचता औरछोड़ता हुआ किसीदशामें भी दृष्टिमेंनहीं आया९६इसबाण चलानेवालेका वह धनुष मंडलही दिखाई पड़ा और चारों ओरको घूमतेहुयेशायक दिखाई पड़े ९७ कर्ण और वृषसेन के धनुष को काटकर भल्ल से शल्यके सारथीको रथकी नीढ़से गिराया ९८ बड़े विजयी अर्जुनने युद्धमें उन दोनों मामाभानजे अश्वत्थात्मा और कृपाचार्य्यको बाणों से अत्यन्त घायल करके ९९ और इस रीतिसे आपके महारथियों

को व्याकुल करके अग्निरूप घोरबाणको निकाला १०० इन्द्र बज्रके समान बिख्यात दिव्यअस्त्र से अभिमंत्रित सब भारकेसहने वाले सदैव मालासे पूजित बड़े बाणको १०१ बिधि पूर्व्वक बज्र अस्त्रसे मिलाकर फिर उस कौरवनन्दन महाबाहुने शीघ्रही धनुष पर चढ़ाया हेराजा उस अग्निके समान प्रकाशमान बाणकेचढ़ाने पर अन्तरिक्षमें जीवोंके बड़े शब्दहुये १०३ फिर शीघ्रता करनेवाले श्रीकृष्णजी बोले हे अर्जुन दुरात्मा जयद्रथके शिरको काट १०४ क्योंकि सूर्य्य पहाड़ों में श्रेष्ठ अस्ताचलको जाना चाहता है और जयद्रथके मारने में इस मेरे बचनको सुन १०५ राजा जयद्रथका पिता वृद्धक्षत्र नाम संसार में बिख्यात हुआ है उसने इसलोक में बहुत काल पीछे जयद्रथ नाम पुत्रको पायाहै १०६ मेघ दुन्दुभी के समान शब्दायमान शरीर रहित गुप्त बाणीने उस शत्रुहंता राजावृद्ध क्षत्रसे कहाहै कि१०७ हे समर्थ राजा वृद्धक्षत्र तेरापुत्रकुल स्वभाव और विजयकीर्त्ति बाला होगा१०८क्षत्रियोंमें अत्यन्तश्रेष्ठ और लोक में बड़ा मान्य होगा परन्तु अत्यन्त क्रोधयुक्त क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ वह पुरुष युद्धमें इसके शिरको काटेगा जोकि पृथ्वीपर दिखाई नहीं पड़ेगा शत्रुओंका पराजय करने वाला राजासिंध इस बचन को सुन बडीदेरतक ध्यान करके १०९ पुत्रके स्नेहबद्धने अपने ज्ञाति वालों से यह कहा कि जो पुरुष युद्धमें लड़नेवाले और बड़े भारके उठाने वाले १११ मेरे पुत्रके शिरको पृथ्वीपर गिरावेगा उसका भी मस्तक सौ टुकड़े होगा ११२ वृद्धक्षत्र इतना कहकर इस जयद्रथ को राज्य पर नियत करके बनको गया और उग्रतपमें नियत हुआ ११३ हे बानरध्वज अर्जुन वह तपस्वी वृद्ध क्षत्र इस स्यमन्तपचक से बाहर कठिनता से करनेके योग्य घोर तपको तपरहाहै ११४ हे शत्रुहन्ता भीमसेन के छोटे भाई भरतबंशी अर्जुन इस हेतुसे तुम इस बड़े युद्धमें महाघोर दिव्यअस्त्रसे जयद्रथके शिरको काट कर ११५ फिर उस जयद्रथ के कुंडलधारी शिर को इस वृद्धक्षत्र की गोदमें गिराओ ११६ जो तुम इसके शिर को पृथ्वीपर गिरा

ओगे तो तुम्हारे भी शिरके सौ टुकड़े निस्सन्देह होंगे ११७ जिस प्रकार कि वहतपमें युक्त राजा वृद्धक्षत्र उसको न जाने हे कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन दिव्यअस्त्रोंके आश्रयवाले तुम भी उसीप्रकार से करो इसके पीछे तुम उसके शिरको पृथ्वीपर गिराओगे हे इन्द्रनन्दन तीनोंलोकों में भी तुझको कोई कर्म करनाकठिन नहींहै और कोई बात ऐसी नहीं है जिसको तुम किसीस्थान में न करसको ११६ । १२० होठोंको चाटते हुये अर्जुनने इस वचनको सुनकर इन्द्रवज्र के समान स्पर्शवाले दिव्य मंत्रसे अभिमंत्रित १२१ सब भारके सहनेवाले सदैव सुगन्धित मालाओंसे पूजित जयद्रथके मारने के लिये धनुषपर चढ़ायेहुये बाणको शीघ्रहीछोड़ा १२२ फिर गांडीव धनुषसेछोड़ाहुआ वह बाजके समान शीघ्रगामी बाण जयद्रथके शिरको काटकर आकाशको उछला १२३ अर्जुनने मित्रोंको प्रसन्नता और शत्रुओंके दुःखके अर्थ बाणोंसे जयद्रथके उस शिरको उठाया १२४ उस समय अर्जुनने बाणोंसे जालको फैला करके फिर उन छःमहारथियोंसे भी युद्ध किया १२५ हेभरतबंशीइसके पीछे वहां हमने बड़े आश्चर्य्य को देखा जो उसबाणसे जयद्रथका शिर स्यमंतपंचकसे बाहर डाला गया १२६ हे श्रेष्ठ उसीसमय पर आपका संबन्धीवृद्धक्षत्र संध्याकररहाथा १२७ फिर श्यामकेश कुण्डलधारीजयद्रथका शिर उस बैठेहुये वृद्धक्षत्रकीगोदीमें गिराया १२८ हे शत्रुहन्ता सुन्दर कुंडलधारी वहशिर वृद्धक्षत्रका न देखा हुआ उसकी गोदीमेंगिरा १२६ हेभरतबंशी इसकेपीछे उस जपकेसमाप्त करनेवाले वृद्धक्षत्र के उठतेही वह शिर अकस्मात् पृथ्वीपर गिर पड़ा१३० हे शत्रुहन्ता उस राजाके पुत्रका शिर पृथ्वीपर गिरनेके समयही उसका भी शिरसौखंडहोगया १३१ इसकेपीछेसबसेनाके लोगोंको बड़ा आश्चर्य्य हुआ और सबने बासुदेवजीको और अर्जुनकी प्रशंसाकरी १३२ हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र अर्जुनके हाथसे राजा जयद्रथ के मारेजानेपर उस अन्धकार को बासुदेवजीने दूर किया १३३ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र आपके पुत्रोंने अपने साथियों समेत

पीछे से जाना कि यह माया बासुदेवजी की पैदा की हुईथी १३४ हे राजा आठ अक्षौहिणी सेना को मारकर बड़े तेजस्वी अर्जुन के हाथसे आपका जमाई जयद्रथ इसरीतिसे मारा गया १३५ आपके पुत्रोंने जयद्रथको मराहुआ देखकर दुःखसे अश्रुपातोंको गेरा और विजय से निराश हुये १३६ हे शत्रुहन्ता राजा धृतराष्ट्र अर्जुन के हाथसे जयद्रथ के मारेजाने पर केशवजी और महाबाहु अर्जुन ने शंखको बजाया १३७ हे भरतबंशी भीमसेन वृष्णियोंमें श्रेष्ठ युधामन्यु और पराक्रमी उत्तमौजा ने भी पृथक्२ शंखों को बजाया १३८ धर्म्मराज युधिष्ठिर ने उस बड़े शब्द को सुनकर महात्मा अर्जुन के हाथसे जयद्रथ को मारा हुआ माना १३९ इसके पीछे बाजों के शब्दोंसे अपने शूरबीरों को प्रसन्न किया और द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी वह लोग युद्धमें सन्मुख बर्त्तमान हुये १४० हे राजा इसके पीछे सूर्य्यास्त होनेपर द्रोणाचार्य्य का युद्ध सोमकों के साथ जारी हुआ वह युद्ध भी रोमहर्षण करनेवालाथा १४१ फिर सब उपायों से द्रोणाचार्य्य के मारने के अभिलाषी वह महारथी जयद्रथ के मरने पर युद्ध करनेवाले हुये १४२ फिर बिजय से मतवाले वह सब पांडव बिजय को पाकर जयद्रथ को मारकर जहां तहां द्रोणाचार्य्य से युद्ध करने लगे १४३ इसके पीछे महाबाहु अर्जुन ने भी राजा जयद्रथ को मारकर रथियों में श्रेष्ठ आपके शूरबीरों से युद्ध किया १४४ जैसे कि देवराज इन्द्र देवताओं के शत्रु असुरों को और उदय हुआ सूर्य्य अन्धकारको दूर करते हैं उसीप्रकार उस अति शूरबीर अर्जुन ने चारों ओरसे शत्रुओं को छिन्न भिन्न कर दिया और अपनी पूर्ब्ब प्रतिज्ञाको दूर किया १४५॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिजयद्रथवधेशतोपरिषट्चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४६॥

एकसौसैंतालीसकाअध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय अर्जुनके हाथसे उस बीर जयद्रथके मरने पर मेरे पुत्रोंने जोर२ किया वह सब मुझसेकहो१ संजयबोले कि हे

भरतवंशीयुद्धमेंअर्जुनकेमारेहुयेजयद्रथको देखकरक्रोधयुक्तकृपाचार्य ने २ बाणोंकी बड़ी वर्षासे अर्जुनको ढकदिया और अश्वत्थामा भी रथमें सवारहोकर अर्जुनके सन्मुखगये ३ इनरथियोंमें श्रेष्ठ दोनों ने रथकी सवारीके द्वारा दोनोंओर से तीक्ष्णबाणोंकी वर्षाकरी ४ इसप्रकार दोनोंकी बड़ी बाणवर्षासे पीड़ामान उस रथियोंमें श्रेष्ठ महाबाहु अर्जुनने बड़ीपीड़ा को पाया ५ उस युद्ध में गुरूको और गुरुपुत्रको न मारनेके अभिलाषी उस कुन्तीनन्दन अर्जुनने अस्त्रों के अभ्यासकी पूर्णताको प्रकट किया ६ न मारने के अभिलाषी अर्जुनने अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य के अस्त्रों को अपने अस्त्रों से रोककर मन्दवेगवाले बाणोंको उनदोनोंके ऊपर छोड़ा७अर्जुन से छोड़ेहुये उन बिशिखनाम बाणोंनेभी उनको अत्यन्त घायलकिया और उनदोनोंनेबाणोंकी आधिक्यतासेबड़ीपीड़ाकोपाया ८ हे राजा फिर अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान कृपाचार्य्य रथके स्थानमेंहीव्याकुल हुये और मूर्च्छाको पाया ९ सारथी बाणों से पीड़ित अपने स्वामीको अचेत जानकर और मरणप्राय समझकर दूरलेगया १० हे महाराज युद्धमें उस कृपाचार्य्य के पराजय होनेपर अश्वत्थामा जीभी अर्जुन से हटगये ११ उस बड़ेधनुषधारी अर्जुनने कृपाचार्य्य को रथके ऊपर बाणोंसे पीड़ित और अचेत देखकर बड़ा बिलाप किया १२ और अश्रुपूरित महादुःखी होकरयह बचनबोला कि बड़े ज्ञानी और इसनाशके देखनेवाले बिदुरजीने कुलके नाशकरनेवाले दुर्य्योधनके उत्पन्न होनेपर राजा धृतराष्ट्रसे यह कहाथा कि बहुत अच्छाहै इसकुल कलंकीको परलोकमें पहुंचाना चाहिये १३।१४ इससेउत्तम २ कौरवोंको महाभयउत्पन्नहागा उससत्यबक्ताका अब वहबचन बर्त्तमानहुआ १५ अब उस दुर्य्योधनके कारणसेगुरूजीको नरशय्यापर बर्त्तमानदेखताहूं क्षत्रीके आचारबल और पराक्रमको धिक्कार है १६ मुझसा कौनसा मनुष्य ब्राह्मण गुरूसे शत्रुताकरे मेरे आचार्य्य ऋषिके पुत्रहैं और द्रोणाचार्य्यके मित्रहैं १७ यह कृपाचार्य्य मेरेबाणोंसे पीड़ामान रथके स्थानपरसोतेहैं अनिच्छासे

ही मैंने बिशिखनाम बाणोंसे पीड़ामान किये १८ यह गुरूजी बैठनेके स्थानमें व्याकुल होकर मेरेप्राणोंको पीड़ादेतेहैं पुत्रके शोकसे दुःखी बाणोंसे पीड़ित १९ उस पापधर्मपर चलनेवाले मुझ क्षत्रीके बहुत बाणोंसे घायल यह गुरूजी निश्चय करके मेरे पुत्रके मरनेसे फिर मुझको शोचतेहैं २० श्रीकृष्णजी इस दशामें युक्त अपनेरथपर पड़ेहुये कृपाचार्य्य कोदेखो जो उत्तमलोग गुरुओंसे विद्याको पढ़कर २१ इसलोकमें अभीष्ट दक्षिणाओंको देतेहैं वह देवभावको पातेहैं औरनीचदुराचारीपुरुषगुरुओंसेविद्याकोलेकर २२ उनकोहीमारतेहैं वहनिश्चय करकेनरकगामीहैं मैंनेयह कर्म अवश्य नरकके निमित्त किया २३ बाणोंकी बर्षासे रथपर कृपाचार्य्यजीकोपीड़ामान करनेवाले मैंने ऐसाकिया पूर्व्वसमयमें अस्त्रविद्याको उपदेश करते समय कृपाचार्य्यने मुझसेकहाथा २४ कि हेकौरव किसीदशामेंभी गुरूपर न प्रहार करनाचाहिये इनमहात्मा आचार्य्यजीका वहबचन२५ अब युद्धभूमिमें बाणोंकी बर्षाकरनेवाला मैंकाममें न लाया उसबड़ेपूजाके योग्य मुखनमोड़नेवाले कृपाचार्य्यकेअर्थ नमस्कारहै २६ हेश्रीकृष्ण जीमुझको धिक्कार है जो मैं इनपर प्रहार करताहूं उन कृपाचार्य्यके रथकेपास इसरीतिसे अर्जुनके विलापकरनेपर २७ कर्ण जयद्रथको मरादेखकर सन्मुखगया २८ दोनों पांचाल देशी और सात्यकी अकस्मात् सन्मुखतामें गये महारथी अर्जुनसन्मुखआनेवाले कर्ण को देखकर२९हंसता हुआ बासुदेवजीसे यह बचन बोला कि यहकर्ण सात्यकीकेरथपरआताहै ३० निश्चय करके यहयुद्धमें भूरिश्रवाका मृतकदेखना नहींसहताहै हेजनार्द्दनजी जहांपरजाताहै वहांपरआप इनघोड़ोंको चलायमान करो ३१ यहकर्ण सात्यकीको भूरिश्रवाके मार्गमें नहींपहुंचावे अर्जुनके इसबचनकोसुनकर महाबाहु केशवजी ३२ समयके अनुसार इस बचनको बोलेकि हे अर्जुन यह महाबाहु अकेला सात्यकी भी कर्णके लिये बहुतहै ३३ फिर द्रौपदीके पुत्रों समेत यह यादव सात्यकी क्योंन समर्थहोगा हे अर्जुन तेरायुद्ध कर्णकेसाथ तबतक योग्यनहीं है ३४ जबतक बड़ी उल्काके समान

ज्वलित रूप इन्द्रकी शक्ति इसके पासवर्त्तमानहै हे शत्रुओंके मारने वाले यह पूजित शक्ति तेरेही निमित्त रक्षाकी जातीहै ३५ इसहेतु से कर्ण इच्छानुसार सात्यकी के सन्मुख खुशी से जाय हे अर्जुन मैं इस दुरात्माके कालको जतलाऊंगा जिससमय तू इसको तीक्ष्ण बाणसे पृथ्वीपर गिरावेगा ३६ धृतराष्ट्र बोले कि भूरिश्रवाके मरने और जयद्रथके गिराने पर कर्ण के साथ वीर सात्यकीका जो यह संग्रामहै ३७ और रथसे विहीन सात्यकी और चक्रकेरक्षक दोनों पांचालदेशी किस रथपर सवार हुये हे संजय वह मुझसे कहो ३८. संजयबोले कि बड़ेयुद्धमें जैसा२वृत्तान्त हुआहै उसकोकहताहूं आप स्थिर चित्त होकर अपने दुष्टकर्म को सुनो ३९ हे प्रभु प्रथमही श्रीकृष्णजी ने अपने चित्त से इसबात को जानाथा जैसे कि वीर सात्यकी भूरिश्रवा के हाथसे विजय करनेके योग्यथा ४० हे राजा वह श्रीकृष्णजी भूतभविष्य और वर्त्तमान इन तीनोंकालोंकी बातों को जानते हैं हे राजा उस महाबलीने इसहेतु से दारुक सारथी को बुलाकर आज्ञाकरी ४१ कि मेरा रथ बिधिके अनुसार जोड़ो देवतागंधर्व यक्ष सर्परक्षस४२और मनुष्य इनमेंसे कोईभीश्रीकृष्ण और अर्जुन के बिजय करनेको समर्थ नहींहै जिनमें मुख्यब्रह्माजीहैं उनदेवता और सिद्धोंने उनको जानाहै ४३ उनदोनोंका बड़ाप्रभाव है और जैसेवह युद्धहुआ उसकोउसीप्रकारसे कहताहूं किमाधवजी नेसात्यकीको रथसेरहित और कर्णको युद्धमें सन्नद्ध देखकर ४४ बड़े शब्दवाले शंखको बड़ेस्वरसे बजाया दारुकने उस इंगितको जानके और शंखके शब्दको सुनकर ४२गरुड़ मूर्त्ति वालेऊंचीध्वजा रखनेवाले रथको उसके पास पहुंचाया वह शिनीकापौत्र सात्यकी केशवजीकी सलाहसे उस दारुक सारथीसेयुक्त ४६ अग्नि सूर्य्यके समान रथपर सवार हुआ इच्छानुसार चलनेवाले बड़ेवेगवान् सुवर्णके सामानों से अलकृत शैव्य सुग्रीव मेघपुष्प वलाहक नाम बड़े घोड़ों से संयुक्त बिमान रूप उस रथपर चढ़कर ४७ । ४८ बहुतशायकों को फैलाता हुआ सात्यकी कर्णकेसन्मुख गया और

चक्र रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजस ४६ अर्जुन के रथको छोड़ कर कर्ण के सन्मुख गये हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णभी बाणोंकी बर्षा को छोड़ता ५० अजेय सात्यकी के सन्मुखगया उसप्रकार का युद्ध देवता गन्धर्ब और असुरों का भी पृथ्वी और स्वर्गमें नहीं सुनागया जिसको देखकर रथ घोड़े हाथी और मनुष्यों समेत सबसेना भी युद्ध करने से ठहरगई ५१। ५२ अर्थात् वह सबलोग उन दोनों के कर्मों को देखकर अचेत थे उसके पीछे सब ने भी उसबुद्धि से बाहरवाले युद्ध को देखा ५३ हे राजा उनदोनों का युद्ध और दारुक का सारथीपन गत प्रत्यागत मंडल और रथ सवार काश्यप गोत्री सारथी के कर्म से आकाशमें वर्त्तमान देवता गंधर्ब और पृथ्वी के सबमनुष्य आश्चर्य्यित होकर कर्ण औरसात्यकी के युद्ध को देखने में प्रवृत्तहुये वह दोनों पराक्रमी ईर्षाकरने वाले युद्धमें मित्रके लिये पराक्रम करनेवाले हुये ५६ हे महाराज देवताके समान कर्ण और सात्यकीने परस्पर बाणोंकी बर्षाकोबरसाया ५७ हे भूरिश्रवा और जलसिन्धके मारनेको क्षमा न करने वाले कर्णने शायकोंकी बर्षासे शिनीके पौत्र सात्यकी को घायल करके अचेत करदिया ५८ हे शत्रु विजयी शोकसे पूर्ण बड़े सर्पकी समान श्वासलेता नेत्रोंसे भस्म करता क्रोधयुक्त कर्ण ५६ तीव्रता से फिर सात्यकी के सन्मुख दौड़ा तब सात्यकी उसको क्रोधयुक्त देखकर ६० बड़ी बाणोंकी बर्षासे ऐसे युद्धकरने लगा जैसे कि हाथीके साथ हाथीयुद्ध करता है व्याघ्रके समान वेगवान् अनुपम पराक्रमी सन्मुख होनेवाले नरोत्तमोंने ६१ युद्ध में परस्पर घायल किया हे धृतराष्ट्र इसकेअनन्तर सात्यकीने अत्यन्त लोहमयी बाणों से कर्णको सब अंगोंपर फिर घायल किया और भल्लसे उसके सारथीको रथकीनीढ़से गिरादिया ६३ और तीक्ष्ण बाणोंसे उसके चारों श्वेतघोड़ों को मारा हे पुरुषोत्तम फिर ध्वजाको काटकर रथ के सौ टुकड़े किये ६४ इसरीतिसे आपके पुत्रके देखतेहुये सात्यकीने कर्णको विरथ करदिया हे राजा फिरआपके उदासरूप महा-

रथी६५कर्णकापुत्र वृषसेन मद्रदेशकाराजा शल्य और अश्वत्थामा इन तीनोंने सात्यकीको सबओरसे घेरलिया ६६ इसकेपीछे सब सेना महाव्याकुलहुई और कुछनहीं जानागया हेराजा इसप्रकार सात्यकीकेहाथसे वीरकर्णके विरथ करनेपर ६७सबसेनाओंमें बड़ा हाहाकारहुआ सात्यकीके बाणोंसे विरथ कियाहुआ कर्णभी ६८ श्वासलेताहुआ शीघ्रही दुर्योधनके रथपरसवारहुआ लड़कपनसेही आपके पुत्रकी प्रीतिको मानता ६९ और राज्य प्रदानसे की हुई प्रतिज्ञाको पूरीकरना चाहता रथपर सवारहुआ हेराजा इसप्रकार रथसे रहित कर्णको और दुश्शासनादिक आपके बीर पुत्रोंको ७० प्रबल होनेवाले सात्यकीने नहींमारा पूर्व्वसमय में भीमसेन और अर्जुनकी कीहुई प्रतिज्ञाकी रक्षा करतेहुये सात्यकी ने ७१ उनको रथसे रहित और अचेतभी किया परन्तु प्राणोंसे पृथक् नहींकिया क्योंकि भीमसेनने तेरे पुत्रोंके मारनेकीप्रतिज्ञाकरी ७२ और अर्जुन ने दूसरे द्यूतमें कर्णकेमारनेकी प्रतिज्ञाकरी इसकेअनन्तर उनकर्ण आदिकोंने सात्यकीके मारने में उपायकिया ७३ परन्तु वह सब अनेक उपायोंसेभी उस महारथी सात्यकीके मारनेको समर्थ नहीं हुये उनकेनाम अश्वत्थामा, कृतबर्मा, आदि अन्य२ महारथीथे धर्मराजके प्रियकारी परलोकके चाहनेवाले सात्यकीने एकही धनुष के द्वारा हजारों क्षत्रीलोग बिजयकिये ७५ पराक्रममें श्रीकृष्ण और अर्जुनके समान शत्रु संतापी हँसतेहुये सात्यकीने आपकी सेनाओं को विजयकिया ७६ हे नरोत्तम लोकमें श्रीकृष्णजी धनुषधारी अर्जुन और तीसरा सात्यकी इनतीनों धनुषधारियोंके विशेष चौथा कोई धनुषधारी नहीं वर्त्तमानहै ७७धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें श्रीकृष्ण जीके समान सात्यकीने बासुदेवजी के अजेय रथपर सवार होकर कर्णको रथसेहीन कर दिया ७८ अपने भुजबलसे अहंकारी वह शत्रु सन्तापी दारुक सारथी समेत कहीं दूसरे रथपरभी सवार हुआ ७९ मैं उसको सुना चाहताहूं क्योंकि तुम वर्णन करने में सावधान हो मैं जिसको असह्य मानता हूं हेसंजय उसको मुझसे

कहौ८०संजयबोले कि हे राजा जैसा वृत्तान्तहै उसको सुनो दारुक के छोटेभाई बड़ेबुद्धिमान्ने शीघ्ररीति से अलंकृत ८१ लोहे और सुनहरी बस्त्रोंसेभी अलंकृत ग्रीवा हजारों नक्षत्रोंसे जटित सिंहरूप ध्वजापताकावाले ८२ बायुके समान शीघ्रगामी सुबर्णके समानोंसे शोभित चन्द्रवर्ण और सबशब्दोंको उल्लंघन करके चलनेवाले दृढ़ और सुनहरी जड़ावके कवच रखनेवाले और घोड़ों में श्रेष्ठ सिन्धदेशी घोड़ोंसे युक्त घंटाजालोंके शब्दोंसे व्याकुल शक्ति तोमर रूप बिजली रखनेवाले ८४ युद्ध के सामान और अनेकप्रकारके शस्त्रोंसे युक्त बादलके समान गंभीर शब्द रखनेवाले रथको तैयार किया ५० सात्यकी उसरथपर सवारहोकर आपको सेनाकेसन्मुख गया दारुकभी इच्छानुसार केशवजीके पासगया८६ हेराजा शंख और गौके दुग्ध समान श्वेत सुनहरी जड़ाऊ कवच रखनेवाले बड़े वेगवान् उत्तमघोड़ोंसे और सुनहरी कक्षावाली ध्वजासे युक्तअपूर्व यंत्र और पताकासे युक्त बहुतसे शस्त्रों से पूर्ण अच्छे सारथीवाले उत्तम कर्णके रथकोभी ८७। ८८ बर्त्तमानकिया कर्णभी उसपर बैठकर शत्रुओंके सन्मुखगया यह जो२ आपनेपूछा वह सब आपसे बर्णनकिया ८६ फिरभी अपने अन्यायसे होनेवाले इस बिनाशको सुनो कि भीमसेनने आपके इकत्तीस पुत्रमारे६० सदैव कठिन युद्ध करनेवाले दुर्मुखको आदिलेकर सात्यकी और अर्जुनने हजारोंशूर बीरोंकोमारा६१ हे भरतबंशी धृतराष्ट्र इसप्रकार आपकी कुमंत्रता में भीष्म और भगदत्त आदि करके यहविनाश वर्त्तमानहुआ ६२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिकर्णसात्यकीयुद्धे शतोपरिसप्तचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः १४७॥

एकसौअरतालीसका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तब मेरे और पांडवोंके शूरबीरोंकी उसदशा के होनेपर भीमसेन अर्जुन और सात्यकीने क्याकिया १ संजय बोले कि रथसे बिहीन कर्णके बचनरूप भालोंसे पीड़ित क्रोधके बशीभूत भीमसेनने अर्जुनसे यह बचनकहा २ कि हे अर्जुन कर्ण

ने जो यह बचन आपके देखतेहुये मुझसे कहे कि हे बड़े भोजन करनेवाले बहुत उदर रखनेवाले अज्ञान अस्त्रों से अभिज्ञ युद्ध में नपुंसक बालक भीमसेन युद्ध मतकरो ३ यहबचन कर्णने बारंबारकहा ऐसेप्रकारसे कहनेवाला मेरे हाथसे मारनेके योग्यहै हे भरतवंशी मुझको उसने इसप्रकारसे कहाहै और ऐसाकहनेवाला मुझसे मारनेके योग्यहै४ हेमहाबाहु मैंने यहव्रत आपकेसाथकिया हेअर्जुन जैसा कि तेराव्रतहै उसीप्रकार निस्संदेह मेराभी व्रतहै ५ हे नरोत्तम अर्जुन उसके मारनेके निमित्त इसमेरे बचनको स्मरण करो और वह जिसप्रकारसे सत्य होय उसीप्रकारसे करो ६ उस बड़े पराक्रमी भीमसेनके उसबचनको सुनकर युद्धमें अर्जुन कुछ समीपजाकर कर्णसेबोले ७ हे अपनीप्रशंसा करनेवाले अधर्मबुद्धि निरर्थक दृष्टिवाले सूतपुत्र मेरे इन बचनोंको सुन ८ युद्धमें शूरोंके कर्म दोप्रकारकेहैं एक विजय और दूसरी पराजय युद्ध करनेवाले इन्द्रकेभी वहदोनों कर्मबिनाशवान्हैं ९ मृत्युकाचाहनेवाला इंद्रियों सेआकुल और विरथहोकर मुझसे मारनेके योग्य तुझको जानकर युद्धमें विजय करके तुमको जीवता छोड़दिया १० जो तुमने युद्धमें लड़नेवाले महाबली भीमसेनको किसी दशामें दैवयोग से विरथ करकेरूखे और अयोग्य बचनकहे ११ यह बड़ाअधर्महै और अच्छे लोगोंसे करनेके योग्यनहींहै शत्रुको विजय करके अपनी प्रशंसा नहीं करतेहैं और न कठोर बचन कहते हैं १२ नरोत्तम शूर और सन्तलोग किसीकी निन्दा नहीं करतेहैं हे सूतके पुत्रतुम प्राकृति बुद्धि रखनेवाले होकर ऐसे २ बचनोंको कहतेहो १३ युद्ध करने वाले पराक्रमी शूर और श्रेष्ठलोगोंके व्रतमें प्रीति रखनेवाले भीमसेनको जो तुमने अत्यन्त निरर्थक सुननेके अयोग्य चपलतासे अनभ्यस्त अप्रिय बचन कहे वहतेरे बचन सत्यनहींहैं सब सेनाओं के और केशवजी समेत मेरेदेखते १५ युद्धमें तू बहुधा भीमसेन विरथ कियागयाहै पांडव भीमसेनने उस २ समयपर तुमको कभी कठोर बचननहींकहा१६ जोकि तुमने भीमसेनको ऐसेअयोग्य और रूखे

वचन सुनाये और अभिमन्यु मेरी अविद्यमानतामें तुम्हारे हाथसे मारागया १७ इसहेतुसे इस पापकर्म के फलको शीघ्रपावोगे हे दुर्बुद्धीतुमने अपने नाशके लिये उसकेधनुषकोकाटा १८ हे अज्ञानी इसहेतु से भृत्यपुत्र और बांधवों समेत मेरेहाथसे तूमारनेके योग्य है तुमसबकर्मोंको करो तेरे निमित्त बड़ाभय उत्पन्न होगा १९ युद्ध में तेरेदेखतेहुये वृषसेनको मारूंगा और जो दूसरे राजालोग भी भूलसे मेरेसन्मुख आवेंगे उन सबकोभी मारूंगा मैं सत्यतासेशस्त्रों की शपथ खाताहूं हे अज्ञानी निर्बुद्धी युद्धमें अपने को बुद्धिमान् माननेवाले तुझको २१ गिराहुआ देख वह निर्बुद्धी दुर्य्योधन अत्यन्त दुःखीहोगा अर्जुनकी ओरसे कर्णके पुत्रके मारनेकी प्रतिज्ञा करने पर २२ रथीलोगोंके बड़ेकठिन शब्दहुये उसबड़ेभयकारी कठिन युद्ध के बर्त्तमान होनेपर २३ मंद किरणोंका रखनेवाला सूर्य्य अस्ताचलके पासगया हे राजा इसकेपीछे इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्ण जी युद्धके मुखपर नियत २४ प्रतिज्ञा पूरीकरनेवाले अर्जुनसे मिलकर यहबचन बोले हे विजयके अभ्यासी अर्जुन तुमने प्रारब्ध से अपनी बड़ी प्रतिज्ञाको पूर्णकिया २५ और प्रारब्धसे पापीवृद्धक्षेत्र अपने पुत्रसमेत मारागया हे भरतबंशी अर्जुन देवताओंकी सेनाभी दुर्योधनकी सेनाको पाकर २६ युद्धमें पीड़ाको पातीहै इसमेंबिचार न करनाचाहिये हे पुरषोत्तम मैं विचार करता हुआ लोकोंमें कहीं उस पुरुषको नहीं देखताहूं २७ जो इस सेनासे युद्धकरे दुर्योधन के कारणसे इकट्ठे होनेवाले बड़ेप्रभाववाले अपनी समान और अपनेसेभी अधिक बहुतसे राजालोग तुम्हारे सन्मुखहुये क्रोधयुक्त कवचधारी वहसब शूरबीर तुझको युद्धमें पाकर सन्मुख वर्त्तमान नहीं रहे २८ कोई युद्धमें रुद्र इन्द्र और यमराजकी समानता रखने वाले तेरे इसप्रकारके बलपराक्रमके करनेको समर्थनहींहुये ३० अब जिसप्रकारके पराक्रमको हे शत्रुसंतापी तूझ अकेलेने किया इसी प्रकार भाईआदि समेत दुरात्माकर्णके मारेजानेपर ३१ तुझविजय करनेवाले की जिसके कि शत्रुमारेगये फिर प्रशंसा करूंगा अर्जुनने

उनको उत्तरदिया कि हे माधवजी यहसब आपहीकी कृपासे हुआ और आगेभी सब पूराहोगा ३२ यहप्रतिज्ञा जो मैंनेपूरी कीहै इसको देवताभी कठिनतासे पूरी करसक्ते हैं उनलोगोंकी विजय आश्चर्य्य से रहितहै जिनलोगों के सहाय और साथमें हे केशव जी आप हो ३३ हे प्रभु श्रीकृष्ण जी राजा युधिष्ठिर आपकी कृपासे संपूर्ण पृथ्वीको पावेंगे यहआपकाही प्रभाव है और आपही की विजयहै ३४ हे मधुसूदनजी हमसदैव आपसे पोषणके योग्यहैं इसके पीछे ऐसे कहेहुये और धीरे २ घोड़ोंको चलातेहुये श्रीकृष्ण जीने ३५ वह बड़ीकठिन और भयकारी युद्धभूमि अर्जुनको दिखलाई ३६ श्रीकृष्णजीबोले कि युद्धमें विजयको और बिख्यात उत्तम यशको चाहते शूरराजालोग तेरेबाणोंसे मरेहुये पृथ्वीपर सोतेहैं ३७ गिरे हुयेशस्त्र और भूषणवालेघोड़े रथ और हाथियोंसे जुदे टूटे चूर्णीभूत कवचवाले उनलोगोंने बड़ीव्याकुलताको पाया ३८ सजीव निर्जीव बड़े प्रकाशित रूपोंसे युक्तहैं निर्जीव राजालोग जीवतेसे दिखाई देतेहैं ३९ उन्होंके सुनहरी पुंखबाण और नानाप्रकार के तीक्ष्ण शस्त्र सवारी और धनुष आदिकों से व्याप्त पृथ्वी को देखो ४० कवच ढाल हार कुंडलधारी हस्त त्राण मुकुट माला चूड़ामणि बस्त्र ४१ कण्ठसूत्र, बाजूबन्द, प्रकाशितनिष्क, और अन्य २ जड़ाऊभूषणोंसे पृथ्वी प्रकाशमान होरहीहै हे भरतबंशी ४२ अनुकर्ष, उपासंग, पताका, ध्वजा, बस्त्र, अधिष्ठान, ईशादण्ड, कवंधुर ४३ चूर्णकियेहुये अपूर्ब रथचक्र, अनेक प्रकारकेअक्ष, युग, योक्त्र, कलाप, धनुष, शायक, प्रस्तोम, कुथा, परिघ, अंकुश, शक्ति, भिंडिपाल, तूणीर, शूल, फरसे ४५ प्रास, तोमर, कुन्त, यष्टी, शतघ्नी, भुशुंडी, खड्ग ४६ मूशल, मुद्गल, गदा, कृपण, सुवर्णजटितकक्षा ४७ और गजेन्द्रोंकेघंटे और नानाप्रकारके सामान, माला, अनेक प्रकार के भूषण, बहुमूल्यबस्त्र ४८ इनसबटूटेहुये पदार्थोंसेपृथ्वी ऐसी शोभायमान है जैसे कि शरदऋतुका आकाश ग्रहोंसेशोभायमान होताहै पृथ्वीपर पृथ्वीकेही अर्थ पृथ्वीके स्वामी मारेगये ४९ पृथ्वी को

अपने अंगोंसे ढककर ऐसेसोगये जैसेकिलोग अपनी प्यारी स्त्रियों को छिपाकर सोतेहैं शस्त्रोंके प्रहारोंसे उत्पन्न होनेवाले गुफा मुख घावोंसे बहुतसे रुधिरको श्रवतेहुये पर्व्वतोंके शिखर समान ऐरावतके समान इनहाथियोंको ऐसेदेखो जैसे कि गन्दारूपी मुखोंके साथझिरनेवाले पहाड़होतेहैं ५०।५१ हे बीरबाणोंसे घायल पृथ्वी पर झागडालनेवाले इनहाथियोंकोदेखो और स्वर्णमयीसामानोंसे अलंकृत पड़ेहुये घोड़ोंको देखो ५२ हे तात अर्जुन गंधर्बनगर के रूप उनरथोंको जिनके कि स्वामी मारेगये ध्वजा पताका अक्ष रथ चक्रादिक टूटे और सारथी मारेगये ५३ वह कूबरयुग टूटेहुये ईशादण्ड कवन्धुरसे टूटेहुये बिमानोंके समान दीखनेवालेपृथ्वीपर टूटेहुयेदेखो ५४ हे बीर सैकड़ों हजारों मृतकपतिलोग और रुधिर से लिप्तसोतेहुये धनुषधारी और ढालबन्दोंको देखो ५५ हे महाबाहु तेरेबाणोंसे घायल शरीर और सबअंगोंसे पृथ्वीको मिलकर सोतेहुये शूरबीरोंके बालोंको देखो ५६ हे नरोत्तम दुःखसे देखनेके योग्य पृथ्वीको देखो जो कि गिरायेहुये हाथीघोड़े और रथोंसे पूर्ण रुधिर मांसरूपी बड़ी कीच रखनेवाली और राक्षस श्वान भेड़िये और पिशाचोंको प्रसन्न करनेवालीहै ५७ हेप्रभु अर्जुन युद्धभूमि में यशका बढ़ानेवाला यह बड़ाकर्म तुझीमें शोभित होताहै इसप्रकार से बड़ेयुद्धमें दैत्य दानवोंके मारनेके अभिलाषी इन्द्रादिक देवताओं मेंभीश्रेष्ठ ५८ शत्रुओंके मारनेवाले और शीघ्रतासे शत्रुओंकोपृथ्वी अर्जुनकोदिखलातेहुये श्रीकृष्णजीने अजातशत्रुयुधिष्ठिरको मिलकर जयद्रथ को मृतक हुआ बर्णन किया ५९ चमर व्यजन छत्र ध्वजा घोड़े रथहाथी अनेकप्रकार पृथक घोड़ों के परिकर्षण ६० बिचित्र कुथा बहुमूल्य सामानवाले रथ और बीरों से आच्छादित पृथ्वी को देखो मानो यह स्त्रीरूपा पृथ्वी अपर्व बस्त्रोंसे अलंकृत है ६१ अलंकृत हाथियों से गिरे हुये बहुतेरे बीरों को हाथियों समेत ऐसे देखो जैसे कि बज्र से मरे हुये पर्व्वतों के शिखरों से गिरेहुये सिंह होतेहैं ६२ संजय बोले कि इसप्रकार अर्जुन को युद्धभूमि दिख-

लाते और अपने विजयी बोरों से संयुक्त श्रीकृष्णजी ने पांचजन्य को बजाया ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः१४८॥

एकसौउनचासका अध्याय॥

संजय बोले कि जयद्रथ के मारे जाने पर उन अत्यन्त प्रसन्न श्रीकृष्ण जीने धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिर से प्रणाम पूर्व्वक मिल कर यह बचन कहा १ हे राजेन्द्र नरोत्तम तुम मृतक शत्रुओं से वृद्धिको पातेहो और आपके छोटे भाई ने प्रारब्ध से प्रतिज्ञा को पूरा किया २ इसके पीछे श्रीकृष्णजी के इसप्रकार कहने पर वह प्रसन्न चित्त शत्रु के पुरको विजय करनेवाला राजा युधिष्ठिर रथ से उतरकर ३ आनन्द के अश्रुपातों से भीजा हुआ कमल केसमान प्रभावाले उज्ज्वल मुखको साफ करके दोनों कृष्णोंसेप्रीतिके साथ मिला ४ और बोला कि हे कमललोचन तुमसे इस प्रिय बात को सुनकर मैं प्रसन्नता के अन्तको ऐसे नहीं पाताहूं जैसे कि पार होने का अभिलाषी मनुष्य समुद्र के अन्तको नहीं पाता है ५ हे श्रीकृष्णजी बुद्धिमान् अर्जुनने यह अत्यन्त अपूर्व्व कर्म किया प्रारब्ध से युद्धमें भारसे रहित हुये दोनों महारथियों को देखता हूं ६ और प्रारब्धसेहीमनुष्योंमें नीच पापी जयद्रथ मारागया और दोनों कृष्णोंने भाग्य से मेरा बड़ा हर्ष उत्पन्न किया ७ हे गोबिन्द जी आपसे रक्षित उस अर्जुन ने पापी जयद्रथ को मारकर मुझको बड़ाआनन्दित किया जिनके आप रक्षकहैं उन लोगोंका कर्मअत्यन्त अपूर्व्व नहींहै ८ हे मधुसूदनजी सब लोकके आपही नाथ और गुरूहो आपहीकी कृपासे हम शत्रुओंको विजय करेंगे ९ तुम सदैव सर्वात्मभावसे हमारे प्रिय और वृद्धिमें नियत हो हमने तुम्हारी शरण लेकर युद्ध प्रारंभ किया १० हे इन्द्र के छोटे भाई जैसे कि युद्धमें देवताओं के हाथसे असुरोंके मरनेमें इन्द्रको प्रसन्नता होतीहै उसीप्रकार आपकी कृपालुता से और अर्जुन की बीरतासे मुझको

प्रसन्नता प्राप्त हुई हे जनार्द्दन जी यह कर्म देवताओं से भी होना असंभव है ११ जो इस अर्जुनने आपके बुद्धि बल और पराक्रम के द्वारा इस कर्म्म को किया हे श्रीकृष्णजो मैंने वाल्यावस्था सेही आपके कर्मोंको सुना जो कि बुद्धि से बाहर दिव्य बड़े और बहुतहैं तभी मैंने शत्रुओं को मरा हुआ और सब पृथ्वीका प्राप्त होना जानलिया १३ हे इन्द्रियोंके स्वामी बीर श्रीकृष्णजी इन्द्रने आपकी कृपासे हजारों दैत्यों को मारकर देवताओं की ईश्वरता को पाया और स्थावर जंगम जगत् अपनी बुद्धिमें नियत जप और होमोंमें प्रवृत्तहै १४ पूर्व्बसमय में यह सब जगत् जलरूप और अन्धकार रूपथा हे महाबाहु पुरुषोत्तम फिर आपही की कृपासे यह संसार प्रकट हुआ १५ जो पुरुष सबलोकों के उत्पन्न करने वाले अबिनाशी परमात्मा श्रीकृष्णजी को देखते हैं वह कभी मोह को नहीं पातेहैं १६ हे इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजो जो भक्तजन आपहीको आदि अन्त रखनेवाला सब सृष्टिका स्वामी और अबिनाशो ईश्वर जानते हैं वह सब आपत्तियों से पार होते हैं १७जो प्रपंच से पृथक् पुररूप शरीर का अधिष्ठान परमात्मा और ब्रह्मादिक देवताओंका उत्पत्ति का कारण है उस पुरुषोत्तमके प्राप्तहोने वाले को बड़ा ऐश्वर्य्य प्राप्त होताहै १८ चारोंवेद जिसको गातेहैं और जो वेदोंमें गाया जाता है उस परमात्मा को प्राप्त होकर उत्तम ऐश्वर्य्यों को पाता है १९ हे परमेश्वर ईश्वरोंके भी ईश्वर तिर्य्यग्गामी आदिसब नरोंकेईश्वर निष्पाप श्रीकृष्णजो चिरंजीवि मार्कण्डेय ऋषि आपके चरित्रों के जाननेवाले हैं २० पूर्व्वसमय में असित देवल और महातपस्वी नारदमुनिने आपके माहात्म्य और अनुभाव को बर्णन किया और मेरे पितामह व्यासजीने भी तुमको श्रेष्ठतर कहा तुम्हीं तेजहो तुम्हीं परब्रह्म हो तुम्हीं सत्य तुम्हीं बड़े सत्य २१ तुम्हीं तेज तुम्हीं उत्तम तेज तुम्हीं जगत् के कारण तुम्हीं से यह सब जड़ चैतन्यात्मक सृष्टि उत्पन्न है २२ प्रलय के होने पर यह सब जगत् फिर तुम्हीं में लय होताहै हे जगत्पति वेदज्ञ

पुरुषों ने तुम्हीं को आदि अन्त से रहित देवता बिश्वका ईश्वर२३ धाता, अजन्मा, अव्यक्त,(अर्थात् मायासे पृथक्कहाहै) देवता भी सब सजीव जीवोंके तुझ आत्मा अनन्त बिश्वतोमुख २४ गुह्य प्रथम जगत्के स्वामी नारायण और परमदेवता और परमात्मा ईश्वर को नहीं जानते हैं २५ जोकि ज्ञानके उत्पत्ति स्थान हरि बिष्णु मोक्षाभिलाषियों के परमस्थान सबसे परे प्राचीन पुरीरूप शरीरों में बास करनेवाले प्राचीनों सेभी परेहो२६इसलोक और स्वर्गलोकके मध्य तीनोंकालोंमें प्रकट होनेवाले आपके इन अनेकप्रकारके गुण और कर्मों की संख्या का करनेवाला यहां वर्त्तमान नहीं है २७ हम सब ओरसे ऐसे रक्षाके योग्य हैं जैसे कि देवता इन्द्र से रक्षा के योग्य होतेहैं इन्हीं हेतुओं से सब गुणसम्पन्न तुम हमलोगों के शुभचिन्तक निश्चय कियेगये २८ इसरीति से धर्मराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजीकी स्तुति की तब जनार्दन श्रीकृष्णजी यह योग्य बचन बोले २९ आपके उग्रतप और उत्तम धर्म साधुतापूर्व्वक सरलपन से पापी जयद्रथको मारा ३० हे पुरुषोत्तम तेरीकृपासे संयुक्त होकर इसअर्जुन ने हजारों शूरबीरों को मारकर जयद्रथ को मारा ३१ कर्म भुज बल निर्भयता शीघ्रता और बुद्धि की दृढ़ता में अर्जुन के समान कोई नहीं है ३२ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ जो यह तेरा भाई अर्जुन है उसने युद्धमें सेना का नाश करके जयद्रथ के शिरको काटा ३३ हे राजा इसके पीछे प्रभु युधिष्ठिर ने अर्जुन से मिलकर और उसके मुखको साफकर बिश्वास दिया कि हे अर्जुन तुमने बहुत बड़ा कर्म किया है यह कर्म देवताओं समेत इन्द्रसे भी सहनेके योग्य नहीं है ३५ हे शत्रुहन्ता तुम प्रारब्ध से भाररहित मृतक शत्रुवाले हो और प्रारब्ध से पापी जयद्रथ को मारकर यह तुम्हारी प्रतिज्ञा सत्यहुई ३६ बड़े यशस्वी राजा युधिष्ठिर ने इसप्रकार कहकर पवित्र सुगन्धित हाथसे अर्जुन की पीठको स्पर्श किया ३७ इसरीतिसे कहेहुये वह दोनों महात्मा श्रीकृष्णजी और पांडव अर्जुन राजा युधिष्ठिरसे बोले३८पापी राजा जयद्रथ आपको

क्रोधाग्नि से भस्महुआ और युद्धमें दुर्य्योधनकी बड़ीसेना भी ३९ मरी और मारीजातीहै और मारीजायगी हे शत्रुकेविजयकरनेवाले भरतबंशी हे कौरव आपकेही क्रोधसे मारेगये ४० हे बीर दुर्बुद्धी दुर्य्योधननेत्रोंसेही नाशकर्त्तारूपतुमको क्रोधयुक्तकरके युद्धमें मित्र बांधवों समेत प्राणोंको त्याग करेगा ४१ पूर्वसमयमें देवताओंसे भी बड़ी कठिनतासे विजय होनेवाले कौरवोंके पितामह भीष्मजी आपकेक्रोधसे घायल शरशय्यापर वर्त्तमानहोकर शयनकरतेहैं ४२ युद्धमें उन शत्रुहन्ताका विजय करना बड़ा कठिनथा वहभी मृत्युके वशीभूतहुये हे बड़ाई देनेवाले पांडव तुम जिसपर क्रोधयुक्तहो ४३ उसका राज्य प्राण लक्ष्मी पुत्र और अनेकप्रकारके सुख यह सब बिनाशको पावेंगे ४४ हे शत्रुसंतापी सदैव तुझ राजधर्ममें प्रवृत्तके क्रोधयुक्त होनेपर कौरवोंको पुत्र पशु और बांधवों समेत नाशहुआ मानताहूं ४५ उसके पीछे बाणोंसे घायल महाबाहु भीमसेन और महारथी सात्यकी बड़े गुरूको दंडवत् करके ४६ पांचाल देशियोंसे आवृत पृथ्वीपर खड़े हुये उन बड़े धनुषधारी प्रसन्न चित्त हाथ जोड़े हुये आगे नियत दोनों बीरोंको देखकर ४७ युधिष्ठिरने उन दोनों भीमसेन और सात्यकीको आशीर्बाददिये प्रारब्धसे उनदोनों शूरोंको सेनासागर से पारउतरे ४८ द्रोणाचार्य्यरूपी ग्राहसेदुर्गम्य कृतबर्मारूपी समुद्रसे उत्तीर्ण देखताहूं और प्रारब्धसे युद्धमें पृथ्वी पर सब राजालोग विजय किये ४९ प्रारब्धसे युद्धमें तुम दोनोंको भी विजयी देखताहूं प्रारब्धहीसे महाबली कृतबर्मा और द्रोणाचार्य्यको युद्धमें विजय किया ५० प्रारब्धसेही युद्धमेंकर्णभी बाणोंसे पराजय कियागया हे पुरुषोत्तमो तुम दोनोंके हाथसे शल्यने भी युद्धसे मुखफेरा ५१ प्रारब्धसे रथियों में श्रेष्ठ युद्धमें कुशल तुम दोनों को कुशलपूर्व्वक युद्धसे लौटकर आनेवाला देखताहूं ५२ मैं प्रारब्धसेही अपने आज्ञाकारी अधिकार और प्रतिष्ठाके आधीन सेनासागरसे पारहोनेवाले दोनोंबीरोंको देखताहूं ५३ मैं प्रारब्धसेही युद्धमें प्रशंसनीय पराजय न पानेवाले अपने प्राणों से भी

प्यारे दोनों बीरोंको देखताहूं ५४ राजा युधिष्ठिर उन सात्यकी और भीमसेन दोनों पुरुषोत्तमों से यह कहकर मिला और बड़े आनन्दके अश्रुपातों को छोड़ा ५५ हे राजा इसके पीछे पांडवोंकी सबसेना अत्यन्त प्रसन्न होकर युद्धमें प्रवृत्त होगई और युद्धके निमित्त मन किया ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः १४९ ॥

एकसौपचासका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा जयद्रथके मरनेपर आपका पुत्र दुर्योधन अश्रुपातों से युक्त महादुःखी होकर शत्रुओंके विजय करने में अधैर्य पूर्बक असाहस हुआ १ दुर्मन टूटी डाढ़वाले सर्पकी समान श्वासलेनेवाले दुष्टरूप सबलोकके अपराधी आपके पुत्रने बड़ी पीड़ाको पाया २ युद्धमें अर्जुन भीमसेन और सात्यकी से कियेहुये अपनी सेनाके महाभयकारी नाशको देखकर ३ उसरूपान्तरवाले दुर्बल दुःखी अश्रुपातोंसे भरे नेत्र दुर्य्योधनने माना कि इस पृथ्वी पर अर्जुनकी समान कोई शूरबीर नहींहै ४ हे श्रेष्ठ उसने बिश्वास करलिया कि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुनके सन्मुखहोनेको न दोणाचार्य न कर्ण न अश्वत्थामा और न कृपाचार्य्यजी समर्थ हैं ५ अर्जुन ने मेरे सब महारथियोंको विजय करके युद्धमें जयद्रथको मारा और युद्धमें किसीने भी नहींरोंका ६ यह क रवों की बड़ी सेना सबओरसे नाशमानहै इसका रक्षक साक्षात् इन्द्रभी नहीं होसक्ता जिसके कि आश्रयको लेकर युद्धमें शस्त्र चलावें वह कर्णयुद्धमें विजयकिया गया और जयद्रथ मारागया ८ मैंने जिसके पराक्रमका आश्रय लेकर सन्धि चाहनेवाले श्रीकृष्णजीको भी तृणके समान जाना वह कर्ण भी युद्धमें पराजय हुआ ९ हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्र इस प्रकार दुखित चित्त और सबलोक का अपराधी आपका पुत्र दर्शन करने को द्रोणाचार्य्यके पास आया १० वहां आकर उसने कौरवों के उस संपूर्ण नाशको और डूबजानेवाले आपके पुत्रों का और वि-

जय करनेवाले शत्रुओंका भी सब वृत्तान्त वर्णन किया ११ दुर्य्यो-धनबोला कि हे महाराजोंके आचार्य्यजी मेरे पितामह भीष्मजीको आदि लेकर इस बड़े बिनाशको देखो १२ यह लोभी अभीष्ट सिद्ध करनेवाला शिखण्डी उन भीष्मपितामह को मारकर सब पांचालों समेतसेनाके आगे वर्त्तमान है १३ और अर्जुनने सात अक्षौहिणी सेनाकोमारकर आपके दूसरेशिष्य कठिनता से पराजय होनेवाले जयद्रथ को मारा १४ मेरी विजय चाहनेवाले कर्म्म कर्त्तायम-लोकमें पहुंचेहुये शुभचिन्तक लोगोंकी अऋणताको मैं कैसे पाऊं-गा १५ जो राजा लोग इस पृथ्वी को मेरे निमित्त चाहते हैं वह संसारवाली पृथ्वीकेराज्योंकोछोड़कर पृथ्वीपरसोतेहैं १६ मैं महा-नपुंसक मित्रों के ऐसे बिनाशको करके हजार अश्वमेध यज्ञोंके द्वारा भी अपने पवित्रहोनेको नहींउत्साह करताहूं १७ मुझलोभी पापी धर्म्मके गुप्त करनेवाले की विजयको पुरुषार्थसे चाहनेवाले क्षत्रियोंने यमलोकको पाया १८ राजसभामें पृथ्वी मुझ दुराचारी मित्रोंके दुखदाई और शत्रुको अपनेमें प्रवेशकरनेको क्यों न विवर रूप हुई १९ जो मैं राजाओंके मध्यमें रुधिरलिप्त शरीर युद्धभूमि में घायल और शयन करनेवाले भीष्मपितामह की रक्षा करनेको समर्थ नहीं हुआ २० वह परलोक के विजय करनेवाले कठिनता से पराजय होनेवालेभीष्मजी मुझ नीच पुरुष और मित्रसे शत्रुता करने वाले अधर्मी से मिलकर क्या कहेंगे २१ प्राणों को त्याग करके मेरेही निमित्त युद्धमें प्रवृत्त सात्यकीके हाथसे मारे हुये बड़े धनुषधारी महारथी जलसिन्धको देखो२२ काम्बोज, अलम्बुष, और अन्य बहुत शुभचिन्तकों को मृतक देखकर अब जीवन से मुझको क्याप्रयोजनहै अर्थात् मेरा जीवन वृथाहै २३ मेरे अर्थ जो जीवन से प्रीति रहित मुखोंके न फेरनेवाले और मेरे शत्रुओंके विजय करने को बड़े २ उपायोंसे उद्योग करनेवाले शूर मारेगये २४ हे शत्रुसन्तापी अब मैं बड़ी सामर्थ्यसे उनको अऋणताको पाकर यमुनाजी में उनको जलसे तृप्त करूंगा २५ हे सब शास्त्रधारियोंमें

श्रेष्ठ गुरूजी मैं आपसे सत्य२ प्रतिज्ञा करताहूं और यज्ञादिक कर्म और वापिका आदि बनानेके धर्म्मोंके फल और पुत्रों को भी शपथ खाताहूं २६ कि मैं युद्धमें उन सब पांचालोंको पांडवों समेत मार करशान्तीको पाऊंगा अथवा युद्धमें उनकी सालोक्यताको पाऊंगा २७ सो मैं वहीं जाऊंगा जहांपर कि मेरे निमित्त युद्धमें अर्जुनसेलड़कर वह पुरुषोत्तम मारेगयेहैं २८ हे महाबाहु अब मेरे सहायक जिनको कि किसीप्रकारसे मैंने बिरोधी नहीं बनाया वह सब मेरा कल्याण नहींचाहते वहसब जैसा किपांडवोंको चाहतेहैं उस प्रकार मुझको नहीं मानते २९ राजा सत्यसिन्धने युद्धमें अपने आप अपनी मृत्युको उत्पन्नकिया और आप शिष्यतासे अर्जुनके मारनेके बिचार को त्यागकरतेहैं ३० इसहेतुसे कि जो बीर हमारी विजय चाहतेथे वह युद्धमें मारेगये अब कर्णको भी मैं अपनी विजय चाहनेवाला देखताहूं ३१ जो मन्दबुद्धी मित्रको मुख्यतासे न जानकर मित्रके प्रयोजन में संयुक्तहोताहै उसका प्रयोजन नाशको पाताहै ३२ बड़े शुभचिन्तकों ने मुझ लोभसे लोभी पापी कुटिल और धनके अभिलाषी का वहकर्म भी उसीरूपवाला किया ३३ पराक्रमी भूरिश्रवा, जयद्रथ, अभिषाह, शूरसेन, शिवय, और वशातय, मारेगये ३४ अब मैं वहां ही जाऊंगा जहांपर युद्धमें मेरे अर्थ अर्जुनसे लड़कर वह पुरुषोत्तम मारेगये ३५ उन पुरुषोत्तमोंके बिना मेरा भी जीवन निरर्थकहै हे पांडवोंके आचार्य्यजी आप हमको आज्ञादो ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचशततमोऽध्यायः १५० ॥

एकसौइक्यावनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात युद्धमें अर्जुनके हाथसे राजासिन्धुके और भूरिश्रवाके मारेजाने पर तुम्हारा चित्तकैसाहुआ १ और कौरवों की सभामें दुर्य्योधनसे उसप्रकार के बचनों को सुनकर द्रोणाचार्य्यने उसके अर्थ कौनसा उत्तम बचन कहा हे संजय वह सब मुझसे कहो २ संजयबोले कि हे भरतबंशी जयद्रथ और भूरिश्रवा

को मरा हुआ देखकर आपकी सेनाके बड़ेशब्द हुये ३ उन्होंने आपके पुत्रकी सब सलाहों को बुरा कहा जिस सलाहसे सैकड़ों उत्तम क्षत्री मारेगये ४ फिर दुःखित चित्त अत्यन्त पीड़ामान द्रोणाचार्य्य आपके पुत्रके उस बचनको सुनकर एक मुहूर्त्त ध्यान करके बोले ५ कि हे दुर्य्योधन अर्जुन को युद्धमें सदैव अजेय कहनेवाले तू अपने ऐसे बचन बाणोंसे क्यों घायल करताहै ६ हे कौरव युद्ध में इतनीही बातसे अर्जुन का जाननासम्भवहै जो अर्जुन से रक्षित शिखण्डीने भीष्मजीको मारा ७ मैंनेयुद्धमें देव दानवोंसे भी अजेय बीरोंको मराहुआ देखकर तभी यह जानलिया था कि यह भरतबंशियों की सेना नहींहै ८ हम मानतेहैं कि जो तीनोंलोकों में सब मनुष्यों में सबका शूरहै उस शूरबीरके गिरने पर किसशेष बचेहुये शूरकी संख्या और विद्यमानता करें ९ हे तात कौरवीय सभामें जिन पाशोंको शकुनीलेताथा वह पाशे नहींथे किन्तु शत्रुओंके तपानेवाले बाणथे १० हे तात वही बाण अर्जुनसे चलायमानहोकर हमको मारतेहैं उससमय विदुरजीके जेताने और समझानेपर भी तुमने उन बाणोंको नहीं जाना ११ शुभचिन्तकतासे तुम्हारी कुशल के निमित्त कहनेवाले महात्मा पंडित विदुरजीके जिन २ कल्याण रूप बचनोंको अपने द्यूतमें आसक्त होकर तुमने नहीं सुना १२ हे दुर्य्योधन तेरेही कारण उसबचन के अपमान से यह महाभयकारी नाश वर्त्तमान है १३ जो अज्ञानी पुरुष सत्यकर्मी शुभचिन्तकों के परिणाम कुशल रूप बचनोंको तिरस्कार करके अपने मतको करताहै वह शीघ्रही शोचके योग्य होताहै १४ जो कुलमें उत्पन्न और सब धर्मोंपर कर्म करनेवाली उस दशाके अयोग्य द्रौपदीको हमारे देखतेहुये उस सभामें बुलाकर अप्रतिष्ठा पूर्व्वक निरादर किया १५ हे गांधारीके पुत्र उस अधर्मका यह बड़ाफल प्रकटहुआहै जो ऐसा न होय तो परलोकमें तुम इससे भी अधिकपापोंको भोगो १६ जोउनपांडवोंको द्यूतमें अन्याय पूर्व्वक विजय करके उन मृगचर्मधारियों को बनबासदिया १७ अपनेको

ब्राह्मण कहनेवाला मुझसा दूसरा कौनसा मनुष्य उनसे शत्रुता करे जोकि पुत्रोंके समान सदैव धर्मके आचरण करने वालेहैं १८ तुमने शकुनी के साथ कौरवोंकी सभामें धृतराष्ट्रके मतसे पांडवोंके इस क्रोधको अपने सन्मुख नियत किया दुश्शासन से युक्त और कर्णसे मिले हुये कर्म करनेवाले तुमने बिदुरजीके बचन को तिरस्कार करके उसक्रोधको बारंबार दृढ़ किया १९।२० और तुमसब सावधानीसे कर्ममें प्रवृत्तहुये जिन्होंने जयद्रथ को आश्रय होकर अर्जुनको घेरलिया वह तुम्हारे मध्यमें से कैसे मारागया २१ कर्ण कृपाचार्य्य शल्य अश्वत्थामा और तेरेजीवतेजी राजा सिन्धुने कैसे मृत्युको पाया २२ जयद्रथ की रक्षा करनेको युद्ध करनेवाले सब राजालोग कठिन पराक्रमको करतेथे उस पर भी वह तुम्हारे बीचमेंसे कैसे मारागया २३ हे तात राजा जयद्रथ अर्जुनसे अपनी रक्षाको अधिकतर मुझमें और तुझमें अभिलाषा पूर्व्वक आशा रखता था २४ इसके पीछे अर्जुन से उसके रक्षित न होनेपर अपने जीवन का कोई स्थान नहीं देखताहूं २५ उस शिखण्डीसमेत पांचाल देशियोंके बिनामारे धृष्टद्युम्नके अपराधमें आपको मग्न हुये के समान देखता हूं २६ हेभरतबंशी सो तुम राजा जयद्रथको रक्षामें असमर्थ होकर मुझ दुखीको बचन रूपी बाणोंसे क्यों घायल करतेहो २७ सुगम कर्मी सत्यप्रतिज्ञ भीमसेनके स्वर्णमयी कवचको युद्धमें देखताहुआ कैसे बिजयकी आशा करताहै २८ जिस स्थान पर महारथियोंके मध्यमें राजा जयद्रथ और भूरिश्रवा मारे गये वहां शेषबचेहुओंको क्या मानतेहो २९ हेराजा कठिनतासे पराजय होनेवाले जो कृपाचार्य्य जीवते हैं और राजा सिन्धुके मार्गको नहींगये मैं उनकी प्रशंसा करताहूं ३० हे कौरव इसस्थान पर तेरे छोटे भाई दुश्शासनके देखतेहुये कठिनकर्मी युद्धमें इन्द्र समेत देवताओं से अजेयके समान भीष्मजीको मृतकप्राय देखा तबमैंने यह चिन्ताकरी कि यह पृथ्वीतेरी नहींहै ३१। ३२ हेभरत बंशी अब पांडव और सृंजियोंकी यह सेना मुझकर एक साथही

चढ़ाई करतोहै ३३ हेधृतराष्ट्र के पुत्र मैं सब पांचालोंको बिनामारे हुये कवचको शरीर से नहीं उतारूंगा और युद्धमें तेरेप्रिय कर्मको करूंगा३४ हेराजा तुममेरेपुत्र अश्वत्थामासे कहो कि युद्धमेंजीवन की रक्षा करने वाले सोमकक्षत्री उसको छोड़देने के योग्य नहीं है अर्थात् सबको मारे ३५ पिताकी जो आज्ञा होय उस बचन पर काम करो अर्थात् आज्ञाका प्रतिपालनकरो दया जितेन्द्रीपन सत्य और सत्यवक्तापने में नियतहो ३६ उससे बारंबार कहदो कि धर्म अर्थकाममें सावधान और धर्मको उत्तम माननेवाला अश्वत्थामा धर्म अर्थ को पीड़ा न देताहुआ युद्ध कर्मोंकोकरे ३७ नेत्र मन और सामर्थ्य इनसब बातोंसे ब्राह्मण पूज्यहैं इनका अप्रियकभी नकरना चाहिये निश्चयकरके वह प्रज्वलित अग्निके समानहैं ३८ हेशत्रु-हन्ता राजादुर्य्योधन तेरे बचनरूपी बाणोंसे पीड़ामान होकर मैं बड़े युद्धकरनेके अर्थ सेनाओंमें प्रवेश करताहूं हे दुर्य्योधन जो तुम समथहोतो अबतुमइससेनाकी रक्षाकरो यहक्रोधयुक्तकौरव सृंजय रात्रिमें भी युद्धकरेंगे ३९। ४० द्रोणाचार्य्य इसप्रकार से कहकर क्षत्रियोंके तेजों को आकर्षण करते पांडव और सृंजियोंपर ऐसेदौड़े जैसेकि चन्द्रमा नक्षत्रोंके तेजोंको आकर्षण करता दौड़ताहै ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकपंचाशत्तमोऽध्यायः १५१ ॥

एकसौबावनका अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे द्रोणाचार्य्य की आज्ञानुसार क्रोध के बशीभूत राजा दुर्य्योधनने युद्धकेनिमित्त मनसेबिचारकिया १ तब आपका पुत्र दुर्य्योधन कर्णसेबोला कि देखो श्रीकृष्णजीकोसाथमें रखनेवाले पांडव अर्जुनने गुरूजीके बनायेहुये उस व्यूहको जोकि देवताओंसेभी तोड़ना कठिनथातोड़कर तुझ उपाय करनेवाले और महात्मा द्रोणाचार्य्य २।३ और सेनाके बड़े २ उत्तम धनुषधारियों के देखते हुये सिन्धुकेराजा जयद्रथको गिराया हेराधाके पुत्र कर्ण देखो युद्धमें अत्यन्त उत्तमराजा लोग पृथ्वीपर ४ अकेले अर्जुनके

हाथसे ऐसेमारेगये जैसे कि सिंहके हाथसे दूसरे हजारोंमृग महात्मा द्रोणाचार्य्यके और मेरे उपाय करनेपर ५ इन्द्रकेपुत्रअर्जुनने सेनाको बहुतही न्यून करदिया अर्थात् थोड़ेही शेष रहगयेहैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य के उस अद्वितीय व्यूहको जोकि कठिनतासे तोड़नेकेयोग्यथा तोड़कर अर्जुनने जयद्रथको मारकर अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण किया ७ हे कर्ण युद्धमें अर्जुनके हाथसे मारेहुये और पृथ्वीपर गिराये हुये उन बहुत राजाओंको जोकि इंद्रके समान पराक्रमीथे सोतेहुये देखो ८ हेवीर पांडव अर्जुन इस उपाय करनेवाले और अपनी विजय चाहनेवाले पराक्रमी द्रोणाचार्य्यके कठिनतासेतोड़नेकेयोग्य व्यूहको कैसे तोड़सका ९ हे शत्रुहन्ता कर्ण यहपांडवअर्जुन महात्मा आचार्य्यका सदैवसे प्यारा है उसी हेतुसे बिना युद्धकियेही उसको द्वारदेदिया १० शत्रुसंतापी द्रोणाचार्य्यने जयद्रथ के अर्थ निर्भयता देकरअर्जुनके निमित्त द्वारकोदियामेरी दुर्भाग्यताको देखो ११ किजो प्रथमही मैंजयद्रथकोघरजानेकी आज्ञादेदेतातो यहमनुष्योंका नाश काहेको होता १२ हेमित्र द्रोणाचार्य्यसे निर्भयताको पाकर मुझअभागेने उसजीवन की इच्छा करनेवाले जयद्रथको घरजानेसेरोका १३ अब मेरेभाई चित्रसेन आदिक युद्धमें भीमसेनको पाकर हमसबदुरात्माओंके देखतेहुये उसके हाथसे नाश हुये १४ कर्णबोले कि आचार्य्यको निन्दामतकरो यह ब्राह्मण अपने जीवनको त्याग करके सामर्थ्य बलऔर उत्साहकेसमान युद्धकरता है १५ जोअर्जुन उनको उल्लंघनकरकेसेनामेंगयाइसमें आचार्य्यकाकिसीप्रकारकाभी दोषनहींहै महाकर्मी सावधान तरुण शूरवीर अस्त्रज्ञ तीक्ष्णसामर्थ्य और अभेद्य कवचसे अलंकृत शरीर पराक्रमी भुजाधनसे अहंकारी अर्जुन जोदिव्य अस्त्रोंसेयुक्त बानररूपध्वजाधारी उसरथपरजिसकेकि घोड़ोंको श्रीकृष्णजीने पकड़ाथासवार होकर और अजरदिव्य गांडीव धनुषकोलेकरतीक्ष्ण बाणोंको बरसाता द्रोणाचार्य्यकेसमीपहोजाकर सन्मुखहुआ १८।१९ और हेराजा उसने यह बिचार किया कि आचार्य्यजी वृद्धहैं शीघ्रतासेनहीं चलसक्तेहैं औरभुजाके परिश्रम और

कर्मकरनेमें असमर्थहैं २० इसहेतुसे श्वेतघोड़े और श्रीकृष्णजी को सारथीरखनेवाला अर्जुनइसप्रकारसे उल्लंघनकरनेवालाहुआइसमें उनद्रोणाचार्य्यका अपराधनहीं देखताहूं २१ युद्धमेंइनअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्यसे पांडवोंको मैं अजेयमानता हूं उसी प्रकार अर्जुनने इनको उल्लंघन करके सेनामें प्रवेश किया २२ मैं मानताहूं कि दैवका उपदेश कियाहुआ कर्म कहीं भी बिपरीत नहीं बर्त्तमान होताहै हेसुयोधन इसीकारणसे बड़ीसामर्थ्यके साथ हमलोगोंके युद्धकरतेहुये भी युद्धमें जयद्रथ मारागया यहां युद्ध भूमिमें तेरेसाथ बड़े उपाय करनेवाले हमलोगोंका प्रारब्ध बड़ा कहागयाहै २४ वहदैव सदैवछल औरपराक्रमसे कर्मकरनेवाले हमलोगोंके उपायआदिकों को नाशकरके हमकोपीछे करताहै दैवसे घायल पुरुष किसीस्थान पर भी जो कुछ कर्म करताहै वहकियाहुआकर्म दैवसे न्यून हानिकारकहोताहै २६ निश्चय करनेवाले मनुष्यसे जोकर्म सदैव करनेके योग्यहै वह निस्सन्देह करना उचितहै उसकी सिद्धी दैवमें नियत है २७ हे भरतवंशी पांडव छलसे और बिषके देनेसे भीठगे और लाखकेगृहमें भस्मकियेगये और द्यूतमें भी पराजयकिये २८ और राजनीतिको छोड़कर बनकोभेजे इन उपायोंसे कियाहुआ वह कर्म दैवसे निष्फलहुआ २९ दैवको निःप्रयोजननकरके उपायमें प्रवृत्त होकर युद्धकरो तेरे और उनके उपाय करतेहुये दैवमार्ग्ग से प्राप्त होगा ३० हे बीर दुर्य्योधन कहीं उन लोगोंका कर्म्म श्रेष्ठ बुद्धिके अनुसार और तेरा कर्म्म दुष्ट बुद्धीके विपरीत देखनेमें नहीं आता है ३१ सुकृत और दुष्कृत कर्मका प्रमाण दैवहै दृढ़ कर्मवाला दैव शयन करनेवालों के मध्यमें भी जागताहै ३२ आपकी सेना की संख्या और बीरोंकी संख्याअसंख्यथी इतनीपाण्डवोंकी न सेनाथी और न बीरथे इसरीतिसे युद्धजारीहुआ ३३ तुम्हारीओरके बहुतसे प्रहारकर्त्ता उनथोड़ेसे प्रहारकर्त्ताओं से नाशकियेगये मैं निस्सन्देह कहताहूं कि दैवीकर्महै जिस्से उपाय और उद्योग सब नष्टहुये ३४ संजय बोले कि हे राजा इसरीतिके बहुतसे बचनोंको कहते पांडवों

को सेना युद्धमें दिखाईपड़ी ३५ हे राजा आपके कुविचार होनेपर आपके शूरबीरोंका युद्ध उन दूसरे शूरबीरोंके साथहुआ जो कि रथ और हाथियों से संयुक्तथे ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरि द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः १५२ ॥

एकसौतिरपनकाअध्याय॥

संजयबोले कि हेराजा आपकी वह बड़ीहाथियोंकी सेनापांडवी सेनाको उल्लंघनकर सब ओर से युद्धकरनेलगी १ यमलोक और बड़े परलोकके निमित्त दीक्षित पांचालदेशी और कौरव परस्परमें युद्धकरनेलगे २ शूरोंने शूरोंके साथ भिड़कर युद्धमें बाणतोमर और शक्तियोंसे घायलकिया और यमलोकमें पहुंचाया ३ परस्पर मारनेवाले रथियोंका बड़ायुद्ध जोकि रुधिरके गिरनेसे भयका उत्पन्न करनेवाला था रथियोंके साथजारीहुआ ४ हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त मतवाले हाथियोंने परस्पर सन्मुख होकरएकनेदूसरेको चीरडाला ५ और कठिन युद्धमें बड़े यशके चाहनेवाले अश्वसवारोंने प्रास शक्ति और फरसोंसे अश्वसवारों को घायल किया ६ हे महाबाहु राजाधृतराष्ट्र शस्त्रोंको धारणकियेहुये सदैव पराक्रममें उपाय करनेवाले सैकड़ों पतियोंने परस्पर पीड़ामानकिया ७ हेश्रेष्ठ हमने गोत्रनाम और कुलोंके सुननेसेही पांचाल और कौरवोंको जाना ८ युद्धमें निर्भयके समान घूमनेवाले उन शूरबीरोंने बाणशक्ति और फरसोंसेपरस्पर परलोकमेंभेज९हे राजासूर्य्य केअस्तहोनेपर भी दशो दिशाओंमें उन्होंके छोड़ेहुये हजारोंबाण अच्छे प्रकारसे प्रकाशमान नहीं हुयेथे १० हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्र उसप्रकारसे पांडवों के युद्ध करनेसे दुर्य्योधनने उससेनाकोमझाया ११ जयद्रथ केमरनेसे अत्यन्तदुखी दुर्य्योधन चित्तसे मरना बिचार करसेनामें प्रविष्टहुआ १२ रथके शब्दसे शब्दायमान पृथ्वीको कंपाता आपकापुत्र पांडवोंकी सेनाके सन्मुख वर्त्तमान हुआ १३ हे भरतबंशी उसकी और उन्होंकी वह कठिन चढ़ाई सबसेनाओंको बड़ीनाश-

कारीहुई १४ जिसप्रकार किरणोंसे तपानेवाले सूर्य्यको दिनके मध्यमें नहीं देखसक्ते उसीप्रकार पांडव भरतबंशियोंके युद्धमेंबाण-रूप किरणोंसे अत्यन्त तपानेवाले आपके पुत्रको सेनाके मध्यमें १५ देखनेको समर्थ नहींहुये उस महात्मासे घायल पांचालदेशी भागने में प्रवृत्तचित्त और शत्रुकेबिजय करनेमें असाहसी १६ चारोंओर को दौड़े पांडवी सेनाके लोग आपके धनुषधारी पुत्रके सुनहरीपुंख वाले साफनोंकके बाणोंसे १७ पीड़ामान शीघ्र गिरपड़े आपकेशूरों ने युद्धमें ऐसेप्रकारके कर्मको नहींकिया १८ हेराजा जैसा किआप-के पुत्रने कर्मकिया युद्धमें वहसेना आपके पुत्रसे ऐसे मथीगई १९ जिसप्रकार प्रफुल्लित कमलरखनेवाली कर्मलिनी चारोंओर हाथी से बिलोडनको जाती है और जिसप्रकार पानीसे रहित कमलिनी सूर्य्यके कारणसे प्रभारहितहो २० उसीप्रकार आपके पुत्रके तेजसेपांडवी सेनाभी होगई हे भरतबंशी आपकेपुत्रके हाथसेपांड-वी सेनाको घायल और मरीहुई देखकर२१ सबपांचालदेशी जिनमें मुख्य भीमसेनथा सन्मुखगये उसने भीमसेनको दशबाणोंसे नकुल और सहदेव को तीन२ बाणोंसे २२ विराट और द्रुपदको छःबाण सेशिखण्डीको सौबाणसे धृष्टद्युम्नको सत्तरबाणोंसेधर्मकेपुत्रयुधि-ष्ठिरको सातबाणसे २३ केकय और चन्देरी देशियोंको तीव्र धार वाले बहुत बाणोंसे सात्यकीको पांचबाणसे और द्रोपदीके पुत्रोंको तीन २ बाणोंसे घायलकरके २४ घटोत्कचको युद्धमें घायलकरता हुआ सिंहकेसमान गर्जना करी और बड़े युद्धमें दूसरे सैकड़ों शूर बीरोंको हाथियोंकेसाथ २५ उग्रबाणोंसे ऐसेकाटा जैसे कि क्रोध युक्त कालसृष्टिको संहार करताहै हे राजा उसआपके पुत्रके बाणों स घायल वह पांडवी सेना २६ युद्धसेभागी हेराजा बड़े युद्धमें सूर्य्यके समान तपानेवाले उस कौरवराज दुर्योधनके देखनेको २७ पाण्डवी सेनाके लोग देखने को भी समर्थ नहीं हुये हे राजाओं में श्रेष्ठ इसकेपीछे क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिर २८ आपके पुत्रकोमारने की इच्छासे कौरवपति दुर्योधनके सन्मुख दौड़ा युद्धमें वह दोनों

शत्रु संतापी सन्मुख हुये २९ अर्थात् वह दोनों दुर्योधन और युधिष्ठिर अपने प्रयोजनोंके हेतुसे पराक्रम करनेवाले हुये इसके पीछे क्रोधयुक्त दुर्योधनने झुके पर्व्ववाले ३० दश बाणों से घायल किया और शीघ्रही एकबाणसे ध्वजाको भीकाटा और उसइन्द्रसेन को तीनबाण से ललाटपर घायल किया ३१ जोकि महात्मा युधिष्ठिरका पहला सारथी था महारथीने फिर दूसरे बाणसे उसके धनुष कोकाटा ३२ और चारबाणोंसे चारोंघोड़ों को घायलकिया इसकेपीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने एक निमिष मेंही दूसरे धनुषको लेकर ३३ वेगसे कौरवको रोका हे श्रेष्ठ बड़े पाण्डव युधिष्ठिरने शत्रुहन्ता उस दुर्योधनके स्वर्णपृष्ठी बड़े धनुषको ३४ दोभल्लों से तीन टुकड़े किया सूर्य्यकी किरणोंके समान अत्यन्त भयकारी दूर नहोंनेवाले बाणको लेकर ३५ हायमाराहै ऐसाकह कर युधिष्ठिर नें बाणको छोड़ा कानतक खैंचकर उस छोड़हुये बाणसे घायल वह दुर्योधन ३६ अत्यन्त अचेतहो कर रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा हे राजेन्द्र इसके पीछे पांचाल देशियोंकी प्रसन्नसेनाके शब्द चारोंओरसे हुये ३७ कि राजामारागया हे श्रेष्ठ वहां बाणों के महाभयकारीशब्द सुनेगये ३८ उसके पीछे द्रोणाचार्य्यजी भी उसयुद्धमें शीघ्रदिखाई पड़े और प्रसन्नचित्त दुर्योधन भी दृढ़ धनुष को लेकर ३९ तिष्ठतिष्ठ शब्द को बोलता राजायुधिष्ठिरके सन्मुख आया फिर बिजयाभिलाषी पांचाल देशी शूरबीर शीघ्रही उसके सन्मुख गये ४० कौरवों में श्रेष्ठ दुर्य्योधनकोचाहते द्रोणाचार्य्यजीने उनको ऐसे रोंका जैसेकि कठिन बायुसे उठाये हुये बादलोंकोसूर्य्य नाशकरताहै ४१ हे राजा इसके पीछे युद्धकीइच्छासे सन्मुखहोंने वाले आपके और पांडवोंके शूरबीरोंका महाप्रबल परस्परमें मारने वाला कठिन युद्धहुआ ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचिपंचाशत्तमोऽध्यायः १५३॥

एकसौचौवनका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि जब क्रोध युक्त बल पराक्रमवाले आचार्य्यजो शास्त्रके उल्लंघन करनेवाले निर्बुद्धी मेरेपुत्र दुर्य्योधन को कहकर पांडवोंकी सेनामें प्रवेश करनेवाले हुये १ तब पांडवोंने उस रथपर नियत शूरबीर प्रवेशकरके घूमने वाले बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य जीको कैसे रोंका २ बड़े युद्धमें बहुतसे शत्रुओंके मारने वाले आचार्य्यजी के दक्षिणके चक्रको किन लोगोंने रक्षितकिया और उत्तरीय चक्रको किन पुरुषोंने रक्षित किया ३ कौनसे शूरबीर इनके पीछे हुये और कौनसे रथी शत्रु इन के आगे बर्त्तमान हुये ४ मैं मानताहूं कि ऋतुके बिपरीत कठिन शीतने उनको स्पर्श किया और यह भी मानताहूं कि वह ऐसे प्रकारसे कांपते होंगे जैसे कि शिशिर ऋतुमें गौवें कांपतीहैं ५ जो वह बड़ा धनुषधारी अजेय सब शस्त्र धारियों में और रथियों में श्रेष्ठ उत्पातग्रह अथवा अग्नि के समान क्रोध-युक्त रथके मार्गोंमें नृत्यकरता सब पांचाल देशी सेनाओं को भस्म करता उन्हीं पांचाल देशी सेनाओं में प्रबिष्टहुआ उसने कैसे मृत्यु कोपाया ६।७ संजयबोले कि बड़ा धनुष धारी सात्यकी और अर्जुन सायंकाल के समय जयद्रथ को मारकर राजासे मिल कर द्रोणाचार्य्यके सन्मुख दौड़े ८ उसीप्रकर उपाय करनेवाले पांडव युधिष्ठिर और भीमसेन प्रथक् २ सेनाओं समेत द्रोणाचार्य्य के सन्मुखदौड़े९ उसी स्थानपर बुद्धिमान और कठिनतासे विजयहोने वाला सहदेव और सेनासहित धृष्टद्युम्नकेकय के साथबिराट १० मत्सदेशी और शाल्वदेशी सेनायुद्धमें द्रोणाचार्य्यकेसन्मुख गईं हेराजा धृष्टद्युम्नका पिता राजाद्रुपद भी पांचालदेशियोंसे रक्षित ११ द्रोणाचार्य्यकेही सन्मुख बर्त्तमान हुआ द्रोपदीके बड़े धनुष धारी पुत्र घटोत्कच राक्षस १२ यह सब सेनाओं समेत बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके सन्मुख हुये और प्रहार करने वाले पांचालदेशी छः हजार प्रभद्रक नाम १३ शिखण्डी को आगे करके द्रोणाचार्य्य के

सन्मुख बर्त्तमान हुये उसीप्रकार पांडवोंके अन्य२महारथी १४ एक साथही ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य के सन्मुख बर्त्तमान हुये हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ युद्धके निमित्त उन शूरबीरों के जाने पर वह रात्रि भयानक रूप भयभीतों के भयको बढ़ाने वाली शूरबीरों को नाश कारिणी रुद्ररूप होकर मृत्युसेमिलाने वालीहुई १५।१६ और हाथी घोड़ों समेत मनुष्यों के प्राणों की नाशकारक हुई उस घोर रात्रि में सब दिशाओं से बोलने वाले शृगालोंने १७ अग्नि रूप ग्रास रखने वाले मुखों से घोर रुधिर को जारी किया फिर बड़ेभय के सूचक उलूक भी दिखाई पड़े १८ कौरवों की सेनामें अत्यन्त भयकारी उत्पात बहुतसे दिखाई दिये हेराजा इसके पीछे सेनाओं में बड़े शब्द हुये १९ भेरी मृदंगोंके बड़े शब्द हाथियों की चिग्घाड़घोड़ों काहिंस नन २० खुरोंके शब्द औरगिरनेसे सब ओरको कठिन शब्द हुये हे महाराज इसके पीछे द्रोणाचार्य्य और सृंजियों का अत्यन्त भयकारी युद्ध सब ओरसे जारी हुआ और अन्धकार से सब संसार के ढक जानेके कारण कुछ नहीं जाना गया २१। २२ चारों ओर से सेनाओं की उठी हुई धूलसे मनुष्य घोड़े और हाथियों का रुधिर मिलगया२३ हमने आर्द्रतासे युक्त पृथ्वी की धूलको नहीं देखा जैसे कि पर्व्वतके ऊपर जलनेवाले बांसों के बनका २४ चटचटा शब्द होता है उसी प्रकार रात्रि के समय गिरने वाले अस्त्रोंके शब्द हुये मृदंग, ढोल, झर्झरी पटा नाम बाजों से २५ केल्कार और हर्षितशब्दोंसे सब व्याकुल और शोभायमानहुये हेराजा अन्धकार के कारण अपने और पराये कोई नहीं जाने गये २६ रात्रिमें वह सब सेना उन्मत्तों के समान जानीगई हेराजा फिर पृथ्वीकी धूल रुधिरसे नष्टहुई २७ स्वर्णमयी कवच और नानाप्रकारकेभूषणोंसे अन्धकार दूरहुआ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे मणि सुबर्णा दिसे अलंकृत भरतबंशियोंकी सेना २८ रात्रिमेंनक्षत्र युक्त आकाशके समानहुई शृगालोंके समूहों से शब्दायमान शक्ति ध्वजाओंसे व्याकुल २९ हाथि-

यों के शब्दों से संयुक्त घोर रूप बीरों के गर्जनेके बड़े शब्द वाली हुई वहां पर सब दिशाओंको पूर्ण करता रोमहर्षण करने वाला महा इन्द्र बज्रकी समान बड़ा कठोर शब्द हुआ हे महाराज वह भरतबंशियोंकी सेना रात्रिके समय ३०। ३१ बाजूबन्द कुंडल निष्क और अस्त्रोंसे प्रकाशित दिखाई पड़ी और सुबर्ण से अलंकृत हाथी रथ ३२ रात्रिके समय बिजली समेत बादलोंके समानदृष्टि-गोचर हुये दुधारे, खड्ग, शक्ति, गदा, बाण, मूसल, प्रास और पट्टिश ३३ अग्निके समान प्रकाशित गिरते हुये दिखाई दिये जिस सेना मेंदुर्य्योधन मुख्यथा वह रथ हाथी बादल ३४ और बादलोंकीगर्जना समेत धनुष ध्वजारूप बिजली द्रोणाचार्य्य और पांडवरूप बादल खड्ग शक्तिगदा बज्र ३५ और बाणोंकी धारा उस कठिन शीतोष्ण-तासे पूर्णघोर आश्चर्यकारी उग्रनाश जीवनरूप आपत्ति रखनेवाली ३६ बड़े भयकारी सेनामें युद्धके चाहने वाले शूरबीर लोग प्रवृत्त हुये बड़ेशब्दसे शब्दायमान और घोररूपी उस रात्रिमें ३७ भय-भीतोंके भयका बढ़ाने वाला और शूरोंके आनन्दका बढ़ाने वाला घोर भयानक रात्रिके युद्ध जारीहोनेपर ३८ क्रोधयुक्त पांडव और संजय एकसाथही द्रोणाचार्य्य के सन्मुखगये हेराजा जो २ महारथी सन्मुख बर्तमान हुये ३९ उनसबके मुखोंकोफेरा और कितनोंही को यमलोकमें पहुंचाया उन हजारोंहाथी अयुतों रथ ४० और प्र-युतों अर्बुदों पदाती और घोड़ोंके समूहोंको रात्रिके समय अकेले द्रोणाचार्य्यने घायल किया और मारा ४१

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिरात्रियुद्धेशतीपरिचतुःपंचाशतमोऽध्यायः १५४ ॥

एकसौपचपनका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि सृञ्जियोंकी सेनामें उस निर्भय बड़े तेजस्वी असहनशील क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य के प्रवेश करने पर तुम्हारी कैसीबुद्धि हुई १ फिर जब बड़े बुद्धिमान् द्रोणाचार्य्यजी शास्त्रको उल्लंघन करनेवाले मेरेपुत्र दुर्य्योधनको ऐसे कहकर सेनामें घुसे

तब अर्जुनने कौन कर्मकिया २ बीर जयद्रथ और भूरिश्रवाके मरने पर जबबड़े तेजस्वीअनेय द्रोणाचार्य्यजोपांचालोंके सन्मुख गये ३ उसनिर्भय शत्रुसंतापी द्रोणाचार्यके प्रवेशकरने पर अर्जुन और दुर्य्योधनने समयके अनुसार किस२ कर्मकोमाना ४ उन ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ बरदाताबीर आचार्य्यके सन्मुख कौन२ गयेपीछे कौन २ बीर गये ५ और आगेकौन बर्त्तमानहुये मैं द्रोणाचार्य्य के बाणोंसे सबपांडवोंको ऐसे पीड़ामान मानताहूं ६ हे समर्थ जैसे कि शिशिर ऋतुमें कंपायमान और दुर्बलगौयें७ उसबड़े धनुर्द्धर शत्रुबिजयीपुरुषोत्तमद्रोणाचार्य्यनेपांचालोंकीसेनामेंपहुंचकर कैसेमृत्युको पाया ८ रात्रिकेसमय सबशूरबीरोंके इकट्ठे होने औरमहारथियोंकेभिड़नेऔर सेनाके छिन्न भिन्न होनेपर तुमलोगोंमेंसे कौन बुद्धिसे बिचारकरने वालाहुआ९ मेरेरथ सवारोंको युद्धमें मृतकयुद्धमेंप्रवृत्तचित्त पराजय विरथ और मारेहुये कहतेहो १० तब पांडवोंसे छिन्नभिन्न होकर अचेत अथवा मोहमें डूबेहुये उन शूरबीरोंका कौन बिचारहुआ ११ यहांतुम पांडवोंको अत्यन्त प्रसन्न बुद्धिमान् और अभीष्ट सिद्धीवाले कहतेहो और मेरेपुत्रोंको अप्रसन्न औरनाशयुक्त बर्णनकरतेहो १२ हेसंजय तबवहां रात्रिके समय मुख न फेरनेवाले पांडवोंकाप्रकाश कौरवोंमें कैसेहुआ १३ संजयबोलेकि हेराजातब अत्यन्तभयकारी रात्रिके युद्ध जारीहोनेपर सब पांडवलोग सोमकों समेत द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गये १४ उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्ण चलने वाले बाणोंसे केकयों समेत धृष्टद्युम्न के सब पुत्रों को यमलोकमें भेजा १५ हे भरतबंशीधृतराष्ट्र जोमहारथी उनके सन्मुख बर्त्तमान हुये उनसबको उन्होंने पितृलोकमें भेजा १६ हेराजा तब प्रतापबान् शिवी अत्यन्त क्रोधसे उनबीरोंके मथनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया १७ उस पांडवके महारथीको आताहुआ देखकर केवल लोहमयी दशबाणोंसे घायलकिया १८ शिवीने तीक्ष्णधारवाले तीस बाणोंसे उनको व्यथितकिया और मन्द मुसकान करते हुयेने अपने भल्लसे उनकेसारथीको गिराया १९ फिर द्रोणा-

चार्य्य ने भी उस महात्माके सारथी समेत घोड़ोंको मारकर उसके शिरको देहसे जुदाकिया २० इसके पीछे दुर्योधनने शीघ्रही उनके दूसरे सारथीको आज्ञादी उस सारथीको लेकर वह द्रोणाचार्य्यजी फिर शत्रुओंके सन्मुखगये २१ पूर्व्व समयमें अपने पिताके मारने से क्रोधयुक्त राजा कलिंगका पुत्र कलिंग देशियोंकी सेनासे निकल युद्धमें भीमसेनके सन्मुखगया २२ उसने भीमसेन को पांचबाणों से पीड़ामान करके फिर सातबाणोंसे पीड़ितकिया बिश्वक्सारथी को तीनबाणसे औ रध्वजाको एकबाणसे खंडित किया क्रोधयुक्त भीमसेन ने रथके द्वारा रथके समीप जाकर उस क्रोधयुक्त कलिंग देशियों के शूरकोमुष्टिकाओंसे घायलकिया२३।२४ युद्धभूमिमें पराक्रमी भीमसेनकीमुष्टिकाओंसे घायल उस राजकुमार की सब हड्डियांपृथक् २ होकर गिरपड़ीं २५ हे शत्रुसंतापी फिर कर्णके भाइयोंने उसको नहीं सहा और उन्होंने भीमसेनको बिषधर सर्पके समान नाराचों से घायल किया२६ इसकेपीछे भीमसेन उसशत्रुके रथको छोड़कर ध्रुवरथके पास गया वहां जाकर बराबर बाण चलानेवाले ध्रुवको भी मुष्टिकाओंसे अच्छी रीतिसे मारा २७ पराक्रमी भीमसेनकेहाथ से माराहुआ वह ध्रुव पृथ्वीपर गिरपड़ा हेमहाराज महाबलीभीमसेन उसको मारकर २८ जयरातके रथको पाकर बारंबार सिंहके समानगर्जा और गर्जतेहुयेमें बायें हाथसे खैंच २९ कर्णके आगे बर्त्तमान होकर तमाचेसे नाशकिया फिर कर्णने सुनहरी शक्तिको भीमसेनके ऊपरछोड़ा ३० इसकेपीछे अजेय पांडुनन्दन भीमसेन ने उसशक्तिको पकड़ लिया और उसीको युद्धभूमिमें कर्णके ऊपर छोड़ा ३१ शकुनीने उस आतीहुई शक्तिको तैलपायनी नाम बाण सेकाटा बहपराक्रमी युद्धमें इसबड़ेकर्मको करके ३२ फिर शीघ्रही अपने रथपर सवार होकर आपकी सेनापर आटूटा हे राजाबड़े बाणोंकी बर्षा से ढकतेहुये आपके महारथी पुत्रोंने उस मारनेके अभिलाषी कालके समान क्रोधयुक्त आतेहुये महाबाहु भीमसेनको रोका ३३। ३४ उसकेपीछे हंसतेहुये भीमसेनने युद्धमें बाणों से

दुर्मदके सारथी और घोड़ोंको यमलोकमें पहुंचाया ३५ तब दुर्मद दुष्कर्णके रथपर सवारहुआ वह शत्रुसंतापी एक रथपर सवारदोनों भाई ३६युद्धके मुखपर भीमसेनके सन्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि वरुण और मित्र देवता दैत्योंमें श्रेष्ठ तारकके सन्मुख दौड़ेथे ३७ उसके पीछे दुर्मद और दुष्कर्णनाम आपकेपुत्रोंने एकरथपर सवार होकर बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया ३८ शत्रु विजयी भीमसेनने कर्ण अश्वत्थामा दुर्योधन कृपाचार्य्य सोमदत्त और बाह्लीकके देखते हुये ३६ वीर दुर्मद और दुष्कर्णके उस रथको एकलात मारकर पृथ्वीपर गिरादिया ४० इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन आपके पराक्रमी और शूरवीर दुर्मद और दुष्कर्ण पुत्रोंको मुष्टिका से घायल और मर्दन करके गर्जा ४१ हेराजा उसके पीछे सेनाके हाहाकार करनेपर राजालोग भीमसेनको देखकर बोले कि यह रुद्रजी भीमसेनके रूपसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंमें लड़तेहैं ४२ हे भरत-बंशी सबराजालोग ऐसाकहकर अचेत होकर सवारियोंको चला-तेहुये भागे और दोभीसाथ होकर नहींदौड़े ४३ उसकेपीछे सायं-कालकेसमय सेनाके अत्यन्त उत्तम राजाओंसे पूजित फूले कमल के समान नेत्र रखनेवाले महाबली भीमसेनने राजा युधिष्ठिर को पूजा अर्थात्प्रशंसाकरी४४ उसकेपीछे नकुल,सहदेव,द्रुपद,विराट कैकयदेशी राजकुमार और युधिष्ठिरनेभी बड़ी प्रसन्नताको पाया और उनसबने भीमसेनकी ऐसीअत्यन्त प्रशंसाकरी जैसेकिअन्धक के मरनेपर देवताओंने महादेवजीकी करीथी ४५ उससमय बरुण के पुत्रोंके समान क्रोधयुक्त युद्धाभिलाषी आपके पुत्रोंने महात्मा गुरूजीके साथ होकर रथपदाती और हाथियोंकेद्वारा भीमसेनको चारोंओरसेघेरलिया ४६ इसकेपीछे अन्धकार रूप बादलोंसे युक्त बड़ी भयकारी रात्रिमें महात्मा और उत्तम राजाओंका अपूर्व युद्ध भेड़िये काक और गृध्रोंका प्रसन्न करनेवाला भयकारी और भया-नक रूपवालाहुआ ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिरात्रियुद्धे भीमपराक्रमेशतोपरिपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः१५५॥

एकसौछप्पनका अध्याय॥

संजय बोलेकि सात्यकीके हाथसे उस पुत्रके मरनेपर जो कि मरनेके निमित्त आसन पर बैठाथा अत्यन्त क्रोधयुक्त सोमदत्त ने सात्यकीसे यहबचन कहा १ किपूर्व्व समय में महात्मा देवताओं से जो क्षत्रीधर्म देखागया हेयादव उस धर्मको त्यागकर तुम चोरों के धर्ममें कैसे प्रीति करनेवालेहुये २ हेसात्यकी क्षत्रीधर्म में प्रीति करनेवाला बुद्धिमान् मनुष्ययुद्धमें मुखफेरनेवाले दुःखी औरशस्त्रोंके त्यागनेवाले वीरके ऊपर कैसेप्रहार करसक्ताहै ३ हे यादवयादवों में निश्चय करके तुम और महाबाहु प्रद्युम्न दोही महारथी युद्धमें बिख्यातहो ४ तुमने किसहेतुसे अर्जुनके बाणसे कटीहुई भुजा वाले शरीर त्यागनेके अर्थ बैठेहुये भूरिश्रवाके ऊपर उसप्रकारके निर्दय और पापकर्मको कियाहै ५ हेदुराचारी अबतूभी उसदुष्कर्म के फलकोयुद्धमेंप्राप्तकर हेअज्ञानी अबमैं पराक्रमकरके बाणोंसेतेरे शिरको काटूंगा ६ हेयादव मैं अपने दोनोंपुत्र और शुभकर्म की शपथ खाताहूं हे यादव कुलकलंकी जो सूर्योदयके पूर्व्व विजयके अभ्यासी अर्जुनसे अरक्षित और बीरों से स्तुतिमान मैं तुझको न मारूं तो घोर नरकमें पड़ूं ७। ८ अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी सोमदत्तने इसप्रकार कहकर बड़े शब्दसे शंखको बजाकर सिंहनादको किया इसके पीछे कमलपत्रके समान नेत्र सिंहकी समान डाढ़रखनेवाला कठिनतासे बिजय होनेवाला अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी सोमदत्तसेबोला९।१० हे कौरव तेरेसाथ और दूसरोंके साथ मुझ युद्ध करनेवालेका कोई भय किसी दशामें भी मेरे हृदयमें बर्त्तमान नहींहै ११ हे कौरव जो तुम सब सेनासे रक्षित होकर भी मुझ से युद्ध करोगे तो भी तुमसे मुझको किसी प्रकारकी पीड़ा नहींहै१२ मैं युद्धसार बाक्योंसे औरअसत् लोगोंके सम्मतोंसे क्षत्रीधर्मवाला होकर तुझसे भयभीत होनेकेयोग्य नहींहूं १३ हेराजाजोअबतू मुझ सेलड़ने की इच्छाकरताहै तो तुम निर्दय होकर तीक्ष्णधारबाणोंसे

प्रहारकरो मैं तुमपर प्रहार करताहूं १४ हे महाराज आपका पुत्र भूरिश्रवामारागया और भाईके दुःखसे पीड़ित शल्यभी मारागया १५ और अब तुमको भी पुत्र बांधवों समेत मारूंगा अब युद्धमेंतुम उपाय करने वाले होकर नियत हो तुम महारथी कौरव हो १६ जिस युधिष्ठिर में सदैव दान जितेन्द्रियपन शान्ती पबित्रता जीव-मात्रसे शत्रुता न करना लज्जा धैर्य्य और क्षमा यह सब अबिनाशी हैं १७ पूर्व्बसमय में तुम उस मृदंगकेतु युधिष्ठिर के तेजसे मारे गये अबभी तुम कर्ण और शकुनी समेत युद्धमें नाशको पाओगे १८ मैं श्रीकृष्णके चरण यज्ञ और बापी आदि बनाने के फलोंकी शपथ खाताहूं जो क्रोधयुक्त किया हुआ मैं तुझ पापीको पुत्र समेत नहीं मारूं १९ जो युद्धको त्याग करके हट जायगा तो छूटेगा नहीं तो मारा जायगा फिर क्रोध से रक्त नेत्र दोनों पुरुषोत्तम परस्पर ऐसा कह कर शस्त्र चलानेको प्रवृत्तहुये उसके पीछे हजार रथ और दश हजार हाथियों समेत २०।२१ दुर्य्योधनने चारों ओर से सोमदत्तको मध्यबर्त्ती किया और आपका शाला महाबाहु बज्रके समान दृढ़ शरीर युवा सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अत्यन्त क्रोध युक्त शकुनि जो कि इन्द्रके समान पुत्र पौत्र और भाइयों से संयुक्तथा २२।२३ और जिस बुद्धिमान् के घोड़ोंकी संख्या एक लाख से ऊपरथी उसने भी बड़े धनुषधारी सोमदत्तको चारों ओर से रक्षित किया २४ पराक्रमियों से रक्षित सोमदत्त ने सात्यकी को बाणों से ढक दिया टेढ़े पर्व वाले बाणों से ढकेहुये उस सात्यकीको देखकर २५ क्रोध युक्त धृष्टद्युम्न बड़ी सेनाको लेकर सन्मुख आया बड़े कठिन बायुके बेगसे चलायमान समुद्रके जैसे शब्द होते हैं २६ उसी प्रकार प्रहार करने वाली सेनाओं के परस्पर घातोंके शब्द हुये सोमदत्त ने नवबाणों से सात्यकी को घायल किया २७ सात्यकीने भी उस कौरवों में श्रेष्ठ सोमदत्तको भी नवबाणों से व्यथित किया युद्धमें पराक्रमी दृढ़ धनुषधारी से घायल २८ और अचेत सोमदत्त रथके स्थिति स्थानको आश्रय लेकर अचेत हुआ सारथी उस महारथी

बीर सोमदत्त को अचेत जानकर बड़ी शीघ्रता से २६ युद्धसे दूर लेगया उसको अचेत और सात्यकी के बाण से पीड़ामान देखकर ३० द्रोणाचार्य्य यदुबीरके मारनेकी इच्छा से सन्मुखगये उस आते हुये को देखकर यादवों में श्रेष्ठ सात्यकीको चाहते और युधिष्ठिर को आगे करने वाले बीरोंने उन महात्मा आचार्य्यजी को घेरलिया इसके पीछे द्रोणाचार्य्य का और पांडवों का ऐसा युद्ध जारी हुआ ३१।३२ जैसे कि पूर्व्व समय में तीनों लोकों के बिजयकी इच्छासे राजा बलिका युद्ध देवताओं के साथ हुआ था इसके पीछे बड़े तेजस्वी भरद्वाज द्रोणाचार्य्य ने बाणोंके जालों से पांडवोंसे नाको ढकदिया और युधिष्ठिरको घायल किया दश बाणोंसे सात्यकी को बीस से धृष्टद्युम्न को ३३ । ३४ नव बाणोंसे भीमसेन को पांचसे नकुल को आठसे सहदेव को सौबाणों से शिखंडी को ३५ और पांच२ बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रोंको ३६ तीन बाणसे युधामन्युको छः बाणोंसे उत्तमौजसको और अन्य २ सेनाके लोगोंको भी घायल करके युधिष्ठिर के सन्मुखगये ३७ हे राजेन्द्र द्रोणाचार्य्य के हाथसे घायल वह पांडवी सेनाके लोग जिनके कि शब्द पीड़ासे युक्तथे भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे ३८ द्रोणाचार्य्य के हाथसे इधर उधर होने वाली उस सेनाको देखकर कुछ क्रोधयुक्त पांडव अर्जुन गुरू के सन्मुख गया ३६ फिर द्रोणाचार्य्यजी युद्धमें सन्मुख दौड़ने वाले अर्जुन को देखकर नियत हुये और फिर वह युधिष्ठिर की सेनाभी लौटी ४० इसके पीछे भरद्वाज द्रोणाचार्य्य का युद्ध पांडवोंके साथ फिर हुआ हे राजा सब ओरसे आपके पुत्रोंसे रक्षित द्रोणाचार्य्यने ४१ पांडवी सेनाको ऐसे भस्म किया जैसे कि रुईके तोदेको अग्नि भस्म कर देताहै हे राजा उस सूर्य्य के समानप्रकाश और प्रकाशित अग्नि के समान तेजस्वी बाण रूप ज्वाला रखने वालेसूर्य्यकेसमान तपानेवालेधनुषकोमंडलरूप करनेवाले४२।४३ शत्रुओंके कठिन भस्म करने वाले द्रोणाचार्य्य को देखकर सेनामें से किसीने नहीं रोका जो२ पुरुष द्रोणाचार्य्य के सन्मुख हुआ४४

उस उसके शिरको काट कर द्रोणाचार्य्य के बाण पृथ्वी परगये इस प्रकार से महात्माके हाथसे घायल वह पांडवी सेना४५ जोकि भय से पूर्णथी अर्जुन के देखते ही फिर लौटी हेभरतबंशी रात्रिमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे इधर उधर होने और भागने वालो सेनाको देखकर ४६ अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोले कि द्रोणाचार्य्यके रथके पास चलिये उसके पीछे श्रीकृष्णाजी ने रजत दुग्धगौ कुन्दके पुष्प और चन्द्रमाके समान प्रकाशित ४७ घोड़ों को द्रोणाचार्य्यजीके रथकी ओर चलाय मान किया भीमसेन भी द्रोणाचार्य्य की ओर जाते हुये उस अर्जुनको देखकर४८अपने सारथीसे बोलेकि मुझको द्रोणाचार्य्यकी सेनामें ले चल उस बिश्वकने भी भीमसेनके बचन को सुनकर सत्य संकल्प अर्जुन की ओर पीछे से घोड़ों को चलाया हेभरतबंशियों में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र द्रोणाचार्य्य की सेनाकी ओर जानेवाले सावधान दोनों भाइयों को देखकर ४९।५० पांचाल,संजय, मत्स्य चंदेरी,कारुष्य, कौसिल और केकय देशी महारथी भी उसके पीछे चले ५१ हेराजा इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला भयकारी युद्ध जारी हुआ ५२ आपकी सेनाके दक्षिणीय भागको अर्जुनने और उत्तरीय भागको भीमसेनने रथके बड़े समूहों समेत घेरलिया ५३ हेराजा उन दोनों पुरुषोत्तम भीमसेन और अर्जुन को देखकरमहा बली सात्यकी और धृष्टद्युम्न सन्मुख गये ५४ उस समय परस्पर प्रहार करने वाले सेनाके समूहोंके ऐसे शब्द हुये जैसे कि कठिन बायुसे चलाय मानसमुद्रोंके शब्द होतेहैं ५५ हे राजा भूरिश्रवा के मरनेसे क्रोधयुक्त मारनेके लिये निश्चय करने वाले अश्वत्थामा युद्धमें सात्यकी को देखकर सन्मुख दौड़े ५६ सात्यकी के रथपर आने वाले उस अश्वत्थामाको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने शत्रुको रोका ५७ कर्ण नाम लोहेका बना बड़े घोर रीछके चर्म सेमढ़े हुये छःसौ गज बिस्तृत बड़े रथमें ५८ यंत्र मंत्र और कवच से अलंकृत बहुत बादलों के समूहों के समान शब्दायमान हाथियों के तुल्य घोड़ोंसे युक्त जिनको न घोड़े कह सकें न हाथी ५९ कह

सकें फैले हुयेपर और चरण बड़े नेत्र शब्द करनेवाले गृध्रराजके चिह्नवाली शोभायमान ध्वजासे युक्त जिसका दंडा उठा हुआ था ६० लोहित और आर्द्र पताका वाला अंतड़ियोंकी मालाओं सेअलंकृत आठ चक्ररखने वाले बहुत बड़े रथपर सवार होकर ६१ उस घोर रूप राक्षसोंकी अक्षौहिणी सेनासे जोकि शूल मुद्गल धारी पहाड़ और वृक्षोंको हाथोंमें लिये हुयेथी आवृत होकरसन्मुख आया६२ बड़े धनुषको ऊंचा करने वाले उस राक्षस को देखकर राजालोग ऐसेपीड़ामान हुये जैसेकि प्रलयके समय दंडधारीकाल कोदेखकर पीड़ित होतेहैं ६३ उसके पीछे उस पर्व्वतके शिखर के रूप भयानक भयकारी करालदाढ़ उग्रमुख शंखकेसमान कान बड़े नख रखनेवाले ६४ उन्नत केश भयानक नेत्रप्रकाशित मुख गंभीर उदर महावटके समान गलद्वार मुकुटसे गुप्तकेश ६५ सब जीवोंके डरानेवाले कालके समान खुलामुखतेजस्वी शत्रुको व्याकुल करने वाले६६ बड़ेधनुषधारीराक्षसोंके इन्द्र आतेहुये उसघटोत्कचको देख करआपकेपुत्रकीसेनाकेलोग भयसेपीड़ित ऐसेमहाव्याकुलहुये६७ जिसप्रकार वायुसे चंचल भवँर उत्तरंग गंगाजी होतीहैं घटोत्कचके कियेहुये सिंहनादसे भयभीत ६८ हाथियोंने मूचको गिराया और मनुष्यभी अत्यन्त पीड़ामान हुये इसकेपीछे वहां चारोंओर से पाषाणोंकी कठिन बर्षाहुई ६९ सायंकालके समय अधिक बलवान् होनेवाले राक्षसोंके चलायेहुये लोहेके चक्र भुशुंडी प्रास तोमर७० शूलशक्ति और पट्टिश आदि शस्त्र बारंबार अधिक तासे पृथ्वी पर गिरतेथे उसउग्र बड़ेरौद्र युद्धको देखकर राजालोग ७१ आपके पुत्र और कर्णादिक शूरभी पीड़ामान होकर दिशाओं को भागे वहांपर अस्त्रोंके पराक्रममें प्रशंसनीय बड़े प्रतापी अकेले अश्वत्थामाही पीड़ामाननहींहुये ७२ उन्होंनेही घटोत्कचकीउत्पन्नकोहुई मायाको नाशकिया फिर मायाके नाशहोनेपर उसक्रोधयुक्त घटात्कचने ७३ घोर बाणोंको छोड़ा वहबाण अश्वत्थामाके शरीरमें प्रवेश करगये जैसे कि क्रोधसे मूर्च्छामान सर्प तीव्रता से बामीमें घुसजातेहैं उसी

प्रकार वह बाण अश्वत्थामाजीको घायल करके रुधिर से लिप्त अंग ७४ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार शीघ्रचलने वाले पृथ्वीमें समा गये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त हस्तलाघवी प्रतापवान् अश्वत्थामाने अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कचको दशबाणोंसेछेदा ७५ अश्वत्थामा के हाथसे मर्म स्थलोंपर घायल कठिन पीड़ामान घटोत्कचने लाख आरा रखनेवाले ७६ छुराओंसे युक्त बालार्क के समान प्रकाशित मणि बजसे शोभित चक्रको हाथमें लियाफिर उस भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने मारने की इच्छासे अश्वत्थामापर फेंका ७७ फिर अश्वत्थामाने अपने बाणोंसे उसको काटा अश्वत्थामाके बाणोंसे टूटा हुआ वहचक्र बड़ेवेगसे पृथ्वीपर जाकर ऐसे निष्फल गिरा जैसे कि अभागेका संकल्प निष्फल जाताहै ७८ इसके पीछे घटोत्कच ने गिराये हुये चक्रको देखकर शीघ्रही अश्वत्थामाको बाणोंसे ऐसे ढकदिया जैसेकि राहु सूर्य्यको ढकताहै ७९ घटोत्कच के पुत्र श्रीमान् भिन्नांजन समूहके समान अंजनपरवा नामने आतेहुये अश्वत्थामाको ऐसे रोका जिस प्रकार गिरिराजने प्रभंजनको रोकाथा उस भीमसेनके पौत्र अंजनपरवाके बाणोंसे रुकाहुआ अश्वत्थामा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे बादल की धाराओं से मेरु पर्व्वत शोभायमान होताहै ८०।८१ भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित रुद्र और बिष्णुके समान पराक्रमी अश्वत्थामाने एकबाणसे अंजनपरवाकी ध्वजाको काटा ८२ दो बाण से उस के सारथीको तीन बाणसे त्रिवीणकको एक बाणसे उसके धनुषको काटकर चार बाणोंसे चारों घोड़ोंको मारा ८३ उस रथसे बिरथ हुयेके हाथसे उठायेहुये सुवर्ण बिन्दुओंसे जटित खड्गको अत्यन्ततीक्ष्णबिशिख नामबाणसे दोखंड किया ८४ फिर हे राजा सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाली गदाघटोत्कचके पुत्रनेफेंकीवहभी अश्वत्थामाके बाणोंसे शीघ्रही गिरपड़ी ८५ उसकेपीछे कालमेघके समान गर्जते उस अंजनपरवाने अन्तरिक्षसे उछलकर आकाशसे वृक्षोंको बर्षाकरी ८६ इसकेपीछे अश्वत्थामाने घटोत्कच के पुत्र मायाधारीको बाणोंसे

आकाशमें ऐसेछेदा जैसे कि सूर्य्यअपनी किरणोंसे बादलको छेदता है ८७ तबवह आकाशसे उतरकरअपने स्वर्णमयी रथमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि पृथ्वीपर वर्त्तमान बड़ाउग्र श्रीमान् अंजनका पर्व्वत होताहै ८८ फिरअश्वत्थामाने उसलोहेके कवचरखनेवाले अंजनपरवानाम भीमसेनके पोतेको ऐसेमारा जैसे कि महेश्वरने अन्धक को माराथा ८९ इसकेपीछे अश्वत्थामाके हाथसे मरेहुये अपने पुत्र अंजनपरवाको देखकर और अश्वत्थामाके पासआकर क्रोध से कंपित बाजूबन्द ९० भ्रान्तीसे रहित घटोत्कच उसउठीहुई अग्नि के समान पांडवीसेना के भस्म करनेवाले बीर अश्वत्थामा से बोला ९१ कि हेद्रोणकेपुत्र खड़ाहो मेरेहाथसे जीवतानहीं जायगा अब तुझको ऐसेमारूंगा जैसेकि अग्निके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजी नें क्रौंच पर्व्वतको माराथा ९२ अश्वत्थामा बोले कि देवताके समान परा क्रमवाले पुत्र जावो दूसरोंके साथलड़ो हे हिडम्बा के पुत्र घटोत्कच पुत्रसे पिताको पीड़ाहोना न्यायके अनुसार नहींहै ९३ निश्चय करके मेराक्रोध तुझपर नहींहै परन्तु यहबातहै कि क्रोध युक्तजीव अपनेको भी मारे ९४ संजय बोले कि यहबात सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र पुत्रके शोक से व्याकुल घटोत्कच अश्वत्थामा से बोला ९५ हे द्रोणाचार्य्य के पुत्र क्यामैं युद्ध में साधारण मनुष्य के समान भयानकहूं जो तुममुझको बाणोंसे डरातेहो यह आपका बचन धन्यबादके योग्य है ९६ निश्चय करके कौरवों के बंशमें मैं भीमसेनसे उत्पन्न हुआ और युद्धमें मुखनफेरने वाले पांडव का पुत्र हूं ९७ मैं राक्षसोंका महाराजहूं बलपराक्रम में रावण के समान हूं हे द्रोणाचार्य्यके पुत्र खड़ाहो खड़ाहो मेरे हाथ से जीवता नहीं जायगा ९८ अबमैं इस युद्धभूमिमें तेरी युद्धकी इच्छाको नाशकरूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र वह राक्षस यह कहकर ९९ क्रोधमें पूर्ण अश्वत्थामा के सन्मुख ऐसेगया जैसे गजराजके सन्मुख केशरी सिंहजाताहै घटोत्कच रथके अक्षकी समान बाणों से १०० रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके पुत्रके ऊपर ऐसे बर्षा करनेलगा जैसे कि जल

धाराओंसे बादल वर्षा करताहै अश्वत्थामाने उस बाण वृष्टि को मार्गमेंही नाशकरदिया १०१ उसकेपीछे अंतरिक्षमें बाणोंका मानों द्वितीय युद्धहुआ तबअस्त्रोंके मर्दनसे उत्पन्न पतंगोंसे १०२ रात्रिके समय आकाश ऐसाशोभायमानहुआ जैसेकि पटबीजनोंसे आच्छादित होकर शोभित होताहै युद्धका अभिमान रखने वाले अश्वत्थामा से दूरको हुई उस माया को देखकर १०३ अन्तर्द्धान होकर घटोत्कचने फिर मायाको उत्पन्न किया वह राक्षस वृक्षों से पूर्ण शिखरों समेत बड़ा पर्व्वत बनगया १०४ वह पहाड़ शूल प्रास खड्ग और मूसल रूपीबड़े झिरनोंका रखने वालाथा १०५ अश्वत्थामा उस अंजन पहाड़के समान पर्व्वतको देखकर गिरने वाले अस्त्रोंके समूहोंसे पीड़ामाननहींहुआ १०६ इसकेपीछेहासते हुये अश्वत्थामाने बज्रअस्त्रको प्रकट किया उसअस्त्रसे बिदीर्ण वह गिरिराज शीघ्रही नाशहोगया १०७ इसकेपीछे उसराक्षसने युद्धमें आकाशके मध्यमें बज्र रखने वाला नीला बादल होकर बड़े उग्ररूपसे शस्त्रोंकीबर्षासे अश्वत्थामाको ढकदिया १०८ इसके अनन्तर अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाजीने वायुअस्त्रकोचढ़ाकर उसउठेहुयेनीले बादलको छिन्नभिन्न करदिया १०९ उसद्विपादोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने बाणोंकेसमूहोंसे सबदिशाओंको ढककर एकलाखरथकेसवारोंको मारा ११० रथकी सवारीसे आनेवाले बड़े धनुषधारी व्याकुलतारहितसिंह शार्दूल के समान मतवाले हाथीके समान पराक्रमी हाथीसवार रथसवारऔर भयानक १११।११२ मुखशिर और गला रखनेवाले पीछे चलनेवाले पुलस्त्यवंशी यातुधानबंशी तामसनाम वाले इन्द्रकी समान पराक्रमी ११३ नाना प्रकारके शस्त्र धारीबीर नानाप्रकारके कवचोंसे अलंकृत बड़े पराक्रमी भयकारी शब्द और क्रोधसे खुले हुये नेत्र ११४ युद्ध दुर्म्मद संग्राममें सन्मुख नियत अनेक राक्षसों से युक्तघटोत्कचको देखनेसे आकुल चित्त अश्वत्थामाजी आपके पुत्रको देखकर यह बचनबोले ११५ कि हेदुर्य्योधन अब तुमठहरो तुमको इनबीरभाई इन्द्रके समान पराक्रमी राजाओं

समेत भयसे उत्पन्नहोनेवाली व्याकुलता न करनी चाहियै ११६ मैं तेरे शत्रुओं को मारूंगा तेरी पराजय नहींहै यह तुझसे मैं सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं तुम सेनाकोविश्वास कराओ ११७ दुर्य्योधन बोले कि हे गौतमीनन्दन अश्वत्थामाजी मैं मानताहूं कि यह अपूर्व्वबात नहींहै जो यह आपका उदारचित्त और हम पर बड़ी प्रीतिहै ११८ संजय बोले कि अश्वत्थामासे ऐसा बचन कहकर दुर्य्योधन युद्धके शोभा देनेवाले एकहजार घोड़े और रथोंसे संयुक्तनियत होनेवाले शकुनी से बोला ११९ कि हे शकुनी तुम साठहजार रथियों समेत अर्जुनके सन्मुखजाओकर्ण, वृषसेन, कृपाचार्य्य, नील १२० उत्तरीय राजा, कृतवर्मा, पुरोमित्र, सुतापन, दुश्शासन, निकुंभ, पराक्रमी कुण्ड भेदी १२१ पुरंजय, दृढ़रथ, पताकी, हेमकंपन, शल्य, अरुणी, इन्द्रसेन संजय, विजय, जय १२२ कमलाक्ष, परक्राथी, जयवर्म्मा औरसुदर्शन यहसब और छः अयुत सेनाके अधिपति तुम्हारेपीछे चलेंगे १२३ हे मामाजी तुम भीमसेन नकुल सहदेव और धर्मराजको ऐसे मारो जैसे कि देवताओंका इन्द्र असुरोंको मारताहै मेरी आशा विजय होनेमें नियतहै १२४ हेमामाजी द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे छिन्न भिन्न और अत्यन्त घायल हुये कुन्तीके पुत्रोंको ऐसेमारो जैसेकि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने असुरोंको माराथा १२५ हे राजा आपके पुत्रके इसबचनको सुनकर शकुनीआपके पुत्रोंको प्रसन्न करनेवाला पांडवों को भस्म करने का अभिलाषी उसकीआज्ञापातेही बड़ीशीघ्रतासे चला१२६ उसके पीछे रात्रिकेसमय युद्धभूमिमें अश्वत्थामा औरराक्षसकाऐसाकठिनयुद्ध जारीहुआ जैसेकिइन्द्रऔरप्रह्लादका युद्ध हुआथा १२७ इसके पीछे अत्यन्त क्रोध युक्त घटोत्कचने बिष और अग्निकी सूरत दृढ़ दश बाणोंसे अश्वत्थामा को छातीपर घायल किया १२८ भीमसेनके पुत्रके हाथसे चलायमान उन बाणोंसे अत्यन्त घायल रथके मध्यमें बर्त्तमान अश्वत्थामाजी ऐसे कंपायमान हुये जैसे कि वायुसे वृक्ष कंपायमान होतेहैं १२९ फिर घटोत्कचने अंजलिकनाम बाण से अश्वत्थामा के हाथमेंबर्त्तमान महा-

प्रकाशितधनुषको शीघ्रकाटा १३० इसकेपीछे अश्वत्थामाजी ने दू-सरे बाणों समेत धनुषको लेकर तीक्ष्णबाणोंकी ऐसी वर्षा करी जैसे कि जलधाराओंको बादल वर्षाताहै १३१ हे भरतवंशी इसके पीछे अश्वत्थामाजीने सुनहरी पुंख शत्रुओंकेमारने वाले आकाशचारी बाणोंको आकाशचारी घटोत्कचपर फेंका १३२ बड़ेबक्षस्स्थलवाले राक्षसोंका वह समूह बाणोंसे पीड़ामान होकरऐसे शोभित हुआ जैसे कि सिंहसे ब्याकुल मतवाले हाथियोंका समूह होताहै १३३ घोड़े हाथी और सारथियोंके साथ रथियों समेत सबराक्षसोंको छिन्न भिन्न करके ऐसे नाश करदिया जैसे कि प्रलयके समय भगवान् अग्नि सब जीवमात्रों को भस्म करदेतेहैं १३४ हे राजा वह अश्व-त्थामाजी बाणोंसे राक्षसोंकी अक्षौहिणी सेनाको भस्म करते ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्गमें त्रिपुरको भस्म करके महेश्वरजी शोभायमान हुयेथे १३५ जैसे कि प्रलय कालकी अग्निजीवों का नाश करके शोभित होतेहैं उसी प्रकार बिजय करने वालोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामा आपके शत्रुओंको भस्म करकेशोभित हुआ १३६ इसके पीछे क्रोध युक्त घटोत्कचनेभयकर्मा राक्षसोंके समूहोंको यह आज्ञा करी कि अश्वत्थामाको मारो १३७ फिर वह राक्षस घटोत्कचकी आज्ञाको अंगीकार करकेबड़े सिंहनादसे पृथ्वीको शब्दायमानकरते अश्वत्थामाके मारने को दौड़े जोकि स्वच्छडाढ़ बड़े मुखोंसे युक्त घोर रूप महा भयानक बिस्तृत मुख घोर जिह्वाक्रोधसे अत्यन्त रक्त नेत्र इन नाना प्रकार के शस्त्रोंके धारण करने वाले थे शक्ति शतघ्नी, परिघ, बज्र, शूल, पट्टिश १३८।१३९। १४० खड्ग, गदा, मूसल फरसे, प्रास, भिंडिपाल, दुधाराखड्ग, तोमर, कृपाण, तेजकंपन १४१ स्थू ल, भुशुंडी, अश्म, गदा, स्थूणजोकि कार्ष्ण नाम लोहेकेथे और युद्धमें शत्रुओंके पराजय करने वाले घोर मुद्गरोंको १४२ अश्वत्थामाके मस्तकपर मारा और उन भयानक पराक्रमी क्रोधसे रक्तनेत्र राक्ष-सोंने हजारों शस्त्रोंको फेंका १४३ इसके पीछे वह सब शूरबीर अ-श्वत्थामाके मस्तकपर पड़ी हुईउस बड़ीभारी शस्त्रोंकी वर्षाको देख-

कर पीड़ामान हुये १४४ फिर पराक्रमी अश्वत्थामाने उस घोर और ऊंचीशस्त्रोंकी वड़ी बर्षाको देखकर बज्रको समान तीक्ष्णधार वाले बाणोंसे नाशकिया १४५ इसकेपीछे बड़ेसाहसी अश्वत्थामाजीने दिव्य अस्त्रसे अभिमन्त्रित सुनहरी पुंख दूसरे बाणोंसे शीघ्रही राक्षसोंको मारा १४६ बड़े बक्षस्स्थलवाले राक्षसोंका वह समूह बाणोंसे पीड़ितहोकर ऐसेशोभायमानहुआ जैसे कि सिंहोंसे भयभीत होनेवाला मतवाले हाथियोंका समूह व्याकुल होताहै १४७अश्वत्थामाके हाथसे घायल अत्यन्त क्रोध युक्त बड़े पराक्रमी वहराक्षस अश्वत्थामाके मारनेको दौड़े १४८ हेभरतबंशी वहां अश्वत्थामाने इस अपूर्ब्ब पराक्रमको दिखलाया जोकि सबजीवधारियों में अन्य पुरुषसे करना असंभवथा १४९ जो बड़ेअस्त्रज्ञ अकेले अश्वत्थामाने राक्षसोंके राजाघटोत्कचके देखतेहुये प्रकाशित बाणोंसे राक्षसी सेनाको एकक्षणमात्रमेंही भस्मकरदिया १५० वह अश्वत्थामायुद्ध में राक्षसोंकी सेनाको मारकर ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि प्रलय कालमेंसबजीवोंको मारकरसंबर्त्तकनाम अग्नि शोभितहोताहै १५१ हे भरतबंशी युद्धमें उनहजारों राजाओं और पांडवोंके मध्यमें राक्षसों के राजा बीर घटोत्कचके सिवाय कोई बीर उस सर्पके समान बाणोंके चलानेवाले अश्वत्थामाजी के देखनेको भी समर्थ नहींहुये १५२।१५३ इसके अनन्तर वह क्रोधसे चलायमान नेत्रघटोत्कच दसनों से दसनच्छदोंको काटकर १५४ क्रोध युक्त होकर अपने सारथीसे बोला कि मुझको अश्वत्थामाके पास लेचल यह कहकर वह शत्रुहन्ता अश्वत्थामाके साथ द्वैरथ युद्धको चाहता हुआ घोर रूप प्रकाशित पताका वाले रथकी सवारीसेचला १५५ उसभयानक पराक्रम राक्षसने सिंहके समान बड़े शब्दको गर्जकर युद्धमें आठ घंटे रखने वाले बड़े घोर देवताओंके बनायेहुये बज्रकोघुमाकर अश्वत्थामा के ऊपर फेंका अश्वत्थामाने धनुष को रथपर रख रथसे उतरकर उस बज्रको पकड़लिया१५६।१५७औरउसको उसीके ऊपर छोड़ा वह रथसे उतरगया १५८ वह बड़ा प्रकाशित

कठिन भयका उत्पन्न करनेवाला बज्र घोड़े सारथी और ध्वजा समेत रथको भस्मकर पृथ्वीको चीरकर उसमें घुस गया १५९ सब जीवधारियोंने उस अश्वत्थामाके कर्मको देखकर उसकी स्तुति करी जो रथसे उतरकर शंकरजीकेबनायेहुये घोरबज्रको पकड़लिया १६० हे राजा इसके पीछे भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने धृष्टद्युम्नके रथपर जाकर इन्द्रबज्रके समान बड़ेघोर धनुषको लेकर तीक्ष्णधार वाले बाणोंको फिर अश्वत्थामाकी बड़ी छातीपरछोड़ा १६१ फिर व्याकुलतासे रहित धृष्टद्युम्नने बिषैले सर्पके समान सुनहरी पंख वाले बाणोंको अश्वत्थामाकी छाती पर छोड़ा १६२ इसके पीछे अश्वत्थामाने हजारों नाराचोंको छोड़ा और उनदोनों ने भी प्रज्वलित अग्निके समान बाणोंसे उसके नाराचोंको काटा १६३ हे भरतर्षभ उन दोनों पुरुषोत्तम और अश्वत्थामा का बड़ा कठिन युद्ध शूरबीरोंके आनन्दका उत्पन्न करने वाला हुआ १६४ इसके पीछे भीमसेन हजार रथ तीनसौ हाथी और छःहजार घोड़ों समेत उस स्थान पर आये १६५ उस समय सुगम पराक्रमी धर्मात्मा अश्वत्थामाने भीमसेन के पुत्र राक्षससे और छोटे भाई समेत धृष्टद्युम्न से युद्धकिया १६६ वहां अश्वत्थामाने अपूर्ब्ब पराक्रमको दिखाया हेभरतबंशी जोकि सब जीवमात्रों में दूसरे के करने के योग्य नहीं था १६७ भीमसेन घटोत्कच और धृष्टद्युम्नके देखते पलकमारने मेंही तीक्ष्ण बाणों से राक्षसोंकी अक्षौहिणी सेनाको घोड़े रथ सारथी और हाथियोंसमेत मारडाला १६८ नकुल सहदेव युधिष्ठिर अर्जुन और श्रीकृष्णजीके देखते हुये ऐसा कर्म किया सोधे चलने वाले नाराचोंसे अत्यन्त घायल १६९ हाथी शिखरधारी पर्ब्बतोंके समान गिर पड़े हाथियोंकी कटी हुई जहां तहां सूंड़ोंसे १७० आच्छादित होकर पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसेकि चेष्टा करने वाले सर्पोंसे शोभित होतीहै और सुनहरी दंड वाले गिरे हुये राजछत्रोंसे भी पृथ्वी ऐसी शोभायमानहुई १७१ जैसे कि प्रलयकालमें ग्रहोंसे युक्त उदय हुये चन्द्रमा और सूर्य्य वाला आकाश

शोभित होताहै जिसमें बड़ी ध्वजा मंडूक और फैली हुई भेरियां कछुये १७२ छत्र रूप हंसोंकी पंक्तियोंसे युक्त सुनहरी तोरणोंकीमाला रखने वालीं जिनमें कंक औरगृध्रही बड़े ग्राह और बहुत शस्त्र रूप झखनाम मछलियों से पूर्ण रथों से चूर्ण कियाहुआ बड़ारेतथाऔर पताका रूप सुन्दर वृक्ष और बाण रूप भयानक प्रकार के मत्स्य प्रास शक्ति दुधारे खड्ग रूप डिंडिभ नामके सर्पथे मज्जा मांसही बड़ी कीच और धड़ रूपी नौका बाल रूप शैबलथा भयभीतोंके मूर्च्छा करने वाले गजराज घोड़े और शूरबीरोंके मृतक शरीरों से उत्पन्न होनेवाली रुधिर समूहोंसे बड़ी घोर नदीको अश्वत्थामाजी ने जारी किया १७६ जोकि शूरबीरों के कष्टित शब्दों से शब्दायमान रुधिरकी तरंगोंसे लहलहाती पदातियोंसे महा घोर यमलोक का महा समुद्रथा १७७ अश्वत्थामाने बाणोंसे राक्षसोंको मारकर घटोत्कचको पीड़ामान किया फिर अत्यन्त क्रोध युक्त महाबली समर्थ ने भीमसेन औरधृष्टद्युम्न समेत १७८ पांडवोंको नाराचोंके समूहों से घायल करके द्रुपद के पुत्र सुरथ नामको मारा १७९ फिर युद्धमें द्रौपदीके पुत्र शत्रुंजय बलानीक जयानीक और जयासू नामको मारा १८० अश्वत्थामाने राजा श्रुता ह्बयको यमलोक में पहुंचाया सुन्दर पुंख तीक्ष्ण धार वाले दूसरे तीन बाणोंसे हेममाली १८१ पृषध्र और चन्द्रसेनको मारा हेश्रेष्ठ उसने दशबाणों से कुंतभोजके पुत्रोंको मारा १८२ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त अश्वत्थामाने उग्र सीधे चलनेवाले उत्तम यमदंडकेसमान घोर बाणको चढ़ाकर और शीघ्रही घटोत्कचको लक्षबनाकर कानतक खैंचे हुये धनुषसे छोड़ाहेराजा वह सुन्दर पुंखवाला बड़ा बाण उसराक्षसके हृदयको छेदकर शीघ्रही पृथ्वीमें घुसगया १८३ । १८४ हेराजेन्द्र महारथी धृष्टद्युम्नने उस घायल और गिरे हुये घटोत्कचको जानकर अश्वत्थामाके सन्मुखसेउत्तम रथकोहटालिया १८५ इसकेपीछे वहबीर अश्वत्थामा युधिष्ठिर की उससेनाको जिसका स्वामी मुख फेर गया युद्धमें बिजय करके गर्जा जोकि सबजीवोंके मध्य में

आपके पुत्रोंसे प्रशंसनीयथा १८६ इसके पीछे सैकड़ोंबाणोंसे टूटे और चूर्ण हुये शरीर मृतक पड़ेहुये नाशवान् उन राक्षसोंसे पृथ्वी चारों ओर से अत्यन्त भयानक और दुर्गम्य होगई १८७ सिद्ध गन्धर्ब, पिशाचोंके समूह, नाग, गरुड़, पितृ, पक्षी, राक्षसोंके समूह, अप्सरा, देवता, और जीवधारियों के समूहोंने उन अश्वत्थामाजी की स्तुति करी १८८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः १५६ ॥

एकसौसत्तावनका अध्याय ॥

संजय बोलेकि अश्वत्थामाके हाथ से मारे हुये द्रुपदके पुत्रकुंतभोजके पुत्र और हजारों राक्षसों को देखकर १ बड़े उपाय करने वाले युधिष्ठिर भीमसेन धृष्टद्युम्न और सात्यकीने युद्धकेही निमित्त चित्तकिया २ हे भरतबंशी फिर क्रोध युक्त सोमदत्तनेयुद्धमें सात्यकीको देखकर बड़ी बाणोंकी बर्षासे ढकदिया ३ उसके पीछे बिजयाभिलाषी आपके पुत्रका और दूसरों का घोर युद्ध महा कठिन और भयका बढ़ानेवाला हुआ ४ भीमसेन ने उस सन्मुखआये हुये सोमदत्त को देखकर सात्यकी के निमित्त सुनहरी पुंखवाले दश बाणोंसे उसको घायल किया ५ सोमदत्तने भी उस बीरको सौ बाणों से घायल किया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त सात्यकी ने पुत्रादिकों से युक्त ६ नहुषके पुत्र ययातिके समान वृद्ध वृद्धोंके गुणोंसे संपन्न सोमदत्त को बज्रकी समान गिरनेवाले तीक्ष्णधार दश बाणों से घायल किया ७ शक्ति से उसको छेद कर फिर सात बाणोंसे घायल किया उसके पीछे सात्यकी के लिये भीमसेन ने नवीन बने हुये और दृढ़ ८ घोर परिघ को सोमदत्त के मस्तक पर छोड़ा फिर क्रोधयुक्त सात्यकी ने भी युद्धमें अग्नि के समान सुन्दर पर वाले तीक्ष्ण धार उत्तम बाण को सोमदत्त की छाती पर छोड़ा वह घोर परिघ और बाण एक साथही उस बीरके ऊपर गिरे ६ । १० फिर वह महारथी गिरपड़ा फिर पुत्रके अचेत होने

पर बाह्लीक ११ समय पर बर्षा करने वाले बादल के समान बाणों की बर्षाको करता उस सात्यकी के सन्मुख गया उसके पीछे युद्धके मुखपर सात्यकी के निमित्त महात्मा बाह्लीक को अत्यन्त पीड़ा देते हुये भीमसेनने नवबाण से १२ घायल किया फिर महाबाहु अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रातिपीय बंशी बाह्ली कने शक्तिको भीमसेन की छाती पर ऐसे मारा १३ जैसे कि इन्द्र बज्र को मारता है उस प्रकार से घायल हुआ वह भीमसेन कंपित होकर अचेत हुआ१४फिर पराक्रमीने सचेत होकर उस पर गदाको छोड़ा पांडव की चलाई हुई उस गदाने बाह्लीकके शिरको काटा १५ वहमृतक होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बज्रसे घायलहोकर गिरिराज गिरताहै हे पुरुषोत्तम उस बीर बाह्लीकके मरने पर १६श्रीरामचन्द्रजी के समान दश पुत्रों ने भीमसेन को पीड़ामान किया उनके नाम नागदत्त, दृढ़रथ, बीरबाहु, अयोभुज १७ दृढ़, सुहस्त बिरज, प्रमाथ, उग्रयायि, भीमसेन उनको देख कर क्रोधयुक्त हुआ और भार सहने वाले बाणोंको लिया १८ प्रत्येक को लक्ष बनाकर बाणों से आच्छादित किया वह दशों घायल और मृतक होकर रथों से ऐसे गिर पड़े १९ जैसे कि तीव्र बायुके वेगसे पर्व्वत के शिखरसे टूटे हुये वृक्ष गिरतेहैं भीमसेनने दश नाराचोंसे आपके उन पुत्रों को मार कर २० कर्णके प्यारे पुत्र वृषसेनको बाणों से ढक दिया उसके पीछे कर्णके भाई प्रसिद्ध वृकरथ नामने नाराचोंसे भीमसेनको घायल किया २१ वह पराक्रमी उसके भी सन्मुख गया हे भरतबंशी इसके पीछे बीर भीमसेन आपके शालोंके सात रथियोंको २२ मारकर नाराचोंसे सुतचन्द्रकोमारासुतचंद्रके मरनेको न सहनेवाले २३ शकुनीके बीर भाईगवाक्ष शरभ और बिभुनामों ने सन्मुख जाकर तीक्ष्ण बाणों से भीमसेन को घायल किया जैसे कि पर्व्वत बर्षाकी तीव्रतासे घायल होताहै उसीप्रकार नाराचोंसे घायल उस पराक्रमी भीमसेन ने पांच बाणों से पांचों अतिरथियों को मारा २४ । २५ उन मृतक हुये बीरोंको देखकर श्रेष्ठ राजाभी

कंपायमान हुआ उसके पीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने आपकी सेना कोमारा २६ हे निष्पाप धृतराष्ट्र युद्धमें क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्य और आपके पुत्रों के देखते हुये अम्बष्ट, मालव, शूर, त्रिगर्त्त और सशिबीनों कोभी मारकर यमपुरकोभेजा २७ राजाने अभिषाह शूरसेन, बाह्लीक और बिशातकोंको मारकर रुधिर रूपकीचवाली पृथ्वी को किया २८ हे राजा युधिष्ठिरने बाणोंसे शूरबीर मालव और मद्रकोंके समूहोंके सिवाय अन्य२ शूरोंकोभी यमलोक में भेजा २६ मारो घेरो पकड़ो छेदो मारडालो यह कठिन शब्द युधिष्ठिरके रथके पासहुये ३० सेनाओंके भगानेवाले उस युधिष्ठिरको देख कर आपने पुत्रके कहनेसे द्रोणाचार्य्यने शायकोंसे युधिष्ठिरको ढक दिया ३१ फिर अत्यन्तक्रोध युक्तद्रोणाचार्य्यनेवायुअस्त्रसेराजाकोघायल किया उसने भी उस दिव्य अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूर किया ३२ उस अस्त्रके निष्फल होनेपर पांडुनन्दनके मारनेको अत्यन्त क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्यने युधिष्ठिरकेऊपर बारुणयाम्य अग्नि और त्वाष्ट्र अस्त्रको चलाया ३३ निर्भय हुये धर्म पुत्रने द्रोणाचार्य्यके चलाये और चलेहुये उन अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे दूरकिया ३४ हे भरतबंशी फिर आपके पुत्रकी वृद्धि में प्रवृत्त धर्मपुत्रके मारनेके इच्छावान् सत्यप्रतिज्ञा करनेकी इच्छासे द्रोणाचार्य्यने ऐन्द्र और प्राजापत्य अस्त्रको प्रकट किया ३५ कौरवोंके स्वामी हाथी और सिंहके समान चलने वाले बिशाल बक्षस्स्थल रक्त और दीर्घ नेत्र वाले बड़े तेजस्वी युधिष्ठिरने दूसरे महेन्द्र अस्त्रको जारी किया उसने उनके अस्त्रको दूर किया ३६ अस्त्रोंके निष्फल होनेपर युधिष्ठिरका मारना चाहने वाले क्रोधसे पूर्ण द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मअस्त्रको प्रकट किया ३७ हे राजा इसके पीछे घोर अंधकारसे ढकजाने पर कुछ नहीं जानागया और सब जीवोंने बड़े भयको पाया ३८ हे राजेन्द्र कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरने प्रकटहोने वाले ब्रह्मास्त्रको देखकर ब्रह्मास्त्रसे ही उस अस्त्रकोभी रोकदिया ३६ उसके पीछे उन सेनाओंके स्वामियोंने उन बड़े धनुषधारी सब प्रकारके युद्धोंमें कुशल नरोत्तम

युधिष्ठिर और द्रोणाचार्य्यकी प्रशंसा करी ४० हे भरतबंशी तब क्रोध से रक्तनेत्र द्रोणाचार्य्य ने युधिष्ठिर को त्याग करके बायव्य अस्त्रसे द्रुपदकी सेनाको छिन्न भिन्न किया ४१ द्रोणाचार्य्यके हाथसे घायल वह पांचाल महात्मा अर्जुन और भीमसेन के देखते हुये भयभीत होकर भागे ४२ इसके पीछे अर्जुन और भीमसेन दो बड़े रथ समूहों समेत सेनाको चारों ओरसे नियत करके अकस्मात् लौटे ४३ अर्जुनने दाहिने पक्षको भीमसेनने उत्तरीय पक्षको रक्षित किया और बाणोंके बड़े समूहों से भारद्वाजके ऊपर वर्षा करने लगे ४४ हे महाराज बड़ेतेजस्वी केकय,संजय, पांचाल और मत्स्य देशी यादवों समेत पीछे चले ४५ तदनन्तर अर्जुनके हाथसे घायल वह भरतबंशियों की सेना लोग अन्धकार और निद्रासे फिर भी इधर उधरहुये ४६ हेराजेन्द्र तब द्रोणाचार्य्यसे और निज आपके पुत्रसे रोके हुये वह शूरबीर रुकनेको समर्थ नहीं हुये ४७

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः१५७॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय॥

संजय बोले कि पांडवोंकी उस चढ़ाई करने वाली बड़ी सेनाको देखकर उसको न सहनेके योग्य माननेवाले दुर्योधन ने कर्णसे कहा १ हे मित्रोंके प्यारे मित्रोंका यह वह समय बर्त्तमान हुआहै कि तुम युद्धमें उन सब महारथी शूरबीरोंको रक्षाकरो २ जोकि सबओरको क्रोधयुक्त सर्पके समान श्वासलेने वाले पांचाल मत्स्य केकय देशी और महारथी पांडवों से घिरे हुयेहैं ३ बिजय से शोभायमान इन्द्रके समान वह पांडव और पांचालदेशियों के बहुत से रथोंके समूह प्रसन्न चित्त होकर गर्जरहेहैं ४ कर्ण बोले कि जो इन्द्रभी यहां अर्जुनकी रक्षा करने को आवे तो प्रथम शीघ्रतासे उसको बिजय करके पीछे से पांडवोंको मारूंगा ५ हे भरतबंशी मैं तुझसे सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं मेरा बिश्वासकर सन्मुख आयेहुये पांडव और पांचालों का मैं नाश करने वालाहूं ६ तुमको ऐसे

विजयद्वूंगा जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजी ने इन्द्रकोदी थी हे राजातेरा अभीष्ट मुझको करना अवश्य योग्यहै मैं केवल इसी निमित्त जीवताहूं ७ सब पांडवों में अर्जुन अधिक पराक्रमीहै उसपर इन्द्रकी बनाई हुई अमोघ शक्तिको छोडूंगा हे बड़ाई देने वाले उस धनुषधारी के मरने पर उसके सब भाई तेरे आज्ञाकारी होंगे अथवा फिर बनकोजायँगे ८।९ हे कौरव मेरे जीवते हुये कभी व्याकुलताको मतकरो युद्धमें सब पांडवोंको एक साथही बिजय करूंगा १० और सन्मुख आये हुये केकय पांचाल और यादवोंको भी बाणों के समूहोंसे खंड २ करके पृथ्वी तुझको दूंगा ११ संजय बोलेकि फिर हँसते हुये महा बाहु शारद्वत कृपाचार्य्यजी इस प्रकार से कहने वाले सूतके पुत्र कर्णसे यह बचन बोले १२ हे राधाके पुत्र धन्यहै धन्यहै तुझनाथके होने से राजा दुर्योधन स नाथहै जोकि बातोंही से सिद्ध होताहै हे कर्ण कौरवके सन्मुख ऐसी२ बातें बहुधा कहाकरतेहो परन्तु तेरा कोई बल पराक्रम देखनेमें नहीं आता१३। १४ तुमने बहुधा पांडवोंकेसाथ सन्मुखताकरी परन्तु हे सूतनन्दन तू सब स्थानों पर पांडवों से हाराहै १५ हे कर्ण गंधर्वोंके हाथसे दुर्योधन के पकड़े जाने पर सेनाके लोगोंने युद्ध किया तूही अकेला सेनाके आगे से भागा १६ और हे कर्ण बिराट नगरमें इकट्ठे सब कौरव और अपने छोटे भाई समेत तुमभी युद्धमें अर्जुनसे पराजय किये गये १७ तुम युद्धभूमिमें अर्जुनके सन्मुख होनेको भी समर्थ नहीं हो फिर श्रीकृष्णजी समेत सब पांडवोंके बिजय करनेको कैसे उत्साह करतेहो १८ हे सूतके पुत्र कर्ण तुम बहुत कहते हो बिना कहे हुये युद्धकर यही सत्पुरुषों का व्रतहै १९ हे सूतपुत्र तुमशरद ऋतुके बादलके समान गर्जकर निष्फल और निरर्थक दिखाई पड़तेहो राजा तुम्हारी इस बातको नहीं जानता है २० हे राधाके पुत्र तभी तक गर्जना करलो जब तक कि अर्जुनका रूप नहीं देखतेहो अर्जुनको समीपसे देखकर तेरागर्जना कठिनहै २१ तुम अर्जुन के उन बाणोंको न पाकर अधिक गर्जतेहो अर्जुनके बाणोंसे घायल

होकर तुझघायलका गर्जना बड़ा कठिनहै २२ क्षत्रीभुजाओंसेशूरहैं ब्राह्मण बातोंमें गुरूहैं अर्जुन धनुषसे शूरहै और कर्ण मनोरथोंसेही शूरहै २३जिस्से रुद्रजीभी प्रसन्न हुये उस अर्जुनकोकौन मारसक्ता है तब२४उन कृपाचार्य्यके बचनों से अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रहार करने वालोंमें श्रेष्ठ कर्ण कृपाचार्य्यसे यह बचन बोला शूरबीर सदैव ऐसे गर्जतेहैं जैसे कि बर्षाऋतुमें बादल गर्जनाकरतेहैं २५ और शीघ्रही फलको ऐसे देतेहैं जैसेंकि ऋतुमें बोया हुआबीज फलको देताहैइस युद्धके मुखपर शूरोंके दोषोंको नहीं देखताहूं २६ जोकि युद्धमेंउस२ बचनके कहनेवाले और भारके उठानेवालेहैं पुरुष चित्तसेही जिस भारके उठानेको निश्चय करता है २७ उसमें सहायता करने को दैव अवश्य उसके पास बर्त्तमान होताहै दृढ़ बिचार की सहायता रखनेवाला मैं मनसे भारको उठाताहूं २८ युद्धभूमिमें श्रीकृष्ण और यादवों समेत पांडवोंको मारकर जो गर्जताहूं हे ब्राह्मण उसमें तुम्हारी क्या हानि होतीहै२९शूरबीर शरदऋतुके बादलोंके समान निरर्थकनहीं गर्जतेहैं पंडित प्रथम अपनी सामर्थ्यको जानकर फिर गर्जतेहैं ३० मैं अब युद्धमें साथ उपाय करनेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुनके बिजय करनेको चित्तसे उत्साह करताहूं हे गौतम जी मैं इसकारणसे गर्जताहूं ३१ हे ब्राह्मण इसमेरे गर्जनेके फलकोदेखो कि युद्धभूमिमें श्रीकृष्णजीसमेत पांडवोंको मारकर इसनिष्कंटपृथ्वी को दुर्योधनके अर्थ दूंगा ३२ कृपाचार्य्यजी बोले किहे सूतके पुत्र कर्ण यह मनोरथोंकोवार्त्ता मुझको अंगीकार नहीं है निश्चय करके तुम सदैव श्रीकृष्ण अर्जुन और धर्मराज युधिष्ठिरकी निन्दा करते हो ३३ हे कर्ण निश्चय करके वहीं बिजयहै जहांपर युद्धमें कुशल कवचधारी शस्त्रधारी देवता गन्धर्व यक्ष मनुष्य उरग और राक्षसों के समूहोंसेभी ३४ अजेयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं धर्मपुत्र युधिष्ठिर वेद ब्राह्मणोंका रक्षक सत्य वक्ता जितेन्द्री गुरूऔर देवताओं का पूजन करने वाला ३५ सदैव धर्म में प्रीतिमान् अधिकतर शास्त्रोंकाज्ञाता धैर्य्ययुक्त उपकारका नहीं भूलनेवालाहै ३६ और

उसके भाई बलवान् और अस्त्रोंमें परिश्रम करनेवाले गुरूमें भक्तिपूर्वक प्रीतिरखनेवाले बुद्धिमान् सदैवधर्मपर चलनेवाले और यशस्वी हैं ३७ और उनके नातेदारभी इन्द्रके समान पराक्रमी बड़े प्रीतिमान प्रहार करनेवाले धृष्टद्युम्न, शिखंडी, दुर्मुखी, जनमेजय, चन्द्रसेन, रुद्रसेन, कीर्त्ति, धर्मा, ध्रुव, धर, बसुचन्द्र, दामचन्द्र, सिंहचन्द्र, सुतेजन ३९ और इसीप्रकार द्रुपदकेपुत्र महा अस्त्रज्ञ द्रुपद और जिन्होंके निमित्त छोटे भाइयों समेत राजा विराट अच्छा उपाय करनेवालाहै ४० सतानीक, सूर्यदत्त, श्रुतानीक, श्रुतध्वज, वलानीक, जयानीक, जयाश्व, रथबाहन ४१ चन्द्रोदय, समर्थ, यहसब बिराटके उत्तमभाई नकुल, सहदेव, द्रौपदीकेपुत्र, औरघटोत्कचराक्षस४२ जिन्होंके अर्थ लड़तेहैं उन्होंकी पराजयनहींहोसक्ती पांडवोंके यहसब और अन्य बहुतसे समूहहैं निश्चयकरके भीमसेन और अर्जुन देवता असुर मनुष्य यक्ष राक्षस भूत सर्प और हाथियों से समेत सब संसारको अस्त्रों के बलसे निर्मूल करसक्ते हैं और युधिष्ठिर अपनी घोरदृष्टि से भी सब पृथ्वीको भस्म करसक्ता है ४४।४५ वह अत्यन्त पराक्रमी श्रीकृष्णजी जिन्होंकेलिये कवच धारणकियेहैं हेकर्ण युद्धमें उनशत्रुओंके बिजय करनेको तू किसप्रकार उत्साहकरताहै ४६ हे सूतके पुत्र सदैव यहतेरा बड़ा अन्याय है जो युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुनसे लड़नेको उत्साह करताहै ४७ संजयबोले हे भरत बंशियोंमें श्रेष्ठ हंसते और इसप्रकार कहेहुये राधाके पुत्र कर्णने गुरू शारद्वत कृपाचार्य्य से कहा ४८ कि हे ब्राह्मण जोतुमने पांडवोंके विषयमेंबचनकहा सोसब सत्यहै निश्चय करके पांडवोंमें यहसब गुण और इनके सिवाय औरभी बहुतसे गुणहैं ४९ पांडव युद्धमें दैत्य यक्ष गन्धर्व पिशाच उरग राक्षस और इन्द्र ५० समेत सब देवताओंसेभी अजेय और अवध्य हैं तौभी इन्द्रीकी दीहुई शक्ती से पांडवोंको बिजय करूंगा हे ब्राह्मण निश्चय करके इन्द्रनेयह अमोघ शक्ति मुझकोदी है ५१ इसशक्ति से युद्धमें अर्जुनको मारूंगा फिर पांडव अर्जुन के मरनेपर उसके

सगेभाई ५२ अर्जुनसे रहित होकर किसी दशा में भी पृथ्वी के भोगनेको समर्थ नहींहोंगे हे गौतम जी उनसबके नाशहोनेपर यह ससागरा पृथ्वी ५३ बिनाही परिश्रमके दुर्य्योधनके आधीन होगी इसलोक में अच्छी नीतियों से सब प्रयोजन सिद्ध होतेहैं इसमें जराभी सन्देह नहीं है ५४ हे गौतम जी मैं इस ज्ञानको जानकर उस ज्ञानसे गर्जता हूं तुमवृद्ध ब्राह्मण और युद्धमें भी असमर्थ५५ पांडवोंमें प्रीति करनेवाले होकर मोहसे मेरा अपमान करते हो हे ब्राह्मण जो तुम यहां इसरीतिसे फिर मेरे अप्रियको कहोंगे ५६ तो हे दुर्बुद्धी खड्गसे तुम्हारी जिह्वाको काटूंगा हेदुर्बुद्धी बिप्र जो तुमसब कौरवीय सेनाके मनुष्योंको भयभीत करते युद्धमें पांडवोंकी प्रशंसा करना चाहतेहो हे ब्राह्मण इस स्थानपर मेरे इस यथार्थ कहेहुये बचनको सुनो ५७ दुर्य्योधन, द्रोण, शकुनि, दुर्मुख, जय, दुश्शासन, वृषसेन, शल्य, और तुम५८ सोमदत्त, भूरिश्रवा, अश्वत्थामा, विविंशत यह सब युद्धमें कुशल और कवचधारी जिससेनामें नियतहोंय ६० तब इन्द्रके समान भी कौनसा शत्रु मनुष्य इनको बिजय कर सक्ताहै यह शूरबीर अस्त्रज्ञ स्वर्ग के अभिलाषी ६१ धर्मज्ञ युद्धमें सावधान लड़ाईमें देवताओं कोभी मारसकेंगे पांडवों के मारनेके अभिलाषी दुर्य्योधनकी बिजय चाहनेवाले कवचधारी यह लोग युद्धमें नियत होंय मैं बड़े पराक्रमी लोगों कोभी बिजय को दैवके आधीन मानताहूं ६२। ६३ जिस स्थान पर महाबाहु भीष्म सैकड़ों बाणोंसे युक्तहोकर सोतेहैं और विकर्ण, चित्रसेन, वाह्लीक, जयद्रथ ६४ भूरिश्रवा, जय, जलसिन्धु, सुदक्षिण, रथियोंमेंश्रेष्ठ शल्य, पराक्रमी भगदत्त, ६५ यह और दूसरेराजा जोकि देवताओं से भी कठिनतासे बिजय होनेवाले बड़े पराक्रमी शूरथे युद्धमें पांडवों के हाथसे मारेगये ६६ हे नीच पुरुष ब्राह्मण दैवसंयोगके बिशेष दूसरीकौनबात मानतेहो जिससे कि दुर्य्योधन केशत्रुओंकी बारंबार प्रशंसा करतेहो ६७ उन्होंके भी सैकड़ों और हजारों शूर मारेगये और पांडवों समेत कौरवोंकी सबसेना विनाश

को पातीहैं ६८ यहांपर मैं किसीप्रकारसे भी पांडवों के प्रभाव को नहीं देखताहूं हे नीच ब्राह्मण जो तुम सदैव उन्हींको बलवान् पराक्रमी मानतेहो ६९ मैं दुर्य्योधन हितके निमित्त युद्धमें अपने सामर्थ्यके अनुसार उनके साथ लड़ने को उपाय करूंगा विजय दैव के आधीन है ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः १५८ ॥

एकसौउनसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि अश्वत्थामा कर्णसे उसप्रकार कठोर बचन सुने हुये मामाको देखकर शीघ्रही खड्गकोउठाकर तीव्रतासे दौड़ा १इसके पीछे अत्यन्तक्रोधयुक्त अश्वत्थामा कौरवराज दुर्योधनके देखतेहुये कर्णकेसन्मुख ऐसेआया जैसे कि सिंहमतवाले हाथीके सन्मुखजाय २ अश्वत्थामाबोले हे नरोंमेंनीच अत्यन्त दुर्बुद्धी कर्ण जो तू अर्जुनके सत्य२गुणोंके कहनेवाले शूरमामाजीको शत्रुतासे घुड़कताहै ३अब शूरतासे अपनी प्रशंसा करनेवाला बड़े अहंकारमें फंसाहुआ तूसब लोकके धनुषधारीको युद्धमें कुछ न गिनता निन्दाको करताहै ४ तेरापराक्रमकहां और अस्त्र कहांरहे जिसतुझको गांडीवधनुषधारीने विजय करके तेरे देखते हुये जयद्रथको मारा ५ जिसने पूर्व्वसमय केबीच साक्षात् महादेवजीसे युद्धकिया हे सूतोंमेंनीच निरर्थकमनोरथोंसे उस अर्जुनको विजय कियाचाहताहै६इन्द्रसमेत सुरासुरभी सब मिलकर जिस सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णकेसाथी लोक केएकबीर और अजेय अर्जुनको विजय करनेको समर्थनहींहैं हे दुर्बुद्धीसूत फिर तुम युद्धमें इन सबराजाओंसमेत क्या समर्थहोगे७।८ हे नरोंमें नीच अत्यन्त दुर्बुद्धी कर्ण अब नियतहो मैं इसीसमय तेरे शिरको शरीरसे जुदा करताहूं९ संजयबोलेकि बड़ेतेजस्वी आपराजा दुर्योधन और द्विपादोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्यने उस युद्धकेलिये सन्नद्ध अश्वत्थामाको शीघ्रतासे रोका १० कर्णबोला हे कौरवोंमेंश्रेष्ठ दुर्योधन यह ब्राह्मणोंमें नीच दुर्बुद्धी शूर युद्धमें प्रशंसनीय मेरे पराक्रम

कोपावो हे दुर्योधन तुम इसको छोड़दो११ अश्वत्थामा बोले कि हे दुर्बुद्धी कर्ण हमलोगोंकी ओरसे यहतेरा अपराधक्षमा कियाजाताहै इसतेरे बड़ेअहंकारको अर्जुन नाशकरेगा१२ दुर्योधनबोला हे बड़ाई देनेवाले अश्वत्थामाजी प्रसन्न होकर क्षमाकरनेकेयोग्य हो निश्चय करकेआपको किसीप्रकारसे कर्णकेऊपरक्रोध न करनाचाहिये १३ क्योंकि कर्ण कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य शल्य शकुनि और आप इन छओंकेऊपर बड़ाभार नियतहै हे ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ प्रसन्न हूजिये १४ हे ब्रह्मन् यह सब पांडव कर्णकेसाथ सन्मुखहोकर युद्धकरनेके अभिलाषीचारोंओरसे इसको बुलातेहुये आतेहैं१५ संजय बोले हे महाराज इसके पीछे क्रोधकी तीव्रतासेयुक्त बड़े साहसी राजासे प्रसन्न कियेहुयेअश्वत्थामाजी प्रसन्न हुये १६ हे राजेन्द्र फिर बड़ेसाहसी और शीघ्रही मृदु होनेवाले कृपाचार्य्यजीभी सौम्यभावसे यहबचन बोले१७कि हे अत्यन्त दुर्बुद्धीकर्ण यहतेराक्रोध हमारीओरसे क्षमा किया जाताहै अर्जुनही तेरे बड़ेभारी अहंकारको नाश करेगा १८ संजयबोले हे राजा इसके अनन्तर कर्णको चारोंओर से घुड़कते वह यशस्वी पांचाल और पांडव एकहीसाथ आपहुंचे १९ तब रथियोंमें श्रेष्ठ पराक्रमीकर्णभी धनुषको उठाकर उत्तम कौरवोंसे ऐसा रक्षित हुआ जैसे कि देवताओंके समूहोंसे इन्द्र रक्षितहोताहै२०अपनेभुजबलमें आश्रित होकर कर्ण नियतहुआ फिर कर्णका युद्ध पांडवोंके साथ जारी हुआ २१ हे राजा वह युद्ध डरानेवाले सिंहनाद से शोभितथा तदनन्तर उन बीर पांडव और पांचालोंने २२ महाबाहु कर्णको देखकर उच्चस्वर से शब्दकिया और बोले कि यह कर्णहै कर्ण कहां है हे कर्ण इस बड़े युद्धमें नियतहो २३ हे पुरुषोंमें नीच दुर्बुद्धी हमारेसाथ युद्धकर और कोईर कर्णको देखकर क्रोध रक्तनेत्र करके यह बचन बोले २४ यह अहंकारी और निर्बुद्धी सूत का पुत्र सब उत्तम राजाओंकी ओरसे मारने के योग्यहै ऐसेमनुष्यके जीवने से हमारा कोई प्रयोजन नहीं है २५ यह दुर्य्योधन के मतमें नियत पापी पुरुष कर्ण सदैव से पांडवोंका शत्रु होकर उपद्रवों का

मूलहै २६ मारो२ यह वचन बोलते और बाणोंकी बड़ीबर्षासेढकते महारथी क्षत्री पाण्डवसे आज्ञादिये हुये कर्णके मारनेके निमित्त सन्मुख दौड़े कर्णने उन उसप्रकार दौड़तेहुये महारथियों को देखकर २७। २८ पीड़ा और भयको नहीं पाया उस प्रलयकालके समान उठेहुये सेनासागरको देखकर २९ आपके पुत्रोंको प्रसन्नता चाहनेवाले युद्धों में अजेय पराक्रमी शीघ्रता करनेवाले महाबली कर्णने बाणोंके समूहों से ३० उस सेनाको सब ओरसे रोका हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ उसके पीछे पांडवोंने बाणोंकी बर्षा करके उसको रोका ३१ वह हजारों बीर धनुषोंको खैंचते कर्णसे ऐसे युद्ध करनेलगे जैसे कि दैत्योंके समूह इन्द्रसे लड़तेहैं ३२ हे प्रभु कर्णने राजाओंकी बर्षा हुई बाणवृष्टिको अपने बाणोंकी बड़ी बर्षासे चारोंओर को हटाया ३३ युद्ध कर्म में उन युद्धाभिलाषियों का युद्ध ऐसा हुआ जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें इन्द्रकायुद्ध दानवोंसे हुआथा ३५ वहांपर हमने कर्ण की अपूर्व्व तीव्रताको देखा जो युद्धमें कुशल पराक्रमी उन शत्रुओंने उसको आधीन नहींकिया ३५ महारथीकर्णनेराजाओंकेबाणसमूहोंको रोककर युग ईशा छत्रध्वजा और घोड़ोंपर ३६ अपने नामसे चिह्नित बाणोंको चलाया इसके पीछे कर्णके हाथसे पीड़ामान व्याकुल रूप वह राजालोग ३७ जहां तहां ऐसे घूमे जैसे कि शरदी से पीड़ामान गौवें घूमती हैं उन मृतक घोड़े हाथी औररथोंके समूहोंको जोकि कर्णके हाथसे घायल थे जहां तहां देखा उससमय मुख न फेरनेवाले शूरोंके पड़ेहुये शिर भुजाओंसे ३९ चारोंओरसे सब पृथ्वी आच्छादित होगई मरनेवाले और सबओरसे शब्दकरनेवाले बीरोंसे ४० युद्धभूमि यमराज की पुरीके समान महारुद्ररूप हुई उसके पीछे राजादुर्य्योधन ने कर्णके पराक्रमको देखकर४१ और अश्वत्थमासे मिलकर यह बचनकहा कि कवचधारी कर्ण सब राजाओंके साथ युद्धभूमिमें लड़ताहै ४२ कर्णके बाणसे पीड़ित और भागीहुई इससेनाको ऐसे देखो जैसे कि स्वामिकार्त्तिक के हाथसे मारीहुई आसुरीसेना होती है ४३ युद्धमें

बुद्धिमान् कर्णके हाथसे मारीहुई उस सेनाको देखकर यह अर्जुन कर्णके मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुख आताहै सो जिसप्रकार अर्जुन हमारेदेखतेहुये युद्धमें महारथी कर्णको न मारसके उसीप्रकार की नीति कीजिये ४५ तब उसकेपीछे महारथी अश्वत्थामा कृपाचार्य्य शल्य कृतवर्मा यह सब कर्णकी रक्षाके निमित्त अर्जुनके सन्मुख गये ४६ जैसे कि दैत्योंकी सेना इन्द्रको देखतीहै उसीप्रकार आते हुयेअर्जुनको देखकर सन्मुख हुये हे राजेन्द्र पांचालों से रक्षित अर्जुनभी कर्णके सन्मुख ऐसेगया जैसे वृत्रासुरकेसन्मुख इन्द्रजाता है ४७ धृतराष्ट्र बोले हे सूत सूर्य्यके पुत्र कर्णने कालमृत्यु और यमराजके समान क्रोधयुक्त अर्जुनको देखकर किस उत्तर रूप दशाको पाया ४८ वह महारथी सदैव अर्जुन के साथ ईर्षा करताहै और युद्धमें बड़े भयकारी कर्मवाले अर्जुनके बिजय करनेकी अभिलाषा करताहै ४९ हे सूत उस सूर्यपुत्र कर्णने उस सदैवके बड़ेभारी शत्रु रूप अकस्मात् सन्मुख आयेहुये अर्जुनको देखकर कौनसे प्रत्युत्तर को पाया ५० संजय बोले कि व्याकुलतासे रहित कर्ण उस सन्मुख आनेवाले पांडव अर्जुनको देखकर युद्धमें ऐसे सन्मुख हुआ जैसे कि हाथी हाथी के सन्मुख जाताहै ५१ अर्जुनने उस वेग से आते हुये कर्णको सीधे चलनेवाले बाणोंसे ढकदिया और कर्णनेभी अर्जुन को बाणोंसे ढका ५२ फिर अर्जुनने बाणजालों से कर्ण को ढक दिया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने तीनबाणों से छेदा ५३ महाबली अर्जुनने उसकी उस हस्तलाघवता को नहीं सहा फिर शत्रुके हटानेवाले अर्जुनने शिलापर घिसेहुये सीधेचलनेवाले ५४ तीनसौ बाणोंको उस कर्णके निमित्त चलाया और फिर उस हँसते हुये पराक्रमी बड़े बलीने एक बाणसे बायेंहाथके पंजेको छेदा बाण से घायल उस कर्णके हाथसे धनुष गिरपड़ा ५५। ५६ महाबली और हस्तलाघवी कर्णनेआधेही निमिषमें उसधनुषको फिर लेकर बाणोंके समूहोंसे अर्जुनको ढकदिया ५७ हे भरत बंशी कर्ण के हाथसे उस छोडीहुई बाण बर्षाको मंद मुसकान करते अर्जुनने बाणों

की बर्षा से छिन्न भिन्न किया ५८ हे राजा युद्ध कर्म पर युद्ध कर्म करनेके अभिलाषी उनदोनों बड़े धनुषधारियों में परस्पर सन्मुख होकर बाणोंकी बर्षा से ढक दिया ५९ यह युद्धभूमि में कर्ण और अर्जुनका वह बड़ा अपूर्व्व युद्ध ऐसाहुआ जैसे कि हथिनीके ऊपर क्रोधयुक्त दो हाथियों का होताहै ६० इसके पीछे बड़े धनुषधारी शीघ्रतायुक्त अर्जुनने कर्णके पराक्रमको देखकर उसकेधनुषकोमुष्टिका के स्थानपर काटा ६१ फिर शत्रुओंके तपानेवालेने चारभल्लों से उसके चारों घोड़ोंको भी यमलोकमें पहुंचाया और एक भल्लसे सारथी के शिरको उसके शरीरसे जुदा किया ६२ इसकेपीछे पांडुनन्दन अर्जुन ने इसटूटेधनुष मरेघोड़े और नाश हुये सारथीवाले कर्णको चारशायकोंसे छेदा६३ बाणोंसे पीड़ित नरोत्तम कर्ण मृतक घोड़ेवाले रथसेशीघ्र उतरकर कृपाचार्य्यके रथपर सवारहुआ ६४ अर्जुनके बाण समूहों से घायल शल्यक बृक्षके समान चितेहुये जीबनकी आशा करनेवाले कर्णने कृपाचार्य्य के रथपर सवारी करी ६५ हे भरतबंशी आपके शूरबीर लोग कर्णको पराजित देख कर अर्जुनकेबाणोंसे घायल होकर दशोंदिशाओं को भागे ६६ हे राजा तबराजा दुर्य्योधनने उन भागेहुओंको देखकर फिर लौटाया और इसबचनको कहा ६७ हे शूरलोगो भागना बन्दकरो हे श्रेष्ठ क्षत्रीलोगो ठहरो मैं आप युद्धमें अर्जुन के मारनेको जाताहूं ६८ मैं पांडव लोगोंको पांचालदेशी और सोमकों समेत मारूंगा अब पांडव गांडीव धनुषधारी समेत मुझ युद्ध करनेवाले के ६९ पराक्रमको ऐसे देखेंगे जैसे कि प्रलयकालीनकाल पुरुषके पराक्रमको देखतेहैं अब शूरबीर लोग मेरे छोड़ेहुये हजारों बाणजालोंको७० युद्धमें ऐसे देखेंगे जैसे कि टीड़ियोंकी आधिक्यताको देखते हैं अब सेनाके लोग युद्धमें मुझ धनुष धारीके छोड़ेहुये बाण समूहोंको ७१ युद्धमें ऐसे देखेंगे जैसे कि बर्षाऋतुके आदिमें बादलकी बर्षाको देखतेहैं अब मैं युद्धमें टेढ़े बरवाले शायकोंसे अर्जुनको बिजय करूंगा ७२ हे शूरबीरलोगो युद्धमेंनियत होकर अर्जुनसे भयकोत्याग

करो अर्जुन मेरे पराक्रम को पाकर ऐसे नहीं सहसकैगा जैसे कि मकरादिक जीवोंका आश्रय रूप समुद्र मर्य्यादा अथवा तटकोपाकर नहीं सहसक्ताहै अर्थात् उल्लंघन नहींकरसक्ताहै यह कहकर बड़ी सेना से संयुक्त अजेय क्रोधसे रक्तनेत्र राजा दुर्य्योधन अर्जुनके सन्मुख चला तब कृपाचार्य्यजीने जातेहुये उस महाबाहु दुर्योधन को देखकर ७५ और अश्वत्थामासे मिलकर इसवचनको कहा यह सहन न करनेवाला क्रोधसे मूर्च्छावान् महाबाहु राजा दुर्य्योधन ७६ पतंग के समान नियत होकर अर्जुनसे लड़नाचाहता हैयह पुरुषोत्तम अर्जुनके साथ युद्ध करते हमारे देखते ७७ जबतक प्राणोंको त्याग नहीं करे तबतक इस कौरवकी रक्षाकरो अब जब तक बीर राजादुर्योधन अर्जुनके बाणोंकेलक्ष्योंको नहींपाता है७८ तबतक युद्ध में रक्षाकरो जबतक कांचली से छुटे सर्प की समान घोर अर्जुन के बाणोंसे ७९ राजा भस्मनहीं कियाजाता है तबतक युद्धसे निषेध करो हे बड़ाई देनेवाले हमलोगों के विद्यमान होने पर इसबातको मैं अयोग्य जानताहूं ८० कि जो अकेलाही राजा आप अर्जुनसे लड़नेको उसके सन्मुख जाताहै मुकुटधारी अर्जुनके साथ युद्ध करनेवाले दुर्य्योधनके जीवनको मैं कठिनतासे प्राप्त होना ऐसा मानता हूं ८१ जैसे कि शार्दूलके साथ लड़नेवाले हाथी का जीवन कठिनतासे होसक्ताहै मामा से इसप्रकार आज्ञा किया हुआ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामा ८२ शीघ्रतासे दुर्योधन से यह बचन बोला कि हे गान्धारीके पुत्र मेरे जीवते जी तुम युद्ध करने को योग्य नहींहो ८३ हे अपने सदैव हित चाहने वाले कौरव मुझको तिरस्कार करके अर्जुनके बिजयके लिये तुमको व्याकुलतान करना चाहिये ८४ मैं अर्जुन को रोकूंगा हे दुर्योधन तुम ठहरो ८५ दुर्य्योधन बोला कि निश्चय करके गुरूजी पांडवों को पुत्रों के समान रक्षा करते हैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तुमभी सदैव उन पांडवों में उदासीनता करते हो ८६ अथवा मेरी अभाग्यतासे युद्धमें आपका पराक्रम थोड़ा है या धर्मराज और द्रौपदी के अर्थ

थोड़ाहै उसको हमनहीं जानते ८७ मुझलोभीको धिक्कारहै जिसके कारण सुखभोगनेके योग्य अजेय सब बान्धवलोग बड़े दुःखोंको पाते हैं ८८ शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ युद्धमें महेश्वरजी के समान समर्थ गौतमीके पुत्रके सिवाय कौन शत्रुओंको नाशकर सक्ताहै८९ हे अश्वत्थामा जी प्रसन्न होकर इन सावधान शत्रुओंको नाशकरो आपके अस्त्रोंके लक्ष्यमें नियतहोनेको देवता और असुरभी समर्थ नहीं हैं ९० हे महात्मा जी पांचाल और सोमकों को उनके पीछे चलनेवालों समेत मारो आपही से रक्षित होकर हमलोग शेष बचे हुये शत्रुओं को मारेंगे ९१ हेब्रह्मन् यह यशवान् सोमक और पांचाल अत्यन्त क्रोधयुक्त मेरीसेनाओं में दावानलनाम अग्नि के समान बिचरते हैं ९२ हे महाबाहु नरोत्तम उनको और केकयों को रोको अर्जुन से रक्षित होकर वह नाशको कररहे हैं ९३ हे शत्रु-बिजयी श्रेष्ठ पुरुष अश्वत्थामा जी शीघ्रता युक्तहोकर तुम चलो प्रारंभ में अथवा अन्तमें यह आपका कर्म है ९४ हे महाबाहु तुम पांचालों के मारने के निमित्त उत्पन्न हुयेहो निश्चय करके तुम सब जगत्को पांचलों से रहित करोगे ९५ इसके पीछे वह यही सिद्ध बचन बोले कि ऐसाहीहोगा हे पुरुषोत्तम तुम इसकारण से सब पांचालोंको उनके पीछे चलनेवालों समेत मारो ९६ इन्द्र समेत सब देवता भी तेरे अस्त्रोंके लक्ष्य पर नियत होनेको समर्थ नहींहैं फिर पांचालों समेत पांडवलोग क्या पदार्थहैं यह तुमसे मैंसत्य२ कहताहूं ९७ हे बीर युद्धमें सोमकों समेत सब पांडव पराक्रम से आपके साथ लड़ने को समर्थ नहीं हैं यहसत्य२कहताहूं९८हेमहा-राज चलो२ हमारा समय टल न जाय यह हमारी सेनापांडवों के हाथसे पीड़ित होकर भागतीहै ९९ हे बड़ाई देनेवाले महाबाहुतुम अपनेदिव्यतेजसेपांडवऔरपांचालोंकेबिजयकरनेकोसमर्थहो१००॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिएकोनषष्टितमोऽध्यायः १५९ ॥

—※—

एकसौसाठका अध्याय॥

संजय बोले कि दुर्योधन के इसरीति पर समझाने से युद्ध में दुर्मद अश्वत्थामा ने शत्रुओं के मारने में ऐसा उपाय किया जैसे कि इन्द्रने दैत्योंके मारनेमें उपाय किया था उस महाबाहुनेआपके पुत्रको यहउत्तरदिया १ कि हे महाबाहु कौरव जो तुम कहतेहौ वह सबसत्य है पांडवसदैव मेरे और मेरे पिताके प्यारेहैं २उसीप्रकार हमदोनोंभी उनकेप्यारेहैं परन्तुयुद्धमें नहीं हेतात हमप्राणोंकोत्यागकर निर्भयके समान अपनी सामर्थ्यसे लड़तेहैं ३ हे राजाओं में श्रेष्ठ मैं कर्ण शल्य कृपाचार्य्य और कृतवर्मा एक निमिष मेंही पांडवी सेनाका नाश करसक्तेहैं ४ और हे महाबाहु वह पांडव आधेही निमेषमें कौरवीसेनाको नाश करसक्तेहैं जब कि हमलोग युद्धमें न होंय ५ जो सामर्थ्यसे पांडवोंसे युद्ध करनेवाले हम और हमसे युद्धाभिलाषी वह लोगभी युद्धमें न होंय तो हे भरतबंशी तेज तेजसे मिलकर नाशको पाताहै ६ पांडवोंके जीवतेजी उनकी सेना शीघ्र बिजय करनेके योग्य नहींहै यहमैं तुझसे सत्य कहताहूं ७ हे भरतबंशी अपने निमित्त युद्ध करनेवाले वह समर्थ पांडव आपकी सेनाको कैसे नहीं मारेंगे ८ हे राजा तुम बड़ेलोभी और छलीहो हे कौरव तुम बातोंके अहंकारी होकर सन्देह करनेवालेहो इसहेतुसे तुम हमपर सन्देह करतेहो ९ हे राजा मैं मानताहूं कि तुम नीच पापात्मा पापीपुरुषहो हे नीच तू पापकरनेवाला होकर हमारे मध्य में दूसरोंपरभी सन्देह करताहै १० हे कौरवनन्दन तेरे निमित्त जीवनका त्यागनेवाला मैं उपायमें प्रवृत्त होकर तेरेही कारण से युद्धमें जाताहूं ११ मैं शत्रुओंके साथलड़ूंगा और उत्तम २ शूरबीरों को मारूंगा पांचाल सोमक और केकयोंसे युद्धकरूंगा १२ हे शत्रुविजयी मैं तेरे निमित्त पांडवोंसेभी युद्ध करूंगा अब मेरे बाणोंसेटूटे हुये अंगवाले पांचाल और सोमक १३ सबओरसे ऐसेभागेंगे जैसे कि सिंहसे पीड़ित गौवें भागतीहैं अब धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर

मेरे पराक्रमको देखकर १४ सोमकोंसमेत लोकको अश्वत्थामा रूपमानेगा धर्मपुत्रयुधिष्ठिर युद्धमेंसोमकों समेत पांचालोंको मृतक हुआ देखकर वैराग्यको पावेगा युद्धमें जो मेरे सन्मुख होकर युद्ध करेंगे हे भरतबंशी मैं उनको मारूंगा १५।१६ वहबीर मेरीभुजाओं के मध्यमें बर्त्तमान होकर बचनहींसक्के महाबाहु अश्वत्थामा आप के पुत्र दुर्योधनसे इसप्रकारके बचनकहकर १७ सब धनुषधारियों को भयभीत करता और जीवधारियोंमेंश्रेष्ठ आपके पुत्रोंके हितको करना चाहता युद्धके निमित्त सन्मुख बर्त्तमानहुआ १८ उसके पीछे वह गौतमीके पुत्र अश्वत्थामाजी पांचाल और केकयोंसेबोले कि हे महारथियो तुमसब इधरसे मेरे अंगोंपर प्रहारकरो १९ और अस्त्रों की तीव्रता दिखलाते नियत होकर तुम युद्धकरो हे महाराज ऐसे बचनसुनकर उनसबने अश्वत्थामाके ऊपर शस्त्रोंकीबर्षा ऐसेकरी २० जैसे कि जलकी वृष्टिको बादल करतेहैं अश्वत्थामाने उनबाणों को काटकर दशबीरोंको मारा २१ हे प्रभु वह दशों पांडवों समेत धृष्टद्युम्नकेसन्मुख नाशहुये युद्धमें घायल वह पांचाल और सृञ्जय २२ युद्धमें अश्वत्थामाको त्यागकरके दशोंदिशाओंको भागे हे महाराज उन भागतेहुये सोमकों समेत शूर पांचालोंको देखकर २३ धृष्टद्युम्न युद्धमें अश्वत्थामाके सन्मुखगया उसकेपीछे सुबर्णकेसामानसेअलंकृत जलभरे बादलके समान गर्जनेवाले २४ मुख न फेरनेवाले सैकड़ों शूर रथियोंसे युक्त राजाद्रुपदकापुत्र महारथीधृष्टद्युम्न २५ गिरायेहुये शूरबीरोंको देखकर अश्वत्थामासे यह बचन बोला हे आचार्य्यके पुत्र दुर्बुद्धी इन शूरबीरोंके मारनेसे तुझको क्या लाभ है २६ जो तू युद्धमें बड़ाशूर है तो मेरेसाथ युद्धकर मैं तुझको अवश्य मारूंगा अब मेरेआगे नियतहो २७ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ इसकेपीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने मर्मस्थलोंके छेदनेवाले तीक्ष्ण बाणोंसे आचार्य्यके पुत्रको घायल किया २८ फिर वह सुनहरी पुंख साफनोक सब शरीरके चीरनेवाले पंक्तीरूप बाण अश्वत्थामा के शरीरमें ऐसे प्रवेशकरगये २९ जैसे कि स्वतन्त्र भ्रमर मधुकेलोभी

पुष्पित वृक्षपर वह अत्यन्त घायल चरण दबेहुये सर्पके समान अत्यन्तक्रोधयुक्त ३० भयसे उत्पन्न होनेवाली व्याकुलतासे रहित अहंकारी अश्वत्थामाजी हाथमें बाणकोलेकर यह बचनबोले कि हे धृष्टद्युम्न तूनियतहोकर एकमुहूर्त्ततक ठहरजा ३१ फिरतुझकोयमलोकमें भेजूंगा शत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले अश्वत्थामा जीने इस प्रकारसे कहकर ३२ हस्तलाघवताके समान बाणोंके समूहोंसे धृष्टद्युम्नको चारोंओरसे ढकदिया संग्राम में अश्वत्थामा से पीड़ित युद्धमें दुर्मद ३३ उस द्रुपदके पुत्रने बचनोहीसे अश्वत्थामा को घुड़का कि हे ब्राह्मण तुम मेरी प्रतिज्ञा और उत्पत्तिको नहीं जानतेहो ३४ हे अत्यन्त दुर्बुद्धी मैं निश्चयकरके द्रोणाचार्य्यको मारकर तुझकोमारूंगाइसीसेतूमुझसे अवध्यहै और द्रोणाचार्य्यके जीवतेहुये अभीतुझको नहींमारताहूं ३५ हे दुर्बुद्धी अब इसीरात्रिमें सूर्य्योदय से पूर्व्वही तेरे पिताको मारकर फिर युद्धमें तुझकोभी प्रेतलोक में पहुंचाऊंगा ३६ यह मेरेचित्तमें नियतहै इसहेतुसे कि जोतेरी शत्रुता पांडवोंमें और भक्तिकौरवोंमेंहै ३७ तोनियतहोकर उनकोदिखलावो वह मुझसे जीवतेनहीं बचसक्ते जो ब्राह्मण अपने धर्मको त्यागकर क्षत्रीधर्ममेंप्रीतिरखनेवालाहै ३८ वह सबलोकोंसेऐसेमारनेकेयोग्यहै जैसेकि पुरुषोंमें नीचतुम धृष्टद्युम्नसे ऐसे कठोर बचनोंको सुनकर ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाने ३९ कठिन क्रोधकिया और तिष्ठ तिष्ठ यहबचनभी कहा और दोनोंनेत्रोंसे भस्म करतेहुये उसनेधृष्टद्युम्नकोदेखा ४० सर्पकीसमान श्वासलेते अश्वत्थामाने बाणोंसे ढकदिया हेराजाओंमेंश्रेष्ठ युद्धमें अश्वत्थामाके बाणोंसेढका ४१ और पांचालदेशी सब सेनासे संयुक्त रथियोंमें श्रेष्ठ अपने पराक्रम में आश्रित महाबाहु धृष्टद्युम्न कंपायमान नहींहुआ ४२ और नानाप्रकारके शायकोंको अश्वत्थामा पर छोड़ा प्राणोंकाद्यूत और दांव रखनेवाले युद्धमें परस्पर बाणोंके समूहोंसे पीड़ादेनेवाले क्रोधयुक्त चारोंओर से बाणोंकी बर्षा करनेवाले बड़े धनुषधारी वह दोनों फिर सन्मुख वर्त्तमानहुये ४३। ४४ सिद्ध चारण और वार्त्तिकोंने अ-

श्वत्थामा और धृष्टद्युम्नके उसघोररूप भयानक युद्धको देखकर बड़ी प्रशंसाकी ४५ बाणोंके समूहोंसे आकाश और दिशाओं को पूर्णकरतेहुये वह दोनोंबाणोंसे बड़े अन्धकारको उत्पन्नकरके दृष्टि से गुप्तहोकर युद्धकरनेलगे ४६ युद्धमें नाचते और धनुषको मण्डल रूपकरने और एकदूसरेके मारनेमें उपाय करनेवाले परस्पर मारनेके अभिलाषी ४७ युद्धमेंहजारो उत्तम शूरबीरोंसे स्तुतिमान दोनों महाबाहु अपूर्व्व मनोहर और श्रेष्ठ युद्धके करनेवालेहुये ४८ जैसे कि बनमें दोजंगली हाथीहोतेहैं उसीप्रकार युद्धमें कुशल उन दोनों को देखकर दोनों सेनावालोंको अत्यन्त आनन्दहुआ ४९ सिंहनादोंके शब्दहुये शंखोंको बजाया और हजारों बाजे भी बजे ५० भयभीतोंके भयके बढ़ानेवाले उसकठिन युद्धमेंवहयुद्ध एकमुहूर्त्ततक एकहीसाहुआ ५१ हे महाराज इसकेपीछे अश्वत्थामाजी महात्मा धृष्टद्युम्नकेभुजाधनुष और छत्रकोघायलकरकेयक्षकेरक्षकसमेत ५२ चारोंघोड़े और सारथीको मारकर युद्धमें सन्मुखदौड़े बड़े साहसीने झुके पर्ववाले बाणोंसे उन सबपांचालोंको ५३ जो कि सैकड़ों और हजारोंथे भगादिया हे भरतर्षभ इसकेपीछे पांडवीसेना पीड़ामान हुई ५४ युद्धमें अश्वत्थामाके इन्द्रके समान बड़े कर्मको देखकर सेनाने बड़ीपीड़ाको पाया महारथी अश्वत्थामाने सौबाणोंसे पांचालोंके सौही मनुष्योंको मारकर ५५ और तीक्ष्णधार तीन बाणोंसे तीनमहारथियों को मार धृष्टद्युम्न और अर्जुनके देखते ५६ उन बहुतसे पांचालोंका बिनाशकिया जो कि सन्मुख बर्त्तमानथे युद्धमें सृञ्जियों समेत घायलहुये पांचाल ५७ जिनकेरथ और ध्वजागिरपड़े थे वह अश्वत्थामाको छोड़कर चलेगये वहअश्वत्थामा युद्धमें शत्रुओंको बिजय करके ५८ बहुतबड़े शब्दसे ऐसेगर्जा जैसे कि बर्षाके प्रारम्भमें बादल गर्जताहै वह अश्वत्थामाजीबहुतसे शूरोंकोमारकर ऐसे शोभायमानहुयेजैसेकि प्रलयकालकी अग्नि बसजीवोंको भस्म करके शोभित होतीहै युद्धमें प्रशंसनीय प्रतापी अश्वत्थामा लड़ाई में हजारों शत्रुओं को बिजय करके ऐसे शोभायमान हुये जैसे

कि शत्रुओंके समूहोंको मारकर देवराज इन्द्र शोभित होताहै ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषष्टितमोऽध्यायः १६० ॥

एकसौइकसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि हेमहाराज पांडवयुधिष्ठिरभीमसेनने चारोंओरसे अश्वत्थामाको घेरलिया १ उसकेपीछेद्रोणाचार्य्यकोसाथलेकरराजा दुर्योधन युद्धमें पांडवोंके सन्मुखगया फिर वह युद्ध जारीहुआ २ हे महाराज जोकि घोररूप और भयभीतोंके भयका बढ़ानेवाला था क्रोधयुक्त भीमसेनने अम्बष्ठ, मालव, बंग, शिवी और त्रिगर्त्तदेशियों के ३ समूहोंकोभी यमपुरको भेजा इसके बिशेष भीमसेनने अभिषाह, और शूरसेन, नामक्षत्री जोकि युद्धमेंदुर्मदथे ४ उनको मारकर पृथ्वीको रुधिररूपीकीचसे पूर्णकिया हे राजाअर्जुनने पहाड़ीमालव और माद्रिक शूरबीरोंकोभी ५ तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे मृत्युलोक में पहुंचाया सीधे चलनेवाले नाराचोंसे अत्यन्त कठिन घायल ६ हाथी दो शिखर रखनेवाले पर्व्वतोंके समानपृथ्वीपर गिरपड़े हाथियोंकी कटीहुईं और इधर उधर चेष्टा करनेवालीसूंड़ोंसे ७ आच्छादित पृथ्वीऐसी शोभायमानहुई जैसे कि चलायमान सर्पोंसे शोभित होती है ८ पड़ेहुये राजछत्रों से पृथ्वी ऐसी शोभित हुई जैसे कि प्रलयकाल में सूर्य चन्द्रमा आदिक ग्रहों से संयुक्त आकाशहोता है द्रोणाचार्य्य के रथके पास ऐसा कठोर शब्द हुआ कि हे बीर लोगो तुम निर्भयहोकर मारो प्रहार करो भेदो काट डालो ९ फिर बड़े क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य ने युद्धमें बायुअस्त्रसे ऐसे उनको छिन्न भिन्नकिया जैसे कि दुःखसे उल्लंघनके योग्य बड़ाबायु बादलोंको तिर्बिर कर देता है १० द्रोणाचार्य्य के हाथसे घायल वह पांचाल महात्मा अर्जुन और भीमसेनके देखतेहुये भयभीतहोकर भागे ११ उसके पीछे अर्जुन और भीमसेन बड़ेरथोंके समूहोंसमेत भारीसेना को रोककर अकस्मात् लौटे १२ अर्जुन ने दक्षिणीय पक्षको और भीमसेन ने उत्तरीय पक्षको रक्षित किया और बड़ी बाणों की बर्षा

द्रोणाचार्य्य पर करी १३ उसीप्रकार बड़ेतेजस्वी सृञ्जय पांचाल मत्स्य और सोमक लोग उन दोनोंके पीछे चले १४ हे राजा उसी प्रकर आपके पुत्रके बड़े रथी जो कि प्रहारों के करनेवालेथे बड़ी सेनाओं समेत द्रोणाचार्य्य के रथ के समीप गये १५ उसके पीछे अर्जुनके हाथ से घायल वह भरतबंशियोंकी सेना अंधेरे और निद्रा से फिर इधर उधर को हुये १६ हे महाराज तब आप द्रोणाचार्य्य और आपके पुत्रसे रोके हुये वह शूरबीर न रुकसके १७ अंधकारसे युक्त संसारके होनेपर पाण्डव अर्जुन के बाणों से इधरउधरहोजानेवाली वह बड़ी सेना सबओरको मुख करके भागी १८ वहां कितने ही राजातो अपनी सैकड़ोंसवारियों कोभी छोड़कर भयभीत होकर चारोंओरसेभागे १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसंकुलयुद्धे शतोपरिएकषष्टितमोऽध्यायः १६१ ॥

एकसौबासठका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर सात्यकी बड़े धनुष के चलाय मान करने वाले सोमदत्तको देखकर सारथी से बोला कि मुझको सोमदत्तके सन्मुख लेचल १ हे सूत मैं कौरवोंमें नीच अपने शत्रु बाह्लीकको बिना मारेहुये युद्धभूमिसे नहीं लौटूंगा यह मेरा सत्य २ कथनहै २ उसके पीछे सारथी ने मनके समान शीघ्रगामी और युद्धमें सब शस्त्रोंको उल्लंघन करके चलनेवाले शंखवर्ण सिन्धुदेशी घोड़ोंको युद्धभूमिमें पहुंचाया ३ हे राजा मन और वायुकेसमान शीघ्रगामी वह घोड़े सात्यकी को ऐसे लेचले जैसे कि पूर्व्बसमय में हरीजातिकेघोड़े दैत्योंके मारनेमें सन्नद्ध इन्द्रको लेचलेथे ४ युद्धमें आते हुये उस बेगवान् यादवको देखकर महाबाहुसोमदत्तजी बिनाव्याकुलता केलौटे ५ बादलके समान बाणोंकी बर्षाको करते सोमदत्तने सात्यकीको ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल सूर्य्यको ढक देतेहैं हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ फिर व्याकुलता से रहित सात्यकीने भी कौरवोंमें श्रेष्ठ सोमदत्तको बाणोंके समूहों से युद्धमें चारोंओरसे ढक

दिया ७ फिर सोमदत्तने उस माधव सात्यकीको साठ बाणोंसे छाती पर घायलकिया हे राजा फिर सात्यकीने भी तीक्ष्णबाणोंसे उसको छेदा वह दोनोंपरस्पर बाणोंसेघायल ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि फूलोंकीऋतुमें सुन्दर फूल रखनेवाले फूले हुये किंशुकके वृक्ष होते हैं ९ रुधिरसेलिप्त सब देह और कौरव वा वृष्णियों का यश उत्पन्न करने वाले नेत्रोंसे भस्म करनेवाले उन दोनोंने परस्पर देखा १० रथमंडल मार्गोंमें घूमनेवाले वह दोनों शत्रुओंके मर्दन करनेवाले ऐसे घोररूप हुये जैसे कि बर्षा करनेवाले दो बादल होतेहैं ११ हे राजेन्द्र बाणों से टूटे अंग और सब ओरसे कटे हुये बाणोंसे घायल वह दोनों चमत्कारी अचंभेके समान बिदित हुये १२ अर्थात् वह दोनों सुनहरी पुंखवाले बाणोंसे छिदे हुये ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बर्षाऋतुमें पटबीजनों से युक्त बनस्पति शोभित होती है शायकों से ज्वलित रूप सर्वाङ्ग और युद्धमें क्रोधयुक्त वह दोनों महारथी ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि उल्काओंसे ज्वलितरूप दो हाथी होतेहैं १४ हेमहाराज इसके पीछे महारथी सोमदत्तने युद्धमें अर्द्ध-चन्द्रनाम बाणसे माधव के बड़े धनुष को काटा १५ और उसको भी बीस शायकों से घायल किया और शीघ्रता के समय तीव्रता करनेवालेने फिर दश बाणोंसे छेदा १६ इसके पीछे सात्यकीने दूसरे बेगवान् धनुषको लेकर पांचशायकोंसे सोमदत्तको छेदा १७ तदनन्तर हंसते हुये सात्यकी ने युद्धमें दूसरे भल्लसे वाह्लीक की सुनहरी ध्वजाको काटा १८ फिर व्याकुलतासेरहित सोमदत्तने गिराई हुई ध्वजाको देखकर पच्चीस शायकोंसे सात्यकीको घायल किया १९ युद्धमें क्रोधयुक्त यादव सात्यकीने भी धनुषधारी सोम-दत्तकी ध्वजाको क्षुरप्रनाम तीक्ष्णभल्लसे काटा २० हे राजा इसके पीछे टेढ़ेपर्व्व और सुनहरी पुंखवाले बाणोंके एक सैकड़ेसे उसको अनेकप्रकारसे ऐसे घायलकिया जैसे कि टूटी डाढ़वाले हाथीको घायल करते हैं २१ इसके पीछे महाबली महारथी सोमदत्तने दूसरे धनुषको लेकर बाणोंकी बर्षासे सात्यकी को ढकदिया २२

फिर क्रोधयुक्त सात्यकीने युद्धमें उस सोमदत्तको घायलकिया और सोमदत्तने भी सात्यकीको बाणोंके जालोंसे पीड़ितकिया २३ भीमसेनने यादव सात्यकीके निमित्त दश बाणोंसे बाह्लीक के पुत्रको घायल किया और व्याकुलतासे रहित सोमदत्तने भी सौ बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया२४फिर उसकेपीछे भीमसेनने यादवकेनिमित्त नवीन और दृढ़ घोर परिघको सोमदत्तकी छातीपरछोड़ा २५ हंसते हुये कौरवने युद्धमें उस वेगसे आतीहुई घोर दर्शनवाली परिघको दो टुकड़े करदिया २६ वह बड़ी परिघ लोहेकी दो खंड ह्वोकर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि बज्र से टूटा पर्व्वत का बड़ा शिखर होताहै २७ हे राजा उसके पीछे सात्यकीने युद्धमें सोमदत्तके धनुष को भल्लसे और हस्त त्राणको पांच बाणोंसेकाटा २८ हे भरतवंशी उसके पीछे चार बाणोंसे उन उत्तम घोड़ोंको यमराजके पास पहुंचाया २९ हे नरोत्तम फिर हंसतेहुये सात्यकीने टेढ़े पर्व्ववालेभल्लसे सारथीके शिरकोशरीरसे पृथक् करदिया ३० हेराजा इसके अनन्तर यादव सात्यकीने अग्निके समान ज्वलित सुनहरीपुंख तीक्ष्णधार महाघोर बाणको छोड़ा३१ पराक्रमी सात्यकीके हाथसे छोड़ा हुआ वह घोर उत्तम बाण शीघ्रतासे उसकी छाती परगिरा ३२ हे महाराज यादव के हाथसे अत्यन्त घायल महाबाहु महारथी सोमदत्त रथसे गिरा और मरगया ३३ महारथी लोग वहां उस मरे हुये सोमदत्तको देखकर बड़ी बाणोंकीबर्षा करते सात्यकीके सन्मुख गये ३४ हे महाराज बाणोंसे ढकेहुये सात्यकीको देखकर युधिष्ठिरादि सब पांडव और सब प्रभद्रक बड़ी सेनाको साथलिये द्रोणाचार्य्यकी सेनाकी ओर दौड़े ३५ उसकेपीछे क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने द्रोणाचार्य्यके देखतेहुये आपके पुत्रोंकी बड़ी सेनाको बाणोंसे भगाया ३६ सेनाओंके भगानेवाले युधिष्ठिरको देखकर क्रोधसे रक्तनेत्र द्रोणाचार्य्यजी बड़ेवेगसे सन्मुखगये ३७ इसके पीछे अत्यन्त तीक्ष्णधार सात बाणोंसे युधिष्ठिरको घायल किया फिर बड़े क्रोधयुक्त युधिष्ठिरनेभी पांच बाणोंसे घायल किया ३८ होठोंको चाटते

अत्यन्तघायल महाबाहु द्रोणाचार्य्यने युधिष्ठिरकी ध्वजा और धनुष को काटा ३९ उस टूटे धनुष और रथसे रहित उत्तम राजाने शीघ्रताके समयपर युद्धमें दूसरे दृढ़ धनुषको बेगसे लिया ४० इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने हजार बाणोंसे घोड़े ध्वजा सारथी और रथ समेत द्रोणाचार्य्यको घायल किया वह आश्चर्य्यसा हुआ ४१ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ फिर बाणोंकी बर्षासे अत्यन्त पीड़ामान द्रोणाचार्य्य एक मुहूर्त्त तक रथके बैठनेके स्थानपर बैठगये ४२ इसके पीछे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने एक मुहूर्त्तहीमें सचेत होकर बड़े क्रोधमें पूरित होकर बायु अस्त्रको छोड़ा ४३ तब व्याकुलतासे रहित पराक्रमी युधिष्ठिरने धनुष को खैंचकर उनके अस्त्रको अपने अस्त्रसे रोकदिया ४४ और बड़ी शीघ्रतासे उनके धनुषको काटा हे कौरव्य धृतराष्ट्र इसके पीछे क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने उसके उस धनुषको भी तीक्ष्ण भल्लोंसे काटा ४५ फिर बासुदेवजी कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे बोले हे महाबाहु युधिष्ठिर जो मैं तुमसे कहताहूं उसको सुनो ४६ हे भरतर्षभ तुम द्रोणाचार्य्यके युद्धसे हाथ खैंचो द्रोणाचार्य्य सदैव युद्धमें आपके पकड़ने को चाहते हैं ४७ मैं उसके साथ आपका युद्ध अयोग्य मानताहूं सुनो जो पुरुष उनके नाश करने को उत्पन्न हुआहै वही उनको मारेगा ४८ गुरूको त्याग करके अब तुम वहां जावो जहांपर राजादुर्योधन है राजाको राजाहीके साथ युद्ध करना योग्यहै राजाको अन्य से युद्ध करनेका अभिलाष नहीं होना चाहिये ४९ हे युधिष्ठिर तुम हाथी घोड़े और रथोंसे संयुक्तहोकर तबतकवहींजावो जबतक कि मुझको साथमें रखनेवाला अर्जुन ५० और रथियों में श्रेष्ठ भीमसेन दोनों कौरवोंके साथ युद्ध करतेहैं धर्मराज युधिष्ठिर बासुदेवजीके बचन को सुनकर ५१ एकमुहूर्त्त चिन्ताकरके फिर शीघ्रही कठिनयुद्धमें वहां गया जहांपर कि शत्रुओं का मारनेवाला भीमसेन नियत था ५२ कालके समान मुखफाड़े हुये आपकेशूरबीरोंकोमारते और रथके बड़े शब्दसे पृथ्वीको शब्दायमान करते ५३ वर्षाऋतुके बादल

के समान दशोंदिशाओंको भी शब्दोंसे पूरित करतेपांडवयुधिष्ठिरने शत्रुओंके मारनेवाले भीमसेनकेपार्श्ववर्त्तीपने के स्वीकार किया५४ फिर रात्रिके समय द्रोणाचार्य्यने भी पांडव और पांचालोंको छिन्न भिन्न किया ५५ ॥

इतिश्रीमाहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रियुद्धेशतीपरिद्विषष्टितमोऽध्यायः १६२ ॥

एकसौतरेसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसप्रकार घोररूप भयकारी युद्धके बर्त्तमान होने अन्धकार समेत धूलसेलोक के भर जानेपर १ युद्धमें नियत हुये शूरबीरोंने एक दूसरे को नहींदेखा अनुमान और नामों के द्वारा वह बड़ाभारी युद्ध बढ़गया २ जोकि मनुष्य घोड़े औरहाथियोंके मथनेवाले और बड़े रोमहर्षण करनेवाले थे हे राजाओंमें श्रेष्ठ उन भीमसेन, धृष्टद्युम्न, सात्यकी और द्रोणाचार्य्य, कर्ण और कृपाचार्य्य इन सबबीरोंने ३ परस्परव्याकुल किया उन महारथियों के हाथसे चारोंओर घायल हुई सेना ४ अंधेरे और धूलसे सब ओरको भागी सबओरसे भागने वाले अचेत युद्ध में दौड़नेवाले उन शूरबीरोंने प्रहार किये और हजारों महारथियोंने युद्धमें परस्पर एकने दूसरेको मारा ६ आपके पुत्रकी सलाहसे रात्रिके अपराधों और उपद्रवों में सब अज्ञान हुये हे भरतबंशी इसके पीछे उस युद्धमें अंधेरे से संयुक्तहोनेपर सब सेनाके मनुष्य और अप्सर लोग अत्यन्त मोहित हुये ७ धृतराष्ट्र बोले तब पांडवों से व्याकुल और पराक्रमसे हीन कठिन अपराधोंमें डूबेहुये उनलोगों की कौन गति हुई ८ हे संजय इसप्रकार अंधेरे से संसारके ढकजाने पर उन पांडवोंका और मेरी सेनाका प्रकाश कैसे हुआ ९ संजय बोले फिर उस सब सेनाने जो कि मरने से बाकी बचीथी सेनाके अप्सरों से कहकर फिर व्यूह को रचा १० हे राजा द्रोणाचार्य्य आगे और शल्य अश्वत्थामा कृतबर्मा और शल पीछेके भागमें नियत हुये और आप राजा रात्रिके समय सब सेनाको घूमता हुआ देख ११

सब पदातियोंके समूहोंसे यह मधुरता से बचन बोलाकितुम सब उत्तम शस्त्रोंको छोड़कर हाथोंसे प्रकाशित मशालोंको पकड़ो १२ इसके पीछे राजा दुर्य्योधन की आज्ञानुसार प्रसन्नचित्त उन लोगोंने मशालोंको लिया और स्वर्गमें नियत प्रसन्नचित्त देव ऋषि गन्धर्ब देवता ऋषियोंके समूह बिद्याधर अप्सराओं के समूह १३ नाग यक्ष उरग और किन्नरोंनेभी मशालोंको हाथमें लिया सुगन्धित तेलोंसे पूर्ण मशालोंको देखकर वहांपर दिशाओंके देवता लोग आये अधिकतर कौरव पांडवोंके निमित्त नारद और पर्व्वत ऋषिके कहने से उन देवता आदिकोंने प्रकाश प्रकटकिया फिर वही बिभागित सेना रात्रिमें अग्निके प्रकाशोंसे शोभायमान हुई १५ और गिरतेहुये बहुमूल्य दिव्य भूषणादि और प्रकाशित अस्त्रों से भी प्रकाशित हुये उस सेना में एक २ रथपर पांचमशाल और प्रत्येक हाथीके साथ तीन २ मशाल और घोड़े २ प्रति एक बड़ी मशाल पांडव और कौरवोंकी ओरसे जलाईगई वह सब मशाल एक क्षणमें ही प्रकाशित हुई और शीघ्रही आपकी सेनाको भी प्रकाशित किया १७ तेज और मशाल हाथमें रखनेवाले पदातियों के द्वारा अत्यन्त प्रकाशित और शोभायमान सेनारात्रिकेसमय ऐसी दिखाई पड़ी जैसे कि अन्तरिक्षमें बिजलियोंसमेत बादल शोभित होतेहैं १८ इसके पीछे सेनाके प्रकाशित होनेपर अग्निकी समान स्वर्णमयी कवचधारी द्रोणाचार्य्य चारोंओर से शत्रुओंको तपाते हुये ऐसे शोभायमान हुये जैसे मध्याह्न के समय किरण समूह रखनेवाला सूर्य्य होताहै १९ इसके पीछे वहांपर सुवर्णके आभूषणादि शुद्ध निष्क धनुष और शस्त्रोंपर अग्निके प्रकाश से प्रकट होनेवाला प्रकाश उत्पन्नहुआ २० शैक्यमें रहनेवाली गदा उज्ज्वलपरिघ और रथोंमें आवागमन करनेवाली शक्तियांप्रतिबिम्बित प्रकाशोंसे बारंबार दीपकों को उत्पन्न करतीथीं २१ हे राजा तब वहां शूरबीरोंके छत्र, बाण, व्यजन, खड्ग और प्रकाशमान बड़ी मशालें औरबहुत चंचल सुवर्णकी माला शोभायमान हुई २२ उससमय वह सेना

शस्त्रोंके प्रकाश से शोभायमान दीपकों के तेजसे शोभित भूषणों के प्रकाशों से प्रकाशित अत्यन्त ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित हुई २३ वीरोंके छोड़े हुये विषसेभरे रुधिरसे आर्द्र शरीर के छेदने वाले शस्त्रोंने वहांपर बड़ेभारी प्रकाशको ऐसे उत्पन्नकिया जैसे कि वर्षाके प्रारम्भमें अन्तरिक्षमें चमकती हुई बिजली होतीहै २४ प्रहारोंकी तीव्रतासे अत्यन्त कंपित घायल और गिरतेहुये मनुष्यों के शिर ऐसे प्रकाशमान हुये जैसे कि वायुसे चालायमान बड़ेबादल २५ हे भरतवंशी जैसे कि लकड़ियोंसे पूर्ण जलतेहुये बड़े वन में सूर्य्यका प्रकाश भी नाशको पाताहै इसीप्रकारसे वह बड़ी भयकारी भयानकरूप सेना भी अत्यन्त प्रकाशमान हुई २६ तुम्हारी उस सेनाको अत्यन्त प्रकाशमान देखकर पांडवों ने शीघ्रही उसी प्रकारसे सब सेनाओंमें पदातियोंको आज्ञादी उन्होंने भी मशालों को प्रकाशित किया २७ हरएक हाथीके साथ सात २ मशालें और प्रत्येक रथके साथ दश २ मशालें और घोड़े २ के पीछे दो २ और दोनों पक्ष ध्वजा और पीछे के स्थानपर दूसरी मशालें प्रकाशित हुईं २८ सब सेनाओंके मध्यमें पक्षोंमें आगे पीछे और चारोंओर उसी प्रकार सेनाके मध्यमें दूसरी मशालें हाथमें लेने वाले पदातियोंने पांडवी सेनाको प्रकाशित किया २९ इसप्रकार से दोनों सेनाओंके मध्यमें जलती हुईं मशालें हाथमें लेकर मनुष्य घूमने लगे सब सेनाओंमें पदातियोंके समूह हाथी घोड़े और रथोंके समूहोंसे मिलगये ३० उनमशालोंने आपकी सेनाको और पांडवों की रक्षित सेनाको भी अत्यन्त प्रकाशित किया इसरीतिसे अत्यन्त प्रकाशित उस सेनासे आपकी सेना ऐसे अत्यन्त प्रकाशमान हुई ३१ जैसे कि प्रकाशमान सूर्य्य ग्रहोंसे प्रकाशित होताहै उन दोनों का प्रकाश पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओंको उल्लंघन करके वृद्धियुक्त हुआ ३२ हे राजा उन्होंकी और आपकी सेना उस प्रकाश से अत्यन्त प्रकाशित हुई आकाशमें पहुंचने वाले उस प्रकाश से देवतालोगों के समूह भी खबरदार हुये ३३ गन्धर्व यक्ष असुर और

सिद्धोंके समूहों समेत सब अप्सराओंसहित देवता गन्धर्व यक्ष असुरोंके राजा अप्सराओंके समूह ३४ और मरकर स्वर्गमें चढ़नेवाले शूरों से घिरीहुई वह युद्धभूमि दिव्य रूप हुई रथ हाथी और घोड़ोंके समूहोंकी मशालोंसे बड़ी प्रकाशमान और क्रोधयुक्त बीर मृतक और भागे हुये घोड़े रखनेवाली ३५ बड़ी सेना जिसके रथ घोड़े और हाथी क्रमपूर्व्वक नियतये देवासुरों के व्यूहकी समान हुये शक्तियों के समूह रूप कठोर वायु बड़रथ रूप बादल रखनेवाला हाथी घोड़ों से शब्दायमान ३६ शस्त्रोंके समूहरूप वर्षा रुधिररूप जल धारा रखनेवाला रथीरूप दुर्दिन बिनाऋतुके वर्षा करनेवाला दिन रात्रिमें वर्त्तमान हुआ उसमें महाअग्निरूप ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य्य पांडवों को तपाते हुये ऐसे प्रकार के हुये हे राजेन्द्र जैसे कि वर्षाऋतुके अन्तपर मध्याह्न के समय अपनी किरणोंसे तपाता हुआ सूर्य्य होता है ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिदीपोद्योतनेशतोपरिद्विषष्टितमोऽध्यायः १६३ ॥

एकसौचौंसठका अध्याय॥

संजयबोले कि तब धूल और अन्धकारसे युक्त संसारके अप्रकाशित होने पर परस्पर मारनेके अभिलाषी शूरबीर सन्मुख हुये १ हे राजा शस्त्र प्रास खड्ग और तलवार धारण करनेवाले और परस्पर अपराधी उनलोगोंने युद्धमें सन्मुख होकर एकने दूसरे का देखा २ तब रत्नजटित सुनहरी दंड रखनेवाली सुगन्धित तेलों से सींची हुई देवता और गन्धर्वों के दीपकादिके प्रकाशादिसे अत्यन्त प्रकाशमान चारोंओर से चमकनेवाली हजारों मशालोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई हे भरतवंशी जैसे कि ग्रहोंसे आकाश शोभित होताहै ३। ४ युद्धभूमि जलित अग्निरूप हजारों उल्काओं से ऐसी अत्यन्त शोभायमान हुई जैसे कि सृष्टिके प्रलय होनेके समय जलती हुई पृथ्वी होतीहै ५ सब दिशा चारों ओरसे उन प्रकाशोंसे ऐसे अत्यन्त प्रकाशित हुई जैसे कि वर्षाऋतुके प्रदोषकालमें पट-

बीजनोंसे संयुक्त वृक्षप्रकाशमान होतेहैं ६ इसके पीछे हरएक बीर दूसरेबीरोंसेजुदे २ होकर भिड़े हाथी हाथियोंकेसाथ घोड़े घोड़ोंके साथसन्मुखहुये ७ और बड़ी प्रसन्नतासे उत्तम रथी दूसरेरथियोंके सन्मुख हुये उस घोर रात्रिमें आपके पुत्रकी आज्ञासे ८चतुरंगिणी सेनाकी बहुतबड़ी चढ़ाईहुई हे महाराज इसके पीछे शीघ्रतासे युक्त सब राजाओंको प्रेरणाकरते अर्जुनने कौरवीय सेनाको तिर्रबिर्र कि-या ९।१० धृतराष्ट्रबोलेकिमेरेपुत्रकी उससेनामें उसक्रोधयुक्तअशान्त और अजेय अर्जुनके प्रवेश करनेपर तुम्हारा चित्त कैसाहुआ ११ शत्रुके पीड़ा देनेवाले अर्जुनके प्रवेशित होने पर सेना के लोगोंने क्या किया और दुर्य्योधनने समयके अनुसार किस कर्मको माना अर्जुनके प्रवेश होनेपर कौनसा शत्रुविजयी पुरुष उसबीरकेसन्मुख गया और कौन२से बीरोंने द्रोणाचार्य्यको श्रेष्ठ रीतिसे रक्षित कि-या १३ किन बीरोंने शत्रुहन्ता द्रोणाचार्य्यके दक्षिण पक्षकी रक्षा करी और कौन २ बायेंपक्ष और पृष्ठभाग पर रक्षा करनेवाले हुये १४ युद्धमें शत्रु लोगोंको मारतेहुये कौन२ सेबीर आगेचले जो बड़े धनुषधारी अजेय द्रोणाचार्य्य पांचालों की सेनामें गये १५ रथमार्गों में नाचते जिस पराक्रमी द्रोणाचार्य्यने बाणोंसे पांचालों के रथसमूहोंको भस्मीभूत किया १६ उस अग्निके समान क्रोध-युक्तने किसप्रकार से मृत्युको पाया तुम दूसरोंको व्याकुलता से पृथक् और अजेय कहतेहो १७ और युद्धमें बड़ी प्रसन्नताभी उन्हीं की कहतेहो हे सूत उसप्रकारसे मेरे पुत्रोंको नहीं कहतेहो किन्तु उनको मृतक घायल और छिन्न भिन्न होनेवाला कहते हो १८ मेरे रथियोंको युद्धोंमें रथसे रहित और मारेहुये वा मरेहुये कहते हो १९।संजय बोले कि हे महाराज दुर्य्योधनउसरात्रि में युद्धाभि-लाषी द्रोणाचार्य्यके बिचार को जानकर अपने आज्ञाकारी इन भाइयोंसे बोला २० बिकर्ण, चित्रसेन, महाबाहु कौरव, दुर्द्धर्ष, दीर्घ-बाहु और जो२ उनके पीछे चलनेवालेथे २१ इनसे यह बचनकहा कि उपाय और पराक्रम करनेवाले तुमसब द्रोणाचार्य्य की पीछेसे

रक्षाकरो कृतवर्मा दक्षिणीयचक्रको और शल्य उत्तरचक्रको रक्षा करो २२ और त्रिगर्त्तदेशियोंके जो शूर महारथी मरनेसे शेष रहेथे उन सबको आपके पुत्रने प्रेरणाकरी कि द्रोणाचार्य्य को आगेसे रक्षितकरो २३ आचार्य्यजी अत्यन्त उपाय करनेवालेहैं और पांडव भी अत्यन्तउपाय करनेवालेहैं सोतुमअच्छे उद्योगकरनेवाले होकर युद्धमेंशत्रुओंके मारनेवाले द्रोणाचार्य्यजीकी रक्षाकरो २४पराक्रमी और प्रतापी द्रोणाचार्य्य युद्धमें बड़ेहस्तलाघवीहैं वह युद्धमें देवताओंकोभी बिजय कर सक्तेहैं फिर सोमकों समेत पांडवोंका बिजय करनाउनकोकितनी बातहै २५सदैव उपाय करनेवाले तुम महारथी लोग एकसाथही पांचालदेशी महारथी धृष्टद्युम्नसे द्रोणाचार्य्य कोरक्षाकरो पांडवोंकी सेनामें धृष्टद्युम्नके सिवाय और किसी राजा को नहीं देखतेहैं जो युद्धमें द्रोणाचार्य्यके सन्मुख युद्ध करसके २६ इसहेतुमे सर्वात्म भावसे मैं द्रोणाचार्य्यकी रक्षाको मानताहूं अच्छे रक्षित होकर द्रोणाचार्य्यजी सृञ्जी और सोमकों समेत पांडवोंको मारेंगे २७ सेनाके मुखपर सबसृञ्जियों के मारेजाने पर अश्वत्थामा युद्धमें अवश्य धृष्टद्युम्न को मारेगा इसमें सन्देह नहीं २८ और इसीप्रकार महारथी कर्णभी अर्जुनको मारेगा और युद्ध में दीक्षितहुआ मैंभी भीमसेनको बिजय करूंगा २९ और मेरे शेष शूरबीर अपने पराक्रमसे बाकी बचेहुये पांडवोंको जबरदस्ती से मारेंगे प्रकट है कि यह मेरी बिजय बहुत समयतकहोगी ३० इसकारणसे युद्धमें महारथी द्रोणाचार्य्यही की रक्षाकरो हे भरतर्षभ आपके पुत्र दुर्य्योधनने यह कहकर ३१ उस महाकठिन अन्धकारमें अपनी सेनाको आज्ञादी और फिर रात्रिमें युद्धहोना जारी हुआ ३२ परस्पर बिजय करनेकी इच्छासे दोनों सेनाओंका घोर संग्राम जारीहुआ अर्जुनने कौरवीयसेना को और कौरवोंने भी अर्जुनको ३३ नानाप्रकारके शस्त्रों के समूहोंसे परस्पर पीड़ामान किया अश्वत्थामाने राजा द्रुपदको द्रोणाचार्य्यने सृञ्जियोंको ३४ युद्धमें टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे ढकदिया हे भरतवंशी परस्पर मारने

वाले पांडवीय पांचालदेशी और कौरवोंकी ३५ सेनाओंके महाघोर शब्दहुये हमलोगोंने और आगेके वृद्धोंनेभी उसप्रकारकेयुद्ध को पूर्वमें कभी देखाथा न सुनाथा जैसा कि यह रौद्र भयानक युद्ध हुआथा ३६ । ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिसंकुलयुद्धेशतोपरिचतुष्षष्टितमोऽध्यायः १६४ ॥

एकसौपैंसठका अध्याय ॥

संजयबोले कि हे राजा तब उस रुद्र और सब जीवों के नाश करनेवाले रात्रिके युद्ध वर्त्तमान होनेपर धर्मका पुत्र युधिष्ठिर १ मनुष्य रथ और हाथियोंके नाशकेअर्थ पांडव पांचाल और सोमकोंसे बोला २ अर्थात् राजायुधिष्ठिरने अपने शूरबीरोंसे कहा कि मारने की इच्छासे दौड़कर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जावो ३ फिर वह पांचाल और सृञ्जय राजा के बचन से भयानक शब्दोंको करते और गर्जते द्रोणाचार्य्यके सन्मुख बर्त्तमान हुये ४ अर्थात् वह क्रोधयुक्त और सन्मुख गर्जनेवाले युद्धमें बल पराक्रम और साहस के अनुसार सन्मुखगये ५ जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सन्मुख जाताहै उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य की ओर को आनेवाले युधिष्ठिरके सन्मुख हार्दिक्यका पुत्र कृतवर्मागया ६ हेराजा कौरव भूरियुद्धके मुखपर चारों ओर से बाणवृष्टी करनेवाले सात्यकी के सन्मुखगया ७ फिरसूर्य्यकेपुत्र कर्णने द्रोणाचार्य्यको सन्मुखचाहनेवालेआतेहुये महारथी पांडव सहदेवको रोका ८ इसकेपीछे काल के समान फैलेमुख मृत्युरूप भीमसेनके सन्मुख आप राजादुर्य्योधनगया ९ हे राजा शीघ्रता करनेवाले सौबलके पुत्र शूरबीरों में श्रेष्ठ सबयुद्धोंमें कुशलनेनकुलकोरोका १० तदनन्तर शारद्वत कृपाचार्य्यने रथकी सवारीसे आतेहुये रथियोंमें श्रेष्ठ शिखंडी को युद्धमें रोका ११ हे महाराज फिर उपाय करनेवाले दुश्शासनने मोरबर्ण घोड़ोंकी सवारीसे आनेवाले उपाय करनेवाले श्रुतिबिन्धको रोका १२ इसके पीछे अश्वत्थामाने सैकड़ों माया में कुशल आते

हुये घटोत्कच राक्षसको रोका १३ फिर वृषसेनने द्रोणाचार्य्य को चाहनेवाले महारथी द्रुपदको सेना और पीछे चलनेवालों समेत रोका१४हे भरतबंशी फिर अत्यन्तक्रोधयुक्त शल्यने द्रोणाचार्य्य के मारनेको शीघ्रआनेबाले बिराटकोरोका १५ चित्रसेन ने द्रोणाचार्य्य कीइच्छासेयुद्धमें वेगवान्आतेहुयेनकुलकेपुत्र सतानीकको बाणोंके द्वारा शीघ्रहीरोका १६ हेमहाराजराक्षसोंकेराजाअलंबुषनेशूरबीरोंमें श्रेष्ठशीघ्रआतेहुये महारथीअर्जुनकोरोका१७इसीप्रकार पांचालदेशी धृष्टद्युम्नने शत्रुओंके मनुष्योंके मारनेवाले युद्धमें प्रसन्न मूर्त्ति बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्यको रोका १८ उसके पीछे आपके रथियों ने वेगसे पांडवोंके दूसरे महारथी सन्मुख आनेवालोंको रोका १९ हे राजा उस बड़ेयुद्धमें सैकड़ों और हजारों हाथीके सवारोंसे हाथियों समेत शीघ्र भिड़कर युद्धकर्त्ता और मर्द्दनकर्त्ता रात्रिकेसमय परस्पर घोड़ोंको भगाते वेगसे सपक्ष पर्व्वतोंके समान दिखाईदिये२१ और प्रासशक्ति और दुधारा खड्ग हाथमें रखनेवाले गर्जना करते अश्वसवारों समेत पृथक् २ सन्मुखहुये २२ फिर वहां बहुत मनुष्य गदा मूसल और नानाप्रकार के शस्त्रोंसे युद्धमें परस्पर सन्मुखहुये२३ अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा हार्दिक्यके पुत्रने धर्मपुत्र युधिष्ठिरको ऐसेरोका जैसेकि उठेहुये समुद्रकोमर्यादारोकतीहै२४ फिर युधिष्ठिरने शीघ्रही पांचबाणोंसे कृतवर्माको घायलकिया फिर बीसबाणसे पीड़ित करके तिष्ठ तिष्ठ बचनकहा २५ हेराजा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्माने भल्लसे युधिष्ठिरके धनुषकोकाटा और सातबाणसे पीड़ामानकिया इसकेपीछे महारथी युधिष्ठिरने दूसरे धनुषको लेकर दशबाणोंसे कृतवर्माको भुजा और छातीपर घायल किया २७ हे श्रेष्ठ युद्धमें धर्मपुत्रके हाथसे घायल माधव कृतवर्मा क्रोधसे कंपायमानहुआ और सातबाणोंसे युधिष्ठिरको पीड़ामानकिया २८ युधिष्ठिरने उसके धनुषको तोड़ हस्त त्राणोंकोकाट कर तीक्ष्णधारवाले पांचबाणोंको चलाया २९ वह बाण उसके सुवर्णमय बहुमूल्य कवचको काटकर और छेदकरके पृथ्वीमें ऐसे

समागये जैसे कि बामीमें सर्प समाजाते हैं ३० उसने पलमात्र मेंही दूसरे धनुषको लेकर पांडवको छःबाणसे और सारथीको नौ बाणोंसे घायलकिया ३१ हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र उस बड़े साहसी युधिष्ठिरनेबड़ेधनुषकोरथपररखकर सर्पकेसमान शक्तिकोफेंका ३२ वह युधिष्ठिरको भेजीहुई स्वर्णमय चिह्न रखनेवाली बड़ी शक्ति दाहिनी भुजाको छेदकर पृथ्वीमें समागई ३३ फिर उसीसमय युधिष्ठिरने धनुषको लेकर टेढ़े पर्ववाले बाणों से कृतवर्माको ढक दिया ३४ इसकेपीछे बड़े महारथी कृतवर्माने आधेहीपलमें युधिष्ठिरको घोड़े सारथी और रथसे विरथकिया ३५ तब बड़े पांडवने ढाल और तलवारको लिया फिर माधव कृतवर्माने उसकी उस ढाल तलवारकोभी तीक्ष्ण बाणोंसे टुकड़े २ किया ३६ इसके पीछे युधिष्ठिरने सुनहरी दंडवाले कठिनतासे सहनेकेयोग्य तोमर को लेकर युद्धमें शीघ्रहीकृतवर्माके ऊपर फेंका ३७ फिरमन्द मुसकान करते हस्तलाघवी कृतवर्माने धर्मराजकीभुजासे फेंकेहुये अकस्मात् आतेहुये उसतोमरके दोखण्डकिये ३८ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्तने युद्धभूमि में सौबाणोंसे युधिष्ठिरको ढकदिया और उसके कवचकोभी तीक्ष्णबाणोंसेतोड़ा ३९ हे राजायुद्ध में कृतवर्माकेबाणों सेटूटाहुआ बहुमूल्य कवच ऐसेगिरा जैसे कि आकाशसे ताराजाल गिरता है ४० वह टूटे धनुष रथसे रहित गिराहुआ कवच बाणोंसे पीड़ितधर्मकापुत्र युधिष्ठिर शीघ्रही युद्धसे हटगया ४१ फिर कृतवर्मा ने धर्मात्मा युधिष्ठिरको बिजयकरके महात्मा द्रोणाचार्य्यकी सेना को रक्षित किया ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणियुधिष्ठिरायमानंनामशतोपरिपंचषष्टितमोऽध्यायः १६५ ॥

एकसौछांछठका अध्याय ॥

संजयबोले फिर भूरिने युद्धमें रथियोंमें श्रेष्ठ आतेहुये सात्यकी को ऐसेरोका जैसे कि गर्त्तकेद्वारा हाथीकोरोकतेहैं १ उसके पीछे क्रोधयुक्त भूरिने शीघ्रही तीक्ष्णधारवाले पांचबाणों से सात्यकीको

हृदयपर घायलकिया तबउसका रुधिर बहुतसागिरा २ उसीप्रकार फिर उस कौरव भूरिने युद्धमें तीक्ष्ण धारवाले दशबाणोंसे दुर्मद सात्यकीको भुजाके मध्यमें छेदा ३ हे महाराज क्रोधसे रक्तनेत्र उन दोनोंने क्रोधसे धनुषोंको चलायमान करके बाणोंसे अत्यन्त घायलकिया ४ उनक्रोधयुक्त शायकोंके छोड़नेवाले यमराज और कालरूप दोनोंके शस्त्रोंकीबर्षा अत्यन्त भयकारी हुई ५ फिर वह दोनों परस्पर बाणों से ढकेहुये अच्छीरीति से नियतहुये और वह युद्ध एक मुहूर्त्त तक एकसाहुआ ६ इसके अनन्तर क्रोधयुक्तअत्यन्त हंसतेहुये सात्यकी ने युद्धमें महात्मा कौरव के धनुष को काटा ७ फिर इसटूटे धनुषवालेको तीक्ष्णधारके नौबाणोंसे शीघ्र हृदय पर छेदा और तिष्ठतिष्ठ बचनकहा ८ पराक्रमी शत्रुकेबाणोंसे अत्यन्त छिदेहुये उस शत्रुसंतापीने दूसरे धनुषको लेकर यादव सात्यकी को छेदा ९ हे राजा फिर उस हंसतेहुये भूरिने तीनबाणों से यादव को घायल करके अत्यन्त तीक्ष्णभल्लसे धनुषको काटा १० फिर उस टूटेधनुष क्रोधसे मूर्च्छामान सात्यकीने बड़ी वेगवान् शक्तिको उसकी बड़ी छातीपर मारा ११ फिर शक्तिसे टूटेअंग भूरि अपने उत्तम रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि दैवइच्छासे प्रकाशमान किरण वाला मंगल नक्षत्र आकाशसे गिरताहै १२ महारथी अश्वत्थामा जी उस शूरको मराहुआ देखकर युद्धमें वेगसे सात्यकीके सन्मुख दौड़े १३ हेराजा अश्वत्थामाजी सात्यकीसे तिष्ठतिष्ठ बचन कहकर बाणोंकी ऐसीबर्षा करनेलगे जैसे कि बादल अपनी जलधाराओंसे पर्व्वतको ढकताहै १४ फिर महारथी घटोत्कच सात्यकी के रथपर आतेहुये उसकोधयुक्त अश्वत्थामाजीसेबोला १५ कि हेद्रोणाचार्य्य के पुत्र खड़ाहो खड़ाहो मेरेहाथ से बचकर न जायगा तुझको मैं ऐसेमारूंगा जैसे कि शरभभैंसेको मारताहै १६ और मैं युद्धभूमिमें तेरे युद्धकी श्रद्धा को नाश करूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र शत्रुओंके बीरों का मारनेवाला राक्षस यह कहकर १७ अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि क्रोधयुक्त केशरी गजराजके सन्मुख जाताहै घटोत्कच

अक्षरथके समान बाणोंसे रथियोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी के ऊपर ऐसेबर्षा करनेलगा १८ जैसे कि बादल जलधाराओं से बर्षाकरता है फिर मन्द मुसकान करते अश्वत्थामाने वेगसे युद्धमें विषैले सर्प की समान बाणोंसे उस प्रकट होनेवाली बाणोंकी बर्षाका नाश किया १९ इसकेपीछे मर्मभेदी शीघ्रगामी तीक्ष्ण सैकड़ोंबाणोंसे उस शत्रुबिजयी राक्षसोंके राजा घटोत्कचको ढकदिया २० हे महाराज उनके बाणोंसे छिदाहुआ वह राक्षस युद्धभूमिमें ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि श्वावित्शिलोंसे चिताहुआ होताहै २१ उसके पीछे क्रोधसे पूर्ण प्रतापवान् घटोत्कचने भयानक और रुद्रवज्रके समान बाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया २२ क्षुरप्र, अर्द्धचन्द्र, नाराच, शिलीमुख, बाराह, कर्ण, नालीक और विकर्णनाम बाणोंसे बर्षाकरनेलगा २३ पीड़ासे रहित सावधान रूप तेजस्वी अश्वत्थामा ने उस असंख्य बज्रऔर बिजलीकेसमान शब्दायमान ऊपर पड़ने वाली उस बाणवृष्टिको २४ बड़ेदुःख सें सहनेके योग्य दिव्यअस्त्र के मंत्रोंसे अभिमंत्रित घोरबाणों से ऐसे इधर उधरकिया जैसे कि बायु बड़े बादलोंको तिर्रबिर्र करताहै हे महाराज इसकेपीछे अन्तरिक्षमें दूसरा घोररूप युद्ध शूरबीरोंके आनन्दका बढ़ानेवाला हुआ २५ उससमय आकाश अस्त्रोंकी घिसावट से फुलिङ्गों समेत उत्पन्न होनेवाली अग्निसे रात्रिके समय चारोंओरसे पटवीजनों से संयुक्त के समान शोभायमानहुआ २७ उस अश्वत्थामाने सब ओरसे दिशाओंको बाणोंके समूहोंसे ढककर आपके पुत्रोंके हितार्थ राक्षसको अच्छा ढका २८ उसके पीछे गहन रात्रिके मध्य युद्धमें अश्वत्थामा और राक्षसका युद्ध ऐसे जारीहुआ जैसे कि इन्द्र और प्रह्लादकाहुआ था २९ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कच ने युद्ध में कालाग्निके समान दशबाणोंसे अश्वत्थामाको छातीपर घायल किया ३० उस राक्षसके मारे हुये बाणोंसे घायल वह महाबली अश्वत्थामा युद्धमें ऐसे कंपायमान हुये जैसे कि बायुसे आघातित वृक्ष होताहै ३१ और अचेत होनेवाले अश्वत्थामा ध्वजाकी यष्टी

से आश्रित हुये ३२ हे राजा इसके पीछे आपकी सब सेना हाहाकार करनेलगी और आपके सब शूरबीरोंने उसको मृतक रूप माना ३३ पांचाल और सृंजियोंनेयुद्धमें उसदशावाले अश्वत्थामा को देखकर सिंहनादकिये ३४ इसके पीछे शत्रुओंके बिजय करने वाले महाबली अश्वत्थामाने सचेततासे अपने बामहस्त से धनुष को दबाकर ३५ शीघ्रही घटोत्कचको लक्ष्य बनाकर कानतकखैंचे हुये उस धनुषसे घोर और श्रेष्ठ उसबाणको जोकि यमदण्डके समान था छोड़ा ३६ हे राजा वह सुन्दर पुंख भयकारी उत्तम बाण उस राक्षस के हृदय को छेदकर पृथ्वी में घुसगया ३७ उसके आघात से युद्ध में शोभा पानेवाले अश्वत्थामा के हाथसे अत्यन्त घायल वह बड़ा पराक्रमी राक्षसाधिप रथकी उपस्थपर बैठगया ३८ भयसे व्याकुल शीघ्रतायुक्त सारथी उस घटोत्कचको अश्वत्थामा के हाथसे अचेत देखकर युद्धभूमिसे दूर ले गया ३९ महारथी अश्वत्थामा युद्धमें राक्षसाधिप घटोत्कचको इसप्रकार से घायल करके बहुत बड़े शब्दको गर्जा ४० हे भरतबंशी आपके पुत्र और सब शूरबीरों से स्तुतिमान वह अश्वत्थामा शरीरसे ऐसे अत्यन्त प्रकाशितहुआ जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य्य होताहै ४१ आप राजा दुर्योधनने द्रोणाचार्य्य के रथके पास युद्ध करनेवाले भीमसेन को तीक्ष्ण बाणोंसे छेदा ४२ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर भीमसेन ने उसको दश बाणोंसे छेदा दुर्योधन ने बीस बाणसे छेदा ४३ वह युद्धभूमि में शायकों से ढकेहुयेऐसे दिखाई पड़े जैसे कि आकाशमें मेघजालोंसे ढके हुये सूर्य्य और चन्द्रमा होतेहैं ४४ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ उसके पीछे राजा दुर्योधनने भीमसेन को पांच बाणोंसे घायल करके तिष्ठ तिष्ठ बचन कहा ४५ भीमसेन ने दश बाणों से उसके धनुष और ध्वजाको काटकर टेढे पर्व्ववाले नब्बे बाणों से उस कौरवों के राजाको घायल किया ४६ इसके अनन्तर हे भरतर्षभ क्रोधयुक्त दुर्योधनने दूसरे बड़े धनुष को लेकर युद्ध के शिर पर सब धनुषधारियों के देखते हुये भीमसेन को तीक्ष्णबाणों से

पीड़ितकिया ४७ भीमसेनने दुर्य्योधन के धनुषसे निकलेहुये उन बाणोंको काटकर कौरवको पच्चीस बाणों से घायलकिया ४८ हे श्रेष्ठ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने क्षुरप्रनाम बाणसे भीमसेन के धनुषको काटकर दशबाणोंसे छेदा ४९ फिर महाबली भीमसेन ने दूसरे धनुषको लेकर शीघ्रही तेज धारवाले सातबाणोंसे राजाको घायलकिया ५० हे महाराज हस्तलाघवी के समान दुर्योधनने शीघ्रही उसके उस धनुषको किन्तु हाथमें लिये हुये दूसरे तीसरे चौथे और पांचवें धनुषकोभी काटा अर्थात् बिजयसे शोभापानेवाले मतवाले आपके पुत्रने भीमसेन के अनेक धनुषोंको काटा ५१।५२ इसप्रकार बारंबार धनुषों के तोड़नेपर उस भीमसेन ने युद्धमें अत्यन्त लोहमयी उस शुभ शक्तिको दुर्योधनपर छोड़ा ५३ जो कि सदैव काल की समान प्रकाशित किरण और अग्नि के समान प्रकाशमान आकाश के सीमन्त को उत्पन्न करनेवाली थी ५४ कौरवने सबलोक और महात्मा भीमसेन के देखते उस शक्तिको बीचही में तीनटुकड़े किया ५५ हे महाराज इसकेपीछे भीमसेन ने बड़ी प्रकाशमान उस भारीगदाको वेगसे घुमाकर दुर्य्योधनके रथ पर फेंका ५६ हे भरतर्षभ उसकेपीछे उसभारी गदाने युद्धमें आपके पुत्रके घोड़े और सारथीको मर्द्दन किया ५७ हेराजेन्द्र फिर आपका पुत्र स्वर्णजटित रथसे उतरकर अकस्मात् महात्मा नन्दकके रथपर सवार हुआ ५८ तब रात्रिमें कौरवों को घुड़कते भीमसेनने आपके पुत्रमहारथीको मृतक हुआ मानकर बड़ा सिंहनाद किया ५९ और आपके सेनाके लोगोंने भी उस राजाको मृतक माना उसके पीछे वहसब चारोंओर से हायहाय पुकारे ६० हे राजा उन सब भयभीतोंके शब्दों को सुनकर और महात्मा भीमसेनके भी शब्द को सुनकर राजा युधिष्ठिर दुर्य्योधन को मराहुआ मानकर शीघ्रतासे वहां आकरबर्त्तमान हुये जहांपर कि पांडव भीमसेन था६२ हे राजा पांचाल, केकय, मत्स्य, सृंजयदेशीशूरबीर सब उपायोंसमेत युद्धकी अभिलाषा से द्रोणाचार्य्यके सन्मुख हुये ६३ वहांपर द्रोणाचार्य्य

का महाभारी युद्ध दूसरे लोगोंसे हुआ और घोर अन्धकारमें डूबे हुये परस्पर मारनेवाले शूरबीरोंका भी युद्ध हुआ ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्षष्टितमोऽध्यायः १६६ ॥

एकसौसरसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरत वंशी राजा धृतराष्ट्र सूर्य्य के पुत्रने द्रोणाचार्य्यको युद्धमें चाहनेवाले सहदेवकोरोका १ फिर सहदेवने नौ बाणोंसे कर्णको छेदकर टेढे पर्ववाले बिशिखोंसे पीड़ितकिया २ कर्णने टेढ़ेपर्ववाले सौ बाणोंसे उसको घायल किया और हस्त-लाघवताके समान उसके धनुषको काटा ३ उसके पीछेप्रतापवान् सहदेवने दूसरे धनुषको लेकर कर्णको बीसबाणसे घायलकिया यह आश्चर्य्यसा हुआ ४ कर्णने टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे उसके घोड़ोंकोमारकर उसकेसारथीकोभी शीघ्रही भल्लसे यमलोक पहुंचाया फिर रथसे रहित सहदेवने ढाल तलवार को हाथ में लिया हंसते हुये कर्णने उसकी उस ढाल तलवार को भी खंड २ कर दिया ६ उसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त सहदेवने बड़ीघोर सुबर्ण जटित बड़ी भारीगदाको कर्णके रथपर फेंका ७ कर्णने सहदेवकी फेंकीहुई अ-कस्मात् आतीहुई गदाको बाणोंसे रोककर पृथ्वीपर गिराया ८ शीघ्रता युक्त सहदेवने गदाको निष्फल देखकर कर्णके लिये शक्ति को फेंका उसने उस शक्तिकोभी बाणसे काटा ९ हेमहाराज इसके पीछे सहदेवने व्याकुलता से युक्त शीघ्रही रथसे कूदकर कर्णको सन्मुख देख रथके चक्रको लेकर युद्धभूमि में कर्णके ऊपर छोड़ातब कालचक्रके समान उठाहुआ वह चक्र अकस्मात् आकरगिरा ११ सूतनन्दन कर्णने हजारों बाणोंसे उसको काटा महात्मा कर्णके हाथसे उस चक्रके टूटने पर १२ ईशादण्ड, पोक्कर और नानाप्रकार के युग हाथियों के अंग घोड़े और मृतक मनुष्यों कोभी कर्णकोल-क्ष्य बनाकर फेंका कर्णने बाणों सेही उनको हटाया उस सहदेवने अपनेको अशस्त्र जानकर बिशिख नाम बाणोंसे रुकेहुयेने युद्धको

त्यागा हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ हंसते हुये कर्णने एकक्षणभरमें उसके सन्मुख जाकर १५ सहदेव से यह बचन कहा कि हे पराक्रमी युद्धमें उत्तम रथियों के साथ तू युद्ध मतकर १६ हे माद्री के पुत्र सदैव अपने बराबरवाले से युद्धकर मेरे बचनपर सन्देह मतकर और फिर धनुषकी नोकसे पीड़ित करता हुआ फिर यह बोला कि यह अर्जुन जो कौरवों के साथ लड़ताहै हे माद्रीके पुत्र शीघ्र वहां जावो अथवा घरकोजावो जो मुझको मानतेहो रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण उसको उसप्रकार से कहकर अपने रथके द्वारा १७ पांचाल और पांडवोंकी सेनाको भस्मकरता हुआ चला शत्रुके मारनेवाले कर्णने मारने के स्थानपर बर्त्तमानहुये सहदेवको नहींमारा १८ हे राजा सत्यप्रतिज्ञ बड़ेयशस्वी कर्णने कुन्तीके बचनको स्मरणकरके ऐसा किया इसकेपीछे उदासमन और बाणोंसे पीड़ित १९ और कर्णके बाणरूपी बचनों सेदुःखी सहदेव जीवनसे युक्त हुआ और शीघ्रता समेत वह महारथी युद्धमें पांचालदेशी महात्मा जनमेजय के रथ पर सवार हुआ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणि घोरयुद्धे शतोपरिसप्तषष्टितमोऽध्यायः १६७ ॥

एकसौ अरसठका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर मद्रके राजा शल्यनेद्रोणाचार्य्यकी औरसेना समेत शीघ्रतासे आनेवाले धनुषधारी बिराटको बाणोंके समूहसे ढकदिया १ उन दोनों दृढ़ धनुषधारियों का युद्ध युद्धभूमिमें ऐसा हुआ जैसा कि पूर्ब्ब समयमें जंभ और इन्द्रका हुआ था २ हे महाराज शीघ्रता करनेवाले शल्यने शीघ्रही सौ बाणोंसे बाहिनीपति राजा बिराटको घायल किया ३ और तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणोंसे फिर उसको घायल किया फिर तीसरी बार तिहत्तर बाणोंसे इसके पीछे चौथीबार सौ बाणोंसे घायल किया तदनन्तर राजा शल्यने उसके चारों घोड़ोंको मारकर युद्धमें बाणोंसे सारथी और ध्वजाको गिराया ४।५ वह महारथी मृतक घोड़े वाले रथसे शीघ्रही उतरकर

धनुषको चलायमान करता और तेजबाणोंको छोड़ता नियत हुआ ६ इसके पीछे सतानीक भाईको बिरथ देखकर सबलोकके देखतेशीघ्र रथकी सवारीसे सन्मुख आया ७ फिर शल्यने आतेहुये सतानीक को बड़े युद्धमें बिशिख नाम बहुत बाणोंसे छेदकर यमलोकमेंपहुंचाया ८ उस बीरके मरने पर रथियोंमें श्रेष्ठ बिराट उस ध्वजाओंकी माला रखनेवाले रथपर शीघ्रही सवारहुआ ९ उसके पीछे क्रोधसे द्विगुणितबलवाले बिराटने दोनों नेत्रोंको चलायमान करके शीघ्रही बाणोंसे शल्यके रथको बाणोंसे ढकदिया १० इसके पीछे क्रोधयुक्त राजा शल्यने टेढ़े पर्व्ववाले बाणसे बाहिनीपति राजा बिराटको छातीपर कठिन घायल किया ११ फिर वह अत्यन्त घायल बिराट रथके पृष्ठ पर बैठगया और बड़ामूर्च्छित हुआ १२ युद्धमें बिराटको कठिन घायल देखकर सारथी दूरहटालेगया हे भरतबंशी फिर वह बड़ीसेना रात्रिमें भागी १३ जो कि युद्धको शोभादेनेवाली शल्यके सैकड़ों बाणोंसे घायलथी हेराजेन्द्र फिर अर्जुन और बासुदेवजी उस भागीहुई सेनाको देखकर वहांगये जहां राजा शल्य नियत था १४ और राक्षसोंका राजा अलंबुष आठ चक्रवाले उत्तम रथपर सवार होकर उन दोनोंके सन्मुखगया १५ जो कि घोरदर्शन बिशाचरूप उत्तम घोड़ोंसे युक्त रक्तपताका रखनेवाला रक्तही मालाओंसे अलंकृत १६ कार्ष्ण नाम लोहेकाबना घोररीछोंके चमड़ेसे मढ़ाहुआ और रौद्रअपूर्व्वपक्ष और बड़ेनेत्र शब्दकरनेवाले १७ गृद्धराजकीमूर्त्तिसे शोभायमान ऊंचे दण्डकी ध्वजावालाथा हे राजा वह राक्षस चूर्ण जन समूहके समान शोभायमानहुआ १८ अर्जुनके शिरपर सैकड़ों बाण समूहों को फैलातेहुये उसने आतेहुये अर्जुनको ऐसे रोका जैसे कि प्रभंजन को गिरिराजरोकताहै १९ हे भरतर्षभ तब वहां नर और राक्षसका अत्यन्त कठिन युद्ध सब देखनेवालोंको प्रसन्नता देनेवाला २० गृद्ध काकवलाक उलूक और शृगालोंका प्रसन्न करने वाला हुआ अर्जुनने सौ बाणोंसे उसको घायल किया २१ और नौ तीक्ष्ण बाणोंसे ध्वजाकोकाटा और तीन ३ बाणसे सारथी

त्रिवेणुकको २२ एक बाणसे धनुष को काटकर चारबाणोंसे चारों घोड़ोंको मारा फिर उसने दूसरा धनुष सन्नद्धकिया उस धनुषकेभी दो खण्ड किये २३ हे भरतर्षभ इसके पीछे अर्जुनने तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उस राक्षसाधिपको छेदा तब घायल और भयभीत होकर भागा २४ अर्जुन उसको शीघ्र बिजय करके मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर बाणोंको फैलाता द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गया २५ हे महाराज यशस्वी अर्जुनके हाथसे घायल सेना पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि बायुसे टूटेहुये वृक्ष गिरते हैं २६ महात्मा अर्जुनके हाथसे उन सेनाओंके नाशहोने पर आपके पुत्रोंकी सब सेना भागी २७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टषष्टितमोऽध्यायः १६८ ॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय॥

संजय बोले हे भरतबंशी आपके पुत्र चित्रसेनने आपकी सेना को बाणोंसे भस्म करनेवाले सतानीक को रोका १ और उस नकुलके पुत्र सतानीकने चित्रसेनको पांचबाणोंसे छेदकर उसको तीक्ष्ण धारवाले दशबाणोंसे फिर छेदा २ हे महाराज फिर चित्रसेनने युद्धमें सतानीकको तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणोंसे छातीपर छेदा ३ तब नकुलके पुत्रने टेढ़े पर्ववाले बिशिखोंसे उसके कवचको शरीर से गिराया वह आश्चर्य्यसाहुआ ४ हे राजाधृतराष्ट्र वह कवच से रहित आपका पुत्र ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि समय पाकर कांचली से छूटाहुआ सर्प होताहै ५ इसके पीछे नकुल के पुत्रने युद्धमें उपाय करनेवाले इस चित्रसेनको ध्वजा और धनुषको तीक्ष्णबाणों से काटा ६ हे महाराज युद्धमें उस टूटे धनुष कवच से रहित महारथीने शत्रुके मारनेवाले दूसरे धनुषको हाथमें लिया७ इसके पीछे क्रोधयुक्त चित्रसेनने नकुलके पुत्रको नौ बाणोंसे शीघ्रही घायल किया ८ हे श्रेष्ठ फिर नरोत्तम सतानीकने चित्रसेनके सारथी समेत चारों घोड़ोंको माराह बलवान् महारथी चित्रसेनने उस रथसे उतरकर नकुलके पुत्रकोपच्चीसबाणोंसे पीड़ितकिया १०

नकूलके पुत्रने उस कर्म के करनेवाले चित्रसेनके रत्नजटित धनुषको अर्द्धचन्द्र बाणसे काटा ११ वह टूटे धनुष बिरथ मृतक सारथी समेत घोड़ेवाला चित्रसेन शीघ्रही महात्माकृतवर्माके रथपर सवार हुआ १२ तब सैकड़ों बाणोंसे ढकता हुआ वृषसेन शीघ्रही उस महारथी द्रुपदके सन्मुखगया जो कि सेनासमेत द्रोणाचार्य्य की सन्मुखता करनेका अभिलाषीथा १३ हे निष्पाप धृतराष्ट्र द्रुपदने कर्णके पुत्र महारथी को साठबाणोंसे छाती और भुजापरछेदा १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त रथपर चढ़हुये वृषसेनने द्रुपदको तीक्ष्ण शायकोंसे छातीपर घायल किया १५ हे महाराज बाणोंसे घायल अंग बाणरूप कांटोंसे संयुक्त वह दोनों युद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि स्वाविध शल्लोंसे शोभित होताहै १६ वहदोनों बड़ेयुद्धमें सुनहरी पुंख साफनोकवाले बाणोंसे टूटे कवच शरीर रुधिर समूहसे आर्द्र देह महाशोभायमान हुये १७ अर्थात् वह दोनों युद्धभूमिमें सुबर्णरूप कल्पवृक्ष के समान फूलेहुये किंशुक वृक्षके सदृश शोभायमान हुये १८ हे राजा इसकेपीछे वृषसेनने द्रुपदको नौ बाणोंसे छेदकर फिर सत्तरबाणोंसे घायल किया इसके पीछेभी तीन२दूसरेबाणोंसे १९ इसीप्रकार वह कर्णकापुत्र बर्षा करनेवाले बादलकी समान हजारों बाणोंको छोड़ता शोभायमान हुआ २० तब क्रोधयुक्त द्रुपदने तीक्ष्णधार पीतरंगवाले भल्लसे वृषसेनकेधनुषके दोखंडकिये २१ उसने सुबर्ण जटित नवीन दृढ़ दूसरेधनुषको लेकर और तूणीरसे साफतीक्ष्ण दृढ़ पीतरंगवाले भल्लकोखैंच २२ धनुष में लगाकर और उस द्रुपदको देखकर सब सोमकोंको भयभीत करते हुये उस कानतक खैंचे हुये भल्लको छोड़ा २३ वह भल्ल उसके हृदय को छेदकर पृथ्वीमें गया वृषसेनके बाणसे घायल राजा द्रुपद मूर्च्छायुक्त हुआ २४ फिर सारथी अपने कर्म को स्मरण करता उसको दूर लेगया हे राजेन्द्र उस पांचालोंके महारथी द्रुपदके पराजय होनेपर २५ बाणोंसे टूटे कवचवाली द्रुपद की सेना उस भयानक रात्रिके होने में भागी २६ उससमय उन

जलती हुईं चारों ओरसे प्रज्वलित मशालोंसे लोग ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बादलोंके बिना नक्षत्रोंसे आकाश शोभित होताहै २७ इस प्रकार से गिरेहुये रत्न जटित बाजूबन्दोंसे पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें बिजलियों से आकाश शोभित होताहै २८ इसके पीछे कर्णके पुत्रसे भयभीत सोमक ऐसे भागे जैसे कि तारासंबंधी युद्धमें इन्द्रके भय से भयातुर दानव लोग भागते हैं २९ हे महाराज युद्धमें उसके हाथसे पीड़ामान भागते और मशालों से प्रकाशित वह सोमक शोभायमान हुये ३० हे भरतबंशी कर्णका पुत्रभी युद्धमें उनको बिजय करके ऐसा शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्नके समय बर्त्तमान उष्ण किरण वाला सूर्य्य शोभित होताहै ३१ आपके अन्य उन हजारों राजाओंके मध्यमें प्रतापवान् वृषसेन अकेलाही सबको तपाता हुआ नियत हुआ ३२ वह वृषसेन युद्धमें सोमकों के शूर महारथियोंको बिजय करके शीघ्रही वहांगया जहांपर कि राजा युधिष्ठिरथे ३३ इसके पीछे आपकापुत्र महारथी दुश्शासन उस क्रोधयुक्त युद्धमें शत्रुओं के नाश करनेवाले प्रतिबिन्ध्यके सम्मुख गया ३४ हे राजा उन दोनों का वह समागम ऐसा आश्चर्य्यकारी हुआ जैसे कि बादलों से रहित आकाशमें बुध और सूर्य्यका संयोग होताहै ३५ दुश्शासन ने युद्धमें कठिन कर्म करनेवाले प्रतिबिन्ध्यको तीन बाणोंसे ललाटपर छेदा ३६ आपके अत्यन्त पराक्रमी धनुषधारी पुत्रके हाथ से अत्यन्त घायल महाबाहु प्रतिबिन्ध्य शिखरधारी पर्व्वतके समान शोभायमान हुआ ३७ महारथी प्रतिबिन्ध्यने युद्धमें दुश्शासनको नौ शायकोंसे छेदकर फिर सात बाणोंसे घायल किया ३८ हे भरतबंशी आपके पुत्रने वह कठिन कर्म किया कि प्रति बिन्ध्यके घोड़ोंको अपने उग्र बाणों से गिराकर ३९ उस धनुषधारीकी सारथी समेत ध्वजाको भी गिराया और रथको तिलोंके समान खंड २ किया ४० हे प्रभु इसके पीछे भी उस क्रोध युक्त ने टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे पताका, तूणीर, बागडोर और पोक्करोंको तिलके समान खंड २ करके काटा ४१

फिर रथसे रहित धनुष हाथमें लिये धर्मात्मा हजारों बाणोंको फैलाता हुआ आपके पुत्रसे युद्ध करने लगा ४२ आपके पुत्रने क्षुरप्र नाम बाणसे उसके धनुषको काटकर उस टूटे धनुषवाले को दश बाणोंसे पीड़ामान किया ४३ फिर उसको रथसे रहित देखकर उसके महारथी भाई बड़े वेगसे उसके पीछे सेना समेत वर्त्तमान हुये ४४ हे महाराज उसके पीछे वह प्रतिबिन्ध्य सुत सोमके प्रकाशमान रथ पर सवार हुआ और धनुषको लेकर आपके पुत्र को घायल किया ४५ उससमय बड़ी सेनासमेत आपके सब शूरबीर आपके पुत्रको मध्यवर्त्ती करके युद्धमें सन्मुख वर्त्तमान हुये तदनन्तर भयकारी रात्रिके समय आपके शूरबीरों से और पांडवों से वह युद्ध जारी हुआ जोकि यमराजके पुरकी वृद्धि करने वाला था ४६।४७॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रियुद्धेशतोपरिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः १६६॥

एकसौसत्तरका अध्याय॥

संजय बोले कि क्रोधयुक्त शकुनी उस वेगवान् युद्धमें आपकी सेनाके मारनेवाले नकुलके सन्मुख गया और तिष्ठ तिष्ठ शब्दको उच्चारण किया १ शत्रुता करनेवाले परस्पर मारनेके अभिलाषी उन दोनों बीरोंने कानतक खैंचकर छोड़े हुये बाणोंसे परस्परमें घायल किया २ हे राजा जैसे कि नकुलने बाणोंकी वर्षाकरी उसी प्रकार शकुनीने भी गुरूकी शिक्षाको दिखलाया ३ हे महाराज तब युद्धमें बाण रूप कांटोंसे संयुक्त देह वह दोनों शूर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वाविध शल्लोंसे व्याप्त होकर शोभितहोतेहैं ४ अर्थात् सुनहरी पुंख और सीधे चलनेवाले बाणोंसे टूटे कवच रुधिर समूह से लिप्त वह दोनों बड़े युद्ध में शोभित हुये ५ सुवर्ण वर्ण और कल्पवृक्षके तुल्य प्रफुल्लित किंशुक वृक्षके समान युद्धभूमिमें प्रकाशमान हुये ६ हे महाराज बहुत बाणोंसे भिदे हुये वह दोनों शूर युद्धमेंऐसे शोभायमान हुये जैसे कि कांटोंसे युक्त शाल्मली वृक्ष

होताहै ७ तदनन्तर अत्यन्य कुटिल दृष्टि खुलेहुये बिस्तृत नेत्र क्रोध से अत्यन्त रक्तबर्ण परस्पर नाश करनेवाले दिखाईपड़े ८ अत्यन्त क्रोध युक्त हंसते हुये आपके सालेने अत्यन्त तीक्ष्णधार करणी नाम बाणसे माद्रीके पुत्र नकुल को हृदय पर छेदा ९ फिर आप के धनुष धारी सालेके हाथसे अत्यन्त घायल नकुल रथको पृष्ठ पर बैठ गया और मूर्च्छित भी हुआ १० हे राजा शकुनी अत्यन्त शत्रुता करनेवाले शत्रुको उस दशावाला देखकर ऐसे गर्जा जैसे कि बर्षा के प्रारंभ में बादल गर्जता है ११ उसके पीछे पाण्डव-नन्दन नकुल सचेत होकर कालके समान मुखको चौड़ाकिये फिर शकुनीके सन्मुख गया १२ हे भरतर्षभ उस क्रोधयुक्त नकुलनेशकुनी को साठ बाणसे घायल किया फिर उसको नाराच नाम सौ बाणों से छाती पर छेदा १३ और उसके बाण समेत धनुषको मुष्टिका के स्थानपर काट शीघ्रही ध्वजाको काटकररथसे पृथ्वीपर गिराया १४ पांडव नन्दन नकुलने तीक्ष्ण तीव्रधार पीतरंगके बिशिख नाम एकबाणसे दोनों जंघाओं को छेदकर १५ उसको ऐसे गिरायाजैसे कि व्याधाके हाथसे सपक्ष बाज पक्षी गिराया जाताहै हे महाराज तब अत्यन्त घायल वह शकुनी ध्वजाको लाठीको पकड़कर रथके उपस्थपर ऐसे बैठ गया जैसे कि कामी मनुष्य स्त्रीको पकड़कर बैठता है १६ हे निष्पाप धृतराष्ट्र सारथी उसआपके सालेकोअचेत और गिराहुआ देखकर शीघ्रही रथको सबारीसे सेना मुख से दूरलेगया १७उसके पीछे नकुल और जो उसकेपीछेचलनेवाले थे धन्य धन्य शब्दको पुकारे शत्रु संतापी नकुल युद्धमें शत्रुको बिजय करके क्रोधयुक्त होकर सारथी से बोला कि मुझको द्रोणाचार्य्यकी सेनाके सन्मुख लेचल १८ हे राजा तब सारथी उस बुद्धिमान् नकुलके बचनको सुनकर उसस्थानको चलाजहांपर कि द्रोणाचार्य्य जी बर्त्तमान थे १९ तब वह उपाय करनेवाले शारद्वतद्रोणाचार्य्य वेग से युद्धमें अपने को चाहनेवाले शिखण्डी के सन्मुख गये २० हंसते हुये शिखण्डी ने द्रोणाचार्य्यकी सेना में आनेवाले शत्रु बि-

जयी कृपाचार्य्यको नौ भल्लों से छेदा २१ हे महाराज आपके पुत्रों का हित करनेवाले कृपाचार्य्यने उसको पांच बाणोंसे छेदकर फिर बीस बाणोंसे छेदा २२ फिर उन दोनोंका युद्ध घोररूप और ऐसा भयानक हुआ जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें शवर और देवराज का हुआथा २३ युद्धमेंदुर्मद बीर महारथीने आकाशको बाणजालों से ऐसा व्याप्तकिया जैसे कि वर्षाऋतुमेंदोबादल करतेहैं २४ फिर वह युद्ध स्वाभाविकही अत्यन्त घोररूप होगया युद्धमें शोभापाने वाले शूरबीरोंकी रात्रि कालरात्रिके समान घोर रूप और भयानक हुई २५ हे महाराज फिर शिखण्डीने गौतम कृपाचार्य्य के तैयार किये हुये बड़े धनुष को बिशिख नाम बाण समेत अर्द्धचन्द्रनाम बाणसे काटा २६ तब क्रोधयुक्त कृपाचार्य्यने भयानक औरसाफ नोक तीक्ष्णधार कारीगर से साफकी हुई शक्ति को उसके ऊपर फेंका २७ शिखण्डीने उस आती हुई शक्तीको बहुत बाणोंसे काटा फिर वह प्रकाशित और चमकदार शक्ति प्रकाश करतीहुई पृथ्वी पर गिरपड़ी २८ रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्णबाणों से शिखंडी को ढकदिया २९ उस यशस्वी कृपाचार्य्यके हाथसे युद्ध में ढकाहुआ वह रथियोंमें श्रेष्ठ शिखंडी रथकी उसस्थ पर बैठगया ३० हे भरतबंशी फिर शारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें उसको पीड़ामान देखकर मारनेकी अभिलाषा करते हुये बहुत बाणोंसे घायलकिया ३१ पांचाल और सोमकोंने द्रुपद के पुत्र महारथीको युद्धमें मुख फेरनेवाला देखकर चारोंओरसे मध्यवर्त्तीकिया ३२ उसीप्रकार आपके पुत्रोंने बड़ीसेना समेत ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्यको मध्यवर्त्तीकिया इसकेपीछे युद्ध जारीहुआ ३३ हे राजा युद्धमें परस्पर सन्मुख लड़नेवाले रथियोंका कठिन शब्द ऐसाहुआ जैसे कि गर्जनेवाले बादलोंका शब्द होताहै ३४ परस्पर सन्मुख दौड़नेवाले अश्वसवार और हाथियोंकी संग्रामभूमि बड़ी कठिन दिखाईपड़ी ३५ और दौड़नेवाले पतियों के चरणाघात से पृथ्वी ऐसी कंपितहुई जैसेकि भयसे पीड़ामान स्त्री कंपायमान होती

है ३६ हे राजा रथ रथियोंको पाकर बड़े वेगसे दौड़े और बहुतोंने ऐसे पकड़लिया जैसे कि काक शलभानाम पक्षीको पकड़लेताहै ३७ हे भरतबंशी इसीप्रकार उस युद्धमें प्रवृत्त मदोन्मत्त बड़ेहाथियोंने भी बड़े २ मतवाले हाथियों को पकड़ लिया ३८ अश्वसवारने अश्व सवारको और पतीने पदातीको परस्पर पाकर क्रोध से एक को एकने जानेनहीं दिया ३९ उस रात्रिमें दौड़ते चलते और फिर लौटतेहुये सेनाओं के कठिन शब्दहुये ४० हे महाराज रथ हाथी और घोड़ोंके मध्यमें वह प्रकाशित मशालें ऐसीदिखाई पड़ीं जैसे कि आकाशसे गिरीहुई उल्का होतीहैं ४१ हे भरतबंशियोंमेंश्रेष्ठ राजा वह रात्रि युद्धके शिरपर मशालोंसे प्रकाशित दिनकेरूप होगई ४२ जैसे कि लोकका बर्त्तमान अन्धकार सूर्य्य को किरणों से नाशको पाताहै उसीप्रकार जहां तहां प्रकाशित मशालों से भी बहुत सा अन्धकार दूर होगया ४३ धूल और अन्धकार से पूरित आकाश पृथ्वीदिशा और बिदिशा प्रकाशसे फिर प्रकाशित हुईं ४४ अस्त्र कवच और बड़ी मणियोंके सब प्रकाश उन मशालों के प्रकाश से अन्तर्हित प्रभा होकर गुप्त होगये ४५ हे भरतबंशी रात्रिके समय उस युद्धके कोलाहल बर्त्तमान होनेपर किसीने अपनेकोभी यह न जाना कि मैं कौनहूं ४६ आशय यहहै कि उस युद्धमें मोहसे पिताने पुत्रको पुत्रने पिताको और इसीप्रकार मित्रने मित्रकोभी मारा ४७ मामाने भानजेको भानजेने मामाको जमाईने श्वशुर श्वसुरनेजमाई और इतरने इतरको मारा ४८ रात्रि के समय वह युद्ध मर्य्यादासे रहित होकर भयभीतों के भयका उत्पन्न करनेवाला हुआ ४९ ॥

इतश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिघोररात्रिसंकुलयुद्धे शतोपरिसप्ततितमोऽध्यायः १७० ॥

एकसौइकहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज उस भयानक तुमुल युद्धके बर्त्तमान होनेपर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके सन्मुख बर्त्तमान हुआ १ उत्तम धनुषको चढ़ाता और बारंबार प्रत्यंचाको खैंचता हुआ द्रोणाचार्य्य

के उस रथकी ओर दौड़ा जो कि सुवर्णसे अलंकृत था २ हे महाराज इसके साथी पांडवों समेत पांचालोंने द्रोणाचार्य्य के नाश करने की अभिलाषा से जातेहुये धृष्टद्युम्न को मध्यवर्त्ती करके द्रोणाचार्य्यको घेरलिया ३ आचार्य्योंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यको उसप्रकार से घिराहुआ देखकर सब ओरसे उपाय करनेवाले आपके पुत्रोंने युद्धमें द्रोणाचार्य्य को रक्षित किया ४ इसके पीछे वह दोनों सेनासागर रात्रिमें ऐसे भिड़गये जैसे कि वायुसे उठाये और व्याकुल जीववाले भयके उत्पन्न करनेवाले दो समुद्र होतेहैं ५ इसके अनन्तर धृष्टद्युम्न शीघ्रही पांचबाणों से द्रोणाचार्य्यको हृदय पर घायल करके सिंहनादको गर्जा ६ हे राजा फिर द्रोणाचार्य्यने युद्ध में उसको पच्चीस बाणोंसे छेदकर दूसरे भल्लसे उसके बड़ेशब्द वाले धनुषको काटा ७ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यके हाथ से घायल धृष्टद्युम्नने दशनच्छदोंको काटकर शीघ्रही धनुषको त्याग किया ८ उससमय क्रोधयुक्त प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके नाश करनेकी इच्छा से दूसरे उत्तम धनुष को लिया ९ और शत्रुओंके बीरोंको मारनेवालेने अपने सुवर्णजटित धनुष को कानतक खैंचकर उसके द्वारा द्रोणाचार्य्य के नाशकरनेवाले घोर शायकको छोड़ा १० बड़े युद्धमें पराक्रमी के हाथसे छोड़ेहुये उस घोर बाणने उदयरूपी सूर्य्य के समान उससेनाको प्रकाशित किया ११ हे राजा फिर देवता गन्धर्ब और मनुष्योंने उस घोरबाण को देखकर युद्धमें इसबचन को कहा कि द्रोणाचार्य्य का कल्याण हो १२ फिर कर्णने हस्तलाघवता के समान आचार्य्य जीके रथ पर आतेहुये उस शायकको दश टुकड़ेकिया १३ हे राजा धनुषधारी कर्णके हाथसे बहुत प्रकारसे कटाहुआ वह बाण शीघ्रता से ऐसे गिरपड़ा जैसेकि बिनाविषवाला सर्प गिरताहै १४ इसकेपीछे कर्णने धृष्टद्युम्नको दशबाणों से अश्वत्थामाने पांचबाणों से और आप द्रोणाचार्य्यने सातबाणों से और उसीप्रकार दुश्शासनने तीन बाणोंसे घायलकिया १५ दुर्य्योधनने बीसबाणसे शकुनीने पांच

बाणसे तात्पर्य्य यहहै कि सब महारथियों ने शीघ्रता से धृष्टद्युम्न को छेदा १६ हे राजा बड़े युद्धमें द्रोणाचार्य्य के निमित्त सातघोर बाणोंसे घायल उस धृष्टद्युम्नने बड़ी असंभ्रमता अर्थात् सावधानी से सबको तीन २ बाणोंसेछेदा १७ अर्थात् द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण और आपके पुत्र को घायल किया उस धनुषधारी के हाथ से घायल उन रथियोंमें श्रेष्ठ हरएकने युद्धमें धृष्टद्युम्न को पांच २ बाणोंसे घायल किया १८ हे राजा अत्यन्त क्रोधयुक्त द्रुमसेनने एकबाणसे छेदकर शीघ्रही दूसरे तीन बाणों से भी छेदा और तिष्ठ २ शब्दभी किया फिर धृष्टद्युम्नने उसी युद्धमें सीधेचलनेवाले तीक्ष्ण १९ सुनहरी पुंख साफ प्राणोंके नाशक तीनबाणोंसे छेदकरबड़े पराक्रमीने दूसरे भल्लसे सुवर्ण के कुंडलधारी २० द्रुमसेनके शिरको शरीरसे काटा तब युद्धमें वह दोनों होठोंका काटनेवाला शिर पृथ्वीमें ऐसे गिरा २१ जैसे कि बड़ेभारी वायुके वेगसे उखाड़ाहुआ तालवृक्षका पक्काफल गिरताहै फिर उसवीरने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे उन शूरवीरोंको छेदकर २२ अपूर्व युद्ध करनेवाले कर्णकेधनुषको भल्लों से काटा कर्णने भी उसप्रकार धनुषके टूटने को ऐसेनहीं सहा जैसे कि श्री हनुमान् जीने लांगूल के अत्यन्त खंडित होनेको नहीं सहाथा क्रोधसे रक्तनेत्र श्वासलेता हुआ वह कर्ण दूसरे धनुषको लेकर २३।२४ बहुतसे बाणोंसमेत उसमहाबली धृष्टद्युम्नके सन्मुखगया फिर उन रथियोंमें श्रेष्ठ छः शूरोंने कर्णको क्रोधयुक्त देखकर शीघ्रमारनेकी इच्छासे धृष्टद्युम्नको घेरलिया २५ शूरोंमें बड़ेबीर आपके छःशूरबीरों के आगे कियेहुये उस धृष्टद्युम्नकोकालके मुखमें वर्त्तमानमाना २६ फिरउसीसमय यादव सात्यकी बाणोंको फैलाता पराक्रमी धृष्टद्युम्न के पास वर्त्तमान हुआ २७ उस बड़े धनुषधारी और युद्धमें दुर्मद आयेहुये सात्यकी को कर्णने सीधे चलनेवाले दशबाणोंसे छेदा २८ हे महाराज सात्यकीने सबवीरोंके देखतेहुये उसको दशबाणोंसे छेदकर चलाजा मत खड़ारह यह शब्दभी कहा २९ हे राजा पराक्रमी सात्यकी और

महात्मा कर्णका ऐसा युद्धहुआ जैसे कि राजाबलि और देवराज इन्द्रका हुआथा ३० रथके शब्दसे क्षत्रियों को भयभीत करने वाले क्षत्रियों में श्रेष्ठ सात्यकीने कमलके समान मुख रखनेवाले कर्णको बाणोंसे छेदा ३१ हे महाराज वह पराक्रमी कर्ण धनुष के शब्दोंसे पृथ्वीको कंपाताहुआ सात्यकीसे युद्ध करनेलगा ३२ कर्ण ने विपाठ, करणी, नाराच, वत्सदन्त, क्षुरप्र और अन्य नाना-प्रकारके बाणोंसे भी सात्यकीको छेदा ३३ उसीप्रकार वृष्णियों में अत्यन्त श्रेष्ठ युद्धकरनेवाले सात्यकीने भी बाणोंसे कर्णकेऊपर वर्षाकरी वह दोनोंका युद्ध समानहुआ ३४ इसकेपीछे आप के पुत्रोंने और कवचधारी कर्णकेपुत्रने शीघ्रही चारोंओरसे तीक्ष्ण बाणोंकेद्वारा सात्यकीको छेदा ३५ हे समर्थ क्रोधयुक्त सात्यकी ने उन्होंके और कर्णके अस्त्रोंको अपने अस्त्रोंसे रोककर वृषसेनको छातीपर घायल किया ३६ हे राजा उसबाणसे घायल पराक्रमी वृषसेन धनुषको डालकर अचेततासे रथपर गिरपड़ा ३७ इसके पीछे पुत्रके शोकसे दुःखी कर्णने महारथी वृषसेन को मृतक जान कर सात्यकीको पीड़ामान किया ३८ कर्णकेहाथसेपीड़ित शीघ्रता करनेवालेमहारथीसात्यकीने कर्णकोबहुतबाणोंसे बारंबारछेदा ३९ उस यादवने कर्णको दशबाणोंसे और वृषसेनको सातबाणोंसे छेद कर उनदोनोंकेधनुषोंको हस्त त्राण समेतकाटा ४० शत्रुकेभय को उत्पन्न करनेवाले उनदोनोंने दूसरेधनुषको तैयारकरके सात्यकी को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सबओरको छेदा ४१ हे राजाफिर उत्तमबीरोंके नाशकरनेवाले उसयुद्धके वर्त्तमान होनेपर गांडीव धनुषका बड़ा शब्द सुनागया ४२ हेराजाउसरथ के और गांडीव धनुषकेशब्दको सुनकर कर्ण दुर्योधनसे यहबचनबोला ४३ कि फिर बड़ाधनुषधारी अर्जुनसबसेनाको और उत्तमनरोत्तम पौरवोंकोमार-कर उत्तम धनुषको फटकारता हुआ ४४ बिजय करता है क्योंकि गांडीव धनुष के बड़े शब्द और रथके शब्द ऐसे सुनेजाते हैं जिस प्रकार गर्जते हुये इन्द्रके शब्द होते हैं ४५ प्रत्यक्षमें अर्जुन अपने

योग्य कर्म को करताहै हे राजा यह भरत बंशियों की सेना अने-
कप्रकार से छिन्न भिन्न की जातीहै ४६ बहुतसी छिन्न भिन्न सेना
ऐसे नियत नहीं होतीहैं जैसे कि बायुसे कंपाया हुआ बादलों का
जाल फटजाताहै और जिसप्रकार महासागरमें टूटीहुई नौका नहीं
नियत होती उसीप्रकार अर्जुनकोपाकर ४७ भागतीहै और गांडीव
धनुषके भेदेहुये सैकड़ों बड़े २ शूरबीरलोगोंके वृहत् शब्द सुने जाते
हैं ४८ हे राजाओंमें श्रेष्ठ दुर्योधन रात्रि में अर्जुनके रथके पास
हाहाकारकाशब्द सिंहनादऔरबहुतप्रकारकेशब्दोंकोसुनो ४९।५०
और यह यादवों में श्रेष्ठ सात्यकी हमारे मध्यमें नियतहै जो यह
लक्ष्य माराजाता है अर्थात् सात्यकी स्वाधीन किया जाताहै तोभी
सब शत्रुओंको बिजय करेंगे ५१ यह राजा द्रुपदका पुत्र सब ओर
को रथियोंमें शूरबीरोंसे संवृत दोणाचार्य्यके साथ भिड़ाहुआहै ५२
जो हम सात्यकीको और पर्षतके पौत्र धृष्टद्युम्नके मारनेको समर्थ
होंय तो हमारी अवश्य बिजयहोय ५३ हे महाराज इनदोनों बीर
और महारथी वृष्णी और पर्षदबंशियों में श्रेष्ठको अभिमन्युके
समान घेरकर मारनेका उपायकरें ५४ हे भरतवंशी वह अर्जुन
सात्यकीको बहुतसे उत्तम कौरवोंकेसाथ भिड़ाहुआ जानकर द्रोणा-
चार्य्यके सन्मुख आताहै ५५ तबतक रथियोंमें श्रेष्ठ अत्यन्तउत्तम २
शूरबीरलोग वहांजावो जबतक कि अर्जुन बहुत योद्धाओंसे घिरा
हुआ सात्यकीकोनजाने ५६ औरयह शूरबीर अति शीघ्रतासेबाणों
के छोड़ने में बिलम्बनकरें जिससे कि यहांयह माधवसात्यकी पर-
लोकको जाय ५७ हे महाराज अच्छीरीतिसे कीहुई श्रेष्ठनीतिको
इसीप्रकारसेकरो तबआपकेपुत्रने कर्णकेमतमें एकमतहोकरशकुनी
से ऐसेकहा ५८ हेराजाजैसेकि इन्द्रनेयुद्धमें यशवान् बिष्णुसेकहा
था इससेमुखनफेरनेवाले दशहजार हाथियोंसे ५९ औरदशीहजार
रथियोंसे संवृत होकर तुमबड़ी शीघ्रतासे अर्जुन के सन्मुखजावो
दुश्शासन, दुर्विषह, सुबाहु, दुःप्रधर्षण ६० यहसबलोग बहुत से
पतियोंसमेत आपकेपीछे जांयगे हे महाबाहुमामाजीआप श्रीकृष्ण

समेत अर्जुन और धर्मराजकोमारो और फिर इसीप्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेवको भी मारो ६१ मेरी बिजयकी आशा तुम्हींमें ऐसे नियतहै जैसे कि देवताओंकोविजयकीआशा देवराज इन्द्रमें होतीहै ६२ हे मामाजी तुम कुन्तीके पुत्रोंको ऐसेमारो जैसे किस्वामिकार्त्तिकजीने असुरोंको माराथा आपके पुत्रके इसप्रकार कहने पर शकुनी पांडवोंके सन्मुखगया ६३ हे समर्थ वह शकुनी बड़ीसेना और आपके पुत्रोंकेसाथ आपके पुत्र दुर्य्योधनके हितार्थ पांडवोंके भस्मीभूत करनेका अभिलाषीहुआ ६४ हेराजा इसकेपीछे पांडवोंकी सेनापर शकुनीके चढ़ाई करने में आपके शूरबीरोंका और शत्रुओंका युद्धजारीहुआ ६५ बड़ीसेनासेयुक्त वहकर्ण युद्ध में हजारों बाणोंको छोड़ता शीघ्रही सात्यकीके सन्मुख गया ६६ और उसी प्रकार सबराजाओंने सात्यकीको संवृतकिया उसके पीछे भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नके रथपर जाकर ६७ चढ़ाईकरी हेभरतबंशी तब बीर धृष्टद्युम्न और पांचालों समेत द्रोणाचार्य्यका युद्ध बड़ा भारी हुआ ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकसप्ततितमोऽध्यायः १७१ ॥

एकसौबहत्तरका अध्याय ॥

संजयबोले कि तदनन्तर वह शीघ्रता करनेवाले युद्धमें दुर्मद अक्षमी क्रोधयुक्तहोकर सब शूरबीर एकसाथही सात्यकीके रथपर दौड़े १ हे राजा उन्होंने चांदी और सुबर्णसे अलंकृत तैयारहुयेरथ अश्वसवार और हाथियोंकेद्वारा उसको चारोंओरसे घेरलिया २ फिर उन सब महारथियोंने उसको चारोंओरसे घेरकर सिंहनादों केसाथ सात्यकीको घुड़का ३ वह शीघ्रता करनेवाले माधवसात्यकीके मारनेके इच्छावान् बड़ेबीर अपने तीक्ष्णबाणोंसे सत्य पराक्रमी सात्यकीपरबर्षाकरनेलगे शत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले महारथी सात्यकीने उनआतेहुओंको देखकर शीघ्रही उनको आड़ेहाथों

लिया और बहुतबाणोंको छोड़ा ४।५ वहांपर बड़े धनुषधारी और युद्धमें दुर्मदबीर सात्यकीने उदग्र और टेढ़ेपर्वबाले बाणोंसे शिरों कोकाटा ६ माधवने क्षुरप्रनाम बाणोंसे आपके शस्त्रधारी शूरोंकी भुजा हाथियोंकी सूंड़ और घोड़ों की गर्दनोंको काटकर पृथ्वी को ढकदिया ७ हे भरतबंशी पड़ेहुये चामर और श्वेतछत्रोंसे हे प्रभु पृथ्वी ऐसी व्याप्तहुई जैसे कि नक्षत्रोंसे आकाश व्याप्त होता है ८ युद्धमें सात्यकीकेसाथ लड़नेवाले उनबीरोंके ऐसे कठिन शब्दहुये जैसे कि प्रेतोंके क्रन्दित शब्द होतेहैं ९ उसबड़े शब्दसे पृथ्वीपूर्णहुई और रात्रिभी कठिन भयंकर रूप भयकी उत्पन्नकरनेवालीहुई १० रोमहर्षण करनेवाली रात्रिमें सात्यकीके बाणोंसेघायल और छिन्न भिन्न सेनाको देखकर और बड़ेशब्दको सुनकर ११ रथियोंमें श्रेष्ठ आपकापुत्र बारंबार सारथीसे कहनेलगा कि जहांपर यह शब्दहै वहांपर घोड़ोंको चलायमानकरो १२ उसकी आज्ञापाकर सारथी ने उन उत्तम घोड़ोंको सात्यकीके रथपर चलायमान किया १३ इसके पीछे क्रोधयुक्त दृढ़धनुषधारी हस्तलाघवी अपूर्व युद्धकरने वाला दुर्योधन सात्यकीके सन्मुखदौड़ा १४ तिसपीछे माधवसात्यकीने खैंचकर छोड़ेहुये और रुधिरके भोजन करनेवाले बारह बाणसे दुर्योधनको छेदा १५ प्रथमही उसके बाणोंसे पीडावान् क्रोधयुक्त दुर्योधनने दशबाणोंसे सात्यकीको छेदा १६ हे भरतर्षभ इसके पीछे सबपांचालोंका और भरत बंशियोंका बहुत उत्तमसंग्राम युद्धहुआ १७ युद्धमें क्रोधयुक्त सात्यकीने आपके पुत्र महारथीको अस्सीशायकों से छातीपर व्यथितकिया १८ और युद्धमें अपने बाणोंसे उसके घोड़ोंको यमलोकमें पहुंचाया और शीघ्रहीबाणसे सारथीकोभी रथसे गिराया १९ हे राजा मृतक घोड़ेवाले रथपर नियत आपके पुत्रने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको सात्यकीके रथपर छोड़ा २० तब सात्यकीने युद्धमें आपके पुत्रके फेंकेहुये उन पचास बाणोंको हस्तलाघवताके समानकाटा २१ फिर वेगवान् माधवने युद्धमें आपके पुत्रके बड़े धनुष को अपने भल्लसे मुष्टिका के स्थान

परकाटा २२ वह सब प्रजा का स्वामी प्रभुरथ धनुष से रहित होकर शीघ्रही कृतवर्मा के रथपर सवार हुआ २३ फिर रात्रिके मध्य में दुर्य्योधन के मुख फेरने पर सात्यकी ने बिशिख नाम बाणों से आपकी सेना को घायल किया २४ हे राजा शकुनी ने हजारों रथ हाथी और हाजारों ही घोड़ों से अर्जुन को चारोंओर से घेर कर नानाप्रकार के शस्त्रों से ढकदिया २५ उनकालके प्रेरित और अर्जुन के ऊपर सब अस्त्रोंको छोड़नेवाले क्षत्रियों ने अर्जुन से युद्ध किया २६ बड़े नाशकर्त्ता दुःखपानेवाले अर्जुन ने उन हजारों रथ हाथी और घोड़ों को रोका २७ इसके पीछे सौवलके पुत्र हंसते हुये शूर शकुनी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से अर्जुन को छेदा २८ और सौबाण से उसके बड़े रथको रोका २९ हे भरतबंशी अर्जुनने उसको बीस बाणोंसे छेदा और अन्यर बड़े२धनुषधारियों को तीन तीन बाणों से घायल किया ३० उससमय अर्जुन ने युद्धमें उन बाणों के समूहों को हटाकर आपके शूरबीरों को ऐसे मारा जैसे कि बज्रधारी इन्द्र असुरों को मारताहै ३१ फिर युद्धमें हाथी की सूंड़ों के समान टूटीहुई भुजाओं से आच्छादित पृथ्वी ऐसी प्रकाशित और शोभायमान हुई जैसे कि पांच मुख रखनेवाले सर्पोंसे शोभित होतीहै ३२ मुकुट सुन्दरनाक सुन्दर कुंडल और घूरनेवाले नेत्रयुक्त दोनों होठोंके काटनेवाले क्रोधयुक्त ३३ निष्क चूड़ामणि धारी प्यारे बचन बोलनेवाले क्षत्रियों के शिरोंसेपृथ्वी ऐसीशोभित हुई जैसे कि कमलों से पूर्ण पहाड़ों से शोभायमान होतीहै ३४ अर्जुन ने उस कठिन कर्म को करके फिर उग्र पराक्रम करनेवाले शकुनी को पांच बाणों से छेदा ३५ और तीन बाणों से उलूक को छेदा और छिदे हुये उलूक ने बासुदेवजी को व्यथित किया ३६ और पृथ्वी को शब्दायमान करता बड़े शब्दसे गर्जा अर्जुन ने युद्ध में शकुनी के धनुषको शायकों से काटा ३७ और चारों घोड़ों को यमलोक में पहुंचाया हे भरतर्षभ फिर शकुनीरथ से उतरकर शीघ्र उलूक के रथपर सवार हुआ हे राजा वह दोनों महारथी पिता पुत्र

एक रथपर सवार हुये ३९ फिर अर्जुन को दोनों ने बाणों से ऐसा सींचा जैसे कि दोबादल जलों से पर्व्वत को सींचते हैं हे महाराज तब पांडव अर्जुनने तीक्ष्णधार बाणोंसे उन दोनों को घायल करके ४० आपकी सेनाको भगादिया और बाणों से ऐसा छिन्न भिन्न किया जैसे कि हवासे बादल चारोंओर को तिर्रबिर्र हो जातेहैं४१ हे राजा इसप्रकार से सेना इधर उधर हुई तब रात्रिके समय वह घायल सेना ४२ भयसे पीड़ित सब दिशाओं को देखती हुई भागी युद्धमें कोई तो सवारियों को छोड़कर कोई सवारियों को चलायमान करते ४३ उस कठिन अन्धकार में भयसे महा व्याकुल चारों ओरको दौड़े हेभरतर्षभ युद्धमें आपके शूरबीरोंको बिजय करके४४ प्रसन्न चित्त अर्जुन और बासुदेव जी ने शंखोंको बजाया और धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्य को तीन बाणसे छेदकर ४५ शीघ्रही धनुषकी प्रत्यंचाको तीक्ष्ण बाण से काटा क्षत्रियों के मर्दन करनेवाले शूर द्रोणाचार्य्य ने उस धनुष को पृथ्वीपर रखकर ४६ वेगवान् बलवान् दूसरे धनुषको लिया हेराजा उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने धृष्टद्युम्नको सात बाणोंसे छेदकर४७ युद्धमें पांच बाणोंसे सारथीकोछेदा फिर महारथी धृष्टद्युम्न ने शीघ्रही रथियों के द्वारा उनको हटाकर४८ कौरवीय सेनाको ऐसे बिजय किया जैसे कि आसुरी सेना कोइन्द्र बिजय करताहै हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र आपके पुत्रकी उस सेनाके घायल और मारे जाने पर ४९ घोर और रुधिर समूहसे लहराती हुई वह नदीजारीहुई जो कि दोनोंसेनाओंके मध्यमें मनुष्यघोड़े और हाथियों की बहाने वालीथी ५० जैसे कि यमराज के पुरमें बैतरणी नदीहै बैसीही वह भी नदी हुई फिर तेजस्वी प्रताप वान् धृष्टद्युम्न उस सेनाको भगाकर ५१ ऐसे सन्मुख दौड़ा जैसे कि इन्द्र देवता के समूहों में दौड़ता है इसके पीछे धृष्टद्युम्न और शिखण्डीने महा शंखोंको बजाया ५२ नकुल, सहदेव, सात्यकी, पांडव, भीमसेन इन महारथियों ने आप के हजारों रथों को बिजय करके ५३ बिजयसे शोभा पाने वाले युद्धमें मतवाले पांडवोंने आपके

पुत्रकर्णशूर द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामाके देखतेसिंहनादकिये५४॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्विसप्ततितमोऽध्याय : १७२ ॥

एकसौतिहत्तरका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा महात्माओं के हाथसे मारी हुई और भगी हुई अपनी सेनाको देखकर क्रोधसे पूर्ण आपका पुत्र १ अकस्मात् बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य और कर्णके पास जाकर क्रोध के वशीभूत वार्त्ताओं का जाननेवाला इसबचन को बोला २ यहां युद्धमें अर्जुन के हाथसे जयद्रथ को मरा हुआ देखकर क्रोध युक्त आपके साथ लड़ाई जारी हुई ३ पांडवों की सेनासे मेरी सेना का नाश देखकर उस सेनाके बिजयमें सामर्थ्यवान् होकर तुम सबलोग असामर्थों के समान दृष्टि गोचर हुये ४ जो मुझको आप त्यागनेके ही योग्य जानते थे तो हे बड़ाई देने वाले मैं इसबातके भी सुनने के योग्य न था कि हम दोनों युद्धमें पांडवों को बिजय करेंगे ५ मैं तभी आप लोगोंसे स्वीकृत बचनों को सुनकर पांडवोंके साथमें इस शूर बीरोंकी नाशकारी शत्रुताको नहीं करता ६ हे श्रेष्ठ पराक्रमी पुरुषोत्तमों जोमैं आपलोगों से त्यागने के योग्य नहींहूं तो अपनी योग्यता के पराक्रम से युद्धकरो ७ आपके पुत्रके बचन रूपी कोड़ेसे घायल सर्पोंके समान चलायमान उन दोनों बीरोंने युद्धको जारी किया ८ इस के पीछे रथियों में श्रेष्ठ लोक के धनुषधारी वह दोनों युद्धमें उन पांडवों के सन्मुख दौड़े जिनमें कि मुख्य सात्यकी था ९ उसीप्रकार सेनासे युक्त पांडव भी उन एकसाथ बारंबार गर्जने वाले दोनों बीरोंके सन्मुख बर्त्तमान हुये १० इसके पीछे बड़े धनुषधारी सब शस्त्र धारियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्तद्रोणाचार्य्य ने दशबाणों से शीघ्रतापूर्बक सात्यकीको घायल किया ११ कर्णने भी दशबाणों से आपके पुत्रने सात बाणसे वृषसेन ने दशबाणोंसे शकुनीनेसात बाणोंसे १२ इनसबने दुर्य्योधनके रोने पीटनेसे सात्यकीको चारों ओरसे घायल किया युद्धमें पांडवी सेनाके मारने वाले द्रोणाचार्य्य

को देखकर १३ सोमक लोग चारोंओर से बाणोंकी बर्षासे शीघ्र पीड़ामान हुये हेराजा वहां द्रोणाचार्य्यने क्षत्रियों के प्राणोंको ऐसे हरा १४ जैसे कि किरणोंके द्वारा सूर्य्यदेवता चारोंओर के अन्धकारको हरतेहैं द्रोणाचार्य्य से घायल परस्पर पुकारने वाले पांचालों के १५ बड़े शब्द सुनेगये कोई पुत्रोंको कोई पिताओंको कोई भाई मामाको १६ भानजों को समान अवस्थावालों को नातेदार और बांधवों को छोड़२ कर जीवन के इच्छावान् होकर शीघ्रतासे जाते थे १७ बहुत से मेहसे अचेत होकर उनके सन्मुखगये और पांडवों के बहुतसे शूरबीर परलोक कोगये १८ हे राजा इस प्रकार महात्मा के हाथसे पीड़ामान पांडवी सेनाके लोग रात्रि के समय हजारों मशलों को छोड़कर १९ भीमसेन अर्जुन, श्रीकृष्ण, नकुल, सहदेव और युधिष्ठिर के देखते हुये भागे २० अन्धकार से लोकको व्याप्त होने पर कुछनहीं जानागया कौरवों के प्रकाश से दूसरे कौरवदिखाई पड़तेथे २१ हे राजाबहुत शायकोंको फैलाने वाले महारथी कर्ण और द्रोणाचार्य्यने उसभगी हुई सेनाको देख कर पीछे की ओर से मारा २२ पांचालों के छिन्न भिन्न होने और सब ओर से बिनाशवान् होनेपर प्रसन्न चित्त श्रीकृष्णजी अर्जुन से बोले २३ कि बड़े धनुषधारी कर्ण और द्रोणाचार्य्य ने एकसाथ इन धृष्टद्युम्न सात्यकी और पांचालों को शायकोंसे कठिन घायल किया २४ हे अर्जुन इन दोनोंके बाणों की बर्षासे हमारे महारथी लोग इधर उधर होगये और रोकने से भी यह सेना नहीं रुकती है २५ अर्जुन और केशवजी उस सेनाको भगीहुई देखकर बोलेकि हे पांडव तुम भयभीत होकर मतभागो भय को त्याग करो २६ अच्छे प्रकार शस्त्रों के उठाने वाली सब अलंकृत सेना समेत हम दोनों उन द्रोणाचार्य्य और कर्ण को और वह दोनों हमारे पीड़ा देने को प्रवृत्त हैं २७ यह दोनों पराक्रमी शूर अस्त्रज्ञ बिजय से शोभा पानेवाले इस रात्रिमें आपकी सेना से अलग होकर नाश करेंगे २८ उन दोनों के इस प्रकार वार्त्तालाप करते भयकारी कर्म

करनेवाले महाबली उत्तमशूरबीर भीमसेनने शीघ्रही सेनाकोलौटा कर चढ़ाईकरी २९ हेराजा वह श्रीकृष्णजी आतेहुये भीमसेनको देखकर पांडव अर्जुनको प्रसन्न करतेहुये फिर बोले ३० कि युद्धमें प्रशंसनीय यह भीमसेन सोमक और पांडवोंको साथलिये बड़ेवेग से महारथी कर्ण और द्रोणाचार्य्यके सन्मुख वर्त्तमानहुआहै ३१ हे पांडवनन्दन अर्जुन इस भीमसेन और महारथी पांचालों केसाथ तुमभी सब सेनाओंके विश्वासके निमित्त युद्धकरो ३२ उसके पीछे वहदोनों पुरुषोत्तम माधव और पांडव द्रोणाचार्य्य और कर्णको पाकर युद्धके शिरपर नियतहुये ३३ संजय बोले कि पीछेसे युधिष्ठिरकी वह बड़ी सेनाभी लौटआई फिर द्रोणाचार्य्य और कर्णने युद्धमें शत्रुओंको मर्दनकिया ३४ हेराजा रात्रिके समय वहबड़ाकठिन युद्ध ऐसाहुआ जैसे चन्द्रोदयके समय दो सागरोंका परस्पर संघट्टन होताहै ३५ उसकेपीछे आपकी सेनाकेलोग बिक्षिप्तोंके समान हाथोंसे मशालोंको छोड़कर पृथक्२ पांडवोंसे युद्धकरने लगे ३६ धूल और अन्धकारसेयुक्त अत्यन्त भयानक लोकके होनेपर विजयके चाहनेवाले शूरबीर केवलनाम और गोत्रकेद्वारा युद्धकरने लगे ३७ हेमहाराज प्रहार करनेवाले राजाओंसे सुनायेहुये नाम युद्धमें ऐसेसुनेगये जैसेकि स्वयंबरमें सुनाये जातेहैं ३८ अकस्मात् सेनाका शब्दबन्द होगया फिर क्रोध युक्त युद्धकर्त्ता विजय वाले और पराजित लोगोंकेभी बड़ेशब्दहुये ३९ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ जहां जहांमशले दिखाई पड़ीं वहांवहां शूरबीर लोग पतंगोंकेसमान गिरे ४० हेराजेन्द्र इसप्रकारसे युद्ध करनेवाले पांडव औरसब कौरवों की वह बड़ीरात्रि महादारुण हुई ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरित्रिसप्ततितमोऽध्यायः १७३ ॥

एकसौचौहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोलेकि इसकेपीछे शत्रुओंके मारनेवाले कर्णने धृष्टद्युम्नको युद्धमें देखकर मर्मभेदी दशबाणोंसे छातीपर घायलकिया १

हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र फिर प्रसन्नचित्त धृष्टद्युम्नने भी शीघ्रही दशशायकों से उसको घायलकिया और तिष्ठतिष्ठ बचन भीकहा २ उनदोनों महारथियोंने युद्ध में बाणोंसे परस्पर ढकढकर फिर कानतक खैंचेहुये शायकोंसे घोड़ेपरस्परछेदा ३इसके अनन्तर कर्णने युद्धमें शायकोंसे पांचालदेशियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न के सारथी और चारों घोड़ोंकोछेदा ४और तीक्ष्णबाणोंसे अत्यन्त श्रेष्ठ धनुषकोभी काटा और भल्लसे उसके सारथीको रथकी नीढ़से गिरादिया ५ रथसेरहित मृतक घोड़ेऔर सारथी वाले धृष्टद्युम्नने घोरपरिघको लेकर कर्णके घोड़ोंको पीसडाला ६ इसकेपीछे विषैलेसर्पके समान उसके बहुत बाणोंसे घायल पदाती होकर युधिष्ठिरकी सेनामेंचलागया७ हे श्रेष्ठ वहांजाकर वह सहदेवके रथपरसवारहुआ और कर्णकीओरको जानेका अभिलाषी हुआ तब युधिष्ठिरने उसको वहां जानेसे रोका ८फिर बड़ेतेजस्वी कर्ण सिंहनादसे मिलेहुये धनुषके शब्दको करके बड़ेवेगसे शंखको बजाया ९युद्धमें धृष्टद्युम्नको पराजित देख कर वह महारथी पांचाल सोमकों समेत क्रोधयुक्त हुये १० वहसब कर्णके मारनेकेलिये शस्त्रोंको लेकर मृत्युकाभय त्याग कर्णसे युद्धाभिलाषी होकरचले ११ सारथीने कर्णके रथमें दूसरेघोड़ोंको जोड़ाजोकि शंखवर्ण महावेगवान और अच्छे लोगोंके सवार करनेके योग्य सिन्धुदेशीथे १२ घायल और लक्ष्यभेदी कर्णने पांचालोंके महारथियोंको बाणोंसे ऐसा पीड़ामानकिया जैसेकि बादल पर्वतको करताहै १३ तब पांचालोंकी वह बड़ीसेना कर्णकेहाथसे पीड़ित और अत्यन्त भयभीत होकर ऐसेभागी जैसे कि सिंहसे पीड़ितऔर भयभीत मृग भागतेहैं १४ तब मनुष्य जहां तहां हाथी घोड़े और रथोंसे पृथ्वीपर पड़ेहुये शीघ्रतासे दिखाई पड़े १५ उस कर्णने बड़े युद्धमें क्षुरप्रनाम बाणोंसे दौड़ते हुये शूरबीरोंकी भुजा और कुंडल धारी शिरोंको काटा १६ हेश्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र और बहुतसे हाथीके सवार अश्वसवार और पदातियोंकी जंघाओंको काटा १७ युद्धमें दौड़तेहुये महारथियोंने अपनेअंग और सवारियोंका टूटनानहीं जा-

ना १८ युद्धमें घायल पांचालोंने सृंजियों समेत बनस्पतिके हिल नेसेभी कर्णकोमाना १९ और युद्धमें दौड़ते और अचेत अपने शूरबीरों कोभी कर्णहीमाना अर्थात् उससे भयभीत होकर वह भागे २० हे भरतबंशी कर्णबड़ी शीघ्रतासे उनबाणोंकोछोड़तापृथक् और भागी हुई सेनाके पीछेदौड़ा २१ महात्मा कर्णसे पृथकहुये और परस्पर देखनेवालेअचेत होकर वहलोग खड़ेहोनेकोभी समर्थ नहींहुये २२ हेराजा कर्ण और द्रोणाचार्य्यके उत्तम बाणोंसे घायलपांचाललोग सब दिशाओंको भागे २३ उसकेपीछे राजा युधिष्ठिर अपनी सेना कोभगाहुआ देखकर और हटजानेका बिचार करके अर्जुनसे यह बचन बोला २४ कि धनुषधारी रात्रिके समय सूर्य्यके समान तपाने वालेबड़े पराक्रमी कर्णकोदेखो २५ हे अर्जुनकर्णके शायकोंसेघायल अनाथोंके समान पुकारने वालेतेरे बान्धवोंके यहशब्द बारंबारसुने जातेहैं २६ हे अर्जुन जोकि बाणोंके चढ़ातेऔर छोड़तेहुये इसकर्णके अन्तरकोनहीं देखताहूं इससे निश्चय करकेयह हमारा बिनाशकरे-गा२७जोयहां समयके अनुसार देरकरना देखतेहो हेअर्जुन अब कर्ण केबिषयमेंजो करना उचितहै उसको अवश्यकरो २८हेमहाराज इस प्रकार युधिष्ठिरके बचनोंको सुनकर अर्जुन श्रीकृष्णजीसे बोलेकि अबराजा युधिष्ठिर कर्णके पराक्रमसे भयभीतहैं २९ ऐसी दशामें आप शीघ्रही समयके अनुसार कर्णकी सेनामें बारंबार निश्चयक-रो अपनी सेनाभागी जातीहै ३० हे भरतबंशीद्रोणाचार्य्यकेशायकों से घायल और पृथक् होकरकर्णसे भयभीत सेनाके लोगोंकानियत होना बर्त्तमाननहींहै ३१ उसी प्रकार निर्भयके समान घूकते और घायल महारथियोंको तीक्ष्णधार बाणोंसे हटानेवाले कर्णकोदेखता हूं३२हेवृष्णियोंमें श्रेष्ठ प्रत्यक्षमें इस युद्धके मुख्यभागमेंघूमने वाले कर्णके सहने को मैं ऐसे समर्थ नहीं होताहूंजैसेकि चरण के स्पर्शसे सर्पकेसहनेको समर्थ नहींहोसके ३३सो आपशीघ्रही वहांचलो जहां पर महारथी कर्णहै हे मधुसूदनजी मैं उस को मारूंगा अथवाबही मुझको मारेगा ३४ श्रीबासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन मैं बुद्धिसेपरे

पराक्रमी नरोत्तम युद्धमें घूमनेवाले कर्णको देवराज इन्द्रकेसमान देखताहूं ३५ हे पुरुषोत्तम अर्जुनतेरे और साक्षात् घटोत्कचके सिवाय युद्धमें इससे सन्मुखता करनेवाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ३६ हे निष्पाप महाबाहु मैं युद्धमें तबतक तेरी सन्मुखता कर्णके साथसमयके अनुसार नहीं मानताहूं ३७ जबतक कि बड़ी उल्काके समान प्रकाशमान इन्द्रकी शक्ती उसके पास नियतहै हे महाबाहु यह शक्ती तेरे निमित्त युद्धमें कर्णकी ओर से ३८ रक्षितकी जातीहै और वह भयानक रूपको ध्यान करतीहै महाबली घटोत्कचहीकर्णके सन्मुखजाय ३९ वह देवताके समान पराक्रमी महाबली भीमसेनसे उत्पन्न हुआहै उसके पास दिव्य राक्षस असुर अस्त्रहैं ४० वह घटोत्कच सदैवतुमपरप्रीतिकरनेवाला और भलाचाहनेवालाहै और युद्धमें वह निस्सन्देह कर्णको विजय करेगा ४१ इस प्रकार श्रीकृष्णजीके बचनोंको सुनकर महाबाहु कमललोचन अर्जुनने उस राक्षसको बुलाया और वह आगे आकर प्रकटहुआ ४२ हे राजा फिर वह कवचधारी बाण खड्ग और धनुषहाथ में रखने वाला घटोत्कच श्रीकृष्ण और पांडव अर्जुन को नमस्कार करके ४३ श्रीकृष्णजीसे बोलाकि हे मधुसूदनजी मैं घटोत्कचहूं मुझको आज्ञादीजिये उसके पीछे हंसतेहुये श्री कृष्णजी उस प्रकाशित मुख और कुंडलधारी घटोत्कचसे बोले ४४ कि हे पुत्र घटोत्कच जो मैं तुझसे कहताहूं उसको तूसमझ अबयह तेरेपराक्रम का समय आपहुंचाहै दूसरेका नहीं है ४५ सो तुमडूबतेहुये पांडवोंकी नौकाहो तेरे अस्त्र अनेक प्रकारकेहैं और तुझमें राक्षसी मायाहै ४६ हे हिडम्बाकेपुत्र युद्धके मुखपर कर्णके हाथसे पृथक् होनेवाली पांडवोंकी सेनाको ऐसे देखो जैसेकि ग्वालियों के हाथसे गौयं होतीहैं ४७ यह बड़ा धनुषधारी बुद्धिमान दृढ़ पराक्रमी कर्ण पांडवोंकीसेनाओंमें उत्तम२ क्षत्रियों को मारताहै ४८ उस दृढ़ धनुषधारीके बाणों की बड़ीबर्षा होरहीहै और बाणोंकी किरणोंसे पीड़ित शूरबीर उसके सन्मुखखड़े होनेको भी समर्थ नहीं होसकेहैं ४९ रात्रिके समय कर्णकेबाणोंसे

पीड़ामान वह पांचाल ऐसे भागतेहैं जैसे कि सिंहसे पीड़ामान मृग भागतेहैं ५० हे भयानक पराक्रमीतेरेसिवाय दूसरा शूरबीर युद्धमें इस अत्यन्त वृद्धि युक्त कर्णका रोकनेवाला कोई वर्त्तमाननहींहै ५१ हे महाबाहु पुरुषोत्तमसोतुम यहां मामा और पिताके तेजबल और अपनेयोग्य तेज और अस्त्रबलके समान कामकरो ५२ हे घटोत्कच मनुष्य इसी निमित्त पुत्रकी चाहते हैं वह पुत्र क्यों नहीं दुःख से तारेगा इस हेतु से तुम दुःखसे पांडवोंको तारो ५३ हे घटोत्कच पितालोगअपने मनोरथ सिद्ध करने के निमित्त ऐसे अपने पुत्र को चाहते हैं जोकि प्रियकारी होकर इस लोकसे परलोक में तारते हैं ५४ हेभीमनन्दनतुझ पराक्रम पूर्व्वक लड़नेवालेका अस्त्र बल बड़ाभयानकहै और तेरी मायाभी कठिनतासे तरनेके योग्यहै ५५ हे शत्रुओं के तपाने वाले रात्रिमें कर्णके शायकों से छिन्न भिन्न और धृतराष्ट्र के पुत्रोंमें डूबनेवाले पांडवों के तुमहीं पार पहुंचानेवाले हो ५६ और रात्रिमेंहीं राक्षसबड़ेपराक्रमी बलवान् अजेय शूर और सिंहके समान चढ़ाई करनेवाले होतेहैं ५७ रात्रिमें बड़े धनुषधारी कर्णकोअपनी मायासे मारो और पांडवलोग जिनमेंकि मुख्यधृष्टद्युम्नहै वहद्रोणाचार्य्यको मारेंगे संजयबोले किशत्रुविजयी वह कौरव अर्जुनभी केशवजीके बचनोंको सुनकरघटोत्कचराक्षससेबोला ५९ कि हे घटोत्कच तुम और लम्बीभुजा वाला सात्यकी और पांडव भीमसेन सब सेनाओंमें मुझसे प्रशंसनीय और अंगीकृतहैं ६० सो तुम कर्णके सन्मुखहोकर रात्रिमें द्वैरथ युद्धकरो महारथी सात्यकी तेरा पृष्टरक्षक होगा ६१ सात्यकी कीसहायतासे तुमयुद्धमें कर्णको ऐसे मारो जैसे कि पूर्व्व समय में इन्द्रने स्वामकार्त्तिक जी की सहायता से युद्धभूमिमें तारकासुरको माराथा ६२ घटोत्कचबोलाकि हे भरतवंशी मैं अकेलाही कर्ण के मारने को समर्थहूं और द्रोणाचार्य्यके भी मारनेकोबहुतहूं और अस्त्रज्ञ महात्मा अन्य शूरबीरों केलियेभी बहुतहूं ६३ अब मैं रात्रिमें कर्णसे वहयुद्ध करूंगा जिस को मनुष्य तब तक वर्णनकरेंगे जबतककि पृथ्वी नियत रहैगी ६४

राक्षसी धर्ममें नियत होकर मैं इस युद्धमें किसी शूरबीर को नहीं छोडूंगा न भयभीतोंको न हाथ जोड़नेवालों को अर्थात् सबहीको बिनामारे नहींछोडूंगा ६५ संजय बोले कि शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला महाबाहु घटोत्कच इसप्रकारसे कहकर आपकी सेनाको भयभीत करता तुमुलयुद्धमें कर्णके सन्मुख गया ६६ हंसते हुये कर्णने उसअत्यन्त क्रोधयुक्त प्रकाशितमुख प्रकाशमानकेश रखनेवाले आतेहुये घटोत्कचको रोका ६७ हे नरोत्तम युद्धमें गर्जनेवाले उनदोनों राक्षस और कर्णका युद्ध ऐसाहुआ जैसा कि इन्द्र और प्रह्लादका हुआथा ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः १७४ ॥

एकसौपचहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसप्रकार योग्य और कर्ण के मारने के अभिलाषी कर्णके रथपर आतेहुये घटोत्कचको देखकर १ वहां आपका पुत्र दुर्य्योधन दुश्शासनसे यह बचन बोला कि यह राक्षस युद्धमें कर्णके पराक्रमको देखकर २ शीघ्रता से कर्ण के सन्मुख आताहै सो तुम शीघ्रही उस महारथीको रोको बड़ीसेनासे युक्त होकर वहांजावो जहांपर महाबली ३ सूर्य्यकापुत्र कर्ण राक्षस के साथ युद्ध करताहै हे बड़ाई देनेवाले युद्धमें कुशल सेना को साथ लेकर तुम कर्णकी रक्षाकरो ४ नहींतो भूलसे घोर राक्षस कर्णका बिनाश करेगा हे राजा इसीअन्तरमें जटासुरका बेटा पराक्रमी ५ प्रहार कर्त्ताओंमें श्रेष्ठ दुर्य्योधन के पास आकर बोला कि हेदुर्य्योधन तेरी आज्ञापाकर मैं तेरे शत्रु पांडव जोकि प्रसिद्ध और युद्ध में दुर्मदहैं उनको उनके सब साथियों समेत मारना चाहताहूं पूर्व समयमें मेरा पिता जटासुर नाम राक्षस ६। ७ राक्षसोंका मारनेवाला कर्म प्रकट करके पांडवोंके बाणोंसे गिराया गया शत्रुओंके रुधिर और मांसकी पूजासे उसका बदला चाहताहूं हेराजेन्द्र मुझको आज्ञादेनेको योग्यहो ८उसकेपीछे प्रसन्न और प्रीतिमानहोकर

राजा दुर्य्योधन बारंबारबोला कि मैं द्रोणाचार्य्य और कर्ण आदि के साथ शत्रुओंके मारने में पूराहूं ९ तुम मेरी आज्ञासे जाकर उस राक्षस और मनुष्यसे उत्पन्न होनेवाले निर्दयकर्मी घटोत्कच राक्षसको मारो १० सदैव पांडवोंके शुभचिन्तक हाथी घोड़े और रथोंके मारनेवाले और आकाश में बर्त्तमान राक्षस को युद्धमें यमलोकको पहुंचावो ११ उस बड़े शरीरवाले जटासुर के पुत्रने बहुत अच्छा कहकर भीमसेनके पुत्र घटोत्कच को बुलाकर नानाप्रकारके शस्त्रोंसे ढकदिया १२ अकेले घटोत्कचने अलंबुष कर्ण और कठिनता से तरने के योग्य कौरवीसेनाको ऐसे मथडाला जैसे कि बड़ी बायु बादलों को मथतीहै १३ उसके पीछे अलंबुषने राक्षस की माया और बलको देखकर बड़े २ नानारूपवाले बाण समूहों से घटोत्कच को घायल किया १४ महाबली राक्षसने घटोत्कच को बहुत बाणोंसे छेदकर पांडवों की सेनाको बाणों की बर्षासे भगाया १५ हे भरतबंशी उसके पीछे उस राक्षस के हाथ से भगीहुई पांडवीसेना रात्रिमें ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि बायु से आघातित बादल इधर उधर होजातेहैं १६ हे राजा इसीप्रकार घटोत्कच के बाणोंसे घायल आपकीसेनाके लोग हजारों मशालों को छोड़कर रात्रिमें भागे १७ इसकेपीछे क्रोधयुक्त अलंबुषने घटोत्कचको बड़े युद्धमें दश बाणोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि अंकुश से बड़े हाथीको घायल करतेहैं घटोत्कचने उसके रथ सारथीसमेत सब शस्त्रोंको तिलके समान तोड़ा और अत्यन्त भयानक शब्दों से गर्जा इसके पीछे बाणों के समूहों से कर्ण वा दूसरे हजारों कौरव और अलंबुषपर ऐसी वृष्टि करनेलगा जैसे कि मेरु पर्व्वत पर बादल बरसताहै २० तब वो उस राक्षसके हाथ से पीड़ामान कौरवीयसेना इधर उधर पृथक् होगई और परस्पर में पृथक् २ चतुरंगिणी सेनाका मर्द्दनकिया २१ हे महाराज युद्ध में क्रोधयुक्त रथ और सारथीसे रहित अलंबुषने घटोत्कच को मुष्टिकाओं से कठिन घायल किया २२ उसकी मुष्टिकाओं से घायल घटोत्कच

ऐसे कंपित हुआ जैसे भूकम्प होनेमें गुल्मोंके वृक्षोंका रखनेवाला पर्व्वत होता है २३ इसकेपीछे उस क्रोधयुक्त घटोत्कचने परिघ के समान शत्रुओंकी मारनेवाली भुजा की मुष्टिसे अलंबुषको अत्यन्त घायल २४ और मथन करके तीव्रतासे गिराया और इन्द्र ध्वजा के समान रूपवाली दोनों भुजाओं से पृथ्वीपर मर्द्दन किया २५ अलंबुषनेभी युद्धमें घटोत्कच राक्षस को उठाया और गेरकर क्रोध से पृथ्वीपर रगड़ा २६ उन बड़े शरीरवाले गर्जनेवाले घटोत्कच और अलंबुष का कठिनयुद्ध रोमहर्षण करनेवाला हुआ २७ परस्पर मारने के अभिलाषी मायाओं से पूर्ण बड़े पराक्रमी दोनों ऐसे युद्धकरनेलगे जैसे कि इन्द्र और बलिने कियाथा२८ अग्नि और जलके समूह होकर गरुड़ और तक्षकरूप होकर बादल और बड़ी वायुरूप होकर बज्र और पर्व्वत होकर २९ हाथी और शार्द्दूल होकर फिर राहु और सूर्य्य होकर युद्ध करनेलगे इसप्रकार से सैकड़ों माया करनेवाले परस्पर मारनेके इच्छावान् ३० अलंबुष और घटोत्कच अत्यन्त युद्ध करनेवाले हुये परिघ गदाप्रास मुद्गर पट्टिश ३१ मूसल और पर्व्वतों के शिखरों से उन दोनोंने परस्पर घायल किया फिर पदाती रथ सवार बड़े मायावी राक्षसों में श्रेष्ठ वहदोनों घोड़े और हाथियोंके साथ युद्ध करनेलगे हे राजा इसके पीछे घटोत्कच अलंबुष के मारनेकी इच्छा से ३२। ३३ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उछला और बाजपक्षी के समान गिरकर बड़े शरीरवाले राक्षसाधिप अलंबुष को पकड़कर ३४ कुछ ऊंचा उठाकर पृथ्वीपर ऐसा मारा जैसे कि बिष्णुने युद्धमें मधदैत्यको मारा था इसके पीछे बड़ेपराक्रमी घटोत्कच ने अपूर्ब्ब दर्शन खड्ग को उठाकर उस फड़कते और युद्धमें गर्जते रौद्र राक्षस के शरीर से भयानक रूपवाले भयकारी शिरको ३५।३६ काटा हेमहाराज रुधिर लिप्त बालों समेत शत्रुके उस शिरको लेकर ३७ घटोत्कच शीघ्रही दुर्य्योधनके रथकेसमीप गया वहांमन्द मुसकान करता वह राक्षस पास जाकर ३८ भयानक मुख और बालोंसे युक्त शिरको उसके

रथपर डालकर भयानक शब्दों से ऐसे गर्जा जैसे कि वर्षाऋतु में बादल गर्जताहै ३९ और फिर दुर्य्योधन से यह बचन बोला कि यह तेरा बन्धु मरा और तुमने इसका पराक्रम देखा ४० अब तू कर्णकी और अपनी निष्ठाको देखेगा जो अपने धर्म अर्थ काम इन तीनोंको चाहताहै ४१ खाली हाथसे राजा स्त्री और ब्राह्मण को नहीं देखना योग्यहै तू तबतकही अत्यन्त प्रसन्न होकर नियत रहै जबतक कि मैं कर्णको मारूं ४२ हे राजा वह घटोत्कच इसप्रकार से कहकर तीक्ष्णबाणों के समूहोंको फैलाता और कर्णके शिरपर छोड़ता कर्णके सन्मुख गया ४३ हे महाराज फिर युद्धभूमि में उस नर और राक्षसका युद्ध घोररूप महाभयानक आश्चर्य्यकारी हुआ ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि अलंबुषबधोनामशतोपरिपंचसप्ततितमोऽध्यायः १७५ ॥

एकसौछिहत्तरका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्य्यका पुत्र कर्ण और घटोत्कच राक्षस जो रात्रिमें भिड़े वह युद्ध कैसेप्रकार से हुआ १ उसराक्षस का कैसारूप हुआ और उसके घोड़े शस्त्र और रथ कैसे २ थे और उसके घोड़े रथ और ध्वजाओं का प्रमाण कितना २ था उसका कवच कैसाथा और आप कैसाथा हे संजय तुमसे मैं पूछताहूं तुम सावधानीसे उसको बर्णनकरो ३ संजय बोले कि वह घटोत्कच रक्त-नेत्र बड़ाशरीर लालमुख गम्भीर उदरखड़ेरोम शरीरकारंगपीत और पिंगलवर्ण हरितडाढ़ी मूंछ शंखके समान कान और बड़े२नखरखने वालाथा४ कानतकफटाहुआ मुख तीक्ष्ण डाढ़ जिसके प्रत्येकभाग महाभयकारीथेबहुतबड़ीलालजिह्वारक्तहोठलंबीभृकुटीमोटीनाक ५ नीलाशरीर रक्तग्रीवा पर्व्वतकेसमान शरीरवाला बड़ाशरीर शिर और भुजाओंका रखनेवाला महाबली ६ मैला और कठोर शरीर कारूपर्शबिकट बद्धपिंडक स्थूलस्फिग गम्भीरनाभि अत्यन्तस्थूल ७ बड़ामायावी बाजूबन्दआदि हस्त भूषणवाला और जैसे कि पर्व्वत

अग्निमालाको धारण करताहै उसीप्रकार छातीपर निष्ककोधारण करता ८ और उसका मुकुट स्वर्णमयी रत्नोंसे चित्रित अनेकरूपों से शोभित तोरणयुक्त नगरके बहिर्द्वार रूप उज्ज्वल मस्तककेऊपर शोभायमानथा ९ बालसूर्य्यके समान प्रकाशित दोकुंडल स्वर्णमयीमाला बड़ा प्रकाशित कांस्य कवचको धारणकियेथा १० सैकड़ों क्षुद्रघंटिकाओं से शब्दायमान रक्तध्वजा पताकाओंसे शोभित ऋक्षचर्मसे मंडित और अलंकृत अंग और चारसौहाथलम्बा महा विस्तृत बड़ारथ ११ सबउत्तम शस्त्रोंसेयुक्त ध्वजाओंकी मालारखने वाला आठचक्रोंसे शोभित बादलके समान गम्भीर शब्दवाला रथ था१२और मतवाले हाथीके समानलालनेत्र भयकारी पराक्रमीयथेच्छाचारी वर्ण और वेगसेयुक्त सौघोड़े १३ घोर राक्षसको सवार करते थकावटसे रहित बिपुलसटा नामकेशोंसे और स्कन्धोंसेयुक्त बारंबार हींसनेवालेथे उसके सारथीप्रकाशित कुंडलवाले बिरूपाक्ष नाम राक्षसने सूर्य्यकी किरणोंके समान रस्सियोंसे युद्धमें घोड़ोंको पकड़ा १४।१५ वह उसके साथ ऐसा नियतहुआ जैसे कि अरुणके साथ सूर्य्य और बड़ा पर्व्वत बड़े बादलसे चिपटाहुआ होताहै १६ और रथपर सूर्य्यको स्पर्शकरनेवाली बड़ीध्वजा नियतथी रक्त और उत्तम अंगवाला कच्चामांस खानेवाला बड़ा भयानक गिद्ध उस ध्वजामेंनियतथा १७ इन्द्रकेबज्रकी समान शब्दायमान दृढ़प्रत्यंचा वाले और प्रत्यक्षमें बारहहाथलम्बे धनुषको चलायमानकरता १८ रथके अक्षके समान बाणोंसे सबदिशाओंको ढकता उस बीरोंकी नाशकरनेवाली रात्रिमें कर्णके सन्मुखगया उसरथमें नियत धनुषको चलायमान करनेवाले राक्षसके धनुषका शब्द ऐसा सुनागया जैसे कि बज्रका शब्द होताहै १९।२० हे भरतवंशी उससे भयभीत आपकी सबसेना ऐसी अत्यन्त कंपायमानहुई जैसे कि समुद्रकी बड़ी२ लहरें हिलती हैं २१ उस भयके करनेवाले भयानक नेत्र आतेहुये राक्षसकोदेखकरशीघ्रताकरतेहुये मन्दमुसकानवाले कर्णनेरोका २२ उसकेपीछे कर्णबाणोंको छोड़ता उसकेपास ऐसेगया जैसे कि यूथ

का यूथप हाथी श्रेष्ठ हाथीके सन्मुख जाताहै २३ हेराजा उनदोनों कर्ण औरराक्षसका वह युद्ध ऐसाकठिनहुआ जैसे कि इन्द्र औरसम्बर दैत्यकाहुआथा बड़ेबाणोंसे घायल उनदोनोंने बड़े वेगवान् और भयानक शब्दवाले धनुषोंको लेकर परस्पर बाणोंसे ढकदिया २४।२५ इसकेपीछे कानतक खींचकर छोड़ेहुये टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे शरीर के कवचोंको काटकर परस्पररोका २६ जैसे कि दोशार्दूल नखोंसे और दोबड़े हाथीदांतोंसे घायल करतेहैं उसीप्रकार उन दोनोंने रथ शक्ति और विशिखनाम बाणोंसे परस्पर घायलकिया २७ अंगोंके काटनेवाले शायकोंसे छेदनेवाले और बाणरूपी उल्काओंसे भस्म करनेवाले वहदोनों कठिनतासे देखनेके योग्यहुये २८ सब घायल अंग रुधिरसेलिप्त वहदोनों ऐसे शोभितहुये जैसे कि धातुके रखनेवाले और जलके छोड़नेवाले दोपर्व्वत होतेहैं २९ बाणोंकीनोकाओं से घायल अंगपरस्पर छेदनेवाले उपाय कर्त्ता बड़तेजस्वी उनदोनों ने परस्पर कंपायमान नहींकिया ३० हे राजा युद्धभूमिमें प्राणोंके जुआ खेलनेवाले कर्ण और राक्षसका वह जारीहुआ रात्रिका युद्ध बहुत बिलम्बतक समानहुआ ३१ तब तीक्ष्णबाणोंको चढ़ाते और चढेहुओंको छोड़ते उनदोनों के धनुषोंके शब्दोंसे अपने और दूसरे सबलोग भयभीतहुये ३२ हे महराज जब कर्ण घटोत्कचको नाश न करसका इसकेपीछे उस अस्त्रज्ञोंमेंश्रेष्ठ कर्णने दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ३३ पांडवनन्दन घटोत्कचने कर्णके चढ़ायेहुये दिव्यअस्त्रको देखकर महामाया राक्षसीको प्रकटकिया ३४ अर्थात् शूल मुद्गरधारी और पर्व्वतवृक्षोंको हाथमें रखनेवाले बहुतसे घोररूप राक्षसों कीसेनासे संयुक्तहुआ ३५ वह राजालोग उसबड़े धनुषको उठानेवाले उग्र कालदण्डके धारण करनेवाले यमराजको समान आनेवाले घटोत्कचको देखकर पीड़ामानहुये ३६ घटोत्कचके कियेहुये सिंहनादसे हाथियोंने मूत्रको छोड़ा और मनुष्य अत्यन्त पीड़ामान हुये इसकेपीछे चारोंओरसे महाभयकारी पाषाणोंकी वर्षाहुई ३७ अर्द्धरात्रिके समय अधिक बल पराक्रमी होनेवाले राक्षसोंकी सेना

से लोहेकेचक्र भुशुंडीशक्ति और तोमर छोड़ेगये और शूल शतघ्नी और पट्टिशोंके समूहभी गिरतेथे हे राजा उस उग्र और बड़े रुद्रयुद्ध को देखकर ३८।३९ आपकेपुत्र और शूरवीरलोग पीड़ामान होकर भागे वहांपर अस्त्रबलमें प्रशंसनीय महाअहंकारी एककर्णही पीड़ा-माननहींहुआ ४० फिर कर्णने घटोत्कचकी उत्पन्नकोहुई मायाको बाणोंकेद्वारा दूरकिया फिर मायाके नाशहोनेपर घटोत्कचने क्रोध से४१ घोर बाणोंको छोड़ा वह कर्णके शरीरमेंप्रवेश करगये अर्थात् उसबड़े युद्धमेंकर्णको छेदकर रुधिरसे भरेहुये वहबाण ४२ अत्यन्त क्रोधयुक्तसर्पोंके समान पृथ्वीमें घुसगये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्तहस्त-लाघवी प्रतापवान् कर्णने४३ घटोत्कचको उल्लंघकर दश बाणोंसे छेदा कर्णके हाथसे मर्मस्थलों पर अत्यन्त घायल ४४ बहुतपीड़ा-मान घटोत्कचने हजार आरा रखनेवाले बड़े दिव्यनेमी के ऊपर क्षुरोंसे जटित बालसूर्य्य के समान प्रकाशित मणिरत्नोंसे अलंकृत चक्रको हाथमेंलिया ४५ फिर क्रोधयुक्त भीमसेनके पुत्रने मारनेकी इच्छासे कर्णके ऊपरफेंका बड़ेवेगसे घुमाया और कर्णके शायकों से हटायाहुआ ४६ वह चक्र निष्फल होकर पृथ्वीपर ऐसेगिरा जैसे कि प्रारब्धहीनका मनका बिचार गिरताहै फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त घटोत्कचने चक्रको गिरायाहुआ देखकर ४७ कर्णको बाणोंसे ऐसे ढकदियाजैसेकि सूर्य्यको राहुढकलेताहै भयजन्यव्याकुलतासे रहित रुद्र इन्द्रऔर बिष्णुके समान पराक्रमी कर्णने ४८ शीघ्रहीघटोत्कच केरथको बाणोंसे ढकदिया तब क्रोधयुक्त घटोत्कचने स्वर्णमयीबाजू-बन्दवाली गदाको ४९ घुमाकरफेंका वह भीकर्णके बाणोंसे आघा-तितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ी इसकेपीछे बड़ाशरीरधारी घटोत्कच कालमेघके समान गर्जता५० अन्तरिक्षको उछलकर आकाशसेवृक्षों की बर्षाकरनेलगा तबकर्णने उसमायावी भीमसेनके पुत्रकोआकाश केही मध्यमें ५१ बाणोंसे ऐसाछेदा जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से बादलको छेदताहै कर्ण उसके सब घोड़ोंकोमार रथके सौ खंड करके ५२ बर्षा करनेवाले बादलोंकी समान बाणोंकी बर्षा करने

लगा उसके शरीरमें बाणोंसे बिना घायल दो अंगुलकाभी कोई स्थान बाकीनहीं रहा ५३ फिर वह एक मुहूर्त्त होमें ऐसा दिखाई दिया जैसे कि शलल्लों से चिताहुआ श्वावित होता है हमने बाणोंके समूहोंसे गुप्त युद्धमें उसके न घोड़ोंको न रथको न ध्वजा को और न घटोत्कचको देखा फिर कर्णके दिव्यअस्त्र को अपने अस्त्रसे काटता ५४।५५ वह मायावी राक्षस मायायुद्धकेद्वारा कर्णसे लड़ा अर्थात् अपनी मायाकी तीव्रतासे कर्णसे युद्ध करनेवाला हुआ ५६ आकाश में दिखाई न देनेवाले बाणोंके जालगिरे हे भरतवंशी वह बड़ीमायाका जाननेवाला ५७ बड़े शरीरवाला घटोत्कच मायासे मोहित करता भ्रमण करनेलगा उसने भयानक रूप और मुखोंको अशुभकरके ५८ मायासे कर्णके दिव्यअस्त्रों को ग्रसा फिरभी बड़ेशरीरवाला औरयुद्धमें अनेकप्रकारोंसे टूटेअंग ५९ बिना पराक्रम औरसाहसके आकाशसे गिराहुआ दिखाईपड़ा कौरवोंमें श्रेष्ठ लोग उसको मृतक मानकरगर्जे ६० फिर दूसरे नवीन शरीरोंसे सब दिशाओंमें दृष्टिगोचरहुआ तब भी महाबाहु बड़ा शरीर सौ शिर और सौही पेट रखनेवाला दिखाईदिया ६१ फिर मैनाक पर्व्वत के सामन दिखाईपड़ा तदनन्तर वह राक्षस मनुष्य के अंगुष्ठ के समान होकर ६२ समुद्रकीलहरों के समान उठाहुआ तिरछा और ऊंचा बर्त्तमानहुआ और पृथ्वीको फाड़कर फिर जलों में डूबगया ६३ इसके पीछे जलमें तैरताहुआ दूसरेस्थानमेंदिखाई पड़ा और जलसे निकलकर सुबर्णके दो रथोंपर नियतहुआ ६४ वहकवच और कुंडलधारी पृथ्वी आकाश और दिशाओंको मालासे प्राप्त होकर कर्णके रथकेपास जाके घूमनेलगा ६५ हे राजा फिर भयजन्य व्याकुलतासे रहित होकर कर्णसे यह बचन बोला हे सूतकेपुत्र नियतहो अब मेरे हाथसे जीवता कहांजायगा ६६ अब मैं युद्धभूमिमें तेरे युद्धके उत्साहको नाश करूंगा क्रोधसे रक्तनेत्र कठिन पराक्रमी राक्षस यह कहकर ६७ अन्तरिक्षमें उछलकर बड़े बेगसे हंसा और कर्णको ऐसे घायलकिया जैसे कि केशरी गजेन्द्र

कोकरताहै ६८ वह घटोत्कच रथकेअक्षके समान बाणोंसे रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णपर ऐसे बर्षा करनेलगा जैसे कि बादल धाराओंसे बर्षा करताहै ६९ कर्ण ने उस प्रकट होनेवाली बाणवृष्टी को दूरही से काटा हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ इसके अनन्तर कर्णसे पृथक् की हुई मायाको देखकर ७० अन्तर्द्धानहोनेवाले घटोत्कचने फिर मायाको उत्पन्न किया अर्थात् वह ऐसा ऊंचा औरवृक्षोंसे पूर्ण शिखररखने वाला पर्व्वत होगया ७१ जो कि शूल प्रास खड्ग और मूसल रूपी बड़ेजलके झिरनाओंका रखनेवालाथा वह कर्ण उस कज्जल समूहके समान और प्रहारों से भयानक शस्त्रोंके सहनेवाले पर्व्वत को देखकर व्याकुल नहीं हुआ इसके पीछे मन्दमुसकान करते कर्णने दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ७२।७३ फिर अस्त्रसे घायल उस गिरिराजने नाशकोपाया फिर उस उग्ररूपने इन्द्रधनुष रखनेवाला नीलाबादल होकर ७४ पाषाण की वृष्टीसे कर्णको ढकदिया तब सूर्य्यके पुत्र अस्त्रज्ञ कर्णने बायुअस्त्रको धनुषपर चढ़ाकर ७५ उस कालमेघको छिन्नभिन्न किया हे महाराज उसकर्णने बाणजालों से सब दिशाओंको ढककर ७६ घटोत्कचके चलाये हुये अस्त्रको बिनाश किया इसके पीछे भीमसेनके पुत्र महाबलीने युद्धमें अत्यन्त हंसकर ७७ महारथी कर्णके ऊपर बड़ी मायाको प्रकट किया उस रथियोंमें श्रेष्ठ व्याकुलतासे रहित रथकी सवारी से फिर आतेहुये घटोत्कचको जो कि सिंह और शार्दूलके समान मतवाले हाथीके समान पराक्रमी हाथीके सवार रथसवार अश्वसवार और नानाप्रकारके शस्त्रधारी और अनेकभांति के भूषणधारी निर्दयी बहुतसे राक्षसोंसे ७८।७९।८० संयुक्तथा देखकर बड़े धनुषधारी कर्णने युद्धकिया ८१ इसके पीछे घटोत्कचने कर्णको पांचबाणोंसे घायल करके सब राजाओंको डराते और गर्जते हुये अंजलिक नामबाणोंसे बाण समूहों समेत कर्णके हाथमें नियत धनुषको काटा८२।८३ तब कर्णने दृढ़भार सहनेवाले इन्द्र धनुषके समान ऊंचे बड़े धनुषको लेकर बलसे खैंचा ८४ और उस सुनहरीपुंख शत्रुहन्ताआकाशचारी

शायकोंको राक्षसोंकेऊपर फेंका ८५ बड़े छातेवाले राक्षसोंका वह समूह बाणोंसे ऐसा पीड़ामान हुआ जैसे कि जंगली हाथियोंका समूह सिंहसे पीड़ित और व्याकुल होताहै ८६ उस समर्थने बाणों से राक्षसोंको घोड़े सारथी और हाथियों समेत ऐसे भस्म करदिया जैसे कि भगवान् अग्नि प्रलयकाल में जीवधारियोंको भस्म करते हैं ८७ फिर वह सूतनन्दन कर्ण राक्षसोंको मारकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि पूर्व्बसमयमें देवता महेश्वरजी त्रिपुरको भस्मीभूत करके स्वर्गमें शोभितहुयेथे ८८ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र उन हजारों राजा और पांडवोंके मध्यमें कोई भी इस कर्णके देखनेको समर्थ नहीं हुआ ८९ हे राजा महाबली भयानक और पराक्रम युक्त यमराजके समान क्रोधयुक्त राक्षसोंके राजा घटोत्कचके सिवाय कोई भी देखनेको समर्थ नहींहुआ ९० उससमय उस क्रोध युक्तके नेत्रोंसे ऐसे अग्नि उत्पन्नहुई जैसे कि बड़ीमशालोंसे ज्वलित रूप तेलकी बूंदें उत्पन्न होतीहैं हथेलीको हथेलीसे मसलकर दांतों की पंक्तिको काटकर ९१ हाथीके समान पिशाचों केसे मुख रखने वाले खच्चरों से युक्त मायासे रचेहुये रथपर सवार होकर ९२ क्रोधयुक्त घटोत्कच सारथीसे यह बचनबोला कि मुझको कर्णके सन्मुख लेचल उस रथियोंमें श्रेष्ठने घोररूप रथकी सवारीसे ९३ कर्णके साथ फिर द्वै रथयुद्धको किया हे राजा फिर क्रोधयुक्त राक्षस ने उस महाअशनिनामको कर्णके ऊपर फेंका ९४ जोकि आठचक्र रखनेवाले शिवजीसे उत्पन्न दो योजन ऊंची और एकयोजनलम्बी चौड़ी ९५ लोहेकी बनी शूलोंसे ऐसी जटितथी जैसे कि केसरोंसे कदम्बकावृक्ष होताहै कर्णने बड़े धनुषकोरख रथसेउतरकर अशनी को पकड़कर ९६ उलटाकर उसकेऊपर छोड़ा उसको उलटाआता देखकर वह राक्षस रथसे उतरगया तब वह बड़ी प्रकाशित अशनी घोड़े सारथी और ध्वजा समेत रथको धूलमें मिलाकर ९७ पृथ्वी को छेदकर प्रवेश करगई वहां देवताओंने बड़े आश्चर्य्यको पाया फिर सब जीवोंने शीघ्रतासे कर्णको पूजा ९८ जो रथसे उतरकर

देवताकी रचीहुई महाअशनिको पकड़लिया कर्ण युद्धमें इसप्रकार के कर्मको करके फिर रथपर सवारहुआ ९९ हे बड़ाई देनेवाले फिर शत्रुसंतापी कर्णने नाराचोंको छोड़ा हे राजा कर्णने सब जीवधारियोंके मध्यमें दूसरे से असम्भव और करने के अयोग्य कर्मको १०० उस भयानक दर्शनवाले युद्धमेंकियाजैसे कि पर्व्वतधाराओंसे घायल होताहै उसीप्रकार बाणोंसे घायल १०१ गन्धर्व नगरकेरूप वह राक्षस फिर अन्तर्द्धान होगया इसप्रकार उसशत्रुके मारनेवाले राक्षसकीमायासेअस्त्रोंके नाशवान्होनेपर १०२।१०३ व्याकुलतासे रहित कर्ण उस राक्षससे युद्ध करनेलगा हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त महाबली १०४ महारथियों के मारनेवाले घटोत्कच ने अपनेको अनेक रूपवाला किया फिर दिशाओंसे सिंह व्याघ्र और तरक्षव रूपोंसे दौड़ा १०५ अग्निकी समान जिह्वा रखनेवालेसर्प और लोहेके मुखवाले पक्षीभी कर्णकेधनुषसे गिरेहुये विशिखोंकरके कीर्य्यमाण १०६ नागराजके समान कठिनता से देखनेके योग्य राक्षस उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगया राक्षस पिशाच यातुधान १०७ और भयानकमुख बहुतसे बन्दर शृगाल भेड़िये आदिक सबजीव कर्णकेमारनेके इच्छावान् सबओर से सन्मुख दौड़े १०८ तब भयानक बचन रुधिरसेतर घोररूप बहुतसे उठायेहुये शस्त्रोंसे भी उसको भयभीत किया १०९ कर्णने उन्होंके मध्यमें प्रत्येकको बहुत शायकोंसे घायलकिया फिर दिव्यअस्त्रसे उस राक्षसीमायाको दूरकरके ११० टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंसे उसके घोड़ोंको मारा शायकों सेघायल टूटेअंग पृष्ठवाले वह घोड़े १११ उस राक्षसके देखतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े तब नाशहुई मायावाला घटोत्कच सूर्य्यके पुत्र कर्णसे यह बात कहकर कि तेरी मृत्यु उत्पन्न करताहूं अन्तर्द्धान होगया ११२ ॥

इतिश्रीमद्भारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्सप्ततितमोऽध्यायः १७६ ॥

—※—

एकसौसतहत्तरका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसप्रकार उस राक्षस और कर्णके युद्ध वर्त्त
मान होनेपर अलायुध नाम महापराक्रमी राक्षसों का राजा १
भयङ्कर रूपवाले हजारों राक्षसोंसे युक्त बड़ी सेनासमेत आया २
नानाप्रकार के रूप धारण करनेवाले वीरों समेत पूर्वकी शत्रुता
को याद करता हुआ दुर्योधन के पास आया उसको जातिवाला
पराक्रमी ब्राह्मणों का भोजन करनेवाला बक नाम राक्षस मारा
गया ३ तब बड़ा तेजस्वी किर्मीर और हिडम्बभी मारागया सो
बहुत काल से मनमें पुरानी शत्रुताको स्मरण करता ४ और इस
रात्रिके युद्धको जानकर युद्धमें भीमसेन को मारने का अभिलाषी
हाथीके समान मतवाला सर्पके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह
राक्षस ५ युद्धोत्सुक होकर दुर्योधन से यह बचन बोलाकि हेमहा-
राजतुमको बिदितहै कि जिसप्रकार भीमसेनके हाथसे हिडम्ब,
बक और किर्मीर नाम तीनों मेरे बांधव राक्षस मारेगये और
पूर्व्बसमयमें हिडम्बानाम कन्याको हरणकिया फिर६।७ हमको और
अन्य राक्षसोंको तिरस्कार करके दूसरीबात क्या कहैं हे राजा
मैं आप उस हिडम्बाके पुत्र घटोत्कचको हाथी घोड़े रथ और मंत्रि-
यों समेत मारने को आयाहूं अब मैं कुन्तीके सब पुत्र जिनमें अग्र-
गामी बासुदेवजीहैं ८।९ उनको मारकर उनके सबपीछे चलनेवालों
को भी भक्षण करूंगा सब सेनाको रोक दो हम पांडवों से लड़ेंगे
१० उसके इस बचनको सुनकर प्रसन्न चित्तभाइयों समेत दुर्यो-
धन उसको अंगीकार करके यह बचन बोला ११ कि हम तुझको
आगे करके सब सेना समेत शत्रुओंसे युद्ध करेंगे शत्रुताकी समा-
प्तीमें प्रवृत्त चित्त मेरे सेनाके लोग नियत नहीं होंगे १२ ऐसाही
होय ऐसा राजासे कहकर वह राक्षसों में श्रेष्ठ अलायुध शीघ्रही
मनुष्योंके भक्षण करनेवाले राक्षसों को साथ में लेकर घटोत्कच
से लड़नेको १३ उसप्रकार के प्रकाशित अग्निके समान तेजस्वी

रथकी सवारी से घटोत्कच के सन्मुख गया हे राजा जैसी सवारी से कि घटोत्कच युद्धभूमि में बर्त्तमान था १४ वैसाही उसका भी बड़ारथ बड़े शब्दवाला बहुतसी तोरणोंसे चित्रित रीछके चर्मसे अलंकृत अंग और चारसौ हाथका लम्बाथा १५ उसके घोड़े भी शीघ्रगामी हाथीके समान शरीर गधेके समान शब्दवाले मांस रुधिरके भोजन करनेवाले बड़े शरीरोंसे युक्त संख्यामेंसौ रथमें बर्त्तमान थे १६ उसके रथका शब्दबड़ेबादलके समान और बड़ा धनुष दृढ़प्रत्यंचावाला सुबर्णसे जटित था १७ बाणभीउसके रथके अक्षकी समान सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णधार थे वह बीर सबप्रकार से उस बीर महाबाहु घटोत्कचकेही समान था १८ उसकी भी ध्वजा अग्नि सूर्य्यके समान शृगालोंके समूहों से रक्षितथी वह भी घटोत्कचके रूप से अधिक शोभायमान महाविस्तृत प्रकाशमान मुखवाला था १९ प्रकाशमान बाजू मुकुट और मालाधारी वेष्टन युक्त खड्ग गदा भुशुंडी मूसल हल और धनुष का रखनेवाला होकरहाथीके समान शरीरवालाथा२० तबवह उसअग्नि के समान प्रकाशित अपने रथकी सवारीसे उस पांडवी सेना को भगातायुद्धमें बर्त्तमान होकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे किबिजलियोंकी माला रखनेवाला बादल अन्तरिक्षमें शोभित होताहै २१ हे राजा सब-में अत्यन्त श्रेष्ठ महाबली कवचधारी ढाल बांधेहुये प्रसन्न चित्त वह शूरबीर भी सब ओरसे उसके साथ युद्ध करने लगे २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तसप्ततितमोऽध्यायः १७७ ॥

एकसौअठहतरका अध्याय॥

संजयबोले कि सब कौरवों ने उस भयानक कर्मा युद्ध में उस आते हुये राक्षसको देखकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्तकी १ इसीप्रकार दुर्योधन जिनमें मुख्य है वह आपके पुत्र नौकासे रहितके समान फिर नौकाको पाकर समुद्रको तरने के अभिलाषी हुये २ अपने को द्वितीय जन्म पानेवाला मानकर उन पुरुषोत्तमों ने राक्षसों के

राजा अलायुध को बड़ी श्लाघाओंके बचनों से पूजा ३ उस बड़े भयानक बुद्धिसे बाहर युद्धके वर्त्तमान होनेपर कर्ण और राक्षसके रात्रिके भयकारी युद्धको ४ आश्चर्य्यकरनेवाले पांचालोंने अन्यराजाओंसमेत देखा और इसीप्रकार आपके अश्वत्थामा द्रोणाचार्य्यकृपाचार्य्य आदिक शूरबीर भी युद्धभूमिमें उस घटोत्कचकेकर्म को देख कर पुकारे और भयसे महाव्याकुलहुये ५।६ हे महाराज आपकी सबसेनाकेलोगव्याकुलहाहाकार रूप औरअचेतहोकरकर्णकेजीवन में निराशावान्हुये ७फिर दुर्योधन बड़ी पीड़ा पानेवाले कर्णकोदेख कर राक्षसोंके राजा अलायुधको बुलाकर यह बचन बोला ८ कि यह सूर्य्यकापुत्रकर्ण हिडम्बाकेपुत्र घटोत्कचकेसाथ भिड़ाहुआ युद्धमें उस बड़े कर्मको करताहै जोकि इसके योग्यहै ९ घटोत्कचके हाथ से मारेहुये और नानाप्रकार के शस्त्रोंसे घायल शूर राजाओं को ऐसे देखो जैसे कि हाथीसे उखाड़ेहुये वृक्षोंको देखते हैं मैंने युद्धमें राजाओंके मध्यमें तेरे बिचारसे तेराही भाग बिचार किया है तुम पराक्रमकरके उसको मारो १०।११ हेशत्रुबिजयी अलायुध यहपापी घटोत्कच मायाके बलमें आश्रित होकर सूर्य्यके पुत्र कर्णको सब के आगे पराजित करताहै १२ राजाके इसबचन को सुनकर वह भयभीत पराक्रमी महाबाहु राक्षस उसके बचनको स्वीकारकरके घटोत्कचके सन्मुख गया १३ हे प्रभु उसके पीछे भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने भी कर्णको छोड़कर सन्मुख आते हुये शत्रुको बाणों से मर्द्दन किया १४ फिर उन दोनों राक्षसाधिपों का ऐसा उत्तम भयकारी युद्ध हुआ जैसे कि हथिनीके लिये दो मतवाले हाथियों का युद्ध होताहै १५ राक्षस से छुटाहुआ रथियों में श्रेष्ठ कर्ण भी सूर्य्यके समान प्रकाशित रथकी सवारी से भीमसेन के सन्मुख गया १६ जैसे कि सिंह बैलको अपने बशीभूत करताहै उसीप्रकार अलायुधसे ग्रसे हुये घटोत्कच को देखकर उस आतेहुये कर्णको उल्लंघन करके १७ प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीमसेन सूर्य्यके समान प्रकाशित रथकी सवारी से बाण समूहोंको फेंकता अला-

युधके रथके समीप गया १८ हे प्रभु तब उस अलायुधने उस आतेहुये को देखके घटोत्कचको छोड़कर भीमसेनको बुलाया १६ फिर राक्षसों के नाश करनेवाले भीमसेन ने अकस्मात् सन्मुख जाकर उस राक्षसोंके राजा को उसके सब साथी और सेना समेत बाणोंकी बर्षासे ढकदिया २० हे शत्रुबिजयी राजा उसीप्रकार अलायुध भी साफ और सीधे चलनेवाले बाणोंसे भीमसेन के ऊपर बारंबार बर्षा करनेलगा २१ उसीप्रकार नानाप्रकार के प्रहार करनेवाले भयानक रूप और आपके पुत्रोंकी बिजय चाहने वाले वह सब राक्षसभी भीमसेन के सन्मुखगये २२ बहुत बाणों से घायल उस महाबली भीमसेन ने पांच २ तीक्ष्णबाणों से उन सब को छेदा २३ भीमसेन के हाथ से घायल वह निर्दय बुद्धी राक्षस कठिन शब्दोंसे गर्जना करतेहुये दशोंदिशाओंको भागे २४ भीमसेनसे भयभीत उस बड़ीसेनाको देखकर राक्षसने बड़ेवेग से सन्मुख जाकर बाणोंसे भीमसेनको ढकदिया २५ भीमसेनने फिर उसराक्षसको तीक्ष्ण नोकवाले बाणोंसे घायलकिया फिर अलायुध ने उन भीमसेनके चलायेहुये कितनेही विशिखोंको युद्धमेंकाटा २६ और युद्धमें बड़ी शीघ्रतासेही कितनोंहीको पकड़लिया भयानक पराक्रमी भीमसेनने उस राक्षसोंके राजाको देखकर २७ बज्रके समान गिरनेवालीगदाको फेंका उसज्वालायुक्त वेगसेआतीहुईगदाकोउसने गदासेही घातितकिया और वहगदाभीमसेनकेही ओरगई उसकुन्ती केपुत्र भीमसेनने राक्षसाधिपको बाणोंकी बर्षासे ढकदिया २८।२६ राक्षसने तीक्ष्णबाणोंसे उसके उनबाणोंको भी निष्फलकिया रात्रिमें भयानकरूप सब राक्षसोंनेभी ३० अपनेराजाकी आज्ञासे रथ और हाथियोंको मारा राक्षसोंसे अत्यन्त पीड़ामान पांचाल सृंजी घोड़े और हाथियोंने ३१ वहां शान्तीको नहींपाया फिर उस महाघोर बड़ेभारी युद्धको देखकर ३२ कमललोचन श्रीकृष्णजी अर्जुन से यह बचन बोले कि राक्षसों के राजाके आधीन हुये भीमसेन को देखो ३३ हे पांडव अर्जुन तुमइसके पीछे चलो बिचार न करो धृष्ट-

द्युम्न शिखंडी युधामन्यु उत्तमौजस ३४ और द्रौपदी के पुत्र सब महारथी यह सब साथ होकर कर्णके सन्मुखजावो पराक्रमी सात्यकी नकुल औरसहदेव ३५ तेरी आज्ञासे अन्य राक्षसोंको मारें और हे महाबाहु नरोत्तम अर्जुन तुमभी इससेना को जिनके कि अग्रगामी द्रोणाचार्य्य हैं हटावो ३६ बड़ाभय उत्पन्न हुआ इसप्रकार श्रीकृष्णजीके कहनेपर आज्ञापाये हुये महारथी ३७युद्धमें सूर्य्य के पुत्र कर्ण और उन राक्षसों के सन्मुख गये इसके पीछे प्रतापवान् राक्षसाधिपने कानतक खैंचेहुये और बिषैले सर्पकी समान बाणों से ३८ भीमसेन के धनुष को काटकर उसके सारथी समेत घोड़ों को भीमसेन के देखते हुये युद्धमें तीक्ष्ण बाणोंसे मारा ३९ फिर मृतक घोड़े और सारथीवाले भीमसेनने रथसे उतरकर ४० गर्जना करके महाभारी घोर गदाको उसके ऊपर छोड़ा उस भयकारी शब्द वाली आती हुई बड़ी गदाको ४१ उस घोर राक्षस ने गदाही से ताड़ित किया और गर्जना करी राक्षसाधिपके उस घोर और भयकारी कर्मको देखकर ४२ प्रसन्न चित्त भीमसेन ने शीघ्रही गदाको पकड़ा तब गदाके आघातों से पृथ्वी को अत्यन्त कंपानेवाले उन नर और राक्षस का महाघोर कठिन युद्ध हुआ फिर गदाको त्याग करनेवाले उन दोनों ने परस्पर सन्मुख होकर ४३।४४ ब्रज्र के समान शब्दायमान घूंसों से परस्पर घायल किया इसके पीछे उन दोनोंने महा क्रोधित होकर इन आगे लिखी हुई रथचक्र, युग, अक्ष और अधिष्ठान आदि समीप बर्त्तमान वस्तुओंसे परस्पर सन्मुख होकर घायल किया फिर रुधिरको डालते हुये उन दोनोंने सन्मुख होकर ४६ मतवाले हाथियोंके समान बारंबार परस्पर खैंचा पांडवोंकी वृद्धिके चाहनेवाले इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजीने उसको देखा ४७ उन्होंने भीमसेन की रक्षाके निमित्त घटोत्कच को प्रेरणा करी ४८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतीपरिअष्टसप्ततितमोऽध्यायः १७८॥

—※—

एकसौउनासीका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा युद्धमें राक्षस से ग्रसेहुये भीमसनको समीपसे देखकर श्रीकृष्णजी घटोत्कच से यह बचन बोले १ हे महाबाहु हे बड़े तेजस्वी सब सेनाके और अपने देखते युद्धमें राक्षससे ग्रसेहुये भीमसेनको देखो २ हे महाबाहु तुम कर्णको छोड़कर राक्षसों के राजा अलायुधको मारो इसके पीछे कर्णको मारोगे ३ वह पराक्रमी घटोत्कच बासुदेवजीके बचन को सुनकर कर्णको त्यागकर बकासुरकेभाई राक्षसाधिपसे युद्ध करनेलगा ४ हे भरतबंशी उन दोनों अलायुध और घटोत्कच राक्षसों का युद्ध रात्रिमें अत्यन्त कठिन हुआ ५ अलायुधके शूरबीर राक्षस जोकि भयानक दर्शनशूर धनुषधारी बेगसे आयेथे उनको ६ शस्त्रोंके उठाने वाले अत्यन्तक्रोधयुक्तमहारथी सात्यकी नकुल औरसहदेवनेतीक्ष्ण धारवाले बाणों से छेदा ७ और सबओरसे बाणोंको छोड़ते मुकुटधारी अर्जुनने सब उत्तम २ क्षत्रियोंको युद्धमेंसे हटाया ८ हे राजा कर्णने युद्धमें धृष्टद्युम्न और शिखण्डीआदिकपांचालोंके महारथियों को अन्य राजाओं समेत भगाया ९ भयानक पराक्रमी भीमसेन उन घायलोंको देखकर युद्धमें बिशिखनामबाणोंको छोड़ता शीघ्रही कर्ण के सन्मुख गया १० उसके पीछे वह महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी भी राक्षसोंको मारकर वहां आये जाहांपर कि कर्णथा ११ उन्होंने कर्णसे युद्धकिया और पांचालोंने द्रोणाचार्य्य से फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अलायुधने शत्रुबिजयी घटोत्कच को बहुत बड़ी परिघसे मस्तकपर घायल किया १२ फिर उस पराक्रमी महाबली घटोत्कचने उसप्रहार से थोड़ी मूर्च्छा में होकर अपने शरीर को नियत किया १३ और प्रकाशित अग्निके समान सौ घंटे रखनेवाली सुवर्ण जटित अलंकृत गदाको युद्धमें उसके ऊपर फेंका १४ भयानककर्मी राक्षसके हाथसे छुटीहुई बड़े शब्द वाली उस गदाने बेगसे उसके रथ सारथी और घोड़ों को चूर्ण

किया १५ फिर वह राक्षसी मायामें न्यित होकर उस मृतक सारथी घोड़े और टूटे अक्ष ध्वजा चक्रवाले रथसे शीघ्रही उछला१६ और मायामें प्रवृत्त होकर बहुत रुधिर बरसाया तब आकश बिजलीसे प्रकाशित और सघन बादलोंसे पूर्ण होगया १७ इसके अनन्तर बिजली समेत बज्र का गिरना और बिजलीके साथगर्जना उत्पन्न होना और बड़ा चट चटाकार शब्द हुआ १८ हिडम्बाके पुत्र घटोत्कचने उस राक्षसकी प्रबल मायाको देखकर पृथ्वी से आकाश में उछलकर उसमायाको मायाही से नाश किया १९ उसमायावी राक्षसने अपनी मायाको मायाही से नाशहुआ देखकर अत्यन्त कठोर पाषाणोंकी बर्षाको घटोत्कचके ऊपर किया २० उस पराक्रमीने उस घोर पाषाण बर्षाको बर्षाही से नाश किया वह आश्चर्य्यसाहुआ २१ इसके पीछे नानाप्रकारके शस्त्रोंसे एकने दूसरों पर बर्षाकरी लोहेकी परिघ,शूल, गदा, मूसल, मुद्गर २२ पिनाक, करबाल, तोमर,प्रास,कंपन,तीक्ष्णधार नाराच,भल्ल, चक्र, फरसे, अयोगुढ़, भिण्डिपाल, गोशीर्ष, उलूखल २३ और उखाड़ेहुये बड़ी शाखावाले नानावृक्ष शमी,पीलु,कदंब, चम्पक २४ अंगुद, बदरी, कोबिदार, फूलेहुये पलाश, आरिमेद, प्लक्ष, न्यक्रोध, पिप्पल इन बड़े २ वृक्षों से भी युद्धमें परस्पर घायलकिया और नानाप्रकार की धातुओं से चितेहुये बड़े२ शिखरों से परस्पर घायल किया २५।२६ हे राजाउनके ऐसे महाशब्दहुये जैसेकि टूटनेवालेबज्रों के शब्द होतेहैं उसघटोत्कच और अलायुधका ऐसा घोरयुद्ध हुआ २७ जैसे कि पूर्व्वसमयमें बानरों के महाराजबालि और सुग्रीवका युद्ध हुआथा वह दोनों नानाप्रकार के घोरशस्त्र और बिशिखों से युद्ध करके तीक्ष्ण खड्गोंको लेकर परस्पर सन्मुख हुये २८ उनबड़े बलवान् और बड़े शरीरवालोंने परस्परमें सन्मुख जाकर भुजाओंसे शिरकेबालोंको पकड़ा २९ हे राजा उन ऊष्मा भरे शरीर सेदोनोंने पसीना और रुधिरको ऐसे गिराया जैसे कि कठिन बर्षाकरने वाले दो बादल बर्षा करतेहैं ३० इसके पीछे घटोत्कच ने बेगसे गेरकर

उसराक्षसको अत्यन्त घुमाकर बलसे पृथ्वीपर पटककर उसके बड़े शिरको काटा ३१ तबवह बड़ा पराक्रमी कुंडलोंसे अलंकृत उसके शिरको लेकर कठिन शब्दको गर्जा ३२ पांचालदेशी और पांडव उस शत्रुबिजयी घटोत्कचसे बकासुरके जातिवाले बडे शरीरवाले राक्षस को मराहुआ देखकर सिंहनादोंको गर्जे ३३ इसके पीछेयुद्ध में राक्षसके मरनेपर पांडवी शूरबीरोंने हजारों भेरी और अयुतो शंखोंको बजाया उन्होंको वह रात्रि चारोंओरसे दीपमाला रखने वाली अत्यन्त प्रकाशमान बिजयको देनेवाली महा शोभायमानहुई ३४।३५ फिर महाबली घटोत्कचने निर्जीवअलायुधके शिरकोदुर्य्योधनके सन्मुख फेंका ३६ हे भरतबंशी राजा दुर्योधन अलायुधको मराहुआ देखकरसेनासमेत अत्यन्त व्याकुलहुआ ३७ बड़ीशत्रुता को स्मरण करके उस राक्षस ने अपने आप आकर उसके साथ प्रतिज्ञाकरीथी कि मैं भीमसेन को मारूंगा ३८ और राजा दुर्य्योधन ने यह मानाथा कि इसके हाथसे अवश्य भीमसेन मारने के योग्य है और भाइयों के जीवनको भी बहुत कालतक माना ३९ उसने भीमसेनके पुत्रके हाथसे निश्चय मराहुआ देखकर भीमसेन की प्रतिज्ञाको पूर्णहोना माना ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोनाशीतितमोऽध्यायः १७९ ॥

एकसौअस्सीका अध्याय॥

संजय बोले कि अत्यन्त प्रसन्न मन घटोत्कच अलायुध राक्षस को मारकर आपकी सेनाके समक्षमें नानाप्रकार के शब्दोंको गर्जा १ हे महाराज उसके उस कठोर शब्दको जोकि हाथियोंको भी कंपायमान करनेवाला था सुनकर आपके शूरबीरों को बड़ा कठिन भय उत्पन्नहुआ २ महाबाहु कर्ण अलायुधसे भिड़ेहुये महाबली घटोत्कचको देखकर पांचालोंके सन्मुख गया ३ और दृढ़ टेढ़े पर्व्ववाले कानतक खैंचेहुये दशबाणोंसे धृष्टद्युम्न और शिखण्डी को छेदा ४ इसकेपीछे नाराचनाम उत्तमबाणोंसे महारथी सात्यकी युधामन्यु

और उत्तमौजसको कंपायमान किया ५ हे राजा युद्धमें उनसब धनुषधारियोंके दाहिने और बायें धनुषमंडल दिखाईदिये ६ रात्रिमें उन्होंको प्रत्यंचा तल और रथनेमियोंके शब्द ऐसेकठोरहुये जैसे कि वर्षाऋतुमें बादलोंके शब्द होतेहैं ७ उससमय जीवाधनुष और रथकीनेमियोंके शब्दरूप गर्जनायुक्तबादल धनुषरूपबिद्युन्मण्डल पताका रूप सुन्दर रंगवाला समूह बाणसमूहरूपी बर्षाका बरसने वाला युद्धरूपी बादल प्रकटहुआ ८हे महाराज शत्रुओंकेसमूहोंके मर्दन करनेवाले बड़े पर्व्वतके समान पराक्रमी कर्णने उस अपूर्व्व पर्वतके समान अकंपित होकर वर्षाका नाशकिया ९ इसके पीछे आपके पुत्रकी वृद्धिमें प्रवृत्त महात्मा कर्णने युद्धमें बज्रपातकेसमान सुनहरी और अद्भुत पुंख रखनेवाले बड़े तीक्ष्ण बाणोंसे शत्रुओं को घायलकिया १० कर्णके हाथसे कितनेही टूटीध्वजा कितनेही बाणोंसे पीड़ित घायल शरीरवाले और कितनेही सारथी और घोड़ोंसेरहित होगये ११ इसकेपीछे युद्धमें कल्याणको न पानेवाले बहलोग युधिष्ठिरकी सेनामें चलेगये घटोत्कचने उनकोछिन्नभिन्न और मुखफेरने वाला देखकर अत्यन्त क्रोधकिया १२ अर्थात् उस सुवर्ण और रत्नोंसे जटित उत्तम रथपर सवार होकर सिंहके समान गर्जा और सूर्य्यके पुत्र कर्णको सन्मुख होकर बज्रकी समान बाणोंसे घायल किया १३ उन दोनोंने करणी, नाराच, शिलीमुख, नालीक, दंडासन, वत्सदन्त, बराहकर्ण, विपाट, शृंग और क्षुरप्रकी वर्षाओंसे आकाश को शब्दायमानकिया १४ बाणोंकी बर्षासेपूर्ण और तिरछे चलने वाले सुनहरी पुंख ज्वालारूप प्रकाशवाले अपूर्व्व फूल रखनेवाले बाणोंसे पूर्ण अन्तरिक्ष ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि सृष्टिकेजीवोंसे होताहै १५ उनदोनों सावधान और अनुपम प्रभाववालोंने उत्तम अस्त्रोंसे परस्पर घायलकिया उन दोनों उत्तम बीरोंकी मुख्यताको उसयुद्धमें किसीनेभी नहींदेखा १६ उनसूर्य्यके और भीमसेनके पुत्रों का युद्ध अत्यन्त अपूर्व्व अनुपम व्याकुलता पूर्व्वक शस्त्रों के गिरने का ऐसाहुआ जैसे कि स्वर्गमेंराहु और सूर्य्यकायुद्धकठिन गरमीसे

संयुक्तहोताहै १७ संजयबोले कहेराजा जब घटोत्कचको कर्णनहीं मारसका तब उसमहाअस्त्रज्ञने उग्रअस्त्रको प्रकटकिया १८ उसअस्त्रसे उसके रथसारथी और घोड़ोंको मारा रथसेरहित घटोत्कचभी शीघ्र अन्तर्द्धानहुआ १९ धृतराष्ट्रबोले हे संजय उसकठोरकर्मी शूर राक्षस के शीघ्र अन्तर्द्धान होनेपर मेरे शूरोंने जो २ बिचारकिये उनकोमुझ सेकहो २० संजय बोले कि सब कौरव और कर्ण अन्तर्द्धान होनेवाले राक्षसोंके राजाकोजानकर पुकारे कि यह कठिनशूरबीर राक्षस दृष्टि से गुप्त होकर युद्धमेंकैसे कर्णको नहींमारेगा २१ इसकेपीछे तीक्ष्ण और अद्भुत अस्त्रोंसेलड़नेवाले कर्णने बाणजालोंसे सब दिशाओंको ढकदिया शायकोंसे अन्तरिक्षके अन्धकाररूप होनेपर कोई जीव-मात्र दिखाई नहींपड़ा २२ बाणोंसे सब अन्तरिक्षको ढकता सूर्य्यका पुत्र कर्ण हस्तलाघवतासे बाणोंको लेताचढ़ाता और हाथोंके अग्र-भागसे तरकसोंको स्पर्श करता हुआ दिखाई नहींपड़ा २३ इसकेपीछे हमने अन्तरिक्ष मेंराक्षसकी रचीहुई भयानक घोरकठिन और रक्त बादलकेरूपप्रकाशित ज्वलित अग्निके समानउग्रमायाको देखा २४ हे कौरवेन्द्रउसमें बिजलियां और ज्वलितउल्काभी दिखाईपड़ीं २५ इसके पीछे सुनहरी पुंखबाण, शक्ति, दुधारे खड्ग, प्रास, मूसल आदिशस्त्र और तेलसेसाफफरसे, खड्ग, प्रकाशितनोककेतोमर, और पट्टिश यहसब शस्त्रगिरे २६ प्रकाशित अथवा शोभायमान परिघ लोहेसे मढ़ीहुई गदा, अपूर्व तीक्ष्णधार शूल, सुवर्णवस्त्र से मढ़ीहुई भारीगदा और शतघ्नी चारोंओरसे प्रकटहुईं २७ जहांतहां बड़ी शिला और बिजलियों समेत हजारों बज्र और हजारोंछुरे रखने वाले चक्र जो कि अग्निके समान प्रकाशितथे प्रकटहुये २८ कर्ण अपने बाणोंके समूहोंसे उस शक्ति, पाषाण, फरसा, प्रास, खड्ग, बज्र, बिजली और मुद्गरोंकी गिरनेवाली वर्षाको जो कि ज्वलित रूप बहुतबड़ीथी नाशकरनेको समर्थ नहींहुआ २९ बाणोंसेघायल गिरतेहुये घोड़े बज्रसे घायल हाथी और शिलाओंसे घातित गिरते हुये रथोंके बड़े शब्दहुये ३० अत्यन्त भयानक और नानाप्रकार

के शस्त्रों के संपातसे दुर्य्योधन की वह सेना घटोत्कचके हाथसे चारोंओरको घायल हुई और महापीड़ित होकर चक्र के समान घूमती दिखाई पड़ी ३१ हाहाकारकरनेवालेचारोंओरसे घूमनेवाले गुप्तहोनेवाले व्याकुलरूप हुये तब वह पुरुषों में बड़ेबीर अपनी प्रतिष्ठासे मुख फेरनेवाले नहींहुये ३२ उस भयानकरूप बड़घोर बड़े शस्त्रोंसे गिरनेवाली वर्षाको और सेनाके समूहोंको गिराया हुआ देखकर आपके पुत्रोंने बड़ा भयमाना ३३ राजा दुर्योधनके शूरबीर अग्निकेसमान प्रकाशित जिह्वा और भयानक शब्दवाले सैकड़ों शृगालोंको और गर्जनेवाले राक्षसोंके समूहोंकोभी देखकर पीड़ामान हुये ३४ और अग्निके समान प्रकाशित जिह्वा तीक्ष्ण धार भयकारी पर्व्वताकार शरीरवाले आकाशमें वर्त्तमान हाथमें शक्ति रखनेवाले राक्षसोंने ऐसे बाणोंकी वर्षाकरी जैसे कि बड़ीउग्र वर्षाको बादलकरताहै ३५ उन बाणशक्ति, शूल, उग्रगदा, प्रकाशित परिघ, बज्र, पिनाक, अशनिप्रहार शतघ्नी और चक्रोंसे मथेहुये वह लोग गिरपड़े ३६ उन शूल, भुशुंडी, अगुड, लोहेकीशतघ्नी, और चादरसे मढ़ेहुये बड़े शस्त्रोंने आपकेपुत्रकोसेनाकोढकदिया उससे महा भयकारी मूर्च्छा जारीहुई ३७ वहां गिरीहुई आंत और टूटेअंगवाले शूर कटेहुये शिरों समेत सोगये घोड़े हाथी मारेगये और रथशिलाओं से चूर्ण होगये ३८ वह भयानकरूप राक्षस इसप्रकार पृथ्वी पर शस्त्रोंकी बड़ी वर्षाकरनेवालेहुये वहां घटोत्कचकी उत्पन्नकोहुई मायाने न प्रार्थना करनेवालेको छोड़ा और न भयभीतोंको छोड़ा ३९ कुरवीरोंकी उस घोरपीड़ा और कालसे उत्सृष्ट क्षत्रियोंके विनाश में वह सब कौरव लोग पुकारतेहुये अकस्मात् छिन्न भिन्न होकर भागे ४० हे कौरव लोगो भागो यह घटोत्कच नहींहै यह इन्द्रसमेत देवता लोग पांडवोंके निमित्त हमको मारेडालते हैं उस युद्धरूपीसमुद्रमें इसरीतिसे डूबनेवाले उन भरतवंशियोंका आश्रयरूप द्वीप कर्ण हुआ ४१ उस कठिन रोने पीटनेके वर्त्तमान होने वा कौरवों की सेनाको छिन्न भिन्न होकर गुप्तहोने और सेनाओंके भाग प्रकट

होनेपर न कौरव जानेगये न दूसरे ४२ हे राजा बेमर्य्याद और घोर रूप सेनाके भागनेपर सबदिशाओंको खाली देखनेवालोंने उसबाणोंकी वर्षाके मझानेवाले केवले अकेले कर्णहीकोदेखा उसकेपीछे राक्षसकी दिव्यमायासे युद्धकरते लज्जावान् कर्णने बाणोंसे अन्तरिक्षको ढकदिया और कठिनतासे करनेके योग्य उत्तम कर्मको करताहुआ सूतकापुत्रयुद्धमें मोहितनहींहुआ ४३।४४ हे राजा उसके पीछे युद्धमें उस चैतन्यताकी प्रशंसाकरते और राक्षसकी बिजयको देखते भयभीतहुये सब वाह्लीकदेशी और सिंधुदेशियोंने कर्णको देखा उसकेछोड़े हुये चक्रसे संयुक्त शतघ्नीने एकसाथ चारोंघोड़ोंको मारा तबवह घोड़े दांत आंख और जिह्वासे रहित मृतक होकर घुटनोंके बलसे पृथ्वीपर गिरपड़े ४५।४६ उसकेपीछे मृतकघोड़ेवाले रथसे उतरंकर भागनेवाले घोड़ोंमें जाकर नियत हुआ और मायासे दिव्यअस्त्रके नाश होनेपर मोहित नहींहुआ कालको बर्त्तमान हुआ जाना तदनन्तर सब कौरव घोर रूप माया को देखकर कर्णसे बोले कि हे कर्ण अब शीघ्रही उस शक्तीसे राक्षस को मारो नहीं तो यह कौरव और धृतराष्ट्र के पुत्र नाश हुये जातेहैं ४७।४८ भीमसेन और अर्जुन हमारा क्या करसक्ते हैं तुम इस तपानेवाले पापी को मारो हमलोगों में से जो मनुष्य घोररूप युद्धसे छूटेंगे वह हमारे बीचमें सेना रखनेवाले पांडवों से युद्ध करेंगे ४९ इसहेतुसे तुम उस इन्द्रकी घोरशक्तिके द्वारा इस राक्षस को मारो हे कर्ण इन्द्रके समान सब कौरव शूर बीरों समेत रात्रिके युद्धमेंबिनाश को नपावें ५० रात्रिके समय राक्षस के न मरने पर सेनाको भयभीत देखके और कौरवोंके बड़े शब्दोंको सुनकर कर्णने शक्ति छोड़ने का बिचार किया ५१ उस क्रोधयुक्त सिंहके समान असह्यने युद्धमें अपने ऊपर प्रहारों को नहीं सहा और उसके मारने के अभिलाषी ने असह्य बैजयन्ती नाम उत्तम शक्तीको हाथमें लिया ५२ हे राजा जो वह प्रतिष्ठावान् शक्ती युद्धभूमि में अर्जुन के मारने के निमित्त बहुत बर्षोंतक रक्खी और इन्द्रने कुंडलोंके लेनेके लिये जिस श्रेष्ठ

शक्तिको कर्णकोदोथी ५३ कर्णने उस चाटनेवाली अत्यन्त प्रकाश-मान पाशोंसे युक्त यमराजकी एकरात्रि और मृत्युके समान उल्का के समान प्रकाशित शक्तीको राक्षस के लिये भेजा ५४ हे राजा उस उत्तम और शत्रुके शरीर को नाश करनेवाली भुजापर नियत ज्वलित रूप अग्निको देखकर भयसे पीड़ित राक्षस शरीर को बिन्ध्याचल पर्व्वत के समान बड़ा करके भागा ५५ हे महाराज कर्णकी भुजाके मध्यमें शक्तिको देखकर अन्तरिक्षमें सब जीवों ने शब्द किया कठिन बायुचलीं और परस्पर बायुके संघट्टनसे बिज-ली भी पृथ्वीपर गिरी ५६ वह ज्वलित रूप शक्ति उस माया को भस्म करके राक्षस के कठिन हृदय को बेधकर प्रकाश करती हुई ऊपर को गई और रात्रिके समय नक्षत्रों के लोकोंमें पहुंची ५७ और वह राक्षस नानाप्रकार के दिव्य नाग मनुष्यों के अस्त्रों के समूहोंसे बिदीर्ण नानाप्रकार के भयानक शब्दों को गर्जना करता हुआ इन्द्र की शक्ती के द्वारा अपने प्यारे प्राणोंका त्यागने वाला हुआ ५८ उसने शत्रुके नाशके लिये उस और दूसरे अपूर्व अद्भुत कर्मको किया उससमय पर शक्तिसे भिदेहुये मर्मस्थल पर्व्वत और बादल की सूरत होकर वह राक्षस शोभायमान हुआ ५९ उसके पीछे वह राक्षसाधिप घटोत्कच बड़े रूपमें नियत होकर औंधाशिर खड़ा शरीर जिह्वा बिना निर्जीव और कटाशरीर होकर अन्तरिक्षसे पृथ्वीपर गिरा ६० अर्थात् वह भयानककर्मी भीमसेन का पुत्र उस रूप को भयानक रूप करके गिरा जिससे उस इसप्रकर के मृतकने भी अपने शरीर से तेरी सेनाके एकस्थान को बिनाश किया ६१ शीघ्रबड़े लम्बे चौड़े अत्यन्त बर्द्धमान शरीर समेत गिरते और पांडवों का हितकरते निर्जीव राक्षसने आपकी एक अक्षौहणी सेनाको मारा६२इसके पीछे सिंहनादों समेत भेरी शंख मुर्जा और ढोलोंके महान् शब्द हुये और मायाको भस्मकरके राक्षसको मृतक हुआ देखकर बड़े प्रसन्न मन होकर कौरव लोग अत्यन्तगर्जे ६३ तदनन्तर कर्णको कौरवों ने ऐसा पूजा जैसे कि वृत्रासुरके मारने

में इन्द्रको देवताओंने पूजाथा आप के पुत्रके रथपर चढ़ा हुआ वह प्रसन्न मन कर्णभी आपकी उस सेनामें पहुंचा ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोण पर्व्वणिइन्द्रदत्तकर्णशक्तिद्वाराघटोत्कचवधेशतोपरि अशीतितमोऽध्यायः १८० ॥

एकसौइक्यासीका अध्याय॥

संजय बोले कि पर्व्वताकार गिरे और मरेहुये घटोत्कचको देखकर सब पांडव लोग शोकके अश्रुपातों से व्याकुल हुये १ फिर बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक बासुदेवजी सिंहनादकोगर्जे और अर्जुन को अपने हृदयसे लगाया २ वह श्रीकृष्णजी बड़े शब्दको गर्जकर और बागडोरोंको स्वाधीन करके प्रसन्नतासे पूर्ण ऐसे नृत्य करनेलगे जैसे कि बायुसे कंपायमान वृक्ष घूमताहै ३ इसके अनन्तर बुद्धिमान् और अजेय बासुदेवजो रथके स्थितिस्थानमें बर्त्तमानअर्जुनको अपने समक्ष करके बारंबार भुजाओंके शब्द करके गर्जे ४ हे राजा इसके पीछे महाबली अर्जुन जो कि अत्यन्त प्रसन्न चित्त नहीं था बासुदेव जी को अत्यन्त प्रसन्न जानकर बोला हे मधुसूदनजी घटोत्कचके मरनेसे शोकका स्थान बर्त्तमान होनेपर यह आपकी बड़ी प्रसन्नता अयोग्यहै ५।६ यहां घटोत्कच को मृतक देखकर आपकी ओर की सब सेना मुखफेररहीहै और हमसब लोगभी घटोत्कच के मारेजानेसे अत्यन्त व्याकुल हैं ७ हे जनार्दन जी इसका कारण मिथ्या नहीं बिदित होताहै सो हे सत्यवक्ताओं में श्रेष्ठ आप मेरे पूछनेपर सत्य २ कहो ८ हे शत्रुंजयजो यह बात आपको गुप्तकरने के योग्यनहींहै तो इसको यथार्थतासे मुझसे कहने को योग्यहो हे मधुसूदनजी अब आपधैर्य्यके रूपान्तर होने का कारण कहो ९ हे जनार्दनजो जैसे कि समुद्र का सूखजाना और मेरुका चलायमान होना होताहै अब उसीप्रकारसे इसआपके कर्म को मैं मानताहूं १० श्री बासुदेवजी बोले कि हे अर्जुन इस बड़ी प्रसन्नता प्राप्तहोने को कारण समेत मुझसेसुनो जोकि शीघ्रही चित्तकोस्वस्थ करनेवाला

और उत्तमहै ११ हे बड़े तेजस्वी अर्जुन घटोत्कचके द्वारा इसशक्तीको छोड़कर युद्धभूमिमें शीघ्रही कर्णको मरा हुआ जानो १२ लोकमें ऐसा कौन पुरुषहै जो कि युद्धमें इस कार्त्तकेयके समान शक्तिहाथमें लिये कर्णके सन्मुख नियत होसक्ताहै १३ यह कर्ण प्रारब्धही से कवच रहितहुआ प्रारब्धहीसे कुंडलों करके बिहीनहुआ प्रारब्धसे ही यह अमोघ शक्ती इस घटोत्कच पर छोड़ीगई १४ जो कदाचित् यह कर्ण अपने कवच और कुंडलों समेत होता तो अकेलाही देवताओं समेत तीनोंलोकोंको बिजय करसक्ता था १५ इन्द्र, कुबेर, राजाबलि और यमराजभीयुद्धमें कर्णके सन्मुखहोनेको उत्साहनहीं करसक्के १६ आप गांडीव धनुषको उठाकर और मैं सुदर्शनचक्रको लेकर उसप्रकार कवच कुंडलोंसे युक्त नरोत्तम कर्णकेबिजयकरनेको समर्थ नहीं थे इन्द्रने तेरी वृद्धिके लिये अपनीमायासे इस शत्रुओंके बिजय करनेवाले कर्णको कवच और कुंडलोंसे रहित किया जिसहेतुसे कि कर्णनेअपने कवच औरनिर्मल कुंडलोंको उखाड़करइन्द्रके अर्थदिया उसीहेतुसेही यह कर्ण बैकर्त्तन नामसे बिख्यातहुआ १६ जो कर्ण बिषैलेसर्पकी समान क्रोधयुक्त और मन्त्रकेतेजसे जंभाई लेनेवालाथा वह कर्ण अब मुझको शान्त अग्निके समान दिखाई देताहै २० हे महाबाहो जबसे कि महात्मा इन्द्रने कर्णके अर्थ इस शक्तिको जो कि घटोत्कचके ऊपर उसने फेंकी २१ दियाथा तभीसे दोनों कुंडल और दिव्य कवचसे ठगेहुये कर्णने उस शक्तिकोपाकर सबप्रकारसे युद्धमें तुमको मराहुआ मानाथा २२हे निष्पाप पुरुषोत्तम इस दशावालाभी कर्ण तेरे सिवाय और किसीसे मारनेकेयोग्य नहींहै२३वह वेदब्राह्मण और ईश्वरका भक्त सत्यवक्तातपस्वीब्रतमें सावधान होकर शत्रुओंपर दयावान्है उसहेतु से कर्ण वृषनाम से बिख्यात हुआ २४ युद्धमें सावधान महाबाहु सदैव सन्नद्ध हुये धनुषोंके बनमें केशरीके समान गर्जता युद्धके शिरपर उत्तम रथियों केमदको ऐसे झाड़ताहै जैसे कि यूथप हाथियों के झुण्ड केमदों को झाड़ताहै जोकि दिवसके मध्याह्न कालीन सूर्य्यके समान २५।२६

तेरे महात्मा और उत्तम शूरबीरोंसे देखने के भी योग्य नहीं है वह बाणजालों से शरदऋतुके सहस्त्रांशु सूर्य्यके समान २७ वर्षाऋतुके बादल के समान अविच्छिन्न बाणधाराओं को छोड़ता दिव्यअस्त्रों से बादलकी समान बर्षा करनेवाला है २८ वह कर्ण चारोंओर से बाण वृष्टियोंके करनेवाले रुधिर मांसके जारी करनेवाले देवताओंसे भी बिजय करने के योग्य नहीं है २९ हे पांडव अब कवच और दोनों कुंडलों से रहित वह कर्ण नरभाव को प्राप्त हुआ और इन्द्रकी दीहुई शक्तीने भी उसको त्यागा ३० इसके मारने के निमित्त एकही योग होगा उसी अवकाशमें तुम सावधानीसे इस अचेत और मोहित को समय पर मारो अर्थात् तुमप्रथम इसइंगित को बिचारकर आपत्तिमें फंसेहुये और रथके चक्रके निकासने में प्रवृत्त होने वाले को मारना ३१ बलिका मारनेवाला एक बज्र धारी बीर भी उस अजेय और अस्त्र उठानेवाले कर्ण को नहीं मार सक्ताहै जरासन्ध महात्मा शिशुपाल और महाबाहु एकलव्यनाम निषाद यह सब जुदे २ योगोंसे तेरे हितकेलिये मैंने मारे फिरअन्य राक्षसाधिप जिनमें हिडम्ब किर्मीर और बक यह बड़ेश्रेष्ठथे उनको भी भीमसेन के द्वारा मारा और शत्रुकी सेनाकामारनेवाला अलायुध और उग्रकर्मी वेगवान् घटोत्कच मारागया ३२। ३३॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकाशीति तमोऽध्यायः १८१ ॥

एकसौबयासीका अध्याय॥

अर्जुन बोले कि हे जनार्द्दनजी तुमने कौनसी इच्छाओंसे हमारी वृद्धिके लिये बड़े २ जरासन्धादिक संसारके राजाओंको मारा १ बासुदेवजी बोले कि जो जरासन्ध शिशुपाल और महाबलीएकलव्य प्रथमकाल में न मारेजाते तो महा भयकारी होते २ और दुर्योधन उन उत्तम रथियों को अवश्य बुलवाता और वह हमलोगों पर सदैव शत्रुता करनेवाले होकर कौरवों में संयुक्तहोते ३ वहबड़े धनुषधारी अस्त्रज्ञ और दृढ़ युद्ध करनेवाले बीर देवताओंकेसमान

दुर्योधनकी सब सेनाओंकी रक्षा करते ४ कर्ण जरासन्ध शिशुपाल और निषादके पुत्र यह सब दुर्योधन से संयुक्त होकर इस सबपृथ्वी को बिजय करसक्ते थे ५ वह लोग जिन २ योगोंसे मारेगये हे अर्जुन उसकोभी सुनो कि वह युद्धमें बिना योगके देवताओंसे भी बिजय करनेके योग्य न थे ६ हेअर्जुन उनमें प्रत्येक पृथक् २ युद्धमें देवताओं से रक्षित देवसेना से भी युद्ध करनेवाले थे ७ बलदेवजी से बिजय कियेहुये क्रोधयुक्त जरासन्धने हमारे मारने के निमित्त नाश करनेवाली उस कालगदाको फेंका ८ जोकि अग्निके समान प्रकाशित और आकाशको सीमन्तके समान करनेवाली थी वह गिरती हुई ऐसी दिखाईपड़ी जैसेकिइन्द्रका छोड़ाहुआ बज्रहोताहै ९ रोहिणी नन्दन बलदेवजीने उस आतीहुई गदाको देखकर उसके नाश के अर्थ स्तूनाकरण अस्त्रको छोड़ा १० अस्त्र के बेगसे घायल वहगदा पृथ्वी देवीको फाड़ती और पर्व्वतोंको कंपायमान करती हुई पृथ्वीपर गिरपड़ी ११ जबकि वह जरासन्ध अपनी दोमाताओंसे आधा आधा अंग होकर उत्पन्न हुआऔरनिरर्थक जानकर उसको बाहर फेंक दियाथा उससमय वहां घोर पराक्रमी जरानाम राक्षसीने उस खंड २ उत्पन्न होने वाले शत्रु बिजयी जरासन्धको उठाकर १२ जोड़दिया तब सुन्दर रूपवाला होगया उस जरानेजो सन्धि मिलाकर जोड़ा इसीसे इसका नाम जरासन्ध बिख्यात हुआ १३ हे अर्जुन पृथ्वी पर बर्त्तमान वह राक्षसी अपने पुत्र बांधवों समेत उस गदा और स्थूणाकरण अस्त्र से मारी गई १४ गदासे रहित वह जरासन्ध युद्धभूमि में तेरे देखते हुये भीमसेन के हाथसे मारागया १५ जो प्रतापवान् जरासन्ध उस गदाको हाथ में रखनेवाला होता तो हे नरोत्तम इन्द्र समेत सब देवता भी युद्धमें उसके बिजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते १६ द्रोणाचार्य्यने तेरी वृद्धिकेलिये आचार्य्य दक्षिणाका उपदेश करके कपट पूर्व्वक अंगुष्ठसे सत्य पराक्रमी एकलव्य जुदाकिया १७ वह अंगुलित्राण का धारण करनेवाला दृढ़ सत्य पराक्रमी बड़ा अहंकारी

एकलव्य दूसरे रामचन्द्रजीके समान बनचारीहोकर शोभायमान हुआ १८ हे अर्जुन देवता दानव राक्षस और उरगों समेत युद्धके मध्यमें किसीदशामें उस अंगुष्ठ रखनेवाले एकलव्यकेबिजय करने को समर्थ नहीं होसक्ते १९ वह दृढ़ मुष्टिक सदैवअहर्निश धनुष बाणोंका अभ्यासी मनुष्योंसे सन्मुख देखनेको भी कठिनथाउसको भी मैंने तेरी वृद्धिके अर्थ युद्धके शिरपर अपने हाथसे मारा और पराक्रमी शिशुपाल तेरे नेत्रोंके सन्मुखमारा२०।२१उसका भी युद्ध में सबदेवता और असुरोंसे मारनाअसंभवथा मैं उसके और अन्य २ बहुतसे असुरोंके मारनेको प्रकट हुआहूं २२ हेनरोत्तम तुझकोसाथ रखनेवाले मैंनेलोकोंकेअभ्युदयकी इच्छासे प्रकटहोकर उनहिडम्ब, बक, और किर्मीर नाम राक्षसोंको भीमसेनके हाथसे गिराया २३ जो कि रावणके समान बली और ब्रह्मयज्ञोंके नाश करनेवालेथे इसीप्रकार मायावी अलायुध भी घटोत्कचके हाथसे मारागया २४ और घटोत्कच भी उपाय के द्वाराकर्णकी शक्तीसे मारागया जो कदाचित् कर्ण उसको बड़ेयुद्ध में नहीं मारता २५ तो वह भीमसेनका पुत्र घटोत्कच मेरे हाथ से मारनेके योग्यहोता मैंने पूर्व्व समयमें तुम्हारे प्रियकरनेकी इच्छासे यहनहीं माराथा निश्चय करके यह राक्षस ब्राह्मण और यज्ञोंसे शत्रुताकरनेवाला धर्मका गुप्तकरनेवाला पापात्माथा इसीहेतुसे यह मारागया२६।२७हेनिष्पाप पाण्डव इन्द्र कीदीहुई शक्तिको भी मैंनेही उपायसे चलवाई जो धर्मके लोपकरनेवालेहैं वह सब मुझसे बध्यहैं २८ मैंने धर्मकी स्थिरताके लियेही यह अबिनाशी प्रतिज्ञा करीहै कि वेदतप ब्राह्मण सत्यता इन्द्रियोंका जीतना बाह्याभ्यन्तरकी पवित्रता धर्म ह्री श्री धृति और क्षमा २९ यह सब जिसस्थानपरहैं वहां मैं सदैव रहताहूंमैंसत्य २ तेरी शपथ खाताहूं कि सूर्य्यके पुत्र कर्णके बिषयमें तुझको व्याकुलता नहीं करनी उचितहै ३० मैं तुझको उपाय पूर्वक बतलाताहूं जिसकेद्वारा तू उसको सहैगा भीमसेनभी युद्धमें दुर्योधनको मारेगा ३१ हेअर्जुन उसके भी मारनेका तुझसे कहताहूं यह शत्रुओंकी सेनामें कठोर

शब्दकी आधिक्यता होरहीहै ३२ और तेरीसेनादूसरी दिशाओंको भागतीहैं लक्ष्यभेदी कौरवलोग तेरी सेनाको छिन्नभिन्न करतेहैं ३३ और यह प्रहार कर्त्ताओं में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य तेरी सेनाको भस्मकरे डालतेहैं ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्व्यशीतितमोऽध्यायः १८२ ॥

एकसौतिरासीका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जब कर्णके पासऐसीशक्तिथी कि एकहीबीरके मारने में फिर निष्फलहोजायती किसकारण उसनेसबको छोड़कर उस शक्तिको अर्जुनके ऊपर नहीं छोड़ा क्योंकि उसके मरनेपर सब सृञ्जयसमेत पांडवलोग मृतकरूप होजाते किसहेतुसे युद्धमेंएकही बीरके मारनेमें बिजयको नहीं प्राप्तकिया १।२ क्योंकि अर्जुनकातोयह सत्यव्रतथा कि बुलायाहुआ कभी नहीं लौटसक्ताथा इसअर्जुन को कर्ण आप खोजकरलेता ३ इसके बिशेष कर्णने द्वैरथ युद्धको प्राप्त करके किसनिमित्त से अर्जुनको इन्द्रकी दीहुई शक्तिसे नहींमारा हेसंजय यह मुझसे समझाकर कहो ४ निश्चयकरके मेरापुत्र बुद्धिसे और सहायतासे रहितहोकर पापीशत्रुओंसे ठगागया है वह कैसे शत्रुओंको बिजय करसक्ताहै ५ जो उसकी उत्तम शक्ती महाबिजयका स्थानथी वह शक्ति बासुदेवजीने घटोत्कचके ऊपर छुड़वादी ६ जैसे कि निर्बलके हाथका बर्त्तमान फल बलवान् हरलेता है उसीप्रकार वह अमोघशक्ति घटोत्कचके ऊपर निष्फलहुई ७ मैं मानताहूं कि जिसप्रकार बराह और कुत्तेकेयुद्ध करतेहुये उनदोनोंके नाशहोने में चांडालका लाभहोता है हे विद्वन् उसीप्रकार कर्ण और घटोत्कचके युद्धमें बासुदेवजीका लाभहुआ ८ जो घटोत्कच कर्णकोही मारदेता तोभी पांडवोंका बड़ालाभथा अथवा कर्णनेभी जो उसको मारा तो भी शक्तीके नाश होजानेसे करनेके योग्य कियाहुआ कर्महोगया ९ पांडवोंके हितकारी और सदैव उनकी वृद्धि चाहनेवाले बासुदेव जीने बुद्धिसे उसको बिचारकर युद्धमें कर्णके हाथसे घटोत्कचको मर

वाया १० संजयबोले कि मधुसूदन जीने कर्णके उसकर्म करने की इच्छाको जानकर द्वैरथ युद्धमें राक्षसोंके राजा घटोत्कचको प्रवृत्त किया ११ हे राजा आपके दुर्मंत्र करनेपर बड़े बुद्धिमान् जनार्दन जीने अमोघशक्ती के नाशकेअर्थ बड़े पराक्रमी घटोत्कचको आज्ञा करी १२ हे कुरुद्वह हमलोग तभी कृतकार्य्य अर्थात् मनोरथ सिद्ध करनेवाले होसक्तेहैंजब कि श्रीकृष्ण उसपांडव अर्जुनको महारथी कर्णसे रक्षा नहीं करें १३ हे धृतराष्ट्र योगेश्वर प्रभु जनार्द्दनजी के न होनेपर वह अर्जुन युद्ध में घोड़े ध्वजा और सारथी समेतपृथ्वी पर गिरपड़े १४ श्रीकृष्णजीसेही अनेक प्रकारोंके उपायोंसे वह रक्षित कियाहुआ अर्जुन सन्मुख होकर शत्रुओंको बिजय करता है १५ वह श्रीकृष्णजी अमोघशक्ती सेभी अधिकहैं कि जिन्होंने पांडव अर्जुनको रक्षित किया नहींतो वह शक्ती अर्जुनको ऐसेशीघ्र मारडालती जैसे कि बिजली वृक्षको तत्क्षण मारतीहै १६ धृतराष्ट्र बोले मेरापुत्र बिरोधी कुमंत्री अप्राज्ञ अहंकारी और निर्बुद्धी है जिस का कि यह अर्जुनके मारनेका सिद्ध उपाय हाथसे निष्फल होकर गया १७ हे सूत उस बड़ेबुद्धिमान् सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कर्णने उस अमोघशक्ती को अर्जुनके ऊपर क्यों न छोड़ा १८ हे संजय यहबात तुझको भी किसहेतुसे स्मरण नहीं रही इस भूल जानेका क्याकारणथा जिससेकि तुमनेभी इसप्रयोजन को नहींसुझाया १९ संजयबोले कि सदैव हररात्रि को मेरी दुर्योधनकी शकुनीकी और दुश्शासन की यह सलाह होतीथी और सब मिलकर कर्णसेकहते थे कि हेकर्णकलतुम सबसेनाओं को छोड़कर अर्जुनको मारो उसके पीछेहमपांडव और पांचालोंको दाशोंकेसमान करके उनकोअपना सेवकबनावेंगे २१।२० अथवा अर्जुनके मरनेपर जो श्रीकृष्णजीदूसरे पांडवको नियत करें इसकारणसे श्रीकृष्णहीकोमारो २२ श्रीकृष्ण जी पांडवोंके मूलहैं अर्जुन स्कन्धहैं और दूसरे पांडव डालियों के समानहैं और पांचाल पत्तोंके समान हैं सब पांडव श्रीकृष्णजीकेही आश्रित श्रीकृष्ण जी काही बल रखनेवाले और श्रीकृष्णही को

अपना स्वामी माननेवाले हैं श्रीकृष्णजी भी इनके ऐसे रक्षाश्रयहैं जैसे कि नक्षत्रोंकेचन्द्रमा रक्षाश्रयहैं २३।२४हेकर्ण इसकारणसेपत्र शाखा और स्कन्धको छोड़कर सर्बत्र सर्बदा श्रीकृष्णहीको पांडवों का मूलजानो २५ हे राजा जो कर्ण कहीं यादव नन्दन श्रीकृष्णजी को मारेतो संपूर्ण पृथ्वीतेरे आधीनहोजाय २६ जो वह यादवबंशी पांडवोंके प्रसन्न करनेवाले महात्मा श्रीकृष्णजी मृतकहोकरपृथ्वी परसोवें तो हे महारज अवश्यही यह पृथ्वी पर्व्वत समुद्रों समेत तेरे आधीन वर्त्तमान होजाय २७ जाग्रत अवस्था में देवेश्वर इन्द्रियों के स्वामी अप्रमेय श्रीकृष्णजी के बिषय में इसप्रकार की हुई उस बुद्धिने युद्धके समय मोहको पाया २८ केशवजी भी सदव अर्जुनको कर्णसे रक्षा करतेथे और युद्धमेंभी उसको कर्णके सन्मुख नियत करना नहीं चाहा २९ हे प्रभु उस अबिनाशीने यहशोचकर कि इस अमोघशक्तीको किसीप्रकारसे निष्फल करदूं इसनिमित्त दूसरेही महारथियोंको उसके सन्मुख नियतकिया ३० हे राजाजो बड़ेसाहसी श्रीकृष्णजी इसप्रकारसे अर्जुनकी रक्षाकरते हैं तो वह पुरुषोत्तम अपनी क्यों नहीं रक्षाकरेगा ३१ शत्रुबिजयी चक्रधारी श्रीकृष्णजीकोमैं अच्छीरीतिसे बिचारकरदेखताहूं कि वह पुरुषतीनों लोकोंमेंभी नहींहै जो जनार्द्दनजीको बिजयकरसके ३२ इसकेपीछे सत्य पराक्रमी रथियोंमें श्रेष्ठ महारथी सात्यकीने कर्णके बिषयमें महाबाहु श्रीकृष्णजीसे पूछा ३३ कि हे अतुल पराक्रमी यह शक्ती कर्णकेपास बड़ी बिश्वासितथी उसको कर्णने किसहेतुसे अर्जुन के ऊपर नहींछोड़ा ३४ श्रीबासुदेवजीने कहा दुश्शासन कर्ण शकुनि और जयद्रथने जिनमें मुख्य दुर्योधनथा बारंबार सलाहकरी३५कि हे बड़े धनुषधारी युद्धमें अमित पराक्रमी बिजयी पुरुषोंमें श्रेष्ठ कर्ण कुन्तीकेपुत्र महारथी अर्जुनकेसिवाय इसशक्तिको दूसरे किसीकेभी ऊपर छोड़ना योग्य नहीं है ३६ वही इन सब पांडवों में ऐसाबड़ा यशस्वीहै जैसे कि देवताओंमें इन्द्र अर्जुनके मरनेपर सब सृञ्जियों समेत पांडव ऐसे मनसे उदास होजांयगे जैसे कि अग्निसे रहित

देवता होतेहैं ३७ हे शिनियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी कर्णने प्रतिज्ञा करी कि ऐसाहीहोगा और सदैव कर्णके हृदयमें अर्जुनका मारना बना रहताथा ३८ हे शूरबीरोंमें श्रेष्ठ मैं ही कर्णको अचेत और मोहित-करे रहताहूं इसीकारण से उसने पांडव अर्जुन पर उस शक्तीको नहीं छोड़ा ३९ हे शूरबीरोंमें श्रेष्ठ यहशोचतेहुयेकि वहशक्ती अर्जुन का कालहै मुझको न रात्रिमें निद्राआतीथी न दिनमें मनको प्रसन्न तायी४० हेशूरसात्यकी अबमैं उसशक्तिको घटोत्कचके ऊपरछोड़ी हुई देखकर अर्जुनको कालके मुखसे बचाहुआ देखताहूं ४१ मेरे माता पिता और तुमसब भाइयों समेत अपने प्राणभी वैसेमुझको नहींप्यारेहैं जैसेकि युद्धमें अर्जुन मुझको रक्षाकरनेके योग्यहै ४२ हे यादव तीनोंलोकों के राजासे भी जो कुछ पदार्थ अलभ्य और दुर्लभहै मैं पांडव अर्जुनके सिवाय उसकोभी नहीं चाहताहूं ४३ हे सात्यकी अबइसहेतुसे मरकर लौटेहुयेके समान पांडव अर्जुन को देखकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुईहै ४४ इसीहेतुसे युद्धमें मैंनेही उस राक्षसको कर्णके पासभेजाथा क्योंकि रात्रिके युद्धमें कोईअन्य पुरुष कर्णके पीड़ादेनेको समर्थनथा ४५ संजयबोले कि अर्जुनकी वृद्धिमें प्रवृत्त उसके हितहोमें सदैव प्रीतिमान देवकी नन्दनजी ने सात्यकीसे यह कहा ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिचत्यशीतितमोऽध्यायः १८३ ॥

एकसौचौरासीका अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हेतात कर्णदुर्य्योधनशकुनी और सौबलके पुत्रादि की बड़ीविद्या और अधिकतर तेरी १ जोतुम युद्धमें शक्तिको सदैव एकको मारनेवाली हटानेके अयोग्य और इन्द्रसमेत सबदेवताओं सेभी असह्य मानतेथे २ तोहेसंजय प्रथम युद्धजारी होनेपर कर्णने वहशक्ती किस निमित्त श्रीकृष्ण अथवा अर्जुनके ऊपरनहीं छोड़ी ३ संजयबोले हे कौरवकुलमें श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र सायंकालके समय युद्धसे लौटकर आनेवाले हमसबकी यहसलाहहुई४ किहे कर्ण कल

प्रातःकालके समय इसशक्ती को अर्जुनअथवा श्रीकृष्णजी के ऊपर छोड़ना अवश्य योग्यहै यह सदैव बिचार होताथा ५ हेराजाइसके पीछे प्रातःकालकेसमय देवताओंके कारणसे कर्णकी और दूसरेशूर-बीरोंकी बुद्धि बिनाशवान होतीथी ६ मैं दैवको उत्तममानताहूं जो कर्णने अपने हाथकी नियत शक्तीसे युद्धमें अर्जुनको अथवा देवकी नन्दन श्रीकृष्णजीको नहींमारा ७ कालरात्रिके समान उठाई हुई वहशक्ती उसके हाथमें नियतथी तबभीकर्णने दैवयोग से बुद्धिभ्रंश होनेसे उसको नहीछोड़ा ८ हे प्रभुदैवकी मायासे मोहित कर्णने उस इन्द्रकी शक्तीको मारने के निमित्त देवकी के पुत्र श्रीकृष्णजी पर अथवाइन्द्रके समानबली अर्जुनपर नहींछोड़ा ९ धृतराष्ट्रबोले कितुमदैव औरकेशवजीकी निजबुद्धिसे हतेहुयेहो और इन्द्रकीशक्ति तृणरूपघटोत्कचको मारकरचलीगई १० कर्ण वा मेरेपुत्र औरअन्य सब राजालोग उस कठिनता से जानने के योग्य श्रीकृष्णके कारण से यमलोकमें गये हुये बिदित होतेहैं ११ अब उसको फिर मुझसे कहौ जैसे घटोत्कच के मरने पर कौरव और पांडवों का युद्ध जारी हुआ १२ जो वह प्रहार करने वाली अलंकृत सेना संजय और पांचालों समेत द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गई उन्हों ने किस प्रकारसे युद्ध किया १३ पांडव और सृंजी लोग उन भूरिश्रवा और जयद्रथ को मारकर आनेवाले और जीवनको त्याग करके सेनाके मझाने वाले १४ व्याघ्रके समान जंभाई लेनेवाले कालकेसमान खुले मुख धनुष से बाणों के प्रहार करने वाले द्रोणाचार्य्य के सन्मुख कैसे गये १५ हे तात जिन अश्वत्थामा, कर्ण, और कृपाचार्य्य ने जिनमें कि मुख्य दुर्य्योधन, था द्रोणाचार्य्य को रक्षित किया उन्होंने युद्ध में कौनसा कर्म किया १६ भारद्वाज द्रोणाचार्य्य के मारनेके अभिलाषी भीमसेन और अर्जुन ने युद्धमें मेरे बीरों को कैसे२ रोका हे संजय उस वृत्तान्त को मुझसे कहौ १७ जयद्रथ और घटोत्कच के मरने से सहन न करनेवाले अत्यन्तक्रोधयुक्त इन कौरव और पांडवोंने रात्रिके समय में कैसे युद्ध किया १८ संजय बोले हे राजारात्रि

के समय कर्ण के हाथ से घटोत्कच के मरने और युद्धाभिलाषी प्रसन्न मन आप के शूरबीरों के गर्जने १६ सेना के मरने और वेगसे चढ़ाई करने पर घनघोर रात्रि में राजा युधिष्ठिर ने बड़े कष्टको पाकर २० और दुःखित चित्त होकर महाबाहु भीमसेन से यह बचनकहा कि हे महाबाहु भीमसेन दुर्य्योधन की सेना को रोको २१ घटोत्कच के मरने से मुझमें बड़ा मोह उत्पन्न होगया है इस प्रकार भीमसेन को आज्ञा देकर अपने रथपर सवार हुआ २२ अश्रुपातों से भरा मुख बारंबार श्वास लेताहुआ राजा युधिष्ठिर कर्ण के पराक्रम को देखकर घोर मोहमें प्रवृत्त हुआ २३ तब उस प्रकार से राजाको पीड़ित देख कर श्रीकृष्ण जी यह बचन बोले हे युधिष्ठिर शोक मतकरो यह व्याकुलता तुम को करना उचित नहींहै हे भरतबंशी व्यामोहता साधारण मनुष्यों में होती है आप में नहीं होंनी चाहिये २४ हे समर्थ राजा युधिष्ठिर उठो युद्ध करो और भारी धुरको उठाओ आपके अधैर्य्य होने से बिजयमें सन्देह होगा धर्मराज युधिष्ठिर श्रीकृष्णके बचन को सुनकर और हाथोंसे दोनों नेत्रोंको पोंछकर श्रीकृष्ण जी से यह बचन बोले २६ कि हे माधवजी धर्मोंकी परम गतिको मैं जानताहूं और जो उपकार को नहीं मानताहै उसकाफल ब्रह्महत्याहै २७ हे जनार्दन जो उस महात्मा पुत्र सत्पुरुष घटोत्कचने भी बनबासमें हम लोगों की सहायता करी २८ हे श्रीकृष्ण जी अस्त्रोंके निमित्त यात्रा करने वाले पांडव अर्जुनको जानकर यहबड़ा धनुषधारी घटोत्कच काम्यक बनमें मेरे पास आकर बर्त्तमान हुआ २६ जबतक अर्जुन नहीं आया तबतक हमारे ही साथमें निवास करतारहा और गन्धमादन पर्व्बत की यात्रामें दुर्गम्य स्थानोंसे इसने हमको पारकिया ३० इस महात्मा ने थकी हुई द्रौपदी को अपनी पीठपर सवार कियाहे प्रभु उसने मेरे निमित्त युद्धोंको प्रारंभा किया और बड़े युद्धों में कठिन२ कर्मकिये ३१ हे जनार्दन जी जोमेरी प्रीति सहदेव में है वही मेरी बड़ी प्रीति राक्षसोंके राजा घटोत्कच में थी ३२ वह महाबाहु

मेरा भक्त होकर मेरा प्यारा और मैं उसको प्याराथा हे श्रीकृष्ण जीमैं शोक से संतप्त होकर मूर्च्छा को पाताहूं ३३ हे यादव जी कौरवों से भगाई हुई सेनाओं को देखो और अच्छे उपाय करने वाले महारथी द्रोणाचार्य्य और कर्णको देखो ३४ रात्रि के समय इन दोनोंसे मर्दनकीहुई पांडवी सेनाको ऐसेदेखे जैसे कि दो मतवाले हाथियों से कमलका बन मर्द्दित होताहै ३५ हे माधव जी कौरवों ने भीमसेन के भुज बलको और अर्जुनके अद्भुत अस्त्रोंको अनादर करके अपना पराक्रम किया ३६ युद्धभूमि में यह द्रोणाचार्य्य कर्ण और राजा दुर्य्योधन युद्धमें घटोत्कच राक्षस को मारकर प्रसन्नचित्त होकर गर्जते हैं ३७ हे जनार्द्दन जी हमारे और आपके जीते जी कर्णसे भिड़े हुये घटोत्कच ने कैसे मृत्युको पाया ३८ हे श्रीकृष्ण जी अर्जुनके देखते हुये हम सबको अनादर करके महाबली भीमसेन के पुत्र राक्षस को मारा ३९ हे श्रीकृष्णजी जबधृतराष्ट्र के दुरात्मा पुत्रोंने अभियन्युको मारा तब उस युद्धमें महारथी अर्जुन नहीं था हम सब दुरात्मा जयद्रथ से रोके गये थे उस कर्म में अपने पुत्र समेत द्रोणाचार्य्य ही कारण रूप हुये ४१ आपगुरूजीने उसके मारने का उपाय कर्णको सिखाया और उस खड्गखैंचने वाले के खड्गको खड्गसे ही दो खंड किया ४२ कृतवर्माने निर्द्दयता के समान उस आपत्तिमें वर्त्तमान अभिमन्यु के घोड़ोंको और आगे पीछे वाले सारथियों को अकस्मात मारा उसी प्रकार अन्यर बड़े धनुषधारियोंने युद्धमें अभिमन्युको गिराया ४३ हे यादव वर श्रीकृष्णजो गांडीव धनुषधारीने छोटेसे कारणसे जयद्रथको मारा वह मेरा बड़ा प्रिय कर्म नहींहुआ ४४ जो पांडवोंकीओरसे शत्रुओं का मारना न्याय पूर्व्वक होय तो प्रथम युद्धमें कर्ण और द्रोणाचार्य्य काही मारनायोग्य है यह मेरा अभीष्टहै ४५ हे पुरुषोत्तम यह दोनों हमारे कष्टोंके मूलहैं दुर्य्योधन इन दोनोंको पाकर बिश्वास युक्तहै ४६ इस स्थान पर द्रोणाचार्य्य और कर्ण पीछे चलनेवालों समेत मारने के योग्य थे वहां महा बाहु अर्जुनने दूरदेश निवासी

जयद्रथ को मारा अब मुझको कर्णका मारना अत्यन्त योग्यहै हे बीर इस हेतुसे मैं आपही कर्णके मारने की इच्छासे जाऊंगा ४८ महाबाहु भीमसेन द्रोणाचार्य्य की सेना से भिड़ा हुआहै शीघ्रता करने वाला युधिष्ठिर इस प्रकार से कह कर शीघ्रही चलदिया ४९ वह युधिष्ठिर बड़े धनुष को चलायमान करके भेरी शंखोंको बजाकर सन्मुखहुआ उसके पीछे शिखण्डी हजार रथ और तीनसौ हाथीपांच हजारघोड़े और पांचालों समेत प्रभद्रकोंसे युक्त होकरशीघ्रहीराजा के पीछे चला ५१ इसके पीछे कवच धारी पांचालों समेतपांडवोंने जिनमें अग्रगामी युधिष्ठिरथा भेरी और शंखोंको बजाया ५२ उस समयमहाबाहु बासुदेवजी अर्जुनसे बोले ५३ कि यह क्रोधसे भरा हुआ युधिष्ठिर कर्णके मारनेकी इच्छासे शीघ्रजाताहै इसकात्यागना उचित नहींहै ५४ इन्द्रियोंके स्वामी श्री कृष्णजीने इसप्रकारसे कह कर शीघ्र घोड़ोंको चलायमान किया और दूर पहुंचेहुये राजाकेपास पहुंचे ५५ कर्णके मारनेकी इच्छासे अकस्मात जानेवाले शोकसे बिदीर्ण और अग्निसे भस्म हुयेके समान धर्मके पुत्र युधिष्ठिरको देखकर ५६ समीप में जाकर व्यासजी यहबचन बोले ५७ कि अर्जुन युद्धमें कर्णको सन्मुखपाकर प्रारब्धसेही जीवताहै अर्जुनके मारनेके अभिलाषी कर्णने उस शक्तिको बड़ी रक्षाकरीथी अर्जुनने प्रारब्धसे उसके साथ हैं रथ युद्धको नहीं प्राप्तकिया यहदोनोंईर्षा करनेवाले सब दिव्य अस्त्रोंको छोड़ते ५९ हे युधिष्ठिर युद्धमें अस्त्रों के निष्फल होनेपर पीड़ामान कर्ण अवश्य इन्द्रकी शक्तीको छोड़ता ६० हेभरत बंशियोंमें श्रेष्ठ उससे तुमको बड़ाघोर दुःखहोता हे बड़ाई देनेवाले प्रारब्धहीसे कर्णके हाथसे राक्षस मारागया ६१ यह इन्द्रकी शक्तीके बहानेसे काल करकेही मारागया हे तात वह राक्षस युद्धमें तेरे कारणसेही मारागया ६२ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठक्रोधको त्यागकर शोकग्रस्थ चित्तको मतकर युधिष्ठिर इसलोकमें सब जीवधारियोंकी यही दशाहै ६३ हे राजा युधिष्ठिर सब भाइयों और महात्मा राजाओं समेत युद्धकरो ६४ हे पुत्र पांचवें दिन यह सब पृथ्वी तेरी

होगी हे पुरुषोत्तम तुम सदैव धर्महीको बिचारो ६५ हे पांडव अत्यन्त प्रसन्नमन होकर तुम तप दान क्षमा और सत्यताकोही सेवन करो जिधर धर्महै उधरही बिजयहै ६६ व्यासजी पांडवोंसे यहकहकर उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगये ६७ ॥

इतश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणियुधिष्ठिरप्रतिव्यासशिक्षावर्णनेशतोपरि चतुरशीतितमोऽध्यायः १८४ ॥

एकसौपच्चासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे भरतर्षभ व्यासजी से इसप्रकार समझाया हुआ धर्मराजयुधिष्ठिर आप अपने से कर्णकेमारनेमें निवृत्तहुआ १ उस रात्रिमें कर्णके हाथसे घटोत्कचके मारेजानेपर दुःख औरक्रोध से बसीभूत होकर धर्मराज युधिष्ठिर २ भीमसेनसे हटाईहुईआपकी सेनाको देखकर धृष्टद्युम्नसे यह बचन बोले कि द्रोणाचार्य्य को हटाओ ३ हे शत्रुओंके संतप्त करनेवाले तुम द्रोणाचार्य्यकेही नाशके अर्थ बाण कवचखड्ग और धनुषसमेत अग्निसेउत्पन्नहुयेहो ४ युद्धमें प्रसन्नमन होकर सन्मुखदौड़ो तुझको किसीप्रकार भी भय नहींहोगा अत्यन्त प्रसन्नचित्त जन्मेजय, शिखण्डी, दौर्मुखि, यशोधर, ५ तुमसब चारोओरसे द्रोणाचार्य्यके सन्मुखजाओ नकुल, सहदेव, द्रौपदीकेपुत्र, प्रभद्रक, ६ द्रुपद, बिराट, अपनेपुत्र भाइयोंसे संयुक्तसात्यकी, केकय, और पांडव अर्जुन, ७ द्रोणाचार्य्यके मारने की इच्छासे बड़े वेगसे सन्मुखजाओ और उसीप्रकार सब रथी और जो कुछहाथी घोड़ेहैं ८ वह सब और पदाती लोग युद्धमें महारथी द्रोणाचार्य्यको गिराओ फिर उसमहात्मा युधिष्ठिरकी आज्ञापाकर वह सब ९ द्रोणाचार्य्यके मारनेकी इच्छासे वेगसे सन्मुख दौड़े शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यने उन आतेहुये पांडवोंको सब उपायोंसे युद्धमेंरोका १० इसके पीछे द्रोणाचार्य्यके जीवनको चाहता अत्यन्त क्रोध युक्त राजा दुर्य्योधन सब उपायोंसे पांडवोंके सन्मुख दौड़ा ११ तदनन्तर परस्पर गर्जनेवाले पांडव और कौरवोंका वह युद्ध जिस में सवारियां

समेत सेनाके लोग थकगयेथे जारीहुआ १२ हे महाराज उननींदों से उनींदे और युद्धमें थकेहुये महारथियोंने किसी चेष्टाकोनहीं पाया १३ यहतीन पहर रात्रि महाघोररूप भयानक प्राणोंको लेने वाली हजार पहरके बराबर होगई १४ उन घायल और अत्यन्त नींदसे अन्धे शूरबीरोंकी आधीरात्रि व्यतीतहुई और सबक्षत्रीदुखी मन होकर उत्साहसे रहितहुये १५ आपके और दूसरोंके शूरबीर अस्त्र और बाणोंसे रहितहुये तबयुद्ध व्रतको समाप्त करनेवाले और अत्यन्त लज्जावान निजधर्मके देखनेवाले उनलोगोंने अपनीसेना को नहीं त्याग किया दूसरे मनुष्य नींदसे अंधे अस्त्रोंको छोड़कर सो गये १७ हे राजा कोई रथों पर कोई हाथियोंपर और कोई घोड़ोंहींपर सोगये नींदसे अन्धोंने किसीभी चेष्टाको नहींजाना १८ बहुतसे शूरोंने युद्धमें उनको यमलोकमें पहुंचाया और कितनेही अत्यन्त अचेत चित्तोंने सोतेहुये शत्रुओंकोभीमारा १९ युद्धमें कितनोहींने अपनाही अपघात किया और उसबड़े युद्धमें नानाप्रकार के बचनोंको कहते उन निद्रान्ध लोगोंने अपने शूरबीरों को और शत्रुओंको मारा २० हे महाराज हमारे बहुतसे मनुष्य यहसमझ करकि शत्रुओंकेसाथ अवश्य युद्धकरना उचितहै नियतहोकर नींद से लाल लालनेत्रवाले होकर २१ उस कठिन अन्धकार में चेष्टा करते थे और कुछ नींदसे अन्धे शूरबीरोंने युद्धमें अन्य शूरबीरोंको भी मारा २२ और निद्रा से अत्यन्त अचेत बहुत आदमियों ने युद्धमें शत्रुओंसे अपनेको घायल नहींजाना २३ पुरुषोत्तमअर्जुन उन्हों की ऐसी चेष्टा को जानकर बड़े उच्चस्वरसे दिशाओं को शब्दायमान करता यह बचन बोला २४ कि बहुत धूल और अन्धकारसे सेनाके प्रवृत्त होनेपर आप सब सवारियों समेत नींद से अंधे और श्रमित होगये २५ हे सेनाके लोगोजो तुममानों तो बिश्राम करो और यहां युद्ध भूमि में एक मुहूर्त पलकबन्दकरो २६ हे कौरव पांडवलोगो फिरतुम चन्द्रमाके उदयहोनेपर नींदसे रहित आनन्दयुक्त होकर तुम परस्पर युद्धकरोगे २७ हेराजा सबधर्मोंकी

जाननेवाली सेनाओंने उस धार्मिक अर्जुनके उसबचनको स्वीकार किया और उसी प्रकार परस्पर वार्त्तालापकरी २८ और पुकारे कि हे कर्ण हे कर्ण हे दुर्य्योधन यह कहकर पांडवोंकी सेना रथों से उतरकर युद्ध को त्यागनेवाली हुई २९ हेभरतबंशी उसीप्रकार जहां तहां अर्जुनके पुकारते पांडवों की और आपकी सेना ने युद्ध से हाथ को खैंचा ३० इस महात्माके उस बचनको देवताओं समेत ऋषियोंने और प्रसन्न चित्त सब सेनाओं के श्रेष्ठ लोगोंने प्रशंसा करी ३१ हेभरतबंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र थकेहुये सबसेना के मनुष्य उस दयासेयुक्त अर्जुनके उस बचनकी प्रशंसा करकेएक मुहूर्त्त तक सोये ३२ हे भरतबंशी फिर वह आपकी सेना बिश्राम को पाकर सुखपानेवालीहुई और वीर अर्जुनकी सबने ऐसे प्रशंसा करी३३कि हे निष्पाप महाबाहु अर्जुन तुझीमें वेदहैं अस्त्रहैं बुद्धहै पराक्रमहै तुझीमें धर्महै और जीवोंपर तेरादयाहै ३४ हमसब आनंद पूर्वक विश्राम करनेवाले तेरेयश और कल्याणको चाहतेहैं हे अर्जुनतेरा कल्याणहोय हे श्रेष्ठबीरतू अपने चित्तके अभीष्टों को शीघ्र प्राप्तकर ३५ हेराजा व महारथी इसप्रकारसे उस नरोत्तम अर्जुन की प्रशंसाकरतेहुये निद्रासेयुद्ध भूमिमें पड़ेहुये मौन होगये ३६ कोईघोड़ोंकी पीठपर कोईरथोंकी ओढ़पर कोईहाथियों के कन्धोंपर और कोई पृथ्वीपर सो गये ३७ कोईमनुष्य शस्त्र, बाजूबन्द, खड्ग फर्सा, प्रास और कवचसमेत पृथक् २ होगये ३८ निद्रासे अन्धे उन हाथियोंने सर्पकेफणोंकेरूप पृथ्वीको धूलसे लिप्तहुई अपनी सूंडोंसे पृथ्वीकोनाककी स्वासोंसे शीतलकिया ३९ वहां पृथ्वीतल पर स्वासा युक्त सोनेवाले लोगऐसे शोभायमानहुये जैसे स्वास लेनेवाले बड़े सर्पोंसे युक्त पर्व्वत होतेहैं ४० उनस्वर्णमयी योक्तर वाले घोड़ोंने बागोंपर चिपटेहुये युगासमेत खुरोंकीनोंकोंसे समभूमि को बिषमभूमि करदिया ४१ हे महाराज वहां सब प्रकारकी सवारियों पर नियत होकर सोगये अर्थात्इसप्रकार बड़ेकष्टसेयुक्तघोड़े हाथी और शूरबीर युद्धसे निवृत्त होकर सोगये ४२ इसी प्रकार

निद्रामें डूबीहुई वह सेना ऐसे अचेत होकरसोगई जैसे कि सावधान चित्रकारोंसे कपड़े पर काढ़ी हुई अपूर्व्व मूर्त्तियां होतीहैं ४३ वह कुंडलधारी शूरबीर परस्पर शायकोंसे घायल अंगवाले क्षत्री हाथियोंके कुंभोंसे चिपटे हुये ऐसे सोगये जैसे कि स्त्रियों के कुचोंसे चिपटे हुये कामी पुरुष सोतेहैं ४४ इसके पीछे कुमुदनाम कमलके स्वामी स्त्रियों के कपोलोंके समान पीतरंग नेत्रोंको आनंद करने वाले चन्द्रमा से पूर्व दिशा शोभित होकर अलंकृत हुई ४५ वहउदयाचलकेसिरी किरणों से पीत रंग तिमिररूपी हाथियों का बिनाश करनेवाला चन्द्रमा तारागणों समेत दिशारूपी कंदरा सेउदयहुआ ४६ नन्दीगणके शरीर के समान प्रकाशमान और काम देवके पूर्ण धनुषके समान प्रकाशित नबीन बधूके मन्द मुसकानके समान सुंदर मनोहर चन्द्रमा कुमुदिनियोंको प्रफुल्लित करता हुआ फैला ४७ इसके पीछे नक्षत्रोंके प्रकाशोंको मंद करते प्रभु भगवान चन्द्रमा ने एक मुहूर्त्त मेंहीं पूर्व दिशामें अरुणको दिखलाया ४८ वह चन्द्रमाकी किरणें अपने प्रकाशसे अन्धकारको हटाती हुई धीरे धीरे सब दिशाओं समेत आकाश और पृथ्वी पर फैलगई ४९ तदनन्तर वह भवन एक मुहूर्त्त मेंही ज्योति रूप होगया और अन्धकार शीघ्रतासेही गुप्त होगया ५१ हे राजा चन्द्रमा के उदयमें लोकके प्रकाशित होने पर रात्रिमें घूमने वाले राक्षसादिक घूमने वालेहुये और नहीं भी हुये ५२ चन्द्रमाकी किरणोंसे सचेत और सावधानहोने वाली वह सब सेना ऐसे जागी जैसेकि सूर्य्यकी किरणोंसे कमलों का वन प्रफुल्लित होताहै ५३ जैसेकि उदय हुये चन्द्रमामें कंपायमान और व्याकुल समुद्र होताहै उसी प्रकार चन्द्रमाके उदयहोने से वह सेना रूपी समुद्र कंपायमान होकर चेष्टा करनेवाला होगया ५४ इसके पीछे हे राजा संसारके नाशके लिये परलोक चाहने वालोंका वह युद्ध फिर जारी हुआ ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशततोपरिपंचाशीतितमोऽध्यायः १८५ ॥

—※—

एकसौछियासीका अध्याय॥

संजय बोले कि फिर क्रोधके स्वाधीन बर्त्तमान दुर्य्योधन द्रोणाचार्य्य के पास जाकर प्रसन्नता और पराक्रमको उत्पन्न करता हुआ यह बचनबोला १ कि युद्धमें अमर्ष पूरित चित्त और अधिकतर लक्ष्य भेदन करनेवाले थके और बिश्रामपानेवाले शत्रु क्षमा करने के योग्य नहींहैं २ हमने आपके हितकी इच्छासे उसको सहलिया परन्तु वह बिश्राम करने वाले पांडव अधिकतर पराक्रमी हैं ३ और हमलोग सब प्रकार से तेज और बलोंसे रहित हैं आपके पोषण और कृपासे वह लोग बारंबार वृद्धिको पातेहैं ४ जो ब्राह्म्य आदिक सब दिव्य अस्त्रहैं वह आपके पास अधिकतर नियतहैं ५ पांडव हम और अन्य सब धनुषधारी लोग आपकेसमान धनुषधारी और युद्ध करने वाले नहींहैं यहमैं आपसे सत्यसत्यही कहताहूं ६ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ सबअस्त्रोंके ज्ञाता आप अपने दिव्य अस्त्रोंसे इन लोगोंको देवता असुर और गन्धर्बों समेत भी निस्सन्देह मारसक्तेहैं ७ सो आप शिष्यता अथवा मेरी अभाग्यताको आगे करके इनअपने से अधिक भयभीतोंके ऊपरक्षमा करतेहो ८ संजय बोले हे राजाइसप्रकार के आपके पुत्रके बचनों से अप्रसन्न और क्रोध युक्त द्रोणाचार्य्य बड़े क्रोधित होकर दुर्योधनसे यह बचनबोले ९ हे दुर्य्योधन मैं वृद्धहोकरभी युद्धमें बड़ी सामर्थ्य से उपाय करताहूं इसकेपीछे मुझ बिजयाभिलाषीसे नीचकर्म करने के योग्यहै १० यहअस्त्रज्ञतासे रहित सब मनुष्योंका समूह मुझ अस्त्रज्ञसे मारनेके योग्यहै ११ जो आपभी मानतेहैं वह अच्छा होय वा बुरा हे कौरव मैंतेरे बचनसे उसकोभी करूंगा इसमेंबिपरीतता नहींहोगी१२हेराजामैं युद्धमें पराक्रमकरके सब पांचालोंको मारकेही अपने कवचको उतारूंगा मैं सत्यतासे शस्त्रोंकी शपथ खाताहूं १३ हे महाबाहो जोतुम कुन्तीकेपुत्र अर्जुनको युद्धमें थकाहुआमानतेहो सोहेकौरव सत्यतापूर्व्वक उसके पराक्रमकोसुनों १४

उसक्रोध युक्त अर्जुनको युद्धमें देवता गन्धर्व यक्ष और राक्षसभी बिजय करनेको उत्साह नहींकरतेहैं १५ देवराज भगवान इन्द्रभी खांडववन में जिसके साथ सन्मुखहुआ और बर्षा करताहुआ भी महात्माके बाणोंसे रोकागया १६ और जिस नरोत्तमने घोषयात्रा में गन्धर्वमारे और चित्रसेनादिक बिजयकिये वहभी तुझकोविदित है १७ और उनगन्धर्वोंसे हरण कियेहुये तुम उसदृढ़ धनुष धारी अर्जुनकेही द्वाराछूटेइसीप्रकार देवताओंके शत्रुनिवात कवचभी १८ जोकि युद्धमें देवताओंसेभी अबध्यथे उनकोभी इसीवीरने बिजय कियाइसीपुरुषोत्तमने हिरण्यपुरबासी दानवोंकेहजारोंसमूहोंको १९ बिजयकिया वह मनुष्योंसे कैसे पराजय होनेके योग्यहै हे राजा सबतेरे नेत्रोंके प्रत्यक्षहै कि जिसप्रकार तेरीयह सेनाहमारे उपाय करतेहुयेभी अर्जुनके हाथसे मारीगई २० संजय बोले हे राजा तब आपकापुत्र क्रोधयुक्त दुर्योधन उसअर्जुनको प्रशंसाकरनेवालेद्रोणाचार्य्यसे फिरयह बचन बोला २१ कि अब मैं दुश्शासन कर्ण और मेरामामाशकुनी आदिक सबमिलकर सेनाके दोभागकरके युद्धमें अर्जुनको मारेंगे २२ उसके उस बचनको सुनकर हंसतेहुये द्रोणाचार्य्यने उसको अंगीकार किया और कहाकितेरा कल्याणहो २३ कौनसा क्षत्री उसतेजसे ज्वलितरूप क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ अविनाशी गांडीव धनुषधारीका नाशकरसक्ताहै २४ उसशस्त्र धारीको कुवेर इन्द्र यमराज जलकास्वामी बरुण असुर सर्प और राक्षसभी विजयनहीं करसक्ते २५ और हे भरतबंशी तुमनेजो २ बातेंकहीं उनबातों को जो कोई कहतेहैं वह अज्ञानहैं युद्धमेंअर्जुनको सन्मुख पाकर कौन कुशलतासे घरको जासक्ताहै २६ इसके विशेषतू सबपर संदेहकरनेवाला कठोरचित्त और पापका निश्चय करनेवालाहै और अपनी वृद्धि और कल्याणमें प्रवृत्त पुरुषोंको तू ऐसे २ कठोरबचनों कोकहा करताहै २७ अबतुम जाकर अपनेअर्थ अर्जुनकोमारो बिलम्ब मतकरो तुमभी लड़ना चाहतेहो क्योंकि कुलीन क्षत्रीहो २८ इननिरपराधी सब क्षत्रियों को क्यों बिनाश करवाता है तूही इस शत्रुता

कामूलहै इसकारण अब शीघ्रतासे अर्जुनके सन्मुख हो २९ हे गांधारी के पुत्र यह तेरा मामा बुद्धिमान क्षत्री धर्म्म पर चलने वाला दुर्मति द्यूतकर्मीभी युद्धमें अर्जुनके सन्मुखजाय ३० यह पाशेकी विद्यामें कुशल कुटिल प्रकृति ज्वारी छली शठ खिलाड़ी छलबुद्धी शकुनी पांडवोंको बिजय करेगा ३१ तुमने कर्णसमेत प्रसन्न चित्त निर्बुद्धियोंके समान मोहसे धृतराष्ट्र के सुनतेहुये बारंबार यह बचन कहा है ३२ कि हे पिता मैं औरकर्ण और मेराभाई दुश्शासनतीनों साथ होकर युद्धमें पांडवोंको मारेंगे ३३ प्रत्येक सभा में तुझकहने वालेका यही बचन बारंबार सुना गया उस प्रतिज्ञा में नियतहो और उनके साथमें सत्यवक्ताहो ३४ यहतेराशत्रु पांडव निस्सन्देह आगे नियतहै क्षत्री धर्मको बिचारकर तेरा मरना बिजय होने सेभी अधिक प्रशंसा के योग्यहै ३५ दानकिया भोग किया जप किया और यथेक्षित ऐश्वर्य्यको पाया सब ऋणोंसे निवृत अर्थात् देव ऋषि और पितरोंके तीनोंऋणोंसे अऋणहै अब भय न कर पांडवों से युद्धकर ३६ द्रोणाचार्य्य जी ऐसा कहकर युद्धमें उधरको लौटे जिधरको कि शत्रुलोगथे इसकेअनन्तर सेना के दोबिभागकरके अच्छे प्रकारसे युद्धहुआ ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषट्शीतितमोऽध्यायः १८६ ॥

एकसौसत्तासीका अध्याय॥

संजयबोले हे राजा रात्रिका तीसराभाग शेष रहनेपर अत्यन्त प्रसन्न चित्त कौरव और पांडवों का युद्ध जारी हुआ १ तदनन्तर चन्द्रमा के प्रकाशको म्लान करते आकाशको रक्तवर्ण करते सूर्य्य के अग्रगामी अरुणका उदय हुआ २ पूर्व्व दिशामें सूर्य्यके सारथी अरुणसे आरक्त वर्णकियाहुआ सूर्य्य मंडल सुनहरी चक्रकेसमान शोभाय मानहुआ ३ तब कौरव और पांडवोंके सबशूरबीर रथघोड़े मनुष्य और सवारियोंको छोड़कर सूर्य्य के सन्मुख जपकरते संध्या में प्रवृत्त होकर हाथोंको जोड़नेलगे ४ तदनन्तर सेना के दोभाग

करनेपर वह द्रोणाचार्य्य जिनका अग्रगामी दुर्य्योधनथा सोमक पांडव और पांचालोंके सन्मुख गये ५ माधवजी दोभाग कियेहुये कौरवोंको देखकर अर्जुनसे बोलेकि शत्रुओंको बाम करके इनको दाहिनेकरो ६ अर्जुन माधवजीसे यह कहकर कि करिये बड़े धनुष धारी द्रोणाचार्य्य और कर्णके बाईओर को वर्त्तमानहुआ ७ शत्रुओंके पुरोंका बिजय करनेवाला भीमसेन श्रीकृष्णजा के चित्त के बिचारको जानकर युद्धभूमि में अर्जनसे बोला ८ कि हे अर्जुन मेरे वचनको सुन ईश्वरने क्षत्रियोंको जिस निमित्त उत्पन्नकियाहै उस का यहसमय आगयाहै ९ इस समय के वर्त्तमान होनेपर भी जो कल्याणको नहींपाओ तो तुम अपने अभीष्टोंको न प्राप्त होकरबड़े निर्दय कर्मको करोगे १० पराक्रम से सत्यता लक्ष्मी धर्म और यशकी अयोग्यताको पाओगे हे शूरबीरोंमें श्रेष्ठसेनाको तोड़ो और इनको दाहिने करो ११ संजय बोलेकि श्री कृष्णजी और भीमसेन की आज्ञा पाकर अर्जुननेकर्णऔर द्रोणाचार्य्यको उल्लंघनकरचारों ओरसे घेरा १२ इसके पीछे क्षत्रियों में श्रेष्ठ लोग उस युद्ध के शिरपर आनेवाले उत्तम क्षत्रियों के भस्म करनेवाले पराक्रम के द्वारा चढ़ाईकरनेवाले १३ अग्निके समान वृद्धियुक्त अर्जुनके रोकने को समर्थ नहींहुये फिर दुर्य्योधन कर्ण और सौबल का पुत्र शकुनी यहसब १४ बाण समूहोंसे कुन्ती के पुत्र अर्जुनपर बर्षा करनेलगे हे राजेन्द्र उस श्रेष्ठ अस्त्रों मेंभीबड़े श्रेष्ठतम अर्जुनने उन्होंके सब अस्त्रोंको निष्फल करकेबाणोंकी बर्षासे आच्छादित कर दिया १५ हस्त लाघवी जितेन्द्री अर्जुन नेअस्त्रोंसे अस्त्रोंको हटाकर सबको तीक्ष्ण धारवाले दशदश बाणोंसे छेदा १६ धूलकी अतिबर्षाहुई और बाणोंकी अतिवृष्टिहुई उस समय घोरअन्धकार और महाशब्दहुआ उस दशामें न आकाश जानागया न दिशाओं समेत पृथ्वी जानोगई १७ हे राजा सेनाकी धूलसेसब संसार मूढ़ और अन्धेके समान हो गया उस समय उन्होंने और हमने परस्पर नहीं पहचाना राजालोग उस बार्त्तालापके द्वारा अच्छीरीतिसे लड़े १८ हे

राजा रथसवार रथसे रहित हो परस्पर सन्मुखपाकर शिरोंकेबाल कवचऔर भुजाओं पर चिपटगये १६ वह रथीजिनके घोड़े सारथी मारेगये वह चेष्टासे रहित होकर मारेगये और जीवतेहुये शूरवीर रुधिरसे पीड़ामान दिखाईपड़े २० इसरीतिसे घोड़े सवारों समेत पर्व्वतों के समान मृतक हाथियों से चिपटकर बिना पराक्रम के समान दृष्टि गोचरहुये २१ उसकेपीछे द्रोणाचार्य्य संग्रामसे उत्तर दिशामें जाकर निर्धूम अग्निके समान प्रज्वलित रूप युद्धमें नियत हुये २२ हे राजा पांडवोंकी सेना उसयुद्धके शिरोभागसे एकान्तमें हटजाने वाले द्रोणाचार्य्यको देखकर अत्यन्त कंपायमानहुई २३ हे भरत बंशी दूसरी ओरवाले लोग उस प्रकाशमान शोभासंयुक्त तेज से ज्वलित रूप द्रोणाचार्य्यको देखकर भयभीतहुये और घूम२ कर मृतक प्राय होगये २४ शत्रुकी सेनाके बुलानेवाले मतवाले हाथीके समान इन द्रोणाचार्य्यके बिजय करनेको ऐसे आशानहीं करी जैसे कि दानव लोगोंने इन्द्रके बिजय करने की आशाको त्यागाथा २५ कितने ही उत्साह से रहितहुये कितनेही साहसी चित्तसे क्रोधयुक्त हुये कोई आश्चर्य्य युक्त और कोई असहनशील हुये२६ किसी२राजाओंनेहाथोंसेहाथोंकेअग्रभागको मर्द्दनकिया और कितने ही क्रोधसे मूर्च्छामानोंनेदांतोंसे ओठोंको काटा २७ बहुतोंने शस्त्रोंको फेंका अनेकोंने भुजाओंको मर्द्दनकिया शरीरसे प्रीतिकरने वाले बड़े साहसी कितनेहींलोग उग्र तेजस्वी द्रोणाचार्य्यके सन्मुख गिरे २८ हे राजेन्द्र फिर द्रोणाचार्य्यके शायकोंसे अधिकतर पीड़ा मान और युद्धमें अत्यन्तदुःखी पांचाललोग अच्छे प्रकारसेभिड़े२६ इसके पीछे राजाबिराट द्रुपद युद्धमें उसप्रकार घूमनेवाले युद्धमें कठिनतासे बिजय होनेवाले द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ३० और राजाद्रुपदके तीन पोते औरबड़े धनुषधारीचंदेरीदेशी द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये ३१ द्रोणाचार्य्यने तीक्ष्णधारवाले तीनबाणोंसे उनतीनों द्रुपदके पौत्रोंके प्राणोंको हरा और वह मृतक होकर पृथ्वी परगिर पड़े३२फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने युद्धमें चंदेरी केकय सृञ्जयऔर

मत्स्य देशी सब महारथियोंको बिजय किया ३३ हे महाराज इसके पीछे राजाद्रुपद और बिराटने युद्धमें क्रोध करके द्रोणाचार्य्यके ऊपर बाणोंकी बर्षाकरी ३४ क्षत्रियोंके मर्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने उस बाणवृष्टीको काटकर उन दोनोंबिराट औरद्रुपद को बाणोंसे ढकदिया ३५ फिर युद्धमें द्रोणाचार्य्यसे ढकेहुये क्रोध युक्त महाक्रोधमें नियत उनदोनोंने द्रोणाचार्य्य को बाणोंसे घायल किया ३६ तब क्रोध और असहन शीलतासे युक्त द्रोणाचार्य्य ने अत्यन्त तीक्ष्ण दो भल्लोंसे उनदोनोंके धनुषोंको काटा ३७ फिर द्रोणाचार्य्यके मारनेकीइच्छासे क्रोधयुक्त बिराटने युद्धमें दशतोमर और दशबाणोंको छोड़ा ३८ और क्रोधसे पूर्ण द्रुपदने घोररूप सुबर्ण से शोभित सर्पराजके आकृतिवाली लोहेकीशक्ती को द्रोणाचार्य्य के रथपर फेंका ३९ फिर द्रोणाचार्य्यने अत्यन्त तीक्ष्णधार भल्लोंसे उन दशतोमरों को काटकर सुवर्ण और बैडूर्य्यसे जटित शक्तीको भी शायकों से काटा ४० हे शत्रुमर्द्दन करनेवाले उसके पीछे द्रोणाचार्य्यने पीत रंगवाले दो भल्लोंसे द्रुपद और बिराटको यमपुर में भेजा ४१ बिराट द्रुपद और इसीप्रकार केकय चंदेरी मत्स्य और पांचाल देशियोंके नाशमानहोने ४२ और राजा द्रुपदके तीनोंबीर पौत्रोंके मरने पर द्रोणाचार्य्य के उस कर्मको देख कर क्रोध और दुःखसे युक्त ४३ बड़े साहसी धृष्टद्युम्नने रथियोंके मध्यमें शापदिया कि वहपुरुष यज्ञोंके फल और बापी आदि बनाने के पुण्य क्षत्री धर्म और वेद ब्राह्मणोंकी भक्तीसे रहित होजाय ४४ जो अपने शत्रु द्रोणाचार्य्य को अबजीताछोड़ेअथवा उसको द्रोणाचार्य्यही पराजयकरें उन सब धनुष धारियोंके मध्यमें यह प्रतिज्ञा करके ४५ शत्रुओंके बीरोंका मारनेवाला धृष्टद्युम्न सेना समेत द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगया और पांडवों समेत पांचालोंने एक ओर से द्रोणाचार्य्य को घायल किया ४६ दुर्य्योधन कर्ण सौबल कापुत्र शकुनी और दुर्योधनके मुख्य२ सगेभाइयोंने युद्धमें द्रोणाचार्य्यको रक्षित किया ४७ फिर उपाय करनेवाले पांचाल उस प्रकार बड़े२

उन महारथियों से रक्षित द्रोणाचार्य्यके देखनेको भी समर्थ नहीं हुये ४८ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वहां भीमसेन धृष्टद्युम्नके ऊपर क्रोध युक्त हुआ उस पुरुषोत्तमने उसको उग्र बचनोंसे घायल किया ४९ भीमसेन बोले कि द्रुपदके कुलमें उत्पन्न और अस्त्रोंमें अच्छे कुशल अपनेको क्षत्री माननेवाला कौन पुरुष सन्मुखनियतहुयेशत्रुको देख सक्ताहै ५० कौन पुरुष पिता और पुत्रोंके मरने को प्राप्त करके अधिकतर राज सभामें शपथकोखाकर भी फिर क्षमाकरे ५१ यह बाण और धनुष रूपी ईंधन रखनेवाला और अपने तेजसे अग्नि के समान वृद्धि पाने वाला द्रोणाचार्य्य तेजसे क्षत्रियोंके समूहोंको भस्मकरताहै ५२ आगेसे पांडवोंकी सेनाको नाशकरताहै तुम नियत होकर अब मेरे कर्मको देखो मैं द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जाताहूं ५३ क्रोध युक्त भीमसेन यह कहकर कान तक खेंचेहुये बाणों स आपकी सेनाको भगाता हुआ द्रोणाचार्य्यकी सेना में प्रबिष्ट हुआ ५४ पांचाल देशी धृष्टद्युम्नने भी बड़ी सेनामें प्रवेश करके युद्धमें द्रोणाचार्य्यको सन्मुख पाया तब वहां बड़ा तुमुल युद्ध हुआ ५५ हमने वैसा युद्ध न देखाथा न कभी सुनाथा हे राजा जैसे कि सूर्य्य के उदय होने पर वह महाभयंकर युद्ध हुआ ५६ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र रथोंके समूह परस्पर भिड़े हुये दिखाई पड़े और शरीर धारियों के मृतक शरीर पड़े हुये दीखे ५७ दूसरे स्थानमें जानेवाले कोई शूर बीर मार्गमें अन्य शूरों से सन्मुखता कियेगये कोई पीठकीओरसे मुख फेरनेवाले और कोई इधर उधरसे घायलकिये गये ५८ इस प्रकार वह कठिन युद्ध अत्यन्त भयानकहुआ इसके पीछे एकक्षण भरमें ही सूर्य्य संध्यामें बर्त्तमान होताहुआ दिखाई दिया ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्ताशीतितमोऽध्यायः १८७ ॥

एकसौअट्ठासीका अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज युद्ध भूमिमें उन कवच धारी बीरोंने संध्यामें बर्त्तमान हजारकिरणोंकेस्वामी सूर्य्यनारायणका उपस्थान

किया १ फिर संतप्तकिये हुये सुवर्णके समान प्रकाशमान सूर्य्यके उदय होने और संसारके प्रत्यक्ष होने पर फिर युद्ध जारी हुआ२ वहां सूर्य्योदय से पूर्व्वही जो द्वन्द्वयुद्ध जारी हुये हे भरतवंशी सूर्य्यके उदय होने पर भी वही अच्छीरीतिसे भिड़े ३ रथोंके साथ घोड़े घोड़ोंके साथ हाथी पदातियों के साथ भी हाथी घोड़ोंके साथ घोड़े और पदातियों के साथ पदाती युद्ध करनेलगे ४ भिड़े हुये और बिना भिड़े हुये शूरबीर युद्धमें दौड़े रात्रिमें युद्ध करनेवाले कर्म कर्त्ताथके और सूर्य्यके तेजसे ५ क्षुधा तृषासे युक्त शरीरवाले बहुत से मनुष्य अचेत होकर सो गये शंखभेरी मृदंगोंके गर्जनेवाले हाथियों के ६ और मंडल रूप खिंचेशब्दायमान धनुषोंके बड़ेशब्द स्वर्गको स्पर्शकरने वाले हुये ७ हे भरतर्षभ चलनेवाले पदाती और गिरने वाले शस्त्र हींसने वाले घोड़े लौटने वाले रथ ८ और पुकारते और गर्जते सेनाके लोगोंके बड़े कठोर शब्दहुये तब उस अत्यन्त वृद्धियुक्त कठोर शब्दनेस्वर्गको प्राप्तकिया९ नानाप्रकारके शस्त्रोंसेटूटे अंग पृथ्वीपर चेष्टाकरने वालोंके महानशब्द कठिनदुःख से सुने गये तब गिरेहुयेगिरनेवाले पति घोड़े रथ और हाथियोंका बड़ादुःख वर्त्तमानहुआ उनसब भिड़ीहुई सेनाओंके मध्यमें १०।११ अपनों ने अपनोंको दूसरोंने अपनोंको और अन्यों ने अन्यों को भीमारा बीरों की भुजा से शूर बीरों पर और हाथियों पर छोड़े हुये १२ खड्गों के समूह इस प्रकार दिखाई पड़े जैसे कि धोबियों के पास कपड़ों के ढेर होतेहैं बीरोंकी भुजाओं से उठाकर परस्पर मारे हुये खड्गों के १३ शब्दभी ऐसे प्रकारके हुये जैसे कि धुलते हुये वस्त्रोंके शब्द होतेहैं अर्द्धखड्ग, खड्ग, तोमर और फरसोंसे१४ समीपी युद्ध बड़ा कठिन और भयंकर हुआ बीरोंने हाथी घोड़ोंके शरीरों से और राजाओं से प्रवाहन युक्त १५ शस्त्र रूपी मछलियों से पूर्ण रुधिर मांस रूप कीच रखने वाली १६ पीड़ा के शब्दों से शब्दाय मान पताका शस्त्रोंसे फेन युक्त पर लोककी ओरको बहने वाली नदीको जारी किया १७ बाण शक्तियों से पीड़ित थके और

रात्रिमें अचेत निर्बुद्धी हाथी और घोड़े सब अंगोंको अचेष्ट करके नियत हुये १८ भुजा और चित्रित कवचों से शोभित सुन्दर कुंडल धारी शिर और युद्ध के अन्य २ सामानों से जहां तहां सुशोभित और प्रकाश मान हुये १९ वहां कच्चे मांसाहारी जीवों के समूहों से और मरे अधमरे शूर बीरों से आच्छादित सब युद्धभूमिमें रथों का मार्ग नहीं रहा २० वह बड़ेघोड़े रथ चक्रों के डूब जाने से थके कांपते बाणों से पीड़ामान पराक्रम में नियत होकर बड़े २ उपायों से रथोंको ले चले २१ जोकि श्रेष्ठ जातिके बल पराक्रम से युक्त हाथियों के समान थे हे भरतबंशी तब सब सेना द्रोणाचार्य्य और अर्जुन के सिवाय व्याकुल भ्रान्तीसे युक्त भयभीत और दुःखी हो गई और वह दोनों रक्षाश्रय पीड़ावान लोगोंके रक्षाके स्थान हुये २२।२३ दूसरे शूर बीर उन दोनों को पाकर यमलोक को गये घोड़ों की सब बड़ी सेना महा व्याकुल हुई २४ और भिड़े हुये पांचालों की सेना भी व्याकुल हुई कुछ नहीं जाना गया पृथ्वीपर राजाओं का घोर नाश प्रकट होने पर वह युद्धभूमि यमराज के क्रीड़ा स्थान के समान भय भीतों के भयको बढ़ाने वाली होगई हे राजा वहां हमने सेनाकी धूलसे ढके और भिड़े हुये कर्णको नहीं देखा न द्रोणाचार्य्य को न अर्जुन को न युधिष्ठिर को २५।२६ नभीमसेन नकुल सहदेव को न धृष्टद्युम्न सात्यकी दुश्शासन अश्वत्थामा को और न दुर्य्योधन समेत शकुनी को देखा २७ कृपाचार्य्य शल्य कृतबर्मा को न दूसरों को न अपने को न पृथ्वी को और न दिशाओं को देखा २८ धूल रूप बादलके उठने पर घोर और कठिन भ्रान्ती में २९ हम लोगोंने दूसरी रात्रि को ही बर्त्तमान जाना न कौरव न पांचाल और न पांडव लोग जाने गये ३० न दिशाआकाश पृथ्वी और न धरती की सम बिषमता जानी गई तब हाथके स्पर्शोंसे ज्ञात होने वाले अपने वा दूसरों के शूर बीरों को ३१ क्रोधयुक्त इच्छावान मनुष्यों ने एक ने एक को गिराया धूलके कठिन उठने औररुधिर के छिड़कावसे ३२ अथवा बायुकी शीघ्र गामिता से पृथ्वीकी धूल

शान्त होगई वहां हाथी घोड़े और शूर बीर रथी पदाती ३३ रुधिर में लिप्त पारिजातक वृक्षोंके बनोंके समान शोभायमान हुयेउसके पीछे दुर्य्योधन कर्ण द्रोणाचार्य्य दुश्शासन ३४ यहचारोंरथा चारों पांडवों के साथ भिड़े दुर्य्योधन अपने भाईसमेत नकुल औरसहदेव सेभिड़ा ३५ कर्ण भीमसेन के साथ और अर्जुन द्रोणाचार्य्यके साथ युद्ध करने लगा सब लोगोंने सब ओरसे उसघोर और बड़े भारी युद्धको देखा रथियोंमें श्रेष्ठ उन उग्र पुरुषों का युद्धदिव्य और बिचित्र रथोंसे व्याकुल रथके बिचित्र मार्गों समेत हुआ ३६।३७ उपाय पूर्व्वक अपूर्व्व युद्ध करनेवाले परस्पर बिजयाभिलाषी रथियोंनेअपूर्व्व युद्ध कर्त्ताओंके उस अद्भुत और बिचित्रयुद्धको देखा ३८ सूर्य्य के समान रथों पर चढ़े हुये उन पुरुषोत्तमों ने बाणोंकी बर्षा से ऐसा ढकदिया जैसे कि बर्षा ऋतु में बादल आच्छादित कर देताहै ३९ हे महाराज फिर क्रोध और असहिष्णुतासे युक्त वहयुद्धकर्त्ता ऐसे शोभायमान हुये जैसेकि चलाय मान बिजली से युक्त शरद ऋतुके बादलहोते हैं ४० इसी प्रकार वहईर्षा करने वाले धनुषधारी और उपाय करनेवाले शूरबीर ऐसेपरस्परमें भिड़े जैसेकि मतवाले हाथीभिड़ते हैं ४१ हे राजा निश्चय करके समय आयेबिना शरीर त्यागनहीं होताहै जिस स्थानपर सब महारथी एक साथही शरीरों के छोड़ने वालेनहीं हुये ४२ अर्थात् कटेहुये भी जीव युक्तथे तब युद्ध भूमि कटेहुये भुज चरण कुंडलधारी शिर धनुष बिशिल फरसे खड्ग प्रास ४३ नालीक क्षुद्रनाराच नखर शक्ति तोमर और कारीगरोंके साफ़ कियेहुये नाना प्रकारके अन्य उत्तम शस्त्र ४४ नाना रूप के बिचित्र कवच टूटेबिचित्ररथ मरेहुये हाथी घोड़े ४५ और जिन के शूरबीर मारेगयेध्वजा टूटगईं उन पर्व्वतके समानरथ और मनुष्यों से रहित जहांतहां खैंचते भयानक घोड़ोंसे ४६ और जिन के बीर मारेगये उन बायु के समान बारंबार दौड़ने वाले अलंकृत घोड़े व्यजन कुंडल और गिरीध्वजा ४७ क्षत्र भूषण बस्त्र सुगंधितमाला हार किरीट मुकुट पगड़ी क्षुद्रघंटिकाओंके समूह ४८ और हृदय

पर बिराज मान मणि माणिक्कादि से जटित चूड़ामणियों से ऐसी शोभाय मानहुई जैसे नक्षत्रों के समूहों से आकाश शोभित होता है४९ इसकेपीछे क्रोधयुक्त असहनशील राजादुर्य्योधनकी सन्मुखता अक्षम नकुलके साथहुई ५० फिर सैकड़ों बाणोंको छोड़तेहुये नकुलने आपके पुत्रको दाहिना किया वहां बड़ेशब्दहुये ५१ अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धमें शत्रु से दाहिने कियेहुये अपने को नहीं सहा और उसको भी इसने दाहिना किया ५२ हे महाराज आप के पुत्र दुर्य्योधनने शीघ्रतासेही ऐसा किया इस के अनन्तर बदला करनेके अभिलाषी आपके पुत्रको ५३ चित्रमार्गके ज्ञाता तेजस्वी नकुलने रोका फिर बाणजालोंसे पीड़ामान करते उस दुर्य्योधनने इस नकुलको सब ओरसे हटाकर ५४ मुखफेरनेवाला किया उस समयसेनाकेलोगोंने उसकी प्रशंसाकरी फिरनकुल पिछलेसबदुःखों को और आपकेकुमंत्रोंको स्मरणकरकेआपके पुत्रसे तिष्ठतिष्ठशब्दों को बोला ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टाशीतितमोऽध्यायः १८८ ॥

एकसौनवासीका अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर क्रोध युक्त दुश्शासन रथकी कठिन तीव्रतासे पृथ्वीको कंपाय मान करता सहदेव के सन्मुख गया १ शत्रुओंके बिजय करनेवाले सहदेवने शीघ्रही उस आते हुये दुश्शासनके सारथी के शिरको भल्ल से काटा २ दुश्शासन और अन्य किसी सेनाके मनुष्योंनेभी सहदेव के हाथ से इस सारथी के शिरकटनेको नहींजाना ३ फिर जब न पकड़नेसेघोड़े स्वोच्छाचारी चलने लगे तब दुश्शासन ने सारथीको मराहुआ जाना ४ वह घोड़ोंकी बिद्या में कुशल रथियों में श्रेष्ठ दुश्शासन युद्ध भूमि में आपही घोड़ोंको पकड़कर युद्धकरने लगा वह युद्धभी बड़ी तीव्रता से अपूर्व्व और उत्तम हुआ अपने और दूसरों के शूरबीरोंने युद्धमें उसके उस कर्मकी भी प्रशंसा करी ५ जो कि सारथी से रहितरथ

को सवारी से निर्भय के समान युद्धभूमि में घूमा फिर सहदेव ने तीक्ष्णबाणोंसे उन घोड़ोंको ढकदिया ६ बाणोंसे पीड़ामान वहघोड़े शीघ्रही इधर उधरको भागे और उसनेबागडोरोंमें प्रवृत्तहोनेसे धनुष कोरखदिया और फिर धनुषसे कर्म करनेवालेने बागडोरोंको छोड़ा माद्रीनन्दनने इन२ अवकाशोंपर उसको बाणोंसे घायल किया ८ कर्णआपके पुत्रको चाहता उसस्थानपर आया उसके पीछे सावधान भीमसेनने कर्णको ९ कानतक खेंचेहुये तीनभल्लोंसे भुजाओं समेत छातीपर छेदा फिर कर्ण मलेहुये सर्पकी समान लौटा १० और तीक्ष्ण बाणोंसे भीमसेनको रोका तब भीमसेन और कर्णका वह युद्धभी बड़ा कठिनहुआ ११ बैलोंके समान गर्जनेवाले खुलेनेत्र क्रोध युक्त वह दोनों बड़ी तीव्रतासे परस्पर सन्मुखदौड़े १२ वहां बाण जालके कटजानेसे उन युद्धमें कुशल भिड़ेहुये भीमसेन और कर्णका गदा युद्ध बर्त्तमानहुआ १३ हे राजा फिर भीमसेनने गदासे कर्णके रथ कूबरको सौ टुकड़े किया यह आश्चर्य्य साहुआ १४ इसके पीछे पराक्रमी कर्णने भीमसेनकी गदाको घुमाकर भीमसेन ही के रथपर छोड़ा और गदासे गदाको तोड़ा १५ फिर भीमसेनने अपनी प्रिय गदाको कर्णके ऊपर फेंका कर्णने सुन्दर पुंख बड़े बेगवान् अन्य बहुत बाणोंसे उस गदाको फिर खंडित किया वह कर्णके बाणोंसे हटाई हुई मन्त्रसे कीलित सर्पोंके समान गदा फिर भीमसेनकेपास आई १६।१७ तदनन्तर उसके आघातसे भीमसेनकी बड़ी ध्वजा गिरपड़ी और गदासे घायल होकर इसका सारथी अचेतहुआ १८ उस क्रोधसे मूर्च्छावाननेने कर्णके ऊपर आठ शायकोंको छोड़ा हे-भरत बंशी शत्रुओंके बीरोंके मारनेवाले हंसते हुये महारथी भीमसेनने उनतीक्ष्णधार तीक्ष्णबाणोंसे उसके ध्वजा धनुषऔरतूणीरको काटा १९।२० इसपीछे राधाके पुत्र कर्णने भी सुबर्ण पृष्ठी कठिनतासे चढ़ानेके योग्य दूसरे धनुषको लेकरबाणोंसे उसके रीछबर्णघोड़ोंको और दोनों आगे पीछे वाले सारथियोंको मारा २१ वह रथसेरहित भीमसेन नकुल के रथपर ऐसे गया जैसे कि शत्रुओंके बिजयकरने

वाले हनुमानजी पर्व्वतकेशिखरको उल्लंघकर गयेथे २२ हेराजेन्द्र इसप्रकार युद्धमें प्रहारकरने वाले महारथी द्रोणाचार्य्य और अर्जुन दोनों गुरू और शिष्य ने भी अपूर्व्व युद्धकिया २३ तेजीसे बाणको धनुष पर चढ़ाना और रथोंका घुमाना इन दोनों कर्मोंसे मनुष्योंके नेत्र और चित्तोंको मोहित किया २४ हे भरत बंशियोंमें श्रेष्ठ वहसब युद्ध करने वालेगुरू शिष्यके उस युद्धको जिसके समान पूर्व्वमेंकभी नहीं देखाथा देखकर युद्ध करनेसे बन्द होगये तब उनदोनों बीरोंने सेनाके मध्यमें सव्य अपसव्य रथोंके मार्गोंको करके परस्परदक्षिण करनाचाहा २५ अत्यन्त आश्चर्य्यित उन शूरबीरोंने उन दोनोंके पराक्रमको देखा उनदोनों द्रोणाचार्य्य और अर्जुनकायुद्ध ऐसाबड़ा भारीहुआ २६ जैसे कि आकाशमेंमांसके निमित्तदो बाजपक्षियोंका होताहै फिर द्रोणाचार्य्यने अर्जुनको विजय करनेकी इच्छासे जो २ कर्मकिये २७ उन२ घातोंको हंसतेहुये अर्जुननेशीघ्रही निष्फलकिया जब द्रोणाचार्य्यजी अर्जुनके मारनेको समर्थ नहींहुये तब अस्त्रमार्गों में अति प्रवीणने अस्त्रको प्रकट किया २८ ऐन्द्र, पाशुपत, त्वाष्ट्र, और बायव्य, नाम अस्त्र जो द्रोणाचार्य्यके धनुषसे छोड़ेगये उन छोड़े हुये अस्त्रोंको अर्जुननें निष्फल करदिया२९ जब पांडबने उनके अस्त्रों को अपने अस्त्रोंसे बिधिके अनुसार दूरकिया तब द्रोणाचार्य्यने बड़े दिव्यअस्त्रोंसे अर्जुन कोढका ३० उन द्रोणाचार्य्यने बिजय करने की इच्छासेजिस अस्त्रको अर्जुनके लिये प्रकट किया अर्जुनने उस अस्त्रके नाशके निमित्त उसीअस्त्र कोप्रकट किया ३१ विधिके अनुसार अर्जुनकी ओरसे दिव्य अस्त्रों के निष्फल होने से द्रोणाचार्य्यने मनसे अर्जुनकी प्रशंसाकरी ३२ हे भरतबंशी उसशत्रु संतापी शिष्यके साथ अपने को इस पृथ्वीके सब शस्त्रज्ञों के मध्यमें अधिकतर माना ३३ उन महात्माओंके मध्यमें अर्जुनसे हटायेहुये आश्चर्य्य युक्त उपाय करनेवाले द्रोणाचार्य्यने अर्जुनको प्रीतिपूर्व्वक रोका ३४ इसके पीछे अन्तरिक्षमें हजारों देव गन्धर्ब ३५ ऋषि और सिद्धोंके समूह देखनेकी इच्छासे नियत हुये अप्सराओं

से पूर्ण यक्ष और गन्धर्वोंसे संकुलित ३६ वह आकाश फिरऐसे शोभायमान हुआ जैसेकि बादलोंसे युक्त होकर शोभित होताहै हे राजा वहां जो गुप्त बचन प्रकट हुये ३७ वह बचन द्रोणाचार्य्य और अर्जुनकी प्रशंसा से संयुक्त सुने गये अस्त्रोंके छोड़ने में दिशाओंको प्रज्वलित रूप किया ३८ वहां इकट्ठे होने वाले सिद्ध और ऋषि लोगोंने कहा कि यह युद्ध न मानुसी आसुरी और राक्षसी है ३९ न दैव गान्धर्व और ब्राह्मयहै निश्चय करके यह युद्ध अत्यन्त बिचित्र और अद्भुतहै ऐसा युद्ध हमनेदेखाहै नसुनाहै ४० आचार्य्य जी पांडव अर्जुनसे अधिकहैं और पांडव अर्जुन द्रोणाचार्य्यसे बहुत अधिकहैं इन दोनोंके अन्तर जाननेकीअन्यकिसीमनुष्यकी सामर्थ्य नहीं है ४१ जो शिवजी अपने दो रूप करके अपने साथ आपही युद्ध करें तब उनकी समानता करना संभव है उनके सिवाय इनकी समताका दूसरा कोई नहींहै ४२ आचार्य्यजीमें केवल एक ज्ञानही नियतहै पांडवमें ज्ञान योग दोनों नियतहैं आचार्य्यजीमें केवल एक शूरता नियतहै और पांडवमें पराक्रम शूरता दोनों बर्त्तमानहैं ४३ यह दोनों बड़े धनुष धारी युद्धमें शत्रुओंके हाथसे बिजय करने के योग्य नहीं यह दोनों जो इच्छाकरेंतो देवताओं समेत संसार का नाशकर डालें ४४ हे महाराज इन दोनों पुरुषोत्तमोंको देखकर गुप्तजीव धारी बातोंको कहते हुये अनेक प्रकारसे प्रकट हुये २५ इसके पीछे युद्धमें पांडवको और गुप्तजीवोंको अच्छीरीति सेतपाते बड़े बुद्धिमान द्रोणाचार्य्यने ब्राह्मय अस्त्रको प्रकट किया ४६ तब वृक्ष पर्व्वतों समेत पृथ्वी कंपायमान हुई औरबड़ी कठोर बायुचली और समुद्र उथल पुथल हुये ४७ उस महात्माके अस्त्र प्रकट होने पर कौरवीय और पांडवीय सेनाओं समेत सबजीव मात्रोंको भय उत्पन्नहुआ ४८ हे राजेन्द्र इसके पीछे व्याकुलतासे रहित अर्जुन नेभी ब्रह्मअस्त्र के द्वारा उस अस्त्रको हटायाऔर उसीसे सब शान्त होगया ४९ जब उन दोनों ने एकके पारको नहीं पाया तब संकुल युद्धके द्वारा वह युद्ध महा व्याकुल रूप हुआ ५० इसके अनन्तर

फिर भी युद्ध भूमिमें द्रोणाचार्य्य और पांडव अर्जुन के कठिन युद्ध जारी होनेपर कुछ नहीं जानागया ५१ बादलोंके जालसे संयुक्तके समान बाणोंके जालोंसे आकाश के पूर्ण होने पर अन्त रिक्षचारी कोई जीव वहां नहीं आया ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिएकोननवतितमोऽध्यायः १८९॥

एकसौनब्बेका अध्याय॥

संजय बोले हे महाराज इस प्रकारसे हाथी घोड़े और मनुष्योंकेबिनाश बर्त्तमान होने पर दुश्शासनने धृष्टद्युम्न से युद्धकिया १ स्वर्णमयी रथपर सवार और दुश्शासनके बाणोंसे पीड़ामान उस धृष्टद्युम्नने क्रोधसे आपके पुत्रके घोड़ोंको बाणोंसे ढकदिया २ हे महाराज उसका वह रथभी ध्वजा सारथी समेत एकक्षणहीमें धृष्टद्युम्नके बाणोंसे चिता हुआ दृष्टिसे गुप्त होगया ३ महात्मा धृष्टद्युम्न के बाणजालोंसे अत्यन्त पीड़ामान होकर आपका पुत्र उसकेसंमुख नियत होनेको समर्थनहींहुआ ४ फिरवह धृष्टद्युम्नबाणोंसे दुश्शासन कोविमुख करकेहजारोंबाणोंको फैलाता युद्धमें द्रोणाचार्य्यकेसन्मुख गया ५ उसीसमय हार्द्दिक्य का पुत्र कृतबर्मा अपने सगे तीन भाइयों समेतमिलकर सन्मुख हुआ उन्हों ने उस को रोका ६ वह दोनों पुरुषोत्तम नकुल सहदेव उस प्रज्वलित अग्निकेसमान द्रोणाचार्य्यके सन्मुख जानेवाले धृष्टद्युम्नकेपीछेचले ७ उन सब महारथी क्रोध युक्त पराक्रमी शुद्ध अन्तः करण शुद्ध चलन स्वर्ग को आगे करनेवाले परस्पर बिजयाभिलाषी श्रेष्ठ युद्ध करते महा रथियोंने उत्तम लोगों के समान युद्ध किया ८।९ हे राजा पबित्र कुल कर्म वाले बुद्धिमान् उत्तम गति के अभिलाषी उन लोगों ने धर्म युद्ध किया १० वहां अधर्म युद्ध से युक्त बिनाशस्त्र वाले नहीं हुये न कर्णी, नालीक, लिप्त, वस्तिक, ११ सूची, कपिश, गवास्थि, और गजास्थिक, नाम बाण और संश्लिष्ट पूति जिष्नग नाम बाण जोकि कंटकादि युक्तहोतेहैं वह कोई नहींथे १२ उत्तम सीधे युद्धसे ऊपरके

लोकों के और कीर्त्तिको चाहते हुये उन सब ने सीधे और शुद्ध शस्त्रोंको धारण किया १३ तब आपके चारों शूर बीरों का युद्धतीनों पांडवों के साथ कठिन और सब दोषों से रहित हुआ १४ हे राजा शीघ्र अस्त्र चलाने वाला धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव से रोके हुये उन रथियों में श्रेष्ठ बीरों को देखकर द्रोणाचार्य्य के सन्मुख गया १५ फिर रोके हुये वह चारों बीर उन दोनों पुरुषोत्तमों से ऐसे अच्छे भिड़े जैसेकि दो पर्व्वतोंके मध्य में बायु टक्करखाती हैं १६ रथियों में श्रेष्ठ नकुल और सहदेव दोदो रथियों के साथ भिड़े इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के सन्मुख बर्त्तमानहुआ १७ द्रोणाचार्य्यकी ओर जाने वाले युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न को और नकुल सहदेव के साथ भिड़े हुये चारों रथियोंको देखकर १८ रुधिर पीने वाले बाणी को फैलाता हुआ दुर्य्योधन उस स्थान पर सन्मुख गया सात्यकी फिर भी शीघ्रता से उसके सन्मुख बर्त्तमान हुआ १९ वह दोनों नरोत्तम कौरव और माधव सन्मुख होकर निर्भयता से युद्ध करने लगे २० और प्रसन्न चित्त सब बाल्यावस्थाकी दशा के वृत्तान्तों को स्मरण करके बारंबार मुसकान करनेवाले और परस्पर देखने वाले हुये २१ इसके पीछे राजा दुर्य्योधन अपने चलनकी निन्दा करता बारंबार प्यारे मित्रसात्यकी को बोला २२ हेमित्र क्रोधको धिक्कार लोभको धिक्कार मोह और अमर्षता को धिक्कार क्षत्रियों के आचार को धिक्कार और बल पराक्रम को धिक्कार हो २३ हे शिनियों में श्रेष्ठ जिस स्थान पर तुम मुझको लक्ष्य करते हो और मैं तुम को करताहूं तुम सदैव मेरे प्राणों से भी प्रियतमथे और इसीप्रकार तुम्हारा मैंभीथा २४ मैं उन सब बाल्यावस्थाके वृत्तान्तोंको स्मरण करताहूं कि अब इस युद्धभूमि में हमारे वह सब व्यवहार प्राचीन होगये २५ हे यादव क्रोध और लोभ से निकृष्ट दूसरी कौनसी बातहै अब युद्ध जारी है बड़े अस्त्रोंका जाननेवाला हंसता हुआ सात्यकी तीक्ष्ण बिशिखों को उठाकर उस प्रकार की बातें करने वाले दुर्य्योधन से बोला हे राज कुमार यह सभा नहीं

हैन गुरूका स्थानहै २६। २७ जहां पर कि इकट्ठे होने वाले हम लोगोंने क्रीड़ा करी थी २८ दुर्य्योधन बोला हे शिनियों में श्रेष्ठ बाल्या वस्थामें जो हमारी क्रीड़ाथी वह कहांगई और फिर यह युद्ध कहां समय कठिनता से उल्लंघन के योग्य है २९ धनकी इच्छा और धनसे हमारा कौनसा कर्म बर्त्तमानहै जहांकि धनके लोभसे इकट्ठे होने वाले हम सब लड़तेहैं ३० वहां माधव सात्यकी उस प्रकार की बार्त्ता करने वाले उसराजासे बोला क्षत्रियोंका बंशसदैव से ऐसेही चलन वालाहै इस लोकमें गुरुओं से भी लड़तेहैं ३१हे राजा जोमैं तेरा प्याराहूं तो मुझको मारो बिलम्ब मत करो हे भरतर्षभ तेरे कारण उत्तम कर्म से मिलने वाले लोकोंको पाऊं ३२ जो तेरी शक्ति और पराक्रमहै उसको शीघ्र मुझपरदिखलामैं दूसरों के उस बड़े दुःखको देखा नहीं चाहताहूं ३३ सात्यकी प्रत्यक्ष में इस प्रकार कह कर और उत्तर देकर सावधानी से शीघ्र सन्मुख गयाऔरआत्मापर दया नहींकी ३४ हे राजा आपके पुत्रने उस आतेहुये महाबाहु सात्यकीको रोका औ रबाणोंसेढकदिया ३५इसके पीछे कौरव और माधावोंमेंश्रेष्ठ दुर्योधन और सात्यकीका युद्धऐसा जारीहुआ जैसेकि परस्पर क्रोध युक्त दो उत्तम हाथियों का घोरयुद्ध होताहै ३६ क्रोधयुक्त दुर्योधनने युद्धमें दुर्मद सात्यकीको कानतक खेंचकर छोड़े हुये दशबाणोंसे घायल किया ३७ उसीप्रकारसात्यकीने भी उसका युद्ध भूमिमेंप्रथम पचास बाणसे फिर तीससे और फिर दश बाणोंसे ढकदिया ३८ हे राजा हंसते हुये आपके पुत्रने युद्धमें कानतक खेंचे हुये तीक्ष्णधार तीसबाणों से सात्यकी को घायल किया ३९ इसके पीछे क्षुरप्र से इसके बाण समेत धनुष के दोखंडकरदिये तदनन्तर उसहस्तलाघवीसात्यकीने दूसरे दृढ़धनुष को लेकर ४० आपके पुत्र पर बाणधाराको छोड़ा मारनेकीइच्छा से उस अकस्मात आती हुई बाण धाराको ४१ राजा दुर्योधन ने बहुत प्रकार से काटा इसके पीछे मनुष्य पुकारे और वेगसेसात्यकी को ऐसे तिहत्तरबाण से पीड़ित किया ४२ जोकि सुनहरीपुंख साफ

कान तक खींचकर शीघ्र छोड़े थे सात्यकीनेधनुषपर बाणोंके चढाने वाले उसदुर्योधनके बाण संयुक्त धनुषको काटा ४३ और शीघ्रही बाणोंसे भी घायल किया हे महाराज वह कठिन घायल दुखी सात्यकीके बाणोंसे पीड़ामान दुर्योधन रथके भीतर बैठ गया कुछ काल तक बिश्राम लेकर फिर आपका पुत्र सात्यकी के सन्मुख गया ४४। ४५ और सात्यकी के रथपर बाण जालों को छोड़ता गया उसीप्रकार सात्यकी ने भी बाणों को दुर्योधन के रथ पर बारंबार फेंका और वह संकुल युद्ध बर्त्तमान हुआ ४६ वहां फेंके हुये और शरीरों पर गिरते हुये बाणोंसे ऐसे बड़े शब्द हुये जैसे कि सूखे हुये महाबनमें अग्निके शब्द होतेहैं ४७ उनदोनोंके हजारों बाणोंसे पृथ्वी ढकगई और आकाश महादुर्गम्य रूपहुआ ४८ उस स्थान पर भी आपके पुत्रको चाहताहुआकर्ण रथियोंमेंश्रेष्ठ सात्यकी को अधिक जानकर शीघ्र सन्मुख आया ४९ फिर महाबली भीमसेनने उसको नहीं सहा और बहुत शीघ्र शायकों को छोड़कर कर्णके सन्मुख गया ५० हंसते हुये कर्णने उसके तीक्ष्ण बाणोंको काट कर बाणोंसेही उसके धनुष समेत बाणोंको काटकर सारथी को मार ५१ फिर अत्यन्त क्रोध युक्त पांडवभीमसेनने गदाको लेकर युद्धमें शत्रुकी ध्वजा धनुष और सारथीकोमर्दनकिया ५२ इस के सिवाय उस महाबलीने कर्णके रथके चक्रको तोड़ा पर्व्वत के समान कंपायमान कर्ण टूटे चक्रवाले रथपर नियतहुआ ५३ घोड़ों ने एक चक्र रखने वाले रथको बहुत बिलम्ब तक ऐसे चलाया जैसे सप्त ऋषि रूपी घोड़े सूर्य्यके एक चक्रवाले रथको लेचले थे ५४ फिर असह्य कर्ण युद्धमें नाना प्रकारके बाण जाल और बहुत प्रकार के शस्त्रोंके द्वारा भीमसेनसे युद्धकरने लगा ५५ भीमसेनने कर्णसे युद्ध किया इस प्रकार उस युद्धके बर्त्तमान होने पर क्रोध से पूर्ण युधिष्ठिर ५६ नरोत्तम पांचाल औरपुरुषोत्तम मत्स्य देशियों से बोला कि जो हमारे प्राण और शिरहैं और जो हमारे महा रथी शूरबीर हैं ५७ वह सब पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे भिड़

हुयेहैं तुम सब अचेत और अज्ञानोंके समान क्यों नियतहो ५८ अब तुम वहां चलो जहां गतज्वर होकर मेरे यह सब रथी क्षत्री धर्मको आगे करके लड़ रहे हैं ५९ बिजय करनेवाले और मरने वाले होकरतुम सब लोग अभीष्टगति को पाओगे अथवा बिजय करके बड़ी दक्षिणावाले बहुत यज्ञों से पूजन करोगे ६० अथवा शरीर त्यागनेवाले तुम देव रूप होकर श्रेष्ठ लोकोंको पाओगे राजाकी आज्ञा पाकरवह युद्धाभि लाषी महारथी लोगभी ६१ क्षत्री धर्मकोआगे करके शीघ्रही द्रोणाचार्य्यके सन्मुखगये पांचालों ने एक ओर से द्रोणाचार्य्य को तीक्ष्ण धारवाले बाणों से घायल किया ६२ और भीमसेन जिनमें मुख्यहै उन सब लोगोंने भी एक ओरसे घेरलिया पांडवोंके तीन महारथी सीधेचलनेवालेहुये६३ उन नकुल सहदेव और भीमसेनने अर्जुनको पुकारा कि हे अर्जुन शीघ्र दौड़ो कौरवोंकोद्रोणाचार्य्यसे पृथककरो ६४ तदनन्तर पांचालदेशी इन अरक्षित आचार्य्यजी को मारेंगे तब अर्जुन अकस्मात कौरवोंके सन्मुख दौड़ा ६५ हे भरतबंशी फिर द्रोणाचार्य्य उन पांचालों के जिनमें कि अग्रगामीधृष्टद्युम्न था सन्मुखहुये सबबीरोंने पांचवेंदिन द्रोणाचार्य्य को मर्दन किया ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिनवति तमोऽध्यायः १९० ॥

एकसौइक्यानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने पांचालोंकाऐसा बिनाश किया जैसे कि पूर्ब्ब कालमें क्रोध युक्त इन्द्रने दानवों का नाश किया था १ हे महाराज युद्धमें द्रोणाचार्य्य के अस्त्रसे घायल पराक्रमी महारथी भयभीत नहींहुये २ और लड़तेलड़ाते महारथीपांचालऔर संजय युद्धमें द्रोणाचार्य्य के ही सन्मुखगये ३ बाणों की बर्षा करके चारों ओरसे घायल और ढकेहुये उन पांचालोंके शब्दभयके उत्पन्न करनेवाले हुये ४ महात्मा द्रोणाचार्य्य का अस्त्र प्रकट होने और युद्धमें पांचालों के घायल और मरनेपर पांडवोंमें भय प्रवृत्तहुआ ५

हे महाराज तब पांडवोंने युद्धमें घोड़े और मनुष्योंके बड़े बिनाश को देखकर बिजय की आशाको त्यागकर ऐसा भयकिया ६ कि कहीं परम अस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य्य हम सबको ऐसे नाशनहीं करदें जैसे कि चैत्र और बैशाखके महीने में भिड़ाहुआ अग्नि सूखे बनको भस्म करदेताहै ७ युद्धमें युद्ध करना तो क्या उनके देखने को भी समर्थ नहीं और धर्म का जाननेवाला अर्जुन कभी इनके साथमें लड़ेगा नहीं ८ वृद्धिमें प्रवृत्त बुद्धिमान केशवजी द्रोणाचार्य्य के शायकों से पीड़ित और भयभीत पांडवोंको देखकर अर्जुन से बोले ९ कि यह धनुष धारियोंमें श्रेष्ठसंग्रामभूमिमें धनुषका रखनेवाला किसीदशामें भी युद्धके द्वारा इन्द्र समेत देवताओं से भी बिजय करने के योग्य नहींहै १० युद्धमें शस्त्रोंके त्यागनेवाले ही होकर यह द्रोणाचार्य्य मनुष्यों से मारनेके योग्य होसक्तेहैं और शस्त्रोंसमेत इनके मारनेको किसी मनुष्य की सामर्थ्यनहींहै इसहेतुसे हे पांडवधर्म को छोड़कर बिजय में ऐसा उद्योगकरो ११ जिससे कि यह सुबर्ण मय रथवाले द्रोणाचार्य्य युद्धमें सब को नहीं मारें यह द्रोणाचार्य्य अश्वत्थामा के मरने पर युद्ध नहीं करेंगे यह मेरा संमतहै १२ कोई मनुष्य युद्धमें इस अश्वत्थामा का मरना द्रोणाचार्य्य से कहै यह सुनकर कुन्तीके पुत्र अर्जुनने इस बातको अंगीकार नहीं किया १३ परन्तु अन्य सब लोगोंने स्वीकार किया और युधिष्ठिरने भी बड़े दुःखसे स्वीकार किया हे राजा इस के पीछे महाबाहु भीमसेनने अपनी सेनामें शत्रुओं के मारने वाले घोर रूप अश्वत्थामा नाम मालव देशके राजा इन्द्रवर्म्माका हाथी था उसको गदासे मारा १४।१५ तब भीमसेनने लज्जा युक्त युद्धमें द्रोणाचार्य्य के पास जाकर उच्चस्वर से शब्द किया कि अश्वत्थामा मारागया १६ अर्थात् अश्वत्थामा नाम से प्रसिद्ध हाथी के मारे जाने के बहानेसे भीमसेनने चित्तमें छलको करके उस बातको मिथ्या कहा १७ द्रोणाचार्य्य भीमसेन के उस अत्यन्त अप्रिय बचनको सुनकर चित्तसे ऐसे निरूपाय हुये जैसे कि जलमें बालू का किनारा निरूपाय होताहै १८

अपने पुत्र के पराक्रम जाननेवाले द्रोणाचार्य्य जो यह बात सत्यहै व असत्यहै इसको ध्यान करते हुये वह मरगया इस बात को सुनकर धैर्य्य से कंपायमान नहीं हुये १६ फिर वह द्रोणाचार्य्य एक क्षण मेंही सचेत होकर और पुत्रको शत्रुओं से न सहने के योग्य समझ कर बिश्वास युक्त हुये २० उस मारने के अभिलाषी ने अपने काल रूप धृष्टद्युम्न को सन्मुख होकर एक हजार तीक्ष्ण बाणों से ढक दिया २१ फिर अंगिरा ऋषिके दिये हुये दूसरे दिव्य धनुष को और ब्रह्मदण्ड के समान बाणों को लेकर धृष्टद्युम्न से युद्धकिया २२ अर्थात् उसको बड़ी बाणों की बर्षासे ढक दिया और बड़े क्रोध युक्त होकर धृष्टद्युम्न को घायल किया २३ अर्थात् द्रोणाचार्य्यने शायकों से उसके बाणोंके सैकड़ों खण्ड करदिये और तीक्ष्ण धार बाणोंसे ध्वजा धनुष और सारथी को भीमारा २४ धृष्टद्युम्न ने हंस कर दूसरे धनुष को लेकर उनको तीक्ष्ण बाणोंसे छातीपर घायल किया युद्धमें व्याकुलता से रहित अत्यन्त घायल उस बड़े धनुष धारीने तीक्ष्ण धारभल्ल से फिर उसके धनुष को काटा २६ फिर अजेय द्रोणाचार्य्य ने सिवाय गदा और खड्गके धनुष समेत जो उसके बाणों के लक्ष्य हुये उन सबको काटा२७ हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र क्रोध युक्त महा उग्ररूपजीवन के नाश करने वाले द्रोणाचार्य्य ने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे घायल किया २८ ब्रह्मअस्त्रके मन्त्र को पढ़ने वाले बड़े साहसी महारथी धृष्टद्युम्नने उसके रथके घोड़ों को अपने रथके घोड़ोंसे मिलादिया २६ हे भरतर्षभ वेगवान और बायुके समान शीघ्रगामी वह कपोतबर्ण आरक्त घोड़े बहुत शोभाय मान हुये ३० जैसे कि बर्षा ऋतुमें बिजली समेत गर्जते बादल होतेहैं हे महाराज उसी प्रकार युद्धके शिर पर मिले हुये घोड़े भी शोभायमान हुये ३१ उस बड़े साहसी ब्राह्मण ने धृष्टद्युम्न के ईशाबन्ध रथबन्ध और चक्रबन्धकोबिनाश किया ३२ उस टूटे धनुष ध्वजाऔर मृतक सारथी वाले बीर धृष्टद्युम्नने बड़ी आपत्ति को प्राप्त होकर गदा को हाथमेंलिया ३३ क्रोधयुक्त सत्य

पराक्रमी महारथी द्रोणाचार्य्यने बिशिख नाम तीक्ष्ण बाणोंसे उसकी फेंकी हुई उस गदाको तोड़ डाला ३४ फिर नरोत्तम धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्य के बाणोंसे टूटी हुई उसगदाको देख कर निर्मल खड्ग को और सौचन्द्रमा रखनेवालीढालको हाथमेंलिया ३५ उस दशावाले धृष्टद्युम्नने समय के बर्त्तमानहोनेपर आचार्य्योंमें श्रेष्ठ महात्मा द्रोणाचार्य्यके मारनेको निस्संदेह अच्छामाना ३६ तदनन्तर अपनेरथकी नीढ़पर नियत धृष्टद्युम्न मारकी ने इच्छासे खड्ग को और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको उठाकरगया ३७ कठिनता से करने केयोग्य कर्मको करना चाहतेहुये महारथी धृष्टद्युम्नने युद्धमें भारद्वाज द्रोणाचार्य्यकी छातीको छेदनाचाहा ३८ और युग के मध्य युगके बन्धन और घोड़ोंकी जंघार्धके मध्यमें नियतहुआ उस समय सेनाके लोगोंने उसकी प्रशंसाकरी ३९ युगके कोट और रक्त घोड़ोंके ऊपर नियतहुये उस धृष्टद्युम्नका अवकाश द्रोणाचार्य्यने नहींदेखा वह आश्चर्य्य साहुआ ४० युद्धमें द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न कायुद्ध ऐसे प्रकारका हुआ जैसेकि मांसके अभिलाषी शीघ्र घूमनेवाले बाजका होताहै ४१ रक्तघोड़ोंको बचातेहुये द्रोणाचार्य्यने रथशक्तीसे उसके उन सब प्रत्येक कपोतबर्ण घोड़ोंकोमारा ४२ हेराजा धृष्टद्युम्नके वह मरेहुये घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े तबरक्त बर्ण घोड़े उस रथ बन्धनसे छूटे ४३ उस शूरबीरों में श्रेष्ठ द्रुपदके पुत्र महारथी धृष्टद्युम्नने उत्तम ब्राह्मणके हाथसेमारेहुये उनघोड़ों को देखकरक्षमानहींकी ४४ हेराजावह खड्ग धारियोंमें श्रेष्ठ रथसे बिहीन खड्गकोलेकर द्रोणाचार्य्यके सन्मुख ऐसे आनकर टूटाजैसे किसर्पके सन्मुखगरुड़ आनकर टूटताहै ४५ हेराजा भारद्वाजकेमारने के अभिलाषी धृष्टद्युम्नका रूप ऐसा शोभाय मानहुआ जैसे कि पूर्वसमयमें हिरण्य कश्यपके मारनेमें नृसिंहअवतार बिष्णु का रूपथा ४६ हेकौरव्य तब युद्धमें घूमतेहुये उस धृष्टद्युम्नने नानाप्रकार से अत्यन्त उत्तम इक्कीसमार्गोंको दिखलाया ४७ खड्ग और ढाल धारण करनेवाले उस धृष्टद्युम्नने भ्रांत, उद्भ्रान्त आनिद्ध,

आप्लुत, प्रसृत, सृत, परिवृत्त, निवृत्त, संपात, समुदीर्ण, नाममार्गोंकोदिखलाया ४९ द्रोणाचार्य्यके नाशकी इच्छासे युद्धमें मार्गोंको दिखलाताघूमा उसखड्गधारी धृष्टद्युम्न के उन विचित्र मार्गोंको घूमते हुये ५० आकाशमें इकट्ठे होनेवाले देवताओंने और युद्धमें शूरबीरोंने आश्चर्य्यमाना इसके पीछे द्रोणाचार्य्यने हजार बाणोंसे ढाल और खड्गकोगिराया ५१ धृष्टद्युम्नके ढाल औरखड्गके टूटनेपर उसब्राह्मणनेसमीपसे साधारण युद्धकरनेके योग्य वैतस्तिकनाम बाण ५२ जो कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्य, अर्जुन, कर्ण, प्रद्युम्न, सात्यकी और अभिमन्यु के सिवाय दूसरों के पास नहींथे उस प्रकारके दृढ़ और बड़े बाणोंको लेकर धनुषपर चढ़ाया ५३।५४ और सन्मुख वर्त्तमानपुत्रके समान धृष्टद्युम्नके मारनेके इच्छावान आचार्य्यने उस बाणको छोड़नाचाहा सात्यकीने दश तीक्ष्ण बाणोंसे उसको काटकर ५५ आपके पुत्र और महात्माओं के देखते आचार्य्योंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजीसे ग्रसेहुये धृष्टद्युम्नको छुड़ाया ५६ हे भरतवंशी द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और कर्णके मध्यमें वर्त्तमान और रथ मार्गोंमें घूमनेवाले सत्य पराक्रमी सात्यकीको ५७ महात्मा अर्जुन और श्रीकृष्णजीनेदेखा और बहुतश्रेष्ठ धन्यहै धन्यहै ऐसाकहकर उनदोनोंनेउसदिव्य अस्त्रोंके दूरकरनेवाले अजेय सात्यकीको प्रशंसाकरी ५८ इसकेपीछे अर्जुन और श्रीकृष्णजीदोनों द्रोणाचार्य्यके पासगये और वहांपहुंचकर अर्जुनने श्रीकृष्णजीसे कहा हे केशवजी देखो कि गुरूजीके उत्तम रथोंके मध्यमेंक्रीड़ाकरता ६० शत्रुके बीरोंका मारनेवालामाधव सात्यकी मुझको फिर प्रसन्नकरता है माद्रीकेपुत्रनकुल सहदेवभीमसेन औरयुधिष्ठिरकोभी प्रसन्नकरताहै ६१ जोवृष्णियोंकीकीर्त्ति का बढ़ानेवाला युद्धकीशिक्षामेंपूर्ण महारथियोंकेपास क्रीड़ा करताहुआ घूमताहै ६२ उस सात्यकीको यह आश्चर्य्ययुक्तसिद्धऔर सेनाकेलोग युद्धमें अजेय देखकरधन्य २ शब्दों से उसको प्रसन्नकरतेहैं औरसब शूरबीरोंनेभी दोनोंओरसेकर्मोंके वर्णनद्वाराबड़ीप्रशंसा करी ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतीपरिएकनवतितमोऽध्यायः १९१ ॥

एकसौबानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि क्रोधयुक्त दुर्योधनादिकने यादव सात्यकी के उस कर्मको देखकर सब ओरसे शीघ्रही सात्यकी को रोका १ हे श्रेष्ठ कृपाचार्य्य कर्ण और आपके पुत्रोंने युद्धमें शीघ्रतासे सात्यकी को सन्मुख जाकर तीक्ष्णधार बाणोंसे घायल किया २ इसकेपीछे राजा युधिष्ठिर नकुल सहदेव और पराक्रमी भीमसेन ने सात्यकी को चारों ओरसे रक्षित किया ३ कर्ण महारथी कृपाचार्य्य और उन दुर्योधनादिकने बाणोंकी वर्षाकेद्वारा सात्यकी को चारों ओर से रोका ४ उन महारथियों से युद्ध करते सात्यकीने उस घोररूप उठी हुई वर्षाको अकस्मात् रोका ५ महात्माओं के चलाये हुये उन दिव्यअस्त्रों को बड़े युद्धमें बिधिके अनुसार अपने दिव्यअस्त्रों से रोका ६ उस राजाओंके युद्धमें वह संग्रामभूमि ऐसी कठिन बिदित हुई जैसे कि पूर्व्व समय में उन पशुओं के मारनेवाले क्रोध युक्त रुद्रदेवताकी भूमि कठिन होतीहै ७ हाथ शिर धनुष और धनुष से काटे हुये छत्रऔर चामरोंके समूहोंसे ८ और टूटे चक्रवाले रथ गिरी हुई बड़ी ध्वजा और मृतक शूरबीर सवारोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई ९ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ धृतराष्ट्र बाणोंके पातसे मरे हुये वह शूरबीर अपूर्व्व युद्धमें अनेक प्रकारकी चेष्टाओंको करते हुये दिखाई पड़े १० वहां इस प्रकार देवासुर संग्रामके समान घोर युद्धके बर्त्तमान होने पर धर्मराज युधिष्ठिर क्षत्रियों से बोले ११ हे सावधान महारथियो द्रोणाचार्य्य के सन्मुख जावो यह बीर धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्यके साथ भिड़ा हुआहै १२ और सामर्थ्यके अनुसार भारद्वाजके मारने में उपाय करताहै इसबड़े युद्धमें हमको ऐसे लक्षण दिखाई देतेहैं १३ कि अब क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न युद्धमें द्रोणाचार्य्यको मारेगा तुम और वह सबसाथहोकर द्रोणाचार्य्य से युद्ध करो १४ युधिष्ठिरकी आज्ञा पाकर सृंजयोंके सावधान महारथी द्रोणाचार्य्यके मारने की इच्छासे सन्मुखगये १५ मरणाअवश्यहै

ऐसा निश्चय करनेवाले महारथी द्रोणाचार्य्य बेगसे उन सबआने वाले महारथियोंके सन्मुख बर्त्तमान हुये १६ उससत्य प्रतिज्ञ के चढ़ाई करनेपर पृथ्वी कंपायमान हुई और सेनाको भयभीत करने वालीबायुनिर्घातों समेतचलीं १७ औरसूर्य्यसे निकलनेवाली बड़ी उल्का दोनों सेनाओंको प्रकाश करती महाभयों कोप्रकट करती गिरी १८ हे श्रेष्ठधृतराष्ट्र द्रोणाचार्य्यके शस्त्र अग्निरूप हुये रथोंने अत्यन्तशब्द किये और घोड़ोंनेअश्रुपातोंकोछोड़ा १९ महारथीद्रोणाचार्य्य भी तेजसे रहित मुख हुये और उनके बाम नेत्र और भुजभी फड़के २०और धृष्टद्युम्नको युद्धमें आगेदेखकरउदासचित्तहुये और ब्रह्मबादीऋषियोंका स्वर्ग मिलनेके लिये २१ अच्छेयुद्धसे प्राणों को छोड़नाचाहा तदनन्तर द्रुपदकी सेनाओंसे चारोंओरको घिरेहुये २२ द्रोणाचार्य्य क्षत्रियोंकेसमूहोंकोभस्मकरतेयुद्धमेंघूमनेलगे उसशत्रुओं के मर्द्दन करनेवाले द्रोणाचार्य्यने बीसहजार क्षत्रियोंको मारकर २३ तीक्ष्ण बिशिखों से एकलाख हाथियोंको मारा और बड़ी साबधानी से निर्धूम अग्निके समान युद्धमें नियत होकर २४ क्षत्रियोंके नाश के अर्थ परमअस्त्रके प्रयोग में प्रवृत्तहुये फिरपराक्रमी भीमसेन शीघ्रही उस बिरथ और टूटे बड़े अस्त्रवाले अत्यन्त व्याकुल महात्मा धृष्टद्युम्न के पासगया उसके पीछे शत्रुमर्द्दन करनेवाला भीमसेन धृष्टद्युम्नकोअपनेरथपरसवारकरके २५।२६बाणप्रहारीद्रोणाचार्य्य को समीप देखकर बोला कि यहांतेरे सिवाय दूसरा महापुरुष आचार्य्यजी से लड़ने को उत्साह नहीं करताहै २७ इनके मारने में शीघ्रताकरो यह तुझपर भार रक्खा हुआहै इसप्रकारके बचन को सुनकर उस महाबाहुने सब भारके उठानेवाले २८ शस्त्रोंमें श्रेष्ठ अत्यन्त दृढ़ धनुषको शीघ्र दौड़करलिया क्रोधयुक्त और युद्धमें दुःख से हटाने के योग्य द्रोणाचार्य्यके रोकनेके अभिलाषी बाणों को चलाते धृष्टद्युम्नने बाणों की बर्षा से ढकदिया उन श्रेष्ठ और युद्धको शोभादेनेवालेक्रोधयुक्त दोनोंने परस्पर रोका २९।३० औरब्राह्मण्य आदिक नानाप्रकार के दिव्यअस्त्रों को प्रकटकिया हे महाराज

उसने युद्धमें बड़े अस्त्रों से द्रोणाचार्य्यको ढकदिया ३१ धृष्टद्युम्नने द्रोणाचार्य्यके सबअस्त्रों को दूरकरके बशाती शिवी वाह्लीक और कौरव ३२ इन सब रक्षकोंसमेत द्रोणाचार्य्यकोयुद्धमें घायलकिया हे राजा इसप्रकारसे वह अजेय धृष्टद्युम्न चारों ओर को बाणों के जालोंसे दिशाओं को ढकता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि किरणोंसे सूर्य्य शोभित होताहै द्रोणाचार्य्यने फिरउसके धनुषको काट शिलीमुख बाणों से उसको छेदकर ३३।३४ मर्मोंको घायल किया तब उसने बड़ी पीड़ाको पाया ३५ पांचालोंके बीसहजार नरोत्तमों ने उसरीतिसे युद्धमें घूमनेवाले द्रोणाचार्य्य को सब ओरसे बाणों करकेढका हमने उन बाणोंसे चितेहुये महारथी द्रोणाचार्य्यको ऐसे नहीं देखा ३६ जैसे कि बर्षाऋतुमें बादलोंसे ढकेहुये सूर्य्यको नहीं देखतेहैं इसके पीछे शत्रुसंतापी महारथी द्रोणाचार्य्य ने पांचालदेशियोंके उन बाण समूहों को इधर उधर करके उन पांचालदेशी शूरोंके मारनेके अर्थ ब्रह्मअस्त्रको प्रकटकिया ३७। ३८ फिर द्रोणाचार्य्यजी सब सेनाके मनुष्यों को मारते शोभायमान हुये और उस बड़े युद्धमें पांचालों के भी बीरों को गिराया ३९ इसीप्रकार परिघाओं के रूप सुबर्णसे अलंकृत भुजाओं को गिराया युद्धमें द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारेहुये वह राजालोग ४० पृथ्वीपर ऐसेगिरे जैसे कि बायु से ताड़ित वृक्ष गिरतेहैं हे भरतबंशी गिरते हुये हाथी औरघोड़ोंसे ४१ पृथ्वीमहादुर्गममांस औररुधिरकी कीचरखनेवाली हुई पांचालदेशियों के बीसहजार रथसमूहों को मारकर ४२ निर्धूम अग्निकेसमान प्रकाशित द्रोणाचार्य्यजीयुद्धमें नियत हुये फिर उसी प्रकारक्रोधयुक्तप्रतापवान् द्रोणाचार्य्यने४३भल्लसेबसुदानके शिर को शरीर से जुदाकिया फिर पांचसौमत्स्यदेशियोंको और छःहजार संजियों को ४४ और दशहजार हाथियों को मारकर दशहजार घोड़ों को भी मारा क्षत्रियों के नाशके अर्थ द्रोणाचार्य्यको नियतदेखकर शीघ्रही वह ऋषिलोग पासआये जिनके अग्रगामी अग्निदेवता थे अर्थात् बिश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम ४५।४६ वशिष्ठ,

कश्यप, अत्रि यह सब ब्रह्मलोक में लेजानेके इच्छावान् सिकता, पृष्णी, गर्ग कुलवाले और सूर्य्यकी किरणोंके पान करनेवाले बालखिल्य ऋषि ४७ भृगु और अंगिराबंशी ऋषि और जो अन्य २ पवित्रात्मा ऋषि और महर्षी हैं वह सब आकर इन युद्ध के शोभा देनेवाले द्रोणाचार्य्य से बोले ४८ कि तुमने अधर्म से युद्ध किया तुम्हारे मरण का समय है हे द्रोणाचार्य्य युद्ध में शस्त्रों को रखकर सन्मुख नियत हुये हमलोगों को देखो इससे आगे फिर निर्दय कर्म करने के योग्य नहीं हो मुख्य करके वेद और वेदाङ्गके जाननेवाले सच्चे धर्ममें प्रीति रखनेवाले ४९ । ५० तुझ ब्राह्मण का यह कर्म योग्य नहींहै हे सफल बाणवाले शस्त्रोंको त्यागकर सनातन मार्ग पर नियतहो ५१ अब नरलोक में तेरे रहने का समय समाप्त हुआ तुमने पृथ्वीपर अस्त्रों के न जाननेवाले मनुष्यों को ब्रह्मअस्त्रसे भस्मीभूत किया ५२ हे ब्राह्मण जो तुमने ऐसा कर्म किया वह अच्छा नहीं किया हे द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण युद्ध में शस्त्रको त्यागकरो बिलम्ब न करो ५३ हे द्विजवर्य्य तुम फिर पापकर्मको नहीं करोगे वह द्रोणाचार्य्य उन ऋषियों के उस बचन को और भीमसेन के कहे हुये वचनको सुनकर ५४ युद्ध में धृष्टद्युम्नको देखकर उदास हुये फिर व्यथित और दह्यमान होकर द्रोणाचार्य्य ने कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर से ५५ अपनेपुत्रके जीवने और मरनेके वृत्तान्त को पूछा द्रोणाचार्य्य को बुद्धिमें यह दृढ़ बिश्वासथा कि युधिष्ठिर ५६ किसी दशामें त्रिलोकी केभी राज्यके निमित्त मिथ्यानहीं बोलेगा इसीहेतु सेउस द्विजवर्य्यने उसीसे पूछा दूसरेसे नहीं पूछा ५७ बाल्यावस्थासे लेकर इससमय तक उस पांडव युधिष्ठिर में सत्य बोलनेकी आशा रही इसकेपीछे पृथ्वीसे पांडवोंको रहितकरनेके अभिलाषी शूरबीरों के स्वामी ५८ द्रोणाचार्य्य को पीड़ामानजानकर गोविन्दजी धर्मराजसे बोले कि जो क्रोधयुक्त द्रोणाचार्य्य आधे दिन भी युद्ध करेगा तो मैं सत्य२ कहताहूं कि तेरी सबसेना नाश होजायगी सो आप हम सबलोगों को द्रोणाचार्य्य से रक्षित करो इस स्थानपर सत्य

से मिथ्या बचनही श्रेष्ठ है ५९ । ६० जीवन के निमित्त मिथ्या बोलना मिथ्याके पापों से स्पर्श नहीं कियाजाता है स्त्रियोंमें बिवाहोंमें और गौवोंके भोजनोंमें और ब्राह्मणों के प्रिय करनेमें मिथ्या कहनेका पातक नहीं है उन दोनोंके इसप्रकार वार्त्तालाप करनेपर भीमसेन महात्मा द्रोणाचार्य्य के मारने के उपाय को सुनकर इस बचन को बोले हे महाराज तेरी सेना के मझानेवाले मालवेन्द्र राजाका हाथी ६१।६२ जोकि ऐरावत के समान अश्वत्थामा नामसे प्रसिद्धथा वह युद्धमेंपराक्रम करके मारागयाथा तब मैंने द्रोणाचार्य्य सेकहा था कि हे ब्राह्मणअश्वत्थामा मारागयाहै इससे तुमभी युद्धसे लौटो परन्तु उस पुरुषोत्तमने मेरेकहनेपर श्रद्धा और विश्वास नहीं किया ६३।६४सोतुम विजयाभिलाषीहोकर गोविन्दजीके बचनोंको अंगीकारकरो हे राजा आप द्रोणाचार्य्यसे अश्वत्थामाको मराहुआ कहो६५वह उत्तम ब्राह्मण तुम्हारे इसबचनकेकहनेपर फिर कदापि युद्धनहींकरेंगे हे राजा आप इसलोक में सत्यवक्ता प्रसिद्धहो ६६ हे महाराज उसके उसबचनको सुनकर और श्रीकृष्णजीके बचनोंसे चलायमान होकर होतव्यताके बशीभूतहोकर कहना आरंभकिया ६७मिथ्यापनेके बचनोंमें डूबे बिजयमें प्रवृत्तचित्त युधिष्ठिर हाथीके शब्दको गुप्तकरके अश्वत्थामा हाथीमारागया यह शब्दबोला प्रथम उसका रथ पृथ्वीसे चारउंगल ऊंचारहताथा उस बचनके कहतेही उसके घोड़ोंने पृथ्वीको स्पर्शकिया ६८। ६९ महारथी द्रोणाचार्य्य युधिष्ठिर के उसबचनको सुनकर पुत्रके शोकसे दुःखी जीवनसे निराशहुये७०ऋषियोंके बचनोंसे अपनेको महात्मापाण्डवोंकाअपराधी मानतेहुये द्रोणाचार्य्य अपने पुत्रको मराहुआ सुनकर औरधृष्टद्युम्नको देखकर व्याकुल और अत्यन्त अचेतहोगये हे शत्रुबिजयी राजा धृतराष्ट्र फिर पूर्व्वके समान युद्धनहीं करसके ७१।७२॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिद्विनवतितमोऽध्यायः १९२ ॥

एकसौतिरानबेका अध्याय॥

संजयबोले कि राजा पांचालका पुत्र धृष्टद्युम्न उन द्रोणाचार्य्य को अत्यन्त व्याकुल और शोक से बिदीर्ण चित्त देखकर दौड़ा १ जो कि राजा द्रुपदने बड़ेयज्ञ में पूजन करके द्रोणाचार्य्यकेनाशके निमित्त ज्वलितरूप अग्नि से प्राप्त कियाथा २ द्रोणाचार्य्यके मारनेके अभिलाषी बड़ी अग्निके समान प्रज्वलित उस धृष्टद्युम्नने बादल के समान शब्दायमान घोर और दृढ़ प्रत्यंचावाले अजर दिव्य और विजय करनेवाले धनुषको और बिषैले सर्पकी समान अग्निरूप बाणको लेकर ३ उस धनुषपर चढ़ाया ४धनुषके मंडल और प्रत्यंचा के मध्यमें उस बाणका रूप ऐसेप्रकारका हुआ जैसे कि मण्डल रखनेवाले प्रकाशमान सूर्य्यका रूप बादलों के मध्यमें होता है ५ सेनाके लोगोंने धृष्टद्युम्नके उठायेहुये उस ज्वलितरूप धनुषको देखकर समयका अन्त होनाजाना ६ प्रतापवान्भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने उसके चढ़ाये हुये उस बाणको देखकर शरीरके अन्त समय को जाना ७ हे राजेन्द्र इसके पीछे आचार्य्यजो उस बाणके हटानेके लिये बड़े उपाय में नियतहुये परन्तु इन महात्माजोकेअस्त्र प्रकट नहीं हुये ८ बाणों को छोड़ते हुये उनके चारदिन और एक रात्रि व्यतीत हुये और दिनके तीसरे पहरमेंउनकेबाणों को नष्टता होगई ९ पुत्र के शोकसे पीड़ामान वह आचार्य्यजी बाणों की बिनाशताको पाकर नानाप्रकारके दिव्यअस्त्रों की अप्रसन्नतासे १० और ऋषियों के बचनों की प्रेरणासेअस्त्रोंके त्यागने को उत्सुकहुये और पूर्व्वके समान क्रोधयुक्त होकर नहीं लड़े ११ हे राजा इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन द्रोणाचार्य्य के रथको पकड़कर धीरेपने से यह बचन बोले १२ कि प्रत्यक्ष है कि अपनेही कर्म में संतोष न करनेवाले शिक्षायुक्त ब्रह्मबन्धु आपजो युद्धनहीं करते तो क्षत्रियों के समूहोंका नाशनहीं होता १३ सबजीवोंके मध्यमेंकिसी को दुःख न देनाही धर्म कहाहै उसके मूलरूप ब्राह्मण हैं औरआप

तो ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ हैं १४ हेब्राह्मणके पुत्र और धनकी इच्छा से चांडाल और अज्ञानीके समान अपनी अज्ञानतासेम्लेच्छोंके समूह और अन्य २ प्रकार के क्षत्रिय समूहोंको मारकर १५ धर्म न जाननेवालेके समानदुष्टकर्म में प्रवृत्त होकर तुमएक पुत्रके निमित्त अपने कर्मपर नियत बहुत क्षत्रियों को मारकर क्यों नहीं लज्जायुक्त होतेहो १६ जिसके अर्थ अस्त्रों को लेकर औरजिसको निमित्त मानकर जीवतेहो अब पीछेकी ओरसे नहीं जानाहुआ वह आपका पुत्र पृथ्वीपर पड़ा सोता है धर्मराजका वह बचन मिथ्या और संदिग्ध मानने के योग्य नहीं है भीमसेनके इन बचनों को सुनकर धर्मात्मा द्रोणाचार्य्य उस धनुष को छोड़कर सब अस्त्रों के त्यागने की इच्छासे बोले हे बड़े धनुषधारी कर्ण कृपाचार्य्य दुर्य्योधन १९ युद्धमेंउपायकरोयही मैं बारंबारकहताहूं पांडवोंसे तुम्हारा कल्याण होय मैंअब शस्त्रोंको त्याग करताहूं २० हेमहाराज वहां अश्वत्थामा को भी पुकारा औरयुद्धमें शस्त्रोंको रथकेउपस्थपर रखकर २१ सब जीवमात्रको अभयतादी औरयोगमेंप्राप्तहुये उसकेपीछे प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने इनके उस अवकाशको जानकर २२ उस घोरधनुष को बाण समेत रथपररखकर खड्ग को ले अपने रथसे कूदकर अकस्मात् द्रोणाचार्य्य के पासगया २३ धृष्टद्युम्नके आधीनतामेंबर्त्तमान उसदशावाले द्रोणाचार्य्यको देखकर सब संसारके गुप्त और प्रकट जीव हाहाकार करने वाले हुये २४ उन्होंने बड़ाहाहा कार करके कहा कि आश्चर्य्य और धिक्कारहै कि द्रोणाचार्य्यभी शस्त्रोंको रखकर समुद्रसे प्रवाहमें प्रविष्ट हुये २५ बड़े तपस्वी ज्योतिरूप द्रोणाचार्य्यनेभी इसप्रकारकहकर औरयोगमें नियतहोकरप्राचीनपुरुषशरीररूपीपुरीमेंनिवासकरनेवालेपरब्रह्मकोमनसेप्राप्तकिया २६ मुखको कुछ ऊंचाकर छातीको आगेसे रोक नेत्रों को बन्दकर सतोगुण में नियत हृदय में धारणाको धारण करके २७ ज्योतिरूप महातपस्वी ओम् इस अविनाशी और श्रेष्ठतर एकाक्षर प्रभु देवताओंके ईश्वरको ध्यानकरके २८ वह आचार्य्यजी साक्षात्

सत्पुरुषोंसे दुष्प्रप्य स्वर्गको चढ़े उस दशावालेद्रोणाचार्य्यके होने पर हमारी बुद्धिमेंआया कि दो सूर्य्यहैं २९ प्रकाशोंसे पूर्ण आकाश एक से रूपका हुआ और भारद्वाजरूपी सूर्य्य उस सूर्य्यके प्रकाश में प्राप्त हुआ ३० फिर वह ज्योति पलमात्रमेंही गुप्त होगई तब अत्यन्त प्रसन्न मन देवताओंके किलकिला शब्द हुये ३१ ब्रह्मलोकमें द्रोणाचार्य्यके जाने और धृष्टद्युम्न के प्रसन्न होनेपर हम पांचमनुष्य योनियोंने ३२ उसपरमगतिपानेवाले योगीमहात्माको देखा मैं पांडव अर्जुन, भारद्वाज का पुत्र अश्वत्थामा, यादव वासुदेवजी, और धर्मपुत्र युधिष्ठिर इन पांचों के सिवाय अन्य सब लोगोंमें से किसीने भी उन बुद्धिमान् योगसे युक्त जाते हुये भारद्वाजजीको महिमाको नहीं जाना वहब्रह्मलोक बड़ादिव्य देवताओं से भी गुप्त और सब से परहैं ३३ परमगति प्राप्त करने वाले और उत्तम ऋषियों समेत योगमें नियत होकर ब्रह्मलोक को जाते उन शत्रुविजयी द्रोणाचार्य्य जी को अज्ञानीलोगोंने नहीं देखा फिर सब जीवों से धिक्कारी पाये हुये धृष्टद्युम्नने उस शस्त्र त्यागी और बाण समूहों से पीड़ित अंग रुधिर डालनेवाले द्रोणाचार्य्य के शरीर को ३६।३७ पकड़ लिया उस निर्जीव देह और कुछ न बोलनेवाले के शिरसमेत मस्तकको पकड़कर ३८ खड्गकेद्वारा शरीर से पृथक् किया भारद्वाज के गिराने पर बड़ी प्रसन्नता में युक्त ३९ खड्ग को घुमाते धृष्टद्युम्न ने सिंहनाद किया वह द्रोणाचार्य्यजी कानतक श्वेत बाल युक्त अवस्था में पिच्चासी वर्ष और प्रत्यक्षनें सोलह वर्ष के से विदित होते थे ४० हे राजा वह तेरेहीकारण से युद्धमें सोलह वर्ष की अवस्थावाले के समान युद्धमें घूमने वाले हुये उनके मारनेके समय महाबाहु कुन्तीका पुत्र अर्जुनबोला ४१ हे द्रुपदके पुत्र इस जीतते हुये आचार्य्य को मतमरो और सब सेनाके लोगभी पुकारे कि अवध्य हैं अवध्यहैं ४२ और दयावान् अर्जुन पुकार कर उसकी ओर को चला अर्जुन के और उन सब राजाओं के पुकारने पर ४३ धृष्टद्युम्न ने नरोत्तम द्रोणाचार्य्यको

रथ शय्यापर मारा फिररुधिर से भरे गात्र वह द्रोणाचार्य्य रथसे पृथ्वीपर गिर पड़े ४४ और फिर वह अजेय रक्त वर्णवाले सूर्य्यके समान वर्त्तमानहुये इसप्रकार सेनाके लोगोंने युद्ध में उस मृतक कोदेखा ४५ हे राजाफिर बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने भारद्वाज के शिरको लेकर आपके पुत्रोंके सन्मुख फेंकदिया ४६ आपके शूरबीर भारद्वाजके शिरको देखकर भागनेमें प्रवृत्त चित्तहोकरसबदिशाओं को भागे ४७ हेराजा जब द्रोणाचार्य्य स्वर्गमें नियत होकर नक्षत्र मार्गमें प्रवेशकर गये तब मैंने द्रोणाचार्य्यको मराहुआ देखा ४८ सत्यवतीके पुत्रव्यास ऋषिकी क्रिया से ज्वलितरूप निर्धूम अग्नि केसमान ४९ स्वर्गको प्राप्तकरके जानेवाले बड़ेतेजस्वी द्रोणाचार्य्य कोदेखा द्रोणाचार्य्यके मरनेपर उत्साहसे रहित कौरव पांडव और संजय ५० बड़ेवेगसेदौड़े तबसेनाछिन्नभिन्नहोगई जिनकेकि बहुतसे मनुष्य मारेगयेथे वह तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे नाशहुये ५१ और आपके शूरबीर द्रोणाचार्यके मरनेपर पराजय और परलोकके बड़े भारी भयको पाकर निर्जीवोंके समानहुये ५२ दोनोंलोकों सेरहित और भारद्वाजके शरीरको चाहते राजाओंने मनसेधैर्यको नहींपाया ५३ परन्तु असंख्य धड़ों से पूरित युद्धभूमिमें न जासके हेमहाराज फिर पांडवोंने बिजय को पाकर और परलोकमें बड़े यशको प्राप्तकर के५४ बाणशंखोंकेशब्दोंसमेत बड़ेसिंहनादोंकोकियाइसकेपीछे भीम सेन और धृष्टद्युम्न ५५ परस्पर मिलकर सेना में दिखाई पड़े तब भीमसेन शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न से बोलेकि ५६ हेपर्षतकेपौत्र युद्धमें पापीकर्ण और दुर्योधनके मरनेपर फिरमैं तुझविजयीसेमिलूंगा ५७ बड़ी प्रसन्नतासे युक्त पांडव भीमसेन ने इतना कह कर भुजाओं के शब्दोंसे पृथ्वीको कंपित किया ५८ युद्धमें उसके शब्द से भयभीत और भागने में प्रवृत्त चित्त आपके शूरबीर क्षत्री धर्म को छोड़ कर भागे ५९ हे राजा तब पांडव लोग विजय को पाकर प्रसन्न हुये और युद्धमें शत्रुओंका नाश करके बड़ा आनन्द पाया ६०॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्रोणबधेशतोपरिचिनवतितमोऽध्यायः १९३॥

एकसौचौरानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा द्रोणाचार्य्य के मरने पर कौरव लोग शस्त्रोंसे पीड़ामान और जिनके बड़े बीर मारे गये पृथ्वीपर पड़ेहुये शोकसे पूर्ण हुये १ और शत्रुओंको उदीर्ण अर्थात् उत्साह युक्त जान कर बारंबार कंपायमान अश्रुपातोंसे पूर्णनेत्र भयभीत होकर दुखी हुये २ फिर उत्साहसे रहित मूर्च्छासे म्लान लोगोंने बड़े पीड़ित शब्दके साथ आपके पुत्रको ऐसे मध्यवर्त्ती किया ३ जैसे कि पूर्ब्ब समयमें हिरण्याक्षके मरनेपर कंपायमान रजस्वलादशोंदिशाओंको देखने वाली अश्रुपातोंसेपूर्ण दैत्योंकी स्त्रियोंने कियाथा ४ नीचमृग के समान भयभीत और उन लोगोंसे संयुक्तवह आपका पुत्र राजा दुर्योधन नियत होनेको समर्थ नहीं हुआ ५ हे भरतबंशोक्षुधातृषा से पीड़ित और म्लान चित्त वह आपके शूरबीर ऐसे उदास होगये जैसे कि सूर्य्यसे अत्यन्त तप्त हुये मनुष्य होतेहैं ६ जैसेकि सूर्य्यका गिरना समुद्र का सूखना मेरुपर्ब्बत का चलायमान होना और इन्द्रका पराजय होना होय ७ उसी प्रकार भारद्वाज द्रोणाचार्य्यके उस असह्य मरकर गिरनेको देखकर अत्यन्त भयभीत कौरव लोग भयकरके भागे ८ भयसे पूर्ण गान्धारका राजा शकुनी स्वर्ण मयी रथवाले द्रोणाचार्य्य को मरा हुआ सुनकर भयभीत रथियों समेत भागा ९ सूतका पुत्र कर्णभी उस वेगवान् भागी हुई पताका धारी बड़ी सेनाकोसाथ लेकर भयसे हट गया १० मद्रदेशियों कास्वामी शल्य भी रथ हाथी और घोड़ोंसे पूर्ण अपनी सेनाको आगे करके देखता हुआ हट गया ११ और जिसके बहुतसे बड़ेबड़ेशूरबीर मारे गये उस सेनासे युक्त कृपाचार्य्यजी बड़ा खेदहै बड़ा खेदहै यह कहते हुये चले गये १२ हे राजा शेष बचेहुये भोजबंशी कलिङ्ग देशी आरट्ट देशी और बाल्हिकों की सेना से युक्तकृतवर्मा अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से चले गये १३ और पदातियों के समूहोंसे युक्त भय भीत और भयसे पीड़ितउलूक भी वहां गिराये

हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर भागा १४ दर्शनीय तरुण अवस्था युव राज पनेका चिन्ह रखनें वाला दुश्शासन भी हाथियों समेत भागा १५ वृषसेन गिराये हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर दश हजार रथ और तीन हजार हाथीको साथ लेकर शीघ्रतासे चला १६ हे महा राज हाथी घोड़े और रथोंसे युक्त पदातियों से बेष्टित महारथी दुर्य्योधन चल दिया १७ सुशर्मा गिराये हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर अर्जुनकेमारने से बाकी बचे हुये संसप्तकोंके समूहोंको लेकर भागा १८ और सेनाके लोग स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्यको मृतक हुआ देखकर हाथी और रथों पर सवारहोकर घोड़ोंको छोड़ २ कर सब ओरसे भागे १९ उस समय कौरव लोगोंमें कोई पिता कोई भाई मामा पुत्र और बराबर वालोंको शीघ्रगामी करते हुये भागे २० उसीप्रकार कोई २ सेनाओंको भानजोंको और नातेदार आदिक मनुष्योंको चलायमान करते दशोंदिशाओंको भागे २१ कोई बि-खरे हुये केश गिरते पड़ते पृथक् २ साथ दौड़नेवाले औरयह सेना नहीं है यह मानते उत्साह और पराक्रमों से रहित हुये २२ और हे समर्थ बहुत से आपके शूरबीर कवचोंको भी त्याग २ कर भागे और सबसेनाके लोगोंको परस्परमें पुकारा २३ किठहरोठहरोपरंतु आप वहां नियत नहीं हुये किसी २ ने जिसका सारथी मारा गया उस रथसे अच्छे २ अलंकृत घोड़ोंको खोलकर उनपर सवारहो शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया २४ उस प्रकार भय भीत रूप पराक्रम से रहित सेनाके भागजाने पर बिरोधी ग्राहके समान अश्वत्थामा शत्रुओं के सन्मुख गया २५ शिखंडी आदिक प्रभद्रक, पांचाल चन्देरीदेशी, और केकयों के साथ उसका बड़ाभारी युद्ध हुआ २६ और युद्ध में दुर्म्मद मतवाले हाथीके समान पराक्रमी और कुछेक संकट से रहित अश्वत्थामा पांडवों की बहुत प्रकार की सेनाओंको मार कर २७ भागने में प्रवृत्त दौड़ती गिरती हुई सेना को देखकर दुर्योधन से यह बचन बोले २८ हेभरतबंशी यह सेना भयभीतोंके समान क्यों भागतीहै हे राजेन्द्र इस भागने वाली

सेनाको युद्धमें नियत नहीं करते हो २९ और पूर्व्व के समान तुम अपने स्वभावमें भी नियत नहीं हो और हेराजा यह कर्ण आदिक भी नहीं भिड़तेहैं ३० कभी किसी पहले युद्धमें सेना नहीं भागी हे भरतवंशी महाबाहु क्या तेरी सेना की कुशल है ३१ हे कौरव राजा दुर्योधन किसके मरने पर आपके उत्तम रथियोंकी इससेना ने ऐसी दशाको पायाहै यह सब मुझसे कहो ३२ तबवह राजाओं में उत्तम दुर्योधन अश्वत्थामा के इन बचनोंको सुनकर घोर और अप्रिय वृत्तान्तके कहने को समर्थ नहीं हुआ ३३ टूटी हुई नौका के समान शोक समुद्रमें डूबा हुआ अश्रुपातोंसे आर्द्र शरीर आपका पुत्ररथ पर चढ़ेहुये अश्वत्थामाको देखकर ३४ लज्जासे युक्तहोकर कृपाचार्य्य से यह बचन बोला कि आप का कल्याण होय आपही यहां के उस सब वृत्तान्तको कहिये जैसे कि यहसब सेना भागीहै ३५ हे राजा इसके पीछे बारम्बार पीड़ित होते हुये कृपाचार्य्यने अश्वत्थामासे वह सब वृत्तान्त कहा जैसेकि द्रोणाचार्य्य गिराये गयेथे ३६ कृपाचार्य्य बोले कि हमने पृथ्वी पर अत्यन्त उत्तम रथी द्रोणाचार्य्यको आगे करके केवल पांचालोंकेही साथमें युद्धकोजारी किया ३७ उसके पीछे जारी होने वाले युद्धमें कौरव और सोमक लोग मिल गये और परस्पर सन्मुख गर्जने वालोंने शस्त्रोंसे शरीरों को गिराया ३८ इस प्रकार युद्धके जारी होने और युद्धमें धृतराष्ट्र के पुत्रों के बिनाशवान् होने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरे पिताने अस्त्रको प्रकट किया ३९ फिर ब्रह्मअस्त्रके जारी करने वाले नरोत्तम द्रोणाचार्य्यने भल्लोंसे हजारों सेनाके लोगों को मारा ४० कालसे प्रेरित पांडव, केकय, मत्स्य, और पांचालोंकी सेना युद्धमें द्रोणाचार्य्यके रथको पाकर अधिकतम नाश युक्त हुई ४१ द्रोणाचार्य्यने ब्रह्मअस्त्रके योगसे हजारशूरवीर और दो हजार हाथियों को मृत्यु वश किया ४२ क्रान्तक श्वेतबाल श्यामबर्ण अवस्था में पच्चासी बर्षके वृद्ध द्रोणाचार्य्यजी सोलहबर्ष वालेकी अवस्थाके समान युद्ध में घूमने लगे ४३ सेनाके पीड़ामान होने और राजाओंके मरने पर

क्रोधके वशी भूत पांचालोंने मुखोंको फेरा ४४ उनके कुद्धेकपृथक्र होकर मुखोंके फेरने पर वह शत्रुओंके बिजय करनेवाले द्रोणाचार्य्य दिव्य अस्त्रोंको प्रकट करते उदय हुये सूर्य्यके समान होगये ४५ वह बाणरूपी किरण रखनेवाले आपके पिता प्रतापी द्रोणाचार्य्य पांडवों के मध्यको पाकर मध्यान्हके सूर्य्यके समान दुःखसे देखने के योग्य हुये ४६ सूर्य्यके समान शोभायमान द्रोणाचार्य्य से भस्म होतेहुये वहसब वीर पराक्रमसे हीन निरुत्साह और अचेत हुये ४७ पांडवों के बिजयाभिलाषी मधुसूदनजी द्रोणाचार्य्यके बाणोंसे पीड़ामान सब लोगोंको देखकर यह बचन बोले कि ४८ यह शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महारथी द्रोणाचार्य्य मनुष्यतो क्याकिन्तु इन्द्रसे भी बिजय करने को योग्य नहींहै ४९ सो हे पांडव तुमधर्म को छोड़ कर बिजयकी रक्षा करो और वह उपाय करो जिससे कि यह स्वर्णमयी रथवाले द्रोणाचार्य्य तुम सबको युद्धमें न मारें ५० यह मेरी बुद्धिमें आताहै कि यह अश्वत्थामाके मरने पर कभी युद्ध नहीं करेंगे इस हेतुसे सेनाका कोई मनुष्य युद्धमें अश्वत्थामाके मरणको कहे ५१ कुन्तीके पुत्र अर्जुनने इस बातको अंगीकार नहीं किया अन्य सब लोगोंने इसको स्वीकार किया औरयुधिष्ठिर ने सब के कहने से बड़े कष्ट और खेदसे स्वीकार किया ५२ और भीमसेन लज्जा युक्त होकर आपके पितासे बोले कि अश्वत्थामा मारा गया तेरे पिताने उसका बिश्वास नहीं किया ५३ उस बात को मिथ्या और अपने पुत्रको म्रियमान ने वाले पिताने तेरे मरने और जीवने को युद्ध भूमिमें राजा युधिष्ठिर से पूछा ५४ मिथ्या के भयमें डूबे और बिजयमें प्रवृत्त चित्त युधिष्ठिरने भीमसेन के हाथसे युद्धभूमिमें मारे हुये उस अश्वत्थामा नाम बड़ेहाथीको ५५ जोकि पर्व्वत के समान शरीर मालवीय क्षत्रीका हाथी था देखकर उच्चस्वरसे उन द्रोणाचार्य्यसे यह कहा कि ५६ जिसके निमित्त हाथमें शस्त्रको लेतेहो और जिसको देखकर जीवते हो वह अश्वत्थामा सदैव प्यारा पुत्र युद्धमें गिराया गया ५७ और मरा हुआ

पृथ्वी पर ऐसे सोताहै जैसे कि बनमें सिंहकाबच्चा होताहै वह राजा मिथ्याके दोषोंको जानता हुआ भी प्रत्यक्षमें उनसे बोलाकि हाथी मारा गया ५८। ५९ वह द्रोणाचार्य्य युद्धमें तुझको मरा हुआ सुनकर दुखित और पीड़ित होकर दिव्य अस्त्रोंका चलाना बन्द कर के पूर्व्वके समान नहीं लड़े ६० राजा द्रुपदका निर्द्दय कर्मी पुत्र उस अत्यन्त व्याकुल और शोकमें मग्न अचेत हुये द्रोणाचार्य्यको देखकर दौड़ा ६१ फिर सिद्धान्तमें सावधान वह द्रोणाचार्य्य लोकमें विहित और योग्य मृत्युको देखकर दिव्य अस्त्रोंको त्यागकर युद्धभूमिमें शरीरके त्यागने को बैठ गये ६२ इसके पीछे धृष्टद्युम्नने बाम हस्तसे उनके बालोंको पकड़कर सबबीरोंकेपुकारतेहुयेभी उनके शिरको काटा ६३ सब ओरसे बीरोंने कहा कि यह मारने के योग्य नहीं है और धर्मज्ञ अर्जुन भी रथसे उतर शीघ्रभुजा को उठाये हुये बारंबार यह बात कहता हुआ दौड़ा कि गुरूजीको मारना मत सजीव ले आओ ६४। ६५ हे नरोत्तम इसरीतिसे कौरवों के और अर्जुन के निषेध करने परभी उस निर्द्दयीने आपके पिताको मारा ६६ इसके पीछे भयसे पीड़ामान सब सेनाकेलोग भागे और हे निष्पाप हमभी तेरे पिताके मरनेपर उत्साहसे रहित हुये ६७संजयबोलेकि अश्वत्थामाने युद्धमें पिताके उसमरणको सुन कर चरणसे घायलसर्पकेसमान कठिनक्रोधकिया ६८ हे श्रेष्ठधृतराष्ट्र इस के पीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ऐसे अत्यन्तक्रोध से पूर्ण हुआ जैसेकि बहुतसे इन्धनको पाकर अग्नि प्रज्वलित होतीहै ६९ तब हथैली से हथैली को और दातों से दांतों कोघायल करके दबाया और सर्पके समानश्वास लेताहुआ रक्तवर्ण नेत्रोंसेयुद्धहुआ ७०

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतीपरिचतुर्न्नवतितमोऽध्यायः १९४ ॥

एकसौपंचानबेका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय अधर्म से धृष्टद्युम्न के हाथसे मा हुये वृद्धब्राह्मण पिताको देखकर अश्वत्थामाने क्या कहा? जिसकेपास

बायव्य, बारुण, आग्नेय, पराक्रमी ब्राह्म्यस्त्र, ऐन्द्र और नारायणास्त्र यह सब सदैव वर्त्तमान थे २ अधर्मसे युद्धमें धृष्टद्युम्न केहाथ से मारेहुये उस धर्मके अभ्यासी आचार्य्य जी को सुनकर अश्वत्थामा ने क्या कहा ३ जिसने इस लोकमें महात्मापरशुरामजी से धनुष और वेदको पाकर गुण ग्राहकने अपने दिव्यअस्त्रों को पुत्रके अर्थ उपदेश किया ४ इस लोकमें मनुष्य एक अपनेही पुत्र को अपनेसे अधिक गुणवान चाहते हैं और दूसरेको किसी दशामें भी नहीं चाहते ५ महात्मा आचार्य्यों केपास गुप्त बिद्या होती हैं वह सब विद्या भी वह अपने पुत्रकेही निमित्त देतेहैं अथवा आज्ञाकारी शिष्यको देतेहैं ६ हे संजय वह शिष्य शूरबीर अश्वत्थामाउस सब विद्याको मुख्य २ बातों समेत प्राप्त करके युद्धमें द्रोणाचार्य्य के समान हुआ ७ शस्त्र बिद्यामें परशुरामजी के समान युद्ध में इन्द्रके तुल्य पराक्रममें सहस्त्राबाहु के समान बुद्धिमें बृहस्पति जी के समतुल्य ८ बुद्धिकी स्थिरतामें पर्व्वत के समान तेजमें अग्निके सदृश तरुणता पूर्व्वक गंभीरतामें समुद्रके समान और क्रोधमें विषधर सर्पके समानहै ९ वह इस संसारमें सबसे श्रेष्ठरथी दृढ़ धनुषधारी श्रम से रहित युद्धमें घूमता हुआ बायुके समान शीघ्रगामी और यमराजके समान क्रोधयुक्तहै १० जिस धनुषधारीने बाणोंकी बर्षासे पृथ्वीको पीड़ित किया और सत्यपराक्रमी होकर युद्ध में पीड़ाको नहींपाया ११ वेदब्रतसे स्नान किया हुआ धनुर्वेदका पारगामी महासमुद्रके समान ऐसे व्याकुलता से रहितहै जैसे कि दशरथ जीके पुत्र श्रीरामचन्द्र जीथे १२ अधर्मसे युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेहुये उस धर्माभ्यासी आचार्य्यको सुनकर अश्वत्थामाने क्या कहा १३ जैसेकि धृष्टद्युम्नका कालरूप यज्ञसेनका सुतहुआ उसी प्रकार द्रोणाचार्य्यका कालरूप द्रुपदका पुत्र धृष्टद्युम्न हुआ १४ उस निर्द्दयपापी क्रूर अदीर्घदर्शी धृष्टद्युम्न के हाथसेमारे हुये उन तेजस्वी आचार्य्यजीको सुनकर अश्वत्थामाने क्या कहा १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिपंचनवतितमोऽध्यायः १९५ ॥

एकसौछियानबेका अध्याय॥

संजय बोलेकि वह नरोत्तम अश्वत्थामा छलसे पापकर्मी धृष्टद्युम्न के हाथसे मारे हुये पिताको सुनकर क्रोधसे और अश्रुपातों से पूर्ण मुखवाला हुआ १ हे राजेन्द्र उस क्रोधयुक्त का मुख ऐसा प्रकाशमान दिखाई पड़ा जैसेकि प्रलयके समय जीवधारियों केमारनेके अभिलाषी कालका मुख होताहै २ फिर अश्रुपातों सेयुक्तदोनों नेत्रोंको बारंबार पोंछ और साफ कर के क्रोधसे श्वासाओं को लेताहुआ दुर्योधनसे यहबचनबोला कि ३ जिस प्रकार से शस्त्रोंके त्यागनेवाले मेरेपिता नीचके हाथसे मारेगये और धर्म ध्वजाधारी युधिष्ठिरने जो पाप किया वह मेरा जाना हुआ है ४ मैं ने धर्म पुत्रके दुष्कर्म युक्त निर्दयताको सुना यद्यपि युद्धमें प्रवृत्त बीरों की बिजय और पराजय दोनों अवश्य होतीहैं ५ हे राजाइन दोनों में से जो युद्धमें न्यायके अनुसार युद्ध कर्त्ताओंका मारनाहोताहै उसी की अधिक प्रशंसाकी जाती है वह दुखदायी नहीं जान पड़ता है जैसेकि उत्तम ब्राह्मणोंसे देखा गयाहै वह मेरा पिता निस्सन्देह बीरोंके लोकोंमें गया ७ हे पुरुषोत्तम वह शोचके योग्यनहीं समझा जाताहै जिसने कि धर्म में प्रवृत्त होकर बिनाशको पाया और जो कि सब सेनाओंके देखतेहुये उनके केशों का पकड़ना हुआहै८ यह बात मेरे मर्मोंको भेदन कर रही है हायधिक्कार है मुझको जो मेरे जीवते हुये मेरे पिताके केश पकड़े गये ९ अब कौनसे संतान वाले लोग अपने पुत्रोंकी अभिलाषा करेंगे १० जोकामसे क्रोध से अबिज्ञानसे दर्प्पसे लड़क पनसे धर्मके बिपरीत बातोंको करते हैं वह पराजित होतेहैं सो इसस्थान पर धृष्टद्युम्नने यह अधर्म से कर्म किया है ११ उस निर्दयी धृष्टद्युम्न ने निश्चय करके मेरा अनादर करके ऐसा कर्म किया इसहेतुसे धृष्टद्युम्न उसके भयानक फलको देखेगा १२ औरमिथ्यावादी पांडव युधिष्ठिरने भी बहुतबुरानिन्दित कर्म किया जो आचार्य्यजी को शस्त्रों से रहित किया १३ अब उस

धर्म राजके रुधिरको पृथ्वी पान करेगी हे कौरव में सत्ययज्ञ और बापी आदिक के फलकी शपथ खाताहूं १४ मैं पांचालोंको बिना मारे हुये अपने जीवन को नहीं चाहता मैं सब उपायोंसे पांचालों के मारनेमें उद्योग करूंगा १५ और युद्धमें पाप कर्मा धृष्टद्युम्न को किसी कर्म करके अवश्य मारूंगा १६ जब पांचालोंको मार लूंगा तभीशान्तीकोपाऊंगा हेपुरुषोत्तम कौरव मनुष्य अपनेपुत्रको जिस निमित्त चाहतेहैं १७ वह बुद्धीसे प्राप्त होने वाले पुत्र इस लोक और परलोक में बड़े भयसे रक्षा करतेहै बांधवोंसे रहित के समान मेरे पिताने इस दशाको पाया १८ कि मुझ सरीके पर्व्वत के समान पुत्र और शिष्यके जीवते हुये युद्ध भूमिमें उस दशाको पाया मेरे दिव्य अस्त्रोंको धिक्कार भुजाओंको धिक्कार और पराक्रम को भी बहुत धिक्कारहै १९ कि मुझ सरीके पुत्रको पाकर भी जिस केबाल पकड़े गये हे भरतर्षभमें वैसाही कर्म करूंगा २० जिससे कि पर लोकगामी अपने पिताके ऋणसे उऋण हूंगा यद्यपि उत्तम पुरुषको अपनी प्रशंसा करनी योग्य नहींहै २१ तथापि अब मैं सत्य २ अपने पिताके मारनेको न सहकर अपने पुरुषार्थको दिखलाऊंगा और श्रीकृष्ण जी समेत सब पांडव लोग मुझ सब सेनाओं के मर्दन करनेवाले और प्रलय करनेवाले के पराक्रम को देखेंगे अब देवता गन्धर्व असुर राक्षस २२।२३ और उत्तम मनुष्य भी युद्ध में मुझ रथसवारके बिजय करनेको समर्थ नहीं हैं इसलोक में मेरे और अर्जुनके सिवाय दूसरा अस्त्रज्ञकहीं नहीं है २४ सेनाके मध्य वर्ती होकर मैंही देवसृष्टी लोगोंसे प्रयोक्त अस्त्रोंका प्रकट करने वाला ऐसाहूं जैसे कि प्रकाशित ज्वलित अग्नियोंके मध्यमें सूर्य्य होताहै २५ अब इस बड़ेयुद्धमें धनुषसे बारंबार चलाये हुये बाण मेरे पराक्रमको दिखलाते हुये पांडवोंको मथन करेंगे २६ हे राजा आप इस युद्धभूमिमें मेरे तीक्ष्ण बाणोंसे पूर्ण सब दिशाओं को धाराओंसे संयुक्तके समान देखेंगे २७ सब ओरसे भयानक शब्द करने वाले बाणजालों को फैलाता शत्रुओंको ऐसे गिराऊंगा जैसे

कि बड़े २ वृक्षोंको वायु गिराताहै २८ हे कौरव जो यह अस्त्रविधान संघार समेत मेरे पास है उस अस्त्रको न अर्जुन श्रीकृष्ण भीमसेन नंकुल सहदेव राजा युधिष्ठिर २९ शिखंडी सात्यकी और न वह दुरात्मा धृष्टद्युम्न जानताहै ३० पूर्व्व समयमें सन्मुख नियत होकर मेरे पिताने विधिके अनुसार ब्राह्मण रूप श्रीनारायण जीके अर्थ भेट निवेदन करी ३१ फिर उस भगवान्ने आप उसभेट को अंगीकार करके बरप्रदान मांगने की आज्ञाकरी तब मेरे पिताने नारायण नाम अस्त्रको मांगा ३२ हे राजा इसके पीछे वह देवताओं में श्रेष्ठ भगवान् मेरे पितासे बोले कि युद्ध में तेरे समान दूसरा कोई मनुष्य कहीं नहीं होगा ३३ हे ब्रह्मन् यह अस्त्र बिना बिचार के किसी दशामें भी छोड़ना न चाहिये यह अस्त्र शत्रुको बिनामारे हुयेकभी लौटकर नहीं आताहै ३४ हे ब्रह्मन् यह बात जानने के योग्य नहींहै कि कैसे मारना चाहिये निश्चय करके यह अस्त्र न मारनेके योग्यको भी मार सक्ताहै इसहेतु से इस अस्त्रका प्रयोग सहसा नहीं करे ३५ फिर युद्धमें रथ और शस्त्रों का त्याग करना और प्रार्थना करके शत्रुओंका शरणमें होना ३६ यह योग महा अस्त्रकी शान्तीमें संयुक्तहै हे शत्रुओं के तपाने वाले सब रीति से चलाया हुआ यहअस्त्र युद्धमें पीड़ादेताहुआ अबध्योंकोभी मारताहै ३७ मेरे पिताने उसअस्त्रकोलौलिया तब प्रभु नारायणजी ने मेरे पितासे कहा कि तुम अनेक प्रकारकी सब शस्त्रों की बर्षा को ३८ इसअस्त्रके द्वारा काटोगे और युद्धमें तेजसे प्रज्वलित अग्निके समान होगे ऐसा कहकर वह भगवान् प्रभु अपने स्वर्ग को चले गये ३९ यह नारायण नाम अस्त्र नारायण जीसे मिला और पिताको प्रसन्न रखने से उसको मैंनेपाया मैं उस अस्त्रसे पांडव पांचाल मत्स्यदेशी और केकय लोगों को युद्ध में ऐसे भगाऊंगा जैसे कि शचीपति इन्द्रअसुरोंको भगाताहै मैं जैसे २ चाहूंगा वैसेही वैसे प्रकार के मेरे बाण होकर४०।४१ पराक्रमी शत्रुओंपर गिरेंगे हे भरत बंशी युद्धमें वर्त्तमान होकर मैं अपनी इच्छानुसार पाषाणोंकी

भी बर्षाको बरसाऊंगा ४२ मैं लोहेके मुखवाले बाणोंसे महारथियोंको भगाऊंगा और तीक्ष्ण बाणोंकी बर्षाको बरसाऊंगा ४३ मैं शत्रुओंका तपानेवाला होकर पांडवों को अनादर करके महानारायण अस्त्रसे शत्रुओंको मारूंगा ४४ अब मित्र ब्राह्मण और गुरूसे शत्रुता करने वाला अज्ञानी दुष्ट पांचालोंमें नीच धृतद्युम्न मेरे हाथसे जीवता हुआ नहीं बचसक्ताहै ४५ अश्वत्थामा के उस बचनको सुनकर सेनाने चारों ओर से मध्य बर्त्ती किया फिर सब पुरुषोत्तमोंने महाशंखोंको बजाया ४६ और प्रसन्न चित्त होकर हजारों दुन्दुभी समेत भेरियोंको बजाया इसीप्रकार खुर औरनेमियों से अत्यन्त पीड़ामान पृथ्वी अत्यन्त शब्दाय मान हुई ४७ उस कठोर शब्दने आकाश स्वर्ग और पृथ्वीको शब्दायमान किया तब बादलोंके समान उस शब्दको सुनकर ४८ रथियों में श्रेष्ठ पांडवों ने मिलकर और इकट्ठे होके बिचार किया और अश्वत्थामा ने उस प्रकारकी बातोंकोकहके आचमनको करके ४९ उसदिव्य नारायण अस्त्र को प्रकट किया ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिषण्णवतितमोऽध्यायः १९६ ॥

एकसौसत्तानबेका अध्याय ॥

संजय बोले हे प्रभु फिर उस नारायण अस्त्रके प्रकट होने पर पीछे की ओरसे वायुचली और बिनाही बादलोंके गर्जना हुई १ पृथ्वी कंपायमान हुई महा समुद्र व्याकुल हुआ और समुद्र में मिलनेवालेझिरनेनदी आदिक उलटे फिरनेलगे २ पर्व्वतोंके शिखर गिरपड़े और मृगोंने पांडवी सेनाको बाम किया ३ सेना अन्धकार से व्याप्त हुई सूर्य्य प्रकाश से रहित हुआ और कच्चे मांसखाने वाले जीव अत्यन्त प्रसन्न के समान आपहुंचे ४ हे राजा देवता दानव और गन्धर्व भी भयभीतहुये उस बड़ी व्याकुलताको देखकर परस्पर बार्त्तालापं हुई ५ सब राजा लोग अश्वत्थामाके उस घोर रूप भयानक अस्त्रको देखकर बड़े पीड़ामान और भयभीत हुये ६

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें शोकसे अत्यन्त दुखी और पिताके मरने को न सहने वाले अश्वत्थामाके साथ सेनाओंके लौटनेपर ७ आते हुये कौरवोंको देखकर पांडवोंके मध्यमें धृष्टद्युम्नकीरक्षाके निमित्त कौनसा बिचारहुआ हे संजय उसको मुझे समझा कर कहो ८ युधिष्ठिरने अस्त्रके छोड़ने से पूर्व्वही धृष्टद्युम्नके पुत्रों को बिथासे घायल देखकर और फिर कठोर शब्दको सुनकर अर्जुन से कहा कि ९ हे अर्जुन जैसे बज्रधारी इन्द्रके हाथ से वृत्रासुरमारा गयाथा उसी प्रकार युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसे द्रोणाचार्य्यके मरने पर युद्धमें बिजय की आशान करने वाले दुखी चित्त कौरवलोग अपनी रक्षामें एक मतकरके युद्धसे भागे १० । ११ कोईकोई व्याकुल राजालोग उन रथोंसे जो कि घूमतेथे और जिनके पार्ष्णि यंत्र टूटे और सारथी मारे गयेव पताका ध्वजा छत्रोंसे रहित हुये और जिन के कूबर गिर-पड़े१२नीढ़ टूटे उनरथोंसे दूसरे रथोंपर चढ़कर कोई भयसेबिह्वल पदाती और आपही रथोंको शीघ्र चलाते टूटे अक्ष युग रथ चक्र वाले रथोंके द्वारा चारों ओरसे खेंचे जातेथे १३ कोई टूटे रथोंको छोड़कर पैदलही भागे और कोई घोड़ोंको पीठपर ऐसे सवारथे कि-जिनका आधा आसन लटक रहाथा खिंचे हुये चले जातेथे १४ हाथियों के कन्धोंपर चिपटेहुये नाराचोंसे चलायमान आसन कित नेही शूरबीर बाणोंसे पीड़ित भागे हुये हाथियों के कारण से दशों दिशाओंको शीघ्रतासे गये १५ औरकितनेही बीर शस्त्र बर्मोंसेरहित सवारियों से पृथ्वी पर पड़े हुये और कितनेही युद्धकर्त्ता टूटे नीबी वाले रथ घोड़े और हाथियों से मर्दन किये हुये १६ औरबहुतसे शूरबीर हे पिता हेपुत्र इस रीतिसे पुकारते हुये भयभीत होकर भागे १७ मूर्च्छासे नाशवान बलवाले योद्धाओंने परस्पर नहीं पह-चाना और कितनेही बीर अत्यन्त घायल हुये अपने पुत्र पिता मित्र और भाइयोंको सवारियों पर बैठाकर कवचों को उतार के जलसे धोतेथे १८ द्रोणाचार्य्यके मरने पर सेना ऐसी दशाको प्राप्त होकर भागी धृतराष्ट्र बोले हे संजय फिर वह सेना किस कारण से लौटी

इसको तुमजानतेहो तो मुझसेकहो १६ वहांहींसते घोड़े और चिंघाड़ते बड़ेहाथियोंके शब्द रथकी नेमियोंके शब्दोंसे युक्त सुनेजातेहैं २० यह अत्यन्त कठोर शब्द कौरव सागरमें बारंबार वर्त्तमान होकर कियाजाताहै औरमेरेशूरबीरोंको भी कंपायमान करताहै २१ जो यह महा कठोर रोमांचकोखड़ा करने वाला शब्द सुनाजाताहै वह इन्द्र समेत तीनों लोकोंको भी पराजय करेगा यह मेरामतहै २२ मैं मान ताहूं कि यह भय उत्पन्न करने वाला शब्द वज्रधारी इन्द्रकाही है द्रोणाचार्य्य के मरने पर साक्षात इन्द्रही कौरवों के अर्थ सन्मुख आताहै २३ युधिष्ठिरने कहा हे अर्जुन गुरूको मृतक सुनकर उत्तम रथी अत्यन्त खड़े हुये रोमकूप और व्याकुलहैं यह बड़ा भयकारी शब्द होताहै कौरवों में अब कौनसा महारथी उन भागे और छिन्न भिन्न कौरवोंको नियत करके युद्धके निमित्त ऐसे लौटा रहाहै जैसेकि युद्धमें देवताओंकाइन्द्र अपनी भागीहुई सेनाको लौटाताहै २४।२५ अर्जुन बोले कि जिसके पराक्रमके आश्रित और पराक्रम में नियत कौरव लोग उग्र कर्मके निमित्त आत्माको प्रवृत्त करके शंखोंको बजा तेहैं २६ हे राजा तुमको जो यह सन्देहहै कि शस्त्र त्यागने वाले गुरूजीके मरने पर यह कौन पुरुष धृतराष्ट्रके भागे हुये पुत्रों को नियत करके गर्जना करताहै २७ उस लज्जावान महाबाहुमतवाले हाथीके समान चलने वाले व्याघ्रसदृश मुख उग्र कर्मी कौरवों को निर्भयता उत्पन्न करने वाले २८ को जिसके कि उत्पन्न होने पर द्रोणाचार्य्यने एक हजार गौवें बड़े योग्य ब्राह्मणोंके अर्थ दानकी थीं वही अश्वत्थामा इस गर्जनाके करताहै २६ जिस बीरने उत्पन्न होतेही उच्चैश्रवानाम घोड़ेकेसमान शब्द कियाऔरउस शब्दसेपृथ्वी समेत तीनों लोक कंपायमान हुये ३० और उसी शब्दको सुनकर गुप्त जीव धारियोंने उसका नाम अश्वत्थामा रक्खा हे पांडव धर्मराज अब वही शूरबीर गर्जरहाहै ३१ धृष्टद्युम्नने बड़े नीच कर्म को करके बड़े पराक्रमसे जो द्रोणाचार्य्यको अनाथके समान माराहै सो वह उसका नाथ सन्मुख नियतहै ३२ जो कि धृष्टद्युम्नने मेरेगुरूके

बालोंको पकड़ाहै इसलिये उसको बीरताको जानते हुये अश्वत्थामा जी कभी उसको नहींसहसकेंगे ३३ और आपने भी राज्यके निमित्त द्रोणाचार्य्य से मिथ्याबचन कहाहै यह आप सरीके धर्मज्ञ पुरुष से महाअधर्म हुआहै ३४ द्रोणाचार्य्यके गिरानेपरस्थावर जंगम जीवों समेत तीनों लोकोंमेंआपकी अपकीर्त्ति बहुत कालतक वैसीहोजारी हैगी जैसीकि बालिकेमारनेसे श्रीरामचन्द्रजीकी अपकीर्त्ति बिख्यात हुई उनद्रोणाचार्य्य ने आपके ऊपर ऐसा बिश्वास कियाथा कि यह पांडवयुधिष्ठिरधर्मसेयुक्त मेराशिष्यहैकभी मिथ्यानहींबोलेगा ३५ ३६ सोसत्य रूपी कवच धारण करनेवाले आपने गुरूजीसे मिथ्या कहा कि हाथी मारागया ३७ इसके पीछे वह शस्त्रोंको त्यागकर अपमान रहित ममता और चैतन्यता से रहित होकर ऐसे व्याकुल होगये जैसे कि उन समर्थको तुमने देखा ३८ फिर सनातन धर्म को छोड़कर उन शोकसे पूर्ण मुखके फेरने वाले और पुत्रको प्यारा जानने वाले गुरूजीको शस्त्रसे मारा ३९ आपने शस्त्र त्यागने वाले गुरूजीको अधर्मसे मारा अबजो आप समर्थहैं तो अपने मंत्रियों समेत नाशवान पितावाले क्रोध युक्त आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामासे ग्रसे हुये धृष्टद्युम्न की रक्षाकरो ४० अब हम सब धृष्टद्युम्नकी रक्षा करनेको समर्थ नहीं हैं जो उत्तम पुरुष सब जीवों पर बड़ी कृपा और प्रीति करताहै अब वह पिताको शिरके बालों का पकड़ना सुनकर युद्धमें हमको भस्म करेगा ४१ मुझ गुरू के चाहने वालेके अत्यन्त धक्कासे परभी धर्मको त्यागकर अपने शिष्यके हाथसे गुरूजी मारेगये ४२ हमारी अवस्था बहुत व्यतीत होगई और बहुत थोड़ीबाकी रहीहै अब उस शेष अवस्थाका यह बिकाररूप विपरीत भावहै जो आपने ऐसा अधर्म किया ४३ जो गुरूजी सदैव प्रीति करनेसे और धर्मसेभी पिताके समान थे वह थोड़ेदिन के राज्यके कारण से मरवाये ४४ हे राजा धृतराष्ट्र ने संपूर्ण पृथ्वीको राज्यमें अवृत्त चितवाले पुत्रों समेत भीष्म और द्रोणाचार्य्य के अर्थ अर्पण करी ४५ उस प्रकारकी आजीविका को

पाकर सदैव प्रतिष्ठा पानेवाले सबके पूज्य गुरूजीने सदैव मुझको अपने पुत्रसेभी अधिक माना ४६ वह शस्त्र त्यागने वाले गुरूजी तुम्हारे और मेरे देखते अथवा तुमको और तुझको देखते हुये युद्ध में मारेगये निश्चय करके इन युद्ध करने वाले गुरूजी को इन्द्र भी नहीं मार सक्ताथा ४७ राज्यके अर्थ लोभमें लिप्त बुद्धि हम नीच लोगोंने उन सदैव उपकार करने वाले वृद्ध आचार्य्य जीके साथ शत्रुताकरी ४८ बड़ेखेदकी बातहै कि हम लोगों ने वह महा भयानक पाप कर्म किया जो उन साधुरूप द्रोणाचार्य्य को राज्यके सुखके लोभसे मारा ४९ मेरे गुरूजी सदैव ऐसा जानते थे कियह इन्द्रका पुत्र मेरी प्रीतिसे पुत्र भाई पिता ताऊ आदि स्त्री समेत जीवन और सब सामान को भी त्यागकरसक्ता है ५० वह मारे जाने वाले गुरूजी मुझ राज्यके अभिलाषी करके त्याग कियेगये हे प्रभु राजा युधिष्ठिर इस कारणसे हम लोग औंधे शिर होकर नर्कमें पड़ेंगे ५१ अब राज्यके निमित्त शस्त्र के त्यागने वाले वृद्ध ब्राह्मण आचार्य्य महा मुनिको मारकर इस जीवने से मरजानाही अच्छाहै ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिसप्तनवतितमोऽध्यायः १९७ ॥

एकसौअठ्ठानबेका अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज वहां अर्जुनके बचनको सुनकर सबमहारथी अच्छी बुरी बातोंमें से कोईभी कुछनहीं बोले १ हे भरतर्षभ इसके पीछे क्रोधयुक्त महाबाहु भीमसेन पांडव अर्जुन की निन्दा करते बोले २ कि हे अर्जुन तुम धर्मसे संयुक्त ऐसे बचनों को कह हो जैसे कि बनमें बर्त्तमान सबधर्मों से निवृत्त वृतमें निष्ठावान मुनि और ब्राह्मण लोग कहतेहैं ३ दुखियोंकी रक्षा करने वालाशत्रुओंके मारनेसे अपनी जीविका करनेवाला स्त्री और साधुओं में क्षमा करने वाला क्षत्री शीघ्रही पृथ्वी धर्म यश और लक्ष्मी को पाताहै ४ सो क्षत्रियोंके सबगुणोंसे युक्त और कुलीन होकर आप

अज्ञानोंके समान बचनों के कहते हुये शोभाको नहीं पातेहो ५ हे अर्जुन तेरा पराक्रम शचीपति इन्द्र के समानहै तुम धर्मको उल्लंघन कर ऐसे कर्म नहीं करतेहो जैसे कि महा समुद्र अपनी मर्य्यादाको नहीं उल्लघन करताहै ६ अब तुम्हारी प्रशंसा कौन नहीं करेगा जो तेरह बर्षके अमर्ष कोभी त्यागकर धर्मकोही चाहतेहो७ हे भाई अब तेरा चित्त प्रारब्धसे अपने धर्ममें नियतहै और हे अबिनाशी तेरी बुद्धिमें सदैव दया रहतीहै ८ फिर जो धर्ममें प्रबृत्त युधिष्ठिर का राज्य अधर्मसे हरण किया और द्रौपदी को सभा में लाकर शत्रुओंने खेंचा ९ अत्यन्त मृगचर्म की पोशाक को धारण करने वाले हम लोगोंको जो कि उसदशाकेयोग्य नथे शत्रुओंने तेरह बर्षतक बनबासी किया १० हे निष्पाप मैंने इन सब क्रोधके स्थानोंमें क्षमा करके सहन किया और क्षत्री धर्म में प्रबृत्त होकर हम लोगोंने यह सब बनवासादिक ब्यतीत किये ११ अबमें उस दूर हटाये हुये अधर्म को स्मरण करके तेरी सहायता पाकर उन राज्य हरण करने वाले नीचोंको उनके साथियों समेत मारूंगा।१२ प्रथम तुमने कहाथा कि युद्धके निमित्त सन्मुख होनेवाले हम सब लोग सामर्थ्य के अनुसार उपाय करेंगे सो तुमही अब हमारी निन्दा करतेहो १३ तुम धर्म को जाना चाहतेहो तेरा बचन मिथ्याहै भयसे पीड़ामान हम लोगों के मर्म नाम अंगोंको अपने बचनों से काटतेहो १४ हे शत्रुओं के बिजय करने वाले तुम हम सब घायलों के घावपर निमक डालकर पीड़ा देतेहो तेरे बचन रूपी भालेसे पीड़ित होकर मेरा हृदय फटा जाताहै १५ हे भाई धर्मका अभ्यासी होकर भीतू उस बड़े अधर्मको नहीं जानताहै जो तू प्रशंसाके योग्य अपनी और हमारी प्रशंसा नहीं करताहै १६ और बासुदेव जीके नियत होनेपर उस अश्वत्थामा की प्रशंसा को करताहै जो कि हे अर्जुन तेरी सोलहवीं पूर्णकलाके भी योग्य नहींहै १७ आप अपने दोषों को कहते हुये क्यों नहीं लज्जा युक्तहोतेहो मैं क्रोधसे पृथ्वी को चीरडालूं और पर्व्वतों को गेरदूं १८ और इस भयानक

सुनहरी माला रखनेवाली भारीगदाको घुमाकर पर्व्वतों के समान वृक्षोंको ऐसे तोड़डालूं जैसे कि वायु तोड़ डालताहै १६ और सन्मुख आनेवाले इन्द्रके समेत देवता राक्षसगण असुर सर्प और मनुष्यों कोभी भगासक्ता हूं २० हे बडेपराक्रमी नरोत्तम सो मुझ भाई को इसप्रकार का जानने वाले होकर तुमअश्वत्थामा से भयकरने के योग्य नहींहो २१ हे अर्जुन तुमसब सगेभाइयों समेत कुतूहल देखो मैं अकेलाही हाथमें गदा लेकर युद्धमें इसको बिजय करूंगा २२ इसके पीछे द्रुपदका पुत्र धृष्टद्युम्न अर्जुनसे ऐसे बोला जैसे कि अत्यन्त क्रोधयुक्त और गर्जना करनेवाले नृसिंहजी से हिरण्यकश्यप दैत्य बोला था २३ धृष्टद्युम्नबोले कि हे अर्जुन बुद्धि मानोंके ब्रह्मकर्मोंको तुम जानतेहो यज्ञ कराना पढ़ाना दान देना यज्ञ करना दान लेना २४ छठा पढ़ना इन सब कर्मोंमें से किसीभी कर्म में नियत न थे इसीसे द्रोणाचार्य्य मेरे हाथसे मारेगये हे अर्जुन तुम मेरी निन्दा क्यों करते हो २५ अपने धर्मसे पृथक् क्षत्री धर्म में आश्रित नीचकर्म करनेवाले द्रोणाचार्य्यजी दिव्यअस्त्रों से हमलोगों को मारतेथे २६ और इसीप्रकार मायाको प्रकट करने वाले क्षमा शान्तीसे रहित नाममात्र अपने को ब्राह्मण कहने और मानने वाले द्रोणाचार्य्य को जो पुरुष मायासेही मारे उसमें हे अर्जुन कौनसी बातकी अयोग्यताहै २७ इसरीति करके मेरे हाथ से उनके मरने पर जो द्रोणाचार्य्य का पुत्र क्रोध से महाभयकारी शब्दोंको करताहै इससे मेरी क्या हानि होसक्तीहै २८ मैं इसको अपूर्व्व नहीं मानताहूं क्योंकि यह अश्वत्थामा युद्धके मिस करके कौरवों का बिध्वन्स करवावेगा २९ जो तुम धर्मके अभ्यासी होकर मुझको गुरूका मारनेवाला कहतेहो इसका यह वृत्तान्तहै कि मैं द्रुपदका पुत्र होकर उन्हींके मारने के अर्थ अग्निसे उत्पन्न हुआ हूं ३० हे अर्जुन युद्धमें जिस युद्ध करनेवाले का कार्य्या कार्य्य समान होय उसको कैसे ब्राह्मण वा क्षत्री कहना योग्यहै ३१ जो क्रोधसे मूर्च्छामान ब्रह्मास्त्रके द्वारा अस्त्र न जाननेवालोंकोमारे वहपुरुषो-

तम किसप्रकार से सब उपायोंके द्वारामारने के योग्य नहीं है ३२ हे धर्म के मूल जाननेवाले अर्जुन उस बिपरीत धर्मवाले और उन पूर्ब्ब धर्म जाननेवालों के बिषके समान द्रोणाचार्य्यको जान बूझ कर मेरी निन्दा क्यों करताहै ३३ औरमैंने निरादरकरके उसनिर्दय रथी को गिराया है इसके बदलेमें हे अर्जुन मेरी प्रशंसा करके क्यों नहीं मुझको प्रसन्न करते हो ३४ हे अर्जुन मेरे हाथ से उसकालाग्निके समान अथवा अग्नि सूर्य्य और बिषके समतुल्य द्रोणाचार्य्यके काटे हुये भयानक शिरको क्यों नहीं प्रशंसा करतेहो ३५ जिसने युद्धमें मेरे बांधवों को मारा दूसरे के बांधवों को नहीं मारा उसके मस्तक को काटकर मुझको भी बिगतज्वर होना अवश्य योग्यहै इसी से मैं उसके ज्वर से रहित हुआ ३६ परन्तु एक वह बात मेरे मर्मस्थलोंको काटरही है अर्थात् पश्चात्ताप होरहाहै कि जो मैंने उनके शिरको निषाददेश में उसप्रकार से नहीं फेंका जैसे कि जयद्रथका शिर फेंका गयाथा ३७ हे अर्जुन जो शत्रुका मारना अधर्म सुनाजाता है तो मारना अथवा मराजाना यह क्षत्रियोंकेही धर्म हैं ३८ हे पांडव वह शत्रु धर्मसंयुक्त मेरे हाथसे युद्धमें ऐसे मारागया है जैसे कि पिताका मित्र शूरबीर भगदत्त तेरे हाथसे मारा गया है ३९ तुम भीष्मपितामह को मारकर युद्धमें अपना धर्म मानते हो और मेरे हाथसे पापी शत्रुके मारेजाने पर किसकारण से अधर्म मानतेहो ४० हे अर्जुन मैं नातेदारी से झुका हुआ हूं तुम मुझ झुके हुये नातेदार से इसप्रकार कहने के योग्य नहींहो जैसेकि अपने शरीर से सोपान बनानेवाले बैठेहुये व्याकुल हाथीसे कोई बात कहना अयोग्य है ४१ और मैं द्रौपदी और द्रौपदीके पुत्रों के कारण से तेरे सब विपरीतबचनों को सहताहूं ४२ मेरे कुलकी परम्परासे इन आचार्य्यजी के साथ मेरी शत्रुता चली आती थी औरप्रसिद्ध थी और संसार जानता है क्या तुम नहीं जानतेहो ४३ औरहे अर्जुन बड़ा पांडव भी मिथ्या बादी नहीं है और मैं भी अधर्म का करने वाला नहीं हूं शिष्योंका

पापी शत्रु मारागया युद्धकरो अब सबतरहसे तेरी बिजय है ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिअष्टनवतितमोऽध्यायः १९८ ॥

एकसौनिन्नानबेका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जिस बुद्धिमान् महात्मा ने अंगों समेत चारों वेदोंको न्याय के अनुसार पढ़ा और जिस लज्जावान् में साक्षात् धनुर्वेद नियतहै १ उसीप्रकार जिस महर्षीके पुत्र द्रोणाचार्य्य के पुकारने पर भी नीचबुद्धि निर्दयी क्षुद्रबुद्धी गुरुघाती धृष्टद्युम्न ने प्रहार किया २ जिस पुरुषोत्तमकी कृपासे युद्धमें उन दिव्यकर्मोंको करतेहैं जोकि देवताओं से भी होने कठिन हैं उस द्रोणाचार्य्य के पुकारने पर नेत्रोंके समक्ष पापकर्मी धृष्टद्युम्नने मारडाला ऐसेस्थान परक्रोध नहीं करना होताहै इसीसे इस क्षत्रीधर्मको और क्रोधको धिक्कारहै ३।४ सब पांडव वाराजालोग और पृथ्वीपर जो धनुषधारी हैं उन्होंने इसबातको सुनकर धृष्टद्युम्नसे क्या कहा हे संजय वह मुझसे कहो ५ संजय बोले हे राजा उस निर्दयकर्मी द्रुपदके पुत्र के उन बचनों को सुनकर सब राजालोग मौन होगये ६ फिरअर्जुन तिरछी आंखसे धृष्टद्युम्नको तिरछा देखकर अश्रुपातों समेत बड़ी श्वासाओंको लेकर धिक्कारहै धिक्कारहै ऐसा बचन बोला ७ हेराजा युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव श्रीकृष्ण और अन्य २ लोग भी अत्यन्त लज्जायुक्त हुये तब सात्यकी यह बचन बोला ८ कि यहां कोई पुरुष नहीं है जो इस पापपुरुष नरोंमें नीच अकल्याण बचन कहनेवाले को शीघ्रमारे ९ यह सब पांडव उस पापकर्मके कारण से निन्दा पूर्व्वक तुझको ऐसा बुरा कहते हैं जैसे कि ब्राह्मणलोग चांडालको बुराकहतेहैं १० इस बड़े पापको करके शोभायमान सभामें प्राप्त सब साधुओंसे निन्दित होकर बात करने में किसी प्रकारसे भी लज्जाको प्राप्त नहीं होताहै ११ हे नीच क्यों नहीं तेरी जिह्वा सौटुकड़े होतीहै और मस्तक नहीं फटताहै जो पुकारते हुये गुरूको अधर्म से रक्षा नहीं की १२ तू पांडव और सब

अन्धक वृष्णियों से कहने को योग्यहै जो पापकर्म को करके सब जन समूहोंमें अपनी प्रशंसाको करताहै १३ इसप्रकारके अकार्य्य कोकरके गुरूकी निन्दा करताहुआ तू मरनेके योग्यहै एकमुहूर्त्तभी तेरे जीवनसे प्रयोजन नहींहै १४तेरे सिवाय कौनसा उत्तम अथवा नीच पुरुषहोगा जोधर्मात्मा सत्पुरुष गुरूके शिरको पकड़कर मारने को निश्चयकरे १५तेरेसातपुरुष आगेके और सातपीछेके तुझ कुल कलंकीको पाकर अपकीर्त्ति के साथ नरकमें डूबे १६ और जो तैंने नरोत्तम भीष्मजीके विषयमें अर्जुनसे कहा वह तेराकहना वृथाहै क्योंकि उस महात्माने अपने आप अपना नाश नियतकियाथा १७ उसकाभी मारनेवाला वह तेराही सगाभाईहै जो बड़ापाप करनेवालाहै राजा पांचालोंके पुत्रोंके सिवाय इस पृथ्वीपर दूसरा पाप करनेवाला नहीं है १८ निश्चय करके भीष्मकाभी नाश करनेवाला तेरेही पितासे उत्पन्नहुआहै जिसनिमित्तसे कि वह शिखण्डीरक्षित कियाथा इसीसे वह उस महात्माका मृत्युरूपहुआ १९ सब साधुओंसे धिक्कार युक्त तुझको तेरे सगेभाइयों समेत पाकर मित्र और गुरूसे शत्रुता करनेवाले नीच पांचाल धर्मसे रहितहुये २०फिरइस प्रकारके बचनको जोमेरे सन्मुख कहैगा तोबज्रके समानगदासे तेरे शिरकोतोड़ूंगा २१मनुष्य तुझ ब्रह्महत्या करनेवालेको देखकर सूर्य्य कादर्शन करतेहैं हेपापी तेरी ब्रह्महत्या प्रायश्चित्तके निमित्त है २२ हे अत्यन्त दुराचारी पांचाल मेरे आगे मेरे गुरूकी और गुरूके भी गुरूजीकी निन्दा करताहुआ तूलज्जाको नहींप्राप्तहोताहै २३ ठहरो ठहरो मेरीगदाके इस एकप्रहारकोसहो फिर मैंभी तेरीगदाके बहुत प्रहारोंको सहूंगा २४ यादव सात्यकी के इसप्रकार कठोर अक्षर और शब्दवाले वचनोंसे निन्दायुक्त होकर अत्यन्त क्रोधसे पूर्ण हंसताहुआ धृष्टद्युम्न उस क्रोधभरे सात्यकीसे बोला २५ हेमाधव हम सुनतेहैं और क्षमाभी करतेहैं सदैव अनार्य्य नीच पुरुषतू साधु पुरुषकी निन्दा किया चाहताहै २६ इस संसारमें क्षमा करनाही उत्तम कहाजाताहै परन्तु पापी पुरुष क्षमा करनेके योग्यनहींहोताहै

पापात्मा पुरुष क्षमावान् पुरुषको ऐसा मानलेताहै कि मैंनेइसको विजय करलिया २७ सो नीचचलन नीचबुद्धि पापका निश्चय कर नेवाला तू केशके अग्रभागसे नखके अग्रभागतक कहने के अयोग्य होनेपर कहनाचाहताहै२८जो खंडितध्वजा और शरीरके त्यागनेके अर्थ युद्धभूमिमें बैठाहुआ वह भूरिश्रवा तुझनिषेध कियेहुये के हाथ से मारागया उससे अधिक पापकौनसा होसक्ताहै २९ मैंने युद्धमें दिव्यअस्त्रसे मारनेवाले और उत्तम शस्त्रवाले द्रोणाचार्य्यजीको मा-राहै इसमें कौनसा पापकियाहै३०हेसात्यकी जोपुरुष युद्धभूमिमेंन लड़नेवाले शरीर त्यागनेको आसनपर बैठेहुये शत्रुओंके हाथसे टूटी भुजावाले मुनिकोमारे वह कैसे वार्त्तालाप करसक्ताहै ३१ जब उस पराक्रमीने चरणोंसे पृथ्वीपर डालकरखैंचा तब बड़े पुरुषार्थी और पुरुषोत्तम होकर उसको क्योंनहींमारा३२जब पूर्व्वमें अर्जुननेविजय करलिया उसकेपीछे तुझनीचने उस प्रतापी शूरबीर भूरिश्रवाकोमा रा ३३ और द्रोणाचार्य्यजो जहां२ पांडवीसेनाको भगातेथे वहां२ मैंभी हजारों बाणोंको फैलाता जाताथा ३४ सोतुम आप चांडाल के समान इसप्रकारके कर्मको करके और कहनेके अयोग्य होकर किसकारणसे कठोर बचनोंके कहनेको योग्यहो ३५ हे वृष्णियोंके कुलमें नीच तुम्हीं इसकर्मके करनेवालेहो और इस पृथ्वीपर पाप कर्मोंके उत्पत्तिस्थान होकर फिर कहो ३६ अथवा मौनरहो अबकभी तुमइस अयोग्य बिपरीत बातके कहनेको योग्यनहींहो ३७ जो फिर कभी अपनी निर्बुद्धितासे ऐसे कठोर बचन मुझसेकहोगे तो मैं बाणों सेतुझको यमलोकमें पहुंचाऊंगा ३८ हेमूर्खकेवल धर्महीसे विजय करना संभाव नहींहै अब उन्होंकाभी अधर्मसे कियाहुआ कर्म जैसे प्रकारहै उसकोभी सुनो ३९ हेसात्यकी प्रथम पांडव युधिष्ठिरको अधर्मसे ठगा और अधर्महीसे द्रौपदीको दुःखदिया ४० हे अज्ञानी उसीप्रकारसे द्रौपदी समेत सबपांडवोंको अधर्मसेही बनबासी कि-या और संपूर्ण धनको हरलिया ४१और दूसरेसे प्रेरणा कियाहुआ मद्रदेशका राजा शल्य अधर्मसेही अपनी ओरको बुलालिया और

बालक अभिमन्युकोभी अधर्महीसे मारा ४२ और इस ओरसे भी शत्रुओंके पुरोंके विजयकरनेवाले भीष्मजी भी अधर्महीसे मारेगये और तुझधर्मज्ञकेहाथसे भूरिश्रवा क्षत्रीभी अधर्मकरकेही मारागया ४३ हेयादवइसप्रकार विजयकी रक्षाकरनेवाले धर्मकेभी ज्ञातावीर पांडवोंसे और अन्य२ लोगोंसेभी युद्धमें ऐसे२कर्मकियेगये४४ वह उत्तमधर्म बड़ीकठिनतासे जाननेके योग्यहै और अधर्मभी बड़ेकष्ट से जाननेके योग्यहै कौरवोंके साथ युद्धकरो और पितृलोकमें मत जावो ४५ संजय बोले कि इसप्रकार कठोर रुक्षबचनोंको सुनकर श्रीमान सात्यकी कंपायमानों के समानहुआ ४६ उसके बचनोंको सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र सात्यकीने सर्पके समान श्वासलेकर रथपर धनुषधरहाथमें गदाकोलिया४७औरधृष्टद्युम्नके पासजाकर क्रोधसे यह बचन बोलाकि तुझको कठोर बचननहीं कहूंगा किन्तु तुझबधके योग्यको बधही करूंगा ४८ उस बड़े पराक्रमी और अत्यन्त क्रोध युक्त यमराजके समान नाशकरनेवाले अकस्मात् धृष्टद्युम्नकेसन्मुख आतेहुये सात्यकी को ४९ बासुदेवजोकी आज्ञासे महाबली भीम-सेनने शीघ्रहीरथसे कूदकर अपनी भुजाओंसेरोका५०बड़ापराक्रमी पांडव भीमसेन उसप्रकार क्रोधमें पूर्णभागतेहुये वेगवान् सात्यकी को बड़े बलसे पकड़कर चला ५१ उस भीमसेनने दोनों चरणोंको पकड़केनियत होकर उस पराक्रमियोंमें श्रेष्ठ सात्यकीको बड़ेबलसे छठवें चरणपर पकड़ा ५२हेराजा तब सहदेव शीघ्रही रथसे उतर कर पराक्रमीसे पकड़ेहुये सात्यकीसे बड़ी मधुरबाणी से यह बचन बोला ५३ कि हे श्रेष्ठ पुरुषोत्तम अंधक वृष्णी और पांचालोंसे श्रेष्ठ हमारादूसरा कोई उत्तम मित्रनहींहै५४ उसीप्रकार अन्धक वृष्णी और मुख्यकर श्रीकृष्णजीका मित्र हमारे सिवाय दूसरानहींविद्य-मानहै५५हेसात्यकीसमुद्रकेअन्तपर्य्यन्तखोजनाकरनेसे भीपांचालों काऐसा उत्तम दूसरामित्रनहींहै जैसे कि पाण्डव और वृष्णीहैं५६ सो आप ऐसे मित्र हैं उसीप्रकार मत्स्यदेशों में आपके इसप्रकार मित्रहैं जैसे कि आप हमारेहैं उसीप्रकार हम आपकेहैं ५७ आप

सब धर्मोंके ज्ञाताहोकर हे सात्यकी तुम मित्रधर्मको बिचारकरके इस धृष्टद्युम्नसे क्रोधको दूरकरके शान्तहोजावो ५८ तुमइस धृष्टद्युम्नके कहनेको क्षमाकरो और धृष्टद्युम्न तुम्हारे कहनेको क्षमा करै और हमभी क्षमा करनेवालेहैं जितेन्द्री क्षमावान् होनेके सिवाय दूसरी कोईबात उत्तम नहींहोती ५९ हेश्रेष्ठसहदेवकेसमझाने से सात्यकीके शान्त होजाने पर राजा पांचालका पुत्र धृष्टद्युम्न यह बचन बोला ६० हेभीमसेन इस युद्धके मदसे संयुक्त इससात्यकीको छोड़दो यह मुझको ऐसेपावेगा जैसे कि बायु पर्व्वतकोपाताहै ६१ जबतक मैं युद्धमें तीक्ष्णबाणों से इसके क्रोध वा युद्धको उत्साह और जीवनकोदूरकरदूं ६२ फिरमुझको क्या करनायोग्यहै जोयह पांडवोंका बड़ाकर्म बर्त्तमानहुआ औरयहकौरव आतेहैं ६३ इनसबको तोयुद्धमेंअर्जुन रोकेगाऔर मैंशायकोंसे इसके मस्तकको गिराऊंगा६४ यहमुझको युद्धमेंटूटे भुजवाला भूरिश्रवामानताहै इस कोछोड़ दो कैतो मैं इसको अथवा यहमुझकोमारेगा ६५ धृष्टद्युम्न के बचनोंको सुनता और सर्पके समान श्वासलेताभीमसेनकी भुजाओंके मध्यमें लगाहुआ पराक्रमी सात्यकी बारंबारनिकलनेकी चेष्टा करताथा ६६ वह दोनों बलवान् महापराक्रमी भुजाओंसे शोभायमानहोकर बैलोंके समान गर्जनेवालेहुये हे श्रेष्ठ फिर वासुदेवजी और धर्मराजने शीघ्रतासे ६७ बड़े उपाय पूर्व्वक दोनों बीरोंको थांभा हे क्षत्रियर्षभ फिरउन क्रोधसे रक्तनेत्रवाले बड़े धनुषधारियोंको रोककर युद्धमें दूसरे युद्धाभिलाषी शूरवीरोंके सन्मुखगये६८॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिशतोपरिनवनवतितमोऽध्यायः १९९ ॥

दोसौका अध्याय॥

संजयबोले कि फिर द्रोणनन्दन अश्वत्थामाने ऐसे शत्रुओं का नाशकिया जैसे कि प्रलयकालमें काल पुरुष से संयुक्त मृत्यु जीवों का नाशकरती है १ उसने भल्लोंसे शत्रुओं के मनुष्यों को मारकर शरीरोंका ऐसा पर्व्वत लगादिया जो ध्वजा बृक्ष शस्त्र शिखर और

मरेहुये हाथीही पाषाणरूप घोड़ेरूप किम्पुरुषोंसेपूर्ण धनुषरूपी लतासे संयुक्त मांस भक्षी राक्षस और पक्षियों से शब्दायमान भूत और यक्षोंके समूहों से व्याकुल था २ । ३ तदनन्तर उस नरोत्तम अश्वत्थामा ने बड़ेवेगसे गर्जकर अपनी प्रतिज्ञाको फिर आपकेपुत्रों को सुनाया ४ कि जो धर्मरूप कवच में नियत कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने युद्धकरनेवाले आचार्य से कहाथा कि शस्त्रों को त्याग दो ५ इसके प्रतीकार में उस युधिष्ठिरके देखतेहुये उसकी सेनाको भगा ऊंगा और सबको भगाकर उस मूर्ख धृष्टद्युम्न को मारूंगा ६ यह मैं तुझसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं कि जो मुझसे युद्धकरेंगे मैं उनको युद्धमें मारूंगा अब तुम अपनीसेनाको लौटावो ७ फिर आपके पुत्रने उसबचनको सुनकर बड़ेभयको त्यागकर बड़े सिंहनादोंसमेत सेनाको लौटाया ८ हे राजा फिर कौरवीय और पांडवीय सेनाको ऐसी बड़ी कठिन चढ़ाईहुई जैसे कि दो पूर्ण सागरों की होतीहै ९ क्रोधयुक्त कौरवलोग अश्वत्थामा के साथ नियतरूप थे और द्रोणाचार्यकेमारनेसे कौरव और पांचाल बड़ेउत्साहयुक्त उद्यतरूपथे १० हे राजा उन अत्यन्त प्रसन्नचित्त अपने बिषय में बिजय देखनेवाले क्रोधसेपूर्ण लोगोंका महाबेग उत्पन्नहुआ ११ जैसेकि पहाड़ पहाड़ से और सागर सागर से टक्कर खातेहैं वैसेही कौरव और पांडव हुये १२ तदनन्तर कौरव और पांडवों के अत्यन्त प्रसन्न सेना के लोगोंने हजारोंशंख और भेरियों को बजाया १३ जैसे कि मथेहुये समुद्र का शब्द होताहै उसीप्रकार आपकी सेना का बड़ा शब्द अपूर्व्व हुआ १४ इसके पीछे अश्वत्थामाने पांडव और पांचालोंकी सेनाको लक्ष्य बनाकर नारायणास्त्रको प्रकट किया १५ इसकेपीछे आकाश में प्रकाशित नोक मुखवाले सर्पोंके समान हजारों बाण पांडवोंको चलायमान करते प्रकट हुये १६ हे राजा उन्होंने एक मुहूर्त्त के मध्यमें दिशा आकाश और सेनाको ऐसे ढकदिया जैसे कि लोकभरको सूर्य्यकी किरणें व्याप्तकरलेतीहैं १७ हेमहाराज इसीप्रकार निर्मल आकाशके मध्यमें दूसरी प्रकाशित ज्योतियां

प्रकट हुई और काष्ण नामलोहे के गुड़क अथवा चार चक्र और दो चक्र रखनेवालो शक्ति बहुतसीगदा आरोंपर छुरे रखनेवाले प्रकाशित मंडलवाले चक्र १६ और शस्त्र रूप अस्त्रोंसे अत्यन्त व्याप्त अन्तरिक्षको देखकर पांडव सृंजी और सब पांचाललोग व्याकुल हुये २० हेराजा जैसे २ कि पांडवोंके महारथी युद्धकरनेवालेहुये उसी उसी प्रकार वहअस्त्र अधिक वृद्धि युक्तहुआ २१ तब युद्धमें उस नारायणास्त्रसे घायल वह महारथो अग्निसेभस्म होनेके समान सबओरसे पीड़ामान हुये २२ हेप्रभुजिस प्रकार शिशिरऋतुके अन्तमें सूखे बनको अग्नि भस्म करताहै उसीप्रकार उस अस्त्रने पांड़वों की सेना को भस्म करदिया २३ हेप्रभु अस्त्र के तेजसे पूर्ण सेना के नाशमानहोने पर धर्मके पुत्र युधिष्ठिरने बड़ेभयको पाया २४ उस सेनाको भगाहुआ अचेततासे युक्त और अर्जुनकी दोनों ओरकी स्थिति को देखकर धर्म पुत्र यह वचनबोला २५ किहे धृष्टद्युम्न पांचाल देशीसेना समेत भागो और हेसात्यकी तुमभी वृष्णी और अंधक वंशी क्षत्रियोंसे युक्त जाओ २६ धर्मात्मा बासुदेवजी भी अपने योग्य कर्मको करेंगे यह सब लोकोंके कल्याणको करतेहैं अपने कल्याणकोकैसे नहींकरेंगे २७मैं तुम सब सेनाके लोगोंसे कहताहूं युद्ध न करना चाहिये और मैंअपने सगेभाइयोंसमेत अग्निमें प्रवेशकरूंगा २८मैं भयभीतोंसे कठिनता पूर्व्वक पार होनेके योग्य युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्य्य रूपी समुद्रकोतरकर अपनेसबसमूहों समेत अश्वत्थामारूपी गोपद जलमेंडूबूंगा २६ अबराजादुर्य्योधनको अभिलाषा प्राप्तहोय मेरेही कारणसे कल्याणवृत्तो वाले आचार्य्यजी युद्धमेंगिरायेगये ३० और जिसकारणसे युद्धोंमें अनभिज्ञ वह बालक अभिमन्युउनसमर्थ और निर्दयी बहुत से महारथियों के हाथसे मारागया और रक्षितनहीं हुआ ३१ और जिसहेतुसे प्रार्थना करती हुई बिलापयुक्त द्रौपदी सभामें गई और दासभावको प्राप्तहोकर पुत्र समेत धृतराष्ट्रनेजिसको त्यागकिया ३२ और जिसके कारण से उसप्रकार कवच

सेरक्षित दुर्योधन घोड़ोंकेथकजानेपर जयद्रथकीरक्षाके निमित्त अर्जुनको मारनेका अभिलाषीहुआ ३३ अबमेरी बिजयमें उपाय करनेवाले सतजित आदिक पांचाल जिसब्रह्म अस्त्र जानने वालेके हाथसे मूल समेत गिराये गये ३४ अधर्मसे राज्यहीन हमलोगोंको जिस द्रोणाचार्य्यनेरोका परन्तु उसके बचनके अभिलाषी हमलोग उसके आज्ञावर्त्तीनहीं हुये ३५ जो वह हमपर अत्यन्त प्रीतिकरनेवाला मारागया मैं भी बांधवों समेत उसके निमित्त मरणको पाऊंगा ३६ इसप्रकार युधिष्ठिर के कहनेपर श्रीकृष्णजी शीघ्रही अपनी भुजाओं से सेनाको रोककर यह बचनबोले ३७ कि शीघ्रही शस्त्रोंको त्याग कर सवारियोंसे उतर पड़ो महात्माकी ओरसे इसअस्त्रके रोकनेमें यह लोक रचागयाहै ३८ तुम सब हाथी घोड़े और रथोंसे शीघ्र उतर पड़ो इस प्रकारसे इस पृथ्वीपर शस्त्र त्यागनेवाले तुम लोगोंको यह अस्त्रनहीं मारेगा ३९ जिसर प्रकार से शूरबीर इसअस्त्रके सन्मुख युद्ध करतेहैं उसी उसी प्रकार से यह कौरव अधिक तरबलिष्ट होतेजातेहैं ४० जो पुरुष सवारियोंसे उतरकर शस्त्रोंको रख देंगे उन मनुष्योंको युद्धमें यह शस्त्र नहीं मारेगा ४१ और जो कोई चित्तसेभी इस अस्त्रके सन्मुख लड़नेकी इच्छाकरेंगे उनसबको यह अस्त्रमारकर रसातलको भेजेगा ४२ हेभरतबंशी वह सबलोगबासुदेवजीके उनबचनोंको सुनकर देह और मनकेद्वारा शस्त्रोंकेत्यागनेमें उत्सुकहुये ४३ इसके अनन्तर पांडव भीमसेन उन सबबीरों को अस्त्रोंके त्यागनेमें इच्छावान देखकर प्रसन्न करता हुआ यह बचन बोला ४४ कि यहां किसी दशामेंभी किसीको अस्त्रोंका त्यागना योग्यनहींहै मैं बाणोंसे अश्वत्थामाके अस्त्रको रोकूंगा ४५ अथवा अपनी इस सुवर्ण जटितभारी गदासे अश्वत्थामाके अस्त्रको तोड़ता हुआ कालके समान प्रहार करूंगा ४६ यहांमेरे पराक्रमके समान कोई पुरुष इस प्रकारसेनहीं है जैसेकि सूर्य्यके समानदूसरीज्योति बर्त्तमान नहींहै ४७ गजराजकी सूंड़के समान और शैशिरनाम पर्व्वत के गिरानेमें समर्थमेरी भुजाओंको देखो ४८ मैं अकेलाही इस

लोकमें दशहजारहाथीके समान ऐसाबलवानहूं जैसेकि स्वर्ग में देवताओंकेमध्यमें अपनी समानतानरखनेवाला इन्द्र बिख्यातहै ४९ अबयुद्धमें अश्वत्थामाके प्रकाशित और अग्निरूप ज्वलित अस्त्रके हटानेमें मोटेस्कन्ध रखनेवाली मेरी भुजाओंके बल पराक्रम कोदेखो ५० जो नारायणास्त्रके सन्मुख युद्धकरनेवाला कोईबर्तमाननहीं है तो अब पांडव और कौरवों के देखतेहुए इसअस्त्रके सन्मुख मैंहीं युद्धकरूंगा ५१ हेअर्जुन तेरेहाथ से गांडीव धनुष का त्यागकरना नहीं उचितहै यह अयशरूपी कीच तुम चंद्रमाके समान रूपवाले कोनिर्मलता को बिगाड़ेगी ५२ अर्जुन बोले हे भीमसेन नारायण अस्त्र और गौ ब्राह्मणोंमें गांडीव धनुष मुझसे त्याग करनेकेहीयोग्यहै यहीमेरा उत्तम व्रतहै ५३ इसबचनको सुनकरभीमसेन बादलके समान शब्दायमान और सूर्य्यके समान प्रकाशित रथकी सवारीसे उस शत्रुबिजयी अश्वत्थामा के सन्मुखगया ५४ और शीघ्र पराक्रमकरनेवाले भीमसेन ने इसकोपाकर हस्त लाघवतासे पलमात्रमेंही बाणोंके जालसे ढकदिया ५५ तब अश्वत्थामाने हंसकर और कहकर उस प्रकाशित नोंक और मंत्रपढ़ेहुये बाणों से इससन्मुख दौड़नेवाले भीमसेन कोभी आच्छादित कर दिया ५६ वह भीमसेन युद्धमें अग्नि को उल्लंघने वाले प्रकाशित मुख सर्पोंके समान बाणों से ऐसा ढक गया जैसे कि स्फुलिंगों से सुवर्ण ढक जाताहै ५७ हेराजा उसभीमसेनका रूप ऐसेप्रकार का हुआ जैसे कि रात्रि के समय पट बीजनोंसे संयुक्त पहाड़का रूप हो जाता है ५८ हे महाराज उस के ऊपर चलाने में वह अश्वत्थामा का अस्त्र ऐसा बढ़ा जैसे कि बायु से उठाया हुआ अग्नि होताहै ५९ उस भयानक पराक्रम वाले भयके बढ़ाने वाले अस्त्रको देख कर एक भीमसेन के सिवाय सब पांडवी सेनामें महा भय उत्पन्न हुआ ६० इस के पीछे वह सब लोग शस्त्रों को पृथ्वी पर छोड़ कर रथ हाथी घोड़े आदि सब सवारियों से उतर पड़े ६१ उन सब के शस्त्र त्यागने और सवारियों से उतर जाने पर उस अस्त्र का बड़ा

वेग भीमसेन के मस्तक पर गिरा ६२ सब जीव मात्रोंने और बिशेष करके पांडवों ने हाहाकार किया और भीमसेन को उसी प्रकार तेजसे ढका हुआ देखा ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्वणिद्विशततमोऽध्यायः २०० ॥

दोसौएकका अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुनने अस्त्र से ढके हुये भीमसेन को देख कर तेज के नाश के लिये वारुणास्त्रसे आच्छादित कर दिया १ फिर अर्जुन के हस्तलाघव और अस्त्र के तेज के व्याप्त होने से किसीने भी वारुणास्त्रसे युक्त भीमसेन को नहीं देखा २ घोड़े रथ और सारथी समेत भीमसेन अश्वत्थामा के हाथसे ढका हुआ होकर ज्वालाओंकी माला रखने वाला बड़ी कठिनता से देखने के योग्य अग्नि के मध्य में रक्खी हुई अग्निके समान दिखाई पड़ा ३ हेराजा जैसे कि रात्रि के अन्त होने पर नक्षत्रादिक अस्ता चल पर प्राप्तहोते हैं उसी प्रकार भीमसेन के रथ पर बाणों के समूह गिरे ४ हेश्रेष्ठ वह भीमसेन और उस के घोड़े और सारथी समेत रथ अश्वत्थामा के अस्त्रसे ढका हुआ अग्नि के मध्य में वर्त्तमान हुआ ५ जैसे कि प्रलय कालमें सब स्थावर जंगम जीवों समेत सब जगतको अग्नि देवता भस्म करके ईश्वरके मुखमें प्राप्तहोते हैं उसी प्रकारसे अस्त्र नेभी अनेकों को मारकर भीमसेन को ढकदिया ६ जैसे कि अग्नि सूर्य्य में और सूर्य्य अग्निमेंप्रवेशकरे उसी प्रकार वह तेज भी प्रवेश करगया और वहपांडव नहींजानागया ७ उसप्रकार से भीमसेन के रथपरफैलेहुये उस अस्त्रको देखकर और युद्धमें अपनी समान किसी को न देखने वाले चेष्टाकरनेवाले अश्वत्थामाको देखकर ८ औरउन युधिष्ठिरादिक महारथियों को बिमुख हुये देखकर शस्त्रों को त्याग नेवाली सब पांडवी सेना अचेत रूप होगई ९ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले बड़े तेजस्वी बीर अर्जुन और बासुदेव जी रथसे कूदकर भीमसेनकी ओर दौड़े १० तदनन्तर वह दोनों बड़े पराक्रमीअश्व-

त्थामाके अस्त्रबलसे उत्पन्नहोने वालेतेज को मंझाकरउसी प्रकार माया में प्रवेशकरगये ११ तब वारुणास्त्रके प्रयोग औरदोनों कृष्णों के बल पराक्रम द्वारा उस अस्त्र से उत्पन्न होने वाली अग्निने उन शस्त्रके त्यागनेवाले श्रीकृष्ण और अर्जुन को भस्म नहीं किय। १२ इसके पीछे उन दोनों नर नारायण ने अस्त्रकी शान्ती के अर्थ बलसे भीमसेन को खैंचा और सब शस्त्रादिकों को पृथक् कर दिया १३ उस समय वह खैंचा हुआ भीमसेन बड़े शब्द से गर्जता था और उसकी गर्जना से अश्वत्थामा का वह घोर और कठिनता से बिजयहोने वाला अस्त्र औरभी वृद्धिको पाताथा १४ तब बासुदेव जी उससे बोले कि हे पांडुनन्दन यह क्या बातहै जो निषेध कियाहुआ भी युद्धसे नहीं लौटताहै १५ जो यह कौरव नन्दन युद्धसे बिजयहोजाय तो हम और यह सब राजालोग भी युद्ध को करें १६ हमसब तुम्हारे पक्षवाले रथोंसे उतरेहैं हे भीमसेन इस हेतुसे तुमभी शीघ्र रथसेउतरो १७ ऐसा कहकर श्रीकृष्ण जीने उस क्रोधसे रक्तनेत्र सर्पके समान श्वास लेनेवाले भीमसेन को रथसे पृथ्वीपर खड़ाकिया १८ जब वह रथ से पृथक किया और शस्त्र पृथ्वीपर रखवादिये उसी समय वह शत्रुओंका तपानेवाला नारायणास्त्र अत्यन्त शान्त होगया १९ संजयबोले कि इस रीतिसे उस कठिनतासे सहनेके योग्य तेजके अत्यन्त शान्त होजानेपर सब दिशा और विदिशा शुद्ध होगईं २० आनन्दरूपी वायु चलीं पशु पक्षीआदिक जीव शांतरूपहुये और सब सवारियां भी प्रसन्न हुईं २१ हे भरतवंशी इसके पीछे उस घोरतेजके शान्तहोने परवह बुद्धिमान् भीमसेन ऐसाशोभायमानहुआ जैसे कि प्रातःकाल के समय उदयहुआ सूर्य्य होताहै २२ फिर मरने से शेष बचीहुई पांडवोंकी सेना अस्त्रकी शान्तीसे प्रसन्न आपके पुत्रके मारने की इच्छासे नियत हुई २३ हे महाराज उस सेनाके नियत होने और उस प्रकार अस्त्रके निष्फल होनेपरदुर्योधन अश्वत्थामाजीसेबोला २४ कि हे अश्वत्थामा अब फिर आप उस अस्त्रको शीघ्र चलाओ

क्योंकि विजयके अभिलाषी यह पांचाल फिर सन्मुख आकर नियत हुये २५ हे धृतराष्ट्र आपके पुत्रके बचनको सुनकर अश्वत्थामाजी बड़े दुखीके समान श्वास लेकर उस राजासे यह बचन बोले २६ हे राजा यह अस्त्र दुबारा नहीं प्रकट होताहै न प्राप्त होताहै और बारंबार चलाहुआ चलानेवालेहीपर निस्संदेह लौटकर आता है २७ इस अस्त्रका निष्फल करना वासुदेवजीने प्रकट करदिया हे राजा अब अन्य दशामें शत्रुका मारना नियत किया जायगा २८ विजय होय अथवा मृत्यु होय इन दोनोंमेंसे विजयकी अपेक्षा मृत्यु काहीहोना श्रेष्ठहै यह मृतकोंके समान शत्रु शस्त्रोंके त्याग करनेसे विजय किपेगये २९ दुर्योधनबोले हे अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ गुरूजीके पुत्र जो यह अस्त्र दुबारा नहीं चलताहै तो दूसरे और किसीअस्त्र सेही गुरूके मारनेवालोंको मारो ३० आपके पास ऐसे दिव्य अस्त्र हैं जैसे कि बड़े तेजस्वी शिवजीके पासहैं अत्यन्त क्रोधयुक्त इन्द्र भी तुझ अभिलाषी के हाथसे नहीं बच सक्ता है ३१ धृतराष्ट्र बोले कि उपाधिसे द्रोणाचार्य्य के मरने और उस अस्त्रके निष्फलहोनेपर दुर्योधनसे उसप्रकार कहेहुये अश्वत्थामा ने फिरकौनसा कामकिया ३२ नारायणास्त्र से छूटे सेना मुखपरघूमनेवाले और युद्धकेनिमित्त सन्मुख नियत पांडवोंको युद्धमें देखकर क्याकिया ३३ संजयबोले कि वह सिंहलांगूल ध्वजाधारी पिताके मरणको जानता क्रोध से युक्त निर्भय होकर धृष्टद्युम्नके सन्मुख गया ३४ हे नरोत्तम उसपुरुषोत्तमने सन्मुख जाकर क्षुद्रकनाम बीस बाणोंसे और फिर बड़े वेगवाले पांच बाणोंसे घायल किया ३५ हे राजा इसके पीछे धृष्टद्युम्नने अग्निके समान ज्वलितरूप अश्वत्थामाको तरेसठ बाणों से घायल किया ३६ और सुनहरी पुंख तीक्ष्णधारवाले बीसबाणों से उसके सारथीको और तेजधार चारबाणोंसे चारोंघोड़ों को ३७ छेद छेद कर पृथ्वीको कंपायमान करता अश्वत्थामाके ऊपर ऐसा गर्जा मानो उस बड़ेयुद्धमें सब लोकके प्राणोंको हरणकरलेगा ३८ हे राजा फिर अस्त्रज्ञ और निश्चय करनेवाला धृष्टद्युम्न मृत्यु को

निवृत्त करके अश्वत्थामाके सन्मुख दौड़ा ३९ तिसके पीछे रथियोंमें श्रेष्ठ बड़े साहसी धृष्टद्युम्नने अश्वत्थामाके शिरपर बाणों की बर्षाकरी ४० तबतो पिताके मरणको याद करतेहुये अश्वत्थामाने युद्धमें उस क्रोधयुक्त को बाणोंसे ढककर दशबाणों से उस को भी छेदा ४१ अश्वत्थामाने अच्छी रीतिसे छोड़ेहुये क्षुरनाम दो बाणों से उसकी ध्वजा धनुषको काटकर अन्यबाणोंसे धृष्टद्युम्न को पीड़ा मान करके ४२ युद्धमें उसको घोड़े सारथी और रथसे रहित भी करदिया और फिर क्रोधपूर्वक बाणोंकेप्रहारोंसे उसकेसबपीछे चलने वालोंको घायलकिया ४३ हे राजा इसकेपीछे पांचालों की वह सेना भागी और भ्रान्तीसे युक्तरूप महापीड़ामानों ने परस्पर देखा ४४ फिरसात्यकी ने शूर बीरों को बिमुख और धृष्टद्युम्न को पीड़ामान देखकर शीघ्रही अपने रथको अश्वत्थामा के रथपर चलायमानकिया ४५ और क्रोधयुक्त ने तीक्ष्ण धारवाले आठ बाणोंसे अश्वत्थामा को पीड़ामान किया फिर नानाप्रकार के रूप वाले बीस बाणोंसे घायल करके ४६ उसको और उसके सारथी को घायल किया और चारबाणों से घोड़ों को छेदा सात्यकी के नानाप्रकार के बाणों से अत्यंत घायल बड़ा धनुषधारी ४७ वह अश्वत्थामा हंसताहुआ इस बचन को बोला हेसात्यकी इस गुरू के मारनेवाले में तेरीभी संयुक्तता जानीजाती है ४८ अब तू मुझसे उस ग्रसेहुयेको और अपने को रक्षित नहीं करसकेगा हे सात्यकी मैं अपने सत्य और तपकी शपथ खाताहूं ४९ कि जबतक मैं पांडवों के और वृष्णियों के बल पराक्रम रूप सब पांचालों को न मारलूंगा तबतक शान्ती को नहीं पाऊंगा ५० उनसबको यहां एकट्ठे करो मैं सोमकोंको मारूंगा अश्वत्थामाने ऐसा कहकर सूर्य्य की किरणरूप अत्यन्ततीक्ष्ण और उत्तम उस बाण को ५१ यादव के ऊपर ऐसे छोड़ा जैसे कि हरिने वृत्रासुर के ऊपर बज्रको छोड़ा था उसका चलायाहुआ वह शायक उसको कवच समेतछेदके ५२ पृथ्वी को चीरकर ऐसे प्रबेश करगया जैसे कि श्वास लेताहुआ

सर्प बिलमें प्रवेश करताहै वह टूटेकवच वाला शूर अंकुशसे पीड़ित हुये हाथीके समान ५३ घावसे बहुत रुधिरको डालनेवाला धनुष बाण को छोंड़कर रुधिर में लिप्त घायल होकर रथकीउपस्थ पर बैठ गया ५४ और सारथी केद्वारा अश्वत्थामाके सन्मुखसे शीघ्र-हीदूसरे रथपर पहुंचायागया फिरशत्रु संतापी अश्वत्थामानेसुन्दर पुंख और टेढे पर्व वाले दूसरे बाण से ५५ धृष्टद्युम्न को भृकुटी के मध्य में घायल किया प्रथम अत्यन्त घायल और पीछे अत्यन्त घायल और पीड़ा मान ५६ उसधृष्टद्युम्न ने निश्चलताको पाकर ध्वजाका सहारालिया हेराजा जैसे कि सिंहसे पीड़ामान हाथीहोता है उसी प्रकार बाणसे पीड़ामान उस धृष्टद्युम्नको देखकर ५७ पांडवों की ओरसे यहपांच शूरबीर रथी बड़े वेगसे उसके सन्मुख दौड़े अर्जुन,भीमसेन,पौरवब्रह्म क्षत्र,चंदेरी हैशियोंका युवराज, और मालव सुदर्शन, इन हाहाकार करने वाले सबधनुषधारी बीरों ने ५६ बीर अश्वत्थामाको सबओरसे घेरलिया बीसपदोंपर उन सावधान वीरों ने उस क्रोधयुक्त गुरु पुत्रको सब ओरसे एकसाथही घायल किया अश्वत्थामा ने बिषैले सर्प के रूप तेजधार पच्चीसबाणों से ६०।६१ एकहीबाणमें पच्चीस शायकोंकोकाटा औरफिर सातताक्ष्ण बाणों से पुरूरवाको पीड़ामान किया ६२ तीनबाण से मालवको एक बाणसे अर्जुनको और छः बाणों से भीमसेनको घायलकिया हेराजा उसके पीछे उनसब महारथियोंने सुनहरी पुंख तेजधार बाणों से एक समयपर और पृथक २ भीछेदा युवराजने बीसबाणों से ६३।६४ अर्जुन ने आठ बाणोंसे और बाकी सबोंने तीन २ बाणोंसे अश्वत्थामा को व्यथितकिया फिर अश्वत्थामा ने छः बाणोंसे अर्जुन को दशबाणसे बासुदेव जी को पांचसे भीमसेनको चारसे युवराजको और दोदो बाणोंसे मालव और पुरूरवाको घायल किया ६५ अश्वत्थामाने छः बाणोंसे भीमसेनके सारथी को दो बाणोंसे धनुष और ध्वजाकोछेदकर अर्जुनको पांच बाणोंसे घायलकरके घोर सिंहनादसे गर्जनाकरी ६६ आगेपीछे से अश्वत्थामाके चलाये हुये

उन तेजबिषभरे घोर बाणोंसे पृथ्वी आकाश स्वर्ग दिशा और बिदिशा ढकगई ६७ बड़ेतेजस्वी इन्द्रके समान पराक्रमी अश्वत्थामा ने अपने रथपर बैठे हुए सुदर्शनकी उनदोनोंभुजावोंको जोकि इन्द्र कोध्वजाके समान थीं और शिरको तीन बाणोंसे एकही समयमें काटा६८ और पौरवको रथशक्तीसे घायल करके उसके रथको बाणों से तिलतिल के समान काट श्रेष्ठ चंदन सेलिप्तभुजाओं को काटकर भल्लके द्वारा उसके शिरकोभी शरीरसे जुदाकिया ६९ फिर शीघ्रता करनेवाले ने हटकर कमल मालाके वर्ण चंदेरी देशकेस्वामी तरुण युवराजको अत्यन्त अग्निरूप प्रज्वलित बाणों से घोड़े सारथी समेत छेदकर मृत्युके बशीभूत किया ७० नेत्रोंके सन्मुख अश्वत्थामाके हाथसे मारेहुये मालव पौरव और चन्देरीके राजा युवराजको देखकर ७१महाबाहु पांडव भीमसेनने बड़ाक्रोध किया और शत्रु संतापीने बड़ेक्रोधमें भरकर विषधर सर्पके समान सैकड़ों तीक्ष्ण बाणोंसे ७२ युद्धमें अश्वत्थामाको आच्छादित कर दिया फिर बड़े तेजस्वी क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने उस बाण वृष्टि को काटकर ७३तेजधार बाणोंसे भीमसेनको घायलकिया उसके पीछे महाबाहु महाबली भीमसेनने अश्वत्थामाके ७४धनुषकोक्षुरप्रसे काटकर उसकोभी बाणोंसे घायलकिया फिर बड़े साहसी अश्वत्थमाने उस टूटे धनुषको डालकर ७५ दूसरेधनुष को लेकरबाणोंसे भीमसेनको व्यथितकिया युद्धमें पराक्रम करनेवाले उनदोनों भीमसेन और अश्वत्थामाने ७६ बर्षा करनेवालेदोबादलोंकेसमान बाणोंकी बर्षाको बरसाया भीमसेनके नामसे चिह्नित सुनहरी पुंख तेजधार बाणोंने ७७अश्वत्थामाको ऐसेढकदिया जैसेकि बादलोंके समूह सूर्य्यको ढकदेतेहैं और उसीप्रकार वह भीमसेनभीअश्वत्थामाके छोड़े हुये टेढ़े पर्व्ववाले हजारों बाणोंसे शीघ्रढकगया युद्धमें शोभा पानेवाले अश्वत्थामासे युद्धमें ढकाहुआ ७८।७९ भीमसेन पीड़ामान नहींहुआ हेमहाराज वह आश्चर्य्य साहुआ फिरमहाबाहु भीमसेनने सबर्णसे अलंकृत ८० यमराजके दण्डकी समान

तीक्ष्ण दशनाराचों को छोड़ा हेराजावह बाण अश्वत्थामा के जत्रु-स्थान को ८१ घायल करके पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगये जैसे बामीमें सर्प घुस जातेहैं महात्मा पांडव के हाथसे अत्यन्त घायल उन अश्वत्थामाजीने ८२ ध्वजाकी लाठीको पकड़करदोनों नेत्रोंको बन्दकर लिया हेराजा फिर वह अश्वत्थामा एकमुहूर्त्त में सचेत होकर ८३युद्धमें रुधिरसे लिप्त बड़ेक्रोधमें नियतहुये उस महात्मा पाण्डवसे अत्यन्त घायल ८४ उस महाबाहुने भीमसेन के रथ पर वेगकिया फिर कानतक खैंचेहुये बड़े प्रकाशित ८५ विषैले सर्पकेरूप सौबाण उसके ऊपर फेंके फिर युद्धमें प्रशंसनीय उसके पराक्रम को साधारण माननेवाले पांडव भीमसेनने भी ८६ शीघ्र उग्रबाणोंकी बर्षाकरी इसकेपीछे क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने विशिखनाम बाणोंसे उसके धनुषको काटकर ८७तेजधार बाणोंसे पांडवको छातीपर घायल कियाफिर क्रोधयुक्त भीमसेनने धनुषको लेकर ८८ युद्धमें तेजधार पांचबाणोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया बर्षाऋतुमें बादलोंके समान बाण वृष्टियोंकेबरसाने वाले८९क्रोधसे रक्तनेत्र उनदोनोंने युद्धमें परस्परढकदिया फिरतालोंकेघोरशब्दोंसे परस्पर डरानेवाले ९० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्मपर कर्म करनेकी इ-च्छासे युद्धकरने लगे अश्वत्थामाने सुवर्ण जटित बड़ेधनुषको चला यमानकरके ९१ सन्मुखसे बाण चलानेवाले भीमसेनका ऐसेदेखा जैसेकि शरदऋतुमेंमध्याह्नके समय प्रकाशितकिरणोंकेस्वामीसूर्य्य होतेहैं ९२विशिखोंके लेनेबाले बाणोंके चढ़ानेवाले और खैंचकर छोड़नेवाले अश्वत्थामाका अन्तर मनुष्योंने नहींदेखा ९३ हेमहा राज तब बाणोंके छोड़नेवाले उन अश्वत्थामा जीका धनुष मंडल आलात चक्रके स्वरूप होगया उसके धनुषसे गिरेहुये सैकड़ों हजा-रोंबाण आकाशमें ऐसे दिखाई पड़े जैसेकि टीड़ियोंकेसमूहदिखाई देतेहैं ९४।९५फिर अश्वत्थामाके छोड़ेहुये सुवर्णसे अलंकृत वह घोरबाण लगातार भीमसेनके रथपर फैले ९६ हे भरतबंशी वहां हमने भीमसेनके बड़े अद्भुत पराक्रम बल सामर्थ्य प्रभाव और नि-

श्चयकोदेखा ९७ जैसेकि वर्षाऋतुमें बड़ीघोर वृष्टी होती है उसी प्रकार चारोंओर से बुद्धिमान अश्वत्थामाकी प्रकटकीहुई उस बाणवृष्टिको ध्यान न करते उस ९८ भयानक पराक्रमी अश्वत्थामाके मारनेकोइच्छा करते भीमसेनने बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादल करताहै ९९ बड़े युद्धमें भीमसेन का सुवर्ण पृष्टीखेंचा हुआ धनुष द्वितीय इन्द्र धनुषके समान शोभायमान हुआ १०० उस धनुषसे युद्धमेंसैकड़ोंहजारोंबाण उस युद्धके शोभा देनेवाले अश्वत्थामा को ढकते प्रकट हुये १०१ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र इस प्रकार बाण जालों को उनदोनों के छोड़ते में मध्यकी वायुभी समीपजानेको समर्थनहींहुई १०२ हेमहाराज जिस प्रकार अश्वत्थामाने भीमसेन के मारनेकी इच्छासे सुवर्णसे अलंकृततेल मले साफनोकवाले बाणोंको चलाया १०३ उसीप्रकार अश्वत्थामा को मारना चाहते भीमसेनने भी उनबाणों के विशिषोंसे अन्तरिक्ष में तीन २ खंडकर दिये १०४ फिर बलवान क्रोधयुक्त पांडव भीमसेन ने अश्वत्थामा के मारने की इच्छासे घोर और उग्रबाणोंको बरसाया १०५ इसकेपीछे महाअस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने उस बाण वृष्टिको अपनीअस्त्र मायासे रोककर शीघ्रही भीमसेनके धनुषको काटा १०६ और क्रोधभरेनेत्र बहुतसे बाणोंसेउसको भीछेदा उसटूटे धनुषवाले पराक्रमी भीमसेनने बड़ी भयानकरथ शक्तीको १०७ वेगसे घुमाकर अश्वत्थामाके रथपर फेंका युद्धमेंहस्तलाघवता को दिखलाते अश्वत्थामाने उस बड़ी उल्कारूप अकस्मात आतीहुई रथ शक्तीको तेजबाणोंसे काटा इसी अंतरमें मन्द मुसकान करते भीमसेनने दृढ़ धनुषको लेकर १०८। १०९ विशिखोंसे अश्वत्थामाको घायलकिया हेमहाराज फिरउसअश्वत्थामाने भीमसेनके सारथीको ११० टेढ़े पर्ववाले बाणसे ललाट परघायल किया हे राजा फिर बलवान अश्वत्थामाके हाथसे अत्यन्त घायल उससारथीने १११ घोड़ोंको बागडोरों कोछोड़कर बड़ीअचेतता को पायाफिर रथसारथी के अचेत होनेपर घोड़े भागे ११२ हेराजेन्द्र

सब धनुष धारियों के देखते भीमसेनके घोड़े भागे भागेहुये घोड़ों के कारणसे युद्ध भूमिसेहटायेहुये उसभीमसेन को देखकर ११३ अत्यन्त प्रसन्नचित्त अजेय अश्वत्थामाने बड़े शंख को बजाया फिर सबपांचाल और पांडव भीमसेन ११४ भयसे पूर्ण धृष्टद्युम्नके रथ को छोड़कर दिशाओंको भागे तब अश्वत्थामा जोउनछिन्नभिन्नों को पीछेकी ओरसेबाणोंकरके घायल करतेवेगसे पांडवीसेनाको चलायमान करते सन्मुखवर्त्तमानहुये ११५ हेराजा युद्धमें अश्वत्थामा के हाथसे घायलहुये उन राजाओंने उस द्रोण पुत्रके भय से सब दिशाओंको सेवनकिया ११६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशतोपरिएकतमोऽध्यायः २०१॥

दोसोदोका अध्याय॥

संजयबोले कि उसइधर उधर होनेवाली सेनाको देखकर कुन्ती केपुत्र बड़े साहसी अर्जुनने अश्वत्थामाके बिजय करनेकी इच्छासे सेनाको रोका १ तब गोविंदजी और अर्जुनके बड़ेउपायसे नियत कियेहुये वहसेनाके लोग वहांनियत नहींहुये २ अकेलाअर्जुनही सोमक मत्स्य देशीयऔर अन्यवीरों समेतकौरवोंके सन्मुखवर्त्तमानहुआ ३ फिर बड़ा धनुषधारी अर्जुन शीघ्र दौड़कर सिंहलांगूल ध्वजाधारी अश्वत्थामासे बोला ४ किहे अश्वत्थामा आप अपनी बुद्धि सामर्थ्य बल वीरता और धृतराष्ट्र केपुत्रोंमें जोप्रीति पूर्वक हमारे साथमें जो शत्रुताहै ५ और जोआपमें तेजहै उससबको मुझ पर दिखलावो और द्रोणाचार्य्य का मारने वाला वह धृष्टद्युम्नही आपके अभिमानको दूरकरेगा ६ कालाग्नि के समान प्रसिद्ध शत्रुओंकी मृत्युरूप धृष्टद्युम्न के और केशवजी समेत मेरे भी सन्मुख हो ७ अब युद्धमें तुझदुर्व्रत्तकेअहंकारकोनाशकरूंगा धृतराष्ट्र बोले हेसंजयआचार्यकापुत्रपराक्रमीप्रतिष्ठाके योग्यहैउसकी प्रीति अर्जुन केसाथहै और वहमहात्मा अर्जुनका प्यारा है प्रथम अर्जुनका ऐसा

कठोर बचन नहींहुआ फिर अर्जुनने किसहेतुसे अपने मित्रसे रूखे बचन कहे ६ संजय बोले कि बाण और अस्त्रकी रीति के ज्ञाता माधव सुदर्शन युवराज और पौरव वृद्ध क्षत्र के मरने पर १० धृष्टद्युम्न सात्यकी और भीमसेन के पराजय होनेऔर उन बचनों से युधिष्ठिर के मर्मस्थलोंके चलायमान होने ११ और दुःखको स्मरण कर हृदय की व्याकुलता उत्पन्न होनेपर अर्जुन का क्रोध जैसा पहिले नहीं हुआ था उस्से अधिक उत्पन्नहुआ १२ उस कारण से नीच पुरुषके समान होकर प्रतिष्ठाके योग्य आचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा से अयोग्य अप्रिय निन्दित और रूखे बचनकहे १३ हेराजा सबमर्मों के छेदने वाले अर्जुनके बचनों से इस प्रकार कठोर बचन सुनने वाले क्रोधसे श्वासलेते बड़े धनुष धारी १४ साव धानअश्वत्थामाजी ने अधिक तर श्रीकृष्ण और अर्जुन पर क्रोध करके युद्धमें नियत होकर पबित्रता से आचमनकर १५ देवताओं से भी अजेय आग्नेय अस्त्रको धारण किया औरदृष्टिके सन्मुख आनेवाले शत्रुओं के समहों को लक्ष्यबना कर १६ निर्धूम ज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित बाण को परम मन्त्र पढ़कर बड़े क्रोध में प्रवृत्त होकर फेंका १७ फिर आकाश में बाणों की कठिन बर्षाहुई अग्निकीज्वालाओं से पूर्ण उस बाणोंकी बर्षाने अर्जुनकोचलाय मानकिया १८ आकाश से उल्का पात हुये दिशा अबिदित हुई भयकारी अन्धकारसे अकस्मात वह सब सेना व्याप्त होगई १९ और इकट्ठे होने वाले राक्षस और पिशाच अत्यन्त शब्द करने लगे अशुभ बायुचली सूर्य्य अप्रकाशित हुये और सब दिशाओंमें काकभयानक शब्द करने लगे और रुधिर की बर्षा करने वाले बादलभी आकाशमें गर्जने लगे २०। २१ पशुपक्षी गौ योगी और सुन्दर व्रतवाले मुनियों ने भीबड़ी अशान्ती को पाया २२ जिसमें सूर्य्य समेत सब जीव धारी घूमते दिखाई पड़ते थे वह त्रिलोकी चारों ओरसे दुखी और तापोंसे व्याप्त हो गई २३ इसी प्रकार अस्त्रके तेजसे अत्यन्त संतप्त पृथ्वी में रहने वाले सर्पादिक भी श्वासलेते हुये घोर तेजके

देखने की इच्छा से ऊपर आये २४ हे भरतवंशी जलके स्थानों के गरम होने से जलते हुये जल जीवों ने भीबड़ी व्याकुलताकोपाया २५ बाणों की छोटी बड़ी बर्षा जो कि गरुड़ और वायु के समान बेग वानथीं दिशा बिदिशा आकाश पृथ्वी औरसब ओरसे हुई २६ बज्र के समान बेग वान अश्वत्थामा जीके बाणोंसे घायल और अत्यन्त भस्मीभूत शत्रु ऐसे गिर पड़े जैसे कि अग्निके जलायेहुये बृक्ष गिर पड़ते हैं २७ जलते हुये बड़े हाथी बादल के शब्द के समान भयानक शब्दों को गर्जते चारों ओरसे पृथ्वी पर गिरपड़े २८ हे राजा भयसे भयभीत हुये अन्य हाथी दिशाओंको भागे और ऐसे शब्द करने लगे जैसे कि पूर्व समयमें बन के मध्यमें दावानल नाम अग्नि से घिरे हुये २९ पुकारते हैं हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र जैसे दावानल अग्नि से जली हुई बृक्षों की चोटियां होती हैं उसी प्रकार घोड़े और रथों के समूह दृष्टि गोचर हुये ३० और जहां तहां रथों के हजारों समूह भी गिरपड़े हेराजा उस भयसे व्याकुल सेनाको युद्धमें ऐसे भस्म कर दिया ३१ जैसे कि प्रलय कालमें सम्बर्त्तक नाम अग्नि सब जीवों को भस्म कर देताहै फिर युद्धमें जलती पांडवी सेना को देखकर ३२ अत्यन्त प्रसन्न चित्त आपके शूर बीरों ने सिंहनादों को किया इसके पीछे नानाप्रकारके रूप वाले हजारों बाजों को भी ३३ बिजय से शोभाय मान और प्रसन्न चित्त आपकी सेना के लोगों ने शीघ्र बजाया हे राजा अंधेरे से लोक के ढकजाने पर सब अक्षौहिणी समेत पांडवअर्जुन ३४ बड़े युद्ध में दिखाई नहीं पड़े उस प्रकार का अस्त्र प्रथम हमने देखा था नसुना था ३५ जैसा कि क्रोध युक्त अश्वत्थामाने प्रकट किया हे महाराज फिर अर्जुन ने उस ब्राह्मयअस्त्रको प्रकट किया ३६ जोकि ब्रह्माजीने सब अस्त्रों के दूरकरनेको प्रकटकिया था तदनन्तर एक मुहूर्त्त में ही वह अन्धकार दूर होगया ३७ शीतल बायु चली निर्मल दिशा शोभाय मान हुई उस समय वहांपर हमने सम्पूर्ण अक्षौहिणीको अपूर्व्व रूपसे मृतक ३८ और अस्त्रकेतेजसे

ऐसा भस्महुआ देखा कि जिनका रूप नहीं जाना जाता था उसके पीछे बड़े धनुषधारी बीर अर्जुन और केशवजी अस्त्रसे छुटेहुये ३९ एकसाथही ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि आकाशमें दो सूर्य्य होते हैं फिर गांडीव धनुषधारी और केशवजी दोनों अजेय दिखाईपड़े ४० और आपके शूरबीरों का भय उत्पन्न करनेवाला जुड़ाहुआ वहरथ पताका ध्वजाअनुकर्ष घोड़े और उत्तम शस्त्रों समेत शोभायमान हुआ ४१ इसके पीछे एक क्षणभरमेंही अत्यन्त प्रसन्न पांडवोंके किलकिला शब्दशंखभेरी आदिकबाजों समेत उत्पन्न हुये ४२ वहां बेगसे साथ आनेवाले केशवजी और अर्जुनको देखकर दोनोंसेनाओं का यहविचार हुआथा कि मारेगये ४३ फिर उनबिनाघायल और अत्यन्त प्रसन्नचित्तोंने उत्तमशंखों को बजाया आपके सबपुत्र पांडवों को अत्यन्त प्रसन्न देखकर पीड़ामान हुये ४४ हे श्रेष्ठ बड़े दुःखी अश्वत्थामाने दोनोंमहात्माओं को छुटाहुआ देखकर एक मुहूर्त्त भर चिन्ताकरी कि यह क्या बात है ४५ हे राजेन्द्र इसकेपीछे ध्यान औरशोकमें नियत अश्वत्थामाजी चिन्ताकरके उष्ण और लम्बी श्वासा लेते चित्त से उदास हुये ४६ और धनुषको त्याग शीघ्र रथसे कूद यह सब मिथ्या है इस शब्द को बड़ी धिक्कारी के साथ कहते हुये युद्धसे हटगये ४७ फिर स्वच्छ बादल के रूपपापों से रहित साक्षात् धर्म के समान आगे वर्त्तमान बेदव्यास जी को देखा ४८ अश्वत्थामाजी उस कौरवकुलके तारनेवाले व्यासजीको आगे नियत देखकर रुकेहुये कण्ठ और महादुखो के समान नमस्कार करके इस बचन को बोले ४९ कि हे व्यासजी नाश युक्त का अविनाशीपनके साथ दर्शनहोना और अस्त्रका नियम से रहित होना हम इसको नहीं जानते हैं कि इसमें क्या व्यतिक्रमहै यह मेरा अस्त्र कैसे निष्फल हुआ इसमें मेरा कौनसा बिपरीत कर्महै ५० अथवा यहलोकों का पराजय न होनाही बिपरीतहै जो यह दोनों कृष्णजीवते हैं निश्चय काल दुःख से उल्लंघन होनेवाला है ५१ असुर, गन्धर्व, राक्षस, पिशाच, सर्प, यक्ष, पक्षी, और मनुष्य किसी दशा

में भी ५२ मेरे चलाये हुये अस्त्रको निष्फलनहीं करसक्ते हैं सोयह ज्वाला रूप अस्त्रसेनाको मारकर शान्तहोगया ५३ मैंने सबका मारनेवाला बड़ा भयानक अस्त्र छोड़ा इसअस्त्रने इनमरणधर्मा के शवजी और अर्जुन को कैसे नहीं मारा ५४ हे भगवान् इस मेरे पूछते हुये मेरे सन्देहको शीघ्र निवृत्तकरके सब ब्योरे समेत वृत्तान्त कहिये हे महामुनि मैं उससब वृत्तान्त को मूलसमेत सुनना चाहताहूं ५५ व्यासजीबोले कि यह बड़ाभारी प्रयोजनहै जिसको कि तुमने बड़े आश्चर्य्यपूर्व्वक मुझसे पूछाहै मैं उस सबको मूल समेत तुमसे कहताहूं तुम चित्त को सावधान करके सुनों ५६ जो यह विश्वका उत्पन्न करनेवाला प्राचीनों का भी प्राचीन कार्य्य करने के अर्थ धर्म्म का पुत्र नारायणनाम उत्पन्न हुआहै ५७ वह बड़े तेजस्वी अग्नि और सूर्य्यके समान हिमालय पर्व्वत परस्थित ऊर्ध्वबाहू होकर तेजव्रतमें नियत हुआ ५८ तब वायु भक्षण करनेवाले कमललोचनने छासठि हजार बर्ष तक अपने शरीरको सुखाया ५९ फिर दूसरी तपस्या करके तीसरे तपको भी तप कर उससे भी द्विगुणित तपस्याको करके इसमें पृथ्वी और आकाशके मध्य भागको अपने तेजसे भरदिया ६० हे तात जब वह उस तप से अत्यन्त निवृत्त हुये तब विश्वके ईश्वर विश्व के उत्पत्ति स्थान जगत्के प्रभु ६१ अत्यन्त अजेय और सब देवताओंसे स्तूयमान उनशिवजी महाराजको देखा जोकि छोटोंसे भी छोटा अर्थात् महासूक्ष्म और स्थूलोंसे भी महास्थूल ६२ रुद्र ईशान श्रेष्ठ हर शम्भु जटाजूटधारी सबके चैतन्य करनेवाले स्थावर जंगम मात्रके बड़े उत्पत्ति स्थान ६३ दुर्वारण अर्थात् कठिनतासे हटानेके योग्य दुर्धर अर्थात् विरूपाक्ष अथवा दुःखसे धारण करनेके योग्य दुष्टोंपर कठिन क्रोध करनेवाले महात्मा और सबके नाश करनेवाले साधु लोगोंपर उदारता करनेवाले दिव्य धनुष तूणीर के धारण करने वाले सुवर्णकवची अपार बल पराक्रम वाले पिनाक, वज्र, शकाशितशूल, फरसा, गदा, और बड़े खड्गके रखनेवाले श्वेतवर्ण जटा

मूसलधारी चन्द्रमौलि और व्याघ्र चर्म्मके धारण करनेवाले दण्ड धारी ६५ शुभ बाजूबन्दोंसमेत नागोंकाही यज्ञोपवीत धारण करनेवाले विश्वेदेवताओंके गण और जीव समूहोंसे शोभायमान अपना पराया न रखनेवाले तपोंके रक्षाश्रय वृद्धोंके प्रिय बचनोंसे स्तुतिमान ६६ जलदिशा आकाश पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य वायु और अग्निरूपकाल स्वरूप दुराचारी पुरुष जिनके दर्शनको नहीं कर सक्ते और वेद ब्राह्मणों के शत्रुओं के मारनेवाले होकर मोक्ष का कारण रूपहैं ६७ अत्यन्त प्रसन्नचित्त बासुदेवजी उनका दर्शनकर के मन बाणी बचन और बुद्धि समेत प्रसन्नहुये और जिसको सदा चारी शोकसे रहित अन्तःकरण वाले ब्राह्मण पापोंसे रहित होकर देखतेहैं उन धर्मरूप प्रशन्सनीय विश्वरूप शिवजीका भक्त बासुदेवजीने अपने तपकेद्वारा आताहुआ देखा ६८ इसके पीछे नारायणजीने रुद्राक्षकीमाला से संयुक्तशरीर प्रकाशों के समूह विश्व के उत्पत्तिस्थान शिवजी महाराजको दण्डवतकरी ६९ भक्तिमान कमललोचन नारायणजीने उस बरदाता प्रभु क्रीड़ा करनेवाले जीवों के समूहोंसे युक्त अजन्मा ईसान अर्थात् सर्वेश्वर गुप्त, कारण आत्मा, अविनाशी, अन्धकके मारनेवाले विरूपाक्ष रुद्रजी को पार्वतीजी समेत दण्डवतकरके स्तुतिकी७०।७१ श्रीनारायणजी बोले कि हे मोक्षके अभिलाषी पुरुषोंके प्राप्यरूप आदिदेववह सब प्रजापति तुमसे उत्पन्न हुये जो कि इस भवनके रक्षकहैं हे देवता जिन्होंने इस पृथ्वी पर आकर पूर्व्व समयमें आपकी उत्पन्न की हुई इस प्राचीन सृष्टिकी रक्षाकरी ७२ मैं देवता, असुर, नाग, राक्षस, पिशाच, मनुष्य, गरुड़ गन्धर्व, यक्ष, और पृथक् २ प्रकारके जीव समूहोंको तुमसेहीउत्पन्न हुआ जानताहूं ७३ इंद्र, यम, कुबेर, बरुण, त्वष्टा, और पितृ संबंधी शुभ कर्म आपकेही निमित्तहैं अर्थात् सबदेवताओं करके आपही तृप्त करनेके योग्यहोरूप, तेज, शब्द, आकाश, बायुस्वाद युक्त जल, गन्ध, पृथ्वी, ७४काल, ब्रह्मा, वेद, ब्राह्मण, और सब जड चैतन्यात्मक जगत तुमसेही उत्पन्न होनेवाला है जैसे कि

समुद्रसे अबुकण पृथक्२होजातेहैं और फिर अन्तसमय परउनसमु द्रोंकेसाथऐक्यताको पातेहैं ७५ इसी प्रकार ज्ञानीपुरुष जीवोंकी उ-त्पत्तिऔर नाशकोमानकरआपकी सायुज्यताको पाताहैहृदयाकाशमें प्रकट होनेवाले मायारूप बिद्याअबिद्यासे संयुक्त महत्तत्व अहंकार पंचतन्मात्रा नाममानसी प्रकृतिसे संयुक्त जीव ईश्वरनाम दोपक्षीहैं उनके रात्रिके निवास स्थान अश्वत्थ वृक्षहैं जोकि मानसी प्रकृति औरदशोंइन्द्रियोंके रक्षकहैं जोपुटकि पंचतत्त्वात्मक शरीरके धारण करनेवालेहैं वहसब आपहीसे उत्पन्नहैं तुम इनसे श्रेष्ठऔरपृथक् हो अर्थात् छब्बीसों तत्त्वादिसे तुम परमात्मा रूप सत्ताईसवें हो भूत भविष्य बर्त्तमान काल ईश्वर और सब विश्वसंबन्धी भवनआ-पसे उत्पन्नहैं ७६। ७७ मुझ भजनेवाले भक्तपर कृपाकरो अर्थात् पालन पोषणकरो मेरे अप्रिय कर्मको मेरे चित्तमें प्रवेशकरनेसे मुझ कोमतमारोअहंकार आदिकसे पृथक् जीवात्माको निरूपाधिस्वरूप मायासे रहित तुझ ब्रह्मको इसप्रकार जानकर ज्ञानी प्राप्तहोता है ७८ हे देवताओंमें श्रेष्ठ तुझ सर्वरूपके पूजनको करना चाहते और तलाश करते मैंने तुझ प्रशंसनीयकी स्तुतिकरी तुममुझसे स्तूय-मानहोकर मेरेप्रिय और कठिनतासे पानेके योग्य बरोंको दोतुमने मायाको बहुत रूपसे प्रकट कियाहै उसमायाको मेरे ऊपरकभी प्रकटनकरो ७९ व्यासजीबोलेकि नारायण ऋषिसेस्तूयमानअचि-न्त्यात्मापिनाक धनुषधारी नीलकण्ठजीने उसदेवताओंमें श्रेष्ठ और योग्य नारायणजीके अर्थ बरदिया ८०श्रीभगवान शिवजीबोलेकि हेनारायण तुम मेरी कृपासे मनुष्य देवता और गन्धर्बोंमें बड़ेपरा-क्रमी और बुद्धिमान होगे ८१ और देवता असुर महासर्प पिशाच गन्धर्ब और यक्षराक्षसभीतुमकोनहींसहसकेंगे ८२ और गरुड़नाग सिंह और व्याघ्रादिकभी तुम्हारे तेजकोनहीं सहसकेंगे और कोई देवताभी तुमको युद्धमें विजय नहीं करसकेगा ८३ और मेरीकृपासे कोई किसी दशामेंभी बज्रबायु शस्त्र अग्नि शुष्कता आर्द्रता सब स्थावर जंगमोंके द्वारातुम्हारी पीड़ाको नहींकरसकेगा और युद्धमें

जाकर मुझसेभी अधिक होगे ८४। ८५ प्रथमहीसे श्रीकृष्णजीने इन बरोंको पायाहै वही यह कृष्णदेवता अपनी मायासे मोहित होकर इस जगतमें घूमताहै ८६ उसके तपसे नरनाम महामुनि उत्पन्न हुआ उस नरनाम अर्जुनको सदैव इस श्रीकृष्ण देवताही के समान जानो ८७ वही यह देवताओं के आदि नरनारायण ऋषि बड़ेतपोंसे युक्त लोकयात्रा बिधानके अर्थ युगयुगमें उत्पन्न होते हैं ८८ हे बड़े बुद्धिमान् उसीप्रकार तुमभी शीघ्र अपने कर्म और बड़े तप के द्वारा तेज और क्रोध को धारण करते रुद्रस्वरूप उत्पन्नहुये ८९ सो नारायण देवताके समान ज्ञानी आपने संसार को शम्भुरूप जानकर उसके प्रिय करनेकी इच्छासे शरीरको नियमोंकेद्वारा अत्यन्त दुर्बल किया ९० हेबड़ाई देनेवाले आपने प्रकाशमान मंत्रको करके जप होम और उपहारों के द्वारा महापुरुष स्वरूपको पूजनकिया ९१ हे पंडित इसीप्रकार पूर्वदेहोंमें तुमसे पूजेहुये वह शिवजी प्रसन्न हुये और तुम्हारे हृदयके बहुत बरोंको दिया९२तेरे और उनदोनों नरनारायणोंके जन्म कर्मतप और योग श्रेष्ठहैं प्रत्येकयुगमें उनदोनों नर नारायण रूपसूक्ष्मशरीरवाले सगुणरूप देवता में * ९३ जो पुरुष प्रभुशिवजीको सर्वरूप जानकर सूक्ष्मरूपमें पूजनकरताहै निश्चयकरके उस सूक्ष्मरूप में सनातन आत्मयोग और शास्त्रयोगहै९४इसप्रकारसे पूजनकरनेवाले देवता सिद्ध और महर्षि लोग परलोक में अकेले शिवजीको चाहतेहैं वह सबके उत्पन्न करने वालेहैं सनातन श्रीकृष्णजी यज्ञों के द्वारा पूजन करनेके योग्यहैं ९६ जो पुरुष सबजीवों के उत्पत्ति स्थानशिवजीको जानकर प्रभुके सूक्ष्म रूपका पूजन करताहै उसपर शिवजी

---

* इस स्मृति में लिखाहै कि चारकी बिद्यमानता में जलफल प्राप्तहोताहै वह विनाशमान है और दोकी बिद्यमानता में अबिनाशी फल मिलता है अब जोकि मूर्त्तिपूजन करनेमें पूजनकरनेवाले का चित्त, आत्मा, इन्द्री, और बिषय इनचारोंकी वर्तमानता होतीहै इसहेतुसे नरनारायणजी में सूक्ष्मरूप में शिवजी का पूजन किया क्योंकि उस में केवल आत्मा और चित्तकीही वर्तमानता होतीहै ९३ ॥

बड़ी कृपाको करते हैं ९७ फिर महारथी अश्वत्थामाने उनके उस बचनको सुनकर रुद्रजी को नमस्कार करके श्रीकृष्ण जीको बहुत माना ९८ खड़ेहुये रोमांच जितेन्द्री रूपउस अस्वत्थामाने व्यास महर्षिजी को दण्डवत करके सेना को देखकर बिश्रामको करवाया ९९ हे राजा युद्धमें द्रोणाचार्य्य के गिराने के पीछे पांडवों का और दुःखी कौरवों काबिश्राम हुआ १०० हेधृतराष्ट्र इसप्रकार से वेदके पारांगत होनेवाले द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण पांचदिन युद्धकर के सेना मारकर ब्रह्मलोक में गये १०१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणिद्विशतोपरिद्वितीयोऽध्यायः २०२ ॥

दोसौतीनका अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि धृष्टद्युम्न के हाथ से उस अतिरथी द्रोणाचार्य्य के मरनेपर मेरेपुत्र और पांडवोंने क्या किया १ संजयबोले कि धृष्टद्युम्न के हाथसे उस अतिरथी द्रोणाचार्य्य के मरने और कौरवों के छिन्न भिन्न होनेपर भरतबंशियों में श्रेष्ठ कुन्ती के पुत्र अर्जुनने २ अपनी बिजय प्रकट करनेवाले बड़े आश्चर्य्य को देख कर दैवइच्छा से आये हुये व्यासजीसे पूछा ३ कि स्वच्छ शस्त्रोंसे युद्धमें शत्रुओंको मारते हुये मैंने आगेसे जातेहुये अग्नि के समान प्रकाश भरेहुये पुरुषको देखा ४ हेमहामुनि वहज्वालायमानपुरुष शूलको उठाकर जिस दिशामें प्राप्त होताहै उसीदिशा में मेरेसब शत्रु छिन्न भिन्न होजातेहैं ५ सबलोग उससे छिन्न भिन्न किये हुये शत्रुओंको मेरे हाथसे भगाया और छिन्न भिन्न किया हुआ मानतेहैं मैं उसके पीछे की ओरसे उस से छिन्न भिन्न किये हुये सेनाके लोगोंके पीछे जाताहूं ६ हे भगवान् उन को आप बर्णन कीजिये कि वह पुरुषोत्तम कौन हैं जिसको कि मैंने शूलहाथ में लिये तेजसे सूर्य्यके समान देखा ७ वह चरणों सेनपृथ्वीको स्पर्शकरता है न शूलको छोड़ताहै उसके तेजके कारण शूलसे हजारोंशूलगिरे८ व्यासजी बोलेकि हे अर्जुन तुमने प्रजापति के अर्थात् ब्रह्मा विष्णु

रुद्रके आदि, चिन्मात्ररूप, और शरीर रूप सब पुरियों में व्याप्त आदि, प्रभु, पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्गरूप प्रकाशमान्, सबलोकों के ईश्वर समर्थ, ९ महेश्वर, बरदाता, शङ्करजी, को देखा है उसबर दाता भुवनेश्वर देवताकी शरणको प्राप्तहो १० जो कि महादेव, महात्मा, ईशान, जटाधारी, बिभु, त्रिनेत्र, दीर्घबाहु, रुद्र, शिखा धारी, चीर बस्त्रोंसेयुक्त शरीर ११ महादेव, हरि, स्थाणु, बरदाता भुवनेश्वर, जगत् प्रधान, अजेय, जगत्पति, ईश्वर, सेभी अधिक अर्थात् उपाधि से रहित चिन्मात्र १२ जगत् के माता पिता रूप, बिजयी, जगद्गति, बिश्वात्मा, बिश्वके उत्पन्न करनेवाले, बिश्व-मूर्त्ति, यशस्वी, १३ बिश्व, बिश्वेश्वर, जगत्के आनन्दउत्पन्नकरने वाले, सबकर्मोंके ईश्वर, प्रभु, शंभु, स्वयंभु, अर्थात् अपने आप उत्पन्न होनेवाले जीवमात्रोंके स्वामी, भूतभविष्य वर्तमान् के उत्पन्न करनेवाले १५ कर्मयोगरूप ये गेश्वर, सर्वात्मा, और जो सबलोकों के ईश्वरहैं उनकेभी ईश्वर सबसेश्रेष्ठ, जगत् से श्रेष्ठ, वृद्धतम, ब्रह्मारूप १५ तीनोंलोकोंके रचनेवाले एक, तीनोंलोकों के, रक्षाश्रय, शुद्धात्मा, भव, भयानकरूप, चन्द्रशेखर, १६ सनातन पृथ्वीके, धारण करनेवालेदेवता और जो सर्ववाणियोंका ईश्वर, है उसकेभी ईश्वर अनधिकारियों को कठिनतासे मिलनेके योग्य जराजन्म मरणादिकोंसे रहित १७ ज्ञानस्वरूप, ज्ञानसे मिलने, केयोग्य, ज्ञानमें श्रेष्ठ दुखसो जाननेके योग्य और भक्तोंको उनबरों के देनेवालेहैं जो कि उनकी कृपा से बिचार कियेजायं १८ उस समर्थके पार्षद, दिव्य और नाना प्रकारके रूपोंसे बामन, जटिल, मुंड, छोटीग्रीवा, बड़ा उदर १९ बड़ाशरीर, बड़ा उत्साह, इसी प्रकार बड़े २ श्रवणभी धारण करनेवालेहैं हे अर्जुनवह महादेव महेश्वर इस प्रकार के भयानक मुख चरण रूपान्तर पोशाक भूषण वाले पार्षदोंसे पूजितहैं हे तात बहतेजस्वी शिवजी अपनी कृपा से तेरे आगे चलतेहैं २०। २१ हे अर्जुन सदैव उसघोर और रोमांचों के खड़े करनेवाले युद्धमें बड़े धनुषधारी प्रहार करनेवाले अश्वत्थामा

कर्ण और कृपाचार्य्यसे रक्षित २२ सेनाको सिवाय भवरूप धारी बड़े धनुषधारी देवता महेश्वर के और कौनसा पुरुष मनकरकेभी पराजय करसक्ताहै २३ उस ईश्वरके आगेनियतहोनेपर कोईसन्मुख होनेकोउत्साह नहीं करताहै तीनोंलोकोंमें उसके समानजीवधारी कोईवर्त्तमान नहींहै २४ युद्धमें उसक्रोध रूपकोगन्धसेभीवहशत्रु लोगअचेतहोकर कांपतेहैं और गिरतेहैं जिनके किबहुतसे आदमी मारेगये २५ देवतालोग उन शिवजी के अर्थनमस्कार करते स्वर्ग में नियतहैं औरलोकोंमें जो अन्य २ स्वर्गके बिजय करनेवाले मनुष्यहैं वह २६ औरजोभक्तसदैवअनन्यभावहैंउसबरदातादेवता शिवरुद्र उमापति सुरेशकी उपासनाकरतेहैं वह इसलोकमें सुखको पाकर परम गतिको पातेहैं २७ हेकुन्तीके पुत्र तुम सदैव उसशान्त रूपके अर्थ नमस्कारकरो उस रुद्रनीलकण्ठ सूक्ष्मरूप बड़ेसूक्ष्मरूप तेजस्वी२८गंगाजलसे पूर्णजटाधारी कराल कुबेरकोभी बरदेनेवाले मायाशवल,ब्रह्मवालके समान जिसकी किरणहैं उसआनन्दउत्पन्न करने वालेको नमस्कारकरो२९ सबकाअभिलाषित पिंगलाक्षस्थाणु और पुटी रूप शरीरों में बर्त्तमान होने वाले पिंगल बर्णकेश धारी मुंड सूक्ष्म और संसार सागरके पार करनेवाले के अर्थ नमस्कार करो ३० सूर्य्य रूप संसार के प्रकाश करनेवाले शोभायमान बिभूति वाले देवताओं के भी देवता भगवान भवरूप नाश कर्त्ता और संसार के प्यारे और प्रिय पोशाक ३१ वेष्टन बांधने वाले शुभ वस्त्र धारी सहस्त्राक्ष बर्षा करनेवाले पर्व्वत निवासी बड़ेशान्त बल्कल धारी स्वामीके निमित्त नमस्कार करो ३२ सुबर्ण मय भुजा राजा रूप उग्र दिशाओं के स्वामी बादल और जीवों के स्वामी के अर्थ नमस्कार है ३३ वृक्षों के और गौओं के स्वामी वृक्षोंसे संयुक्त शरीरवाले सेना पति अन्तर्य्यामी के अर्थ नमस्कार ३४ श्रवा हाथमें रखने वाले अध्वर्य्यु प्रकाशमान धनुष धारी और श्रीपरशुराम रूपके अर्थ नमस्कार है भव रूप विश्वके स्वामी तप रूप विस्तरधारी के अर्थ नमस्कार है ३५ सहस्त्रशीर्ष सहस्त्राक्ष सहस्त्र-

भुज और सहस्रपाद के अर्थ नमस्कार है ३६ हे कुन्तीके पुत्र उस बरदाता भुवनेश्वर बिरूपाक्ष दक्षयज्ञ बिध्वंसी ३७ उमा पतिकी शरण जाओ जोकि प्रजाओं के स्वामी बड़े उग्र जीवों के पति अबिनाशी जटा जूटधारी ब्रह्मादिक उत्तम पुरुषों को मायासे भ्रमाने वाले उत्तम नाभि रखनेवाले वृषभध्वज ३८ तीनों लोकों के नाश में समर्थ अहंकाररखनेवाले धर्मकेस्वामी धर्महीकोश्रेष्ठ माननेवाले बर्षा का अन्त और फल करनेवाले इन्द्रादिक देवताओं में श्रेष्ठ धर्म से प्रकाशमान पुरुषों को बड़ा फल देने वाले धर्मसेही आत्मा का साक्षात्कार करने वाले धर्मसेही पाने के योग्य सुन्दर नेत्र३९ उत्तम शस्त्र वाले बिष्णु रूप बाण रखनेवाले धर्म रूप महेश्वर और करोड़ों ब्रह्माण्डों के आश्रय स्थान रूप उदर रखने वाले ब्रह्माण्ड रूप व्याघ्र चर्मसे संयुक्त शरीर ४० लोक के ईश्वर बर दाता वेद ब्राह्मणों के स्वामी ब्राह्मण प्रिय हाथमें त्रिशूल खड्ग और ढालके रखने वाले प्रभु ४१ पिनाक धनुषधारी लोकोंकपति ईश्वर देवता शरण्य चीर बिस्तर धारी की शरण को प्राप्त होताहूं ४२ उस देवताओं के ईश्वरके अर्थ नमस्कारहै जिसका सखाकुवेर देवताहै ऐसे सुन्दर व्रत श्रेष्ठ पोशाक वाले के अर्थ नमस्कारहै ४३ उग्र शस्त्रधारी देवताओं में श्रेष्ठ देवताके अर्थ नमस्कार भव रूप को नमस्कार बहु धन्वीके अर्थ नमस्कार स्थाणुके अर्थ सदैव नमस्कार धनुषधारी पार्षद रखनेवाले देवताको नमस्कार ४४ धनुष धारी धनुष धारियों के प्यारे धनुष धारी देवता को नमस्कार और तुझ धन्वन्तर धनुष रूप धनुष धारियों के आचार्य्य के अर्थ नमस्कार ४५ त्रिपुर के मारने वाले भगके नेत्र उखाड़ने वाले बनस्पतियों के पति और नरोंके स्वामी के अर्थ नमस्कार माताओं के और गौओं के स्वामी के अर्थ नमस्कार ४६ गौओं के पति और सदैव यज्ञोंके स्वामी के अर्थ नमस्कार जलोंके और देवताओं के स्वामी के अर्थ नमस्कार ४७ पूषा देवताके दांत तोड़नेवाले और तीन नेत्र रखने वाले बरदाता नीलकण्ठ पिंगल बर्ण सुवर्णकेश धा-

रोके अर्थनमस्कार ४८ ज्ञानी महादेवजीके जो दिव्य कर्महैं उनको अपनीबुद्धिकी सामर्थ्यके अनुसार कहताहूं ४९ उनशिवजीके क्रोध युक्तहोनपर पातालवर्त्ती देवता असुर गन्धर्व औरराक्षस लोकमेंसुख से वृद्धि नहीं पातेहैं ५० पूर्व्व समयमें क्रोध युक्तमहा देवजीने बिधिके अनुसार रचेहुये दक्षकेयज्ञको बिध्वंस किया उस समय वह शिवजी दया से रहित होकर ५१ धनुषसेबाणको छोड़कर बड़ेशब्द से गर्जे तब उन देवताओंने सुख और शान्तीको पाया ५२ अकस्मात यज्ञके बिध्वंसहोने और महेश्वरजीके क्रोध युक्त होनेपरउस तल प्रत्यंचाके शब्दसे सब लोक महा व्याकुल हुये ५३ हे अर्जुन देवता और असुर गिरपड़े और आधीनतामें बर्त्तमानहुये और सब समुद्र व्याकुल होकर पृथ्वी भी कंपायमान हुई ५४ पर्व्वत फटगये दिशाओं समेत सर्प मोहित हुये कठिन अन्धकार से पूर्ण लोक नहीं जाने गये ५५ सूर्य्य समेत सब प्रकाशमानोंके प्रकाशोंकोअस्तकिया और वह सब भयसेव्याकुल अचेतहोगये इसीप्रकार ५६ सुख चाहनेवाले ऋषियोंने अपनी और जीव धारियों की शान्तीको किया और हंसते हुये शिवजी पूषा देवताकी ओर दौड़े ५७ और पुरोडास भक्षण करनवाले के दांतों को उखाड़ा इसके पीछे उन शिवजीसे गुप्त होनेवाले कंपायमान देवता उस यज्ञशाला से निकल गये ५८ फिर बुद्धिमान शिवजी ने धुएं और पतंगों से युक्त बिजली बादल के रूप तेजवाले देवताओं के बाणोंको धनुष पर चढ़ाया ५९ फिर सब देवताओं ने बाणों को देख महेश्वर जी को दण्डवत करके रुद्रजीके उत्तम यज्ञ भागको कल्पना किया ६० हे राजा देवता भयसे शरणमें आये तब क्रोधरहित शिवजी केही द्वारा वह यज्ञपूर्ण हुआ ६१ और भिन्न भिन्न देवता भी अबतक उन से भयभीत हैं आकाश के मध्यमें बलवान असुरों के लोहमयी रजतमयी और स्वर्णमयी तीनपुर बहुत बड़ेथे स्वर्णमयी कमलाक्षका रजतमयी ताराक्षका ६२ और तीसरा लोहमयी बिद्युन्माली राक्षसकाथा इन्द्र अपने सब अस्त्रों सेभी उन पुरोंके तोड़ने कोसमर्थ

नहीं हुआ ६४ उसके पीछे सब देवता पीड़ामान होकर रुद्रजी की शरण में गये और इन्द्र समेत वहसब देवता रुद्रजी से बोले ६५ कि यह त्रिपुरबासी घोर दैत्य ब्रह्माजी से बरपाकर लोकोंको अधिक पीड़ा देतेहैं और बरकेही पाने से वह बड़े अहंकारी हैं ६६ हे देवताओं के महेश्वर महादेवजी आपके सिवाय दूसरा कोई किसी प्रकारसे भी उनके मारने को समर्थ नहीं है हे ईश्वर उन देवताओं से शत्रुता करने वालोंको आपमारिये हे रुद्रजी सब कर्मोंमें पशु रुद्रहोंगे हे भूतेश्वर तुमइन असुरों को मारोगे ६८ देवताओं के बचनों को सुनकर उन हरने तथास्तु यह कहकर देवताओं के प्रियकी इच्छासे गन्धमादन और बिन्ध्याचलपर्व्वत को अपनी छोटी ध्वजा बनाकर ६९ उन त्रिनेत्रधारी शंकरजी ने सागर बन समेत पृथ्वीको रथबना कर सर्पों के राजा शेषनाग को रथका अक्ष बनाकर ७० चन्द्रमा और सूर्य्यको रथके पहिये बनाके और ऐल पुत्र और पुष्पदन्त को कमानी बनाकर ७१ मलयाचल को युग करके तक्षक को त्रिवेणु बनाके सर्पों समेत पर्व्वतोंको पोकच बनाकर चारों वेदोंको चारों घोड़े बनाकर धनुर्वेद आदिक उपवेदोंको लगाम बनाकर ७३ सावित्रीको रस्सी ओंकार को चाबुक बनाकर और ब्रह्माजीको सारथी बनाकर ७४ उसीप्रकार मन्दराचल पर्व्वत को गांडीव और बासुकी सर्पको गण करके बिष्णुजीको उत्तमबाण और अग्निको भाल्व बनाकर ७५ बायुको बाणके पक्षोंमें यमराज को पुंखमें बिजलीको निश्राण बनाके और मेरुपहाड़को ध्वजा करके ७६ फिर प्रहार करने वालोंमें उत्तम और अचल शिवजी सब देवताओंके उस दिव्य रथ पर सवार होकर त्रिपुर के मारने के निमित्त ७७ असुरों के नाश कर्त्ता बड़े पराक्रमी तपोधन ऋषि और देवताओं से स्तुति किये हुये श्रीमान् ७८ प्रभु शिवजी अपने से सम्बन्धरखने वाली दिव्य और अनूपम सवारीको बनाकर अचल रूप हजार बर्षतक नियत हुये ७९ जब अन्तरिक्षके मध्य में तीनों पुर मिल गये तब उन शिवजीने तीन पर्ब्ब और तीन भाल रखने

वाले बाण से उन पुरोंको तोड़ा ८० दानव लोग उस कालाग्निसे युक्त बिष्णु और चन्द्रमा से संयुक्त उस बाणकी ओर देखनेको भी समर्थ नहीं हुये ८१ फिर देवीपार्वती आप पंचशिखाधारी बालक को गोदीमें करके उन पुरोंके भस्म करनेवाले शिवजीके देखनेको गईं ८२ जानने को इच्छा करके उमा देवी देवताओं से बोलीं कि यह कौनहै तब सब लोकों के ईश्वर समर्थ प्रभु शिवजी ने हंसकर शीघ्रही उस क्रोधयुक्त और निन्दा करने वाली और बज्रसे प्रहार करने वाली इन्द्रकी उस भुजाको बज्र समेत रोकदिया ८३ । ८४ इसके पीछे वह अचल भुजा वाला इन्द्र देवताओं के समूहों से युक्त शीघ्र अविनाशी प्रभु ब्रह्माजी के पास गया ८५ तब वह सब देवता उनको प्रणाम करके हाथ जोड़कर बोले कि हेब्राह्मण पार्वतीजीकी गोदीमें बर्त्तमान अपूर्व्व जीव धारी कौन पुरुष था ८६ वह बाल रूपधारी हमसे नहीं देखागया इस हेतुसे आपको पूछना चाहते हैं जिस युद्धन करने वाले बालक की लीलासेही इन्द्र समेत हम सब देवता पराजित हुये तब ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ ब्रह्माजी उन देवताओं के बचनों को सुनकर ८७ । ८८ स्वयंभू ब्रह्माजी उस बड़े तेजस्वी बालक को ध्यान करके इन्द्रादिक देवताओं से बोले ८९ कि वह बालक भगवान् हर चराचर जगत का प्रभु है उस महेश्वर से दूसरा कोई बड़ा नहींहै जो महा तेजस्वी उमा देवीके साथ तुमने देखाहै उन शिवजीने पार्वतीजीके कारणसे बाल रूप को धारण किया तुमलोग मुझ समेत उसीको प्राप्तकरो ९१ वही भगवान् देवता सब लोकोंका ईश्वर प्रभुहै प्रजा पतियों समेत उन सब देवताओं ने उस भुवनेश्वर बाल सूर्य्यके समान प्रकाश मानको नहीं जाना इसके पीछे उन पितामह ब्रह्माजीने पास जाकर महेश्वरजी को देखकर ९२ । ९३ उत्तम जानकर स्तुतिकरी ९४ ब्रह्माजी बोले कि तुम यज्ञ अर्थात् बिष्णु रूप हो तुम्हीं इस भवन के पालन करने वाले हो तुम्हींलय स्थानहो तुम्हीं उत्पत्ति के कारणहो हे महा देवजी तुम परमज्योति रूप स्थानहो ९५ हे

भगवान् हे भूत भविष्य बर्त्तमान के स्वामी लोक नाथ जगत् पति यह सब स्थावर जंगम संसार तुम से व्याप्तहै ९६ आपके क्रोधसे पीड़ामानहोने वाले इन्द्रके ऊपर कृपाकरो व्यासजी बोलेकि ब्रह्मा जी के इन बचनोंको सुनकर प्रसन्न चित्त महेश्वरजीने कृपापूर्व्वक सन्मुख होकर अट्टहास किया ९७ फिर सब देवताओंने उमा देवी समेत रुद्रजीको प्रसन्न किया और इन्द्रको भुजा फिर यथाव-स्थित होगई ९८ वह देवताओंमें श्रेष्ठ दक्ष यज्ञ बिध्वंसी भगवान् शिवजी उमादेवी समेत उन देवताओंके ऊपर प्रसन्न हुये ९९ वही रुद्रहै वही शिवहै वही अग्निहै वही सर्ब रूपहै वही सब का ज्ञाता है वही इन्द्र बायु अश्विनी कुमार और वही बिजलीहै १०० वही उत्पत्तिका कारण बादल और वही महादेवहै वही सनातनहै वही चन्द्रमा वही ईशान और सूर्य्यहै वही बरुणहै १०१ वहीकालवही नाश करने वाली मृत्युहै वही यमराजहै वही दिनरातहै वही मास पक्ष ऋतु संध्या और बर्ष है वही धाता बिधाता बिश्वात्मा और सृष्टिका उत्पन्न करनेवाला है वही अशरीरी होकर सब देवताओं के शरीरों को धारण करताहै १०२ सब देवताओंसे स्तुतिमानवह देवता एक प्रकार अनेक प्रकार अथवा हजारों लाखों प्रकार का और लाखों रूपोंका रखनेवालाहै १०३ वेदज्ञ ब्राह्मणोंने उसदेवता के दो शरीर जानेहैं एक घोर दूसरा अघोरहै फिर वहदोनों शरीर बहुत प्रकारके हैं १०४ उसका जो घोर शरीर है वह अग्नि बिष्णु और सूर्य्य है और उसका अघोर शरीर जल ज्योति अर्थात् नक्षत्र और चन्द्रमाहै १०५ वेद वेदांग उपनिषद पुराण यहसब आत्मतत्त्व का निश्चय करने वालेहैं जो इनमें बड़ा गुप्तहै वही निश्चय करके देवता महेश्वरहै १०६ वहफिर अजन्मा भगवान्महादेवजी ऐसेहैं कि उनके गुणोंका बर्णन मैं हजार बर्षतक भीनहीं करसक्ता हेपांडु नन्दन वह शरण्य अत्यन्त प्रसन्न शिवजी सब ग्रहोंके पंजे में फंसे हुये सब पापोंसे युक्त शरणागत भक्तोंकोमुक्त करतेहैं १०७। १०८ वह शिवजी आयु नीरोग्यता ऐश्वर्य्यधन और उत्तम कामनाओंको

अपने भक्तोंको देतेहैं फिरवहीगिराता है १०६ इंद्रसमेत सबदेवताओंमें उसीका ऐश्वर्य्य कहाजाता है वहीलोकमें मनुष्योंके शुभाशुभ कर्मोंका फल देताहै ११० वह कामनाओं के ऐश्वर्य्यसे ईश्वर और महेश्वरभी कहाजाता है वहबड़े २ जीवों काभी ईश्वरहै १११ निश्चय करके वह अनेक प्रकारके असंख्य रूपोंसे विश्वको व्याप्त करताहै उसदेवताका जो मुखहै वह समुद्रमेंनियतहै११२वही बड़वानलनामसेविख्यात होकरहव्यको पानकरताहै यहीदेवता स्मशान भूमियों में सदैव बास करताहै ११३ मनुष्य उसबीर स्थानपरइस ईश्वरको पूजतेहैं इसके रूप प्रकाशमान और घोर अनेकहैं ११४ मनुष्य लोकमें इसके जिन रूपोंको पूजते और स्तुति करतेहैं और लोकमें उसके सार्थक अनेक नाम हैं ११५ प्रतिष्ठा और कर्मोंकी प्रसिद्धीसे सदैव कहेजातेहैं और वेदमें उसकी शतरुद्रीगाई जाती है और उस महात्माका उपस्थान अनन्त रुद्रनामहै ११६ वह देवता कामनाओंका प्रभुहै जो दिव्य और मानुष है वह बिभु और प्रभु बड़ादेवता बिश्वको व्यापित करताहै ११७ब्राह्मण और मुनि लोग उसको सबसे परे कहतेहैं यही देवताओंका आदिहै इसीके मुखसे अग्नि उत्पन्नहुईहै ११८ जिस हेतुसे किसब प्रकार करके जीवोंका पालनकरताहैसाथ रहताहैऔर उन्होंका बड़ा स्वामीहैइसीसेबिश्वपति कहागयाहै११९जिस हेतुसे कि उसका लिङ्ग अविनाशी और ब्रह्मचर्य्यके साथ नियतहै और लोकका पालन करताहै उस हेतुसे महेश्वर कहागयाहै १२० ऋषि देवता गन्धर्व और अप्सराओंने उसके लिङ्गको पूजा वह भी सबसे परे नियतहै १२१ उस लिंगके पूजे जानेपर वह महेश्वरजी अत्यन्त प्रसन्न होतेहैं और उस पूजासे वह सूक्ष्म शरीरसेभी बहुत सुखी हेा केसर्बानन्दको देतेहैं १२२ जिस हेतुसे कि उसके बहुत प्रकारके जड़ चैतन्य नाम रूप भूत भविष्य और बर्त्तमान तीनों कालों में नियतहैं उसहेतुसे भवरूपकहे जातेहैं १२३ अग्नि रूप एक नेत्र रखनेवाला और सबओर को नेत्र रखनेसे भी प्रकाशमानहै और जो क्रोधसे लोकोंमें व्याप्त

हुआ इस हेतुसेसर्ब रूप कहागया १२४ और जो कि उसकाधूम्र रूपहै इसीसे धूर्जटी कहा जाताहै और जो कि उसमें बिश्वेदेवात-न्मयहैं इसीसे वह बिश्वरूप कहागया१२५ जब स्वर्ग जल पृथ्वी नाम यहतीनों देवी उस भुवनेश्वरको भजतीहैं उस हेतुसेत्र्यम्बक कहे जातेहैं १२६ जो कि वह सब कर्मोंमें मनुष्योंके कल्याणको चाहताहै उस हेतुसे शिव कहाजाताहै १२७ और जो कि यह महा पुरुष सहस्त्राक्ष अयुताक्ष और सब ओरको नेत्र करके बिश्वका पोषण करताहै उस हेतुसे महादेव कहाजाताहै १२८ जो कि मह त्तत्वसे पूर्ब नियत हुआऔर जिस हेतुसे प्राणकी उत्पत्ति स्थितिसे भीपूर्ब हुआ और सदैव अचल स्वरूप वालाहै उस हेतुसे स्थाणु कहाजाताहै १२९ लोकमें जो सूर्य्य चन्द्रमा और अग्निको किरणों प्रकाशको करतीहैं वह सूर्य्य चन्द्रमा और अग्नि रूपनेत्र रखने वाले शिवजीके केश संज्ञिक नामहैं इसी हेतुसे व्योमकेश कहेजा-तेहैं १३० जो कि तीनों कालोंमें उत्पन्न होनेवाला सब जगत शिव रूपहै इस हेतुसे वह तीनों कालोंका उत्पत्ति स्थानहै १३१शरीरों के मध्यमें दश प्रकारके बिषम रूपोंसे नियत है और इस लोकमें आत्मारूप होनेसे सब जीवोंका समरूपहै वह बिषमतामें नियत जीवोंके मध्यमें प्राण और अपान रूप बायुहै १३२ जो कि उस महात्माके स्वरूप और लिंगको भी पूजताहै वह लिंगका पूजन करनेवाला सदैव बड़ी लक्ष्मीको भोगताहै १३३ दोनों जंघाओंसे ऊपर शिवजीका शरीर अग्नि रूपहै अर्थात् भोगनेवालाहै उसी से ब्राह्मण और क्षत्री उत्पन्न हुये और शिवजी का आधाशरीर चन्द्रमा रूपहै अर्थात् भोजन रूपहै उसमेंसे बैश्य और शूद्र उत्पन्नहुये इस प्रकारसे शिवजीका आधा शरीर अग्नि और आधा चन्द्रमा कहाजाताहै १३४ उसका बड़ा शरीर देवताओंसे भी अ-धिक तेजस्वी और प्रकाशमानहै और नरलोकोंके मध्यमें उसका प्रकाशमान घोर शरीर अग्नि रूप कहाजाताहै १३५ इसी प्रकार जो उसका शिव नाम शरीरहै वह ब्रह्मचर्य्यको करताहै और जो

उसका बड़ाघोर रूपहै वह ईश्वर रूपसबका भक्षण करताहै१३६ जो कि अग्निके समान भस्म करताहै और शस्त्रके समान तीक्ष्णहै और यमराजके समान उग्रहै और कालके समानप्रतापवानहैऔर मांस रुधिर और मज्जाका भक्षण करनेवालाहै इन सब कारणोंसे रुद्रकहाजाताहै १३७ कपि शब्द श्रेष्ठ का बाचीहै और वृष धर्म्म कहाजाताहै इसी हेतुसे वह देवताओंका भी देवता भगवान् वृषा कपि नाम कहाजाताहै १३८ और जो कि ब्रह्मा इन्द्र बरुण और कूबेरको अपने आधीन करताहै इस हेतुसे हरनाम कहा जाताहै १३६ देवता महेश्वरने बन्द किये हुये नेत्रों समेत बल करके अपने ललाटमें तीसरे नेत्रको उत्पन्न किया उसी हेतुसे वह त्र्यक्ष कहा जाताहै १४० हे अर्जुन यह देवता महादेव हैं जो युद्ध में पिनाक धनुषधारी होकर तेरेआगे शत्रुओंके मनुष्योंकोमारताहुआ तुझको दिखाईदिया १४१ हे निष्पाप जिसको कितैंने जयद्रथके मारने की प्रतिज्ञाके समय स्वप्नावस्थामें गिरिराज के ऊपर श्री कृष्णजीके द्वारा देखा १४२ वही देवता युद्धमें तेरे आगे होकर अपनी भक्तबत्सलता से उपाय करताहै जिसने कि तुझको वह अस्त्र दिये जिन अस्त्रोंके द्वारा तुमने दानवोंको मारा १४३ हे अर्जुन यह मैंने देवताओंके देवता शिवजीकी शतरुद्री तुझसे कही यह शतरुद्री धनयश और आयुकी देनेवाली पवित्र वेदोंके समान १४४ सब मनोर्थोंकी पूरी करनेवाली सब पापोंकी नाशक और भयोंकी निवारण करनेवालीहै १४५ जो मनुष्य शुद्धता पूर्व्वक इस मोक्ष धनकीर्त्ति आदिके देनेवाले स्तोत्रको सदैव शुद्ध, यश, सूत्र, बिराट, इन चारों प्रकारोंसे श्रद्धासे सुनताहै वहसबशत्रुओंको बिजयकरके रुद्रलोकमें पूजित होताहै १४६ यह युद्धसंबन्धी महात्मा शिवजीका प्राचीन चरित्र मैंने कहा जो सावधान मनुष्य इसनरलोक में इस शतरुद्रीको सदैव पढ़ता और सुनताहै १४७वह पुरुषबिष्णु ईश्वर देबताका भक्तहोकर शिवजीके प्रसन्न होनेपर उत्तम कामनाओंको पाताहै १४८ हे कुन्तीके पुत्रजाओ युद्ध करो तेरी पराजय नहीं है

जिसके कि मन्त्री रक्षक १४६ मित्र शुभ चिन्तक बन्धुरूप और पार्श्ववर्त्ती श्रीकृष्णजीहैं उसकी पराजय कैसे होसक्तीहै १५०संजय बोले कि हे भरतर्षभ शत्रुओंके बिजय करनेवाले धृतराष्ट्र वह व्यासजी युद्धमें अर्जुनसे ऐसा कहकर जैसे आयेथे वैसे ही चलेग-ये १५१ हेराजा महाबली अद्भुत पराक्रमी ब्राह्मण द्रोणाचार्य्यजी पांचदिन घोर युद्ध करके मारेगये और ब्रह्मलोकको प्राप्तहुये १५२ अच्छी रीतिसे वेदके पढ़नेमें जो फलहै वह इस पर्ब्बमें है क्योंकि इसमें भयसे रहित क्षत्रियोंका बड़ायश संयुक्त है १५३ जो इस पर्बको पढ़ेगा या सदैव सुनेगा वह बड़े महापापोंसे और कियेहुये घोर कर्मोंसे छूटेगा १५४ इस घोर युद्ध में सदैव ब्राह्मण को तो यज्ञका फल और क्षत्रियोंको उत्तम यशका फल मिलताहै और शेष बचेहुये वैश्य और शूद्र बर्णोंको अभीष्ट फल मिलता है इन फलोंके सिवाय चारों बर्ण वाले अपने २ प्रिय पौत्रादिधन ऐश्वर्य्य को भी पातेहैं १५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेद्रोणपर्व्वणि द्विशतोपरितृतीयोऽध्यायः२०३ ॥

द्रोणपर्व्व समाप्तहुआ शुभं भूयात् ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपा ॥
नवम्बर सन् १८८८ ई० ॥

प्रकट हो कि इसपुस्तक को मतबे ने अपने व्यय से तर्जुमा करायाहै इससे कापी रेट आदि सब हक़ूक छापाख़ाना मुंशी नवलकिशोर लखनऊके हैं ॥

महाभारत के पर्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व १
२ सभापर्व २
३ वनपर्व ३
४ विराटपर्व ४
५ उद्योगपर्व ५
६ भीष्मपर्व ६
७ द्रोणपर्व ७
८ कर्णपर्व ८
शल्य व गदा ९ सौप्तिक १० योषिक व बिशोक ११ स्त्रीपर्व १२
१० शांतिपर्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मूसलपर्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिबंशपर्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा,

ये पर्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व मिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाशयोंको मिलसक्ती हैं कृपा करके भेजदेवैं तौ छापेजावें ॥

महाभारत वार्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगयाहै जिसकी आदि, सभा, बन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, अनुशासन, शान्ति, और हरिबंशपर्व छप गईहैं शेषपर्वे भी बहुत शीघ्र छपरही हैं ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृतिसांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकराया है वही उक्त भगवद्गीतावज्जवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छेरशास्त्रवेत्तारअपनीबुद्धि से पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करने की सामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं-और यहप्रत्यक्षहोहै कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द क्योंकर मिलै इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक जनों के चितानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासोभगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसाधनव्यय कर फ़र्रुख़ाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीसे इसमनोरंजन वदवेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्य निर्मितभाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलकरचा नवलभाष्यआख्य से प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यहविचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थको भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाके साथ और इस ग्रन्थ के टीकाकारों की टीका भी जितनी मिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरि कृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकोंसहित इसपुस्तकमेंउपस्थित है॥

इश्तिहार॥

माहमार्च सन्१८८६ ई० से मुमालिकमग़रबी व शुमालीका बुकडिपो इलाहाबादक्यूरटर बुकडिपो से मतबा मुन्शी नवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ में आगयाहै इस बुकडिपो में मग़रबी व शिमाली एजूकेशनल बुक किताबोंके सिवाय औरभी हरएक विद्याकी किताबें मौजूद हैं इन हर एककिताबोंकी खरीदारी की कुल शर्तें क़ीमतके सहित इस छापेखाने की छपी हुई फ़ेहरिस्तमें दर्ज हैं जो दरख़्वास्त करनेपर हरएकचाहने वालोंको बिलाक़ीमत्त मिलसक्ती है जिनसाहबोंको इनकिताबों का ख़रीदकरनाहो वेइसेख़रीदकरें और फ़ेहरिस्त तलबकरें॥

द०मैनेजर अवध अख़बार
लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज

बारहोंस्कन्ध श्रीमद्भागवत क़ीमत ४) पु०

इसके भाषा टीकाको श्रीअंगदशास्त्रीजी ने अक्षरर के अर्थको ललित बोली में रचना कियाहै यह टीका ऐसा मनोहर हुआहै कि जिसकी सहाय थोड़ा भी जाननेवाला भागवतको अच्छीतरहसे समझसक्ताहै यह पुस्तक प्र विद्वान्के पास रहनी चाहिये क्योंकि भागवत बड़ा कठिन पुराण है बिना सहज भाषा टीकाके सबको श्लोकार्थ नहीं समझ पड़ता है इसका मूल श्री और भाषाटीका नीचे ऊपर रखकर अत्यन्त शुद्धता से पत्रेनुमा छपा है का हिनाई है और छापा पत्थरहै ॥

तथा उत्तम कागज़ और टैप के छापे की क़ीमत ७) पु०

वामनपुराण भाषा क़ीमत ॥।≡)

पण्डितरविदत्तकृतभाषा है—जिस में कपालमोचनआख्यान, दक्षयज्ञ श, महादेव का कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लाद नारायण युद्ध और सुरसंग्राम इत्यादि श्रीवामन भगवान्की उत्तमोत्तम कथा सरल भाषामें वर्णि

पद्मपुराणभाषा प्रथमसृष्टिखंड व द्वितीयभूमिखंड क़ीमत १॥)

पण्डित महेशदत्त सुकुलकृत भाषा-इसमें पुष्करका माहात्म्य, ब्रह्मयज्ञांवे वेदपाठ आदिका लक्षण, दानों और व्रतोंका कीर्त्तन, पार्वतीजीका विवाह र्मकाख्यान, गवादिकों का माहात्म्य, कालकेयादि दैत्योंका वध, ग्रहोंका उ और दान, पिता और माता आदिके पूजन के पीछे शिवशर्म्म और सुव्र कथा, वृत्रासुरकावध, पृथुवैन्यका आख्यान इत्यादि अनेक विषय संयुक्तहैं।

पद्मपुराणकाचतुर्थ पातालखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

पण्डित महेशदत्तकृत भाषा-इसमें प्रथम रामाश्वमेधकी कथामें श्रीराम अभिषेक का वर्णन, अगस्त्यादि ऋषियोंका अयोध्याजी में आगमन, श्री बंशका वर्णन, अश्वमेध करनेका उपदेश, अश्वका छोड़ाजाना और उस भर उधर घूमना, नानाप्रकारके राजाओं की कथा, जगन्नाथजी का अनु वृन्दावनका माहात्म्य इत्यादि अनेक कथायें संयुक्त हैं ॥

पद्मपुराणका स्वर्ग्गखण्ड भाषा क़ीमत १॥।) पु०

पण्डित महेशदत्तकृत भाषा ॥

बाकी खण्डों का उल्था होगयाहै ॥

प्रेमगंगतरंग भाषा क़ीमत १॥) पु०

जिसको मुबारकपुर ज़िला सारन्निवासी श्रीवास्तव कायस्थ श्रीभक्त भगवत मुन्शी श्री तपस्वीराम सीताराम्यिने श्रीतुलसीकृत रामायण और पुराणों ग्रहकर छपवाया है यह पुस्तक ऐसी संग्रह हुई है कि गीत, सवैया, चौपाई दि सैकड़ों प्रकार जिसमें छन्द विद्यमानहैं अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है हीं से उत्तमता मालूम होसक्ती है यह पुस्तक रामजी के भक्तको अवश्यही। ी योग्य है ॥

जैमिनिपुराण भाषा क़ीमत ॥।)

पण्डित शिवदुलारेकृत उल्था—जिस में राजायुधिष्ठिरने गोत्रहत्या निवार- अगस्त्योपदेश से अश्वमेध घोड़ाछोड़ यौवनाश्व,नीलध्वज,सुरथ,सुधन्वा पने पुत्र बभ्रुवाहन इत्यादि राजाओंको श्रीकृष्णचन्द्रकी सहायतासे विजय । इत्यादि कथायें बहुतसी वर्णितहैं ॥

आदिब्रह्मपुराण भाषा क़ीमत १)

ण्डित रविदत्तकृत जिसमें ब्रह्माजीसे लेकर सृष्टिके उत्पत्तिका वृत्तांत,राजों। ा चरित्र, मन्वन्तर कीर्त्तन, आदित्य उत्पत्ति, सूर्य्यवंश व चन्द्रवंश कथन । ययाति चरित्र और कृष्णवंशकीर्त्तन इत्यादि कथायें वर्णितहैं ॥

नरसिंहपुराण भाषा क़ीमत ।≡)

भाषा पं० महेशदत्त मुकुल कृत—इसमें संस्कृत नरसिंहपुराण से प्रतिश्लोक चरण व प्रतिपद का टीका अति सरल व मधुर भाषा में कियागयाहै—जिस ष्टि वर्णन, सर्ग रचना,सृष्टि रचना प्रकार, पुंसवनोपाख्यान, मार्कण्डेय मुनि ायोबलसे मृत्युको जीतना, यमगीता, यमाष्टक वर्णन, मार्कण्डेय चरित्र, यम संवाद, ब्रह्मचारी व पतिव्रता संवाद, एक ब्राह्मणका इतिहास जिस ने श्वर कृष्णजीका ध्यानकर देहत्यागकिया और व्यासजी का शुकाचार्य से ारूपी वृक्षको वर्णन करना,शिव व नारद करके भवतरनेकी क्रियाका वर्णन । अष्टाक्षर मन्त्र माहात्म्य इत्यादि अनेक विषय संयुक्त हैं ॥